हिन्दी
नाटक
कोश

सन् १३२५ से १९७०
तक के हिन्दी-नाटकों का
आधिकारिक अध्ययन

हिन्दी नाटक-कोश

डॉ० दशरथ ओझा

संगीत नाटक अकादमी
के तत्त्वावधान में
निर्मित

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
२३, दरियागंज, दिल्ली-११०००६
द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण १९[illegible]५ : मूल्य ६५.००

सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस
मौजपुर, शाहदरा, दिल्ली-११००५३
द्वारा मुद्रित

HINDI NATAK KOSH
Encyclopaedia
Dr. Dashrath Ojha

भूमिका

हिन्दी नाटक के उद्भव और विकास पर शोध करते समय मुझे यह आभास हुआ कि प्राचीन हिन्दी-नाट्य-सम्पदा क्रमश विनष्ट होती जा रही है, अत इसका सरक्षण राष्ट्रीय धर्म है। इस सरक्षण का मुझे यही मार्ग सूझा कि कोई ऐसा नाट्य कोश प्रस्तुत किया जाए जिसमें सभी नाटको का परिचय और विवरण एक ही स्थल पर उपलब्ध हो सके। साढे ६ सौ वर्षों की दीर्घ अवधि मे अनेकानेक हिन्दी नाटक रचे गये—कुछ रगशालाओ मे प्रदर्शित हुए, अधिकाश पुस्तकालयों मे पड़े रह गये। नाटको की रचना रगमच के समृद्धि काल मे होती है, पर हिन्दी मे रगमच की परम्परा ही खडित रही, अत यह धारणा बननी स्वाभाविक हैकि हिन्दी मे नाटक साहित्य नगण्य है। पर यह कम आश्चर्य की बात नही कि रगमच के अभाव मे भी अपने यहाँ नाटको की रचना बडी सख्या मे होती रही है। रचनाकारो मे अवश्य ही कोई अत्यन्त बलवती प्रेरणा काम करती रही जो उनसे बलात् नाट्य रचना कराती रही। गाँवो और नगरों मे नाटक लिखे गये, गोष्ठियो मे पढे गये, खुले मैदानो और चौपालो मे खेले गए, अन्त मे पुस्तकालयो मे बन्द रहे जिनमे से अनेक को काल देवता ने अपने रगमच के नेपथ्य मे सदा के लिए छिपा लिया। काल की प्रवृत्ति प्रदर्शित करने की नही, छिपाने की ही होती है। मन को यह प्रश्न बराबर कुरेदता रहा कि हिन्दी के अनेकानेक नाटकों की क्या यही नियति है कि वे निर्धन साहित्यकार के घर जन्म लेकर अभिनय रूपी पोषक पदार्थ के अभाव मे असमय ही काल के ग्रास बन जायें। हिन्दी साहित्यकार की दयनीय स्थिति से यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारी मध्यकालीन नाट्य सम्पदा का बहुत बडा अश विस्मृति के गर्त मे सदा के लिए विलीन हो गया। हिन्दी-साहित्य के मध्यकाल की तो बात ही क्या, विगत दस वर्षों मे कितने ही प्राचीन नाटक पुस्तकालयो से विलुप्त हो गए। जब नई पुस्तको के लिए स्थान रिक्त कराना होता है तो जीर्ण-शीर्ण पन्ने वाली पुरानी नाट्य-कृतियो को इस तर्क के साथ रद्दी मे बेच दिया जाता है कि इन्हें कोई पढ़ना तो है नहीं। छोटे कस्बो की कौन कहे दिल्ली, काशी, प्रयाग, कलकत्ता, आगरा, मेरठ, गया, भागलपुर, पटना प्रभृति नगरो के बडे-बड़े पुस्तकालयो मे आज वे अनेक प्राचीन नाटक अप्राप्त हैं जिन्हे मैंने कुछ वर्षों पूर्व पढ़कर इस कोश के लिए विवरण तैयार किया था। कई बार प्रसगवश जब स्वय पठित नाटक उन्ही पुस्तकालयो में खोजने गया तो ज्ञात हुआ कि उनकी अन्त्येष्टि हो चुकी है। जिन नाट्यकारों ने अपने जीवन के सुन्दर-

तम क्षणों की आहुति देकर नाट्य रचना की, उनकी कृतियों की ऐसी उपेक्षा देखकर दुःख होता है। अतः हमने निश्चय किया कि किसी न किसी रूप में उपलब्ध नाटकों की स्मृति को सुरक्षित रखने का प्रयास करना ही होगा। इसी संरक्षण की भावना ने मुझे इस नाटककोश के कार्य मे संलग्न किया। विगत पन्द्रह वर्षों से इसी कार्य में जुटा रहा।

इस कार्य में सबसे बड़ी समस्या नाटकों के सन्धान की सामने आई। हमारी राष्ट्रीय संस्था नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, साहित्य सम्मेलन प्रयाग आदि में अधिकांश नाटक अनुपलब्ध हैं। संगीत नाटक अकादमी में प्राचीन नाटकों का प्रश्न ही नहीं उठता। प्राचीन नाटकों में कितने ही आज भी अमुद्रित हैं। अनेक मुद्रित नाटकों का चार-पाँच सौ प्रतियों का संस्करण प्रकाशन के दस-बीस वर्ष बाद ही अनुपलब्ध हो गया। गाँवों और कस्बों के मेधावी नाट्यकारों के अभिनीत नाटकों की प्रतियाँ नगरों तक पहुँची ही नहीं। उन प्रतिभाशाली नाट्यकारों को कोई जानता ही नहीं। ऐसे नाटकों के संधान में गाँवों और नगरों मे सैकड़ों मील की यात्रा करनी पड़ी। प्राचीन नाटकों की खोज में आसाम से पंजाब तथा मिथिला से महाराष्ट्र तक चक्कर काटना पड़ा। सन्तोष यही रहा कि जहाँ भी गया कुछ न कुछ नई सामग्री मिलती गई। इससे मन में उत्साह बढ़ा। मेरी यात्रा का संबल एक मंत्र भी था जो मुझे सन् १९४७ में शान्ति-निकेतन में साहित्य-साधना करने वाले तरुण तपस्वी पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी से मिला था। वे हिन्दी साहित्य के आदिकाल पर शोध कर रहे थे। उन्होंने कहा था—"हिन्दी का प्राचीन नाट्य साहित्य भी समृद्ध रहा होगा। उस समूची परम्परा की खोज करते रहिए। एक दिन अवश्य सफलता मिलेगी।" यह कोश उस मंत्र-जाप की सिद्धि के रूप में प्रस्तुत है।

इस कोश में असम, नेपाल, तंजोर, धारवाड़, बम्बई आदि में विरचित प्राचीन नाटकों को सम्मिलित किया गया है। प्राचीन भाषा के व्याकरण से अपरिचित पाठकों को यह अटपटा लग सकता है कि हिन्दी के नाटक भला आसाम, नेपाल और तंजोर में कैसे लिखे गये होंगे। इस सम्बन्ध में अपने निजी अनुभव को अभिव्यक्त करना उचित होगा। मेरे पिताजी सिलहट जिले में देहात के ऐसे स्थान पर संस्कृत पाठशाला चलाते थे जहाँ हमारे गाँव-देहात के सैकड़ों किसान, श्रमिक, व्यापारी, कारीगर अपनी जीविका उपार्जन के लिए बस गए थे। उत्तर प्रदेश तथा बिहार की हिन्दी-भाषी जनता लाखों की संख्या में चाय बागानों एवं खेतों में काम करती थी। वे असमिया, बंगला के अतिरिक्त अपनी मातृभाषा बोलते, अपने ढंग से रामलीला, कृष्णलीला करते, वसन्त, होली, दीवाली आदि त्यौहार मनाते। पिताजी इन प्रवासियों की कहानियाँ सुनाया करते। विपदा के मारे हमारे आसपास के कई व्यक्ति वर्षों बाद जब घर लौटते तो हम लोग उत्सुकता के साथ बंगाल और आसाम की कहानियाँ उनसे सुनते।

बड़े होने पर इतिहास में पढ़ा कि खिलजी एवं तुगलक राज्य में बड़े-बड़े पुस्तकालयों के भस्म होने पर विद्याप्रेमी अनेक व्यक्ति मुसलमानी राज्य से भाग कर

बाहर नेपाल और आसाम मे बस गए। वहाँ उनकी बस्ती बन गयी और उन्होंने देवालय निर्मित किए और उन देवघरो में पवित्र पर्वों पर नाटक खेले गए जिनकी भाषा मूलत भोजपुरी और मैथिली थी, पर बगला और असमिया का भी उनमें पुट रखा गया। जैसे आज उत्तर प्रदेश और बिहार के प्रवासी मारिशस, फिजी, केनिया मे डेढ़ सौ वर्षों के प्रवास के उपरान्त भी अपनी मातृभाषा का उपयोग साहित्य और सस्कृति के लिए बराबर करते आ रहे हैं उसी प्रकार वे प्रवासी नेपाल और आसाम मे अपनी मातृभाषा का प्रयोग दिन प्रतिदिन के व्यवहार में करते रहे। मेरा यह अनुमान क्रमश दृढ़ होता गया कि मध्य देशीय प्रवासियो ने आसाम मे अवश्य नाटको की रचना की होगी। एक बार जब नाटको की खोज मे गोहाटी पहुँचा और वहाँ महापुरुष शकरदेव के सत्र में नाट्य साहित्य देखने का अवसर मिला तो उसकी भाषा मे अपने पूर्वज प० दामोदर ओझा कृत उक्ति व्यक्ति प्रकरण' की भाषा की छटा देखकर मेरे आनन्द का ठिकाना न रहा। असमिया लिपि मे प्राचीन भाषा के दर्जनो नाटक देखकर कोश निर्माण की धारणा बिल्कुल दृढ़ हो गयी और उन नाटकों को नागरी लिपि मे लिख डाला जो 'प्राचीन भाषा नाटक' के रूप मे प्रकाशित हुआ और जिसे इस नाटक-कोश का प्रारम्भिक स्रोत मानता हूँ। इसी प्रकार अनेक अहिन्दी-भाषी प्रान्तों मे हिन्दी नाटको की रचना चौदहवी शताब्दी से आज तक होती रही है। मुझे मिथिला और नेपाल विरचित प्राचीन नाटको से बडी सहायता मिली।

तजोर राज श्री शाह जी महाराज ने सन् १६७४ से १७११ तक राज्य किया। उन्होने 'विश्वातीत विलास' नाटक और 'राधा बशीधर विलास' नाटक की स्वत रचना की। *यक्षगान शैली पर विरचित ये हिन्दी नाटक तजोर मे अनेक बार अभिनीत हुए।* यहाँ तक कि उन्नीसवी शताब्दी के अन्त मे आन्ध्र राज्य म एक नाट्यकार हुए प० पुरुषोत्तम कवि। हिन्दी मे विरचित उनके ३२ नाटक उपलब्ध हुए हैं। नाट्यकार प० पुरुषोत्तम कवि स्वय सूत्रधार बन कर धारवाड के मछलीपट्टणम नगर में नेशनल थियेट्रिकल सोसायटी के तत्वावधान मे नाटक खेला करते थे। उन नाटको को भी कोश मे सम्मिलित कर लिया गया है।

देश के इतने विशाल भूभाग मे विरचित न्यूनाधिक दो सहस्र नाटको की खोज निकालने पर प्रश्न सामने आया कि क्या सभी नाटको को कोश मे स्थान दिया जाय अथवा प्रसिद्ध नाटको को ही चुन लिया जाय? परामर्श समिति के सदस्यो मे इस विषय पर मतैक्य न होने से निर्णय का भार मेरे ऊपर छोड दिया गया। मैंने इस सम्बन्ध मे विभिन्न कोशकारों की सम्मति जानने का प्रयत्न किया। स्टैनले जे० कुनिटो (Stanley J Kunity) ने अपने कोश 'अमेरिकन ऑथर्स' (American Authors) *(1600–1900) की भूमिका मे लिखा है—*

"This volume contains, in all, biographies of almost 1300 authors, of both major and minor significance, who participated in the making of our literary history from the time of the first Eng settlement at Jamestown in 1607 to the close of the 19th century."

अर्थात् "इस ग्रन्थ में विशेष एवं सामान्य महत्त्व वाले न्यूनाधिक उन तेरह सौ लेखकों की जीवनी संगृहीत है जिन्होंने सन् १६०७ से उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक हमारे साहित्यिक इतिहास के निर्माण में योगदान दिया है।"

स्टैनले ने अपने कोश में सामान्य से सामान्य लेखक को स्थान दिया। इसी प्रकार Encyclopaedia of American Theatre में एक ऐसे नाटक को स्थान दिया गया जिसके विषय में स्वयं कोशकार लिखता है कि "इससे घटिया गीतिनाट्य अंग्रेजी भाषा में लिखा ही नहीं गया।" अब प्रश्न उठता है कि अति सामान्य कोटि के प्राचीन नाटकों को कोश में स्थान देकर पृष्ठ संख्या बढ़ाने की कोई उपयोगिता है भी ? इसका उत्तर Johnson ने अपने कोश में इस प्रकार दिया है—

"But as every language has a time of rudeness antecedent to perfection, as well as of false refinement."

अर्थात् "प्रत्येक भाषा में परिपूर्णता एवं मिथ्या चारुता की स्थिति आने से पूर्व रहती है।" इस तर्क के अनुसार अनेक प्राचीन कलाहीनता नाटकों में आधुनिक दृष्टि से नाटकीयता भले ही न हो पर उनमें समाज के एक वर्ग की तत्कालीन भावना और नाट्याराधकों की निजी अनुभूति तो निहित है ही, चाहे वह अनुभूति कितनी ही सामान्य कोटि की क्यों न हो। इतने बड़े देश के भिन्न-भिन्न भागों में निवास करने वाली जनता भय और परिताप, हास्य और विषाद, प्रेम और घृणा, मृत्यु और पुनर्जन्म की समस्याओं पर किस प्रकार सोचती रही और उनका समाधान इतिहास के विभिन्न कालों में किस प्रकार निकालती रही यह जानना भी कम महत्त्व की बात नहीं। जान गासनेर (John Gassner) 'एनसाइक्लोपीडिया आफ वर्ल्ड ड्रामा' (Encyclopaedia of World Drama) की भूमिका में लिखते हैं—

"Its perspective is that of drama as a universal phenomenon, deeply rooted in the culture of the community and the experience of the individual. Evolving from that primitive past, drama has consistently provided the form in which men explored the ultimate problems of human existence, problems of fundamental as those related to the experiences of terror and death, laughter and rebirth."

यह सत्य है कि प्राचीन नाट्यकारों ने जीवन के शाश्वत मूल्यों को दिन-प्रतिदिन के जीवन की सामाजिक समस्याओं से अधिक महत्त्व दिया। यूरोप ने विगत सौ वर्षों में नाटक और रंगमंच को दिन-प्रतिदिन की उन समस्याओं से जोड़ दिया जिनकी ओर उनके पूर्ववर्ती उपेक्षा की दृष्टि से देखते रहे। किन्तु पश्चिम में अब जो नए नाटकों का आन्दोलन चल रहा है उसमें पुनः शाश्वत मूल्यों को महत्त्व दिया जा रहा है। आज के समाजशास्त्री भ्रष्टाचार की नित्य बढ़ती हुई प्रवृत्ति को देखकर घबरा उठे हैं और वे इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि भारत और एशिया के इन रोगों का उपचार विधान-स्रष्टा के पास नहीं केवल साहित्य-स्रष्टा के पास है। सबसे बड़ी समस्या है भ्रष्टाचार और चारित्रिक पतन की। इस देश के प्राचीन नाट्यकारों ने सत्य-

अहिंसा, त्याग-तपस्या, प्रेम-पातिव्रत, निग्रह-निरोध, क्षमा-तितिक्षा आदि का महत्त्व दिखाने के लिए सम्भव-असम्भव सभी प्रकार की कहानियाँ निर्मित कीं और उन्हें नाटक के साँचे मे ढालकर रगमचो पर प्रदर्शित करने का प्रयास किया। अत आधुनिक दृष्टि से अनेक प्राचीन हिन्दी नाटक भले ही अनाटकीय प्रतीत हों पर यह स्वीकार करना ही पडेगा कि उनमे जागरूक साहित्यकारो की निजी अनुभूति, तत्कालीन समाज की सामूहिक आशा-आकाक्षा, परिवार का आदर्श रूप झाँकता-झलकता अवश्य है और इन नाट्यकारों ने समाज मे स्वस्थ परम्परा को जमाए रखने मे सफलता प्राप्त की। जिन शतश नाट्यकारो की कृतिया विलुप्त हो गई हैं उनके प्रतिनिधि के रूप मे उन नाट्यकारो को स्वीकार कर सन्तोष करना पडता है जिनके पन्ने काल के अन्धड मे उडते-उडते बच गए हैं। इसलिए आधुनिक नाट्यकला की दृष्टि से चाहे वह कितने ही महत्त्वहीन हो पर कोशकार की दृष्टि मे उनका अपना महत्त्व है ही। इसी कारण उन्हें इनमें स्थान देना आवश्यक समझा गया है।

प्राचीन नाटको मे अधिकाश पौराणिक और धार्मिक हैं। आज की दृष्टि से उन नाटको का भले ही कोई महत्त्व न हो पर अपने युग मे उनकी मान्यता उसी प्रकार रही होगी जिस प्रकार आज के विशृंखल युग मे परिवार के छिन्न-भिन्न रूप को दिखाने वाले 'आधे-अधूरे' की है। आधुनिक समीक्षक पौराणिक एव धार्मिक नाटको को जिस रूप मे देखते और समझते हैं उससे भिन्न अर्थो मे ये कृतियाँ ग्रहण की जाती थी। श्री अरविन्द प्राचीन पौराणिक नाटको की चर्चा करते हुए लिखते हैं—

"The Puranas are essentially a true religious poetry, an art of aesthetic presentation of religious truth"

पुराणो ने इस देश के युग-युग के अनुभवो को सचित विश्वासो एवं काल की छलनी मे छानकर वाङ्मय भाषा मे मणि की तरह पिरोया है। उनका मत है कि "पौराणिक एव धार्मिक नाटको के ये अवशेष भी इतने पर्याप्त रूप मे प्रतिनिधि-स्वरूप हैं कि इनसे एक उच्च सस्कृति, वैभवशाली बौद्धिकता, समृद्ध धार्मिक चिन्तन, नैतिक एव सौन्दर्यात्मक जीवन, शक्ति-सम्पन्न राजनीतिक हलचल, व्यवस्थित समाज के प्रखर जीवन-प्रवाह और उसके बहुमुखी विकास की बहुरगी छाप अनायास ही चित्त पर अकित हो जाती है। ये धार्मिक नाटक अपने युग के समृद्ध सास्कृतिक जीवन को पौराणिक कथाओ के साँचे मे ढालकर जनता के सामने आते थे।" (The foundation of Indian Culture, page 320)।

इस देश की कुछ चिर सचित मान्यताएँ थी जिनसे समाज और व्यक्ति का जीवन परिचालित होता था। अत इन धारणाओ की अभिव्यक्ति करने वाले सभी प्राचीन नाटको को कोश मे स्थान देना अनिवार्य समझा गया।

मध्यकाल के अनेक नाटक नाट्यशास्त्र के नियमो से सर्वथा मुक्त दिखाई पडते हैं। बार-बार मन मे यह प्रश्न उठता रहा कि इन काव्यो के रचनाकार ने इन्हें नाटक की सज्ञा क्यों दी? भला बनारसीदास कृत समय सार को नाटक कैसे माना जाय?

गुरु गोविन्द सिंह के 'विचित्र नाटक' को नाटक मानकर कोश में रखा जाय या उसे छोड़ दिया जाय ? मंदिरों में अभिनीत लीला नाटकों को ग्रहण किया जाय या नहीं ? यद्यपि इन प्रश्नों का विस्तृत उत्तर देने का यह उपयुक्त स्थल नहीं है, तथापि यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि विदेशी विद्वानों ने भी ऐसे धार्मिक काव्यों को नाटक स्वीकार किया है। येल विश्वविद्यालय (Yale University America) में ड्रामों के प्रोफेसर डॉ० नारविन हेन (Dr. Narvin Hein) ने व्रज प्रदेश के मन्दिरों में प्रदर्शित झाँकियों को Miracle Plays की संज्ञा दी है।

जिन धार्मिक नाटकों को साहित्येतर मानकर कुछ लोग सन्तुष्ट हो जाते हैं, उनके अनुसन्धान में Sir Richard Carnac Temple, R.V. Poduval, Minaev, Friedrich Rosen, Sir William Ridgeway आदि विदेशी और डॉ० राघवन, प्रो० याग्निक, श्री जगदीशचन्द्र माथुर प्रभृति भारतीय विद्वानों ने अपना जीवन खपा दिया है।

डॉ० नारविन हेन ने मथुरा-वृन्दावन के मन्दिरों में अभिनीत धार्मिक नाटकों को केवल दर्शक रूप में देखा ही नहीं अपितु अभिनेताओं एवं सूत्रधार के सम्पर्क में रहकर लीला नाटकों की कला का विधिवत् अध्ययन भी किया। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं—

"The vernacular traditions of religious drama which may survive among the Hindus of North India are known in detail only to those who in some way participate in them." (The Miracle Plays of Mathura, Introduction, Page 3)

इन्हीं तर्कों के आधार पर इस कोश में कतिपय लीला नाटकों को संगृहीत किया गया। अनेक लीला नाटक इस कोश में संगृहीत नहीं हो पाए हैं। इस त्रुटि के अनेक कारण हैं जिनमें प्रमुख है मेरी विवशता। इसके लिए मैं परम्पराशील नाटक प्रेमियों से क्षमा चाहता हूँ।

हिन्दी नाटकों की एक समृद्ध परम्परा लोक नाटकों की है। हिन्दी भाषा-भाषी राज्यों में ऐसे नाटक डेढ़ सहस्र से अधिक संख्या में उपलब्ध हैं। सारी सामग्री एकत्र करने पर ऐसा प्रतीत हुआ कि सबको इस कोश में समेटना सम्भव है ही नहीं। अतः यह मानकर सन्तोष कर रहा हूँ कि सुविधानुसार उनका एक स्वतंत्र कोश तैयार होगा। केवल अति प्राचीन एवं भिखारी ठाकुर के बिदेसिया नाटकों को संकलित करने का लोभ संवरण न कर सका। कारण यह है कि इस नयी नाट्य धारा ने केवल ग्रामीण जनता में ही नहीं अपितु पटना, कलकत्ता जैसे महानगरों में भी हलचल पैदा कर दी। नाट्य चयन में सबसे विषम समस्या हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी भाषा के प्रश्न को लेकर उठी। देश-विभाजन से पूर्व हिन्दुस्तानी के नाम पर हिन्दी-उर्दू-मिश्रित भाषा का प्रचार हो रहा था। काव्य की भाषा एक दूसरे से दूर होती जा रही थी पर नाटकों में मिश्रित भाषा जनप्रिय बन रही थी। कवि अमानत कृत इन्द्रसभा और भारतेंदु

कृत अंधेर नगरी के सदृश नाटकों ने मिश्रित भाषा में नाट्य रचना को प्रोत्साहन दिया। अनेक हिन्दू-मुसलमान नाट्यकार इस क्षेत्र मे उतरे। सन् १८७५ के उपरान्त मिश्रित भाषा के नाटको की धूम मच गई। प्रश्न उठा कि शम्सुल-उलमा अहमद हुसन-खा, अकस मुरादाबादी, उमराव अली लखनवी, अमीरुद्दीन, बर्क सीतापुरी, मीर हुसेन-खाँ 'बुलबुल', धनपतराय 'बेकस', लाला चन्दनलाल, दुर्गाप्रसाद, दीनानाथ, रौनक बनारसी, मौलवी नजीर हसन, केदारनाथ 'सूरत', विनायक प्रसाद 'तालिब', हुसेनी मिया, प० बनवारीलाल, मीर गुलाम अब्बास, मुहम्मद इब्राहीम 'महशर', आगा मुहम्मद शाह हश्र, नारायण प्रसाद 'बेताब', पृथ्वीराज कपूर प्रभृति नाट्यकारो की कृतियो को सम्मिलित किया जाय या नही ? यदि इनकी कृतियो को सर्वथा बहिष्कृत कर दिया जाता तो हिन्दू-मुसलिम-मिश्रित सस्कृति की परिचायक एक बलवती नाट्यधारा से हिन्दी प्रेमी सदा के लिए वचित रह जाते। हिन्दू जनता को इन नाट्यकारों ने अरेबिया और फारस की सस्कृति एव विचारधारा का परिचय कराया। इन्होने गुल-बकावली, गुलिस्ता बोस्ता की बारीकिया, लैला-मजनूं, शीरी-फरहाद का प्रेमी जीवन, अरेबियन और पर्शियन बादशाहो की राजनीति, फारस की बेगमो, बाँदियो और शहजादियों के प्रेम-प्रणय की झाँकियाँ, सोहराब रुस्तम की वीरता भारतीयों के सामने रखी। इसी प्रकार भारतीय सस्कृति मे अनभिज्ञ मुसलिम जनता को इन्होंने विक्रमादित्य का न्याय, राजा गोपीचन्द का त्याग, हरिश्चन्द्र की सत्यप्रियता, सती सावित्री का पातिव्रत, श्रवणकुमार की पितृभक्ति, राम और कृष्ण की जीवन लीला का दृश्य दिखा कर इस देश के प्रति आकृष्ट किया। जिस मिश्रित भाषा ने प्रेमचन्द को प्रोत्साहन देकर 'करबला' जैसा नाटक लिखवाया उसकी उपेक्षा कैसे की जाती। अत हमने यही निश्चय किया कि जो भी ऐसे नाटक नागरी लिपि मे उपलब्ध हों उनका विवरण कोश में अवश्य दे दिया जाए।

इस मिश्रित भाषा मे मिश्रित सस्कृति का गुणगान गानेवाले नाट्यकारो और नाटको को सबसे अधिक प्रश्रय पारसी थियेट्रिकल कम्पनियो ने दिया। उन्होंने चुन-चुनकर देश के मूर्धन्य नाट्यकारो को आमत्रित किया और उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रख कर उनसे नाट्य रचना का अनुरोध किया। उन नाट्यकारो और अभिनेताओ के नित्य नए प्रयोगो से पारसी थियेटर चमक उठा।

पारसी थियेटर की अनेक कम्पनियाँ मिश्रित भाषा मे समूचे देश मे नाटक खेलती रहीं। जो भी नाटक लिखित रूप में मुझे उपलब्ध हुए उनका परिचय देने का प्रयास किया है। सबसे बडी कठिनाई यह रही कि इन कम्पनियो के अधिकाश नाटक अब दुष्प्राप्य हैं। उनका नामोल्लेख तो मिल जाता है पर नाटक की प्रतियाँ किसी लिपि में नहीं मिलतीं। जब तक नाटक देखने को न मिले तब तक उसका विवरण विशेषकर कथावस्तु का प्रामाणिक रूप कैसे प्रस्तुत किया जाए ? अत कितने ही नाटक इसमे छूट गए हैं। बहुत सावधानी रखने पर भी 'इसान की राह पर' जैसे कुछ आधुनिक नाटक भी इस सस्करण में नहीं समाविष्ट हो पाये हैं। विचार है कि सन् १९७५

तक के अवशिष्ट नाटकों का परिचय लिखकर परिशिष्ट के रूप में अगले वर्ष संयुक्त कर दूँ। मैं उन नाट्यकारों एवं प्रकाशकों से क्षमापूर्वक अनुरोध करता हूँ जिनकी कृतियाँ मेरी विवशता के कारण छूट गई हैं। यदि वे अपनी नाट्य-कृतियों की प्राप्ति का पूरा पता लिख भेजेंगे तो मैं उनका आभारी रहूँगा और परिशिष्ट में उन्हें अवश्य संगृहीत करूँगा।

कोश सम्बन्धी सामग्री : सन् १९६६ में जब श्री कृष्णाचार्य ने हिन्दी नाट्य साहित्य की ग्रंथसूची प्रस्तुत की, तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। नाट्य कोश की दिशा में यह प्रथम महत्वपूर्ण कदम है। लेकिन इसमें केवल सन् १८६३ से १९६५ तक के ही नाटकों की संक्षिप्त सूचना मात्र मिलती है। इस ग्रन्थसूची में उस अवधि के प्रकाशित नाटकों का सूचीपत्रवत् ही उल्लेख हुआ है। इसमें केवल नाटक, नाटककार, प्रकाशक, प्रकाशन काल, पृष्ठ संख्या सम्बन्धी टिप्पणी मिल जाती है। किन्तु नाटक की प्रकृति-प्रवृत्ति, उद्देश्य आदि के विषय में कोई संकेत नहीं मिलता। उन्हीं अस्थि-पंजरों को मांसल बना कर उनमें प्राण फूँकना मेरा लक्ष्य रहा है। इसके लिए नाटकों को आद्योपान्त पढ़कर उनकी कथावस्तु, कथ्य आदि का भी पूर्ण विवरण तैयार करना आवश्यक प्रतीत हुआ। प्रस्तुत नाट्य कोश में इसी दृष्टि से नाटकों का पूरा परिचय दिया गया है।

अंग्रेजी में Bibliography of Stagable Plays in Indian Languages (बिब्लियोग्राफी आफ स्टेजेबुल प्लेज इन इंडियन लैंग्वेजेज) के अन्तर्गत सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं के केवल अति प्रसिद्ध नाटकों के अंक-दृश्य दिये गए और कहीं-कहीं एक वाक्य में नाटक के प्रकार का संकेत कर दिया गया है। गुजराती में कतिपय प्रमुख नाटकों का संक्षिप्त परिचय कोश के रूप में मिलता है। मराठी में पौराणिक, सामाजिक और ऐतिहासिक नाटकों का परिचय कालक्रमानुसार उपलब्ध है किन्तु किसी भारतीय भाषा में 'इनसाइक्लोपीडिया आफ ड्रामा' की शैली पर कोश तैयार नहीं किया गया है। सम्भवतः भारतीय भाषाओं में नाट्य कोश के रूप में यह पहला प्रयास है। इस नाट्य कोश का प्रारम्भिक रूप 'संगीत नाटक अकादमी' की विशेषज्ञ समिति के सम्मुख समीक्षार्थ प्रस्तुत किया गया। समिति ने यह सुझाव दिया कि कोश में अंक-दृश्य, घटनास्थल और अभिनय काल का भी उल्लेख कर दिया जाए। समिति का यह भी सुझाव था कि कथावस्तु से पूर्व नाटक का कथ्य दो-तीन पंक्तियों में दे दिया जाए जिससे सम्पूर्ण कथावस्तु को बिना पढ़े भी नाटक का उद्देश्य समझ में आ जाए।

उपर्युक्त सुझावों को ध्यान में रखकर पूरी पाण्डुलिपि पुनः तैयार करनी पड़ी। संशोधित पाण्डुलिपि को 'संगीत नाटक अकादमी' ने प्रकाशन के योग्य समझकर स्वीकृति दे दी और इसके प्रकाशन में कुछ आर्थिक सहयोग देना भी स्वीकार किया। इसके लिए हम संगीत नाटक अकादमी के अधिकारियों विशेषकर डा० सुरेश अवस्थी के कृतज्ञ हैं।

कोश के निर्माण में अनेक समस्याएँ उपस्थित हुईं जिनका समाधान कोश की परामर्श समिति के द्वारा निकालने का प्रयास किया गया। पहली समस्या कतिपय

नाटकों के नाम भी थी । एक ही नाटक के कई नाम भिन्न-भिन्न संस्करणों में मिले । प्रश्न सामने आया कि कई नामों में से किस नाम को कोश के लिए ग्रहण किया जाए । जैसे 'हमारा स्वाधीनता संग्राम' दूसरे संस्करण से 'स्वाधीनता का संग्राम' हो गया । ऐसी स्थिति में हमने प्रथम संस्करण के प्रथम नाम को ग्रहण किया है । कहीं-कहीं अथवा या उर्फ देकर एक नाटक के दो नाम बना दिये गए हैं । हमने प्रथम नाम को ही प्रथम स्थान दिया है । जैसे 'अमर शहीद भगतसिंह' अथवा 'सुनहरे पन्ने' में 'अमर शहीद भगतसिंह' को प्रमुखता दी है । 'करिश्मे कुदरत' उर्फ 'अपनी या परायी' में 'करिश्मे कुदरत' को प्रधान मानकर 'क वर्ग' में रखा गया है । वीरांगना रहस्य महानाटक अथवा वेश्या विनोद महानाटक में प्रथम नाम ग्रहण किया गया । कहीं कहीं नाटक के मूल नाम के साथ कोष्ठक में दूसरा नाम भी दे दिया गया है ।

दूसरी समस्या रचना-काल या प्रकाशन-काल की है । कितने ही नाटक रचना-काल के वर्षों बाद मुद्रित हुए । कोश में उनका रचना-काल दिया जाए या मुद्रण-काल? बहुत विवाद के उपरान्त परामर्श-समिति ने यही निर्णय किया कि रचना-काल को ही यथार्थ मानकर कोश में काल का निर्धारण करना उचित होगा । जैसे 'हर गौरी विवाह' नाटक की रचना जगज्ज्योति मल्ल ने वि० १६८० के आस पास की जिसका प्रकाशन मिथिला रिसर्च सोसायटी, दरभंगा ने सन् १९७० के आस-पास किया । यदि इसका प्रकाशन-काल कोश में दिया जाता तो पाठकों को यह भ्रान्ति होती कि 'हर गौरी विवाह' आधुनिक नाटक है । काल के संबंध में पाठकों को कहीं सन् और कहीं विक्रम संवत् देखकर कोश की एकरूपता में दोष जान पड़ेगा । यह समस्या जब परामर्श समिति के सामने रखी गयी तो मित्रों ने एक तर्क दिया कि यद्यपि सन् और संवत् में ५७ वर्ष का अन्तर कर देने पर एकरूपता लाई जा सकती है किन्तु कभी कभी संवत् को सन् के रूप में परिवर्तित करने में एक वर्ष का व्यवधान भी आ सकता है । जैसे मार्च सन् १९७५ में आज संवत् २०३१ ही चल रहा है अतः ५७ घटाने-बढ़ाने से एकरूपता तो आ जाती पर रचना-काल पूर्णतया कालानुरूप न होता । अतः यही उचित समझा गया कि नाट्यकार के दिये हुए सन् और संवत् को ज्यों का त्यों ग्रहण कर लिया जाए । काल के संबंध में सबसे बड़ी जटिल समस्या थी उन नाटकों का विवरण देने में, जिनमें कहीं किसी स्थान पर रचना-काल या प्रकाशन-काल का संकेत ही नहीं मिला । आज भी ऐसे अनेक प्रकाशक हैं जो अपने प्रकाशित नाटकों में कहीं सन् संवत् का उल्लेख ही नहीं करते । उन्हें किसी रचना को प्राचीन या नवीन सिद्ध करने में इस युक्ति से बड़ी सुविधा मिल जाती है । हमारे सामने यह समस्या थी कि ऐसे नाटकों का रचना-काल किस प्रकार निर्धारित किया जाए । हमने प्रकाशकों और नाट्यकारों से पत्र-व्यवहार कर अथवा स्वयं उनसे मिलकर ऐसे नाटकों का समय निर्धारित किया । किन्तु जहां प्रयास करने पर भी कोई संकेत नहीं मिला वहाँ रचना-काल का उल्लेख नहीं किया गया । यदि कोई सज्जन ऐसे नाटकों का रचना-काल किसी प्रकार से निकाल कर मुझे सूचित करने की कृपा करेंगे तो मैं उनका अत्यन्त आभार मानूंगा ।

पृष्ठ संख्या के संबंध में भी कठिनाइयाँ सामने आईं। कई प्राचीन नाटक अपूर्ण उपलब्ध हुए अतः उनकी पृष्ठ संख्या छोड़ दी गई। एक ही नाटक के भिन्न-भिन्न संस्करणों की पृष्ठ संख्या अलग-अलग हो गई। हमने प्रथम संस्करण की पृष्ठ संख्या ही रखना उचित समझा। पृष्ठ संख्या के सम्बन्ध में एक और समस्या थी : संगृहीत गीति नाटकों की पृष्ठ संख्या का निर्धारण कैसे हो? अलग-अलग संस्करणों में एक ही नाटक की पृष्ठ संख्या बदल जाती है। अतः किसी ग्रन्थ में संगृहीत तथा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित नाटकों की पृष्ठ संख्या का प्रायः उल्लेख नहीं किया गया है। एक ही नाटक के भिन्न-भिन्न संस्करण अलग-अलग प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित हुए। स्वभावतः प्रश्न उठता है कि किस प्रकाशक का नाम दिया जाए। हमने यही निर्णय किया कि नाटक प्रथम बार जिस प्रकाशक के यहाँ से प्रकाशित हुआ हो उसका ही नाम देना उचित होगा।

स्त्री और पुरुष पात्रों की संख्या के निर्धारण में यही सिद्धान्त उचित समझा गया कि प्रमुख पात्रों की ही गणना की जाए। प्रहरी, सिपाही, सैनिक, किसान, मजदूर, पथिक आदि की संख्या की गणना नहीं की गई। पात्रों की संख्या देने का मूल उद्देश्य यह है कि नाटक का अभिनय करने वाले व्यवस्थापक को यह अनुमान लगाने में सुविधा हो जाए कि किसी नाटक के खेलने में कितने पात्रों की आवश्यकता होगी। जिन पात्रों को रंगमंच पर केवल वातावरण-निर्माण के लिए दिखाना अभीष्ट हो, जिन्हें वार्तालाप का अवसर बहुत ही कम या बिल्कुल ही न मिला हो उनकी गणना व्यर्थ ही है। उनकी संख्या से व्यवस्थापक को किसी प्रकार की सुविधा-असुविधा नहीं होती। इस कोश में अनेक ऐसे नाटक मिलेंगे जिनमें केवल पुरुष पात्र हैं अथवा केवल स्त्री पात्र हैं। अभिनय के लिए नाटक चयन करने वाले को अपनी परिस्थिति के अनुरूप पुरुष-पात्र-विहीन, स्त्री पात्र-विहीन नाटकों के चयन में सुविधा हो जाएगी। जिन नाटकों में पुरुष-संख्या या स्त्री-संख्या नहीं दी गई है, उन्हें पुरुष-पात्र-रहित अथवा स्त्री-पात्र-रहित समझ लेना चाहिए।

प्रत्येक नाटक के विवरण में अंक और दृश्य की संख्या दे दी गई है। जिन नाटकों में अंक के स्थान पर बाब, अध्याय, अधिकारी आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है उनमें पर्यायवाची शब्द ही रखे गए हैं। पाठकों को इन शब्दों से अंक का ही अर्थ समझ लेना चाहिए। पारसी रंगमंच के कतिपय नाट्यकार अंक के स्थान पर 'बाब' का प्रयोग करते थे। इस कोश में पूर्णकालिक नाटकों को ही ग्रहण किया गया है, जिनमें एक से अधिक अंक होने चाहिए। किन्तु एक अंक वाले उन नाटकों को भी इसमें स्थान दिया गया है जो वास्तव में पूर्णकालिक नाटक ही हैं, क्योंकि उनकी कथावस्तु एवं नाट्यकला एकांकी से सर्वथा भिन्न प्रतीत हुई। अतः एक से अधिक अंक न होते हुए भी उन्हें एकांकी नहीं कहा जा सकता। सम्पूर्ण गीति नाटकों को इसमें ग्रहण कर लिया गया है चाहे उनकी अंक संख्या एक से अधिक न हो। ऐसे अनेक नाटक उपलब्ध हुए जिनमें दृश्य के स्थान पर सीन, पट, पर्दा, झाँकी, यवनिका आदि शब्दों का प्रयोग

किया गया है। दृश्य के लिए जहाँ पर जो शब्द मिला हमने उसी का प्रयोग उचित समझा। पाठकों को उन शब्दों से दृश्य का ही अर्थ समझना चाहिए। कहीं-कहीं पदों का प्रयोग अक के लिए भी किया गया है।

रगमच-निर्देशक की सुविधा के लिए घटनास्थलों का सकेत कर दिया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि निर्देशक नाटक का चयन करते समय दृश्य विधान के लिए अपनी व्यवस्था बना सके। अनेक दृश्यो मे जहाँ एक ही प्रकार का दृश्य-विधान मिला वहाँ उसकी बार-बार पुनरावृत्ति नही की गई है। कारण यह है कि निर्देशक को बार-बार वैसे दृश्य विधान के लिए नई व्यवस्था नही करनी होती। अत उनकी पुनरावृत्ति अनावश्यक समझी गई।

कथानक से पूर्व नाटक का कथ्य इस उद्देश्य से दिया गया है ताकि अभिनय के लिए नाटक का चयन करते समय चयनकर्ता को अपनी आवश्यकता के अनुसार सुविधा हो जाए। यदि कोई सामाजिक नाटक खेलना चाहता है तो उसे कथ्य की दो-चार पक्तियो से ही नाटक की मूल प्रवृत्ति का ज्ञान हो जाएगा। हास्य व्यग्य का नाटक खेलना हो तो उसे गम्भीर ऐतिहासिक या पौराणिक नाटकों की कथावस्तु से उलझना न पडेगा। कथ्य से नाट्य प्रकार और नाट्योद्देश्य का शीघ्र ही बोध हो जाएगा और चयनकर्ता अनावश्यक श्रम से बच जाएगा।

कथावस्तु का सक्षिप्त विवरण इस कोश की अपनी विशेषता है। कथावस्तु का विस्तार निर्णय करने मे हमने कतिपय सिद्धान्तो को अपनाया। पहला सिद्धान्त यह था कि अति प्राचीन एव अनुपलब्ध नाटको की कथावस्तु इतने विस्तार के साथ दे दी जाए कि उनका पूरा चित्र पाठक की दृष्टि के सामने आ जाए। अत कथा की प्रत्येक घटना का विवरण क्रमानुसार देने का प्रयास किया गया। इस प्रकार पाठक को मूलकथा सहज ही समझ मे आ जाएगी। कथावस्तु के विस्तार से नाटक की महत्ता का अनुमान लगाना उचित न होगा। प्राचीन और अति प्राचीन नाटक आज की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भले ही न हो किन्तु उनका ऐतिहासिक महत्त्व अवश्य है। इसीलिए उनको विस्तृत रूप मे देकर शेष नाटको की कथा सक्षिप्त रूप मे दे दी गई। इसका यह अर्थ नहीं है कि जिस नाटक की कथा विस्तार से दी गई है वह अधिक महत्त्वमय है और जिसे सक्षेप मे लिखा गया वह महत्त्व-रहित है। शिव-पार्वती की कथा के आधार पर अनेक नाटक लिखे गए हैं जिनमे सबसे पुराना हर-गौरी-विवाह नाटक सवत् १६८० के आस-पास का मिला। यह राजा जगज्ज्योतिमल्ल के राज्यकाल की रचना है और इसे राजदरबार मे खेला गया। इस कोश मे उसकी कथा विस्तार से दी गई है। जिन नाटको मे कथा परिवतन का सकेत मिला उनकी कथावस्तु को भी कुछ विस्तार के साथ लिखा गया। सभव है कि कथावस्तु मे एकरूपता का अभाव कहीं-कहीं पाठको के मन मे खटके। हमारा उद्देश्य कथावस्तु के विवरण मे एकरूपता लाना है भी नहीं और यह सभव भी नहीं था। साढे छ सौ वर्षों मे विरचित दो सहस्र मे अधिक नाटक, नाट्य-देवता की विस्तृत यात्रा के पद चिह्न मात्र हैं। हमारा उद्देश्य उस लम्बी यात्रा पर

एक विहंगम दृष्टि डालता है। पदचिह्न की एक-एक सूक्ष्म रेखा का अवलोकन न तो संभव है और न अनिवार्य ही। जितने नाटक हमें उपलब्ध हुए हैं, उनसे कहीं अधिक संख्या में अतीत के गर्त में विलीन हो गए होंगे। हमारा मुख्य ध्येय यही रहा है कि नष्ट प्राय कृतियों को विस्मृति के अन्धकार से निकाल कर किसी प्रकार प्रकाश में रखा जा सके। यदि प्रत्येक नाटक की कथावस्तु का विस्तार से विवरण दिया जाता तो इस कोश का कलेवर न जाने कितना दीर्घकाय हो जाता।

सबसे बड़ी समस्या नाटक के अभिनय काल और स्थान के अनुसंधान के विषय में सामने आई। यह तो निर्विवाद सिद्ध है कि किसी भी काल में विरचित सभी नाटकों का न कभी अभिनय हुआ और न होगा। यद्यपि नाटक रंगमंच के लिए ही लिखा जाता है, पर सभी नाटकों को रंगमंच की शोभा से सुसज्जित होने का सौभाग्य मिलता रहा है। जिस प्रकार उपवन में नाना प्रकार के फूल खिलते हैं पर कोई राजा-रानी के मस्तक पर सुशोभित होकर दर्शकों को चमत्कृत करता है और कोई किसी शव के ऊपर रख कर भस्म कर दिया जाता है। इसी प्रकार एक ही समय में विरचित अनेक नाटकों में किसी-किसी को रंगमंच पर सुशोभित होने का सौभाग्य मिलता है। अधिकांश वीरान कब्रिस्तान में दफना दिये जाते हैं। किन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि देश-काल के अनुसार प्रत्येक नाट्यकृति का अपना महत्त्व है।

नाट्य समीक्षा : मैंने देखा कि Encyclopaedia of World Drama में प्रत्येक नाटक की समीक्षा भी दी गई है। इसी शैली पर प्रत्येक नाटक की समीक्षा तैयार की, पर यह पांडुलिपि असाधारण बन गई। हमने इस प्रश्न को परामर्श समिति के सामने रखा। मित्रों से भी परामर्श किया। अन्त में यही निर्णय हुआ कि कथावस्तु ही से सन्तोष करना चाहिए। समीक्षा से कोश का कलेवर बहुत बढ़ जाएगा। हमने समीक्षा-संबंधी सामग्री संकलित कर ली है। यदि पाठकों का संकेत मिला तो आगामी संस्करण में प्रमुख नाटकों की संक्षिप्त समीक्षा भी संयुक्त कर ली जाएगी। यद्यपि समीक्षा से बचने का सर्वत्र प्रयास किया गया है तथापि जिन नाटकों में कोई नया क्रान्तिकारी प्रयोग मिला है उनका उल्लेख कर दिया गया है। मुझे जॉन गासनेर (John Gassner) की यह शैली आकर्षक प्रतीत हुई। उन्होंने ओ नेल के नाटक Strange Interlude (1928) के विषय में टिप्पणी देते हुए लिखा है—

"In this play O'Neill was, if any thing, too explicit in his spoken and especially unspoken dialogue — that is, the asides with which the author outlined the true thoughts and sentiments of the characters at the risk of redundancy. There could well be two strongly contradictory opinions about the recourse to asides and while British Theatre historian Allardyce Nicoll found O'Neill's use of them "tedious and fundamentally undramatic", others found much to applaud in this type of 'interior monologue' which resembled James Jayce's stream of consciousness technique in ulysses. Strange Interlude

is too long and interest flags in the last two acts, but it commanded, as a dramatic novel and a character study, the interest of a large public grateful for an exacting and unconventional drama"

हमने भी यत्र-तत्र इसी शैली पर नूतन प्रयोग के कुछ संकेत कर दिए हैं। पाठकों को कथावस्तु की विभिन्नता पर आक्रोश न हो इसलिए यह उल्लेख कर देना आवश्यक समझा गया। इस देश की यह विलक्षणता है कि जहाँ युग-युग की नाट्य शैली बदलती रही है वहाँ एक ही युग में अनेक प्राचीन एवं नवीन शैलियाँ समादृत होती रही हैं। नटी और सूत्रधार का संवाद अब भी प्रचलित है।

यद्यपि रंगमंच को ध्यान में रखकर इसमें घटनास्थल और दृश्य-विधान का भी सामान्य संकेत कर दिया गया है पर यह कोश मूलत नाटक का साहित्यिक रूप ही पाठकों के सामने रखने के उद्देश्य से लिखा गया है। अत रंगमंचीय विवेचन की इसमें अधिक सम्भावना थी ही नहीं। रंगमंच के व्यवस्थापकों को इतना ही संकेत मिल सकता है कि किसी नाटक की प्रकृति और प्रवृत्ति क्या है? पुरुष और स्त्री-पात्रों की *संख्या क्या है? यवनिका की व्यवस्था में क्या कठिनाई होगी? दृश्य-विधान कैसे* बनाना होगा? इनके अतिरिक्त कथावस्तु का विस्तार देखकर अभिनय-काल का अनुमान लगाया जा सकता है। किसी नाटक का परिचय पढ़कर रंग-व्यवस्थापक को अपनी शक्ति और सीमा के अनुसार अभिनय के लिए नाटक चुनने में अवश्य सहायता मिलेगी।

यह कोश इस तथ्य को ध्यान में रखकर तैयार किया गया कि नाट्यानुभूति केवल रंगशाला में ही बन्द नहीं रहती। साहित्य के रूप में नाटक का अस्तित्व मन-प्रदेश की उस विस्तृत रंगभूमि तक व्याप्त है जहाँ अभिनेता और दर्शक, स्रष्टा और सृष्टि एक बन जाते हैं। नाटक की सफलता उस सिनेमा की तरह नहीं है जिसकी छटा सिनेमा-घर से निकलने के बाद ही धूमिल होने लगती है। जॉन गासनेर (John Gassner) और एडवर्ड रुइनर (Edward Ruiner) ने 'Encyclopaedia of World Drama' में इसी सिद्धान्त का समर्थन करते हुए लिखा है—

"The dramatic experience need not be limited to the theatre The existence of drama as literature testifies to the existence of that larger theatre of the mind in which one is both the actor and the audience, the created and the creator It is on this stage long after the insubstantial pageant of an 'evening at the theatre' has faded—that a play achieves its final reality"

जो नाटक पाठक की ऐसी मन स्थिति बनाने में सफल नहीं होता जिसमें पहुँच कर दर्शक और अभिनेता का भेद जाता रहता है, उसके अभिनय में चाहे अभिनेता अपने अभिनय नैपुण्य से दर्शक को घंटे-दो-घंटे भले ही बाँधकर रख ले पर वह नाटक साहित्य के क्षेत्र में गरिमा का अधिकारी नहीं बन सकता। इस कोश में अनेक ऐसे महत्त्वमय प्राचीन नाटक मिलेंगे जिनकी ज्योति रंगमंच की जगमगाहट के बिना भी

शताब्दियों तक धूमिल नहीं हो पाई है। इसी तरह कितने ही ऐसे नए नाटक मिलेंगे जिनको एक बार रंगमंच पर देखने के उपरान्त उनका नाम लेने का मन नहीं करता। इधर बेकेट (Beckett) और ब्रेख्ट (Brecht) की शैली पर हिन्दी में ऐसे नाटक लिखे जा रहे हैं जिनमें मानसिक तनाव को अधिक से अधिक खींचने का प्रयास किया जा रहा है। ब्रेख्ट जहाँ सबसे अधिक महत्त्व थियेटर को देते थे वहाँ बेकेट 'प्ले' पर विशेष बल देते हैं। किन्तु दोनों शुद्ध और भाव व्यंजक भाषा के प्रयोग पर बल देते हैं। जब कोई रचना विजय-पताका जीतकर थियेटरहाल से बाहर निकलती है तो भाषा और साहित्य का सशक्त वाहन ही उसे दूर देशों की यात्रा कराने में समर्थ होता है। श्री रूबीकाह्न Ruby Cohn अपनी पुस्तक 'Contemporary Dramatists' की भूमिका में लिखते हैं—

"Through the tension of play, Beckett probes the bases of Western Culture—faith, reason, friendship, family. Through the skills of play, Beckett summarises human action, word and pause, gesture and stillness, motion rising from emotion. Brecht called audience attention to the theatre as theatre, Beckett calls attention to the play as play. But both of them agree in precision of language at the textural level, and in integration of verbal rhythms into an original scenic whole."

इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि नाटक में भाषा-सौन्दर्य और दृश्य-सौन्दर्य का दूध और मधु जैसा सम्बन्ध है। दोनों के मिश्रण से नाटक पूर्णतया आस्वाद्य बनता है।

अन्त में मैं दो शब्द इस कोश के निर्माण के सम्बन्ध में कहना चाहता हूँ। अमेरिका में नाटक कोश के निर्माण में लगभग एक सौ व्यक्ति नियुक्त किए गए जिन्होंने पाँच वर्ष अनवरत परिश्रम करके एन्साइक्लोपीडिया तैयार की। मेरे दस वर्ष सामग्री संकलन में व्यतीत हुए और चार वर्ष इसके प्रकाशन में लग गए। सन् 1970 के उपरान्त शताधिक नाटक और प्रकाशित हो गए हैं। कितने ही पुराने नाटक अब प्राप्त हो रहे हैं जिनका विवरण कोश में नहीं दिया जा सका है। एक-दो स्थल पर संवत् के स्थान पर सन् छप गया है जिसे हाथ से शुद्ध किया जा रहा है। बार-बार संशोधन एवं परीक्षण के उपरान्त भी कई त्रुटियाँ रह गई है जिनके लिए मैं पाठकों से क्षमा चाहता हूँ। अत्यल्प साधनों के होते हुए दुर्बल व्यक्ति ने इतना बड़ा बोझ उठा लिया और ज्यों-त्यों गन्तव्य स्थान तक इसे पहुँचा दिया। मार्ग में यदि कुछ बिखर गया तो उसमें मेरी विवशता थी। विवशता तो प्रत्येक कोशकार के ललाट में लिखी है। Johnson (जानसन) अपनी डिक्शनरी 'Dictionary of Language' की भूमिका में लिखते हैं—

"It is the fate of the writer of dictionaries to be exposed to censure without hope of praise, to be disgraced by miscarriage, or punished for neglect, where success would have been without applause, and diligence without reward "

हम यह कोश नाट्य देवता की आराधना मे पुष्पाञ्जलि स्वरूप प्रस्तुत कर रहे हैं। पुष्पाञ्जलि का महत्त्व उसके पुष्पो के सौन्दर्य और सौरभ से नही आँका जाता, वह तो आराधक की भावना पर निर्भर करता है, कहा जाता है कि देवता को अपनी स्तुति से अधिक अपने भक्त का गुणगान प्रिय है। इस कोश मे उन शताधिक अज्ञात नाट्योपासकों की कृतियों का गान है जिनको हिन्दी जगत विस्मृत कर चुका था। जिन नाट्यकारो को हम भूलते जा रहे हैं उन्होने नि स्वार्थ भाव से उस भीषण काल मे नाट्य-साधना की थी जब नाटक खेलना अपराध माना जाता था। आज शासन की ओर से नाट्यकार को पुरस्कार मिलता है, मध्यकाल मे सुल्तानो की दुत्कार एव फटकार मिलती थी। ऐसी स्थिति मे वह कौन-सी दैवी प्रेरणा थी जिसने साहित्यकारो को नाट्य रचना के लिए प्रेरित किया ? वह प्रेरणा थी आपत्ति काल मे भारतीय साहित्य, समाज और सस्कृति की रक्षा के लिए कुछ न कुछ कर जाने की। इसके लिए उन नाट्यकारो ने रामायण और महाभारत, स्मृति और पुराण के धार्मिक स्थलो को नाट्य कौशल से जन-जन के मानस मे बिठाने का प्रयास किया। धर्म मे निष्ठा लाने का सुन्दर साधन है धार्मिक नाटको का अभिनय। आज भी जोयस एम० पोल, आनद, जोन हेलन पाल, पादरी जे० वाल्टर्स ईसा मसीह तथा अन्य सतो के जीवन की कहानियों को भूम की सहभागिता, सतपाल, नामान, भक्त यिमयाह नामक हिन्दी नाटको के माध्यम से अर्द्धशिक्षित जनता तक पहुँचा रहे हैं। ये इसाई नाट्यकार जिस मिशनरी भावना से काम कर रहे हैं वही नि स्वार्थ भावना मध्यकालीन नाट्यकारो को प्रेरित कर रही थी। अन्तर यही है कि आज के इन मिशनरी नाट्यकारो को ईसाई शासको से प्रोत्साहन मिलता है, उस काल के नाट्यकारो के भाग्य मे था उपहास और भय। यह नाट्य कोश उन्ही भारतीय साहित्य, *समाज और सस्कृति के सच्चे पुजारियो की स्मृति को स्थायी बनाये रखने के उद्देश्य* से तैयार किया गया है। इसमे विभिन्न धर्मों, विभिन्न भाषाओ, विभिन्न सस्कृतियो एव विभिन्न कलाओं का सगम देखने को मिलेगा। सुधी पाठको से यही निवेदन है कि हिन्दी भाषा, भारतीय जीवन दर्शन और हिन्दी नाट्यकला को इसी व्यापक अर्थ मे ग्रहण करने की कृपा करें। हमारे पन्द्रह वर्षों के अनवरत श्रम का यही सबसे बडा पुरस्कार होगा।

—दशरथ ओझा

रामनवमी, सवत् 2032
एम० 119 ग्रेटर कैलास,
नई दिल्ली

आभार

प्राचीन नाटकों के सन्धान में देश के छोटे-बड़े प्रायः सभी पुस्तकालयों से हमें आशातीत सहायता मिली। नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता में श्री कृष्णाचार्य, श्री खन्ना के सहयोग से शताधिक नाटकों का विवरण लिखने में सरलता हो गयी। कलकत्ता जैसे महानगर में साहित्य-प्रेमी सम्पन्न व्यक्तियों ने अनेक पुस्तकालय स्थापित किए हैं जो हिन्दी ग्रन्थों के लिए सबसे अधिक समृद्ध हैं। जिस प्रकार भारतेन्दु युग की सर्वाधिक सामग्री नागरी प्रचारिणी सभा में उपलब्ध है उसी प्रकार द्विवेदी युग की अधिकांश पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाएँ हनुमान पुस्तकालय और जालान पुस्तकालय में विद्यमान हैं। शोधकर्ताओं को यहाँ प्रभूत सामग्री मिल सकती है। यहाँ के पुस्तकपाल अनुभवी और सहृदय व्यक्ति हैं। सबकी सहायता करने को प्रस्तुत रहते हैं। कलकत्ते के अन्य पुस्तकालयों में संगृहीत नाटकों का अनुशीलन करने में प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, पं० विष्णुकान्त शास्त्री से बड़ी सहायता मिली अतः मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ। डा० वीरेन्द्र श्रीवास्तव ने भागलपुर में कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह एवं डॉ० शिवनन्दन प्रसाद, डॉ० बटेकृष्ण ने गया में स्वर्गीय पं० रामप्रताप शास्त्री ने प्रयाग में, डॉ० कृष्णचन्द्र शर्मा ने मेरठ में, डॉ० सरनाम सिंह ने राजस्थान में, डॉ० चन्द्रूलाल दूबे ने कोल्हापुर में, प्रो० आनन्द प्रकाश दीक्षित ने पूना में, डॉ० विनय मोहन शर्मा ने मध्य प्रदेश में, श्री अगरचन्द नाहटा ने बीकानेर में डॉ० अम्बाशंकर नागर ने गुजरात में, डॉ० सिद्धनाथ कुमार ने राँची में डॉ० निर्मल ने आन्ध्र और कर्नाटक में अनेक प्राचीन नाटक उपलब्ध कराने में सहायता प्रदान की। अतः मैं अपने इन मित्रों का परम आभारी हूँ। असम के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० लेखारू और डॉ० महेश्वर नियोग का भी आभारी हूँ। विदेश में उपलब्ध 'कंसवध' नामक नाटक की प्रतिलिपि डॉ० भारत भूषण अग्रवाल से प्राप्त हुई। मैं उनकी उदारता का सदा ऋणी रहूँगा। श्री मुरारीलाल केडिया के निजी पुस्तकालय से अनेक अप्राप्य नाटक प्राप्त हुए। शोधकर्ताओं को इस पुस्तकालय में बहुत-सी अलभ्य सामग्री मिल सकती है। श्री केडिया का मैं बहुत ही उपकृत हूँ। कलकत्ते में अनेक शोध-

कर्ताओं ने टिप्पणी तैयार करने मे मेरी सहायता की। मैं उन सबका आभारी हूँ। जिन सहयोगी बन्धुओ, मित्रो और नाट्य-प्रेमियों ने इस कोश-कार्य मे नाटको की टिप्पणियाँ तैयार कर मेरी सहायता की है उन का मैं हृदय से आभार मानता हूँ। उनकी टिप्पणियों के आधार पर मुझे कथावस्तु एव कथ्य लिखने मे बडी सुविधा हो गई। न्यूनाधिक सौ नाटकों की टिप्पणियाँ मित्रों ने तैयार करने की कृपा की। प्रारम्भ मे विचार यही था कि जिनकी टिप्पणियो के आधार पर नाटक का विवरण तैयार करूँ, उनका नाम उस नाटक के नीचे दे दूँ पर दो सहस्र नाटको में एक सौ से भी कम नाटको की टिप्पणियाँ मित्रो द्वारा तैयार हुई। उनमे भी कभी-कभी एक ही नाटक पर कई लेखको की टिप्पणियाँ आईं। दुष्प्राप्य नाटको पर कोई लिखने को तैयार नहीं हुआ। अत उन्नीस सौ नाटको पर स्वत कार्य करना पडा। इसलिए नाटक के अन्त मे नाम देने का विचार त्यागना पडा। इन एक सौ नाटको मे सबसे बडी सख्या मैथिल प्रो० डॉ० प्रेमशकर सिह की है। इन्होने मिथिला के नवीन नाटको का सग्रह कर पूरी टिप्पणी तैयार की। उनके अभिनय काल और स्थान का पता लगाया। प्रो० सिह के सहयोग के बिना मिथिला के आधुनिक नाटको का पता लगाना सम्भव नही था। अत मैं उनकी कृपा का अत्यन्त आभारी रहूँगा।

श्रीमती शशि शर्मा ने गीति नाट्यो पर स्वय शोध-कार्य किया है। इन्होंने अधिकाश गीति नाटको की टिप्पणियाँ तैयार की। उनके सहयोग का मैं बहुत ही आभारी हूँ। डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल ने कॉलिजो मे उपलब्ध प्राचीन नाटको को खोजकर उन पर टिप्पणियाँ बडे ही उत्साह और मनोयोग से तैयार की और श्री महेशानन्दन ने आधुनिक नाटको के अभिनय काल के विषय मे विशेष प्रयास करके कतिपय नाटको की टिप्पणियाँ लिखी। हमारे सहयोगी बन्धु डॉ० शान्तिस्वरूप ने रूपरेखा बनाने मे बडे ही उपयोगी सुझाव देकर कई नाटको का प्रारूप तैयार किया। डॉ० लक्ष्मीनारायण भारद्वाज की दृष्टि बडी व्यापक है। उन्हें मराठी भाषा का भी अच्छा ज्ञान है। महाराष्ट्र मे कतिपय नाटको का पता उन्हीं के श्रम से मिला। अत मैं इन मित्रो का विशेष रूप से आभारी हूँ।

समय समय पर परामर्श मडल के सदस्यो का सुझाव मिलता रहा। डॉ० सुरेश अवस्थी ने पाडुलिपि को दोबारा सगीत नाटक की विशेषज्ञ समिति के सम्मुख रखकर बहुत ही उपयोगी सुझाव देने की कृपा की और अकादमी से आर्थिक सहायता दिलाई। अत मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ।

मैं निम्नलिखित टिप्पणी-लेखको का परम कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अपने व्यस्त जीवन मे समय निकाल कर कतिपय नाटको के सम्बन्ध मे आवश्यक सूचनाएँ एकत्र करने की कृपा की। डॉ० अनिल उपाध्याय (दिल्ली), कचन श्रीवास्तव (प्रयाग), श्री कामता प्रसाद कमलेश (अमरोहा), डॉ० कैलासपति ओझा, डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल, श्री घनश्याम शर्मा (दिल्ली), डॉ० छविनाथ पाण्डेय

(मिरजापुर), डॉ० पुष्पा सुरेजा (पंजाब), डॉ० प्रेमशंकर सिंह (भागलपुर), श्री महेशानन्द (दिल्ली), डॉ० सांधाना ओझा (दिल्ली), मीरा सम्बष्ट (कलकत्ता), देवरी वर्मा (कलकत्ता), डॉ० आर० पी० तिवारी (सागर), डॉ० रामजन्म शर्मा (हिन्दू वि० वि०), डॉ० लक्ष्मीनारायण भारद्वाज (दिल्ली), बागीशदत्त तिवारी (कलकत्ता), श्रीमती विभा श्रीवास्तव (मेरठ), डॉ० शशि शर्मा (दिल्ली), डॉ० श्याम तिवारी (काशी विद्यापीठ), डॉ० सुरेश शुक्ल (दिल्ली)।

संकलित सामग्री को प्रेस के लिए संयोजित करने में श्री घनश्याम शर्मा, श्री कामता कमलेश ने मेरी अहर्निश सहायता की है। डॉ० रामजन्म शर्मा का आद्योपान्त सहयोग सराहनीय रूप से रहा है। मैं अपने इन सहयोगियों का किस प्रकार ऋण चुका सकूँगा। हमारे लिए दो सहस्र नाटकों का कोश प्रस्तुत करना बड़ा दुष्कर कार्य था। उसका प्रकाशन तो और भी कठिन था। नेशनल पब्लिशिंग हाउस के संचालक श्री कन्हैयालाल मलिक तथा श्री सुरेन्द्र मलिक ने उसके प्रकाशन का भार बड़े उत्साह से वहन किया। पाण्डुलिपि में अनेक बार परिवर्तन करने से मुद्रण की कठिनाई बहुत बढ़ गई। मैं अनेक बार अन्तिम प्रूफ में भी परिवर्तन करता रहा। श्री सुरेन्द्र मलिक और श्री पद्मधर त्रिपाठी मेरी असावधानी से उत्पन्न कठिनाइयों को मौन भाव से सहते रहे। त्रिपाठी जी सम्पादन-कला में दक्ष हैं। उनकी सूझबूझ से ग्रन्थ का रूप निखर आया। मैं इन सब का अत्यन्त आभारी हूँ।

परामर्श समिति के सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करना मेरा परम कर्तव्य है। मुझे समय-समय पर इन मित्रों के सुझावों से बड़ी सहायता मिली है। प्रो० श्री जगदीशचन्द्र माथुर और देवेन्द्रनाथ शर्मा इस कार्य के लिए सदा प्रेरणा प्रदान करते रहे। कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह का सहयोग पग-पग पर मिलता रहा। डॉ० दासगुप्ता, प्रो० उमाशंकर जोशी, प्रो० हरबजनसिंह की विशेष कृपा रही। अतः मैं इन मित्रों का परम आभारी हूँ।

—दशरथ ओझा

हिन्दी नाटक कोश

अ

अगारों की मौत (सन् १९६१, पृ० १९९), ले० शम्भूदयाल सक्सेना, प्र० मुक्तवाणी प्रकाशन, बीकानेर, पात्र पु० १६, स्त्री २, अक ३, दृश्य ४,६,७।
घटना स्थल धानपुर, आगरा, लाहौर, कलकत्ता, दिल्ली, नई दिल्ली, शिमला, इलाहाबाद।

यह राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत ऐतिहासिक नाटक है। इसमे भारतीय क्रान्ति का चित्र है जिसमे सन् १९२४ से ३१ तक की घटनाओ का समावेश है। स्वतन्त्रता के पुजारियो की क्रान्ति को दबाने के लिए अग्रेज सरकार कई षड्यन्त्र रचती है किन्तु वह क्रान्तिकारियो का दमन करने मे असफल रहती है।

इस नाटक मे आजादी के पुजारियो को नाना यातनाएँ सहनी पडती है परन्तु वे सरकार के आगे कभी नही झुकते। स्वतन्त्रता के दीवाने भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु हँसते हँसते फाँसी के तख्ते पर चढ जाते है। इन देश-प्रेमियो की कुर्बानी से अग्रेज सरकार भी काप उठती है। इस नाटक के सवाद पढकर 'लुई माइकेल' स्मरण हो आते हैं—"स्वाधीनता के लिए तडपने वाले हृदयो को केवल एक ही अधिकार मिलना है—गोली की शक्ल मे सीसे का टुकडा।"

नाटक मे चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, गुरुदेव और सुखदेव के बलिदान पुकार-पुकारकर इस बात की घोषणा करते है कि "हमारे रक्त की एक-एक बूद अग्रेज सरकार से बदला लेकर रहेगी।" यही नाटक समाप्त हो जाता है। नाटक समाप्त होने पर देशभक्तो के बलिदान आँख के सामने नाचने लगते हैं। भगतसिंह का फासी के लिए जाना, जनता के 'इन्क्लाब जिन्दाबाद' के नारे तथा भगतसिंह के पिता किशनसिंह का करुण रुदन हृदय पर अमिट छाप छोड जाते हैं।

अगुलिमाल (सन् १९५१), ले० केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', प्र० ज्ञानपीठ प्रा० लि०, पटना ४, पात्र पु० ३, स्त्री १, दृश्य ४।
घटना स्थल जगल, घर, बिहार।

'अगुलिमाल' बौद्धकालीन कथा पर आधारित एक ऐतिहासिक गीतिनाट्य है। अगुलिमाल एक नृशस हत्यारा है, जिसकी प्रतिज्ञा है कि वह नर-नारियो की एक सहस्र अगुलिया की माला पहनेगा। इस सकल्प-पूर्ति हेतु अगुलिमाल असख्य निरपराध व्यक्तियो की हत्याएँ करता है। यहाँ तक कि अपनी माता पर प्रहार के लिए तत्पर हो जाता है, जो गीतिनाट्य की भावात्मक एव चरम स्थिति कही जा सकती है। उसके इन कृत्यो से सारी प्रजा त्रस्त है। एक दिन भगवान् बुद्ध इधर आते हैं और अगुलिमाल को उसकी पाशविक वृत्तियो का दर्शन कराते हैं। उसे प्राणि-मात्र पर दया करने का उपदेश देते हैं। परिणामस्वरूप अगुलिमाल को आत्मज्ञान प्राप्त हो जाता है। वह बौद्ध धर्म मे दीक्षित हो जाता है। पाच दृश्यो के इस कथानक मे गीति-नाट्यकार ने हृदय परिवर्तन के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। गीतिनाट्य के प्रारम्भ मे जो अगुलिमाल हिंसा की साक्षात मूर्ति के रूप मे प्रस्तुत होता है, अन्त मे वही अहिंसा के पुजारी बौद्ध भिक्षु के रूप मे दर्शको की सहानुभूति का पात्र बनता है। इस प्रकार अगुलिमाल के चरित्र के दोनो पक्षो मे उसके पूर्ण व्यक्तित्व का दर्शन होता है।

अगूर की बेटी (सन् १९३७, पृ० ११६), ले० गोविन्दवल्लभ पत, प्र० गगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, पात्र पु० ७, स्त्री १, अक ३, दृश्य ४,७,४।
घटना-स्थल घर, कम्पनी।

पत्नी पर अत्याचार करनेवाले शराबी पति का सुधार नारी के पातिव्रत द्वारा दिखाने वाला सामाजिक नाटक है। मोहनदास शराबी अपनी पत्नी कामिनी का आभूषण छीनकर उसे पीटता है। मोहनदास की जेब से आभूषण चुराकर मित्र माधव अपने पास रखता है। दोनों में झगड़ा होता है। कामिनी के सुझाव पर मैनेजर थोड़ी शराब में पानी मिलाकर पिलाता है। क्रमशः उसकी शराब की आदत छूट जाती है। पत्नी कामिनी अपने पति की रक्षा करती है।

अंजना (सन् १९२१,पृ०१८८), ले०: सुदर्शन; प्र०: नाथूराम प्रेमी, बम्बई. पात्र : पु० ११, स्त्री ९; अंक : ५, दृश्य : ६, ५, ७, ६, ५ । घटना-स्थल : जंगल, युद्धभूमि ।

दुःख से ओतप्रोत इस सामाजिक नाटक में अंजना और पवनंजय की प्रेम-कथा वर्णित है। अंजना पतिव्रता नारी है जो अपने पति के देश-प्रेम के कार्यों में बाधक नहीं बनना चाहती। विपन्नावस्था में उसे अरण्य-प्रदेश में भी शरण लेनी पड़ती है। उस समय अन्य व्यक्तियों की—पति के देश-प्रेम के मार्ग में बाधा डालने की—मंत्रणा को ठुकराकर कहती है—"वे इस समय युद्धभूमि में यश-प्राप्ति का कार्य कर रहे हैं, देश की सेवा कर रहे हैं, संसार में अपने देश का सिर ऊँचा कर रहे हैं, मैं जाकर उनके हृदय को दूसरी ओर कर दूँगी तो सारा काम चौपट हो जायेगा। उनके अद्वितीय बल में न्यूनता आ जायेगी, पराक्रम थोड़ा हो जायेगा। मैं यह पापकर्म नहीं कर सकती। अपने सुख पर देश और जाति के सुख को निछावर नहीं कर सकती। इसी निर्जन वन में मैं भी दुःख और कष्ट सहूँगी।"

वह शत्रु की कल्याण-कामना करती है। और अन्त में पति-मिलन के साथ सुख-शान्ति से जीवन व्यतीत करती है।

अंजना-सुन्दरी (सन् १९५७, पृ० २२६), ले०: कन्हैयालाल; प्र० : वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई; पात्र : पु० २०, स्त्री ७; अंक : ५, दृश्य : ३, ३, ७, ५, ५ ।
घटना-स्थल : उद्यान, राजप्रासाद, युद्धक्षेत्र ।

इस सामाजिक नाटक में हनुमान की माता अंजना के सतीत्व का परिचय मिलता है। अपनी पुत्री कन्या अंजनासुंदरी के योग्य वर के लिए चिन्तित राजा महेन्द्र मन्त्रियों से परामर्श करते हैं। प्रह्लाद के पुत्र पवनंजय से ही विवाह करने का निश्चय होता है। इसी बीच अंजना के सम्मुख विद्युत्प्रभ की प्रशंसा होती है जिसे वह बिना प्रतिवाद किये मौन-भाव से सुन लेती है। इससे पवनंजय के मन में अंजना के प्रति शंका उदय होती है। फलतः वह उससे विवाह करने की इच्छा त्याग देता है। किन्तु दोनों के अभिभावकों के प्रयास से अंजना-पवनंजय का विवाह हो जाता है। इससे पवनंजय दुःखी रहने लगता है और अंजना को देखना भी पसंद नहीं करता। इसके ठीक विपरीत अंजना उससे प्रेम करती है। परन्तु उपेक्षा से दुःखी हो जाती है और शृंगार के प्रसाधन त्याग कर तपस्विनियों का-सा जीवन व्यतीत करती है।

अपने बहनोई खर-दूषण को वरुण के बंदीगृह में पड़ा हुआ सुन रावण उसके विरुद्ध युद्ध की तैयारी करता है और प्रह्लाद की सहायता के लिए पत्र लिखता है। पवनंजय पिता के बदले स्वयं जाने की इच्छा प्रकट करता है। वह अपने साथ प्रहस्त को भी ले जाना चाहता है जो अंजना के सतीत्व का प्रशंसक है और पति-पत्नी में पूर्ववत् प्रेम-संबंध स्थापित करने का इच्छुक है। पति के युद्ध में जाने का समाचार पाकर अंजना, अपने पति को रण-कंकण बाँधने के लिए जाती है किन्तु पति द्वारा प्रताड़ित एवं अपमानित होकर दुःख से अचेत हो जाती है।

युद्ध-शिविर में पहुँचने पर वहाँ की प्राकृतिक छटा से परिष्कृत पवनंजय के मन में एकाएक अंजना के साथ किये गये अपने दुर्व्यवहारों के प्रति क्षोभ उत्पन्न होता है और प्रहस्त के परामर्श से वह पत्नी से मिलने जाता है। क्षमाप्रार्थी स्वामी का श्रद्धापूर्वक स्वागत करके अंजना रात-भर उसकी सेवा में रहती है। प्रातःकाल पुनः रण-स्थल को प्रस्थान की तैयारी करते समय वह उसके हाथों में रण-कंकण बाँध देती है, परन्तु उसके आने-जाने का समाचार किसी को ज्ञात नहीं होने पाता।

उधर अंजना गर्भवती हो जाती है। इस समाचार से राजा प्रह्लाद और रानी केतु-

मती को अजना के प्रति दुराचरण की शका होती है, क्योंकि वे जानते हैं कि पवनजय उससे बात करना भी नहीं चाहता। अजना के स्पष्टीकरण करने पर भी पवनजय के मात-पिता उसे अपमानपूर्वक महल से निकाल देते हैं। निर्वासिता अजना पिता के यहाँ भी अपने तथाकथित अपराध के कारण तिरस्कृत हो भटकती हुई अन्त मे अपनी सखी वसन्तमाला को साथ लेकर कष्टो का सामना करती है। मामा प्रतिसूर्य सन्तानवती अजना की रक्षा करता है। प्रतिसूय उसे उठाकर विमान द्वारा घर पहुँचते हैं। अब प्रतिसूय और प्रहस्त के सौजन्य से अजना के सतीत्व और पवनजय का अजना के प्रति प्रेम का समाचार सबको विदित हो जाता है। अन्त मे अजना के पावन चरित्र और निष्कलक जीवन का रहस्य खुल जाता है। पती-पत्नी एक-दूसरे से प्रेमपूर्वक मिलते हैं। पवन की कदरा मे पैदा होने तथा हनुरुहद्वीप में जन्मोत्सव मनाये जाने के कारण अजना के पुत्र का नाम क्रमश शैल्य और हनुमान् पडता है।

अंजो दीदी (सन् १९५६, पृ० ११७), ले० उपेन्द्रनाथ अश्क, प्र० नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र पु० ४, स्त्री ३, अक २। *घटना-स्थल* घर, कक्ष।

इस सामाजिक नाटक मे अंजो दीदी का कठोर अनुशासन दिखाया गया है, जिसे उसके वकील पति, पुत्र नीरज, नौकर-चाकर सभी स्वीकार लेते हैं। वह चाहती है कि उसके घर का प्रत्येक काय घडी की सुई के आदेश से चले। वह पूरे घर को साँचे मे ढाल लेती है। उसका यह प्रभाव उसके भाई श्रीपति द्वारा भग होता है। अंजो दीदी का कठोर नियत्रण पति और पुत्र दोनो के जीवन को विकृत कर देता है। उसका पति छिपकर शराब पीने लगता है और पुत्र स्वच्छन्दता से मदिरा का सेवन करता है। उसकी पुत्रवधू उसकी अनिवादिता का समर्थन करती है। अंजो दीदी की दमित इच्छाओ की अभिव्यक्ति उसके कठोर नियत्रण द्वारा होती है। उसकी मृत्यु के तीन वर्ष बाद तक उसके कठोर अनुशासन की छाया कोठी मे व्याप्त है। तथा उसका अह सारे घर को अनुशासित करता रहता है।

३० जनवरी १९५४ को बम्बई सेंट जेवियर्स द्वारा अभिनीत।

अंडर सेक्रेटरी (सन् १९५८, पृ० ११८), ले० रमेश मेहता, प्र० वसन्त प्रकाशन, नई दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, अक ३। *घटना स्थल* एक सुसज्जित घर।

इस सामाजिक नाटक मे एक साधारण घराने की महिला सरोज की प्रदर्शन-प्रवृत्ति का परिणाम दिखाया गया है। चाँदनारायण भटनागर एक असिस्टेंट क्लर्क हैं। सरोज उनकी पत्नी है। सरोज की सहेली पुष्पा अपने वस्त्रविक्रेता पति मि० वर्मा को डाइरेक्टर बताती है। इसलिए सरोज भी अपने पति को अण्डर सेक्रेटरी के रूप मे प्रस्तुत करती है और किराये के सामान लाकर अण्डर सक्रेटरी के उपयुक्त अपना मकान सजाती है। वह नौकर से साहब और मेम साहब कहने का अभ्यास कराती है। सायकाल लौटने पर चादनारायण घर की सजावट देखकर अवाक् रह जाता है। सरोज विस्तार से उसके अण्डर सेक्रेटरी होने का कारण बताते हुए कहती है कि सहेली से उसकी प्रतिस्पर्धा है। वह किशोर से अण्डर सेक्रेटरी और अपने पति से नौकर बाबूराम का ऐक्ट करने का आग्रह करती है। पुराने नौकर को तीन महीने का अवकाश दे देती है। इस प्रकार सरोज सारे घर के सामान के साथ पात्रों की कायापलट करने को तैयार हो जाती है।

द्वितीय अक मे मि० वर्मा और पुष्पा सरोज के घर पर आते हैं जहाँ उनका स्वागत-सत्कार होता है। नौकर का पार्ट करने वाले चाँदनारायण कहीं-कहीं आवश्यकता से अधिक प्रदर्शन कर बैठते है, जिसे किशोर डाँट-फटकार और प्रसग बदल कर सभाले रहता है। इसी मध्य सूरजनारायण आ जाते हैं। उनका परिचय पागल के रूप में दिया जाता है। वहाँ पर हास्य-विनोद का सुन्दर वातावरण बनता है और मि० वर्मा तथा पुष्पा भयभीत भी होते हैं। मिस कान्ता भी आती है और भेद खुलते-खुलते बच जाता है।

तृतीय अक रहस्योद्घाटन का है। सूरजनारायण अपने भतीजे चाँदनारायण को

रोते देख उसे फटकारता है और पत्नी की सरलता को उसकी दुर्दशा का कारण समझ-कर सतर्क रहने की सलाह देता है। चाँदनारायण का स्वाभिमान जगता है। वह निर्णय भी कर लेता है परन्तु सरोज सूरज-नारायण को समझाकर पुन. अपने मार्ग पर लाती है। पर नाटक के अन्त में सभी एक-दूसरे को पहचानते हैं। मि० वर्मा उनके पुराने मित्र निकलते हैं जो अपने को कपड़े का दुकानदार बताते हैं। चाँदनारायण के भी असिस्टेंट क्लर्क होने का रहस्य खुल जाता है। किशोर का कान्ता से परिणय हो जाता है। दोनों की पत्नियाँ भेद खुलने के आघात के कारण मूर्छित हो जाती हैं और दोनों के पति उन्हें सँभालते हैं।

अंतःपुर का छिद्र (सन् १९४०, पृ० ८१), ले०: गोविन्दवल्लभ पंत; प्र०: गंगा ग्रन्थागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ; पात्र : पु० ६, स्त्री ५; अंक : ३, दृश्य : ३, ३, ६।
घटना-स्थल : कौशाम्बी का राजगृह, रानी का कक्ष, बौद्ध विहार।

इस ऐतिहासिक नाटक में राजा उदयन की पत्नी पद्मावती को आदर्श पत्नी के रूप में दिखाया गया है। इसका नायक कौशाम्बी का राजा उदयन है। उसकी राज-महिषी पद्मावती भगवान् अमिताभ से प्रभावित हो, उनका दर्शन करना चाहती है। वह राज-प्रासाद की दीवार में कटार से एक छिद्र कर लेती है जो राजपथोन्मुख है, जिससे अमि-ताभ का दर्शन सरलता से हो सके। दूसरों की दृष्टि से इस तथ्य को छिपाने के लिए उस पर उदयन का चित्र रख देती है। उसी समय अमिताभ से घृणा करने वाली रानी मागंधिनी उसके कक्ष में आकर कहती है, "पद्मावती, तुम न भूलो होगी। इस संन्यासी से जितनी दूर जाना चाहती हूँ यह उतना ही निकट खड़ा दिखायी देता है। तुम दीवार में छिद्र कर उसे राजभवन के भीतर भी लाना चाहती हो। सिद्धार्थ ने एक बार मागंधिनी से विवाह-प्रस्ताव अस्वीकार करते हुए उसका अपमान किया है, तभी से उसका बदला लेने के लिए व्यग्र है।"

बदला लेने के लिए आतुर मागंधिनी उदयन से छिद्र का रहस्य उद्घाटित करती है और दीवार-छिद्र दिखाकर अपनी बात की पुष्टि करती है। यहीं उदयन के अन्त:-करण में पद्मावती के प्रति सन्देह जन्म ले लेता है। मागंधिनी, पद्मावती के मान-मर्दन के लिए मालिन के साथ योजना बनाती है। वह मालिन से सर्प मँगाकर उदयन की वीणा में रख देती है। यह वीणा पद्मावती ने ही भेंट में राजा को दी थी। उदयन के वीणा-वादन करते ही सर्प बाहर निकल आता है। उसी समय मागंधिनी आकर सर्प को बर्तन से ढक देती है और पद्मावती को दोषी घोषित करती है। उदयन आग-बबूला होकर, सिद्धार्थ को राज्य-निर्वासित करने तथा पद्मावती को प्राण-दण्ड देने का संकल्प करता है। उदयन के जाने के बाद कुटिल मागंधिनी मालिन को सर्प पकड़ने के लिए बुलाती है। उदयन छिद्र से दर्शन करती हुई पद्मावती को तीर मारता है, जो छिद्र से बाहर निकल जाता है। स्वामी का उद्देश्य समझकर पद्मावती छिद्र के समक्ष खड़ी होकर पुन. शरसंधान के लिए विनय करती है। राजा के तीर चढ़ाते ही मालिन आकर सर्प-घटना का रहस्योद्घाटन करती है। उसी सर्प के डसने से मागंधिनी मर जाती है। उदयन अपने भ्रम का निवारण करते हुए पद्मावती-सहित गौतम की शरण में चले जाते हैं। अमिताभ सप्रेम उन दोनों को अपने संघ में सम्मिलित करते हैं।

अंतिम सम्राट् (विक्रमी २०१६, पृ० १५१), ले० : ओंकारनाथ दिनकर; प्र० : ओरियण्टल बुक डिपो, दिल्ली; अंक : ३, दृश्य : ५, ५, ४।
घटना-स्थल : राजभवन, युद्ध-क्षेत्र

इस ऐतिहासिक नाटक में पृथ्वीराज की अद्भुत वीरता तथा मुहम्मद गोरी के क्रूर आक्रमणों का वर्णन है।

नाटक का आरम्भ पृथ्वीराज की माता कर्पूर देवी द्वारा श्वसुर एवं पति की मूर्तियों के समक्ष प्रार्थना से होता है। राजगुरु रामदास सामन्तों से विचार-विमर्श के उप-रान्त युवराज पृथ्वीराज को राज्याधिकार सौंप देते हैं। पृथ्वीराज के सिंहासनारूढ़ होते

ही युद्ध के बादल घहराने लगते हैं। चालुक्यराज भीम, परमार-राज की द्वितीय पुत्री इच्छनी से विवाह करना चाहते हैं, परन्तु वह पहले ही पृथ्वीराज को मन से वरण कर चुकी है। उक्त वैवाहिक प्रसग पर ही चालुक्यराज परमार-राज पर आक्रमण करता है। महाराज पृथ्वीराज को इच्छनी-लग्न के साथ-साथ युद्ध का सदेश भी मिलता है। युद्ध मे परमार-राज की पराजय होती है, परन्तु विजयी चालुक्यराज इच्छनी कुमारी को प्राप्त करने मे सवदा असफल रहता है। हताश चालुक्यराज महाराज पृथ्वीराज के हाथो से पराजित होता है। दिल्ली पर मुगल बादशाह मोहम्मद गोरी के आक्रमण के पूर्वाभास से आतकित राजपूत-नरेश अनगपाल पृथ्वीराज को दिल्ली-अधिपति घोषित करता है। प्रारम्भ मे पृथ्वीराज मोहम्मद गोरी के प्रत्येक आक्रमण को सफलतापूर्वक विफल करता है, परन्तु सयोगिता से विवाह के उपरान्त अत्यधिक विलासी हो कत्तव्य से पराङ्मुख हो जाता है। पृथ्वीराज के बाल-सहचर कवि चन्द उन्हें कतव्य के प्रति सचेत बनाये रखने का प्रयत्न करते हैं। जयचन्द, चालुक्यराज और मुगल बादशाह गोरी की दुरभिसन्धि के कारण अतिम युद्ध मे पृथ्वीराज प्राणपण से लडने पर भी पराजित होकर युद्ध-स्थल मे ही कवि चद-सहित वीरगति को प्राप्त होते हैं।

अंधा कुँआ (सन् १९५६, पृ० १५८), ले० लक्ष्मीनारायण लाल, प्र० भारती भण्डार, लीडर प्रेस, प्रयाग, पात्र पु० १२, स्त्री ४, अक ८।
घटना-स्थल कमालपुर गाँव मे एक मकान का बरामदा, मकान का दुइदरा, आँगन, दुइदरा।

इस सामाजिक नाटक मे एक ग्रामीण स्त्री का जीवन पति और प्रेमी के साथ दो रूपो मे दिखाया गया है।

इस नाटक मे भगौती की पत्नी सूका अपने प्रेमी इन्दर के साथ भाग जाती है। भगौती मुकदमा लडकर सूका को घर ले आता है। घर लाकर सूका की बहुत दुर्दशा करता है। आत्महत्या करने के लिए सूका कुएँ मे कूदने पर भी बच जाती है। इन्दर सूका को लेने आता है परन्तु वह जाने से इनकार कर देती है। भगौती दूसरा विवाह करता है। दूसरी पत्नी अपने मगेतर के साथ चली जाती है। भगौती इन्दर को मारने जाता है किन्तु स्वय ही घायल होता है। सूका उसकी सेवा करती है। एक दिन इन्दर भगौती को मारने आता है, लेकिन वार सूका पर हो जाता है। भगौती प्रलाप करता है। इन्दर को सब लोग घेर लेते हैं। यही नाटक समाप्त हो जाता है।

अंधा युग (सन् १९५४, पृ० १३०), ले० धर्मवीर भारती, प्र० किताबमहल, इलाहाबाद, पात्र पु० १४, स्त्री १, अक ५।
घटना स्थल वनपथ।

इस गीति-नाट्य मे महाभारत-युद्ध के माध्यम से विश्व-युद्ध से उत्पन्न अनास्था, नैराश्य, एव विनाश का दृश्य उपस्थित किया गया है।

इसके प्रारम्भ मे स्थापना नतको की नमस्कार-मुद्रा और मगलाचरण से प्रारम्भ होती है। नर्तक नाट्य-कथा का सूत्रपात करते हुए कहते हैं—"युद्धोपरान्त यह अन्धा युग अवतरित हुआ।" इस युग मे कृष्ण के अतिरिक्त "शेष अधिकतर हैं अन्धे, पथभ्रष्ट, आत्महारा, विगलित, अपने अन्तर की अन्धगुफाओं के वासी, यह कथा उन्ही अन्धो की है, या कथा ज्योति की है अन्धो के माध्यम से।"

प्रथम अक मे कौरव नगरी पर अमगल-सूचक गिद्ध मँडरा रहे हैं। धृतराष्ट्र सजय से अठारहवें दिन के युद्ध का समाचार सुनने को उत्सुक हैं। पर वहाँ विदुर उपस्थित होकर इस कृष्ण-वचन का स्मरण दिलाते हैं 'मर्यादा मत तोडो।' इसे सुनकर गान्धारी आवेश मे आकर कहती है—"उसने कहा है यह, जिसने मर्यादा को तोडा है बार-बार।" गान्धारी को पूरा विश्वास है कि "जीतेगा, दुर्योधन जीतेगा।"

द्वितीय अक मे कृतवर्मा को सजय युद्ध का परिणाम बताते हैं कि "शेष नही रहा एक भी जीवित कौरव वीर।" इसी समय बूढे कृपाचार्य उपस्थित होकर सूचना देते हैं कि "जीवित हैं केवल हम तीन आज। और

राजा दुर्योधन को नतमस्तक हो पराजय स्वीकार करते देख अश्वत्थामा आर्तनाद करता हुआ वन की ओर चला गया।" अश्वत्थामा का अन्तर्द्वन्द्व जब चरम सीमा तक पहुँचता है तो वह वृद्ध भविष्य का गला घोंट देता है। कृपाचार्य सरोवर में छिपे दुर्योधन का संदेश सुनाकर अश्वत्थामा और कृतवर्मा को सुला, स्वयं पहरा देते हैं।

तृतीय अंक में संजय गांधारी और धृतराष्ट्र को यह कथा प्रातःकाल तक सुनाते हैं। मध्याह्न होते-होते एक करुणोत्पादक दृश्य उपस्थित होता है। वहाँ "नंचित रथ टूटे चक्रों पर लादकर ये लौट रहे, ब्राह्मण, स्त्रियाँ, चिकित्सक, विधवाएँ, बौने, बूढ़े, घायल, जर्जर।" गान्धारी-पुत्र युयुत्सु पांडवों के पक्ष में युद्ध करने के उपरान्त आहत कौरव सेना के साथ लौटकर माता गान्धारी के चरण छूता है किन्तु माता उसकी घोर भर्त्सना करती है। युयुत्सु दुःखी होकर विदुर से कहता है—"सबकी घृणा का पात्र हूँ।" उसी समय प्रहरी संजय द्वारा लाया संवाद सुनाते हैं कि राजा दुर्योधन द्वन्द्व-युद्ध में भीम द्वारा मारे गये। अश्वत्थामा कृपाचार्य को अपनी योजना बताता है कि शिविरों को जाते हुए पांडवों को मैं धोखे से मारूँगा। अश्वत्थामा कृतवर्मा और कृपाचार्य को समझाते हुए कहते हैं कि कृष्ण गांधारी को समझाने हस्तिनापुर गये होंगे, अतः पांडव-वध का अच्छा अवसर हाथ आया है। कृपाचार्य के रोकने पर भी अश्वत्थामा सोये हुए पांडवों के वध के लिए प्रस्थान करता है।

चतुर्थ अंक में गांधारी को संजय और विदुर विगत घटनाएँ सुनाते हैं। उसी समय अश्वत्थामा वहाँ पहुँचकर गांधारी, कृतवर्मा, कृपाचार्य से अपने प्रतिशोध की कथा कहता है। वह कहता है कि धृष्टद्युम्न का मैंने वध किया है अब "उत्तरा को कर दूँगा पुत्रहीन, कृष्ण चाहे सारी योगमाया से रक्षा करें।" अश्वत्थामा प्रतिशोध लेने जाता है किन्तु थोड़ी देर बाद लौटकर अपने गले से चुभा हुआ बाण निकालता है। उसी समय अर्जुन आ जाते हैं। उन्हें देखकर अश्वत्थामा ब्रह्मास्त्र छोड़ता है। अर्जुन भी अपना ब्रह्मास्त्र छोड़ते हैं। भयानक विस्फोट होता है। प्रलय का दृश्य उपस्थित होने पर धृतराष्ट्र युयुत्सु को समझाते हुए कहते हैं कि "कौन जाने, एक दिन युधिष्ठिर सब राजपाट तुमको ही सौंप दें।" इधर गांधारी आँख से पट्टी उतार अपने मृतक पुत्रों का शव देखकर कृष्ण को शाप देती है—"सारा तुम्हारा वंश पागल कुत्तों की तरह एक-दूसरे को परस्पर फाड़ खायेगा, तुम खुद—किसी घने जंगल में साधारण व्याध के हाथों मारे जाओगे।" कृष्ण गांधारी का शाप स्वीकार कर उसे समझाते हैं—"जब तक मैं जीवित हूँ, पुत्रहीना नहीं हो तुम।"

पंचम अंक में ब्रह्मास्त्रों से झुलसी धरती हरी-भरी होती है, युधिष्ठिर का अभिषेक सम्पन्न होता है। किन्तु भीम प्रलाप करते हुए युयुत्सु का अपमान करता है। गूँगा सैनिक उसे पत्थर फेंककर मारता है। युयुत्सु आत्महत्या कर लेता है। कृपाचार्य भविष्यवाणी करता है कि "यह आत्महत्या होगी प्रतिध्वनित इस पूरी संस्कृति में—शासन-व्यवस्था में—आत्मघात होगा बस अंतिम लक्ष्य मानव का।" दूत युधिष्ठिर को कृष्ण-मृत्यु की सूचना देता है। अश्वत्थामा सागरतट की रेती पर बिखरे यादव योद्धाओं के शवों का वर्णन करता है। परीक्षित को तक्षक डस लेता है। सर्वत्र दावाग्नि फैल जाती है। अश्वत्थामा अपने जीवन-अनुभव सुनाते हैं। मंच पर केवल एक वृद्ध जरा-व्याध बच जाता है।

अंधी गली (सन् १६५६, पृ० १५१), ले०: उपेन्द्रनाथ अश्क, प्र०: नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद; अंक ७।
घटना-स्थल: गली, कमरा, बाजार।

प्रस्तुत सामाजिक नाटक सरकारी वर्ग के भ्रष्टाचार के कारण जनता की छटपटाहट दिखाता है। नाटक का प्रारम्भ एवं अंत अंधी गली से होता है। अधिकारी अंधी गली में स्थित रामचरण के मकान को गिराकर गली को बाजार से मिलाना चाहते हैं, परन्तु इसके आगे स्थित कई मकानों का तोड़ना अनिवार्य है। म्युनिसिपैलिटी अपने दलगत स्वार्थों के कारण ऐसा नहीं कर

पानी। अंधी गली में कुछ मकानों में शरणार्थियों के बसने पर सरकारी अफसरों को सड़ांध आने लगती है, उनके लिए मकान बनने शुरू होते हैं परन्तु वे बरसात में बह जाते है और सारा पैसा ठेकेदारों, सरकारी अफसरों की जेब में पहुँच जाता है। रामचरण स्थिति को देखता है, पिसता है, परन्तु कुछ कर नहीं पाता। इस प्रकार नाटककार ने यह व्यंजित किया है कि सरकारी अफसरों द्वारा जनता की भलाई के लिए लगाया गया धन केवल कागज तक ही सिमटकर रह जाता है और सामान्य जनता पिसती रहती है।

अंधी तक़दीर (सन् १९६२, पृ० ५४), लें० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अंक २।
घटना-स्थल घर, विवाह-मंडप।

इस सामाजिक नाटक में परिस्थितियों से विवश मानव को बड़ी-से-बड़ी बुराई सहज ही करते हुए दिखाया गया है।

गौरी और राधा ऐसे भाई-बहिन हैं जिनके बचपन में ही माता-पिता स्वर्गवासी हो जाते हैं। दोनों अपने चाचा-चाची के यहाँ रहते हैं। कहने को उनका पारिवारिक संबंध है पर जिन्दगी गुलामों से भी बदतर है। शांति अपनी भतीजी राधा को पाँच हजार में बेच देना है जिसमें उसका भाई भी हिस्सेदार बनता है। स्वयं भाई ही अपनी बहिन का सौदा करता है। परिस्थितियों की अंधी तक़दीर सबको ऐसा करने के लिए मजबूर कर देती है।

अंधेर नगरी (सन् १९६२, पृ० ७२), लें० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० ५, स्त्री १, अंक २।
घटना-स्थल घर, राज-दरबार, नगर का कोई स्थान आदि।

यह हास्य रस का सामाजिक नाटक है। नाटककार ने इसे तीन रूपों में लिखा है, १ चौपट का दिल, २ चौपट की शक्ल, ३ चौपट की अक्ल। इसमें अंधेर नगरी, चौपट राजा की कहानी चरितार्थ की गई है। एक बार शाही खजाने में पैसे की कमी आने पर चौपट निर्णय करता है कि मुजरिमों को सजा न देकर सिर्फ जुर्माना किया जाए चाहे वह कातिल ही क्यों न हो। इसी तरह राज्यमंत्री धनचक्कर जनता से घूस लेता है, किन्तु राजा चौपट को उसमें हिस्सा नहीं देता अतः नौकरी से निकाल दिया जाता है। तब धनचक्कर ज्योतिषी गप्पीराम से मिलकर चौपट को खूब मूर्ख बनाता है। बीमार तो चौपट होता है, लेकिन ज्योतिषी के अनुसार दवा धनचक्कर की होती है तथा सेहत के लिए फल भी उसी को मिलता है। इस तरह कई हास्यप्रधान घटनाओं का इसमें समावेश है।

अँधेरे-उजाले लें० सतीश दे, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, अंक रहित, दृश्य ३।
घटना-स्थल विवाह-मण्डप।

इस सामाजिक नाटक में ऐसे अपराधी की कहानी है जिसका अँधेरे में किया हुआ पाप उजाले में रंग लाता है। समाज उससे प्रतिशोध का अवसर पाकर अपने अधिकारों का प्रयोग करता है। समाज-शत्रु अपराधी का विवाह निश्चित होता है, किन्तु क्रुद्ध समाज विवाह-मण्डप की खुशी को करुणा में बदल देता है। इस प्रकार पापी का दुःखद अंत दिखाया गया है।

अँधेरे का बेटा (सन् १९६६, पृ० १०६), लें० रेवतीसरन शर्मा, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य केवल तीसरे अंक में चार दृश्य हैं।
स्थान ड्राइंग रूम।

इस नाटक में एक सिपाही की वीरता के साथ-साथ उसकी कायरता और कर्तव्य के द्वन्द्व को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

मेजर नारंग की पत्नी निरुपमा एक महत्वाकांक्षिणी नारी है। अपने पति को प्रमोशन न मिलने, किन्तु उसके जूनियर को प्रमोशन मिलने के समाचार से उसे बड़ी निराशा होती है। लेकिन जब उसे यह पता

चलता है कि पति की पदोन्नति उसकी कायरता के कारण नहीं हुई, तो वह ग्लानि से भर जाती है। यहीं से पति-पत्नी में विरोध उत्पन्न हो जाता है। मेजर नारंग इस मानसिक कुण्ठा से ग्रस्त होकर पाकिस्तान के युद्ध में स्वेच्छा से अपना बलिदान कर देते हैं। इस कथा के माध्यम से लेखक कुछ प्रश्न उभारता है। युद्ध-क्षेत्र से पलायन क्यों किया जाता है? क्या यह वास्तव में सैनिकों की कायरता है?

अंबपाली (वि० २००५ पृ० ८५), ले० : रामवृक्ष बेनपुरी, प्र० पुस्तक-भण्डार, पटना; पात्र पु० ८, स्त्री ५, अंक : ४, दृश्य : ५, ३, ५, ४।

घटना-स्थल : सघन अमराई, आनन्दग्राम, वैशाली का उपवन, राजगृह की पर्वतश्रेणियाँ, वांग का झोंपड़ा, रमणीक बौद्ध विहार।

एक राजनर्तकी को सद्बुद्धि जागने पर भगवान् बुद्ध की शिष्या के रूप में चित्रित किया गया है।

अंबपाली अपनी सखियों के साथ सघन अमराई में झूला झूल रही है। उसकी एक सहेली मधूलिका उसके ग्रामीण प्रेमी अरुण-ध्वज की चर्चा करते हुए कहती है, "ज्योतिषी ने तेरे हाथ की रेखाएँ देखकर कहा था कि तेरे चरणों पर हजार-हजार राजकुमारों के मुकुट लोटेंगे।" अंबपाली राजकुमारों के सान्निध्य में नारी के बन्दी जीवन का विरोध करती है। तीसरे दृश्य में वैशाली नगरी में फाल्गुनी उत्सव के अवसर पर अंबपाली और अरुणध्वज मदिरालय में बैठकर सोमरस का पान करते हैं। इसी समय नयी राजनर्तकी के रूप में सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी का चयन करने को संघ के प्रतिनिधि की हैसियत से चार राज-कुमार वहाँ पहुँच जाते हैं। तत्कालीन राज-नर्तकी पुष्पगंधा चारों राजकुमारों के परामर्श से अंबपाली को नवीन राजनर्तकी घोषित करती है। अंबपाली वैशाली के शरद-उपवन में निवास करती है और शरद-पूनो की रात्रि में हजार राजकुमारों के साथ रास रचाती है। अंबपाली जिस राजकुमार का हाथ पकड़कर नाचती है वह अपने को धन्य समझता है।

द्वितीय अंक में भगवान् बुद्ध अंबपाली के आम्रकानन में निवास करते दिखायी पड़ते हैं। अंबपाली भगवान् बुद्ध को भोजन का निमंत्रण देती है। भगवान् बुद्ध अपने शिष्यों से अंबपाली की प्रशंसा करते हैं। अंबपाली अपने को धन्य समझते हुए सखियों से बातें करती है।

तृतीय अंक में अजातशत्रु अंबपाली का चित्र देखकर मुग्ध हो जाता है। वह वैशाली को जीतकर अंबपाली को मगध लाने की योजना बनाता है। उसका मंत्री सुनीध और प्रधान मंत्री वस्सकार इस योजना को कार्यान्वित करना चाहते हैं। वैशाली के वृज्जि नागरिकों का नेता अश्वसेन अजातशत्रु का विरोध करता है। वसुबंधु और अश्वसेन में युद्ध होता है; वसुबंधु आहत होकर धराशायी हो जाता है। अंबपाली को वैशाली का भविष्य अन्धकारमय दिखायी पड़ता है। अजातशत्रु की सेना वैशाली पर आक्रमण करती है। अंबपाली के उत्साह से नागरिक उत्तेजित होकर युद्ध करते हैं, किन्तु वैशाली की पराजय होती है और अजातशत्रु अंबपाली के पास पहुँचकर उसे अपने साथ चलने का आग्रह करता है। किन्तु अंबपाली के प्रभाव से वह वैशाली का राज्य छोड़कर उसके बिना ही मगध लौट जाता है।

चतुर्थ अंक में अरुणध्वज को घायल दिखाया जाता है। युद्ध में जो तीर अंबपाली की ओर आ रहा था, उसे अरुणध्वज अपने ऊपर ले लेने से मरणासन्न पड़ा है। मधूलिका उसके सिरहाने बैठी उसके बालों को सहला रही है। अंबपाली भी वहाँ पहुँच जाती है और अरुणध्वज की मृत्यु के समय दोनों चीत्कार करती हैं। धैर्य धारण कर अंबपाली वैशाली के बौद्ध विहार में भगवान् बुद्ध के पास पहुँचती है। वह संघ में सम्मिलित होना चाहती है। आनन्द उसका विरोध करते हैं। किन्तु भगवान् बुद्ध अंबपाली एवं उसकी दो सखियों—पुष्पगंधा और मधूलिका—को भिक्षुणी बनाकर संघ में सम्मिलित कर लेते हैं।

अजातशत्रु के सम्मुख अंबपाली के चित्र का प्रसंग नये संस्करण में जोड़ा गया है।

अकबर गोरक्षा न्याय नाटक (सन् १८९५, पृ० १७५), ले० प० जगननारायण, मुशी कालवहादुर बाराबंकी, अलियाबाद-निवासी, प्र० सदाशिव बाबाजी प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई, पात्र पु० ७३, स्त्री ६, अक ३, दृश्य १७, १८, २२।
स्थान तपोवन मे एक कुटी, वन मे चौरस्ता, बादशाह का प्राइवेट कमरा।

इस ऐतिहासिक नाटक मे गोवध के ऊपर प्रकाश डाला गया है। गौ को माता का स्थान प्राप्त है, उसका वध नही करना चाहिए, नाटक का यही मुख्य विषय है। नाटक मे अकबर के उस न्याय पर प्रकाश डाला गया है जिसमे उसने गोवध-निषेध को कानूनी रूप में स्वीकार किया है। अकबर के इस महान् कार्य से हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य स्थापित हो जाता है।

अगस्त्य भारतीय संस्कृति के अभियान का एक नाटक (सन् १९६३, पृ० ११५), ले० रामेश्वर दयाल दुबे, प्र० शील प्रकाशन, राष्ट्रभाषा रोड, कटक, पात्र पु० ३, स्त्री ३, अक ४, दृश्य ३, २, २, २।
स्थान महर्षि अगस्त्य के आश्रम के निकट बहने वाली नदी का तट, विदिशा की अग्निशाला का प्रागण।

इस पौराणिक नाटक मे अगस्त्य मुनि अपने तपोवल से सागर-पान करके दानव से मानव की रक्षा करते हैं।

महर्षि अगस्त्य जीवन-भर अविवाहित रहने का विचार करते हुए भी विदर्भराज की पुत्री लोपामुद्रा का पाणि-ग्रहण करते हैं। दोनो विन्ध्य पर्वत पर जाते हैं। विन्ध्य पर्वत को पार कर अगस्त्य और लोपामुद्रा दक्षिणापथ का मार्ग पकडते हैं। लोपामुद्रा का बचपन ऐश्वर्य और वैभव की गोद मे बीता है। विवाह के उपरान्त वह अपने यौवन-काल मे भी उसी प्रकार के वैभव का भोग करना चाहती है लेकिन यह सम्भव नही होता। लोपामुद्रा वेगवती नदी के एक मोड के समीप पडी हुई शिला पर कमलो की माला बना रही है। वहाँ अगस्त्य मुनि पहुँच जाते हैं और उसे अकेली देखकर कुछ अपशब्द कहते हैं। लोपामुद्रा मूर्च्छित होकर शिला पर गिरती है। अगस्त्य उसे बचाने के लिए आगे बढते हैं, तब तक वह शिला से खिसककर धारा म जा गिरती है। अगस्त्य 'लोपे-लोपे' कहकर चिल्लाने लगते हैं। इतने मे एक वृक आता है और उन्हे समझाता है। अगस्त्य कहते हैं कि मैं लोपामुद्रा के प्रति ऋणी हूँ, और उसी ऋण को आजन्म चुकाने का मैं आज सकल्प करता हूँ। अगस्त्य नतशिर हुए आगे-आगे बढते हैं, वृक पीछे-पीछे जाता है।

समुद्रवासी कालेयक नामक असुर तपस्वियो का निरन्तर वध करता रहता है। प्रतिदिन मुनियो की लाशें बीभत्स रूप में देखने को मिलती हैं। इस प्रकार सब तपस्वी विष्णु के कहने पर अगस्त्य के यहाँ जाते हैं। अगस्त्य समस्त लोगो के सामने वरुणालय समुद्र का पान कर लेते हैं। देवताओ के साथ-साथ मानव-लोक की सबसे बडी बाधा दूर हो जाती है। इस प्रकार अगस्त्य समुद्र पर विजय प्राप्त करते हैं। इस धार्मिक नाटक मे महर्षि अगस्त्य की प्रभुता का वर्णन है। वे अपने योगबल द्वारा समुद्र-पान करके समस्त देवो और मानवो का दुःख-निवारण करते हैं।

अग्नि देवता (सन् १९५२) ले० नरेश मेहता, प्र० नवपजाब साहित्य सदन, दिल्ली और जालन्धर, पात्र पु० २, स्त्री २, अक, दृश्य तथा घटना-स्थल रहित।

यह एक यथार्थवादी रेडियो गीति-नाट्य है, जिसके अतर्गत प्रलय की पृष्ठभूमि पर अग्नि की विविध रूपो मे विवेचना की गई है। अग्नि की खोज मे लेखक की दृष्टि सृष्टि के आदि रूप तक गई है। इसके लिए अग्नि-पूजक अवेस्ता-विश्वासी पारसीको, यूनानियों, दार्शनिक हेराक्लितु एव उपनिषद्कारो की अग्निविषयक विभिन्न मान्यताओ का प्रतिपादन किया गया है। प्रलय के पश्चात् जिस अग्नि की कामना जीवन की प्रारम्भिक आवश्यकताओं की पूर्ति-हेतु की गई थी वही अग्नि सघर्ष का कारण बन गई है। इस प्रकार मानव-सभ्यता के विकास मे अग्नि के योगदान की चर्चा करते हुए अन्त मे लेखक लोक-कल्याण-हित अग्नि के उपयोग पर बल देता

है। बीच-बीच में प्रलय से लेकर महात्मा गांधी के निधन तक के विभिन्न प्रसंगों की योजना है।

अग्नि-परीक्षा (सन् १९७१, पृ० ८५), ले०: हरिकृष्ण 'प्रेमी'; प्र० : लोकचेतना प्रकाशन, १८४, शहीद स्मारक पथ, जबलपुर; *पात्र :* पु० ६, स्त्री २; *अंक :* ३, *दृश्य :* १, १, १। घटना-स्थल : ओरछा, उद्यान, नर्मदा का तट, पहाड़सिंह के महल का एक कक्ष, जुझारसिंह का शयन-कक्ष।

इस ऐतिहासिक नाटक में हरदौल अपने प्राणों की परवाह न करके नारी-जाति के सम्मान की रक्षा करता रहता है। महाराज वीरसिंह देव की मृत्यु के पश्चात् उनके बड़े पुत्र जुझारसिंह सिंहासनासीन होते हैं। यह बात उनके भाई पहाड़सिंह को अच्छी नहीं लगती है, अतः वह मुगल शासकों से मिलकर राज्य हथियाने के लिए षड्यन्त्र रचता है। जुझार के काका चम्पतराय को महोबा की जागीर मिलती है। जुझारसिंह के राजा होते हुए भी उनके सौतेले भाई हरदौल ही बुन्देलखण्ड की शत्रुओं से रक्षा करता है और प्रजा के सुख का ध्यान रखते हुए सब की आँखों का तारा बन जाता है। ओरछा की महारानी स्वर्णकुँवरि उसे पुत्र की तरह प्यार करती है। जहाँ हरदौल सिंह एवं चम्पतराय प्रजा के प्रिय हैं वहीं पहाड़सिंह एवं उसकी पत्नी हीरादेवी को वे दोनों राह के कंटक प्रतीत होते हैं। एक दिन चम्पतराय को पहाड़सिंह भोजन में विष दे देता है। लेकिन चम्पतराय के भाई भीमसिंह उसको खाकर स्वर्गवासी हो जाते हैं।

हरदौल को मारने के लिए पहाड़सिंह, जुझारसिंह के मन में शंका का यह बीज बो देता है कि हरदौलसिंह और महारानी स्वर्णकुँवरि में अनुचित संबंध है। जुझारसिंह इसके लिए स्वर्णकुँवरि की परीक्षा लेते हैं और स्वर्णकुँवरि से हरदौल को दूध में विष मिलाकर दिलवाते हैं। हरदौल जानते हुए भी नारी-जाति के सम्मान की रक्षा के लिए हँसते-हँसते विष-पान कर लेता है और इतिहास के पन्नों पर अपनी स्मृति छोड़ जाता है।

अज्ञातवास (सन् १९५२, पृ० १००), ले० : कृष्णदत्त भारद्वाज, प्र० : प्रेमी भ्राता, जालन्धर; *पात्र :* पु० १५, स्त्री ४; *अंक :* ५, *दृश्य :* ४, ५, ३, ५, ६। घटना-स्थल : राजदरबार, जंगल।

यह एक पौराणिक नाटक है। इसमें दुर्योधन द्वारा दिये गये पांडवों के अज्ञातवास की चर्चा है। कौरवों के छल से जब पाण्डव जुए में अपना सारा राजपाट, द्रौपदी-सहित हार जाते हैं तब दुर्योधन उन सबको १२ वर्ष तक वनवास की सजा सुनाता है तथा उसके बाद एक साल तक अज्ञातवास के लिए भी कहता है। इस अवधि में पाण्डव और द्रौपदी ऐसे स्थान पर रहते हैं जहाँ दुर्योधन को पता नहीं चलता, अन्यथा उनकी सजा की अवधि पुनः बढ़ा दी जायेगी। निदान पाण्डव राजा विराट् के यहाँ छद्मरूप में छद्म नाम से रहने लगते हैं।

अज्ञातवास (सन् १९२१, पृ० १५४), ले० : द्वारकाप्रसाद गुप्त 'रसिकेन्द्र'; *पात्र :* पु० १६, स्त्री ८; *अंक :* ३, *दृश्य :* ७, ७, ६। घटना-स्थल : जंगल, नृत्यशाला, राजभवन।

इस पौराणिक नाटक में पाण्डवों के अज्ञातवास का वर्णन है। व्यासजी के सुझाव पर पाण्डव अपना अज्ञातवास-काल व्यतीत करने के लिए विराट्-नरेश के यहाँ अपना नाम तथा वेश बदलकर विभिन्न सेवाओं में नियोजित हो जाते हैं। रानी की सेवा में संलग्न सैरन्ध्री (द्रौपदी) के सौन्दर्य पर मोहित कीचक अवसर पाकर उस पर बलात्कार करने का प्रयत्न करता है। किन्तु द्रौपदी बच निकलती है और पतियों को कीचक के दुष्ट स्वभाव से अवगत कराती है। इधर भीम के परामर्श से वह उत्तरा की नृत्यशाला में रात्रि के समय मिलने के लिए कीचक से कहती है। कामासक्त कीचक निश्चित समय निश्चित स्थान पर पहुँचता है और योजनानुसार भीम स्त्री-वेश में पहुँचकर उसका वध कर देते हैं। द्रौपदी यह अफवाह फैला देती है कि उसके अंगरक्षक गन्धर्वों ने उसकी हत्या की है। इसके बाद कीचक के भाई द्रौपदी को अग्नि में जलाने के उद्देश्य से पकड़ लाते हैं। इससे पाण्डव

युद्ध कर उन्हे भी धराशायी कर देते हैं। तत्पश्चात् सुशर्मा के अस्त्र से शख और विराट् मूर्च्छित हो जाते हैं। वह विराट् को बन्दी बना लेता है। पाण्डव उसे मुक्त कर कौरवो को भी पराजित करते हैं। अन्त मे विराट् के समक्ष सभी पाडव अपने सही रूप मे उपस्थित होते हैं। विराट् उनके प्रति कृतज्ञ होते हैं और अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु के साथ अपनी कन्या उत्तरा का विवाह कर देते हैं।

अछूत (विक्रमी १९९५, पृ० ११८), ले० आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव, प्र० विश्व-ग्रथावली, इलाहाबाद, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक ३, दृश्य २०।
घटना-स्थल मुहल्ले का दृश्य, मन्दिर आदि।

इस सामाजिक नाटक मे लेखक ने अछूतोद्धार पर बल देकर समाज की सहानुभूति जगाने की चेष्टा की है। एक महात्मा अपने शिष्य को अछूतो की सहायता करने का आदेश देता है और यह भी वचन लेता है कि वह अछूतो पर होने वाले अन्याचार का विरोध करेगा। शिष्य को समाज-सेवा के इस क्षेत्र मे अनेक कठिनाइयाँ दिखायी पडती हैं। वह कभी प्यासे अछूत को पानी न पिलाने वाले व्यक्तियो का घडा छीनकर याचक की प्यास बुझाता है, कभी मन्दिर के अन्दर अछूतो के प्रवेश मे बाधक पुजारी को पीटकर उनको (अछूतो को) मन्दिर मे पूजा करने का अवसर प्रदान करता है। उच्च वर्णवालो की पोल उस समय खुलती है जब उनका न्यायाधीश एक अछूत बन जाता है। बडे कुलीन ब्राह्मण अपने अपराधी बच्चो को दण्ड-मुक्त कराने के लिए उसके पैर तक छूते हैं। आगे चलकर जमीदार तथा राजा का भी समर्थन एव सहयोग मिल जाता है और अछूतो के साथ सबका व्यवहार सुधर जाता है।

अछूत कन्या (सन् १९३८, पृ० ६३), ले० मुशी आरजू बदायूनी, प्र० उपन्यास-बहार आफिस, काशी, अक ३, दृश्य ८, ८, २। घटना-स्थल निर्माणाधीन मकान, मन्दिर तथा गाँव के दृश्य।

इस सामाजिक नाटक मे अछूतो के प्रति ब्राह्मणो के अधविश्वास का चित्रण किया गया है। श्यामलाल और स्वरूप की देखरेख मे भगवतीसिंह के मकान का निर्माण होता है। शम्भू चमार अपनी पुत्री 'मुक्ति' के साथ वहाँ मजूरी करता है। भगवतीसिंह श्यामलाल को बेईमानी के आरोप मे निकाल देते हैं। श्यामलाल इसमे स्वरूप का हाथ समझकर उससे बदला लेना चाहते हैं। भगवतीसिंह स्वरूप की ईमानदारी पर प्रसन्न होकर सारा कार्य-भार उसको सौंप देते हैं।

काम करते समय मुक्ति को गम्भीर चोट आ जाती है। स्वरूप पतित मानवता के नाते उसका उपचार करके उसे स्वस्थ करता है। शम्भू और मुक्ति दोनो ही ब्राह्मण-पुत्र के व्यवहार पर उसे देवता मानते हैं। मुक्ति उसे आत्म-समर्पण करती है। गाधीवादी युवा स्वरूप उसके साथ विवाह करने को तैयार हो जाता है। श्यामलाल षड्यत्र से भगवतीसिंह द्वारा अछूत कन्या के प्रेमी स्वरूप को नौकरी से पृथक् करा देता है। वह ब्राह्मण-मण्डलो को भडकाकर स्वरूप और मुक्ति की शादी नही होने देता और जबरदस्ती एक पतिपरायणा साध्वी ब्राह्मण-कन्या से उसकी शादी करा देता है जिससे स्वरूप खिन्न रहता है। पिता की दुश्चिन्ता का अन्त करने के लिए मुक्ति अपनी झोंपडी मे आग लगाकर जल जाती है। उदास पिता ब्राह्मणो के अत्याचार का प्रतिशोध लेने का निश्चय करता है।

शम्भू चमार के साधु होने पर ब्राह्मण भी नतमस्तक होते हैं। एक दिन भगवतीसिंह के यहाँ ब्रह्म-भोज मे शम्भू श्यामलाल की एकमात्र कन्या का अपहरण कर लेता है।

दूसरे अक मे स्वरूप के लडके नरेन्द्र को साँप काट लेता है। शम्भू नरेन्द्र को विष-मुक्त करता है। किन्तु नरेन्द्र शम्भू की पालिता पुत्री सरोजिनी से आँखें चार कर लेता है। यह सरोजिनी ही श्यामलाल की कन्या है। नरेन्द्र, शम्भू से बात करके सरोजिनी को मेले मे ले जाता है। वहाँ श्यामलाल एक बार तो उसे पहचान भी लेता है। मन्दिर मे शम्भू और सरोजिनी को देख सब मारने दौडते हैं। नरेन्द्र रक्षा मे शम्भू और सरोजिनी के साथ बन्दी होता है। शम्भू के प्रयास से

ब्राह्मणों के विरोध करने पर भी श्यामलाल की अपहृत कन्या का नरेन्द्र के साथ विवाह होता है। कपटी ब्राह्मणों को काले पानी का दंड मिलता है किन्तु स्वरूप उन्हें क्षमा करा देता है।

अछूत की लड़की या समाज की चिनगारी (सन् १९१४, पृ० १४६), ले० : रघुनाथ चौधरी; प्र० : बाबू मागरमल सिंघानिया, सुल्तानगंज; पात्र : पु० १०, स्त्री ७; अंक : ३, दृश्य : ८, ६, ६।
घटना-स्थल : सभा, घर।

यह एक सामाजिक नाटक है। अछूतों की समस्या दूर करने के लिए सामाजिक समानता पर बल दिया गया है। इसमें समाज में होने वाली बुराइयों पर प्रकाश डाला गया है। समाज को किशोरी-जैसी कन्या पर गर्व होना चाहिए। अछूत की कन्या होने पर भी उसका चरित्र उच्च है। वह आदर्शमय कन्या है। वह अपने वर्ग के लोगों को उनकी समस्याओं से अवगत कराती है। एक स्थल पर कहती है, "हम लोग निर्बल हैं जिसका कारण फूट है। अगर हम लोग एकता के सूत्र में बँधकर, जाति-उन्नति का सरल रास्ता ढूँढ निकालें तो वही समाज, जो आज हम लोगों को घृणा की दृष्टि से देखता है, आदर की दृष्टि से देखने लग जायेगा।"

नाटक का नायक मोहन सदाचार के बल पर समाज की सेवा करता है।

अछूता दामन (रचना-काल १९०२, प्रकाशित सन् १९३५), ले० : आगा हश्र काश्मीरी, प्र० : राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली; पात्र : पु० ९, स्त्री ५; अंक : ३, दृश्य : १०, ५, ३।
घटना-स्थल : राजमहल, मकान, बन्दीगृह, पाईनवाग का बन्दरगाह।

इस पारसी थियेट्रिकल नाटक में व्यभिचार के परिणाम को दिखाने का प्रयास किया गया है। अदलाबाद का बादशाह जहाँदार अपने एक विश्वसनीय नवाब सफदरजंग को राज्य का कार्यभार सौंपकर कार्य-निवृत्त हो जाता है। सफदरजंग अच्छी तरह राज्य का संचालन करता है। वह न्यायी और दयाशील है, अतः राज्य में अमन-चैन रहता है। उस राज्य में जमील नामक एक व्यभिचारी व्यक्ति स्त्री पर बलात्कार करने के अपराध में पकड़ा जाता है जिसे मृत्यु-दंड मिलता है। जमील की बहिन सईदा भाई को किसी प्रकार मुक्त कराने के लिए नवाब सफदरजंग से प्रार्थना करने जाती है। नवाब उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो जाता है, और उसके भाई की मुक्ति के एवज में उसके साथ भोग करना चाहता है। सईदा किसी प्रकार नवाब के दुर्व्यवहार को बादशाह तक पहुँचा देती है। बादशाह जहाँदार नवाब पर क्रुद्ध होकर उसे दंड देता है।

इसका प्रथम अभिनय कावसजी खटाऊ द्वारा अल्फ्रेड थियेटर में १९०२ में हुआ। सन् १९०५ में इसमें कई परिवर्तन करके इसे फिर खेला गया।

अछूतोद्धार नाटक (सन् १९२६, पृ० ९८), ले० : रामेश्वरीप्रसाद राम, प्र० : हिन्दी पुस्तक-साहित्य प्रकाशन मन्दिर, पटना; पात्र : पु० १३, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ६, ५, ६।
घटना-स्थल : बाग, अनाथालय, कमरा, जंगल, देहात, न्यायालय, सार्वजनिक सभा।

इस सामाजिक नाटक में एक सवर्ण व्यक्ति अछूतोद्धार करते हुए नाना प्रकार के कष्ट उठाता है।

सुरेन्द्र एक देशभक्त नवयुवक है। परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़े हुए अछूतों की करुण अवस्था है। विदेशी रंग में रँगे हुए धनी सेठ-व्यापारियों के कारण ये पिस रहे हैं। सुरेन्द्र देश का उद्धार तथा गरीबों की सहायता करना चाहता है। उसकी माता उसके उत्साहमय जीवन की अनुगामिनी हो जाती है। वह अपने स्वार्थी पति रणधीर से बुद्धि और विवेक में बहुत बढ़ गई है। सुरेन्द्र अनाथालय की स्थापना कर गरीब अछूतों के निवास और भोजन की व्यवस्था करता है। रामप्रसाद अछूत के परिवार की वह हर तरह से सहायता करता है, परन्तु गाँववाले विशेषकर मुखिया पंडितजी उसका विरोध करते हैं। मदिरा-प्रेमी शिवशंकर को अपने देश-जाति के उत्थान-पतन की तनिक भी चिन्ता नहीं। शिवशंकर एम०एल०ए० होने के स्वप्न देखते हैं। उन्हें देश की परतन्त्रता तथा गरीबी से

कोई न्याय नहीं। वे अपने कपटी मित्रों को हज़ार-हज़ार रुपयों की थैली देते हैं परन्तु गरीबी एवं विपत्ति में फँसे अनाथों के लिए बीस रुपए नहीं माफ कर सकते। उनके कपटी मित्र शिवशंकर को शराब पिलाकर पाँच हज़ार रुपया हड़प कर जाते हैं और सुरेन्द्र पर चोरी का दोषारोपण करते हैं परन्तु रामप्रसाद की सूझबूझ, चतुराई और गवाही से सत्य की जीत होती है।

अजनबी (सन् १९४६, पृ० २७४), ले० रामनरेश त्रिपाठी, प्र० दक्षिणभारत हिन्दी-प्रचार सभा, मद्रास, पात्र पु० १०, अंक ३, दृश्य २१।
घटना-स्थल घर, दुकान, झोपड़ी आदि।

इस सामाजिक नाटक में उच्च वर्ग की संकीर्णता और निम्न वर्ग की महत्ता दिखायी गई है। अजनबी ही नाटक का नायक है। वह एक दयालु व्यक्ति की कृपा से शिक्षा पाता है और अपनी कुशाग्र बुद्धि के कारण शीघ्र ही विद्वान् हो जाता है। शिक्षार्जन के पश्चात् वह देश-दर्शन के लिए निकल पड़ता है। देशाटन करते हुए समाज के विभिन्न वर्गों की वास्तविकता से परिचित होने पर समाज की कुटिलताओं से घृणा करने लगता है। वह उच्च वर्ग की अपेक्षा निम्न वर्ग की सरलता और सहयोगिता से अधिक प्रभावित होता है। सेठ, राजा, महन्त, नेता, लेखक, कवि, वकील आदि के सम्पर्क में आने पर उनके निकृष्ट जीवन से खिन्न होता है और उनकी दुष्टताओं का भण्डाफोड़ करता है।

अजन्ता (सन् १९५३, पृ० ७८), ले० पं० सीताराम चतुर्वेदी, प्र० हिन्दी-प्रचारक पुस्तकालय, बनारस, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य - ५, ५, ५।
घटना-स्थल उद्यान, चतुष्पथ, चित्रशाला, प्रकोष्ठ, भवन का एक भाग।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है जिसमें अजन्ता की चित्र-वीथी पर विस्तार से कथानक को गढ़ा गया है। नाटक का उद्देश्य भारतीय स्थापत्य कला, मूर्तिकला और चित्रकला का सामंजस्य स्थापित करना है। अजन्ता की गुफाओं में वाकाटक-वंशीय सम्राट् प्रवरसेन द्वितीय की पुत्री नयनिका का चित्र है जो शोक-विह्वला होकर मूर्च्छित पड़ी है।

पाँचवीं शती विक्रमी में नासिक में प्रवरसेन द्वितीय राजा है। राज्यस्थित विद्यापीठ के प्रधान आचार्य सुनन्द हैं। इन्हीं से यूनान का डारस (आर्टेमियस) और नासिक की राजकुमारी प्रवरसेन की पुत्री नयनिका शिक्षा प्राप्त कर रही है। कई कारण-वश दण्डनायक नागदत्त आचार्य सुनन्द से ईर्ष्या-द्वेष करता है। दोषी और कलंकित कर उन्हें निष्कासित करना चाहता है। उसके षड्यन्त्र से विवश होकर आचार्य को नासिक छोड़ना पड़ता है।

राजकुमारी को इससे बड़ा दुःख होता है। किसी उपाय से सुनन्द राजभवन पहुँचते हैं और राजकुमारी को उपचार का उपाय बताकर अपने निवास-स्थान का चित्र दे जाते हैं जिसे देखकर राजकुमारी नयनिका समझ लेती है कि आचार्य अजन्ता के बौद्ध विहार की कन्दरा में हैं। चित्र बनाने में तल्लीन आचार्य सुनन्द पर नागदत्त पीछे से आक्रमण करता है, किन्तु कुशल रक्षकों द्वारा उनकी रक्षा होती है और नागदत्त के षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ हो जाता है। अपराधी नागदत्त को आचार्य क्षमा कर देते हैं। राजकुमारी नयनिका की प्रार्थना पर आचार्य उसे शिष्या बनाना स्वीकार कर लेते हैं, किन्तु गुरु की आज्ञा मानकर राजकुमारी आचार्य की गुफा में नहीं जाती।

अजातशत्रु (सन् १९२२, पृ० १५१), ले० जयशंकर प्रसाद, प्र० भारती-भण्डार, इलाहाबाद, पात्र पु० १६, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ६, १०, ७।
घटना स्थल प्रकोष्ठ, उपवन, पथ, काशी में श्यामा का गृह, बन्दीगृह, कोशल की राजसभा, कानन का प्रान्त, बिम्बिसार का कुटीर।

यह ऐतिहासिक नाटक अन्तर्द्वन्द्व और बहिर्द्वन्द्व पर आश्रित है। मगध-सम्राट् बिम्बिसार अपने पुत्र अजातशत्रु को राज्य देकर उपगम ग्रहण करते हैं।

अजातशत्रु की माता छलना राजमहिषी

वासवी के साथ दुर्व्यवहार करती है जिससे व्याकुल होकर वह अपने पितृ-गृह कोशल चली जाती है। अजातशत्रु छलना और देवदत्त की मंत्रणा से राज्य-संचालन करता है। मगध की इस घटना से कोशल-नरेश प्रसेनजित् खिन्न होकर अजातशत्रु का विरोध करते हैं। किन्तु उसी का पुत्र विरुद्धक अजातशत्रु के समर्थन में अपने पिता से खुल्लमखुल्ला विद्रोह करता है। विरुद्धक को युवराज और उसकी माता शक्तिमती को राजमहिषी के पद से वंचित किया जाता है।

कौशाम्बी में वासवी की पुत्री पद्मावती के विरुद्ध षड्यन्त्र चलता है, जिसका संचालन उसकी सपत्नी मागंधी करती है। वह वीणा में सर्प रखकर यह घोषित करती है कि पद्मावती ने अपने पति उदयन की हत्या के लिए सर्प छिपाया था। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रथम अंक में कौशाम्बी, मगध और कोशल में विरोध की अग्नि धधकती हुई दिखायी पड़ती है। द्वितीय अंक में यह अग्नि और प्रज्वलित हो उठती है। अजातशत्रु और विरुद्धक एवं प्रसेनजित् और उदयन संगठित होते हैं।

काशी का राज्य प्रसेनजित् ने यौतुक के रूप में मगध को प्रदान किया था, किन्तु वासवी के कोशल चले जाने पर काशी राज्य के ऊपर मगध का अधिकार नहीं रहने देना चाहता। काशी की प्रजा कहती है, "हम लोग अत्याचारी राजा को कर न देंगे जो अधर्म के बल से पिता के जीते ही सिंहासन पर बैठ गया है और जो पीड़ित प्रजा की रक्षा भी नहीं कर सकता है।" अपने पुत्र को युवराज-पद से हटाने का षड्यंत्र देखकर कोशल की महारानी किन्तु दासी-पुत्री शक्तिमती अपने पुत्र विरुद्धक को ललकारती है। पितृ-द्रोही विरुद्धक मागंधी (जो अब वारवनिता हो गई है) से विवाह करता है। किन्तु अंत में मागंधी को वहाँ से भी निराश होना पड़ता है और वह काशी में बुद्ध भगवान् के उपदेश से प्रभावित होकर अपना आम्रवन बुद्ध-संघ को प्रदान कर देती है।

तृतीय अंक में भगवान् बुद्ध के प्रयास से विरोध का उन्मूलन होता है। बिम्बसार अपने पुत्र अजातशत्रु को तथा प्रसेनजित् विरुद्धक का अपराध क्षमा कर देते हैं। उदयन, पद्मावती की सहिष्णुता से प्रभावित होकर मागंधी के षड्यंत्र को समझ जाता है। छलना वासवी से अपराधों की क्षमा माँगती है। भगवान् बुद्ध की अनुकम्पा से कौशाम्बी, मगध और कोशल में परस्पर-मिलन और एतदर्थ विरोध का शमन होता है।

अजामिल-उद्धार (पृ० ८०), ले० : मुंशी आरजू साहब; प्र० : उपन्यासबहार आफिस, काशी; पात्र : पु० १६, स्त्री ५; अंक : ३, दृश्य : ७, ६, ४।
घटना-स्थल : जीर्ण पर्णकुटी।

इस पौराणिक नाटक में अजामिल के उद्धार की कथा है। नाटक के प्रारम्भ में नारद और विष्णु भगवान् का संवाद है। भगवान् भविष्यवाणी करते हैं कि कन्नौज के सिंधारण्य ग्राम में बसने वाले, मेरे भक्त अलोक ब्राह्मण-दम्पती के घर एक बालक जन्म लेगा जो पितृ-भक्ति में लीन रहेगा। मैं इसी पर नारायण नाम की महिमा दिखाऊँगा। अलोक और अलोका का पुत्र अजामिल अपने माता-पिता की सेवा करता है किन्तु कुसंगति के प्रभाव से वह दस्यु-दल में सम्मिलित हो जाता है। वह इतना क्रूर बन जाता है कि एक स्थान पर स्वयं कहता है—"मैं वह अजामिल हूँ जिसके शरीर में हृदय के स्थान पर जड़ पत्थर रखा है।" वह ऐसा प्रसिद्ध डाकू बन जाता है कि राजा भी उससे हार मान लेता है और उसे राजा बनाना चाहता है। उसी समय पुरंजय नामक ब्राह्मण-बालक उसके सामने आता है और कहता है कि तुमने मेरे पिता का वध किया है, मुझे भी मार डालो। ऐसे कठोर डाकू की गति उसके पुत्र नारायण के नाम से हुई। जीवन के अन्त में वह अपने कुकृत्यों पर पश्चात्ताप करता है और मृत्यु के समय कहता है "नारायण, जल पिलाओ। मेरा कंठ सूखा।" इतना कहते-कहते वह गिर पड़ता है और वैकुण्ठ में पहुँच जाता है।

अजामिल-उपाख्यान नाटक (रचना-काल १६वीं शताब्दी, प्रकाशन-काल सन् १६६८, पृ० ११), ले० : द्विजभूषण; प्र० : हिन्दी

विद्यापीठ, आगरा, पात्र पु० ८, स्त्री २, अंक और दृश्य से रहित।
घटना-स्थल : जगत, विष्णुपुरी, यमलोक।

इस पौराणिक नाटक में ईश्वर के नाम की महिमा का वर्णन है। जिसके नामोच्चारण से घोर पापी दासीपति अजामिल की मुक्ति हो जाती है। इसमें अजामिल नामक एक ब्राह्मण वेश्या के सम्पर्क में आकर व्यभिचारी बन जाता है। वह अपना सारा कुटुम्ब-परिवार छोड़कर वेश्या के साथ रहने लगता है। इस तरह पाप-कृत्य करते हुए उसकी वृद्धावस्था आ जाती है। उसके दस पुत्र हैं। एक पुत्र का नाम नारायण है। अजामिल अपने पुत्र नारायण का लालन-पालन बड़े प्रेम से करता है।

इस प्रकार उसकी आयु समाप्त होने को होती है। यमदूत उसे लेने के लिए आते हैं। वह यम-यातना से डर जाता है और रक्षा के लिए अपने पुत्र नारायण को पुकारता है। उसी समय नारायण-ध्वनि को सुनकर विष्णु-पार्षद विमान पर चढ़कर आ जाते हैं। विष्णु-पार्षदों को देखते ही यमदूत त्रस्त होकर भाग जाते हैं। वे सारी बात धर्मराज से बताते हैं। धर्मराज अपने दूतों से चराचर जगत् में ईश्वर के नाम की महिमा का वर्णन करते हैं। पापात्मा अजामिल भी उसी दिन से पुण्य-आत्मा ब्राह्मण बन जाता है तथा वेश्या को छोड़कर हरिकीर्तन में मग्न हो जाता है। अन्त में देव-मन्दिर में अजामिल भजन-पूजन तथा कृष्ण का नाम स्मरण करते हुए प्राण त्याग देता है।

अजामिल-चरित्र नाटक (सन् १९२६, पृ० ४२), ले० गौरीशंकर प्रसाद मुंशी उर्फ टिकैत, प्र० श्री रामेश्वर प्रेस, दरभंगा, पात्र पु० २४, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ३, ८, ३।
घटना-स्थल : वेश्या का घर, मदिरालय।

कान्यकुब्ज नामक नगर का धनिक ब्राह्मण दासमुड़ी की एक वेश्या को अपनी पत्नी बना लेता है। शर्त के अनुसार वह नया भवन बनवाकर उसके साथ रहता, मांस-मदिरा का सेवन करता और भोग-विलास में डूब जाता है, जिससे चारों ओर उसके कर्मचारी उसका परिहास करने और अपयश फैलाते हैं। अजामिल योगाभ्यास का बहाना बनाकर रियासत का सारा काम कर्मचारियों पर छोड़ स्वयं वेश्या की सेवा में लगा रहता है। वेश्या की माँग पूरी करते-करते वह कंगाल हो जाता है। द्रव्य के अभाव में वह वेश्या की माँग पूरी करने के लिए चोरी का सहारा लेता है। सेंध लगाते समय पकड़ लिए जाने से उसे मार भी खानी पड़ती है। मदिरा के लिए मदिरालयों में भटकता है।

इधर वेश्या से उसे एक पुत्र उत्पन्न होता है। एक साधु के कहने पर उसका नाम नारायण रखा जाता है। फिर भी अजामिल जुए द्वारा धनोपार्जन कर वेश्या की इच्छा-पूर्ति करता रहता है तथा निरंकुश होकर घृणित जीवन व्यतीत करता है।

एक बार वह अचानक बीमार पड़ता है। यमदूत उसे नरक में ले जाने के लिए आ पहुँचते हैं। वह अपने पुत्र को देखने के लिए उसका नाम 'नारायण-नारायण' पुकारता है, जिसे सुनकर विष्णु के दूत उसे स्वर्ग ले जाने के लिए आ पहुँचते हैं। यमदूत विष्णु-दूतों के प्रबल होने के कारण भाग खड़े होते हैं। यमराज विष्णु के पास जाकर उनके दूतों के कृत्य और अजामिल के अधर्म की फरियाद करते हैं। अंत में विष्णु उनके सामने यह समाधान करते हैं—"चाहे कोई मनुष्य सदा का ही व्यभिचारी हो किंतु जब उसने किसी तरह मेरा स्मरण कर लिया तब वह मनुष्य पापात्मा न रहकर सीधा स्वर्गाधिकारी हो जाता है।"
(असम के क्षेत्रों में अनेक बार अभिनीत।)

अजीतसिंह (सन् १९४६, पृ० १६४), ले० आचार्य चतुरसेन, प्र० गौतम बुक डिपो, दिल्ली, पात्र पु० ३१, स्त्री ८, अंक ५, दृश्य ६, ५, ७, १०, ८।
घटना-स्थल : राजभवन, भोजनालय, युद्ध-क्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक में अजीतसिंह की वीरता और उसके पुत्र वख्तसिंह की क्रूरता और कायरता का वर्णन है। महाराज जसवन्तसिंह के देहान्त के समय अजीतसिंह

माँ के गर्भ में होता है। उसी समय औरंगजेब जोधपुर पर आक्रमण करता है किन्तु ठाकुर दुर्गादास और मुकुन्ददास गर्भवती रानी को लेकर निकल जाते हैं। लाहौर में अजीतसिंह का जन्म होता है। बड़े होकर अजीतसिंह महाराजा उदयपुर की सहायता से जोधपुर का राज्य अपने अधिकार में कर लेता है। औरंगजेब बार-बार कोशिश करने पर भी सफल नहीं होता। जयपुर के राजा जयसिंह उसकी मदद करते हैं। किन्तु अन्त में मुहम्मदशाह अजीतसिंह के बड़े पुत्र बख्तसिंह को राज्य का प्रलोभन देकर अपने वश में कर लेता है। बख्तसिंह अपने पिता अजीतसिंह को भोजन में जहर देकर मार डालता है। जिस हिन्दू राज की स्थापना के लिए वे लड़ते हैं स्वयं उनका बेटा ही उनका परम शत्रु बन जाता है। इस प्रकार वीर अजीतसिंह का अन्त दुश्मन से न होकर अपने पुत्र के द्वारा होता है किंतु अन्ततः बख्तसिंह भी सफल नहीं होता। मुहम्मदशाह उसका भी अन्त कर देता है।

अजीब रात (सन् १९३७, पृ० ८४), ले० : बाबू गजानन्द पोद्दीवाल; प्र० : कृष्णगोपाल केडिया, वणिक् प्रेस, १, सरकार लेन, कलकत्ता; *पात्र* : पु० ६, स्त्री ४; *अंक* : ३, *दृश्य* : ६, ५, ४।
घटना-स्थल : सवर के मकान का दालान, रास्ता।

यह एक सामाजिक नाटक है जिसमें राजनीति, मित्रता तथा सच्चे प्रेम का महत्त्व दिखाया गया है।

इसकी कथा का मूल विषय प्रेम की पवित्रता है। इसमें पाक मुहब्बत की ओर संकेत है। ताजिर का पिसर सवर शाम के वजीर हसनअली खाँ की पुत्री जमाल से प्रेम करता है। एक मालदार जौहरी कमरुद्दीन उसकी सहायता करता है। प्रेम के इस प्रसंग में सवर और जमाल को अनेक कष्ट सहने पड़ते हैं। उन पर बादशाह और वजीर का कड़ा पहरा हो जाता है। प्रेमी-प्रेमिका का मिलन कष्ट-साध्य बन जाता है। किन्तु अन्त में पाक मुहब्बत विजयी होती है। सवर की विवाहिता पत्नी भी जमाल को अपनी बहन के रूप में स्वीकार करती है। रोम का बादशाह महमूदशाह भी उनके प्रेम को पाक मोहब्बत मानता है और इनकी सत्य-निष्ठा से प्रसन्न होता है।

अठारह सौ सत्तावन की दिल्ली (सन् १९५९), ले० : महेश्वरदयाल; प्र० : भारती साहित्य मन्दिर, फव्वारा, दिल्ली; पात्र : पु० १३, स्त्री ६, *नाटक मजलिसों में विभाजित है, केवल ३ मजलिस हैं।*
घटना-स्थल : दिल्ली, चाँदनी चौक।

इस ऐतिहासिक नाटक में १८५७ के स्वतंत्रता-संग्राम के समय हुई दिल्ली की दयनीय दशा का वर्णन है। नाटक में यद्यपि लाल किले पर होने वाले युद्ध का वर्णन है परन्तु न तो कहीं लाल किला है, न बादशाह है और न बेगम। बल्कि इसके सभी पात्र दिल्ली के रहनेवाले शहरी हैं जो कि वहाँ के कूचों और बाजारों में ही दिखायी देते हैं।

अत्याचार (सन् १९४८, पृ० ७८), ले० : आनन्दप्रसाद कपूर; प्र० : उपन्यासबहार आफिस, काशी; *पात्र* : पु० १३, स्त्री ५; *अंक* : ३, *दृश्य* : ८, ६, ४।
घटना-स्थल : राजभवन।

इस सामाजिक नाटक में रामदास लोगों के अत्याचार से दुःखी होकर भी धर्म की रक्षा करता है। रामदास एक राजा है, लेकिन लोग उसे लूटकर कंगाल बना देते हैं। उसका पुत्र सोहन, पुत्री लक्ष्मी, दामाद बद्रीदास आदि दर-दर मारे-मारे फिरते हैं। लक्ष्मीकान्त उन्हें हर स्थल पर धोखा देकर परेशान करता है किंतु रामदास अपने धर्म पर अड़ा रहता है और अन्त में अत्याचार का अन्त होता है और धर्म की विजय होती है।

अत्याचार का अन्त (विक्रम १९७६, पृ० १३८), ले० : हरगुलाल वसिष्ठ; प्र० : विश्व साहित्य भण्डार, मेरठ; पात्र : पु० १०, स्त्री ६; अंक : ३, दृश्य : ९, ७, ६।
घटना-स्थल : राजमहल, जंगल, कारागार।

इस पौराणिक नाटक में कंस के अत्याचारों को प्रदर्शित किया गया है। नारद जी कंस के अत्याचार रोकने के लिए बहुत

प्रयत्न करते हैं, फिर भी कंस नहीं मानता। कृष्ण की प्रभुता का पता चलने पर वह व्याकुल हो उठता है। वह कृष्ण की हत्या करने के लिए गुप्त रूप से पूतना नाम की दुष्टा स्त्री को नियुक्त करता है। परन्तु वह भी कृष्ण का बाल-बांका नहीं कर पाती। उसकी समस्त चेष्टाएँ निष्फल हो जाने पर छल द्वारा कृष्ण को निमन्त्रित कर उनका वध कराने का निश्चय करता है। एक उत्सव में कृष्ण और बलराम को बुलाता है। वहाँ बलराम पहले मुष्टिक को मारते हैं, तत्पश्चात् कृष्ण व बलराम दोनों मिलकर कंस का वध करते हैं। इस प्रकार कंस के अत्याचारों का अन्त हो जाता है।

अत्याचार के परिणाम (विक्रम १९७८), ले० विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, प्र० भीष्म एण्ड ब्रदर्स, कानपुर, पात्र पु० १४, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ११, ७, ७।
घटना-स्थल घर।

इस सामाजिक नाटक में अत्याचारी द्वारा किये गये अत्याचार का दुष्परिणाम दिखाया गया है। अत्याचारी दस्युदल की गोष्ठी होती है जिसमें शम्पी, ब्राडी, ह्विस्की देशी-विदेशी सभी प्रकार की सुराओं का गुणगान किया जाता है। जीवन का वास्तविक आनन्द लूटने के लिए मद्यपान को अनिवार्य बताया जाता है। ये मद्यप डाकू अनेक प्रकार के कष्ट सहते हुए दिखायी पड़ते हैं और उन्हें अपने किये गये अत्याचारों का फल भी मिल जाता है। दस्यु दल के अत्याचार के मूल में मद्यपान ही है। वह मद्यप न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म, कर्तव्या-कर्तव्य का विवेक भूल जाता है और अन्त में अत्याचारी जीवन के दुष्परिणामों को भोगकर पश्चात्ताप करते हुए संसार से विदा हो जाता है।

अत्याचारी औरंगजेब (सन् १९२६, पृ० १५५), ले० ? नत्थीमल उपाध्याय 'बेचैन', प्र० उपाध्याय एण्ड कम्पनी, उदयभानु गंज, धौलपुर, पात्र पु० ३५, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ७, ६, ८।
घटना-स्थल औरंगजेब का महल, अजमेर, उदयपुर, महल का एक भाग, चित्तौड़ का समर-क्षेत्र, जोधपुर, दिल्ली का दरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक में औरंगजेब की कूटनीति और अत्याचार का वर्णन किया गया है।

अत्याचारी औरंगजेब अपने पिता शाहजहाँ को सिंहासन से उतार कर उसे अपनी बहिन जहाँनारा सहित आगरे के किले में कैद करता है और अपने भाइयों को युद्ध में परास्त करके दिल्ली के राजसिंहासन पर बैठ जाता है। वह लेखक को इतिहास लिखने, कवि को कविता बनाने तथा भक्त को देवता-पूजन करने से वर्जित करता है। बादशाह के हुक्म के खिलाफ काम करने पर कथावाचक, पंडित और श्रोतागण बन्दी बना लिये जाते हैं।

औरंगजेब पृथ्वीसिंह की वीरता और ताकत की परीक्षा लेना चाहता है जिससे क्षत्रिय कुमार पृथ्वीसिंह और औरंगजेब में घोर संग्राम होता है। पृथ्वीसिंह के आक्रमण से वह पृथ्वी पर गिर जाता है। थोड़े ही समय में पृथ्वीसिंह को विषाक्त वस्त्र पहनाया जाता है और वह विष की गर्मी से धराशायी हो प्राण त्याग देता है। औरंगजेब भी मृत्यु के उपरान्त दोजख में अनेक असह्य यन्त्रणाएँ भोगता है, अत में दुःखी होकर हाथ जोड़ते हुए कहता है—"मुझे माफ कर दो, माफ कर दो।"

अथ रामचरित्र नाटक (सन् १८९४), ले० पं० जयगोविंद मालवीय, प्र० सरस्वती यन्त्रालय, प्रयाग, पात्र पु० १०, स्त्री ६।
घटना-स्थल अयोध्या से लेकर लंका तक।

भगवान राम को लोकप्रिय राजा, मानवीय गुणों से परिपूर्ण मर्यादा-पुरुषोत्तम के नाम से पुकारा गया है। यह धार्मिक नाटक रामलीला को मंच पर खेलने के लिए लिखा गया है। इसमें ८ दिन की क्रमबद्ध वन-यात्रा से लेकर लंकेश के वध तक की लीला है। प्रत्येक दिन एक लीला दिखायी गयी है।

अथ हास्यार्णव नाटक (सन् १८८५, पृ० ७४), बाबू गोकुलचंद (भारतेन्दु जी के छोटे भाई

की आज्ञा से प्रकाशित, प्रथम संस्कार रस रूप, वाराणसी संस्कृत यंत्रालय—विक्रम १६२३, पृ० ५२) हास्यार्णव ; लें० : हि० सं० पं० मन्नालाल; प्र० : भारतजीवन प्रेस, बनारस; फाल्गुन शुक्ल १०, सोमवार, सवत् १९४१; पात्र : पु० २४, स्त्री ७; अंक ६, दृश्य नहीं, दृश्य-विधान कोई नहीं।

इसमे स्वांग दिखाने वाला नट अपनी करतूतों की झूठी डींग मारता है। महाराज तैलंगपति कामरूप के नटों को आमंत्रित कर स्वांग दिखाने का आदेश देते हैं। एक नट कहता है कि मैं मनुष्य को पशु बना सकता हूँ, चाहूँ तो आग बरसा दूँ, चाहूँ तो जल-वर्षा से प्रलय का दृश्य उपस्थित कर दूँ। अर्जुन को बकरी और भीमसेन को भेड़ बना डालूँ। राजा आदेश देता है कि उस अन्यायी राजा का अभिनय दिखाओ जिसकी अनीति से उस वंश का विध्वंस हुआ। नट भगदत्त राजा के वंश का परिचय देते हुए कहता है कि इस व्यभिचारी राजा के कुल में मन्दमति सात ब्राह्मणों का वध करता है। उसी के वंश मे गर्दभराज होता है जो गर्दभों से सतत युद्ध करता है। उसके बेटे चिपांग का पुत्र हरिवोंग है जिसका काम है—

"आश्रम वर्न अधर्मरत, बिगत लोक मर्याद।
परद्रोही परदाररत, परधन पर अपवाद॥"

त्रिभगा नामक नटी अपना परिचय देती है और भूमिका प्रारम्भ होती है। महीपाल का आगमन होता है, वह उसकी वेशभूषा का वर्णन करता है। तदुपरान्त कुमति, बंधुरा, विश्वभंड, कलहांकुर, व्याधिसिंधु, नासित, वलिक, मिथ्यावर्णन, मदनांकुश, हतशांति, निरंकुशाधिकारी, कला ब्रह्मचारिणी, दीर्घलिंग, क्रियाचतुरता, अंधकवि, प्रवेश, अच्युतानंद दीक्षित आदि अपनी करतूतें दिखाते हैं जिससे हँसी का वातावरण उत्पन्न होता है। नाटक के अंत में मिलने का पता इस प्रकार है—

जिस किसी को लेना हो सो बनारस त्रिपुर भैरवी महाल में पालाजी के छत्ते के पास बाराण्सी संस्कृत यंत्रालय में मिलेगी। कुंवार वदी चौथ, बृहस्पतिवार, सं० १९२३,

लिपिकार—गणपति
श्री गौडेन्द्र द्विजेन्द्रकर नाम सु गनपति जानु।
हास्यार्णव रसरूप कृत तेहिने कर्यो प्रकास॥

अद्भुत नाटक (सन् १८८५, पृ०१२), ले० : कालाचरण मिश्र; प्र० : भारतजीवन प्रेस, बनारस, पात्र : पु० ४०, स्त्री ६; अंक : ६ दृश्य नहीं।
घटना-स्थल : जंगल, आश्रम, गांव, पर्वत, दैत्यपुर।

यह अवधूत प्रसंगों से संग्रथित काव्य-नाटक है। इसमें अवधूतों की विविध कथाएँ वर्णित है। एक बार अवधूत सपथूदास को वृद्धावस्था में पत्नी की इच्छा होती है। वे अपने मित्र सुनकानन्द, लाडूगिरि, काणानन्द तथा शिष्य मंडूक के साथ दैत्यपुर गांव में नाटक कंजरी की पुत्री से शादी करने के लिए जाते है। अनेक प्रकार की कठिनाइयों को झेलते हुए सपथूदास कंजरी का ब्याह कर लाते हैं। अपने आश्रम में पहुँचने पर वे अपने ऊपर गुजरी आपत्तियों को याद करके बहुत रोते हैं। गुरु मुछन्दर के समझाने-बुझाने पर सब शान्त हो जाते हैं। काफी दिन बीत जाने के बाद आश्रम मे विजयानन्द जी आते हैं। वे सपथूदास तथा मुछन्दरगिरिको मुक्ति का मार्ग बताते है जिस से सपथूदास को मोक्ष का ज्ञान हो जाता है और वह अपनी नई पत्नी कंजरी के व्यवहार से दुःखी होकर गुरु मुछन्दर सहित योगाभ्यास के लिए रमणीक स्थान की खोज में चल पड़ते है। मार्ग में उन्हें परमहंस संन्यासी दिखाई देते है। वे अपना सारा अवधूतपन छोड़कर परमहंस के शिष्य बन जाते है, और अन्त में रमणपुरी चले जाते हैं; वहाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश, धर्मराज और यम अपने सहायकों सहित विराजमान होते हैं।

अधर्म का अन्त : या कुन्दन कसौटी नाटक—(सन् १९१६, पृ० १२८), ले० : मोहनलाल गुप्त 'रसिया'; प्र० : ललितकुमारसिंह नटवर; पात्र : पु० १३, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ८, ७, ६।
घटना-स्थल : देवलोक, जंगल, दरबार।

इस पौराणिक नाटक में अधर्म द्वारा

धर्म पर विये गए अत्याचारों का वर्णन है। अधर्म अपने को श्रेष्ठ समझकर धर्म से अधीनता स्वीकार कराना चाहता है। धर्म अस्वीकार करता है और उसे समझाता है। अन्त में अधम क्रुद्ध होकर धरमपुर के धार्मिक राजा धर्मसेन पर सरहदी लुटेरों के सरदार अकटक खाँ द्वारा आक्रमण कराकर उन्हें घोर संकट में डाल देता है। राजा, उसके छोटे पुत्र चन्द्रसेन तथा चन्द्रसेन की स्त्री को बंदी बनाकर जबरदस्ती अधीनता स्वीकार करने को बाध्य किया जाता है। माया की मूर्ति माया द्वारा चन्द्रसेन के बड़े भाई कामसेन पर सौंदर्य और विलासिता का जादू डाल देता है जिससे वह अपनी सती नारी को अकारण त्याग कर शत्रुपक्ष से मिल जाता है। फिर अकटक खाँ के आज्ञानुसार जल्लाद चन्द्रसेन को मारने के लिए जंगल में ले जाता है। अकस्मात् कामसेन की पत्नी द्वारा चन्द्रसेन की प्राण-रक्षा होती है, अंत में वह धर्म रूप श्रीकृष्ण के दर्शन का अनुभव सा करता है। उधर अधम का काम बनाकर माया के अन्तर्धान होने पर कामसेन की माया-निद्रा टूटती है। तत्पश्चात् दोनों भाई शत्रु का नाश करते हैं। इस प्रकार धर्म की विजय और अधर्म की पराजय होती है।

अधूरा चित्र (सन् १९६७, पृ० १०४), ले० रामनिवास सनातन, प्र० बनसल बंधु प्रकाशन, रोहतक, पात्र पु० ५, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ३, ३, ३।
घटना-स्थल राजभवन।

इस राजनीतिक नाटक में राजा के अधूरे कार्य को मंत्री की सन्तान द्वारा पूर्ण होते दिखाया गया है। महाराज नगेश जनता में सुख-शांति की स्थापना करना चाहता है, किन्तु दस्युराज उनपर आक्रमण कर जनता के सुख-वैभव को जबरन छीनने का प्रयास करता है। इसी संघर्ष में महाराज की मृत्यु हो जाती है। शांति का उनका अधूरा चित्र पूरा नहीं हो पाता है पर उनके महामंत्री की कन्या किरण ज्योति और शाल्व भैया उसे पूरा करने के लिए प्रयास करते हैं।

अधूरी आवाज (सन् १९६२, पृ० ७७), ले० कमलेश्वर, प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पात्र पु० ११, स्त्री १, अंक ३, दृश्य नहीं।
घटना-स्थल आधुनिक ड्राइंगरूम।

प्रस्तुत नाटक में मनोविज्ञान के द्वारा *सामाजिक समस्या का उद्घाटन किया गया* है। इसमें विवाह की समस्या को आधार बनाकर समाज में धनी-गरीब के भेदभाव को स्पष्ट करने का प्रयास मिलता है। राजेन्द्र एक धनी व्यक्ति है जिसकी प्रवृत्ति धन-संग्रह की है। वह नीलिमा नामक गरीब लड़की के साथ शादी करने से इनकार कर देता है। नीलिमा धनी वर्ग के अत्याचार और अर्थ-लोलुपता को देखकर बहुत दुखी होती है और अंत में आत्महत्या कर लेती है। उसकी आत्महत्या का प्रभाव उसकी छोटी बहन रंजना पर भी पड़ता है जिससे वह भी मानसिक रूप से अत्यन्त रुग्ण हो जाती है।

यह नाटक इलाहाबाद के आफिसर्स ट्रेनिंग स्कूल में 'जजन्ता' द्वारा १६ दिसम्बर,१९५४ को अभिनीत हुआ।

अधूरी मूर्ति (सन् १९६८, पृ०९०), ले० गोविंदवल्लभ पंत, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ४, दृश्य नहीं हैं।
घटना-स्थल दरबार, घर।

यह नाटक प्रसिद्ध लुटेरे नादिरशाह के भारत-आक्रमण की घटना पर आधारित है। जब नादिरशाह इस देश पर आक्रमण करता है तो उच्च वर्ग के हिन्दू-मुसलमान पारस्परिक कलह के कारण उसका सामना नहीं कर पाते। पर इस देश का निम्न वर्ग अपने देश की मान-मर्यादा बचाने के लिए नादिरशाह का मुकाबला करता है। नादिरशाह कोहनूर हीरा लूटकर ले जाता है फिर भी वह भारतीय वीरता से आतंकित होकर लौटता है।

इसका प्रथम अभिनय १५ जनवरी, १९६३ को प्रयाग में हुआ।

अनघ (सन् १९२७, पृ० १३६), ले० मैथिलीशरण गुप्त, प्र० साहित्य सदन, चिरगाँव (झाँसी), पात्र पु० १२, स्त्री १, अंक ,

अंक के स्थान पर विभिन्न शीर्षक दिये गये हैं। घटना-स्थल : अरण्य, चौपाल, उद्यान, कारागार, न्याय-सभा आदि।

सत्य, अहिंसा, मानव-चेतना तथा साम्यवाद के सिद्धान्तों पर आधारित एक गीति-नाट्य है। इसमें बुद्ध के साधनावतार रूप में मघ नामक पात्र के सत्य, अहिंसा, लोक-सेवा और त्याग को दिखाया गया है।

प्रारंभ में लुटेरे बुद्ध के साधनावतार मघ को लूटना चाहते हैं, किंतु उसकी तेजस्विता से प्रभावित होकर लौट जाते हैं। मघ गांव की सफ़ाई, रोगियों की सेवा आदि कार्यों में व्यस्त रहता है। सुरभि नामक एक युवती मघ के सद्गुणों से प्रभावित होकर उससे प्रेम करने लगती है किन्तु वह इस प्रेम को सेवा-व्रत में परिवर्तित कर देता है। मघ की लोकप्रियता के कारण उसके शत्रु षड्यन्त्रों की रचना करते हैं। दुष्टों द्वारा गायों की चोरी होने, घर के जलने तथा प्राणघातक प्रहार आदि होने पर भी वह अपना सत्पथ नहीं त्यागता। इस नाटक में चोर, सुर, साधन आदि पात्र गांधी जी के हृदय-परिवर्तन का व्यावहारिक रूप प्रस्तुत करते हैं। इसमें गांधीवाद को युग-सन्देश के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक युग की विषमताओं का एकमात्र उपाय गांधी के सत्य, अहिंसा तथा सेवा-मार्ग को माना गया है। सुरभि तथा माँ का जीवन सेवा-भाव में ही समाप्त होता है। सुरभि की प्रणयाकांक्षा तथा माँ के वात्सल्य का उत्कर्ष मघ की युग-साधना में अन्तर्भूत हो जाता है। अंतिम दृश्यों में जन-सेवा-विरोधी दुर्जन भूमिया तथा मघ को बन्दी बनाकर अहिंसा पर कुठाराघात करते हैं। सुरभि इसका रहस्योद्घाटन करती है और इससे मघ और उसके साथियों की मुक्ति के साथ षड्यन्त्रकारी दंडित होते हैं। इस प्रकार इस गीति-नाट्य में स्वार्थ, असत्य तथा हिंसा पर त्याग, सत्य और अहिंसा की विजय प्रदर्शित की गयी है।

अनन्ता (सन् १६५६, पृ० १२६), ले० : चांसनलाल सब्बरवाल; प्र० : किताबमहल, इलाहाबाद; पात्र : पु० ११, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ७, ६, ६।

घटना-स्थल : विशाल मंदिर, सिंहासन, थानेश्वर का राजपथ।

इस नाटक में थानेश्वर के वर्धनों, मालवा के गुप्तों और कन्नौज के मौखरी राजाओं की पारस्परिक स्पर्धा, शत्रुता एवं मैत्री का संवादात्मक वर्णन है। इसका कथानक प्रसाद के 'राज्यश्री' नाटक से मिलता-जुलता है। राजकुमार देवगुप्त महासेन गुप्त के पश्चात् कुछ काल के लिए मालवा के सिंहासन पर बैठने में सफल होते हैं। वह राज्यश्री के पति मौखरी-नरेश ग्रहवर्मा की षड्यंत्र से हत्या करा देते हैं और राजश्री को बन्दिनी बना लेते हैं। राज्यवर्धन कन्नौज पर आक्रमण कर अपनी बहिन राज्यश्री को कारागार-मुक्त करते हैं। देवगुप्त शशांक से मैत्री करके उसके द्वारा हर्ष के ज्येष्ठ भ्राता राज्यवर्धन की भी हत्या करा देता है। गुप्त-साम्राज्य के स्वर्गीय बलाधिकृत की कन्या अनन्ता का प्रेम देवगुप्त के प्रति है। अनन्ता आजीवन देवगुप्त को सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करती है पर वह अपने मद में प्रेमिका की सद्भावनाओं की उपेक्षा करता है। इस नाटक में एक नया पात्र—सम्राट् महासेन गुप्त की भगिनी अथवा हर्षवर्धन की माँ का भी जोड़ दिया गया है। पर उसकी उपयोगिता अधिक नहीं प्रतीत होती। अनन्ता का चरित्र एक दुःखी नारी की दुर्दशा का परिचायक है। नाटक के अन्त में अनन्ता देवगुप्त का शव गोद में रखकर विलाप करती है—"चलो, अब दोनों साथ चलेंगे'''। इस जीवन में इन शरीरों ने कभी भी एक मार्ग पर चल नहीं सके, किन्तु अब जीवन के परे'''हम साथ-साथ चलें।"

अनर्घराघव चरित्र : महानाटक (सन् १६०८, पृ० १९२) ले० : गंगाविष्णु श्रीकृष्ण दास; प्र० : लक्ष्मीवेंकटेश्वर छापाखाना, कल्याण, बम्बई; पात्र : पु० १०, स्त्री ८; अंक : १०, दृश्य नहीं हैं।

घटना-स्थल : स्वयंवर-स्थल, जंगल।

प्रस्तुत नाटक राजा नल के चरित्र का विस्तृत वर्णन करता है। राजा नल को स्वयंवर में दमयन्ती वरण करती है परन्तु कलि नल के विनाश पर तुला है। परिणामस्वरूप बहुत वर्षों के पश्चात् राजा नल अपने

भ्राता से जुए मे हार जाते हैं और दमयन्ती के साथ राज्य से निकलकर जगल मे चले जाते है।

दोनो अनेक कष्ट सहते हैं। एक दिन दमयन्ती को कष्ट से बचाने का उपाय सोचते हुए नल उसे अकेली जगल मे छोडकर चले जाते है। वह अनुमान लगाते हैं कि दमयन्ती अपने पितृगृह चली जायेगी। अत मे नल और दमयन्ती का पुनर्मिलन दिखाया गया है।

अन्नदाता माधव महाराज महान (सन् १९४३, पृ० ९६) ले० बेचन शर्मा उग्र, प्र० मानकचन्द बुक डिपो, उज्जैन, पात्र पु० ८, स्त्री २, अक ३, दृश्य ६, ६, ६।
घटना-स्थल उज्जैन के 'कालियादह महल' के पास अच्छा-खासा गाँव शिवपुरी।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमे माधव महाराज के उदार चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। माधव महाराज मराठा-पल्टन के शहसवारो को सरदारी करते हैं और ऑफिस का भी काम करते हैं।

नाटक मे धनिक लाल, कस्तूरी, गगादीन सभी कल्पित पात्र हैं। ऐतिहासिक पात्र केवल तीन हैं—माधव महाराज, नाना (जनरल नाना साहबसिदे बडौदे), रामजीदास वैश्य। सन् १९२७ के मराठी मासिक 'रत्नाकर' मे माधव महाराज पर नाना साहब का एक गभीर लेख प्रकाशित हुआ जिसके आधार पर यह नाटक लिखा गया।

कस्तूरी मास्टर धनिक लाल की पोती है। वह नारी-जीवन को ही नरक समझती है। मरने के लिए वह जहर खा लेती है लेकिन माधव महाराज उसे बचाने का प्रयत्न करते हैं। वह बचने योग्य भी हो जाती है। परन्तु इसी बीच उसके दादा मास्टर धनिक लाल की मोटर-दुर्घटना मे मृत्यु हो जाती है। उनकी लाश को देखते ही कस्तूरी की भी मृत्यु हो जाती है।

अनारकली (वि० २००६) ले० आचार्य सीताराम चतुर्वेदी, प्र० अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी, पात्र पु० ४, स्त्री २, अक ३, दृश्य ६, ५, ५।
घटना-स्थल अन्त पुर का उद्यान।

इस एतिहासिक नाटक मे नादिरा (अनारकली) का प्रेम के लिए बलिदान दिखाया गया है। शहजादा सलीम नायिका नादिरा से प्रेम करता है। नादिरा का गाना सुनकर बादशाह अकबर उसे अनारकली की उपाधि देते हैं. नाटक की खलनायिका हमीदा भी शहजादे सलीम से प्रेम करती है। अत नादिरा के प्रति शहजादे सलीम का प्रेम देखकर ईर्ष्या करने लगती है। सम्राट के मत्री अबुलफजल सलीम और नादिरा के प्रेम-व्यापार से अवगत होने पर दोनो पर निगरानी रखते हैं।

इधर हमीदा सलीम के नाम से नादिरा को पत्र लिखकर बादशाह अकबर के आरामगाह मे डाल आती है। बादशाह अकबर पत्र पढकर क्रोधाग्नि मे जलने लगते हैं और अपने मत्री अबुलफजल को सावधान करते हैं। सलीम अबुलफजल को नादिरा के निर्दोष होने का पत्र लिखता है। अबुलफजल पत्र का उत्तर नमाज का समय हो जाने से नही देता है। सलीम कोई न उत्तर पाने पर अबुलफजल को दुरभिसधि मे शामिल समझता है।

बादशाह अकबर अबुलफजल के कहने पर नादिरा की जान बख्श देता है किन्तु सलीम और नादिरा के मिलन पर प्रतिबन्ध लगाता है। प्रतिबन्ध का पता चलते ही नादिरा सलीम-प्रदत्त अँगूठी की कनी निकाल कर खा जाती है। अबुलफजल को केवल नादिरा की लाश मिलती है। वह नादिरा की कब्र बनवा देते हैं। इधर सलीम षड्यन्त्र रच कर अबुलफजल की हत्या करा देता है। जब सलीम को पता चलता है कि अबुलफजल नादिरा को कैद से मुक्त करवा रहे थे तो उसे बडा पश्चाताप होता है। बादशाह अकबर को अबुलफजल की मृत्यु पर दुख होता है। अकबर कहते हैं—"सलीम, अगर तुम बादशाह होना चाहते थे तो मुझे मार डालते, अबुलफजल को जिन्दा रहने देते। देख रहे हो, सारा शहर रो रहा है।"

हमीदा के जाली पत्र का रहस्य-उद्घाटन होने पर उसे निर्वासित किया जाता है। सलीम अनारकली की कब्र पर बैठकर रोता है और रोते-रोते मूर्च्छित हो जाता है।

अनोखा बलिदान (वि० १९८५), लें० : उमाशंकर सरमंडल; प्र० : उमेश पुस्तक भंडार, अजमेर; पात्र : पु० १५, स्त्री २ ।
घटना-स्थल : घर।

इस सामाजिक नाटक में नायिका चंचला को आदर्श भारतीय नारी के रूप में चित्रित किया गया है। वह शिक्षिता होकर भी पति की श्रद्धा के साथ सेवा करती है। चंचला के पति तेजसिंह ऐसे पुरुष हैं जिनकी मनोवृत्ति मध्यकालीन है और जो स्त्री-शिक्षा में विश्वास नहीं रखते। किंतु चंचला पति में अटूट श्रद्धा रखते हुए उनकी स्त्री-शिक्षा-संबंधी मान्यताओं का विनम्र भाव से खण्डन करती है। स्त्री-शिक्षा के प्रचार में वह अपना बलिदान कर देती है।

अपना-पराया (सन् १९५३), लें० : राजा राधिकारमणप्रसादसिंह; पात्र : पु० १८, स्त्री ५, अंक : ३, दृश्य : ३, २, २ ।
घटना-स्थल : विवाह-मण्डप, नगर के दृश्य आदि।

इस सामाजिक नाटक में एक नि:स्वार्थ समाजसेवी प्रेमनाथ और गुण्डा यूसुफ की करतूतों का समाज पर परिणाम दिखाया गया है। प्रेमनाथ समाजसेवी आर्यसमाजी हैं, जो अपने पुत्र सुरेश और उसके सहयोगियों की सहायता से बेला नामक युवती की गुण्डों के दल से रक्षा करते हैं। अब बेला के विवाह का प्रश्न सामने आता है। समाज का कोई भी भद्र व्यक्ति उस युवती को ग्रहण नहीं करना चाहता। अत: वे अपने पुत्र सुरेश को ही बेला से विवाह करने के लिए बाध्य करना चाहते हैं। पर सुरेश का प्रेम रानी नामक लड़की से है। अब प्रेमनाथ संकट में पड़ जाते हैं और एक मार्ग निकालते हैं। वह सुरेश से कहते हैं कि पहले तुम बेला के गले में माला डाल दो और कुछ दिनों के बाद अध्ययन के बहाने से नगर में जाकर रानी से विवाह कर लेना; मैं लाहौर में बेला के लिए उचित प्रबन्ध कर दूँगा। सुरेश पिता की आज्ञा मान लेता है और दोनों का विवाह हो जाता है। यूसुफ नामक व्यक्ति बेला और सुरेश की फोटो रानी को दिखा देता है और वह सुरेश की दी हुई अंगूठी दीनू नामक नौकर को प्रदान करती हुई कहती है—"वह रानी तो कभी की मर चुकी, यह तो रजिया बोल रही है, रजिया।" और वह अपना नाम रानी से रजिया रख लेती है।

बेला की अवैध सन्तान का नाम रणवीर पड़ता है क्योंकि वह सुरेश के साथ ब्याह से पूर्व ही गर्भवती थी। सुरेश सन्तान को स्वीकार नहीं करना चाहता किन्तु उसका पिता उदार विचारों का है। वह सन्तान की रक्षा करता है। सुरेश असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण कारावास भेज दिया जाता है। किन्तु जेल जाने से पूर्व रजिया (रानी) से उसका साक्षात्कार होता है जिससे उसे ज्ञात होता है कि बेला की सन्तान का उत्तरदायी यूसुफ है और रानी की सन्तान सुरेश की है।

सुरेश और रजिया का पुत्र गुलाब है। बेला की दूसरी सन्तान सुरेश की पुत्री मीरा है जिसे गुलाब यूसुफ की प्रेरणा से भगा लेना चाहता है। पर मीरा का बड़ा भाई रणवीर सुरेश-परिवार के संसर्ग में साहसी समाजसुधारक बन जाता है और प्राणों पर खेल कर अपनी बहन के सतीत्व की रक्षा करता है।

यह एक सामाजिक नाटक है जिसमें यूसुफ जैसे पापात्मा खलपात्र और प्रेमनाथ जैसे उदार समाज-सुधारक विद्यमान हैं। नाटक के अन्त में प्रेमनाथ समाज के कल्याण के लिए भरत-वाक्य के रूप में भगवान से प्रार्थना करते हैं।

अपनी कमाई, लें० : राजेन्द्रकुमार शर्मा; प्र० : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; पात्र : पु० ११, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य नहीं है।
घटना-स्थल : क्लब, घर, ड्राइंग-रूम।

इस सामाजिक नाटक में रिश्वत की समस्या उठायी गयी है। खुल्लमखुल्ला रिश्वत लेने वाले मि० वर्मा अपनी पत्नी के अनुरोध पर यह कुकृत्य छोड़ देते हैं। मि० वर्मा सरकारी अधिकारी हैं अत: उनके हाथ में अधिकार है। उस अधिकार से अनुचित लाभ उठाने वाले चंपतराय और चंदन मि० वर्मा और उसकी पत्नी को विविध भाँति के प्रलोभन देने में संलग्न हैं। किन्तु वर्मा की पत्नी सभी प्रकार के प्रलोभनों का तिरस्कार

करती है और स्वयं भोंडे में निर्वाह का मार्ग दिखाकर पति को इस कुकृत्य से बचा लेती है।

अपनी धरती (सन् १९६३, पृ० ८६), ले० रेवतीसरन शर्मा, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पात्र पु० ४, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ३, ३, २।
घटना-स्थल गाँव का एक मकान, आँगन, रसोई।

यह नाटक १९६२ के भारत-चीन युद्ध का दृश्य उपस्थित करता है। इस युद्ध के समय भारतीय वीर सैनिक और उसके परिवार का त्याग और बलिदान दिखाया गया है।

इसमें एक ऐसे देशभक्त सैनिक की कथा है, जो अपने देश के लिए सब-कुछ बलिदान कर देता है। बलवन्तसिंह अपनी माँ को अकेला घर छोड़कर युद्ध के लिए जाता है और अपनी आँखें और पाँव खो बैठता है। लेकिन उसकी माँ हिम्मत नहीं हारती। उसे अब भी आशा है कि बेटा शीघ्र ही अच्छा होकर दुश्मनों से फिर लड़ने जायेगा।

इस कथा के अतिरिक्त लेखक गाँव की अन्य समस्याओं की ओर भी संकेत करता है। दिल्ली की नाट्य-संस्था 'कला साधना मंदिर' द्वारा इसका प्रदर्शन हो चुका है।

अपराजित (विक्रम २०१८, पृ० १४५), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० कौशाम्बी प्रकाशन, दारागंज, इलाहाबाद, पात्र पु० १२, स्त्री ४, अंक २, प्रत्येक अंक में एक ही दृश्य है।
घटना-स्थल कुरुक्षेत्र की समरभूमि, रणभूमि में बाणों की शैया, गंगा-तट।

इस पौराणिक नाटक में ब्राह्मण-पुत्र अश्वत्थामा को युद्ध में अपराजित सिद्ध किया गया है। इस नाटक का नायक अश्वत्थामा और नायिका उसकी पत्नी माधुरी है। माधुरी गान्धारी के पुरोहित की कन्या है। वह जितनी धर्मविद्या में निपुण है उतनी ही गन्धर्व-विद्या में भी। वह संजीवनी विद्या भी विधिवत् जानती है। उसकी हार्दिक अभिलाषा है कि वह कुरुक्षेत्र में अश्वत्थामा की सारथी बन कर रणनीति का संचालन करे। वह अपने पति से कहती है कि भवानी की अंशरूपिनी मैं हूँ और शंकर के अंशरूप तुम हो। अश्वत्थामा उसे सारथी बनने की अनुमति दे देते हैं। विरोचन द्वारा अपने पिता का युद्ध-क्षेत्र में अस्त्रशस्त्र त्याग समाधिस्थ होना जानकर अश्वत्थामा व्याकुल हो जाता है। वह अति क्रुद्ध होकर कुरुक्षेत्र में माधुरी-सहित घोर संग्राम करता है। वह पाण्डु-पुत्रों को मारने के प्रयास में धोखे से पाण्डवों के अन्य पाँच पुत्रों को मार डालता है। इधर युद्ध में कुरुराज भी असह्य पीड़ा से आतुर होते हैं। पराजित कुरुराज की समस्त धन-धरती पर पाण्डव अपना अधिकार जमाना चाहते हैं, लेकिन अश्वत्थामा इसका विरोध करता है। वह पराजित कुरुराज का प्रतिनिधि बनकर सामने खड़ा हो जाता है, और पाण्डवों को पुनः युद्ध के लिए ललकारता है। पाण्डव युद्ध को टालना चाहते हैं और उस पर पाण्डव-पुत्रों के वध का अभियोग लगाते हैं। आहत कुरुराज की असह्य वेदना देखकर शत्रुओं पर वह ब्रह्मास्त्र छोड़ता है। इधर अर्जुन भी अपने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करता है। दोनों के टकराव से अग्नि की वर्षा होने लगती है। व्यास जी वहाँ ब्रह्मास्त्र के नियंत्रण की आज्ञा देते हैं। अर्जुन का अस्त्र भानुमती के मणि का हरण करता है। द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा को मृत्यु में भी अपराजित रहने का वरदान प्राप्त होता है। तथा अन्त में सभी अपराजित अश्वत्थामा की जय-जयकार बोलते हैं।

अपराधी (सन् १९५६), ले० पृथ्वीनाथ शर्मा, प्र० हिन्दी भवन, जालंधर, पात्र पु० ८, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ५, ६, ५।
घटना-स्थल उद्यान, गली, बन्दीगृह।

इस सामाजिक नाटक में एक सामान्य नारी का उदात्त चरित्र दिखाया गया है। इसमें अशोक नायक है और लीला नायिका। बाल्यकाल में ही अशोक माता-पिता की छाया से वंचित रह जाता है। वह अपने चाचा नंदगोपाल के संरक्षण में एम० ए० तक उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। पर चाचा के आदेश के विरुद्ध वह पुलिस की मिलती हुई नौकरी छोड़कर साहित्यिक जीवन बिताना चाहता है। इस पर रुष्ट होकर चाचा उसे घर से

निकाल देता है। घर से निकल कर अशोक अपनी सपनों की रानी लीला के पास जाना चाहता है लेकिन अपनी दयनीय दशा से लज्जित हो वहाँ नहीं जा पाता। इसी अन्तर्द्वन्द्व में वह एक अँधेरी गली में घूमता हुआ एक चोर पकड़ता है लेकिन दयार्द्र हो उसे छोड़ देता है। चोर का पीछा करने वाले अशोक को ही चोर समझ कर हवालात में ले जाते हैं। चोर द्वारा सफाई से डाली गई घड़ी उसकी जेब में मिलती है जिससे वह चोर साबित हो जाता है। मैजिस्ट्रेट राजकिशोर अशोक को आदर्शवादी और प्रतिभाशाली जानते हुए भी नहीं छोड़ते। लीला और रेणु अशोक को जमानत पर छुड़ाकर असली चोर को खोजने का प्रयत्न करती हैं।

अशोक फैसला सुनने के लिए अदालत में हाजिर होता है। इतने में असली चोर मातादीन घड़ी की सोने की चेन दिखलाकर अपना अपराध स्वीकार कर लेता है। अशोक लीला और रेणु को लेकर पार्क में जा पहुँचता है और उन्हें अपनी मुक्ति और असली चोर के जेल जाने की बात बताता है। यह सुनते ही वहाँ उपस्थित आशा के मुँह से एक सर्द आह निकल जाती है जिससे अशोक को यह पता चल जाता है कि वह चोर आशा का प्रेमी है, जिसकी प्रेरणा से वह अदालत में जाकर अपना अपराध स्वीकार कर लेता है। यह सुनकर रेणु आशा के महान चरित्र की बहुत सराहना करती है।

अपराधी कौन ले० : रमेश मेहता; प्र० : चौ० नरेन्द्र प्रकाशन, नई दिल्ली; पात्र : पु० ५, स्त्री २, अंक : ३।
घटना-स्थल : घर।

इस सामाजिक नाटक में तथाकथित हत्यारे की आत्म-हत्या दिखाई गई है। रघुनाथ दास पर एक सेठ की हत्या का झूठा आरोप लगता है अतः वह वेश बदलकर अपने को साधु भगवतीप्रसाद बताता है। उसकी बहन रंजना लाल से प्रेम करती है और पुत्र सुधीर उषा से प्रेम करता है। एक दिन भगवतीप्रसाद का पुराना पड़ोसी कालीचरण उससे 'ब्लैक मेल' का धन्धा करता है। क्योंकि उसे इस भेदभरी भगवती का रहस्य ज्ञात था। इसी बीच रंजना को यह पता चलता है कि उसका प्रेमी विवाहित है। रंजना उसे दुत्कारती है, किन्तु वह प्रेमपत्र दिखाकर उसे ब्लैकमेल करना चाहता है। सुधीर अपने प्रयत्नों से रंजना की इज्जत बचा लेता है क्योंकि वह भी रंजना के प्रेमी की बहिन से प्रेम करता था और उसके प्रेम-पत्र भी सुधीर के पास थे। भगवतीप्रसाद अपनी बहिन का रिश्ता एक जगह पक्का कर देता है। मँगनी वाले दिन कालीचरण भगवतीप्रसाद से रुपये लेने आता है, परन्तु वह ब्लैकमेल से बचने और अपने पुत्र और बहिन के भविष्य के लिए आत्महत्या कर लेता है। ब्लैकमेल करने वाले कालीचरण का रहस्य भी उसे मरते समय ज्ञात होता है।

अपूर्व दाम्पत्यम् (सन् १८८६, पृ० ४४), ले० : श्री नादेल्ल पुरुषोत्तम कवि; प्र० : श्री नादेल्ल मेधा दक्षिणमूर्ति शास्त्री, मछलीपटणम; पात्र : पुरुष १५, स्त्री ३; अंक : नहीं, दृश्य : १५।
घटना-स्थल : मछलीपटणम् और आन्ध्र के अन्य नगर।

'सोमवार व्रत-माहात्म्य' को प्रतिपादित करने वाले इस नाटक में शिवभक्तों की महत्ता का निरूपण किया गया है।

वरशिव और सारस्वत नामक ब्राह्मणों के क्रमशः सोमवन्त और सुमेध नामक पुत्र हैं। वे दोनों गुरुभाई हैं। गुरुकुल में अध्ययन समाप्त कर वे घर पहुँचते हैं। माता-पिता के आदेशानुसार गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने से पूर्व आवश्यक धन-संपादन के लिए वे विदर्भराज के यहाँ जाते हैं। वह राजा शर्त लगाता है कि तुम लोग दम्पति वेश धारण कर सीमंतिनी के पास जाओ और उससे दंपति-पूजा ग्रहण कर आओ तो मुँहमाँगा धन दे दूँगा। सोमवंत और सुमेध राजा की आज्ञा का पालन करने निकल पड़ते हैं और वहाँ सीमंतिनी के प्रभाव से सोमवत सचमुच स्त्री बन जाता है। इस रूप में घर आने पुत्रों को देख उनके माता-पिता दुःखी होते हैं। वे सारे विदर्भराज के पास पहुँच उसे खरी-खोटी सुनाते हैं। राजा अपने गुरु भरद्वाज से प्रार्थना करते हैं। गुरु जी की सलाह के अनुसार वे गौरी की पूजा करते हैं। गौरी माई भी अपनी असमर्थता

प्रकट करती हैं पर शाप-विमोचन का उपाय बताती है कि एक पुत्र के जन्म के बाद सोमवत फिर पुरुषत्व को प्राप्त करेगा। वह वैसा ही कर पूर्वरूप को प्राप्त करता है।

अपोलो (सन् १९६९, पृ० ९१) ले० सतीश दे, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० १०, स्त्री १, अक २।
घटना-स्थल प्रयोगशाला।

इस वैज्ञानिक नाटक मे चाँद की मिट्टी की चोरी दिखायी गयी है। सन् १९६९ मे जब अमरीकन चन्द्रयात्री अपोलो ११ के द्वारा चन्द्र के धरातल पर पहली बार उतरे तो विश्व मे तहलका मच गया। असम्भव वस्तु सभव हो गयी। चन्द्र-धरातल बडा ही ऊबड-खाबड और पथरीला है। चन्द्रमा की मिट्टी से ऐटम बम की शक्ति को क्षीण किया जा सकता है किन्तु इसके लिए सफल वैज्ञानिक की आवश्यकता है। डा० कटारिया चाँद की मिट्टी पर खोज करते हैं। उनके घर मे ही प्रयोगशाला है। नाटक का प्रारम्भ डा० कटारिया के मूर्ख नौकर एण्टोनी और पुत्री बबली की बातचीत से होता है। डा०कटारिया की प्रयोगशाला से ही दुश्मन चाँद की मिट्टी की चोरी करते हैं। प्रो० कछवाह दुश्मनो और डा० कटारिया से मिले हुए हैं। वे अपने देश की प्रतिष्ठा को भी नीलाम कर देते हैं। बबली डा० कटारिया की पुत्री है जो चायू से बातें करती है जिसकी कल्पना शायद नाटककार ने उस चीनी कहावत से की है, जिसमे कहा जाता है कि चीन की एक १६ साल की लडकी वहाँ बहुत दिनो से घूम रही है। बबली उसी से बात करती है, ऐसा दुश्मनो ने उसे विश्वास करा दिया है। किन्तु अनूप और विनोद नामक नवयुवक दुश्मनों की योजनाओ को असफल बना देते हैं। वे कहते हैं कि दुश्मनो को पकडने के लिए पुलिस, फौज की आवश्यकता नही है वरन् इसके लिए देश का प्रत्येक नवयुवक ही पर्याप्त है।

अप्सरा (सन् १९५१, पृ० ११५) ले० वृद्धिचन्द्र अग्रवाल 'मधुर', प्र० कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, बनारस, पात्र पु० १०, स्त्री ७, अक ३, दृश्य ६, ५, ८।
घटना-स्थल स्वर्ग।

इस पौराणिक नाटक मे उर्वशी नायिका है। इसमे उर्वशी अप्सरा और सूर्य, चन्द्र के प्रेम की कथा है। उर्वशी चन्द्र से प्रेम करती है, इन्द्र इसका विरोध करता है, किन्तु अन्त मे प्रेम की विजय होती है और उर्वशी इन्द्र को प्रभावित कर उससे आशीर्वाद भी प्राप्त कर लेती है।

अप्सरा (सन् १९५२) ले० सुमित्रानन्दन पत, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पुरुष, स्त्री, स्वर, अक-रहित, दृश्य ४।
घटना-स्थल कलाकार का घर।

स्वय पतजी ने 'अप्सरा' को 'सौन्दर्य-चेतना का रूपक' कहा है। घृणा, स्वार्थ, राग-द्वेष से त्रस्त मन नवीन सदर्भों को स्वीकार नही कर पाता। ऐसी विषम स्थिति मे कलाकार नव्य चेतना का आह्वान करता है। किन्तु मन ग्रन्थियो की भयकर छायाकृतियो के भय से सौंदर्य अवतरित नही होता। परिणामस्वरूप नवीन चेतना तथा अवचेतना के कुरूप तत्वो मे सघर्ष होता है और समस्त विकृतियो के नाश के साथ नवीन चेतना विजयी होती है।

अलौकिक सगीत से आविर्भूत कलाकार प्राणो के स्तर पर नवीन चेतना का अनुभव करता है और इसकी प्राप्ति के लिए व्याकुल हो जाता है। यहाँ अप्सरा उसे बताती है कि पूर्ण समर्पण द्वारा ही उसे पाया जा सकता है।

मानसिक सघर्ष शीर्षक से द्वितीय दृश्य मे फ्रायड आदि मनोविश्लेपणकर्ता उदास भावनाओ को त्यागकर कला के निम्न स्तरो को स्वीकारते हैं। इसीलिए मानव सौंदर्य-प्राप्ति मे असमर्थ रहता है। इन असमर्थताओ से नवचेतना का सघर्ष होता है, जिसमे नवचेतना विजयी होती है। यहाँ कलाकार जनमत-मन्दिर मे मनुष्यत्व की नव प्रतिमा की कल्पना करके अपना कर्त्तव्य निश्चित करता है।

तृतीय दृश्य 'उन्मेष' मे प्राचीन मान्यताओ के खँडहर पर नव-चेतना का निर्माण होता है। इस स्थल पर कवि धेनु-धरा का रूपक प्रस्तुत करता है। पुराणो मे धम की

ग्लानि होने पर जिस प्रकार धरा धेनु का रूप धारण कर भगवान के आगे विनती करती है कि वे अवतार लेकर उसका भार हटायें, उसी प्रकार यहाँ धरा-चेतना विनय करती है। पौराणिक रूपक में भगवान धरा को आश्वस्त करते हैं, यहाँ यह कार्य कलाकार करता है। यहाँ अरविन्द-दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है।

चतुर्थ दृश्य में कलाकार सौन्दर्य-चेतना को अन्तर्तम की स्वर-लहरी बताता है। उसके पश्चात् आनन्दमूर्ति सौन्दर्य-चेतना मन के धरातल पर अवतरित होती है। राग-द्वेष, कुत्सा-स्पर्धा से मुक्त जीवन में वैषम्य का तम छँटकर भावसाम्य का उदय होता है। इसी भाव के साथ गीति नाट्य समाप्त होता है।

अफजल-वध (सन् १९५०, पृ० ११६), ले०: मोहनलाल महतो 'वियोगी'; प्र०: साहित्य-सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र : पु० ११, स्त्री १; अंक : ३, दृश्य : ३, ३, ४।

इस ऐतिहासिक नाटक में हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा अन्य राष्ट्रीय भावनाओं का उल्लेख है। शिवाजी औरंगजेब के अत्याचार का सामना जनता के सहयोग से कर रहे हैं। दक्षिण भारत में विजय-कीर्ति से आतंकित मुगल बादशाह अफजल खाँ को शिवाजी के पकड़ने के लिए भेजता है।

इसमें शिवाजी की धार्मिकता, राष्ट्रीयता, धर्मनिरपेक्षता तथा उच्च चारित्रिक महत्ता को प्रस्तुत किया गया है। इसमें मुगल सेना की विलासिता और मरहठा वीरों की शूरता चित्रित है।

अफजल खाँ स्वयं शिवाजी के कार्य और वीरता की प्रशंसा करता है। शिवाजी मुस्लिम नारी, धर्म एवं पूजा के स्थानों की पवित्रता तथा धार्मिक पुस्तकों की पूर्णरूपेण रक्षा करते हैं। उनके राज्य में मुस्लिम प्रजा का उतना ही ध्यान रखा जाता है जितना हिन्दू प्रजा का। दूसरी तरफ उन्मत्त शासक तथा उसके अफजल खाँ जैसे सिपहसालार हिन्दू और मुस्लिम दोनों पर क्रूरता से वध करते हैं। अतः प्रजा के सहयोग से शिवाजी सर्वत्र विजयी होते हैं। अफजल खाँ छल से शिवाजी की हत्या का प्रयास करता है परन्तु स्वयं मारा जाता है।

अफसर (पृ० ६४), ले० : पं० शिवदत्त मिश्र; प्र० ठाकुरप्रसाद गुप्ता, बुकसेलर, वाराणसी; पात्र : पु० ५, स्त्री २; अंक नहीं, दृश्य : १५। घटना-स्थल महल, कमरा, राजदरबार आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक में स्त्री जाति के कुशल नेतृत्व और अद्भुत वीरता का वर्णन है। वीरांगना सोमावती कुम्भल स्टेट की उत्तराधिकारिणी है। अचानक पेशावर का गवर्नर टेलर कुम्भल पर चढ़ाई कर देता है। सोमावती का सेनापति केतुसेन विश्वासघात करता है जिसमें सोमावती उसे निकाल देती है। अख्तर तथा नूरेआलम नामक वीरांगनाएँ वीरतापूर्वक युद्ध में सोमावती का साथ देती हैं। टेलर जबरदस्ती नूरेआलम को अपहृत कर अपनी बेगम बना लेता है। विक्रमकुमार एक राजपूत सैनिक है जो वीरांगना सोमावती की युद्ध में दिल से मदद करता है। अचानक अख्तर और विक्रम कुमार पेशावर के गवर्नर टेलर को गिरफ्तार कर नूरेआलम को छुटकारा दिलाते हैं। अन्त में विक्रमकुमार और सोमावती का विवाह हो जाता है। बहादुरी से लड़ते हुए राजपूत अंग्रेजी सैनिकों को भगा देते हैं। अंत में कुम्भल स्टेट की विजय होती है।

अफसोस हम न होंगे (सन् १९७०, पृ० ८३), ले०: रणवीरसिंह; प्र०: विद्या प्रकाशन मंदिर, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : ३, दृश्य नहीं है।
घटना-स्थल : घर।

इस सामाजिक नाटक में दाम्पत्य जीवन को वहम के द्वारा दुःखी और हास्य-व्यंग के माध्यम से सुखी बनाया गया है।

मदन के सीने में दर्द होने के कारण मृत्यु हो जाने का वहम हो जाता है। वह अपनी पत्नी ऊषा की अनुपस्थिति में टेलीफोन से डा० घोष को इलाज के लिए बुलाता है। वह डाक्टर द्वारा दी हुई दवा को खाने के लिए बाथरूम में जाता है। उधर डाक्टर घोष कार्डियोलाजिस्ट से टेलीफोन पर बात करके किसी दूसरे मरीज की हालत बहुत

गम्भीर बताते हैं। डा० घोष द्वारा कही हुई बात को मदन अपने विषय में समझकर बहुत चिंतित होता है जिससे वह अपनी पत्नी ऊषा को प्रेम-पत्र लिखता है कि 'मेरे मरने के बाद तुम अपनी शादी मोहन के साथ कर लेना।' अपने मित्र अरविन्द को अपनी सन्निकट मृत्यु की आशंका से अवगत करते हुए उससे यह वचन लेता है कि वह ऊषा पर रहस्योद्घाटन न करेगा। अपनी यादगार बनवाने के लिए वेग साहब को तीन हजार रुपए भी दे देता है।

इधर ऊषा को मदन की बीमारी का पता चलने पर वह इलाज के लिए बम्बई जाने को तैयार होती है। अचानक डाक्टर घोष मछली का शिकार लेकर घर में आते हैं। वह डा० घोष से मदन की बीमारी की चर्चा करती है। डा० घोष मदन को बिल्कुल ठीक बताते हैं। ऊषा को वहम होता है कि मदन मुझे मोहन के साथ बाहर भेजकर किसी अन्य लड़की के साथ प्यार करना चाहते हैं। इसी बात पर पति-पत्नी में लड़ाई होती है। अरविन्द के कहने पर मदन प्रेम करने की बात जबरदस्ती स्वीकार कर लेता है। लेकिन फिर भी ऊषा उसकी बात का विश्वास नहीं करती। मदन भी इस प्रेम-कहानी को झूठा बताता है जिससे दोनों पति पत्नी अपने-अपने वहमों का समाधान हास्य-व्यंग्य से करते हुए कमरे में चले जाते हैं।

अबला की आह (सन् १९३०, पृ० ९८), ले० देहाती महिला, प्र० आशा हृष्ट, उपन्यासबहार आफिस काशी, बनारस, पात्र पु० ३, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ६, ६, २। घटना-स्थल पाठशाला-मार्ग, मंदिर।

इस सामाजिक नाटक में सज्जन पुरुषों द्वारा स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा तथा व्यभिचारियों के कुकृत्यों का परिणाम दिखाया गया है। धूर्त तथा लम्पट जमींदार दामोदर अजना नामक भोली-भाली कन्या को अपने जाल में फँसा कर भ्रष्ट करता है और फिर उसे छोड़कर सुशीला नामक दूसरी विदुषी कन्या के पीछे पड़ता है। नरेश बाबू एक उपकारी तथा नगीनचन्द्र एक धर्मात्मा पुरुष हैं। नगीनचन्द्र अपना विवाह उदारता में अजना के साथ कर लेते हैं। दामोदर कई प्रयत्नों के बाद जब सुशीला को भ्रष्ट नहीं कर पाता तो धोखे से एकान्त में बुला कर बलात्कार करना चाहता है पर नरेश बाबू व नगीनचन्द्र के तत्काल पुलिस लेकर पहुँच जाने से सुशीला की मुक्ति हो जाती है तथा व्यभिचारी दामोदर पकड़ा जाता है। नरेश बाबू सुशीला से सहर्ष विवाह कर लेते हैं तथा दामोदर अपने पापकर्मों के परिणाम-स्वरूप कालेपानी की सजा पाता है।

अभागिन (सन् १९६२, पृ० ५०), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० ५, स्त्री २, अंक ३। घटना-स्थल घर।

इस सामाजिक नाटक में स्त्री के मातृ-स्वरूपा बनने की महत्त्वाकांक्षा को दिखाया गया है। सध्या को एक बच्चा चुराने के अपराध में ६ महीने की सजा होती है। सध्या सन्तान-रहित होने से ऐसा काम करती है। उसका पति सुरेश उसे बांझ समझकर तलाक देकर दूसरी शादी करना चाहता है किन्तु पत्नी सध्या के गर्भवती होने का हाल सुनकर सुरेश उसके जेल के दिन गिनने लगता है। जेल से मुक्त होने पर एक दिन मूसलाधार वर्षा में किवाड़ की चौखट पर सध्या के गिरने से एक बच्चे का जन्म होता है किन्तु तुरन्त ही अभागिन के प्राण-पखेरू उड़ जाते हैं। माँ बनने की आखिरी तमन्ना पूरी होती है जिसकी अति खुशी में वह अपने पति के चरणों पर अपने को समर्पित कर देती है।

अभिमन्यु चक्रव्यूह में (सन् १९६४), ले० विश्वजीत, प्र० सुमेर प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य नहीं हैं। घटना-स्थल ड्राइंग रूम।

इस व्यंग्य-प्रधान नाटक में ... भारत की ज्वलंत समस्याओं—प्रान्तीयता जातीयता, भाषावाद और वैयक्तिक स्वार्थपरता को स्पष्ट किया गया है।

इसमें एक अधिकारी के निर्णय भाव ... भी दिखाया गया है। कैलाशनाथ ... सचिवालय में एक उत्तर भारतीय प्रशासनाधिकारी हैं। एक दिन उनके दफ्तर में ...

इंजीनियर पद के लिए इंटरव्यू होता है, जिसमें कैलाश 'इंटरव्यू बोर्ड' का चेयरमैन होता है। उनके पास दिल्ली के एक ठेकेदार अपने साले की सिफ़ारिश लेकर आते हैं, परन्तु वह घर पर नहीं मिलते। अतः वह उनके नौकर रामू को दस रुपए और एक शाल रिश्वत के रूप में दे जाता है। इसके पश्चात् कैलाश की बिरादरी के प्रधान इस पद के लिए अपने भतीजे की सिफ़ारिश करते हैं, परन्तु कैलाश उनका अपमान कर देते हैं। वह अपने नौकर रामू को भी उस रिश्वत के लिए डाँटते हैं। इतना ही नहीं, वह अपनी साली सरोज के भावी पति की सिफ़ारिश को भी ठुकरा देते हैं। इस पद के लिए वह योग्य व्यक्ति को चुनते हैं जो उनकी साली सरोज का भावी पति ही है। इस ईमानदारी के लिए समाज उनकी कड़ी आलोचना करता है।

अभिमन्यु नाटक (वि० १९८५, पृ० १७६), ले० : शालिग्राम वैश्य; प्र० : गंगाविष्णु श्रीकृष्ण दास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, कल्याण, मुंबई; पात्र : पु० ३३, स्त्री ९; अंक : १०, दृश्य : २, २, २, २, १, ७, ९ ५, ६, ८।
घटना-स्थल : मंत्रणागृह, पाण्डवों के डेरे, युद्ध-स्थल, व्यूह-द्वार इत्यादि।

इस पौराणिक नाटक में वीर अभिमन्यु के शौर्य का चित्रण किया गया है। साथ ही व्यूह में अभिमन्यु की मृत्यु एवं अर्जुन का स्वर्गलोक में जाकर श्रीकृष्ण से पुत्र-मुख देखने की प्रार्थना का वर्णन है। जयद्रथ-वध की कथा का मनोरंजक ढंग से समावेश है। अभिमन्यु की मृत्यु के बाद उत्तरा का पतिप्रेम स्फुट होकर सामने आता है। वह दुःखकातर होकर कहती है—"अब जाती हूँ मैं छोड़ जग को छिन पिया पथा जीजिए। हे पिता, माता, स्वजन, भ्राता देख मोहि सब लीजिये॥"

नाटक के अंत में पति की लाश को गोद में लेकर उत्तरा अग्नि में जलने को उद्यत होती है, किन्तु आग उसे नहीं जला पाती। इसका कारण है—देववाणी—

मत डर अनल में आय,
तव गर्भ एक कुमार है।
सो वंश को कारक महान
गुनन अगम अपार है॥

इस प्रकार नाटक का अंत होता है।

अभिमन्यु-वध (वि० १९९०, पृ० २८), ले० : गोवरधन गोस्वामी; प्र० : देवकीनन्दन प्रेस, वृन्दावन, पात्र : सभी पुरुष १४; अंक : ७। घटना-स्थल : युद्ध-स्थल, व्यूह, मंत्रणा-भवन आदि।

महाभारत में पाण्डवों द्वारा पराजित दुर्योधन द्रोणाचार्य और अन्य सेनापतियों से अरि-दल को नष्ट करने का उपाय पूछता है। द्रोणाचार्य द्वारा अर्जुन की प्रशंसा और पाण्डवों की जीत की भविष्यवाणी सुनकर वह चिढ़ जाता है और द्रोणाचार्य को कपटी तथा पाण्डवों का पक्षधर बताते हुए कहता है कि "आप मुझे मारकर अपने पक्ष का उपकार करिये।" दुःखी दुर्योधन द्रोणाचार्य की शरण में जाकर उनकी आज्ञानुसार सभी कार्य करने के लिए वचनबद्ध होता है जिससे प्रसन्न होकर द्रोणाचार्य अर्जुन को पाण्डव-दल से हटाने का कार्य दुर्योधन और कर्ण आदि पर छोड़कर एक ऐसे व्यूह की रचना करते हैं जिससे किसी-न-किसी पाण्डव को फँसाकर मार डालने का कार्य होगा। द्रोणाचार्य के इस निश्चय का पता भग्न पायक और भग्नदूत के वार्तालाप से चलता है।

दूसरे दिन दुर्योधन अपने प्रधान सेनापतियों को अर्जुन को युद्ध में फँसाये रखने का आदेश देता है जिससे द्रोणाचार्य द्वारा निर्मित व्यूह में किसी-न-किसी पाण्डव को फँसाकर मार डालने का प्रण पूरा हो सके।

इधर अर्जुन की अनुपस्थिति में युधिष्ठिर अन्य पांडवों सहित व्यूह तोड़ने के लिए चिंतित हैं। इसी बीच अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु आता है और व्यूह को नष्ट करने की शिक्षा पिता से पाने की सूचना देकर युधिष्ठिर से व्यूह-भेदन का आदेश प्राप्त कर लेता है। युधिष्ठिर उसे युद्ध के लिए सहर्ष भेजते हैं।

रणक्षेत्र में जाकर वह विपक्षियों के साथ युद्ध करता है। अभिमन्यु के रण-कौशल से द्रोणाचार्य भी हतप्रभ हो जाते हैं। दुर्योधन आचार्य की अवज्ञा कर अन्याय द्वारा अभिमन्यु-वध का संकल्प लेकर अनेक योद्धाओं के साथ

एकाकी अभिमन्यु पर प्रहार करता है। इस अवसर पर अभिमन्यु का धनुर टूट जाता है। उसे निहत्था और अरक्षित जानकर दुर्योधन की आज्ञानुसार जयद्रथ तलवार से मार डालता है।

अभिलाषा (सन् १९६६, पृ० ८४), लें० वीरेन्द्र ठाकुर 'वियोगी', प्र० ठाकुर प्रकाशन माऊ-बेहट, दरभंगा, पात्र पु ६, स्त्री ४, अक ३, ३, १७।
घटना-स्थल प्रेमेश का घर, माधवी का घर, मुनचुनमा का घर, योगेश का दरवाजा, प्रेमेश का दरवाजा, मडव, आनन्द की एक कोठरी, बिस्तरा एव मंदिर इत्यादि।

इसमें मिथिला की सामाजिक समस्या का दिग्दर्शन कराया गया है। मिथिला मे वैयक्तिक और सामाजिक मूल्य का ह्रास होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में नाट्यकार ने इस मूल्य को सुदृढ धरातल पर प्रतिष्ठित कराने का प्रयास किया है। इसके लिए उन्होने एक मध्यवित्त वर्ग के अमूल्य रत्न प्रेमेश, माधवी, और भारती तथा दरिद्रता के भार से दबे शोषित वर्ग के रक्त का शोषण कर अपनी दानवीय द्रव्य-पिपासा को शान्त करने मे लगे उमाकात और उसके पापों के उत्तराधिकारी आनन्द को आमने-सामने लाकर समाज का शवच्छेदन करने का सफल प्रयास किया है।

अभिषेक (सन् १९६८, पृ० १००), लें० ओंकारनाथ दिनकर, प्र० प्रगतिशील समाचार समिति, भीलवाडा (राज०), पात्र पु० १२, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ३, ३, ३।
घटना-स्थल चित्तौड दुर्ग मे एक विशाल कक्ष, चित्तौड दुर्ग के समीप मुगल हुमायूं का शिविर, महाराणा विक्रमादित्य का मत्रणा-कक्ष, युवराज उदय का विश्राम-कक्ष, मेवाड की सीमा मे एक वनखण्ड, कुम्भलगढ-दुर्गपति आशाशाह का मत्रणा-कक्ष, कुम्भलगढ का सीमावर्ती वन-प्रदेश।

इस ऐतिहासिक नाटक मे एक धाय की स्वामिभक्ति दिखायी गयी है जो अपना सर्वस्व निछावर करके मेवाड के राजकुमार उदयसिंह के प्राणों की रक्षा करती है। महाराणा सग्रामसिंह के पश्चात् मेवाड साम्राज्य की राजनीति पर गहरा प्रभाव पडा। वहाँ पर क्रमश राणा रत्नसिंह, विक्रमादित्य, बनवीर और उसके पश्चात् राणा उदयसिंह के अभिषेक और पदमुक्ति का कार्यक्रम चलता रहा। इसमें अराजकता, सघर्ष, विघटन, पारस्परिक कलह, फूट के साथ-साथ त्याग, उत्सर्ग एव स्वामिभक्ति के प्रसग उपलब्ध हैं। मेवाडी सामन्त युद्धो से दुखी होकर शान्ति स्थापित करना चाहते हैं। बहादुरशाह चित्तौड पर आक्रमण करता है। जौहरबाई हुमायूं के चित्तौड मे पहुँचने की प्रतीक्षा करती है किन्तु जब दुर्ग की रक्षा नही हो पाती तो स्वय वह जौहरव्रत का आश्रय लेती है। उसके पश्चात् हुमायूं पहुँचता है तो बहादुरशाह भाग जाता है। पन्ना मेवाड के भावी राणा उदयसिंह को लेकर दुर्ग से निकल जाती है। पन्ना धाय की चतुराई से उदयसिंह का वध करने मे असफल दासी-पुत्र बनवीर महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर देता है। पन्ना धाय बालक उदय को लेकर सामन्तो के पास जाती है और उनसे आश्रय माँगती है किन्तु बनवीर के भय से उसे कहीं आश्रय नही मिल पाता। अन्त मे वह कुम्भलगढ पहुँचती है। दुर्गपति आशाशाह भी उसे शरण नहीं देता किन्तु उदयसिंह को अपने यहाँ रख लेता है। कालान्तर मे पन्ना धाय और आशाशाह के सरक्षण मे उदयसिंह किशोर बन जाता है और उसका विवाह होता है। और फिर वह उदयपुर को मुक्त कराने के लिए आततायी बनवीर से युद्ध करता है। उदयसिंह को विजयश्री मिलती है और बनवीर भाग जाता है। राणा उदयसिंह का अभिषेक होता है, अभिषेक के पश्चात् पन्ना धाय उस प्रासाद-भूमि को छोडकर उस जगह जाती है जहाँ पर उसके पुत्र का वध हुआ था। इस भाँति मेवाड के सिंहासन पर पुन शिशोदिया वश की स्थापना होती है।

अमर आन (सन् १९६४) लें० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० । हिंदी भवन, जालन्धर, पात्र पु० ७, स्त्री ३, अक ३।
घटना-स्थल हवेली का कक्ष (तीनों अकों की घटनाएँ एक ही स्थल पर)।

इस ऐतिहासिक नाटक मे प्रसिद्ध ५ ,७

वीर अमरसिंह राठौर के शौर्य की झांकी प्रस्तुत की गयी है।

महाराज अमरसिंह राठौर अपनी नव-विवाहिता पत्नी अहाड़ी रानी के सौंदर्य पर मुग्ध होकर मुगल सल्तनत की सेवा करना अस्वीकार कर देता है जिसके कारण मुगल शासन का मीर बख्शी सलावतखां अमर को शाहजहां की आज्ञा सुनाता है कि महाराज को शाही ड्योढ़ी पर पहरा देना होगा। यह बात सुन कर अमरसिंह को गुस्सा आ जाता है। वह सलावतखां का अपमान करता है और स्वयं शाहजहां से मिलने जाता है। वहां पहुंचकर अमर अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए सलावतखां का वध अपने मनसबदारों के सामने करने को कहता है। इसके पश्चात् वह अनेक योद्धाओं को मारता हुआ आहत अवस्था में महल पहुंचता है। शाहजहां एक राजपूत मनसबदार अर्जुन गौड़ द्वारा अमर को मरवा डालता है। शाहजहां का ज्येष्ठ पुत्र दारा कुंवर जगतसिंह की रक्षा का वचन देता है—इस आश्वासन के साथ अहाड़ी रानी अपने पति के साथ सती हो जाती है।

अमर बलिदान (वि० २०२८, पृ० १५२), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : कौशाम्बी प्रकाशन, दारागंज, इलाहाबाद; पात्र : पु० १२, स्त्री १; अंक : ३, दृश्य : ४, ५, ६। घटना-स्थल : झांसीगढ़ से बाहर का मैदान, कमिश्नर स्कीन का बंगला, सैनिक शिविर, झांसी का दुर्ग, किले की एक दीवार, बेतवा का तट, अंग्रेजों की छावनी।

इस ऐतिहासिक नाटक में सन् १८५७ में घटित भारतीय स्वाधीनता-संग्राम पर प्रकाश डालने के उद्देश्य से लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे और झांसी की रानी के दीवान लक्ष्मणराव आदि का बलिदान दिखाया गया है। झांसी पर अधिकार जमानेवाले फिरंगियों से युद्ध करने को आल्हा, ऊदल, चम्पतराय, छत्रसाल और हरदौल के वंशज (झांसी की प्रजा) महारानी लक्ष्मीबाई की आज्ञा की प्रतीक्षा में हैं, किन्तु लक्ष्मीबाई के जेठ का अवैध पुत्र अलीबहादुर अंग्रेजों को प्रसन्न कर राज हथियाना चाहता है। झांसी के कमिश्नर स्कीन और डिप्टीकमिश्नर गार्डन अलीबहादुर को गुप्तचर बनाकर लक्ष्मीबाई की योजनाओं की जानकारी प्राप्त करते हैं। उधर लक्ष्मीबाई अपने पिता मोरोपंत, मंत्री लक्ष्मण राव और तात्या टोपे से स्वतंत्रता के युद्ध के विषय में परामर्श करती है। लक्ष्मीबाई जब सेना का प्रश्न उठाते हुए कहती है—"फिरंगियों ने हमारी सेना भंग कर दी है, हमें सेना तो चाहिए ही।" तात्या टोपे विश्वास दिलाते हैं कि "इन अंग्रेजों ने भारत का धन लूटकर जो वेतनभोगी विशाल भारतीय सेनाएं जुटाई हैं वे सब अपनी ही सेनाएं हैं। तुम रणभेरी बजाओ।" तात्या टोपे, नाना और लक्ष्मीबाई साथ-साथ बिठूर में अस्त्रविद्या सीखते रहे, इसी नाते तात्या टोपे उन्हें बड़ी बहिन मानकर चरणों में मस्तक झुकाता है और स्वातंत्र्य-युद्ध में बलि होने की प्रतिज्ञा करता है।

द्वितीय अंक में गार्डन और स्कीन अलीबहादुर को झांसी का राज्य प्रदान करने का प्रलोभन देते हैं। अलीबहादुर का देशद्रोही सेवक पीरअली रानी के विरुद्ध षड्यंत्र करता है। पर झांसी की भारतीय सेना अंग्रेजों से प्रतिशोध लेने को उतावली होती है। गार्डन के अनुरोध पर अंग्रेज स्त्री-बच्चों को रानी अपने महल में रक्षार्थ रख लेने को तैयार होती है। किन्तु कई भारतीय सैनिक क्रुद्ध होकर किले में रक्षित स्त्री-बच्चों को मौत के घाट उतार देते हैं। रानी उनकी भर्त्सना करती है। महारानी और सैनिकों के वार्तालाप से ज्ञात होता है कि संग्राम छेड़ने का दिन इकत्तीस मई तय था, किन्तु बारकपुर में मंगल पाण्डेय ने समय से पहले अंग्रेज अफसरों को गोली का शिकार बना डाला। योजना थी कि सारे भारत में एक साथ अंग्रेजी सत्ता पर आक्रमण कर उसका अंत कर दिया जाए। अब अंग्रेजों को अपनी सहायता के लिए बर्मा, तिब्बत, ईरान से सेना बुलाने का समय मिल गया। अब सरल कार्य कठिन हो गया।

इसी समय सम्राट् बहादुरशाह का पत्र लक्ष्मीबाई के पास आता है जिसमें अंग्रेजों के अत्याचारों और उनसे मुक्ति के उपायों पर विचार प्रकट किया गया है। सम्राट् ने लिखा है—

"हमने यह कदम फिर से मुगल साम्राज्य स्थापित करने के लिए नहीं उठाया है। यहां

ऐसे राज्य की स्थापना की जाए जो यहाँ के प्रत्येक वर्ग की राय से काम करे।"

लक्ष्मीबाई युद्ध की तैयारी करती हैं। गड़ी हुई तोपों को निकाल कर गौस खाँ प्रयोग के उपयुक्त बनाता है। दासी सुन्दर स्त्रियों को पुरुष-वेश पहनाकर सेना तैयार करती है किन्तु अलीबहादुर और पीरअली रानी की गतिविधि से अंग्रेजों को परिचित कराते हैं। पीरअली गौस खाँ को महारानी के विरुद्ध कर देने में सफल होता है। ह्यू ऐज पीरअली को शराब पिलाते हुए नाना प्रकार के प्रलोभन देता है। रानी के शस्त्रागार में देशद्रोही दूल्हाजी आग लगा देता है। लक्ष्मीबाई वीरतापूर्वक अंग्रेजी सेना को चीरती झाँसी से काल्पी पहुँचती है। अंग्रेजों को विजय पर विजय मिलती है। तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई आदि स्वतंत्रता-सेनानी ग्वालियर गढ की दीवार के नीचे बाबा गंगादास की कुटी के पास पहुँचते हैं। इधर ग्वालियर के राव साहब घुँघरुओं की आवाज सुनने में मस्त हैं। अंग्रेज लक्ष्मीबाई और तात्या-टोपे का पीछा करते हैं। युद्ध होता है और लड़ते-लड़ते लक्ष्मीबाई बलिदान होती है। कुटिया के पास चिता पर उनका दाह-संस्कार होता है। बाबा गंगादास बताते हैं कि "महारानी पुरुष-वेश में थी, इसी कारण अंग्रेज उन्हें पहचान न पाए और जब वह मरणासन्न स्थिति में थी वे उन्हें अंतिम साँसें गिनने के लिए छोड़ गए।" तात्या टोपे चिता के समीप खड़े होकर उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि देते हुए कहते हैं—"यह चिता बुझ जायेगी, किन्तु भारत के जनमानस में जलने वाली ज्वाला तब तक शान्त न होगी जब तक हमारा देश स्वतंत्र नहीं होगा।"

अमर बेल (सन् १९५३, पृ० १८२), ले० हरिश्चन्द्र खन्ना, प्र० नवपंजाब साहित्य सदन, दिल्ली-जालंधर, पात्र पु० ८, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ३, २, ६।

घटना स्थल पंजाब का एक साधारण कस्बा।

इस समस्यामूलक नाटक में अछूतों की समस्या का समाधान और शूद्रों की विकट समस्या को यथार्थ रूप मे सामने लाता है।

अमर और मदन दो भाई हैं। मदन अछूतों की सेवा और दलित वर्ग का उद्धार करने में ही अपने जीवन की सार्थकता समझता है। उसकी पत्नी रमा भी उसके विचारों की पुष्टि करती है। अमर भी मदन और उसके दल से प्रभावित होता है, लेकिन इनकी माँ पुराने विचारों की होने के कारण मदन के कामों को पसन्द नहीं करती। बड़ी बीबी अपने धन और सम्मान को ज्यादा महत्त्व देती है। अपनी माँ के उलाहनों से ऊब कर मदन अपनी स्त्री के साथ घर छोड़ देता है। भाई के विद्रोह से अमर बहुत दुःखी होता है लेकिन वह माँ के विरोध में कुछ नहीं कर सकता है। इधर अमर मीना नाम की एक अछूत लड़की से शादी करना चाहता है लेकिन उसकी माँ उसे ऐसा नहीं करने देती जिससे वह भी घर छोड़ने को तैयार हो जाता है। यह देखकर उसकी माँ पुत्र-स्नेह के कारण उन दोनों भाइयों के रास्ते का काँटा न बनने की कसम खाती है और सब पुनः मिल जाते हैं।

अमर शहीद भगतसिंह अथवा सुनहरे पन्ने (सन् १९५०, पृ०६४), ले० वचनि सक्सेना, प्र० रतन एण्ड कंपनी बुकसेलर, दिल्ली-६, अंक २, दृश्य ११, ६।

घटना-स्थल दिल्ली, कानपुर, इलाहाबाद, सभा, कारागार, आदि।

इस राजनैतिक नाटक में स्वतंत्रता-सेनानी वीर भगतसिंह तथा उनके अन्य साथियों का देश के प्रति अद्भुत बलिदान दिखाया गया है। भगतसिंह भारत की आजादी के लिए प्राणपण से अपने अन्य साथियों सहित अंग्रेजों के कट्टर विरोधी हो जाते हैं। स्थान-स्थान पर राजगुरु, सुखदेव आदि के साथ अंग्रेजों पर हमले करते हैं। अन्त में बम फेंकने के अपराध में भगतसिंह को फाँसी की सजा दे दी जाती है। यह नाटक देशभक्ति से ओतप्रोत है।

अमरसिंह राठौर (सन् १८९५, पृ० ८२), ले० राधाचरण गोस्वामी, प्र० मथुराभूषण प्रेस; पात्र पु० १८, स्त्री १, अंक नहीं, केवल १५ दृश्यों में विभाजित है।

घटना-स्थल घोर वन, यमुना-तट, शाहजहाँ

का दरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक में अमरसिंह की वीरता का वर्णन है जिसके प्रारम्भ में दो वैतालिक गाते हुए कह रहे हैं—"भारत को वेग दास भाव से छुड़ाओ, जयभारत जय भारत जयभारत गाओ।" अमरसिंह राठौर प्रतिज्ञा करते हैं कि चित्तौड़ और सोमनाथ का बदला बिना लिये अमरसिंह न मानेगा। एक स्थान पर कहते हैं—"जो दिल्ली-पति का सीस न काट गिराऊँ। राठौर अमरसिंह जग में नहीं कहाऊँ।"

अमरसिंह सभी हिन्दू राजाओं के पास पत्र लिखते हैं और शंकरानन्द और योगानन्द के द्वारा अपना सन्देश सारे देश को सुनाते हैं। अमरसिंह दिल्ली-प्रस्थान से पूर्व रानी सूर्य-कुमारी से वार्तालाप करते हैं और विदा लेते हुए कहते हैं—"प्यारी, यदि जीते रहे तो इसी देह से, और युद्ध में रहे तो दिव्य देह से मिलेंगे।"

शाहजहाँ के दरबार में अमरसिंह विराजमान हैं। शाहजहाँ पूछते हैं—"क्यों अमर, तुमने सलावत खाँ को जुर्माना नहीं दिया?" अमरसिंह और सलावत खाँ में द्वन्द्वयुद्ध होता है। सलावत खाँ आहत होकर गिरता है। शाहजहाँ अमरसिंह को पकड़वाना चाहता है। शाहजहाँ के दरबारियों से युद्ध होता है। अमरसिंह अनेक को घायल करता है। पर शाहजहाँ की फौज चारों ओर से अमरसिंह को घेर लेती है। मुगलों के हाथ मरना अनिवार्य समझ अमरसिंह अर्जुनसिंह से कहते हैं—"ऐसा न हो कि मैं दुष्ट यवनों के हाथ से मारा जाऊँ। तुम अपने खड्ग से मार दो।" अर्जुनसिंह के खड्ग से अमरसिंह की मृत्यु होती है। राठौर सेना और मुगल सेना में युद्ध होता है। महारानी सूर्यकुमारी घोड़े पर सवार होकर मुसलमानी सेना से युद्ध करती है। श्मशान पर बहुत से क्षत्रिय वीरगण खड़े हैं। सूर्य-कुमारी राजपूतों से आपसी फूट मिटाने का आग्रह करती है।

अमर सुभाष (पृ०१०५), ले० : ज्ञानचन्द जैन; प्र० : साहित्यरत्न भण्डार, आगरा; पात्र : पु० १३, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ७, ७, ३। घटना-स्थल : बगीचा, जापान।

इस नाटक में वर्तमान इतिहास के निर्माण के प्रमुख ऐतिहासिक पात्र तिलक, गांधी, सुभाष, अरविंद, सरोजिनी नायडू, सरदार पटेल, शाहनवाज खाँ, सहगल, लक्ष्मी स्वामीनाथन, हिटलर, तोजो और अमर क्रांतिकारी रासबिहारी बोस का उल्लेख किया गया है।

नाटक के प्रथम अंक में सुभाष के हृदय में मातृ-भूमि के प्रति अगाध प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना को प्रकाशित किया गया है। युग के क्रांतिकारी बन्दी तिलक के चरणों में राष्ट्र-भक्ति का उज्ज्वल आलोक लेकर नाटक का नायक अमर सुभाष गांधीजी के स्वदेशी आन्दोलन में जुट जाता है और अपनी उत्कट देशभक्ति, तीव्र लगन और दृढ़ संगठन-शक्ति के द्वारा न केवल अपनी माँ से आशीष प्राप्त करता है बल्कि जनता का हृदय-हार बन जाता है। राजकीय बाग का माली सुभाष को हार भेजता है और अरविंद पुलिस की नौकरी छोड़कर सुभाष के स्वातंत्र्यान्दोलन में सम्मिलित हो जाता है। अंक के छठे दृश्य में रमेश और प्रेमशंकर तथा माली की बातचीत से युग पर सुभाष के प्रभाव को प्रदर्शित करने का प्रयास है। इस अंक के अंतिम दृश्य में सुभाष की प्रतिज्ञा और माता का आशीष नायक के उत्कर्ष का आभास देता है।

द्वितीय अंक में स्वतन्त्रता का अमर सेनानी सुभाष विदेश जाने की योजना बनाता है। विदेश में वह हिटलर, मुसोलिनी से मिलकर उनसे सहायता की आशा व्यक्त करता है। जापान पहुँचने पर वह तोजो से मिलकर भारतीय कैदियों को मुक्त कराते हैं और आजाद हिन्द फौज का संगठन करते हैं। शाहनवाज, रासबिहारी बोस तथा सहगल आदि नेताजी के कार्य में हाथ बँटाकर युद्ध में जुट जाते हैं। डा० लक्ष्मी स्वामीनाथन भी लक्ष्मीबाई रेजिमेंट की कमाण्डर बनती हैं। नेताजी अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय सेना का नेतृत्व करते हैं। विजय-पराजय के मध्य सेना बढ़ती है।

तृतीय अंक में 'आजाद सेना' की भारी क्षति तथा पीछे हटने की सूचना दी गई है। इसी अंक में नेताजी की वायुयान-दुर्घटना से

'भारतीय नेताजी' की चिन्ता, जनता के नैराश्य को अभिव्यक्त किया गया है। सुभाष भारत की स्वाधीनता की सूचना आश्रम में गौतम को देते हैं और स्वयं राजनीतिक कुटिलता तथा पद-लोलुपता से पृथक रहकर आध्यात्मिक उत्थान में तल्लीन हो जाते हैं। इस प्रकार नेताजी के जीवित रहने की धारणा को नाटककार सुभाष बाबू के इस कथन से अभिव्यक्त करता है—"अब मैं लोक-दृष्टि से लोप ही रहूँगा।"

अमर है आलोक (मनोरंजन पत्रिका के फरवरी १९४९ के अंक में प्रकाशित), ले० गिरिजाकुमार माथुर, पात्र पु० १, स्त्री १, अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल नहीं।

यह एक सगीत-रूपक है जिसमें काल्पनिक चित्रों द्वारा जनमुक्ति की भावना के साथ नवयुग-आगमन का संकेत दिया गया है। युग-पुरुष नामक पात्र गांधी का प्रतीक है एवं मुक्तिक्रिया स्वतंत्रता की। जिस प्रकार पृथ्वी से सीता का जन्म तथा समुद्र-मथन से लक्ष्मी का उदय हुआ था उसी प्रकार अनेक संघर्ष तथा त्याग के पश्चात् भारत में स्वतंत्रता अवतरित हुई। भारत के गौरवमय अतीत का चित्रण करते हुए कवि स्वतंत्रता-आलोक में उसे अमर बनाना चाहता है।

अमिया (सन् १९४६, पृ० १२०), ले० कंचनलता सब्बरवाल, प्र० साहित्य सदन, देहरादून, पात्र पु० ७, स्त्री १०, अंक ३, दृश्य ५, ६, ६।
घटना-स्थल राजमहल, तोरमाण का राजगृह, घना जंगल।

इस ऐतिहासिक नाटक में अमिया की वीरता तथा प्रेमी राजकुमार वज्रगुप्त के प्रति पूर्ण श्रद्धा दिखायी गयी है। भानुगुप्त बालादित्य पर हूणों का आक्रमण होता है। गुप्त-साम्राज्य का उच्च पदाधिकारी देशद्रोही होकर हूणराज से मिल जाता है। वह सन्यासी का वेश धारण कर भेद लेने के लिए राजमहल में पहुँच जाता है। उसके साथ उसकी पुत्री अमिया भी राजमहल में जाती है। अमिया की माता देशद्रोही पति को छोड़कर मायके चली जाती है। अमिया और राजकुमार वज्रगुप्त का प्रेम हो जाता है। दुर्भाग्यवश अमिया को युद्ध में वज्रगुप्त से जूझना पड़ता है और उसके ही तीर से राजकुमार घायल होता है। वह युद्ध-क्षेत्र से आहत राजकुमार का शव उठाकर जंगल में चली जाती है। अपनी सखी मधुरा को भी सेवा के लिए बुला लेती है। उनकी परिचर्या से राजकुमार के प्राण बच जाते हैं। बालादित्य का स्वर्गवास होता है। राजकुमार जब राजधानी को लौटते हैं तो अमिया अपना परिचय देशद्रोही मातृविष्णु की पुत्री के रूप में देती है। राजकुमार उसके उपकार भूलकर उससे घृणा करने लगते हैं। प्रेमयोगिनी अमिया उसी वन-कुटी में राजकुमार की प्रतीक्षा करती है। वह भी शत्रुओं से युद्ध में असफल होने पर अमिया के पास ही सान्त्वना पाने की दृष्टि से पहुँच जाते हैं किन्तु उनके पहुँचने से पूर्व ही अमिया के प्राण-पखेरू उड़ चुके होते हैं। घायल राजकुमार भी वहीं अन्तिम श्वास लेता है। वहीं एकमात्र मधुरा का आर्त-स्वर सुनायी पड़ता है—"तुम आये नाथ आज क्या ?"

सन् १९५२ में महिला विद्यालय लखनऊ में प्रदर्शित।

अम्बा (सन् १९३५, पृ० १११), ले० उदयशंकर भट्ट, प्र० मोतीलाल बनारसीदास, लाहौर, पात्र पु० १३, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ३, ५, ७।
घटना-स्थल महल, आश्रम, रणक्षेत्र।

इस पौराणिक नाटक में काशिराज की कन्या अम्बा पर आयी आपत्ति और उसका निराकरण दिखाया गया है। काशिराज अपनी तीनों कन्याओं—अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका के स्वयंवर में धीवर-कन्या सत्यवती के पुत्र विचित्रवीर्य को आमंत्रित नहीं करता है। अतः सत्यवती भीष्म को भेजकर उन तीनों का हरण करवा लेती है। अम्बिका और अम्बालिका तो विचित्रवीर्य से ब्याही जाती हैं किन्तु शाल्व को पहले ही वर लेने की बात प्रकट करने पर वह अम्बा को शाल्व के यहाँ जाने देती है। शाल्व अपहृत कन्या को वरने से इनकार कर देता है जिससे अपमानित अम्बा

के मन में पुरुष के प्रति भयंकर प्रतिशोध की भावना जागती है।

परित्यक्ता अम्बा का समाचार सुनकर उसकी दोनों बहनें बहुत दुःखी होती हैं और उनमें भी पुरुषों के क्रूर व्यवहार पर रोष उत्पन्न होता है। वे स्त्री-समाज की दशा पर दुःख प्रकट करती हैं। इसी बीच विचित्रवीर्य रोग से चल बसता है और भीष्म अम्बा को अविवेकपूर्वक हरने के कारण पश्चात्ताप करता हुआ परशुराम के आगे अपना अपराध स्वीकार करता है। इस पर परशुराम उसे अम्बा से विवाह करने की आज्ञा देते हैं जिसे वे अविवाहित रहने के प्रण के अनुसार अस्वीकार करते हैं। फलतः क्रोधी परशुराम उसे युद्ध के लिए ललकारते हैं। परन्तु भीष्म के हाथों पराजित होते हैं। भीष्म से बदला लेने के लिए वह अम्बा को शिव की तपस्या करने का उपदेश देते हैं। अम्बा की तपस्या से शिव प्रकट होते हैं जिनसे वह भीष्म के नाश का वरदान माँगती है। शिव उसे यह वरदान देकर अन्तर्हित हो जाते हैं कि दूसरे जन्म में शिखंडी बनकर तू भीष्म का नाश कर सकेगी। इस जन्म में अपनी कामना-पूर्ति न होने पर वह गंगा में कूदकर आत्महत्या कर लेती है और दूसरे जन्म में शिखंडी बनती है।

महाभारत-युद्ध के बाद शरशय्या पर पड़े भीष्म के निकट सभी के सामने व्यास इस रहस्य का उद्घाटन करते हैं कि अम्बा ही शिखंडी बनकर भीष्म से प्रतिशोध ले रही है। भीष्म भी इसे स्वीकार करते हैं। अम्बा शिखंडी के रूप में अपने प्रतिशोध को पूरा होता हुआ देखकर प्रसन्नता से पागल हो उठती है।

अमृत-पुत्री (सन् १९७०, पृ० ११२), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : ज्ञानभारती, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : ३, दृश्य : ४, ३, ३।
घटना-स्थल : वितस्ता का तट, भवन-कक्ष, वाटिका, राजमहल आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक में चाणक्य की योजनानुसार कठ-राज्य के गणनायक की पुत्री कणिका द्वारा फिलिप्स की मृत्यु दिखाई गई है। नाटक का उद्देश्य नाट्यकार के शब्दों में "देशवासियों का ध्यान राष्ट्रीय एकता की ओर खींचना है।"

पुरु-पराजय के उपरान्त सिकन्दर पूर्व-भारत की ओर बढ़ने की योजना बनाता है किन्तु यूनानी योद्धाओं के प्रतिनिधि-रूप में काइनास इसका विरोध करता है। अतः परिस्थितियों से विवश सिकन्दर फिलिप्स को भारत में क्षत्रप नियुक्त कर यूनान को प्रस्थान करता है। आचार्य चाणक्य अपनी नीति से केकय-नरेश आम्भी, पुरु, शिविगणनायक सिंहरण और अग्रश्रेणी गणनायक जयपाल में मतैक्य स्थापित करते हैं। सिंहरण की पुत्री जयश्री के सौन्दर्य पर जयपाल मुग्ध है, अतः इन दोनों राज्यों में मैत्री स्थापित हो जाती है। कठ-गणनायक की पुत्री कणिका अपनी मातृभूमि की रक्षा और यूनानियों से प्रतिशोध लेने को विषकन्या भी बनने को उद्यत है। चाणक्य उसे विष-कन्या से अमृत-पुत्री बनने की युक्ति बताते हैं। उनके आदेशानुसार पुरु विजयी फिलिप्स के स्वागतार्थ उत्सव करता है जिसमें कणिका के नृत्य से फिलिप्स मुग्ध होकर उसे बलात् पकड़ना चाहता है। कणिका कंचुकी में से कटार निकालकर उस का वध करती है। पुरु-सेना के नये सेनापति चन्द्रगुप्त योजनानुसार यूनानी योद्धाओं से युद्ध करते हैं। यूनानी पराजित होते हैं और भारत विदेशी शासन से मुक्ति पाता है। कणिका को अमृत-पुत्री की उपाधि मिलती है।

अयाची (सन् १९६२, पृ० ८०), ले० : काशीनाथ मिश्र; प्र० : ग्रंथालय प्रकाशन, दरभंगा; पात्र : पु० १७, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : अयाची मिश्र का घर, टूटन का दरवाजा, वैद्यनाथधाम का रास्ता, बालुकामय भूमि, गंगा का किनारा, वैद्यनाथधाम का पहाड़ी मार्ग, जंगली मार्ग, बाबा वैद्यनाथ का मंदिर, भोलवा चमार का घर, सरिसव ग्राम का मार्ग एवं अयाची मिश्र का भोजनालय।

इस नाटक में मिथिला की पुरातन गरिमा के ऐतिहासिक पक्ष का उल्लेख किया गया है। महामहोपाध्याय अयाची मिश्र मिथिला की महान् विभूतियों में से एक हैं। उनकी उद्भट विद्वत्ता से सभी प्रभावित हैं, किन्तु वह

अपने नाम के अनुकूल किसी से कुछ भी याचना करना महापाप समझते हैं। उनका सिद्धान्त है कि मनुष्य मनुष्य से क्या याचना करे, उसे तो केवल ईश्वर से याचना करनी चाहिए। उपर्युक्त सिद्धान्तानुरूप उन्होंने अपना जीवन-यापन किया। वे धर्म के दस महान् लक्षणों में अपरिग्रह को अपने जीवन में प्रत्यक्ष प्रयोग द्वारा सिद्ध करना चाहते हैं। इसी साधना की झलक इस नाटक में मूल रूप से दिखायी गयी है। धार्मिकता से प्रेरित अयाची अनेक कष्टों को झेलकर वैद्यनाथधाम जाते हैं और वहाँ प्रसन्नचित्त से शिव की आराधना करते हैं। बहुत दिनों के बाद वापस आने पर उनकी पत्नी भवानी उन्हें एक विस्मयपूर्ण कथा सुनाती है। वह बताती है कि महाराज हमारे पुत्र शंकर की विद्वत्ता से प्रभावित होकर खजाने से ढेर-सी अशर्फियाँ पुरस्कारस्वरूप देते हैं। किन्तु मैं अपनी पूर्व-प्रतिज्ञानुसार अपने गाँव के 'दगरिन' को दे देती हूँ, क्योंकि शंकर के जन्मोत्सव पर उसे कुछ भी नहीं दिया गया था।

महामहोपाध्याय अयाची मिश्र को इससे बड़ा सन्तोष होता है और भगवान् में उनकी निष्ठा और दृढ हो जाती है।

अर्जुन की पराजय (सन् १९७०, पृ० ६४), ले० विश्वम्भरनाथ 'वाचाल', प्र० भाग्योदय प्रकाशन, मथुरा, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ७, ६, ४।
घटना-स्थल रणक्षेत्र, मणिपुर, नागलोक।

इस पौराणिक नाटक में अर्जुन के पुत्र बभ्रुवाहन की वीरता और अर्जुन की पराजय दिखायी गयी है। महाभारत-युद्ध के उपरान्त पाण्डु-पुत्रों को अपनी विजय का घमण्ड हो जाता है। अर्जुन अपने को चक्रवर्ती सम्राट् घोषित करने के लिए अश्वमेध यज्ञ करते हैं। कृष्ण अर्जुन के इस घमण्ड को उनके पुत्र बभ्रुवाहन द्वारा नष्ट करवा देते हैं। इस अश्वमेध में एक अश्व चारों दिशाओं में घूमने के लिए छोड़ दिया जाता है। मणिपुर पहुँचने पर उस घोड़े को बालक बभ्रुवाहन हठात् पकड़ लेता है—उसकी माँ चित्रांगदा अपने पति (अर्जुन) के सम्मान एवं स्वागतार्थ उसे लौटा देती है किन्तु अर्जुन बभ्रुवाहन को वेश्यापुत्र एवं क्षात्र-धर्म-विरोधी कहकर अपमानित करते हैं। वह अपने को अर्जुन-पुत्र बताता है। इसके प्रमाण के लिए अर्जुन उससे युद्ध की अपेक्षा करते हैं। वीर बालक बभ्रुवाहन युद्ध में समस्त पाण्डवों-सहित अर्जुन, वृषकेतु प्रद्युम्न को मार डालता है। चित्रांगदा पति के वियोग में विलाप करती है। माँ को बिलखता देख बभ्रुवाहन दुःखी होता है। तभी उलूपी अपने पिता के पास नागलोक से नागमणि लाकर सभी को जीवित करने की बात बताती है। बभ्रुवाहन नागलोक जाकर नागराज को युद्ध में पराजित करता है। उसकी वीरता से प्रभावित होकर नागराज उसे नागमणि तथा अमृत-कुण्ड देता है। वह मणिपुर आकर अपने मृत पिता अर्जुन तथा अन्य सभी को जीवित कर देता है।

इस नाटक का अभिनय मथुरा में सन् '७० में हुआ।

अर्जुन-पुत्र बभ्रुवाहन नाटक (सन् १९२९, पृ० ८६), ले० पं० कृष्णकुमार मुखोपाध्याय, प्र० श्रीलाल उपाध्याय, काशी, पात्र पु० १२, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ८, ७, ६।
घटना-स्थल अनार्यलोक, रणक्षेत्र आदि।

इस पौराणिक नाटक में अर्जुन तथा उसके पुत्र बभ्रुवाहन के बीच हुए युद्ध में बभ्रुवाहन की विजय और अर्जुन की पराजय दिखायी गयी है। प्रारम्भ में भगवान् कृष्ण नारद मुनि को अनार्य लोक में भेजते हैं। वहाँ नारद की भेंट अर्जुन-पुत्र इरावत तथा उसकी माता से होती है। इसी समय महाभारत का युद्ध भी शुरू हो जाता है। अर्जुन का पुत्र इलावत उनकी सहायता करने जाता है। इस पर बभ्रुवाहन भी अपनी माता से अपने को युद्ध में न होने का कारण पूछता है। अन्त में परिस्थितिवश अर्जुन व बभ्रुवाहन का युद्ध होता है जिसमें अर्जुन पराजित होते हैं।

अलका (वि० २०१३, पृ० ३०), ले० आचार्य पंडित सीताराम चतुर्वेदी, प्र० अ० भारतीय विक्रम परिषद्, काशी, पात्र पु० १ (छायारूप में), स्त्री १०, अंक २, दृश्य ३, ४।

घटना-स्थल : यक्ष का भवन, अलका का राजमार्ग।

इस पौराणिक नाटिका में पति-पत्नी के अद्भुत प्रेम को प्रदर्शित किया गया है। यह मेघदूत की कथा के आधार पर विरचित है। अलकाधिपति कुबेर शिव की नित्य पूजा करते हैं और पूजार्थ पुष्प लाने का कार्य हेममाली को दिया गया है। हेममाली की पत्नी विशालाक्षी उसे इतनी प्रिय है कि वह उसे एक क्षण के लिए भी छोड़ना नहीं चाहता। एक दिन वह मानसरोवर से कमल तोड़कर कुबेर के यहाँ जाने के स्थान पर अपनी पत्नी के पास पहुँच जाता है। कुबेर के सेवक उसे इसकी सूचना देते हैं। वह कुबेर के सेवकों द्वारा पकड़कर अलकापुरी ले जाया जाता है। कुबेर क्रुद्ध होकर आज्ञा देता है कि "पापी! तूने देवताओं का तिरस्कार किया है। इसलिए तू अपनी पत्नी से अलग होकर पृथ्वीलोक पर रहेगा।"

नाटक के अन्त में असन्धती विशालाक्षी को सूचना देती है कि 'कुबेर ने हेममाली को क्षमा कर दिया है और देवसेना तथा सुवा-सिनी पुष्पक विमान लेकर उन्हें रामगिरि से लाने गई हैं।' इस पर विशालाक्षी की प्रसन्नता के साथ नाटक समाप्त होता है।

यह नाटिका कालिदास-जयन्ती के अवसर पर काशी की अभिनव रंगशाला में अखिल भारतीय विक्रम परिषद् की ओर से देवोत्थान एकादशी (सं० २००१) पर अभिनीत हुई।

अलग-अलग रास्ते (सन् १९५४, पृ० १७०), ले० : उपेन्द्रनाथ अश्क; प्र० : नीलाभ प्रकाशन, ५, खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : ताराचन्द का ड्राइंग-रूम।

इस सामाजिक नाटक में चरित्रहीन तथा लोभी पति के दुर्व्यवहार से आदर्श पत्नी का दुःखमय जीवन दर्शाया गया है। प्राचीन संस्कारों के प्रतीक पण्डित ताराचन्द की दो पुत्रियाँ हैं—राज और रानी; तथा एक पुत्र है पूरन। राज प्राचीन संस्कारों को मानने वाली है, लेकिन रानी और पूरन प्राचीन रूढ़ियों को खण्डित करने वाले हैं। ताराचन्द अपनी पुत्री राज का विवाह एक प्रोफेसर से कर देते हैं जो एक अन्य स्त्री से प्रेम करता है। वह राज को छोड़कर उसी स्त्री से विवाह कर लेता है। रानी का पति भी लोभी है; वह विवाह में मकान और कार न मिलने के कारण उसकी (रानी की) उपेक्षा करता है। फलतः रानी और राज दोनों पिता के घर रहती हैं। राज का श्वसुर उसको लेने आता है, रानी और पूरन के रोकने पर भी वह चली जाती है। राज पति को परमेश्वर मानती है। ताराचन्द रानी के पति त्रिलोक को मकान और कार देने के लिए तैयार हो जाते हैं जिससे त्रिलोक रानी को लेने आता है। रानी जाने से इन्कार कर देती है जिससे पिता क्रुद्ध हो उसे पितृगृह भी त्यागने को कहते हैं। पूरन रानी को लेकर चला जाता है। यहीं नाटक का अन्त हो जाता है।

१६ दिस० १९५३ को नीटा प्रयाग द्वारा पैलेस थियेटर में प्रदर्शित।

अवतार (सं० १९५८, पृ० ८४), ले० : हरीश; प्र० : हरिनाम सत्संग सम्मेलन समिति, मधुबनी, दरभंगा; पात्र : पु० २२, स्त्री ८; अंक : ३, दृश्य : १६।
घटना-स्थल : क्षीरसमुद्र का तट, कंस की राजसभा का मार्ग, कंस का कारागार, गोकुल में यशोदा का प्रसूतिकागृह, गोकुल, उद्यान, यमुना-तट, वृन्दावन का उद्यान, गोकुल में नन्द का घर, मथुरा का राजमार्ग एवं कंस की रंगभूमि।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण अवतरित होकर पापी कंस का वध करते हैं। पृथ्वी पर कंस का अत्याचार बढ़ जाने से कृष्ण अवतरित होते हैं और वे उसके इस आतंक से लोगों को मुक्त करते हैं। जब यह भविष्यवाणी होती है कि देवकी के आठवें गर्भ से उत्पन्न बालक ही इसका विनाश करेगा, तब आततायी कंस देवकी और वसुदेव को कारागार में बंद कर देता है। उसने योजना बनायी कि जन्म लेते ही नवजात शिशु की हत्या कर दी जाय। दैवी चक्र इस प्रकार परिचालित होता है कि देवकी के सभी बच्चे मारे जाते हैं। अन्ततः

वसुदेव आठवें शिशु कृष्ण को गोकुल में नन्द के यहाँ छोड़ आते हैं जिसमें वह बालक बच जाता है। कृष्ण के द्वारा कंस का स्थान-स्थान पर अपमान होता है और उसकी हत्या भी उन्हीं के द्वारा होती है। इस क्रम में नाट्यकार ने कंस और कृष्ण से संबंधित अनेक प्रासंगिक घटनाओं का उल्लेख किया है।

अवध की बेगम (सन् १९३०, पृ० १६६), ले० के० के० मुकर्जी, प्र० इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, पात्र पु० १८, स्त्री ६, अंक ५, दृश्य ८, ६, ५, ५, ७। *घटना-स्थल* घना जंगल, बक्सर के पास युद्ध-शिविर।

इस ऐतिहासिक नाटक में पराजित मीर-कासिम तथा उसके परिवार की दुर्दशा के साथ-साथ बेगम गुलनार का पति-प्रेम दिखाया गया है। बंगाल का आखिरी नवाब मीर-कासिम मीर जाफर से हारकर अवध के नवाब शुजाउद्दौला के पास मदद के लिए जाता है। शुजाउद्दौला बिहार की नवाबी के प्रलोभन में उसकी मदद करता है। मीर कासिम बक्सर की लड़ाई में फिर हार जाता है। सैनिक वेतन न मिलने से शुजाउद्दौला और मीर कासिम को मार डालना चाहते हैं। शुजाउद्दौला के कुछ सिपाही मीर कासिम पर गोली चलाना चाहते हैं, लेकिन रुहेला-सरदार के भाई का पोता फैजुल्ला उसकी रक्षा करता है।

दूसरे अंक में शुजाउद्दौला की अप्रसन्नता के कारण मीर कासिम बरेली के रुहेला सरदार के यहाँ शरण लेता है। हाफिज रहमत खाँ और फैजुल्ला शरणागत की रक्षा करते हैं। इधर अवध में मीर कासिम की बेगम गुलनार अपने पति के शत्रु के यहाँ रुकना उचित नहीं समझती। वह अपने छोटे-छोटे बच्चों को लेकर भाग जाना चाहती है। नवाब शुजाउद्दौला के सिपाही गुलनार और बच्चों को बन्दी बनाना चाहते हैं किन्तु कासिम का पुराना नौकर गफूर बच्चों की रक्षा करता है। किमान विट्ठलदास की पुत्री छाया भी छुरी निकाल कर उनकी रक्षा को कटिबद्ध हो जाती है। इधर युद्ध से लौटने पर शुजाउद्दौला बहू और बेगम पर मीर कासिम के परिवार को मुक्त करने के कारण बहुत ही रुष्ट होता है। शुजाउद्दौला छाया और जीनत उन्निसा को बन्दी बनाता है। वह छाया को जीनत उन्निसा समझकर उससे विवाह का प्रस्ताव करता है। छाया पर बलात्कार करना चाहता है तब तक वह खूनी छुरी निकालकर भोंक देती है। जीनत उन्निसा भी भाई के साथ भाग जाती है। चौथे अंक में प्यासी जीनत उन्निसा किसी तरह उसके पास पहुँच जाती है। गफूर भी गुलनार और दोनों बच्चों के साथ पहुँचता है। गुलनार जीनत को गोद में लेकर प्यार करती है।

इधर अवध में शुजाउद्दौला का बेटा आसफउद्दौला नवाब बनता है। वह सारा खजाना लुटा देता है जिससे शुजाउद्दौला को अपने अंतिम समय में नाना प्रकार के दुख झेलने पड़ते हैं। रुहेले आक्रमण कर देते हैं।

इधर मीर कासिम के दोनों लड़के बेहार और अजीमन जंगल में घूम-घूमकर किसी प्रकार जीवन बिताते हैं। अजीमन को शिकार के धोखे से एक शिकारी मार डालता है। मीर कासिम बच्चों की दुर्दशा तथा अजीमन की लाश देखकर दम तोड़ देता है। गुलनार दोनों की लाश के पास बैठी विलाप करती है।

अवशेष (वि० २००८, पृ० १०६), ले० सुधाकर पाण्डेय, प्र० लोक सेवक प्रकाशन, बनारस, पात्र पु० ६, स्त्री ४, *अंक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल सजा कमरा, कॉलेज का लम्बा बरामदा, पुस्तकालय।

इस सामाजिक नाटक में विश्वविद्यालय के तथाकथित प्रेमी-प्रेमिका का एक दृश्य दिखाया गया है। चन्द्रकान्त, रमेश और जगन्नाथ एम० ए० के छात्र और मित्र हैं। एक दिन चन्द्रकान्त मार्ग में उषा नामक बी० ए० की छात्रा से धक्का लगने से वाद-विवाद कर बैठता है। चन्द्रकान्त और अजलि नामक छात्रा में सान्निध्य स्थापित हो गया है और दोनों में पत्र-व्यवहार होता है। अजलि का एक पत्र रमेश के हाथ लग जाता है। अजलि को चिन्ता हो जाती है कि कहीं

उसके पत्र का दुरुपयोग न हो।

रमेश के द्वारा चन्द्रकान्त के पिता करुणा को अपने पुत्र के विषय में कुछ जानकारी होती है। जब चन्द्रकान्त साढ़े ग्यारह बजे रात घर लौटता है तो उसके पिता उसकी भर्त्सना करते हुए कहते हैं कि एक सप्ताह में तुम्हारा विवाह कर दूंगा।

इधर रमेश अंजलि की नाट्यकारिता करता है और चन्द्रकान्त को आधारा बनाकर उससे मुक्ति दिलवाना चाहता है। अंजलि बड़ी युक्ति से रमेश की जेब से अपने तीनों पत्र निकालकर उसे घर से विदा करती है। उन पत्रों को ऊषा को सुनाती है और ऊषा की आलोचना सुनकर उसे भी घर से भगा देती है। चन्द्रकान्त अंजलि से मिलने आता है और अपने पिता का आदेश सुनाता है। अंजलि उससे पिता के आज्ञा-पालन का आग्रह करती है। बड़ी देर की बहस के उपरान्त अंजलि, चन्द्रकान्त और जगन्नाथ एक साथ भोजन करते हैं।

चन्द्रकान्त का विवाह हो रहा है। उसने अंजलि के अतिरिक्त सबको निमंत्रित किया है किन्तु अंजलि बिना निमंत्रण के सम्मिलित होती है। चन्द्रकान्त पान देना चाहता है। अंजलि कहती है—"भारत की नारी पर-पुरुष से बीड़ा नहीं लेती"—इतना कहकर उपहार दे वह मुस्कराती चल देती है।

अशोक (सन् १९५८, पृ० १५८), ले०: चन्द्रगुप्त-विद्यालंकार; प्र०: राजपाल एण्ड संस, दिल्ली; पात्र: पु०९, स्त्री ३; अंक: ५, दृश्य: ३५। घटना-स्थल: राजप्रासाद का उद्यान, वैशाली प्रान्त में।

इस ऐतिहासिक नाटक में प्रियदर्शी सम्राट् अशोक के महान् कार्यों तथा भाई सुमन की वाग्दत्ता पत्नी के पवित्र आत्मबलिदान का वर्णन है। भारत-सम्राट् बिन्दुसार के तीन पुत्र युवराज सुमन, अशोक और तिष्य हैं। सेनापति चण्डगिरि तक्षशिला के नागरिकों पर अत्याचार करते हैं। अशोक तक्षशिला के विद्रोह को दबाकर जनता को संतुष्ट कर देता है। वहाँ के नागरिक अशोक को अपना सम्राट् स्वीकार कर लेते हैं। भारत-साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र में रुग्ण बिन्दुसार की मृत्यु हो जाती है। उनकी सूचना पाते ही अशोक सोचता है कि अब ज्येष्ठ भ्राता सुमन को राजगद्दी मिलेगी। अतः उसके हृदय में सुमन के प्रति द्वेष-भावना जाग्रत हो जाती है। अशोक अपनी सेना लेकर पाटलिपुत्र आता है और युवराज सुमन को बन्दी बना लेता है। चण्डगिरि धोखे से पवित्र-आत्मा 'सुमन' का वध कर देता है। अशोक मानवता-प्रेमी सुमन की हत्या नहीं करना चाहता, लेकिन चण्डगिरि के सामने विवश हो जाता है। तिष्य बड़े भाई सुमन की हत्या सुनकर जंगल में भाग जाता है।

अशोक की सेना बौद्धों पर अत्याचार करती है लेकिन आचार्य उपगुप्त बौद्धों को अहिंसा का मार्ग ही अपनाने को कहते हैं। अशोक कलिंग पर आक्रमण कर देता है। दोनों ओर की सेनाओं में घमासान युद्ध होता है। कलिंगराज षड्यन्त्र रचते हैं कि रात्रि के दूसरे पहर में सोते हुए अशोक की हत्या कर दी जायगी। यदि सफलता न मिली तो प्रातःकाल आत्मसमर्पण कर दिया जाएगा। इस षड्यन्त्र की सूचना 'सुमन' की वाग्दत्ता पत्नी 'शीला' को एक चर द्वारा मिल जाती है। वह रात्रि में अशोक के स्थान पर स्वयं सो जाती है अतः षड्यन्त्रकारी शीला को अशोक समझकर मार डालते हैं। आचार्य गुप्त से जब अशोक को पता चलता है कि शीला ने उसके प्राण बचाये हैं तो वह वैद्यराज से शीला के जीवन की भिक्षा माँगता है। शीला उपचार और आशीर्वाद से ठीक हो जाती है। 'अशोक' शीला से क्षमा-याचना करता है।

कलिंग-विजय के उपरान्त अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी हो जाता है। वह विश्व-भर में अहिंसा, दया आदि मानवीय धर्मों का प्रचार करता है और जन-सेवा का संकल्प लेता है। शीला सब कुछ त्याग कर आचार्य उपगुप्त के साथ सीमाप्रान्त की ओर चली जाती है।

अशोक (सन् १९५७, पृ० १३५), ले०: सेठ गोविन्ददास; प्र०: भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; पात्र: पु० ६, स्त्री ६; अंक: ४, दृश्य: ३, ३, ३, ३।

घटना-स्थल पाटलिपुत्र, कलिंग, युद्धक्षेत्र, मार्ग, राजभवन।

नाटक का प्रारम्भ अवन्ती के राजभवन में अशोक और उसकी प्रथम पत्नी असंधिमित्रा के वार्तालाप से होता है। वह अपने ज्येष्ठ पुत्र महेन्द्र की ग्यारहवीं वर्षगाँठ के अवसर पर भावी योजना बनाते हुए कहता है—"सुसीम के सदृश पुरुषार्थहीन, अकर्मण्य, नपुंसक व्यक्ति के हाथ में भारतीय सत्ता जाने और उसके विध्वंस, नष्ट-भ्रष्ट होने की अपेक्षा मौर्य-वंश का गृह-कलह अधिक कल्याणकारी होगा।" इधर पाटलिपुत्र के राजभवन में अशोक का छोटा भाई विगताशोक प्रधानामात्य राधागुप्त से कहता है—"पिताजी ने आज अशोक को युवराज-पद पर प्रतिष्ठित न किया तो सुसीम से मैं युद्ध करूँगा।"

सम्राट् बिन्दुसार की मृत्यु के उपरान्त चार वर्ष तक गृह-कलह चलता रहा। उसके शमन होने और विदेशियों के निष्कासन पर अशोक राज्याभिषेक का समारोह करता है। दूसरे अंक में महेन्द्र और संघमित्रा क्रमश बीस और अठारह वर्ष की अवस्था में भिक्षु-भिक्षुणी बनने के लिए सम्राट् से अनुमति माँगते हैं। अशोक का पचवर्षीय पुत्र कुणाल महेन्द्र-संघमित्रा को वेशमुंडित देखकर डरता है। अशोक की दूसरी रानी कारुवाकी से उत्पन्न पुत्र तीवर संघमित्रा के बुलाने पर कहता है—"पहले तुम फिर से अपने बाल बढ़ा लो, मेरे जैसे कपड़े पहन लो, तब आऊँगा।" इस प्रकार प्रारम्भ में पारिवारिक वातावरण उत्पन्न किया गया है।

तीसरे अंक में कलिंग-युद्ध के भीषण युद्ध के उपरान्त अशोक का हृदय-परिवर्तन होता है। वह कहता है—"कलिंग-युद्ध के हृदय को हिला देने वाले कारुणिक आर्त्तनाद के अतिरिक्त और कुछ सुनायी नहीं देता। हम दूसरों के दुःखों की नींव पर अपने सुख के भवन का निर्माण नहीं कर सकते।" अशोक घोषणा करता है कि "किसी भी जीवधारी का अब वध न किया जाएगा।" सद्धर्म-प्रचार के लिए उत्तरापथ से दक्षिणापथ तक शिलास्तूपों, शिला-स्तम्भों आदि का निर्माण होगा जिन पर शिला-लेख लिखे जायेंगे।" अशोक बौद्ध-गुरु उपगुप्त से बौद्ध-धर्म की दीक्षा लेता है। सभासद् देवानाम्-प्रिय प्रियदर्शी चक्रवर्ती धर्म राज राजराजेश्वर सम्राट् अशोकवर्धन की जयजयकार करते हैं।

चौथे अंक में अशोक के राज्यारोहण के छत्तीसवें वर्षोत्सव का दृश्य है। वह कारुवाकी को सभी शिलालेख पढ़ाकर राज्य में बौद्ध-धर्म-प्रचार का महत्त्व समझाता है। इसी समय अन्धा कुणाल अपनी पत्नी और पुत्र के साथ आता है। तिष्यरक्षिता कुणाल को अंधा बनाने का अपराध स्वीकार करती है।

नाटक के अन्त में अहिंसा के प्रचार का परिणाम दिखाते हुए राधागुप्त कहता है—"अहिंसा के इस मार्ग से भारतीय साम्राज्य के एकीकरण और जम्बूद्वीप की भलाई तो दूर की बात है, अब तो मौर्य-साम्राज्य में ही यत्रतत्र विद्रोह उठ खड़े होते हैं। न सेना है और न कोष में धन।"

अशोक (वि० १९९४, पृ० १९८), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० हिन्दी पुस्तक भण्डार, लहरिया सराय, पात्र पु० १७, स्त्री ४, अंक ५, दृश्य ८, ७, ८, ९, ७। घटना-स्थल कलिंग, पाटलिपुत्र, युद्ध-क्षेत्र, राजभवन आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक में बिन्दुसार की कल्पमता और उसके पुत्र अशोक की महत्ता, दोनों के जीवन की मार्मिक घटनाओं के आधार पर प्रदर्शित की गयी है।

सम्राट् बिन्दुसार पश्चिमोत्तर प्रदेश का विद्रोह दमन करने के लिए राजकुमार अशोक को एकाकी भेज देते हैं। ऐसी स्थिति में अशोक के सेनापति के रूप में ब्राह्मण धर्मनाथ, सामन्तों को सुसंगठित कर विदेशी-आक्रमण का सफलतापूर्वक सामना करता है। अशोक की सफलता और प्रभाव से भयभीत होकर सम्राट् बिन्दुसार उसे उज्जैन में विद्रोह-दमन के लिए आदेश देता है। साथ ही उज्जैन के सेनापति के साथ गुप्त-प्रणिधि द्वारा अशोक की हत्या का षड्यन्त्र रचना है। इन्हीं दिनों प्रधानमंत्री चन्द्रसेन को बिन्दुसार की दुरभिसंधि के कारण पदत्याग करना पड़ता है। ज्येष्ठ राजकुमार भवगुप्त

चन्द्रसेन की सहायता देकर अशोक के पास पहुँचा देता है और राजनीति से वितृष्णा होने के कारण स्वयं संन्यास ले लेता है।

ब्राह्मण धर्मनाथ की प्रेरणा और राज-विस्तार की महत्त्वाकांक्षा से अशोक कलिंग-राज से अकारण युद्ध करता है। कलिंगराज सर्वदत्त जयन्त को युद्धक्षेत्र में भेजकर संन्यास ग्रहण करता है। जयन्त की पराजय होने पर उसकी पुत्री माया बन्दिनी बना ली जाती है। अशोक अकारण नरसंहार देखकर प्रायश्चित्त करता है और धर्मनाथ आत्महत्या। माया के साथ भवगुप्त के पुत्र अरुण का विवाह होता है।

इसमें प्रासंगिककथा ग्रीक-राजकुमारी डायना और निर्धन युवक ऐन्टीपेटर की प्रेम-कहानी पर आश्रित है। ऐन्टीपेटर एक दिन सिंह से अशोक की रक्षा करता है, एतदर्थ सेनापति नियुक्त होता है। डायना अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध ऐन्टीपेटर से प्रेम करती है। एक स्थान पर पिता से कहती है—"मैं ऐन्टीपेटर को प्यार करती थी और अब भी उसे चाहती हूँ। इस संसार में मेरा जो कुछ स्वर्ग है, वह ऐन्टीपेटर के चरणों में है।"

ऐन्टीपेटर कलिंग-युद्ध में मारा जाता है और डायना का स्वर्ग विलुप्त हो जाता है।

नाटक के अन्त में अशोक अपने ज्येष्ठ भ्राता भवगुप्त से कहता है—"अपने सम्राट् बने रहने के प्रलोभन में सम्राट् ने मुझे साम्राज्य देने का विचार किया। यह साम्राज्य तुम्हारा है, भाई, तुम्हीं सम्राट् बनो।"

इसी प्रकार अशोक कलिंगराज सर्वदत्त से कहता है—"महाराज, आप विजयी हैं, आप अपना कलिंग ले लीजिए। मुझे अपनी तृष्णा का पूरा फल मिला।"

इस नाटक में अशोक की पत्नी देवी में भी युद्ध के प्रति वितृष्णा दिखायी गयी है।

अशोक की आज्ञा (सन् १९७०, पृ० १२०), ले० : जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द; प्र० : कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : पाटलिपुत्र, नगर, गाँव आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक में अशोक के सत्य, अहिंसा तथा धार्मिक उपदेशों का वर्णन है। महाराज बिम्बसार अपने मरने के बाद अपने ज्येष्ठ पुत्र सुसीम को राज्याधिकारी बनाना चाहते हैं, किन्तु सुसीम के विलासी, बुद्धिहीन तथा दुर्बल होने के कारण जनता उसके विपक्ष में है। यद्यपि आचार्य उपगुप्त गुप्त रीति से सुसीम के पक्ष में होते हैं, पर कुणाल के प्रयास एवं अशोक के प्रताप से राज्य सुसीम के स्थान पर उसे ही मिलता है। सम्राट् बनने के साथ ही एक नूतन व्यक्तित्व दिखाई देता है। उसका सारा कार्य स्नेह, सौहार्द तथा मानवता पर आधारित है। गौतम बुद्ध का प्रभाव उसकी रग-रग में समाया हुआ है, वे उसी को कार्यान्वित करने के प्रयास में रहते हैं। अशोक ग्रामीण शीला, सुशील तथा अपनी पुत्री संघमित्रा और पुत्र महेन्द्र को अहिंसा, सहिष्णुता तथा मानवता के आदर्शों पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं।

अशोकवन-बन्दिनी (सन् १९५५, पृ० ४५), ले० : उदयशंकर भट्ट; प्र० : भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली-१; पात्र : पु० १, स्त्री ५; अंक-रहित, दृश्य : १।
घटना-स्थल : उद्यान।

इस गीति-नाट्य में नारी के पीड़ित अन्तर का दिग्दर्शन कराकर नारीत्व के गरिमोत्कर्ष की स्थापना की गयी है। प्रस्तुत गीति-नाट्य में सीता भारतीय संस्कृति की प्रतिनिधि है।

प्रथम दृश्य में अशोक-वन में बन्दिनी सीता राम की स्मृतियों में लीन है। रावण द्वारा नियुक्त त्रिजटा नामक राक्षसी सीता को अनेकानेक त्रास देकर राम को विस्मृत करके रावण को स्वीकारने का मार्ग सुझाती है। किन्तु सीता पति-चरणों से वियोग की अपेक्षा मृत्यु को अधिक श्रेयस्कर समझती है। सीता की यह एकनिष्ठ भक्ति तथा दृढ़ संकल्प-शक्ति त्रिजटा के हृदय-परिवर्तन में सहायक होती है, जिसके परिणामस्वरूप त्रिजटा रावण की भर्त्सना करती है। इसी समय रावण विभिन्न प्रलोभनों द्वारा सीता को प्रभावित करना चाहता है। वह शक्ति-प्रदर्शन का आश्रय लेता है। ज्यों-ज्यों सीता रावण की शक्ति की अवहेलना करती जाती है, त्यों-त्यों रावण का कुंठित दर्प

उद्बुद्ध होता जाता है। यहाँ तक कि वह सीता के वध के लिए भी तत्पर हो जाता है। तभी मदोदरी आकर 'अबला अवध्य' कहकर रावण को रोक लेती है। इस स्थल पर रावण-मदोदरी-सवाद में पुरुष के अहकार पर प्रकाश डाला गया है। पुरुष अपनी शक्ति के द्वारा सर्वाधिकार प्राप्त करना चाहता है।

इसी दृश्य में हनुमान सीता को बन्धन-मुक्ति का आश्वासन देते हैं। यह आश्वासन सीता के विरह-मरु में शीतल जल का काम करता है। इसी समय मदोदरी आती है और आते ही सीता पर व्यग्य-बाणों की बौछार करती है। इस स्थल पर मदोदरी में नारी-सुलभ ईर्ष्या का उदय होता है। वह इस समस्त काण्ड के मूल में सीता के अपूर्व रूप को देखती है जिस पर उसका पति आसक्त हो गया है। यह रूप उसकी सुखी गृहस्थी में आगे रहा है। इस आरोप के प्रत्युत्तर में सीता मदोदरी को पत्नी-धर्म का महत्त्व समझाती है और इससे आश्वस्त होकर अपने पति को सन्मार्ग पर लाने की ओर प्रवृत्त होती है।

अश्वत्थामा (सन् १६५६), ले० उदयशकर भट्ट, प्र० भारती साहित्य मडल, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री १, अक-दृश्य रहित। घटना स्थल रात्रि का एक दृश्य।

इस गीति-नाट्य में प्रतिहिंसा-भावना से उद्विग्न अश्वत्थामा का अन्त सघर्ष दिखाया गया है।

इसका प्रारम्भ महाभारत के युद्ध की समाप्ति के पश्चात् प्रथम काल-रात्रि से होता है। अश्वत्थामा अपने बल-पराक्रम के ह्रास तथा मणि के अभाव में ईर्ष्या से जलता हुआ प्रतिहिंसा के लिए तत्पर है। वह पाण्डवों की तथाकथित न्यायप्रियता के प्रति अपना तीव्र व्यग्य तथा आक्रोश व्यक्त करता है। महाभारत की अनेक विसगतियाँ अश्वत्थामा को विकल करती रहती हैं। धर्मराज कहलाने वाले युधिष्ठिर का असत्य-भाषण 'अश्वत्थामा हत नरो वा कुजरो वा।' कौरवों के लिए दुर्भाग्य का पुज बन जाता है। द्रोण का पुत्र-शोक में अस्त्र-त्याग, भीष्म की शर-शैया, दुर्योधन का वध आदि घटनाएँ इसी दुर्भाग्य की शृखलाएँ हैं। अर्जुन द्वारा मस्तक-मणि के अपहरण से अश्वत्थामा की प्रतिहिंसा परा काष्ठा को पहुँच जाती है, जिसका परिशमन पाण्डवों के पाँच पुत्रों के वध के रूप में होता है। मृतप्राय दुर्योधन को जब अश्वत्थामा इस घटना की सूचना देता है उसी समय शोक-सतप्त दुर्योधन प्राण त्याग देता है क्योंकि यही पाण्डव-पुत्र उसके वश के रक्षक थे। इनकी हत्या के पश्चात् पाण्डव-कुल के साथ-साथ कौरव-कुल का भी दीपक बुझ गया, यह विचार दुर्योधन को हिला देता है। अपने कुकृत्य का दुष्परिणाम देखकर अश्वत्थामा विक्षिप्त हो जाता है।

असत्य सकल्प (सन् १६३८, पृ० ८०), ले० बलदेवप्रसाद मिश्र, प्र० बलभद्र प्रसाद मिश्र, राजनद गाँव, पात्र पु० ८, स्त्री १, अक ३, दृश्य ३, ६, ६। घटना-स्थल राजप्रासाद, पाठशाला, आश्रम।

इस पौराणिक नाटक में प्रह्लाद के सत्य-सकल्प के सामने हिरण्यकशिपु की हार दिखाई गई है। प्रह्लाद बाल्यकाल से ही ईश्वर-भक्त है, किन्तु हिरण्यकशिपु ईश्वर के स्थान पर उसमें अपनी पूजा करवाना चाहते है। प्रह्लाद इसे स्वीकार नहीं करता। वह राज्य-कर्मचारियों और अध्यापकों के द्वारा प्रह्लाद का मत-परिवर्तन करना चाहते है, पर प्रह्लाद अटल रहता है। जब आचार्य गण उससे परमात्मा के विषय में तर्क करते हैं तो वह कहता है कि "जो प्रसूनों में रस भर भ्रमर को मधु पिलाता है और जो कोयल के कठ में बैठकर पचम स्वर सुनाता है वही ईश्वर है।" वह ईश्वर को विश्व के सम्पूर्ण कला-कलापों का सचालक घोषित करता है। उसे नाना प्रकार की यातनाएँ दी जाती हैं पर वह हरिनाम-स्मरण नहीं छोड़ता। भगवान् की कृपा से वह सभी यातनाओं से बच जाता है। अन्त में पिता के असत्य सकल्प की हार और पुत्र के सत्य-सकल्प की विजय होती है।

इस नाटक में विचार-स्वातन्त्र्य पर भी बल दिया गया है। आश्रम निवासियों के

मत की चर्चा करते हुए मंत्री कहता है—"वे कहते हैं शिक्षा का स्थान स्वतंत्र है। जिसे जो सत्य जान पड़े उसे वह अंगीकार कर सकता है। कोई मनुष्य दूसरे पर हठपूर्वक अपने सिद्धान्त नहीं लाद सकता। ज्ञान के राज्य में सबको विचार-स्वातंत्र्य है।"

असीरे-हिर्स (सन् १९२४, पृ० ११२), ले० : आगा हश्र (रचनाकाल १९०१ ई०); प्र० : बनारस उपन्यास दर्पण; पात्र : पुरुष ८, स्त्री ४; ८ युद्ध - दृश्य तथा अन्य दृश्य।
घटना-स्थल : शाही महल, युद्ध-क्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक में कुटिल तथा अत्याचारी बादशाह का अन्त में पश्चात्ताप दिखाया गया है। मिस्र के बादशाह के स्वर्गगत हो जाने पर युवराज नासिरुद्दौला के स्थान पर उसका चचेरा भाई चंगेज सिंहासनासीन होता है। राज-सिंहासन पर बैठते ही युवराज नासिर, उसके पुत्र कमर और स्त्री महजबीन पर अत्याचार करता है किन्तु सेनापति रुस्तमगंज और चंगेज की स्त्री नौशाबा की बुद्धिमत्ता से सभी समस्याएँ सुलझ जाती हैं। नासिर बन्दीगृह से मुक्त होता है तथा कमर को फाँसी से छुटकारा मिल जाता है। चंगेज अपने दुष्कर्मों पर पश्चात्ताप करता है और अन्त में 'युवराज' नासिरुद्दौला को राजा बनाया जाता है।

यह 'शेरीडेन के पिजरो' नामक नाटक के आधार पर लिखा गया है। इसका प्रथम अभिनय सन् १९०२ में नौरोजजानी परी की पारसी कम्पनी द्वारा हुआ।

असीरे-हिर्स (सन् १९७१ ई०, पृ० १०६), मुंशी जलाल अहमद से प्राप्त कर बाबू जयरामदास गुप्त ने प्रकाशित करवाया; श्री लक्ष्मीनारायण प्रेस, जतनबर, बनारस सिटी; पात्र : पु० ८, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ६, ८, ४।
घटना-स्थल : जंगल, खेमागाह, मकान, बाग, मैदानेजंग, रास्ता, कैदखाना।

इस ऐतिहासिक नाटक में नासिरुद्दौला एवं चंगेज के मध्य हुए युद्ध एवं उससे संबंधित घटनाओं का उल्लेख है। नासिर और चंगेज के युद्ध में नासिर का सेनापति सफदरजंग बन्दी बनकर चंगेज की बेगम नौशाबा के सम्मुख उपस्थित होता है। बेगम नौशाबा कैदी सफदरजंग को अपनी सालगिरह की खुशी में रिहा कर देती है। यह जानकर चंगेज नाराज होता है और उसे फिर बन्दी बनाता है। चंगेज को सफदरजंग का एक सिपाही गोली मार देता है। आहत चंगेज अपने बीवी-बच्चों का भार रुस्तम को सौंपता है। रुस्तम नासिर को घमासान युद्ध के बाद बन्दी बना लेता है। नासिर के सहायक बन्दीगृह में पहरेदारों को शराब पिलाकर नासिर को छुड़ा लेते हैं। नौशाबा चंगेज को कत्ल कराना चाहती है पर रुस्तम उसे रोक लेता है। चंगेज के सिपाही नासिर के बेटे कमर को बाँध कर लाते हैं। चंगेज उसे मार देने का आदेश देता है, परन्तु रुस्तम युद्ध करके कमर को वहाँ से निकाल ले जाता है। चंगेज नौशाबा को मरवा देता है। उधर नासिर, कमर एवं रुस्तम नासिर की रोती हुई बेगम महजबीन से मिलते हैं। चंगेज पुनः आक्रमण करता है, जहाँ उसकी सेना हार जाती है। मरते समय नासिर की रूह नौशाबा की रूह द्वारा बचा ली जाती है। नासिर भी चंगेज को माफ कर देता है। अंत में चंगेज खाँ के हाथों नासिर की ताजपोशी होती है और जश्न मनाया जाता है।

अस्पृश्यता (सन् १९५८, पृ० १३६), ले० : कमलाकान्त पाठक; प्र० : लहरी प्रकाशन, प्रयाग; पात्र : पु० १२, स्त्री ७; अंक : ४, दृश्य : ४, ३, ४, ४।
घटना-स्थल : गाँव में पुलिस-कैम्प।

इस सामाजिक नाटक में स्वार्थी एवं धर्मान्ध पाखंडियों के अमानुषिक व्यवहार तथा हरिजन-कल्याण मार्ग का दिग्दर्शन कराया गया है। इसमें अस्पृश्यता को हिन्दू समाज पर एक कलंक दिखाया गया है। इसका जड़ से उन्मूलन ही देश तथा समाज के उत्थान का सही मार्ग बताया गया है। उत्तर प्रदेश के एक गाँव में पुजारी पंडित अछूतों के साथ अमानवीय बर्ताव करते हैं और मन्दिर में न तो दर्शन करने देते हैं, न ही कुएँ पर पानी भरने देते हैं। धर्मान्ध पंडित पुजारी इसी

भेदभाव के द्वारा अपनी स्वार्थ-सिद्धि चाहते हैं। उनके दुर्व्यवहार से गाँव के विभिन्न वर्गों में एक-दूसरे के प्रति घृणा उत्पन्न हो जाती है। आपस का प्रेम-सम्बन्ध नष्ट हो जाता है। पचायत मे भी पाखडियों का बहुमत है। धर्मान्ध केवल अपने स्वार्थों में लीन रहते हैं। अछूतो पर अमानुषिक अत्याचार करते हैं। पुलिस को भी रिश्वत देकर अपने पक्ष में कर लेते हैं। पुलिस भी उन पर अत्याचार करती है। किन्तु अन्त मे कतिपय युवको के प्रयास से पुराने लोग भी अछूतोद्धार के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं। यह नाटक समाज-कल्याण के सिद्धान्तो के प्रचार के लिए लिखा गया।

अहिल्या-उद्धार (सन् १६००, पृ० ५६), ले० मा० न्यादरसिंह बेचैन, देहलवी, प्र० अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री २, अक ३, दृश्य ६, ३, ४।
घटना-स्थल पर्णकुटी, वन आदि।

इस पौराणिक नाटक में राम-चरणो के स्पर्श से अहिल्या-उद्धार की कथा वर्णित है। गौतम ऋषि के शाप से अहिल्या पत्थर के समान जडवत् हो जाती है। राम उसे अपने चरणो के स्पर्श से पुन नारी बना देते हैं और उसका उद्धार हो जाता है। यही इसकी मूल कथा है।

अहिल्या सक्रदनीयम् (सन् १८६०, पृ०५०), (तेलुगु लिपि मे) ले० व प्र० नीदेल्ल पुरुषोत्तम कवि, तथा लेखक के पुत्र नीदेल्ल मेघादक्षिण-मूर्ति शास्त्री, मछलीपट्टणम, पात्र पु० २०, स्त्री ४, अक रहित, दृश्य २४।
घटना स्थल मछलीपट्टणम और आन्ध्र के अन्य नगर।

इस नाटक म गौतम की पत्नी अहिल्या की कथा प्रस्तुत की गई है। ब्रह्मा की मानसपुत्री अहिल्या विवाह से पूर्व ही इन्द्र को देख मोहित हो जाती है। अहिल्या की स्वीकृति पर ही इन्द्र अपनी काम-वासना तृप्त करता है। यह उद्भावना तेलुगु के रीतिकालीन काव्य (वाड्मय-दक्षिणान्ध्र) मे ग्रहण की गई है। शेष कथा मे कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

आ

आँख का नशा (सन् १६२४, पृ० १२०, ले० सैयद मुहम्मद आगा हश्र काश्मीरी, प्र० रतन एण्ड कम्पनी, दिल्ली, पात्र पु० ११, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ७, ६, ६।
घटना-स्थल कमरा, राजमहल के समीप वाटिका।

इस सामाजिक नाटक मे भारतीय नारी के सतीत्व का आदर्श तथा बुरे काम का बुरा परिणाम दिखाया गया है। जुगल आदर्श हिन्दू पत्नी की अवहेलना कर अपने दुराचारी मित्र की सगति के कारण कामलता वेश्या के चगुल मे फँस जाता है। कामलता जुगल का धन, मान-मर्यादा सभी कुछ लूट कर पूर्व प्रेमी के पास चली जाती है। जुगल को जेल से छूटने पर वास्तविकता का पता चलता है, वह दर-दर की ठोकरें खाता फिरता है, इसी बीच एक दुकानदार जुगल को पकडवा देने पर ५००० रु० इनाम मिलने के लोभ से थाने मे रिपोर्ट लिखाने जाता है, परन्तु जुगल मूर्च्छित हो गिर जाता है, मंदिर से आती हुई उसकी पत्नी उसे पहचान लेती है, वेश्या भी अपना सारा अपराध स्वीकार कर क्षमा माँग लेता है।

आँधी और घर (सन् १६७१, पृ० ४८), ले० मोहन चोपडा, प्र० विश्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ४, स्त्री १, अक १, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल एक घर—कमरा।

इस प्रतीकात्मक नाटक मे आधुनिक जीवन की प्रमुख समस्या तथा प्राचीन और नवीन विचारो के सघर्ष को सफलतापूर्वक चित्रित किया गया है।

दादा प्राचीनता के मोह में लिपटे हुए हैं। इनके पुराने जर्जर घर में एक बूढ़ी नौकरानी और दो पोते हैं। सबसे बड़ा पोता चेतन घर की घुटन से तंग आकर भाग जाता है। मझला पोता सुन्दर घर की प्रत्येक बात में दादा का विरोध करता है। वह घर में परिवर्तन लाने के लिए प्रत्येक पुरानी वस्तु को नष्ट कर देना चाहता है। दादा उसकी इन बातों को पसन्द नहीं करते। चन्द्र महज विश्वासी और जिज्ञासु युवक है। वह दादा से समझौता कर लेता है। इसी बीच चेतन घर आ जाता है। वह भी घर में परिवर्तन लाना चाहता है, परन्तु सुन्दर की तरह नाश नहीं चाहता। वह प्राचीनता में से कुछ तत्त्व निकाल कर उसके स्थान पर नये ढंग का निर्माण करना चाहता है। इसी बीच आँधी चलती है। पुराना घर गिर जाता है जिससे दादा चिंतित हो जाते हैं। किन्तु चेतन दादा को विश्वास दिलाता है। वह सुन्दर के विद्रोह को भी शांत करता है तथा मकान के मलबे से कुछ बहुमूल्य वस्तुएँ निकालता है और इस पुराने घर के स्थान पर नया घर बनाने का नक्शा दादा को दिखाता है। वह दादा को जीवन-संघर्ष से थकने का कारण कमरे में किसी रोशनदान का न होना तथा प्राचीनता से ही लिपटे रहना बताता है। दादा उसकी बातों से प्रभावित होकर उसकी राय स्वीकार कर लेते हैं।

आँधी और तूफान (सन् १९६३, पृ० ५), ले० : कंचनलता सब्बरवाल; प्र० : आधुनिक प्रकाशन, लखनऊ; पात्र : पु० ७, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : २, ३, २।
घटना-स्थल : कमरा, ड्राइंग-रूम।

यह राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत ऐतिहासिक नाटक है। इसमें युद्ध के समय भारतीय माताओं का सहयोग और वीर सैनिकों का अमर बलिदान दिखाया गया है। पहले अंक में १९४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का दृश्य है। इस अंक में बूढ़ी माँ अपने पुत्र विजय को अंग्रेजों से टक्कर लेने के लिए भेजती है। विजय युद्ध में शहीद हो जाता है। सन् १९६२ में चीन का आक्रमण होता है; उस समय विजय की बहिन अपने पुत्र तथा पति को चीनियों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए सीमा पर भेजती है तथा पुत्री नर्स बनकर घायल सैनिकों की सेवा करती है। देश-रक्षा के लिए माँ अपने पुत्रों को बलिदान करने के लिए उद्यत रहती है।

आखिरी करवट (सन् १९५९, पृ० ६४), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६; पात्र : पु० ४, स्त्री १; अंक : २; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : घर, कमरा।

इस सामाजिक नाटक में सच्ची पत्नी तथा आदर्श माँ की हृदयस्पर्शी कहानी है। शारदा एक करवट अपने पति के स्वच्छ आदर्शों की ओर तथा दूसरी करवट पुत्र की भूखी आत्मा की ओर लेती है। इसी शारदा की आखिरी करवट, जिसे वह अपने बच्चे का जीवन समझती थी, उल्टी मौत बन जाती है। उसकी आखिरी करवट नारी का नारीत्व लूट लेती है। अपने बच्चे की जीवन-रक्षा के लिए वह गौरीशंकर की हविस का शिकार बनने का फैसला करती है। फिर भी उसका बच्चा नहीं बच पाता। धर्म और पुत्र दोनों लुट जाते हैं। इसी से अन्त में वह आत्मग्लानि से मर जाती है।

आग की जिन्दगी, ले० : शंभुदयाल सक्सेना; प्र० : मुक्तवाणी प्रकाशन, बीकानेर; पात्र : पु० ८, स्त्री, ४; अंक : ३, प्रत्येक अंक में अनेक दृश्य।
घटना-स्थल : रास्ता, वन, युद्ध-क्षेत्र, सभा-भवन, बुन्देलखण्ड, काशी, बम्बई, झांसी, आगरा, दिल्ली, लाहौर, कानपुर, इलाहाबाद।

इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रशेखर आजाद के दुःखद तथा साहसपूर्ण जीवन की अद्भुत झांकी प्रस्तुत है। इसके प्रधान पात्र चन्द्रशेखर आजाद हैं। उन्हीं के जीवन के क्रान्तिकारी प्रयासों का चित्रण है। नायक के जीवन में घटनाएँ बड़ी द्रुत गति से घटती हैं। नाटक में भी कार्य-व्यापार बहुत प्रखर है। नाटक को रंगमंच के योग्य बनाने का प्रयास किया गया है। पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है एवं तथ्यों पर आधारित है परन्तु घटनाओं के क्रम व समय के व्यवधान में आवश्यक

स्वच्छन्दता से काम लिया गया है।

आचार-विडम्बन (सन् १८९६), ले० बालकृष्ण भट्ट, प्र० हिन्दी प्रदीप, पात्र पु० ३। घटना स्थल बाजार, घर, गौशाला।

यह एक प्रकार का प्रहसन है जिसमें पाखण्डी पंडितों की करतूतों का भण्डाफोड़ किया गया है। माधवाचार्य पाखण्डी पंडितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। रामप्रपन्न मिश्र अपने बुद्धि-कौशल के बल से माधवाचार्य की पाखण्ड-भरी करतूतों का उन्हीं की वाणी द्वारा उद्घाटन करवाते हैं।

हिन्दू समाज में व्याप्त बालविवाह प्रथा, शिक्षा का अभाव और आडम्बरों के सहायक माधवाचार्य के पाखण्डों का विवरण मिलता है। एक स्थान पर माधवाचार्य कहते हैं— "जब से हाड़ की चीनी चल पड़ी है मैंने बाजार की मिठाई खाना छोड़ दिया। बाजार की सागभाजी भी घर में नहीं आने देता। इस लिए कि बम्बे का पानी उस पर छिड़का रहता है। अहीर के घर का दूध-दही भी घर में नहीं लाता, सो भी इसी लिए कि अहीर लोग बम्बे का पानी गाय-भैंसों को पिलाते हैं। उनके दूध में वहाँ तक बम्बे का पानी न उतर आता होगा। मैं तो जिधर निगाह फैलाता हूँ कोई ऐसा नहीं मालूम होता जो भ्रष्ट न हो गया हो। इसी से मैं 'स्वयं पापी' हो गया हूँ।"

इसी तरह केवल वार्तालाप के द्वारा हिन्दू-समाज के पाखण्डों को प्रदर्शित किया गया है।

आचार्य चाणक्य (सन् १९६३, पृ० २७०), ले० जनार्दनराय नागर, प्र० गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा, पात्र पु० १६, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ७, ५, ६। घटना-स्थल तक्षशिला, राजभवन।

इस ऐतिहासिक नाटक में आचार्य चाणक्य की कुशल नीतियों का वर्णन किया गया है। तक्षशिला विद्यापीठ के आचार्य चाणक्य सिकन्दर के भारत-आक्रमण से चिन्तित देश की स्वाधीनता के रक्षार्थ अपने शिष्यों को क्षुद्र संकीर्णताओं का त्याग कर कटिबद्ध होने का परामर्श देते हैं। आम्भीक पर्वतेश्वर की कन्या रजनीगन्धा से विवाह करना चाहता है, परन्तु पर्वतेश्वर इस परिणय-सम्बन्ध में प्रति अपनी सर्वथा असहमति प्रकट करता है। अपनी क्षुद्र महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के हेतु आम्भीक यवनराज सिकन्दर को आमन्त्रित करता है। देश की रक्षा के लिए चाणक्य पर्वतेश्वर को रजनीगंधा का विवाह आम्भीक से करने का परामर्श देते हैं, किन्तु उन्हें अपमानित हो विमुख लौटना पड़ता है। महर्षि दाण्डायन के आश्रम में चन्द्रगुप्त सेल्यूकस की पुत्री हेलन की सर्प से रक्षा करता है जिससे वह यवन-शिविर में आमन्त्रित होता है, परन्तु शीघ्र ही उसे वहाँ से पलायन करना पड़ता है। पर्वतेश्वर और सिकन्दर के युद्ध में चन्द्रगुप्त पर्वतेश्वर की ओर से युद्ध करता है। दैवयोग से सिकन्दर के समक्ष पर्वतेश्वर के हाथों में तलवार छूट जाने पर सिकन्दर निःशस्त्र पर्वतेश्वर पर आक्रमण नहीं करता। सिकन्दर द्वारा मैत्रीपूर्ण हाथ बढ़ाने के कारण पर्वतेश्वर युद्ध-विराम की घोषणा करता है। सिकन्दर अपने सैनिकों के विद्रोह के कारण वापस लौट पड़ता है। चाणक्य के प्रयास से चन्द्रगुप्त को सम्मिलित साम्राज्य का अधिपति तथा राक्षस को महामात्य घोषित किया जाता है। कौमुदी-महोत्सव की निषेधाज्ञा से चिढ़कर चन्द्रगुप्त चाणक्य के प्रति कटु वाक्यों का प्रयोग करता है। प्रत्यक्षतः चाणक्य राज्य-कार्य छोड़कर चले जाते हैं किन्तु सेल्यूकस के युद्ध में समय पर पहुँच कर चन्द्रगुप्त और हेलन का विवाह करवा कर वे दाण्डायन के आश्रम की ओर प्रस्थान करते हैं।

आचार्य द्रोण (पृ० ५५), ले० प्रो० चन्द्रकान्त झा, प्र० हमीदिया वर्की प्रेस, लहेरिया सराय, दरभंगा, पात्र पु० १०, स्त्री १। घटना स्थल आचार्य द्रोण का आश्रम, महाराज द्रुपद का दरबार, घनघोर जंगल, द्रोण का आवास, महाराज द्रुपद का प्रासाद, कुरुक्षेत्र, कौरव-शिविर, दुर्योधन का प्रासाद, पाण्डव-शिविर इत्यादि।

महाभारत की पृष्ठभूमि पर लिखे गये इस पौराणिक नाटक में द्रोणाचार्य और उनके शिष्यों से संबंधित कथा प्रस्तुत की गई है। युधिष्ठिर को द्रोणाचार्य उनकी कायरता पर धिक्कारते हैं। यहीं से द्रोणाचार्य द्वारा

दीक्षित छात्रों की धनुर्विद्या की परीक्षा होती है। उनका विश्वास है कि अर्जुन ही इस विद्या में प्रवीण है; किन्तु एकलव्य की वीरता से अवगत होने पर सब विस्मित हो जाते हैं। प्रपंचवश द्रोणाचार्य गुरु-दक्षिणा-स्वरूप एकलव्य के दाहिने हाथ का अँगूठा माँगते हैं। वह निर्विकार भाव से उनकी सेवा में समर्पित कर देता है। तत्पश्चात् अन्य छात्रों की परीक्षा में केवल अर्जुन को सफलता मिलती है। केवल अर्जुन द्रुपदराज को बंदी बनाकर गुरु-दक्षिणा चुकाते हैं। यद्यपि पाण्डवों के अत्यन्त भक्त होने पर भी द्रोणाचार्य का प्रेम कौरवों के प्रति अधिक था। इसी अवधि में कौरवों और पाण्डवों के बीच गृह-युद्ध प्रारंभ होता है जिसमें द्रोणाचार्य कौरव-पक्ष का और भीष्म पांडव-पक्ष का समर्थन करते हैं। कुरुक्षेत्र में कौरव एवं पांडव-सेना के बीच भयंकर युद्ध होता है। द्रोणाचार्य द्वारा रचित चक्रव्यूह का भेदन करते समय अभिमन्यु मारा जाता है। महाभारत के विनाशकारी युद्ध के साथ ही नाटक समाप्त होता है।

आचार्य विष्णुगुप्त (सन् १९६५, पृ० ४८), ले० : पं० सीताराम चतुर्वेदी; प्र० : नया संसार प्रेस, भदैनी, वाराणसी; पात्र : पु० १०, स्त्री १; अंक : ३, दृश्य : ३, ३, ३।
घटना-स्थल : दानशाला, दाक्षात, राजभवन, शिविर, आवास, शयनकक्ष, कुटिया, गृह, राजसभा।

इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त और चाणक्य के सम्बन्ध की प्रसिद्ध कथा है। इसे १९६४ में टाउन डिग्री कालिज बलिया के छात्रों ने खुले मंच पर चित्रित दृश्य पीठ के आगे खेला। इसे चित्रमय तथा पेटिका रंगमंच पर भी खेला जा सकता है।

आजकल (सन् १९३९, पृ० ११९), ले० : ताराप्रसाद वर्मा; प्र० : तरंग हाउस, काशी; पात्र : पु० १२, स्त्री ७; अंक : ३, दृश्य : ५, ४, ४।
घटना-स्थल : नगर, गाँव, घर, बाजार आदि।

इस सामाजिक नाटक में देश-सेवा के भावों को प्रेरित करने का प्रयास किया गया है। इसमें यह दिखलाने का प्रयास किया गया है कि गांधी के नाम की आड़ में अनबूझ लोग निरपराधी जनता पर कितना अनाचार करते हैं।

आज की ताजा खबर (सन् १९६३, पृ० ५६), ले० : जी० पी० दीक्षित; प्र० : शारदा मन्दिर, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : २, दृश्य : ३, ४।
घटना-स्थल : भारत-चीन सीमा, पहाड़ों की चोटियाँ।

देश-प्रेम से ओतप्रोत इस क्रान्तिकारी नाटक में चीन द्वारा सीमातिक्रमण कर भारत-भूमि पर आक्रमण करने की कथा वर्णित है। संकट की इन घड़ियों में विनोद अपने उच्च सैनिक-अधिकारी के निर्देश पर सेना के अग्रिम मोर्चों पर चलता है। उसकी त्यागमयी भावना से समस्त गाँव में अपूर्व चेतना की लहर दौड़ जाती है। बाल-वृद्ध सभी भारतीय चीनी शत्रु से लोहा लेने को सन्नद्ध हो जाते हैं। जगदीश अपने अग्रज विनोद के सत्परामर्श से अपने खेतों की व्यवस्था कर स्वयं फौज में भर्ती हो जाता है। विनोद के वीरगति प्राप्त करने के उपरान्त उसकी पत्नी नर्सिंग ट्रेनिंग लेकर देश-सेवा का संकल्प करती है।

आज की बात (सन् १९००, पृ० ९०), ले० : शिवरामदास गुप्त; प्र० : उपन्यासबहार आफिस, बनारस; अंक : ३, दृश्य : १३, १०, ५।

इस नाटक में दो स्तरों पर कथा चलती है। एक स्तर पर आज के युग में धोखा-फरेब से जनता को ठगने का प्रयत्न है। दूसरे स्तर पर आधुनिक प्रभाव से नारी-जाति में देश-प्रेम की भावना जाग्रत होती है। नारी और श्रमिक-वर्ग को समाज बहुत दबा कर रखता है। उनकी समस्याओं की ओर कोई ध्यान नहीं देता। उन्हीं की समस्याओं को उठाया गया है। एक मिल-मालिक की कन्या मलिना मिल के मैनेजर से विचार-साम्य के कारण प्रेम करती है। मिल-मैनेजर समाजसेवी और सुधारवादी विचारधारा का परिपोषक है। वह मलिना

के साथ श्रमिकों की समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करता है। वह मलिना को समाज-सेवा के लिए पूरी स्वतंत्रता और सुविधा देता है। मलिना गरीब स्त्रियों के साथ चर्चा करती है। वह स्त्री-वर्ग का देश-सुधार के लिए आह्वान करती हुई कहती है—"उठो सब भारत की नारी—दीपक बन तुम करो देश उजियारी।"

आजाद भारत (सन् १९५०, पृ० ६३), ले० 'अलख', प्र० ठाकुरप्रसाद एण्ड सस, वाराणसी, पात्र पु० ६, अक-रहित, दृश्य १२।
घटना-स्थल भारत, पाकिस्तान, जेल, भारत के अन्य शहर।

क्रान्तिकारी नाटक है। इसमें भारत-पाकिस्तान के युद्ध का वर्णन है। पाकिस्तान के अचानक भारत पर आक्रमण कर देने से देश के प्रत्येक नागरिक के मन में बड़ा ही उत्साह होता है। हमारी भारतीय फौज के कप्तान रणधीरसिंह, भारतीय विमानचालक चन्द्रशेखर और भारतीय टैंकचालक प्रमोद कुमार बड़ी ही वीरता तथा कार्य-कुशलता से सेना का संचालन करते हैं। वे दुश्मनों के टैंकों और विमानों को नष्ट कर देते हैं। अब्दुलहमीद एक मुसलमान होकर भी अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर देता है। इस समय देश के किसान भी एकत्र होकर कठिन परिश्रम करके अन्न पैदा करते हैं जिससे भारतीय जवानों को किसी प्रकार का भी अभाव नहीं रहता। देश के नौजवान सेना में भर्ती होकर देश की रक्षा के लिए शस्त्र ग्रहण करते हैं।

आजादी की रक्षा (सन् १९७२, पृ० ९४), ले० हरशरण शर्मा 'शिव', प्र० चन्द्रवती 'प्रभा', साधना सदन, सावरगढ, सतना (मध्य प्रदेश), पात्र पु० ७४, स्त्री ४, अक ३, दृश्य १०, १०, १०।
घटना-स्थल भारतीय लोक-सभा, चीनी लोक सभा, पीकिंग, युद्ध-क्षेत्र, कोलम्बो आदि।

यह नाटक चीन और भारत की लड़ाई से सम्बन्धित है। चीन के आकस्मिक आक्रमण से देश की रक्षा करने के लिए भारतीय जनता उन्मत्त हो जाती है। युवा-वर्ग फौज में भर्ती होकर दुश्मनों के छक्के छुड़ा देता है, व्यापारी-वर्ग महँगाई नहीं बढ़ने देता, भारतीय स्त्रियाँ भी अपने शरीर के आभूषण उतार कर रक्षा-कोष में जमा कर देती है। भारत और चीन के युद्ध को देखकर दुनिया के अन्य देश भी चीन को दोषी ठहराते हैं। चीन अपने जन-धन की बहुत बड़ी हानि देखकर युद्ध बन्द करने की घोषणा कर देता है। अन्त में लंका, रूस, कम्बोडिया घाना, मिस्र, इण्डोनेशिया आदि देशों के प्रयत्नों से भारत और चीन के मध्य कोलम्बो में शान्ति-वार्ता होती है। दोनों देश शान्तिपूर्वक पुनः अपनी-अपनी सीमा पर आ जाते हैं।

आजादी के बाद (सन् १९४९, पृ० ११०), ले० विनोद रस्तोगी, पात्र पु० ११, स्त्री ३, अक ३, दृश्य १, १, १।
घटना स्थल शरणार्थी शिविर, पंजाब, मकान, मिल आदि।

इसमें शरणार्थियों के माध्यम से शोषक और शोषित वर्गों को दिखाने का प्रयास किया गया है। १५ अगस्त के अवसर पर शहरों के गली-कूचे, घर-बाहर दीपों से जगमगा उठते हैं। इस अवसर पर कुछ ऐसे भी परिवार हैं जिनके घरों के दीपक पंजाब के हत्याकाण्डों में बुझ गए हैं। सेठ मानिकचन्द का सुधारवादी बेटा कहता है कि वास्तव में यह स्वतन्त्रता के वेश में हमारी सामूहिक मौत का दृश्य उपस्थित करता है। देश के नेताओं का कथन है कि यह रक्तहीन सत्ता है जब कि पाँचों नदियाँ भारतीयों के खून से लाल हो जाती है। उनके घरों में लगी आग की लपटों से आकाश तक लाल हो जाता है। साम्प्रदायिकता की वेदी पर अपना सर्वस्व लुटाकर भारत लौटने पर भारतीय जनगण इन्हें शरणार्थी कहकर सम्बोधित करते हैं। लोभी-लालची, सेठों-साहूकारों के लिए तो देश-विभाजन लाभप्रद सिद्ध होता है। मकान अन्न से महँगे होते गए। मिलों का मालिक सेठ अपनी मिलों में हड़ताल कराना चाहता है किन्तु उनका नेता अजीत ऐसा नहीं होने देता। सेठ अजीत को अपनी

लड़की की वर्षगाँठ पर लज्जित करना चाहता है, उसमें भी सेठ को मुँह की खानी पड़ती है। उसका पुत्र रमेश, अजीत की बहन कमला से प्रेम करता है। सेठ इस अपराध पर उसे घर से निकल जाने को कहता है। नीला और सुरेश भी अपने भाई रमेश का अनुसरण करते हैं। सेठ अजीत को मरवाने का प्रयास करता है। इसी समय उसे मिलों में आग लगने तथा कपास की गाँठें, जिन्हें कि वह चोरी से भेज रहा है, के पकड़े जाने की सूचना मिलती है। इस सर्वविनाश से मानिकचन्द की आँखें खुलती हैं। घायल अजीत आता है। सेठ उसे बचाना चाहता है किन्तु असमर्थ रहता है। अजीत का बलिदान सच्ची स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए आजादी के बाद होता है।

आजादी या मौत (सन् १९३६, पृ० १६६), ले०: यमुनाप्रसाद त्रिपाठी; प्र०: श्री भारती आश्रम, पो० माल-लखनऊ; पात्र : पु० २०, स्त्री ५; अंक : ३, दृश्य : ७, ६, ५।
घटना-स्थल : उरई, रणस्थल, कन्नौज नगर।

इस ऐतिहासिक नाटक में आल्हा-ऊदल की लड़ाई की घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है। इसमें बारहवीं सदी की ज्वलंत घटनाएँ प्रस्तुत हैं। पृथ्वीराज, मलखान, कैमास तथा मलखान आदि वीरों की अद्भुत वीरता का वर्णन भी प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है।

आजादी या मौत (सन् १९२३, पृ० ९४), ले० : मकबूलबाद मुंशी अब्दुल गनी साहब; प्र०: उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस; पात्र : पु० १६, स्त्री ११; अंक : ३, दृश्य : ६, ७, ५।
घटना-स्थल : सिराजपुर, जुल्फिकार, कत्ल-गाह।

इस ऐतिहासिक नाटक में बर्तानवी शासक टाल्बट के क्रूर अत्याचारों को दिखाया गया है। टाल्बट अंग्रेज जनरल बहुत खूँख्वार व्यक्ति है जो हिन्दुस्तानी व्यक्तियों पर अकारण अत्याचार करता है। वह सिराजपुर के बादशाह तथा उसके लड़के की कुछ विद्रोही व्यक्तियों को शरण देने के आरोप में हत्या कर देता है। आजादी का बाना लेकर आगे बढ़ने वाली वीराङ्गना जोहरा देशवासियों में जोश पैदा करती है और वह अपने अभियान में सफल होती है। टाल्बट उसे जीवित जलवा देता है जिसके परिणामस्वरूप वह अपने चारों ओर उस हसीना की छाया देखता है और पागल होकर प्राण त्याग देता है।

आतिशी नाग (सन् १९१६, पृ० ९४), ले० : जनाब अहमद शाह; प्र० : हरिश्चन्द्र प्रेस, राजघाट, काशी; पात्र : पु० १०, स्त्री ७; अंक : ३, दृश्य : ८, ५, ५।
घटना-स्थल : तहखाना, मकान, शाही महल, रास्ता, कैदखाना, मैदानेजंग, कब्रिस्तान, दरबार।

इस पारसी थियेट्रिकल नाटक में रशिया के न्यायप्रिय बादशाह मलिकुल आदिल के वलिअहद सल्तनत सैफ की अय्याशी और उसके स्वार्थी खूनी मित्र बुलहवस और खुदगरज के दुःखमय परिणाम को चित्रित किया गया है। बुलहवस और खुदगरज सैफ को बहकाकर पिता के विरुद्ध करते हैं, किन्तु सैफ अपनी सुबुद्धि से उन धोखेबाजों को दण्ड देता है। एक स्थान पर सैफ खुदगरज से कहता है—"कहो! कौन थे जिन्होंने मुझे बाप और भाई को कत्ल करने की सलाह बताई थी? तुम्हीं ने मेरे मिजाज को दोजख बना रक्खा।" वह कब्रिस्तान में अपने पिता की कब्र पर बैठ कर पश्चात्ताप करता है, "ओह, यही मेरे मकतूलबाप की कब्र है।"

आत्म-त्याग (वि० २००८, पृ० ८६), ले० : आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव; प्र० : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग; पात्र : पु० ८, स्त्री २; अंक : ३, दृश्य : ४, ६, ५।
घटना-स्थल : मकान, महल, रास्ता, वनमार्ग आदि।

इस सामाजिक नाटक में उदात्त चरित्र की विशेषताओं का सफल चित्रण किया गया है। इसमें नायक और नायिका की उदारता प्रमुख है। वे निर्धन तथा दलित वर्ग के दुःखों को देख कर अत्यन्त दुःखी रहते हैं और उनके दुःख-निवारण के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देते हैं। उनके इस विचित्र आत्म-त्याग

को देख और सुनकर दर्शक तथा पाठक के हृदय में बड़ी ही सहानुभूति उत्पन्न हो जाती है।

आत्म रहस्य (वि० १९८५, पृ० ९८), ले० हरिशरण शर्मा, प्र० सुप-कमल-ग्रन्थमाला कार्यालय, गणेश गंज, लखनऊ, पात्र पु० ६ स्त्री ६, अंक पूर्वांक, उत्तरांक।
घटना-स्थल शरीर देश का राजमहल।

शरीर देश के महाराज के पास मंत्री बुद्धि देव आकर उपराजा मनदेव की शिकायत करते हैं। राजा रनिवास में जाकर रानी नित्या को भयंकर समाचार सुनाता है कि मनदेव ने हमारे विरुद्ध आन्दोलन खड़ा किया है। विद्रोह की अग्नि चारों ओर भड़क उठी है, गुंडे स्वेच्छानुसार साधु-महात्माओं की हत्या कर रहे हैं। मनदेव एक नर्तकी से प्रेम करता है। पत्नी विरक्ति उसे वासना से प्यार करने के लिए मना करती है, उसी समय वासना भी आ जाती है। वासना अपनी बातों से राजा को खुश कर विरक्ति को राजभवन से निकालने का प्रस्ताव रखती है। मनदेव इसे स्वीकार कर लेते हैं। राजभक्त नागरिक दानदत्त को मनदेव की आज्ञा से मृत्युदंड दिया जाता है। दानदत्त की पत्नी दयावती ईश्वर की भक्त है। ज्यों ही जल्लाद वध करना चाहते हैं दो व्यक्ति काले-काले लबादों से अपना शरीर छिपाये हुए आकर दानदत्त की रक्षा करते हैं। मनदेव वासना के साथ प्रेम-सलाप करता है। आत्मदेव बुद्धिदेव को अंगूठी तथा मन्त्र देकर मनदेव और वासना को कैद करने के लिए भेजता है। बुद्धिदेव सफल हो जाते हैं। मनदेव आत्मदेव से क्षमा माँगकर फिर उसी पद पर नियुक्त हो जाता है। विरक्ति वासना को भी छुड़ा देती है। वासना कामदेव के साथ चली जाती है और मनदेव विरक्ति को फिर स्वीकार कर लेता है।

आदर्श कुमारी (सन् १९३२, पृ० ८७), ले० रामचन्द्र भारद्वाज, प्र० लक्ष्मी पुस्तक कार्यालय, दिल्ली, पात्र पु० १०, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ६, ५, ४।
घटना-स्थल भारतवर्ष—समय मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र से बहुत पहले।

इस पौराणिक नाटक में सती सुकन्या के पतिव्रत-धर्म का वर्णन किया गया है। राजा शर्याति की पुत्री सुकन्या अनजाने में तपस्यारत महर्षि च्यवन को नेत्र-विहीन कर देती है। तत्पश्चात् महर्षि च्यवन से सुकन्या का विवाह हो जाता है। सुकन्या महर्षि की सेवा बड़े आदरभाव से करती है और उन्हें अपना पति मानती है। एक बार अश्विनीकुमार सुकन्या के पतिव्रत-धर्म की परीक्षा लेते हैं और इसमें प्रसन्न होकर महर्षि को पुनः नेत्र प्राप्त करने व सुन्दर नवयुवक हो जाने का वरदान देते हैं। इस प्रकार सुकन्या अपने पतिव्रत धर्म द्वारा सुखपूर्वक च्यवन के साथ जीवन बिताने लगती है।

आदर्श ग्राम पंचायत (सन् १९६२, पृ० ६०), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली-६, पात्र पु० ८, स्त्री १, अंक ३, दृश्य रहित।
घटना-स्थल बैठक।

इस सामाजिक नाटक में न्यायालय एवं न्यायाधीश के कार्यों का मूल्यांकन है। चौधरी छज्जूराम अपने न्याय के समक्ष सबको बराबर समझते हुए अपने परिवार का भी ध्यान नहीं रखता है। वह आदर्श ग्राम पंचायत की स्थापना कर ग्राम सुधार-सम्बन्धी कार्यों को करने में रत रहता है।

आदर्श बन्धु या पाप परिणाम (सन् १९२०, पृ० २०४), ले० जमुनादास मेहरा, प्र० दुर्गा प्रेस, कलकत्ता, पात्र पु० १८, स्त्री ६।
घटना-स्थल घर, शराब की दुकान, रास्ता आदि।

इस सामाजिक नाटक में एक मद्यप परिवार का विनाश दिखाया गया है। नाटक का एक प्रधान पात्र कालिदास कहता है—"इस देश के धन को डुबानेवाली मदिरा है। जो लोग सुखपूर्वक अपने महलों में आनन्द मनाया करते थे, वे लोग शराब के वशीभूत होने के कारण मिट्टी में मिल गए हैं। जिनके पास अपार धन था, वे द्वार-द्वार टुकड़ा मांगते हुए दिखाई पड़ रहे हैं।"

इस देश की आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक

राजनीतिक विपत्ति का मूल कारण सुरा (मदिरा) को ही बताया गया है।

आदर्श मित्र (सन् १९३७, पृ० ६६), ले० : टी०एन० खन्ना; प्र० : इन्द्रप्रस्थ हिन्दी साहित्य माला, खारी बावली, दिल्ली; पात्र : पु० ११, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ६, ५, ४।
घटना-स्थल : दरबार, बाजार, कमरा, रास्ता बाग, मकान।

इस सामाजिक नाटक में स्वार्थी एवं सच्चे मित्रों के गुणों पर प्रकाश डाला गया है। महाराज सत्यपाल के पुत्र राज की आदत बुरे मित्रों के चक्कर में पड़ने से बिगड़ जाती है। इस बात से महाराज बहुत दुखी होते हैं और राजगुरु से परामर्श करते हैं। राजगुरु के कथनानुसार युवराज अपने पिता का नकली सिर लेकर मित्रों से सहायता मांगता है कि वे उसकी रक्षा करें, लेकिन उसके मित्र उसे अपमानित करके अपने घरों से निकाल देते हैं। युवराज अपने मित्र रामनारायण के पास जाता है तो वह युवराज की रक्षा के लिए उसके पिता के खून का अपराध अपने ऊपर ले लेता है। रामनारायण के सच्चे प्रेम को देखकर राजगुरु, महाराज सत्यपाल और युवराज बहुत प्रसन्न होते हैं और उसे युवराज का अंतरंग मित्र घोषित कर देते हैं।

आदर्श मृत्यु (वि० १९८३, पृ० १०४), ले० : रामस्वरूप चतुर्वेदी; प्र० : साहित्य सदन कार्यालय, सहारनपुर; पात्र : पु०२५, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ७, ६, ६।
घटना-स्थल : जंगल, कट्टर पं० का मकान, स्वामी श्रद्धानन्द का कमरा (नया बाजार में) स्वर्गलोक।

इस सामाजिक नाटक में स्वामी श्रद्धानन्द का अछूत उद्धार के लिए किए गये प्रयासों तथा मुसलमानों के अत्याचार का वर्णन है। कमला नामक अनाथ अबला अपने बच्चे को गोद में लिए जाते-जाते एक जंगल के समीप पहुंची। वहां अहमद नामक मुसलमान उसे बलात् मुसलमान बनाना चाहता है। धक्का देकर कमला उसे गिराकर उसकी छाती पर बैठ जाती है। अहमद की सीटी की आवाज सुन कर जंगल से पांच मुसलमान आते हैं और उसे बलात् मुसलमान बनाना चाहते हैं। कमला भगवान् से प्रार्थना करती है। वह कमला की रक्षा करते हुए कहते हैं कि हिन्दुओं की रक्षा के लिए श्रद्धानन्द जैसा मेरा भक्त जन्म ले चुका है। मैं भी अवतार धारण करने वाला हूँ।

उधर स्वामी श्रद्धानन्द अछूतोद्धार और बलात् मुसलमान बनाए हुए हिन्दुओं के उद्धार में तत्पर हैं। उनके प्रयास से हिन्दू अछूतों को अपने कुएं पर पानी भरने देते हैं। श्रद्धानन्द जी के प्रयास से हिन्दू धर्म के लिए मरने वाले नवयुवक तैयार हो जाते हैं। नवयुवकों के प्रयास से बलात् मुसलमान बनाये हुए हिन्दू पुनः वैदिक धर्म स्वीकार करते हैं। इस कारण कट्टर मुसलमान बड़े क्रुद्ध होते हैं। अहमद प्रतिज्ञा करता है—

हो तरक्की कौम की, यह जान भी दे दीजिये।
सारी मुसलमा हर बशर संसार में कर लीजिये।

जान आलम, अब्दुल रशीद और युसुफ अहमद षड्यंत्र करते हैं। अब्दुल रशीद प्रतिज्ञा करता है "श्रद्धानन्द को ठिकाने लगाऊं और अपने दिल की आग बुझाऊं और जहान के मुसलमानों में गाजी का रुतबा पाऊं। आज कल वह बीमार है। बीमार को मारना बड़ी बात नहीं। नये बाजार में रहते हैं जाऊं और दिल्ली में गड़बड़ फैलाऊं।" अब्दुल रशीद इस्लाम पर बहस के बहाने श्रद्धानन्द के कमरे में पहुँचता है। अवसर पाकर वह स्वामी जी के सीने में तीन गोली मारता है। स्वामीजी की मृत्यु हो जाती है और स्वर्ग में इन्द्र, नारद, अग्नि, विष्णु भगवान्, कुबेर, बृहस्पति उनका स्वागत करते हैं।

आदर्श राम (वि० २०२१, पृ० १३८), ले० : व्रजरत्नदास; प्र० : हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस; पात्र : पु० १७, स्त्री ६; अंक : ३, दृश्य : ६, ६, ६।
घटना-स्थल : अयोध्या एवं जंगल।

इस पौराणिक नाटक में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन-चरित्र को नाटकीय रूप में दिखाया गया है। इसमें श्रीराम के जन्म से लेकर लंकेश्वर-वध, वहां से वापसी एवं अश्वमेध यज्ञ की तैयारी तक का सम्पूर्ण विवरण है।

आदर्श या गुरुगोविन्द सिंह (सन् १९२२, पृ० १३३), ले० श्री अमरनाथ कपूर, प्र० आदर्श राष्ट्रीय ग्रन्थमाला, भारती भवन, प्रयाग, पात्र १४, अक ३, दृश्य ६, १०, १६।
घटना स्थल साधारण स्थान, गुरु गोविन्द सिंह का दरबार, देवी का मन्दिर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे गुरु गोविन्द सिंह की वीरता और आदर्शवादिता का परिचय मिलता है। धर्म की ओट लेकर औरगजेब सिक्खो के सम्प्रदाय को समाप्त करना चाहता है। वह तेगबहादुर को बुलाकर उन का वध कर देता है। तेगबहादुर का बेटा सिक्खो का दसवाँ गुरु गोविन्द सिंह अपनी सेना को प्रबल बना कर 'सनातन धर्म' की रक्षा के लिए औरगजेब से बदला लेना है। युद्ध मे गोविन्दसिंह के दो बेटे जुझारसिंह और अजीतसिंह मारे जाते हैं। औरगजेब का मत्री सूबा सरहिन्द शेष दो बेटो को दीवाल मे चुनवा देता है। जिसका प्रतिशोध अन्त मे सेवक बन्दा सूबा सरहिन्द को मार कर लेता है। औरगजेब की पराजय होती है। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका बेटा बहादुर शाह पिता की गद्दी को प्राप्त करने के लिए गोविन्दसिंह से सहायता मागता है। इस प्रकार गोविन्दसिंह की सहायता से बहादुर शाह को सल्तनत प्राप्त होती है।

आदर्श वीरता (पृ०६०), ले० वी० पी० माधव, प्र० सूरी ब्रदर्स, दिल्ली, पात्र पु०१४ स्त्री ५, अक ३, दृश्य ६, १४, ६, ५।
घटना-स्थल बुन्देलखड, भारतीय भूमि, रण-क्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक मे बुन्देलखड के महान् वीर आल्हा और ऊदल के शौर्य का चित्रण किया गया है। साथ ही सम्राट् पृथ्वीराज, जयचन्द, परमर्दि देव आदि राजवश के पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष को दिखाकर भारत की आन्तरिक दुर्बलता को भी दिखाया गया है।

आदर्श स्मारक उपनाम अछूत की जीवात्मा (सन् १९५०, पृ०५०), ले० ओमप्रकाश गुप्त, प्र० साहु रमेशकुमारजी, प्रधान, हरिजन सेवक सघ, मुरादाबाद, पात्र पु०६, स्त्री २, अक ३, दृश्य ४, ६, ५।
घटना-स्थल सेठी की कोठी, औषधालय, पाठशाला का मैदान, अस्पताल, पुजारी का मकान।

इस सामाजिक नाटक मे कुछ युवा-वर्ग के माध्यम से अछूतोद्धार की समस्या का समाधान दिखाया गया है। रामपाल, चौधरी और अछूत हरिजन बालक हैं। वे जिस गाँव मे रहते हैं उसमे हरगुलाल नामक दुष्ट वैद्य हरिजन-द्रोही है। दूसरा डाक्टर रामचन्द्र हरिजनो का सेवक है। हरगुलाल डाक्टर रामचन्द्र से घृणा करता है। प्रथम अक मे एक अछूत माता अपने मरणासन्न बच्चे को गोद मे लेकर रामचन्द्र औषधालय मे पहुँचती है और वह सेवा करके बच्चे को नीरोग कर देता है। बुढिया बार-बार आशीर्वाद देती है।

दिनेश एक धनी सेठ का लडका है। वह अपने स्वर्गीय पिता के स्मारक मे अपने अर्जित धन पचीस हजार रुपये को अछूतोद्धार मे लगाना चाहता है। वह रामचन्द्र को अछूतो के लिए पाठशाला और अस्पताल खोलने को धन देता है। इससे रुष्ट होकर हरगुलाल पचायत मे रामचन्द्र को बिरादरी से निकलवा देता है। दिनेश का भाई रमेश पचीस हजार रुपये से एक पाक बनवाकर कमिश्नर से उद्घाटन कराना चाहता है। सेठानी श्यामा दिनेश का समर्थन करती है तो रमेश अपनी माँ को घर से निकालने की धमकी देता है। रमेश पडा-पुजारियो को उभाडकर रामचन्द्र को मरवा डालना चाहता है। गुडे उसे इतना पीटते हैं कि वह आहत होकर अस्पताल मे भर्ती हो जाता है। इसका ऐसा प्रभाव पडता है कि अनेक मन्दिर अछूतो के लिए खोल दिए जाते हैं। रामचन्द्र की तपस्या से रमेश का हृदय परिवर्तित होता है। सभी अछूतोद्धार मे सलग्न हो जाते है।

आदर्श हिन्दू विवाह (सन् १९१६), ले० प० जीवानन्द शर्मा, प्र० तिरहुत विद्या प्रसारिणी सभा, मुजफ्फर नगर, पात्र पु०१२, स्त्री ६, अक ४, दृश्य ५, ५, ६, ७।
घटना-स्थल महल।

इस सामाजिक नाटक मे अनमेल विवाह की बुराइयो एव उनमे उत्पन्न समाज की

दुर्दशा का चित्रण किया गया है। किरन नामक लड़की की शादी अधिक उम्र में होने से समाज उसके पिता पर व्यंग्य कसता है तथा यह मानता है कि जिस घर में लड़की की शादी अधिक उम्र में होती है वहाँ भूत-प्रेत निवास करते हैं।

अन्ध-विश्वासों के मध्य नाटक की रचना होने पर भी नाटककार ने उसे सुधारवादी बनाने का सफल प्रयास किया है।

आदित्यसेन गुप्त (सन् १९८२, पृ० १२८), ले०: कंचनलता सब्बरवाल, प्र०. हिन्दी-भवन, इलाहाबाद; पात्र : पु० १३, स्त्री ६, अंक : ५, दृश्य : ७, ६, ६, ८।
घटना-स्थल : मगध राजमहल, विवाहस्थल, बौद्ध-संघ, राजदरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक में आदित्य तथा एक असहाय पतिपरायणा पत्नी की जीवन-कथा वर्णित है। मगध तथा उसके आस-पास के प्रदेशों पर महासेन गुप्त का पौत्र, माधवगुप्त का पुत्र आदित्यसेन राज्य करता था। माधवगुप्त की पुत्री देवप्रिया का विवाह दाक्षिणात्य सम्राट् से होने पर वह पितृकुल पर ध्यान नहीं देती है। उसका पति बाहर गया है। वह चाँदनी रात में विरह-मग्न रहती है। सहसा गुप्त-साम्राज्य का एक स्वामिभक्त आकर उसे करुण-कहानी सुनाता है। व्यथित हो देवप्रिया श्वसुरगृह त्यागकर पितृगृह को अपना बच्चा ले चली जाती है। घर आकर उसे नन्हा बालक आदित्य ही शेष दिखाई देता है। देवप्रिया कर्तव्यनिष्ठा के साथ आदित्य के हृदय में पूर्वजों के गौरव-बीज बोया करती है। आदित्य वंश के पूर्व-गौरव को रक्षित रखने के लिए सचेष्ट हो जाता है।

सहसा उसके जीवन में कोणदेवी का प्रवेश होता है। पिता की मृत्यु के बाद सैनिक उसके भाई को मारकर उसे गणिका मधुमती के हाथ बेच देते हैं। कोणदेवी बौद्धश्रमणों की योजना के अनुसार आदित्य-सेन का वध करने भेजी जाती है किन्तु वह कुमार को मारती नहीं बल्कि लेकर भाग जाती है। रणविजयी कुमार का प्रणय करती है, किन्तु कुमार उसे ठुकरा देते हैं। कुमार राज्य में लौट आता है।

कोणदेवी अपने जीवन से घृणा करने लगती है, मधुमती उसे कर्तव्य का यथार्थ उपदेश देती है। कोण अज्ञातरूप से स्वामी के प्रति समर्पित रहती है। देवप्रिया कोणदेवी के गुणों से प्रभावित होकर उसे आदित्य की पत्नी बनाती है। भाई आदित्य को सफल रूप में छोड़कर देवप्रिया अपने पुत्र को लेकर दाक्षिणात्य के पास लौट जाती है।

आदि-मार्ग (सन् १९८३), ले० : ओंकारनाथ अरुण, प्र० : प्रयाग साहित्यकार संसद, पात्र : पु० ५, स्त्री २; अंक : १, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : बैठक, आँगन, बाग।

इस सामाजिक नाटक में प्रेम और समस्या के वर्तमान परिवेश को प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। रानी और राज दो बहनें हैं। रानी स्वाभिमानी, और राज पति-परायणा है। पति से विरक्त होने पर दोनों बहनें पुराने विचारों के समर्थक अपने पिता तारासचन्द के घर आ जाती हैं। रानी का पति वकील, दहेज में कोठी और मोटर न मिलने के कारण उसकी उपेक्षा करता है तथा राज का पति प्रोफेसर अपनी प्रिया से विवाह कर लेता है। इन बहनों का भाई पुरुष स्वतन्त्रवादी विचारों का जागरूक नवयुवक है। रानी का व्यक्तित्व पुरुष से मेल खाता है। वह अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपने पति और कट्टर पिता दोनों को छोड़ना चाहती है जबकि राज अपने श्वसुर के घर जाने को उद्यत होती है। इस नाटक में तारासचन्द, त्रिलोक और उदयशंकर पुराने भारतीय संस्कारों के प्रतीक के रूप में आए हुए हैं जो कि सामंती संस्कारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। राज, नारी के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें नारी, बंधन को अपना शृंगार तथा अत्याचारों को साधना समझती है, और यह सब सहते हुए भी वह अपने को पतिपरायणा बनाए रखना चाहती है। रानी का व्यक्तित्व उससे विपरीत चित्रित हुआ है। वह विद्रोहिणी है। पुरुष, समाज के दमित विचारों के प्रति क्रान्तिकारी स्वरों में विरोध करती है।

आधी रात (सन् १९३४, पृ०१३६), ले० लक्ष्मी नारायण मिश्र, प्र० भारती भण्डार, इलाहाबाद; पात्र पु० ३, स्त्री १, अक २, दृश्य-रहित।
घटना स्थल घर, आगन, बागीचा।

इस नाटक मे एक ऐसी नारी के जीवन की समस्या उठाई गई है, जिसका जन्म तो हमारे अपने देश म हुआ था, किन्तु जिसकी सारी शिक्षा-दीक्षा एव आदर्शों और आशाओं का निर्माण इग्लैंड मे हुआ था। मायावती नारी-जीवन की सारी मान्यताओं को हवा म उडाकर दो बैरिस्टरो के साथ प्रेम-क्रीडा से नये स्वर्ग का निर्माण करने लगती है, उसमे नारी के व्यक्तित्व की स्वतत्रता और पुरुषो की आख मे आख गडाकर ललकारने की लालसा है। अपनी शक्ति-भर उसने यह नया प्रयोग किया, पर एक दिन आया जब उसने देख लिया कि उसका यह प्रयोग उसे सब ओर से ले डूबा। इस देश मे नारी-जीवन के जो विश्वास थे, उसने उन सब को अपनाया। अपने प्रिय के मगल और अपने चित्त की शाति के लिए तीर्थ और व्रत के रूप मे उसने वे सारे काय किए जो इस देश की श्रद्धामयी ग्रामीण स्त्रिया सदा से करती आ रही हैं।

आधी रात (सन् १९३८, पृ० २७०), ले० जनार्दन राय, प्र० सरस्वती प्रेस, बनारस, पात्र पु० २१, स्त्री ५, अक ३, दृश्य १०, ७, ८।
घटना स्थल घनाजगल, महल, राजमार्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सेनापति के साथी राजपूत की पिता तथा भाई के प्रति निममता दिखाई गई है। महाराणा कुम्भा विद्रोही खडेलो को पराजित कर मुक्त कर देते हैं। सेनापति कौचल, इससे असन्तुष्ट होते है। वह क्षेत्रसिंह (राणा के तृतीय पुत्र) से अपना असतोष प्रकट करते हुए कहते हैं "अच्छा होता हुजूर वानप्रस्थ ले लेते।" इतने मे युवराज ऊदा आ जाते हैं और कौचल से कहते हैं—"महाराणा चाहते हैं कि सब को मुक्त कर, भेदभाव पाट के सब पाप धो डालें जाए।" कौचल को आशका है कि महाराणा कुभा की अदूर-दर्शिता से मेवाड छोटा-सा प्रात भर रह जायगा। यह कैसे सहा जायेगा? कालान्तर मे ऊदा और जैतसिंह दोनो भाइयो मे युद्ध होता है। ऊदा कुभा की हत्या करते हैं। मेवाड की सारी प्रजा भ्राता और पिता के हत्यारे ऊदा का विरोध करती है। ऊदा के पास सेना और अस्त्रशस्त्र हैं। प्रजा के पास केवल आत्मशक्ति। ऊदा नीद मे बडबडाते हुए कहता है—"सैनिको! यह रात समाप्त होगी।" इतने मे बिजली कडकडाकर उस पर गिरती है। ऊदा राख बन जाता है।

आधे अधूरे (सन् १९६९), ले० मोहन राकेश, प्र० राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ३, अक २, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल ड्राइग-रूम।

इस सामाजिक नाटक मे उस मध्यम-वर्गीय समाज का चित्रण है जो नगर मे विविध प्रकार के घुटन का अनुभव कर रहा है। नाटक का नायक महेन्द्रनाथ जीविका के लिए अपनी पत्नी सावित्री के ऊपर सर्वथा अवलम्बित रहने के कारण अपने ही घर मे उपेक्षित है। उनकी बडी लडकी बिन्नी माता के प्रेमी मनोज के साथ अवसर देखकर भाग जाती है और उससे विवाह कर लेती है किन्तु थोडे ही दिन बाद वह वैवाहिक जीवन से खिन्न रहने लगती है। लडका अशोक बेकारी के कारण आज के युवको की कटु मनोवृत्ति को प्रकट करता है। छोटी लडकी निन्नी बडी मुखर और जिद्दी है जो किसी की आज्ञा मानना नही चाहती। बारह वर्ष की अवस्था मे ही वह कैसानोवर की कहानियाँ एव नर-नारी के यौन-सबधो मे रुचि रखती है। नौकरी द्वारा जीविकोपार्जन करने वाली सावित्री पर परिवार का सारा बोझ है, अत वह झुझलाई हुई रहती है। वह पति के रूप मे एक पूर्ण मनुष्य का स्वप्न देखती है, पर अपनी कामना की असफलता म उसे न कही शान्ति मिली है और न वह घर मे किसी को शान्ति से रहने देती है। अपने पति पर सदा क्रुद्ध रहने के अनेक कारणो मे एक कारण यह है कि वह परावलम्बी बना रहता है। अपने मित्रो के परामर्श के अनुसार कार्य करता है। स्वय किसी निर्णय पर नही पहुँचता। महेन्द्रनाथ अस्वस्थ एव दुखी होने पर अपने मित्र जुनेजा के यहाँ चला जाता है। उसकी

अवस्था जब असाध्य होने लगती है, तब जुनेजा सावित्री को महेन्द्रनाथ की दयनीय स्थिति से परिचित कराता है। पर सावित्री का आक्रोश किसी प्रकार कम नहीं होता। अशोक रुग्ण पिता को लेकर घर लौटता है, पर घर में आते ही वह अन्तिम सांस ले लेता है।

बम्बई की नाट्य-संस्था 'थियेटर यूनिट' ने इसका सफलता से प्रदर्शन किया है। यह दिल्ली में दिशान्तर संस्था (ओम शिवपुरी) के निर्देशन में और कलकत्ता में अनामिका संस्था द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस नाटक का चलचित्र भी बन चुका है।

आध्यात्मिक प्रह्लाद नाटक (सन् १६२५, पृ० ५८), ले० : श्रीराम नन्द सहाय 'ब्रह्मविद्या'; प्र० : मिस्टर भटनागर, प्रोपराइटर के प्रबन्ध से आफताब मुद्रण यन्त्रालय, फैज़ाबाद में मुद्रित हुआ; पात्र : ६; अंक : ५।
घटना-स्थल : देवलोक, तपोभूमि, असुरलोक, नन्दन वन, महारण्य, गिरिशृंग, समुद्र।

यह नाटक पौराणिक कथाओं पर आधारित है। सभी प्रचलित ललित छन्दों से यह नाटक विभूषित किया गया है। इसमें प्रह्लाद की दृढ़ता एवं तपस्या का चित्रण है।

आन का मान (सन् १६६२, पृ० १४८), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : कौशाम्बी प्रकाशन, इलाहाबाद; पात्र : पु० ४, स्त्री १; अंक : ३।
घटना-स्थल : मारवाड़ का राजभवन, जंगल, मार्ग, घर, ईरान।

इस ऐतिहासिक नाटक में राजपूत दुर्गादास की कर्त्तव्य-परायणता दिखाई गई है। अकबर की सहायता से स्वामिभक्त सेनानायक दुर्गादास अजीतसिंह को मुट्ठी-भर सैनिकों की मदद से मारवाड़ की गद्दी पर बैठाता है। औरंगजेब की कूटनीति के कारण अकबर को प्राणरक्षा के लिए ईरान जाना पड़ता है। जाते समय वह अपने बच्चों की रक्षा का भार दुर्गादास पर सौंपता है। बड़ा होने पर अजीतसिंह एवं अकबर की पुत्री में प्रेम हो जाता है। किन्तु दुर्गादास अपने मानापमान की चिंता न कर अजीतसिंह को रुष्ट कर अकबर के बच्चों को औरंगजेब के पास पहुँचा देता है, और स्वयं अजीतसिंह द्वारा निर्वासन का दण्ड भोगता है। वह अनेक विपदाओं को सहता हुआ भी अपने कर्त्तव्य-पथ से च्युत नहीं होता।

आनन्द का राजपथ तथा अन्य लघु नाटक (सन् १६५७, पृ० १२६), ले० : गीतावरन दीक्षित; प्र० : आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; पात्र : पु० ८, स्त्री २, भिक्षु, भिक्षुणियां; अंक : ३, दृश्य : २, ३, ३।
घटना-स्थल : बौद्ध-शिविर।

इस ऐतिहासिक नाटक में भगवान् तथागत के सिद्धान्तों का दिग्दर्शन कराया गया है। अनेक भिक्षुओं तथा गौतम के मतानुसार मनुष्य दुःखों के चक्कर में पड़कर आनन्द का अवसर ही नहीं प्राप्त कर पाता है। स्थविर स्वामी भिक्षुओं को वैराग्य से लगाव तथा हास्य से विरक्ति का उपदेश देता है, लेकिन भिक्षु प्रकृतिवश हास्य से ही प्रेम करते हैं। अन्त में स्थविर थक कर आनन्द की प्राप्ति का राजपथ घोषित करता है कि दुःखों को झेलकर जीवन को आनन्द के साथ जीना ही श्रेयस्कर है।

'आनन्द के राजपथ' के साथ 'रक्षा-बन्धन', 'आत्म प्रगति' तथा 'गान्धीवाद' नामक तीन लघु नाटक भी जुड़े हैं। 'रक्षा-बन्धन' में इन्द्र सभा में चर्चिल, हिटलर, रवीन्द्रनाथ, नारद आदि सभी प्रस्तुत हैं। इन्द्राणी शान्ति-पुरुष गांधीजी को राखी बांधती है, जो संसार को अहिंसा की ओर प्रवृत्त करते हैं। 'आत्मप्रगति' में तितली नामक पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगी लड़की गान्धी जी की अहिंसा तथा खादी से घृणा करती है। अन्त में अपने तर्क से परास्त होकर वह गान्धीवाद में ही अपनी आस्था प्रकट करती है। 'गान्धीवाद' में एक आदमी गाँवों में घूमकर सभी को अत्याचारों से दूर करना चाहता है। परिणामतः लोग उससे घृणा करते हैं, लेकिन अन्त में वह सभी के हृदय को जीत लेता है।

आनन्द मठ (पृ० ७०), ले० : पातीराम भट्ट; प्र० : साहित्य निकेतन, कानपुर; पात्र : १५; अंक दृश्य : ५, : ३,४, १।
घटना-स्थल : बंगाल की एक जन-शून्य चट्टी।

इस ऐतिहासिक नाटक में आनन्द मठ के अध्यक्ष की नीति-निपुणता से अंग्रेजों को युद्ध में हराने की कथा वर्णित है। अंग्रेजों के अत्याचार से दुखी भारतीय गाँव छोड़कर भागते हैं। जमींदार महेन्द्रसिंह अपनी पत्नी और बच्ची को लेकर चट्टी पर आते हैं। भूख से व्याकुल अपनी बच्ची के लिए दूध लेने जाते हैं। पीछे से डाकू आकर स्त्री के गहने लूट ले जाते हैं। स्त्री अपनी बच्ची को लेकर प्राण-रक्षा के लिए भाग निकलती है। आनन्द मठ के अध्यक्ष सत्यानन्द महेन्द्रसिंह की पत्नी को सुरक्षित स्थान पर ले जाते हैं। सत्यानन्द के कहने पर महेन्द्रसिंह सन्तान-व्रत ग्रहण करते हैं। अंग्रेजों से युद्ध होता है जिसमें सत्यानन्द को विजय मिलती है। सत्यानन्द महेन्द्रसिंह को उसकी पत्नी और पुत्री तथा देश-रक्षा का भार सौंपकर स्वयं प्रस्थान करते हैं।

आनंद रघुनंदन (सन् १८८१, पृ० १२३), ले० रीवा नरेश विश्वनाथ सिंहदेव, प्र० नवलकिशोर प्रेस लखनऊ, पात्र पु० ३२, स्त्री ८, अंक ७, दृश्य-रहित।

इस पौराणिक नाटक में मर्यादा पुरुषोत्तम राम की समग्र जीवन-लीला को अनुस्यूत किया गया है। राम जन्म से आरम्भ होकर, किशोरावस्था, राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र द्वारा ले जाना, अहिल्योद्धार, सीता-स्वयंवर, राम वनवास, भरतमिलाप, सीता हरण, बालि-वध, सीता की पुनः प्राप्ति के लिए राम का रावण से युद्ध, रावण-संहार आदि, प्रमुख घटनाएं हैं। अंत में सीता को अयोध्या ले जाकर राम के राज्याभिषेक समारोह के साथ नाटक का सुखद अंत होता है।

आनन्द विजय नाटिका (सन् १३३३, पृ० ५०), ले० कविवर रामदास, प्र० राज प्रेस, में श्री हरिनारायण द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ४, दृश्य-रहित। घटना स्थल उल्लेख्य नहीं।

इस कीर्तनिया नाटक में प्रेमी-प्रेमिका के मनोभावों का विश्लेषण किया गया है। नायक माधव के हृदय में अपनी राधा के निमित्त पूर्वराग का उदय होता है। वह अपने दोस्त आनन्दानन्द से राधा के दर्शन कराने के लिए कहते हैं। एक दिन राधा अपनी सखियाँ विचक्षणा और वाचाला के साथ आनन्दानन्द से मिलती है। आनन्दानन्द अपने-आपको गुण-विधान नामक ज्योतिषी बनाकर उन लोगों को शिव-अर्चना-हेतु पुष्पों का चयन करने को कहते हैं। पुष्प-चयन करते समय कालिदास के दुष्यन्त की तरह माधव और आनन्दानन्द भ्रमर का स्वरूप धारण कर पुष्पों पर उपस्थित होते हैं। लेकिन जैसे ही वे कुछ बातें करना चाहती हैं वैसे ही माधव चले जाते हैं। राधा के हृदय में माधव के प्रति प्रेम का प्रादुर्भाव होता है। वह पुष्पों को लेकर प्रेमी के दर्शन-हेतु ईश्वर की प्रार्थना करती है। ईश्वर उसकी प्रार्थना से खुश होकर उसे प्रेमी से मिलाते हैं।

आमेर की सरस्वती (सन् १९६५, पृ० ३०३), ले० शारदा मिश्रा, प्र० गंगा पुस्तक मालाकार्यालय लखनऊ, पात्र पु० ८५, स्त्री १२, अंक ७, दृश्य २, २, २, ३, २, ३, ३। घटना-स्थल अम्बा माता का मंदिर, मुगल पड़ाव, यमुनातट, आगरे का दुर्ग, कुतुबखाना, जोधाबाई का महल, फतेहपुर सीकरी।

यह ऐतिहासिक नाटक अकबर एवं जोधाबाई के जीवन पर आधारित है। आमेर की राजकुमारी जोधाबाई भारतीय जनमानस में आत्म-सम्मान की ज्योति जगाने की महती कामना अपने गुरु चतुरनाथ के सम्मुख प्रकट करती है। तत्कालीन मुगल-सम्राट अकबर धार्मिक वैमनस्य को दूर करने के लिए अपनी सहोदरा शाहजादी शकरुन्निसा के विवाह का प्रस्ताव कुँवर भगवानदास के समक्ष रखता है, परन्तु राजकुमार इसे अस्वीकार कर देते हैं। इसके विपरीत राजा भारमल अपनी पुत्री जोधाबाई का विवाह अकबर के साथ कर देते हैं। जोधाबाई के सद्गुणों से प्रभावित अकबर उसे 'गुलरुख-ए-कुल' की उपाधि से विभूषित करता है। जोधाबाई के प्रयासों से 'जजिया' आदि करों के भार से हिंदू-जनता मुक्त हो जाती है। वह अपने पुत्र सलीम का विवाह भगवानदास की पुत्री मानबाई से करती है। इस विवाह के उपरान्त वह अपने प्रिय मन्दिर में दर्शनार्थ जाती है। परन्तु विधर्मी होने के कारण उसे मन्दिर-प्रवेश की अनुमति नहीं मिलती। बलात् मन्दिर के कपाट गिरवा

कर जोधाबाई को दर्शनों का लाभ करवाया तो गया, परन्तु वह इस अपमान को न सह सकने के कारण मन्दिर में मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। बादशाह अकबर जोधाबाई के शव को उठाकर ले जाते हैं।

अरण्य काण्ड (सन् १८९४, पृ० १२०), ले० : श्री दामोदर शास्त्री; प्र० : बाबू साहिब प्रसाद सिंह, खड्ग विलास छापाखाना, बांकीपुर; पात्र : पु० १०, स्त्री ५।
घटना-स्थल : समरभूमि, अगस्त्याश्रम।

यह पौराणिक नाटक रामचरित मानस के आधार पर अरण्य काण्ड का खण्ड है। राम जंगल में लक्ष्मण और सीता के साथ रहकर अपनी वनवास-अवधि को पूरा करते हैं। जहाँ राम-रावण की लड़ाई तथा वाद-विवाद का प्रसंग दिखाया गया है।

आराम हराम है (सन् १९६१, पृ० १०२), ले० : प्रकाश साथी; प्र० : चौ० बलवन्त राय एण्ड कम्पनी, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : २, दृश्य : ३, ३।

यह सामाजिक नाटक देश के भिखमंगों की समस्या पर आधारित है। देश में अपाहिजों, भिखारियों के अतिरिक्त कुछ प्रमादी, कामचोर भी भीख माँगने का धन्धा अपना लेते हैं। नाटककार ने इसे समाज का कलंक समझ दूर करने का प्रयास किया है। अन्त में भिखारियों का मुखिया बादशाह भीख माँगना छोड़कर बड़े परिश्रम से काम करता है। लड़की राधा के रोकने पर भी काम करता है। वह आराम को हराम बताता है, तथा सबको मेहनत से रोटी कमाने और खाने का उपदेश देता है।

आर्यमत मार्तण्ड नाटक : प्रथम भाग (पृ० ६४), ले० : पण्डित गदादत्त शर्मा प्राजीत; प्र० : आर्य-भास्कर प्रेस, आगरा; पात्र : पु० ६, स्त्री १।
घटना-स्थल : आश्रम, जंगल आदि।

इस धार्मिक नाटक में नियमों की समीक्षा की गई है और उसे श्रेष्ठ बताया गया है। एक स्थान पर परिपार्श्वक का कथन है।—"जैसा इस समय पूर्णचन्द्रमा का प्रकाश है, ऐसा ही इस समय आपके आर्य मत का प्रकाश है।"

आर्यमत पर प्रकाश डालने के लिए वैरागी, दादू इत्यादि के मतों पर गहराई से ध्यान दिया गया है। भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों का विवेचन भी है।

आर्यमत मार्तण्ड नाटक : द्वितीय भाग, ले० पं० दामोदर प्रसाद; प्र० : पं० नन्दकिशोर शर्मा के प्रबन्ध से 'आर्यभास्कर' प्रेस आगरा में मुद्रित।
घटना-स्थल : वन, आश्रम, गंगातट।

इस धार्मिक नाटक के द्वितीय भाग में द्वैत, अद्वैत और विशिष्टाद्वैत इत्यादि दर्शनों का विवेचन है। विभिन्न दर्शनों के द्वारा जीव, ब्रह्म, आत्मा, परमात्मा पर प्रकाश डाला गया है। नाटककार का उद्देश्य विभिन्न दर्शनों की दृष्टि से विवेचन करना है। सत्य की खोज में एक विरक्त संन्यासी गंगा-तट पर बैठकर जीव-ब्रह्म की समीक्षा करता है। इसमें विदूषक आद्योपान्त विद्यमान है। जो विभिन्न मत-मतान्तरों का आधुनिक दृष्टि से खंडन-मंडन करता है।

आर्याभिनव (वि० २००३, पृ० ६४), ले० : रामानन्दन सहाय 'ब्रह्मविद्या'; प्र० : ब्रह्मविद्या-लय फैजाबाद; पात्र : पु० ६, स्त्री ४, अंक : ४।
घटना-स्थल : आश्रम।

इस सामाजिक नाटक का मूल उद्देश्य भेदभाव को त्यागकर जन-जन में विद्या का प्रचार करना है। वेद-पाठी जी और शास्त्री जी सनातन धर्म के लोप होने तथा बढ़ते हुए अंधविश्वास पर वार्तालाप करते हैं। प्रसंगों के बीच शास्त्रीजी शूद्र के वेद पढ़ने का विरोध करते हैं परन्तु वेदपाठीजी देश के हित में अविद्या के नाश तथा विद्या के जन-जन प्रचारार्थ इसका समर्थन करते हैं। इसका मूल विषय है जन-जन में विद्या का प्रचार करना, जिसे पहले से वर्ण-विशेष (ब्राह्मण-वर्ग वेद-पाठ के लिए) का पैत्रिक अधिकार माना जाता रहा है।

आवारा (सन् १९४२, पृ० ८६), ले० पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र; प्र० : मानिकचन्द बुक-डिपो उज्जैन; पात्र : पु०८, स्त्री २; अंक : ३।

दृश्य ८, १८, ७।
घटना स्थल घर, भिक्षुक-गृह।

इस सामाजिक नाटक की मूल वस्तु व्यक्ति और समाज का द्वन्द्व है। इसमें पतिता के पुनरुद्धार पर जोर दिया गया है। 'आवारा' को सार्थक करती हुई भिखमंगों की एक टोली होती है। टोली का नेतृत्व समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति करता है। अपनी इस दशा के लिए वह समाज को ही दोषी बताता है। उसकी पालिता पुत्री लाली भी इसी तरह भीख मांगती है। दयाराम एक शिक्षित नवयुवक उसे भीख मांगने से रोकता है। लाली भी समाज पर दोषारोपण करती है। दयाराम उनका उद्धार करने और उनके जीवन को सुधारने के लिए एक नया नगर बसाता है। लाली से अपना विवाह करता है। वह बुड्ढे से भी यह वातावरण अपनाने के लिए कहता है। किन्तु बुड्ढा अपने कलुषमय जीवन का कारण समाज को बताते हुए ऐसा करना स्वीकार नहीं करता। इन घटनाओं के अतिरिक्त कुछ अन्य अस्वाभाविक घटनाओं का भी समावेश किया गया है।

आशिक का खून, दामन पे धब्बा उर्फ दौलत का प्यार, चाहत से वार (सन् १८८३), ले० मुहम्मद महमूद मियां 'रौनक', प्र० खुरशेदजी मेहरवानजी, मालिक विक्टोरिया नाटक कम्पनी, अंक २, दृश्यरहित।
घटना-स्थल घर, आंगन।

इस सामाजिक नाटक में आशिक और हसीना के झूठे प्रेमों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है। पिता की मृत्यु के बाद उसकी एकमात्र पुत्री मस्तनेज़ अकेली रह जाती है। उस अकेले पुष्प पर उन्न आने के साथ बहुत से भ्रमर मंडराने लगते हैं। आशिक, घुजा और इब्नेमीर इन तीन प्रेमियों को वह अपने हुस्न के सौदे में नैकट्य प्रदान करती है। मस्तनेज़ सर्वप्रथम आशिक को अपना हृदय समर्पित करके शादी की आशा बंधाती है। वह घुजा को अपनी जुल्फों और इश्क के झूठे मुलम्मों में अटकाये रहती है। वह अपने तीसरे प्रेमी इब्नेमीर की ओर भी लपकती है। धन और ऐश्वर्य के लोभ ने प्रथम प्रेमी आशिक को धना बनाने का मार्ग दिखाया। आशिक की बहिन दिलनवाज़ मस्तनेज़ के धोखे को ताड़ कर भाई को उससे दूर होने की सलाह देती है और दूसरी तरफ प्रणयी किन्तु आशिक उसका साथ नहीं छोड़ता। मस्तनेज़ अपने दूसरे प्रेमी के सुख के लिए २००० रु० अफज़ल को देकर प्रेम में अन्धी हो उसका वध करवा देती है।

आशिक के वध से दिलनवाज़ को बड़ा दुःख होता है। वह यथाशीघ्र इब्नेमीर के साथ शादी का प्रबन्ध करती है। उस कहर ढाने वाली हसीना को क्या पता कि रहस्य अपने गर्भ में कुछ और ही छिपाये हुए है। नाटककार अति प्राकृतिक शक्तियों के द्वारा मस्तनेज़ की हत्या के षड्यन्त्र का रहस्योद्घाटन कर देता है। हत्यारिनी स्वयं अपना अपराध स्वीकार कर लेती है। वह अपराध स्वीकृत कर स्वयं आत्महत्या करती है और इब्नेमीर ऐसी गैर-वफादार पत्नी के जाल में फंसने से बच जाता है। आशिक वध से मरा नहीं था। उसका विवाह दिलनवाज़ से हो जाता है। अफज़ल अपने पाप का दण्ड फांसी के तख्ते से प्राप्त करता है।

आशिके-सादिक उर्फ हीर-रांझा (सन् १८८०), ले० मुहम्मद महमूद मियां, रौनक', प्र० खुरशेदजी मेहरवानजी, मालिक विक्टोरिया नाटक कम्पनी, पात्र पु० २, स्त्री २।
घटना-स्थल घर, उपवन।
मुहम्मद अब्दुल अजीज ने भी हीर-रांझा नाटक लिखा।

यह नाटक हीर और रांझा के प्रणय पर आधारित है। इसमें इश्क मजाज़ी से इश्क हकीकी की ओर विकास प्रदर्शित किया गया है।

नाटक की नायिका हीर स्वप्न में एक सुन्दर युवक को देख मुग्ध हो जाती है। वह जाकर उसे प्राप्त करने का उपाय करती है। दैवी शक्तियों की आराधना करके अपने प्रियतम को प्राप्त करने का वरदान पाती है। दैवी शक्तियों ने हीर को उसके प्रेमी रांझा की आकृति और उसका प्रणय भी हीर के प्रति दिखाया तथा उसे मिलाने का वचन

दिया।

रांझा भी स्वप्न में हीर की अद्वितीय छवि देखकर मुग्ध होता है और उसके अलौकिक सौन्दर्य को देखकर बेहोश हो जाता है। वह प्रातः उठने पर अपनी माशूका के लिए गृह-त्याग कर दीवाना होकर निकल पड़ता है। मार्ग में अनेक आपत्तियों और बाधाओं से लड़ता हुआ अपने को तपाता रहता है। वह घोर तप और दृढ़ प्रेम में उन्मत्त हो पागल की भाँति हीर-हीर रटता, गिरता-पड़ता बेहोश होता उसी बाग में पहुँचता है जहाँ हीर उसके लिए तड़प रही है। लेखक ने विरह-वर्णन में बारहमासे का भी प्रयोग किया है। रांझा बाग में पहुँचकर संज्ञाहीन हो जाता है। हीर उसे पहचान लेती है। वह रांझा के पास जाकर उसे संभालती है। काफी प्रयास के बाद वह चेतना में आता है और हीर को देखकर पुनः मूच्छित हो जाता है। हीर अपने प्रियतम को अपनी गोद में रखकर प्रणयपूर्ण कोमल हाथों से उसका उपचार करती है। इस प्रकार दोनों का मिलन होता है।

नाटक में प्रणय का उद्‌भव दोनों तरफ है। उनका प्रेम इश्क-शरीरी से इश्क-हकीकी की सिद्धावस्था को प्राप्त करता है। रचना का उद्देश्य आदर्शवादी है।

आशीर्वाद (सन् १९६१, पृ० ११८), ले० : सूरजदेव प्रसाद श्रीवास्तव; प्र०: अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली-६; पात्र : पु० १०, स्त्री ५; *अंक : ४, दृश्य : ५, ७, ५,३।*

यह एक सामाजिक नाटक है। इस नाटक में धनीराम वैश्य की पुत्री श्यामा का विवाह हरिजन गोपालदास से होता है जोकि एक ओवरसियर है। उसी को सभी वर्ग वाले सुखी रहने के लिए आशीर्वाद देते हैं, क्योंकि उसने अन्तर्जातीय विवाह किया है। जातिवाद का भेद मिटाने में यह नाटक अपना एक नवीन आदर्श प्रस्तुत करता है।

आषाढ़ का एक दिन (सन् १९५८, पृ० ११६), ले० : मोहन राकेश; प्र० : राजपाल एण्ड संस, दिल्ली-६; पात्र : पु० ८, स्त्री ४; *अंक : ३, दृश्य-रहित।*

घटना-स्थल : ग्राम, एक प्रकोष्ठ।

आधुनिक यथार्थपरक नाट्य-पद्धति पर लिखा हुआ एक ऐतिहासिक नाटक है। प्रथम अंक में सर्वप्रथम कालिदास एक प्रेमी के रूप में सामने आते हैं। आषाढ़ के पहले दिन मल्लिका और कालिदास घाटियों की गोद में मिलते हैं और वर्षा का आनन्द लेते हैं। मल्लिका घर आकर प्रकृति के सौंदर्य तथा कालिदास से मिलन की प्रसन्नता को अपनी मां अम्बिका से कहती है। अम्बिका प्रेम के कारण फैले ग्राम्य-अपवाद से दुखी है। वह मल्लिका के विवाह-प्रस्ताव के वापस हो जाने से दुखी है। अम्बिका का कालिदास के प्रति भी रोष है, क्योंकि कालिदास मल्लिका से प्रेम तो करता है लेकिन विवाह नहीं करता। इसी बीच कालिदास भी एक घायल हरिणशावक को लेकर वहां आ जाता है। उसके पीछे दन्तुल भी शिकार को अधिकारपूर्वक मांगते हुए प्रवेश करता है। वह कालिदास का नाम सुनकर क्षमा-याचना करता है, तथा उज्जयिनी के सम्राट् और वररुचि द्वारा कालिदास की प्रसिद्धि और प्रशंसा की सूचना देता है, जिसे सुनकर मल्लिका बहुत प्रसन्न होती है। कालिदास उज्जयिनी जाने से इन्कार करता है।

द्वितीय अंक में अन्तर्-संघर्ष का प्राधान्य है। कालिदास के उज्जयिनी-गमन के उपरान्त अम्बिका और उसकी पुत्री मल्लिका निरन्तर वियोग-संतप्ता बनी रहती हैं। ग्राम-पुरुष निक्षेप कालिदास और गुप्त वंश की राजकुमारी के परिणय की सूचना देता है। एक दिन कालिदास अपनी अर्धांगिनी प्रियंगुमंजरी के साथ मल्लिका के आवास के समीप से अश्वारोही बनकर निकल जाता है और उसकी पत्नी प्रियंगुमंजरी मल्लिका के पर्णकुटीर में उसका वृत्तान्त जानने के लिए पहुंच जाती है। वह मल्लिका और कालिदास की बाल-मैत्री से परिचित है। वह मल्लिका से साथ चलने का अनुरोध करती है, पर मल्लिका अस्वीकार करती है। ग्राम-पुरुष विलोम और माता अम्बिका के व्यंग्यबाणों से मल्लिका का हृदय आहत होता है।

तृतीय अंक के प्रारंभ में माता अम्बिका स्वर्गवासिनी बनती है जिससे निराश्रित

मल्लिका को विवश होकर उस विलोम को स्वगृह में बसाना पड़ता है जिसके प्रति उसके हृदय में प्रेम का सदा अभाव रहा। विलोम के साथ रहकर मल्लिका पुत्री-रत्न को जन्म देती है। तदुपरान्त कालिदास (मातृगुप्त) कश्मीर का राज्य त्याग मल्लिका के पास पहुंचता है और कश्मीर जाते समय उससे न मिलने का कारण स्पष्ट करता है। कालिदास अपनी काव्य-प्रेरणा का स्रोत मल्लिका को घोषित करता है। उसे यह जानकर विस्मय होता है कि धनाभाव में भी मल्लिका किस प्रकार उसकी काव्य-कृतियों को उपलब्ध कर उनका अध्ययन करती रही है। मल्लिका द्वारा संकलित पृष्ठों को वह महाकाव्य की संज्ञा देते हुए अपने अन्तर्द्वन्द्व को बड़े मार्मिक शब्दों में अभिव्यक्त करता है।

नाटक का अभिनय विविध संस्थाओं द्वारा सन् १९५८ से आज तक लगातार होता आ रहा है। -

आस्तीन का सांप (सन् १९६३, पृ० ८५), ले० सतीश डे, प्र० भारतीय कला निकेतन चन्दौसी, पात्र पु० ७, स्त्री ४, अंक नहीं, दृश्य ३।
घटना स्थल नेफा, लद्दाख, भारत, चीन आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक में भारत पर चीन के आकस्मिक आक्रमण का वर्णन है, वह चीन जो हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा लगाता था। ऐसा नारा लगानेवाला धोखेबाज देश चीन, अचानक भारत पर आक्रमण कर आस्तीन का सांप बन जाता है। इस युद्ध में नेफा के वीरतामय कबायली जीवन का चित्रण किया गया है।

आहुति (सन् १९३८, पृ० १२७), ले० पुरुषोत्तम महादेव, सिनेमेटोग्राफर, प्र० नवरस कार्यालय, इन्दौर शहर, पात्र पु० १०, स्त्री ५, अंक ४, दृश्य ५, ४, ४, ५।
घटना-स्थल शराबखाना, पूंजीपति का महल, पुलिस-दफ्तर।

इस सामाजिक नाटिका में महात्मा गांधी के उच्चादर्शों तथा सत्य-अहिंसा के सिद्धांत को अभिव्यक्त किया गया है।

श्यामलाल, मोहन को अर्थलोभ के जाल में फंसाकर उसकी शालीन, शिक्षिता बहिन सुमति से विवाह की योजना बनाता है। सुमति की मां अन्नपूर्णा स्वर्गीय पति की इच्छानुसार सुमति का हाथ मि० विश्राम को देना चाहती है, लेकिन श्यामलाल इस काम में विघ्न डालता है। वह जालसाजी से सुमति की मां को जहर दिलवा देता है, मि० बसन्त के द्वारा मोहन से बैंक के रुपयों का गबन कराता है। मोहन घबराकर आत्महत्या करना चाहता है। भाई का भला चाहने वाली बहिन मि० श्यामलाल के समक्ष रुपयों से मजबूर होकर घुटने टेक देती है। श्याम उससे विवाह करने का वचन लेता है, लेकिन सुमति उस शराबी के साथ विवाह नहीं करना चाहती। कलह बढ़ता है। वह सुमति को गोली मार देता है। तभी पुलिस आकर मां को जहर देने में तथा सुमति के खून के अपराध में श्यामलाल को गिरफ्तार करती है। इस प्रकार आधुनिक समाज का चित्रण एवं स्त्री के महान् त्याग की अनुगूंज से नाटिका अनुप्राणित है।

आहुति (सन १९४० पृ० ९२), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० हिन्दी भवन जालन्धर और इलाहाबाद, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ६, ६, ५।
घटना स्थल नेलहारणोगढ की बावली, जगल-दिल्ली सल्तनत, छाछागढ का राजभवन, रणथम्भोर का राजमहल, रणक्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक में अलाउद्दीन की पराजय, राजपूत स्त्रियों का जौहर और हम्मीर की आहुति दिखाई गई हैं।

नाटक का नायक मीर महिमा प्रथम तो दिल्ली के सेनापति मीर गभरू का भाई तथा बाद में रणथम्भोर के महाराव हम्मीरसिंह का मित्र हो जाता है। इसमें हम्मीर अलाउद्दीन के कोप-पात्र मुसलमान मीर महिमा को शरण देता है। अलाउद्दीन हम्मीर के पास मीरमहिमा को लौटाने के लिए पत्र लिखता है। हम्मीर शरणागत मीर महिमा और राजपूती आन की रक्षा में सर्वस्व न्योछावर करने को प्रस्तुत होता है, जिससे अलाउद्दीन रणथम्भोर के घमंड को चकनाचूर करने की धमकी देता है। इससे संघर्ष विकसित होता

है। राजपूत साहस के साथ युद्ध करते हैं। हम्मीर मीर महिमा को सेनापति बनाकर उसके साथ राजकुमार जय-विजय को रण-थम्भौर गढ़ के मुख्य द्वार पर अन्य राजपूत सैनिकों के साथ भेजता है। दोनों राजकुमारों के साथ मीर महिमा दुश्मनों से अंधाधुंध युद्ध करता हुए वीरगति को प्राप्त होता है। तत्पश्चात् हम्मीर अन्य राजपूतों के साथ युद्ध में जाते हैं। भयंकर युद्ध होता है जिसमें हम्मीर की जीत होती है। किन्तु दु:खद घटना यह होती है कि अलाउद्दीन को रण से भागते देखकर राजपूत सैनिक शत्रु के झण्डे अपने हाथ में निशान-रूप में लेते हैं। राजपूत स्त्रियां दुश्मन के झंडे को देखकर जौहर की ज्वाला में अपने को समर्पित कर देती हैं। संघर्ष का अन्त अलाउद्दीन की पराजय, स्त्रियों के जौहर तथा हम्मीर की आहुति से होता है।

आहुति (सन् १६५०, पृ० १६७), ले० . लाल चन्द्र बिस्मिल ; प्र० : पृथ्वी थियेटर, बम्बई; पात्र : पु० १७, स्त्री ५; अंक : ३, दृश्य नहीं।

इस सामाजिक नाटक में देश-विभाजन की करुण कथा प्रस्तुत की गई है। जिस प्रकार अनेकों असहाय स्त्रियां इस विभीषिका की हव्य बनी। उसी का स्पष्ट चित्रण किया गया है। बाबू रामकृष्ण की पत्नी मृत्यु के पश्चात् एक अबोध बालिका पीछे छोड़ जाती है। पुत्री जानकी के युवा होने पर उसका सम्बन्ध रायसाहब के पुत्र राम के साथ तय हो जाता है, परन्तु इस बीच ही देश-विभाजन होता है तथा उस अबोध युवती का अपहरण हो जाता है। कुछ समय पश्चात् शफी की कृपा से वह अपहृत युवती उसके पिता को मिल जाती है परन्तु रायसाहब उससे अपने पुत्र का विवाह नहीं होने देते। पुत्र की वचन-बद्धता को देख उसे पैतृक सम्पत्ति इत्यादि के अधिकार से च्युत कर देते हैं। जानकी के मन में ग्लानि होती है और वह अपने प्राणों की आहुति कर देती है।

इ

इन्कलाब (सन् १९६२, पृ० ५८), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री १; अंक : २, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : मिल, घर, सभा, जलूस।

इस सामाजिक नाटक में मिल-मालिकों और मजदूरों का साहचर्य दिखाया गया है। मिल में हड़ताल होती है। गद्दार मजदूर केशव मिल-मालिक के इशारे पर हड़ताल तोड़ने का फैसला करता है। मिल-मालिक का लड़का महेश उसका विरोध करता है। महेश मजदूरों को जोश देकर १२ दिन तक लगातार केशव के गुट से मिलकर मिल पर हमला करता है। महेश केशव को गोली से मार देता है। रायसाहब अपने बेटे को दंड से बचाने के लिए बहुत प्रयत्न करते हैं। अन्त में रायसाहब पर दया करके केशव सभी अपराध अपने ऊपर लेकर उनकी प्रतिष्ठा रखता है। केशव के इस फैसले से रायसाहब के दिल में मजदूरों के प्रति सदैव के लिए सहानुभूति पैदा हो जाती है।

इंगलैंडेश्वरी और भारत जननी (सन् १८७८), ले० : धनंजय भट्ट; पात्र : पु० रहित, स्त्री २। *घटना-स्थल* : इंगलैंड, भारत, रंगमंच।

इस दो-पात्री संवाद-नाट्य में भारत माता तथा विक्टोरिया के कथोपकथन के माध्यम से भारत में फैली स्वार्थपूर्ण अर्थ-शोषण की प्रक्रिया का चित्रण है। इस समय भारत में अकाल की स्थिति होती है। विक्टोरिया, भारत-जननी के पास आकर उसकी पीड़ा के प्रति अपनी अतिशयोक्तिपूर्ण उक्तियों को प्रस्तुत करती हुई उसे कृतज्ञ होने का उपदेश देती है। किन्तु भारत-जननी वस्तुस्थिति को उसके समक्ष रखती हुई उसे झिड़की देती है। इस झिड़की का इंगलैंडेश्वरी

पर कोई प्रभाव नहीं पडता है। वह भारत-जननी से अपने मूर्ख सपूतों को अंग्रेजों की भेदभाव की नीति से अलग रखने का आदेश देकर, बिना किसी प्रत्युत्तर और परिणाम की आशा के रगमच से चली जाती है।

इन्दर-सभा उर्फ गुल्फामो सब्जपरी (सन् १८६८, पृ० ७१), ले० सैयद आगा हसन अमानत, प्र० वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई, अक २, दृश्य नहीं।
घटना-स्थल इन्द्रपुरी, महल, बगीचा, सिंहल-द्वीप।

इस गीत-नाट्य में सब्जपरी और शाहजादा गुलफाम के प्रणय का चित्रण है। नाटक में सब्जपरी मानव-लोक की सैर करने आती है और शाहजादा गुल्फाम पर मुग्ध होकर उसे अपनी अगूठी पहना कर अपने धाम को वापस हो जाती है। इन्दर के अपने शाही तख्त पर विराजमान होते ही पुखराज, नीलम, लाल और सब्जपरियाँ क्रमश आकर नृत्य करती है। सब्जपरी के गायन के साथ इन्दर सो जाते हैं। सब्जपरी इशारे से काला देव को पुकार कर उसे सिंहल द्वीप के शाहजादे गुल्फाम को लाने का आदेश देती है। काला देव शाहजादे को छपरघट के साथ सोता हुआ ले आता है। सब्जपरी उसे जगाकर छिप जाती है। वह अजनबी स्थान में अपने को देख भयभीत होता है। सब्जपरी के प्रकट होने पर शाहजादा डर जाता है। परी शाहजादे से अपना प्रेम प्रकट करती है। वह शाहजादे को प्रसन्न करने के लिए तिलस्म के महल को ताली बजाकर बाग में बदलती है और बाग में स्वय एक उडते तख्ते पर सवार होकर उडना आदि चमत्कार दिखाती है।

इन्द्र धनुष (सन् १९६७), ले० डा० विनय, प्र० सजीव प्रकाशन, मेरठ, पात्र पु० ४, स्त्री २, अक-रहित, दृश्य ३।
घटना स्थल चित्रकार का कमरा।

इस सामाजिक नाटक मे एक चित्रकार का अन्तर्द्वन्द्व है, जो जीवन के महत्त्वपूर्ण सत्य को अपने चित्त मे उतारना चाहता है। कलाकार के अन्तर्मन का सत्य ही कला के धरातल पर समाज की गति और उन्नति मे अपना योग दिया करता है। समाज के जन-जीवन की झाकी गाधारी एव द्रौपदी के चित्रो द्वारा चित्रित की गई है। नाटककार के मतानुसार 'इन्द्र धनुष' रूपक मे "मैने अपने देश की विभिन्न इकाइयो को विभिन्न रगो के समान मानकर उनकी अभिन्नता उसी रूप मे प्रतिपादित की है जैसे इन्द्र-धनुष के रगो की अभिन्नता है।"

इन्दुमती (सन् १९७५), धूप के धान मे सकलित, ले० गिरिजाकुमार माथुर, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, *अक-दृश्य-रहित*, *वर्तिपयस्वर*, रेडियो *गीतिनाट्य शैली* पर।

इस गीतिनाट्य के कथानक का आधार रघुवश मे दी हुई इन्दुमती के स्वयवर की कथा है। इन्दुमती के स्वयवर के अवसर पर देश-देश के महाराजा आते हैं। इन्दुमती की सखी सुनन्दा स्वयवर में आये हुए अतिथियो का परिचय और विशेषता बताती जाती है। इन्दुमती वरमाला को लिए आगे बढती जाती है। अन्तत वह किसी भी राजा की विशेषताओ पर ध्यान दिए बगैर ही अज को वरमाला पहना देती है। इसमे नाटककार ने इन्दुमती के वार्तालाप के माध्यम से अपनी आधुनिक धारणा प्रस्तुत की है।

इन्द्र-विजय (सन् १९६१, पृ० ६४), ले० अनिरुद्ध यदुनन्दन मिश्र 'स्नेह-सलिल', प्र० श्री गगापुस्तक मन्दिर, पटना, पात्र पु० ६, स्त्री १, अक ३, दृश्य ४, ५, २।
घटना-स्थल सुरलोक, असुरलोक, इन्द्र-सभा आदि।

यह पौराणिक नाटक है। इसमे देवासुर-सग्राम की कथा है। इस सग्राम में देवताओ के राजा इन्द्र को असुरो पर विजय प्राप्त करने के लिए महत्त्वपूर्ण घटनाओ को उद्धृत किया गया है।

इन्सान और शैतान (सन् १९००, पृ० ७५), ले० सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक ३, दृश्य नहीं है।
घटना स्थल नेफा, लद्दाख, गाँव, नगर।

इस ऐतिहासिक नाटक में नेफा के कबायली, मोनपाओं और भारतीय सिपाहियों की वीरता दिखाई गई है। भीखू दादा और गंगावती दोनों मिलकर देश की रक्षा करते हैं, किन्तु निर्दयी चीनी सैनिक अपनी काली करतूतों से बाज नहीं आते और अचानक भारत पर आक्रमण कर देते हैं। फिर भी ये लोग अपना सर्वस्व निछावर कर देश को प्राणपण से बचाने का दृढ़ संकल्प करते हैं।

इन्सान भगवान पैसा (सन् १९६८, पृ० ८४), ले० : सतीश डे; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली; पात्र : पु० १०, स्त्री ३; *अंक* : २, *दृश्य* : १, १।
घटना-स्थल : घर, अदालत, मद्यपान गृह, कमरा।

इस सामाजिक नाटक में इन्सान, भगवान् और पैसा में से सबसे बड़ा कौन है ? इस प्रश्न के समाधान का प्रयास किया गया है। चन्द्रप्रकाश वकील ईमानदारी से रहकर ईश्वर की भक्ति करता है। वह झूठे केस नहीं लड़ता है। उसका जवान भाई सत्यप्रकाश, बहिन शारदा और सती पत्नी आशा अत्यन्त विपन्न स्थिति में निर्वाह करते हैं। इसी दुखी दशा में आशा दुर्घटना-ग्रस्त हो जाती है। प्रकाश वकील होकर भी पैसे की कमी के कारण डाक्टर नहीं बुला पाता। यह घटना प्रकाश को बदल डालती है और वह झूठे केसों की वकालत कर धनी बन जाता है। बड़ा भाई सत्यप्रकाश उसे झूठे केस करने से मना करता है किन्तु वह नहीं मानता, जिससे सत्यप्रकाश ईमानदारी और ईश्वर-भक्ति को सम्मान देकर अपने बेईमान भाई को छोड़ जाता है। वकील शराबी हो जाता है। वह निर्मला से शादी करना चाहता है। किन्तु निर्मला उसे कोढ़ी समझ त्याग देती है। उस अवसर पर बहिन शारदा अपने सद्भाव से उसे मार्ग पर लाती है। इस तरह नाटककार ने बेईमानी से कमाये हुए धन को बुराइयों का कारण बताया है। यह नाटक फाइन आर्ट्स सैण्टर द्वारा दिल्ली में प्रथम बार अभिनीत हो चुका है।

इन्सानियत की राह पर (सन् १९००, पृ० ६४), ले० : रंक अहियापुरी; प्र० : भारत पुस्तक भण्डार, जालन्धर शहर; पात्र : पु० ४, स्त्री १; *अंक* : ३, *दृश्य* : नहीं।

इस सामाजिक नाटक में देश में व्याप्त काले कारनामों का खुला चित्र दिखाया गया है। नवाब और शंकरदेव क्रमश: पाकिस्तान एवं भारत के स्मगलर हैं। शंकरदेव महमूद की मदद से अनाथालय की एक सुन्दर युवती नीला को रुपये के लोभ में नवाब के हाथ बेच देता है, किन्तु वह अपनी इज्जत बचाने के लिए कृत-संकल्प रहती है। नवाब के अब्बा की मदद से वह नवाब के नापाक हाथों से बचती है। इधर शंकर देव का विरोध उसका पुत्र असलम उर्फ रवि करता है। शंकरदेव धोखेबाज महमूद की हत्या करने का प्रयास करता है। रवि पुलिस से मिलकर सब का भण्डाफोड़ कर देता है। सभी देशद्रोही पकड़े जाते हैं। फिर नवाब के अब्बा नीला और रवि का विवाह कर देते हैं।

इन्साफ (पृ० १०५), ले० : पं० शिवदत्त मिश्र; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड संस बुकसेलर, वाराणसी; पात्र : पु० ५, स्त्री, २; *अंक नहीं, दृश्य* : ११,

इस सामाजिक नाटक में झूठे पापों का निराकरण इन्साफ और प्रायश्चित्त द्वारा प्रदर्शित किया गया है। ईश्वर-भक्ति में अटल विश्वास रखते हुए इसे मोक्ष-प्राप्ति का साधन माना गया है। चन्द्रावती एक रूपवती युवती है जो शोभाराम से प्रेम करना चाहती है, लेकिन शोभाराम उसके प्रेम को ठुकरा देते हैं। चन्द्रावती, दारुण की सहायता से राजा प्रयागदास के पास जाकर शोभाराम पर प्रेम करने का झूठा आरोप लगाती है। किन्तु प्रयागदास को शोभाराम की महिमा तथा यथार्थता का पता चल जाता है। चन्द्रकान्ता भी अपने पाप का प्रायश्चित्त करती हुई वन में जाकर कठिन तपस्या करती है। प्रयागदास भी अपनी मुक्ति के लिए शोभाराम के दर्शन करना चाहते हैं। शिकारी की मदद से प्रयागदास दारुण शिकारी तथा चन्द्रावती को शोभाराम के दर्शन होते हैं। शोभाराम जी सब को

ओंकार शब्द की महत्ता का ज्ञान कराते हैं। तथा इसे ही मोक्ष का मार्ग बताते हैं।

इन्साफ अथवा कपटी भाई (सन् १९६४, पृ० १३६), ले० सत्यनारायण 'सत्य', प्र० श्रीकृष्ण पुस्तकालय कानपुर, पात्र पु० १२, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ८, ६, ६।
घटना-स्थल गंगा-तट, रास्ता, जंगल, दरबार, बाग, कैदखाना, मौनी घाटी, महल।

इस सामाजिक नाटक में स्वार्थी भाई की कपटपूर्ण नीतियों को दिखाने का प्रयास है। मदनसिंह अपने बड़े भाई उदयसिंह से धोखा और अन्याय करके स्वयं राज्य का अधिकारी बन जाता है। इस कार्य में उसकी स्त्री प्रभावती नकाबपोश रूप में खूब मदद करती है। किन्तु अन्त में उसके कार्यों का भण्डाफोड़ हो जाता है और वह बार-बार पश्चात्ताप करता है।

इत्तहाद अथवा स्वर्ण युग (सन् १९३६, पृ० ७८), ले० सीताराम वर्मा, प्र० मजदूर बुक डिपो, छपरा, पात्र पु० १२, स्त्री ३, अंक के स्थान पर ३ खंड, दृश्य २६।
घटना-स्थल ग्राम पाठशाला, घर, राजमहल जंगल-गली, अन्तःपुर।

इस ऐतिहासिक नाटक में हिन्दू-मुस्लिम एकता की समस्या प्रस्तुत की गयी है। इसके नायक विजयपुर के महाराज विक्रम के गुरु कादिर बख्श राज्य के प्रबंधक हैं। उनकी कन्या सलीमा हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का सदा गान गाती है। एक दिन नवाबगंज का नवाबजादा इनायतउल्लाह सलीमा को देख लेता है। इसी बीच नदी में डूबती हुई सलीमा को विक्रम-पुत्र क्षत्रसाल जान पर खेलकर बचा लेता है। विजयपुर के गली-चौराहे पर माधो पांडे और रहमू तथा राजकुमार छत्रसाल और नवाबजादा हिन्दू-मुस्लिम एकता के विषय पर चर्चा करते हैं।

दूसरे खंड में धीर जंगल में खड्गसिंह और रमजान डकैत राजा और नवाब से दंडित होने के कारण जंगल में छिपकर डाका डालते हैं। इधर इनायतुल्लाह सलीमा से शादी करके जंगल के पास से निकलते हैं। डाकू उन्हें पकड़कर लूटने और विजयपुर में हिन्दू-मुसल- मानों में लड़ाई कराने की योजना बनाते हैं। रमजान सलीमा का अपहरण करके उसे पीटता है, पर खड्गसिंह सलीमा की रक्षा के लिए रमजान से युद्ध करता है। रमजान उसके कलेजे में तलवार घुमाना चाहता है तब तक सलीमा रमजान के पैर में छुरा घोंप देती है। जानकीनाथ छात्रों के साथ डाकुओं से युद्ध करते हैं। रमजान हारकर जंगल में भाग जाता है।

इल्जाम (सन् १९६१, पृ० ६०), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली-६, पात्र पु० ६, स्त्री २, अंक २, दृश्य नहीं।
घटना-स्थल घर, पुलिस-स्टेशन, कमरा, आदि।

इस सामाजिक नाटक में निर्दोष व्यक्ति पर झूठा इल्जाम और उसका समाधान दिखाया गया है। बाबू श्यामलाल अपने छोटे भाई रमेश की शादी तय करने के लिए दीनानाथ के घर जाते हैं, किन्तु वहाँ दीनानाथ की लाश पड़ी देखकर वे भाग पड़ते हैं। पुलिस उनके पीछे लग जाती है। बे-गुनाह श्यामलाल पुलिस की नजरों में कातिल बन जाता है। किन्तु सी०आई० डी० इंस्पेक्टर को अजय की बहन शशि द्वारा असली कातिल का पता लगाने में सहायता मिलती है। अन्त में इंस्पेक्टर ही असली कातिल सिद्ध होता है। निर्दोष श्यामलाल अपने भाई रमेश और शशि की शादी उसके भाई अजय के सामने कर देता है।

इश्क व आशिकी का गजीना मारुफबे नई तरज गुलरू जरीना (सन् १९०४), ले० मिर्जा नजीर बेग, 'नजीर', प्र० दी न्यू स्टार आफ इण्डिया थियेट्रिकल कम्पनी आफ आगरा।
घटना-स्थल चीन, जंगल, घर।

इस सामाजिक नाटक में प्रेमी द्वारा अपनी प्रेमिका को पाने के लिए किये गये प्रयासों का वर्णन है। वजीर साबिर का पुत्र गुलरू चीन की राजकुमारी जरीना से प्रेम करता है। गुलरू और जरीना को अपना प्रेम प्राप्त करने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता है। संघर्ष के उतार-चढ़ाव में कथा का विकास होता

है। अन्त में गुलरु शहजादी जरीना को प्राप्त कर दाम्पत्य-बंधन में बंध जाता है।

ईशान वर्मन नाटक (सन् १९३७, पृ० १६४), ले० : राव राजा श्यामविहारी मिश्र और राय बहादुर शुकदेव बिहारी मिश्र; प्र० : रामनारायणलाल, पब्लिशर एवं बुकसेलर, इलाहाबाद, पात्र : पु० १८, स्त्री ५, अंक : ३, दृश्य : ८, ७, ७। घटना-स्थल : मालवा, वाराणसी, ग्वालियर, उज्जयिनी, कश्मीर, पाटलीपुत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक में कान्यकुब्ज-नरेश महाराजा ईशान वर्मन की कथा है। इसके साथ ही साथ भारत पर हूण-आक्रमण, उनकी विजय और अन्त में पराजय का विवरण है।

ईश्वर-भक्ति (पृ० ५७), ले० : न्यादरसिंह 'बेचैन'; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ८, ५, ३।

इस धार्मिक नाटक में भक्त रविदास के भक्तिपूर्ण जीवन की प्रमुख घटनाओं का सरस एवं चमत्कारपूर्ण चित्रण हुआ है। संत रविदास काशी में राघुमल नामक चर्मकार के यहाँ पैदा हुए। वे हमेशा साधु-संतों की सेवा में तनमन से तत्पर रहते थे। एक दिन अपने कपड़े, जूते आदि सब बेचकर वे भूख से तड़पते साधु को भोजन कराते हैं। उनके माता-पिता अपने बेटे को धन कमाने की जगह साधु-संतों की सेवा में धन लुटाते देख उन्हें स्त्री-सहित घर से निकाल देते हैं। रविदास काशी में ही एक झोंपड़ी में जूते सिलकर अपना जीवन-यापन करने लगे। रामानन्द से गुरु-दीक्षा लेकर भगवान् के भजन में मस्त हो गये। नीच-कुलोत्पन्न रविदास को ठाकुर जी की पूजा करते देख ब्राह्मण लोग उनसे चिढ़ने लगे। वे सब राणाजी से इसकी शिकायत करते हैं। रविदास अपने भक्ति-प्रताप से ठाकुरजी को गंगा के तल पर खड़ा कर देते हैं। संत रविदास अपने वचनामृत से भक्त-जनों को कथा सुनाते हैं। नगरसेठ भी एक दिन कथा सुनने जा पहुँचा। कथा-समाप्ति पर चमड़ा भिगोने वाली कठौती के जल में सब को चरणामृत बाँटा गया। नगरसेठ चरणामृत लेकर घृणा से पीछे फेंक देता है जिसके छींटे उसके कुर्ते पर पड़ जाते हैं। नगरसेठ इन गन्दे कपड़ों को धोबी को धोने के लिए देता है। चरणामृत के छींटे के पड़े दाग को धोते समय उसका जल धोबी के मुँह में चले जाने से उसे ज्ञान प्राप्त हो जाता है। नगरसेठ को यह मालूम होने पर वह फिर कथा सुनने रविदास के पास जाता है। अब की बार कथा-समाप्ति पर चरणामृत नहीं बाँटा जाता। नगरसेठ पछताता घर लौट आता है। इसी तरह से रविदास-महिमा की अन्य कथाएं भी नाटक में दी गई हैं। अंत में रविदास भगवान् कृष्ण का भजन-कीर्तन करते हुए उन्हीं में लीन हो जाते हैं।

ईश्वर भक्ति—बम्बई की न्यूअल्फ्रेड नाटक, मण्डली के स्टेज का नाटक (सन् १९३१, पृ० १८०), ले० : राधेश्याम कविरत्न; प्र० : राधेश्याम पुस्तकालय बरेली; पात्र : पु० २५, स्त्री ६; अंक : ३, दृश्य : ८, ६, ६। घटना-स्थल : बैकुण्ठ एवं ऋषिआश्रम।

इस धार्मिक नाटक में ईश्वर-नाम की महिमा दिखाते हुए पूर्ण आस्तिक और पूर्ण नास्तिक लोगों की विवेचना की गई है। नास्तिक लोग ईश्वरभक्त को ढकोसला कहते हुए भक्ति की हंसी उड़ाते हैं। एक नास्तिक पात्र मणिकान्त कहता है—"हरि? कैसा हरि? किसका हरि? कहां का हरि? हरि! हरि!! कोरी कल्पना का नाम तुमने हरि रख छोड़ा है—

> यह ढोंग ढोंगियों का खाने के वास्ते।
> हरि नाम गढ़ा खुद को पुजाने के वास्ते।
> उसका न है अस्तित्व न कुछ उसका पता।।"

आगे चलकर यही मणिकान्त आस्तिक बनकर ईश्वरभक्ति में विश्वास करने लगता है। ईश्वर-भक्ति बड़े-बड़े नास्तिकों को भी अपने से प्रभावित कर उनको सुमार्गों पर लाती है।

ईश्वरी न्याय (सन् १९२५, पृ० १८७), ले० : रामदास गौड़; प्र० : गंगा पुस्तक माला; लखनऊ।

इस सामाजिक नाटक में अछूतों के प्रति भेदभाव दिखाते हुए उनके उद्धार का मार्ग

दिखाया गया है। प० महादेव एक पाठशाला का संचालन करते हैं। एक दिन उन की पाठशाला में एक ब्राह्मण बालक के साथ एक डोम का लड़का भी जा बैठता है। प० महादेव को यह सहन नहीं होता कि वह अछूत भी ब्राह्मणों के समान अपना जीवन व्यतीत करे। वे उस डोम बालक को पृथ्वी पर बैठने का आदेश देते हैं। इसे सुन वह बालक बड़ी विनम्रता से कहता है—"गुरुजी पृथ्वी गीली है, मिट्टी लग जाएगी और शीत भी लगेगा।" इस पर गुरुजी क्रुद्ध हो उसे डाटते हैं। फिर बालक को विवश हो जमीन पर बैठना पड़ता है। अन्त में उसकी प्रखर बुद्धि से सबको ईश्वरीय समानता का ज्ञान होता है। गांधीजी के हरिजन उद्धार का आदर्श रखकर नाटक का समापन होता है।

उ

उगना (सन् १९६३, पृ० ६०), ले० प० ईशनाथ झा, प्र० दरभंगा प्रेस, कम्पनी (प्राइवेट) लिमिटेड, दरभंगा, पात्र पु० ११, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य १५।
घटना-स्थल कैलास, विद्यापति का घर, राजमार्ग, विद्यापति का अन्तःपुर, विश्वेश्वरी देवी का मंदिर।

इस ऐतिहासिक मैथिली नाटक में महादेव जी का विद्यापति के यहा नौकरी करने की किंवदन्ति वर्णित है। एक दिन महादेव गौरी से अपने एक भक्त की सेवा करने की बात कहते हैं। अन्तत गौरी अप्रसन्न हो उन्हें जाने की आज्ञा देती हैं। महादेव अन्त्यज के वेश में विद्यापति के यहा नौकरी की याचना करते हैं। विद्यापति का नौकर रमा उसे तिरस्कृत करता है, किन्तु संयोग से विद्यापति की दृष्टि उस पर पड़ती है। उसकी हीनावस्था को देखकर विद्यापति अपने यहाँ उसे रख लेते हैं। इधर शिव की अनुपस्थिति में गौरी विरहाग्नि से जलने लगती है। एक दिन विद्यापति उगना के साथ अपने आश्रयदाता के यहा प्रस्थान करते हैं। रास्ते में प्यास से व्याकुल हो वे उगना को पानी लाने के लिए भेजते हैं। थोड़ी दूर जाकर उगना वेषधारी महादेव अपनी जटा से गंगाजल निचोड़कर विद्यापति को देते हैं। गंगाजल के संबंध में विद्यापति उगना से जिज्ञासा करते हैं जो सारी बातें उन्हें बता देता है। इसके साथ ही उगना यह भी चेतावनी दे देता है कि यदि आप मेरे वास्तविक स्वरूप को प्रकट कर देंगे तो मैं उसी क्षण अदृश्य हो जाऊंगा। एक दिन उनकी पत्नी उगना के व्यवहार से अप्रसन्न होकर मारने के लिए दौड़ती हैं। इसी बीच विद्यापति उपस्थित होकर शिव पर साक्षात् प्रहार होने की बात कहते हैं। विद्यापति के मुँह से यह बात निकलते ही शिव अन्तर्धान हो जाते हैं और विद्यापति पश्चात्ताप करने लगते हैं।

उजाला (सन् १९५८, पृ० ७२), ले० कृष्ण बहादुर चन्द्रा, प्र० किताब महल, इलाहाबाद, पात्र पु० १०, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल बरामदे से लगा आँगन, कोहबर, बरामदा, पर कमरे में ताला।

इस सामाजिक नाटक में शिक्षित हरिजन युवक ग्रामीण लोगों के अंधविश्वास को दूर कर उनको उज्ज्वल मार्ग दिखाता है। ग्रामीण किसान रामू अपनी पत्नी सुंदरिया से प्राचीन परम्परा का निर्वाह करते हुए शिक्षा पर ध्यान देने के लिए कहता है। वह अपने पुत्र बदलू को भी शिक्षित करना चाहता है।

छेदी गाव के लोगों को महामारी से बचाने के लिए सबको टीका लगवाता है। अंधविश्वास के कारण रामू की पुत्रवधू की आखें माता की बीमारी के कारण सदा के लिए खराब हो जाती है। बदलू रिबई और मगू की कुसंगति में पड़कर आवारा बन जाता

है पर वह छेदी के समझाने पर माता-पिता की सेवा में जुट जाता है। गांव के चौधरी छेदी के बुद्धिबल की प्रशंसा करते हैं। छेदी के संपर्क में आने पर ही रामू और सुन्दरिया अपनी अंधी पुत्र-वधू को पुनः घर लाते हैं।

बदलू को मलेरिया ज्वर हो जाता है। किन्तु पंडित और औघड़ उस पर ग्रह और ब्रह्म का प्रकोप बताते हैं। सुन्दरिया इन सबका कारण राधिका (बदलू की पत्नी) को बताती है। इसी बीच छेदी डॉक्टर लाता है। दवा के प्रभाव से बदलू स्वस्थ हो जाता है। अब रिवई को भी अपने कुकृत्यों पर पश्चात्ताप होता है। अंत में सब लोग छेदी के चरित्र की प्रशंसा करते हैं और उसके बताए रास्ते पर चलने का संकल्प करते हैं।

उड़ान (सन् १६५०, पृ० ८०), ले० : उपेन्द्रनाथ अश्क; प्र० : नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद; पात्र : पु० ४, स्त्री १; अंक : ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : घर का कमरा।

इस सामाजिक नाटक में पुरुषों की दुर्बलताओं पर प्रकाश डालते हुए यथार्थ के चित्रांकन से नारी-समस्या का निदान खोजने का प्रयास किया गया है। इसका प्रमुख पात्र मदन पुरुष की अधिकार-भावना से परिपूर्ण है, वह पत्नी के दासी-रूप में विश्वास करने वाला है। शंकर आदिम पुरुष की उच्छृंखल वासना से तृप्त रहता है जो कि शिकारी पहले और मनुष्य बाद में है। रमेश में भावुक कवि का साहसहीन हृदय है, जो बंधनों में पड़ी नारी को मुक्त नहीं कर पाता है अपितु उसकी पूजा करता है। वाणी-जैसी पात्राओं में नारीत्व के लिए विद्रोह उबलता है। वह पूंजीवादी युग की सामान्य आधुनिक नारी है और माया में दाम्पत्य संबंधों का नया आधार ढूंढने के लिए उसकी नारीत्व भावना का विरोध करती है।

उत्तरकाण्ड (सन् १८८८, पृ० ७८), ले० : दामोदर, शास्त्री सप्रे; प्र० : खंग विकास प्रेस, बाकीपुर; पटना; पात्र : पु० १०, स्त्री ८; अंक के स्थान पर सूचक दृश्यों के नाम हैं जैसे राजभवन।
घटना-स्थल : राजभवन, दरबार।

इस पौराणिक नाटक का कथानक रामचरित-मानस पर आधारित है। इसमें राम द्वारा सीता को धोबी के कहने पर वनवास देना तथा उनकी अग्नि-परीक्षा लेने की इच्छा शामिल है। वाल्मीकि और लवकुश की कथा का भी वर्णन पाया जाता है।

उत्तर जय (सन् १६६५, पृ० ५५), ले० : नरेन्द्र शर्मा; प्र० : रामचन्द एण्ड कम्पनी, दरियागंज, दिल्ली; पात्र : पु० १३, स्त्री ३; *अंक-दृश्य के स्थान पर १२ शीर्षक दिये गये हैं।*
घटना-स्थल : कुरुक्षेत्र, पांडवों का राजप्रासाद आदि।

इस पौराणिक नाटक में महाभारत समाप्त होने के बाद की स्थिति का वर्णन है। महारथी अश्वत्थामा के युद्ध-जनित महारोष और रोष-जनित पराक्रम के कारण युद्ध की अंतिम रात्रि, पांचाल-शिविर के लिए संहार की काल-रात्रि बन जाती है। अश्वत्थामा कौरव-पक्ष का अन्तिम सेनापति होता है। उसे ही उत्तरा के गर्भ को पीड़ित करने का दोषी ठहराया जाता है। अश्वत्थामा में एक बड़ा दोष है कि वह पीड़ा-भीरु है। कृष्ण के शाप से उसे पांच सहस्र वर्ष अति पीड़ा भोगनी पड़ती है। वह चिरंजीव है। महाभारत के अन्तिम युद्ध में अश्वत्थामा के अमोघ पराक्रम से उसे शिव का अंशावतार माना जाता है। पांच पांडवों को पांच तत्त्वों का प्रतीक माना गया है। देववाहिनी पृथा ही पृथ्वी माता है। अभिमन्यु को चन्द्रमा का अवतार कहा गया है। युधिष्ठिर पृथ्वी पर धर्मराज्य स्थापित करने के लिए तथा अपनी सिद्धि और मुक्ति के हेतु पार्थिव स्तर पर उतरकर कर्मयोग की साधना करते हैं।

अश्वत्थामा और युधिष्ठिर दोनों अपनी नियति से बाध्य होते हैं, जिससे अश्वत्थामा को क्षात्र-धर्म का परित्याग और युधिष्ठिर को जन्मजात स्वधर्म ग्रहण करना पड़ता है। इसमें शकुनि तथा दुर्योधन-जैसे प्रतिपक्षी का वर्णन है। शकुनि को द्वापर और दुर्योधन को कलि का अवतार बताया

जाता है। दुर्योधन की ओर से युद्ध का सदेश लेकर युधिष्ठिर के शिविर जाने वाले शकुनि-पुत्र उलूक की घटना की पुनरावृत्ति की गई है। काव्य-नाट्य के उत्तरार्ध मे विदुर के देह-त्याग का भी प्रसग आया है।

उत्तरप्रियदर्शी (सन् १९६७, पृ० ६६), ले० अज्ञेय, प्र० अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री, अक दृश्य-रहित।
घटना-स्थल दीवार, देवतरु, मदिर-कलश की सांकेतिक झलक, स्तम्भ के ऊपर पद्म-पीठ।

इस गीति-नाट्य मे अशोक के बाल्यकाल से प्रारम्भ कर उसके मुक्ति-स्रोत के वरण तक की घटनाए वर्णित हैं। बालक अशोक पूर्व जन्म मे अपने प्रागण मे खेलता है, उसी समय तथागत स्वय पधारते हैं और अशोक उनके भिक्षापात्र मे एक मुट्ठी धूल डाल देता है। शाक्य मुनि उसे पुण्य फल के रूप मे भारत को विशाल राज्य देते हैं। कलिंग को जीतकर अशोक राजेश्वर एव प्रियदर्शी परमेश्वर बन जाता है। किन्तु युद्ध-क्षेत्र मे आहतो के चीत्कार एव गृनको की विभीषिका से उसका चित्त उद्विग्न हो जाता है। राजगद्दी पर बैठते ही अशोक परम क्रूर व्यक्तियो द्वारा नरक स्थान का निर्माण करा चुका है। अशोक स्वत अपने राज्य के उसी निर्मित नरक मे प्रविष्ट होता है। वहा का स्वामी घोर नरक की विकराल स्थिति का वर्णन करता है। अशोक एक भिक्षु के साथ जब नरक मे पहुँचता है तो उस संतप्त नरक मे शान्ति शीतलता आ जाती है और नरक मे रहने वाले प्राणी प्रसन्न हो जाते हैं। नरक मिट जाता है। भिक्षु वहा के निवासियो को पारमिता करुणा का स्मरण दिलाता है। प्रियदर्शी कहता है—

कल्मष कलक धुल गया आह!
युद्धान्त यहा यात्रान्त हुआ।

नमो बुद्धाय की गूज के साथ नाटक समाप्त होता है। प्रथम आरगाणा—दिल्ली मे त्रिवेणी कला सगम के खुले रगमच पर ६ मई १९६७ को निष्पन्न।

उत्तरशती (सन् १९५१), ले० सुमित्रानन्दन पत, भारती भडार, इलाहाबाद; रजत शिखर में प्रकाशित।

इस गीति-नाटक के कथानक का आधार १९५० से २,००० तक के पचास वर्षों मे अध्यात्म-चेतना-सम्पन्न विश्व का निर्माण है। यह कल्पना आशा के माध्यम से व्यक्त हुई है। इस नाटक का प्रारम्भ आधारभूत समय के पूर्व, ५० वर्षों के भीतर हुए दो महायुद्धो की भूमिका से हुआ है। इसके चित्रण मे यथार्थता और मानव-हृदय को स्पर्श करने वाली समर्थता है। कवि आने वाले पचास वर्षों के लिए आशा व्यक्त करता है कि उनमे नव सस्कृति, नव वसन्त, नव सौदर्य का विकास हो सकेगा। इसमे भावी जीवन और समाज की रूपरेखा को चित्रित करते हुए उस समय की सस्कृति क्या होनी चाहिए, आर्थिक व्यवस्था किस तरह की रहनी चाहिए, आदि सकेत व्यक्त किए हैं।

उत्तरा और अभिमन्यु (सन् १९३०), ले० मगल प्रसाद विश्वकर्मा, 'रेणुका' मे सग्रहीत, पात्र पु० १, स्त्री १, अक-दृश्य-रहित।
घटना स्थल प्रकोष्ठ।

यह गीति-नाट्य महाभारत के एक सक्षिप्त प्रसग पर आधारित है। इसमे युद्ध के लिए प्रस्थान करते समय अभिमन्यु के हृदय मे उठो कर्त्तव्य एव भावना के सघर्ष का प्रतिपादन किया गया है। इस सघर्ष मे एक ओर कौरवो को पराजित करना अभिमन्यु का कर्त्तव्य है, किन्तु दूसरी ओर पत्नी का स्नेह इसमे अवरोध उत्पन्न करता है। इसीलिए वह उत्तरा के प्रेम का आदर करते हुए रुकने मे असमर्थता व्यक्त करता है। एक दृश्य मे वर्णित उत्तरा और अभिमन्यु के जीवन के इस महत्त्वपूर्ण क्षण मे कवि ने भावना पर कर्त्तव्य की विजय प्रदर्शित की है।

उत्सर्ग (वि० २०१४, पृ० ६०), ले० चतुरसेन शास्त्री, प्र० गगा-ग्रथागार, ३६, गौतम बुद्ध मार्ग, लखनऊ, पात्र पु० ६, स्त्री ६, अक ४, दृश्य ३, ३, २, ३।

घटना-स्थल : चित्तौड़ का विशाल महल, युद्ध-भूमि।

इस ऐतिहासिक नाटक में चित्तौड़ के राजपूतों की गौरव-गाथा वर्णित है। चित्तौड़ को अपने राज्य में मिलाने के उद्देश्य से सम्राट् अकबर उस पर विशाल वाहिनी लेकर चढ़ाई करता है। मुगलों की विशाल वाहिनी को देखकर राजपूत भी धैर्य से मुकाबला करते हैं। राजमहलों में राजपूत-रानियां भी अपनी आन-मान पर दृढ़ हो जाती हैं। जयमल का वध होने पर भी पेरवसिंह युद्ध समाप्त नहीं करता। मुगलों की सेनाएं लगातार चित्तौड़ की ओर बढ़ रही हैं, राजपूतों की सेना वीरता से लड़ते हुए कट-कट कर गिर पड़ी है। राजपूतों की वीर रानियां, मुकुमार राजकुमारियां सभी अपने सतीत्व एवं गौरव की रक्षा के लिए चिता में कूदकर प्राणों का उत्सर्ग करती हैं।

उदार प्रेम (सन् १९३० पृ० १३०), ले० : ठाकुर रामपटल सिंह 'मधुर'; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ६, ८, ६।
घटना-स्थल : मानसिंह का शिविर, तिलोत्तमा का शयन-कक्ष।

इस ऐतिहासिक नाटक में नारी की महान् उदारता दिखाई गई है जो अपने प्राणों की परवाह न करके प्रेमी की रक्षा करती है। मुगल सेनापति मानसिंह का पुत्र जगतसिंह एक बार जंगल में सैनिकों के साथ भटक जाता है। जंगल के एक मन्दिर में उसकी भेंट मंदारगढ़ के राजा वीरेन्द्रसिंह की पुत्री तिलोत्तमा व पत्नी विमला से होती है। जगतसिंह व तिलोत्तमा एक-दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। वे १५वें दिन मिलने का वायदा करते हैं। इसी बीच जगतसिंह उड़ीसा के नवाब कतलूखां की सेना को बुरी तरह परास्त करता है। १५वें दिन मंदारगढ़ के किले में विमला उसे तिलोत्तमा से मिलाने ले जाती है। परन्तु कतलूखां का सेनापति उसमान खां धोखे से किले में वीरेन्द्रसिंह, जगतसिंह, विमला व तिलोत्तमा को गिरफ्तार करवा लेता है। कतलूखां वीरेन्द्रसिंह को कत्ल करवा देता है। वहां विमला कतलूखां को धोखे से मार देती है। कतलूखां की बेटी आयशा जगतसिंह की जान बचाती है। मरते समय कतलूखां उड़ीसा को मुगलों के अधीन कर देता है। जगतसिंह व तिलोत्तमा मिल जाते हैं। विमला सती हो जाती है। आयशा भी आरम्भ से ही जगतसिंह से प्रेम करती है परन्तु तिलोत्तमा के लिए वह अपना प्रेम बलिदान कर देती है।

उद्धव पचीठि नाटिका (अर्थात् हास्य और शृंगार रस से पूरित गीति-रूपक : गोपियों का चरित्र (सन् १८८७ ई०, पृ० ४३), ले० : विद्याधर त्रिपाठी; प्र० : रामचंद्र खजांची; पात्र : पु० ३, स्त्री २; तथा अन्य गोपियां। अंक : ४, दृश्य-रहित,

इस पौराणिक नाटक में गोपियों की कृष्ण के साथ रासलीला दिखाई गई है। यह व्रज-भाषा में रचित नाटिका है। इसमें शृंगार एवं हास्य रस का अच्छा समावेश है, गोप-गोपिकाओं के वन-विचरण, कृष्ण के साथ गोचारण एवं आपसी नोक-झोंक का अच्छा वर्णन है। तीसरे एवं चौथे अंक में उद्धव-गोपी संवाद है।

उद्धार (सन् १९४६, पृ० १३६), ले० : *हरिकृष्ण प्रेमी*; प्र० : *आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली*; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; *अंक* : ३, *दृश्य* : ८, ६, ८।
घटना-स्थल : मेवाड़।

इस सांस्कृतिक नाटक में देश-भक्ति को सभी सांसारिक वस्तुओं से श्रेष्ठ बताया गया है। इस नाटक का नायक मेवाड़ को स्वाधीन कराता है।

हमीर महाराणा अजयसिंह के बड़े भाई अरिसिंह का पुत्र होते हुए भी गांव में साधारण जीवन व्यतीत करता है। उसकी वीरता के कारण अजयसिंह अपने पुत्र सुजानसिंह को युवराज न बना कर हमीर को युवराज बनाते हैं। सुजानसिंह पहले विलासी होता है, वह हमीर की वीरता और निःस्वार्थ देश-प्रेम को देखकर स्वयं बदल जाता है। हमीर कमला नाम की विधवा से विवाह करता है। दोनों दम्पती मिलकर मेवाड़ के उद्धार का

सकल्प करते हैं। सुजानसिंह इनकी सहायता करता है। इस तरह तीनो के प्रयत्नो से मेवाड का उद्धार होता है।

उन्नति कहा से होगी (सन् १६१५, पृ०२६), ले० कृष्णानन्द जोशी, प्र० हरिदास एण्ड कम्पनी, कलकत्ता, पात्र पु० १०, स्त्री २, अक-रहित, दृश्य ६।
घटना-स्थल गाव, नगर, समिति-स्थल।

इस सामाजिक नाटक मे ग्रामीण स्त्रियो के निकम्मेपन को दिखाने का प्रयास है। ग्रामीण लोग मिलकर ग्राम-सुधार के लिए 'जाति-सुधारिणी समिति' का निर्माण करते हैं जिसका उद्देश्य गाव के बन्धुओ को बुला कर सस्कृत तथा अग्रेजी की उच्च शिक्षा देना, बोडिंग बन जाने तक घर मे भोजन की व्यवस्था करना, स्त्रियो के पहनावे मे सुधार करना, बाल विवाह की प्रथा को हटाना इत्यादि है। किन्तु घर की स्त्रिया किसी भी अतिथि को एक समय का भोजन भी बनाकर नही खिला सकती। अम्बिका प्रसाद उपाध्याय की पत्नी लक्ष्मी अपने समधी मगलप्रसाद चौबे का आदर के स्थान पर अनादर करती है। बीमारी का बहाना कर भोजन नही बनाती तथा अपशकुन के बहाने सोने के लिए पलग भी नही भिजवाती। गाव से आये रघुनाथ को भोजन इत्यादि के लिये कष्ट उठाना पडता है। 'जाति-सुधारिणी-समिति' के अन्य सदस्यों के यहा भी यही हाल है। अन्त मे समिति के सदस्य मिलकर इस 'जाति-सुधारिणी समिति' को समाप्त करने का निश्चय करते हैं। अम्बिका प्रसाद उपाध्याय का चाचा गगाप्रसाद जब यह सुनता है तो कहता है,—"भानजे को सूखी रोटी, दामाद को खीर" ऐसी दशा मे "उन्नति कहा से होगी!"

उन्मुक्त (सन् १६४०, पृ० १६०), ले० सियारामशरण गुप्त, प्र० साहित्य सदन, चिरगाव (झासी), पात्र पु० ५, स्त्री १, अक दृश्य-रहित।
घटना-स्थल रणक्षेत्र, मृदुलालय, शिविर, एकात सचालन शिखर, शयन-कक्ष।

इस पौराणिक गीति-नाट्य मे हिसा के वातावरण को प्रस्तुत करते हुए हिंसा और अहिंसा का सघर्ष चित्रित किया है। साम्राज्यवाद की भावना से प्रेरित होकर शक्तिशाली लौहद्वीप कोमल कुसुमद्वीप पर आक्रमण करता है। पुष्पदन्त द्वीप-वाहिनी का सेनापति है। मृदुला पुष्पदन्त की बहन और एक व्यस्त समाज-सेविका है। गुणधर मृदुला का पति है, अहिंसा मे विश्वास करने वाला सेनापति वक्त आने पर घोर हिंसा से उत्तर देता है। गुणधर भी पूर्ण अहिंसा मे विश्वास करता है। पुष्पदन्त एक ऐसा अस्त्र बनवाता है जिसमे भस्मक किरण होती है। दुर्भाग्य से वह विमान दुश्मनो के हाथो मे पड जाता है। उस भस्मक किरण का व्यवहार कुसुमद्वीप पर ही होता है। इस तरह अपने ही अस्त्र से स्वय कुसुमद्वीप पराजित होता है। कवि के अनुसार यह वास्तव मे प्रतिहिंसा की पराजय है। इस तरह युद्ध के परिवेश मे दैवी और आसुरी शक्तियो के सघर्ष को प्रदर्शित किया गया है।

उर्मिला (सन् १६६०, पृ० ६२), ले० पृथ्वीनाथ शर्मा, प्र० आत्माराम एण्ड सस कश्मीरी-गेट, दिल्ली-६, पात्र पु० ८, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ४,४,४।
घटना स्थल अयोध्या, जगल, चित्रकूट।

इस पौराणिक नाटक मे लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला की हृदय विदारक कथा को नाटकीय रूप देने का पूरा प्रयास है। महाराज दशरथ अपने ज्येष्ठ पुत्र रामचन्द्र का राज्याभिषेक करना चाहते है। लेकिन कैकेई महाराज से अपने पूर्व प्रदत्त दो वर मागती है, जिसमे पहला वर तो रामचन्द्र को चौदह वर्ष का वनवास तथा दूसरा भरत को राजगद्दी है। पिता की आज्ञा से भगवान्, सीता और लक्ष्मण वन जाने की तैयारी करते हैं। जब यह खबर उर्मिला को मिलती है, तो वह अपने पति लक्ष्मण की प्रतीक्षा करने लगती है। उसका स्वाभिमान कहता है कि उसके पति अवश्य मिलने आयेंगे। इसी स्वाभिमान के कारण ही वह वन जाते समय अपने पति के अतिम दर्शन भी नहीं कर

पाती है। इधर भगवान् राम के विरह में व्याकुल महाराज दशरथ की मृत्यु हो जाती है। उर्मिला भी लक्ष्मण के न आने का तर्क-वितर्क अपने मन में करती है, जिसमें वह वास्तविकता को पाती है। इधर भरत अयोध्या की बड़ी सेना तथा गुरु वशिष्ठ और सभी माताओं के साथ भगवान् से मिलने के लिए चित्रकूट जाते हैं। साथ में उर्मिला भी अपनी शंकाओं का निवारण करने तथा अपने प्रिय पति के दर्शन के लिए जाती है। चित्रकूट में सभी आपस में मिलते हैं और भगवान् से वापस आने के लिए कहते हैं। लेकिन रामचन्द्र जी वापस नहीं आते। उर्मिला भी लक्ष्मण से मिलकर अपनी शंकाओं का समाधान करने में पूर्ण सफलता प्राप्त करती है जिससे उसकी आत्मा को बड़ी शान्ति मिलती है। वह लक्ष्मण के साथ वन में रहने के लिए कहती है। किन्तु पुनः अपने आप अपना आग्रह त्याग देती है। वहां से सभी वापस अयोध्या आते हैं। भरत भी भगवान् रामचन्द्र की खड़ाऊँ लाकर राज-सिंहासन पर रख स्वयं वन में तपस्या करने लग जाते हैं।

इधर उर्मिला चित्रकूट से वापस आने पर अपने पति लक्ष्मण की याद करके बार-बार बड़ी दुखी होती है। लेकिन अपने दिल को सान्त्वना देकर चौदह वर्ष की अवधि पूरा करती है। अपना स्वाभिमान पूरा करने के लिए लक्ष्मण के वापस आने पर पुनः उनसे मिलने के लिए नहीं जाती। अन्त में लक्ष्मण जी स्वयं आकर उर्मिला से मिल करके उसके स्वाभिमान की रक्षा करते हैं। उर्मिला लक्ष्मण से अपने प्रति उदासीनता न रखने का वचन प्राप्त करती है। लक्ष्मण हमेशा उर्मिला को अपने साथ रखने को वचन-बद्ध होते हैं। लेकिन एक बार भगवान् रामचन्द्र के द्वारपाल का काम करते हुए लक्ष्मण से त्रुटि हो जाती है। उस समय भगवान् किसी विशेष कार्य के लिए ब्रह्मा के दूत तापस से बात कर रहे होते हैं जिसमें किसी को अन्दर जाने की आज्ञा नहीं होती। सहसा दुर्वासा ऋषि आ जाते हैं और वे भगवान् से मिलने के लिए लक्ष्मण से कहते हैं। लक्ष्मण के अनुरोध करने पर दुर्वासा सारे परिवार को नष्ट करने का शाप देना चाहते हैं। लक्ष्मण राम के आदेश का उल्लंघन कर अन्दर जाकर मुनि का संदेश देते हैं। लक्ष्मण की अवहेलना से भगवान् राम लक्ष्मण को त्याग देते हैं जिससे लक्ष्मण पुनः उर्मिला को बिना बताये ही वन को चले जाते हैं। उर्मिला को पुनः बड़ी आत्मग्लानि होती है और वह पति-वियोग से मूर्च्छित हो जाती है।

उर्वशी (सन् १९५८), ले०: जानकी वल्लभ शास्त्री; प्र०: लोक भारती, इलाहाबाद; पात्र: पु० ३, स्त्री ५; (पाषाणी में संकलित)।
घटना-स्थल: स्वर्ग और पृथ्वी।

इस गीति-नाट्य में उर्वशी-पुरुरवा के प्रणय के द्वारा द्वन्द्वात्मक प्रेम की समस्या प्रतिपादित की गई है। स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी पृथ्वी के राजा पुरुरवा से प्रेम करती है और फलस्वरूप अभिशप्त होकर सामान्य मानुषी के रूप में दुःखान्त जीवन व्यतीत करती है। यहां नाटककार ने भरत द्वारा भोगवादिनी (दरबारी) कन्या का तिरस्कार किया है। उनके अनुसार कन्या की सार्थकता देव-अर्चना में है।

उर्वशी (सन् १९६१, पृ० १६१), ले०: रामधारी सिंह 'दिनकर'; प्र०: उदयाचल, पटना; *अंक ५, दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल: प्रतिष्ठानपुर का कानन, राज-भवन, पर्वत, आश्रम।

इस पौराणिक गीतिनाट्य में पुरुरवा और उर्वशी की प्रणय-कथा अलौकिक तथा लौकिक पात्रों के वार्तालापों द्वारा प्रदर्शित की गई है। स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी पृथ्वी के राजा पुरुरवा से इस शर्त पर प्रेम-व्यापार करती है कि जब उसे पुत्र-प्राप्ति हो जाएगी तो वह पुनः स्वर्गलोक को चली जाएगी। अपनी परिणीता रानी औशीनरी को छोड़कर पुरुरवा उर्वशी के साथ गंधमादन-विहार चला जाता है। पुरुरवा और उर्वशी दोनों प्रेम-प्रलाप करते-करते समाधि-रूप में पहुँच जाते हैं। प्रेमालाप के फलस्वरूप उर्वशी मातृ-

स्वरूपा हो जाती है। उर्वशी के पुत्र का जन्म च्यवन ऋषि के आश्रम में होता है। भरत-शाप के कारण उर्वशी के भीतर मातृत्व और पत्नीत्व के बीच विरोध उत्पन्न होता है। वह अपने नवजात पुत्र को सुकन्या की गोद में छोड़कर स्वयं पुरुरवा के राजमहल में लौट आती है। इसके पश्चात् उर्वशी के पुत्र आयु को लेकर सुकन्या स्वयं राजभवन में आती है। सुकन्या को आते देख उर्वशी स्वर्गलोक चली जाती है। इसमें पुरुरवा सनातन नर का प्रतीक है और उर्वशी सनातन नारी का।

उर्वशी नाटक (सन् १९१०, पृ० १८२), ले० लक्ष्मी प्रसाद, प्र० शारदा प्रेस, छपरा, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ५, दृश्य ३, ४, ५, ४, ८।
घटना-स्थल हिमालय।

इस पौराणिक नाटक में पुरुरवा और उर्वशी की प्रेम-कथा वर्णित है।

स्वर्ग-अप्सरा उर्वशी मृत्युलोक को स्वर्गलोक से अधिक आनन्ददायक समझती है। वह अपने प्रेम-व्यापार के लिए पृथ्वी पर आती है। पुरुरवा भी नरसिंह से उर्वशी का सौंदर्य सुनकर रीझ जाता है। शृंगार-उपवन में विरहिणी उर्वशी का मधुर संगीत सुनकर नरसिंह मुग्ध होता है। वह पुरुरवा को उर्वशी का दर्शन कराता है। पुरुरवा उसका पता पूछते हुए कहता है—

> यह किस जन्म के पुण्य का फल हुआ ?
> मुझे जो आज तेरा दर्शन हुआ !

अब पुरुरवा प्रेम में पागल होकर घर से निकल जाता है। लौटने पर पुरुरवा की माता पुत्र से कहती है कि अनेक राजपुत्रियाँ तुमसे ब्याह को लालायित हैं। पुरुरवा कहता है कि मैं किसी को पहले ही विवाह के लिए चयन कर चुका हूँ। इससे माता इला को बहुत कष्ट होता है, पर वह सहन कर लेती है। फिर उर्वशी और पुरुरवा का विवाह सम्पन्न होता है। उर्वशी अपने शाप के विषय में चर्चा करते हुए कहती है—जब इन्द्र पर रावण का आक्रमण हुआ, मेघनाद सेनापति होकर लड़ने आया। शिव-वरदान के बल से वह इन्द्र को सर्वांग बाँधकर मृत्युलोक में ले चला। इन्द्राणी व्याकुल होकर पति-मुक्ति के लिए ब्रह्म-व्रत करने लगी। उसमें चन्द्रक पुष्प की आवश्यकता हुई। वह पुष्प ज्ञाती मुनि के आश्रम में था। मैं जब उसका चयन करने गई तो दुर्वासा ने शाप दिया—

> "है कहाँ की चाण्डालिन तू।
> हमारे प्रिय सुमन पर हाथ
> कर्कश क्यों उठाती है ?
> करे अब प्रेम जिससे तू,
> वह अन्तर्धान हो जावे ॥"

मेरे साथी विश्वा और स्वाद के अनुनय-विनय पर उन्होंने शाप को हल्का कर दिया और बोले—

> "बनोगे मेघ जब तुम लोग,
> तब प्रियतम मिले इसका
> अलक्षित तुम हुए क्षण भर
> चली आकाश में फिर यह ॥"

अन्त में उर्वशी और पुरुरवा का विवाह हो जाता है। शाप-वश उर्वशी आकाश में उड़ जाती है। पुरुरवा उसके वियोग में व्याकुल होकर राजपाट छोड़ देता है और नदी, पर्वत, वन छानता हुआ रोदन करता फिरता है।

इधर हस्तिनापुर में राजमाता इला वैदुर्य, रिपुदमन, नरसिंह आदि सभासदों से पुत्र को ढूंढने का आग्रह करती है। पुरुरवा एक बालायोगी के समीप हिमराजित पर्वत पर विलाप कर रहा है—

> कोई यत्न मुझे अब बता दे,
> उर्वशी चन्द्रमुख को दिखा दे !

बालायोगी क्रुद्ध होकर पुरुरवा को शाप देना चाहता है। उसी समय भारद्वाज मुनि, ऋषिकुमार और स्वागानंद पहुँच जाते हैं जिससे बालायोगी शाप नहीं दे पाते। भारद्वाज के आदेश से राजा पुत्रेष्टि यज्ञ करते हैं। निरन्तर सात वर्षों तक यज्ञ-हवन होने से उनको संगम मणि प्राप्त होती है जिसके प्रताप से पुरुरवा को उर्वशी पुत्र आयु के सहित प्राप्त होती है।

उलझन (सन् १९५४, पृ० ९६), ले० रमेश मेहता, प्र० चौ० बलवतराय एण्ड क०, दिल्ली,

पात्र : पु० ८, स्त्री २; अंक : ३ दृश्य-रहित। घटना-स्थल : घर कमरा, दुकान।

इस सामाजिक नाटक में यथार्थता को छिपाने से अनेक उलझनों का उत्पन्न होना दिखाया गया है। नारायणसिंह गढ़वाली बनारसीदास के दफ्तर में चपरासी का काम करता है। बनारसी फिजूलखर्ची के कारण कर्जदार बन जाता है। इतवार की एक सुबह कुछ महाजन रुपये वसूल करने बनारसी के घर आते हैं। नारायणसिंह बड़ी मुश्किल से महाजनों को समझाकर विदा करता है। बनारसी की मकान-मालकिन उसे अपना पति बनाना चाहती है, लेकिन बनारसी अपने को शादीशुदा बताता है। वह जानकी को पिलपिला आम कहता है। जिसे जानकी सुन लेती है और उसे धमकी दे जाती है कि शाम तक अपनी बीवी को ले आना, नहीं तो सारा सामान बाहर फिंकवा दूँगी। बनारसी और नारायण दोनों मालकिन की बात से परेशान होते हैं।

अचानक शकुन्तला बनारसी के एक दोस्त की चिट्ठी लेकर आती है और साथ ही अपने रहने के लिए जगह माँगती है। प्राणनाथ बीमे के काम से कुछ दिन रहने के लिए बनारसी के पास आता है। बनारसी बीवी की समस्या हल करने के लिए दोनों को रहने की जगह दे देता है। वह रौब से नारायण को भेजकर जानकी से कहलवाता है कि बाबू की बीवी अपने भाई के साथ आ गई है। उधर प्रभुदयाल बनारसी की शादी की बात पक्की करने उसके पास आते हैं। उन्हें वहाँ अजीब तमाशे का पता जानकी द्वारा लग जाता है। बनारसी बाप से क्षमा माँगता है। प्रभुदयाल बेटे को पान लेने भेज देते हैं। नानकचन्द भतीजी की शादी बनारसी के साथ करने के लिए प्रभुदयाल सीताराम और पठान से बैठकर परामर्श करते हैं। बनारसी इन तीनों को घर में बैठा देख उल्टे पाँव लौट जाता है। शाम को आने पर उसे पिताजी के मथुरा लौट जाने की खबर मिलती है। बनारसी शकुन्तला के साथ अपनी शादी करना चाहता है। लेकिन प्राण शकुन्तला को अपनी पत्नी बनाता है। दोनों बनारसी को बेवकूफ बनाते हैं। प्राण के कहने पर बनारसी शरमाते हुए जानकी के पाँव पड़ता है। उसी बीच प्रभुदयाल यह कहते हुए घुसते हैं "बाप को रौब दिखाओ, शादी नहीं करता; साथ मिले तो चरण चूमो।" सन् ५४ में दिल्ली में अभिनीत।

उलटफेर (सन् १९५२, पृ० १३८), ले० : गंगाप्रसाद श्रीवास्तव; प्र० : हिन्दी पुस्तक एजेंसी, ज्ञानवापी, बनारस; पात्र : पु० १३, स्त्री २; अंक : ३, दृश्य : ५, ७, ८। *घटना-स्थल* : वकील का दफ्तर, मजिस्ट्रेट का इजलास, बाग और खेत, कचहरी, मकान, पुतलीघर।

नाटक का नायक लालचन्द उच्च विचारों का आदर्शवादी वकील है। किन्तु उसका क्लर्क हिकमतलाल धूर्त व्यक्ति है जो ग्रामीण व्यक्तियों को कचहरी में अनुचित ढंग से ठगता रहता है। दूसरे दृश्य में अर्दली फिरासत अली डिप्टी कलक्टर के दौरे के सिलसिले में एक बैलगाड़ी के स्थान पर बीस को पकड़वाकर उनसे पैसा वसूल करता है। तीसरे दृश्य में डिप्टी कलक्टर मिर्जा अलल-टप्पू और उसकी बेगम गुलनार का वार्तालाप हँसी का दृश्य उपस्थित करता है। गुलनार डिप्टी साहब के खब्त मिजाज से परेशान है। चौथे दृश्य में एक ग्रामीण मुवक्किल ओरई और गाँव के पटवारी का वार्तालाप है। पाँचवें दृश्य में डिप्टी कलक्टर को आलसी, जल्दबाज और अपने कुटिल रीडर का अन्धानुसरण करता हुआ दिखाया गया है। कचहरी में गवाहों की विलक्षण गवाहियों से हँसी का रमणीक वातावरण निर्मित किया गया है। रीडर की चालाकी से अलल-टप्पू कानून की पकड़ में आ जाते हैं और डिप्टी कलक्टरी से हटा दिए जाते हैं। वे वकील बन जाते हैं, पर वकालत भी नहीं चलती।

द्वितीय अंक में एक आनरेरी मजिस्ट्रेट पंडित धोंधावसन्त पारिवारिक मुकदमेबाजी में निर्धन हो जाते हैं। पर शान वही पुरानी है। उनमें और असेसर बम्बू बख्शसिंह में एक-दूसरे को नीचा दिखाने का वार्तालाप बड़े हास्यपूर्ण ढंग से चलता है। यह दृश्य इस नाटक

मे सबसे अधिक रोचक है, ग्रामीण भाषा का हास्य यहाँ निखर उठता है। घोघा-बसन्त का मुख्तारे-आम मुख्तार हुसेन दिलफरेब नामक वेश्या के घर जाता है और हीरे-जवाहरात का एक बक्स उसके यहाँ छोड आता है। अरदली फितरत अली लोकई के डाकू-दल को बुलाकर सरिश्तेदार खुराफात बेग की हत्या कराना चाहता है। पर कुछ ऐसा चक्र चलता है कि डाकू खुराफात बेग के स्थान पर फितरत अली की हत्या कर देते है। मुख्तार हुसेन के द्वारा खुराफात बेग की नाक काट ली जाती है। डाकुओं ने उसे दिलफरेब समझा था, क्योंकि वह स्त्री-वेश मे था। डाकू लूट के माल का बँटवारा करने के लिए एक पटवारी बुलाते हैं, पर उसी पर सन्देह करके उसको पीटकर अधमरा बना छोड देते है। सप्तम दृश्य मे विभिन्न वकीलों की उन्नति और अवनति दिखाई गई है।

चतुर्थ अक मे कचहरी की विभिन्न स्थितियों को हास्यमय बनाया गया है। इसमे सेशन जज, वकील, मुवक्किल, गवाह पर हास्य-व्यग्य किया गया है। घोघा-बसन्त और बन्दू बख्शसिंह का मुकदमा हास्य से भरा हुआ है। अन्तिम दृश्य लालचन्द नामक मुसिफ के कोर्ट का है, जो वकील से मुसिफ बना है। इसमे दिलफरेब एक धनी जमींदार के ऊपर इसलिए मुकदमा चला रही है कि उसने विवाहोत्सव मे उसका नाच कराकर पैसा नही दिया। पता चलता है कि अललटप्पू दोनो तरफ से पैसा लेकर वकालत कर रहा है। इसी समय खुराफात बेग पुलिस-अधिकारियो से किसी प्रकार बचकर दिलफरेब को मार डालता है। दूसरी बार वह मुख्तार हुसेन की हत्या करता है। नाटक के अन्तिम दृश्य मे अजीज अली वकालत छोडकर मिल चलाता है और मित्रो को पार्टी देता है जिसमे सलाहबख्श, लालचन्द, अललटप्पू इत्यादि भाग लेते है और नृत्यगान के साथ नाटक समाप्त होता है।

उषागिनी या सुनहरी जंजीर (सन् १९२५, पृ० २२८), ले० ब्रजनन्दन सहाय, प्र० खड्ग विलास प्रेस, पटना, पात्र पु० १५, स्त्री ९, अक ५, दृश्य ६, ६, ६, ६, ८। घटना-स्थल रगभूमि, अन्त पुर, शृगार-भवन, वनमार्ग, सडक, मठ, दालान, वस्तुओं का अड्डा, राजभवन।

इस पौराणिक नाटक मे उषागिनी के द्वारा एक विशुद्ध अविच्छिन्न निस्वार्थ प्रेम का आदर्श दिखाया गया है। काशी-निवासी चुन्नीलाल व्यापार के लिए कश्मीर जाता है। एक दिन मित्रो के साथ वह एक भोज मे सम्मिलित होता है, पर जी घबडाने से घर की तरफ लौट जाता है। मार्ग भूलने से जगल मे भटक जाता है। वही कुछ लोग एक सन्दूक मिट्टी मे गाडकर चले जाते हैं। चुन्नीलाल उनके जाने के बाद सन्दूक खोलने पर आश्चर्य-चकित हो जाता है—उसमे बन्द की हुई रमणी को वह निकालता है। उषागिनी को उसकी सौतेली मा तथा मामा ने धन के लालच से विष देकर मारने का प्रयत्न किया था। विष खिलाकर सन्दूक मे बन्द कर उसे जगल मे फेंक दिया गया था। यह सब काड मत्री (जो उषागिनी का पिता था) की अनुपस्थिति मे किया गया था। पिता को बेटी की प्राकृतिक मृत्यु की खबर देकर उषागिनी के श्राद्धभोज का आयोजन किया गया था। इधर जगल मे स्वामी अभयानन्द उसे बूटी का रस पिलाकर विषैला प्रभाव दूर करते है। चुन्नीलाल उषागिनी को अपने निवास पर ले आता है। उषागिनी अपने पिता के पास पत्र भेजती है तथा उसकी विमाता अपने कार्य पर पश्चात्ताप होने से सत्य बता देती है जिससे बन्दूमल को सजा होती है और अन्त मे अभयानन्द के प्रयास से चुन्नीलाल अपनी माता तथा बहन से मिलता है। मत्री को अपनी भूल मालूम होती है और चुन्नीलाल तथा उषागिनी का विवाह हो जाता है। बुलाकी तथा सुशीला के आख्यान मे दृढ दाम्पत्य प्रेम का परिचय दिया गया है। मनोरमा और कन्हैया की पाप-कहानी का उल्लेख करते हुए अधिक सुख के लिए चिरन्तन दुख मोल लेना प्रदर्शित किया गया है। मनोरमा का सम्पूर्ण जीवन पापकर्म का प्रायश्चित्त तथा अपने दुष्कर्म पर अनुताप करते हुए बीत जाता है।

ऊ

ऊषा-अनिरुद्ध (सन् १९२५, पृ० ८७), ले० : मुशी आरजू साहब; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० २, स्त्री ७; अंक : ३, दृश्य : ६, ६, ५ ।
घटना-स्थल : कैलाश ।

इस पौराणिक नाटक में ऊषा-अनिरुद्ध-प्रेम दिखाया गया है। ऊषा और अनिरुद्ध का आपस में प्रेम है। दोनों एक-दूसरे से विवाह करना चाहते हैं, किन्तु ऊषा का पिता बाणासुर इस विवाह का विरोध करता है। ऊषा और अनिरुद्ध जिस कक्ष में हैं, उसे बाणासुर घेर लेता है और अनिरुद्ध पर प्रहार करना चाहता है। यह अपनी कन्या को भी दुर्वचन कहता है। ऊषा कहती है "चाहे मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कीजिए, पर मेरे जीवनाधार को क्षमा प्रदान कीजिए।" बाणासुर अनिरुद्ध को बन्दी बनाता है तो ऊषा भी उसी कारागार में जाती है। बाणासुर और अनिरुद्ध में युद्ध ठनता है। उसी समय कृष्ण और प्रद्युम्न वहां पहुँच जाते हैं। प्रद्युम्न और बाणासुर का युद्ध होता है जिसमें बाणासुर पकड़ा जाता है। बाणासुर क्षमायाचना करता है।

ऊषा-अनिरुद्ध (सन् १९३२, पृ० १४४), ले० : राधेश्याम कथावाचक; पात्र : पु० २५, स्त्री १४; अंक : ३, दृश्य : ७, ८, ३ ।
घटना-स्थल : रंग-भूमि, राजभवन, अंतःपुर, राजमहल, वन-मार्ग, जंगल ।

इस पौराणिक नाटक में ऊषा-अनिरुद्ध का विशुद्ध प्रेम प्रदर्शित है।

बाणासुर की कन्या ऊषा अनिरुद्ध पर आकृष्ट हो उससे विवाह करना चाहती है। दोनों के प्रेम-मार्ग में अनेक बाधाएं आती हैं। किन्तु सखी चित्रलेखा की सहायता से ऊषा अपने प्रियतम से मिलने में सफल हो जाती है। भेद खुलने पर बाण उसका विरोध करता है और अनिरुद्ध को बन्दी बनाता है। सूचना पाकर कृष्ण यादवसेना लेकर आक्रमण करते हैं। अंत में शिवजी मध्यस्थता कर उस झगड़े को शांत कर देते हैं। वे वैष्णव और शैव मतांतर के कारण यह भेद-भाव अच्छा नहीं समझते। शिवजी ऊषा-अनिरुद्ध का विवाह करा दोनों में मित्रता स्थापित कराते हैं।

ऊषा-अनिरुद्ध (सन् १९२५, पृ० ६४), ले० : श्रीकृष्ण हसरत; प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस; पात्र : पु० ६, स्त्री ५; अंक : ३, दृश्य : ८, ६, ३ ।
घटना-स्थल : राजभवन, वनमार्ग, जंगल, मंत्रणाभवन, कारागार ।

इस पौराणिक नाटक में ऊषा-अनिरुद्ध के द्वारा सच्चे प्रेम को दिखाया गया है। बाणासुर भगवान् शिव का परम भक्त है। उसकी पुत्री ऊषा भगवान् कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध से प्रेम करती है। चित्रलेखा ऊषा की सखी है जो चित्रकला में बड़ी निपुण है। वह चित्र बनाकर ऊषा को अनिरुद्ध का दर्शन कराती है। ऊषा अनिरुद्ध के लिए व्याकुल हो जाती है। चित्रलेखा विदूषक की सहायता से अनिरुद्ध को ऊषा से मिलाती है। यह सब प्रेमकथा देखकर बाणासुर क्रुद्ध होता है। वह ऊषा और अनिरुद्ध दोनों को कारागार में बन्द कर देता है। समाचार पाकर श्रीकृष्ण यादवों-सहित आक्रमण करते हैं। युद्ध में अपने को हारता हुआ देखकर बाणासुर शिवजी का ध्यान करता है। भक्त-प्रिय शिव आकर भगवान् कृष्ण से युद्ध करते हैं, जिसमें प्रलय होने की शंका हो जाती है। फिर ब्रह्मा जी प्रकट होकर युद्ध शांत करते हैं। अन्त में सभी देवताओं के समक्ष ऊषा और अनिरुद्ध का विवाह होता है तथा स्वाभिमानी बाणासुर शिव-रूप में भगवान् कृष्ण को प्रणाम करता है।

ऊषा नाटक (सन् १९०६, पृ० १९६), ले० श्रीमत बलवन्तराव भैया, प्र० खेमराज श्रीकृष्णदास, श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई, पात्र पु० १८, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ८, १०, १० ।
घटना-स्थल बाणासुर का दरबार, चित्रलेखा का मन्दिर, द्वारका महल ।

इस पौराणिक नाटक में बाणासुर का स्वाभिमान तथा ऊषा-अनिरुद्ध के स्वच्छन्द प्रेम का वर्णन है ।

बाणासुर भगवान् शकर का परम भक्त है। उसकी भक्ति पर प्रसन्न होकर शकर भगवान् स्वय उसके नगर की रक्षा करते है । बाणासुर की कन्या ऊषा स्वप्न मे श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध को देखकर उसके वियोग मे अयमनस्क-सी रहती है । ऊषा की सखी चित्रलेखा अपनी योग विद्या द्वारा अनिरुद्ध को शैया-सहित ऊषा के राजमहल मे ले आती है । चार मास पश्चात् बाणासुर को ज्ञान होने पर वह अनिरुद्ध को नजरबन्द कर देता है । नारद मुनि द्वारा यह समाचार सुनकर बलराम तथा कृष्ण अपनी सुसगठित सेना द्वारा बाणासुर को परास्त कर उसकी बलबाधा को दूर करते हैं। अनिरुद्ध तथा ऊषा का विधिवत विवाह हो जाता है ।

ऊषाहरण (सन् १९६२, पृ० ५२), ले० हर्षनाथ, प्र० दरभगा प्रेस कम्पनी (प्राइवेट) लि०, दरभगा, पात्र पु० ११, स्त्री ५, अक ५, दृश्य-रहित ।

मैथिल के इस पौराणिक नाटक की कथावस्तु रत्नपाणि के उषाहरण के समान है जिसमे ऊषा-अनिरुद्ध प्रेम वर्णित है । ऊषा अपने हृदय-प्रेमी को प्राप्त करने के लिए गौरी से प्रार्थना करती है । उसके पिता बाणासुर को भी यह वरदान प्राप्त है कि जो उसके अह के प्रतिकूल करेगा, उसे मृत्यु के घाट उतरना पडेगा। चित्रलेखा के अथक प्रयास से ऊषा-अनिरुद्ध मिलन हो जाता है। अनिरुद्ध के नौकर द्वारा बाणासुर को ऊषा-अनिरुद्ध के प्रेम का पता चलता है । वह क्रोधित हो अनिरुद्ध को बदी बनाने का आदेश देता है। अनिरुद्ध को छुडाने के लिए बाणासुर और कृष्ण के बीच युद्ध होता है जिसमे कृष्ण की विजय होती है और वे ऊषा और अनिरुद्ध को घर वापस ले आते हैं ।

ऊषाहरण (सन् १८९१, पृ० ३७), ले० कार्तिक प्रसाद, प्र० हरिप्रकाश यत्रालय, काशी, पात्र पु० ६, स्त्री ८, अक ४, दृश्य ३, ३, ३, ३ ।
घटना-स्थल राजभवन, द्वारिका, मत्रणा-भवन, जगल ।

बाणकन्या ऊषा स्वप्न मे एक पुरुष का दर्शन कर उसके विरह मे उदास रहती है । उसकी सखी चित्रलेखा उसे यदुवशी अनिरुद्ध का चित्र दिखाती है जिसे देख वह प्रसन्न होती है । चित्रलेखा उसको नायक से मिलाने का वचन देती है । उधर अनिरुद्ध भी स्वप्न मे किसी सुदरी का दर्शन कर उस पर वशीभूत हो जाता है। चित्रलेखा अपनी सहेलियो की सहायता से अनिरुद्ध को पलग-सहित उठाकर शून्यमार्ग मे शोणितपुर को जाती है। वहा नायक-नायिका का वाछित मिलन होता है । एक दिन ऊषा की माता ऊषा के साथ किसी पर-पुरुष को देखकर चिंतित होती है । वह इसकी सूचना बाणासुर को देती है। क्रुद्ध बाणासुर अनिरुद्ध को नागपाश द्वारा बदी बना लेता है। नारद मुनि द्वारिका जाकर समाचार देने तथा यदु-सेना की सहायता से ऊषा-सहित उन्हे कारागार से मुक्त करने का आश्वासन देते हैं ।

यह सुनकर कृष्ण बलराम और प्रद्युम्न को शोणितपुर पर चढाई करने का आदेश देते हैं । सेना के प्रस्थान करते ही शोणितपुर मे शिवजी द्वारा बाणासुर को प्रदत्त ध्वज गिर पडता है। प्रद्युम्न के नेतृत्व मे यादव-वाहिनी शोणितपुर को घेर लेती है । सेना-पति को नगर-रक्षा का भार सौंप स्वय शिव-पूजन को जाता है । दोनो सेनाओं मे घोर सग्राम छिडता है। युद्ध मे बाणासुर को व्याकुल देख शिवजी कृष्ण से प्रार्थना कर युद्ध बद करवाते हैं। बाणासुर कृष्ण के चरणो पर गिरकर ऊषा को स्वीकार करने की प्रार्थना करता है। बाणासुर शिव की आज्ञा से ऊषा-अनिरुद्ध-विवाह बडे धूमधाम से सम्पन्न कर देता है ।

ए

एक कंठ विषपायी (सन् १९६३, पृ० १२३), ले० : दुष्यन्त कुमार; प्र० : लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद; पात्र : पु० ६, स्त्री १।
घटना-स्थल : प्रजापति दक्ष का सुसज्जित निजी कक्ष, हिम-मंडित कैलाश पर्वत का शिखर, ब्रह्मा के भवन का कक्ष।

इस गीति-नाट्य में प्राचीन परम्पराओं के खंडन, युद्ध तथा राज्य-लिप्सा आदि आधुनिक समस्याओं को स्पष्ट किया गया है। इसमें प्रजापति दक्ष द्वारा आयोजित यज्ञ में सती के भस्म होने से लेकर शंकर द्वारा देवलोक पर आक्रमण तक की कथा वर्णित है। वीरिणी सती के सम्मान की रक्षा के लिए अपने पति दक्ष से विवाद करती है, परन्तु दक्ष शंकर से नाराज होने के कारण उसे यज्ञ में स्थान नहीं देते। सती सती हो जाती है। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि देवता दक्ष के नगर का निरीक्षण करते हैं जिसको शंकर ने कुपित होकर नष्ट कर डाला है। 'सर्वहत' नामक पात्र के द्वारा इस ध्वंस को स्पष्ट किया गया है। तीसरे दृश्य में शंकर का प्रलाप है और चौथे दृश्य में ब्रह्मा की असहायावस्था का वर्णन है— शंकर के युद्ध से प्रजा त्राहि-त्राहि कर उठती है। अंत में विष्णु युद्ध को शांत कर देते हैं।

एक प्याला (सन् १९२७, पृ० १२४), ले० : मुंशी फक साहब; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, बनारस; पात्र : पु० १२, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ८, ८, ४।
घटना-स्थल : घर, मदिरालय।

इस सामाजिक नाटक में मदिरा-पान के गुण-दोष का विवेचन है। सुरापान कर प्रेमी केशव कहता है "मदिरा आलस्य को हटाती है, आत्मा को प्रफुल्लित करती है और शोक को मिटाती है।" जो लोग मदिरा को दोष-युक्त बताकर उसे छोड़ने का आग्रह करते हैं केशव उनको तर्क देता है, "यदि एक बार विवाहित होकर पत्नी नहीं छूटती, एक बार मिलकर पदवी नहीं छूटती तो फिर मदिरा क्यों छोड़ी जाय! यदि पत्नी, पदवी बुरी नहीं तो मदिरा भी बुरी नहीं। यदि भरी सभा में मात्रा से अधिक न पी जाये।" इस प्रकार नाटककार मदिरा का सीमित सेवन लाभप्रद और असीमित सेवन हानिप्रद बताता है।

एक भगवान् : एक खुदा (सन् १९००, पृ० ८०), ले० : सतीश डे; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली-६; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक : २, दृश्य-रहित।

इस ऐतिहासिक नाटक में हिन्दू-मुस्लिम एकता, देश-प्रेम और आधुनिक विचारों का वर्णन है। शरफुद्दीन प्राचीन विचारों वाला व्यक्ति है। प्रेरणादायक विचार देश-हित के लिए सहायक होते हैं। इसी प्राचीन विचार के समक्ष एक आधुनिक युग का नवयुवक नूरी है जिस पर आधुनिकता का पूरा प्रभाव है। उसकी अन्तश्चेतना में रतना है, वह बराबर समाज को आधुनिक पहलू में देखना चाहता है। नाटककार ने सबका समन्वय कर हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य समस्या को सुलझाने का प्रयास किया है।

इस नाटक का अभिनय भी हो चुका है।

एक भेंट (सन् १९६०, पृ० १०६), ले० : रामाश्रय दीक्षित; प्र० : मंत्री, अखिल भारत सर्व सेवा संघ, राजघाट, काशी; पात्र : १७; अंक : ३, दृश्य : १७, ७, ६।
घटना-स्थल : रंगमंच।

इस सामाजिक नाटक में ग्रामीण युवकों का परिश्रम तथा सहयोग दिखाया गया है।

आजादी के उपलक्ष्य मे ग्रामीण युवक एक सभा का आयोजन करते हैं। ग्राम एक तिरगा लपेटा जाता है। गाव वालो के अनुरोध पर महात्मा गाधी झडा फहराकर सभा का उद्घाटन करते हैं। इस आजादी के उत्सव मे लोग गाधीजी के साथ प्रार्थना गाते हुए भारत माता की तथा महात्मा गाधी की जय जयकार करते हैं। अग्रेज कलक्टर और सुपरिटेण्डेण्ट हिंदुस्तान छोडकर चले जाते है। महात्माजी ग्रामीण शिक्षितो को परिश्रम से काम करने के लिए प्रेरित करते हैं। राजनाथ एक गँवार आदमी है। बेकारी के कारण वह आत्महत्या करना चाहता है। शिक्षित युवक आलोक उसे बचाकर कृषि की शिक्षा दे उसकी बेकारी दूर कर देता है।

आलोक अछूत शिवदीन के बीमार लडके को भोजन देता है तथा अन्य अछूत गरीब लोगो को भी खाने की वस्तुए देता है। अछूत शिवदीन उस भोजन को भेंट-स्वरूप स्वीकार करता है। इस प्रकार परिश्रम द्वारा सभी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

एक मिनट की रानी (सन् १९६१, पृ०३१), लें० रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्र० ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभगा, पात्र पु० ४, स्त्री २, अक ३, दृश्य ३, ४, ३।
घटना-स्थल रणक्षेत्र, कारागार आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक म सिल्यूकस और चन्द्रगुप्त की लडाई का वर्णन है। सिल्यूकस चन्द्रगुप्त को गिरफ्तार करके बन्दीगृह मे डाल देता है जैसे ही वह चन्द्रगुप्त को मारने के लिए कृपाण निकालता है, एक नकाबपोश व्यक्ति आकर चन्द्रगुप्त की रक्षा करता है तथा उसकी बेडिया काटकर मुक्त करता है। सिल्यूकस उसकी बहादुरी से दग रह जाता है। चन्द्रगुप्त चाणक्य की मदद से पुन सिल्यूकस से युद्ध करता है। उसमे सिल्यूकस की हार होती है। वह अपनी बेटी हेलेन का विवाह चन्द्रगुप्त से करना चाहता है। किन्तु चन्द्रगुप्त एक भिखारी की पुत्री प्रेमा के साथ प्रेम करने के कारण उसे मना करता है। प्रेमा दुश्मनो के वार से घायल हो देश-सेवक की पदवी प्राप्त करती है और चन्द्रगुप्त से आग्रह करती है कि वह हेलेन से विवाह करे और उसे प्रेमा ही समझे।

एक रोगी और वैद्य (सन् १८७९), ले० धनजय भट्ट।

इस ऐतिहासिक नाटक मे भारत की आतरिक अव्यवस्था से फैले असन्तोष का कारण बताया गया है। इसमे रोगी के रूप मे हिंदुस्तान और वैद्य के रूप मे अग्रेज शासक को प्रस्तुत किया गया है। हिन्दुस्तान अशान्ति के कारण बीमार पडा हुआ है। अग्रेज वैद्य के रूप मे रोगी से वार्तालाप करता है और उसे स्वस्थ कर देने के लिए लम्बी-लम्बी डींग मारता है। रोगी-हिन्दुस्तान सब समझता है और वह अग्रेज वैद्य को उसका मेहनताना देता हुआ उसे आश्वस्त करता है कि मैं आपकी मधुर वाणी और आश्वासनो से सतुष्ट हुआ हू, किन्तु वस्तुस्थिति कुछ और ही रहती है। इसके साथ भारतीय नेताओ और नागरिको की कायरता के कुपरिणामो का भी सकेत है।

एक रात (सन् १९६६, पृ० ६८), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री १, अक ३।
घटना-स्थल फैक्टरी, मकान।

इस सामाजिक नाटक मे स्वार्थी भाई की धन-लोलुपता तथा क्रूरता दिखायी गयी है। इसमे रायबहादुर शकरदास जी अपने भाई की फैक्टरी मे मैनेजर है, भाई के मरने पर वह उसके एकमात्र पुत्र गजेन्द्र की हत्या कर सारी सम्पत्ति के स्वय मालिक बन जाते हैं। उनके इस अपराध का पता कुन्दन माली को लग जाता है। अत उसे भी रायबहादुर मरवा देते है। फैक्टरी मे वे श्रमिको को भी छलछद्म से पीडित करते हैं और नित्य शराब और धन के नशे मे मस्त रहते हैं। किन्तु पाप छिपता नही है। कुन्दन की आत्मा उन्हे तग करती है। पुलिस हत्या का भेद खोलती है और रायसाहब अपने शराबी बेटे से भी पीडित होते है। पुत्री भी अन्तिम समय नही पहुच पाती। फरिश्ते से वे एक माह, एक सप्ताह, एक दिन, एक रात का समय पश्चात्ताप के लिये तथा समस्त धन अच्छे कार्य मे खर्च करने के लिये मागते हैं।

लेकिन वह भी उन्हें नहीं मिलता है और अन्त में वे मर जाते है।

एकला चलो रे (सन् १९४८, पृ० ३४), ले० : उदयशंकर भट्ट; प्र० : राजकमल, दिल्ली; पात्र : कतिपय स्वर; *अंक-दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल-रहित

'एकला चलो रे' संगीत-रूपक में कवि ने सत्य, अहिंसा और प्रेम के प्रतीक महा-मानव गांधीजी को अपनी श्रद्धांजली अर्पित की है। इस नाटक का आधार गांधी जी की नोआखाली-यात्रा को बनाया गया है। बुद्ध, ईसा, मोहम्मद पैगम्बर की भांति गांधीजी भी अकेले ही मानव-कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होते है। नोआखाली में हुए उपद्रवों से त्रस्त मानवता को गांधीजी सत्य, अहिंसा और प्रेम का संदेश देते है। इस प्रकार नोआखाली-यात्रा को प्रतीक मानकर लेखक ने गांधीजी के महान् व्यक्तित्व का दिग्दर्शन कराया है।

औ

औरत और शैतान (पृ० ६२), ले० : शिवदत्त मिश्र; प्र० : ठाकुरप्रसाद एण्ड संस, वाराणसी; पात्र : पु० ८, स्त्री ४; अंक : १, दृश्य : १४।

घटना-स्थल : वेश्या-गृह, दुकान, बाजार, घर आदि।

इस सामाजिक नाटक में समाज की बुराइयों को दिखाने का प्रयास किया गया है। इसमें बेला नामक लड़की को कुन्दनलाल बेचकर उससे अपना मतलब हल करता है। नारियों की उच्छृंखल प्रवृत्ति से लाभ उठाकर नाटक का एक पात्र चन्द्रकान्त अपना व्यापार चलाता है। सामाजिक बुराइयों के खोखलेपन को जानने के लिए प्रस्तुत नाटक पर्याप्त सहायक है।

औरत का दिल (पृ० १०६), ले० : मुहम्मद शाह आगा हश्र काश्मीरी; प्र० : उपन्यास-बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० ७, स्त्री ३; *अंक : १, दृश्य : ५, ६, ३।*
घटना-स्थल : मकान, जंगल, विवाह-मंडप, कारागार, कठघड़ा।

इस सामाजिक नाटक में निरपराध औरत की वीरता का परिणाम दिखाया गया है। सकीना प्रतिष्ठित बैरिस्टर महमूद की पालिता पुत्री है। सकीना के नाम से एक तिलस्मी तिजोरी और तिलस्मी पुतली है जिसे महमूद शादी के साथ सकीना को उस का रहस्य समझाकर देना चाहता है। उसकी शादी के लिए महमूद एक रईस जमींदार मि० इनायत को अपने घर बुलाते हैं। सकीना का सम्बन्धी जालिमखां भी रहस्यमयी तिजोरी और पुतली को प्राप्त करने के लिए उससे विवाह करना चाहता है। जालिमखां भयंकर डाकुओं का सरदार है, जो मि० महमूद को धमकी-भरा पत्र लिखकर धन तथा कन्या दोनों मांगता है।

किन्तु मि० महमूद, मि० इनायत से सकीना की शादी कर उसकी अमानत सौंप देना चाहते हैं। शादी की रात जालिमखां मि० महमूद का खून कर रहस्यमयी पुतली लेना चाहता है। अचानक पिस्तौल से गोली छूट जाने की दहशत में वह अपनी चाभी और खंजर वहीं फेंककर भाग जाता है। गोली की आवाज से मि० इनायत उठकर आते है और खूनी खंजर तथा चाभी उठाते हैं। सकीना उन्हें देखकर उन्हीं को खूनी समझती है और पुलिस आकर उन्हें ले जाती है।

अफजल (मि० महमूद) जालिमखां के गिरोह का सरदार बनकर उसका विनाश करते है तथा सकीना और मि० इनायत के भ्रम का निवारण करते हैं। अन्त में जालिम-

खा मि० इनायत को मारने के लिए जाता है। वफादार नौकर करीम पुलिस की मदद से उसे बन्दी बनाता है और जेल के कठघरे तथा पुलिस के सरक्षण मे रहने पर भी कुलसुम द्वारा मारा जाता है। मुकदमे मे अफजल (मि०महमूद) तथा करीम और सकीना की सफाई से इनायत बरी हो जाता है।

क

कण्ठहार (वि० २०२९, पृ० १९३), ले० मणि पद्म, प्र० मैथिली प्रकाशन समिति, सरिसव, दरभगा, *पात्र* पु० २३, स्त्री ५, *अक* ११, *दृश्य* ३६।

घटना-स्थल देव-स्थान, नैमिषारण्य का उपवन, गढ गोढियारी प्रागण, शास्त्रार्थ स्थल, कमलेश्वरनाथ महादेव का प्रागण, महादेव का मदिर, विद्यापति का घर, ग्राम-पथ।

यह ऐतिहासिक मैथिली नाटक है। विद्यापति के प्रारंभिक जीवन से लेकर उनकी अतिम स्थिति तक का चित्रण नाटकीय शैली मे किया गया है। विद्यापति को शस्त्र एव शास्त्र दोना का ज्ञाता माना गया है। गढ गोढियार के युद्ध-स्थल मे शस्त्र-शक्ति का और शास्त्रार्थ मे शास्त्र ज्ञान का परिचय मिलता है। विद्यापति मातृभूमि और मातृभाषा की पूजा मे जीवन बिताते हैं। राजनीति द्वारा महाराज शिवसिंह को दिल्ली के सुल्तान से बधनमुक्त कराते हैं। इससे महाराज देवसिह और महारानी लखिमा प्रभावित होकर उनका अत्यधिक सम्मान करती हैं। महारानी लखिमा की सगीत-प्रवीणता का आभास नाटक मे अनेक स्थलो पर मिलता है। महारानी के सती होने पर विद्यापति निराश्रित हो भक्ति की ओर उन्मुख होते हैं। महादेव इनकी भक्ति-भावना से प्रसन्न होकर उनके यहा नौकरी करते है। घटनाबाहुल्य से नाटक रगमचोपयोगी नही है। विद्यापति के गीतो को स्थान-स्थान पर उद्धृत किया गया है।

कजूस की खोपडी (सन् १९२३), ले० गोविन्द वल्लभ पन्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी।

इस प्रहसन मे कजूस धनी का परिहास किया गया है। पन्त जी की यह प्रथम कृति है।

कंसवध (सन् १९९६, पृ० २३), ले० रामचरण ठाकुर, प्र० हिंदी विद्यापीठ, आगरा, *पात्र* पु० ११, स्त्री २, अक और दृश्य-रहित।

घटना-स्थल गोकुल, मथुरा, कस का दरबार, यज्ञशाला।

इसमे कृष्ण की प्रमुख लीलाओ का उल्लेख और उनकी महिमा का वर्णन है। कृष्ण-नाम-स्मरण और श्रवण से मानव को मुक्ति दिखाई गई है। नारद कस को उसके प्राण-घाती कृष्ण-बलराम का ज्ञान कराते हैं। कस उन दोनो को मारने के लिए चाणूर-मुष्टिक को आज्ञा देता है। और कृष्ण को मथुरा लाने के लिए अक्रूर को भेजता है। नारद जी मथुरा से कृष्ण के पास पहुँचकर कस की योजना बताते हैं। अक्रूर कृष्ण से गोकुल मे सारी बात कह सुनाते हैं। कृष्ण और बलराम गोपियो को आश्वासन देकर अक्रूर के साथ रथ पर बैठकर मथुरा के लिए प्रस्थान करते है। मथुरावासी कृष्ण के दर्शन से प्रफुल्लित होकर पुष्पो की वर्षा करते हैं। मार्ग मे जाते हुए कृष्ण सुदामा माली का मनोरथ पूर्ण करते है और कुब्जा के प्रेम से प्रभावित होकर उसका कूबडपन मिटाते हैं। तदनन्तर धनुषयज्ञ शाला मे धनुष पर प्रत्यचा लगाकर लीला करते हैं। हाथीवान को मारकर रगशाला मे प्रवेश करते हैं। वहाँ पर प्रसिद्ध मल्ल चाणूर, मुष्टिक और सकपण से कृष्ण और बलराम का युद्ध होता है। थोडी देर बाद कृष्ण चाणूर और मुष्टिक को मारकर दुष्ट कस का भी वध कर डालते हैं।

और उग्रसेन को सिंहासन पर बैठाते हैं।

कंसवध (सन् १९१०, पृ० ४८), ले० : रामनारायण मिश्र, 'द्विजदेव'; प्र० : मैथिली प्रिंटिंग प्रेस, मधुबनी, दरभंगा; पात्र : पु०१६, स्त्री, ५; अंक : ५, दृश्य : १, २, २।
घटना-स्थल : गोकुल, मथुरा, यज्ञशाला, रंगभूमि।

अत्याचारी कंस की हत्या के लिए भगवान् कृष्ण अवतार धारण कर देवताओं के कष्ट दूर करते हैं।

जीर्णविष और करालदंत नामक दो राक्षसों से वार्तालाप द्वारा देवकी की विदाई के समय आकाशवाणी का परिचय मिलता है। वह्नि देवकी के आठवें पुत्र से अपने सर्वनाश की घोषणा सुन कंस वसुदेव-देवकी को कारागार में बंद करता है और उनके सात पुत्रों की हत्या के बाद आठवीं संतान कन्या को मारना चाहता है किन्तु वह कंस के हाथ से छूटकर आकाश में यह कहते हुए लुप्त हो जाती है कि, 'तुम्हारा शत्रु गोकुल में जन्म ले चुका है।'

धनुष-यज्ञ के ब्याज से अक्रूर के द्वारा कृष्ण मथुरा बुलाए जाते हैं।

आगमन की सूचना पाकर मथुरावासी उनके दर्शन को आ पहुँचते हैं। कृष्ण रास्ते में धोबी से राजोचित वस्त्र छीनकर पहनते हैं। कंस का माली उन्हें माला पहनाता है। कुब्जा चंदन लगाती है और कृष्ण द्वारा सुंदरी स्त्री के रूप में परिवर्तित कर दी जाती है। तदनन्तर वह धनुषयज्ञ में धनुष तोड़ते हैं और कंस के रक्षकों से अपनी रक्षा करते हैं।

दूसरे दिन वे रंगभूमि के प्रवेश-द्वार पर स्थित कुवलय को द्वारपाल और महावत-सहित मारते हैं। यह सूचना पाकर कंस अपने वीरों को सावधान करता है। कंस के ललकारने पर कृष्ण मंच पर उसका वध करते हैं।

कच-देवयानी (सन् १९५१), ले० : हंसकुमार तिवारी; प्र० : ज्ञानपीठ लि०, पटना; पात्र : पु० १, स्त्री १; अंक-रहित, दृश्य : १।
घटना-स्थल : आश्रम, उपवन।

'कच-देवयानी' एक पौराणिक संगीत-रूपक है जिसमें कच और देवयानी की प्रेम-गाथा को प्रस्तुत किया गया है। देवगुरु का पुत्र कच असुर-गुरु आचार्य शुक्र के पास संजीवनी विद्या सीखने आता है जिससे पराजित देव-सेना को जीवन दान दिया जा सके। आचार्य शुक्र की पुत्री देवयानी कच के प्रणय-पाश में बंध जाती है। कुछ समय पश्चात् जब कच विद्या सीखकर वापस स्वर्ग जाने लगता है तो देवयानी उसे रोकने का प्रयत्न करती है किन्तु वह (कच) कर्तव्य के समक्ष प्रेम की उपेक्षा करता है जिससे विक्षुब्ध हो देवयानी उसे शाप देती है कि जिस विद्या के लिए तुमने अकपट प्रेम को ठुकराया है, वह विद्या तुम्हारे काम नहीं आएगी।' यह अभिशाप उसे भी चैन से नहीं बैठने देगा। परिणामस्वरूप वह अन्त तक विरहाग्नि में सुलगती रहती है।

कत्ल हकीकत राय (सन् १९५४, पृ० १००), ले० : सैयद शेरअली असद जालंधरी; बाबूराम कृष्ण वर्मा द्वारा सम्पादित तथा भारत जीवन प्रेस में मुद्रित; पात्र : पु० ७, स्त्री ६; 'बाब' : ३, पर्दा : १०, १०, ८। इस नाटक में अंक की जगह बाब तथा दृश्य की जगह पर्दा दिया गया है।
घटना-स्थल : महल, कमरा, उद्यान, अदालत बन्दीगृह।

इस दुःखान्त ऐतिहासिक नाटक में हकीकत राय का धर्म की रक्षा के लिए बलिदान दिखाया गया है। हकीकत राय के पिता भागमल के यहाँ बटाला के तिलकसिंह अपनी कन्या के विवाह का प्रस्ताव भेजते हैं। हकीकत राय का विवाह जैदेई के साथ हो जाता है। हकीकत राय जिस मकतब में पढ़ते हैं उस के मुसलमान छात्र काजी से हकीकत राय की शिकायत करते हैं कि वह पैगम्बरों में अपने देवताओं को मिलाता है। धर्मान्ध मुसलमान लड़के हकीकत राय को बहुत मारते हैं। हाकिम के पास जब इस धार्मिक कलह की बात पहुंचती है तो वह हकीकत राय और जैदेई को बन्दीगृह में डाल देता है। वह किसी प्रकार बन्दीगृह से भाग निकलता है किन्तु पुनः पकड़ा जाता है। वजीर अपने अधिकारियों के साथ

आकर मुखलावद्ध हकीकत राय को कत्ल की सजा देता है। जल्लाद हकीकत राय का मस्तक काट लेता है जिसे देखकर उसके माता-पिता बेहोश होकर गिर जाते हैं। जैदेई प्राण त्याग देती है।

इसमें गानों का आधिक्य और अरबी-फारसी के शब्दों का बहुल प्रयोग है।

कनियापुतरा (सन् १९६७, पृ० १३२), ले० गुणनाथ झा, प्र० मिथिला कला केन्द्र प्रकाशन, कलकत्ता, पात्र पु० १४, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य १५।
घटना स्थल प्रोफेसर साहब का आवास, जगन्नाथ बाबू के आवास का एक शयन-कक्ष, साधारण गृहस्थ परिवार का दरवाजा, छात्रावास।

मैथिल-समाज में प्रचलित तिलक-दहेज प्रथा के दुष्परिणाम इस नाटक में दिखाये गये हैं। यदि इस परम्परा को नहीं रोका जायेगा तो समाज का वास्तविक स्वरूप और अधिक विरूपित हो जाएगा। नाटक की नायिका, दहेज-प्रथा की मारी हुई निर्मला विवाहिता मैथिल ललनाओं का प्रतिनिधित्व करती है। वह समाज के प्रत्येक शिक्षित युवक को धिक्कारती है कि जब तक वैवाहिक प्रथाओं में क्रान्ति नहीं होगी तब तक समाज की मुक्ति नहीं मिल सकती है।

इस नाटक का प्रदर्शन मिथिला कला-केन्द्र के सातवें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर नेताजी सुभाष इन्स्टिट्यूट, सियालदह में हुआ था।

कन्दर्पीघाट नाटक (सन् १९६६, पृ० ५६), ले० राजेश्वर झा, प्र० अमरनाथ प्रकाशन रसुआर,सहरसा, पात्र पु० १६, स्त्री २, अंक ३, दृश्य १५।
घटना-स्थल भौरागढ, भौरा की राजसभा पटना के शासक जैनुद्दीन की राजसभा, भौरागढ का अन्तःपुर, युद्ध-शिविर, नवाब अली वर्दी का दरबार एवं युद्धभूमि।

इस ऐतिहासिक नाटक में महाराजा नरेन्द्रसिंह द्वारा मुसलमानों से मिथिला की मुक्ति दिखाई गई है। मिथिला के इतिहास में कन्दर्पीघाट का एक विशिष्ट स्थान है जो बलिदान, पराक्रम और शस्त्र-संचार की प्रेरणा देता है। वस्तुतः इस रण-स्थल का महत्त्व मिथिला के लिए हल्दीघाटी के समान है। इसके नायक खडवलाकुल के पराक्रमी शासक महाराजा नरेन्द्रसिंह हैं जो धीर-वीर एवं स्वतन्त्रता-प्रिय हैं। अलीवर्दी खां उनके पराक्रम एवं रणकुशलता से मुग्ध होकर अनेक उपाधियों से उन्हें विभूषित करता है। कन्दर्पीघाट में महाराजा नरेन्द्र सिंह, पटना के मुसलमान-नवाब के उपशासक राजा रामनारायण सूबा के साथ युद्ध करते हैं। इस युद्ध में महाराज नरेन्द्रसिंह अपनी वीरता के बल पर विजयी होते हैं। उनसे परास्त होकर नवाब मिथिला को कर-मुक्त कर देता है।

कन्या का तपोवन(ससुराल) (सन् १९५४, पृ० १७६), ले० रामनरेश त्रिपाठी, प्र० आदर्श पुस्तक भंडार, कलकत्ता, पात्र पु० ८, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ७, १६, १२।
घटना स्थल फुलवाडी, मदन का घर, कमरा, बैठक, कलकत्ता की गली।

प्रस्तुत नाटक वस्तुतः अनमेल विवाह पर व्यंग्य करता हुआ उसके दुष्परिणामों की ओर संकेत करता है। इन्दुमती सुशिक्षिता आधुनिक युवती है। उसका विवाह मदन-मोहन से हो जाता है जो धनी किन्तु अशिक्षित है। वह पुरानी रूढियों और परम्पराओं से जकडा होने के कारण विवेकहीन हो दूसरों की बातों पर शीघ्र ही विश्वास कर लेता है। उसका चाचा लीलाधर उसकी इसी कमजोरी का लाभ उठाता है और उसका दाम्पत्य जीवन टूट-टूट कर बिखर जाता है। इन्दुमती धैर्य और सहिष्णुता को नहीं छोड़ती और अन्त में अपने आदर्श के कारण अपनी गृहस्थी को पुनः बसा लेती है। त्रिपाठी जी ने आदर्श दम्पती के रूप में देवेन्द्र और कृष्ण को चित्रित किया है। ये दोनों न केवल परित्यक्ता इन्दुमती को आश्रय देते हैं अपितु उसे अपने पति से मिलाने में भी सहायक होते हैं।

कन्या-विक्रय (सन् १९२३, पृ० १३३), ले०

जमुनादास मेहरा; प्र० : रिखबदास वाहिती, दुर्गा प्रेस, कलकत्ता; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य-रहित, गीत : सात।
घटना-स्थल : रामदास का गृह, एक साधारण गृह का कक्ष, जंगल।

इस नाटक में कन्या-विक्रय और अनमेल विवाह का दुष्परिणाम दिखाया गया है। रामदास बड़ी पुत्री लक्ष्मी का विवाह पांच रुपये के लोभ में बूढ़े तथा रोगी लोटनमल के साथ कर देता है। कुछ ही समय के पश्चात् कन्या विधवा हो जाती है। लोभी पिता पुनः उसका विक्रय करना चाहता है किन्तु लक्ष्मी लोभी पुरुषों को मार्ग दिखाती हुई अपने जीवन का अन्त कर देती है। रामदास दूसरी कन्या मोहिनी का विवाह दो हजार रुपये लेकर एक नासमझ और अबोध बालक के साथ कर देता है। कन्या घर छोड़कर साधु के साथ भागने पर विवश होती है। इसी बीच मार्ग में डाकू मिल जाते हैं किन्तु स्वयं सेवकों और साधू के प्रयत्न से मोहिनी बचा ली जाती है। अन्त में पंचायत के निर्णय पर मोहिनी निर्दोष ठहरायी जाती है। रामदास का बहिष्कार कर दिया जाता है। मोहिनी की माता रोहिणी दुष्परिणाम के कारण विषपान कर लेती है; रामदास छुरी से आत्महत्या करता है। मोहिनी भी पिता की छुरी से आत्महत्या कर लेती है। इस प्रकार कन्या-विक्रय के कारण सारा परिवार नष्ट हो जाता है।

कन्या-सम्बोधिनी नाटक (वि० १९८८, पृ०५८), ले० : कामता प्रसाद साहब रईस; प्र० : मुन्शी चुन्नीलाल, कैम्प, फतेहगढ़; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक-रहित, दृश्य : ४।

इस नाटक में कहानी के द्वारा स्त्रियों को जीवनोपयोगी शिक्षा दी गई है। इसमें अनेक घटनायें अलग-अलग हैं। अयोध्यावासी लाला नारायणदास अपनी कन्या राज कुंवरि को हिन्दी-ज्ञान के साथ चिकन-कलाबत्तू की टोपियाँ काढ़ना सिखाते हैं। उसका विवाह निर्धन परिवार में होता है। वह अपने आभूषण बेचकर पति को एक दुकान करा देती है और स्वयं कलाबत्तू की टोपियाँ तैयार करके दुकान पर बेचने को देती है। इसी की आय से वह बूढ़े सास-ससुर को भोजन और ननदों को हस्तकौशल की शिक्षा देती है।

इसी तरह की चार कहानियाँ स्त्रियों को स्वावलम्बन की शिक्षा देने के लिए रची गई हैं। उन्हीं चारों को चार अंकों में विभाजित समझा गया है। एक कहानी में मद्यपान के दोष, दूसरे में पर्दे की कुप्रथा के कारण समाज की अधोगति दिखाई गई है। सभी कहानियों में स्त्रियों की बुद्धिमानी से परिवार एवं समाज-सुधार दिखाया गया है।

कपटी मुनि नाटक (सन् १९०३, पृ० ८३), ले० : अनन्तराम पांडे; प्र० : भारत जीवन प्रेस, काशी; पात्र : पु० ७, स्त्री कोई नहीं; अंक : ५, दृश्य के स्थान पर *गर्भांक* : २, २, ३, ४, ३।
घटना-स्थल : जंगल, राजसभा, नदी तट पर देवालय, दरबार, कपटी मुनि का आश्रम, मंत्री धर्मरुचि का भवन।

इस नाटक में एक कपटी मुनि के संग का दुष्परिणाम दिखाया गया है। सूत्रधार परिपार्श्वक से नाटक का महत्त्व बताते हुए कहता है—"और शास्त्र सब कथनहार है करनहार नहिं कोई। नाटक करके करि दिखलावे सत्यासत्य जु होई।" तदुपरान्त देश की दुर्दशा पर दोनों रामकलेवा की धुन पर ४० चरणों की लम्बी कविता का गान करते हैं। अपने अतीत का स्मरण करते हुए वे गाते हैं—"वही हमारा पुण्य देश है, वही आर्यकुल बसते हैं। फिर किस कारण मधुमक्खी से सारहीन हो मरते हैं।" इस प्रकार प्रस्तावना में देश को जगाने का प्रयास किया गया है।

प्रथम अंक में बाह्लीक देश के राजा चन्द्रसेन व्याकुल भाव से जंगल में भागते हुए दिखाई पड़ते हैं। उन्हें राजा भानुप्रताप से हारकर भागना पड़ता है। इसी जंगल में कालकेतु भी भागकर आता है। कालकेतु के सौ पुत्रों और दस भाइयों का भानुप्रताप वध कराता है। कालकेतु और चन्द्रकेतु अपनी पराजय के कारणों पर विचार करते हैं। दोनों निश्चय करते हैं कि शक्ति द्वारा भानुप्रताप को जीतना असम्भव है अतः छल द्वारा उसे पराजित करना उचित होगा। इधर भानुप्रताप चन्द्रसेन के श्वशुर चन्द्रवीर को

सभा मे बुलाता है और चन्द्रसेन को दरबार मे उपस्थित करने का आदेश देता है। योजनानुसार कालकेतु नदी-तट पर स्थित देवालय मे पडित के वेश मे रहता है। एक दिन भानुप्रताप के गुप्तचरो को वह सूचना देता है कि राजा चन्द्रसेन सपरिवार उसके घर रहता है। चन्द्रसेन एक कपटी मुनि के आश्रम मे शरण लेता है। वहाँ कालकेतु दौडता हुआ आकर कहता है कि हमने राजा के रनिवास को आग से फूँक दिया है। अब वह निश्चय भानुप्रताप के पास आयेगा। राजा चन्द्रसेन कालकेतु की बुद्धि की प्रशसा करता है। कालकेतु चन्द्रसेन को आश्वस्त करता है कि आपका परिवार श्वशुर चन्द्रवीर के यहाँ कुशल-क्षेम से है। उधर भानुप्रताप गोघातक व्याघ्र की खोज मे जगल मे भटकता हुआ कपटी मुनि के आश्रम मे पहुचता है। राजा प्यास से व्याकुल होकर कपटी मुनि से जल माँगता है। कपटी मुनि एक तालाब का पता बताता है। राजा घोडे-सहित प्यास बुझाता है। भानुप्रताप और कपटी मुनि मे वार्तालाप होता है। भानुप्रताप कपटी मुनि से ब्राह्मणो को वश मे करने का मार्ग पूछता है। कपटी मुनि कहता है कि मेरी बनी हुई रसोई ब्राह्मणो को परसो वे सब वशीभूत होंगे। राजा वही थककर सो जाता है और कालकेतु उसे पीठ पर लादकर उसके रनिवास मे पहुचा देता है। वहाँ ब्रह्मभोज मे कपटी मुनि माँस का पकवान बनाता है। राजा परोसता है तो ब्राह्मण रुष्ट होकर शाप देते हैं—"एक साल के भीतर तेरे कुल मे एक जन पानी देने वाला तक भी न बचे।" अब चन्द्रसेन, कालकेतु, अरिशाल आदि अपनी सेना सजाकर भानुप्रताप के राज्य पर आक्रमण करते हैं। भानुप्रताप पराजित होकर रथ से गिर पडता है। वीरवेश मे कालकेतु और चन्द्रसेन विजयी बन निष्कटक राज्य प्राप्त करते हैं।

कफन (पृ० ६०), ले० रामनिरजन शर्मा 'अलत्र', प्र० साधना मन्दिर, पटना-४, पात्र पु० ११, स्त्री १, अक ३, दृश्य ८, ७, ७।

घटना-स्थल घर, माग, आयसमाज, मदिर।

इस सामाजिक नाटक मे एक मक्कार पुरोहित की काली करतूत दिखायी गयी है। भैरवनाथ एक नशेबाज शराबी व्यक्ति है जो अपनी सुन्दर पुत्री ललिता का विवाह मक्कार पुरोहित चतुर्वेदी के परामर्श से शैतान साधु फक्कडनाथ के चेले अधेड एव कुरूप गोवर्धन दास से कर देता है। तत्पश्चात् लडकी की शादी से मिले हुए चार हजार रुपयो के खर्च हो जाने पर भैरवनाथ पुन ललिता को एक धनी व्यक्ति गुलशन के हाथ दो हजार रुपए मे बेच देता है। गाँव के भद्र युवक रामबहादुर, राधेश्याम तथा गणेश इसका घोर विरोध करते हैं और ललिता की शादी आयसमाज मन्दिर के योग्य युवक मोहन के साथ करने की तैयारी करते हैं। भैरवनाथ पुन कुछ बदमाश धनी आदमियो को लेकर मदिर मे पहुचता है और रामबहादुर आदि युवको के साथ कलह करता है। इतने मे बदमाश साधु त्रिशूल मे ललिता पर वार कर देता है जिससे ललिता की मृत्यु हो जाती है। अन्त मे भैरवनाथ सहित सभी बदमाश गिरफ्तार कर लिये जाते हैं। रामबहादुर, मोहन तथा राधेश्याम-सहित जन-सेवी व्यक्ति विवाह की उस लाल चूंदरी को बहन ललिता का कफन बना देते हैं।

कफन अर्थात सिंदूर की लाज (सन् १९६८, पृ० ८६), ले० मनीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० ७, स्त्री ३, अक ३, दश्य-रहित।

इस सामाजिक नाटक मे एक अछूत लडकी की ददभरी कहानी है। एक सुन्दरी अछूत लडकी अपनी माग की लाज के लिए जीवन को बलिवेदी पर चढा देती है, क्योकि अन्यायी समाज उसे जीने नही देता वरन् उसका सब कुछ लूट कर उसे मरने के लिए बाध्य कर देता है।

कभी गरम कभी नरम, ले० मनीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक २, दश्य रहित।

यह नाटक परिवार की विविध समस्याओ

का उद्‌घाटन करता है। एक परिवार के लोग ऊपर से प्रेमभाव दिखाते हैं किन्तु अन्तःकरण में एक-दूसरे से विद्वेष करते हैं। कुछ पात्र तो अपने असली रूप बदल कर कार्य करते हैं जिससे नाटक में हास्य की छटा दिखाई पड़ती है। अनमेल विवाह, अनधिकार सम्पत्ति-अधिकार की लालसा के कारण परिवार में विद्रोह की अग्नि भभकती है और सबको कष्ट उठाना पड़ता है।

कमलमोहिनी भंवरसिंह (पृ० २७), ले० : लाला जवाहरलाल वैद्य, जयपुर; पात्र : पु० ६, स्त्री ५; अंक : ४, दृश्य-रहित
घटना-स्थल : कमलमोहिनी का शयनगृह, वन, कमलमोहिनी का महल, मानसिंह का महल।

इस नाटक में प्रेमी और प्रेयसी की अभिलाषा पूर्ण न होने के कारण दोनों की मृत्यु दिखाई गई है।

नाटक नान्दी, सूत्रधार, नट और नटी से आरम्भ होता है। कमलमोहिनी और भंवरसिंह स्वप्न में एक-दूसरे के दर्शन कर प्रेम के रस में पूर्ण रूप से सराबोर हो जाते हैं। कमलमोहिनी की सखी चम्पा साधु का वेश धारण कर भँवरसिंह को योगी के रूप में चन्दनपुर लाने में सफल हो जाती है। कमलमोहिनी योगी के दर्शन के बहाने भंवरसिंह के साथ भाग निकलती है किन्तु पिता के सिपाही तथा मन्त्री द्वारा पकड़ ली जाती है। मानसिंह भंवरसिंह को प्राणदण्ड देते हैं। कमलमोहिनी भंवरसिंह के निष्प्राण शरीर को देखकर प्राण त्याग देती है। कमलमोहिनी का पिता भी प्राण त्याग देता है। चिता सजाते समय कमलमोहिनी की सखी चम्पा तथा भँवरसिंह का मित्र शूरसेन भी चिता में कूद पड़ते हैं। इस प्रकार नाटक का अन्त करुण-रस में होता है।

कमला (सन् १९३६, पृ० ८५), ले० : उदय शंकर भट्ट; प्र० : सूरी ब्रदर्स, लाहौर; पात्र : पु० १४, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : १, ३, १।
घटना-स्थल : जमींदार देवनारायण का भवन, नदी आदि।

इस सामाजिक नाटक में अनमेल विवाह, नैतिकता का संकट, अनैतिक आचरण, जमींदारी प्रथा की विभीषिका, नारियों की यातना का चित्रण है।

गाव का जमींदार देवनारायण, अवस्था की दृष्टि से वृद्ध किन्तु मन से अत्यन्त कामुक है। अपनी ही रुचि से परिचालित होकर वह युवती कमला से विवाह करता है। कमला आधुनिक होने के नाते सेवा-परायणा है, उस के खुले व्यवहार से देवनारायण उसके चरित्र पर शंका करता है। कमला अनाथालय के एक बालक को पुत्रवत स्वीकार कर लेती है और उसे जाने नहीं देती। इससे देवनारायण में यह धारणा बद्धमूल हो जाती है कि अनाथालय का बालक शशिकुमार कमला का ही अवैध पुत्र है। अतः वह पत्नी को अपमानित करके घर से निकाल देता है। निराश कमला नदी में कूदकर आत्महत्या कर लेती है। शशिकुमार की भी मृत्यु हो जाती है। अन्त में वास्तविकता का पता चलने पर देवनारायण अत्यन्त दुखी होकर पश्चात्ताप करता है।

कर्फ्यू (रचनाकाल १९७१, प्रकाशन-काल सन् १९७२, पृ० १२३), ले० : लक्ष्मीनारायण लाल; प्र० : राजपाल एण्ड संस, दिल्ली; पात्र : पु० २, स्त्री २; अंक-रहित, दृश्य : ५।
घटना-स्थल : गौतम का ड्राइंग-रूम, संजय का कमरा।

इस नाटक में आधुनिक नारी की पर-पुरुष के साथ रमण में रुचि दिखाई गई है। एक बड़े नगर में दंगा होने पर अधिकारी कर्फ्यू लगा देते हैं। ऐसी स्थिति में समृद्ध कुल की दो महिलाएँ कर्फ्यू के कारण रात्रि-वेला में अपने घर से अलग होने को विवश हो जाती हैं। मिल-मालिक गौतम के ड्राइंग-रूम में मनीषा नामक महिला प्रवेश करके निःशंक भाव से वार्तालाप करती है। वाइस-चांसलर की कन्या मनीषा अपने उन सहपाठी छात्रों की प्रेम-गाथायें सुनाती है जिनके आलिंगन से उसे सुख मिलता था। वह कालेज के टेनिस-प्लेयर, विश्वविद्यालय के रिसर्च-स्कॉलर तथा अन्य युवकों की प्रेम-

कहानियों की मस्ती में सुनानी जाती है और परिचित व्यक्तियों से ऊबकर कहती है—'नाऊ आई लाइक ओनली स्ट्रेंजर्स। 'एण्ड यू आर ए स्ट्रेंजर।' मनीषा गौतम के साथ सुरापान करती है। गौतम से कहती है—'आओ बढो, मेरा हाथ पकड़ो—।' गौतम अपने घर में एकाकी है और उसने बाहर का द्वार बन्द कर रखा है। मनीषा जब बाहर जाने लगती है तो गौतम उसे कसकर पकड़ लेता है। वह छुड़ाकर पास में पड़ी तलवार उठाकर कहती है—'अब आगे मत आना, मैं अपने को बचा सकती हूँ।' तलवार फेंककर निकल जाती है।

दूसरे दृश्य में गौतम की पत्नी कविता कर्फ्यू लगने पर सजय नामक अभिनेता के एकाकी घर में प्रवेश करती है। सजय एक नाटक का रिहर्सल कर रहा है। कविता उसके साथ पार्ट करती हुई विवाह के विविध रूपों के गुण-दोषों पर वार्तालाप करती है। भावावेश में आकर स्वय सजय के बटन खोलकर उसकी कमीज उतारती है। टेबल-लैंप बुझा देती है। जब वह सजय से कहती है कि मैं तुम्हें चाहती हूँ तो वह उसे अक में भर लेता है। सजय के पकड़ने पर वह चीखती है फिर मुँह छिपा लेती है। सजय उसे कायर कहकर छोड़ देता है। इस दृश्य में कविता, आधुनिक नाटक, उसके रिहर्सल और गोष्ठी की शैलियों पर नाना प्रकार के विचार प्रकट करती है।

तीसरे दृश्य में मनीषा पुन गौतम के ड्राइंग-रूम में आकर उस कर्फ्यू की रात की अपनी शेष कहानी सुनाती है।

गौतम और मनीषा में प्रेमालाप होता है। वह मनीषा को बाँहों में भर लेता है। दोनों के हाथ में एक-एक मोमबत्ती है। दोनों ओम् नम स्वाहा का मन्त्र पढते हुए परिक्रमा करते-करते आलिंगनबद्ध हो जाते हैं।

चौथे दृश्य में कविता पुन सजय के उसी कमरे में सोफे पर लेटी दिखाई देती है। सजय अपने कमरे में लेटा है।

पाचवें दृश्य में कर्फ्यू टूटते-टूटते कविता अपने घर से गौतम के यहाँ आ जाती है। गौतम और कविता कर्फ्यू की अपनी राम कहानी एक-दूसरे को सुनाते हैं। गौतम मनीषा का प्रसग और कविता सजय की कहानी सुनाती है।

मनीषा समझाती है कि 'व्यक्तिगत सत्यों से ऊपर एक बड़ा सामाजिक सत्य होता है।' अन्त में चारों मिलकर कविता-गौतम के विवाह की सालगिरह मनाते हैं। प्रथम प्रस्तुतीकरण—अभियान द्वारा आईफेक्स के मच पर नयी दिल्ली में १२ नवम्बर, १९७१ को हुआ।

कराल चक्र (वि० १९९०, पृ० १२५), ले० चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि', प्र० भारती भवन, बनाव, पात्र पु० १२, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ८, ८, ६।

नाटक का नायक ज्ञानशकर समाज-सेवा तथा देशोद्धार के लिए प्रस्तुत होता है, जिसमें उसकी पत्नी सत्यवती सहायता करती है। विजयसिंह अकर्मण्य शासक तथा दीवान जालिमसिंह के हाथ की कठपुतली बना हुआ है। जालिमसिंह स्वय शासक बनना चाहता है अत वह राजा को मद्यपान व वेश्यागमन की ओर प्रवृत्त कराता है। प्रजा ज्ञानशकर को अपना नेता मानने लगती है। जालिमसिंह ज्ञानशकर को फाँसी की सजा दिलवाता है। फाँसी वाले दिन जालिमसिंह राजा विजयसिंह को फाँसी देखने के लिए बुलाता है तथा उन्हें जहर-मिली शराब देने का प्रयत्न करता है परन्तु रहस्य खुल जाता है और विजयसिंह बच जाते हैं। जालिमसिंह को सजा मिलती है तथा विजयसिंह और जनता के अनुरोध पर ज्ञानशकर राजा बनाए जाते हैं।

करिश्मे-कुदरत उर्फ अपनी या पराई (सन् १८९२), मुशी विनायक प्रसाद 'तालिब', एव खुरशीद बाटलीवाला के निदेशन एव विक्टोरिया नाटक मडली, बम्बई द्वारा प्रदर्शित।

यह नाटक पुरुष-स्त्री की प्रेम-क्षेत्र में बेवफाइयाँ प्रदर्शित करता है। टाइम्स रोम के एक नगर आडिया का बादशाह है। वह अपनी क्रूरता तथा पैशाचिकता के लिए प्रसिद्ध है। उसका पुत्र मार्क्स है। वह प्रथम प्रणय के लिए अपनी चचेरी बहिन डेसिया के प्रति आकृष्ट होता है। दोनों का आकर्षण विवाह की बातचीत तक पहुँचता ही है

कि उनके मार्ग में एक अन्य यहूदी कुमारी राहिल आ जाती है। राहिल अली एजार नामक एक यहूदी की पालिता पुत्री है। अलीएजार ने उसको जलती अग्नि से बचाया था और बड़े मनोयोग से उसका पालन किया था इसलिए वह यहूदी कन्या ही कहलाती थी। किन्तु वास्तव में वह आडिया नगर के रोमन धार्मिक पेशवा पान्टीफ़ ब्रूटस की लड़की (पालीना) थी। यह रहस्य नाटक के अन्त में राहिल की मार्कस के साथ शादी के समय खुलता है।

मार्कस जब राहिल यहूदन के नयन-बाणों से विद्ध हो उसकी तरफ बढ़ता है तो डेसिया मार्ग के वृक्ष की भाँति अलग ही रह जाती है। दोनों के प्रणय को घनिष्ठता और अभिन्नता की ओर अग्रसर देख अलीएजार बड़ा अप्रसन्न होता है। क्योंकि वह अपनी यहूदी लड़की का किसी रोमन के साथ सम्बन्ध होना सहन नहीं कर सकता। मार्कस तुर्कमान नसीबे की सहायता से राहिल को ले उड़ता है। डेसिया मार्कस पर अपने अधिकार को छोड़ देती है और राहिल रोमन का उसके साथ विवाह हो जाता है।

करुणाभरण (रचनाकाल १६१७-१६५६ के मध्य), ले० : कृष्ण जीवन लच्छीराम; पात्र : पु० १, स्त्री ४; अंक : ७, दृश्य-रहित। घटना-स्थल : वृन्दावन।

इस नाटक में राधाकृष्ण का कुरुक्षेत्र में पुनः साक्षात्कार दिखाया गया है। यह एक पौराणिक नाटक है। इसमें ग्रहण के समय स्नानार्थ कृष्ण द्वारिका से कुरुक्षेत्र आते हैं जहाँ पर वृन्दावन से राधा, गोप, गोपियाँ, यशोदादि भी आए हुए रहते हैं। वहीं पर सबका पारस्परिक मिलन होता है और अतीत की प्रेममयी स्मृति में सब खो जाते हैं। नाटक के अन्तिम अट्ठम अंक में नाट्यकार सभी घटनाओं को आध्यात्मिक रूप देकर इसे दार्शनिक पुट दे देता है।

करुणालय (सन् १६१३, पृ० ३६), ले० : जयशंकर प्रसाद; प्र० : भारती भण्डार, इलाहाबाद; पात्र : पु० ८, स्त्री २; अंक-रहित, दृश्य : ५ (गीति-नाट्य)। घटना-स्थल : सरयू नदी, कानन, कुटीर, दरबार, यज्ञ-मंडप।

ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णित शुनःशेप आख्यान (ऐतरेय ब्राह्मण ७।३) पर आधारित इस गीति-नाट्य में मानव-बलिदान की अमानुषिक क्रियाओं का दिग्दर्शन कराया गया है। प्रारम्भ में राजा हरिश्चन्द्र नौका-विहार कर रहे हैं। नौका-विहार के समय नेपथ्य में घोर गर्जन होता है जिसमें राजा हरिश्चन्द्र को अपने पुत्र रोहित की बलि का पूर्व-कृत-संकल्प स्मरण कराया जाता है। पितृसुलभ स्नेह के कारण क्षणभर को राजा के निश्चय में शिथिलता दृष्टिगोचर होती है किन्तु शीघ्र ही राजा का सत्यवादी रूप उभरता है और वह पुत्र-बलि का निश्चय करता है। उधर रोहित धर्म के नाम पर अपनी बलि का विरोध करता है। उसमें स्वत्व-भावना जाग्रत होती है। उसकी इस जीवनेच्छा को नेपथ्य से उद्घोषित कर्म-प्रेरणा द्वारा बल मिलता है। परिणामस्वरूप वह देशाटन के लिये घर से प्रस्थान करता है। उधर अजीगर्त नामक ब्राह्मण-परिवार अभाव की स्थिति में क्षुधा-पीड़ित है। जिससे छुटकारा दिलाने के हेतु वह उसका एक पुत्र क्रय करना चाहता है, जिसको वह अपने स्थान पर बलि के लिए प्रस्तुत कर सके। अजीगर्त सौ गायों के बदले अपने मध्यम पुत्र शुनःशेप को बेचने के लिए तत्पर हो जाता है। वहाँ अजीगर्त की पत्नी तारिणी का मुँह ढक कर चले जाना करुण-मातृत्व की पराकाष्ठा है। साथ ही कथा बिना किसी द्वन्द्व के आगे बढ़ती है। रोहित वापिस घर आता है और शुनःशेप की बलि का प्रस्ताव रखता है। पिता के धिक्कारने पर वह तर्क द्वारा अपने कथन का औचित्य सिद्ध करता है। उसके अनुसार पिता को पिंड-तिलोदक देने के लिए उसका जीवित रहना अत्यावश्यक है। मुनि वसिष्ठ उसका समर्थन करते हैं और निरपराध शुनःशेप बलि-हेतु यूप से बाँध दिया जाता है। सौ गायों के लोभ में अजीगर्त पुत्र-वध के लिए भी तत्पर हो जाता है। इसी समय विश्वामित्र अपने सौ पुत्रों के साथ पधारते हैं और इस कृत्य की मानवीय व्याख्या करते हैं, जो

अत्यन्त प्रभावोत्पादक बन पडी है। उधर सुव्रता (विश्वामित्र की गान्धर्व-विवाहिता पत्नी) रहस्योद्‌घाटन करती है कि शुन शेप वास्तव मे अजीगत का पुत्र न होकर स्वय विश्वामित्र का पुत्र है। विश्वामित्र भी अतीत स्मृति के आधार पर सुव्रता को पहचान कर शुन शेप उसे सौंप देते हैं। इसके साथ ही अगम, निराधार जगदीश्वर की वन्दना के साथ गीति-नाट्य समाप्त होता है।

कर्ण (वि० २००३, पृ० १२६), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० विद्या प्रकाशन मन्दिर, मथुरा, पात्र पु० १८, स्त्री ३, अक ५, दृश्य ४, ५, ५, ४, ५।
घटना-स्थल राजमहल, रणक्षेत्र।

प्रस्तुत नाटक कर्ण की वीरता और सत्य-निष्ठा को प्रतिष्ठित करता है। महाभारत की कथा मे केवल एक स्थान पर थोडा-सा परिवर्तन है। द्वैतवन मे जब चित्ररथ गन्धर्व से दुर्योधन हारता है तब कर्ण उस युद्ध मे अनुपस्थित रहता है।

नाटक मे कर्ण की द्वन्द्वात्मक भावनाओं का कारण बताया जाता है। मजूषा को सम्बोधित कर वह समाज की आलोचना करता है।

उपक्रम मे कर्ण जब रगशाला मे आता है तो कृष्ण उसके वश के विषय मे पूछते हैं परन्तु कर्ण कहता है, 'वर्णो तथा वशो का द्वन्द्व होता है या अर्जुन का और मेरा आचार्य ?'

दुर्योधन कर्ण की वीरता और पौरुष से प्रसन्न हो, उसे अग देश का राज्य दे देता है। कर्ण उसमे विमुख न होने का वचन देता है। कर्ण षड्यन्त्रो के सर्वथा विरुद्ध है। जहाँ कौरव और पाण्डव नीति-धर्म छोड देते हैं, वहाँ भी वह सदैव महान् और उदार बना रहता है।

कर्ण (सन् १९५३), ले० भगवतीचरण वर्मा, प्र० भारती भण्डार, प्रयाग, पात्र पु० ७, स्त्री २, अक-रहित, दृश्य १।
घटना स्थल नहीं।

यह गीति-नाट्य महाभारत के अदम्य वीर, अपूर्व दानी तथा कौरव पक्ष के समर्थक कर्ण का मनोवैज्ञानिक पुनर्मूल्याकन प्रस्तुत करता है। सामाजिक तिरस्कार एव उपेक्षा से पीडित प्रतिक्रियावादी कर्ण के चारित्रिक दौर्बल्य को मनोवैज्ञानिक परिवेश मे औचित्य प्रदान किया गया है।

इसमे महाभारत के अतिम दिन का चित्रण किया गया है, जिसका सेनापति कर्ण था। सारथी शल्य रणक्षेत्र मे कर्ण को हतोत्साह करने का प्रयत्न करता है, क्योंकि इस कार्य के लिए युधिष्ठिर ने शल्य से वचन ले लिया था। किन्तु वार्तालाप के अनन्तर शीघ्र ही शल्य कर्ण से प्रभावित हो जाता है। यहाँ शल्य कृष्ण की कूटनीति का शिकार हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उसका रथ दलदल मे फँस जाता है। रथ निकालने का अन्य कोई मार्ग न देखकर कर्ण स्वय प्रयत्नशील होता है। यही उसके लिए अभिशाप सिद्ध होता है। कृष्ण के सकेत पर अर्जुन निरस्त्र कर्ण पर बाणो की बौछार कर देता है। जीवन की अन्तिम घडियाँ गिनते समय कर्ण के पास विप्र-वेश मे धर्म आकर उससे दान मागता है। कर्ण अपना स्वर्ण-दत उसे दान मे देकर अपने चारित्रिक औदात्य को बनाए रखता है।

कर्ण (सन् १९६२, पृ० ६८), ले० चतुर्भुज, प्र० साधना मन्दिर, पटना, पात्र पु० १२, स्त्री २, अक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल आश्रम, राजसभा, नदी-तीर, शिविर, रणभूमि।

इस नाटक मे दानवीर कर्ण के चरित्र को महाभारत के आधार पर चित्रित किया गया है।

नाटक के प्रथम अक मे कर्ण परशुराम से दीक्षा लेकर ज्यो ही विदा माँगते हैं उसी समय इन्द्र वहाँ जा पहुँचते है और कर्ण के सूत-पुत्र होने की सूचना देकर उसे (कर्ण को) शाप दिला देते हैं। कर्णार्जुन युद्ध और उसमे विजय की अभिलाषा धूमिल होने पर वह पुन दुर्योधन के समुदाय मे धर्मराज होकर कीर्ति प्राप्त करता है। अर्जुन की रक्षा मे इन्द्र भी भिखारी बनकर कर्ण से कवच और कुण्डल माग लाते है।

द्वितीय अक मे कृष्ण दुर्योधन को समझाने जाते हैं, किन्तु उनका सधि-सन्देश निरर्थक सिद्ध होता है। कृष्ण और कुन्ती दोनों कर्ण को उसके जन्म का रहस्य खोलकर 'भारत

युद्ध' में उसे पाण्डु-पक्ष में करना चाहते हैं, परन्तु कर्ण आजीवन दुर्योधन का वफादार मित्र और अर्जुन का शत्रु बना रहता है। वह कुन्ती से स्पष्ट कहता है कि कर्ण या अर्जुन में से एक ही रहेगा, पाण्डु पाँच रहें हैं छह नहीं।

तृतीय अंक में भीष्म की शरशैया के पश्चात् कर्ण सेना-नायकत्व ग्रहण करता है और शल्य जैसे सारथी को पाकर भी कर्णार्जुन युद्ध में वीरता दिखाकर शाप के फलस्वरूप मारा जाता है।

कर्णवध नाटक (सन् १९१८, पृ० ८०), ले० : श्यामाचरण जोहरी; प्र० : भार्गव पुस्तकालय, काशी; पात्र : पु० ३५, स्त्री ६; अंक : ५, दृश्य : ६, ६, ८, ५, ५।
घटना-स्थल : राजभवन, युद्ध-क्षेत्र, चक्रव्यूह।

इस नाटक में महाभारत के कारणों और परिणामों को आद्योपान्त प्रदर्शित किया गया है। प्रारम्भ में पुत्र-शोक से मूर्छित अर्जुन चेतनता आते ही धृष्टद्युम्न पर क्रुद्ध होते हैं और अभिमन्यु तथा द्रौपदी पर किए गए अत्याचारों को स्मरण दिलाकर कृष्ण उसे (अर्जुन को) महायुद्ध के लिए कृत-संकल्प कराते हैं। दूसरे अंक में कर्ण पाण्डवों की पराजय के लिए मकार-व्यूह की रचना करता है। अश्वत्थामा और अर्जुन के युद्ध में गुरु का रथ अश्वों के मरने से व्यर्थ हो जाता है। तीसरे-चौथे अंक में कर्ण और अर्जुन का युद्ध होता है। इसी अंक में धर्मराज को आहत दिखाकर अर्जुन का आक्रोश उत्तेजित किया जाता है। पाँचवें अंक में भी कर्ण और अर्जुन भयंकर युद्ध करते हुए दिखाई पड़ते हैं। कर्ण के मूर्छित होने पर कृष्ण अर्जुन से उस पर प्रहार करने का आग्रह करते हैं। इस समय कर्ण अर्जुन का धर्म-युद्ध-संबंधी संवाद होता है। अन्त में कर्ण की मृत्यु और पाण्डवों की विजय दिखाई गई है।

कर्त्तव्य (सन् १९४९, पृ० २०८), ले० : सेठ गोविन्द दास; प्र० : महा-कोशल साहित्य मन्दिर, जबलपुर; पात्र : पु० ५, स्त्री ३; अंक : ५, दृश्य : ३, ५, ५, ५, ७।
घटना-स्थल : अयोध्या, किष्किन्धा, लंका।

इस नाटक में राम और कृष्ण की विशिष्टता दिखाकर राम को मर्यादा-पुरुषोत्तम और कृष्ण को लीला-पुरुषोत्तम सिद्ध किया गया है। पूर्वार्द्ध में रामकथा और उत्तरार्द्ध में कृष्णकथा है।

प्रथम अंक में राम-वनवास के कारण दशरथ, अवधवासी और प्रजा को अत्यन्त चिंतित दिखाया गया है। राम का मन नाना विरोधी भावनाओं, प्रेम और कर्तव्य के संघर्ष से परिपूर्ण है। उत्तरार्द्ध में सारथी आकर कृष्ण को गोकुल से मथुरा ले जाता है। कृष्ण-वियोग में सब गोकुलवासी दुःखी हैं, पर श्रीकृष्ण के मन में कोई संघर्ष नहीं है।

दूसरे अंक में राम के द्वारा वृक्ष की ओट में बालि-वध दिखाया गया है। यद्यपि परिस्थितियों के कारण राम को बालि-वध करना पड़ता है, तथापि उनके मन में यह संघर्ष चल रहा है कि धोखे से इस प्रकार मारना पाप है। दूसरी ओर मथुरा पर जरासंध और कालीयवन का आक्रमण होने पर कृष्ण युद्ध से भागते हैं, और ऐसी परिस्थिति में भागने को ही धर्म बताते हैं।

तृतीय अंक में रावण-वध और सीता की अग्नि-परीक्षा होती है। राम के मन में सीता को ग्रहण करने के विषय में विविध संघर्ष चलते हैं। दूसरी ओर कृष्ण बाणासुर से युद्ध करके सोलह हजार एक सौ कन्याओं को मुक्त कर बिना अग्नि-परीक्षा के ही विवाह कर लेते हैं।

चौथे अंक में राम शम्बूक का वध करते हैं परन्तु निरस्त्र शम्बूक को मारने से उनके मन में संघर्ष उत्पन्न होता है। इधर कृष्ण छल से कौरवों का वध कराते हैं और इसी को धर्म समझते हैं।

पाँचवें अंक में सीता पृथ्वी में प्रविष्ट हो जाती हैं। उत्तरार्द्ध में कृष्ण मुरली बजाते हुए अन्तिम श्वास लेते हैं।

कर्म-धर्म-सिंह, ले० : महादेव प्रसाद सिंह 'घनश्याम'; प्र० : दूधनाथ पुस्तकालय, हावड़ा; पात्र : पु० ३, स्त्री २; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : भवन, वानप्रस्थ आश्रम।

इस नाटक में निरपराध को खौलते तेल

में कूदरर बचते दिखाया गया है। राजा कर्मसिह का छोटा भाई धर्मसिह है। कर्मसिह शिकार को जाता है। उसकी पत्नी धर्मसिह के साथ रमण करना चाहती है। वह अस्वीकार करता है। अत वह रुष्ट होकर उस पर व्यभिचार का दोष लगाती है। राजा फासी की सजा छोटे भाई को देता है। वानप्रस्थी माता-पिता कर्मसिह को फटकारते हैं। वह पवित्रता की परीक्षा के लिए भाई को खौलते तेल मे कूदने को कहता है। धर्मसिह सहर्ष खौलते कडाह मे कूद जाता है और बच जाने से निर्दोष सिद्ध होता है। अत उसकी जयजयकार होती है।

कर्मपथ (सन् १९४८), ले० प्रेमनारायण टडन, प्र० हिन्दी साहित्य भडार, लखनऊ, पात्र पु० १, स्त्री २, अक १, दृश्य-रहित। *घटना-स्थल* वन।

इस गीति-नाट्य मे शिष्य-रक्षा के लिए पुत्र को सकट में डाला गया है। वैदिक गाथा के एक लघु प्रसग पर आधारित 'कर्मपथ' एक अकीय गीति-नाट्य है। सुर-असुर युद्ध मे देवताओ की पराजय होती है, जिसका समस्त दोष युद्ध-सचालक आचार्य बृहस्पति को दिया जाता है तथा भरी सभा मे उन्हें अपमानित किया जाता है। इस पर भी गुरु होने के नाते उनका धर्म उन्हे देवरक्षा-हित विवश करता है। वह अपने एकमात्र पुत्र को असुर-गुरु शुक्राचार्य के पास सजीवनी विद्या सीखने भेजते है। इस निर्णय के समय बृहस्पति का अन्तर्द्वन्द्व गीति-नाट्य मे दिखाया गया है। प्रारभ मे धर्म और वात्सल्य का यह द्वन्द्व नाटकीय उतार-चढाव से परिपूर्ण है।

कर्मपथ (सन् १९५३, पृ० १४७), ले० दयानन्द झा, प्र० स्वावलबन सस्थान, प्रयाग, *पात्र पु० १९, स्त्री ४, अक ३, दृश्य* ४, ४, ४। *घटना-स्थल* गाँव, पचायत, देवी मदिर।

इस सामाजिक नाटक मे गाधीजी का समाज-सुधार के क्षेत्र मे प्रभाव दिखाया गया है। इसमे बडका (अभिजात वर्ग), छोटका (निम्न वर्ग) की समस्याओ को युवा पीढी सुधारने का प्रयास करती है। गाधीजी के पचायत राज्य का प्रभाव इस पर सहज ही देखा जाता है। बिहार की आचलिक पृष्ठभूमि मे सूदन झा और रतना पासी की लडाई, भूत-प्रेत की भावना तथा पचायत के द्वारा शाति दिखाई गई है। मनोज के सत्य-पथ पर चलते हुए कर्म करने से सभी प्रकार का सुधार हो जाता है और रूढियो का बन्धन ढीला पड जाता है।

कर्मवीर चण्ड (सन् १९२७, पृ० १७२), ले० चन्द्रनारायण सक्सेना, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ७, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ११। *घटना-स्थल* मेवाड।

इस ऐतिहासिक नाटक मे चड की पितृ-भक्ति और विमाता के प्रति श्रद्धा दिखाई गई है। राव रणमल की युवा राजकुमारी का विवाह वृद्ध मेवाड-महाराणा लाखासिह से होता है। प्रारभ मे राजकुमारी का विवाह राजकुमार चूडामणि से होना निश्चित था किन्तु जब वह (चूडामणि) सुनता है कि पिताजी उससे विवाह के लिए इच्छुक हैं तो माँ-सदृश राजकुमारी के साथ विवाह करने से इन्कार कर देता है। इस नयी रानी से गोकुल नामक पुत्र पैदा होता है और चूडामणि मेवाड त्याग कर चला जाता है। राव रणमल का पुत्र जोधा मेवाड-राज्य का लोभी है। अत वह अपनी बहन के नादान शिशु तथा वृद्ध बहनोई की परिस्थिति से लाभ उठाना चाहता है। बहन की भेजी हुई राखी को वापस लौटा देता है और राजा को धोके से राज्य-निष्कासित कर अपनी बहन को बन्दी बनाता है। मेवाड पर जोधा का अधिकार हो जाता है किन्तु पुरोहित की मदद से कर्मवीर चण्ड 'शदी' छद्मनाम से कार्य करते हुए जोधा का विरोध कर उससे सघर्ष करता है। जोधा बदी बनाया जाता है। चड अपने छोटे भाई गोकुल को राजगद्दी दिलाना चाहता है किन्तु प्रजा नहीं मानती। अन्त मे उसे ताज पहनना पडता है और फिर जोधा को भी उसकी बहन क्षमादान कर एक उज्ज्वल सस्कृति का प्रमाण उपस्थित करती है।

कर्मवीर नाटक (वि० १९८२, पृ० १९२), ले० : रेवतीनन्दन 'भूषण' प्र०: व्यास साहित्य मन्दिर; पात्र : पु० १२, स्त्री ६; अंक : ३ दृश्य : १०, १०, ५।
घटना-स्थल : महल, घर, जंगल, उद्यान।

इस पौराणिक नाटक में द्वापर और कलियुग का संधिकालीन रूप दिखाया गया है। भारत-सम्राट् परीक्षित पर कलियुग का प्रभाव पड़ता है किन्तु वह कर्मवीर अपने धर्म पर अटल रहता है। परीक्षित के उपरान्त कलियुग का पृथ्वी पर दूषित प्रभाव पड़ने से संसार में द्वेष, वासना, लोभ आदि दुर्गुणों का प्रचार बढ़ जाता है।

कलंक या वेश्या (सन् १९६२, पृ० ७२), ले०: जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६; पात्र: पु० ७, स्त्री २; अंक : ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : वेश्या-गृह, महफिल।

इसमें स्वार्थी बाप की नीच इच्छा के दुष्परिणामस्वरूप उसकी बेटी किरण वेश्या बनती है। उसे धनियों के मनोविनोद के लिए धर्म बेचना पड़ता है। एक दिन वह भी घड़ी आती है जब उसका भाई अपनी बहिन को महफिल के इशारों पर नाचते देखता है। एक दिन बाप भी स्वयं बेटी के ऊपर नोटों की बौछार करता है। तभी वह अपने ऊपर मिट्टी का तेल छिड़ककर आत्महत्या कर लेती है। इस तरह अन्त में रहस्य का पता लगता है।

कलंकी (सन् १९६६, पृ० ७७), ले० : लक्ष्मी नारायण लाल; प्र० : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री ३; अंक दृश्य-रहित
घटना-स्थल : प्रतीकात्मक रंगमंच।

'कलंकी' नाटक में 'मिथक' को आधार बनाकर आधुनिक जीवन की ज्वलंत समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। आज का मनुष्य जीवन की विसंगतियों-विषमताओं से छुटकारा पाने के लिए अवतार की प्रतीक्षा करता है, परंतु उसकी प्रतीक्षा निष्फल हो जाती है।

परिवर्त्तन-विरोधी शासक अकुलक्षेम विद्रोही हेरुप को विक्रम विहार भेजता है। हूण-आक्रमण से पराजित हो वह आत्महत्या करता है। वही प्रेत अवधूत बनकर जनता को धोखे में डाल शासन करता है। हेरुप अवधूत का विरोध करता है। लेखक ने काव्य-बिम्बों के माध्यम से अपने मंतव्य को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। प्रत्येक युग में शासक इस कलंकी अवतार की कल्पना करता है जिससे वह लोगों को और मूर्ख बनाकर अपना अस्तित्व बनाए रख सके। शासकों की बातों में आकर प्रजा प्रश्न करना छोड़ देती है। तीनों कृषक भोली प्रजा के प्रतीक हैं। हेरुप जैसे जिज्ञासु युवक सामने आते भी हैं, तो उन्हें कुचल दिया जाता है। ऐसे युवकों को प्रश्नहीन करने के लिए 'विक्रम विहार' जैसी शिक्षा-व्यवस्था भी विद्यमान है। सारा नाटक आज की जागरूक प्रजा की त्रासदी है जो झूठे आश्वासनों पर जीती है।

कल और आज (सन् १९५५), ले०: स्नेह; प्र० : अमृत बुक कम्पनी, नई दिल्ली; पात्र: पु० ३, स्त्री २; अंक : ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : घर, जंगल, कचहरी।

इस नाटक में हिन्दू कोड बिल से उत्पन्न स्त्री-समाज की जागरूकता और प्राचीन रूढ़ियों की विडम्बना का चित्रण है।

रमा एक पढ़ी-लिखी नारी है और उसका पति पुराने विचारों का व्यक्ति है। रमा उसके साथ घूमने जाने का आग्रह करती है किन्तु पति इसे बुरा मानता है। अन्त में पति-पत्नी में कलह हो जाता है। पति रमा को मारकर घर से निकाल देता है। फिर वह अपने मायके चली जाती है, जहाँ भाई-पिता आदि भी उसे घर में घुसने नहीं देते। इसी बीच हिन्दू कोड-बिल का नियम सरकार द्वारा पास होता है। जिसे देखकर रमा अपने भाई और पिता से सम्पत्ति की माँग करती है तथा अपनी स्थिति को सुधार कर पति से आदर प्राप्त करती है।

कलियुग का बुखार (सन् १९१५, पृ० ४०), ले० : जयरामदास गुप्त;

प्र० जयरामदास गुप्त, काशी,नागेश्वर प्रेस, पात्र पु० ३, स्त्री २, अंक रहित, दृश्य ६ ।

इस प्रहसन में झगडा लगाने वाले मक्कार व्यक्ति की अन्त मे दुर्दशा दिखाई गई है। ऐय्यार इस नाटक मे जाल फैलाकर सभी को एक-दूसरे के विरुद्ध करता है। क्लीम के पिता बुड्ढी को नाजनी के प्रेम-जाल मे फँसाकर दूर तमाशा देखना है। प्रेम मे पागल बुड्ढे को नाजनी के हाथों से जूतियां खानी पडती हैं। इस नाटक के चरमोत्कर्ष तक तो वह भगी के रूप मे दिखाई देता है। ऐय्यार बुड्ढे की पत्नी हुज्जत बेगम तथा नाजनी में भी झगडा करा देती है। नाटक के अन्त मे धीरे-धीरे सभी पात्र एकत्रित होते हैं। भगी के रूप मे बुड्ढे को देखकर हुज्जत से खूब झगडा और युद्ध होता है। दलाल रूपी कलीम आकर सभी बातो का पर्दाफाश करता है। सभी मक्कार ऐय्यार को दोषी मानकर प्रतिशोध लेना चाहते हैं। बुड्ढा तो मारने दौडता है किन्तु नाजनी ऐय्यार की रक्षा करती है।

कला और कृपाण (वि० २०१५, पृ० ८६), ले० डा० रामकुमार वर्मा, प्र० रामनारायण लाल, इलाहाबाद, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य-रहित।
घटना स्थल विन्ध्य-भूमि का वन-प्रान्त, कौशाम्बी का उपवन, कौशाम्बी का राज-प्रासाद।

इस ऐतिहासिक नाटक मे बुद्ध-विरोधी उदयन का मजुघोषा के बलिदान से हृदय-परिवर्तन दिखाया गया है। इसमे महाराज उदयन छद्मवेश मे शिकार खेलने जाते है। उनके वाण से किरात-कन्या मजुघोषा की सारिका का वध हो जाता है। मजुघोषा शिकारी पर अभियोग लगाना चाहती है। सम्राट् उदयन राजमहल मे आकर महारानी वासवदत्ता को आखेट का विवरण सुनाते है। मजुघोषा राजमहल मे महाराज उदयन के माथे पर निशान देखकर सारी बात समझ जाती है और क्षमायाचना करती है। उदयन मजुघोषा को महारानी की प्रमुख सहचरी घोषित करते हैं। जब महात्मा बुद्ध कौशाम्बी मे प्रवचन के लिए आते हैं तो जनता एकत्र होकर व्याख्यान सुनती है। क्रुद्ध होकर बुद्ध की हत्या करने के लिए महाराज उदयन शब्द-वेधी वाण चलाते हैं जो मजुघोषा को लग जाता है। बुद्ध मजुघोषा का शव लेकर राजमहल में आते है। उदयन बुद्ध से क्षमा-याचना कर अहिंमाव्रत धारण करते हैं।

कलाकार (सन् १९५४, पृ० ९७), ले० पृथ्वीराज कपूर, पृथ्वी थियेटर, बम्बई, पात्र पु० २, स्त्री १, अंक ३, दृश्य-रहित। *घटना-स्थल* ग्राम, नगर मे घर।

इस सामाजिक नाटक मे एक कला उपासक कलाकार की कला-निष्ठा का परिणाम दिखाया गया है। नाटक मे कलाकार की जीवन-कथा है जो भोली ग्राम-कन्या गौरा के सौन्दर्य पर रीझ अनेक अनुपम कलाकृतियो को जन्म देता है। और उसे नगर के कृत्रिम वातावरण मे उठा लाता है। गौरा धीरे-धीरे कृत्रिम फैशन की पुतली बन जाती है। अब वह भोलेपन और सादगी को पसद नही करती। वह चाहती है कि मेरा पति सादा जीवन न बिताकर अपनी अमर कृतियो को बेच एक धनी पुरुष बन जाये।

कला का पुजारी कलाकार विलासिता का दास नहीं बनता, इसी कारण पति-पत्नी मे मनोमालिन्य रहता है। किन्तु एक दिन जब पति का दुराचारी मित्र गौरा की उच्छृंखलता से लाभ उठाकर उसके सतीत्व को नष्ट करने की चेष्टा करता है तो उसका नशा उतर जाता है और पति के उदार चरणो मे अपने-आप को पूर्णतया समर्पित कर देती है। इसका अभिनय पृथ्वी थियेटर के द्वारा दिल्ली, बम्बई आदि नगरों में बराबर हुआ।

कलाकार (सन् १९५८, पृ० ६८), ले० जयनारायण, प्र० जय प्रकाशन, राँची, *पात्र* पु० ३, स्त्री १, अंक ६, दृश्य-रहित। *घटना स्थल* ग्रामीण घर, आई० जी० का बगला।

इस नाटक मे स्वतत्रता के पश्चात् सामान्य जनता के निराशामय जीवन, पूजी-

पतियों एवं उच्च प्रशासनिक अधिकारियों के भ्रष्टाचार तथा अन्य समसामयिक समस्याओं का चित्रण है। मोहन एम० ए० में प्रथम स्थान प्राप्त करता है। उसके परिवार के लोग उसे एक उच्च पदाधिकारी देखना चाहते है परन्तु उसकी रुचि यूनिवर्सिटी-प्रोफेसर बनने में है। उसकी धारणा है कि सरकारी नौकरियों से प्रतिभा नष्ट होती है, उस का विकास सम्भव नहीं। कलाकार अमर है, शासक का नामोनिशान नहीं रहता। मोहन आई० पी० एस० की परीक्षा पास करके ए० एस० पी० लग जाता है। परन्तु वह घूस नही लेता और न्याय की माँग के लिए अपने एस० पी० के विरुद्ध आई० जी० के पास जाता है जो उसे आदर्श के त्यागने का परामर्श देता है। वह समझाता है 'आदमी को परिस्थितियों के अनुसार चलना पड़ता है। तुम्हारी तरह मैं भी आदर्शवादी था और बुद्ध तथा गाँधी बनने का स्वप्न देखा करता था'''कौन आई० जी० नही जानता कि दारोगा घूस लेते है, कौन अफसर नही जानता कि उसके पेशकार घूस लेते हैं, पर हम लाचार हैं। आखिर शासन तो चलाना ही है। मोहन का व्यक्तित्व चीत्कार कर उठता है और वह त्यागपत्र दे देता है।

कलिंग-विजय (सन् १९५६, पृ० ८०), ले०: चतुर्भुज एम० ए०; प्र० : साधना मन्दिर, नया टोला, पटना; पात्र : पु० ७, स्त्री २; अंक : ३, दृश्य : ८।
घटना-स्थल : राजप्रासाद, रणभूमि, कारागार, मरुस्थल आदि।
प्रथम अभिनय २६-१०-१९५४ (प्रकाशन-पूर्व)।

इसमें क्रूर-सम्राट् अशोक का हृदय-परिवर्तन एवं उनका बुद्ध धर्म में दीक्षित होना दिखाया गया है। मगध-सम्राट् अशोक अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनों मे महाअत्याचारी हैं। अपनी उद्दाम लालसा के वशीभूत होकर वह कलिंग पर आक्रमण करते हैं और घोर नर-संहार के पश्चात् उसे अपने अधिकार मे कर लेते है। यह उनका पहला और अंतिम युद्ध है। घटनाचक्र से पराजित हो वह अपनी भूल स्वीकार करते हैं, और बाद में बौद्ध-धर्म की दीक्षा लेते है। नाटक मे अशोक की क्रूरता, राजमहल के भीतर षड्यंत्र, कलिंग-राजकुमारी की वीरता, अशोक के हृदय-परिवर्तन आदि की झलक मिलती है।

कलिकौतुक (सन् १८८६, पृ० ३८), ले० : प्रतापनरायण मिश्र, प्र० : खड्ग विलास प्रेस, पटना; पात्र : पु० १५, स्त्री ३; अंक-रहित, दृश्य : ४।
घटना-स्थल : घर, मदिरालय, वेश्यागृह, कारागार।

इस नाटक मे स्वेच्छाचारी एवं उच्छृंखल पति-पत्नी की दुर्दशा दिखाई गई है। नाटक का आरंभ नायक की पत्नी श्यामा और उसकी सखी चम्पा के वार्तालाप से होता है।। श्यामा संतान-रहित होने से कई पुरुषों के साथ संभोग-रत होती है। श्यामा यह जानती है कि उसका पति किशोरीदास भी कई अन्य स्त्रियों से संबंध रखता है। दूसरे दृश्य में किशोरीदास अपने को अन्य पात्रों के समक्ष सात्त्विक और शुद्ध वैष्णव सिद्ध करने का प्रयास करता है। उन पात्रों के विदा होते ही किशोरीदास ईसाई, मुसलमान तथा दुःचरित्र ग्रामीणों के साथ वेश्या और उसके भड़ुवों के यहाँ शराब पीता है। नशे में घोर उच्छृंखल प्रेमालाप करता है। वेश्या इन शराबियों के सिरों पर जूतियों का प्रहार करती है तो शराब के नशे में वे सब इसे परिहास समझते है। तृतीय दृश्य में किशोरीदास के दत्तक पुत्र का दुराचरण दिखाया गया है। चतुर्थ दृश्य में लाला किशोरीदास को तीन वर्ष की जेल की सजा हो जाती है। इसमें शिवनाथ नामक एक सत्पात्र है, जो देशोन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है। यही पात्र अंत में भरतवाक्य के रूप में भारतवासियों को सन्मार्ग पर लाने की प्रतिज्ञा करता है। कुछ लोग इसे एकांकी नाटक मानते है।

कलियुग (सन् १९१२, पृ० ६८), ले० : आनन्द प्रसाद कपूर, जगमोहन शाह; प्र० : गोरख यंत्रालय, काशी; पात्र : पु० १०, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ६, ६, ५,।
घटना-स्थल : घर, मंदिरालय, वेश्यालय।

इस नाटक में कलियुग के अन्दर होने वाली विविध बुराइयों का चित्र और अंत में सुधार की व्यवस्था दिखाई गई है।

कलियुग और घी (सन् १८८६), ले० अम्बिकादत्त व्यास, प्र० नारायण प्रसाद, मुजफ्फरपुर, पात्र पु० ४, स्त्री नहीं, अंक और दृश्य-रहित।

इस प्रतीक नाटक में घी की मिलावट के माध्यम से कलियुग के दोषों का निरूपण किया गया है। घी में मिलावट की समस्या को दृष्टि में रखकर लिखा गया है। इसमें कलियुग, उत्साह, एकता और बरतुरूपी घी नामक चार पात्र हैं। सूत्रधार आरंभ में रंगमंच पर आते ही ढाई पृष्ठों का लम्बा स्वागत-भाषण देकर अपने उद्देश्य से पाठकों को परिचित कराता है। कलियुग सनातन धर्म के नाश के लिए घी को भ्रष्ट करने का उपाय स्वागत भाषण में प्रस्तुत करता है। घी, कलियुग की इस नीति को जान कर भागने की चेष्टा करता है। घी भाग कर तीर्थ में छिपने की सोचता है। इसी अवसर पर उत्साह के साथ एकता का आगमन होता है। दोनों ही अपनी दुर्दशा का वर्णन करते हैं। नेपथ्य में कोलाहल होता है। कोलाहल के माध्यम से कलियुग और घी का संघर्ष प्रस्तुत किया गया है। घी गिड़गिड़ाता है, कलियुग उसे तंग करता है। घी अपने बचाव के लिए एकता और उत्साह को पुकारता है। ये दोनों कलियुग को पकड़कर उसका बध करने को अपनी कटार निकालते हैं, जिससे कलियुग डर कर घी को मुक्त कर देता है।

नाट्य-रचना के समय घी के व्यापारी घी में चर्बी मिलाने के लिए कुख्यात रहे हैं जिसकी रोकथाम के लिए मारवाड़ी जातीय पंचायत ने अर्थदण्ड की व्यवस्था की थी। इससे प्राप्त अर्थ से उस समय में अनेक धर्मशालाओं का निर्माण इस सत्य का साक्षी है।

कलियुग की सती (सन् १९२६), ले० अनवर हुसैन आरज़ू, प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, अंक दृश्य-रहित।

घटना स्थल नगर में घर, एजेंसी।

इस नाटक में स्वेच्छा से विवाह करने वाली नारी को कलियुग की सती माना गया है। नाटक की नायिका चम्पा है। नगर में विवाह की एक एजेंसी खुलती है। चम्पा उस एजेंसी में पाँच रुपये जमा करती है। उसे इस बात की प्रसन्नता है कि उसके माता-पिता उसका विवाह उसी की इच्छा के अनुसार करने को तैयार हैं। इस प्रकार इस नाटक में प्राचीन पद्धति के विरुद्ध स्वेच्छा-विवाह को नये युग के अनुरूप सिद्ध किया गया है।

कलियुग नाटक (सन् १९१२, पृ० ६८), ले० आनन्द प्रसाद खत्री, प्र० जगमोहन दास साह, गोरख यन्त्रालय, काशी, पात्र पु० १२, स्त्री ३, ड्राप दृश्य ६, ६, ५। घटना-स्थल राजदरबार, बन्दीगृह।

इस नाटक में तीन विवाहिता कन्याओं का पिता के प्रति पितृ-भाव पृथक्-पृथक् रूप में दिखाया गया है। नाट्यकार भूमिका में लिखते हैं—यह नाटक पारसी स्टाइल पर लिखा गया है परन्तु हिन्दी में है। सूत्रधार और पारिपार्श्वक वार्तालाप करते हुए कहते हैं कि 'यदि पारसियों की अच्छी बात लेकर हम लोग काम करते होते तो आज हिमालय से कन्याकुमारी तक हिन्दी-ही-हिन्दी दिखाई पड़ती।'

आनन्दपुरी के महाराज सुरेन्द्रसिंह की तीन पुत्रियाँ—माधवी, तारा और कमला हैं। तीनों विवाहिता हैं और अपने-अपने पति के साथ सुरेन्द्रसिंह के राजमहल में रहती हैं। सुरेन्द्र सिंह उसे ही उत्तराधिकारी बनाना चाहते हैं जो पुत्री उनसे सबसे अधिक प्रेम करती है। कमला निवेदन करती है—'जितना प्रेम आप पर मेरा है उतना कोई अन्य पुत्री न तो अपने पिता से रखती थी, न रखती है और न रखेगी। इसी प्रकार तारा भी प्रेम प्रकट करती है। किन्तु कमला कहती है कि मैं आपसे उतना ही प्रेम रखती हूँ जितना कि एक पितृ-स्नेही पुत्री को अपने पिता से रखना चाहिए। सुरेन्द्र सिंह कमला पर क्रुद्ध होकर कहता है कि मैं तुझे कुछ न दूँगा।

दूसरी कथा मंत्री जीतसिंह और उसके पुत्र नरसिंह की है। नरसिंह के षड्यंत्र से सुरेन्द्रसिंह और कमला बन्दी बनाए जाते हैं। वह वधिकों को भेजकर सुरेन्द्रसिंह को मरवा डालना चाहता है। वह माधवी के द्वारा कमला का वध कराना चाहता है और इस वध का दोष तारा पर लगाकर उसे प्रजा के हाथों मरवाना चाहता है।

सम्पूर्ण नाटक शेक्सपियर के किंगलियर नाटक के आधार पर विरचित है।

कलियुग बहार, ले० : बुद्धू मियाँ; प्र० : दूधनाथ पुस्तकालय प्रेस, हावड़ा, कलकत्ता; *अंक-दृश्य और घटना-स्थल रहित।*

इस नाटक में सास-बहू के कलह के *कारण परिवार की दुर्दशा दिखाई गई है।* इसकी कथा भिखारी ठाकुर के गंगा-स्नान से ग्रहण की गई है। माँ का प्यारा पुत्र अपनी पत्नी के बहकावे में आकर उसका निरादर करता है। माँ जीविका-निर्वाह के लिए बोझा ढोती है। उसका अन्त भी गंगा-स्नान नाटक की तरह होता है। इसकी गति और अभिनय-शैली विदेशिया से थोड़ी परिवर्तित कर दी गई है।

कलियुगागमन (सन् १९१८, पृ०२७), ले० : पं० रामेश्वरदत्त शर्मा; प्र० : बाबू जयराम गुप्त, उपन्यास बहार, काशी; *पात्र :* पु० १२, स्त्री २; *अंक :* ४, *गीत :* ५, दोहा : ५।

घटना-स्थल : कलियुग का दरबार, धर्म का दरबार, आश्रम, राजा परीक्षित का स्थान।

नाटक सूत्रधार और नान्दी के मंगलाचरण से प्रारम्भ होता है। सतयुग और त्रेतायुग के बाद कलियुग धीरे-धीरे अपना प्रभाव बढ़ा रहा है। वह कुमत, आलस, रोगराज, राव हैजासिंह, खानबहादुर मलेरिया, पण्डित शीतलाप्रसाद, मदिरा, चौपटसिंह इत्यादि मंत्रियों की सहायता से धर्म, विचार (धर्म का मंत्री), कर्म इत्यादि को बन्दी बनाता है। इसी समय अकस्मात् राजा परीक्षित आ जाते हैं। कलियुग परीक्षित को देखकर भयभीत हो जाता है और अपने रहने के लिए स्थान की याचना करता है। राजा परीक्षित कलियुग को चार स्थान—सोना, पशुवध शाला, वेश्या का घर, कुसंगियों का समाज—दे देते हैं। कलियुग वचनबद्ध परीक्षित के शब्दों का उचित लाभ उठा कर उन्हीं के मुकुट में जा बैठता है। कुमति के कारण राजा परीक्षित शमीक ऋषि के गले में मरा हुआ साँप डाल देते हैं। ऋषि-पुत्र परीक्षित को शाप देता है कि 'आज से सातवें दिन यही तेरा अस्तित्व मिटा देगा; तेरे शरीर को भस्म बना देगा।' राजा परीक्षित को जब अपनी मृत्यु का समाचार मिलता है तो वह राजमहल छोड़ गंगा के किनारे शरीर का त्याग करने चले जाते हैं।

कलियुगीन अभिमन्यु (पृ० १२३), ले० : विश्वम्भरनाथ उपाध्याय; प्र० : गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा; *पात्र :* पु० २०, स्त्री ५; *अंक :* ३, *दृश्य :* ६, ३ ५।

कन्नौज के राजा जयचन्द का भतीजा, 'लाखन राना' इस नाटक का नायक है। पृथ्वीराज, महोबा को घेर लेते हैं, क्योंकि आल्हा-ऊदल को परमाल ने निकाल दिया था। वे कन्नौज में थे। आल्हा को मनाने के लिए, जागन कन्नौज जाते हैं। लाखन राना, आल्हा-ऊदल के साथ चलते हैं। लाखन, इस कारण अपनी नवविवाहिता रानी, पद्मा से एक बार भी नहीं मिल पाते। अभिमन्यु की तरह, महोबे के युद्ध में उन्हें घेर कर मारने की कोशिश होती है। अन्त में लाखन मारे जाते हैं। इस युद्ध में महोबा, सिरसा, उजड़ जाते हैं और पृथ्वीराज की सेना क्षीण हो जाती है, देश पर विदेशियों की विजय का मार्ग खुल जाता है।

कल्कि विजय नाटक (सन् १९१२, पृ० ६३), ले० : विजयानन्द त्रिपाठी; *पात्र :* पु० ११, स्त्री ३; *अंक :* १०, *गर्भांक :* १, १, १, १, १, १, १, १, १, १।

घटना-स्थल : कल्कि की राजधानी।

इस प्रतीक नाटक में धर्म की विजय एवं अधर्म की पराजय दिखाई गई है। इसमें मोह, शक्ति, कपट आदि पात्र के रूप में हैं। कलियुग के राज्य में दम्भ, मोह, पाखंड, झूठ आदि का अधिकार रहता है। इन्हीं के

बल पर कलि कुटिल राज्य करता है। कलि से उद्धार का साधन धर्म है, दूसरा कोई नहीं। धर्म के द्वारा ही इस पर विजय सम्भव है। यही इस नाटक का मूल उद्देश्य है।

कल्पना (सन् १६००, पृ० १००), ले० परदेशी, प्र० कल्याणमल एण्ड सन्स, जयपुर, पात्र पु० ६, स्त्री ६, अंक १, दृश्य २६।

इस प्रेम-प्रधान अर्ध-ऐतिहासिक नाटक में विक्रमादित्य की पुत्री कल्पना का विवाह कालिदास के साथ दिखाया गया है। कालिदास विक्रमादित्य के दरबार में रहते हैं। किन्हीं कारणों से उन्हें राजा विक्रमादित्य की लड़की कल्पना के अनुरोध पर निकाल दिया जाता है, किन्तु जब वे अपनी साहित्य-साधना, कवित्व-शक्ति से खूब यश प्राप्त कर लेते हैं तब कल्पना को अपनी भूल मालूम होती है। इसी बीच कालिदास को राजद्रोह के कारण बन्दी बनाया जाता है किन्तु जनता के प्रबल विरोध के कारण वे मुक्ति प्राप्त करते हैं। बन्दीगृह में वह अपने प्रिय गीतों को गाया करते हैं। एक दिन उनके कुछ गीतों को राजकुमारी कल्पना सुन लेती है और उनसे अपना विवाह करने का संकल्प करती है। अन्त में राजा विक्रमादित्य कालिदास से पुत्री कल्पना का विवाह कर उन्हें अपने दरबार का नवरत्न बना लेते हैं।

कल्पना के खेल (सन् १६६६, पृ० ११), ले० ललितमोहन थपल्याल, पात्र पु० २, स्त्री १, नटरंग १०-११।
घटना-स्थल कमरा

इस नाटक में आधुनिक नारी अपने नीरस दाम्पत्य जीवन से भागकर अनागत को *रमणीय और मनोरूप बनाने का प्रयास* कर रही है। छात्र-जीवन में पुष्पा एक प्रोफेसर पर आसक्त होती है। दोनों नगर छोड़कर एक सप्ताह के लिए इलाहाबाद चले जाते हैं। लौटने पर माता पिता पुष्पा का विवाह एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी के साथ कर देते हैं। सरकारी अफसर को कार्याधिक्य के कारण पत्नी से मिलने का बहुत कम अवसर मिलता है। छात्र-जीवन में प्रो० के साथ बीते हुए आनन्दमय क्षण कल्पना में बार-बार उभर आते हैं। वह इस दाम्पत्य-जीवन का बन्धन तोड़ भाग जाने की योजना बनाती है। एक दिन पति से अनर्गल बातें करते समय प्रो० की मृत्यु का दुखद समाचार मिलता है। हृदय की छटपटाहट को दबाते हुए पुष्पा फिर भी पति से वार्तालाप करती रहती है।

कल्पवृक्ष (सन् १८८८, पृ० ६४), ले० खड्गबहादुर मल्ल, लाल, प्र० खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर, पात्र पु० १३, स्त्री ६, *अंक ४, दृश्य ४, १, ४, ३।*
घटना-स्थल द्वारिका का राजमहल, इन्द्रपुरी, मार्ग, वाटिका।

रैवतगिरि पर रुक्मिणी-सहित अपने भवन में विराजमान कृष्ण को नारद जी पारिजात पुष्प देते हैं। कृष्ण उसे रुक्मिणी को दे देते हैं। कृष्ण द्वारा रुक्मिणी को पारिजात पुष्प दिए जाने की सूचना द्वारका-स्थित सत्यभामा को दासी से मिलती है। दासी *बेटी ही कुशलता से सत्यभामा के मन में* जमा देती है कि कृष्ण सबसे अधिक प्रेम रुक्मिणी से करते हैं। इससे सत्यभामा बहुत दुखी होती हैं और मान करती हैं। कृष्ण उनके मान को दूर करने का बहुत प्रयत्न करते हैं। मान के कारण का पता चलने पर *वह सत्यभामा को प्रसन्न करने के लिए* पुष्प के स्थान पर कल्पवृक्ष को ही उनकी वाटिका में लगाने का वचन देते हैं और नारद द्वारा पारिजात-वृक्ष के लिए इन्द्र के पास सन्देश भेजते हैं। नारद के बार-बार समझाने पर भी इन्द्र पारिजात वृक्ष देना स्वीकार नहीं करता।

अतः सावित्री-सहित गरुड पर चढ़कर कृष्ण सुरपुर पहुँचते हैं और कल्पवृक्ष को उखाड़कर गरुड पर रखते हैं। दूसरी ओर ऐरावत पर चढ़कर इन्द्र आते हैं। दोनों में घोर युद्ध आरम्भ हो जाता है। दिन डूब जाने पर युद्ध बन्द हो जाता है। इन्द्र के चले जाने पर कृष्ण पुष्कर-तट की एक पर्वत-कन्दरा में विश्राम करते हैं जहाँ उनकी पूजा से शिव प्रकट हो उन्हें आशीर्वाद देकर अन्त-

धीन हो जाते हैं।

नियमानुसार दूसरे दिन पुनः दोनों दलों में घोर युद्ध होता है। इसी बीच कश्यप और अदिति युद्ध-भूमि में आते हैं। दोनों पिता की आज्ञा से युद्ध रोक देते हैं। पुनः वे इन्द्र को यह आदेश देते हैं—'तुम कृष्ण को कल्पवृक्ष दे दो और उनका सत्कार करो और वस्त्राभूषणादि-सहित इन्हें विदा करो।' पश्चात् कश्यप और अदिति दोनों पुत्रों के परिवार से मिलकर प्रसन्न होते हैं।

कवि (सन् १९५१, पृ० ५०), *लें०* : सिद्धनाथ कुमार; *प्र०* : पुस्तक मन्दिर, बक्सर।

इस गीति-नाट्य का कथानक सामाजिक समस्याओं के चित्रों को प्रस्तुत करता है। वस्तुतः यह यथार्थ की दृढ़ भूमि पर स्थित है। इसमें कवि ने यही प्रश्न उठाया है कि वास्तव में वस्तुस्थिति से विमुख होकर गगन के कल्पनालोक में अधिक समय तक विचरण नहीं किया जा सकता है। युद्ध की अस्तव्यस्त स्थितियों के प्रति जागरूक होकर उनके पुनर्निर्माण का प्रयास करना समीचीन बताया गया है। कल्पना का घोर विरोध कर जीवन में कठोर सत्य को अपनाकर कर्म करना ही उचित घोषित करते हुए अपने मंतव्य को प्रस्तुत किया है। यही उसका अभीष्ट है।

कवि और ब्रह्मा (सन् १९५२, पृ० ५३), *लें०* : सत्यव्रत अवस्थी; *प्र०* : शिक्षा सदन, प्रयाग; *पात्र* : पु० ६, स्त्री २; *अंक* : ५; *दृश्य* : ३, ३, ३, ३, २।
घटना-स्थल : स्वर्ग, पर्णकुटी, पृथ्वीलोक, ब्रह्मा के घर के सामने का उद्यान।

इस नाटक में कवि की सर्जनात्मक शक्ति की ब्रह्मा की शक्ति से तुलना की गई है। ब्रह्मा, चित्रगुप्त और शक्ति में वार्तालाप होता है। ब्रह्मा कहते हैं कि "मैं मानव को पृथ्वी पर एक नवीन सृष्टि करने के लिए भेज रहा हूँ।" शक्ति कवि से उत्सुकता के साथ कहती है कि "मैं त्रिगुणात्मक शक्तियों को प्रत्यक्ष रूप में देखना चाहती हूँ।" कवि अन्तःकरण की साधना के आधार पर एक नई सृष्टि करता है। सत्यं शिवं सुन्दरम् के पुजारी कवि को देखने के लिए शिव स्वयं आते हैं। विष्णु भी कवि के दर्शनार्थ आकर उसका आलिंगन करते हैं। नन्दन वन की कलियाँ नारी-रूप धारण कर नाचती हैं।

कवि कालिदास (वि० १९८३, पृ० ९४), *लें०* : गणेश प्रसाद द्विवेदी; *प्र०* : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग; *अंक* : २, *दृश्य* : २, २।
घटना-स्थल : कुंतल राजधानी के निकट एक वृक्ष, राजपथ।

जनश्रुति पर आश्रित इस ऐतिहासिक नाटक में मूर्ख कालिदास का विद्योत्तमा से विवाह दिखाया गया है। महाराज विक्रम इसके प्रमुख पात्र हैं। कथानक का आरंभ कालिदास के 'जिस डाल पर बैठे उसी को काटें' वाले प्रख्यात प्रसंग से होता है। इसका प्रारम्भ कई ब्राह्मणों के संवाद से होता है जो विद्योत्तमा के प्रश्नों का उत्तर न दे पाने के कारण अपमानित होकर लौट रहे हैं। मार्ग में उन्हें कालिदास उक्त कार्य करते मिलते हैं। इसके पश्चात् कालिदास की विख्यात कथा नाटक-रूप में चली है। विद्योत्तमा को विद्याधरी नाम दिया गया है। नाटक के अंत में कालिदास एवं विद्याधरी का मिलन होता है।

कवि की नियति (पृ० १५६), *लें०* : विश्वम्भरनाथ उपाध्याय; *प्र०* : जयकृष्ण अग्रवाल, कृष्णा ब्रदर्स, कचहरी रोड, अजमेर; *पात्र* : १६; *अंक* : ३, *दृश्य* : ४, ४, ४।
घटना-स्थल : आगरा का लाल किला।

बादशाह का संगमर्मरी सिंहासन खाली है। हाल के अन्दर तथा बाहर अफसर, दरबारी तथा सिपाही बादशाह के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सिंहासन के नीचे मुख्य अफसर फाइलें लिए खड़ा है, ताकि बादशाह के आते ही उन्हें प्रस्तुत किया जाये। आठ बजे के लगभग राजा दरबार में आ जाता है। चीफ बख्शी मनसबदारों की दरख्वास्तें बादशाह के सम्मुख प्रस्तुत करता है। बादशाह दीवाने-आम के बाद दीवाने-खास में जाकर

दो घटे विशेष महत्त्व के कार्यों को देखना है। यहाँ दीवान राजनीति की चर्चा प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रकार 'शाहबुर्ज' पर बादशाह अत्य धिक गोपनीय चर्चा करता है फिर दूसरे दिन दरबार मे पडितजी पेश होते हैं, जिन्होने कुछ गलत काम कर दिया था। उनका फैसला होता है। पडितजी की लवगी से मुलाकात होती है और वे दोनो एक साथ रहते हैं। लवगी एक स्त्री है जो पडितजी पर मुग्ध हो सारी घटना बताती है कि औरगजेब द्वारा दाराशिकोह की हत्या कर दी गयी है। लवगी पडितजी को जाघ पर लिटा कर बैठी है। कुछ पडे आकर उसको अपशब्द कह रहे हैं। लवगी पडित जी को जगाने पर न जागने से गगा मे कूदने के लिए दौडती है और उसे पकडने के लिए पडित और पडा दौडते हैं लेकिन लवगी नदी मे कूद जाती है जिसमे पडित जी भी कूद जाते हैं।

कवि भारतेन्दु (सन् १९५५, पृ० १३६), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक ३, दृश्य रहित।
घटना स्थल काशी का कविगृह, विलास-कक्ष, गृजन-कक्ष।

इस नाटक मे भारतेन्दु जी के व्यक्तित्व को स्पष्ट किया गया है। कथा काशीस्थित कवि भारतेन्दु के मकान से आरम्भ होती है। पत्नी माधवी सुसज्जित हो पति की प्रतीक्षा करती है पर पति को सरस्वती-आराधना से ही फुरसत नहीं मिल पाती है। भारतेन्दु माधवी को रति और प्रेमिका मल्लिका को सरस्वती मानकर जीवन व्यतीत कर रहे है। भारतेन्दु जी के विचारो से प्रभावित राधाचरण जी भी उनके घर आ जाया करते है। दानशीलता से धनाभाव के समय मल्लिका तथा माधवी उन्हे धैर्य देती हुई पचास हजार की सम्पत्ति देना भी चाहती है, किन्तु भारतेन्दु जी उसे स्वीकार नहीं करते हैं तब मल्लिका अपनी सम्पत्ति राधाचरण को सौंप देती है। भारतेन्दु जी की दानशीलता बढती है और वे सभी सम्पत्ति को दान कर देते है। माधवी तथा गोकुलचन्द मे अनबन हो जाती है। भारतेन्दु के प्रयासो से परिवार मे शान्ति स्थापित होती है। जीवन के अतिम दिनो मे वह भगवान् का चिन्तन करते हुए जीवन-लीला समाप्त करते हैं।

कविवर नरोत्तमदास (स० २०१६, पृ० ५६), ले० चन्द्रप्रकाश सिंह, प्र० रामदयाल विश्वकर्मा, गुर्जर भारती प्रकाशन, बडौदा, पात्र पु० ८, स्त्री १, अक १, दृश्य ५।
घटना-स्थल सरायन नदी का तट, मदिर का प्रागण, द्वारिकापुरी का मदिर।

प्रस्तुत नाटक कविवर नरोत्तम के चरित्र को बिना कलक के चन्द्रमा की तरह प्रदर्शित करता है। नरोत्तम जी एक उच्चकोटि के ब्राह्मण हैं। घर मे अपार आर्थिक कष्ट है। एक दिन उनकी स्त्री बडी दुखी दिखाई देती है। नरोत्तम जी जप-तप के पश्चात् इस दुख का कारण पूछते हैं। ब्राह्मणी आँसू पोंछकर जवाब देती है 'महाराज बरसो तक आपने केवल एक बार सवा के चावल का भोजन पाया है। कल एकादशी निर्जला रहे और आज भी केवल आपने तुलसी दल का ही भोग लगाकर ग्रहण किया है।' इस बात को सुनकर नरोत्तम अपनी पत्नी से कहते हैं 'प्रिये, ब्राह्मणो का तुलसी से बढकर दूसरा और कोई प्रिय भोजन नही है।'

सुदामा-चरित्र के रचयिता कवि नरोत्तमदास और गोस्वामी तुलसीदास का मिलन नैमियारण्य के एक मदिर मे होता है। दोनो के प्रयास से रामलीला की जाती है। सुदामा-चरित्र का भी अभिनय होता है। नरोत्तमदास, उनके लघुभ्राता कथावाचक एव जयरामपुर निवासी रामसिंह भारतीय सस्कृति और धर्म की रक्षा के लिए तीर्थों मे भ्रमण करते हैं। नरोत्तमदास को द्वारका के मदिर मे अखड अनादि भारत देश की झाँकी दिखाई पडती है। भारत के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ नाटक समाप्त होता है।

इतने मे उनके भाई कथावाचक द्वारा महाकवि तुलसीदास के नैमियारण्य मे आगमन का पता लगता है। नरोत्तम उनके दर्शन करते हैं और परस्पर सभी प्रकार की बाते

होती है। नरोत्तम का 'सुदामा-चरित्र' नाटक के रूप में खेला जाता है। इससे कविवर मुग्ध हो जाते हैं और उन्हें अपना सारा दुःख भूल जाता है।

कवि विद्यापति (सन् १९००, पृ० ७५), *लें० :* रामशरण जी 'आत्मानन्द'; *प्र० :* उपन्यास बहार आफिस, काशी; *पात्र :* पु० ७ स्त्री ३; *अंक :* ३, *दृश्य :* ८, १, ३।
घटना-स्थल : राजदरबार, घर।

इस नाटक में कवि विद्यापति को सच्चे प्रेमी और आदर्श राजकवि के रूप में चित्रित किया गया है। इस में कवि विद्यापति और अनुराधा नामक लड़की की प्रेम-कथा है। कवि विद्यापति शिवसिंह के राजकवि हैं और वे अपने काव्य-बल से रानी लक्ष्मी को भी लोक-निन्दा से बचाकर जनता का प्रिय बना देते हैं। जो कार्य स्वयं शिवसिंह नहीं कर पाते उसे विद्यापति पूरा करते हैं।

कश्मीर के शहीद (सन् १९६५, पृ० १०२), *लें० :* बन्धु प्रसाद; *प्र० :* बिहार ग्रन्थ कुटीर पटना-४; *पात्र :* पु० ११, स्त्री ५; *अंक :* ३, *दृश्य :* १६, १०, ११।
घटना-स्थल : कश्मीर, युद्धक्षेत्र, पथ।

इस राजनीतिक नाटक में कश्मीरियों की देशभक्ति दिखाई गई है। इसमें भारतीय कश्मीर पर पाकिस्तान का प्रथम बार आक्रमण होता है। पाकिस्तानियों द्वारा प्रेरित कबायली जम्मू और कश्मीर पर आक्रमण कर वहां की असंख्य जनता को मौत के घाट उतार देते हैं। नाटक में एक वृद्ध एक पथिक से बीती हुई अपनी बातें बताता है। छाया, किरण, चन्दन आदि के शहीद हो जाने की इसमें कथा है। एक वृद्ध को पश्चात्ताप है कि वह विश्वासघाती महावत को मौत के घाट न उतार सका।

कसाई (पृ० ६१), *लें० :* पं० मोहनलाल महतो वियोगी; *प्र० :* ज्ञानपीठ लि०, पटना; *पात्र :* पु० १२, स्त्री २; *अंक :* ३, *दृश्य :* ३ ३, ३।
घटना-स्थल : कलकत्ता, सेठ का घर, कसाई का घर।

इस नाटक में बंगाल के अकाल का भीषण दृश्य दिखाया गया है। जापानी आक्रमण से घोर आतंक फैलता है। बंगाल की नदियों की नावों को इधर-उधर हटा दिया जाता है। बहुत सी नावें डुबा दी गयीं। शहर का एक बदनाम और डरावना मुहल्ला है। बड़ा सा पुराना घर, और उसके भीतर एक गद्दी तथा गुप्त कोठरी है। तीन-चार डरावने व्यक्ति फर्श पर बैठे हैं। सेठ सियारामशरण एक कुर्सी पर बैठे माला फेर रहे हैं। रहीम सेठ के पास लड़कियां लाता है, जो बहुत पीटी गई है। एक लड़की को सेठ तमाचे से मारता है।

शहर के भेड़िये मेमने की खाल ओढ़े देहातों के आस-पास घूमते नजर आते हैं। ये भेड़िये नाना रूप धारण करते हैं—त्यागी बनकर ये गांव में प्रवेश करते हैं, वहां खुराक मिल जाती है और शिकार भी पा जाते हैं। अकाल और संकट के दिनों में ये भेड़िये गावों को जी-भरकर लूटते हैं। सेठ कसाई के कमरे में बैठा है, दो लड़कियां पंखा कर रही हैं। सेठ मेले के विषय में जुम्मन से पूछता है—जुम्मन कहता है कि तीन बच्चे और दो छोकरियां रो रही थीं। उनको पीटा गया जिससे वे मर गयीं। सेठ भी प्रसन्न होते हैं। जुम्मन बहुत-सी छोकरियों को पीटता हुआ सेठ जी के पास लाता है। जुम्मन उस छोकरी को धक्के मारकर आगे बढ़ाता है जिसे आदित्य के कमरे में हरण किया जाता है। वह छोकरी सेठ जी को पहचान रही है इसलिए सेठ जी उसका कत्ल कराना चाहते हैं। इसी समय कई नकाबपोश आकर सेठ को मारने के लिए तैयार हो जाते हैं। कजरी नामक छोकरी खुद पिस्तौल मांगकर उस कसाई सेठ को मार देती है।

द्वितीय महायुद्ध तेजी से चल रहा है। भाड़े के सिपाही साग-मूली की तरह कट रहे हैं और बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ गद्दीदार कुर्सियों पर आराम से बैठकर योजनाएं बना रहे हैं। इस मनहूस छाया को धनी व्यक्ति देखकर प्रसन्न हो रहे हैं और गरीब कांप रहे हैं। इसी वातावरण में यह नाटक समाप्त होता है।

कांग्रेसी हौवा (पृ० ६६), ले० सुबोध मिश्र 'मुरेश', प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, पात्र स्त्री ४, पु० ७, अंक नहीं, दृश्य ६।
घटना-स्थल जमींदार का मकान, श्मशान घाट।

इस प्रहसन में धनी जमींदार की मूर्खता और इन्द्रिय-लोलुपता का दुष्परिणाम दिखाया गया है। इसमें एक मूर्ख किन्तु धनी जमींदार स्त्री का प्रेम पिपासु बनता है। महा धूर्तराज ज्योतिषाचार्य तथा अकड़ बैं दुशान वैद्यराज जमींदार से ३ हजार रुपए लेकर उसके विवाह की युक्ति बनाते हैं। वे धन-लोलुप रामरूप को एक हजार रुपये देकर उसकी पुत्री ललिता के बदले उसके नौकर कलुआ की शादी जमींदार के साथ कर देते हैं। यह रहस्य न तो रामरूप और न ज्योतिषाचार्य ही जानते हैं। क्योंकि यह चालाकी रामरूप की पत्नी पार्वती तथा ललिता की थी। वहाँ पर कांग्रेसी हौवा के डर से जमींदार व्याकुल हो जाता है। कलुआ भी जमींदार से बात नहीं करता जिसमें जमींदार काफी सम्पत्ति कलुआ को खुश करने के लिए देता है। अकस्मात् जमींदार की तीसरी पत्नी के मरने का झूठा प्रचार ज्योतिषाचार्य करते हैं। श्मशान घाट पर वह जिन्दा हो जाती है जिससे सब डरकर भाग जाते हैं और कलुआ सारी सम्पत्ति लेकर पार्वती के पास आ जाता है। पार्वती सारी सम्पत्ति किसानों में बाँट देती है और उधर जमींदार अपनी सम्पत्ति के विनाश से दुखी होकर मर जाता है।

काँटा दामन फूल (सन् १९६१, पृ० ८३), ले० सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० ६, स्त्री २, अंक २, दृश्य ३।
घटना-स्थल जंगल, गाँव।

इस नाटक में डाकू चरित्र की एक झाँकी के साथ सौतेली माँ का कटु व्यवहार दिखाया गया है। फूल अपनी सौतेली माँ रूपेली से दुखी होकर घर से भाग जाता है और वह डाकू हो जाता है। बादर के अन्त में डाकू फूल अपनी प्रेमिका गौरी को लेने आता है किन्तु गौरी डाकू फूल को ठुकराकर मानवीय प्रेम को पवित्र रखती है।

कागजी सिक्का (सन् १९६७, पृ० ७२), ले० शारदेन्दु रामचन्द्र गुप्त, प्र० ठाकुर-प्रसाद एण्ड संस, बनारस, पात्र पु० ६, स्त्री १, अंक ६, दृश्य १७।
घटना-स्थल घर, जंगल, डाकुओं की गुफा।

इस नाटक में डाकू की दुर्दशा और ईमानदारों की सुख शांति दिखाई गई है। मोहन और चन्दू दो सगे भाई हैं। चन्दू अपने परिश्रम की कमाई में अपना और अपने भाई का पेट भरता है। उसका भाई प्रथम तो निठल्ला रहता है। उसकी सगाई मेलटू भंगी की पुत्री सुशीला से हो चुकी है। चन्दू सेठ लाला वीरेन्द्र के यहाँ ईमानदारी और वफादारी से काम करता है।

मोहन चन्दू को मारकर वर्षा में घर से बाहर निकाल देता है। उसे साँप डसता है। उपचार करने पर वह अच्छा होता है। मोहन भी अपना हाथ जला लेता है। सुशीला दोनों को अच्छा कर देती है। मोहन बनवारी के साथ जुआ, चोरी द्वारा धन कमाने लगता है किन्तु घरवालों को धनार्जन का साधन नौकरी बताता है। एक दिन बनवारी नदी में सब कुछ बक देता है। चन्दू चोरी के धन को बाहर फेंकता है और मोहन को सच्चरित्र होने की चेतावनी देता है।

मोहन प्रतापसिंह डाकू के गिरोह में जाकर सेठ वीरेन्द्र के घर डाका डालता है। सुशीला मोहन की खोज में डाकुओं के अड्डे पर पहुँचती है और डाकुओं का पता लगाकर घर लौटती है और आग में कूदकर मर जाती है। चन्दू उन कागजों के सिक्कों को छूता भी नहीं।

कामना (सन् १९२४, पृ० ९४), ले० जयशंकर प्रसाद, प्र० भारती भण्डार, इलाहाबाद, पात्र पु० १५, स्त्री १०, अंक ३, दृश्य ६, ८, ८।
घटना-स्थल फूलों का द्वीप, समुद्र का किनारा घर, मंदिर, जंगल में कुटी, वृक्षकुंज।

इस प्रतीक नाटक में मनोवृत्तियों का खेल दिखाया गया है। नाटक मानव जाति के उस जीवन से प्रारम्भ होता है, जिसमें लोगों को प्रकृति से प्रेम था। समुद्र के किनारे फूलों के द्वीप में हरे-भरे खेत, छोटी-छोटी पहाड़ियों में लुढ़कते हुए झरने, फलों से लदे वृक्षों की पंक्ति, भोली गउओं और उनके प्यारे बच्चों के झुण्ड, धवल धूम और तारों से जगमगाती रात को छोड़कर अन्यत्र जाने की उन्हें इच्छा भी नहीं होती। उस द्वीप के लोग 'यथालाभ संतुष्ट' रहते हैं, कोई किसी से मत्सर नहीं करता है। समस्त जाति परिवार के सदृश सप्रेम निवास करती हुई उपासना-मंदिर में पूजा करती है। इस मंदिर की व्यवस्थापिका है 'कामना'।

कालान्तर में विलास नामक परदेशी विदेश से आता है और द्वीप-निवासियों को स्वर्ण के प्रकाश में मानिक-मदिरा दिखाकर विलासी जीवन की प्रेरणा देता है। अपव्यय से अभाव का अनुभव होता है, जिसकी पूर्ति के लिए हिंसा आवश्यक समझी जाती है। वनलक्ष्मी इसका विरोध करती हुई कहती है, 'आग, लोहे और रक्त की वर्षा की प्रस्तावना न करो।' इसी प्रकार वृद्ध विवेक भी बीच-बीच में विलास के प्रस्तावों का विरोध करता रहता है, किन्तु वनलक्ष्मी और विवेक की बातें कोई नहीं सुनता। उन्हें पागल समझा जाता है। मद्यपान, जीव-हिंसा और व्यभिचार का सर्वत्र प्रचार होता है। शान्तिदेवी की हत्या की जाती है। करुणा व्याकुल हो वन में शरण लेकर जंगली फलों पर निर्वाह करती है। वह आधुनिक सभ्यता का विवेचन करती हुई कहती है, 'जीवन के समस्त प्रश्नों के मूल में अर्थ का प्राधान्य है। मैं दूर से उन धनियों के परिवार का दृश्य देखती हूँ। वे धन की आवश्यकता से इतने दरिद्र हो गए हैं कि उसके बिना उनके बच्चे उन्हें प्यारे नहीं लगते। मैं अपनी निर्धनता के आंसू पीकर संतोष करती हूँ और लौटकर इसी कुटी में पड़ी रहती हूँ।' स्त्रियां वैवाहिक जीवन को घृणा की दृष्टि से देखती हैं, और सर्वत्र, क्रूरता और दम्भ का प्रचार करती हैं। विवेक नगर-रूपी अपराधों के घोंसले से भाग जाता है। भागने से पूर्व जनता को संदेश देता जाता है कि 'लौट चलो उस नैसर्गिक जीवन की ओर; क्यों कृत्रिम के पीछे दौड़ लगा रहे हो?'

फूलों के उस द्वीप में सर्वत्र अभाव, अशांति और दुख-ही-दुख है। उस द्वीप पर शासन करने वाली रानी कामना का हृदय चंचल है। चांदनी के समुद्र में उसका मन मछली के सदृश तैरता है, किन्तु उसकी प्यास नहीं बुझती। संतोष के पूछने पर कामना कहती है, 'मेरे दुखों को पूछकर और दुखी न बनाओ। जहां की रानी इतनी खिन्नमना है वहां की प्रजा की क्या दशा होगी!' सेनापति विलास अपने एक सैनिक की स्त्री को बलात् पकड़कर ले जाता है। विलास की स्त्री लालसा एक सैनिक के साथ यह कहती हुई चल पड़ती है, 'तुम्हारे सदृश पुरुष के साथ चलने में किस सुन्दरी को शंका होगी।' विलास अपनी स्त्री की दुर्वासना का समाचार सुनकर क्रुद्ध होता है और उसका वध करने को उत्सुक होता हुआ कहता है, 'ओह अविश्वासी स्त्री, तूने मेरे पद की मर्यादा, वीरता का गौरव और ज्ञान की गरिमा सब डुबा दी।'

शांतिदेवी की मृत्यु के उपरान्त कई दुर्वृत्त मद्यप करुणा का पीछा करते हैं। वह अबला धर्म बचाने के लिए भागती जाती है, किन्तु मद्यप कब माननेवाले! विवेक उसको बचाता है और भूकम्प के कारण मद्यपों का नगर नष्ट हो जाता है। नाटक के अन्त में कामना अपने दुखी राज्य में व्याकुल हो जाती है और अपने पिता विवेक की गोद में आश्रय ले लेती है। जनता विवेक का यह उपदेश ध्यान से सुनती है "मनुष्यता की रक्षा के लिए, पाशवी वृत्तियों का दमन करने के लिए राज्य की अवतारणा हो गई। परन्तु उस की आड़ में दुर्दमनीय नवीन अपराधों की सृष्टि हुई। इसका उद्देश्य तब सफल होगा जब कामना अपना दायित्व कम करेगी, जनता को, व्यक्ति को आत्मसंयम आत्मशासन सिखाकर विश्राम लेगी।'

नाटक के अन्त में विलास और लालसा के अत्याचारों से पीड़ित जनता उन्हें अपने देश से निकाल देती है और वे एक नौका पर आरूढ़ होते हैं। जनता मदिरा-पात्र तोड़ डालती है और स्वर्ण की राशि फेंक-फेंककर

नाव पाट देती है, जिससे लालसा क्रन्दन करती है। इस प्रकार कृत्रिमता के द्वीप से विलास की नई सभ्यता भाग जाती है और द्वीपवासी विवेक के कथनानुसार कृत्रिमता से नैसर्गिकता की ओर मुड जाते हैं।

कामिनी कुसुम (सन् १९६४, पृ० ५६), ले० हरनारायण चतुर्वेदी, प्र० डी० बी० एच० एण्ड फ्रेंड्स चौक, बनारस, पात्र पु० ८, स्त्री ७, अक ३, गर्भांक ४, ४, ५।
घटना-स्थल राज भवन, घर की बैठक, विदूषक का घर।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेम-विवाह की विजय दिखाई गई है। मधुपुरी का राजकुमार कुसुमसेन वर्धमान देश की राजकुमारी कामिनी से विवाह करना चाहता है। कामिनी भी कुसुमसेन की प्रशसा सुनकर उनका साक्षात्कार करना चाहती है किन्तु उसकी सखी लीला उसे समझाती है कि पहले राजा-रानी देख-सुनकर उसके विषय मे जानकारी प्राप्त कर लें तब तुम देखना। पर कामिनी छत पर से वृक्ष तले खडे कुसुमसेन को देखकर उस पर मोहित हो जाती है। मालिन की युक्ति से कुसुमसेन कामिनी के मन्दिर मे पधारते हैं और दोनो का एकान्त मे वार्तालाप होता है। कुसुमसेन और मालिन को चौकीदार बन्दी बनाकर राजा वीर सिंह के पास ले जाते हैं। राज दरबार मे महाराज वीरसिंह बैठे हैं और जमुना भाट मधुपुरी से लौटकर सन्देश देता है कि महाराज जिसके बुलाने के हेतु आपने मुझे भेजा था वह यहा स्वय पधारे है। यहा आने पर मुझको विदित हुआ कि उनको चोर समझ कर कारागार दे दिया गया है।

राजा वीरसिंह अपनी पुत्री से क्षमा-याचना करते हैं तथा कामिनी और कुसुमसेन का विवाह हो जाता है।

कामिनी मदन (सन् १९०७, पृ० ४७), ले० हरिहर प्रसाद, प्र० अग्रवाल प्रेस, गया, पात्र पु० ७, स्त्री २, अक ३, दृश्य ७, ६, ४।
घटना-स्थल रास्ता, मकान, हॉस्पिटल।

इस नाटक मे कामिनी और मदन की प्रणय-कथा के द्वारा नई शिक्षा प्रणाली का वैवाहिक पद्धति पर प्रभाव दिखाया गया है। पूजा करने के लिए गई हुई कामिनी के साथ छात्रो का अभद्र व्यवहार देखकर मदन उसकी रक्षा करता है। दोनो प्रथम मिलन मे ही एक-दूसरे के प्रति आकृष्ट हो जाते हैं और दूसरी बार के एकान्त मिलन मे वे अपने प्रेम को स्थायी रखने के लिए एक-दूसरे से अगूठी बदलकर परिणय-सूत्र मे बध जाते हैं। परन्तु समाज के सम्मुख उनका विवाह सम्पन्न नही हुआ है। अत दासी प्रेम-विवाह की अवहेलना कर सीता-सावित्री आदि का आदर्श उसके सम्मुख प्रस्तुत करती है।

अचानक मदन के पिता की मृत्यु का समाचार मिलता है और मदन की रेल-दुर्घटना होती है। यहा कामिनी के पिता जयचन्द जी के घर मे आग लगने से बाप बेटी बेघर-बार हो जाते हैं। निर्धनता के कारण जयचन्द बारह वर्षीया बेटी कामिनी का विवाह ६० साल के वृद्ध हरपचन्द के साथ करना चाहता है। विवाह-मडप मे जब पाणिग्रहण की तैयारी होती है उसी समय मदन पहुँचकर कामिनी की रक्षा करता है और दोनो का विधिवत् विवाह होता है।

कायाकल्प काल (सन् १९७१), ले० राजेन्द्र कुमार शर्मा, प्र० आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अक ३।
घटना-स्थल हिमालय, घर।

इस सामाजिक नाटक मे बूढा साधु के प्रताप से जवान बनता है किन्तु पुन जवानी मे बूढा हो जाता है।

इसमे बूढा गोवरधनलाल एक ज्योतिषी के झांसे मे आकर हिमालय के एक साधु के पास जाता है जिसके पास बूढे से जवान बनाने की बूटी है। गोवरधनलाल कुछ दिना के बाद २५ वर्ष के जवान से लगते है किन्तु एक दिन क्रोध मे आ जाने से पुन बूढे हो जाते हैं और अपनी भूल पर पछताते है।

काल कन्या (पृ० ६७), ले० रासबिहारी लाल, प्र० जनसम्पर्क विभाग, बिहार राज्य, पटना, पात्र पु० ११, स्त्री ४, अक ४, दृश्य ३, ३, ३, ३।
घटना स्थल बुन्देलखण्ड मे राजा का महल,

नगर, इलाहाबाद, जैतपुर का दुर्ग ।

इस ऐतिहासिक नाटक में छत्रसाल के साहसपूर्ण कृत्य दिखाये गए हैं। बुन्देलखण्ड का व्याघ्र राजा छत्रसाल इलाहाबाद में सूबेदार मुहम्मद खा बेगस की चोटें खाकर भी अपने कांपते हुए कमजोर हाथों से ढाल तलवार लेकर, वेग से आगे बढ़ता है पर वह नौजवान बेगस खा का झपट्टा सह नहीं सकता है। फिर भी लड़खड़ाकर गिरते-गिरते भी बाजीराव को पुकारता है—

'जैसी गति गजराज की, वैसी ही गति आज ।
बाजी जाति बुंदेल की, बाजी राखो लाज ।'

बाजीराव राजा छत्रसाल की पुकार सुनते ही घोड़े की रास मोड़कर मराठा घुड़सवार, बरछियां चमकाते बुंदेलखण्ड की चंचल धरती की ओर दौड़ पड़ते हैं। राजा छत्रसाल की पुरानी शान रह जाती है और बेगस जैतपुर के दुर्ग में हाथ पैर पटकता रह जाता है। इसी विजय के उपलक्ष्य में एक नृत्योत्सव होता है और महान् बाजीराव के सामने क्षणमात्र में ही बेगस आत्म-समर्पण कर देता है।

कालदहन (सन् १९५१, पृ० ५२), ले० : केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'; प्र० : ज्ञानपीठ प्रकाशन, पटना; *पात्र* : पु० ३, स्त्री ३, अंक रहित ।

इस प्रतीकात्मक गीतिनाट्य में पुरुषार्थी की विजय भाग्यवादी के ऊपर दिखाई गई है। यह नाटक वेदान्त के आधार पर गांधीवाद की पुष्टि करता है। ये कथित पात्र मानव के क्षेत्र में मिलनेवाले विविध मानसिक तथा प्राकृतिक गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सब पात्रों के माध्यम से एक दीर्घ काल की कहानी को रूप दे दिया गया है। इस नाटक में अतीत अपने यज्ञकुण्ड को पुनः प्रज्वलित करना चाहता है। चेतना उद्दीपन का कार्य करती है। उस अवसर पर पौरुष भाग्यवादी बनकर एक वृक्ष से बंधा होता है। समय के साथ पौरुष अपनी शृंखलाओं के बन्धन से मुक्त हो दिग्विजय करता है। यहीं इस का आशामय सुखद अन्त है।

काला राजा (सन् १९७१, पृ० १३५), ले० : ललित मोहन थपल्याल; प्र० : राधाकृष्ण प्रकाशन; *पात्र* : पु० १५, स्त्री २; *अंक* : ४, *दृश्य* : ३, ४, ७, ५ ।
घटना-स्थल : प्रतीकात्मक मंच ।

इस में नाटककार ने ग्रामीण समाज के संघर्ष द्वारा देश की व्यापार सम्बन्धी राजनीतिक चालों को स्पष्ट किया है। काला राजा तानाशाही का प्रतीक है जिसके माध्यम से यह दिखाया गया है कि कोई सत्ता केवल झूठे विचार के बल पर अधिक दिन तक स्थिर नहीं रह सकती।

सेठ गल्लाराम गांव का शोषण करता है। वह गांव में फूट डाल देता है जिससे गांव के मुखिया 'प्रधान' की बात कोई नहीं मानता। इसी मध्य 'कालाराजा' का शासन हो जाता है। लेकिन अपने अत्याचारों से वह जनता के हृदय पर अधिकार नहीं जमा पाता। गांववाले इस शासन का विद्रोह करते हैं। प्रधान अपना बलिदान करता है तो गांव की सारी जनता इस शासन को समाप्त करके ही शान्त होती है।

कालिदास (सन् १९५०, पृ० ३८), ले० : उदयशंकर भट्ट; प्र० : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; *अंक और दृश्य रहित* ।
घटना-स्थल : नहीं है।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के राजकवि कालिदास के जीवन पर आधारित यह एक संगीत रूपक है। प्रारंभ में जन-चर्चा के साथ चीनी यात्री फाह्यान द्वारा कालिदास के समय की सुख-समृद्धि का दिग्दर्शन कराया गया है। तत्पश्चात् सूत्रधार कालिदास की ऋतुसंहार, मेघदूत, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, कुमारसंभव तथा रघुवंशम् आदि अमर कृतियों के मार्मिक उद्धरणों का वाचन करता है। इस प्रकार कालिदास के व्यक्तित्व तथा कृतियों के प्रेरणा-स्रोतों का दर्शन होता है। अधिकांश स्थल मूल रचनाओं के अनुवाद मात्र हैं।

काली आकृति (सन् १९५६, पृ० ६१), ले० : राजकुमार; प्र० : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; *पात्र* : पु० ७, स्त्री नहीं; *अंक* : ३, *दृश्य* : ४, ३, ४ ।

घटना-स्थल कमरा, मकान, थाना, होटल आदि।

नाटक मे रहस्यपूर्ण दृश्यों का संयोजन है। इसमें वास नामक व्यक्ति काली आकृति बनाकर सेठ चादमल को डराता है तथा उसका सारा सोना जबरदस्ती लेकर चला जाता है और बम्बई से गायब हो जाता है। बास के साथ ओझा तथा गोठी का पूरा-पूरा हाथ होता है। सेठ चादमल थाने मे जाकर दरोगा से सारी बात बताता है। उसकी रिपोट लिखी जाती है। सी० आई० डी० इन्सपेक्टर मिस्टर पाल मामले की छानबीन बडी कुशलता से करते हैं जिससे रूप बदलकर ठगनेवाले वास, ओझा और गोठी गिरफ्तार होते हैं। सेठ चाँदमल का चोरी मे गया हुआ सोना मिल जाता है। तथा कुशल सी० आई० डी० इन्सपेक्टर पाल साथ ही साथ सोना लेकर भागनेवाले सेठ चाँदमल को भी गिरफ्तार कर लेते हैं जिससे सब लोग मिस्टर पाल की कार्य-कुशलता की सराहना करते हैं।

काली नागिन (पृ० १३६), ले० मु० जलाल अहमद साहब, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ११, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ६, ८, ७।
घटना-स्थल बाग गजन्फर, ख्वाबगाह, महल जरीर।

इस नाटक मे स्त्री को काली नागिन मानकर इससे दूर रहने का उल्लेख है। इस नाटक के पहले अक मे शेरसिंह बिगडेदिल से कहता है देखो यहा रग ही कुछ और है। इससे बिगडेदिल खुश होता है। इस नाटक मे प्रेम की कहानी है। औरतों का जीवन कैसा है, उन पर विश्वास करना उचित है या अनुचित यह बताया जाता है। औरत को काली नागिन की उपमा दी गयी है जो सबसे प्यार का सौदा करती है।

काली नागिन (सन् १९२४, पृ० १३०), ले० किशन लाल, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ७, स्त्री २, *अक* ३, *दृश्य* , ७, ६, ६।

घटना-स्थल शाही महल, जगल, मिस्र की नील नदी, मकान खिडकीवाला।

इस नाटक मे दिलफरेब मनोवृत्ति को काली नागिन सिद्ध करने का प्रयास है। यह नाटक प्रतीक पात्रो से भरा पडा है। मिस्र देश के महल मे छलावा और जातशरीफ तथा दिलनवाज और बिगडेदिल गले मे बाहें डाले गीत गाते हैं। एक बूढे का घर लूट लिया जाता है और जब वह फरियाद करता है तो जातशरीफ बूढे का पकडकर दण्ड देना चाहता है। एक स्थान पर दिलफरेब और वहर का वार्तालाप होता है। दिलफरेब कहती है—

'तूने सर काटा जो लाखो
एक सर के वास्ते।'

इसी प्रकार तोफीक और गजन्फर मे वार्तालाप होता है। गजन्फर तोफीक से कहता है कि तुम मेरा सर काट डालो।

गजन्फर अन्त मे कहता है—'अरी दिलफरेब, तू मुझे धोखा दे रही है, वह मिस्र की मल्का दिलफरेब न थी बल्कि वह एक काली नागिन थी जिसकी मुहब्बत ने मुझ पर जहरे-कातिल का काम किया, मेरी जान लेने का सामान किया।'

नाटक की नायिका दिलफरेब अन्त मे आत्महत्या कर लेती है।

काल्पी (सन् १९३५, पृ० ८३), ले० भगवतीप्रसाद पान्थरी, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ४, २, ५।
घटना-स्थल राजकीय प्रकोष्ठ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे असत्य पर सत्य की विजय दिखाई गई है। महाराज रघुनाथ (तजोर के महाराजा) राजा सोलागा की भेजी हुई छद्मवेशी बेटी विलासिनी के रूप पर मुग्ध हो जाते हैं। विलासिनी झूठे आरोप लगाकर रानी काल्पी (राजा रघुनाथ की रानी) से राजा रघुनाथ का हृदय फेर देती है। महाराजा, रानी काल्पी पर आरोप लगाकर निष्कासित कर देते हैं जिसके बारे मे आत्महत्या कर लेने की अफवाह फैल जाती है। अवसर देखकर विलासिनी महाराजा रघुनाथ को जहर देना चाहती है परन्तु यथासमय भेद खुल जाने पर उसे स्वय उस

जहर को पीना पड़ता है। मरते समय विलासिनी यह रहस्योद्‌घाटन करती है कि वह राजा सोलांगा की बेटी न होकर दक्षिण की एक वेश्या है। सोलांगा ने उनके साथ छल किया है। महाराजा रघुनाथ सोलांगा पर आक्रमणकर विजयी होते हैं और महारानी काल्पी को पुनः प्राप्त करते हैं। काल्पी ने आत्महत्या न कर अपने को भूमिगत कर लिया था। उन्हें विश्वास था कि एक-न-एक दिन असत्य की पराजय और सत्य की विजय अवश्य होगी।

किरणमयी (सन् १९१४, पृ० ६८), *ले०* : तुलसीदास स्वर्णकार; *प्र०* : रेजीमेन्टल छापाखाना, अन्धेर देव, जबलपुर; *पात्र* : पु० १, स्त्री ६; *अंक* : ४, *दृश्य* : २, ८, १, २।
घटना-स्थल : जंगल मार्ग, बादशाह अकबर का महल, नगर का संकीर्ण और अन्धेरा मार्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक में एक क्षत्रिय बाला विलासी सम्राट से अकेले अपने सतीत्व की रक्षा करती है। अकबर का लोहा जब सारे हिन्दू राजा मान चुके थे उस समय भी राजपूत-कुल-केशरी महाराणा प्रताप सिंह स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अकबर के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे। जीवन पर्यन्त अकबर जैसे शक्तिशाली शत्रु से टक्कर लेकर विजय पाते रहे। इन्हीं के छोटे भाई शक्तिसिंह की नारी-कुल-शृंगार कन्या किरणमयी थी। शक्तिसिंह अपने ज्येष्ठ भ्राता प्रतापसिंह से एक साधारण बात पर वैमनस्य हो जाने के कारण अकबर के पास जाकर मुगल सेना के एक अधिकारी के रूप में महाराणा प्रताप सिंह से प्रतिशोध लेने के लिए दिल्ली में रहते हैं। वह अपनी कन्या किरणमयी का विवाह जोधपुर नरेश के छोटे भाई प्रसिद्ध वीर कवि राजा पृथ्वीसिंह के साथ करते हैं। पृथ्वीसिंह शाही प्रथानुसार दरबार में हाजिरी देने के लिए आगरे में रहते हैं। विवाह के बाद नवदम्पति इच्छित पदार्थ पाकर प्रसन्न हुए। किरणमयी के अप्रतिम सौन्दर्य की चर्चा अकबर के कानों तक पहुँचती है। बादशाह की इच्छा से किरणमयी को जोर देकर नौरोज के मेले में बुलाया जाता है जहाँ वह अपनी पाप-वासना की पूर्ति करना चाहता है। अकबर की वासनामयी बातें सुनते ही वह सम्राट को धर दबाती है और उसके वध से सती नारियों के साथ हुए अत्याचारों का प्रतिशोध लेना ही चाहती है कि वह किरणमयी को माँ पुकारकर क्षमा याचना करता है। किरणमयी उसे छोड़ देती है। अकबर अन्त में कहता है कि मैं नहीं जानता था कि राजपूत स्त्रियाँ अपने धर्म की रक्षा स्वयं करना जानती हैं।

किस का हाथ (सन् १९६७, पृ० १०७), *ले०* : सतीश दे; *प्र* : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ६; *पात्र* : पु० ७, स्त्री २; *अंक* : ३।
घटना-स्थल : घर, पुलिस स्टेशन।

इस जासूसी नाटक में हत्या, षड्‌यंत्र आदि का अन्त में रहस्योद्‌घाटन किया गया है। अमृतराय एक व्यापारी हैं जिन्हें रहस्यमयी एवं दुर्लभ वस्तुओं के खरीदने का शौक है। अमृतराय अपनी साठवीं वर्षगाँठ मना रहे हैं। उसी समय फ्राटन नामक प्रसिद्ध जादूगर पाँच हजार रुपए में दुर्जन मिश्र के माध्यम से उन्हें एक विचित्र हाथ बेचता है। शामुली पति से मना करती है, पर अमृतराय पत्नी की बात नहीं मानता है। पुलिस धोखेबाज जादूगर का पीछा करती है किन्तु वह चतुराई से निकल भागता है।

थोड़े दिन बाद अमृत के पुत्र रंजन की हत्या हो जाती है। अमृतराय का विनोदी नौकर बुद्धू देखता है कि खरीदा हाथ उसका गला दबा रहा है। पुलिस उस हाथ की खोज कर रही है। पर कुछ पता नहीं चलता। बुद्धू, अमृतराय और दुर्जन पर पुलिस को शक है। कुछ दिन बाद अमृतराय की पुत्री मधुरता का भी उसी प्रकार कत्ल हो जाता है। पुलिस-इन्सपेक्टर मामलों की छानबीन करते हुए शामुली को आत्महत्या से बचाता है और अन्त में शामुली को ही नकाबपोश स्थिति में गिरफ्तारकर अमृतराय की जान बचाता है।

अन्त में यह रहस्य खुलता है कि दुर्जन मिश्र और उसकी बहन शामुली ने अपने सम्बन्धी की हत्या का बदला लेने के लिए

यह सब षड्यंत्र रचा था। इसका अभिनय फाइन आर्ट्स सेंटर, दिल्ली के रंगमंच पर ८ मई, सन् १९६७ ई० को किया गया।

किसान (पृ० ६४), ले० प० शिवदत्त मिश्र, प्र० ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स, बुकसेलर, वाराणसी, पात्र पु० ५, स्त्री २, अंक १, दृश्य १६।

इस सामाजिक नाटक में विदुषी स्त्रियों की बुद्धिमत्ता और कार्य-कुशलता के बल पर व्यभिचारियों से अपने धर्म की रक्षा करते दिखाया गया है। इसमें शोभाराम नामक किसान अपनी बहन चम्पावती के अचानक गुम हो जाने पर लोक-लज्जा के कारण पत्नी सहित घर छोड़कर अन्यत्र रहने लगता है। चंपावती दुष्ट नारायण के पंजे में आ जाती है। वह उससे व्यभिचार करना चाहता है किन्तु धमपाल की मदद से उसे छुटकारा मिल जाता है। अचानक चंपावती फिर कुछ बदमाशों के चक्कर में आ जाती है जहाँ उसे गणिका का काम करना पड़ता है। शोभाराम अपनी बहिन को गणिका-वेश में देखकर नाता तोड़ लेता है। उस पर चम्पावती को बड़ा कष्ट होता है और वह अन्त में दुखी होकर वैरागिन हो जाती है तथा साथ ही धर्मपाल भी वैरागी बन जाता है और दोनों को भगवान विष्णु के दर्शन होते हैं।

किसान (सन् १९५०, पृ० १२०), ले० शील, प्र० लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र पु० ३, स्त्री ८, अंक ३। घटना-स्थल गाँव, पंचायतघर, चौधरी का कक्ष।

इस राजनीतिक नाटक में भारतीय किसान का नया संघर्ष यथार्थ भूमि पर चित्रित किया गया है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद प्रथम बार देश में ग्राम पंचायतों का चुनाव होता है। चुनाव में सूदखोरों, जमींदारों और पुलिस के एजेंटों का प्रभुत्व रहता है। प्रथम अंक में उत्तरप्रदेश के एक गाँव के जमींदार अगर्दसिंह, सूदखोर साहू गयादीन, पंचायत सरपंच केदार अपने घृणित तरीकों से किसानों की जमीन अपहरणकर धीरज चौधरी के परिवार को आपत्तियों में डाल देते हैं।

दूसरे अंक में चौधरी की पत्नी सुखिया शोषकों के अत्याचार से पागल हो जाती है। वह अपने युवा लड़के को संघर्ष के लिए प्रेरित करती है। इस पर गाँव के किसान धीरज के आसपास एकत्रित होकर शोषकों के प्रति खुल्लमखुल्ला विद्रोह करते हैं।

तृतीय अंक में पंचायत की विजय के साथ ट्रैक्टर पर पंचायत का कब्जा हो जाता है। चौधरी अगर्दसिंह, साहू गयादीन और केदार के षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ करता है और पंचायत के पुलिस स्वयंसेवकों द्वारा चोरी, डाका, उत्पात आदि से गाँव की रक्षा करता है। उसी समय चौधरी के भतीजे, जोधा के पुत्र पूरन की पत्नी बारहवें पुत्र को जन्म देती है। इस पर चौधरी कहता है—'रधिया की अम्मा। घर में नयी पीढ़ी ने जन्म लिया है। अब हम पापों के इतिहास से मुक्त हो चुके हैं।'

किष्किंधा कांड (सन् १८८७, पृ० १०६), ले० दामोदर शास्त्री सप्रे, प्र० खड्ग विलास प्रेस, बाकीपुर में बाबू साहब प्रसाद सिंह ने प्रकाशित कराया, पात्र पु० ६, स्त्री ५, इसमें दृश्य की जगह स्थान सूचक है। इसकी कथा क्रमांकों में विभाजित है। घटना-स्थल पणकुटी, पंचवटी, पवन, समुद्र तट।

इस धार्मिक नाटक में रामचरित मानस के किष्किंधा कांड की कथा नाटकीय रूप में प्रस्तुत की गई है। सीता हरण के पश्चात् राम सीता की खोज में आगे बढ़ते हैं रास्ते में हनुमान् एवं सुग्रीव से भेंट होती है। राम बालि का वध और सुग्रीव का राज्याभिषेक करते हैं। बन्दरों की सेना सीता की खोज में निकलती है। समुद्र तट पर विचार-विमर्श के बाद हनुमान् समुद्र पारकर सीता की खोज के लिए प्रस्थान करते हैं।

कीचक (सन् १९२३), ले० भगवन्नारायण भार्गव, प्र० बालाप्रसाद वर्मा, स्वाधीन प्रेस, झांसी, पात्र पु० २१, स्त्री ३, अंक ६, दृश्य २, ४, ५, ५, ५, २। घटना-स्थल रंगभूमि, जंगल, महल, गली, कमरा, भवन, राजपथ, उद्यान, पाण्डव भवन।

इस पौराणिक नाटक में कीचक का वध और उसका कारण दिखाया गया है। पाण्डव छद्मवेश में राजा विराट के यहां आश्रय लेते हैं। द्रौपदी सैरन्ध्री नामक दासी का कार्य करती है। रानी का भाई कीचक उस पर आसक्त हो जाता है तथा ललिता नामक उस दासी की उपेक्षा करने लगता है जिससे वह पहले प्रेम करता था। द्रौपदी कीचक की दुर्भावनाओं से परेशान होकर पाण्डवों से शिकायत करती है। भीम द्रौपदी का वेश धारणकर उद्यान में कीचक से मिलते हैं और उनका वध कर देते हैं।

सर्व-गुण-सम्पन्न होते हुए भी विषय-वासना और इन्द्रिय-लोलुपता जैसे अवगुण के कारण ही कीचक का वध होता है। नाटक को रुचिकर बनाने के लिए स्थान-स्थान पर हास्य का नियोजन किया गया है।

कीचड़ का फूल (सन् १९६३, पृ० ९४), ले० : सतीश डे; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६; पात्र : पु० ५, स्त्री २; अंक : ३, दृश्य रहित।
घटना-स्थल : गांव, अछूत का घर, रईस का घर।

इस सामाजिक नाटक में अछूतोद्धार की समस्या सुलझाई गई है। उसमें कमलनयन नामक सुन्दर अछूत लड़की से सभी उच्च वर्गवाले घृणा करते हैं, दुर्गादेवी उनसे विशेष चिढ़ती हैं किन्तु विजय कुमार तथा देवीप्रकाश के प्रयास से समाज उसे अछूत न मानकर उसका आदर करने लगता है।

कीर्ति-स्तम्भ (सन् १९५५, पृ० १६६), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : राजपाल एण्ड संस, दिल्ली; पात्र : पु० ४, स्त्री ७; अंक : ३, दृश्य : २०।
घटना-स्थल : कीर्ति-स्तम्भ, वाटिका।

इस ऐतिहासिक नाटक में मेवाड़ के महाराजा रायमल के गृह-कलह की कहानी है। महाराणा कुंभा का ज्येष्ठ पुत्र ऊदा पिता की हत्याकर मेवाड़ का राज्य हड़प कर लेता है। परन्तु ऊदाजी का अनुज रायमल बड़े भाई को हराकर मेवाड़ का महाराणा बनता है। ऊदाजी को दिल्ली के बादशाह उस कार्य में सहयोग नहीं देते हैं। ऊदाजी मारे जाते हैं। साथ ही सूरजमल के हृदय में मेवाड़ राज्य के प्रति मोह जाग उठता है। इस कारण रायमल के पुत्रों में भी झगड़ा होने लगता है। अंत में रायमल के ज्येष्ठ पुत्र संग्राम सिंह की दूरदर्शिता के कारण आन्तरिक कलह शांत हो जाता है।

कीर्तिमालिनी प्रदानम् (सन् १९४०, पृ० ४८), ले० : श्री नादल्ले पुरुषोत्तम कवि; प्र० : श्री नादल्ले मेधा दक्षिणमूर्ति; पात्र : पु० १५, स्त्री ५, दृश्य : २०, अंक रहित।
घटना-स्थल : मच्छलीपट्टम् और आन्ध्र के अन्य नगर।

शिवमाहात्म्य को प्रकट करनेवाले इस नाटक की कथावस्तु स्कन्द पुराण से ली गई है।

सीमंतिनी और चंद्रांगद की पुत्री कीर्तिमालिनी का विवाह, ऋषभ योगी के आदेशानुसार भद्रायु से होता है। पिता के वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण करने पर भद्रायु सुचारु रूप से राज्य का भार सम्भालने लगता है।

एक बार भद्रायु और कीर्तिमालिनी आखेट के लिए वन में जाते हैं। वहां एक बूढ़े ब्राह्मण और उसकी पत्नी पर सिंह आक्रमण करता है। अभयदान देकर भी भद्रायु उस ब्राह्मणी की रक्षा नहीं कर सकता। भद्रायु उस ब्राह्मण को अपनी पत्नी दे देता है और स्वयं चिता सुलगाकर प्राणत्याग करने के लिए तैयार हो जाता है। तब ब्राह्मण वेषधारी शिवजी अपना वास्तविक रूप दिखाकर भद्रायु को समस्त ऐश्वर्य प्रदान करते हैं।

कुंवरसिंह (सन् १९५१, पृ० ८२), ले० : चतुर्भुज; प्र० : पुस्तक सदन, दिल्ली; पात्र : पु० ११, स्त्री १; अंक : ३, दृश्य : १४।
घटना-स्थल : जेल।

स्वतन्त्रता आन्दोलन से सम्बन्धित इस नाटक में स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए अंग्रेजों से लड़ाई की गई है जिसका नायक कुंवरसिंह है। यथार्थ घटना और कार्य-व्यापार के आधार पर माया नामक एक लड़की और उसके पिता हरेकृष्ण के चरित्रों को दिखाया गया है जिसमें पुत्री माया देशभक्त है और हरेकृष्ण

अंग्रेजों का वफादार। मायाही अपने पिता को गिरफ्तार करवाने में मदद देती है तथा कुँवरसिंह सभी गुप्तचरों के माध्यम से असली देश के नकाबपोश जासूसों को भी अपनी ओर मिलाकर अंग्रेजों को असफल करने में समर्थ हो जाते हैं।

कुँवरसिंह (पृ० १२६), ले० दुर्गाशंकर सिंह, अंक, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल युद्धभूमि।

इस ऐतिहासिक नाटक में स्वतन्त्रता-संग्राम के सेनानी कुँवरसिंह का बलिदान दिखाया गया है। १८५७ के स्वतन्त्रता-संग्राम में बाबू कुँवरसिंह बहादुरी के साथ अंग्रेजों का मुकाबला करते हैं। पटना के कमिश्नर टेलर कुँवरसिंह को पटना बुलाते हैं किन्तु वह निमंत्रण अस्वीकार कर देते हैं। स्वतन्त्रता-संग्राम में उनके संबंधी ही उन्हें धोखा देते हैं, पर अंत में जीत कुँवरसिंह की ही होती है। कुँवरसिंह सेनापति डनबर को हराकर जगदीशपुर में पुनः अंग्रेजों को परास्त करते हैं किन्तु शिवपुर घाट पर डगलस का गोला लगने से उनका दाहिना हाथ टूट जाता है। मृत्यु की परवाह न कर वह कमला और मंगला की मदद से स्वतन्त्रता-संग्राम चलाते रहते हैं। युद्ध-भूमि में अत्यंत आहत होने पर कमला को यह संग्राम चलाते रहने का आदेश दे अंतिम सांस लेते हैं। कहीं-कहीं भोजपुरी भाषा का प्रयोग मिलता है।

कुन्दकली नाटक (सन् १८६५), ले० जगन्नाथप्रसाद शर्मा, प्र० ग्रन्थकार, जबलपुर, *पात्र* पु० ५, स्त्री २, *अंक* ११, *दृश्य-रहित*।
घटना स्थल घर, महात्मा की कुटी, जंगल, चिड़ियों का घोंसला।

इस प्रतीक नाटक में फूलों के माध्यम से मानव स्वभाव की विविधता दिखाई गई है। पात्रों के वार्तालाप से संसार में पाए जानेवाले विभिन्न स्वभाव के पात्रों का उद्घाटन किया गया है। भिन्न-भिन्न पात्रों के भिन्न-भिन्न स्वभाव, कर्म, धर्म और गुणगान का विवेचन इसका लक्ष्य है। पिक के समान मधुरभाषी किन्तु दुष्कर्मों में प्रवृत्त करानेवाले मित्र अनेक हैं। गुबरिल जैसी ठगी महात्माओं की भी कमी नहीं। दुष्कर्मों से बचानेवाले कीट और हंस अति विरल हैं। मालिन की तरह रक्षा करनेवाले प्राणी और भी विरल हैं। इसमें मालिन कुन्दकली और काग का संवाद मानव-स्वभाव का वैचित्र्य प्रकट करता है।

कुंदमाला (सन १९५०, पृ० ५०), ले० मत्येन्द्र शरद, प्र० नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद, *पात्र* पु० ९, स्त्री ४, *अंक* ३, *दृश्यों का अभाव*।
घटना-स्थल तपोवन, उद्यान, नदी-तट, मैदान, अयोध्या।

लोकनिंदा के भय से राम, सीता की अग्नि-परीक्षा के पश्चात् भी वनवास देने का निश्चय करते हैं। लक्ष्मण, सीता को वन में जाकर छोड़ आते हैं। रात्रि में क्रन्दन सुनकर वाल्मीकि दयावश सीता को अपने आश्रम में ले जाते हैं। वहीं सीता लव-कुश नामक दो पुत्रों की माता बनती है। सीता आश्रम-सखी वेदवती के साथ पति-स्मृति में रमी हुई, पुत्रों की सेवा करती हुई दिन व्यतीत करती है। वह प्रतिदिन पुष्करिणी को कुंदमाला चढ़ाती है। तभी वेदवती राम द्वारा किए जानेवाले अश्वमेध-यज्ञ की सूचना देती है। महायज्ञ में उन्हें धर्मपत्नी को साथ अवश्य रखना पड़ेगा। सीता भी अपने प्रगाढ प्रेम पर यहां विश्वास प्रकट करती है। सहसा आश्रम में आकाशवाणी होती है कि राम ने आश्रम के सभी लोगों को निमंत्रण दिया है। सीता 'पुष्करिणी' को कुन्दमाला अर्पित करती है जिसे जल में प्रवाहित देखकर राम-लक्ष्मण निकाल लेते हैं। राम माला गूंथते समय जानकी की माला-निर्माण-पद्धति का स्मरण करते हैं। प्रिया-वियोग से व्यथित हो, राम मूर्च्छित हो जाते हैं, छाया रूपी सीता यह देखकर उन्हें अपनी गोद में लेती हैं लेकिन वरदान के कारण कोई किसी को देख नहीं पाता है। तभी सीता कुंदमाला उनके गले में डाल देती है। तभी कौशिक और लक्ष्मण वहां आ जाते हैं

राम वन से लौटकर जब कभी सिंहासन पर बैठते हैं तो कुछ अनिश्चित भार उन्हें प्रतीत होता है। वे सीता की स्मृति में ध्यान-

मग्न रहते हैं। तभी कौशिक बाहर से आये हुए दो कला-प्रवीण तापस-कुमारों को लाते हैं। 'इनकी आकृति हमारे बाल्यकाल के सदृश है। बालकों का परिचय प्राप्त करते ही उन्हें ज्ञात हो जाता है कि वे उन्हीं के पुत्र हैं। दोनों तापस-कुमार रघुवंशियों की विरुदावली का गान करते हैं, वे रामायण की कथा सुनाते हैं तथा अशुभ भय से सीता-त्याग की कथा के बाद बन्द हो जाते हैं। राम वात्सल्य-प्रेम के वशीभूत पुत्रों को छाती से लगा लेते हैं। मुनि सीता को राम के चरणों में अर्पित करते हैं। धरती माता प्रकट होकर सीता की पवित्रता तथा दृढ़ता की वन्दना करती है। तभी सीता आंचल से नवीन कुन्दमाला निकालकर राम के गले में पहना देती हैं।

कुंए पर (सन् १९३८), ले०. बेढब बनारसी; प्र० : 'सुधा' पत्रिका में प्रकाशित; पात्र : विभिन्न वर्णों के अनेक छात्र, प्राध्यापक। घटना-स्थल : गांव की पाठशाला।

इस सामाजिक नाटक में युवा पीढ़ी का अछूतोद्धार संबंधी संकल्प और उसका परिणाम दिखाया गया है। गांव के कुंए पर एक विद्यालय है जहां अछूतों के उद्धार के लिए सभा होती है। उस सभा में ब्राह्मण-क्षत्री आदि उच्च वर्णों के बालक भी भाग लेते हैं। यह युवा पीढ़ी अपने रुढ़िवादी अभिभावकों की कोधाग्नि की बिना परवाह किए अछूतोद्धार का संकल्प लेती है। जब माता-पिता ब्राह्मण-पुत्रों को सभा से दूर रहने का आग्रह करते हैं और कहते हैं कि तुम से उससे क्या काम तो पुत्र उत्तर देता है "पिताजी कल हम लोगों में कई विद्यार्थियों ने प्रण किया है कि हम लोग इन भाइयों में काम करेंगे। इन्हें पढ़ायेंगे, लिखायेंगे और स्वच्छ रहना सिखायेंगे।"

नाट्यकार का उद्देश्य है कि शिक्षा के क्षेत्र में तुरन्त छूत और अछूत की समस्या मिटा दी जाये और नई पीढ़ी सबके साथ समान व्यवहार करे।

कुणीक (वि० २००८, पृ० ६२), ले० : रत्नशंकर प्रसाद; प्र० : प्रसाद मन्दिर, गोवर्धन सराय, काशी; पात्र : पु० ६, स्त्री ५, अंक : ३, दृश्य : ६, ९, ५। घटना-स्थल : वैशाली का कनक सौध, राजगृह का अन्तःपुर, कपिलवस्तु।

ऐतिहासिक नाटक में अजातशत्रु, विरुद्धक, कारायण, मल्लिका व वाजिरा आदि के जीवन की अधिकांश घटनाएं जयशंकर प्रसाद के अजातशत्रु नाटक से मिलती हैं। उसमें मगध के निर्वासित महामात्य वर्षकार के जीवन की घटना नई जोड़ी गई है। रत्नशंकर प्रसाद लिखते हैं—"प्रस्तुत नाटक में मगध राजा वैदेही पुत्र अजातशत्रु कुणीक की साम्राज्य भावना का द्योतक उसके कूटनीतिक अभियान—वैशाली विजय के अंकन में किया गया है।" कथा मगध के महामात्य वर्षकार के वैशाली प्रवास से कुणीक के हाथों वैशाली पतन तक चलती है।

कुमारिल भट्ट (सन् १९३४, पृ० १२४), ले० : श्रीमती अनुरूपा देवी; प्र० : श्री आर्यमहिला हितकारिणी महापरिषद्, काशी; पात्र : पु० १७, स्त्री ७, अंक : ५, दृश्य : ४, ६, ७, ५, ६। घटना-स्थल : बौद्ध आश्रम, राजमहल, झोपड़ी आदि।

इस जीवनीपरक नाटक में महात्मा कुमारिल भट्ट की वैदिक-धर्मोद्धार-पद्धति का परिचय दिया गया है। कुमारिल भट्ट बड़े कौशल और सर्वबल से आर्य-धर्म का झण्डा ऊंचा करते हैं। बौद्ध-विहारों, चैत्यों में अनाचार और अनैतिकता का ताण्डव होने लगता है। वैदिक भावनाओं एवं धारणाओं को सांस लेना कठिन हो जाता है, सनातन धर्मावलम्बी प्रजा नाना प्रकार से बौद्ध राजदण्ड से संत्रस्त होने लगती है। उसी महाकठिन काल में महात्मा कुमारिल भट्ट सम्पूर्ण देश में भ्रमणकर आचरण की शुद्धता और पवित्रता पर बल देते हैं और अपनी बुद्धि एवं चरित्र बल से वैदिक धर्म का उद्धार करते हैं।

कुरुक्षेत्र (पृ० ८०), ले० : अवधभूषण मिश्र; प्र० : जवाहर पुस्तकालय, मथुरा; पात्र : पु० १४, स्त्री ४; अंक : २।

घटना-स्थल कुरुक्षेत्र की रणभूमि।

इस पौराणिक नाटक में महाभारत युद्ध का परिणाम दिखाया गया है। कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरवों एवं पाडवों का भयंकर युद्ध होता है। नाटक के अन्त में दुर्योधन का मरण एव गाधारी का शाप दिखाया गया है।

कुरुक्षेत्र (सन् १९२८, पृ० १६३) ले० जगन्नाथशरण, प्र० सरस्वती विहारी लाल, मथुरा भवन, छपरा, *पात्र* पु० १६, स्त्री ५, अक ५, *दृश्य* ६, ६, ६, ७, ८।
घटना स्थल राजसभा, कुरुक्षेत्र का युद्ध-स्थल, राजपथ।

इस पौराणिक नाटक मे महाभारत युद्ध का आद्योपान्त दृश्य दिखाया गया है। इसका अभिनय प्रकाशन से पूर्व नवम्बर १९२५ मे शारदा नाट्य समिति, छपरा द्वारा किया गया। रगमच की त्रुटियो को देखकर इसमे सुधार किया गया तदुपरात प्रकाशित हुआ। यह नाटक अष्टादश हिन्दी साहित्य सम्मेलन मुजफ्फरपुर के सुअवसर पर २७ जून १९२८ को छपरा नाटक समिति द्वारा खेला गया।

इस नाटक के प्रारम्भ म शकुनि और दुर्योधन का षड्यत्र पाडवो के विरुद्ध सीमा तक पहुँच जाता है। विदुर पाडवो को सावधान कर देते है कि वारणावत में सबको भस्म करने की योजना बनाई गई है। पाडव किसी प्रकार गुप्त मार्ग से निकलकर प्राण बचाते हैं। प्रथम अक में भीम युधिष्ठिर के शातिमय जीवन-यापन का विरोध करते हैं। द्वितीय अक मे धृतराष्ट्र दुर्योधन की कूटनीतियो का विरोध करते है। तीसरे अक मे विराट नगर मे पाडवो के जीवन का विवरण है। चौथे अक मे महाभारत का घोर युद्ध होता है। पाँचवे अक मे जयद्रथ के वध का अर्जुन द्वारा सकल्प होता है और रणक्षेत्र मे कर्ण, शल्य आदि वीरो की वीरगति दिखाकर अतिम दृश्यो मे धृतराष्ट्र की व्यथा का मार्मिक चित्र खीचा गया है। नाटक का अत धृतराष्ट्र की मृत्यु के साथ होता है। महाभारत की कथा के आधार पर लिखे नाटको मे यह नाटक विशेष स्थान रखता है।

कुरुवन दहन नाटक(सन् १९२२, पृ०१२६) ले० बदरीनाथ भट्ट, प्र० रामभूषण प्रेस, आगरा, *पात्र* पु० २३, स्त्री १०, *अक* ७, *दृश्य* ३, ५, २, ३, ३, २, ४।
घटना-स्थल दुर्योधन का राजदरबार, राजमहल, रणक्षेत्र।

इस पौराणिक नाटक म दुर्योधन की मृत्यु महाभारत के आधार पर दिखाई गई है। इस नाटक की मूलकथा का प्रारभ महाभारत के उद्योग पर्व से होता है। कचुकी भीम को यह सूचित करता है कि दुर्योधन की सभा मे कृष्ण का सधि-प्रस्ताव लेकर जाना निष्फल हो गया है। वहा से लेकर कौरवो के पूर्ण पराजय तथा दुर्योधन के अतिम क्षण तक की कथा का वर्णन इस नाटक मे है।

कुलदीप(सन् १९५८, पृ०४८) ले० रामाश्रय दीक्षित, प्र० अखिल भारतीय सर्वसेवा सघ प्रकाशन, राजघाट, काशी, *पात्र* पु० १४, अक रहित, *दृश्य* ७।
घटना-स्थल कोठी, गुफा, दालान, जगल, चौपाल, गाधी चबूतरा।

'कुलदीप' नाटक सन्त विनोबा भावे के 'भूदान आन्दोलन' तथा सर्वोदय सबधी विचारो पर प्रकाश डालता है। नाटक का प्रारभ दरोगा तथा दयाराम की बातचीत से होता है। दयाराम का पुत्र डाकुओ द्वारा उठा लिया गया है। दयाराम दरोगाजी को पाँच सौ रुपए रिश्वत रूप मे देता है जिससे लड़का शीघ्र मिल जाय पर दरोगा रिश्वत नही लेना और अपने कर्त्तव्य के नाते शरत् को खोजने के भरपूर प्रयास की। बात कहकर सान्त्वना देता है। नवयुवक विद्यार्थी विजय दयाराम को बताता है कि गरीब जग चुके हैं। धनियो की धूर्तता, पूजीवादियो की स्वार्थ भावना अब नही चलने की। अत आप भी अब विनोबा जी के भूदान पर अमल करें। शरत् डाकुओ के सरदार को 'भूदान आन्दोलन' के बारे मे बताता है, और प्रभावित कर लेता है। पुजारी का पुत्र कमल तथा मुखिया का पुत्र सरोज एक

भंगी लड़के की लाश का अंतिम संस्कार स्वयं करते हैं। उन दोनों के पिता पहले तो उनका विरोध करते हैं पर अन्त में बात मानकर भूदान के लिए तैयार हो जाते हैं। विजय, तथा डाकू सरदार पुत्र अभय डाकू सरदार को अपनी बातों से प्रभावित करते हैं। सरदार तो पहले ही अमीरों की संपत्ति लूटकर गरीबों में वितरण करता है, पर अन्त में दस हजार रुपए गरीब किसानों की सहायता के लिए देता है।

कुलीनता (सन् १९४१, पृ० ११५), ले० : सेठ गोविन्ददास; प्र० : हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर बम्बई; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : ३, दृश्य : ६, ६, ६।
घटना-स्थल : युद्धस्थल, राजप्रासाद।

इस ऐतिहासिक नाटक में अकुलीन-कुलीन की दूषित हिन्दू भावना पर कुठाराघात किया गया है। गौड़ीय वंशीय राजा अजयसिंह देव अपने वंश के अंतिम राजा हैं। शहाबुद्दीन गोरी उत्तरी भारत के अनेक राजाओं को पराजित कर चुका है। इसका उत्तराधिकारी कुतुबुद्दीन त्रिपुरी पर आक्रमण करना चाहता है, परंतु अजयदेव ऐबक का माण्डलिक राजा बनना स्वीकार कर लेता है। त्रिपुरी पर आक्रमण न होने की खुशी में अजयदेव के दरबार में मद्यपान और नृत्य हो रहा है। इसी अवसर राज्य के महामंत्री सुरभि पाठक सभा में प्रवेश करके इस रंगारंग को बंद करने की आज्ञा देते हैं। वे संधि के स्थान पर युद्ध करना चाहते हैं।

सेनापति भी युद्ध के लिए सहमत है, किन्तु राजा उससे क्रुद्ध होकर उसके स्थान पर दूसरे सेनापति का निर्वाचन कर लेता है। नया सेनापति अस्पृश्य गोंड जाति का है। उच्च वर्णवाले पहले सेनापति को रत्नावली से प्रेम करने के अपराध में निष्कासित किया गया था। अजयसिंह सुरभि पाठक को भी बंदी करना चाहता है परन्तु वह वहां से भाग जाते हैं।

सुरभि पाठक यदुराव से मिलकर एक नयी सेना का निर्माण करते हैं। वे फिर से त्रिपुरी को स्वतंत्र करने में सफल होते हैं। अस्पृश्य यदुराव का विवाह राजकुमारी रेवा सुन्दरी से होता है। बाद में यदुराव ही त्रिपुरी का राजा बनता है।

कुसुम (सन् १९५६, पृ० ६२), ले० : काली-नाथ झा 'सुधीर'; प्र० : श्री पीताम्बर प्रकाशन समिति, बिट्ठो; पात्र : पु० १०, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : १४।
घटना-स्थल : पाठशाला, डाक्टर साहब का घर, राजेश का घर, स्कूल का रास्ता एवं पण्डित जी का दरबार इत्यादि।

इस सामाजिक नाटक में नाटककार ने मैथिल समाज में व्याप्त नारी-शिक्षा की समस्या उठाई है। इसमें ऐसे परिवार को प्रदर्शित किया गया है जो लड़कियों को उच्च शिक्षा देने में अग्रसर हैं। डा० रमेश अपनी लड़की कुसुम को आधुनिक पाठ्य प्रणाली के अनुसार शिक्षित करते हैं और समाज की कटु आलोचना की तनिक परवाह नहीं करते। कुसुम के ट्यूटर रामनारायण के हटाने का दूसरा ट्यूटर जगदीश प्रयत्न करता है। वह घटनाओं का जाल इस प्रकार रचता है कि रामनारायण के स्थान पर उसकी नियुक्ति होती है। जगदीश कुसुम के समक्ष शादी का प्रस्ताव रखता है। कुसुम और डा० रमेश को यह प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ता है। नाटक की समाप्ति जगदीश और कुसुम की शादी से होती है।

कुहेस (सन् १९३७, पृ० ११०), ले० : बाबू साहेब चौधरी; प्र० : मिथिला ग्रामोदय परिषद, कारज, पोस्ट—करजापट्टी, दरभंगा; पात्र : पु० १३, स्त्री ३; अंक : २, दृश्य : ११।
घटना-स्थल : साधारण गृहस्थ का घर, सुवंश पाठक का घर, जनक बाबू का दरवाजा, जनक मिश्र का आंगन एवं अस्पताल की एक कोठरी।

इस सामाजिक नाटक में तिलक-दहेज की समस्या उठाई गई है। परंपरा के अनुसार जनार्दन अपने बेटे अमरकान्त की शादी में तिलक-दहेज के रूप में प्रचुर धन मांगते हैं। युवती सीता के पिता जनक परिस्थिति से

लाचार होकर शर्त स्वीकार कर लेने हैं किन्तु समय पर तिलक की पूरी राशि का न जुटा सकने के कारण वहाँ शादी नहीं हो पाती। प्रगतिशील युवक शकर के सत्प्रयास से उच्चगोत्रीय ब्राह्मण रामकुमार से सीता का विवाह इस शर्त पर होता है कि तिलक की रकम बाद में दी जाएगी। दुर्भाग्यवश जनक रुपए की व्यवस्था नहीं कर पाते हैं जिसके परिणामस्वरूप सध्या सीता और जनक दोनों की दुर्दशा करती है। उनके दुर्व्यवहार से पीडित होने पर जनक अपनी जमीन बेचकर सम्पूर्ण रकम अदा कर देता है। अपने पिता की ऐसी निर्दयता देखकर रामकुमार आत्महत्या कर लेता है, किन्तु शकर के समुचित सत्प्रयास से वह मृत्यु बच जाता है।

इस नाटक का अभिनय सर्वप्रथम नेता जी सुभाष इन्स्टीच्यूट सियालदह में हुआ था और उसके बाद भी अनेक स्थलों पर इसका सफल अभिनय हुआ है।

कृषक दुर्दशा (वि० १९७९, पृ० ८१), ले० ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्र० हरिश्चन्द्र एण्ड ब्रादर्स, अलीगढ, पात्र पु० ७, स्त्री २, अक ५, दृश्य १७।
घटना-स्थल गाव, पुलिस स्टेशन, साधु कुटीर।

प्रस्तुत नाटक मुख्य रूप से भारतीय कृषक-समाज की दुर्दशा का वर्णन है। जो किसान देश को अन्न से आत्मनिर्भर बनाने मे योग देते हैं वे स्वय भुखमरी के शिकार बन जाते है और सामाजिक व्यवस्था उनकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं देती। नाटक का नायक भोला एक किसान है जो प्राय सभी प्रकार की प्रताडणाओं का शिकार होता है। दीन-दुखियों की चीत्कार को सरकारी अधिकारी सुनते ही नहीं। अधिकारी-वर्ग और जनता भ्रष्टाचार के कारण तेजहीन हो गई है। रिश्वत खोरी, पुलिस के अत्याचार, सरकार द्वारा चापलूसों को प्रश्रय, न्याय की हत्या आदि के दृश्य समाज को खोखला बना रहे हैं। इन्हीं प्रपीडनों के चगुल मे पडकर भोलानाथ का धन, परिवार, मान, सब कुछ नष्ट हो जाता है। अत मे उसकी भेंट एक साधु से होती है जो उसे वैराग्य का उपदेश देता है। भोलानाथ के हृदय से काम, क्रोध लोभ मोह का तिरोभाव हो जाता है और वह अपने को पूर्ण आनंदित पाता है। अब वह देश के उत्थान मे प्रवृत्त हो जाता है।

कृष्ण का सधि-सदेश (पृ० १०४) ले० विश्वम्भर सहाय प्रेमी, प्र० प्रेमी साहित्य प्रकाशन, मेरठ, पात्र पु० ७, स्त्री ६, अक २,
घटना-स्थल हस्तिनापुर, दुर्योधन का राजभवन।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण के सधि-प्रयत्न की असफलता दिखाई गई है। भगवान श्री कृष्ण सधि का सदेश लेकर दुर्योधन के पास जाते हैं और पाडवों को उनका राज्य वापस करने का प्रस्ताव रखते हैं किन्तु दुर्योधन पाँच गाँव भी देने को तैयार नहीं होता है। कृष्ण असफल होकर लौट आते है। तत्पश्चात् पाडव युद्ध के लिए तैयार होते हैं। नाटक का मूल उद्देश्य दुर्योधन की हठवादिता को प्रदर्शित करना है जिसके परिणामस्वरूप महाभारत का भयकर युद्ध होता है। नाटक मे कृष्ण को बन्दी बनाने के लिए दुर्योधन की दुरभिसधियो और कुटिलताओं का भी उल्लेख है किन्तु कृष्ण की दूरदर्शिता उनके पात्रों की रक्षा करती है और वे सकुशल पाडवों के पास लौट आते है।

कृष्ण-जन्म (सन् १९६१, पृ० ११७), ले० प्रेमनारायण टडन, प्र० हिन्दी साहित्य भडार, लखनऊ, पात्र पु० ५, स्त्री १, अक ३, *दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल राजप्रासाद, कस के महल के समीप, देवकी का निवास, बदीगृह।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण-जन्म के समय वसुदेव देवकी की स्थिति दिखाई गई है। ज्योतिषी भविष्यवाणी करता है कि 'देवकी का आठवाँ पुत्र तेरा काल होगा'— मुष्टिक कस को बार-बार भविष्यवाणी की याद दिलाता है। देवकी का आठवाँ पुत्र नद के पास पहुँचा दिया जाता है। नद की पुत्री को लेकर वसुदेव चलते हैं तो मन मे चिन्ता करते है 'कि ससार मेरे इस कृत्य पर मुझको कितना धिक्कारेगा यदि अपने पुत्र की रक्षा

के लिए दूसरे की संतान का वध करा दूँ।' वसुदेव के अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति का विशद चित्रण इसमें मिलता है। कंस की क्रूरता से जनता क्षुब्ध होकर उसका विरोध करती है। नाटक के तीसरे अंक में नंद की पुत्री का कंस द्वारा वध दिखाया गया है। देवकी उस कन्या के वध से दुखी होकर कहती है —'मेरे पुत्र की प्राणरक्षिका वह कन्या मेरे लिए तो सभी संतानों से बढ़कर थी। अपनी सारी संतानों के सम्मिलित ममत्व से मैंने छाती से लगाया था। अहा हतभागिनी मैं!'

नाटक के अन्त में देवकी कहती है कि "भाग्यहीन मैं यदि किसी प्रकार आत्म-हत्या का साहस जुटा पाती तो निश्चय ही तुम सब कष्टों से मुक्त हो जाते।'

वसुदेव देवकी को समझाते हैं कि जो भी विपत्ति आये उसे सहन करना कर्त्तव्य है। यदि तुम्हारी मृत्यु हो जाती तो कंस तुम्हारी हत्या का दोषी मुझे ठहराकर सहज ही फाँसी दे देता।

वसुदेव और देवकी अपने पुत्र की दीर्घायु के लिए परम प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

कृष्ण-मन्दिर (सन् १९६६, पृ० ८३), *ले०* : एन० डी० कृष्णमूर्ति; *प्र०* : भारतीय साहित्य मन्दिर, धारवाड़; *पात्र* : पु० ८, स्त्री २; *अंक* : ३।
घटना-स्थल : सेठ की कोठी, मन्दिर।

इस सामाजिक नाटक में मन्दिर से छात्रावास की आवश्यकता पर बल दिया गया है। सेठ सेतूराम अपने जीवन में ब्याज-खोरी से करोड़ों रुपया जमा करते हैं। वह अपनी पत्नी ललितम्मा की आत्मिक शान्ति के लिए कृष्ण-मन्दिर बनवाते हैं और शोषण के पाप-कृत्य को छोड़कर भगवद्भक्ति में लग जाते हैं। मन्दिर-पूजा के विचार से नारायण आयंगर को पुजारी तथा रंगण्ण को अपना सचिव नियुक्त करते हैं। किन्तु भीम-राव वकील मन्दिर में सट्टा-जुआ-मद्य कृत्य प्रारम्भ करके सेतू राम के मन्दिर की पवित्रता नष्ट कर देते हैं। इस कारण समाज-सुधारक रामराव और लीला के प्रयास से मन्दिर को छात्रावास का रूप दे दिया जाता है।

कृष्ण-लीला (सन् १९२२, पृ० १३०), *ले०* : आनन्द प्रसाद कपूर; *प्र०* : उपन्यास बहार आफिस, काशी; *पात्र* : पु० १२, स्त्री ७; *अंक* : ३, *दृश्य* : ६, ८, ८।
घटना-स्थल : मथुरा, गोकुल, यमुनातट, गोपियों का घर, गोवर्धन पर्वत।

इस नाटक में कृष्ण की विविध लीलाओं— दान लीला, माखन चोरी, गोवर्धन धारण, रासलीला की घटनाओं और ग्वाल बाल की प्रेम कथा को गठित किया गया है। परब्रह्म स्वरूप कृष्ण में रक्षक की स्थापना की गई है। नाटक में गीत, दोहा, सवैया तथा उर्दू के शेर जोड़ दिए गए हैं।

कृष्णलीला नाटक (सन् १९०७, पृ० ३४), *ले०* : रूपनारायण शर्मा पाण्डेय; *प्र०* : एंग्लो ओरियन्टल प्रेस, लखनऊ; *पात्र* : पु० ७, स्त्री ६; *अंक* : ३, *दृश्य* : ३, ३।
घटना-स्थल : गोपियों का घर, वृन्दावन।

इस पौराणिक नाटक में थियेटर की रीति पर गोपियों का कृष्ण प्रेम दिखाया गया है। इसमें कालिय नाग-पाश तक की कथा का अंश लिया गया है। कृष्ण जब यमुना में कालिय नाग के पास चले जाते हैं तो राधिका घबरा जाती है। कृष्ण उन्हें सान्त्वना देते हुए कहते हैं "प्रेममयी राधे? मुझे इतनी दूर खोजते-खोजते क्यों आई? मैं तो तुम्हारे हृदय में हूँ, मुझे जब हृदय में ढूंढ़ोगी, देख पाओगी।"

कृष्ण-सुदामा (सन् १९३६, पृ० ४०), *पात्र* : पु० ५, स्त्री ४; *दृश्य* : ५।
घटना-स्थल : संदीपन का आश्रम, सुदामा की कुटिया, कृष्ण का राजभवन।

इस पौराणिक नाटक में सुदामा का औदार्य दिखाया गया है। श्रीकृष्ण सुदामा की मित्रता को दिखाकर तथा अन्त में श्रीकृष्ण द्वारा मिला धन गरीबों की सहायता, गोशाला और अस्पताल के निर्माण में व्यय करने के लिए सुदामा सपत्नीक संकल्प करते हैं। शेष कथा पूर्व जैसी है। कृष्ण-सुदामा की मूल कथा से इसकी कथा में कुछ अन्तर है।

मवादों में गीतों का समावेश है।

कृष्ण सुदामा (सन् १९५६, पृ० १०८), ले० हरिनाथ व्यास, पात्र पु० १३, स्त्री ७, अंक ३, दृश्य ८, ८, ४।
घटना-स्थल सुदामा का पर्णकुटीर, पथ, द्वारका।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण की सुदामा के प्रति प्रगाढ़ मैत्री दिखाई गई है। कृष्ण सुदामा की मूलकथा ज्यों-की-त्यों ग्रहण की गई है।

कृष्ण सुदामा (सन् १९२१, पृ० १०६), ले० जमुनादास मेहरा, पात्र पु० ८, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ६, ६, ४।
घटना-स्थल सुदामा का पर्णकुटीर, पथ, द्वारका, पूजागृह।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण-सुदामा-मैत्री और सुदामा का अपनी अनुपस्थिति काल में पत्नी के चरित्र पर शंका और उसका निवारण दिखाया गया है। इस नाटक की भी वही प्रसिद्ध पौराणिक कथा है जिसमें कृष्ण-सुदामा के अटूट प्रेम का चित्रण है। नाटक के अन्त में सुदामा द्वारिका से लौटने के बाद अपनी पत्नी सुशीला के चरित्र पर सन्देहकर उससे वाद विवाद करते है, किन्तु पूजा के समय श्रीकृष्ण स्वयं प्रकट हो उसका सन्देह निवारण कर देते हैं।

कृष्ण सुदामा (सन् १९५०, पृ० ८०) ले० न्यादरसिंह, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ६, पात्र पु० १४, स्त्री ६, अंक ३।
घटना-स्थल सदीपन गुरु का आश्रम, जंगल, सुदामा का पर्णकुटीर, द्वारकाधीश का राजप्रासाद।

इस पौराणिक नाटक में भी कृष्ण-सुदामा की मैत्री अध्ययन-काल से अन्त तक दिखाई गई है। कृष्ण-सुदामा अपने गुरु सन्दीपन के आश्रम में साथ-साथ पढ़ते हैं। एक दिन गुरु पत्नी जंगल से लकड़ी लाने के लिए कृष्ण-सुदामा को भेजती है। साथ में खाने के लिए चने भी दे देती है। लकड़ी चुनते-चुनते जब कृष्ण थक जाते है तो गुरु-पत्नी द्वारा दिए गए चने सुदामा से मांगते हैं। सुदामा सारे चने स्वयं खाकर कृष्ण से झूठ बोल देता है कि चने किसी ने चुरा लिए। कृष्ण, सुदामा की चालाकी तथा असत्य को जान जाते है और इसी के परिणाम स्वरूप सुदामा को घोर दरिद्रता का जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

दुखी सुदामा की पत्नी सुशीला एक दिन सुदामा को उनके सखा कृष्ण के पास द्वारिका भेजती है और साथ में थोड़ा से चावल भी श्रीकृष्ण के लिए दे देती है। कृष्ण प्रेम से चावल खाकर सुदामा की दरिद्रता का दूर-कर अपनी अटूट मित्रता का परिचय देते हैं।

कृष्ण सुदामा नाटक (सन १९४० पृ० ८०), ले० वणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली', प्र० ठाकुरप्रसाद एण्ड सस, वाराणसी, पात्र पु० १२, स्त्री १२, अंक ३, दृश्य ७, ५, ५।
घटना स्थल सदीपन आश्रम, कृष्ण का राजभवन, सुदामा की कुटिया।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण-सुदामा की मैत्री का परिचय मिलता है। कृष्ण और सुदामा गुरु सदीपन के यहाँ एक साथ पढ़ने जाते हैं। गुरु-पत्नी द्वारा दिए गए चने को सुदामा, कृष्ण की चोरी से अकेले खा जाते है जिसका उन्हे बड़ा प्रायश्चित्त करना पड़ता है। सुदामा अपनी पत्नी सुषमा द्वारा दिए गए चावलों को लेकर कृष्ण के पास जाते हैं। भगवान कृष्ण सुदामा से दौड़कर मिलते हैं, और भाभी के दिए गए उपहार को रुक्मिणी तथा सत्यभामा के साथ प्रेम-पूर्वक खाकर उस उपहार के बदले सुदामा को धन-सम्पन्न कर देते है और अन्त में सुदामा अपनी पत्नी सहित भगवान के चरणों में ध्यान लगाते हुए बड़े सुख का जीवन बिताते हैं।

कृष्ण सुदामा (वि० २०२३, पृ० २३), ले० सीताराम चतुर्वेदी, प्र० टाउन डिग्री कालेज, बलिया, पात्र पु० ८, स्त्री २, अंक ८, दृश्य १, १, १, १।
घटना-स्थल आश्रम का रमणीक वन्य भाग, घर का अलिंद, द्वारिका में श्रीकृष्ण का भवन, नवीन भवन।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण और

सुदामा की मैत्री की प्रसिद्ध कथा अंकित की गयी है। इसके चारों अंक एक दृश्यात्मक हैं। यह टाउन डिग्री कालेज, बलिया के छात्रों द्वारा कृष्ण-जन्माष्टमी पर १९६५ में अभिनीत हुआ।

कृष्ण सुदामा (सन् १९५०, पृ० ६४), ले० : श्री बालभट्ट; प्र० : गिरधारीलाल बोक पुस्तकालय, खारी बावली, दिल्ली; पात्र : पु० १५, स्त्री ६, अंक : ३, दृश्य : ६, ५, ३। घटना-स्थल : संदीपन आश्रम, द्वारिका, सुदामा की कुटिया।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण-सुदामा की मैत्री के साथ सुदामा की कृष्ण-भक्ति वर्णित है। सुदामा एक दीन ब्राह्मण है, जो अनेक विपत्तियों के सहने पर भी कृष्ण-भक्ति नहीं छोड़ते। सतयुग, द्वापर, त्रेता तथा कलियुग ईश्वर की चार शक्तियाँ हैं। कलियुग तथा अधर्म-शक्तियाँ द्वापर के ब्राह्मण सुदामा को धर्म से विचलित करने के लिए अनेक कष्ट देती हैं, किन्तु सतयुग, द्वापर और त्रेता सुदामा की मदद करते हैं। नारद जी मृत्यु-लोक और स्वर्ग-लोक में खबर पहुँचाते रहते हैं। सुदामा की पतिव्रता पत्नी पद्मा सदा सुदामा के सुख-दुःख की संगिनी हैं। पद्मा के कहने पर वह कृष्ण के लिए उपहार लेकर द्वारिका जाते हैं। कृष्ण सुदामा से बड़े प्रेम से मिलते हैं। सुदामा की भक्ति से प्रसन्न होकर शिव और पार्वती उन्हें आशीर्वाद देते हैं। अन्त में नारद जी सुदामा को उनकी कुटिया की जगह नवनिर्मित महल में पहुँचा देते हैं। कलियुग और अधर्म हार मानकर श्रीकृष्ण को मस्तक झुकाते हैं।

कृष्ण कुमारी (सन् १९६२, पृ० ६८), ले० : चतुर्भुज; प्र० : साधना मंदिर, पटना-४; पात्र : पु० ९, स्त्री १; अंक : ३, दृश्य : ६। घटना-स्थल : महल, शिविर, कारागार।

इस ऐतिहासिक नाटक में मेवाड़ की रक्षा के लिए कृष्णा कुमारी का बलिदान दिखाया गया है। मेवाड़ का भाग्य-सूर्य अस्त हो रहा है। मेवाड़ से बार-बार मराठे बलात् कर वसूल कर रहे हैं। सिंधिया, जोधपुर और पिंडारी डाकुओं का सरदार अमीर खां सम्मिलित रूप से मेवाड़ पर आक्रमण करने की योजना बना रहे हैं। मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णा से जोधपुर-नरेश और जयपुर नरेश दोनों विवाह करना चाहते हैं। मेवाड़ युद्धभूमि बन रही है। ऐसे समय में मेवाड़ को नष्ट होने से बचाने के लिए कृष्णा विष पानकर महायाग का परिचय देती है।

कृष्णा ले० : सियारामशरण गुप्त; प्रकाशित 'प्रभा' पत्रिका के अप्रैल-मई-जून, १९२१ में। पात्र : पु० १, स्त्री १; अंक-रहित : दृश्य : ३।

राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत यह एक ऐतिहासिक गीतिनाट्य है जिसमें कृष्णा के आत्म-बलिदान के मार्मिक प्रसंग को प्रस्तुत किया गया है। उदयपुर नरेश भीमसिंह की पुत्री राजकुमारी कृष्णा अपूर्व सुन्दरी है। उसका यह सौन्दर्य उसके जीवन के लिए अभिशाप सिद्ध होता है। जयपुर के राजा जगतसिंह तथा जोधपुर नरेश मानसिंह दोनों कृष्णा के रूप पर मोहित होकर उससे विवाह करना चाहते हैं। उसके लिए वे उदयपुर पर आक्रमण करने तक को उद्यत हो जाते हैं। उधर सरदार अमीर खां उस युद्ध में मानसिंह का समर्थन करता है। इस युद्ध-आशंका से राजा भीमसिंह के समक्ष देश की रक्षा का प्रश्न उपस्थित होता है। राष्ट्र संकट के निवारण हेतु भीमसिंह पुत्री की हत्या करना चाहता है। वह सोचता है कि जब तक कृष्णा जीवित है तब तक युद्ध की आशंका बनी रहेगी। कृष्णा आत्महत्या द्वारा पिता को इस द्वन्द्वात्मक स्थिति से उबार लेती है।

कृष्णापमान (वि० १९७५, पृ० ११७), ले० : गणेशदत्त शर्मा गौड़; प्र० : साहित्य कल्पलता कार्यालय, भागलपुर; पात्र : पु० ३५, स्त्री २; अंक : ५।
घटना-स्थल : दुर्योधन का राजप्रासाद, पाण्डव आवास, कुरुक्षेत्र, युद्धभूमि।

इस पौराणिक नाटक में दुर्योधन द्वारा कृष्ण के अपमान और उसके परिणाम का विवेचन है। इसका कथानक महाभारत पर आधारित है। इसमें कौरव-पांडव युद्ध का

वर्णन है। कृष्ण का अपमान सुनकर पाडव दृढ प्रतिज्ञा करते हैं कि हम कौरवों का विनाश करके ही विश्राम लेंगे। इसमें दुर्योधन के अत्याचार से लेकर महाभारत युद्ध तक की कथा समेटी गई है।

कृष्णार्जुन युद्ध (सन् १९१८, पृ० १०२), ले० माखनलाल चतुर्वेदी, प्र० प्रताप कार्यालय, कानपुर, पात्र पु० २२, स्त्री ७, अक ४, दृश्य ४, ५, ७, ६।
घटना-स्थल राजभवन, ऋषि आश्रम, तपोवन।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण और अर्जुन का युद्ध दिखाया गया है। एक दिन विमान यात्रा करते समय चित्रसेन गधर्व के मुँह से पान की पीक तर्पण करते हुए गालव ऋषि की अजलि मे गिरी। क्रुद्ध गालव ऋषि तत्कालीन शासक श्रीकृष्ण को चित्रसेन के इस व्यवहार के लिए दोषी ठहराने लगे। गालव ऋषि का क्रोध तभी शान्त होता है जब कृष्ण चित्रसेन के वध की प्रतिज्ञा करते हैं। प्रतिज्ञानुसार श्रीकृष्ण चित्रसेन के वध के लिए प्रस्तुत होते हैं। इधर नारद के परामर्श से चित्रसेन पाण्डवो के यहाँ सहायतार्थ पहुँचता है। किन्तु सहायता के प्रश्न पर अर्जुन, भीम और द्रौपदी का विवाद अनिर्णीत रह जाता है, अत चित्रसेन लौटकर नारद के मतानुसार चिता जलाकर भस्म होने को प्रस्तुत होता है ताकि कृष्ण उसका वध न कर सकें और उनकी प्रतिज्ञा अपूर्ण रह जाये। इधर अर्जुन-पत्नी सुभद्रा चित्रसेन को उसकी रक्षा का वचन देती है और अर्जुन से कृष्ण के साथ युद्ध करने का आग्रह करती है। फलत कृष्ण और अर्जुन का युद्ध छिड़ जाता है जिसमें कृष्ण के प्रहार से अर्जुन आहत होते हैं। अर्जुन पाशुपतास्त्र का प्रयोग करते हैं जिससे भयकर स्थिति उत्पन्न हो जाती है। नारद के प्रयास से ब्रह्मा गालव ऋषि से इस भयावह स्थिति को सुधारने की प्रार्थना करते हैं। गालव चित्रसेन को क्षमा कर देते हैं और युद्ध समाप्त हो जाता है।

केलिगोपाल नाटक (रचनाकाल १५४०, पृ० ३०, प्रकाशन १९६८), ले० शकरदेव, प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा पात्र पु० ३, स्त्री ३, अक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल वृन्दावन, गोकुल, यमुना तट।

इस धार्मिक नाटक मे कृष्ण की रासलीला का चित्र खीचा गया है। सस्कृत श्लोकों मे कृष्ण की वन्दना के उपरात देशी भाषा मे कृष्ण स्तुति सुनाई पड़ती है। सूत्रधार सामाजिको को कृष्ण भगवान, अघ, बक, कुवलय, धेनुक, केशि, कस आदि की वध-सबधी लीलाओ का उल्लेख करते हुए वृन्दावन की शरद रासलीला की ओर सकेत करता है। कृष्ण वेणु वादन करते हुए गोपियो के सहित मच पर आते हैं। कृष्ण की वेणु-ध्वनि सुनकर गोपिया झुण्ड बनाकर आती हैं। कृष्ण और गोपियों का सवाद होता है। कृष्ण गोपियो को अपने-अपने घर जाने का आदेश देते हैं किन्तु गोपियाँ भगवान के चरणो को छोड़ना नही चाहती। अत भगवान् उन पर कृपा करते हुए रासलीला प्रारम्भ करते हैं। इसी समय शखचूड नामक राक्षस गोपियो के समक्ष आता है। गोपियो को भयभीत देख कृष्ण उसे मार भगाते है और रासलीला प्रारम्भ होती है।

जब गोपियो को अपने रूप-यौवन पर गर्व होने लगता है तब भगवान् अन्य व्रजागनाओं को छोड़कर राधा के साथ तिरोहित हो जाते है। भगवान् के अदृश्य होने पर गोपियाँ अत्यन्त व्याकुल होती हैं और वनस्पतियो से उनका पता पूछने लगती है। राधा को भी जब इस बात का गर्व होता है कि भगवान् सबको छोड़कर मुझे ही प्यार करते है। उसी समय कृष्ण वहाँ से भी तिरोहित हो जाते है। गोपियाँ राधा के पास कृष्ण को खोजते हुए पहुँचती है। गोपियाँ और राधा कृष्ण के विरह मे क्रन्दन करती हैं। उनकी दशा देखकर कृष्ण की आँखो मे आँसू आ जाते हैं और वे गोपियो को दर्शन देते हैं। पुन रासलीला प्रारम्भ हो जाती है। इसी समय फिर शखचूड नामक राक्षस आता है और एक गोपी को लेकर भाग जाता है। वह गोपी आर्तनाद करती है और कृष्ण शाल वृक्ष उखाड़कर उसके मस्तक पर प्रहार करते हैं। राक्षस के मस्तक से रत्न निकलता देखकर गोपियाँ प्रसन्न होती

हैं। कृष्ण गोपियों के साथ जल-क्रीड़ा करते हैं। रात व्यतीत होने पर कृष्ण सबको घर भेज देते हैं।

केवट (सन् १९५२, पृ० ११६), ले० . वृन्दावनलाल वर्मा, प्र० : मयूर प्रकाशन, झांसी; पात्र : पु० ७, स्त्री ५; अंक : ३। घटना-स्थल . गाँव, सभा, मूर्तिस्थल।

इस राजनीतिक नाटक में नाना प्रकार की दलबन्दी के मूल कारणों को ढूंढने का प्रयास है। इसके पात्र कल्पित हैं। दलबन्दी के कारण जनता का हित न होकर किस प्रकार अहित होता है उसी को चित्रित किया गया है। इस नाटक में गोदावरी की निःस्वार्थ सेवा और क्षमाशीलता से प्रभावित होकर जनता उसकी मूर्ति का निर्माण करती है। मूर्ति उद्घाटन के अवसर पर नायिका स्पष्ट शब्दों में नगर में फैली दलबन्दी की ओर संकेत करते कहती है—"दलबन्दी की कीचड़ में लथपथ होकर आप समझते हैं कि हमने गंगा-स्नान किया और हम उस मूर्ति के पूजन के और भी अधिकारी हो गये हैं। पर असल में आप दलदल को उस मूर्ति का दर्पण बनाते हैं।" इसमें नाटककार का उद्देश्य तत्कालीन नागरिक जीवन में राजनैतिक कारणों से व्याप्त दलबन्दी के दुष्परिणामों की ओर संकेत करने का है।

कैकेयी (पृ० १२८), ले० : रत्नकान्त साहित्यालंकार; प्र० : आनन्द पुस्तक भवन, कोठी; पात्र : पु० १२, स्त्री ८; अंक-दृश्यरहित।

घटना-स्थल : वशिष्ठ का आश्रम, देवलोक, वनपथ, लंका।

इस धार्मिक नाटक में कैकेयी का चरित्र नये रूप में दिखाया गया है। गुरु वशिष्ठ के आश्रम में राजा दशरथ उनसे राम के राज्याभिषेक की आज्ञा लेने आते हैं। उधर नारद के द्वारा यह बताने पर सम्पूर्ण देवलोक चिन्तामग्न है। राक्षसों का अत्याचार अधिक बढ़ा हुआ है। सभी यही सलाह देते हैं कि किसी-न-किसी तरह राम को वन में रहना चाहिए जिससे वे रावण का वध कर सकें। सरस्वती के द्वारा यह प्रार्थना कैकेयी के कानों तक चली जाती है। कैकेयी के द्वारा मांगे हुए वरों के अनुसार राम चौदह वर्ष के लिए वन जाते हैं। परन्तु इस घटना का सब को पता चल जाता है। सब कैकेयी की सराहना करते हैं। राम के थोड़े कष्ट से सारे प्राणियों का दुःख टल जाता है और कलंकिनी विमाता कैकेयी धर्ममयी आदर्श माता के रूप में प्रतिष्ठित होती है।

कैकेयी कल्याण (सन् १९६६, पृ० ८०), ले० : दुर्गाशरण प्रसाद सिंह; प्र० : नव साहित्य मन्दिर, शाहाबाद; पात्र : पु० १०, स्त्री ४; अंक २, दृश्य : ६, ६।

घटना-स्थल दृश्यविधान—दशरथ का मंत्रणा-भवन, कैकेयी का महल।

इस धार्मिक नाटक में रामकथा को आधुनिकता की दृष्टि से देखा है और इसकी कथावस्तु में रामायण की प्रसिद्ध रामकथा को निम्नलिखित रूप में बदल दिया गया है—

(१) भरत को राजगद्दी का पूर्ण अधिकारी सिद्ध किया गया है।
(२) अयोध्या की राजनीति में दो पक्ष दिखाए गए हैं। एक पक्ष भरत का समर्थक था, दूसरा राम का।
(३) कैकेयी को निर्दोष सिद्ध किया गया है।

इसमें रामायण की कथा को आधुनिक रूप देने का प्रयास है।

कैद और उड़ान (सन् १९५०, पृ० १५६, ले० : उपेन्द्रनाथ अश्क; प्र० : नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद; पात्र : पु० ६, स्त्री ६।

इस सामाजिक नाटक में नारी और पुरुष के स्वाभाविक संघर्षों से उत्पन्न होनेवाली उलझनों, विकारों का दृश्य प्रस्तुत किया गया है। अप्पी के माता-पिता अपनी बड़ी लड़की की मृत्यु के उपरान्त उसकी गृहस्थी उसकी छोटी बहिन अप्पी के गले में बांध देते हैं। अप्पी को न तो गृहस्थी सम्हालने का ही शौक था, न ही बच्चों से प्रेम। वह घुटन-सी अनुभव करती रहती है। एक दिन अपने पति प्राणनाथ से सुनती है कि दिलीप, उसके सपनों का देवता,

आ रहा है तब उसमें एकाएक उल्लास जाग्रत होता है। दिलीप आकर अफी के गार्हस्थ्य जीवन की सराहना करता है। तब अफी की आत्मा फूट पड़ती है। दिलीप चला जाता है। अफी को अनुभव होता है कि वह शव की तरह रह गई है और उसके शरीर का खून कभी तृप्त न होनेवाली जाल ने पी लिया है। यही इस कैद का अन्त है।

कैद की बराह (सन् १९५०, पृ० ३६), ले० शिवरामदास गुप्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० १२, स्त्री ३।
घटना स्थल आगरा का दुर्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक में सम्राट शाहजहाँ के बन्दी जीवन की करुण कहानी चित्रित की गई है। शाहजहाँ को जब उसका पुत्र औरंगजेब राज्य-लोभ में गिरफ्तार करके जेल में डाल देता है तो उस समय में शाहजहाँ के हृदय से निकले उद्गारों का चित्रण इस नाटक में हुआ है।

कोई न पराया (सन् १९६१, पृ० ११०), ले० आरिगपूडि ए० रमेश चौधरी, प्र० भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली, पात्र पु० ७ स्त्री ५, अंक ४, दृश्य ३, ३, ५, ४।
घटना-स्थल जमींदार की कोठी, सभा-स्थल, विवाह-मंडप।

इस सामाजिक नाटक में विजातीय एवं स्वेच्छा विवाह की आवश्यकता दिखाई गई है। वसन्त रेड्डी जमींदार राम रेड्डी का पुत्र है। परन्तु आधुनिक शिक्षा-दीक्षा में पला होने के कारण परम्परा से मुक्त होना चाहता है। सहृदय होने के कारण अपने पुराने नौकर नीलम्मा की दुखभरी व्यथा-कथा सुनकर अपने मित्र शास्त्री से उसको कुछ धन दिला देता है। वसंत रेड्डी के पिता राम रेड्डी गरीब नौकरों की सहायता की अपेक्षा मन्दिर के पुजारी को भगवान के नाम पर धन देना उचित समझता है। वेंकटरत्न अपनी पुत्री का विवाह-सम्बन्ध वसन्त रेड्डी से करने का यत्न करता है। सीतारामशास्त्री विजातीय विवाह का प्रचार करते हैं। वरलक्ष्मी अपने पुत्र वसन्त का विवाह अपने भाई की लड़की से करना चाहती है और राम रेड्डी वेंकट की पुत्री से। वसन्त वेंकटराव की लड़की से विवाह नहीं करना चाहता क्योंकि उसके चरित्र के विषय में इधर-उधर चर्चा सुनता है। माता-पिता में मतैक्य न होने के कारण वसन्त अभिभावकों की इच्छा के विरुद्ध मैत्रेयी से विवाह कर लेता है।

कोटोरा खेला झुमुरा (सन् १९६८ में प्रकाशित), (*रचनाकाल १६वीं शताब्दी*), ले० माधवदेव, प्र० हिंदी विद्यापीठ, आगरा, पात्र पु०, ३ स्त्री १, *अंक और दृश्य-रहित*।
घटना स्थल वन, जमुना घाट, मथुरा।

इस अंकिया नाटक में कृष्ण तथा ग्वालों की गोरस बेचनेवाली गोपियों से छेड़-छाड़ दिखाई गई है। पहले स्तुति में इन्द्र द्वारा वंद्य श्रीकृष्ण की तथा दूसरी स्तुति में शेषशायी विश्वनाथ की वन्दना है। श्रीकृष्ण अपने सखा के साथ वन में जाते हैं। वहाँ राधा तथा अन्य गोपियाँ पुकार-पुकार नवनीत बेचती हैं। श्रीकृष्ण तथा उनके सखा उन्हें बेचने से रोकते हुए दण्ड मांगते हैं। राधा कंस से शिकायत करने की धमकी देती है। वे सब गोपियों को बंदी कर लेते हैं। तब गोपियाँ श्रीकृष्ण को नृत्य दिखाने पर दूध, दही तथा लवण देने का वायदा करती हैं। सभी गोपसखा तथा कृष्ण कोटोरा मेला का नृत्य करते हैं। दीनदयाल भक्ति के अधीन होकर ही सब कौतुक दिखाते हैं। इसमें भक्तों के प्रेमी कृष्ण की महिमा का वर्णन है।

कोणार्क (सन् १९५१, पृ० १०७), ले० जगदीशचन्द्र माथुर, प्र० भारत भारती, इलाहाबाद, पात्र पु० ६, स्त्री पात्र नहीं है, *अंक* ३, *दृश्य रहित*
घटना स्थल शिल्पी का निवास स्थान।

'कोणार्क' में श्री जगदीशचन्द्र माथुर ने कलाकार के शाश्वत अन्तर्द्वन्द्व और अत्याचारी सत्ताधारियों से संघर्ष दिखाया गया है।

कलिंग नरेश महाराज नरसिंहदेव की

आज्ञा से कोणार्क के सूर्य मन्दिर का निर्माण प्रारम्भ होता है। मंदिर बनते समय इसके शिखर की स्थापना असंभव हो जाती है। धर्मपद नामक एक शिल्पी अपनी प्रतिभा से इसके शिखर की बड़ी कुशलता से स्थापना करता है। नरसिंहदेव धर्मपद का अभिनन्दन करते हैं। धर्मपद महाराज को एक यथार्थ से अवगत कराता है कि शिल्पियों को पिछले तीन महीने से वेतन नहीं मिला है और महामात्य चालुक्य ने शिल्पियों की भूमि भी छीन ली है। महाराज को इस बात से आश्चर्य होता है क्योंकि उन्होंने इस प्रकार की कोई आज्ञा नहीं दी। इसी बीच उनका महामात्य चालुक्य अपने आप को कलिंग का नरेश घोषित कर देता है। उसकी सेनाएँ मंदिर को चारों ओर से घेर लेती हैं। धर्मपद के पिता शिशु चालुक्य से धर्मपद के प्राणों की भीख माँगते हैं, लेकिन धर्मपद को मार दिया जाता है। शिशु कोणार्क को ऐसी युक्ति से खंडित कर देता है कि एक विशाल मूर्ति चालुक्य के ऊपर गिरती है और उसकी तत्काल मृत्यु हो जाती है।

इस नाटक में ग्रीक पद्धति के अनुकूल 'प्रोलॉग' और 'एपिलॉग' का उपयोग है और संस्कृत नाट्य-पद्धति से 'विष्कम्भक' का 'उपकथन' के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

कौमुदी महोत्सव (सन् १९४९, पृ० ४५), ले० : डॉ० रामकुमार वर्मा; प्र० : साहित्य भवन लि० प्रयाग; पात्र : पु० ७, स्त्री १; अंक और दृश्य रहित।
घटना-स्थल : कुसुमपुर की विजयभूमि, शरद-पूर्णिमा की रात, नृत्य-शिविर।

इस ऐतिहासिक नाटक में कौमुदी महोत्सव के वर्जन का कारण दिखाया गया है। कुसुमपुर की विजय के उपरान्त सम्राट चन्द्रगुप्त शरदपूर्णिमा के अवसर पर कौमुदी महोत्सव की घोषणा करता है। चारों ओर उल्लास का वातावरण बनाया जा रहा है। इसी अवसर पर राक्षस के कुटिल गुप्तचर चन्द्रगुप्त के विश्वसनीय बन प्रतिष्ठित पदों पर आसीन हो जाते हैं। दुष्ट वसुगुप्त विषकन्या अलका (राजनर्तकी) के द्वारा चन्द्रगुप्त के वध की योजना बनाता है। चन्द्रगुप्त अलका के नृत्य पर झूम उठता है। अलका डोरे डालती हुई कहती है 'जिस समर्पण में भाषा होती है, वह व्यापार बन जाता है, और हृदय का व्यापार कभी नहीं होता।' अलका से प्रभावित चन्द्रगुप्त कहता है 'बहुत सुन्दर राजनर्तकी अलका! तुम जितनी सुन्दर हो, उतना ही सुन्दर तुम्हारा नृत्य है। यह लो अपना पुरस्कार।' इसी अवसर पर आर्य चाणक्य उपस्थित होकर चन्द्रगुप्त को चेतावनी देता है—'यदि इस क्षणिक विश्राम में ही जीवन का अन्त हो गया तो?' वह महोत्सव रोक देता है। चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य के मध्य अधिकार के प्रश्न को लेकर विवाद बढ़ जाता है। चाणक्य अपने सैनिकों से अलका तथा धूर्त वसुगुप्त को बन्दी बना लेता है। उनके मायाजाल को खोल देता है। चन्द्रगुप्त अपना अपराध स्वीकार करता हुआ चाणक्य के पैरों पर गिर पड़ता है। उनके मुख से लगातार एक आवाज निकलती है 'कौमुदी महोत्सव नहीं होगा।'

कौशाम्बी (सन् १९५२, पृ० ८२), ले० : डॉ० यदुवंशी; प्र० : पीताम्बर बुक डिपो, दिल्ली; पात्र : पु० १०, स्त्री नहीं है।
घटना-स्थल : कौशाम्बी।

इस ऐतिहासिक नाटक में कौशाम्बी का इतिहास प्रारम्भ से वर्णित है। रेडियो के लिए लिखे गए इस रूपक में विभिन्न कालों के पात्र छाया रूप में उसके सम्मुख आते हैं और अपने युग की कौशाम्बी से सम्बन्धित मुख्य-मुख्य घटनाएँ बताते हैं। इस नगरी को कृतयुग में चेदिराज उपरिचर वसु के पुत्र कुशाम्ब ने बसाया था जिसके समय में कौसुरविन्दी कौशाम्बेय आदि मन्त्रद्रष्टा ऋषि हुए। कलियुग के प्रथम चरण में अर्जुन के वंशज निचक्षु ने हस्तिनापुर के बाढ़ में ध्वस्त हो जाने पर पुनः इसे राजधानी बनाया और वह एक बार पुनः वैभव का केन्द्र बन गया। बौद्धकाल में यहाँ उदयन की राजधानी बनी। प्रारम्भ में उदयन का विरोध होने पर भी बाद में वह बौद्ध-धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा। अशोक के राज्य-काल में यहाँ संघ भेद

प्रारम्भ हो गया था परन्तु उनके प्रयत्नों से वह कम हुआ। अशोक के सौ वर्ष बाद शुंग राज्य होने पर जैनमत का भी इस नगरी में पदार्पण हुआ पर दोनों धर्मावलम्बी शांतिपूर्वक रहते थे। समुद्रगुप्त ने इसी कौशाम्बी के युद्ध में शत्रुओं को पराजितकर विशाल गुप्त साम्राज्य की स्थापना की। धीरे-धीरे बौद्धमत के पतन के साथ कौशाम्बी की श्री नष्ट होती गई। यहाँ तक कि ह्वेनसाँग के समय उसकी अत्यन्त दयनीय दशा हो गई।

क्रांति (सन् १९३९, पृ० १२९), ले० डा० बलदेवप्रसाद मिश्र, प्र० चाँद कार्यालय, इलाहाबाद, पात्र पु० ११, स्त्री ४, अंक ३।

इस जीवनीपरक नाटक में शंकराचार्य की धार्मिक दिग्विजय का सरस वर्णन है। शंकराचार्य ने १६ वर्ष की उम्र में ही समस्त वेद-वेदांगों की शिक्षा प्राप्त कर ली। शंकर अपनी माँ से सन्यास ग्रहण करने की इच्छा प्रकट करते हैं। माँ यह वचन लेकर सन्यास की अनुमति देती है कि मेरी मृत्यु के समय आकर तुम दाह-संस्कार करोगे। शंकर माँ को वचन देकर वाराणसी पहुँचते हैं और गुरु से दीक्षा ग्रहण करते हैं।

शंकर मण्डन मिश्र को शास्त्रार्थ में पराजित करते हैं लेकिन उनकी धर्मपत्नी भारती से काम-कला पर प्रश्न पूछने पर एक मास की अवधि माँगते हैं। इस अवधि में अमरुक के शरीर में प्रवेश करने से काम-कला के रहस्यों की जानकारी पाकर भारती को भी पराजित करते हैं। मण्डन मिश्र और भारती शंकर के शिष्य बन जाते हैं। शंकर अंतिम समय में माँ के पास पहुँचकर स्वयं ही माँ का दाह-संस्कार करते हैं। स्वजन शंकर के इस कृत्य का विरोध करते हैं। शंकराचार्य सम्पूर्ण भारत पर धार्मिक विजय प्राप्तकर देश की चारों दिशाओं में मठों की स्थापना करते हैं।

क्रांति का देवता चंद्रशेखर आजाद (सन् १९६२, पृ०८२), ले० विष्णुदत्त कविरत्न, प्र० प्रेम प्रकाशन, चर्खेवालान, दिल्ली, पात्र पु० २९, अंक-रहित, दृश्य १३। घटना-स्थल घर का आँगन, डेन साहब की कोठी, अदालत, दिल्ली का चौक, जलियावाला बाग।

इस ऐतिहासिक नाटक में क्रांतिकारी सेनानी चन्द्रशेखर आजाद की वीरता का वर्णन है। अपने देश को पराधीनता से मुक्त करने के लिए चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, बिस्मिल, राजगुरु, सुखदेव, आदि वीर सैनिक अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन शुरू करते हैं। ये क्रांतिकारी हिंसात्मक नीति का महत्त्व देते हैं। गांधी जी अहिंसावादी हैं। यही दोनों की नीतियों का मतभेद है। भगतसिंह, राजगुरु तथा सुखदेव गिरफ्तार हो जाते हैं। इनको अंग्रेज अफसरों द्वारा अनेक कष्ट दिए जाते हैं। ये वीर शहीद होते हुए फाँसी के फन्दे को चूम लेते हैं। आजाद को बड़ा दुःख होता है। लेकिन फिर भी वे अपनी क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए अपना परिश्रम जारी रखते हैं। अचानक एक बार इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में उनकी अंग्रेजी सिपाहियों के साथ मुठभेड़ हो जाती है। अन्त में अंग्रेज़ सैनिकों को मौत के घाट उतारते हुए आजाद भी मातृभूमि की बलि-वेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर देते हैं। कवि अशफाकुल्ला की यह पंक्ति बड़ी ही रोचक है कि—

'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पे मरनेवालों का यही बाकी निशां होगा॥'

क्रान्तिकारी (सन् १९५३, पृ० ८०), ले० उदयशंकर भट्ट, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पात्र ११, अंक १, दृश्य ४। घटना-स्थल मनोहर का बँगला, दयामयी का मकान, जंगल में कुटी।

इस राजनीतिक नाटक में क्रांतिकारियों की रणनीति का उद्घाटन किया गया है। मनोहर और दिवाकर दो सहपाठी हैं। मनोहर पुलिस अफसर बनता है और दिवाकर देश की स्वतन्त्रता का इच्छुक क्रान्तिकारी। ऐसी परिस्थितियाँ जुटती हैं कि जब दिवाकर को पकड़ने के लिए पुरस्कार की घोषणा होती है तो दिवाकर मनोहर के यहाँ शरण लेता है। धन के लोभ में मनोहर दिवाकर के साथ पुरानी मित्रता का निर्वाह नहीं

करता। मनोहर की पत्नी वीणा दिवाकर से प्रभावित होकर उसके गुट में शामिल हो जाना चाहती है। वह मनोहर की विकृत नीयत देखकर दिवाकर को लेकर घर से भाग जाती है। दिवाकर के दलवाले वीणा पर विश्वास नहीं करते। उल्टे मनोहर के यहाँ शरण लेने के कारण उसी से नाराज होते हैं और उसे प्राणदंड की सजा देते हैं। दल में सम्मिलित होने से पहले वीणा की परीक्षा ली जाती है। उसे (वीणा को) अपने पति की हत्या करने का आदेश दिया जाता है और वह उसका पालन करती है।

क्रान्ति का नाहर (सन् १९६४, पृ० ८४), ले० : श्यामलाल मधुप; प्र० : मनोरमा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली; पात्र : पु० १०, स्त्री २।

घटना-स्थल : बाजीराव का महल, अंग्रेज अधिकारी की कोठी, पथ, वन।

इस ऐतिहासिक नाटक में नाना फडनवीस की संगठन-शक्ति और अंग्रेजों का अत्याचार दिखाया गया है। बाजीराव पेशवा के मरने के बाद उन्हें मिलनेवाली आठ लाख सालाना की पेन्शन बन्द होने पर उनके उत्तराधिकारी नाना साहब अपने अधिकार की माँग करते हैं क्योंकि वही बाजीराव के असली उत्तराधिकारी थे। पर अंग्रेज अधिकारी उन्हें दत्तक पुत्र मानकर पेन्शन बन्द कर ही देते हैं। नाना साहब अँग्रेजों के खिलाफ बगावत करते हैं पर कुछ देशद्रोहियों के कारण उन्हें सफलता नहीं मिलती और वह पराजित होकर कुछ सिपाहियों के साथ नेपाल की पहाड़ियों और बीहड़ वनों की ओर चले जाते हैं फिर उनका पता नहीं चलता।

क्षमादान (सन् १९६६, पृ० ७९), ले० : विन्देश्वर मण्डल; प्र० : मैथिली रंगमंच, कलकत्ता; पात्र : पु० १३, स्त्री ३; अंक : २, दृश्य : ८, ७।

घटना-स्थल : महतो का घर, खेत, दालान।

इस नाटक का अभिनय १० नवम्बर, १९६८ को नेताजी सुभाष इन्स्टीट्यूट, सियालदह में हुआ। ग्रामीण जीवन पर आधारित इस सामाजिक नाटक में गाँव के मालदार जटाधर बाबू और एक वृद्ध बनिहार (मजदूर) कंचन महतो के पारिवारिक जीवन की झाँकी दिखाई गई है। नाटक का प्रारम्भ कंचन के बालक उमेश की भूख की छटपटाहट से होता है। उसकी माँ सोनियाँ समझाती है कि मत रोओ, अभी तुम्हारे पिता आकर कुछ व्यवस्था करेंगे। किन्तु कंचन आकर कहता है कि ठेकेदार ने कुछ नहीं दिया, क्या करूँ? कंचन जटाधर बाबू रईस के पास कर्ज के लिए जाता है पर कर्ज वहाँ भी नहीं मिलता। रईस उसे दूसरे दिन आने को कहता है। जटाधर का मैनेजर बाक और चाकर हरिया कंचन को समझाते हैं कि बाबू जटाधर को एक नौकरानी चाहिए। जो उचित वेतन होगा वह मिलेगा। अतः तुम अपनी कन्या कमलेसरी को वहाँ नौकर कर दो। कमलेसरी और मोहन में प्रेम है। अतः मोहन कमलेसरी को समझाता है कि जटाधर बाबू के घर नौकरी करने से गाँव भर में निंदा होगी। यहाँ ग्रामीण युवक-युवती के प्रेम-प्रसंग का मार्मिक चित्रण है।

कमलेसरी जटाधर बाबू के घर की शान देखकर चकित रह जाती है। बाबू की नौकरानी कुसुमी कमलेसरी को जटाधर बाबू के कमरे में ले जाती है। वहाँ जटाधर बाबू नशे में डूबे हुए हैं। कमलेसरी उन्हें देखकर भयभीत होकर कहती है—'दोहाई मालिक केर। अपने हमर माय-बाप छी।' जटाधर कहते हैं—'हम तोहर राजा, तो हमरी रानी।' जटाधर उसे गहना आदि देने का लोभ दिखाकर पास बुलाते हैं। उसके अस्वीकार करने पर कमलेसरी की बाँह पकड़ने की चेष्टा करते हैं। कमलेसरी अब साहस बटोरकर कहती है—'हम तोहरा मुँह में थूक देवै, जो हमरा पर अत्याचार करतें।"

इसके उपरान्त घटनाएँ ऐसी घटती हैं कि जटाधर बाबू में परिवर्तन आता है और वह कंचन को बुलाकर क्षमायाचना करते हुए कहते हैं—"हमारा मन जुल्मी अत्याचारी संसार में आर कतहु नहि भेटतह।" मैंने अपने स्वार्थवश नीच कार्य किया जिसका फल मुझे मिला। अब मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि ऐसी भूल कभी नहीं करूँगा। मेरे

पास छह सौ बीघा जमीन है। मैं चार सौ बीघा जमीन युवक संघ को अर्पण करता हूँ। अब मैं ग्राम के सुधार में जीवन लगाऊंगा।"

ख

खण्डित यात्राएँ (सन् १९६२, पृ० १०७), *ले०* नरेश मेहता, *प्र०* हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई, *पात्र* पु० ९, स्त्री ३, *अंक* ३। *घटना-स्थल* लखनऊ में सुरेन बाबू का कक्ष, रंगकक्ष।

इसमें प्राचीन सामन्त वर्ग की कथा है। सुरेन बाबू एक पुराने जमीदार हैं। उनकी सभी मान्यतायें नये युग के साथ मेल न खाने के कारण टूट जाती है। उनकी पुत्री नन्दिता परिवर्तन से भयभीत हो अपने में ही खो जाती है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के कारण उसका अपना अलग ही स्थान है। पुत्र महेन अपने को एक नूतन परिवेश में लाकर नए परिवर्तन की वास्तविकता को इंगित करता है कि य सब बीमार हैं। वह वीना से प्रेम करता है और फिर बाद में उसी से प्रेम विवाह कर अपनी मान्यता को स्थापित करता है।

सामन्त वर्ग तो समाप्त हो गया है किन्तु आज का व्यावसायिक वर्ग उसका स्थान निःसंकोच लेता जा रहा है। नन्दिता की मा के विवाह में बुआ माँ दहेज रूप म आती है जो बाद मे घर के किसी उत्तरदायी व्यक्ति के अभाव में वहाँ की अभिभाविका भी बन जाती है। इसी प्रकार वीना भी अपने विवाह के बाद हरखू को अपना व्यक्तिगत नौकर रखकर पूरे सामन्तयुगीन वातावरण को जीवित रखती है। इन सबके होते हुए *सभी लोग अपूर्ण हैं। सबकी जीवन-यात्राएँ,* विशेषकर सामन्तयुग की यात्रा का खण्डित होना दिखाया गया है।

इसका प्रथम प्रदर्शन 'अभिनय' (प्रयाग) नामक संस्था द्वारा प्रकाशन से पूर्व ८ जनवरी १९६१ को हुआ।

खटर काका चीन मे (सन् १९६७, पृ० ११६), *ले०* श्री कपिल प्रभाकर, *प्र०* राज भारती प्रकाशन, सत्य निकेतन, मटरस, पिरोजगढ दरभंगा, *पात्र* पु० २०, स्त्री ३, *अंक* ४, *दृश्य* २२। *घटना-स्थल* रमेश का दरवाजा, खटर काका का आँगन, सड़क, खटर काका का घर, खटर काका का दरवाजा, देवकान्त का शयन कक्ष।

इस मैथिल नाटक में चीनी भेड़ियों के काले कारनामें दिखाये गये हैं। मैथिली साहित्य-प्रेमी व्यक्तियों के लिए 'खटर काका' अत्यधिक परिचित पात्र हैं। अब तक ये मिथिला की मिट्टी में महादेव बनाकर पूजा करने और शास्त्र-पुराण पर प्रवचन के लिए ही प्रसिद्ध थे, किन्तु अब ये आधुनिक विचार के बनकर चीन की सीमा तक पहुंच गये हैं। इसमें भारतीय सुरक्षा को सुदृढ करने के लिए राष्ट्रीय भावनाओं को सहज रूप में हृदयगम कराया गया है। खटर काका चीन में भी मैथिली में ही भाषण देते हैं, जिसके फलस्वरूप उन्हें पहचानने में असुविधा नहीं होती है। इस नाटक में खटर काका की रजना व्यंजना, प्रत्युत्पन्नमतित्व का परिचय मिलता है। यह नाटक चीन के आक्रमण के संघर्ष में लिखा गया है। वस्तुतः आधुनिक युग में इसने व्यक्ति-व्यक्ति के हृदय में देशभक्ति का अपूर्व संचार हुआ है। अन्ततः विजयोपलक्ष्य पर खटर काका के जय जवान, जय विमान, नारे में उनकी कर्मठता और कठोरता भी ज्ञात होती है।

खलक खुदा का (सन् १९५८, पृ० ८०), *ले०* गिरजाशंकर पाण्डेय, *प्र०* जय प्रकाशन, वाराणसी, *पात्र* १४, *अंक* ५। *घटना-स्थल* गंगातट, घर, कमिश्नर का बंगला, छावनी, अस्पताल, गाव, अदालत।

इस ऐतिहासिक नाटक में स्वतंत्रता

प्राप्ति के लिए अपनी आन पर लड़ते हुए वीरों का वर्णन है। बनारस पर अँग्रेजों के अधिकार के कारण राजा चेतसिंह ने रामनगर के गढ़ की रक्षा के लिए जो प्रयास पूर्व किया था उसे पूरा करने के लिए बाद में लोगों ने पुनः अँग्रेजों से मुठभेड़ की। इस प्रकार सदैव काशी नगरी अँग्रेजों से अपने स्वतन्त्र अस्तित्व के लिए लड़ती रही। इसका ऐतिहासिक वर्णन इस नाटक का उपजीव्य है। केशव भट्ट, सरदार गुरदत्तसिंह आदि पात्र शिलालेख एवं इतिहास के ग्रन्थों में भी पाये जाते हैं।

खाजहाँ (वि० १९८१, पृ० १७५), ले० : रूपनारायण पाण्डेय; प्र० : गंगा पुस्तकालय कार्यालय, लखनऊ; पात्र : पु० १२, स्त्री ४; अंक : ५, दृश्य : ५, ६, ७, ७, ३।
घटना-स्थल : बाग, अन्तःपुर, मंत्रणा भवन, पहाड़, भारी जंगल आदि।

स्वाभिमानी वीर खाजहाँ का महत्त्व दिखाने के उद्देश्य से इस ऐतिहासिक नाटक की रचना की गई है। शाहजहाँ, खाजहाँ को दिल्ली बुलाता है। दिल्ली आने पर बादशाह द्वारा अपमानित किये जाने के प्रयास को देखकर खाँजहाँ वापस चला जाता है। महावत खाँ के मामा उच्चादर्शवाले व्यक्ति और शाहजहाँ के दरबार के विदूषक हैं।

सोफिया महावत खाँ की रूपवती लड़की है। इसका सौन्दर्य सभी को आकर्षित करनेवाला है, लेकिन नारायणराव ब्राह्मण अपने हिन्दुत्व की रक्षा के लिये सोफिया की तरफ देखता भी नहीं है जिसे सोफिया सहन नहीं कर पाती। वह नारायणराव के प्रण को छुड़ाने का प्रयत्न करती है। किन्तु उसे जब यह पता चल जाता है कि नारायणराव हृदयहीन नहीं बल्कि उच्च विचार का व्यक्ति है तो उसके हृदय में नारायणराव के प्रति श्रद्धा का भाव उत्पन्न होता है, और दोनों इकट्ठे होकर प्रेम-बन्धन में बँध जाते हैं। सोफिया के हृदय में हिन्दू जाति के प्रति प्रगाढ़ प्रेम उत्पन्न हो जाता है।

नाटककार ने खाजहाँ का आत्माभिमान और शौर्य गुलनार तथा रजिया का पति और पिता के सम्मान के लिए आत्मोत्सर्ग, बालक अजमत खाँ की पितृभक्ति और खुदादाद तथा रजिया की ईश्वर-भक्ति का अच्छा वर्णन किया है। साथ ही शाहजहाँ की कुटिल नीति का भी परिचय मिलता है।

खिलौने की खोज (सन् १९५६, पृ० ११५), ले० : वृन्दावनलाल वर्मा; प्र० : मयूर प्रकाशन, झाँसी; पात्र : पु० ८; स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ४, ५, ७।
घटना-स्थल : तलगाँव, कमरा, अस्पताल।

इस सामाजिक नाटक में मूर्ति के माध्यम से प्रेमी प्रेमिका की विरहिणी दशा चित्रित की गई है। डॉ० सलिल अपनी बाल सहचरी सरूपा से चाहते हुए भी विवाह नहीं कर पाता। परिणामतः जीवन-पर्यन्त सरूपा की स्मृति उसे सालती रहती है। जीवन से हताश सलिल मरने के उद्देश्य से सेना में भर्ती हो जाता है, परन्तु क्षय-ग्रस्त होकर उसे तलगाँव लौट आना पड़ता है। नन्दिनी डॉ० सलिल के गिरते स्वास्थ्य के प्रति अत्यधिक चिन्तातुर रहती है, परन्तु डॉ० स्वयं अपने आपको गला डालना चाहता है। डॉ० भवन अपने गठिया रोग का निदान डॉ० सलिल से कराने की प्रार्थना करते हैं। भवन की प्रार्थना पर सलिल उनका उपचार करता है। फलतः उसे भी अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत होना पड़ता है। एक दिन सरूपा का पुत्र केवल डॉ० सलिल के कमरे से चाँदी की मूर्ति उठाकर अपने घर ले जाता है। मूर्ति को देखकर सरूपा को अपने अतीत का स्मरण हो आता है। वह केवल डॉ० सलिल की मूर्ति को लौटाने का अनुरोध करती है। डॉ० सलिल सारे घटना प्रसंगों से अवगत होकर मृतप्राय सरूपा के उपचार में प्रवृत्त हो जाता है।

खुदा और शैतान (सन् १९२८, पृ० १४०) ले० : सरदार मोहनसिंह; प्र० : रामलाल सूरी, अनारकली, लाहौर; पात्र : पु० १० स्त्री ३; अंक : ७, दृश्य : रहित।
घटना-स्थल : झोपड़ी, राजभवन, निर्धन ब्राह्मणी की कुटिया एवं दुखी मजदूर की झोंपड़ी।

इस नाटक के प्रथम अंक में मजदूर, उसकी स्त्री, पड़ोसिन सेठ के लड़के से जीवन

की विभिन्न समस्याओं के विषय में वार्तालाप होता है। एक स्त्री निर्धनता के कारण बीमारी में दवा और पथ्य के अभाव से व्याकुल हो रही है। दूसरे अंक में राजा और उनके प्राइवेट सेक्रेटरी में राजनीति पर विचार होता है। राजा साहब प्रेम के शिकारी बनकर प्रेयसी जमीला के ख्याल में मग्न रहते हैं और बाधा डालनेवाले दुश्मनों को गोली मार देना चाहते हैं। तीसरे अंक में खुदा और दूत तथा चौथे अंक में शैतान और फरिश्ता बात करते हैं। फरिश्ता कहता है कि "मेरा रंग भी क्या जादू है, इस ब्राह्मणी की एक लड़की होगी और हुजूर की बरकत से वह या तो मुसलमान होकर चकले में बैठेगी या किसी महाजन के घर पर जावेगी।" शैतान की आज्ञा पाकर गरीबी, रोग, अत्याचार का देश में मचार होता है। छठे अंक में राजा साहब और जमीला में मोहब्बत की बातें होती हैं और राजा अपने प्रतिद्वन्द्वियों को दण्ड देने का उपाय सोचते हैं। शहर में हिन्दू मुस्लिम फसाद होता है किन्तु राजा साहब जमीला के साथ दिल बहलाने में लगे हुए हैं। शैतान के प्रयास से राजा वासना में लिप्त और प्राइवेट सेक्रेटरी धोखा और फरेब में संलग्न रहते हैं किन्तु निर्धन मजदूर रोटी के लिए तरसते हैं।

खुदा दोस्त सुल्तान (सन् १९२५, पृ० ७२) ले० एच० ए० किरन, प्र० गर्ग एण्ड को० देहली, पात्र पु० ४, अंक ३ दृश्य ८, ६, ६।
घटना स्थल राजभवन, राजसभा, रणभूमि।

इस नाटक में यवन और तातार के आपसी सम्बन्धों और उसकी ताजपोशी का ही वर्णन है जिसके अन्त में यवन देश का ताज शाहजादा बकर के सर पर बाँधा जाता है, और तातार का बादशाह फकीर खुदा दोस्त बनाया जाता है। भारत थियेट्रिकल कंपनी द्वारा अभिनीत

खून का खून (सन् १९२५, पृ० १०२) ले० मुंशी जलाल अहमद 'शाद' प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, पात्र पु० ११, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ७, ५, ३।

घटना-स्थल महल, झोंपड़ी।

इस ऐतिहासिक नाटक में स्त्रियों की निर्भीकता के साथ पतिपरायणता की भावना दिखाई गई है। राज्य का वजीर (राजा का भाई) एक खूनी व्यक्ति है। वह ताहिर नाम के व्यक्ति का खून कर देता है। उसकी पत्नी जोहरा स्वयं अपने पति से बदला लेने की प्रतिज्ञा करती है और धीरे-धीरे उन तमाम तथ्यों को अपने पति के प्रतिकूल इकट्ठा करती है जिनकी मदद से खून होता है। जोहरा जाकर राजा से सारी बातें बताती है। खूनी गिरफ्तार किया जाता है। उसका अपराध प्रमाणित होने पर उसे मृत्यु-दण्ड की सजा मिलती है किन्तु उसके भागने में प्रयास में राजा स्वयं उस असली गोली का शिकार बनाते हैं। खूनी के मरने के बाद उसकी स्त्री जोहरा भी आत्महत्या कर अपने पति के साथ प्राण त्याग देती है।

खून की रेखाएँ (सन् १९६७) ले० गिरिजाकुमार माथुर। प्र० विप्लव पत्रिका में प्रकाशित।

सर्वप्रथम इसे 'दंगा' शीर्षक से यशपाल जी के पत्र 'विप्लव' में अप्रैल १९४७ में प्रकाशित किया गया।

इस ऐतिहासिक नाटक का आधार साम्प्रदायिक दंगा एवं संघर्ष की लम्बी कथाएँ हैं। इसमें १९४७ में जाति के आधार पर हुए दंगों को चित्रित किया गया है। इन दंगों के माध्यम से समाज में हो रहे विनाश के प्रति नाटककार ने ध्यान आकर्षित किया है तथा प्रकारान्तर से वह समाज को इन तत्वों से विमुखकर नव-बन्धुत्व भावना को प्रेरित किया है।

खून की होली (सन् १९२५, पृ० ८८) ले० प० वचनेश मिश्र, प्र० कुँवर दल्पति सिंह जूदेव कालाकाँकर, पात्र पु० १५, स्त्री १०, अंक ५, दृश्य २, ४, ३, १, २।
घटना स्थल राजसभा, मंडल, युद्ध-मैदान।

इस ऐतिहासिक नाटक का कथा-भाग कालाकाँकर की राजवंशावली से सम्बद्ध है। इसमें रामराय, हरवंशराय, युवराज जय-

सिंह, कुँवर उदयसिंह और युवराज श्यामसिंह आदि की प्रशंसा में राजलक्ष्मी के द्वारा युद्ध-वर्णन के छन्द लिखे गए हैं।

इस नाटक में श्रीमान् अवधेश सिंह के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। इनके अन्य पूर्वज राजा श्यामसिंह की वीरता का भी सुन्दर उल्लेख है जिसने देखते ही देखते कल्याणशाह और बहादुरशाह को मौत के घाट उतार दिया है।

खून की होली (सन् १९६३, पृ० ५६), ले० : एन० सी० शाह 'कविजी'; पात्र : पु० ४, स्त्री १; अंक : ३, दृश्य : ३, ३, ३।

चीन के आक्रमण से सम्बन्धित इस ऐतिहासिक नाटक में देशभक्त युवक वीर विक्रम सिंह और युवती प्रतिभा के साहसपूर्ण कार्यों का वर्णन है। उन्होंने नेफा और लद्दाख में खून की होली खेली।

सभी वीर सैनिक, हिन्दू युवक, प्रतिभा और विक्रम सीमा की ओर कदम से कदम मिलाकर चले जा रहे हैं। विक्रम चीनियों को ललकारता हुआ गीत गाता है—

"ओ चीनिओ जाओ निकल
नेफा और लद्दाख से।
हैं सिंह गर्जते आ रहे,
बिहार से, बंगाल से॥"

चीनी सैनिक कहता है—"लो रे नीच भारतीय, फैसला कर ले कि कौन शेर है और कौन भेड़िया"। चीनी सैनिक विक्रम पर वार करता है। विक्रम द्रुत गति से बढ़कर रायफल के वार को निष्फल कर देता है, गोली एक भारतीय सैनिक की बाँहों को छेदती हुई एक वृक्ष में जा लगती है। भारतीय सैनिक की कराह विक्रम के हृदय में चुभती है और विक्रम बिजली की तरह चीनी सैनिकों पर टूट पड़ता है। उसकी छाती में छुरा घुसेड़कर हाथों को खून से रँगकर चिल्ला उठता है—

"खेलो खून की होली,
दुश्मनों के खून की होली।"

(चीनी सेनायें भयभीत होकर भाग जाती हैं)

खून के छींटे (पृ० ७१) ले० : प्रो० ओमप्रकाश नायर; प्र० : किताब महल इलाहाबाद; पात्र : पु० १६, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ३, ५, ३।
घटना-स्थल : चलकन्द का पहाड़ी भाग।

एक महान् क्रान्तिकारी और धर्म-प्रवर्तक बिरसा 'भगवान' का जन्म नागपुर में होता है। बिरसा विद्या-प्राप्ति के पश्चात् अपने गुरु के द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करता है। बिरसा एक दिन गाँव के निवासियों के सामने अपने मीठे स्वरों में धर्म, अहिंसा और अत्याचार के विषय में बातें करता है। वीरसिंह को अंग्रेजी राज, पुलिस, दरोगा, कचहरी तथा ठाकुरों के अत्याचारों से मुक्ति पाकर स्वतंत्र मुण्डा-राज्य की स्थापना के लिए प्रोत्साहित करता है। सब प्रसन्नचित्त हो यह प्रतिज्ञा ध्यान में रख बिरसा को प्रणामकर चल देते हैं। चलकन्द गाँव में ग्रामीण भयानक बादलों को देखकर कहते हैं कि आज आसमान आग उगलेगा। यह बिरसा भगवान का कहना है। किन्तु कहते हैं चलकन्द में जिसका दिल साफ होगा उसके ऊपर विपत्ति नहीं आयेगी। बिरसा भगवान की तपस्या से यह आपत्ति टल जाती है और बिरसा की जय-जयकार होने लगती है। सिपाहियों का एक झुण्ड आकर बिरसा को बन्दी बनाना चाहता है किन्तु आदिवासी युवकों द्वारा खदेड़ दिया जाता है। फिर दूसरे दिन जिला सुपरिण्टेण्डेण्ट मिस्टर मिरेज बिरसा को पकड़ने की आज्ञा दे देते हैं। चलकन्द की बिरसा की लिपी-पुती झोपड़ी में मंगल कार्य का आभास मिलता है। बिरसा मुण्डों की स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए तीर-धनुष लेकर तैयार रहने का आदेश देते हैं। सब ग्रामीण तैयार हो जाते हैं। सभी के शरीर अजेय करने के लिए बिरसा भगवान घड़े में भरे पानी को आम्रपत्र द्वारा शरीरों पर छिड़कते हैं और अस्त्र-शस्त्र के साथ क्रांति प्रारम्भ करने की सूचना देते हैं। इधर सुपरिण्टेण्डेण्ट की आज्ञा से सिपाही बन्दूक के साथ चल देते हैं। पुलिस की फायरिंग से आदिवासी युवक भागते हैं। तब मिरेज स्ट्रीटफील्ड फायरिंग 'स्टाप' का आदेश देता है। सिपाहियों द्वारा बिरसा भगवान का पता न लगने से ढिंढोरा पिटवाया जाता है कि जो बिरसा को हाजिर करेगा, उसको पाँच सौ

रुपया दिया जायेगा। दो युवक पैसे के प्रलोभन में आकर विरसा को और झोपडी निवासिनी दो स्त्रियों को पकडकर कमिश्नरी में हाजिरकर इनाम प्राप्त कर लेते हैं। विरसा स्त्री सहित रांची जेल में भेज दिया जाता है। कमिश्नर से कहता है कि सत्य की विजय होती है। हम समाप्त हो जायेंगे लेकिन देश का बच्चा-बच्चा विरसा है। तुम लोगों की गोलियाँ पानी का बुल्बुला बन जायेंगी और तुम सब बोरिये-बिस्तर सहित यहाँ से भागोगे। कालान्तर में पता लगता है कि विरसा की मृत्यु हो गयी। आदिवासी दुखी होते हैं लेकिन बाद में विरसा की वाणी —'सत्यमेव जयते'—को यादकर जननी जन्मभूमि और विरसा भगवान की जय-जयकार करते हैं।

खूने नाहक (सन् १८८६, पृ० ६६), ले० मेंह्दी हसन 'अहसन', प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, पात्र पु० ८, स्त्री ३, अंक ३।

मलिका नौरुन्निसा का अनुचित प्रेम देवर के साथ है। वह युवराज जहाँगीर की जगह फारुक को राज दिलाना चाहती है। पर वजीर तैयार नहीं होता। वजीर की बेटी मेहरबानू जहाँगीर से प्रेम करती है और मेहरबानू अपना प्रणय जहाँगीर के प्रति निवेदित करती है। किन्तु जहाँगीर त्रिया चरित्र की धोखा, मक्कारी और बेवफाई के कारण स्त्रियों से दूर रहता है। अतः मेहरबानू अपने प्रेम का ठीक समाधान करने में असफल रहती है।

द्वितीय अंक में फारुक की कूटनीति और जहाँगीर की तैयारी में गतिशीलता दिखाई देती है। जहाँगीर अपनी माँ मलिका को अपने पिता के चित्र दिखाता है और उसके फुसलाने की बातों में उत्तेजित होकर उसकी मक्कारी का पर्दाफाश करता है। फारुक भी जहाँगीर का काँटा निकालने के लिए षड्यन्त्रों का जाल बुनता है।

अन्तिम अंक में जहाँगीर सारी साजिशों से बच जाता है। न्यू अल्फिस्टन थियेट्रिकल कम्पनी द्वारा अभिनीत।

खूने नाहक (सन् १९३१, पृ० ६६), ले० मु० आरजू साहब, प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, पात्र पु० १०, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ५, ६, ३।
घटना-स्थल महल, दरबार।

इस पारसी थियेट्रिक नाटक में जहाँगीर का प्रतिशोध वर्णित है। कमर दमिश्क का बादशाह तथा शाहजादा जहाँगीर का चाचा खलनायक है। वह अपने भाई को विष द्वारा मारकर मलका के प्रेम तथा राज्य को प्राप्त करता है। मलका अपने शाहजादे से भयभीत है। विद्रोही जहाँगीर अपनी माँ, चाचा तथा मंत्री हुमायूँ को मारकर पिता की मृत्यु का बदला लेता है। हुमायूँ की लड़की मेहरबानू पिता तथा प्रेमी ससुर के हत्यारे जहाँगीर से ही प्रेम करती है।

फारूक की साजिश से नसीर अपने पिता हुमायूँ तथा बहन मेहरबानू का बदला लेने के लिए जहाँगीर पर खंजर चलाता है किन्तु प्रतिरोध में नसीर मारा जाता है और जहाँगीर घायल हो जाता है। ससुर की हत्या का बदला लेने के लिये उसका पिता जहाँगीर को विष पिलाना चाहता है। किन्तु धोखे में उसे मलका पी जाती है। फारुक के षड्यन्त्र का उल्टा परिणाम निकलता है। फारुक को भी भागने से पूर्व जहाँगीर पिस्तौल से मार देता है और स्वयं भी मरकर नाटक का दुखांत करता है।

न्यू अल्फिस्टन थियेट्रिकल कम्पनी द्वारा अभिनीत।

खूसटचंद (सन् १९३५, पृ० ६४), ले० टी० आर० सिनहा, प्र० भारती आश्रम, हेविट रोड, इलाहाबाद, पात्र पु० ५, स्त्री २, अंक-रहित, दृश्य ७।

यह सामाजिक जीवन पर आधारित अत्यन्त रोचक और मनोरंजक प्रहसन है। अपने कार्यालय में मैनेजर रखने के शौकीन खूसटचन्द अपनी बीवी के मना करने पर भी गडबडसिंह को अपना काम करवाने के लिए मैनेजर नियुक्त करता है। वह कई महीने बीतने पर भी मैनेजर को तनख्वाह नहीं देता। मैनेजर गडबडसिंह किसी काम से ८ दिन के लिए कलकत्ता जाता है। वह कलकत्ता जाकर खूसटचन्द के सारे ग्राहकों से पैसा

एकत्र करके २½ महीने बाद लौटता है तथा खूसटचन्द को रुपये न देकर उनका हिसाब दे देता है। इधर खूसटचन्द गड़बड़सिंह की जगह बदकिस्मत लाल को नौकर रख लेता है और उसे भी पैसे नहीं देता जिससे बदकिस्मत लाल बड़ा तंग हो जाता है। खूसटचन्द बदकिस्मत लाल की पत्नी से प्रेम करता है। अन्त में गड़बड़सिंह की मदद से खूसटचन्द बदकिस्मत लाल के घर चोर के रूप में गिरफ्तार कर लिया जाता है जिसमें बड़ी मार पड़ती है और वह दुखी होता है।

ख्याल राजा नल का (सन् १९८४), ले० : नानूलाल; प्र० : मुंशी शादीलाल, कुतुब फरोश, दरीबाकलाँ, दिल्ली; पात्र : पु० ३, स्त्री ३; अंक-दृश्य--रहित।

इस पौराणिक नाटक में नल दमयंती के दाम्पत्य जीवन में आई विपत्तियों की झाँकी प्रस्तुत है। राजा भीमसेन अपनी कन्या दमयन्ती के विवाह के लिए स्वयंवर रचते हैं। दमयन्ती हंस के गले में पत्र बाँधकर नल के पास भेजती है और उन्हें स्वयंवर में बुलाकर गले में वरमाला डालती है। विवाह के उपरान्त नल-दमयन्ती पर आनेवाली अनेक विपत्तियों की कवि कल्पना करता है। भुना हुआ तीतर उड़ जाता है। मरी मछली समुद्र में कूद पड़ती है। इस पर नल कहता है—

"भुन्या तीतर उड़ गया
होगी दिन खोटो छे मेरो।
जीकर गई समन्दर में
जानत मछली है भगवान्।"

सारी विपत्तियाँ सहकर फिर नल दमयन्ती मिल जाते हैं और उन्हें राज्य प्राप्ति होती है। कवि कहता है—

"गढ़ नरवल्ल के बीच में
सो फिर नल की फिरी दुहाई।
शोभद राम उस्ताद
ज्ञान दियो मिट गई अब दुखदाई।'
नानूराम चिड़ावें वालो
नल लीला कथ गाई।

कवि नानू ने यहाँ तक विवरण दिया है कि मैंने अपने जीवन के छत्तीसवें वर्ष में यह ख्याल रचा है।

ख्वाबेहस्ती नाटक (सन् १९२६, पृ० ६५), ले० : जयरामदास गुप्त; प्र० : उपन्यास बहार आफिस राजघाट, काशी; पात्र : पु० ७, स्त्री ६; अंक : ३, दृश्य : ८, ११, ७। घटना-स्थल : परिस्तान, जंगल।

इस ऐतिहासिक नाटक की कथा बदचलन सौलत खा के व्यभिचारों पर आधारित है। अजमत खा एक रईस मालदार नवाब है सौलत उसका बदचलन बेटा है। फीरोज डाकुओं का सरदार है। उसकी बहन हुस्ना सौलत खा पर आशिक है। परन्तु एक बार सौलत हुस्ना को मारकर नदी में फेंक देता है। बाद में उसे फीरोज बचा लेता है। फीरोज की प्रेमिका अजमत खा की भतीजी रजिया है। सौलत खा रजिया से जबरदस्ती प्रणय करना चाहता है। परन्तु रजिया कहती है कि वह अपने बाप के हत्यारे सौलत खा से प्रेम नहीं कर सकती। सौलत उसकी हत्या करना चाहता है। परन्तु फीरोज उसे बचाता है। बाद में सौलत खा हुस्ना से माफी मांगता है और वे प्रणय-सूत्र में बँधते हैं। रजिया व फीरोज भी मिल जाते हैं। यहीं पर नाटक की समाप्ति है।

ख्वाबे हस्ती नाटक (सन् १९२६, पृ० ९८), ले० : जलाल अहमद 'शाद'; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० ७, स्त्री ६; अंक ३, दृश्य : ८, ११, ७। घटना-स्थल : परिस्तान, मकान, जंगल, कैदखाना।

यह नाटक बम्बई की पारसी नाटक कम्पनियों के लिए लिखा गया था। इसके कितने ही संस्करण हो चुके हैं। इससे इसकी लोकप्रियता का परिचय मिलता है।

इस नाटक में एक मालदार नवाब अजमत खां और उसके ऐय्याश बेटे सौलत खा, डाकुओं के सरदार फीरोज की घटनाएं दी गई है। सौलत खा फीरोज नामक डाकू की बहिन हुस्ना को प्यार करता है। पर हुस्ना उसका विश्वास नहीं करती। वह कहती है—तू झूठा है :—

'हमसे गरीबों को करे प्यार गलत है।
एक बार गलत नहीं, सौ बार गलत है।"

इस नाटक में चमत्कारी घटनायें दिखाई

गई है। एक स्थान पर पहाड बीच में फटता है और हुस्ना रूह के लिबास में नजर आती है। हुस्ना की रूह और सौलत में बातें होती हैं। हुस्ना ने सौलत के प्रेम में प्राण अर्पण कर दिया है। उसकी रूह सौलत से कहती है—

"तेरी चाह में पाये यह रंजो अलम,
न इधर की रही न उधर की रही।"

सौलत अपने कुकृत्यों पर तौबा करता है, और हुस्ना प्रसन्नतापूर्वक प्रकट होकर सौलत से कहती है कि "न घबराओ, आओ, मेरे सीने से लग जाओ।"

इसी प्रकार रजिया और फीरोज का भी मिलन हो जाता है।

ग

गंगा का बेटा (सन् १९४०, पृ० ९८), ले० पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', प्र० रूप प्रदम, इन्दौर, पात्र पु० १८, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ८, १६, ३।

घटना-स्थल पवन राजमहल, गंगातट, कुटी भवन, पर्णोष्ठ झोपडी, यमुना तट, स्वयंवर-मंडप, आश्रम, मंदिर, पहाड़ी, वटवृक्ष, मार्ग, शिविर।

इस पौराणिक नाटक में गंगा-पुत्र भीष्म का पराक्रम वर्णित है जो शान्तनु के शापानुकूल शिखंडी की आड में अर्जुन के बाणों से मारे जाते हैं।

वसुओं द्वारा अपहृत नंदनी गाय का पता, वशिष्ठ समाधि के बल पर लगाकर उन्हें देवता से मानव होने का शाप देते हैं। शाप का ज्ञान होते ही वसु वशिष्ठ के पास पहुँच कर अपनी गलती स्वीकारते है। वशिष्ठ द्वारा बताये गये उपाय से वसु गंगा को अपनी माँ बना लेते है। हस्तिनापुर के सम्राट शान्तनु का परिचय गंगा से होता है। दोनों एक दूसरे को पति-पत्नी रूप में स्वीकार करते हैं। गंगा यह शर्त रखती है कि आप मेरे किसी भी कार्य में बाधक न होंगे। गंगा के सात पुत्र उत्पन्न होते हैं और उन्हें वह नदी में प्रवाहित कर देती है। आठवें वसुओं के अंश से पैदा होनेवाले आठवें पुत्र देवव्रत का गंगा राज्याधिकार के निमित्त पालन करती है। एक दिन गंगा के तट पर अचानक पिता-पुत्र की भेंट होती है। राजा देवव्रत को युवराज बनाने का आदेश देते हैं। एक दिन यमुना के तट पर शान्तनु दाशराज की पुत्री सत्यवती पर मन का दाव हार जाते हैं। जब विवाह का प्रस्ताव रखा जाता है तो दाशराज शर्त रखते हैं कि तुम्हारे बाद राज्य का अधिकारी सत्यवती का पुत्र होगा। शान्तनु इसे नहीं मानते। उनके पुत्र भीष्म इसे स्वीकारकर पिता से विवाह करने का आग्रह करते हैं। शान्तनु मरने से पूर्व सत्यवती के दो पुत्र छोड़ जाते हैं। भीष्म सत्यवती-पुत्र विचित्रवीर्य को राजा बना देते हैं और उनके लिए काशीराज की तीन कन्याओं अम्बा, अम्बिका तथा अम्बालिका का स्वयंवर में अपहरण कर लाते हैं। अम्बा शाल्वराज से अनुरक्त होती है। इस का ज्ञान होते ही वह भीष्म तथा शाल्वराज दोनों से ठुकरा दी जाती है। वह भीष्म से बदला लेने के लिए परशुराम जी के पास जाती है। परशुराम के समझाने पर भी भीष्म नहीं मानते और दोनों में युद्ध होता है। परशुराम पराजित होते हैं। इस पर अम्बा शिव की तपस्याकर उनसे वरदान पाती है कि पांचाल देश के राजा द्रुपद की पुत्री बनकर फिर समय पर पुत्र बनेगी उसीसे भीष्म मारे जायेंगे। द्रुपद-पुत्र शिखंडी की आड़ में अर्जुन के तीर से मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

गंगा माहात्म्य (पृ० २८) ले० वंशीधर पाठक, प्र० आर्य भास्कर यंत्रालय, मुरादाबाद, गर्भाङ्क ३ परिच्छेद ७।

घटना-स्थल द्वारका का कुशावर्त घाट, मंदिर।

इस नाटक का उद्देश्य धर्म-सम्बन्धी

लोक प्रचलित रूढ़ि, परम्परा, पौराणिक मान्यता, कर्मकाण्ड और अन्धविश्वास का खंडन करता है।

गिरधर शर्मा एक सनातन कर्मकाण्डी पुरोहित है। वह गंगा को पापहारिणी तथा मोक्षदा मानता है। सत्यव्रत शर्मा उसके विचारों से असहमत है। वह तीर्थों और मेलों में होनेवाले अत्याचारों तथा कष्टों का विवरण देकर गंगा-स्नान मात्र से मुक्ति के सिद्धान्त का परिहास करता है। उसके शब्दों में गंगा दुराचारियों की हिमायती है—दोनों में विवाद होता है। अन्त में अपने मत की पुष्टि के लिए सत्यव्रत गिरिधर को मेला दिखाने ले जाता है।

मेले में आये स्नानार्थियों को पंडे परेशान करते हैं। उनमें से एक स्नानार्थी उनका विरोधकर गंगा-विषयक अंधविश्वासों को चुनौती देता है। उसी प्रकार हरिद्वार के कुशावर्त घाट पर भीड़ के धक्के खाते कुछ स्नानार्थी गंगा-पुत्रों और उनके अभिकर्ताओं के चंगुल में पड़कर दान-दक्षिणा देते हैं।

उसी मेले में एक ओर जुआ तथा दूसरी ओर साधुओं के तम्बू में पंडित जी का कथा बाँचने, श्रोताओं की अन्धविश्वासपूर्ण मनौतियाँ करने तथा एक यात्री द्वारा सत्यनारायण कथा तथा तुलसी-शालिग्राम विवाह सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाने पर पंडित का उससे पिंड छुड़ाने, ज्योतिषी साधु का भोले और मूर्ख ग्रामीणों को ठगने और स्त्रियों को भ्रान्ति में डालने आदि की घटनाएँ देखने को मिलती हैं।

गंगावतरण (सन् १९५८) ले० : जानकी-वल्लभ शास्त्री; प्र० : 'पाषाणी' में संग्रहीत, लोकभारती इलाहाबाद; पात्र : पु० ४, स्त्री : २; अंक-रहित, दृश्य : ३। घटना-स्थल : वन, उद्यान।

इसमें गंगा के भू-अवतरण हेतु भगीरथ के प्रयत्नों की पौराणिक कथा वर्णित है। सूत्रधार भगीरथ के कर्मठ व्यक्तित्व का उल्लेख करते हुए गंगावतरण के असिधारा-व्रत की ओर संकेत करता है। उधर स्वर्ग में नारद की सूचना पर इन्द्र भगीरथ के तप से उद्विग्न होकर रंभा तथा उर्वशी अप्सराओं को तप-भंग हेतु भेजते हैं।

द्वितीय दृश्य में युगल नर्तकियाँ विभिन्न कामोद्दीप्त चेष्टाओं द्वारा भगीरथ की तपस्या खंडित करने का प्रयास करती हैं किन्तु विफल रहती हैं, इससे भगीरथ का संकल्प और भी दृढ़ हो जाता है। इसी समय वरं ब्रूहि—कहते हुए ब्रह्मा प्रकट होते हैं। भगीरथ उनसे पितर-उद्धार की प्रार्थना करते हैं। इस पर ब्रह्मा पार्थिव लोक में कर्म की प्रधानता का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि तुम्हारे पुण्य कर्मों से पितरों का मोक्ष सम्भव नहीं। ये कर्म तुमको स्वर्ग की उपलब्धि करा सकते हैं। किन्तु भगीरथ उस स्वर्ग को त्याज्य समझते हैं जो उनके पूर्वजों का उद्धार न कर सके। इसी समय अचानक नारद का आगमन होता है और वे ब्रह्मा को भगीरथ की लोकमंगल भावना से परिचित कराते हैं जिससे ब्रह्मा प्रभावित होकर आशीर्वाद देते हैं। तत्पश्चात् गंगा के भारवहन हेतु भगीरथ शंकर की आराधना के लिए तत्पर होते हैं। अन्त में शंकर इस पुण्य-कार्य हेतु स्वयं प्रस्तुत होते हैं।

गंगा स्नान (सन् १९३८, पृ० २४) ले० : बिहारी ठाकुर; प्र० : दूधनाथ पुस्तकालय, कलकत्ता। घटना-स्थल : गंगातट।

इस सामाजिक नाटक में माता का पुत्र से प्रेम दिखाया गया है।

इस नाटक का नायक संतानहीन म्लेच्छ है। उसकी धारणा है कि गंगा-स्नान से उस के घर में संतान हो सकती है। वह माँ और पत्नी के साथ गंगा-स्नान को जाता है। वहाँ अपनी माँ को दुत्कार गंगा के किनारे छोड़कर सन्तान की कामना से आशीर्वाद लेने एक साधु के पास जाता है। साधु बड़ा ही प्रपंची और धूर्त है। वह म्लेच्छ की पत्नी को एकान्त में ले जाता है और उसके आभूषण छीनकर भाग जाता है। अब इस दम्पति को यह अनुभव होने लगता है कि उन पर यह विपत्ति उनके द्वारा माता के अपमान के कारण आई है। वह गंगा-स्नान के मेले में अपनी माता को खोजता फिरता है। अन्त में उसको पाकर दोनों प्रसन्न होते हैं। माता तब भी बेटे को प्यार करती है और सब घर

लौट आते हैं।

गगोत्री (सन् १८९७, पृ० ६३) ले० वालमुकुन्द पाण्डेय, प्र० लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ।
घटना-स्थल गाँव, जमींदार का भवन।

इस सामाजिक नाटक में नवविवाहिता पत्नी की सच्ची पति-परायणता दिखाई गई है।

गगोत्री का विवाह होने पर जब वह पति के साथ अपने गृह जाने लगती है तभी वहाँ का जमींदार बलात् गगोत्री का हरण करने के लिए आ धमकता है। जमींदार सम्पन्न व्यक्ति है और गगोत्री का विवाहित पति अति सामान्य कृषक। जमींदार के प्रलोभन देने पर माता-पिता विचलित हो जाते हैं। गगोत्री के विवाहित पति की हत्या कर दी जाती है। पति का वियोग सहने में असमर्थ होने के कारण सती साध्वी गगोत्री गोली के द्वारा आत्महत्या कर लेती है।

गड़बड़ घोटाला (सन् १९१८, पृ० ३४), ले० शिवरामदास गुप्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० १०, स्त्री ३ *अक रहित, दृश्य ३।*
घटना-स्थल कलन्दर का मकान, रास्ता, घंटालबेग का मकान।

इस सामाजिक नाटक में प्रेमी द्वारा अपनी प्रेयसी को प्राप्त करने के लिये किये गये आडम्बरों का वर्णन है।

कलन्दर घण्टालबेग की लड़की करीना से प्रेम करता है। वह चटोरी से घण्टालबेग तथा करीना को पत्र लिखवाकर बुलाने भेजता है। इधर खटपट की छुपी हुई शरारत से लाल स्याही गिर जाती है जिसे खून समझकर सिपाही कलन्दर को पकड़ने चले आते हैं। इसी बीच घण्टालबेग अपनी लड़की के साथ आता है और यह तमाशा देखकर वापिस चला जाता है। सिपाही जब खटपट को मुर्दा समझकर ले जाना चाहते हैं तो वह जीवित खड़ा हो जाता है। धोखा देने के अपराध में खटपट ही पकड़ा जाता है। अब कलन्दर अपनी माशूका को प्राप्त करने के लिए स्त्री का भेष बदलकर घण्टालबेग को अपने जाल में फँसाता है। घण्टालबेग अपने निकाह के लिए काजी और मौलवी को बुलाने जाता है। उसी समय कलन्दर अपना भेद प्रकट करता है। घण्टालबेग के आने पर सारा रहस्य खुल जाता है। करीना और कलन्दर का मिलाप हो जाता है।

गणेश जन्म (सन् १९३०, पृ० ११४), ले० *प० रामशरण आसमानद, प्र० उपन्यास बहार* आफिस, काशी, पात्र पु० १६, स्त्री ५, *अक ३, दृश्य ६, ८, ८।*
घटना-स्थल शिवपुरी, इन्द्रलोक, पर्वत, जगल आदि।

इस पौराणिक नाटक में गणेश जन्म की कथा का वर्णन किया गया है। इसमें शिव और पार्वती की कथा के साथ कामदेव की घटना भी दिखाई गई है। भस्मासुर राक्षस की कथा भी इसमें वर्णित है।

गद्दार (सन् १९६१), ले० कुँवर कल्याणसिंह प्र० राष्ट्रीय नाट्य परिषद, लखनऊ, *पात्र* पु० ८, स्त्री ३, *अक* ३।
घटना-स्थल पहाड़ी, गाँव, घर, जगल एव कबायलियों का डेरा।

इस नाटक में १९४७ में कश्मीर पर पाकिस्तानी कबायली लुटेरों द्वारा किये गये अत्याचारों तथा भाई की गद्दारी का सशक्त चित्रण है। असलम अपनी बेटी नफीस के साथ कबायली लुटेरों से डरकर गाँव छोड़कर जाना चाहता है। किन्तु शौकत, सुल्तान, जरीना आदि के द्वारा बेटी नफीस और भूमि की रक्षा का विश्वास पाकर वह रुक जाता है। फिर भी कबायली हमले में असलम और शौकत मारे जाते हैं।

नफीस धोखे से लुटेरों द्वारा पकड़ ली जाती है। सुल्तान भेष बदलकर कबायलियों में जा मिलता है। वह भारतीय फौज को कबायलियों का पता बताता है जिसमें हजारों कबायली मारे जाते हैं। लुटेरा सरदार को सुल्तान की चाल और गद्दारी का पता चल जाता है। वह सुल्तान को गोली मारकर तथा नफीस को जबरदस्ती लेकर भागता है।

विरोध करना है। इसी प्रकार हिन्दू छुआछूत पर डटे हुए हैं। हरि उनको समझाता है। इसी प्रकार गरीब हिन्दुस्तान के शत्रु रूप में विद्यमान हिन्दू-मुसलमान की फूट का सुन्दर चित्रण मिलता है।

गरीब हिन्दुस्तान उर्फ स्वदेशी तहरीक (सन् १९४२), ले० मोहम्मद इबराहीम महशर अबाल्वी प्र० जे० एम० सर्तसिंह एण्ड सन्स, लाहौर, पात्र ६।
घटना-स्थल जमींदार का बाग, जंगल, महल।

यह नाटक स्वदेशी आन्दोलन पर आधारित है। डा० हरिसिंह अपने पुत्र सूरजसिंह को विलायत पढ़ने भेजते हैं। वह विदेश से लौटने पर अपने पिता को स्वागतार्थ फूल (बेवकूफ) की उपाधि प्रदान करता है। उसे यहां का समस्त वातावरण घृणित प्रतीत होता है।

इसमें युगव्यापी छुआछूत और हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक भावना पर प्रकाश डालने के लिये चोटीधारी हरि पाण्डे और शिव पाण्डे का मौलाना नशीर से विवाद भी प्रस्तुत है। सज्जन राष्ट्रवादी मुसलमानों का प्रतिनिधित्व मौलाना करते हैं जो गाय के स्थान पर अपने पुत्र को बलि देने के लिये प्रस्तुत करते हैं।

डा० हरिसिंह अपने स्वप्नों के विपरीत पुत्र सूरजसिंह के आचरण से असन्तुष्ट होकर उसे निर्वासित कर देते हैं। सूरज अपने कुकृत्यों से पीड़ित हो अन्ततोगत्वा भूल स्वीकार करता है और पिता द्वारा क्षमा कर दिया जाता है।

गरीबी या अमीरी (सन् १९६७, पृ० १६५), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० इलाहाबाद हिन्दुस्तानी एकेडेमी, पात्र पु० ३, स्त्री २, अंक ५, दृश्य ३, ३, ३, ३, ३।
घटना-स्थल द० अफ्रीका, भारत।

विद्याभूषण भारतीय आदर्शवादी साहित्य-प्रेमी निर्धन युवक है। दक्षिणी अफ्रीका में एक धनी लड़की अचला से उसका प्रेम हो जाता है। परन्तु विद्याभूषण उसे ऐश्वर्य के बीच में ग्रहण करने को तैयार नहीं होता। वह अंदर से अचला के प्रति प्रेम होते हुए भी उसे छोड़कर भारत चला जाता है। अचला भी किसी बहाने भारत चली आती है। उसका पिता अपनी बेटी के लिये बहुत चिन्तित है। वह एक एजेन्ट से पता लगाकर अचला के लिये आवश्यकतानुसार धन भेजने लगता है। विद्याभूषण उसे स्वीकार नहीं करता क्योंकि उसके पिता ने गरीबों के खून से धन कमाया है। वह अचला से अलग होकर एक गरीब मुहल्ले में रहने लगता है। पत्र-पत्रिकाओं में अपने लेख निकालता है। तो भी उसका निर्वाह ठीक प्रकार से नहीं होता। विद्याभूषण का स्वास्थ्य गिरने लगता है। इधर अचला भी एक देहात में रहकर सारा धन गरीबों की सेवा में लगा देती है। जीवन से अधिक तंग आकर विद्याभूषण अचला के पास आता है, यहाँ आते ही उसकी हृदय-गति रुक जाने से मृत्यु हो जाती है। परन्तु अचला अपने पुत्र सरस्वतीचन्द्र को जीवन का आधार बनाकर कर्तव्य-पथ पर अचल रहती है।

गरुड़ध्वज (सन् १९४६, पृ० १८४), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञानवापी, वाराणसी, पात्र पु० १२, स्त्री ४ तथा अन्य सेवक, अंक ३।
घटना-स्थल विदिशा, बौद्ध-विहार युद्ध-भूमि, मैदान, उद्यान।

इस ऐतिहासिक नाटक में विक्रमादित्य के शौर्य का वर्णन है। विदिशा का शुंग सेनापति विक्रममित्र यवनों से देश की रक्षा करने को तत्पर है। बौद्ध राजा काशिराज अपनी कन्या वासन्ती का विवाह बौद्धधर्मावलम्बी किसी व्यक्ति से करना चाहता है। परिणामतः वह यवन बौद्ध के साथ अपनी कन्या भेज देता है। परन्तु विक्रममित्र यह तथ्य जानकर कन्या को बीच में ही यवन से छीन लेता है। इसी समय मलयकुमारी भी विदिशा में शस्त्र विद्या का अध्ययन करने को ठहरी है। वासन्ती अपनी करुण-कथा मलयकुमारी को सुनाती है। इन्हीं दिनों अवन्ती पर यवन आक्रमण होता है। मालव राजकुमार विषमशील तथा विक्रममित्र यवनों से युद्ध करते हैं। यहीं अवन्ती में संस्कृत कवि कालि-

दास भी बौद्ध संघों में भिक्षुओं के साथ रहते हैं। उन्हें बुलाकर विक्रममित्र कालिदास को काशिराज के पास भेजता है। कालिदास उसे अपने विचारों से प्रभावित करते हुए भागवत-धर्म का अनुयायी बना लेते हैं। काशिराज की पुत्री पिता के संकेत पर कालिदास के गले में माला डाल देती है लेकिन कालिदास सहमत नहीं होते हैं। कालिदास, काशिराज विक्रममित्र सभी मिलकर मालव राजकुमार की रक्षा के लिए शत्रुओं को परास्त करते हुए शान्ति की स्थापना करते हैं। वासन्ती का विवाह भी कालिदास से हो जाता है। अचानक एक श्रेष्ठी आकर विक्रममित्र को उसके पुत्र के अन्याय की सूचना देता है। पुत्र को पकड़वाकर राजा, विषमशील को उसे (पुत्र को) दण्ड देने के लिए न्यायाधीश घोषित करता है। श्रेष्ठी-पुत्री कौमुदी के निवेदन करने पर वे छूटते हैं तथा देश छोड़कर दूर चले जाते हैं। विक्रममित्र शुगकुमार के चले जाने पर विषमशील को विदिशा का राजा घोषित कर देता है। कालिदास की इच्छा से उनका नाम विषमशील से विक्रमादित्य रखा जाता है। विक्रमादित्य प्रतिज्ञा के साथ 'गरुड़ध्वज' को फहराता है। उसके गौरव और प्रतिष्ठा को सदैव बनाये रखने का प्रण करता है।

गर्दभ सेनोद्धार (प्रहसन) (सन् १९३०, पृ० २८), ले० : पं० जगन्नाथ शर्मा राजवैद्य; प्र० : धार्मिक यन्त्रालय, पं० जगन्नाथ निवारी, इलाहाबाद; पात्र: पु० ४; अंक और *दृश्य-रहित*।

विषयासक्त होकर या लालचवश ईसाई होनेवालों की आंखें खोलने के लिए यह प्रहसन लिखा गया है। मुसलमान गंगादास गंगा की महिमा का वर्णन करते हुए हिन्दू धर्म को सभी धर्मों से श्रेष्ठ बताता है। एक दिन गंगादास तथा गर्दभसेन किस्तान की जोरदार बहस होती है। अन्त में गर्दभसेन अपना भेद खोलता है कि वह ईसाई लड़की के साथ विवाह करने के लालच में ईसाई बन गया था। वास्तव में वह जाति का धोबी हिन्दू है। ब्राह्मण वृकोदर तथा पुरोहित गर्दभसेन से प्रायश्चित्त करवाकर पुनः धोबी की जाति में सम्मिलित कर लेते हैं। इस प्रकार गंगादास के संसर्ग से गर्दभसेन का उद्धार हो जाता है।

गांधर्व विवाह (वि० सं० २०१०, पृ० १२०), ले० : दामोदर झा; अध्यापक, प्रभु नारायण राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रामनगर, बनारस; पात्र: पु० ३१, स्त्री ११; अंक : ५, दृश्य : २२।
घटना-स्थल : राज सभा, फुलवाड़ी, रास्ता, वन, अर्जुन का शयन-कक्ष, युधिष्ठिर का दरबार, दुर्योधन का दरबार।

गान्धर्व-विवाह की कथा-वस्तु महाभारत से ली गयी है। द्वारिका में अर्जुन एवं सुभद्रा के परस्परावलोकन से दोनों के हृदय में राग उत्पन्न होता है। अर्जुन के इन्द्रप्रस्थ चले जाने पर सुभद्रा वियोगिनी बन जाती है। सत्यभामा की मंत्रणा से सुभद्रा अर्जुन को पत्र लिखती है। पत्र पाते ही अर्जुन व्याकुल होकर शीघ्र ही कृष्ण और वसुदेव के साथ द्वारका पहुँचते हैं। अर्जुन के द्वारका पहुँचते ही सुभद्रा की विरहाग्नि अत्यधिक प्रज्वलित हो जाती है। ऐसी स्थिति में सत्यभामा के सत्प्रयास से कृष्ण को अनुकूलकर सुभद्रा और अर्जुन की शादी गान्धर्व रीति से हो जाती है। किन्तु बलराम सुभद्रा की शादी दुर्योधन के साथ निश्चित करने के कारण वे दुर्योधन को आमन्त्रण भेज देते हैं। दुर्योधन बारात की तैयारी करके युधिष्ठिर को उसमें सम्मिलित होने का आग्रह करते हैं। अर्जुन भी दुर्योधन को पत्र लिखकर गान्धर्व विवाह की सारी बातों से अवगत करा देते हैं। ऐसी स्थिति में दुर्योधन सेना सहित बारात लेकर द्वारका से चार मील की दूरी पर ठहरता है। इधर बलराम भी शादी की पूर्ण तैयारी करते हैं। इसी बीच कृष्ण का इशारा पाकर शिकार खेलने के लिए अर्जुन सुभद्रा को लेकर इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान करते हैं। रास्ते में यादवी सेना से युद्ध होता है। कौरवी सेना भी अर्जुन को पकड़ने का प्रयास करती है। क्रमशः कर्ण और भीम के प्रत्युत्तर के फलस्वरूप घमासान लड़ाई होती है। किन्तु भीष्म और द्रोण के प्रयास से युद्ध स्थगित हो जाता है। अर्जुन भी यादव सेना को परास्तकर वापस जाते हैं और उन दोनों की विधिवत् शादी

होती है, इस घटना से कुछ दिनों तक बलराम अप्रसन्न रहते हैं। किन्तु अर्जुन के सत्प्रयास से उनका मनोमालिन्य दूर हो जाता है। अनन्तर अर्जुन और सुभद्रा इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रस्थान करते हैं।

गांधार पतन—'संकल्प' में संग्रहीत (सन् १९४६, पृ० १०३), ले० प्रेमनारायण टण्डन, प्र० विद्या मंदिर, लखनऊ, पात्र पु० ३, स्त्री १, अंक १।
घटना-स्थल राजप्रासाद तथा नदी-तट।

गांधार पतन गीतिनाट्य सिकन्दर के विश्व विजय अभियान में गांधार के देशद्रोह की ऐतिहासिक प्रसिद्ध कथा पर आधारित है। यह सत्य है कि गांधार नरेश आम्भीक सिकन्दर को अपने राज्य द्वारा प्रवेश मार्ग प्रदान कर देशद्रोही की संज्ञा ग्रहण करते हैं। परन्तु इस घृणित कृत्य के पीछे उनकी विवशता विद्यमान है। आम्भीक सिकन्दर से संधि करते हुए, अपने पुत्र को विद्रोही सेना का संगठन करने के लिए नियुक्त करता है, जिससे सिकन्दर को भारत में बुलाकर भारतवासियों के शौर्य का परिचय दिया जा सकता है।

गान्धारी (सन् १९६६, पृ० १६८), ले० आचार्य चतुरसेन, पात्र पु० १५, स्त्री ४, अंक ५, दृश्य ६, ६, ६, ८, ६।
घटना-स्थल गांधार का महल, हस्तिनापुर, पुष्पपुर का राजप्रासाद, अस्त्र परीक्षा की रंगभूमि।

इस पौराणिक नाटक में महाभारत की सम्पूर्ण कथा को समेटने का प्रयास किया गया है। इसलिये कुछ कथायें संकेत रूप में ही मिलती हैं। गान्धारी का चरित्र अति सुन्दर दिखाकर उसके पतिव्रत धर्म की प्रतिष्ठा को उन्नायन दिया गया है। इसीलिये नाटक के अन्त में गान्धारी की प्रशंसा कृष्ण, अर्जुन तथा अन्य सभी लोग करते हैं।

इसके अतिरिक्त इसमें भास के नाटकों एवं वेणी-संहार का प्रभाव भी देखने को मिलता है। काल्पनिक घटनाओं से कथाओं का सूत्र क्रमपूर्वक जुड़ा हुआ है। शेष सम्पूर्ण कथा महाभारत से मिलती-जुलती है।

गांधी दर्शन (सन् १९२२, पृ० ९३), ले० दुर्गाप्रसाद गुप्त, प्र० भार्गव पुस्तकालय, वाराणसी।
घटना-स्थल गाँव, नगर, मदिरालय, सभा, जलूस।

इस नाटक में गांधी के उच्चादर्शों का मानव जीवन पर प्रभाव दिखाया गया है। नायक दौलतराम अंग्रेजी राज्य में रायसाहब और राजा की उपाधि प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं। वे बड़े-बड़े अधिकारियों और अफसरों को मांस, मदिरा द्वारा दावतें करते हैं। दौलतराम के मित्र रज्जब खाँ उन्हें परामर्श देते हुए कहते हैं कि

> "अगर है राजा जीवन के
> फिरने का इरादा जनाब का।
> तो कबाब कलिया पके
> मजे से चले दौर भी शराब का॥
> करें गवर्नर की खूब खातिरदारी,
> सहज है मिलना खिताब का।"

वह हमेशा अपनी झूठी शान के लिये परेशान रहता है। किन्तु अन्त में गांधी जी के प्रभाव से उसका जीवन परिवर्तित हो जाता है।

गाँव की ओर (सन् १९६१, पृ० ९८), ले० बाबूरामसिंह 'लमगोड़ा', प्र० श्रीमती प्यारी देवी, साधना प्रकाशन, औसानगंज, वाराणसी-१, पात्र पु० १२, स्त्री १, अंक ३, दृश्य ३, ५ १।
घटना-स्थल मजदूरों की बस्ती।

इस नाटक का उद्देश्य सुख की लालसा से अपनी जन्मभूमि को छोड़कर नगर में जाकर बसनेवालों की दुर्दशा दिखाना है। शहर से बाहर एक मन्दिर है। उसमें पूजन के समय अनेक पुजारी तथा भिक्षुक एकत्रित होकर पूजा करते हैं। इसी समय चेतन एक किसान गाँव छोड़कर नगर में आता है। वह चारों तरफ भिखमंगे देखकर पश्चात्ताप करता है। संयोग से पागल से मुलाकात होने पर कुछ वार्तालाप होता है। पागल टीले से चबूतरे की ओर नदी में कूद बड़बड़ाता है रोटी! रोटी!! शहर में जिससे पूछो क्या करने आये हो—कहता है बस रोटी कमाने आया हूँ। इतने में जेठू और चेतन आ जाते हैं

रामनिरंजन शर्मा अजेय, प्र० प्रथान्य प्रकाशन, दरभंगा, पात्र पु० ७, स्त्री २, अंक २, दृश्य ६, ७।
घटना-स्थल गाँव, सड़क, स्कूल, मार्ग।

इस सामाजिक नाटक में ग्राम सुधार की अनेक समस्याएँ चित्रित की गयी हैं। इसके द्वारा शिक्षा भवन बनवाने, पुस्तकालय खोलने तथा ऊँच-नीच का भेद-भाव दूर करने का प्रयास किया गया है। श्याम और सुन्दर दो ग्रामीण युवकों के प्रयासों से गाँव का वातावरण बदल जाता है। श्याम गरीब किसान की बेटी सुषमा का विवाह भी अपने साथ कर लेता है।

गुनहगार बाप (सन् १९२३), ले० मुहम्मद इब्राहीम, प्र० जे० एम० सन्तसिंह एण्ड सन्स, लाहौर, पात्र पु० ६, स्त्री ४।
घटना-स्थल महल, स्वयंवर भवन, रणक्षेत्र राजसिंहासन आदि।

इस अर्ध-ऐतिहासिक नाटक में बाप की भूलों से बेटा पर आई मुसीबत का वर्णन है।

राजा विक्रम अपनी साध्वी पत्नी निर्मला और दो पुत्र राजकुमार चन्दरसिंह और बाघसिंह के साथ सुख और शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं। उनके सुखी जीवन में मदनकला नर्तकी का प्रवेश गृह-कलह का कारण बन जाता है। विक्रम नर्तकी के पीछे दीवाना हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में विक्रम का मित्र सज्जनसिंह अपनी कन्या रूपवती का विवाह चन्दरसिंह से करने आता है। वह साथ में अपनी पुत्री भी लाया है। रूपवती विक्रम की दोनों रानियों से पृथक् पृथक् मिलती है। मदनकला राजकुमार चन्दरसिंह की बड़ी निन्दा करती है जिसके परिणामस्वरूप रूपवती सम्बन्ध के लिए स्वीकृति नहीं देती। अब मदनकला,जो राजा समरसिंह की गायिका थी, के लिये संघर्ष हो जाता है। समरसिंह विक्रम द्वारा मदनकला को उसे वापिस न करने के कारण उस पर आक्रमण करता है। विक्रम भयभीत हो मदनकला को लेकर भाग जाता है। रानी निर्मला और चन्दरसिंह को भी भवन त्यागकर ही आत्मरक्षा का उपाय सूझता है।

राजकुमार चन्दरसिंह महाराज सापतसिंह की पुत्री सूरजबाई के स्वयंवर का समाचार पाकर वहाँ जाता है। वह सूरजबाई के द्वारा वरण कर लिया जाता है। उसका दूसरा भाई बाघसिंह अपने पौरुष से अर्जित सहयोग के बल पर पुनः समरसिंह से राज छीनने में सफल होता है। वह अपने भाई चन्दरसिंह से मिलने उसके पास जाता है। राजा विक्रम को नाना प्रकार की आपत्तियाँ और कष्टों को सहना पड़ता है। मदनकला भी हतवीर्य विक्रम को त्यागकर मौजसिंह का अपना लेती है। व्यथित विक्रम राजा चन्दरसिंह के यहाँ पहुँचकर न्याय की माँग करता है। काम पिपासावती मदनकला साँप के डसने से परलोक-गामिनी होती है। विक्रम की परिणीता पत्नी निर्मला भी अपने आपत्तिग्रस्त जीवन में भटकती हुई उसी समय चन्दरसिंह के पास पहुँच जाती है। अन्त में सारे भूले-भटके पीड़ित पुनः एकत्रित हो जाते हैं।

गुन्नौर की रानी (सन् १९६८, पृ० ९२) ले० काशीनाथ खत्री, प्र० प्रयाग धार्मिक यन्त्रालय, प्रयाग, पात्र पु० ६, स्त्री २, अंक २।
घटना स्थल गुन्नौर का राजमहल।

इस नाटक का निर्माण राजस्थान के गुन्नौर की रानी की वीरता तथा आत्मत्याग को लेकर हुआ है। शेर खाँ गुन्नौर पर विजय करने के बाद विजयोन्मत्त हो वहाँ की रानी को अपनी रखैल बनाकर रखना चाहता है। राजपूत रमणी के लिये धर्म और प्रतिष्ठा सर्वोच्च है। भारतीय सती नारी विधर्मी म्लेच्छ को अपना शरीर अर्पित करने में अपना घोर अपमान समझती है। रानी हिन्दू धर्म और राजपूती आन की रक्षा के लिए कपटाचरण का सहारा लेती है। वह विजयी शेर खाँ के पास परिधान भिजवाती है। शेर खाँ उस पोशाक को पहनकर जब रानी के पास पहुँचता है तो वह रुष्ट हो करके स्वयं नदी में कूदकर प्राण त्याग करती है।

गुमराह (सन् १९५९, पृ० ९२), ले० '

जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री ४।

इस सामाजिक नाटक में बाप द्वारा बेटे के गुमराह करने के प्रयास वर्णित हैं। दौलतराम जानता है कि गरीबदास लक्ष्मी के लिये किसी भी समय बागी बन सकता है। वह गरीबदास को गुमराह करने के लिये पंडितों को वश में करके उसे भाग्यवादी बना देता है। पर दौलतराम की यह भी चाल असफल होने के कारण वह अपनी बेटी शान्ति को लक्ष्मी की रक्षा के लिये साधन बनाता है। किन्तु शान्ति स्वयं गरीबदास की बन्दिनी बन जाती है। वह रास्ते से हट जाना चाहती है, जिससे गरीबदास लक्ष्मी को पा सके। गरीबदास लक्ष्मी को छुड़ाने के लिए चल पड़ता है किन्तु दौलतराम फिर भी उसे गुमराह करने का प्रयत्न करता है। अन्त में वह गरीबदास को गोली का निशाना बनाकर स्वयं फरार हो जाता है। गरीबदास अपने प्राण देकर भी लक्ष्मी को छुड़ा लेता है।

गुरु द्रोण का अन्तर्निरीक्षण : अशोकवन बन्दिनी में संकलित (सन् १९५६, पृ० ११४), ले० : उदयशंकर भट्ट; प्र० : भारतीय साहित्य मण्डल, दिल्ली; पात्र : पु० ५, स्त्री २।

इस पौराणिक गीतिनाट्य में महाभारत के अपराजित योद्धा द्रोण के अन्तर्मन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत है। गीतिनाट्य का प्रारम्भ द्रोण की अन्तर्द्वन्द्वात्मक स्थिति से होता है। कौरव पक्ष की अनीति से परिचित होते हुए भी वह उनका सेनापति-पद ग्रहण कर लेते हैं। वे अपनी अन्तश्चेतना के वशीभूत पाण्डवों के प्रति शत्रु भाव भी नहीं रख पाते। दुर्योधन को यह स्थिति असह्य होती है। वह कुल-गुरु द्रोण के मर्म पर व्यंग वाणी के तीक्ष्ण प्रहार करता है। दुर्योधन को तो द्रोण तर्क द्वारा शान्त कर देते हैं किन्तु छायारूप आत्मा के समक्ष वह झुक जाते हैं। उनका विगत जीवन चित्रपट की भाँति उनके सम्मुख साकार हो उठता है। द्रुपद को प्रतिशोध वश अर्जुन के द्वारा पराजित करवाना, अपने पुत्र के कारण एकलव्य जैसे एकनिष्ठ शिष्य को अंगुष्ठविहीन अवस्था में धनुर्विद्या से वंचित करना, भरी सभा में द्रौपदी के अपमान का तटस्थ भाव से अवलोकन करना आदि घटनाएँ उनके जीवन को नष्ट कर देती हैं। अतीत का चिन्तन करते-करते छायारूप आत्मा उनके ब्राह्मणत्व को जाग्रत् करती है जो अब प्रायः निष्कासित हो गया है। इस नैराश्यपूर्ण वातावरण में मृत्यु की कामना करते हुए द्रोण प्रस्थान कर जाते हैं।

गुर्जरेश्वर (सन् १९६७, पृ० १५६), ले० : ओंकारनाथ दिनकर; प्र० : अनुराग प्रकाशन, अजमेर; पात्र : पु० १०, स्त्री ५; अंक : ३, दृश्य : ४, ३, ४।

घटना-स्थल : सिद्धराज जयसिंह का मंत्रणा-कक्ष, पत्तन का राज-उद्यान, राजनर्तकी सुमोहा की अट्टालिका, पत्तन तुरंगाध्यक्ष के आवास का एक कक्ष, सिद्धराज जयसिंह का परिषद भवन, कुमारपालदेव का मंत्रणाकक्ष।

सिद्धराज जयसिंह गुर्जर मण्डल राज्य का बिना उत्तराधिकारी नियुक्त किए स्वर्गवासी हो जाते हैं। यद्यपि कुमारपाल विद्यमान थे किन्तु उनके पितामह का जन्म एक नर्तकी रानी की कुक्षि से होने के कारण सिद्धराज घृणा करते थे। यहाँ तक कि कुमार के पूर्वज तथा उन्हें जीवित भस्म करा देने का षड्यन्त्र रचा गया था। उनमें अकेले कुमारपाल बच जाते हैं। राज-सिंहासन के लिए कतिपय उत्तराधिकारी उपस्थित होते हैं। कृष्णदेव चौहान, तुरंगाध्यक्ष—जो कुमारपाल का बहनोई था—के अथक प्रयासों से जयसिंह के पुत्र चाहड़देव को भी शाकम्भरी में शरण लेने के लिए विवश होना पड़ता है। शाकम्भरी सम्राट अर्णोराज कुमारपाल की भगिनी और अपनी पत्नी का अपमान करते हैं। अर्णोराज से हुए युद्ध में वे पराजित होते हैं और बन्दी बना लिए जाते हैं। उन्हें क्षमादान दिया जाता है। अवन्ति में गुर्जर मण्डल का दण्डनायक चाहड़देव कृष्णदेव की योगिनी नर्तकी सुमोहा के सान्निध्य में लालच देकर कृष्णदेव एवं कुमारपाल के विरुद्ध षड्-

यन्त्र रचना है। किन्तु सुमोहा उस अथाह द्रव्य राशि को ठुकरा देती है। चाहडदेव को युक्तिपूर्वक गुज्जर मण्डल से निर्वासित कर दिया जाता है। कुमारपालदेव सिंहासनारूढ होने पर जनहितकारी अनेक काय करते है। कृष्णदेव कुमारपालदेव को सिंहासनारूढ कराकर उद्दण्ड हो जाता है। कुमारपालदेव उसे निष्पक्षभाव से मृत्यु दड देते है।

गुल-बहार नाटक (सन १९१३, पृ० २२), ले० शिवनन्दन मिश्र, प्र० काशी नागेश्वर प्रेस, पात्र पु० ७, स्त्री ५, अक २, दृश्य ६, ७।
घटना-स्थल नदी, भीमपुर, जगल।

इसमे गुल तथा बहार के आन्तरिक प्रेम को बडे मार्मिक ढग से चित्रित किया गया है। जगल की रानी केतकी गुल की बहन है। बाप दादे की सपत्ति को हडपने के लिए केतकी गुल को मरवा डालने का षड्यन्त्र करती है पर सयोगवश वह बच जाती है और उसकी भेंट बहारसिंह से होती है। वह अपनी घायल बहन केसर को याद करती है। बहारसिंह उसे भी खोजते हैं। दोनो बहनें मिलकर बहारसिंह का परिचय जानना चाहती हैं। बहारसिंह उन्हें जगल से बाहर ले जाता है। पास ही एक नदी है। उन्हें बहार के दरबार को नक्कास दिल्लू सिंह मिलते हैं। बहारसिंह एक नाव भाडा पर लेने के लिये वहाँ से अलग होते हैं। दिल्लू सिंह गाने म मस्त है। इतने मे डाकू का एक दल आकर दोनो बहनो को उठा ले जाता है। बाद मे डाकू बहार सिंह एव दिल्लू सिंह को भी कैदखाने मे डाल देते है। इसी बीच बच्चन सिंह (बहार सिंह का भाई) आकर डाकुओ से इन्हे छुडाता है। गुल एव केसर भी किसी तरह जगल मे भाग जाती है। इधर बहार सिंह गुल के प्रेम की याद मे पागल हैं। साथ ही गुल भी बहार के वियोग मे तडप रही है। सुन्दरी और चपला दो सखियाँ बहारसिंह एव दिल्लू सिंह पर आसक्त होकर उनसे शादी करना चाहती हैं। परन्तु ये लोग शादी करने मे इन्कार कर देते हैं। फलस्वरूप सुन्दरी और चपला डाकुओ के दल से मिल जाती हैं और इन्हे मरवा डालने का षड्यन्त्र करती हैं। ऐसे ही मौके पर बच्चन सिंह (बहार सिंह का भाई) वहाँ जाता है और इस षड्यन्त्र से उन दोनो को बचाता है। वे लोग वहाँ से चलकर जगल मे एक वृक्ष के नीचे बैठ जाते है। सहसा गुल और केसर वहाँ आ जाती हैं। उसी समय बहार सिंह का गुल के साथ तथा केसर का बच्चन सिंह के साथ गाधर्व विवाह हो जाता है।

गुलामी का नशा (सन् १९२८, पृ० ९२), ले० डा० लक्ष्मण सिंह, प्र० सुरेन्द्र शर्मा, प्रताप प्रेस, कानपुर, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अक १, दृश्य १०।
घटना स्थल गाव, नगर, सभा।

यह नाटक उस असहयोग आन्दोलन का चित्र उपस्थित करता है, जो देश के राजनैतिक जीवन मे एकदम युगातर उत्पन्न कर देता है। नौकरशाही ने खुशामदी लोगो से मिलकर क्रिमिनल ला आदि दमनकारी कानूनों को बना रखा है। वीर और साहसी देशभक्तो द्वारा ये कानून निर्भीकता के साथ तोडे जाते हैं। बच्चो से लेकर बूढो तक के हृदय मे महात्मा गाधी की विलक्षण प्रतिभा की धाक जम जाती है। लोग गाधी जी की प्रेरणाओं से प्रेरित होकर परतत्रता को दूरकर स्वतन्त्रता प्राप्त करने के हर सम्भव प्रयास म लगे हैं।

गुस्ताखी माफ (सन् १९००, पृ० ८२), ले० सुदर्शन बब्बर, प्र० नवयुग प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ४, स्त्री ३, अक-रहित दृश्य ३।
घटना-स्थल घर, कमरा।

यह हास्य प्रधान नाटक है। इसमे विवाह और स्त्री समस्या को लेकर कथानक को बढाया गया है। बूढे को स्त्री का प्रलोभन देकर उसे मूर्ख बनाया जाता है तथा कन्हैया अपनी बीवी को दूसरे की बीवी बनाता है। वह अपने बच्चे को तिरस्कृतकर एक नये चरित्र का उद्घाटन करता है, किन्तु अन्त मे सभी एक परिहास के होने के कारण आपस मे अपनी स्थिति को समझते हैं और मन की

ग्रंथियाँ दूर करते हैं। अभिनीत।

गृहणी मे देशमाता, पत्रिका मे प्रकाशित, रेडियो से प्रसारित, ले० : यशपाल जैन; पात्र : पु० ४, स्त्री २; अंक-रहित।

इसमे गांधी जी की पत्नी कस्तूरबा गांधी के जीवन सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण अंशों को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। उनके पारिवारिक जीवन के कुछ मार्मिक स्थलों की चर्चा करते हुए यह दिखाया गया है कि किस प्रकार कस्तूरबा गृहणी से देशमाता बन जाती है। कस्तूरबा को कुछ गुण पैतृक विरासत में मिलते हैं तथा कुछ गांधी जी के जीवन से। इस प्रकार यह नाटक नारी जीवन की सच्ची झाँकी प्रस्तुत करता है।

गृहदाह (सन् १९४६, पृ० ८२), ले० : चन्द्रकिशोर जैन; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; *पात्र:* पु० ५, स्त्री ३।
घटना-स्थल: घर का आँगन, कमरा, बगीचा।

इस सामाजिक नाटक मे स्त्रियों के छल-दम्भ को गृह-कलह का कारण बताया है। जमींदार राय साहब अपनी आन की वेदी पर अपने एकमात्र पुत्र महेन्द्र का बलिदान कर देते हैं। उनकी बहन श्यामा के कपटपूर्ण व्यवहार से सारे घर मे कलह होता है, किन्तु सरस्वती उसे रोकने का प्रयास करती है। अन्त में सभी अपनी-अपनी भूलों पर पश्चात्ताप करते हैं।

ग्रेजुएट (सन् १९६२, पृ० ८०), ले० : जगदीश शर्मा; देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ६; *पात्र :* पु० १०, स्त्री ४।
घटना-स्थल : घर का कमरा, अस्पताल।

वर्तमान युग के पढ़े-लिखे बेरोजगारों के जीवन पर आधारित यह नाटक आज की बेकारी का चित्रण करता है। सतीश एक शिक्षित युवक है। अनेक प्रयास करने पर भी उसे नौकरी कहीं नहीं मिलती। अचानक प्रेमिका राधा बीमार पड़ती है। पैसे की तंगी के कारण डा० विनोद उसका इलाज नहीं करता जिससे वह मर जाती है। सतीश राधा की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिये रात को डा० विनोद की हत्या के इरादे से उसके घर जाता है। किन्तु पहुँचते ही उसके विचार बदल जाते हैं और वह भागता है। भागते हुए सतीश पर रात के अंधेरे में डा० विनोद फायर करता है जिससे वह घायल होकर मर जाता है।

गोपा (सन् १९६८), ले० : जानकीवल्लभ शास्त्री, प्र० 'तमसा' में सगृहीत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, *पात्र* पु० २, स्त्री २; अंक : १, दृश्य : ३।
घटना-स्थल : राजभवन का एक कक्ष।

यह गौतम के गृह-त्याग के प्रख्यात प्रसंग पर आधारित एक गीतिनाट्य है। इसमें कवि ने गोपा की मूक वेदना को काव्य-स्वर प्रदान किया है। प्रथम दृश्य में विरह व्यथित गोपा की मानसिक दशा का उद्घाटन होता है। इसी समय गोपा को राहुल का ध्यान आता है जिसकी निरन्तर बढ़ती योगवृत्ति एवं रहस्यात्मक बातें उसे आशंकित कर देती है। द्वितीय दृश्य के अन्तर्गत अन्तःपुर के एकान्त कक्ष में गोपा अपने कर्महीन जीवन की उदासी दूर करने के लिए सितार बजाती है। विगत जीवन के मधुर क्षण उसे व्याकुल करते हैं। एक दिन वह प्रेम-भाव में डूबी थी कि अचानक सिद्धार्थ आकर प्रणय निवेदन करते हैं। तभी गोपा के मुख से निकला एक वाक्य—

"ऐसा भी क्या ? राज भोग पर,
आज बुभुक्षित से टूटे।"

उसके जीवन में एक स्थायी अभिशाप बनकर रह जाता है। सिद्धार्थ निर्वाण-पथ की ओर प्रेरित होते हैं। गोपा को विरह के अनन्त सागर में छोड़कर वह ज्ञान की खोज में चल देते हैं। तृतीय दृश्य में गौतम के आने की सूचना मिलती है। गोपा के सास, श्वसुर तथा राहुल उनकी अभ्यर्थना हेतु उससे चलने का आग्रह करते हैं किन्तु यहाँ गोपा का आत्म-सम्मान उभरता है। वह कहती है कि गौतम स्वयं गृह त्यागकर गये हैं। अतः उन्हें ही पहले आना चाहिये। इसी समय गौतम के अकस्मात् पधारने से गोपा का

मान पूर्ण होता है।

गोपी उद्धव संवाद नाटक (रचना-काल सन् १६०८, प्रकाशनकाल १९६८, पृ० २२), ले० गोपाल आना, प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, पात्र पु० ५, स्त्री ३, व अनेक गोपियाँ, अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल गोकुल, मथुरा।

इस अनियाराट में उद्धव गोपी संवाद के साथ गोपियों का विरह वर्णन है। प्रारम्भ में नान्दी श्लोक है जिसमें दुष्टविनाशक ब्रह्मा-इन्द्रादि से पूजित कृष्ण की स्तुति है। उसके बाद सूत्रधार देवकी के गर्भ से कृष्ण जन्म की सूचना देता है। एक पथिक बड़े मार्मिक शब्दों में गोपियों की विरह-व्यथा को श्री कृष्ण से कहता है। गोपियों के प्रेम से विह्वल होकर कृष्ण उद्धव को सन्देश लेकर गोकुल भेजते हैं।

गोकुलपुरी में उद्धव का रथ प्रवेश करते ही आनन्द छा जाता है। नन्द उनकी पूजा करके उन्हें भोजन कराते हैं और फिर कृष्ण का कुशल पूछते हैं। उद्धव कृष्ण को परब्रह्म बताकर उनके पुत्र रूप का त्याग करने को कहते हैं। प्रातःकाल उद्धव प्रेमातुर गोपियों से कृष्ण का गुणगान करते हैं। प्रेमविह्वल गोपियाँ कृष्ण-दर्शन के लिए व्याकुल हो जाती हैं। उद्धव गोपियों को कृष्ण का सान्निध्य प्राप्त होने का आश्वासन देते हैं। यह सुनकर नन्द, यशोदा और गोपियों सब में प्रसन्नता छा जाती है। कई महीने गोकुल में रहकर उद्धव गोपियों की असह्य प्रेम-पीड़ा देखते हैं। वे मथुरा जाकर कृष्ण से नन्द, यशोदा और गोपियों का विरह-दुख वर्णन करते हैं।

गोपीचन्द (सन १८९६, पृ० ६०), श्री रानी देवी, प्र० जैन यन्त्रालय, लखनऊ, पात्र पु० ६, स्त्री ७।
घटना-स्थल घर, जंगल।

गोपीचन्द के दो विवाह होते हैं। प्रथम विवाहिता पत्नी सुलक्षणा और द्वितीय पत्नी कुमुदा है। गोपीचन्द के सन्यास ले लेने पर कुमुदा का मर्मस्पर्शी विलाप इस नाटक की विशेषता है। इस नाटक में दोनों सपत्नियों का पारस्परिक प्रेम-भाव दिखाया गया है जो प्रायः सामाजिक व्यवहार में कम ही पाया जाता है।

गोपीचन्द (सन् १९०८), ले० मुंशी विनायक प्रसाद तालिब, प्र० मास्टर विक्टोरिया नाटक मण्डली, बम्बई, पात्र पु० ४, स्त्री २।

इस धार्मिक नाटक में योग की महिमा दिखाई गई है। राजा गोपीचन्द योग साधना से अपने नाशवान शरीर को अमर बना लेते हैं। इस कार्य में उनकी माता मैनावती उनको बड़ा सहयोग देती हैं। मैनावती के गुरु कानिफा के प्रयोगों से गोपीचन्द की अलौकिक सिद्धियाँ अत्यन्त चमत्कृत हो जाती हैं। सारा नाटक देवशक्तियों और योग के चमत्कारों की शृंखला से परिपूर्ण अद्भुत जान पड़ता है। इसमें यामिनी और लौटन हास्य-व्यंग और विनोद के प्रधान आकर्षण हैं।

अन्त में राजा को महान् चमत्कारिक यौगिक सिद्धि की प्राप्ति होती है।

गोपीचन्द (सन् १९६०, पृ० ५), ले० प्यारेसिंह बेचैन, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ८, ८, ५।

इस नाटक में राजा गोपीचन्द के विलासी जीवन त्यागकर योगी बन जाने की कथा वर्णित है। धारा नगरी के महाराजा गोपीचन्द अपनी माता मैनावती की आज्ञा से योगी बनकर महाराज भरथरी की शरण में चले जाते हैं। भरथरी गोपीचन्द को योग-सन्यास से विरत करने का प्रयास करते हैं। किन्तु गोपीचन्द अपने निश्चय पर अटल रहते हैं। भरथरी गोपीचन्द को अपने गुरु जलन्धर-नाथ के पास ले जाते हैं। जलन्धरनाथ गोपीचन्द की अनेक तरह से परीक्षा लेकर उन्हें गुरुमन्त्र देते हैं। गोपीचन्द गुरु की आज्ञा से धारा नगरी जाकर अपनी पत्नियों को माँ सम्बोधित करके भिक्षा माँगते हैं। माँ, रानियाँ तथा पुत्रियाँ गोपीचन्द को योगी भेष में देखकर विलाप करती हैं। सब योगमार्ग त्यागकर राज्य ग्रहण का आग्रह करते हैं लेकिन वे माया, मोह में नहीं फँसते। माँ के

मना करने पर भी गोपीचन्द योगी भेष में बहन चन्द्रावल के पास भिक्षा मांगने जाते हैं।

बांदी हीरे-जवाहरात भिक्षा में देने आती है लेकिन गोपीचन्द लेने से इनकार कर कहते हैं "चन्द्रावल से कहो कि तुम्हारा भाई गोपीचन्द आया है।" बांदी उसे ढोंगी साधु समझकर डण्डे से खूब मारती है। लेकिन गोपीचन्द मार और अपमान को सह लेते हैं। बांदी के कहने पर चन्द्रावल आती है लेकिन उसे गोपीचन्द को देखकर विश्वास नहीं होता। गोपीचन्द कई सच्ची बातें बतलाकर और ललाट में चन्दन तथा पाँव में पद्म दिखाकर उसे भाई होने का विश्वास दिलाते हैं। चन्द्रावल भाई को योगी भेष में देखकर मूच्छित हो जाती है। गोपीचन्द बहन की अपने प्रति ममता देखकर महल की आग की लपटों में भस्मकर स्वयं अन्तर्धान हो जाते हैं। चन्द्रावल भाई के वियोग में महल से गिरकर मर जाती है। लेकिन गोपीचन्द गुरु-कृपा से चन्द्रावल को जीवित कर देते हैं।

गोरक्षा नाटक (सन् १६२६, पृ० ११२), ले० : दुर्गाप्रसाद गुप्त; प्र० : मार्तण्ड्वरी प्रेस, कलकत्ता; पात्र : ४०।
घटना-स्थल : घर, काँजी हाउस।

इस धार्मिक नाटक में गोभक्त हरिदास की कथा है। हरिदास गाय की रक्षा के लिये अपने सारे घर को नीलाम पर चढ़ा देता है और मुसलमान कसाई कल्लू से गाय की रक्षा करने में सफल होता है। जमींदार भीमसिंह एक पंडित को दो बूढ़ी गाय दान देकर अपने धार्मिक होने का परिचय देते हैं। किन्तु पंडित चौपटानन्द उन बूढ़ी गायों का पालन पोषण करने के बजाय सड़क पर लावारिस छोड़ देते हैं। फलतः वह काँजी हाउस जाती है और फिर नीलाम पर चढ़ती है जहाँ हरिदास अपने गौ-प्रेम के कारण उन्हें कसाई कल्लू के हाथ बिकने से बचा लेता है।

गोरखधन्धा (सन् १६१२, पृ० ११६), ले० : पं० नारायणप्रसाद बेताब; प्र० : पारसी अलफ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी, बम्बई; पात्र : पु० १६, स्त्री ६; अंक : ३, दृश्य : ६, ८, ४।

घटना-स्थल : शाहीपुस्तकालय, होटल, गिरजाघर।

यह नाटक पारसी अलफ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी (बम्बई) ने कोयटा (बिलोचिस्तान) में जुलाई सन् १६१२ ई० में प्रथम बार रंगमंच पर खेला। इस पारसी नाटक में गोरखधंधा दिखाने का प्रयास है।

मुल्के श्याम के सुलतान लुई के खून का प्यासा उसका भतीजा जेम्स है। उसके सहायक हेमफ्री, फारिस तथा हेरी हैं। वे षड्यन्त्र रचते हैं। दूसरी कथा आर्लेजिन की है। उसके बेटे एंटोनियो शामी और रूमी अपने पिता को नहीं पहचानते। अंटोनियो के दो गुल्म हैं जो उसी की आकृति के हैं। *अंटोनियो की माँ एमेलिया गिरजाघर में* प्रार्थना करनेवाली है। इन सबका षड्यन्त्र इस नाटक में दिखाया गया है। इसमें षड्यन्त्रों की भरमार है। जासूसी नाटक की श्रेणी में रखा जा सकता है।

गोराबादल (पृ० ६५), ले० : शिवप्रसाद "चारण"; प्र० : महर्षि मालवीय इतिहास परिषद, उपासना मन्दिर। दुगड्डा (गढ़वाल); पात्र : पु० १२, स्त्री ६; अंक : ३, दृश्य : ५, २, ६।
घटना-स्थल : दुर्ग का निम्नस्तर, रत्नसिंह का शयन-कक्ष, चित्तौड़-बादल का गृह, रण, स्थल, राजदरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक में गोरा-बादल की वीरता और उनका सच्चा बलिदान दिखाया गया है। सं० १३६० वि० में अलाउद्दीन चित्तौड़ पर आक्रमण करके उसे विध्वंस करता है। बारह सहस्र नागरिकों के साथ पद्मिनी सती होती है और चित्तौड़ के अन्तिम रावल रत्नसिंह सवंश वीरगति को प्राप्त होते हैं। पद्मिनी के सतीत्व और गोराबादल की देशभक्ति की गाथा सारे हिन्दुस्तान में फैल जाती है। इस नाटक में नाटककार ने शान्ति के देवता हिन्दू को मुसलमानों के प्रति प्रेम और सद्भावना का भाव भरने के लिए कहा है। महात्मा मोहनदास रणथम्भौर में वीर

हम्मीर के यहाँ रहते थे। रणथम्भौर पतन के बाद वह मेवाड़ चले जाते है। वीर गोरा-बादल देश-सम्मान, स्वतन्त्रता तथा धर्म-संस्कृति के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देते है।

गोसंकट (सन् १८८८) ले० प्रतापनारायण मिश्र, 'ब्राह्मण' पत्र खंड ४, संख्या ५ मे प्रकाशित।

इस धार्मिक नाटक में गोहत्या की समस्या प्रस्तुत की गयी है। नाटक मे इस तरह का आशय व्यक्त होता है कि इस नाटक का कथानक एक ओर तो राजनैतिक पहलुओं को दिखाता है तथा दूसरी ओर धर्म और संस्कृति का स्वरूप प्रस्तुत करता है। यह नाटक गोरक्षा के कारण हिन्दू और मुसलमानों के बीच होनेवाले संघर्षों को मूलाधार बनाकर लिखा गया है तथा दूसरी ओर अकबर के द्वारा अपने राज्यकाल मे गोहत्या की निषेधाज्ञा का भी इसमे समावेश है।

गोसंकट नाटक (सन् १८८६), ले० अम्बिकादत्त व्यास, प्र० खड्ग विलास प्रेस पटना, पात्र पु० ११, स्त्री २, अंक ३ दृश्य ३।
घटना-स्थल महल, दुकान, राजदरबार।

इस धार्मिक नाटक मे बर्बर मुसलमानो के द्वारा गोमाता पर किए गए क्रूर अत्याचारो का समाधान दिखाया गया है। बकरीद मे गोहत्या होने की पूर्व सूचना पाकर हिन्दू क्षुब्ध होते हैं। और इसका निर्णय शान्ति से करना चाहते हैं। सावजी मौलवी साहब को समझाते हैं परन्तु वह ध्यान नहीं देते। गोपालदास और गोवर्धनलाल, लौंडी की सहायता से मौलवी की बीबी साहिबा को धन का लोभ देकर काटने के लिए प्रस्तुत गऊ को बचाना चाहते हैं किन्तु उसमे भी असफल रहते हैं। दुकानदार अपनी दुकानें बन्दकर इसका विरोध करते है। गोपीसिंह मरने-मारने पर उतारू हो जाते है फिर भी समस्या बनी रहती है। अन्त मे ८ हजार हस्ताक्षरो के साथ अकबर को हिन्दुओ द्वारा आवेदन-पत्र दिया जाता है। सम्राट् हिन्दुओं के पक्ष मे निर्णय दे गोवध का निषेध कर देता है जिससे हिन्दू लोग उल्लासपूर्वक गोरक्षा महोत्सव मनाते है।

गौतम-अहिल्या (सन् १९२१, पृ० ११७), ले० दुर्गाप्रसाद गुप्त, प्र० भार्गव पुस्तकालय, चौक, वाराणसी, पात्र पु० ५, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ६, ६, ३।
घटना-स्थल नाट्यशाला, इन्द्रासन, गौतम का तपोवन।

इस पौराणिक नाटक मे गौतम और उनकी स्त्री अहिल्या की कथा वर्णित है। गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या अत्यन्त सुन्दरी है। एक दिन गौतम नवयौवना सुन्दरी अहिल्या को आश्रम मे अकेले छोड़कर तप करने चले जाते है। अहिल्या उन्हे नही रोक पाती। वासना युक्त इन्द्र कामदेव से अहिल्या के सतीत्व को नष्ट करने का सहयोग माँगते हैं। काम से जागृत इन्द्र रति द्वारा जागृत अहिल्या के पास उन्मत्त हुए आते है। वे अहिल्या के साथ नित्य प्रेमालाप करते है। अन्त मे गौतम ऋषि के शाप से अहिल्या पाषाणी हो जाती है। भगवान राम के चरण-स्पर्श से उसका उद्धार होता है। नाटक के अन्त मे गौतम अहिल्या को अपना लेते हैं। नाटककार ने इस नाटक के माध्यम से अनमेल विवाह पर प्रकाश डाला है। गौतम ऋषि का अहिल्या के भ्रष्ट होने पर कथन है—"इस अवस्था मे तुझसी कोमलांगी के साथ विवाहकर तुझे भयानक दुख दिया है देखो, देखो, संसार के लोग मेरी दशा को देखो और इस अनुचित विवाह सम्बन्ध से क्या परिणाम निकलता है, उससे शिक्षा ग्रहण करो।"

गौतम नन्द (वि० सं० २००६, पृ० १२६) ले० जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द, पात्र पु० ५, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ६।
घटना-स्थल गृह, आश्रम, जंगल।

इस ऐतिहासिक नाटक मे गौतम नन्द के राजसिंहासन त्याग और भिक्षुक बनने की कथा वर्णित है। गौतम बुद्ध के अनुज गौतम नन्द इस नाटक के नायक हैं। नाटककार का

मत है कि गौतम बुद्ध के गृहत्याग के उपरान्त महाराज शुद्धोदन की सम्पूर्ण आशा अपने कनिष्ठ पुत्र गौतम नन्द पर केन्द्रित होती है। किन्तु गौतम नन्द भी गौतम बुद्ध के आदेश पर अपने विवाह तथा राज्याभिषेक के एन मौके पर भिक्षु धर्म स्वीकार करते हैं।

गौतम बुद्ध नाटक (सन् १९२२, पृ० ११६)
ले० : बाबू आनन्दप्रसाद कपूर; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस; पात्र : पु० २२, स्त्री ८, अंक : ३, दृश्य : ६, ८, ६।
घटना-स्थल : महल, वन, आश्रम।

इस धार्मिक नाटक का विषय गौतम बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित है। नाटक में बतलाया गया है कि किस प्रकार सिद्धार्थ को वैराग्य उत्पन्न होता है और वे गृहत्याग कर ज्ञान-प्राप्ति के लिए वन में चले जाते हैं। भगवान बुद्ध त्याग के प्रतीक हैं, वे बनावटी त्याग को त्याग नहीं समझते। जिसका मन घर को छोड़ विश्व-प्रेम में निमग्न नहीं हो जाता है ऐसे को भिक्षु बनाना भी वे उचित नहीं समझते। इसी सिद्धान्त से वे माधव भिक्षु को संसारी बना देते हैं।

गौराँ (सन् १९५३, पृ० १२४), ले० : रामानन्द सागर; प्रकाशक एवं विक्रेता, हिन्दी मन्दिर व्यापार; पात्र : पु० ८, स्त्री २; अंक : ३, दृश्य : २, २, १।
घटना-स्थल : मन्दिर, आँगन, पहाड़ी।

इस सामाजिक नाटक में प्रेमी-प्रेमिका के सच्चे प्रेम के साथ कलाकार की कला का महत्त्व दिखाया गया है। पहाड़ी की नीचे स्थित गाँव में एक कलाकार आता है। कलाकार गाँव की एक अलमस्त युवती गौराँ को कला और झरनों की रानी कहकर सम्बोधित करता है। गौराँ कलाकार की स्पष्टवादिता एवं कला देखकर प्रसन्न होती है। गाँववाले भी कलाकार से प्रभावित हो जाते हैं। किन्तु गाँव का एक पुजारी कलाकार को धोखेबाज एवं व्यभिचारी की संज्ञा देता है। इस बात पर कलाकार और पुजारी में विवाद होता है। पुजारी ग्रामीण जीवन को सुखमय बताता है तथा इसके विपरीत कलाकार शहरी जीवन को आनन्दमय बताता है। गौराँ गाँववालों के समक्ष कलाकार से विवाह का प्रस्ताव रखती है। पुजारी के असहमत होने पर भी दोनों की शादी हो जाती है। इसी बीच देश में लड़ाई शुरू होती है जिसमें कलाकार और गौराँ शान्ति स्थापना के लिए लड़ते हुए मारे जाते हैं। मरने के बाद भी उनकी अद्भुत कला अमर रहती है।

गौरीशंकर नाटक (सन् १९२४, पृ० ६०), ले० : रामनारायण सिंह जयसवाल; प्र० : भारत प्रेस, बड़ी पियरी, काशी; पात्र : पु० ११, स्त्री ६; अंक : ८, दृश्य : २, २, १, १, १, १, १, १।
घटना-स्थल : अमरपुरी, इन्द्रसभा, अमरावती, कैलाश पर्वतस्थ बिल्व कुञ्जद्वार, हिमालय के राजभवन का अन्तःपुर।

इस धार्मिक नाटक में शंकर की समाधि भंग करने के लिए देवताओं का प्रयास वर्णित है। देवताओं द्वारा समाधि में मग्न शंकर की तपस्या को भंग करने के लिए रति को भेजा जाता है। काम और रति शंकर की समाधि भंग करने में सफल हो जाते हैं। किन्तु समाधि भंग होते ही उनके क्रोध से वे भस्म हो जाते हैं। पवन, चन्द्र, इन्द्र आदि देवताओं के प्रयास से गौरीशंकर का मिलन होता है।

गौरी-स्वयंवर नाटक (सन् १९६१, पृ० २२), ले० : कवि लाल; प्र० : अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, तीरभुक्ति, इलाहाबाद; पात्र : पु० ६, स्त्री ५; अंक : १।
घटना-स्थल : इन्द्रसभा, अमरावती, कैलाश पर्वत, जंगल।

इस धार्मिक नाटक में गौरी स्वयंवर का वर्णन है। शिव का ध्यान भंग करने पर असफल कामदेव उनकी क्रोधाग्नि से भस्म हो जाता है। कामदेव की पत्नी रति पति की मृत्यु पर करुण क्रन्दन करती हुई शिव से प्रार्थना करती है।

दूसरे दृश्य में शिवजी ऋषि भेष में गौरी की आस्था की परीक्षा लेते हैं।

फिर शिवजी तपोवन में कठिन

तपस्या करते हैं। गौरी उनकी पूजा के लिए फूल लाती है। उसकी सखी वहाँ महेश का गुणगान करती है।

शिवजी गौरी से अपना विवाह करने के लिए नारद को हेमन्त के पास भेजते हैं। मैना यद्यपि शिवजी को वर रूप में उपयुक्त नहीं समझती, फिर भी इन्द्र तथा विष्णु के प्रयास से शिव-गौरी का विवाह हो जाता है।

ग्रह का फेर (सन् १९१३, पृ० ६२) ले० अघोरी अनन्त सहाय, प्र० ट्रेनिंग स्कूल राँची, पात्र पु० ६, स्त्री १, अंक ३, दृश्य १२।
घटना-स्थल नगर, गाँव।

इस प्रहसन में ग्रहों का फेर तथा समाज में व्याप्त रूढ़ियों और अंधविश्वासों पर व्यंग्य करके समाज सुधार का मार्ग प्रशस्त किया गया है। जमींदार यदुनन्दन बाबू के लड़के वासुदेव को छुट्टियों में गाँव जाते समय उसका मित्र वेणीमाधव शिक्षित वर्ग में व्याप्त भूत, प्रेत, ग्रह का फेर, आदि अंधविश्वासों के विषय में बताता है। वासुदेव के विश्वास न करने पर वेणीमाधव उसे एक तरकीब बताता है कि गाँव जाते ही वह बीमारी का बहाना बना ले तब उसे यथार्थ का ज्ञान हो जायेगा। घर आते ही वासुदेव बीमारी का बहाना लेकर लेट जाता है। माँ बाप बहुत परेशान होकर पंडित महेशदास, नीम हकीम हेलू, ओझा, झनमन आदि को बुलाते हैं। यशोदा काली को बलिदान का प्रसाद मान देती है। पर इनके निष्फल प्रयासों के पश्चात् वासुदेव अचानक उठकर बैठ जाता है और इस नाटक का रहस्योद्घाटन कर लोगों को अंधविश्वासों से विमुख करने का प्रयास करता है। *अन्त में समाज सुधार के प्रयास के साथ* देशप्रेम की भावना का भी प्रतिपादन हुआ है।

ग्राम देवता (सन् १९६४, पृ० ६६), ले० शम्भूनाथ 'मुकुल', प्र० मुकुलोत्पल प्रकाशन, पावनी कुटीर, वैद्यनाथ, देवघर, पात्र पु० ११, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ५, ७ ३।
घटना-स्थल मुखिया का घर, पचायत घर, अंचल अधिकारी कार्यालय।

यह गाँव की पचायत-व्यवस्था पर आधारित रोमाचकारी सामाजिक नाटक है। रामपुर पचायत के मुखिया सत्येन्द्र के पास एक समझदार ग्रामीण गिरिधारी आकर उनसे पचायत में होनेवाली घूसखोरी और लगान-वसूली के विषय में बातें करता है। मुखिया लगान देने को मना करता है। वहीं गिरिधारी की उपस्थिति में रामपुर पचायत का नामी पत्त मुरारी आता है। मुखिया घूसखोरी में मुरारी की शिकायत सुनने के कारण उसे फटकारते हैं। मुरारी नाराज होकर चला जाता है। वह ग्रामीण लोगों से मुखिया की शिकायत करता है। गिरधारी तथा अन्य ग्रामीण मुरारी का विरोध करते हैं। वहाँ से लोग मुखिया के पास आकर सड़क के ठीके के विषय में बातचीत करते हैं। अंचल अधिकारी के कार्यालय में तकावी बँटती है। अधिकारी को डाकिया द्वारा एक लिफाफा मिलता है जिसमें गाँव की भुखमरी को दूर करने का आग्रह होता है। जिलाधीश गरीब राधा के लिए—जिसका पति भूख से मर गया है—सब व्यवस्था कर देता है। कालान्तर में रामपुर में डाका पड़ता है। डाकुओं की गोली से मुखिया घायल हो जाते हैं। अस्पताल में अपनी स्त्री रीना और पुत्र पारस के समक्ष प्राण त्याग देते हैं जिससे पत्नी और पुत्र दोनों दुःखी होते हैं।

ग्राम देवता (सन् १९५८, पृ० ७१), ले० रंजन श्रीवास्तव, प्र० सिंहल साहित्य निकेतन, जुमेराती गेट, भोपाल, पात्र पु० १३, स्त्री ७, तथा अन्य ग्रामीण, अंक ४, दृश्य ३, ४, ३, ३।
घटना-स्थल ग्राम का चबूतरा, मैदान।

यह पचवर्षीय योजना तथा सामूहिक विकास की पृष्ठभूमि पर आधारित सामाजिक नाटक है। इसमें मदिरापान, जुआ खेलना और खाली समय बर्बाद करना आदि बातें प्रमुख हैं। ग्राम-नेता दिनेश सारे ग्राम में जागृति लाने के लिए ग्राम-

महिला-विकास-मण्डल तथा कृषि-सुधार सम्बन्धी योजनायें बनाता है। वह गांधीजी के ग्राम-सन्देश तथा सर्वोदय विचार जनता को सुनाता है। रात्रि के विद्यालय में सभी ग्रामवासी आकर लघु उद्योग-धन्धे सीखते हैं। दिनेश अपने विचारों से ग्राम की काया पलट देता है। उसका नारा है—'हमें नया भारत निर्माण करना है।' सबल बाहुओं में कुदाल और फावड़े लेकर गाँव-गाँव जागृति का यह सन्देश सुनाकर बापू के 'ग्राम-राज्य' की स्थापना करनी है। ग्राम देवता की पूजा हेतु तुम्हें नये सिरे से आरती सजानी है।

ग्राम पाठशाला और निकृष्ट नौकरी (सन् १८८४), ले० : काशीनाथ खत्री; प्र० : काशी, भारतजीवन प्रेस; हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और कविवचन सुधा में प्रथम बार प्रकाशित दो विभिन्न नाटक।
घटना-स्थल : ग्राम पाठशाला, कार्यालय।

इस सामाजिक नाटक में नौकरी छूटने पर गृह-दुर्दशा का चित्रण है। ग्राम पाठशाला का एक अध्यापक किन्हीं कारणों से नौकरी छूट जाने पर बहुत दुःखी होता है। उसकी पत्नी आश्वासन देती है। इस नाटक के पात्र अंग्रेजी साम्राज्य और नौकरशाही की विभीषिकाओं से सामाजिक जीवन को सचेत कराते हैं। निर्धन लिपिक की नौकरी छूट जाने पर वह अपने हृदय का उद्‌गार इस प्रकार प्रकट करता है—"रिकमंडी साहब २४ वर्ष के नौकर हैं। ५०० रु० महीना पाते हैं। दिन भर बैठे चुरट पिया करते हैं या फर्श पर टहला करते हैं। यदि कहीं पिलाईविकिर साहब उनको पेन्शन देकर उनकी तकलीफ कम कर देते तो दस-बीस दुखिए सहज में पल जाते और रिकमंडी साहब को भी बैठे गुड सर्विस पेन्शन के २५० रु० मिलते; पर कहे कौन? वह भी गोरे रंग के हैं। भला रिकमंडी साहब क्यों ५०० रु० से २५० रु० पसन्द करेंगे। वह भी तो पेन्शन ही है दिन भर एक दो दफे दस्तखत कर दिया बस नौकरी हो गई।"

ग्राम सुधार (पृ० ८०), ले० : ज्यादर सिंह बेचैन; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६; *पात्र* : पु० १८, स्त्री ३; *अंक* : ३, *दृश्य* : ५, ४, ५।
घटना-स्थल : गाँव, स्वर्ग, ग्राम-पंचायत।

इस सामाजिक नाटक में स्वातंत्र्योत्तर भारत की उन्नति के मूल आधार ग्रामों की प्रगति में आनेवाली रुकावटों का चित्रण है।

ग्राम पंचायत के चुनाव में दीवान भीखू, भुण्ड आदि गुण्डों को शराब पिलाकर खुद गाँव का सरपंच बन जाता है और पंचायत के सभी पदों पर अपने ही आदमियों को चुनवा देता है जिससे गाँव में अशान्ति पैदा हो जाती है। दीवान और उसके साथियों के अत्याचारों से गाँववाले बहुत दुःखी हो जाते हैं। एक दिन शराबी गुमानसिंह अपने बदमाश साथी भंगोड़ के साथ स्कूल से लौटती हुई लड़की किरण को पकड़ता है। उसी समय सरदारा और सुरजा वहाँ पहुँचकर दोनों को मार भगाते हैं। सरदारा और सुरजा पंचायत में भंगोड़ के काले कारनामों की शिकायत करते हैं। लेकिन दीवान इनकी बातों पर ध्यान नहीं देता।

पंचायतों से गाँव की उन्नति होने के बजाय भ्रष्टाचार फैलते देख सरदारा, चन्दगीराम और सुरजा सभी ग्रामवासियों को एकत्रितकर ग्राम सुधार का काम शुरू करते हैं। एक दिन गाँव की सफाई करते समय भीखू आदि गुंडे सरदारा को मारने लगते हैं। इसी समय किरण पुलिस को लेकर आती है। लेकिन इन्सपेक्टर दीवान से रिश्वत लेकर मामला समाप्त कर देता है। सरदारा चन्दगीराम पुलिस और पंचायत की शिकायत ऊपर के अधिकारियों से कर देते हैं। फलतः पंचायत का दुबारा चुनाव होता है जिसमें सरदारा सरपंच चुना जाता है तथा चन्दगीराम, सुरजा आदि योग्य एवं ईमानदार व्यक्ति उसके सदस्य चुने जाते हैं। चन्दगीराम छुआछूत को मिटाने के लिये अपनी लड़की किरण की शादी हरिजन युवक सरदारा से कर देता है।

ग्राम सुधार (वि० १९९८, पृ० ३७), ले० : शंकर सहाय वर्मा; *पात्र* : पु० ७, स्त्री १।
घटना-स्थल : ग्रामीण घर, अछूतों की झोंपड़ी।

इस सामाजिक नाटक में गोपाल द्वारा अछूतोद्धार के लिए किये गये प्रयासों का वर्णन है।

नाटक का नायक अछूतोद्धार के लिए तन-मन-धन से लगा है किन्तु उसका पिता इसका विरोध करता है। वह पुराणपंथियों से कहता है कि हरिजन हिन्दू हैं। भगवान की पूजा करते हैं, तीर्थ-व्रत आदि करते हैं, क्या आप उस बच्चे की माँ को अछूत समझेंगे जो अपने बच्चे का मैला साफ करने में आनन्द मानती है? क्या आप उस धर्मात्मा को छूने में आनाकानी करेंगे जो दूसरे लोगों की अस्वस्थता में उनका मैला तक साफ करे? क्या आप उन भाइयों को पशुओं से भी गिरा हुआ समझेंगे जो खाद्य-अखाद्य खाते हैं।

यह अछूत नहीं बल्कि हिन्दू जाति का अभिन्न अंग है। समाज के कल्याण के लिए उनकी सेवा आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। उनको अछूत समझना बहुत बड़ी मूर्खता है।

ग्राम सुधार नाटक (सन् १९३५, पृ० ९९), ले० सैयद कासिम अली, प्र० साहित्य सदन, अबोहर (पंजाब), पात्र पु० ११, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य १०, ७, ४।
घटना स्थल गाँव के जमींदार का भवन, मैदान, बाग।

ग्रामीण जीवन की विषमताओं पर आधृत यह एक सामाजिक नाटक है जिसमें नाटककार निर्बल एवं निर्धन ग्रामीणों की दयनीय दशा को चित्रित करता है। इसमें जमींदारों एवं धनवानों द्वारा निर्धन और निर्बल पर अत्याचार दिखाया गया है। इस नाटक में धनी जमींदार अखंड सिंह के बंगले पर एक तरफ शराब का दौर चलता है और दूसरी ओर नर्तकी का नृत्य हो रहा है। उसके अत्याचार से ग्रामीण जनता बहुत विकल है। वह गरीब किसानों पर नित्य नया अत्याचार करने की योजना बनाता है। गाँव के एक किसान के बेटा पन्नू को निरपराध जेल में भेज देता है तथा उसके पिता रामू को पेड़ से बँधवा-कर बेंतों से इतना मारता है कि रामू बेहोश हो जाता है।

घ

घटकैती (सन् १९६६, पृ० १०८), ले० श्री कमल, प्र० कन्हैयालाल कृष्णदास, लहेरियासराय, दरभंगा, पात्र पु० १४, स्त्री ३, अंक ४, दृश्य १७।
घटना-स्थल उमाकान्त का दरवाजा, दिनकर मिश्र का आँगन, जयभद्र का दरवाजा, सुरेश का मकान, पटना में गौरी का डेरा, गाँव का एक बाँध एवं विमल की कोठरी इत्यादि।

मैथिल समाज में प्रचलित वैवाहिक प्रथा पर आधारित यह एक सामाजिक नाटिका है। इसमें तिलक-प्रथा, वृद्ध-विवाह, अनमेल-विवाह, कन्या-विक्रय, बाल-वैधव्य आदि सामाजिक समस्याओं की ओर संकेत किया गया है। साथ ही साथ धनवानों का दम्भ, गरीबों का आर्तनाद, दुराचारियों का दौरात्म्य, सदाचारी का सौहार्द का भी चित्रण मिलता है। एक ओर सुरेश नामक धनवान व्यक्ति के दौरात्म्य से क्षोभ उत्पन्न होता है, घटकराज पँचकौड़ी के छल-छद्म से चित्त भिन्नाने लगता है, तो दूसरी ओर विमल एवं गौरीकान्त के चरित्र से संतोष और वसुन्धरा एवं सुशीला की शीलमयी प्रकृति से सहानुभूति जगने लगती है। इसमें हरेराम की अर्थ-लोलुपता, दिनकर मिश्र की सहृदयता, पँचकौड़ी की विकृत वाक्पटुता, रोगहा की उच्चारण-विकृति, वृद्धों की रूढ़िप्रियता और नवयुवक वर्ग की सुधारप्रियता के चित्र प्रदर्शित हैं। घटकैती के चक्र में समाज के अच्छे और बुरे दोनों पक्षों पर प्रहार होता है। नाट्यकार ने बड़ी सतर्कता के साथ घृणित पात्रों को दुर्गति का परिणाम भोगने से बचा-

कर उन्हें सुधारने की चेष्टा की है।

घर का भूत (सन् १९५६, पृ० १०७), ले० : कान्तानाथ पांडेय 'चोंच'; प्र० : चौधरी एण्ड संस, बनारस, पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक कोई नहीं, १५ दृश्यों में विभाजित।
घटना-स्थल : प्रोफेसर का बँगला, टूटा-फूटा मकान, सड़क।

इस सामाजिक नाटक में सामाजिक अन्ध-विश्वास चित्रित है। प्रो० सीधेराम तिवारी के लिए उनका शिष्य तिकड़म किराये पर मकान ढूंढता है और उनकी चिट्ठी-पत्री लिखने का काम भी करता है। उनकी स्त्री कमला तिकड़म की योग्यता में विश्वास नहीं करती। चिथरू एक ऐसा मकान बताता है जिसमें भूत का निवास है। चिथरू नाई प्रोफेसर साहब से बातें करते-करते उनकी एक तरफ की मूंछें बना देता है। अब उन्हें पूरी मूंछ बनवानी पड़ती है जिससे सब लोग समझते हैं कि प्रो० के पिता की मृत्यु हो गई है। लोग सहानुभूति प्रगट करते हैं। तिकड़म प्रो० के पड़ोसी मुंशी उजबक को भूत बनकर डराता है। भूत के डर से मुंशी उजबक मकान छोड़कर भाग जाते हैं। वह मकान प्रो० को मिल जाता है।

घर का विद्रोह (सन् १९००, पृ० ९६), ले० : रामशरण आत्मानन्द; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० ६, स्त्री २।
घटना-स्थल : महल, पृथ्वीराज का दरबार, रणक्षेत्र।

गृह-कलह की पृष्ठभूमि पर आधारित यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमें जयचन्द के विरोधी होने से ही पृथ्वीराज की हार और भारत पर मुहम्मद गोरी का अधिकार हो जाता है। एक घर के विद्रोह के कारण ही समूचा देश यवनों का गुलाम हो जाता है। अन्त में जयचन्द को भी अपने किये का फल मिलता है।

घर की बात (सन् १९६१, पृ० ८७), ले० : प्रेमनाथ दर; प्र० : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; पात्र : पु० ५, स्त्री : २; अंक : ४।
घटना-स्थल : घर का दृश्य।

इस सामाजिक नाटक में विवाह की समस्या को जाति एवं दहेज के साथ जोड़कर पिता की अर्थ-लोलुपता दिखाई गई है। वणिक वर्ग का लड़का जीवन, इन्द्रा नामक ब्राह्मण युवती के साथ अपना विवाह कर लेता है। यह देखकर उसके पिता उसे घर से निकाल देते हैं। इन्द्रा के पिता भी इस विवाह को परम्परा एवं मर्यादा के विपरीत मानते हैं। जीवन पुनः पिता के पास आश्रय के लिए जाता है, परन्तु धन-लोलुप पिता किसी भी शर्त पर नहीं रखता। जीवन पिता से स्वावलम्बी बनने के लिए धन मांगता है किन्तु वह इन्कार कर देता है। अन्त में विवश होकर २०,००० रु० चुपके से चुरा लाता है, और पत्नी के साथ घर बसाता है। जीवन का पिता जब रुपया वापस मांगने आता है तो वह इन्द्रा के पिता द्वारा दिए गए जेवर एवं रुपए को देखकर दोनों को अपने घर ले जाता है।

घर जमाई (सन् १९५१, पृ० २४) ले० : बुद्धू मियाँ; प्र० : दूधनाथ पुस्तकालय प्रेस, हावड़ा, कलकत्ता।
घटना-स्थल : पिता का घर, ससुर का मकान।

इस सामाजिक नाटक में सामाजिक जीवन का बड़ा ही मार्मिक और वास्तविक चित्रण है। एक युवक शादी के उपरान्त घर की अपेक्षा ससुराल में अधिक सम्बन्ध रखता है। परिवार में गृह-कलह उत्पन्न हो जाने के कारण वह ससुराल में ही जाकर बस जाता है। ससुराल में बसने पर पत्नी और ससुर की दृष्टि में वह केवल दास मात्र रह जाता है।

घरवाली (सन् १९६२, पृ० ८०) ले० : मनोज ठे; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली; पात्र : पु० ८, स्त्री : १; दृश्य : ३।
घटना-स्थल : घर, ऑफिस आदि।

परिवार-नियोजन पर लिखा हुआ

हास्यप्रद सामाजिक नाटक है। किरण शादी के बाद भी नौकरी करके अपने घर की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करती है। ऑफिस का हेड क्लर्क सूरज शादी के साढ़े तीन साल बाद भी कोई बच्चा न होने से बहुत चिन्तित रहता है। वह दीपक के कहने पर पत्नी किरण को तलाक की धमकी भी देता है। किन्तु किरण पति की जिद को हँसी समझकर उसे खेलने के लिए एक जापानी गुड्डा लाकर देती है। नाना वचन के शौकीन रोशनलाल सूरज को डॉ० भटनागर से दवाई की बोतल लाकर देता है। गदाधर सूरज को करामात अली से तावीज बनवाने की सलाह देता है। करामात अली एक दिन सूरज से मिलने आता है। सूरज रोशनलाल द्वारा लाई हुई पाँच बोतलें करामात अली को यह कहकर दता है कि इसके सेवन से तुम्हारे बच्चे पैदा होने बन्द हो जायेंगे। लेकिन इसका उल्टा असर पड़ता है और करामात अली के अगले वर्ष जुड़वाँ बच्चे पैदा होते हैं। सूरज के पिता सूबेदार चादमोहन भी अपना कोई पोता न देखकर चिन्तित होते हैं। चाँदमोहन की भी यह बहुत तमन्ना थी कि जल्द ही मेरे पोता पैदा हो जो फौज में कर्नल बने। एक दिन किरण घर को खूब सजाकर एक बच्चे का फोटो टेबिल पर रखती है। बच्चे का फोटो देखकर चादमोहन बहुत खुश होकर अपने भावी कर्नल पोते के लिए खिलौने लेने चल पड़ते हैं। सप्रूहाउस, नई दिल्ली में सन् ६२ में अभिनीत।

घाटियाँ गूँजती हैं (सन् १९६५, पृ० १२७), *ले०* डॉ० शिवप्रसाद सिंह, *प्र०* भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, कलकत्ता, *पात्र* पु० १२, स्त्री १, *अंक* १, *दृश्य* ३। *घटना स्थल* होटल, पहाड़ी, चट्टान।

यह नाटक १९६२ के भारत-चीन-युद्ध पर आधृत एक सशक्त रचना है। विवेककुमार राय चीनी हमले से सम्बन्धित समाचार-संकलन के लिए तेजपुर पहुँचता है। वहाँ बोमदिला के पतन का समाचार रेडियो से सुनकर सब लोग भाग जाते हैं। होटल में विवेक की भेंट कैप्टन से होती है जिससे वह बोमदिला जाने के लिए एक जीप का प्रबन्ध करने को कहता है। रोज भी विवेक के साथ अपने पिता को बचाने के लिए बोमदिला जाने का हठ करती है। कैप्टन, विवेक और फादर पिण्टो रोज को बोमदिला जाने से रोकते हैं किन्तु वह नहीं मानती। कैप्टन अपनी बातें छिपकर सुननेवाले आदिवासी बूढ़े को पकड़ लेता है और उसपर चीनी एजेंट होने का सन्देह करता है। लेकिन करतार सिंह उसे अपने होटल का गूँगा चौकीदार बताकर मुक्त करा लेता है।

विवेक और रोज बोमदिला घाटी के पास पहुँचते हैं लेकिन अँधेरी रात और सैनिक हलचल के कारण आगे जाना उचित नहीं समझते। विवेक ने वहीं पर शीरू को देखा तो उसे शक हो गया कि जरूर यह चीनी ऐजेण्ट है। उसके एक पेड़ के नीचे सो जाने पर रोज चुपके से अपने पिता को खोजने चली जाती है। रोज एक चर्च में से अपने घायल पिता को ले आती है। विवेक और रोज के सेवा करने पर भी वह मर जाता है। रोज के दुखी होने पर विवेक उसे ढाढस देता है कि तुम्हारा टूरा जीवित है और देश की रक्षा के लिए लड़ रहा है।

कैप्टेन भेष बदलकर चीन-भक्त भारतीय मुकुल को पकड़कर लोगों को गाँव छोड़कर भागने से रोकता है। शीरू टूरा को छुरे से मार देता है। उसी समय क्यूला, विवेक, रोज और मुकुल को लेकर कैप्टन भी उसी जगह पहुँचते हैं। क्यूला को बहुत हैरानी होती है कि बापू शीरू ने ही अपने बेटे टूरा को मार दिया। कैप्टन के पूछने पर गूँगा बना शीरू रोते हुए अपने गद्दार बेटे टूरा की कहानी बताता है जिसे सुनकर क्यूला पागल की तरह चिल्लाती हुई घाटियों में घूमने लगती है।

घेराव (सन् १९६७, पृ० १६०), *ले०* बिरजीत, *प्र०* कान्त बन्धु प्रकाशन, नई दिल्ली, *पात्र* पु० १२, स्त्री ४, *अंक* २, *दृश्य* २। *घटना-स्थल* दिल्ली के एक सहशिक्षा कालिज के पिछले भाग का बगीचा, शान्ति

की कोठी के पिछले भाग में बाग का एक कोना।

इस सामाजिक प्रहसन में राजनीति के प्रचलित 'घेराव' की तरह प्रेम का घेराव दिखाया गया है। प्रिंसिपल का एक आदेश है कि "लड़के लड़कियाँ परस्पर मिलन तथा वार्तालाप न करें।" उसके विरुद्ध उनके कार्यालय पर घेराव होता है। उसका नेता दिलीप कुमार है जो फिल्म कम्पनी में कार्य करने का इच्छुक है। घेराव में सभी लड़के लड़कियाँ शामिल होकर "तानाशाही नहीं चलेगी", "किंगडम आफ लव-जिन्दाबाद," "प्रेम-दिवाने जिन्दाबाद" आदि नारे लगाते हैं। छात्र यूनियन का प्रेसिडेण्ट सुरेशचन्द्र उसका विरोध करता है। उत्तेजित छात्र उसे पीटते हैं। अन्त में प्रिंसिपल के रोकने पर प्रदर्शन बन्द होता है। कालिज की बी० ए० फाइनल की छात्रा शान्ति अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद लाखों की मालिक है, उसपर दिलीप, बद्रीनाथ, प्रो० फूलचन्द की आँखें गड़ी हैं। शान्ति भी सुरेशचन्द्र की ओर आकृष्ट है। किन्तु सुरेश शान्ति की उच्छृंखलता से परेशान है। शान्ति अपने तीनों प्रेमियों को धता बताती हुई उनके घेरे को तोड़कर निकल जाती है। उधर घर में मामा-मामी भी उसके लिए वर के पक्ष में घेरा डाले हुए हैं। इधर कालिज की टीम भी 'प्रेम घेराव' का कार्यक्रम बनाकर शान्ति का घर घेर लेती है। रूप और धन की लिप्सा में रघोमल तथा दिलीप कुमार के पिता अपने लड़कों को कुमार्ग की शिक्षा देते हैं। शान्ति के हितैषी मामा-मामी भी अपनी भांजी को धन के लोभ में कुपात्र को सौंप देना चाहते हैं। नाटककार ने कालिज में कुछ मनचले प्रोफेसरों पर भी संकेत किया है। शान्ति अपनी पैनी दृष्टि, सफल क्रियाशीलता और क्रीड़ा-कौशल से प्रेमी घेराव का अन्तकर सुरेशचन्द्र को वरण करती है।

घोंघावसन्त (सन् १९२७, पृ० ३८), ले० : चन्द्रनारायण सक्सेना; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : ५।
घटना-स्थल : कमरा।

इसमें घोंघावसन्त की मूर्खता का चित्रण है। कहीं उसकी बीवी बदल जाती है तो वह दुखी होता है और कहीं लड़की की नीलामी से परेशान हो दीवान की शरण लेता है। हास्य रस के माध्यम से घोंघा की क्रियाओं का सुन्दर चित्रण देखने को मिलता है।

च

चण्डीदास (सन् १९३१, पृ० १४४), ले० : मुहम्मदशाह आगा हश्र काश्मीरी; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, बनारस; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : ३; अंक तीन में विभाजित।
घटना-स्थल : गाँव में मन्दिर, जमींदार की कोठी।

इस धार्मिक नाटक में पाखंड के ऊपर सत्य की विजय दिखाई गई है।

चण्डीदास उदार हृदय मानव प्रेम-मन्दिर का पुजारी है। वह गुरु के आदेश से भक्तों के साथ रामी धोबिन को प्रसाद देता है। जमींदार गोपीनाथ रामी के अनिंद्य सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उसे प्राप्त करने की चेष्टा करता है। मानव-प्रेमी चण्डीदास उसे प्रभु-भक्तिन समझकर उसका आदर करता है।

गोपीनाथ रामी को रात्री के बहाने रात्रि में सरयूप्रसाद के माध्यम से एकान्त में बुलाता है और अपनी काम-पिपासा-शान्ति की कामना प्रकट करता है। रामी बलात्कार से बचने के लिये शोर मचाती है। संयोग से रानी मन्दिर से लौटते समय उसकी पुकार

सुनकर रामी के सतीत्व की रक्षा करती है और पति की नीचता के लिये उससे क्षमा मांगती है। गोपीनाथ चण्डीदास और रामी के अवैध सम्बन्ध की झूठी अफवाह गाँव में फैलाकर चण्डीदास को प्रायश्चित्त करने पर विवश करता है। गुरु आचार्य भी समाज-धर्म को बड़ा मानकर चण्डीदास को प्रायश्चित्त के लिए बाध्य करते है। चण्डीदास इस मिथ्या लांछन का विरोध करता है किन्तु गुरु आज्ञा से जैसे ही प्रायश्चित्त के लिए कदम उठाता है त्यों ही भगवान प्रकट होकर उसे निर्दोष घोषित करते हैं।

चन्दन की बाँसुरी (सन् १६००, पृ० ४४) ले० शारदेन्दु रामचन्द्र गुप्त, चन्दन गुप्त, प्र० ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर, वाराणसी, पात्र पु० ४, स्त्री २।
घटना स्थल उपवन, नदी।

इस सामाजिक नाटक में एक राजकुमार का प्रेम अछूत निर्धन कन्या के साथ मृत्यु की गोद में दिखाया गया है।

दुर्गादास भैरवीगढ़ का राजकुमार है। वह सुमन नामक निर्धन कन्या से प्यार करता है। चन्दन की बाँसुरी से उसे रिझाता है, किन्तु सामाजिक लांछन के भय से दोनों नदी के भँवर में डूबकर अपने प्रेम-भाव की रक्षा करते है।

चन्द्रकला भानुकुमार नाटक (सन् १६०४, पृ० १३६) ले० देवीप्रसाद श्रीवास्तव पूर्ण, प्र० रसिक समाज, कानपुर, पात्र पु० १७ स्त्री ६, अंक ७, *गर्भांक में विभाजित है।* *दृश्य* २, ४, ८, ४, ५, ३, ४।
घटना-स्थल मन्दिर, भयानक वन, तपोवन, मेला, नगर, रणभूमि।

यह एक सामाजिक नाटक है, जिसका उद्देश्य है "एक अपूर्वकल्पित मनोहर आख्यायिका के द्वारा सत्प्रेम, विश्वास, धर्मनिष्ठा इत्यादि सद्गुणो की बड़ाई और व्यभिचार, पिशुनता इत्यादि दूषित कर्मों की निंदा दिखलाई जावे, जिस की भाषा निर्मल और सुन्दर कविता से अलङ्कृत हो और जो शृंगार आदि नवरस से सम्पन्न हो।" कंचनपुर के राजा जोरसिंह की पुत्री चन्द्रकला और विजयनगर के राजकुमार भानुकुमार प्रथम साक्षात्कार में ही एक दूसरे की ओर आकृष्ट होते हैं। वर्षाऋतु में भानुकुमार अपने मित्र प्रताप कुमार के साथ कंचनपुर में भ्रमण करने आते हैं। वहीं संयोगवश राजकुमारी के उपवन में भानुकुमार और चन्द्रकला का साक्षात्कार होता है। दोनों के हृदय एक दूसरे से बँध जाते हैं। किन्तु चन्द्रकला के सौंदर्य की गाथा सुनकर अमरावती का राजा दिक्पाल भी अपने विवाह का प्रस्ताव जोरसिंह के पास भेजता है, और विवाह न करने पर युद्ध की धमकी देता है। चन्द्रकला यह संवाद सुनकर बहुत व्याकुल होती है। दोनों ओर से युद्ध की तैयारी होती है और प्रताप कुमार सेनापति बनाया जाता है। वह अपनी पत्नी से विदा लेकर युद्धक्षेत्र में जाता है। भानुकुमार भी सेना लेकर युद्धक्षेत्र में पहुँचता है। अमरावती में युद्ध होता है। सत्यप्रेम की विजय होती है। राजा दिक्पाल हार जाता है। अन्त में स्वयंवर में चन्द्रकला भानुकुमार का वरण करती है।

चन्द्रगुप्त नाटक (सन् १६२८, पृ० १००) ले० बदरीनाथ भट्ट, प्र० रत्नाश्रम, आगरा पात्र पु० १४, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ७, ८, ५।
घटना-स्थल पाटलिपुत्र, युद्ध भूमि।

मौर्यकालीन भारतीय इतिहास की घटनाओं पर आधारित ऐतिहासिक नाटक है। महानन्द-वध के पश्चात् चन्द्रगुप्त गद्दी पर बैठता है। वह प्रजाजनों का स्नेहभाजन है किन्तु एक असन्तुष्ट आर्य रणधीर, राजा की सफलता से द्वेष करता है। किन्तु राजा के विरुद्ध प्रजा को भड़काने और विद्रोह कराने में असफल रहता है। चाणक्य राक्षस मन्त्री की मन्त्रणा से आर्य रणधीर को स्वपक्ष में कर लेता है। इसी समय सिल्यूकस का आक्रमण होता है। रणधीर देश-सेवा में प्राणों की आहुति देता है। चन्द्रगुप्त युद्ध में सिल्यूकस को पराजित करके कैद कर लेता है। तभी दोनों में संधि होती है और सन्धि के फलस्वरूप सिल्यूकस अपनी पुत्री अथेना का विवाह चन्द्रगुप्त से कर देता है। इस सांस्कृतिक सम्बन्ध की महत्ता

को शुभ घोषित करता हुआ चाणक्य राक्षस को मन्त्रित्व का भार सौंपकर वन में चला जाता है।

चन्द्रगुप्त मौर्य (सन् १९३१, पृ० २२८), ले०: जयशंकर प्रसाद, प्र०: भारती भंडार, इलाहाबाद, पात्र पु० २१, स्त्री ९; अंक: ४, दृश्य: ११, १०, ९, १४।
घटना स्थल: तक्षशिला का गुरुकुल, विपाशा कानन, सिन्धु तीर, उपवन, राजसभा, सिन्धु तट, बन्दीगृह, प्रासाद प्रकोष्ठ, कानन पथ, दाण्ड्यायन का आश्रम, ग्रीक शिविर, युद्धक्षेत्र, उद्यान, स्कंधावार, मालवदुर्ग, रावी तट, रंगशाला, तपोवन।

इस ऐतिहासिक नाटक में ग्रीक आक्रमण से भारत की रक्षा चाणक्य के नीतिकौशल के द्वारा प्रदर्शित है। इसमें भारतीय संस्कृति और तपोनिष्ठ ब्राह्मण की शक्ति का परिचय दिया गया है।

तक्षशिला गुरुकुल के कुलपति आचार्य चाणक्य दीक्षान्त समारोह के अवसर पर अपने शिष्यों को भारतीय राजनीति और विदेशी आक्रमण की सम्भावना से अवगत कराते हैं। गान्धार के युवराज आम्भीक का चन्द्रगुप्त और सिंहरण नामक छात्रों से विवाद हो जाता है। आम्भीक की भगिनी अलका मालवकुमार सिंहरण की तेजस्विता पर मुग्ध होकर भाई से कलह मिटाने का आग्रह करती है। चन्द्रगुप्त और सिंहरण देश की रक्षा के लिए सर्वस्व समर्पण का संकल्प लेते हैं। चाणक्य और चन्द्रगुप्त अपनी जन्मभूमि पाटलिपुत्र में लौटकर नंद की विलासिता का दुष्परिणाम देख और अपने माता-पिता का दुःखद समाचार सुनकर राष्ट्रोद्धार का संकल्प दृढ़ बनाते हैं। सरस्वती मंदिर के उपवन में समाज का आयोजन देखने नंदकुमारी कल्याणी सखियों के साथ आती है। इसी समय राजा का अहेरी चीता पिंजरे से निकलकर कल्याणी की ओर झपटता है। चन्द्रगुप्त अपने तीर से उसका सिर भेदकर कल्याणी की रक्षा करता है। कल्याणी चन्द्रगुप्त से वार्तालाप होता है। इधर चाणक्य नंद की राजसभा में प्रविष्ट होकर आर्यावर्त की स्थिति समझाते हुए कहता है—

"यवनों की विकट वाहिनी निषध-पर्वतमाला तक पहुँच गई है। तक्षशिलाधीश की भी उसमें अभिसंधि है। सम्भवतः समस्त आर्यावर्त पादाक्रांत होगा। उत्तरापथ में बहुत छोटे-छोटे गणराज्य हैं, वे उस सम्मिलित पारसीक यवन बल को रोकने में असमर्थ होंगे। अकेले पर्वतेश्वर ने साहस किया है, इसलिए मगध को पर्वतेश्वर की सहायता करनी चाहिए।" राजसभा में कल्याणी और चन्द्रगुप्त पहुँच जाते हैं। नंद की आज्ञा से प्रतिहार चाणक्य की शिखा पकड़कर उसे घसीटता हुआ बाहर निकाल देता है। चाणक्य प्रतिज्ञा करता है—"यह शिखा नंद कुल की काल सर्पिणी है, वह तब तक न बंधन में होगी जब तक नंद कुल निःशेष न होगा।"

कुछ दिन बीतने पर राक्षस बंदी चाणक्य से तक्षशिला में मगध का गुप्त प्रणिधि बनने का आग्रह करता है। उसे अस्वीकार करने पर वररुचि अपने साथ पाणिनि का भाष्य लिखने को बाध्य करता है तो चाणक्य कहता है—"भाषा ठीक करने से पहले मैं मनुष्यों को ठीक करना चाहता हूँ।" राक्षस क्रुद्ध होकर उसे अंधकूप में बंदी बनाने का दंड देता है। उसी समय रक्तपूर्ण खड्ग लिये सहसा चन्द्रगुप्त का प्रवेश होता है और सत्य बल से गुरुदेव को मुक्त कराता है। चाणक्य मगध से पञ्चनद पर्वतेश्वर की राजसभा में पहुँचता है। वह मगध राज्य पर चन्द्रगुप्त का अधिकार स्थापित करने के उद्देश्य से पर्वतेश्वर से सैन्य सहायता माँगता है पर पंचनद-नरेश सिकंदर के आगन्तु युद्ध की आशंका और चन्द्रगुप्त के वृषलत्व के कारण चाणक्य का प्रस्ताव ठुकरा देता है। असफल होकर चाणक्य और चन्द्रगुप्त भटकते-भटकते सिन्धु-तट के समीप सिल्यूकस के शिविर में पहुँचते हैं। मार्ग में सिल्यूकस मूर्छित चन्द्रगुप्त पर आक्रमण करनेवाले व्याघ्र को मारकर उस की रक्षा करता है। अपने राज्य में चाणक्य और चन्द्रगुप्त को शत्रु शिविर में देखकर गांधार कन्या अलका विस्मित होती है। यवन सैनिकों से अलका इससे पूर्व अपमानित हो चुकी है। अतः उसके मन में बड़ा विक्षोभ होता है। सभी अपनी-अपनी समस्याओं के समा-

ध्यान के लिए सिन्धु तट पर दाड्यायन के आश्रम में एकत्र होते हैं। सिकन्दर के साथ सिल्यूकस कार्नेलिया के साथ पहुँचता है। अलका अपने मन का संशय और विक्षोभ प्रकट करती है। चाणक्य उसकी शंका को निर्मूल करता है। सिकन्दर अपनी विजय का आशीर्वाद माँगता है। दाड्यायन उसे समझाते हुए कहता है—"विजय तृष्णा का अन्त पराभव में होता है अलक्षेन्द्र! राजसत्ता सुव्यवस्था से बढ़े तो बढ़ सकती है, केवल विजयों से नहीं। इसलिए अपनी प्रजा के कल्याण में लगो।'—सिकन्दर की उत्कंठा मिटाते हुए दाड्यायन चन्द्रगुप्त की ओर संकेत करते हुए यह भी कहते हैं— 'अलक्षेन्द्र, सावधान! देखो यह भारत का भावी सम्राट तुम्हारे सामने बैठा है।' —यहीं प्रथम अंक समाप्त होता है।

सिकन्दर का निमन्त्रण पाकर चन्द्रगुप्त यवन शिविर में ग्रीक युद्ध-नीति सीखता है और एक दिन सिल्यूकस-कन्या की रक्षा फिलिप्स नामक विलासी ग्रीक योद्धा से करता है। कार्नेलिया भारत के भावी सम्राट चन्द्रगुप्त की विनयशील वीरता पर मुग्ध होकर इस घटना से पिता को अवगत कराने के लिए चन्द्रगुप्त से निवेदन करती है। सिकन्दर अपने सैन्यबल से चन्द्रगुप्त को मगध का सम्राट बनाने की योजना सामने रखता है। जिसे चन्द्रगुप्त अस्वीकार करता है। सिकन्दर रुष्ट होकर उसे बन्दी बनाना चाहता है किन्तु वह आम्भीक, फिलिप्स और एनिसाक्रिटीज को आहत करता हुआ निकल जाता है।

अब चन्द्रगुप्त, सिंहरण और अलका सपेरा, नट-नटी का वेश बदलकर पर्वतेश्वर के युद्ध शिविर में पहुँचते हैं और पचनद नरेश को यवन रणनीति से सावधान रहकर रण-व्यूह-रचना का परामर्श देते हैं। पर्वतेश्वर के चले जाने पर सिंहरण को अपने शिविर में आमन्त्रित करती है। चन्द्रगुप्त सिंहरण को पृथक्‌कर एकान्त में कल्याणी से युद्ध का भविष्य बताता है। दोनों वास्तविक स्थिति समझकर अपने-अपने कार्य में संलग्न हो जाते हैं। सिकन्दर युद्ध की भेरी बजाता है। पर्वतेश्वर और सिल्यूकस में घोर युद्ध होता है। ग्रीक सेनापति आहत हो जाता है। विकट यवन वाहिनी को आते देख सिंहरण पर्वतेश्वर से सुरक्षित पहाड़ी पर चल जाने का आग्रह करता है पर वह युद्धक्षेत्र से नहीं हटता। दोनों वीरतापूर्वक यवन योद्धाओं से युद्ध करते हैं पर लड़खड़ाकर गिरने लगते हैं तो सिकन्दर युद्ध बन्द करने की आज्ञा देता है। चन्द्रगुप्त सिकन्दर के लिए लड़ता है पर सिकन्दर पर्वतेश्वर के शौर्य पर मुग्ध होकर कहता है—"भारतीय वीर पर्वतेश्वर! अब मैं तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार करूँ?" पर्वतेश्वर रक्त पोंछते हुए कहता है—"जैसा एक नरपति अन्य नरपति के साथ करता है।" दोनों में मैत्री हो जाती है। कल्याणी अपना शिरस्त्राण फेंककर पर्वतेश्वर को लज्जित करते हुए कहती है— 'जाती हूँ क्षत्रिय पर्वतेश्वर! तुम्हारे पतन में रक्षा न कर सकी, बड़ी निराशा हुई।" अलका घायल सिंहरण को उठाना चाहती है। आम्भीक दोनों को बन्दी बनाता है।

अब सिकन्दर मालवा पर आक्रमण करता है। पर्वतेश्वर अलका से विवाह का प्रस्ताव करता है किन्तु वह प्रतिबन्ध लगाती है कि मालवयुद्ध में आपको सिकन्दर की सहायता नहीं करनी होगी। पर्वतेश्वर पहले तो वचनबद्ध होता है किन्तु सैन्यदल के साथ सिकन्दर की सहायता को प्रस्थान करता है। अलका मालविका आदि के उद्योग और चन्द्रगुप्त के सेनापतित्व में गणराज्यों की सम्मिलित सैन्य शक्ति से सिकन्दर पराजित और आहत होता है। यहीं द्वितीय अंक समाप्त होता है।

इस विजय के उपरान्त सिंहरण और अलका का विवाहोत्सव होता है जिसमें सिकन्दर मालवों और यवनों के सम्मिलित उत्सव की घोषणा करता है। यह देखकर अलका का प्रेमी पर्वतेश्वर छुरा से आत्महत्या करना चाहता है किन्तु चाणक्य आकर हाथ पकड़ लेता है। चाणक्य के प्रयास से पर्वतेश्वर और सिंहरण में मैत्री स्थापित होती है। इधर कार्नेलिया और चन्द्रगुप्त से वार्तालाप के समय, फिलिप्स पहुँचकर कार्नेलिया को प्रलो-

भेज देता है और चन्द्रगुप्त को द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारता है। किन्तु चन्द्रगुप्त के स्वीकार करने पर प्रस्थान करता है। इधर राक्षस चाणक्य को अपनी मुद्रा देकर सुवासिनी को बन्दीगृह से मुक्त कराने का आग्रह करता है। चाणक्य धूमधाम के साथ ससैन्य जलमार्ग से सिकन्दर को उसके देश भेज देता है। यहीं प्रतिमुख सन्धि समाप्त होती है।

तृतीय अंक के प्रारम्भ में सुवासिनी के कारण नंद और राक्षस में वैमनस्य हो जाता है। नंद एक दिन सुवासिनी को बलपूर्वक पकड़ता है। उसी समय अमात्य राक्षस पहुँच जाता है। और नंद लज्जित होकर कहता है—"यह तुम्हारी अनुरक्ता है राक्षस! मैं लज्जित हूँ।" इधर चाणक्य मालविका अलका आदि के साथ कुसुमपुर पहुँचकर राक्षस के विवाह के दिन नंद के विरुद्ध प्रजा-विद्रोह की योजना बनाता है। शकटार नंद से प्रतिशोध लेने के लिए प्रतिश्रुत होता है। चाणक्य के आदेश से राक्षस की मुद्रा से अंकित एक पत्र मालविका नंद के पास पहुँचाती है जिस में लिखा है—"सुवासिनी, कारागार से शीघ्र निकल भागो, इस स्त्री के साथ मुझसे आकर मिलो। मैं उत्तरापथ में नवीन राज्य की स्थापना कर रहा हूँ। नंद से फिर समझ लिया जायगा।"—पत्र पढ़कर नंद राक्षस को बन्दीगृह में डाल देता है। इस समाचार से नागरिक नंद के विरुद्ध विद्रोह करते हैं। शकटार नंद का वध करता है। प्रजा की सम्मति से चन्द्रगुप्त मगध का शासक नियुक्त होता है। मंत्रि-परिषद् की स्थापना होती है। यहीं तृतीय अंक के साथ गर्भ सन्धि समाप्त होती है।

पर्वतेश्वर कल्याणी से बलात् विवाह करना चाहता है। वह छुरा निकालकर पर्वतेश्वर का वध करती है और उसी से आत्महत्या कर डालती है। चन्द्रगुप्त दक्षिणापथ की विजय करने के लिए प्रस्थान करता है। इधर राक्षस को संदेह होता है कि शक्तिशाली चाणक्य सुवासिनी से विवाह करना चाहता है। अतः वह मगधराज के विरोध की योजना बनाता है। दक्षिणापथ से विजयी होकर लौटने पर विजयोत्सव न मनाये जाने से चन्द्रगुप्त के माता-पिता रुष्ट होकर बाहर चले जाते हैं। चन्द्रगुप्त और चाणक्य में इस विषय को लेकर विवाद होता है। चाणक्य राज्य छोड़ देता है। मालविका षड्यंत्रकारियों से चन्द्रगुप्त की रक्षा करते हुए मारी जाती है। सिल्यूकस चन्द्रगुप्त के साथ युद्ध की घोषणा करता है। चन्द्रगुप्त संकल्प-विकल्प करते हुए कहता है—"पिता गये, माता गई, गुरुदेव गये, कंधे से कंधा भिड़ाकर प्राण देनेवाला चिर सहचर सिंहरण गया! तो भी चन्द्रगुप्त को रहना पड़ेगा।" यहीं विमर्श सन्धि समाप्त होती है।

चाणक्य की नीति से आम्भीक और सिंहरण गुप्त रीति से चन्द्रगुप्त की रक्षा करते हैं। मगध सेना के प्रत्यावर्तन के समय आम्भीक ग्रीक सेना पर टूट पड़ता है और सिल्यूकस से युद्ध करते-करते मारा जाता है। यवन सेना को सिंहरण पराजित करता है। सम्राट् चन्द्रगुप्त की जयजयकार होती है। सिंहरण से गुरुदेव का प्रणाम सुनकर चन्द्रगुप्त अपने को अपराधी स्वीकार करता है। इधर ग्रीक शिविर में पराजय के कारण कार्नेलिया आत्महत्या करना चाहती है। उसी समय चन्द्रगुप्त वहाँ पहुँचकर उसके हाथ से छुरी ले लेता है। कार्नेलिया अपने पिता की हत्या से आशंकित होती है। उसी समय सिल्यूकस आ जाते हैं। इसी समय सीरिया पर एंटिगोनस के आक्रमण की सूचना मिलती है। मेगस्थनीज सिल्यूकस को चाणक्य की कूटनीति समझाते हुए चन्द्रगुप्त को बन्धु बनाने के लिए कार्नेलिया के साथ उसके विवाह का सुझाव देता है। कार्नेलिया की सहमति से विवाह सम्पन्न होता है। युद्ध में सिल्यूकस का सहायक राक्षस चारों ओर आर्य सैनिकों से घिरने से दांड्यायन के तपोवन में छिप जाता है। रागद्वेष से मुक्त चाणक्य को देखकर राक्षस, मौर्य और चन्द्रगुप्त अपने अपराधों की क्षमा माँगता है। मौर्य स्वीकार करता है कि कि ऐसे—सबकी अवज्ञा करनेवाले महत्त्वाकांक्षी ब्राह्मण का वध करना चाहता था।" चन्द्रगुप्त पिता को उस अपराध के लिए प्राणदण्ड देना चाहता है किन्तु चाणक्य सबके अपराध क्षमा कर देता है। राक्षस

अपने अपराधों के लिए दंड मांगता है तो चाणक्य कहते हैं—"आर्य शकटार के भावी जमाता अमात्य राक्षस के लिए, मैं अपना मंत्रित्व छोड़ता हूँ। राक्षस ! सुवासिनी को सुखी रखना।"

सिल्यूकस आर्य चाणक्य का अभिनंदन करके स्वदेश लौटना चाहता है। संधिपत्र के साथ सिल्यूकस कार्नेलिया का हाथ चन्द्रगुप्त को पकड़ाता है। जयध्वनि होती है और चाणक्य मौर्य के साथ अरण्य प्रदेश में प्रस्थान करता है। यहीं निर्वहण संधि के साथ नाटक समाप्त होता है। सन् १९३३ में काशी में अभिनीत।

चन्द्रगुप्त मौर्य (सन् १९४९, पृ० १५३) ले० लक्ष्मणस्वरूप, प्र० एस० चन्द एण्ड कम्पनी, फव्वारा, दिल्ली, पात्र पु० १३, स्त्री २ अंक २ दृश्य २०।
घटना-स्थल तक्षशिला का शिक्षा-केन्द्र, मगध का राजविहार, पाटलिपुत्र का संगम।

इस ऐतिहासिक नाटक में चाणक्य की राजनीति-पटुता और चन्द्रगुप्त के शौर्य का परिचय मिलता है। तक्षशिला विश्वविद्यालय में चाणक्य, चन्द्रगुप्त तथा अपने अनेक शिष्यों को शिक्षा देता है। चाणक्य के राष्ट्रीय विचारों का महाराज आम्भि सर्वथा विरोधी है। वह क्रोधित होकर चाणक्य का अपमान करता है। परिणामतः शिष्य भड़क जाते हैं। इसी समय सिकन्दर का आक्रमण होता है। चन्द्रगुप्त से प्रभावित होकर वह मशकवती का राज्य उसे सौंप देता है। यहीं चन्द्रगुप्त का परिचय सिल्यूकस से होता है। उसी दिन सन्ध्या के समय सिल्यूकस की पुत्री हेलेन, नौका-विहार करती दिखाई देती है। नौका डूबने लगती है किन्तु चन्द्रगुप्त उसके प्राणों की रक्षा करता है। दोनों का परिचय प्रेम में बदल जाता है। हेलेन यूनानी संस्कृति से घृणा करती हुई भारतीय संस्कृति को हृदय से सराहती है। इधर चाणक्य कूटनीति के जाल बिछाता रहता है। सिकन्दर की मृत्यु और फिलिप्स का पतन होता है। यूनानियों को उनके देश भेजकर चन्द्रगुप्त विस्तृत भू-भाग का राजा हो जाता है।

पाटलिपुत्र का विलासी राजा नन्द सुन्दरियों के भोग में डूबा रहता है। मन्त्री शकटार राजा की पाप-नीति का विरोध करता है। नन्द मन्त्री को जेल में डाल देता है और विदूषक की सलाह से पितृ-श्राद्ध पर ब्रह्म-भोज कराता है। इसी अवसर पर नन्द चाणक्य की शिखा खींचता है। चाणक्य बदला लेने का दृढ़ निश्चय करता है। चन्द्रगुप्त मगध पर आक्रमणकर नन्द का वध करता है। चाणक्य उसके रक्त से शिखा बाँधकर सन्तुष्ट हो जाता है। तभी सिल्यूकस अपने को सिकन्दर का उत्तराधिकारी घोषित करता हुआ चढ़ाई करता है। उसकी पराजय होती है। चाणक्य के संकेत पर सिल्यूकस अपनी पुत्री हेलेन का विवाह चन्द्रगुप्त से कर देता है। चाणक्य शकटार को मन्त्री बनाकर, राज्याभिषेक हो जाने पर सन्यास ले लेता है।

चन्द्रमुखी (सन् १९६५) ले० अमृत कश्यप प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० ५, स्त्री ४, अंक ३।
घटना-स्थल नगर की गली, मकान, विवाह मंडप।

बड़े शहरों में मकान की समस्या पर आधारित हास्यप्रधान एक सामाजिक नाटक है। प्रकाश को अविवाहित होने के कारण दिल्ली में कोई मकान-मालिक घर देने को तैयार नहीं होता। वह अपने मित्र को कल्पित बीवी घोषित कर धन्नो के मकान में किराये पर रहने लगता है। धन्नो प्रकाश की बीवी चन्द्रमुखी के स्वभाव से खुश है और उसकी सन्तान देखने को उत्सुक रहती है। राज मंजुला के साथ प्रकाश के पास आता है और उसकी तथाकथित स्त्री चन्द्रमुखी को देख विस्मित होता है। राज और मंजुला प्रेमी-प्रेमिका के रूप में घर से भाग जाते हैं। नर्वदाप्रसाद अपने बेटे प्रकाश की शादी ठीक करने आते हैं तो धन्नो से उसकी बीबी की जानकारी प्राप्तकर आश्चर्य में पड़ते हैं। प्रकाश पिता से चन्द्रमुखी को घर की नौकरानी बताता रहा है। रेखा प्रकाश से मिलने आती है। दोनों के प्रेमालाप के समय चन्द्रमुखी वहाँ आती है और रेखा के पूछने पर अपने को प्रकाश की बीवी बताती है। रेखा नाराज

अंक ३, दृश्य १२।
घटना स्थल धृष्टबुद्धि का भवन, वाटिका।

इस अर्द्ध-ऐतिहासिक नाटक में ऋषि की भविष्यवाणी को सत्य दिखाया गया है। मूलकथा जैमिनिपुराण से नवीन कल्पना के साथ ली गई है। कुन्तलपुर का प्रधान मन्त्री धृष्टबुद्धि चन्द्रहास की हत्या के अनेक प्रयत्न करता है, क्योंकि ऋषियों की भविष्यवाणी के अनुसार वही उस राज्य का उत्तराधिकारी था। शिकार खेलते हुए राजा कुलिन्दक के द्वारा चन्द्रहास की रक्षा होती है। कालक्रमानुसार धृष्टबुद्धि की पुत्री विषया चन्द्रहास पर मुग्ध हो जाती है और दोनों का विवाह होता है। ऋषियों की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होती है। चन्द्रहास महाराज के पद पर आसीन होता है तथा धृष्टबुद्धि अपने पापों का प्रायश्चित्त करता है।

चन्द्रहास नाटक (पृ० ४४), ले० च० ल० सिंह, प्र० हरिहर अग्रवाल प्रेस, गया, *पात्र* पु० १३, स्त्री ५, *अंक* ३, *दृश्य* ६, ४, ५।
घटना स्थल रास्ता, जंगल, पूजागृह, फुलवारी, महल।

इस जासूसी नाटक में भाग्यचक्र का खेल दिखाया गया है। दासीपुत्र चन्द्रहास राजा की कृपा से राजमहल में निवास करता है। कुन्तलपुर के राजा की उस पर बड़ी कृपा है, किन्तु उसका दीवान उससे ईर्ष्या करता है और वह चांडाल कल्लू और मल्लू को चन्द्रहास की हत्या के लिए उत्तेजित करता हुआ कहता है—"उसको महल से निकाल, जंगल की राह में डाल, उसका जीवन के प्याले को दे उछाल, बस इतना काम निकाल, फिर कर दूं तुझे माला-माल, ले चल अवसर न टाल।" जंगल में चांडाल कल्लू-मल्लू पेड़ से कूदकर माला जपते हुए चन्द्रहास पर आक्रमण करते हैं। उसकी उँगली कट जाती है। विदूषक को देख वे भाग जाते हैं। चन्द्रहास जंगल में भगवान् से प्रार्थना करता है। उसी समय चन्दनावती का राजा कलिंग वहाँ पहुँच जाता है। उसकी तेजस्विता से प्रभावित होकर उसे गोद ले लेता है और उसको राजगद्दी प्रदान करना चाहता है। कुन्तलपुर का दीवान चाण्डालों द्वारा चन्द्रहास वध की कल्पना करता है। एक दिन पुष्प-वाटिका में दीवान की पुत्री विषया चन्द्रहास की सुन्दरता पर रीझ जाती है और उसे वर रूप में पाने की प्रार्थना करती है। वह चन्द्रहास की पगड़ी की चुनट में से यत्न से मुहर की हुई एक चिट्ठी निकालती है। इस पत्र में पिता ने उसके भाई मदन को लिखा था—"जाते ही विष दे देना।" वह विष के आगे 'या' और जोड़ देती है। वह पत्र लेकर मदन के पास जाता है और मदन उसका विवाह अपनी बहन विषया से कर देता है। दीवान भी इस विवाह का स्वीकार कर लेता है और धूम-धाम से विवाह सम्पन्न होता है।

चन्द्रहास (सन् १९१६, पृ० १६४), ले० श्री मैथिलीशरण गुप्त, प्र० साहित्य-सदन, चिरगाव, झांसी, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३ तथा दासियां, *अंक* ५, *दृश्य* ५, ५, ५, ५, ५।
घटना स्थल कुन्तलपुर का राजगृह, निर्जन वन, मन्दिर मैदान।

इस पौराणिक नाटक में भाग्य का खेल और भक्तिभाव की महिमा दिखाई गई है। भविष्यवाणी से आतंकित महामन्त्री-पुत्र मदन को कुन्तलपुर का राज्य दिलाने में सशंक है। धृष्टबुद्धि उत्तराधिकारी बालक चन्द्रहास को दो सेवकों के हाथ सौंपकर निर्जन वन में उसके वध की योजना बनाता है। लेकिन घातक भगवान की कृपा से करुणावश उसके पाँव की छठी उँगली काटकर उसे वहीं छोड़ देते हैं। तभी राजा का सामन्त कुलिन्दक (चन्दनावती का राजा) चन्द्रहास को अपना दत्तक पुत्र बना लेता है।

मदन चन्दनावती पहुँचकर चन्द्रहास के वध की योजना बनाता है। सांकेतिक भाषा में लिखा पत्र देकर वह चन्द्रहास को अपने पुत्र के पास कुन्तलपुर भेज देता है। चन्द्रहास वहाँ जाता है तथा नियति पुनः उसकी रक्षा करती है। कुन्तलपुर के उद्यान

में विषया प्रथम बार देखते ही हृदय से वशीभूत होकर उससे विवाह कर लेती है। धृष्टबुद्धि जामाता के रूप में चन्द्रहास को पाकर प्रसन्न हो जाता है। महाराज कौन्तलप चन्द्रहास को कुन्तलपुर का राज्य सौंप देते हैं। धृष्टबुद्धि अब भी विजनेश्वरी देवी के मन्दिर में चन्द्रहास का वध कराना चाहता है। भगवान की प्रेरणा से चन्द्रहास कौन्तलप के पास ही रुक जाता है। मन्त्रीपुत्र मदन विजनेश्वरी देवी के मन्दिर में जाता है। मदन का वध देखकर धृष्टबुद्धि भी आत्महत्या कर लेता है। लेकिन देवी की कृपा से दोनों जीवित हो जाते हैं। चन्द्रहास के राजा बनने पर धृष्टबुद्धि राजा कौन्तलप के साथ वन को चला जाता है।

चन्द्रावली नाटिका (सन् १८७७, पृ० ६१), ले० : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; प्र० : मेसर्स ब्रज० बी० दास एण्ड को०; बनारस, अंक : ४, अंकावतार १, निष्कम्भक १।
घटना-स्थल : उपवन, पथ, यमुनातट।

कृष्ण के प्रति चन्द्रावली और अन्य गोपियों के प्रेम की चर्चा कर नारद शुकदेव को प्रेमलीला दिखाने के लिए व्रजभूमि ले जाते हैं। वार्तालाप क्रम में हृदयगत तथ्य को छिपाने का प्रयत्न करने पर भी ललिता कृष्ण के प्रति चन्द्रावली के गूढ़ प्रेम को समझ जाती है। प्रेम की महत्ता का प्रतिपादन करने पर वह अपने हृदय की सच्ची भावनाओं को ललिता पर प्रकट कर देती है। विरहिणी चन्द्रावली कदलीवन में जाते ही विक्षिप्तावस्था को प्राप्त हो जाती है और प्रलाप करती हुई, कभी तो प्रिय से वार्तालाप करती है, कभी उन्हें उपालम्भ देती है, कभी चेतनावस्था में आकर अपनी सखियों से बातें करती है। यह स्थिति देख संध्या उसका प्रेमपत्र लेकर कृष्ण के पास जाती है। वह पत्र रास्ते में गिर जाता है जिसे पाकर चंपकलता कृष्ण के पास पहुँचा देती है। इधर सरोवर के निकट बगीचे में सखियाँ प्रकृति की शोभा का वर्णन करती हैं किन्तु प्रकृति चन्द्रावली के प्रेम को उद्दीप्त कर उसकी विरहावस्था को गम्भीर बना देती है। उसकी इस दशा पर चिंतित सखियाँ कृष्ण-चन्द्रावली मिलन का उपाय करती हैं। अन्त में कृष्ण योगिनी के रूप में अलख जगाते हुए चन्द्रावली के यहाँ जाकर संगीत की तान छेड़ते हैं। चन्द्रावली मूर्छित होकर ज्यों ही भूमि पर गिरती है उसे कृष्ण बीच ही में थाम लेते हैं। इस प्रकार दोनों का मिलन हो जाता है।

चन्द्रावली (सन् १८९७), ले० : मेहदी हसन (अहसन); प्र० : रामदत्तमल, लाहौर; पात्र : पु० ५, स्त्री २; बाब ३, प्रत्येक बाब में कई सीन।
घटना-स्थल : राजमहल, जंगल।

इस सामाजिक नाटक में पतिव्रत की महिमा दिखाई गई है। राजा और उसके मन्त्री में स्त्री के पतिव्रत-धर्म की वास्तविकता पर विवाद प्रारम्भ होता है। राजा का राजगुरु (महात्मा) रानी चन्द्रावली को पथ-भ्रष्ट करने का बीड़ा उठाता है, वह अपनी माया और कूटनीति से रानी को डिगाने का पूर्ण प्रयत्न करने पर भी असफल रहता है। चन्द्रावली भारतीय नारी के आदर्श पर अडिग और अपने सतीत्व पर अविचल रहती है। महात्मा अपनी नीचता पर लज्जित होता है और नाटक सती की महिमा का प्रतिपादन करके समाप्त होता है।

बंबई नाटक मंडली द्वारा लखनऊ में सन् १८९७ में अभिनीत।

चंद्रिका नाटक (सन् १९३३, पृ० ९६), ले० : चन्द्रभानु सिंह; प्र० : आदर्श ग्रन्थ-माला, दारागंज, प्रयाग; पात्र : पु० ७, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ४, ३, ३।

इस प्रतीक नाटक में सद्गुणों और दुर्गुणों में होड़ दिखाई गई है। यह प्रतीकात्मक नाटक है। निशा, प्रभात, चन्द्रिका, भानु आदि इसके पात्र हैं जो निर्मलता, कलुषता, तेज, शीतलता आदि के प्रतीक हैं। सबों में आपस में होड़ लगी है कि कौन महान है। इनके द्वारा कहे हुए संवाद भी संकेत सूचक हैं। उदाहरणार्थ :—

प्रभात : जानती हो, लालवर्ण (प्रभात का) बड़ा परावर्तनीय है।

निशा : हाँ रक्त शोषक भी है।

प्रभात नही, नही, अधिकाश मे रक्त पोषक ही है।

चक्रव्यूह (सन् १६५३, पृ० ११४), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० कौशाम्बी प्रकाशन, प्रयाग, पात्र पु० १४, अक ३, दृश्य २, २, २।
घटना-स्थल युद्धभूमि, युधिष्ठिर शिविर।

इस पौराणिक नाटक मे अभिमन्यु का अतुल शौर्य दिखाया गया है।

निश्चय ही हार होने के कारण कौरवों ने आचार्य द्रोण की सलाह से एक चक्रव्यूह की रचना की है। अर्जुन ही पूरी तरह चक्र-व्यूह तोडना जानते है। वह ससप्तकों से युद्ध के लिये बाहर गये हुए हैं। अब पाण्डवों का सोच होता है। उनमे से कोई भी चक्र-व्यूह की विद्या नही जानता। अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु युद्ध के लिये तैयार हो जाता है। चारों पाण्डव घबराते है। अभिमन्यु तनिक भी पीछे नही हटता। वह व्यूह मे प्रवेश करना तो जानता है पर निकलना नही जानता। अभिमन्यु माता तथा पत्नी से विदा लेकर प्रवेश द्वार का पूरी तरह से विजय करके अन्दर युद्ध करता है। द्वारपाल अन्य पाण्डवों को अभिमन्यु के रक्षार्थ अन्दर नही जाने देते। एकाकी युद्ध मे अभिमन्यु की पराजय न देख सात महारथी एक साथ उस पर टूट पडते है। शस्त्र-रहित अभिमन्यु रथ के पहिये से लडता हुआ वीर गति को प्राप्त होता है।

चक्रव्यूह (सन् १६५५), ले० रघुवरदयाल श्रीवास्तव, प्र० सरस्वती मदिर, झासी, पात्र पु० २३, अक-दृश्य रहित
घटना-स्थल युद्धक्षेत्र, चक्रव्यूह का मध्य-भाग।

इस पौराणिक नाटक मे अभिमन्यु का शौर्य एव अधर्म-नीति से चक्रव्यूह मे उसका वध होने पर महाभारत युद्ध का परिणाम दिखाया गया है।

महाभारत युद्ध मे जब कौरव दल शिथिल हो जाता है तब द्रोण के द्वारा बताई हुई युक्ति का वे पालन करते है। सुयोधन के साथी त्रिगतराज अर्जुन को अलग युद्ध के लिये ललकारते हैं। अर्जुन और भगवान् कृष्ण युद्ध के लिये निकल पडते है। इधर द्रोणाचार्य द्वारा युद्ध मे चक्रव्यूह की रचना होती है जिससे पाण्डव घबराते है, क्योंकि व्यूह-भजन केवल अर्जुन ही जानता है। इसी बीच मे सुभद्रा-पुत्र अभिमन्यु धमराज को प्रणामकर कह उठता है—'महाराज,आज युद्ध मे मैं जाऊँगा।' सभी इस बात को सुनकर तिलमिला उठते हैं। अभिमन्यु सगे-सम्बधियों मे आज्ञा एव आशीर्वाद लेकर युद्ध के लिये प्रस्थान करता है। युद्ध मे अभिमन्यु बडे कौशल से सबको पूरी तरह से पराजित करता है परन्तु चक्र-व्यूह से निकलना नही जानता। अभिमन्यु के घिर जाने पर कौरव महारथी एक साथ उस पर आक्रमण करते हैं। अधर्म की लडाई मे अभिमन्यु अपने शस्त्रों के टूट जाने पर रथ के पहिये से लडता हुआ मार दिया जाता है। अधर्म युद्ध मे अभिमन्यु का वध हो जाने पर महारथी भीम रात्रि को ही अनेक कौरवों को मृत्यु के घाट उतार देते है और अर्जुन पुत्र शोक के कारण की हुई प्रतिज्ञा के अनुसार जयद्रथ का वध करते हैं।

चलता पुर्जा (सन् १६३५, पृ० १५६), ले० मेंहदी हसन लखनवी, मोरावजी ओप्रान्यू अल्फ्रेड मडली, बम्बई के लिए लिखा गया, प्र० राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, पात्र पु० १६, स्त्री ७।
घटना-स्थल जगल, पथ, बन्दीगृह।

आरम्भ मे फरिश्तये-अक्ल और फरिश्तये-अमल रगमच पर आकर मानव जीवन के उद्देश्य और रहस्य पर वादविवाद करते हैं। प्रश्न उठता है कि मानव क्यों अपने कर्त्तव्य से विमुख होकर छल, प्रपच, हत्या का जीवन व्यतीत करता है? व्यवहार का परिणाम बताता है कि मानव जीवन के रह-स्य से अनभिज्ञ मनुष्य अपने मानवीय गुणों को विस्मृतकर पाशविक आचरण करता है। इसी उद्देश्य को सिद्ध करने के लिये नाटक मे दैवी और आसुरी वृत्तियों के प्रतिनिधि गुणों का सघर्ष चित्रित किया गया है। इसके लिये सिकन्दर खा नामक डाकू के चरित्र को मुख्य कथा का आधार बनाया गया है।

सिकन्दर खा सज्जनता का ढोग करके

समाज में अपना जाल फैलाता है और विभिन्न रीतियों से लोगों की हत्या और लूट-खसोट करता रहता है। अन्ततोगत्वा वह बन्दी बनाया जाता है किन्तु वह अपनी चालाकियों से पुलिस की निगरानी से निकल भागने में सफल होता है। यही उसका चलता-पुर्जापन है। किन्तु उसके सभी दुश्चरित्रों और चालाकियों का भण्डाफोड़ होता है और उसे अपनी करनी का फल भोगना पड़ता है।

चांडाल चौकड़ी (सन् १९२६, पृ० ४३), ले० : हरिशंकरप्रसाद उपाध्याय; प्र० : बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर; पात्र : पु० ६, स्त्री १; अंक : रहित, दृश्य १२।
घटना-स्थल : घर, रास्ता, गंगा नदी का तट, मन्दिर।

इस प्रहसन में एक शैतान छात्र के बिगड़ने के कारणों पर प्रकाश डाला गया है।

गेलाड़ीलाल नामक छात्र न स्कूल में पढ़ता है और न घर पर। उसका पिता झुम्मनदास जब आवारा घूमने के लिए उसे पीटता है तो गेलाड़ी की माँ उसे छुड़ा देती है। गेलाड़ी कुसंगति में पड़कर चोरी करने लगता है। अन्त में थानेदार उसे चोरी में पकड़ता है। गेलाड़ी का पिता थानेदार से कहता है कि इसे जरूर जेल की हवा खिलाइए, मैं प्रसन्न होऊँगा। गेलाड़ी की माँ, भद्रा और गेलाड़ी झुम्मनदास से अनुनय विनय करते हैं कि किसी प्रकार इस कष्ट से बचायें। झुम्मन के प्रयास से गेलाड़ी मुक्त किया जाता है। वह अपने शैतान मित्रों की भर्त्सना करता है और भद्रा अपनी भूल स्वीकार करती है।

गेलाड़ी की शैतानियाँ हँसी उत्पन्न करती हैं।

चाण्डाल चौकड़ी (सन् १९००, पृ० ३२), ले० : सुवर्ण सिंह; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० २, स्त्री २; *अंक-रहित*।

इस प्रहसन में घसीटा की दो लड़कियाँ तरह-तरह से मूर्ख बनाती हैं। इसमें एक मात्र घसीटा की मूर्खतापूर्ण बातों को ही चित्रित किया गया है। चम्पा और चमेली घसीटा से प्रेम की बातें करती हुई उसे तरह-तरह से मूर्ख बनाती हैं। हास्य के वातावरण में ही यह प्रहसन समाप्त हो जाता है।

चाँदी का जूता (सन् १९६०, पृ० ७१), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६; पात्र : पु० ६, स्त्री १।
घटना-स्थल : सेठ की कोठी, सभास्थल, चुनावस्थल।

इस राजनीतिक नाटक में झूठे देशभक्त पर चाँदी के जूते का प्रभाव दिखाया गया है।

इसमें कामरेड आजाद अपनी देशभक्ति का दावा करते फिरते हैं किन्तु सेठ धनीराम के चाँदी के जूतों के समक्ष उनके सभी सिद्धान्त समाप्त हो जाते हैं। जनता भी धन के लोभ से कामरेड आजाद को ही अपना मत देती है। कुन्दन जनता की इस मूर्खता पर हँसता है किन्तु लोग उसे पागल समझकर टाल जाते हैं। अन्त में मजदूरों की सेवा का अवसर आने पर जनता अनुभव करती है कि कुन्दन पागल नहीं था अपितु चाँदी के जूतों से जनता स्वयं पागल बना दी गई थी।

चाणक्य और चन्द्रगुप्त : ले० : आत्मी प्रसाद सिंह; प्र० : साधो हिन्दी पुस्तक भण्डार, झांसी; *पात्र* : पु० २; *अंक-रहित*।
घटना-स्थल : राजभवन, वन।

इस गीतिनाट्य में चाणक्य का आदर्श ब्राह्मणत्व दिखाया गया है। इसमें चन्द्रगुप्त के सिंहासनारूढ़ होने तथा चाणक्य के वन-प्रस्थान के प्रसंग वर्णित हैं। चाणक्य ब्राह्मण है अतः उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य मुक्ति साधना है। इसीलिये चन्द्रगुप्त द्वारा उसे रोकने के लिए किए गए सभी अनुरोधों, प्रयत्नों को वह ठुकरा देता है। इस गीतिनाट्य में प्रवृत्तिमूलक तथा निवृत्तिमूलक दार्शनिक सिद्धान्तों का मूलतः विवेचन है।

चाणक्य नाटक (सन् १९५८, पृ० ६२), ले० : रामबालक शास्त्री; प्र० : साहित्य मन्दिर, रामापुरा, नई बस्ती, वाराणसी; *पात्र* : पु० १६, स्त्री ३; *अंक* : ३, *दृश्य* : ४, ४, ४।

घटना-स्थल - पाटलिपुत्र, सिंधुतट, चाणक्य-कुटीर, तक्षशिला।

प्रस्तुत नाटक चाणक्य की कूटनीति का दिग्दर्शन कराता है। कुलपति चाणक्य को आशीर्वाद देता है कि "ब्राह्म तेज के साथ तुम्हारी ज्ञान-राशि का भी संवर्धन हो।" चाणक्य इस आशीर्वाद को स्वीकार करता है। चाणक्य अपनी कूटनीति से राक्षस को अमात्य नियुक्त करता है। इसी समय देश पर आक्रमण होता है और चाणक्य की सहायता से चन्द्रगुप्त की विजय होती है। चाणक्य का मुखमण्डल चमत्कृत हो उठता है और राक्षस चाणक्य को देखकर अभिभूत रह जाता है।

चाणक्य प्रतिज्ञा (सन् १९५१, पृ० ११२), ले० कैलाशनाथ भटनागर, प्र० भारतीय गौरव ग्रंथमाला, नई दिल्ली, अंक ३, दृश्य ७, ५, ६।
घटना-स्थल फांसीगृह, पाटलिपुत्र का राजभवन, राज्यसभा।

इस ऐतिहासिक नाटक में सब प्रकार से चाणक्य की प्रतिज्ञा-पूर्ति दिखाई गई है।

संस्कृत के मुद्राराक्षस के आधार पर इसकी रचना हुई है। चाणक्य अपनी प्रतिज्ञानुसार नन्दवंश का नाशकर वृषल चन्द्रगुप्त मौर्य का मूर्धाभिषिक्त करता है, किन्तु कार्य के सुचारु संचालन की दृष्टि से नन्द के मन्त्री राक्षस का सहयोग अपेक्षित है। पर अपने स्वामी नन्द का भक्त राक्षस इसके लिये सहमति नहीं देता। चाणक्य युक्तिपूर्वक राक्षस की मुद्रा प्राप्त करके उसके सहयोगी चन्दनदास को फाँसी पर लटकाने का नाटक रचता है और अन्त में राक्षस आत्मसमर्पणकर मन्त्रिपद स्वीकार लेता है। चाणक्य राक्षस की सहमति से नन्द की पुत्री के साथ चन्द्रगुप्त का विवाह कर देता है।

चामुण्डा (सन् १९६०, पृ० ६८), ले० सीताराम वर्मा, प्र० कला भारती प्रकाशन मुजफ्फरपुर (बिहार), पात्र पु० ७, स्त्री २, अंक ४, दृश्य ५, ४, ३, १।
घटना-स्थल कटरागढ, तिरहुत।

इस ऐतिहासिक नाटक में मुजफ्फरपुर के दुर्ग कटरागढ़ पर बंगाल का राजा अधिकार करता है। अवसर पाकर राजा का एक कर्मचारी अपने को स्वतन्त्र कर लेता है। कालान्तर में वह तिरहुत पर भी अधिकार जमाने की चेष्टा में असफल रहता है। इसके दो पुत्र हैं तिलक और चन्द्र। इसकी मृत्यु के बाद इसका छोटा पुत्र अपने बाहुबल से बहुत से हिस्सा पर अधिकारकर एक छोटे से राज्य का निर्माण करता है। यह बड़ा वीर और पराक्रमी राजा बनता है। शत्रु के आक्रमण करने पर वह कुलदेवी चामुण्डा की उपासना करता है और युद्ध में जाते समय अपनी रानी को राजध्वज की ओर संकेत करके कहता है, *"जब यह ध्वज झुक जाय तो समझना मैं मर गया।"* उसके चले जाने पर राजमन्त्री राज पर अधिकार करना चाहता है और छल से ध्वजा को झुका देता है। झुके ध्वज को देखकर रानी चिता में कूद जाती है। इसी समय राजा विजयी होकर लौटता है पर यह दारुण दृश्य देख विक्षिप्तावस्था में चिता में कूद पड़ता है।

चाय पार्टियाँ (सन् १९६३, पृ० १२४), ले० सतीपनारायण नौटियाल, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, पात्र पु० ११, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य-रहित।
घटना स्थल ड्राइंगरूम, ऑफिस।

इस सामाजिक नाटक में आज के जीवन की कृत्रिमता, झूठा आडम्बर और बेकारी की समस्या का चित्र व्यंग्यात्मक रूप में अंकित किया गया है।

रमेश अपने भाई-भतीजे की नौकरी के लिए अपने झूठे जन्म-दिन की पार्टी में बड़े-बड़े लोगों को आमंत्रित करता है। वह सिफारिश को सफलता का एक महत्त्वपूर्ण अंग समझता है। किन्तु उसका भाई सतीश 'टैक्ट' और 'डिप्लोमेसी' को धोखाधड़ी मानकर इनके आधार पर नौकरी नहीं चाहता। रमेश इस पार्टी में बैंजल नामक एक व्यक्ति को भी बुलाता है, जो एक कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। बैंजल की कम्पनी में नौकरी के लिए एक स्थान खाली है—अत उसे रमेश के अतिरिक्त कई अन्य व्यक्तियों की सिफा-

रिशों का सामना करना पड़ता है। लेकिन वह योग्यता के आधार पर सतीश को ही चुन लेता है।

अभिनय—१. लखनऊ के संस्कृति केन्द्र द्वारा सन् १६५४ में।

२. अनामिका द्वारा कलकत्ते में सन् १६५७ में।

चाल बेढब (सन् १६३४, पृ० १०२), ले०: गंगाप्रसाद श्रीवास्तव; प्र० : नरेन्द्र पब्लिशिंग हाउस, चुनार; पात्र: पु० ७, स्त्री ३; अंक: ३, दृश्य : ३, ४, ४।

घटना-स्थल : घर, सड़क, मैदान, बाग, गली, मकान का भीतरी भाग।

यद्यपि इस नाटक का आधार मोलियर का नाटक रहा है पर इसमें मूल से बहुत भिन्नता है। इसका प्रकाशन 'इन्दु' पत्रिका में सर्वप्रथम हुआ। साधारण से साधारण परिस्थिति में दिखाई पड़नेवाले आचार-विचार, बातचीत, मान-अपमान को लेकर हास्य का वातावरण निर्मित किया गया है। एक बूढ़े कंजूस रईस मिर्जा हुज्जत बेग का नौकर गफूर है और हुज्जत बेग का नौजवान लड़का यूसुफ है तथा नौकर बेढब। यूसुफ की प्रिया जोहरा है। फितरत नहूसत बेग का नौकर है। एक बूढ़े अमीर हाजी नहूसत बेग का युवा पुत्र महबूब है। अपने नौकर फितरत से यह जानकर परेशान होता है कि मेरे पिता मिर्जा हुज्जत बेग की लड़की से शादी करने के लिए जहाज से आ रहे हैं। महबूब और फितरत के वार्तालाप के समय चालाक नौकर बेढब आ पहुँचता है। महबूब अपनी प्रेयसी गुलबदन के सौन्दर्य और मिर्जा हुज्जत बेग की लड़की के फूहड़पन का वर्णन करता है। बेढब की चालाकियों से हुज्जत की दुर्गति होती है और गुलबदन से महबूब की शादी हो जाती है। इसी प्रकार बेढब की चालाकियों से यूसुफ और उसकी प्रेयसी जोहरा का मिलन होता है।

हास्य का ग्रामीण ढंग है जैसे कौन क··· क···क···कौन ? कौन भाई ब—ब—बेढब। ओ—ओ। खिल्लाह मुझे बचाओ। तो—तो—तो—तो!

चिड़ियों की एक झलक (सन् १६६६, पृ० ८०), ले० : अमृतराय; प्र० : हंस प्रकाशन, इलाहाबाद; पात्र : पु० २, स्त्री १; अंक : १, दृश्य-रहित।

घटना-स्थल : कमरा।

इस राजनीतिक नाटक में पुरानी पीढ़ी (जिसने देश के लिए त्याग किया है, जिसका अपना आदर्श है) और नई पीढ़ी (जो शॉर्टकट मार्ग से जीवन से बहुत कुछ चाहती है, जिसका कोई आदर्श नहीं है) की टकराहट से पुरानी पीढ़ी के टूट जाने का चित्रण है।

क्रांतिकारी नन्दन अपने बलिदान की कीमत देश से नहीं चाहता। वह अपनी पत्नी दीपा के साथ विगत जीवन की स्मृतियों के सहारे जी रहा है। किन्तु उसके पुत्र मंगल की दृष्टि से पिता का त्याग और आदर्श—चिड़ियों के समान महत्त्वहीन हो गया है। एक बार मंगल को मदमस्त युवक-युवतियों के बीच देखकर नंदन व्याकुल हो जाता है। मंगल भर्त्सना करने पर अपने पिता को दो टूक जवाब देता है। अंत में नंदन आत्महत्या कर लेता है। इसमें दो पीढ़ियों की घटनायें है। एक पीढ़ी नंदन और दीपा के जीवन से सम्बद्ध है, जो प्राणों की बाजी लगाकर स्वतंत्र भारत में घी-दूध की नदियाँ बहने की आशा में थी। लेकिन उनका स्वप्न टूट जाता है। वह अपने ही देश में उपेक्षित होने पर भी आदर्श नहीं छोड़ते। दूसरी ओर मंगल की कथा है जो आदर्श को ढोंग मानकर सुख-भोग में लिप्त रहना चाहता है।

अभिनय—इसका प्रदर्शन 'नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा' में १८-१६ सितम्बर, १६७१ को नादिर जहीर के निर्देशन में; २ अक्टूबर १६७१ को सप्रू हाउस दिल्ली में कलकत्ता की अदाकार संस्था द्वारा हुआ।

चित्तौड़ की देवी (सन् १६३१, पृ० ७८), ले० : दशरथ ओझा; प्र० : साहित्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : २, दृश्य : ४, ३।

घटना-स्थल : अरावली पर्वत की उपत्यका, महाराणा प्रताप की कुटिया।

इस ऐतिहासिक नाटक में महाराणा प्रताप के बच्चों की विपत्ति में भी दृढ़ता

ध्यान से प्रेमस्वरूप वृन्दावन विहारी की प्राप्ति हो सकती है। मुक्ति के आगे भी कुछ है और वह यही मिलन सुख है। वैराग्य ही जीवन लक्ष्य नहीं है, उसके आगे अनुराग है। इसी प्रकार संसार से मुक्त होकर मुक्ति से भी मुक्त होना पड़ता है और यह अवस्था निष्काम प्रेम द्वारा ही प्राप्त हो सकती है, योग द्वारा नहीं।

इस नाटक में नाटककार प्रेमलक्षणा भक्ति के स्वरूप को ही दृष्टि में रखता है। भक्तों को प्रभु की रूप-माधुरी का पान योग की साधना से अधिक प्रिय है। भक्त के लिए मुक्ति काम्य नहीं, वह तो बार-बार जन्म लेकर प्रभु के दर्शन से अपने तृषित नेत्रों की तृप्ति चाहता है। उसका प्रेम निष्काम है। भक्त अपने इष्टदेव से कुछ पाना नहीं चाहता, उसे मोक्ष की चाह नहीं वह तो अपने इष्ट की रूपमाधुरी से छके रहने का अभिलाषी होता है। श्री राधा जी अपने उसी आराध्य वृन्दावन विहारी का परिचय देती है—योगेश्वर नंदनंदन मुक्ति हैं, मैं जिनकी दासी हूं।

भ्रमर का भी नाटक में उल्लेख है और उसके द्वारा भी प्रेमलक्षणा भक्ति की महत्ता प्रदर्शित की गई है।

छलना (सन् १६३६, पृ० १२१) ले० भगवतीप्रसाद वाजपेयी, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ६ अंक ३, दृश्य ५, ६, ६,
घटना-स्थल जमींदार का घर।

इस प्रतीक नाटक में सामाजिक रंगीनी, भ्रष्टाचार और सभ्यता के आवरण में ढके हुए मन्त्री, नेता, सदस्य, वकील तथा सम्पादक आदि का चित्रण करने के उद्देश्य से मानव प्रवृत्तियों को पात्र बनाया गया है। इस नाटक की नायिका छलना परिस्थिति से असन्तुष्ट रहने पर भी पति के धनी शिष्य विलासचन्द्र के द्वारा दी गई साड़ी को अस्वीकार कर देती है। वह जानती है कि गरीबी के कारण मन की बहुतेरी संकुचित किन्तु प्रबल भावनाएँ उभर-उभरकर साकार होती हैं तिस पर भी वह अपने पति को अधिक धन अर्जित करने के लिये परेशान करती रहती है। अतः वह अधिक धन कमाने की दृष्टि से बम्बई चला जाता है। इसी अवसर के बीच एक दिन कल्पना कामना नामक युवती को आदर्श का पाठ पढ़ाती है। एक नए समाज में नई तरह की शिक्षित नारियों के संस्थान की बात करती है। फिर एक दिन कामना बलराज नामक युवक को लेकर आती है। इस समय तक विलास आत्म-हत्या कर चुका होता है। बलराज कहता है कि मनुष्य की आत्मा के साथ विलास का कुछ ऐसा ही सम्बन्ध है कि आदर्श का साक्षात्कार होते ही वह अन्तर्धान हो जाता है। यही इस नाटक का अभीष्ट भी है।

छलावा (सन् १९६१, पृ० १०४) ले० परितोष गार्गी, प्र० आत्माराम एंड संस दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ५, अंक ३।

एक सम्पन्न जमींदार के दो बेटे कालू और लालू हैं। लालू अपनी प्रेमिका बेला अध्यापिका से विवाह अस्वीकारकर अजला नामक एक धनी परिवार की लड़की से विवाह करता है। विवाह के दिन बेला भी आती है और विष खाकर मर जाती है। तब अजला को उसकी मरी हुई आत्मा सताती है। बेला की हत्या के बाद कुछ लोग उसकी सूचना पुलिस को दे देते हैं। पुलिस लालू पर बेला की मृत्यु का अपराध लगाती है किन्तु अजला के बुद्धि-चातुर्य से लालू बच जाता है। अजला बेला के सभी प्रेम-पत्रों को अपना बताकर अपने पति की रक्षा करती है। अजला के इस अनोखे साहस को देखकर लालू को अपनी गलती याद आती है और वह अजला को देवी के समान आदर की दृष्टि से देखने लगता है।

अभिनय— अनामिका द्वारा १९६४ में प्रदर्शित सर्वप्रथम ऑल इण्डिया फाइन आर्टस एण्ड क्राफ्ट सोसायटी हाल में इण्डियन नेशनल थियेटर्स के कलाकारों द्वारा प्रदर्शित।

छाव-दुर्दशा (सन् १९१५, पृ० ५५), ले० पाण्डेय लोचनप्रसाद शर्मा, प्र० हरिदास वैद्य, २०६, हरीसन रोड, कलकत्ता, पात्र पु० १६, स्त्री १४, अंक रहित।
घटना स्थल रंगमंच, लम्बा चौड़ा मकान

कुर्सी टेबल से सजा हुआ कमरा, सभा।

नाटककार अपने वक्तव्य में लिखते हैं कि यह बङ्ग-भङ्ग के समय लिखी गयी थी, इस पुस्तिका में देश-दशा चित्रण का यत्किंचित् प्रयत्न किया गया है।

नाटक शुद्ध भारतेन्दुयुगीन शैली पर आधारित है। प्रारम्भ में प्रस्तावना दी गई है जिसमें रंगशाला में नान्दी का मंगल-पाठ होता है। तत्पश्चात् सूत्रधार एवं नटी का प्रवेश होता है। नाट्यकार की नाम-घोषणा के बाद उनका यशगान होता है तब नाटक की घोषणा की जाती है। पहले दृश्य में आकाशमार्ग में सरस्वती का गान होता है—यह गीत प्रेमघन रचित 'भारत सौभाग्य' नाटक से उद्धृत है (भजत होत सोच तुम्हें भारत के वासी)। दूसरे दृश्य में भारत-वर्ष के छात्रों का प्रतिनिधि साही कमर में धोती, सिर में फेंटा और बदन पर पतली चादर डाले दिखाई पड़ता है, और भारत-दुर्दशा का गीत गाता हुआ वह मूर्छित हो जाता है। तत्पश्चात् आशा का प्रवेश 'जगत् का आशा जीवन प्राण' गाते हुए होता है। प्रतिनिधि चौंककर जाग उठता है। तदुपरान्त क्रमशः आत्म-सम्मान एवं कर्तव्य का प्रवेश होता है और वे अपना-अपना संदेश सुनाते हैं। तीसरे दृश्य में एक लम्बे-चौड़े मकान में छात्र-प्रतिनिधि का 'भारतोद्धार महती सभा' में भाषण होता है। भारत की दुर्दशा का वर्णनकर वे भारतोद्धार के लिए कटिबद्ध होते हैं। परन्तु बुजुर्आ लोग उनके राह में रोड़े अटकाते हैं। इसके अतिरिक्त तत्कालीन छात्र की व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समस्याओं का चित्रण भी नाटक का विषय है। श्याम एक जागरूक छात्र है तथा एम० ए० की तैयारी कर रहा है। बीच से उसे घर बुलाया जाता है और जबर्दस्ती उसकी शादी कर दी जाती है। शादी में अपव्यय का वह विरोध करता है परन्तु उसकी एक नहीं चलती। अन्ततः वह अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहता है परन्तु पत्नी हीरामती व्यवधान करती है और श्याम के न ध्यान देने पर कुएँ में कूद जाती है—कलंक के डर से वह स्वयं भी कुएँ में कूद जाता है। परन्तु वे दोनों निकाल लिये जाते हैं। श्याम करुण स्वर से कहता है—"मात-पिता वैरी अब तो भये।"

छाया (सन् १९५५) ले० : पारितोष गार्गी; प्र० : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; अंक : ४; दृश्य रहित।
घटना-स्थल : सेठ की कोठी।
अभिनय—दिल्ली में प्रकाशन के समय।

इस सामाजिक नाटक में नवविवाहिता स्त्री के घर आने पर व्यापार में घाटा तथा गृह की अन्य मुसीबतों का कारण उसका आगमन बतानेवालों की भूल दिखाई गई है।

काशीराम एक सम्पन्न व्यापारी है। उसके बेटे हंस का विवाह छाया नामक लड़की से होता है किन्तु जब से छाया उस घर में आती है काशीराम को अपने सट्टे में ६० हजार का घाटा होता है और हंस का छोटा भाई दौलतराम छत से गिरकर मर जाता है। सब लोग छाया को मनहूस कहते हैं क्योंकि जब से उसकी छाया घर पर पड़ी तब से हम पर संकट आने लगे।

अन्त में परेशान हो छाया अपने पति हंस के साथ घर छोड़ देती है। उधर काशीराम का मुनीम भी रुपया लेकर भाग जाता है तब काशीराम को बड़ा कष्ट होता है। लेनदार उससे रुपया माँगते हैं। अन्त में काशीराम भी परेशान होकर भाग जाता है। अपने पुत्र हंस और छाया से मिलकर पश्चात्ताप करते हुए कहता है कि छाया तुम मनहूस नहीं हो वरन सट्टे और आदमी का कोई भरोसा नहीं। फिर सब मिलकर प्रेम से मेहनत करते हुए जीवन व्यतीत करने लगते हैं।

छाया (सन् १९४१, पृ० ८३) ले० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : वाणी मंदिर, लाहौर; पात्र : पु० ७, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ५, ५, ५।
घटना-स्थल : नूरजहाँ का मकबरा, कुंज, घर, झोंपड़ी, मैदान,

प्रस्तुत नाटक भारतीय साहित्यकार के जीवन की विषमता और प्रकाशकों की शोषक वृत्ति पर कटु व्यंग्य है।

नाटक का नायक प्रकाश एक

विख्यात कवि है जो अपने गीतो द्वारा ससार को प्रकाश देता है परन्तु जिसके अपने जीवन मे निरंतर निराशा का अन्धकार है। एक ओर शोषक प्रकाशक उसकी कृतियो से लखपति बन उसे अपनी दया का भिखारी बना डालते हैं दूसरी ओर उसके साहित्यकार मित्र ईर्ष्यावश उसका चरित्र कलकित कर स्वय आगे बढने का प्रयास करते है। परन्तु भावुक तथा सहृदय प्रकाश असहाय एव उत्पीडित नारियो को सम्बल प्रदान करने के लिए लाछन सहता है, समाज मे अनादृत होता है पर अपना कर्तव्य-पथ नही त्यागता। इसमे पत्नी छाया सदा उसकी सहायता करती है। वह न केवल दैन्य और दरिद्रता के कष्टो के बीच अपनी पुत्री का पालन करती है अपितु पति के मित्रो द्वारा पति के विरुद्ध लगाए लाछनो पर भी विश्वास नही करती। अन्त मे सत्य की असत्य पर विजय होती है।

ज

जगल की रानी (सन् १९६१, पृ० ५०), ले० मूलचद 'बेताब', प्र० जवाहर बुक डिपो, गुजरी बाजार, मेरठ, *पात्र* पु० १३, स्त्री ४, अक-रहित, दृश्य ८।
घटना-स्थल राजदरबार, शमीमपुर गाँव, आरामगाह, रत्नीराम का मकान, सुनसान जगल, राजमहल, दानो का मकान।

इस सामाजिक नाटक मे दहेज की कुप्रथा और प्रेम विवाह का वर्णन है।

शमीमपुर के गरीब किसान की बेटी कान्ता जगल के किनारे अपने खेतो की रखवाली करने जाया करती है। दहेज के कारण उसका विवाह नही हो रहा था। एक दिन रणपुर शहर का राजा हिरण का पीछा करता हुआ कान्ता के खेतो के समीप पहुँचता है। हिरण कान्ता के खेत मे घुस जाता है। राजा उसे मारना चाहता है, लेकिन कान्ता इसका विरोध करती है। इस पर राजा और कान्ता मे वाद-विवाद हो जाता है। राजा कहता है—"मैं शहर का राजा हूँ" और कान्ता कहती है —"मैं जगल की रानी हू।" राजा कहता है "मैं तुमसे शादी करूँगा" और कान्ता कहती है "मैं तुमसे दाना दलवाऊँगी।"

राजा कान्ता से शादी करके उसे जगल मे छोड देता है और कहता है कि जब तक तुम मुझसे दाना न दलवाओगी तब तक तुम्हे घर न ले जाऊँगा। युक्ति से कान्ता अपना प्रण पूरा करती है। और राजा की पटरानी बन जाती है।

जगल घर बादशाह स्वर्गीय महाराज कर्ण सिह जी बीकानेर, (सन् १९२४, पृ० १४३), ले० प० रामदीन पाराशर, प्र० स्टैंडर्ड प्रेस, इलाहाबाद, *पात्र* पु० २१ स्त्री ३, अक ५, दृश्य २, ३, ३, ३, ३।
घटना-स्थल बीकानेर, राजदरबार, लाहौर, शाही दरबार।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है जिसमे बीकानेर महाराज की दृढता से हिन्दुत्व की रक्षा दिखाई गई है।

इस नाटक के नायक महाराज कर्ण सिह बीकानेर के राजा हैं। जब औरंगजेब के भाइयो मे सत्ता-सघर्ष होता है तो वह अपने दो बेटो सहित औरंगजेब का साथ देते है और उसकी जान बचाते हैं। औरंगजेब सभी हिन्दू *राजाओ को एक स्थान पर धोखे से मुसलमान* बनाने के लिए बुलाता है। किसी तरह कर्ण सिह को यह बात मालूम हो जाती है और वे सब राजाओ सहित वापस आ जाते हैं। इस पर औरंगजेब क्रोधित होता है परन्तु वह दृढ रहते हैं। अत मे औरंगजेब प्रसन्न होकर उन्हे औरगाबाद मे तैनात कर देता है। वहा कर्ण सिह ने मन्दिर बनवाये और तीन गाँव अपने व दोनो बेटो के नाम पर बसाये। औरगाबाद मे ही उनका निधन हुआ।

जंगली घास (सन् १९७३), ले० : रेवतीसरन शर्मा; प्र० : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; पात्र : पु० ५ स्त्री ५; अंक ३, दृश्य : २, २, २।

प्रस्तुत नाटक में समाज की कई समसामयिक समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है किन्तु दहेज की समस्या ही केन्द्रीय समस्या के रूप में प्रस्तुत की गई है। सुरेन्द्र एक ईमानदार क्लर्क है जिसकी आय सीमित है उसके साथियों की पदोन्नति भ्रष्ट तरीके अपनाने के कारण हो गई है किन्तु सुरेन्द्र की कोई पदोन्नति नहीं होती। उसकी चार कन्याएँ हैं जिनके विवाह की समस्या को लेकर उसकी पत्नी शांता परेशान रहती है। शांता भी मूलतः सद्गुणोंवाली नारी है गलत तरीकों से कुछ भी प्राप्त करना उसे अभीष्ट नहीं। आर्थिक परेशानी से तंग आकर अथवा अपने सुंदर सपनों को फलीभूत होता न देखकर वह कभी-कभी अपने पति से भी गलत कमाई करने को कहती है किन्तु शीघ्र ही उसकी आत्मा की सत्पुकार इस विचार को कार्य रूप में परिणत करने देने से सदा रोकती है। विपन्न स्थिति की टकराहट से वह पर्याप्त चिड़चिड़ी हो जाती है और अकारण अपनी बेटियों और अपने पति पर झल्लाती है। इस प्रकार उसके चरित्र और पारिवारिक जीवन की घटनाओं के संघात से नाटक की कथावस्तु विकसित होती है। विपत्तियों से टक्कर लेने की प्रेरणा है, उनसे विद्रोह करने का भाव नहीं है।

जईफे हिर्स (वि० १९८०, पृ० ६८), ले० : लाला नत्थीमल जी; प्र० : श्याम काशी प्रेस, मथुरा; पात्र : पु० ८, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ५, ४, ६।
घटना-स्थल : बाग, गुरु की मढ़ी, मकान, कोतवाली, जंगल, नदीतट, शहर, फांसीघर।

इस सामाजिक नाटक में वृद्ध व्यक्ति के पुनर्विवाह का दुष्परिणाम दिखाया गया है। सेठ कुन्दनलाल अपनी प्रथम पत्नी की मृत्यु के उपरान्त पुत्र और पुत्रवधू के वर्जन करने पर भी नहीं मानता और लोमीचन्द की पुत्री कस्तूरी के साथ मन्नू भंगेड़ी की मदद से ७ हजार रुपये देकर शादी कर लेता है। कस्तूरी बूढ़े कुन्दनलाल से घृणा करती है और छबीला नौकर के साथ भाग जाती है। कुंदनलाल लोक निंदा से दुःखी होकर मर जाता है कई बार छबीला कस्तूरी को तंग करता है तो कस्तूरी उसकी अनुपस्थिति में गुलरू नवयुवक से मुहब्बत करने लगती है, जिससे छबीला कस्तूरी की हत्या कर देता है और पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेती है। अन्त में जल्लाद गले में फन्दा डालकर तख्ता हटाते हैं, और छबीला तड़प-तड़प कर मर जाता है।

जख्मी हिन्द (सन् १९३५, पृ० ११०), ले० : बिशनचन्द जेबा; प्र० : नेशनल बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली; पात्र : पु० २५, स्त्री ७; अंक : ३ सीन : ६, ३, २।
घटना-स्थल : बंदीगृह, वेश्यागृह।

इस राष्ट्रीय नाटक में हिन्दू संगठन पर बल दिया गया है।

महात्मा गांधी के उपवास की एक घटना को आधार बनाकर यह नाटक लिखा गया है। कोहाट, मुल्तान, सहारनपुर में हिन्दुओं की बड़ी दुर्दशा हो रही है। महात्माजी हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के लिए बंदीगृह में उपवास करते हैं और भारत की एकता को मनाते हुए कह रहे हैं—"ठहरो देवी, मत जाओ। मैं नहीं जाने दूंगा। तू मुझे छोड़ दे किन्तु मैं तेरी शरण को नहीं छोड़ सकता।" महात्मा जी बन्दीगृह से बाहर आने पर हिन्दुओं को उनके दोष समझाते हैं। पंजाबी नेता हीरो गांधी जी से हिन्दू संगठन पर जोर देता है किन्तु गांधी जी समझाते हैं कि आर्य और अनार्य दोनों का समान अधिकार है।

इस नाटक में हिन्दुओं में व्याप्त कुरीतियों पर विचार किया गया है। महात्मा के उपवास के अन्तिम दिन यमराज और कृष्ण का दर्शन होता है। कृष्ण महात्मा को यह संदेश सुनाकर चले जाते हैं—"यदि आर्य ऊँच-नीच, उत्तम-निषिद्ध का भेद-भाव छोड़ कर एक नहीं हो जायेंगे तो भारत से आर्य जाति का नाश हो जायगा।"

दूसरी कथा फातिमा और जयन्ती की है। जयन्ती के पति वेश्यागामी हैं। ऊपर से पवित्रता का ढोंग करते हैं। इस प्रकार

हिन्दुओं की दुर्बलता से लाभ उठाकर मौलवी हिन्दू लड़कों को मुसलमान बना लेते हैं। एक हिन्दू बालक मुसलमान बनने को तैयार नहीं होता तो उसे तलवार के घाट उतारा जाता है। वह लड़का मरते-मरते कहता है 'रक्षा ! प्रभो रक्षा !' नाटक के अन्त में प्रत्येक 'हिन्दू सगठन के प्रधान कार्यकर्त्ता एकत्र होकर 'हिन्दू महामडल की स्थापना करते है, जिसमे अछूत वर्ग के लोग सम्मिलित होते हैं।

जगद्गुरु (सन् १६५८, पृ० १३६), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० कौशाम्बी प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र पु० १०, स्त्री २, अक ३, दृश्य १, १, १।
घटना-स्थल माहिष्मती नगरी, कालडी ग्राम।

इस जीवनीपरक नाटक मे जगद्गुरु शकराचार्य के जीवन और कृतित्व तथा देश की तत्कालीन धार्मिक और सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। नाटक का प्रारम्भ महिष्मती नगरी के यशस्वी मीमासक मण्डन मिश्र, उनकी विदुषी पत्नी और पुत्र के सुखमय पारिवारिक जीवन की झाकी से होता है। उनकी दृष्टि मे प्रवृत्ति मार्ग, कर्ममय जीवन ही जीवन को सार्थक बनाता है न कि शकराचार्य का सन्यास। उधर शकराचार्य प्रयाग के कुमारिल भट्ट को शास्त्रार्थ मे पराजित कर मण्डन मिश्र से तर्क करने महिष्मती आते हैं। उनका भव्य स्वागत होता है, और मण्डन की पत्नी भारती को शास्त्रार्थ का निर्णायक मान उन दोनो विद्वानो मे शास्त्रार्थ प्रारम्भ होता है। निर्णय मे कठिनाई अनुभवकर भारती दो पुष्पमालाएँ दोनो के कण्ठ मे डाल देती है और कहती है कि जिसकी माला सूख जाएगी वही पराजित माना जाएगा। शकर के एक प्रश्न का उत्तर न सूझने पर मण्डन मिश्र विचार के लिए कुछ समय चाहते है, तुरन्त ही उनका पुष्पहार मुर्झा जाता है और उन्हें पराजय स्वीकार करनी पड़ती है। परन्तु यहाँ उनकी पूर्ण पराजय नहीं होती। उनकी पत्नी को जब तक शकराचार्य पराभूत न कर दें, तब तक वह विजय अधूरी ही रहेगी। यह कहकर भारती शकर को चुनौती देती है। शकर के चुनौती स्वीकार करने पर, वह उनसे कामशास्त्र सबधी प्रश्न करती है, जिसका उत्तर बालब्रह्मचारी होने के कारण शकर नही दे पाते। उसका उत्तर देने के लिए वह समय चाहते हैं जिससे परकायप्रवेश द्वारा कामशास्त्र का ज्ञान लाभ कर उत्तर देने में समर्थ हो सकें। भारती उनका प्रस्ताव स्वीकारकर उनकी पराजय को विजय मे परिणत करने की उदारता दिखाती है। नाटक के अंतिम अक मे शकर की माता की मृत्यु, उस अवसर पर शकर का अपने दिए वचन के अनुसार पहुँचना, कुटुम्बियो द्वारा पहले उपेक्षा परन्तु अन्त मे उनका अनुगामी बनना, केरल के राजा की सहायता से भारत के चारो कोनो मे चार मठ स्थापित करना आदि घटनाओ का चित्रण है। नाटक मे जनश्रुति के आधार पर कुछ दैवी चमत्कार जैसे, सर्प का बिना आघात पहुँचाए शकर के दाए से निकल जाना, परकाया प्रवेश द्वारा भोगविलास, नारद कुड के अगाध जल मे से मूर्ति निकलना आदि का प्रयोग भी किया गया है।

जनक-नन्दिनी (सन् १६२५, पृ० १५५), ले० प० तुलसीदत्त शैदा, प्र० श्री व्यास साहित्य मदिर, यार लेन, कलकत्ता, पात्र पु० १०, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ६, ६, ४।
घटना-स्थल जनकपुरी, राजमहल, वन, आश्रम आदि।

इस धार्मिक नाटक मे सीता की चरित्रगत विशेषता दिखाई गई है।

इसमे जनक-नदिनी सीता के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। प्रारम्भ मे लोभ, मोह आदि पात्रों का प्रवेश होने से नाटक मे नवीनता आ गई है। इसमे सीता जी के जीवन की मुख्य घटनाओ का ही उल्लेख है। सीतात्याग, लवकुश जन्म, सीता जी की पाताल प्रवेश तक की घटना इसमे सम्मिलित है।

जनक-बाग-दर्शन (सन् १६०६, पृ० १६), ले० प० रामनारायण मिश्र काव्यतीर्थ, प्र० खड्गविलास प्रेस—बाँकीपुर, पटना मे बाबू रामरणविजय सिंह द्वारा प्रकाशित,

पात्र : पु० ४, स्त्री ३; अंक : १, दृश्य : ५।
घटना-स्थल : जनकपुर, राजभवन, वाटिका, गिरजा मन्दिर।

रामचरित मानस के पुष्पवाटिका प्रसंग को नाटक का रूप दिया गया है। इस नाटक में जनक-वाटिका के सौन्दर्य का भगवान राम-लक्ष्मण द्वारा वर्णन मिलता है। सखियों द्वारा राम और लक्ष्मण के सौन्दर्य पर प्रकाश डाला गया है। इसमें सवैया एवं कवित्त का भी प्रयोग है।

जनकवि जगनिक (सन् १९५७, पृ० १२३), ले० : कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह; प्र० : सेवा प्रकाशन, लखनऊ; पात्र : पु० २४, स्त्री ४; अंक : ५, दृश्य : ४, ७, ४, ३, २।
घटना-स्थल : महोबा का महल, रिजगिरि में आल्हाऊदल का भवन, रणभूमि, दिल्ली में चंद का भवन, कालिंजर।

इस जीवनीपरक नाटक में जनकवि का देश रक्षा का प्रयास दिखाया गया है।

जनता की पुकार एवं सत्य को काव्य-बद्ध करना ही जगनिक का एकमात्र धर्म है। महोबे के लोग दिल्लीपति पृथ्वीराज के आक्रमण से तंग आ गए हैं। जगनिक इस स्थिति को देखकर बड़े चिन्तित होते हैं। वे चन्द कवि की सहायता से इस आक्रमण को टालना चाहते हैं, किन्तु भारतीयों के भाग्य-हीन होने के कारण वे अपने प्रयास में असमर्थ रहते हैं। इसी समय कन्नौज से आल्हा-ऊदल को बुलाने की वजह से युद्ध कुछ दिन के लिए स्थगित हो जाता है। आल्हा, ऊदल महोबे से बड़े चिढ़े हुए हैं क्योंकि उनकी इस जन्म भूमि में उनका पूरी तरह से तिरस्कार हो चुका है। परन्तु जगनिक की भावमयी कविता को सुनकर वे महोबे के लिए तैयार हो जाते हैं। इधर पृथ्वीराज पर इसी बीच मुहम्मद गोरी के द्वारा आक्रमण होता है। उससे निबटने के बाद महोबे के साथ युद्ध होता है। जिसमें बड़ा नरसंहार होता है। जनकवि जगनिक युद्ध को टालने का पूरा प्रयास करते हैं परन्तु असमर्थ रहते हैं। वे चाहते हैं कि सब छोटे-छोटे भारतीय राज्य एक साथ मिलकर विदेशी आक्रमणों से टक्कर लें पर आपसी फूट के कारण ऐसा संभव न हो सका। गजनी में गोरी को मारकर चंद और पृथ्वीराज आत्महत्या कर लेते हैं।

जनगण अधिनायक (सन् १९६१, पृष्ठ ११२), ले० : समर सरकार; प्र० : हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी; पात्र : पु० २७, स्त्री ७; अंक : ४, दृश्य : ५, २, ४, ३।
घटना-स्थल : वर्मा स्थित रंगून में आजाद हिन्द फौज का सदर दफ्तर।

इस राजनीतिक नाटक में सुभाषचन्द्र बोस के प्रवासी जीवन का एक पहलू चित्रित किया गया है। नेता जी भारत में अंग्रेज सरकार के चंगुल से निकलकर जर्मनी पहुँच जाते हैं। जर्मनी में हिटलर तथा मार्शल गोयरिंग उनका भव्य स्वागत करते हैं। हिटलर नेता जी को चालीस करोड़ भारतीयों का नेता घोषित करते हैं। नेताजी को भारतीय स्वाधीनता संघ को नेतृत्व ग्रहण करने के के लिए सिंगापुर आना पड़ता है। सिंगापुर में जापान के जनरल तोजो से अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह की मांग करते हैं जिसे जापान की सरकार स्वीकार कर लेती है।

इसके पश्चात् नेता जी वर्मा में सैनिकों को युद्ध के लिए तैयार करते हैं। सैनिक कोहिमा पर अधिकार कर लेते हैं लेकिन हाल में भारी वर्षा और तूफान के कारण नेताजी सैनिकों को पीछे हटने के लिए कहते हैं। जापानी अंग्रेज सरकार के विरुद्ध युद्ध में असफल रहते हैं। जापानी सैनिकों के साथ नेताजी को भी वर्मा छोड़ना पड़ता है। रंगून पर अंग्रेजों का आधिपत्य हो जाता है। नेताजी रंगून छोड़कर नहीं जाना चाहते लेकिन 'आजाद हिन्द फौज' के सैनिक लोकनाथन, भादुड़ी आदि समझाते हैं 'यदि आप सुरक्षित पहुँच गये तो आक्रमण धारा अटूट रहेगी।"

रंगून हवाई अड्डे पर सैनिक दल नेता जी को विदाई देने आते हैं। वहीं पर नाटक का अन्त हो जाता है।

जनतंत्र जिन्दाबाद (सन् १६७०, पृ० १८४), ले० विनोद रस्तोगी, प्र० उमेश प्रकाशन, दिल्ली-६, पात्र पु० ६ स्त्री १, अंक २।

प्रस्तुत व्यंग्य नाटक प्रसिद्ध रूमानियन नाटककार 'ओनलूका कारा गिलायल' (Ionluca Cara Gialc) के प्रहसन दि लॉस्ट लेटर (The Lost Letter) पर आधारित है, परन्तु यह नाटक उसका अनुवाद न होकर स्वतंत्र भारतीय रूपांतर है। इसमें अनेक नेताओं पर व्यंग्य करते हुए वोटरों की अस्पष्ट स्थिति अंकित की गई है।

गुप्ता जी एक राजनीतिक पार्टी की नगर कमिटी और चुनाव समिति के मंत्री हैं जो समिति के अध्यक्ष मेहरोत्रा जी की पत्नी सुमन से प्रेम करते हैं। गुप्ता जी अपने इलाके से एक सेठ को चुनाव टिकट देना चाहते हैं, परन्तु दैनिक 'जनतंत्र' के संपादक वर्मा गुप्ता जी से ब्लैक मेल करता है क्योंकि उसके पास गुप्ता जी का सुमन के नाम एक प्रेमपत्र है। सुमन के कहने पर गुप्ताजी वर्मा को चुनाव टिकट देने को तैयार हो जाते हैं। उनकी पार्टी के सदस्य पांडे और रिजवी इस बात का विरोध करते हैं। गुप्ता जी अपना प्रेमपत्र वर्मा के सहकारी कपूर की सहायता से प्राप्त कर लेते हैं और वर्मा का चुनाव-टिकट न देने का फैसला कर लेते हैं। इसी बीच हाई कमांड की तरफ से आदेश आता है कि इस चुनाव के टिकट को हमारे प्रत्याशी चोपड़ा जी को दिया जाए। चोपड़ा उस इलाके का आदमी नहीं है फिर भी सभी उसका समर्थन करते हैं। अंत में पोल खुलती है कि चोपड़ा ने भी हाई कमांड के एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को इसी प्रकार के प्रेमपत्र द्वारा ब्लैकमेल करके चुनाव टिकट प्राप्त किया है। नाटक के अंत में वोटर पूछता ही रह जाता है कि वोट किसको दूँ? सेठ को? वर्मा को? *या चोपड़ा को?*

जनता का सेवक (सन् १६६३, पृ० ६६) ले० कणाद ऋषि भटनागर, प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६, पात्र पु० ७, स्त्री ४, अंक ३।
घटना-स्थल सेठ का मकान, चुनाव स्थल, मंत्री का दरबार।

इस नाटक में दृश्य-विधान नहीं है किन्तु रंगमंच के लिए आवश्यक निर्देश अंक प्रारंभ होते ही संक्षेप में दे दिए गए हैं। नाटक में आधुनिक जनता के सेवकों पर व्यंग्य किया गया है। जनता से सेवा लेते हुए भी वे जनता के सेवक हैं। इस नाटक का मुख्य पात्र सेठ बाँकेलाल है जिसका ध्येय केवल *धन कमाना* है। इसी उद्देश्य से वह अपने परम मित्र शीतल प्रसाद को रुपया देकर चुनाव में खड़ा करता है ताकि उसकी सफलता से सेठ को निजी व्यापार में खूब फायदा हो। शीतल प्रसाद महा धूर्त है। वह निजी स्वार्थ में डूबा रहता है। मंत्री बनने के बाद वह पैंतरा बदलता है जिससे धन और यश के कारण मैत्री तथा सहृदयता दोनों पछाड़ खा जाती है। कुमार समाज-सुधारक है जो सेठ का पुत्र है। वह पदयात्रा करके जनता को अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक रहने को कहता है। वह अपने सुधारवादी मित्र किशोर को चुनाव में खड़ा करता है। आम चुनावों में सम्पादक, मजदूर-नेता, विद्यार्थी-नेता, यूनियन अधिकारी किस प्रकार उम्मीदवार से पैसा खाकर जनता को गुमराह करते हैं, इसका दिग्दर्शन सुब्रह्मण्य, तेजनाथ, राजीव और लेखराम पात्रों से मिलता है। भैरव दादा घर का पुराना नौकर है जो सेठ बाँकेलाल की मनमानी, सन्तान के प्रति अन्याय आदि से क्षुब्ध होकर नौकरी छोड़कर चला जाता है।

जनमेजय का नागयज्ञ (वि० १६८३, पृ० १०१), ले० जयशंकर प्रसाद, प्र० भारती भण्डार, इलाहाबाद, पात्र पु० १८, स्त्री ६, अंक ३ दृश्य ७, ८, ७।
घटना स्थल कानन, गुरुकुल

इस पौराणिक नाटक में जनमेजय के संग्राम के साथ साथ तक्षशिला-विजय और नाग जाति के संहार का उल्लेख है। ब्रह्म-हत्या के प्रायश्चित्त-स्वरूप राजा जनमेजय का अश्वमेध यज्ञ भी दिखाया गया है।

कतिपय ब्राह्मणों के षड्यन्त्र से नाग-जाति पुनः विद्रोह का झण्डा खड़ा करती है, किन्तु जनमेजय की शक्ति से विवश होकर सन्धि के लिए प्रार्थना करनी पड़ती है। परि-

णाम यह होता है कि आर्य और नाग जाति (अनार्य) विद्वेष भूलकर परस्पर मित्रभाव से व्यवहार करती है।

नाटक के नायक जनमेजय के पिता की हत्या नागों ने की थी। अत: पितृ-वध को स्मरणकर सम्राट् के हृदय में नाग जाति के विरुद्ध परम्परागत द्वेषाग्नि सुलगती रहती है। इस द्वेषाग्नि को शान्त करने के लिए उन्हें नाग जाति का विनाश अभीष्ट है। अत: नाग-विध्वंस के लिए कृतसंकल्प होकर वे कहते हैं, "अश्वमेध पीछे होगा, पहले नागयज्ञ करूंगा।"

आर्य-सम्राट् जनमेजय की तरह नागराज तक्षक के हृदय में आर्य जाति के प्रति प्रतिहिंसा की भावना उद्दीप्त होती रहती है। एक स्थान पर वह अपने मनोभावों को व्यक्त करते हुए कहता है, "प्रतिहिंसे! तू यदि चाहती है तो ले, मैं दूंगा। छल, प्रवंचना, कपट, अत्याचार सब तेरे सहायक होंगे। हाहाकार, क्रन्दन और पीड़ा तेरी सहेलियां बनेंगी।" इस संकल्प की सिद्धि के लिए वह नागों को सुसंगठितकर आर्य-जनपदों में हत्या और लूट के द्वारा आतंक फैलाता है। वह यज्ञ के घोड़े को बल-पूर्वक पकड़वा लेता है और नाग जाति को आर्यों के विरुद्ध युद्ध के लिए आह्वान करता है।

आर्य और नाग जाति (अनार्य) के परम्परागत इस संघर्ष को निर्मूल करने में सरमा और मणिमाला आदि सहायक होते हैं। आस्तीक के पिता हैं आर्यऋषि और माता है नाग-कन्या। आस्तीक के जीवन का उद्देश्य है निर्मल बुद्धि द्वारा आर्यों और अनार्यों के पारस्परिक मनोमालिन्य का उन्मूलन करना। वह एक स्थान पर कहता है, "किन्तु भाई, हमलोगों का कुछ कर्तव्य भी है। दो भयंकर जातियां क्रोध से फुफकार रही हैं। उनमें शांति स्थापित करने का हमने बीड़ा उठाया है।" जनमेजय जब ऋषि-पुत्र आस्तीक के व्यक्तित्व से प्रभावित हो उसे अपना रक्त देने को भी तैयार हो जाता है तो वह ऋषिकुमार आत्म-सुख की कोई वस्तु नहीं चाहता अपितु कलहशील दो जातियों में शांति स्थापित करने के लिए कहता है, "मुझे दो जातियों में शान्ति चाहिए। सम्राट्, शान्ति की घोषणा करके बन्दी नागराज को छोड़ दीजिए। यही मेरे लिए यथेष्ट प्रतिफल है।"

आस्तीक के सदृश ही नागकुलोत्पन्न वासुकी और नागपत्नी सरमा में भी विश्व-मैत्री की भावना है। वे दोनों शत्रु का अपकार से नहीं प्रत्युत उपकार के द्वारा परिवर्तित करने में संलग्न रहते हैं।

नाटक की नायिका है मणिमाला। वह जनमेजय के प्रतिपक्षी तक्षक की कन्या है। अपने शील-सौजन्यादि सद्गुणों के कारण आर्य-सम्राज्ञी का पद पाती है, इस प्रकार उसकी मैत्री के बल से आर्य और अनार्य जातियों की कलहाग्नि इतनी शान्त हो जाती है कि आर्य जाति के नेता सम्राट् जन-मेजय को बाध्य होकर यह कहना ही पड़ता है। "नागकुमारी की प्रजा होना भी अच्छा समझता हूं।" इस प्रकार न केवल राज-नीतिक प्रत्युत सांस्कृतिक दृष्टि से भी आर्य-अनार्य जाति का सम्मिलन उभय पक्ष के लिए कल्याणप्रद होता है। दोनों जातियों में राज-नीतिक ऐक्य स्थापित हो जाता है और आर्य-संस्कृति तथा नाग-संस्कृति के समन्वय से भारतीय संस्कृति समृद्ध बन जाती है।

जन्म-यात्रा (सन् १६६८, पृ० १३) ले० : गोपाल आर्त; प्र० : हिन्दी विद्यापीठ, आगरा; पात्र : पु० ८, स्त्री २; अंक और दृश्य से रहित।
घटना-स्थल : गोकुल, मथुरा, प्रसूति-गृह।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण-जन्म को गीत और संवाद द्वारा दिखाया गया है।

नाटक के प्रारम्भ में उस कृष्ण की वन्दना की जाती है जिसके नाम-स्मरण से चाण्डाल पर्यन्त जीव परमगति को प्राप्त करते हैं। उसके बाद रंगस्थली में दुख-शोक से जर्जरित वसुमती ब्रह्मा के सम्मुख आती है और अपने दुःख का सारा कारण बताती है जिससे दुःखी होकर ब्रह्मा क्षीरोदधि के तट पर देवताओं-सहित समाधि लगाते हैं और उन्हें ईश्वर वाणी सुनाई देती है कि भूमि-भार हरने के लिए श्री कृष्ण गोकुल में जन्म

दिखाई गई है।

हल्दी घाटी के युद्ध के उपरान्त महाराणा प्रताप अपनी पत्नी ज्ञानदा और बच्चो के साथ घोर जगल मे एक कुटिया बनाकर भावी युद्ध की तैयारी मे सलग्न है। अन्नाभाव मे सभी कई दिन से भूखे समय बिता रहे है। चम्पा बडी बहिन है जो अपने छोटे भाई को अपने भाग की रोटी छिपाकर खिलाती है। महाराणा एक दिन बच्चा को भूख से तडपते देखकर अकबर से सन्धि करने का विचार करने लगते हैं, पर चम्पा महाराणा से अपने अन्तिम समय मे वचन ले लेती है कि वह पराधीनता कभी स्वीकार न करेंगे। अकबर सन्यासी के वेश मे चम्पा की दृढता की परीक्षा लेने स्वत जाता है और चम्पा प्राणा का मूल्य चुकाकर स्वतन्त्रता की रक्षा करती है। अन्त मे सम्राट् अकबर महाराणा की विजय और अपनी पराजय स्वीकार कर लेता है और स्वय सन्धि-पत्र लिखकर महाराणा के मित्र पृथ्वीसिंह के द्वारा भेजता है। चम्पा की जलती हुई चिता के प्रकाश मे सुजनसिंह महाराणा को अकबर का पत्र पढकर सुनाता है। महाराणा और ज्ञानदा भगवान की लीला स्मरणकर आँसू बहाते हैं। इस प्रकार चम्पा अपने बलिदान से राजपूती आन और स्वतन्त्रता की रक्षा करती है।

चित्रकूट (सन् १९६२ पृ०, १५२) ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० रामनारायण लाल, इलाहाबाद, पात्र पु० १६, स्त्री ४, अक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल भवन, गगा का किनारा, पर्णकुटी।

अयोध्या काण्ड के आधार पर भरत का अयोध्या से प्रस्थान और चित्रकूट मे राम-भरत का मिलन दिखाया गया है।

राजा दशरथ की मृत्यु पर भरत ननिहाल से अयोध्या आते हैं। राम-वनवास की घटना से दु खी भरत को वशिष्ठ जी राक्षस-राज रावण से देश की रक्षा का महत्व और राम का भावी कार्यक्रम समझाते हैं। भरत मत्री को अयोध्या का राज सौंपकर चित्रकूट के लिए प्रस्थान करते हैं।

द्वितीय अक मे निषादराज और भरत का मिलन होता है। भरत राम की तरह भूमि-शयन का व्रत लेते हैं। तीसरे अक मे राम सीता और लक्ष्मण के अरण्य जीवन की झाकी दिखाई गई है। लक्ष्मण के मन मे ससैन्य भरत के आगमन से शका उत्पन्न होती है। भरत जानकी के चरणो मे गिरकर प्रणाम करते हैं। राम को राजा दशरथ के स्वर्गवास का दु खद समाचार मिलता है। पिण्डदान के उपरान्त भरत राम से अयोध्या लौटने का आग्रह करते हैं। राम भरत को बहुत समझाते है पर वह अपना आग्रह नही त्यागते। अन्त मे वशिष्ठ के आदेश से चरण-पादुका लेकर अयोध्या लौटते हैं। इस नाटक मे राजा जनक का परिवार चित्रकूट नही आता।

चिराग की लौ (सन् १९६२, पृ० ८६), ले० रेवतीसरन शर्मा, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ३, अक ३, दृश्य २, ३, २।
घटना-स्थल ड्राइग रूम, साधारण कमरा।

इस सामाजिक नाटक मे आज के समाज मे व्याप्त भ्रष्टाचार, चोरबाजारी और प्रेम के खोखलेपन का चित्र खीचा गया है।

किशोर नामक ईमानदार युवक इन्कम-टैक्स इन्सपेक्टर होते हुए भी किसी से रिश्वत नही लेता। अपने इन आदर्शों के कारण वह भौतिक सुखो से वचित रहता है। लेकिन उसकी पत्नी तारा स्वभाव से सुख-सुविधाओ को चाहनेवाली है इसलिए वह रिश्वत लेने को बुरा नही समझती। वह अपनी धनी सहेली रानी के प्रभाव मे आकर अनैतिक कार्य करने मे भी नही झिझकती। इस वैचारिक वैषम्य के कारण किशोर और तारा के प्रेम-सम्बन्ध टूट जाते हैं और नाटक का दु खात होता है।

अभिनय 'कला साधना मदिर' (दिल्ली) के द्वारा २१ मार्च, १९६१ को।

चिराग जल उठा (सन् १९६८, पृ० १२०), ले० ज्ञानदेव अग्निहोत्री, प्र० उमेश प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० १०, स्त्री २, अक-दृश्य-रहित। रेडियो का रूपान्तर है।
घटना-स्थल मैसूर के राजप्रासाद का कक्ष,

अंग्रेजों की फौजी छावनी, मैसूर का राजप्रासाद।

इस ऐतिहासिक नाटक में टीपू सुल्तान की वीरता, उदारता और राष्ट्रभक्ति दिखाई गई है।

टीपू की मलिका रूही बेगम अपने भयंकर स्वप्न का वर्णन करती है। टीपू का चचेरा भाई अनवर टीपू से युद्ध का हाल पूछता है। इसी समय दीवान सूचना देता है कि जंग में फतह मिली है पर किस्मत ने शिकस्त दी है। सिपहसालार लैली सूचना देता है कि नाना फड़नवीस अंग्रेजों से मिल गया है। प्रहरी निवेदन करता है कि जालिम फिरंगियों ने दूध पीते बच्चों तक की हत्या कर दी है। टीपू लैली को दूने उत्साह के साथ युद्ध करने को कहता है। युद्ध की तुरही बजती है। घोर युद्ध के उपरान्त अंग्रेजों की विजय होती है। टीपू को आधा राज्य देना पड़ता है और उसके दोनों लड़कों को अंग्रेज अपनी देखरेख में रखना चाहते हैं। नाना फड़नवीस टीपू से महाराष्ट्र की दुर्दशा का वर्णन करता है और अपराधों और विवशता के लिए क्षमा चाहता है। टीपू और नाना फड़नवीस मिलकर अंग्रेजों से घोर युद्ध करते हैं किन्तु टीपू आहत होता है। अन्त में उसका सिर एक ओर लुढ़क जाता है। उसके मरते ही चिराग बुझ जाता है, किन्तु नाना फड़नवीस दोनों बच्चों को रूही बेगम की गोद में दे देता है। मंच पर बढ़ते हुए चिराग की लाल रोशनी फैलती है।

चिरागे वतन अर्थात् देश-दीपक (सन् १६२२, पृ० १०४), ले० : लाला किशनचन्द जेबा; प्र० : हनुमान पुस्तकालय, लोहारी दरवाजा, लाहौर; पात्र : पु० २२, स्त्री ८; अंक : ३, दृश्य : ६, ५, ५।

घटना-स्थल : मैदान, अंग्रेजों का विलास भवन, रणछोरदास के महल की बैठक, ऋषि आश्रम, मन्दिर का एक भाग, वधगृह, कुटी, स्वर्ग लोक, मन्दिर, बैठक, जेलखाना, फुलवारी, राव साहब का मकान, स्कूल, कार्यालय का एक भाग।

नाटक के पहले दृश्य में धर्म और शक्ति का वाद-विवाद है, धर्म भारत का प्रतिनिधि है शक्ति यूरोप की। तत्पश्चात् भारतवासियों की दीन-हीन अवस्था एवं अंग्रेजों के ऐय्याश जीवन पर प्रकाश डाला गया है। इसी प्रसंग में रणछोरदासजी आते हैं जो देशी सभ्यता में रंगे हुए हैं परन्तु उनकी पत्नी कंचन को अंग्रेजी हवा लगी हुई है, किन्तु अन्त में कंचन अंग्रेजी सभ्यता के अभिशाप तक पहुँचने से पूर्व सन्मार्ग पा जाती है और पति की तरह ही स्वदेशी रंग में रंग जाती है। राव साहब सरकारी खिताब प्राप्तकर एक अंग्रेज रमणी की धुन में मग्न जाते हैं परन्तु रणछोरजी का धिक्कार उन्हें भी वास्तविकता का ज्ञान कराकर स्वदेशी बना देता है। नाटक आद्योपान्त गांधीवादी भावनाओं से पूर्ण है। हिन्दू-मुस्लिम एकता, मातृभाषा-प्रेम एवं स्वाभिमान की रक्षा आदि को दर्शाया गया है।

इस नाटक का उद्देश्य देश की दुर्दशा के विविध कारणों पर प्रकाश डालकर गांधीजी के सिद्धान्तों द्वारा इसको स्वाधीन कराना है। राष्ट्रीयता की भावना इसमें ओतप्रोत है।

चिरागे चीन उर्फ अलादीन (सन् १६२५, पृ० १३६), ले० : बाबू शिवदास गुप्त; प्र० : श्री विश्वेश्वर प्रेस, बनारस; पात्र : पु० ६, स्त्री ८; अंक : ३, दृश्य : ५, ७, ५।

घटना-स्थल : इबनजार का कमरा, जंगल में तिलस्माती गार, अलादीन का महल, चांग-चिंग फाउ का दरबार।

इस तिलस्मी नाटक में अलादीन के चिराग की करामात दिखाई गई है।

अलार्क इबिनजार का गुरु है। इबिनजार के नेक हब्शी अन्धे नौकर कसराक को अलार्क ठीक कर देता है। इसके एक पात्र अलादीन के पास ऐसा चिराग है जो सबकी इच्छायें पूरी कर सकता है। उसी चिराग के चमत्कार इस नाटक में दिखाये गये हैं। इस नाटक के तीसरे अंक के तीसरे सीन में अलादीन अपने महल में मित्र के साथ आता है और खवासों को होशियार करके चला जाता है। उसी समय इबिनजार भी आता है और

पुराना चिराग लेकर उन्हे नया चिराग देकर चल देता है और इसकी सहायता से इबिनजार के कब्जे मे उसकी इच्छित वस्तुयें आ जाती हैं।

चीनी के लड्डू (सन् १६६०, पृ० १५४), ले० पडित ईशानाथ झा, प्र० विद्यापति प्रकाशन, दरभगा, पात्र पु० २५, स्त्री ४, अक ३, दृश्य २२।
घटना-स्थल राजमार्ग, सुधाकान्त का कार्यालय, वटुआदास का घर, सुधाकान्त का घर, सुधाकान्त का आगन, प्रेमकान्त का शयनागार, प्रेमकान्त का आगन, प्रेमकान्त का विलास भवन, पर्णकुटी, प्रेमकान्त का कार्यालय, धर्मानन्द झा का घर एव जज का इजलास।

इस सामाजिक नाटक मे दो भाइयों के पारस्परिक प्रेम के बीच वैमनस्य का बीज बोनेवाला खलपात्र अपने दुष्कर्मो का फल पा जाता है। सुधाकान्त और प्रेमकान्त मिथिला के प्रतिष्ठित जमीदार है। इनके पिता की मृत्यु के उपरात इन दोनो भाइयों की देखभाल उनके मामा धर्मानन्द झा करते हैं। धर्मानन्द का महत्त्व देखकर दीवान वटुआदास ईर्ष्यावश एक षडयन्त्र द्वारा प्रेमकात को सुधाकात के विरुद्ध कर देता है। दीवान के मायाजाल मे फँसकर प्रेमकात उसके हाथ की कठपुतली बन जाता है। प्रेमकात की पत्नी चण्डिका को दीवान समझाता है कि सुधाकात खानगी तौर पर बहुत बडी राशि इकट्ठा कर रहे हैं। चण्डिका चण्डी की तरह प्रचड हो जाती है। शयनागार मे चण्डिका प्रेमकात को सारी स्थिति से अवगत कराती है। दीवान वटुआ और पत्नी के आग्रह पर प्रेमकात बडे भाई से विद्रोह करते हैं। अत दोनो भाई अलग-अलग हो जाते हैं। अब वटुआदास प्रेमकात को भ्रातृ-पुत्र सुकुमार की हत्या की मत्रणा देता है। योजनानुसार विषमिश्रित चीनी का लड्डू तैयार होता है, जिसे लेकर वटुआदास स्वय सुधाकात के यहाँ जाता है और मिठाई के डिब्बे को प्रेमकात की ओर से सुकुमार के लिए सौगात बताता है। सुधाकात वटुआदास को भोजन मे वही चीनी का लड्डू देता है। इस प्रकार उसे अपने दुष्कर्मो का फल स्वय ही भोगना पडता है।

चुगी की उम्मीदवारी (सन् १६१४, पृ०५२), ले० बदरीनाथ भट्ट, प्र० रामभूषण पुस्तक भडार, आगरा, पात्र पु० ७, स्त्री १, अक-रहित।
घटना-स्थल नगरपालिका चुनाव सभा, घर।

इस प्रहसन मे नगरपालिका के निर्वाचन का चित्र यथार्थवादी पद्धति पर हास्यात्मक ढग से प्रस्तुत किया गया है। मेम्बरी का प्रत्येक प्रत्याशी चुनाव मे किसी भी तरह चुने जाने के लिये अधिक से अधिक वोटो को प्राप्त करने की कोशिश करता है। इसके लिये वह प्रत्येक वोटर के पास जाता है। हर प्रत्याशी वोट को प्राप्त करने के लिये विविध पद्धति अपनाता है। इस निर्वाचन पद्धति मे प्रत्याशी अपनी मर्यादा तक को तिलाजलि द देता है। मतदाता प्रत्याशियो से खीजकर, यह निश्चय करता है कि मत किसी को भी न दिया जाये। वोट डालने की निश्चित तिथि पर प्रत्येक प्रत्याशी मतदाता को अपनी ओर खीचता है। अन्त मे दोनो ही पक्षो मे मारपीट प्रारम्भ हो जाती है। यही इस प्रहसन का अत होता है।

चुबन (सन् १६३६, पृ० २११), ले० बेचन शर्मा उग्र, प्र० पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, पात्र पु० १३, स्त्री ३, अक-दृश्य-रहित। केवल स्थान परिवर्तन।
घटना स्थल पहाडी, नदीतट, पाठशाला, दरवाजा, झोपडी, टूटा मदिर, आराम घर, खलिहान आदि।

सम्पूर्ण नाटक तीन भागो मे विभाजित है और प्रत्येक भाग मे अनेक दृश्य है। सब मिलाकर न्यूनाधिक १०० दृश्य हैं। इस सामाजिक नाटक मे सूदखोर सेठ का चरित्र दिखाया गया है।

दौलतराम नामक सेठ सूद पर रुपया देता है। मल्लू नामक लकडहारे के ऊपर उसका सूद मूल से कई गुना बढ चुका है।

दौलतराम के ऋण से मल्लू के अनेक पड़ोसी भी दबे हुए हैं। दौलतराम एक कर्जदार को औरों से पिटवाता है पर मल्लू बीच में कूद कर उसे बचा लेता है। मल्लू नदी पारकर एक मंदिर में पूजा करने जाता है और मूर्ति के सम्मुख नित्य धन का वरदान माँगता है। मल्लू का बेटा विपत स्कूल में पढ़ता है पर उसको भर पेट भोजन भी नहीं मिलता। मल्लू की स्त्री मैना उसके पूजापाठ से खिन्न हो उठती है वह विपत को पढ़ाते हुए कहती है बोलो 'क' से मनुआ। मनुआ अपनी स्त्री की ढिठाई पर हँसता है। मैना अपने पति की गरीबी से विकल रहती है। तब तक एक दिन दौलतराम मल्लू के लड़के विपत को ऋण न चुकाने के कारण पकड़ ले जाता है। कर्जदारों में तहलका मच जाता है। सभी दौलतराम के आगे अपनी विपदा सुनाते हैं।

दूसरे भाग में सुन्दरी मैना एक दिन नदी में स्नान करती है उसी समय दौलत वहाँ पहुँच जाता है। मैना धन के लोभ में उसके साथ जाने को तैयार होती है तब तक विपत भागकर माँ की गोद में आ जाता है और मैना पुत्र-स्नेह के वश होकर दौलतराम के साथ नहीं जाती। पर होली के दिन घर की गरीबी और पड़ोसियों के ताने से तंग आकर वह दौलतराम के साथ उसके बँगले पर चली जाती है! मल्लू बहुत से लोगों को लेकर दौलतराम के घर पहुँचता है पर मैना और विपत को नये-नये वस्त्र और आभूषण से सुसज्जित देखकर पहचान नहीं पाता। कुछ दिनों के उपरांत मैना एक जमींदार के साथ उसकी मोटर में सैर-सपाटा करती है। एक दिन शराब के नशे में चूर जमींदार झगड़ा होने के कारण उसे अपनी मोटर में दौलतराम के घर छोड़ आया। दौलतराम क्रुद्ध होकर दासियों से उसके वस्त्र आभूषण उतरवा लेता है और उसके लड़के विपत को भी घर में बाँधकर रख लेता है।

तीसरे भाग में मैना सब जगह से निराश होकर राम-मंदिर के पीछे ज्वर में प्रलाप करती पड़ी है। विपत भी किसी प्रकार दौलतराम से छुटकारा पाकर वहाँ आ जाता है। दौलतराम भी उसी मंदिर में आता है। हनुमान जी रामजी की आज्ञा से दौलतराम को कठोर दंड देते हैं और उसमें मल्लू लकड़हारे को दो हजार कलदार दिलाते हैं। अन्त में मल्लू मैना और विपत का मिलन होता है।

यह नाटक सिनेमा की दृष्टि से रचकर लिखा गया है।

चेतसिंह (सन् १९५६, पृ० ६६), ले०: गर्वदानंद; प्र०: किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद; पात्र: पु० ११, स्त्री २; अंक-रहित: दृश्य: २।
घटना-स्थल: रामनगर का दुर्ग, काशी का शिवालय घाट।

इस ऐतिहासिक नाटक में अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध युद्ध में चेतसिंह की कायरता और मनियार सिंह की वीरता दिखाई गई है। काशीराज चेतसिंह की माता पन्ना सूफी शायर और ईरान के शहजादे शेख अली हर्जो से बातें करती हुई युद्ध के आगत संकट की चर्चा करती हैं। फिरंगी लाट चेतसिंह से ५० लाख रुपया जुर्माना वसूल करना चाहता है। वे प्रजा से बलात् रुपया लेने का आग्रह करते हैं। प्रजा भगवान् से चेतसिंह की रक्षा के लिए प्रार्थना करती है। चेतसिंह के चचेरे भाई मनियार सिंह प्रजा को अंग्रेजों के साथ युद्ध के लिए तैयार कर रहे हैं। उनका साथ देने को चेतसिंह के लघु भ्राता सुजानसिंह प्रस्तुत हैं। पर चेतसिंह में युद्ध का साहस नहीं होता। वह स्वीकार करता है कि "चेतसिंह के राज्य में चोरी, डाका, हत्या और बलात्कार बहुत बढ़ गए हैं। वह राजा बनने के योग्य नहीं है।" रानी चेतसिंह को युद्ध के लिए सन्नद्ध करना चाहती हैं और राजमाता पन्ना से आशीर्वाद माँगती हैं कि यह अन्याय के सामने सिर न झुकायें। चेतसिंह रानी के वचन सुनकर दंग रह जाता है। हर-हर महादेव का घोष सुनाई पड़ता है।

दूसरे दृश्य में दरोगा, तोपखाना, गुलाम हुसेन और प्रमुख अधिकारी बख्शी सदानंद के वार्तालाप से ज्ञात होता है कि चेतसिंह ने बक्सर में गवर्नर जनरल के कदमों पर टोपी रख दी और अपने प्राणों की रक्षा के लिए काशी का राज्य देना स्वीकार कर लिया। देशद्रोही मुंशी फैयाज अली, अलाउद्दीन

कुवरा, शम्भूराम पडित, बेनीराम, बनकट मिश्र अग्रेजों से मिलकर देशद्रोह करते हैं। गोरों की घडघडाहट सुनकर चेतसिंह बख्शी सदानद से कहता है "बख्शी जी, मानो चेतसिंह मर गया, उसका शव डोल रहा है।" बख्शी सदानद की प्रेरणा से मनियार सिंह के सैनिक कम्पनी के सिपाहियो से जूझ पडते है पर चेतसिंह खिडकी से कूदकर भाग जाता है। उसी समय एक सजीव मूर्त्ति का स्वर सुनाई देता है—"*जनता एक दिन जागेगी और भारत विदेशी परतत्रता से मुक्त होगा।*"

इस नाटक का अभिनय—२२-२३ अगस्त १९५९ को प्रथम बार लखनऊ मे हुआ। उद्घाटन राज्यपाल के० एम० मुशी ने किया।

चेहरो का जगल (सन् १९६७, पृ० ६३), ले० आलोक शर्मा, प्र० इडियन ओवरसीज एलायस कॉरपोरेशन, कलकत्ता, पात्र पु० ४०, स्त्री ६, अक ५, दृश्य १, १, १, २।
घटना-स्थल दफ्तर, फुटपाथ, प्रदर्शनी, रेस्तरां, फ्लैट।

यह सवादहीन नाटक सामाजिक नाटक है जिसमें कोई सुसगठित कथा नही है। समाज के विभिन्न वर्गो को चेहरो का जगल दिखाया गया है।

नायक यौवनावस्था पार कर चुका है। इसके चेहरे पर जीवन मे वितृष्णा और तटस्थता का मिश्रित भाव है। वह कुछ लिखकर स्टेनो को दे देता है। स्टेनो टाइप करते हुए नायक को फटी-फटी आँखो से देखता जाता है। नायक उसकी ओर से दृष्टि हटाकर नए कागज पर लिखकर क्लर्क को देता है। इसी समय एक बूढा चपरासी नायक की टेबल पर खडा हो जाता है और उसकी (नायक) ओर फटी-फटी आँखो से देखने लगता है। तब तक उम्रदराज नामक व्यक्ति हाथ मे छाता लेकर नायक से मिलने के लिए क्लर्क और चपरासी को एक-एक रुपया का नोट देता है पर दोनो उसे अपना मुँह बिचकाकर बाहर जाने का सकेत करते हैं। क्लर्क और चपरासी सारे समय पैर टेबल पर फैलाए अँगडाइयाँ लेते रहते हैं।

दूसरे दृश्य मे नगरी का कोलाहलमय दृश्य गाडियो के हार्न, रिक्शा-साइकिल की घटी, भोपू, जुलूस के नारे, फायर ब्रिगेड की घटी, पुलिस के सायरन सुनाई पडते हैं। यात्री ट्रैफिक के नियमा का उल्लघनकर फुटपाथ के नीचे बस का इन्तजार कर रहे हैं। मछलीवाले, कागज चुननेवाले, महिला यात्री, पुस्तक विक्रेता, मोची, धोबी आदि मच पर आते हैं। *नायक सबको घूरता हुआ* सिगरेट पीता है। इसी समय एक प्रोफेसर नायक के सामने आ जाता है। कुछ क्षण तक दोनो एक दूसरे को देखते रहते हैं। सकेत से दोनो एक दूसरे का कुशल जानना चाहते हैं। इस प्रकार शिशु, नवदम्पति, छात्राओ, पुस्तक विक्रेताओ, पागल व्यक्ति, मित्र, युवती आदि को देखकर मुखमुद्रा के द्वारा नायक के मनोभावो को प्रकट किया जाता है।

इसी प्रकार तीसरे अक मे चित्रकार, प्रौढ सज्जन, अधेड पति-पत्नी, किशोर, शिशु आदि को देखकर नायक की मन स्थिति का चित्रण किया जाता है। चौथे दृश्य मे मित्र और मित्र के मित्र से मिलने पर नायक की मुस्कराहट, गम्भीर मुद्रा आदि के द्वारा मनोभावो का प्रदर्शन किया जाता है। बहुत दिना पर मिलने के कारण मित्रो को पहचानने मे कठिनाई होती है। फिर पहचान लेने पर अतुल प्रसन्नता के भाव स्पष्ट होते हैं।

पाँचवें अक म नायक की पत्नी महानगर के एक फ्लैट मे बैठी है। दीवार से लगी अल्मारी मे कुछ पुस्तके, बुद्ध की प्रतिमा और पुराने सिस्म का रेडियो है। पत्नी डाइनिंग टेबल की कुर्सी पर उदास बैठी प्रतीक्षा करती हुई स्वेटर बुन रही है। रात के साढे ग्यारह बजे हैं। नायक दबे कदमो कमरे मे प्रवेश करता है। नायक के चेहरे पर हीनता का भाव है। वह कमर पर हाथ रखने के बाद शून्य मे देखता हुआ लबी साँस लेता है। फिर पत्नी की बगल मे पलग पर सीधा लेट जाता है। कमरे मे रात भर सरोद का उदासी-भरा स्वर सुनाई पडता रहता है। सारी रात जागरण करता हुआ नायक अपनी मनोव्यथा को हावभाव से व्यक्त करता रहता है।

चोरधरा झुमुरा (सन् १९६८, पृ० १७), ले० : माधव देव; प्र० : हिन्दी विद्यापीठ, आगरा; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : गोपियों का घर, राजमार्ग आदि।

इस धार्मिक अंकियानाट में माखन-चोर कृष्ण को पकड़कर गोपियाँ यशोदा के पास ले आती हैं।

इस झुमुरा का प्रारंभ संस्कृत भाषा में नान्दी से होता है। उसके बाद सूत्रधार सामाजिकों को लोकहितैषी श्रीकृष्ण की चोर-चातुरी तथा गोपियों के साथ रचाई जानेवाली क्रीड़ा को देखने के लिए आमंत्रित करता है। एक दिन कृष्ण एक गोपी का गृह जन-रिक्त देखकर नवनीत की चोरी करने के लिए घर में घुस जाते हैं। गोपी घर लौटने पर कृष्ण को चोरी पकड़ती है, और बाहर से दरवाजा बन्द कर लेती है। थोड़ी देर में अनेक गोपियाँ इकट्ठी हो जाती हैं, और कृष्ण को नवनीत खिला-खिलाकर खूब नचाती हैं जिससे कृष्ण को गृह लौटने में देर हो जाती है। यशोदा मध्याह्न के समय व्याकुल होकर कृष्ण को चारों ओर ढूँढती है। एक गोपी आकर यशोदा से कृष्ण की चोरी की बात बताती है। इतने में सभी गोपियाँ कृष्ण सहित यशोदा के पास आ जाती हैं। यशोदा कृष्ण को देखकर प्रसन्न होती हैं। फिर माता के मुख को देखकर कृष्ण रो-रोकर गोपियों का वृत्तान्त सुनाते हैं। कृष्ण के वचन को सुनकर यशोदा गोपियों की भर्त्सना करती हैं। गोपियाँ भी कृष्ण के नृत्य की बड़ी प्रशंसा करती हैं। यशोदा भी कृष्ण को झाड़-पोंछकर स्नान कराती हैं भोजनोपरांत उन्हें सुन्दर दिव्य परिधान पहनाकर परम आनन्दित होती हैं।

चौपट चपेट (सन् १८९२, पृ० ४२), ले० : किशोरीलाल गोस्वामी; प्र० : आर्य पुस्तकालय, आरा; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : ५, दृश्य-रहित।

यह एक प्रहसन है। इसमें पतिव्रता नारियों का पतितजनों से अपने सतीत्व की रक्षा करने का दृष्टान्त प्रस्तुत किया गया है। इसमें चंपकलता बाबू अभय कुमार की पतिव्रता पत्नी है जिसको अभय कुमार पतिता आचरण की समझकर त्याग देते हैं तथा वेश बदलकर चंपकलता की परीक्षा करते हैं। मदन मोहन, छाकूलाल, रजनीकान्त वकील तथा गुलकाम एक कामुक जुलाहा, चंपकलता को बहुत चाहते हैं। एक दिन चंपकलता अपनी बुद्धिमानी तथा दासी गुलाब की चतुरता से चारों दुष्टों को बारी-बारी से बुलाकर अपने घर में छिपाती जाती है। जब अन्त में रईस मदन मोहन आते हैं तो उनको भी अपना घोड़ा बनने को कहती है। जब वे प्रेम आतुर होकर चंपकलता का घोड़ा बनते हैं तभी वेजूवावरा के वेश में अभय कुमार आकर चारों को कठोर दंड देते हैं। चारों अन्त में अपने किये हुए का प्रायश्चित करते हैं और अभयकुमार अपनी निर्दोष पतिव्रता पत्नी की चार्य कुशलता पर प्रसन्न होते हैं।

छ

छठा बेटा (सन् १९४०, पृ० ११६) ले० : उपेन्द्रनाथ अश्क; प्र० : नीलाम प्रकाशन इलाहाबाद; पात्र : पु० ७, स्त्री १; दृश्य : ४।
घटना-स्थल : बरामदा। इलाहाबाद म्योर हास्पिटल में प्रदर्शित १९५१ में।

यह एक स्वप्न नाटक है, जो कि अश्क जी के अनुसार सत्य कथा पर आधारित है। वस्तुतः यह एक पिता की आकांक्षा की कहानी है। इसकी पृष्ठभूमि मनोवैज्ञानिक तत्वों पर आधारित है। इसके माध्यम से नाटककार ने तत्कालीन समाज और सभ्यता के प्रति कटाक्ष किया है। बसंतलाल अपने बेटों से

उपेक्षित होने के कारण अत्यन्त दुखी है। एक दिन वह स्वप्न मे लॉटरी से धनी बनने पर बेटो मे आदर पाकर सुखी बनता है किन्तु धन समाप्त होने पर पुत्र उसके लड़के उसकी उपेक्षा करते हैं। अब उसे अपना छठा बेटा स्मरण आता है जो बचपन मे घर से चला गया था। दुख के समय वह आता है। स्वप्न भग होने पर खरीदा हुआ लॉटरी का टिकट पड़ा मिलता है।

छत्रपति शिवाजी या समर्थ रामदास (सन् १९४९, पृ० १००) ले० वेणीराम त्रिपाठी श्रीमाली, प्र० ठाकुरप्रसाद एण्ड सस, बुकसेलर, वाराणसी, पात्र पु० १६, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ८, ८, ५।
घटना स्थल नदी तट पार्वत्य प्रदेश, जगल, चाफलग्राम, कुटी, मन्दिर, भवन।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है जिसमे शिवाजी के साहस, शौर्य और देशप्रेम का चित्रण है। औरगजेब से शिवाजी की टकराहट तथा उसे चकमा देकर बन्दीगृह से मुक्त होना और अन्त तक कब्जे मे न आना शिवाजी के बुद्धि-चातुर्य का सुन्दर रूप प्रस्तुत करता है।

शाहजी और जीजाबाई सन्तान के अभाव मे दुखी होकर समर्थ गुरु रामदास के पास जाते है। समर्थ जीजाबाई को आशीर्वाद देते हैं—"तुम क्षत्राणी हो, सिहनी की कोख से शेर ही पैदा होगा।" शिवाजी बाल्यकाल मे ही श्रद्धापूर्वक तुलजा भवानी के मदिर मे पूजन-अर्जन करते हैं। एक दिन स्तुति करते हुए कहते हैं—"विश्वेश्वरी! हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म की आखे तेरी ओर लगी हुई है। जगदम्बिके! हिन्दू जाति पर अपने अभय वरदहस्त की छत्रछाया कर! जिससे मैं धर्म और देश की रक्षा कर सकू।" भवानी अपनी करवाल देती है। इधर समर्थ के प्रयास मे पूना के मठ मे चार हजार साधु शिक्षा प्राप्तकर दक्षिण भारत की हिन्दू जनता मे प्रचार कार्य करते हैं। उत्तर भारत मे प्रचार करनेवाले ५०० साधुओ मे ५ चुनकर लिये जाते हैं। समर्थ एक पत्र देकर प्रिय शिष्य कल्याण स्वामी को शिवाजी के पास भेजते हैं। शिवाजी किसी प्रकार औरगजेब के जुल्म से हिन्दुओ की रक्षा का उपाय सोचते हैं। इतने मे ही औरगजेब शिवाजी को किसी प्रकार भुलावा देकर बुलाने का कार्य जयसिह को सौंपता है। इधर शिवाजी समर्थ का आशीर्वाद प्राप्तकर उनकी चरण-पादुका सिंहासन पर रखते हैं। समय हिन्दू राष्ट्रपति, हिन्दू धर्म की जयजयकार बोलते हैं। उनके आशीर्वाद के साथ औरगजेब के निमत्रण और जयसिह के आश्वासन पर शिवाजी औरगजेब के दरबार मे पहुँचते हैं। वहाँ जाने पर औरगजेब का कपट व्यवहार देखकर बीमारी का बहाना बनाते है और दान रूप मे भिखारियो को बाँटने के लिए तैयार टोकरे मे बैठकर औरगजेब के बन्दीगृह से मुक्त हो मथुरा पहुँचते हैं। मन्दिर मे दर्शन करते हैं। वही उनके सेनापति मिल जाते हैं। दोनो तीर्थाटन करते हुए समर्थ गुरु रामदास के पास पहुँच जाते हैं। दोनो के प्रयास से सब मठाधीश हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं।

मूल कथा के साथ प्रत्येक अक मे एक स्वतत्र कथा पारसी नाटको की शैली पर हास्य उत्पन्न करने के लिए लिखी गई है। जैसे प्रथम अक के तृतीय दृश्य मे ककण, कुडल, कन्दुक, उद्धव का वार्तालाप है। एक स्थान पर कदुक गरुड पुराण का उद्धरण देता है—

> प्रथमा बस बुद्धिश्च
> चर्म बुद्धिस्तु दूसरी।
> तृतीया पच्च बुद्धि है
> यो जानाति स पण्डित ॥

इसका अभिनय श्री शिवराम नाट्य परिषद गायघाट काशी द्वारा सन १९४८ मे हुआ। दर्शको मे पराड़कर जी, कमलापति त्रिपाठी, गर्देजी, रामनारायण मिश्र आदि प्रमुख साहित्यकार थे।

छत्रपति शिवाजी (सन् १९५८), ले० वीरेन्द्रकुमार मिश्र, प्रा० सुषमा पुस्तकालय, दिल्ली, पात्र पु० १५, स्त्री ५, अक ४, दृश्य-रहित।
घटना स्थल जगल, नदीतट, पर्वत-प्रदेश, दुर्ग।

यह सामाजिक नाटक शिवाजी के जीवन

का दिग्दर्शन कराता है। शिवाजी शाहजी की परित्यक्ता धर्मपत्नी जीजाबाई की एकमात्र सन्तान है। वीरांगना जीजाबाई अपने पुत्र को बचपन में ही रामायण, महाभारत एवं वीरों की कथाएँ सुनाकर निर्भीक, साहसी और वीर बनाती हैं। दादा कोणदेव शिवाजी को *शस्त्रास्त्र तथा युद्ध की शिक्षा देते हैं।* माता के संकेत मात्र से किशोर शिवा तोरण दुर्ग को जीतकर बीजापुर के सुलतान को पराजित करते हैं। शाइस्ताखां की अँगुलियां काटकर उसे भगा देते हैं। जयसिंह से संधि करके शिवाजी औरंगजेब के दरबार में पहुँचते हैं लेकिन उचित सम्मान न मिलने पर वे क्रुद्ध होकर भरे दरबार से चले आते हैं। औरंगजेब शिवाजी और उनके पुत्र संभाजी को आगरे में बन्दी बनाता है। शिवाजी अपने बुद्धि-चातुर्य से औरंगजेब के फन्दे से निकल जाते हैं, और साधुवेश में पूना पहुँचकर माता जीजाबाई के चरणों में प्रणाम करते हैं। शिवाजी अपने बाहुबल एवं बुद्धिबल से मुगलों को पराजित कर सुदृढ़ साम्राज्य की स्थापना करते हैं।

छत्रसाल (सन् १९५४, पृ० ११४) ले० : आचार्य चतुरसेन; प्र० : अतरचन्द कपूर एण्ड सन्ज, देहली; *पात्र :* पु० ११, स्त्री ६; *अंक :* ५।
घटना-स्थल : आगरा का दुर्ग, ओरछा का महल।

प्रस्तुत नाटक का कथानक महाराष्ट्र के प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार बालचन्द नानकचन्द शाह के इसी नाम के मराठी उपन्यास के आधार पर लिखा गया है। नाटक में औरंगजेब के लड़खड़ाते मुगल साम्राज्य के विरुद्ध बुन्देला वीर चम्पतराय और उनके वीर पुत्र छत्रसाल के साहस, आत्म-त्याग और क्षत्रियोचित गुणों का चित्रण किया गया है।

ओरछा की महारानी हीरादेवी के षड्यन्त्र से बचपन के मित्र सागर के राजा शुभकरण और महोबा के अधिपति चम्पतराय में शत्रुता का भाव उदय होता है और शुभकरण चम्पतराय को नष्ट करने के लिये अपने देश, गौरव और आत्मा तक को बेच डालता है। यवनों को मित्र बनाता है परन्तु उसकी आत्मा सदा उसे धिक्कारती रहती है। अतः हीरादेवी द्वारा उत्पन्न किये गये भ्रम के दूर होते ही वह छत्रसाल का साथ देकर बुन्देलखण्ड को यवनों से मुक्त करने के अनुष्ठान में भाग लेता है। इस पवित्र कार्य में *अन्य सहायक हैं; प्राणनाथ प्रभु* नामक महात्मा, सागर के राजकुमार दलपतिराय, दादेर की राजकुमारी विजया, औरंगजेब की पुत्री बदरुन्निसा। नाटक में अनेक प्रासंगिक कथायें आ गई हैं जैसे चम्पतराय और औरंगजेब के वध के षड्यन्त्र पर ठीक मौके पर रहस्य खुल जाने के कारण उनकी रक्षा, छत्रसाल और शिवाजी की भेंट, रोशनारा का प्रभावशाली व्यक्तित्व और मुगलराज्य का अधिपति होने की महत्त्वाकांक्षा, हीरा देवी का अपने को पुत्रवती सिद्ध करने के लिये अपनी पुत्री को विमलदेव नामक पुत्र के रूप में प्रसिद्ध करना, कंचुकिराय की दास वृत्ति, बदरुन्निसा और दलपतिराय का प्रेम आदि।

छद्म योगिनी (वि० १९७६, पृ० ५८) ले० : वियोगी हरि, हरिप्रसाद द्विवेदी; प्र० : प्रयाग साहित्य भवन; *पात्र :* पु० ५, स्त्री ६; *अंक*, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : गोकुल, बरसाना, वृन्दावन।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण को छद्म योगिनी और राधा को योग-शिक्षक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रेमलक्षणा भक्ति और योगसाधना की व्याख्या सुनने के लिए नारद और शुकदेव भी शुकसारिका के रूप में व्रज आते हैं। राधा व्रजभूमि की सर्वेश्वरी हैं, विशाखा, ललिता, मालती और माधवी आदि राधिका जी की सहेलियां हैं। श्रीकृष्ण जी छद्मवेशधारी योगिनी बनकर श्री राधा जी को प्रेम की सांसारिकता के स्थान पर ज्ञानपूर्ण योग की शिक्षा देते हैं और उन्हें योग स्वीकार करने के लिये प्रेरित करते हैं।

इस नाटक की नायिका राधा कृष्ण को सम्पूर्ण प्रेम-तत्त्व की व्याख्या करती हुई उत्तर देती है—मैं आपका वेदान्त नहीं सम*झती। सीधी-सादी बात कहिए, क्या योगा-*

ले रहे हैं। कृष्ण-जन्म के निमित्त योगमाया अवतार धारण करती है।

इसके उपरान्त मथुरापुरी के राजा उग्रसेन और देवक, देवकी की शादी वसुदेव के साथ कर देते हैं। विवाहोपरान्त देवकी को साथ लेकर वसुदेव प्रस्थान करते हैं, तो रथ के थोड़ी दूर आगे जाते ही आकाशवाणी होती है कि "हे कंस, देवकी का अष्टम पुत्र तेरा प्राण संहारक होगा।" इसे सुनकर कंस वसुदेव और देवकी का जान से रोकना है और देवकी को मार देना चाहता है। लेकिन वसुदेव से यह वचन लेकर कि "देवकी के गर्भजात सभी पुत्रों को समर्पित कर दूंगा"—कंस उसे छोड़ देता है।

इस तरह कंस देवकी के गर्भजात सभी छ पुत्रों को नष्ट कर देता है तथा सप्तम का गर्भपात होता है। अष्टम में भगवान् स्वयं अर्धरात्रि में उत्पन्न होते हैं। वसुदेव कृष्ण को लेकर गोकुल जाते हैं। उसी समय योगमाया जन्म लेती है। प्रहरी सो जाते हैं। वृष्टि होने लगती है। बढ़ते हुए जमुना जल को देख वसुदेव भयभीत हो जाते हैं। फिर भी कृष्ण के स्थान पर कन्या को लेकर लौटते हैं और देवकी की गोद में दे देते हैं। कन्या के रुदन को सुनकर सभी प्रहरी जागते हैं। इसकी सूचना कंस को देते हैं। कंस उस अबोध कन्या को उठाकर शिला पर पटक देता है। वह हाथ से छूटते ही दिव्य रूप धारण कर आकाश में उड़ जाती है तथा कंस के प्राण-वैरी की घोषणा करती है।

कंस दैत्य-सभा में जाकर सारी गाथा सुनाता है। दैत्य अपना अंत आना जानकर गौ ब्राह्मण की हिंसा करने लगते हैं। इधर गोकुल में नन्द-पुत्र के जन्म का वृत्तान्त सुनकर दसों दिशाओं में हर्षोल्लास के साथ-साथ कृष्ण के ऊपर पुष्प-वर्षा होने लगती है।

जफाये सितमगर उर्फ घडी की घड़ियाल (सन् १८६०), ले० मुहम्मद महमूद मियां 'रौनक', प्र० विक्टोरिया कम्पनी ने दी० लखमीदास की कम्पनी बम्बई में छपवाया, पात्र पु० ८, स्त्री ४, अंक ४।
घटना-स्थल मन्दिर।

इस तिलस्मी नाटक में देवी के वरदान से सामान्य सिपाही बादशाह बनता है। किन्तु अन्याय के कारण शापवश मारा जाता है।

सितमगर एक गरीब सिपाही है। वह कालका देवी की आराधना और जादू के बल पर रोशनाबाद का बादशाह बन जाता है। देवी का वरदान है कि यदि वह प्रतिवर्ष एक नरबलि देता रहेगा तो उसके राज्याधिकार पर कोई आपत्ति न आयगी किन्तु यदि वह ऐसा न कर सका तो स्वयं उसी का बलिदान हो जाएगा। सितमगर प्रत्येक पूनम की रात्रि को बारह बजे देवी की पूजा में नरबलि देता है।

सितमगर भूतपूर्व बादशाह के पुत्र नेकबख्त को पकड़कर देवी को नर-बलि में प्रसन्न करके एक तीर से दो निशाने साधने की युक्ति निकालता है। परन्तु लड़का किसी प्रकार उसकी कारागार से बच निकलता है। वह नगर की एक दहकानी लड़की 'नूर आलम' के पास पहुँचकर उसके यहां शरण लेता है। सितमगर भी नूर आलम पर मुग्ध होकर उसे अपने हरम में ले लेना चाहता है। अचानक एक दिन वह उस लड़के को नूर आलम के घर में देख लेता है और पुनः उसे बन्दी बनाकर कारागार की जंजीरों में जकड़ देता है। नूर आलम अपने सरक्षित की रक्षा के लिए अधीर हो उठती है और उसको खोजते-खोजते पा भी जाती है। नूर आलम ठीक उसी समय पर पहुँचती है जबकि सितमगर नेकबख्त की बलि चढ़ाने के लिए तैयार है। *नूर आलम प्राण रहते उस लड़के की रक्षा* में तत्पर होती है। सितमगर अब नूर आलम को ही पकड़कर बलि देना चाहता है। इस संघर्ष में नेकबख्त बचकर भाग निकलता है। वह शीघ्रता में घड़ी में बारह बजा देता है। देवी बारह बजे बलि न मिलने से क्रुद्ध हो उठती है। वह अपने विकराल रूप में प्रकट होकर सितमगर को खा जाती है और उस के अन्याय से सभी सम्बन्धित पात्र मुक्ति पा जाते हैं। नाटक में घड़ी सितमगर के लिये घड़ियाल बनकर काल बन जाती है। विक्टोरिया कम्पनी द्वारा अनेक बार अभिनीत।

जब जागे तभी सवेरा (पृ० ७४), ले० : पं० शिवदत्त मिश्र; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड संस बुकसेलर, वाराणसी; पात्र : पु० १०, स्त्री ७; अंक : नहीं; दृश्य : १६।

घटना-स्थल : अमरनाथ का कमरा, अस्पताल, मकान।

यह एक सामाजिक नाटक है। अमरनाथ डाक्टर बड़े ही गुलझे हुए व्यक्ति हैं। इनकी पत्नी गौरा भी बड़ी सुशील तथा चरित्रवान् हैं। गौरा को ससुराल में आये हुए काफी समय बीत जाता है, लेकिन उसके कोई भी संतान पैदा नहीं होती, जिसमें उसे ताने सुनकर बड़ा दुःख होता है, और वह बिना पति से बताए अपने भाई भोला के पास चली जाती है। भोला भी गरीबी में बड़ा दुखी है जिससे वह दुष्ट राजेन्द्रकुमार के हाथ अपनी सम्पत्ति बेचना चाहता है, लेकिन गौरा बचा लेती है। गौरा, उदय प्रताप मजिस्ट्रेट के यहां गरीबी के कारण नौकरानी का काम करती है। उदय प्रताप का साला राजेन्द्र-कुमार बहनोई की सम्पत्ति को चोरी-चोरी अपनी बहन के जरिये नष्ट कर रहा है। गौरा उसको बचाती है। राजेन्द्र एक धनी लड़की विमला को चाहता है, लेकिन विमला उसे नहीं चाहती। अचानक अमरनाथ मजिस्ट्रेट के घर गौरा को देखकर दुखी होते हैं और उसे (गौरा को) अपने घर ले जाते हैं। इधर विमला तथा राजेन्द्र भी अमरनाथ के घर जाते हैं और उदय प्रताप भी राजेन्द्र को पकड़ने के लिए जाता है। अन्त में गौरा के समझाने पर राजेन्द्र सही रास्ते पर आ जाता है।

ज़माना (सन् १९५४, पृ० १०६), ले० : रमेश मेहता; प्र० : चौ० बलवन्तराय प्रकाशन दिल्ली; पात्र : पु० ८, स्त्री ३; अंक : ४।

घटना-स्थल : पनवाड़ी का घर, सेठ की बैठक, मकान।

इस सामाजिक नाटक में निम्न मध्यवर्ग के परिवार की करुण कहानी चित्रित है। एक निर्धन पनवाड़ी भोलाराम खोमचा लगाकर पान बेचता है। परन्तु कमेटी वाले प्रायः उसका चालान करते रहते हैं और इस प्रकार उसकी आय का प्रमुख भाग दण्डस्वरूप उनकी भेंट हो जाता है। भोलाराम की पत्नी पार्वती धार्मिक वृत्ति की भारतीय नारी है जो भगवान् तथा भाग्य में पूर्ण विश्वास रखती है। परन्तु उनकी सन्तान 'सुन्दर' तथा 'चम्पा' पत्थर के भगवान् से ऊब चुके हैं। सुन्दर का अभिन्न मित्र जग्गू अवसरवादी और नास्तिक युवक है। वह सफाई से जेब कतरने की कमाई करता है; धर्म एवं जातीयता जैसे आदर्श उसकी दृष्टि में ढोंग हैं।

भोलाराम अपने पिता की तेरहवीं करने के लिए सेठ किरोड़ी मल से २०० रु० ऋण लेता है। वासना के दास सेठजी उस ऋण के बदले में चम्पा का सौदा करना चाहते हैं। 'जग्गू' सेठ की इस अधम वृत्ति को भांपने पर उसे हत्या की धमकी देता है। सेठ किरोड़ी-मल जग्गू की इस फटकार से आतंकित हो भविष्य में उस घर के आंगन में पांव न रखने का प्रण कर भाग जाता है।

'सुन्दर' के चित्रों की प्रदर्शनी देखकर सेठ राधाचरण की पुत्री मालती कलाकार 'सुन्दर' के दर्शन करने उसके निवास-स्थान पर आती है। 'जग्गू' 'मालती' को देखकर उसके बटुए पर अपनी दृष्टि गड़ाता है। पर सुन्दर एक स्वाभिमानी कलाकार है, जिसकी निर्धनता कला का संबल है। 'मालती' सुन्दर से यह कला सीखने के लिए उत्साहित है। विचारों के आदान-प्रदान के लिए दोनों गोल बाग में भेंट का निश्चय करते हैं। सेठ राधाचरण का नौकर 'नैनसुख' मालती तथा सुन्दर की इस भेंट की सूचना सेठजी को देता है। और इसे लोक-निन्दा का कारण बताता है। इससे सेठजी आग-बबूला हो जाते हैं।

दुर्भाग्यवश भोलाराम दुर्घटना के कारण नेत्रहीन हो जाता है। इस आकस्मिक विपत्ति के उपरान्त 'पार्वती' सेठ राधाचरण के घर कहारी का कार्य करने लगती है। परन्तु वह इस बात को अपने स्वाभिमानी पुत्र 'सुन्दर' से गुप्त रखती है। एक दिन मालती के निमन्त्रण पर जग्गू तथा सुन्दर उसके घर चाय पीने जाते हैं। वहां पार्वती ज्योंही सुन्दर को देखती

है उसके हाथों से फलों की टोकरी गिर पड़ती है। और मालती उसमें कहती है कि 'क्या तुम अन्धी हो' सुन्दर यह कहते हुए 'काश हमें कुछ दिखाई न देता' वहाँ से उठकर चला आता है। पार्वती भी अपना थला उठा घर की राह लेती है। धूर्त नैनसुख उस थैले में मालती का स्वर्णहार डाल देता है। पार्वती जब घर पहुँचती है तो उस हार को देखकर विस्मित हो जाती है। इस हार को लेकर बड़ा विवाद होता है। पार्वती इसे लौटाना चाहती है परन्तु जग्गू तथा सुन्दर इसे अपने पास रखने के पक्ष में ही हैं। 'नैनसुख' पुलिस इंस्पेक्टर को साथ लेकर भोलाराम के घर आ धमकता है और पार्वती को थाने जाना पड़ता है। इन परिस्थितियों से निराश सुन्दर जग्गू से आग्रह करता है कि वह चम्पा को लेकर इस क्रूर जमाने से कहीं दूर भाग जाए, क्योंकि वह अन्धे बाप और बेकार भाई के लिए बोझ है। परन्तु चम्पा यह सब सुनकर पागलों की तरह चिल्लाती हुई घर से बाहर की ओर भाग निकलती है। जग्गू उसे रोकने के लिए उसका पीछा करता है। सुन्दर पार्वती की श्रद्धा एवं विश्वास की प्रतीक नन्ही पाषाण-प्रतिमा को फेंकना चाहता है पर उतने में पार्वती द्वार से उसे पुकारती है और वह मूर्ति को यथा-स्थान धर देता है। *पार्वती तथा भोलानाथ* मालती की सहायता से थाने से वापस आ जाते हैं। जग्गू चम्पा को घसीटते हुए घर में प्रवेश करता है। पार्वती तथा भोलानाथ चम्पा को जमाने के अत्याचारों को दृढ़ता-पूर्वक सहन करने का सन्देश देते हैं।

अभिनय—आर्ट्स क्लब दिल्ली द्वारा सन् १९५३ में अभिनीत।

जयत (सन् १९३८, पृ० १२०), ले० रामनरेश त्रिपाठी, प्र० हिन्दी मन्दिर, प्रयाग, पात्र पु० ४, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य २६।
घटना-स्थल मकान, गरीबों की बस्ती।

इस सामाजिक नाटक में अधर्मी धनी के अत्याचार और उससे मुक्ति का मार्ग बताया गया है।

नाटक का नायक जयत है। सेठ मनोहर-लाल अपने अत्याचारों एवं अपनी दमनकारी नीतियों द्वारा सामान्य जनता को पीड़ित करता है। अपने *गुर्गों द्वारा वह धमनी की* पुत्री का अपहरण कर अपने महल में रखता है। जयत उसके इन कुकृत्यों का विरोध करते हुए जनता को साथ ले लेता है। सेठ मनोहर लाल को उसके आत्मीय तक छोड़ देते हैं और उसकी पत्नी तो उससे संबंध ही विच्छेद कर लेती है, पर उसमें परिवर्तन नहीं होता। जयत द्वारा प्रेरित युवक जब सेठ मनोहर लाल को आत्म-समर्पण के लिए बाध्य करते हैं तब वह वास्तविकता को समझ जाता है और उसका हृदय परिवर्तित हो जाता है। अंत में नाटक आदर्श की ओर उन्मुख हो गया है और सुखांत वातावरण में दूसरी परिणति हो जाती है। सेठ मनोहर लाल अपनी पत्नी के साथ ही गरीबों की बस्ती में रहकर उनके कल्याण का कार्य करने लगते हैं और सबको समान सुविधा देने के पक्षपाती हो जाते हैं।

जय चित्तौड (सन् १९७०, पृ० ६४), ले० विश्वम्भरनाथ 'वाचाल', प्र० भाग्योदय प्रकाशन, मथुरा, पात्र पु० ९, स्त्री ८, अंक ३।
घटना स्थल दिल्ली का महल, चित्तौड़, पथ, युद्ध-क्षेत्र।

यह ऐतिहासिक नाटक चित्तौड की रानी 'पद्मिनी' के अमर बलिदान 'जौहर' पर आधारित है।

महाराजा रत्नसिंह महामंत्री और सेना-पति के साथ प्रजाहित के लिए सभा-कक्ष में योजनायें बना रहे हैं कि पद्मिनी के सौंदर्य से अभिभूत दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी का पत्र-वाहक आ जाता है। वह राजा को अलाउद्दीन का पत्र देता है जिसमें पद्मिनी को समर्पित करने का आदेश है। राजा पत्र फाड़कर कुचल देता है और युद्ध की घोषणा हो जाती है। कुछ दिन बाद यवन-सेना गढ़ को घेर लेती है। रणोन्मत्त वीर राजपूत अपनी आन की रक्षा में युद्ध में रत रहते हैं।

द्वितीय अंक में अलाउद्दीन छल से राजा को बन्दी बनाता है और पद्मिनी की चतुराई तथा गोरा-बादल की वीरता और वीरसिंह

के प्राणोत्सर्ग से रत्नसिंह कारा-मुक्त होते हैं।

तृतीय अंक में अलाउद्दीन की विजय, रत्नसिंह-सहित समस्त राजपूतों की वीरगति और पद्मिनी का जौहर दिखाया गया है। इसे देखकर अलाउद्दीन भी कह उठता है—"ओह, सिवाय गुनाह के कुछ न मिला, या खुदा, यह क्या हुआ, राजपूतनियों ने जौहर कर लिया।"—"उफ खुदा तू मुझे मौत दे।"

जय जवान जय किसान (सन् १९६५, पृ० ८३), ले० : श्यामलाल 'मधुप'; प्र० : नवीनतम प्रकाशन, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक-रहित, दृश्य : १८।
घटना-स्थल : गांव के खेत, युद्धस्थल, घर, कश्मीर का शिविर।

भारत के प्रधान मंत्री स्व० लालबहादुर शास्त्री के 'जय जवान जय किसान' के नारे पर इस नाटक की रचना की गई है। जगत कड़ी मेहनत करके धरती से खूब अन्न पैदा करता है और विजयसिंह सेना में भरती होकर देश की रक्षा करता है। सभी मिलकर देश के विकास में काम करते हुए नए समाज का निर्माण करते हैं।

जय-पराजय (सन् १९३७, पृ० २१६), ले० : उपेन्द्रनाथ 'अश्क'; प्र० : नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद; पात्र : पु० ५, स्त्री ५; अंक : ५; दृश्य : ६, ८, ७, ७, ९।
घटना-स्थल : मेवाड़, युद्धभूमि, महल, उपवन कन्दरा।

इस ऐतिहासिक नाटक में मेवाड़ के युवराज चंड की वीरता दिखाई गई है।

मेवाड़ के युवराज चंड हंसाबाई के साथ विवाह करना अस्वीकार कर देते हैं, क्योंकि युवराज के विवाह के लिए जो नारियल आता है उसके संबंध में उसके पिता राणा लक्षसिंह ने हंसी में कहा था—"यह नारियल तो युवराज के लिए होगा, हम बूढ़ों के लिए कौन नारियल लाता है।" अतः हंसाबाई चंड की मां के रूप में ही आती है। इधर हंसा का भाई रणमल जो अपने राज्य से निर्वासित होकर मेवाड़ में रह रहा था—अपने षड्यन्त्रों से चंड के छोटे भाई राघव देव का वध करवा देता है। वह चंड को भी राज्य से निर्वासित करवा देता है। इस षड्यन्त्र में हंसाबाई भी उसका साथ देती है। किन्तु अंत में वह रणमल से डरने लगती है, क्योंकि रणमल स्वयं मेवाड़ का राजा बनने का स्वप्न देखने लगता है। हंसाबाई चंड को अपनी सहायता के लिए बुलाती है। चंड शत्रुओं का नाश करते हुए रणमल का वध कर देते हैं। जब हंसाबाई रणमल का शव देखती है तो रोती हुई चंड का अपमान कर देती है। इससे क्षुब्ध होकर चंड पुनः राज्य से निकल जाता है।

जय बाङ्ला (सन् १९७१, पृ० ७०), ले० : रामकुमार वर्मा; प्र० : राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली; पात्र : पु० १५, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : घर, चौकी, नदी का किनारा।

इस ऐतिहासिक नाटक में वर्मा जी ने पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा बंगला देश की जनता पर किए अत्याचारों का चित्रण किया है। प्रथम अंक में पाकिस्तानी सैनिकों की बर्बरता का चित्रण है और मुक्ति-फौज के स्वयंसेवक शिशिर दा के द्वारा जनता को संघर्ष करने की प्रेरणा दिखाई गई है। द्वितीय अंक में इन पाकिस्तानी सैनिकों के अत्याचारों के वर्णन के साथ-साथ सुधारानी नामक बंगाली लड़की और फ़ीरोज खां (बलूचिस्तानी) की निडरता और उदात्त चरित्र को अंकित किया है। अंतिम अंक में मुक्ति-वाहिनी की विजय का संकेत करते हुए धीरेन्द्रनाथ और सुधारानी के मिलन एवं अन्य पात्रों के साथ उनका देश की मुक्ति के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होना दिखाया गया है।

जय सोमनाथ (वि० २०१३, पृ० ७५), ले० : सीताराम चतुर्वेदी; प्र० : अखिल भारतीय विक्रम परिषद्; पात्र : पु० ११, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : १, १, १।
घटना-स्थल : सोमनाथ-मंदिर, मंडप, युद्धक्षेत्र।

महाराज भीमदेव सोलंकी अपनी रानियों—उदयमती तथा बकुला देवी सहित सोमनाथ मंदिर के अध्यक्ष ज्ञानदेव के अतिथि बनते हैं। ज्ञानदेव महाराज की अतिथि-सेवा का

भार अवन्तिका तथा जयमाला नामक देवदासियों को सौंप देते हैं। रानी बकुलादेवी पहले इस मंदिर में देवदासी रह चुकी थी। इस काल में समस्त देशों में तान्त्रिकों का आतंक फैला हुआ है। वामाचारी तान्त्रिक सिद्धि के लिए अनेक प्रकार के अनाचारों के साथ नर-बलि देते हैं। वीरेन्द्र नामक एक दुष्ट तान्त्रिक तथा उसका साथी धूम्रकुण्डल सोमनाथ मंदिर के डम्मोल नायक सेवाधारी को धनलोभ द्वारा जघन्य इस कुकृत्य में सम्मिलित करता है और अवन्तिका का अपहरण करने में सहायता करने के लिए प्रेरित करता है परन्तु वह स्वीकार नहीं करता। अवन्तिका का पिता मरुकच्छ का सेठ समस्त मोह-ममता को त्याग कर उसे मंदिर में देवदासी बनने को छोड़ गया था। उसका गगलभाई नामक सेवक सेठ के पास से कुछ धन तथा वस्त्रादि अवन्तिका के लिए लाता है जिसे वह अत्यन्त तिरस्कार के साथ अस्वीकार कर देती है। वीरभद्र चोरी से अवन्तिका को बलि देने के लिए पकड़ने आता है परन्तु भीमदेव तथा ज्ञानदेव के समय पर पहुँच जाने से उसकी रक्षा हो जाती है। ज्ञानदेव वीरभद्र को अपमानित करते हैं परन्तु वह अपने कुकृत्य से बाज नहीं आता। इस सम्बन्ध में भीमदेव का सेना-नायक किसी षड्यन्त्र का सन्देह करते हुए ज्ञानदेव को सूचित करता है। एक दिन पूजा के समय रानी बकुलादेवी विक्षिप्त हो कहती है—"मुझे भगवान् दर्शन देकर कह गए हैं कि वह जा रहे हैं।" इसी अवसर पर अमात्य विमलदेव महमूद की सेना के तीव्रगति से आने की सूचना देता है और साथ ही डम्मोल घोषित करता है कि कोई अवन्तिका को बलपूर्वक घोड़े पर बैठाकर ले गया है। धूम्रकुण्डल डम्माल को मंदिर के बाहर ले जाकर उसकी हत्या कर देता है। अवन्तिका किसी भांति वीरभद्र के चंगुल से मुक्त होकर आती है, वीरभद्र भी उसके पीछे-पीछे आता है। वह त्रिशूल से अपनी रक्षा करती है और वीरभद्र भाग जाता है। बकुलादेवी ध्यान-मग्न अवस्था में कहती है 'कि भगवान सोमनाथ रक्त चाहते हैं।' दूसरे साथ ही विमलदेव महमूद के पहुँचने की सूचना देते हैं। महाराज भीमदेव सेना-सहित युद्ध के लिए जाते हैं तथा ज्ञानदेव समस्त देवदासियों को सुरक्षा की दृष्टि से पातालगृह में भेज देते हैं। महमूद अपने सेनाध्यक्ष तथा वीरभद्र-सहित मंदिर के द्वार पर पहुँचता है परन्तु अवन्तिका भीतर से कुंडी लगा लेती है और ज्ञानदेव बाहर से माग रोकते हैं जिन्हें बलात् गिरा दिया जाता है और इस प्रकार वीरभद्र अपने अपमान का बदला लेता है। वीरभद्र महमूद को देवता की मूर्ति भग करने से रोकता है परन्तु वह कुछ न सुनकर द्वार पर गदा प्रहार करता है जिसके फलस्वरूप अवन्तिका द्वार खोलकर त्रिशूल-सहित बाहर निकलती है। इसी समय बकुलादेवी तलवार से महमूद पर प्रहार करती है परन्तु वह उसे मार गिराता है। इसी अवसर पर मालवराज भोजदेव की सेना आकर महमूद को चारों ओर से घेर लेती है। महमूद इसे धोखा समझकर वीरभद्र तथा धूम्रकुण्डल की हत्या कर देता है। साथ ही अवन्तिका भी मर जाती है और ज्ञानदेव भी प्राण त्याग देते हैं।

अभिनय—पटेल स्टेडियम, बम्बई के सेंट्रल फोक्स स्टेज पर सन् १९५७ में अभिनीत।

जया नाटक (सन् १९१२, पृ० ३२), ले० : हरिहर प्रसाद जिज्जल, प्र० अग्रवाल प्रेस, गया, पात्र पु० १६, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ६, ६, ३, ६।
घटना-स्थल राजमहल, बन्दीगृह।

इस ऐतिहासिक नाटक में नान्दी और सूत्रधार का प्रयोग मिलता है। चित्तौड़ के राजा रत्नसेन को अलाउद्दीन खिलजी के सिपाहियों ने धोखा देकर बन्दी बना लिया है। उसकी एकमात्र पुत्री जया इस घटना से शोकातुर है अतः वह अपनी सखी कुसुम को साथ लेकर जैसलमीर की ओर चलती है। रास्ते में जया को यवन सरदार घेर लेते हैं, लेकिन ठीक उसी समय जैसलमीर का कुंवर जैपाल वहाँ पहुँच जाता है और सरदार को दो ही तलवार में दो टुकड़े कर देता है। जैपाल जया को साथ लेकर जैसलमीर आता है और प्रतिज्ञा करता है कि जब तक तुम्हारे पिता को नहीं छुड़ा-

ऊंगा तब तक मैं आराम नहीं करूंगा। अन्त में जैपाल अलाउद्दीन के सभी सिपाहियों और पहरेदारों को मारकर रत्नसेन को छुड़ा लेता है। रत्नसेन भी उचित अवसर पाकर जया की शादी जैपाल से कर देता है।

ज्योत्स्ना (सन् १९३६, पृ० १००), ले० : रामादीन पाण्डेय; प्र० : पुस्तक-भण्डार, लेहरियासराय; पात्र : पु० ८, स्त्री ४; अंक : ४; दृश्य : १०, ८, ८।
घटना-स्थल : गांव, रोगी का घर।

इस सामाजिक नाटक में ग्रामोद्धार की कहानी है। नायक वीरेन्द्र अपने त्यागबल, ज्योत्स्ना की तपस्या और प्रभा की सेवावृत्ति के बल पर गांव की स्थिति सुधारता है। मृत्युजय और रजनी के जीवन का गांव पर प्रभाव पड़ता है। गांव में आज भी आदर्श पुरुष और साध्वी नारियों का अभाव नहीं है। दारोगा और ठकवाल अपना अपराध स्वीकार कर पश्चात्ताप करते हैं। भैरव एक मूर्ख और बलवान् किसान है। वह आत्म-समर्पण द्वारा गांव का मनोबल ऊँचा उठाता है। ज्योत्स्ना मृत्युंजय की सेवा-परायणा शिक्षिता कन्या गांव के सुधार में जीवन लगा देती है। प्रभा भैरव की भोली-भाली गृहिणी है जो बीमारों की सेवा करनेवाले पादरी की सहायता करती है। पादरी प्रभा को ईसाई बनाना चाहता है पर वह प्रलोभन को ठुकराकर सती-धर्म का पालन करती है।

जरासंध-वध (सन् १९६२, पृ० ८०), ले० : अनिरुद्ध-यदुनन्दन मिश्र 'स्नेह-सलिल'; प्र० : श्रीगंगा पुस्तक मन्दिर, पटना; पात्र : पु० ८, स्त्री २।
घटना-स्थल : मथुरा, द्वारिका, युद्धभूमि।

इस पौराणिक नाटक में जरासंध के अत्याचारों और कृष्ण द्वारा उसके वध का चित्रण है।

यह एक पौराणिक नाटक है। प्राचीन मगध देश के राजा जरासंध की लड़की का विवाह मथुरा-नरेश कंस के साथ हुआ था। कृष्ण द्वारा कंस के मारे जाने पर जरासंध कृष्ण से शत्रुता ठान लेता है। वह मथुरा पर अठारह बार भयानक आक्रमण कर असंख्य नर-नारियों का संहार करता है। अन्त में कृष्ण जरासंध के भय से भागकर द्वारिकापुरी में अपनी राजधानी बना लेते हैं। एक बार कृष्ण अर्जुन से कहते हैं—"आज तक मुझे जितने विरोधियों से पाला पड़ा, उनमें जरासंध ही सबसे अधिक प्रभावशाली है। यही एक प्रतिपक्षी है, जिसका भय दिन-रात मेरे जी से नहीं जाता।"

जरासंध अनेक बन्दी राजाओं की बलि देकर महारुद्र की उपासना करना चाहता है किन्तु कृष्ण, भीम, अर्जुन छद्म वेश में उसके महल में पीछे के दरवाजे से घुस आते हैं और मल्ल युद्ध के लिए उसे ललकारते हैं। वीर जरासंध इसके लिए तैयार हो जाता है जिसमें वह कृष्ण से मल्ल युद्ध करते समय मारा जाता है और अन्त में उसका पुत्र सहदेव अन्तिम संस्कार कर राज्य का अधिकारी बनता है।

जला मशाल (सन् १९६३, पृ० ७६), ले० : अनिरुद्ध-यदुनन्दन मिश्र 'स्नेह-सलिल'; प्र० : श्री गंगा पुस्तक मन्दिर, पटना; पात्र : पु० ७, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ५, ४, ४।
घटना-स्थल : नेफा, लद्दाख, ग्राम, युद्धभूमि।

यह राजनीतिक नाटक भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है जिसमें *नेफा और लद्दाख के सीमावर्ती ग्रामीण* बड़ी बहादुरी से चीनी बर्बरों का मुकाबला करते हैं। बहादुर ग्रामीण मोहनसिंह चीनी मेजर के सभी षड्यन्त्रों को विफल करता है। क्रान्तिकारी सेनासिंह की पुत्री मनु तथा मुखिया की पत्नी माया दुश्मनों के समक्ष यह प्रमाणित कर देती है कि भारत की नारियां भी पुरुषों की तरह वीर तथा देश-भक्त हुआ करती हैं।

सेनासिंह उस युद्ध में मारा जाता है, किन्तु उसके शौर्य से जनता का उत्साह बढ़ता है। चाऊ-माऊ मुर्दाबाद के नारे चीनी सैनिकों का मनोबल गिरा देते हैं। नेफा और लद्दाख का प्रत्येक प्राणी चीनियों को मुंह-तोड़ उत्तर देता है। अन्त में चीनी सैनिक इस बहादुरी को देखकर पीछे हट जाते हैं।

जवानी की भूल (सन् १९३३, पृ० ९६), ले० : शिवराम दास गुप्त; प्र० : उपन्यास

बहार जाकिम, काशी, पात्र पु० ५, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ८, ६, ६।
घटना-स्थल मकान, बाग, ताड़ीखाना, मार्ग, काली मंदिर।

इस सामाजिक नाटक में विधवा को वेश्या-रूप में दिखाकर कामुकों और पुलिस की लीला चित्रित की गई है।

विधवा कामिनी को कामी पुरुष भगाकर ले जाता है। विवश हो वह वेश्या बन जाती है। धनी कालिदास को उसका मित्र गौरीनाथ अपने फंदे में फंसाकर ले जाता है और कामिनी से परिचय कराता है। कालिदास कामिनी के मोह-फांस में बंध जाता है और उसे घर लाता है। अपने मित्र सोहन के समझाने पर भी वह नहीं मानता। आखिरकार कामिनी कालिदास का सारा धन खींच लेती है, जिससे वह ऋणी हो जाता है। महाजन का ऋण न चुकाने पर वह गिरफ्तार भी होता है। गिरफ्तारी से बचने के लिए कालिदास कामिनी से गहने मांगता है, तब कामिनी इन्कार कर देती है, जिसमें कालिदास की आंखें खुलती हैं। उधर गौरीनाथ और कामिनी में पुनः मेल हो जाता है। कालिदास जेल से छूटने पर गौरीनाथ और कामिनी को एकत्र देखता है तो उनसे झगड़ा करता है। गौरीनाथ कालिदास पर गोली चलाता है। गोली कामिनी को लगती है पर गौरीनाथ स्वयं पुलिस को बुलाता है और कालिदास को उल्टा दोषी ठहराता है, किन्तु उसी बीच कालिदास भाग जाता है। अन्त में गौरीनाथ को अपनी लड़की का पता लगता है जिससे कामिनी के उस्ताद चम्मन से झगड़ा हो जाता है। गौरीनाथ की गोली से चम्मन मारा जाता है। फिर वह भी आत्महत्या करना चाहता है पर पिस्तौल के खाली रहने पर सजा पाने के लिए पुलिस में आत्मसमर्पण कर देता है। उधर भिखारी वेषधारी कालिदास को पुलिस गिरफ्तार करती है, पर उसी समय गौरीनाथ पहुंचकर अपना अपराध स्वीकार कर लेता है कि कामिनी का वह स्वयं हत्यारा है। सोहनलाल की सहायता से उसी समय कालिदास की पत्नी करुणा आ जाती है। इस तरह दो दम्पतियों के मिलन से नाटक की समाप्ति होती है।

जवानी की भूल (वि० १६८६, पृ० १२३), ले० जमुनादास मेहरा, प्र० हिन्दी पुस्तक एजेंसी, २०३ हेरिसन रोड, कलकत्ता, पात्र पु० १७, स्त्री ८, अंक ३, दृश्य ६, ६, ३।
घटना-स्थल वेश्या-गृह।

इस सामाजिक नाटक में वेश्या-प्रेमी उस युवक की दशा दिखाई गई है जो अपनी सती नारी को छोड़ देता है।

जवानी की उत्तेजना में रमानाथ का पुत्र मानिकलाल अपनी पत्नी की उपेक्षा करते हुए फूलमनी नामक वेश्या के जाल में फंस जाता है और अपना सर्वस्व नष्ट कर डालता है। मानिक पर खून करने का आरोप भी लगाया जाता है। एक स्थल पर फूलमनी मानिक से उसके विश्वासघातिनी कहने पर कहती है "मैं क्या करूं, जैसा किया है, वैसा पाओगे। मैं क्या तेरी खुशामद करने गई थी कि तू मेरे घर में आ, दौलत दे और जल्लाद बन।" अन्त में अपने मित्र रामसेवक की सहायता से उसका उद्धार होता है और वह फिर से अपनी पत्नी को स्वीकार करते हुए कहता है "ले चलो—ले चलो उस गृहलक्ष्मी के सामने ले चलो—नरक से तो निकाल चुके अब स्वर्ग में ले चलो।"

जसमा (सन् १६६३), ले० मनोहर प्रभाकर, प्र० कल्याणमल एंड संस, जयपुर, 'जसमा तथा अन्य संगीतरूपक' में संग्रहीत, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अंक-दृश्य रहित।
घटना स्थल महल, तालाब, झोंपड़ी।

गुजरात की एक प्रसिद्ध लोककथा जसमा-ओडन पर आधारित एक लघु संगीतरूपक है। जसमा ओडन जाति की एक सुन्दर मालव-युवती है। एक चारण द्वारा उसके रूप-यौवन का वर्णन सुनकर गुर्जर-नरेश सोलंकी उस पर मुग्ध हो जाता है और उसको प्राप्त करने के अनेक प्रयत्न करता है। एक बड़ा तालाब खुदवाने के लिए वह मालव के समस्त ओडन मजदूरों का आमंत्रित करता है। जसमा भी अपने पति के साथ वहां आती

है। एक दिवस जब जसमा थककर तम्बू में अपने पुत्र को लोरी सुना रही थी तब सोलंकी राजा आकर उससे प्रणय-निवेदन करता है, जिसे जसमा अस्वीकार करती है। परिणाम-स्वरूप राजा एक दिन बलपूर्वक उसे महलों में बुलवाता है। जसमा राजा को शाप देती है कि तेरा तालाब सूख जाए और अन्त में वह भारतीय नारी के गौरव को सुरक्षित रखते हुए अपने प्राण त्याग देती है।

जहर (सन् १९६६, पृ०), ले० : कणाद ऋषि भटनागर; प्र० : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : ड्राइंगरूम, घर, फैक्टरी।

प्रस्तुत नाटक में आधुनिक समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश है। लेखक श्यामचरण को मुख्य पात्र मानकर आज के समाज की भ्रष्ट प्रवृत्तियों का उद्घाटन करता है। श्यामचरण दवाइयों में मिलावट करने की फैक्टरियां बनाकर जनता को धोखा देता है, परंतु जनता भी जागरूक होने पर उससे प्रतिशोध लेना चाहती है। अंत में वह स्वयं अपनी फैक्टरी का नकली जहर खा कर तड़पता ही रहता है। मरता नहीं, क्योंकि उस जहर में भी मिलावट है।

जहाँगीरशाह और गौहर (सन् १८७८), ले० : खां साहब 'आराम'; प्र० : नसरवान मेहरवान जी; पात्र : पु० ५, स्त्री २; अंक के स्थान पर बाब में विभाजित।

इस तिलस्मी नाटक में जहाँगीरशाह और गौहर के प्रणय की कहानी है। जहाँगीरशाह के त्याग, बलिदान, प्रणय का अत्यन्त शृंगारिक वर्णन है। नाटक में दैवी शक्ति, चमत्कार, रूप-परिवर्तन आदि का प्रयोग किया गया है। सम्पूर्ण नाटक गीतों, कविताओं और गज़लों तथा शेरो-शायरी में ही लिखा गया है। नाटक के बीच-बीच में रंगमंच के संकेत गद्य में दिये गये हैं। कार्यों और घटनाओं की सूचना नाटककार देता चलता है।

जहरी सांप (सन् १९०६), ले० : नारायण प्रसाद बेताब; प्र० : बेताब पुस्तकालय, देहली; पात्र : पु० १४, स्त्री ८; अंक : ३, दृश्य : १०, ७, ५।

इस सामाजिक नाटक में सिपहसालार बाकर की बेटी गुरशीद के पातिव्रत की महिमा दिखाई गई है। इसके अतिरिक्त डाक्टर गुमानी जीलानी की लड़की अकबरी का बहराम खाँ के बेटे हमीद से प्रेम प्रकाशित किया गया है। अकबरी का पिता अपनी पुत्री से लड़कर विदेश चला जाता है और उसकी माँ हज करने चली जाती है। इस लड़की को बहराम खाँ के संरक्षण में रखा गया है और वह उसी के बेटे से प्रेम करती है।

अभिनय—यह नाटक पारसी थियेट्रिकल कम्पनी आफ बम्बई द्वारा २७ जून १९०६ को प्रथम बार विक्टोरिया थियेटर, बम्बई में अभिनीत हुआ।

जागरण (वि० १९९८, पृ० १७४); ले० : गेवाधर झा; पात्र : पु० १६, स्त्री ८; अंक : ३; दृश्य : ७, ८, ८।
घटना-स्थल : राजमहल, उद्यान, शिवजी का मंदिर।

इस ऐतिहासिक नाटक में छुआछूत, अमीर-गरीब, बड़े-छोटे, प्राचीन-अर्वाचीन एवं पुरुष-स्त्री की गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास किया गया है।

कमल देव रामगढ़ का विलासी राजा है। उसके ऊपर उत्कल का राजा राजदेव आक्रमण करता है। राज्य की रक्षा में कमल देव की कन्या माधुरी और मंत्री-पुत्री निर्मला पुरुष के वेश में युद्ध करती है। मंत्री-पुत्र वसन्त बड़ी वीरता से युद्ध करके रामगढ़ की रक्षा करता है। उसे विद्रोही समझकर बन्दी बनाया गया था किन्तु माधुरी उसे मुक्त कराती है और वह प्राणों की बाजी लगाकर रामगढ़ की रक्षा करता है। माधुरी वसन्त की रक्षा करते हुए कहती है—'उस दिन के बाद उस सुन्दर युवक की जिसे वसन्त कहते हैं, केवल कीर्ति-कथायें ही सुनने को मिलीं। मैं बचाऊँगी, उन्हें कारागार की यंत्रणाओं से मुक्त करूँगी।"

मूलकथा के साथ-साथ अछूतोद्धार की कथा भी चलती रहती है। शिवजी के मन्दिर में पुजारी जी पूजा करने वालों से

पैसे गबन करते है। नन्दू नामक अछूत पूजा करना चाहता है पर पुजारी उसे घुसने नही देता। दर्शन करते समय भक्तिन माया के गले का हार टूट कर गिरता है तो उसे पुजारी अपने बक्स में रख लेता है और मागने पर भी नहीं देता। मंत्री-पुत्र बसंत हरिजनों का पक्ष लेकर पुजारी का भडाफोड करता है।

जागीरदार (सन् १६४६, पृ० १०३), ले० डा० नारायण विष्णु जोशी, प्र० हिन्दी ज्ञान मन्दिर लि०, बम्बई, पात्र पु० १२, स्त्री १०, दासियां तथा नर्तकियां।
घटना-स्थल विशाल भवन, अछूत निवास, जागीरदार का विलास-कक्ष।

जागीरदारो के अत्याचार की कहानी नाटक मे व्यक्त है। कथानक का आरम्भ एक अछूत काश्तकार के झोंपडे से होता है। गीत गाती हुई एक अछूत पत्नी राजल चक्की पीस रही है। अचानक उसका भाई आकर उसे सुन्दर वस्त्र देता है, और जीजा के सम्बन्ध में पूछता है। राजल बताती है कि वे जागीरदार के यहाँ बेगार करने गए हैं तभी जागीरदार का नौकर आकर राजल को भी चक्की पीसने के लिये जागीरदार के यहा ले जाना चाहता है। राजल के अस्वीकार करने पर जागीरदार के नौकर उसे और उसके भाई को पीटते है और बलात् राजल को पकड ले जाते है। समुन्दरसिंह राजल नामक स्त्री को जागीरदार के हवाले कर उसे प्रसन्न करना चाहता है। जागीरदार शराब पीकर राजल के पास जाता है। राजल आत्म-रक्षा के लिये कमरे मे टगी बन्दूक उठाती है। सहसा बन्दूक के चलने पर राजल मर जाती है। इधर इज्जत-आबरू के भय से भीख राजल को खोजता फिरता है। सुखलाल शहर से पुलिस बुला लाता है। पुलिस-अफसर जागीरदार और उसके नौकरों से पूछताछ करता है। मोनिया नौकर राजल की मौत का राज खोल देता है। पुलिस जागीरदार, समुन्दरसिंह तथा कामदार को अपराधी मानकर पकड लेती है। महराज पुलिस को पाँच हजार की रिश्वत भी देता है लेकिन उससे उसका कोई काम बन नही पाता है। सभी जेल मे बन्दी हो दण्ड भोगते है।

जागीरदार (सन् १९५६, पृ० १५७), ले० उदयसिंह भटनागर, प्र० गोरीशंकर शर्मा, भारती साहित्य मंदिर, फव्वारा, दिल्ली-६, पात्र पु० ६, स्त्री १, अंक ४, दृश्य ६, ५, ६, ६।
घटना-स्थल जमीदार का महल-कक्ष, ग्राम-पचायत स्थल।

जमीदारों के अत्याचार से पीडित व्यक्तियों की कहानी इस नाटक मे प्रस्तुत की गई है। अकाल के समय जागीरदार मानसिंह सेठ लक्ष्मीचन्द के साथ फैक्ट्री खोलना चाहता है। जैत नामक व्यक्ति के विरोध करने पर जागीरदार उस पर क्रुद्ध होता है और धन-जन बल से विरोध दबा देता है। शराबी जमींदार लखमीचन्द के द्वारा कमिश्नर को डाली देकर प्रसन्न रखता है। सारी प्रजा जमीदार की अनेक यातनाएँ चुपचाप सहती है। केवल एक पत्रकार पाठक विरोध करता है। परिणामत जागीरदार के आदमी उसे उठाकर ले जाते है और हत्या की योजना बनाते हैं, पर सफल नही हो पाते। पाठक मुक्त होकर पचायती राज्य स्थापित करता है, लेकिन जनता का हित भूलकर स्वार्थी बन जाता है। वह जैत पर लडकी भगाने का अभियोग लगाकर मुकदमा चलाता है। उन्ही दिनों सेठ के यहा डाका पडता है। जैत गाँव की स्थिति से दुखी है। उसके विचारो का साथ निर्मला देती है और सभी भले-बुरे कार्यों का वह उसको उत्तरदायी घोषित कर देती है। दुखी जैत गाव छोड-कर चला जाता है।

जागो फिर एक बार (सन् १९६३, पृ० ३३), ले० प० सीताराम चतुर्वेदी, प्र० कलकत्ता नागरिक मच, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अक ३, दृश्य १, १, १।
घटना-स्थल मडप, चौतरा।

इस नाटक मे चीनी आक्रमण के समय एक वीर-परिवार के बलिदान का वर्णन है। यह कलकत्ते के एक दृश्य बहुपीठात्मक विलम्बित मच पर प्रस्तुत हुआ। तीनों दृश्य एक ही

दृश्यपीठ पर हुए। यह नाटक केवल इस प्रकार के रंगमंच पर ही खेला जा सकता है।

जागो हिन्दुस्तान (सन् १९६१, पृ० ७२), ले०: अनिरुद्ध यदुनन्दन मिश्र 'स्नेहसलिल'; प्र०: श्री गंगा पुस्तक मन्दिर, पटना; पात्र: पु० ६, स्त्री २; अंक: ४, दृश्य: ४, ३, ४ ३।
घटना-स्थल: नदी-तट का उपवन, आर्य-शिविर, दरबार, एक आश्रम, पहाड़ी।

यह मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक नाटक है। नाटक में चलने वाला इतिवृत्त मुख्यतः तीन लम्बे युगों में विभाजित है। पहला आर्य-अनार्यों का समन्वय-संघर्ष; दूसरा विदेशी लुटेरों और अंग्रेज सत्ताधारियों के द्वारा उलटफेर और स्वतंत्रता-प्राप्ति के अनन्तर के भारत की स्थिति। सभ्यता, संस्कृति, अंग्रेज-यान्त्रिक और आर्य कुमार आदि इस नाटक के पात्र हैं। एक अंग्रेज बड़ी कठिनाई से समुद्र लाँघकर भारत में आता है। वह अपने चातुर्य तथा नीतिपूर्ण राजनीति से हमारा शासक भी बन बैठता है। एक ही आर्य कुमार आर्यावर्त की पुरातन पद्धतियों का विरोध करता है। वही अंग्रेज कार्यकर्ता बनता है। वह सुभाष की हत्या करता है और गांधी को मारने का भी दुष्कर्म कर बैठता है। फिर भी जनता उसे निर्वाचित करती है, जिससे वह अपने नये-नये जाल फैलाता है। वह भारत की भोली-भाली जनता को धोखा देकर ठगने का प्रयास करता है।

जानकी मंगल (वि० १९३३, पृ० ६५), ले०: शीतला प्रसाद त्रिपाठी; प्र०: ज्ञान मार्तण्ड यंत्रालय, प्रयाग; पात्र: पु० ६, स्त्री ४; अंक: ३; दृश्य: ३।

इस पौराणिक नाटक में राम-जानकी का विवाह दिखाया गया है।

इस नाटक का आरम्भ 'नान्दी'-पाठ द्वारा होता है, जिसमें भगवान् राम की वन्दना की गई है। नान्दी के बाद सूत्रधार एवं नटी उपस्थित होकर नाटक का विषय और उसकी कथावस्तु का संकेत देते हैं।

नाटक के प्रथम अंक का प्रारम्भ मालियों के गीत—

"आज जानकी केर विवाह,
आए यहाँ सकल नर नाह।"

से होता है। सीताजी अपनी सहेलियों के साथ फुलवाड़ी में 'गौरीपूजन' के लिए आती हैं। उधर रामचन्द्र भी गुरु के हेतु फुलवाड़ी में पुष्प लेने आते हैं। सीता की एक सखी राम के अनिंद्य सौन्दर्य का वर्णन करती है। राम और सीता का वाटिका में साक्षात्कार होता है। राम और सीता एक-दूसरे के सौन्दर्य पर मुग्ध होते हैं। सीता राम का ध्यान करती सखियों के साथ घर को लौटती है।

नाटक के द्वितीय अंक में सीता-स्वयंवर का दृश्य है। महाराज जनक की राजसभा में देश-विदेश के राजा और राजकुमार विद्यमान हैं। एक सुन्दर मंच पर शिव-पिनाक तोड़ने के लिए रखा हुआ है। स्वयंवर में उपस्थित विविध राजा धनुष के साथ अपने पराक्रम का प्रदर्शन करते हैं, किन्तु कोई भी 'शिवधनु' की शक्ति-परीक्षा में सफल नहीं होता। अन्त में रामचन्द्र जी ने गुरु की आज्ञा पाकर शिव-पिनाक को तोड़ दिया। तब सीता जी वरमाला राम के गले में डालती हैं।

नाटक के अंतिम दृश्य में परशुराम-आगमन, लक्ष्मण एवं परशुराम का संवाद, परशुराम का आक्रोश तथा भ्रम, राम की नम्रता तथा धनुष की प्रत्यंचा को चढ़ाने पर परशुराम की क्षमा-याचना का दृश्य है।

जानहार (सन् १९००, पृ० १००), ले०: कुदसिया जैदी; प्र०: आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६; पात्र: पु० ८, स्त्री ४, एक्ट ४ और सीन २, १, १, १।
घटना-स्थल: वेश्यागृह।

यह नाटक अलग्जेंडर ड्यूमा के 'कमील' से प्रभावित है। इसमें लखनऊ की तवायफों का विवरण दिया गया है। इसमें तवायफों की गुफ्तगू, उनकी जेहनीयत, उनके मामलों का बढ़िया नक्शा खींचा गया है। कोई तवायफ जवान है, कोई अधेड़ उम्र की। किसी की सूरत अच्छी है, किसी की मामूली, कोई

सफल है, कोई सफलता की खोज में है। योरुप और हिन्दुस्तान की तवायफों का भी चित्रण है। दोनों के अलग-अलग कायदे हैं। जरीना और जावेद की मुहब्बत असली होते हुए भी नकली का रूप है। जरीना, अन्ना, परवीन, अलमास, मीनो नामक वार-वनिताओं पर नवयुवक जावेद, जमीदार कैसर, ताल्लुकेदार मजूर मुग्ध हैं।

जाने अनजाने (सन् १९६२, पृ० ६१), ले० ओंकार शरद, प्र० राम रजना प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र पु० ४, स्त्री ४, अक २, दृश्य ४, २।

घटना स्थल एक सजा कमरा। एक ही मकान में विभिन्न कक्ष।

इस सामाजिक नाटक में एक विवाहित मद्यप हवाई सैनिक का जीवन दिखाया गया है।

जितेन एक हवाई सैनिक है जिसकी पत्नी मधु उससे बहुत प्यार करती है। वह एक प्रश्न उठाती है कि दुनिया में शादी-शुदा लोग ज्यादा है या चुपचुप प्रेम करने वाले। दोनो इस प्रश्न को अनुत्तर छोड़कर सो जाते हैं। दूसरे दृश्य में मधु अपने बच्चो के साथ अपनी मा प्रतिभा के घर मे दिखाई पडती है, और अपने सैनिक पति के जीवन के विषय म सशक हो उठती है। तीसरे दृश्य मे जितेन एक पार्टी मे अत्यधिक शराब पीकर गाडी चलाता है और उसकी असावधानी से एक व्यक्ति आहत हो जाता है। अस्पताल मे फोन द्वारा जितेन इसका पता लगाता है और अपनी नौकरी छूटने और कारावास का दण्ड पाने की खबर सुनकर काप उठता है।

दूसरा अक सर्वथा स्वतत्र है। इसमे जीवन, डाक्टर और शशि का वार्तालाप है। इसके द्वारा शशि की विक्षिप्त अवस्था और पुलिस की करतूत का वर्णन है। जीवन अपनी प्रेयसी को टेलीफोन करता है कि मैं अस्पताल मे हूँ। मुझे मिनर्वा होटल के सामने चोट आ गई। जितेन अपने मन में यह सुनकर सोचता है कि 'पता नही वह कैसा आदमी था। शायद वह भी शादी-शुदा रहा हो। शायद वह भी मेरी तरह अपने बीवी-बच्चों को प्यार करता रहा हो।' लेखक लिखता है, 'दो अको मे अलग-अलग दो बिलकुल भिन्न कथाएँ हैं। पर एक घटना दोनो को अत मे जाकर एक कर देती है। अभिनय दिसम्बर १९५१ में प्रयाग मे हो चुका है।'

जामे-कहकहा नाटक(सन् १८९९, पृ० २८), ले० हरिहर प्रसाद, प्र० मगध शुभकर प्रेस गया, पात्र पु० ३, स्त्री २, अक २, दृश्य ३, ३।

इस पद्यबद्ध नाटक म वेश्यागमन से एक धनी व्यक्ति की दुर्दशा दिखाई गई है। नाटक के बीच-बीच म रगमचीय सकेत गद्य मे हैं।

तारकेश्वर नामक व्यक्ति बनारस की अख्तर जान वेश्या से प्रेम करता है और उसके साथ हरिहर क्षेत्र का मेला देखने जाता है। वहाँ अहमदुल जरीफ नामक मुसलमान उसे उड़ा ले जाता है। तारकेश्वर पर वेश्या के कारण कर्ज हो जाता है और वह अन्त में भिखारी बन जाता है।

जलियाँवाला बाग (सन् १९४६, पृ० १६२), ले० श्री रामचन्द्र जासरे, प्र० श्री भारतीय प्रकाशन मन्दिर, २८, वासतल्ला गली, कलकत्ता, पात्र पु० १३, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ७, १०, ५।

घटना-स्थल भारत व इग्लैंड, जलियावाला बाग।

इस राजनीतिक नाटक म जलियावाला बाग मे अग्रेजी अफसरों का अत्याचार और उसका परिणाम दिखाया गया है।

जनरल डायर पजाब का फौजी गवर्नर बन कर भारत आता है। यहाँ वह मनमाने अत्याचार करता है। जलियावाला बाग की निर्मम घटना भी उसी के आदेश से होती है। भारतीय स्वतन्त्रता के उपासक अनेक क्रान्तिकारी यत्र-तत्र सरकार की नीद हराम कर रहे हैं। जलियावाला बाग की घटना का प्रतिशोध लेने के लिये क्रान्तिकारी युवक मदनसिंह लन्दन पहुँचता है। वहा इण्डिया हाउस मे भरी सभा मे जनरल डायर और जैटलैण्ड को गोली से उड़ा देता है। अन्त मे

उसे फांसी होती है, जिसे वह हँसते हुए स्वीकार करता है।

जिन्दा लाशें भूखे भेड़िये (सन् १९६६, पृ० १११), ले० : श्रीगृत; प्र० : नरवदा बुक डिपो, जबलपुर; पात्र : पु० १२, स्त्री ३; अंक : ३।

घटना-स्थल : घर, सड़क, डाक्टर की डिस्पेंसरी, वेश्यालय, वकील का घर, अदालत का कमरा।

इस नाटक में धर्म व समाज के ठेकेदारों की काली करतूतों का भण्डाफोड़ किया गया है। मास्टर उदयशंकर सड़क पर पड़े हरिजन बालक गोपाल को घर पर लाकर पुत्रवत् पालता है। एक दिन गोपाल, सूरज, चन्दा, तारा आदि शाम को तुलसी-चौरे के सामने भगवान् की आरती करते हैं और पुजारी धर्मानंद चमार के लड़कों के साथ आरती करने के लिये उदयशंकर को सर्वनाश हो जाने का शाप देता है। उदयशंकर अपने प्राणों का मोह छोड़कर जन सेवा करता है। सर्वस्व बलिदान के उपरान्त भी क्षय रोग से पीड़ित होने पर इलाज के लिए उसके पास एक पैसा भी नहीं है। धर्मानंद ठाकुर जी के नाम पर उदय को बीस रुपये कर्ज देता है। बाबा जी कंचन से रुपये लेकर उदय की सहायता करते हैं। धर्मानंद बाबाजी (कैलाश) को कुछ रुपये कर्ज देता है, जिसे वह चुका नहीं पाते। इस कारण धर्मानंद उनकी सारी जमीन-जायदाद हड़प लेता है। कंचन का भाई साम्प्रदायिक दंगे में मारा जाता है। अतः वह असहाय दशा में गा-बजा कर अपना पेट पालती है। लेकिन भूखे भेड़िये उसका जिस्म खा जाना चाहते हैं। धर्मानंद, लक्ष्मीकान्त, छिकौड़ीलाल दीनानाथ, इन्सपेक्टर सब एक रात को अपनी काम-पिपासा को पूरी करने के लिए कंचन के कोठे पर इकट्ठे होते हैं और उसके हाथों शराब पीते हैं। कंचन केवल गाना गाकर उन सबकी काली करतूतों के भंडाफोड़ की धमकी देकर भगा देती है।

सूरज, धर्म, तथा समाज को भ्रष्ट करने वाले धर्मानंद, लक्ष्मीकान्त, छिकौड़ीलाल, दीनानाथ के खिलाफ जन-सहयोग से आन्दोलन छेड़ता है। एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए पुलिस सूरज को गिरफ्तार करती है। जेल जाने से पहले कंचन सूरज के गले में माला पहनाती है। उदयशंकर कंचन को अपनी पुत्रवधू स्वीकार करता है। कंचन धर्मानंद, लक्ष्मीकान्त, छिकौड़ीलाल के खिलाफ सप्रमाण अभियोग लगाती है। मदमत्त दीनानाथ रात को तारा की इज्जत उतारने के लिए उसके पीछे भागता है। वह तारा को पकड़ने ही वाला है कि इन्सपेक्टर मौके पर पहुँच कर दीनानाथ को पकड़ लेता है और उसी समय बाबा पहुँचकर तारा की जान बचाते हैं। न्यायाधीश उनकी काली करतूतों को सप्रमाण सिद्ध करके लम्बी सजा देता है और सूरज को सम्मान से मुक्त करता है।

जीत में हार (सन् १९३७, पृ० ११२), ले० : चन्द्रशेखर पाण्डे; प्र० : ज्ञान लोक प्रयाग; पात्र : पु० १४, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ८, ७, ६।

घटना-स्थल : मुखई का घर, कलेक्टर साहब का इजलास, हरखू माली का घर।

इस मौलिक नाटक में मुकदमेबाजी से होने वाली हानियों का चित्रण है। इस में हर छोटी बातों में मार-पीट तथा मुकदमेबाजी करने वाले रामदीन एक दिन अपना खेत खोदते-खोदते मुखई के खेत में आ जाता है। दोनों में विवाद होता है। अन्त में लाठी चल जाने से मुखई की मृत्यु हो जाती है। उसका पुत्र हरदीन मृत्यु के बहुत दिन बाद उसका बदला लेने के लिए मुकदमा चलाता है। मुकदमा जीत जाता है, जिसमें रामदीन उसे भी मारने के लिए सोचता है परन्तु लोगों के प्रयास से मित्रता हो जाती है। इस प्रकार गाँव में द्वेष के स्थान पर भ्रातृभाव आने लगता है।

जीवन-यज्ञ (सन् १९३५, पृ० २४७), ले० : डा० सत्येन्द्र; प्र० : सरस्वती सदन, लश्कर, ग्वालियर; पात्र : पु० २८, स्त्री ६; अंक : ४; दृश्य : ७, ७, ७।

घटना-स्थल : सोलंकी रानी का देवी मंदिर, तालाब, राजसभा, गाँव।

इस ऐतिहासिक नाटक के प्रथम अंक में धार-नरेश की दो रानियों—सोम्की और बाघेली—की प्रतिस्पर्धा दिखाई गई है। छोटी रानी बाघेली चतुराई से राजा द्वारा अपने राजकुमार रणधवल को युवराज घोषित करा लेती है। सोम्की की रानी का पुत्र जगदेव गृह कलह बचाने के लिये त्याग का मार्ग ग्रहण करता है और पाटनराज सिद्धराज जयसिंह के यहाँ प्रस्थान करता है। साथ में अपनी पत्नी वीरमती को भी ले लेता है। दूसरे दृश्य में जगदेव जंगल के उस सिंह-सिंहनी के जोड़े का, जिन्हें बड़े-बड़े शूरवीर नहीं मार सके थे, शिकार करता है। उनके कान और पूँछ काटकर रख लेता है। वहीं सरोवर पर लालजी नायक आता है। नायक मरे हुए सिंह के जोड़े को अपना शिकार घोषित करता है और पाटन भेज देता है।

द्वितीय अंक में सिद्धराज की राजसभा में सिंह-युग्म के वध के लोक-कल्याणकारी कार्य करने वाले लालजी नायक का सम्मान होता था। किन्तु व्यभिचारी लालजी की वीरता के प्रति नागरिकों के मन में शंका है। शंका का कारण सिंह-युग्म के कटे हुए कान-पूँछ का होना भी है। किन्तु राजा विचार-पूर्वक वास्तविक वीर जगदेव को खोज लेता है और उसे लखटकिया बनाकर अपने महल के पास ही निवास की व्यवस्था कराता है। जगदेव ढेढ नाम की अस्पृश्य जाति का सुधार करता है जिससे उसमें पचायतराज की स्थापना तथा गाधी के अछूतोद्धार का स्वर मुखरित हो उठता है। इन सभी कार्यों में जगदेव के बढ़ते महत्त्व को रोकने के लिये षड्यंत्र भी प्रारम्भ होता है। किन्तु जगदेव प्रजारक्षण, राज्य-विकास योजनाओं तथा राज्य की समृद्धि में लगा रहता है। वह अपने पौरुष से, उदयन-मंत्री, डूगराशी नगराध्यक्ष के षड्यंत्र में राजा तथा राज्य की रक्षा करता है और सती जसमा तथा वेश्या बिन्दु की मर्यादा को भी बचाता है। धारवासी उसकी प्रशंसा सुन राज्य में लाकर उसका सम्मान करते हैं।

जुआरी-खुआरी (सन् १८२२, पृ० ६), लें० प्रताप नारायण मिश्र, पात्र ५, ब्राह्मण खंड १ में प्रकाशित।

यह एक प्रहसन है जिसको मिश्रजी पूर्ण न कर पाये। इसके आरम्भ में नान्दी-पाठ है। चार सेठ, प० लक्ष्मीदास से जुआ खेलने का शुभ मुहूर्त निकालने का आग्रह करते हैं। ज्योतिषी प० दक्षिणा में पचास रुपया मांगता है। लाला धनदास, पंडितजी को दक्षिणा देकर उनसे अनुष्ठान करने की प्रार्थना करता है।

प्रहसन अपूर्ण है। अतः द्यूत-क्रीड़ा के दुष्परिणाम का पता नहीं चल पाता। पात्रों के सवाद में ब्रजभाषा और बैसवाड़ी का प्रयोग मिलता है। अधिकांश स्थलों पर खड़ी बोली दिखाई देती है। प० लक्ष्मी दास की बोली बैसवाड़ी—उदाहरणार्थ "औ लालाजी बहुत हाव-हाव करयँ तो का कहूँ के राजि पाय जायँ, भगवती के दया चहीं हमका एई चार घर का थोरे है।"

जुझार सिंह बुन्देल (पृ० ६६), लें० शिव प्रसाद चारण, प्र० महर्षि मालवीय इतिहास परिषद, उपासना मन्दिर, दुगड्डा (गढ़वाल), पात्र पु० २४, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ५, ४, ७।
घटना-स्थल मैहूर, वनमार्ग, ओरछा, आगरा शाहीदरबार, चौरागढ़।

इस ऐतिहासिक नाटक में जुझार सिंह ओरछा-नरेश के पराक्रम और बलिदान का वर्णन है। शाहजहां हिन्दुओं को मुसलमान बनाने लगा है इससे हिन्दुओं में चारों तरफ आतंक फैलता है। इस अत्याचार की परिस्थिति में जुझार सिंह अपने प्राणों के रहते हुए मुगलों की अधीनता स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता। शाहजहां औरंगजेब को दमन के लिए भेजता है। इतनी घोर परिस्थिति में भी जुझार सिंह नहीं घबड़ाता। जुझार सिंह की माता रानी पार्वती उसकी पत्नी ललिता को समझाती है कि बेटी घबराओ नहीं। जुझार सिंह की पत्नी रानी भवानी भी शत्रुओं के चंगुल में फंसने से अच्छा मृत्यु को ही मानती है। अन्त में जुझार सिंह देश की रक्षा में बलिदान हो जाता है।

'जुलमे अजमल' उर्फ जैसा दो वैसा लो : (सन् १८८३), ले० : मुहम्मद महमूद मिया 'रौनक' बनारसी।

इस जासूसी नाटक में नूरुन्निसा नामक एक सुन्दरी के सतीत्व की रक्षा का दृश्य दिखाया गया है।

तुमान नामक द्वीप पर एक तुर्क अमीर की दो सन्तान हैं—नूरुन्निसा और शम्सरू। नूरुन्निसा के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उस द्वीप का निवासी एक निर्दयी हबशी नवाब अजलम उससे शादी का प्रस्ताव करता है किन्तु नूरुन्निसा उसे ठुकरा देती है। अजलम के अत्याचार से अपनी मर्यादा की रक्षा के लिये नूरुन्निसा भाई शम्सरू के साथ द्वीप छोड़कर भाग जाती है पर नवाब वहां भी उसका पीछा करता है। भयानक तूफान में नूरुन्निसा का जहाज टूट जाने से भाई-बहन पृथक् हो जाते हैं। नूरुन्निसा को पानी में से एक अमीर और गाड़ीवान निकालकर अपने घर ले जाते हैं और दोनों उसके सौंदर्य पर आसक्त हो जाते हैं।

अमीर नूरुन्निसा को नाना प्रलोभनों से आकृष्ट करना चाहता है, पर उनकी दाल नहीं गलती। अब उन्होंने उसे बदनाम करके परास्त करना प्रारम्भ किया। अजलम भी जहाज के डूबने से उसी अमीर के यहां शरण लेता है जहां वह गाड़ीवान को मिलाकर और नूरुन्निसा के पास पहुँचता है। शरण-दाता अमीर उन दोनों में प्रणय समझकर उन्हें बेच देता है। शम्सरू अपनी बहिन को पहचान कर दोनों को खरीद लेता है। अज-लम के साथ बहिन के सतीत्व भंग होने की उसे आशंका होती है, इसलिये बहिन का वध करना चाहता है। संयोग से शाम देश के राजकुमार मुनव्वरहसन नूरुन्निसा की छवि से अभिभूत होकर अपने पिता से उसके साथ शादी की अनुमति मांगते हैं, पर पिता अजलम, गाड़ीवान और अमीर के साथ उसके अनुचित सम्बन्ध की चर्चा के कारण पुत्र को मना करता है। नूरुन्निसा के सतीत्व का अन्य ढंग से रहस्योद्‌घाटन होने पर मुनव्वर नूरुन्निसा से विवाह कर लेता है। विवाह से भाई शम्सरू भी प्रसन्न हो जाता है।

जै-जै हिन्दुस्तान (सन् १९६५, पृ० ६४), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६; पात्र : पु० ४, स्त्री २; अंक : २।

घटना-स्थल : गांव के मकान की बैठक।

इस नाटक में संग्राम के सेनानियों को उपेक्षित और देश-द्रोहियों को नेता दिखाया गया है।

गांव का मुंशी कुन्दन निर्धनता में भी आजादी का दीवाना है और उसकी पत्नी लच्छी भी असहयोग आन्दोलन में भाग लेती है। सन् १९४२ की क्रांति में कुन्दन कांग्रेस आन्दोलन में कूद पड़ता है। गांव का मुखिया चन्दू देशद्रोही और अंग्रेजों का पिट्ठू है। चन्दू कुन्दन को गोली से खत्म कर देने की धमकी देता है तो कुन्दन उत्तर देता है "मैं तो शहीद की मौत मरूंगा, लेकिन तू गद्दार कुत्ते की मौत मरेगा।" रतन, गीता, केशव और उनसे दल वाले अंग्रेजी सेना को रोकने के लिये गांव तक आने वाली पुलिआ को बम से उड़ा देने की योजना बनाते हैं। रतन हथगोला लेकर घर आता है और मां-बाप से आज्ञा एवं आशीर्वाद मांगता है। कुन्दन रतन से हथगोला छीनकर स्वयं ही पुलिया उड़ाने चल पड़ता है, लेकिन दुर्भाग्य से वह पुलिया नहीं उड़ा पाता। अंग्रेजी सेना गांव में घुस आती है और बड़ी क्रूरता से गांव में आग लगा देती है। कुन्दन अंग्रेजी सेना की गोली से शहीद हो जाता है। स्वतन्त्रता मिलने पर देशद्रोही चन्दू खादी का कपड़ा पहनकर नेता बन जाता है।

ज्योतिपर्व (सन् १९६३), ले० : मनोहर प्रभाकर; प्र० : कल्याणमल एण्ड संस, जयपुर; 'जसमा तथा अन्य संगीतरूपक में संग्रहीत'; पात्र : पु० ३, स्त्री २; *अंक-दृश्य-रहित*।

'ज्योतिपर्व' संगीतरूपक दीपावली के विभिन्न पक्षों का दिग्दर्शन कराता है। दीपा-वली कहीं प्रकाश कहीं अन्धकार की सर्जना करती है। अतः सम्पन्न-विपन्न वर्गों में विभक्त इस समाज में इस पर्व का कोई महत्त्व नहीं। लेखक के अनुसार समता के धरातल पर ही दीपावली का मूल्यांकन किया जा सकता है।

विश्व के करोड़ों दीप बुझे पड़े हैं। प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है कि इन बुझे हुए दीपों को पुन जलाए। तभी समाज म नव-ज्योति का आगमन हो सकता है।

ज्योत्स्ना (सन १६३६, पृ० १६६), ले० रामदीन पाडेय, प्र० पुस्तक भण्डार, लहेरिया सराय, पात्र पु० ७, स्त्री ४, अक ४, दृश्य ५ १०, ८, ८।
घटना स्थल देहाती खलियान मे गेहू, मटर, जो आदि कुछ देत हुए अधिकतर बीज-रूप मे रत्नपुर सब-डिविजन की कचहरी, न्यायालय।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमे गाँव की समस्याओ की ओर सकेत कर उसके सुधार का उपाय बताया गया है।

वीरेन्द्र इस नाटक का प्रधान पात्र है। वह अपने त्यागबल से गाव के निरकुश जमीदार इकबाल को सुधार देता है। ग्रामीण युवक मृत्युञ्जय की कन्या ज्योत्सना सद्भावना प्रेम और परिश्रम से वीरेन्द्र के साथ गाव म सेवा-कार्य करती है। वीरेन्द्र के त्याग, सेवा और प्रेम से कुछ दिन बाद गाव एक आदर्श गाव बन जाता है।

ज्वार भाटा (सन् १६६०, पृ० ११२), ले० राजकुमार, प्र० हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, पात्र पु० १०, स्त्री का अभाव है, अक ४, दृश्य ३, ७, ५।
घटना-स्थल कमरा, बाजार आदि।

बकिम नामक एक पात्र समाज-सुधार की भावना से एक वेश्या की लडकी नीलिमा को उसकी माँ के मरते वक्त अपने सरक्षण म ले लेता है। उसकी गुप्त रूप से अपन एक साथी गोपाल बाबू के यहा रखकर लोगों से यह रहस्य छिपाये रखता है कि नीलिमा वही है। जनता यही जानती है कि नीलिमा कोई दूसरी लडकी है जो बकिम के पास रहती है। इससे बकिम के ऊपर उच्चवग के लोग कीचड उछालते हैं और उसे वेश्या रखने का आक्षेप करते हैं। हर एक ढग से ताडक बकिम को बेइज्जत करने का प्रयत्न करता है। दूसरी ओर नताओ के दो वग दिखाये गए हैं। एक वग के प्रतिनिधि सुशील, बकिम वगैरह हैं। वे समाज की रूढियो, बुराइयो और कमजोरियो को उखाड फेंकने के लिए बद्ध-परिकर हैं। दूसरे वर्ग का प्रतिनिधित्व ताडक और चन्द्रनाथ करते हैं। चन्द्रनाथ एक घूसखोर नेता है। घूस लेने के लिए उसका एजेंट ताडक है। वह उसमे हिस्सा लेता है और चन्द्रनाथ यह नही भापने देता कि यह घूस उसे भी मिलती है। सूदखोरी और महाजनी वृत्ति भी भी एक समस्या साथ-साथ चलती है।

दूसरे अक मे गोपाल की पालित लडकी नीलिमा के विवाह की सारी तैयारियाँ हो गई हैं। इसी समय उनका महाजन अमरनाथ कुडकी लिए आता है और गोपाल के विवाह म जुटाये सामान को कुडक कराता है। ताडक ही इन सब जालसाजियो की जड है। जिस लडके से शादी तय थी उसकी मति फेरने के लिए ताडक प्रयत्न करता है। इससे बकिम, सुशील और गोपाल बहुत चिन्तित होते हैं परन्तु सुशील शीघ्र ही जाकर कर्ज का रुपया जमा कर आता है और कुडकी से गोपाल को बचाता है। छठे और सातवें दृश्य तक आते-आते ताडक के कुत्सित आचरणो का भण्डा-फोड होने लगता है। ताडक और चन्द्रनाथ मे भी कलह छिड जाता है।

तीसरे अक के प्रथम दृश्य मे बकिम के साथी गोपाल कार्यक्षेत्र से ऊबकर लडकी नीलिमा (वेश्या-पुत्री) के विवाह का भार बकिम पर छोड कही चला जाता है। दूसरे मे ताडक, चन्द्रनाथ द्वारा विष देकर मार डाला जाता है। तीसरे दृश्य मे चन्द्रनाथ को अनैतिक कार्यो के कारण हिरासत मे डाल दिया जाता है। चौथे मे प्रतिपक्षी भी आकर बकिम, सुशील आदि नि स्वार्थ समाजसेवियो के साथ मिल जाते हैं। पाँचवें मे नीलिमा के वेश्या-पुत्री होने का सारा रहस्य वर के पिता पर खुल जाता है फिर भी वह उसे अपनी पुत्र-वधू के रूप म स्वीकार कर समाज-सुधार करता है।

अभिनय—२६ जनवरी १६६० को नागरी नाटक मडली द्वारा काशी मे अभिनीत।

झ

झांकी (सन् १९४२), ले० : आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव; प्र० : गांधी हिन्दी पुस्तक भण्डार प्रयाग; पात्र : पु० ३; स्त्री १; अंक : ४। घटना-स्थल : उपवन, भवन, महल, आश्रम।

इसमें अंकों के स्थान पर चार काव्यबद्ध संभाषण हैं।

इन संभाषणों में नाट्य-तत्व की अपेक्षा काव्य-तत्व ही अधिक है। प्रथम सम्भाषण में भाग लेने वाले पात्र हैं—पार्वती और सीता। विवाह से पूर्व सीता अपने भावी जीवन के प्रति जिज्ञासु हो पार्वती की उपासना कर उनके दर्शन होने पर प्रश्न करती हैं और पार्वती उनके भावी जीवन की सम्पूर्ण झांकी दिखलाकर उन्हें आशीर्वाद देती हैं; साथ ही कह देती हैं कि सीता को उस संवाद की बातें विस्मृत हो जायेंगी। दूसरे सम्भाषण में भारत-लक्ष्मी शिवाजी को भारत की तत्कालीन क्षोभकारी वस्तुस्थिति बताने के उपरान्त भावी भारत की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक दुर्दशा का चित्र प्रस्तुत करती है। साथ ही प्राचीन भारत की वर्तमान से तुलना कर उसकी दयनीय स्थिति पर शोक प्रकट करती है। तीसरे सम्भाषण की नायिका है मरणासन्न नूरजहां। मृत्यु-शय्या पर लेटी हुई नूरजहां अपनी पुत्री लैला से विगत जीवन की घटनाओं का वर्णन करने के साथ उन भावनाओं और जीवन-सिद्धान्तों को भी प्रस्तुत करती है जिनसे अनुप्रेरित हो उसने शेर अफगन के प्रति हार्दिक प्रेम होते हुए भी जहांगीर से विवाह किया था। प्रस्तुत सम्भाषण नूरजहां के चरित्र पर नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के कारण सुन्दर है। चौथे संभाषण 'चाणक्य' और 'चन्द्रगुप्त' में चन्द्रगुप्त विभिन्न तर्क—राज्य को चाणक्य की आवश्यकता, लोकहित के लिए उनकी उपस्थिति, वन-जीवन का क्लेश आदि प्रस्तुत कर चाणक्य को वानप्रस्थाश्रम प्रवेश से रोकना चाहता है परन्तु चाणक्य उनके तर्कों को काटकर तथा आध्यात्मिक विकास को सर्वश्रेष्ठ कहकर वन के लिए प्रस्थान करते हैं।

झांसी की रानी (सन् १९५७, पृ० १८३), ले० : रणधीर साहित्यालंकार; प्र० : कान्ति प्रकाशन, चितपुर रोड, कलकत्ता-७; पात्र : पु० १२, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ७, ६, ५। घटना-स्थल : विद्यालय, घर, कमरा, ग्वालियर का किला, काल्पी का किला।

इस ऐतिहासिक नाटक में झांसी की रानी का युद्ध-कौशल दिखलाया गया है। इसमें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई देश की स्वाधीनता के लिए अंग्रेजों से युद्ध करती हुई वीरगति को प्राप्त होती है। लक्ष्मीबाई के जीवन को लेकर अनेक नाटक लिखे गये हैं जिनकी कथावस्तु में एकरूपता पाई जाती है।

झांसी की रानी (सन् १९५६, पृ० १३६), ले० : वृन्दावनलाल वर्मा; प्र० : मयूर प्रकाशन, झांसी, दिल्ली; पात्र : पु० १५, स्त्री ५; अंक : ५; दृश्य : ८, ६, १०, १०, १०। घटना-स्थल : बुन्देलखण्ड के वन, खेल-मैदान, युद्ध-शिविर।

वर्मा जी ने पाठकों के आग्रह पर झांसी की रानी नामक अपने उपन्यास को नाट्यरूप दिया है। नाटक का आरम्भ बिठूर में मनु (लक्ष्मीबाई) तथा नाना साहब के खेलों से होता है। रानी के बचपन, गंगाधरराव से विवाह, दामोदरराव को गोद लेने एवं गंगाधर राव की आकस्मिक मृत्यु से उत्पन्न करुण-कथा यहां मिलती है। वैधव्य से पीड़ित रानी को अंग्रेजों के अत्याचारों का शिकार बनना पड़ता है। वीरांगना प्रतिज्ञा करती है कि वह अपनी स्वतन्त्रता अंग्रेजों के हाथों नहीं बेच सकती। अपने स्वाभिमान की रक्षा में वह युद्ध की घोषणा करती है। जवाहिर

सिंह, रघुनाथसिंह, तात्याटोपे आदि वीर रानी के सहयोगी है। घर का भेदी पीर अली रानी की सेना के भेद का पता शत्रु को देता रहता है। यही पर सूचना मिलती है कि डाकू सागरसिंह जेल से निकल कर भाग गया है। तृतीय अक मे रानी सागरसिंह की लूटमार से चिन्तित हैं। उसे पकडने के लिए खुदाबख्श जाता है, किन्तु घायल होता है। सागरसिंह फिर भी पकडा जाता है तथा रानी से क्षमादान पाता हुआ उनकी सेना मे सम्मिलित हो जाता है। भेदिया पीरअली भी सागरसिंह की सेना मे मिलकर जनरल रोज को भेद दे रहा है। अंग्रेज रानी से समर्थकों सहित समर्पण करने का आग्रह करते हैं। रानी का दर्प जागता है, वह युद्ध के लिए उत्कारती है। घमासान युद्ध होता है। युद्ध-व्यवस्था के लिए रानी सखियो मे जूहीबाई तथा काशीबाई का सहारा लेती हैं। विकट युद्ध मे रानी जझ रही है। सहसा, दुल्हाजू के विश्वासघात के कारण अंग्रेज किले म घुसते हैं। सुन्दर, मोतीबाई आदि रणक्षेत्र मे प्राण दे देती है। निराश रानी आत्महत्या करना चाहती है, तभी सरदार भोपटकर कहते है—"आप आत्मघात करने जा रही हैं ? यही न! कृष्ण की पूरी गीता जिसको कठाग्र है, जो गीता के अठाहरवें अध्याय को अपने जीवन मे बरतती चली आई है, और जो प्रत्येक परिस्थिति मे स्वराज्य-स्थापना का, यज्ञ की वेदी पर प्रण कर चुकी है, वे आत्मघात करेंगी ? करिए कृष्ण का अपमान, करिए गीता का अनादर ? आप रानी है। आपको आज्ञा का पालन तो करना ही पडेगा। परन्तु आपके उपरान्त देश की जनता क्या कहेगी जिसकी रक्षा के लिए आपने बीडा उठाया है।" इस प्रेरणा से अभिभूत रानी कालपी आती है। यहा भी पराजय मिलती है। यही पर रानी ग्वालियर पर अधिकार करने के उपरान्त अंग्रेजो से युद्ध की योजना बनाती है। बाबा गगादास के पास जाकर रानी युद्ध का भविष्य पूछती है। रानी नया घोडा लेकर युद्ध-क्षेत्र म जाती है, युद्ध मे सुन्दर तथा रानी दोनो वीर-गति पाते है। रानी का शव बाबा गगादास की कुटिया के पास ले जाया जाता है, बाबा जी लकडी के अभाव मे कुटिया तोडकर शवदाह करते हैं। स्वामिभक्त रघुनाथसिंह बन्दूक लेकर चिता की रक्षा करता है। रामचन्द्र देशमुख दामोदर राव को लेकर दक्षिण की ओर चला जाता है।

झांसी की रानी (सन् १९७० ई०, पृ० ७०), ले० चतुर्भुज, प्र० मगध कलाकार प्रकाशन, १०६, श्रीकृष्ण नगर, पटना-१, पात्र पु० १३, स्त्री १, अक नहीं, दृश्य ७। घटना-स्थल दरबार, शिविर, दुर्ग।

सन् १८५७ ई० की क्रान्ति की सेनानी झांसी की रानी लक्ष्मीबाई इतिहास-प्रसिद्ध है। नाटक उस स्थल से प्रारम्भ होता है जहा ब्रिटिश मेजर रानी से आत्म-समर्पण करने के लिए कहता है। युद्ध होता है। गौस खा रानी के लिए प्राणदान देता है और अन्त म रानी की मृत्यु होती है।

प्रथम अभिनय—१९७० ई० (प्रकाशन-पूर्व)।

झांसी की रानी (सन् १९६८, पृ० १२२), ले० न्यादर सिंह बेचैन, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० २८, स्त्री ७, अक ३, दृश्य ७, १०, १२।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है जिसमे मोरोपन्त की कन्या वीरागना झासी की रानी के चरित्र को कथावस्तु के रूप मे अपनाया गया है। प्रथम अक मे झासी के राजा गगाधर राव के साथ छबीली की शादी, पुत्रोत्पत्ति आदि घटनाओ को प्रदर्शित किया गया है।

द्वितीय अक मे लक्ष्मीबाई के पुत्र की मृत्यु और उसके कारण राजा का बीमार होना, बीमारी की दशा मे दामोदर राव को गोद लेना और उसकी स्वीकृति के लिए प्रार्थना-पत्र भेजना तथा गगाधरराव की मृत्यु को घटनाये चित्रित की गई हैं। बीच-बीच मे सवादो द्वारा देश की स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है।

तृतीय अक मे अंग्रेज शासको का रानी के दत्तक पुत्र को अस्वीकार करना और झाँसी राज्य को अंग्रेजी राज्य मे मिलाने की

घोषणा, रानी द्वारा अंग्रेजों को राज्य न सौंपना और राज्यभार स्वयं संभालना, राज्य की सुव्यवस्था तथा डाकुओं का अन्त करना, सैन्य संगठन, स्त्री सेना बनाना और शासन करना प्रदर्शित किया गया है। रानी का तात्याटोपे एवं नाना साहब से सम्बन्ध कायम कर क्रान्ति का बिगुल बजाना, वीरतापूर्वक संघर्ष और देश-द्रोहियों के कारण पराजय तथा अन्त में वीरतापूर्वक लड़ते हुए रानी का अन्त दिखाया गया है।

ड

डबल नवाब नाटक (सन् १६६६, पृ० १६), ले० : हरिहर प्रसाद गिंगल; प्र० : अग्रवाल प्रेस, गया; पात्र. पु० १५, अंक : १, दृश्य : ६।

घटना-स्थल : मकान, इजलास।

यह एक प्रहसन है। इस प्रहसन में रईस, नवाब, वकील और सेठ पर व्यंग्य किया गया है। शरीफ मिरजा चार मुसाहिबों के साथ भोजन कर रहे हैं। इसी बीच पन्नाबाई रोती हुई आती है। पन्नाबाई शरीफ मिरजा से यह शिकायत करती है कि डबल नवाब ने बहुत अपमान किया है। उन्होंने यहाँ तक कह दिया है कि मेरी नाक काट ली जायगी। पन्नाबाई मुकदमा दायर करती है। कोर्ट में लेन-देन की बातचीत होती है। डबल नवाब अपनी बेइज्जती पर पश्चात्ताप कर रहा है। अन्त में मुकदमे का फैसला पन्नाबाई के ही पक्ष में होता है।

इस प्रहसन में हास्य उत्पन्न करनेवाले १५ गीत भी जोड़े गये हैं।

डाँडी-यात्रा (सन् १६५६, पृ० ७८), ले० : मोहन लाल 'महतो' 'वियोगी'; प्र० : पुस्तक भण्डार पटना; पात्र : पु० १५, स्त्री १; अंक : ३; दृश्य : ३, ३, ३।

घटना-स्थल : साबरमती आश्रम, मार्ग, समुद्रतट।

इस नाटक में महात्मा गांधी की डाँडी-यात्रा नामक सत्याग्रह की घटना को आधार बनाया गया है। तीनों अंकों में तीन दृष्टि-कोणों से नमक सत्याग्रह पर प्रकाश डाला गया। शासक पक्ष और विदेशी, देशी पत्रकार एवं भारतीय जनता अपने महान् नेता के कार्य को जिस रूप में देखती है, उसी को मूर्त रूप देने का प्रयास है।

सम्पूर्ण नाटक के केन्द्र में महात्मा गांधी और उनका सत्याग्रह है। नाटक में चारित्रिक विशेषताओं का विशेष ध्यान रखा गया है। श्रद्धावनत लेखक स्वयं लिखता है—"बापू के नाम से जो भी लिखा जाय वह एक पुण्य-कार्य बन जाता है।" बीच-बीच में गीतों, भजनों, उपदेशों का प्रयोग मिलता है।

डाकू मानसिंह (सन् १६६३, पृ० ६८), ले० : श्री चन्द्र जोशी; प्र० : गिरधारीलाल शोक पुस्तकालय, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री १।

यह नाटक बेतवा और चम्बल की घाटी के मशहूर डाकू मानसिंह के क्रियाकलापों का अंकन करता है। नाटक में डाकू मानसिंह जितना खूंखार है उतना सहृदय भी। विधवा ब्राह्मणी की एकलौती पुत्री केशर को मानसिंह के पुरोहित तलफीराम का पुत्र युवराज अपहृत कर लेता है। विधवा ब्राह्मणी मानसिंह से अपनी व्यथा कहती है। मानसिंह प्रण करता है कि जब तक मैं केशर को छुड़ा नहीं लाऊँगा, पानी नहीं पीऊँगा। अन्ततः उसे छुड़ाकर लाता है और फिर उसमें उसकी दुश्मनी युवराज से बढ़ जाती है। वह भागता है और जंगलों में जाकर डाके डालता है। आगरा कॉलेज के लड़कों का अपहरण कर रुपए की माँग करता है किन्तु अन्त में कांकेपुरा गाँव के बाहर पुलिस से मुठभेड़ होती है जिसमें वह मारा जाता है। साथ ही सूबेदारसिंह भी मौत के घाट उतार दिया जाता है।

डिक्टेटर (अंतर्राष्ट्रीय नाटक) (सन् १९३७, पृ० ५६), ले० पाण्डेय बेचन शर्मा, 'उग्र', प्र० प्रतिमा पागल पार्टी कलकत्ता, पात्र पु० ७, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ३ ६, १।
घटना स्थल विश्वपथ, जिनेवानगर।

इस राजनीतिक नाटक मे जनता को भ्रम मे डालकर स्वार्थ सिद्ध करनेवाले मायावी नेताओ का वास्तविक रूप सामने आता है। आज अधिकाश नेता अपने को जनता का सेवक घोषित करते हैं। विप्लव माया से कहता है कि ये नेता "मार डालेंगे ! माता जनता को।' जनता माता को घेरकर जानबुल, विप्लव, अंकिल, पेरी, बकवादी आपस मे लडते है। वे हिन्दुस्तानी को देखकर रुष्ट होते है। पेरी कहता है 'मगर, इंडियन तो कोई आदमी नही, निकालो इसको।'—तीसरे दृश्य में नाटक का नायक डिक्टेटर जनता माता पर क्रुद्ध होकर कहता है—'अगर तू वरदान न देगी तो मैं तेरा खून करूगा।' इसी समय महाकाल प्रकट होकर डिक्टेटर को आशीर्वाद देता है। आशीर्वाद पाकर डिक्टेटर जनता की हत्या को दौडता है। जानबुल और डिक्टेटर मे विवाद होता है और जानबुल, अंकिल साम, पेरी आदि डिक्टेटर को घेर लेते है। बकवादी ललकार कर कहता है—"मैं सरे-बाजार कहता हूँ, डिक्टेटर आततायी है, नीच है, नृशंस है, नराधम है।" वह आगे कहता है 'कि मि० जानबुल मेरी लीडरी से चारो खाने चित। अंकिल साम की दाढी भय से कानी से सफेद हो गई है।"

सन् १९४८ मे स्थिति बदल जाती है। माता जनता शिशु लिए खडी है और उसे घेरकर खडे है मोशिये विप्लव और बहुत से गरीब दुखिया, रोगी। विप्लव माता से वरदान मागता है कि जनता पर जनता ही राज करे। जनता के गरीब और दुबल बच्चे नन्हे-नन्हे दीप जलाकर छोटी छोटी घंटियाँ बजाकर करुण स्वर से आरती गाते हैं। मा मगन हो उठती है।

डेढ़ रोटी (सन् १९६८, पृ० ६१), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६, पात्र पु० ६, स्त्री १।
घटना-स्थल जगल, घर।

यह एक सामाजिक नाटक है। जिसमे अपने अधिकारो की माग है। चन्दनसिह *गुण्डा होते हुए भी मानवीयता मे ओतप्रोत* है। शकर कहने को तो उसका भाई बना है पर वह चन्दनसिह की लडकी सुषमा से प्यार करता है और खलनायक की भूमिका अदा करता है। डेढ लाख रुपये की चोरी का सन्देह चन्दन पर होता है जिसके पास डेढ *रोटी खाने तक को नही है। सन्देहो के मध्य* बेचारा चन्दन उपद्रवी बन जाता है पर अन्त मे जब शकाओ का समाधान होता है तो असली अपराधी शकर सामने आता है और उसकी सभी काली करतूतें दिखाई पडने लगती हैं।

ढ

ढोंग (सन् १९५७, पृ० ८०), ले० रमेश मेहता, प्र० बडवन्त पब्लिकेशन, नयी-दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य १, १, १।

यह एक हास्यपरक सामाजिक नाटक है। इसमे हकीम गगाधर नीना और चन्द्रा का *इलाज करते हैं किन्तु उन्हें सफलता नही मिलती। प्रेम का रोग ही ऐसा था जिसे वे* समझ न पाए। हकीम भी पैसे के लोभ मे दूसरी शादी करने का इच्छुक है पर पुजारी के किसी भी हालत मे अपना दान का रुपया छोडने को न तैयार रहने से सबको परेशानी होती है लेकिन ढोंग के चक्कर मे उसे कुछ *नहीं मिलता।*

त

तकदीर का फैसला (वि० १९८२, पृ० १०८), ले० : मथुरा प्रसाद शर्मा; प्र० : रामानन्द शर्मा, मथुरा; पात्र : पु० ७, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ६, ६, ६।
घटना-स्थल : देहात, गांव का घर।

इस सामाजिक नाटक में मुसलमानों के अत्याचार का हिन्दुओं द्वारा प्रतिशोध दिखाया गया है।

नाटक का प्रारम्भ एक मस्जिद से होता है। मुसलमान इकट्ठे होकर हिन्दुओं के प्रतिकूल बातें करते हैं। अकबर एक भारत-प्रेमी, मानवतावादी मुसलमान है जो इन लोगों का विरोध करता है। मुसलमान उसे काफिर करार देते हैं पर वह अपने सुधारवादी सिद्धान्त से विचलित नहीं होता। विजय हिन्दू-संगठन का नायक तथा विनय, अहिंसा-धर्म का उपासक, मुसलमानों की कट्टरता से क्षुब्ध होकर हिन्दुओं को मुसलमानों के विरुद्ध कुछ युवक भड़काते हैं। दोनों वर्गों में संघर्ष की स्थिति पैदा हो जाती है। लेकिन अकबर और बिहारी स्वयंसेवक के प्रयत्न से लड़ाई बच जाती है। पुनः दोनों वर्ग मिलकर देश के लिये प्रयत्न करते हैं।

तड़प (सन् १९६०, पृ० ८३), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली; पात्र : पु० ५, स्त्री २; अंक : २।
घटना-स्थल : घर, कमरा।

इस सामाजिक नाटक में प्रेमी का अपनी प्रेयसी के लिए तड़पना चित्रित है।

जय अपनी प्रेमिका शकुन्तला को प्राप्त करने के लिये समाज में भटकता रहता है किन्तु समाज का राक्षसी रूप उसे सदैव ठुकरा देता है। राजरानी नामक दूसरी लड़की जय के समक्ष आत्म-समर्पण करती है किन्तु जय उसमें शकुन्तला का रूप देखकर भी उसे प्राप्त नहीं करता। वह आत्मा की खोज के लिए सदैव तड़पता रहता है। उसे विश्वास है कि हम दोनों कभी वास्तविक रूप में मिलेंगे। इसका प्रत्येक पात्र कल्पना की उड़ान में उड़ता रहता है।

तथागत (सन् १९५४, पृ० ७६), ले० : रामवृक्ष बेनीपुरी; प्र० : बेनीपुरी प्रकाशन, पटना; पात्र : पु० ११, स्त्री ८; अंक : ४; दृश्य : ७, ६, ६, ४।
घटना-स्थल : लुम्बिनी वन, राजगृह, गृद्धकूट, शालवन।

भगवान् बुद्ध का चरित्र ही इस नाटक का कथानक है। लुम्बिनी वन में तथागत का माया के गर्भ से जन्म होता है। महाराज शुद्धोधन पुत्र की कुंडली कौण्डिन्य ऋषि को दिखाते हैं। वे भविष्यवाणी करते हैं कि या तो यह बालक चक्रवर्ती सम्राट् होगा अथवा विश्व-विख्यात धर्म-प्रवर्तक। सिद्धार्थ यशोधरा का वरण करते हैं। उससे राहुल का जन्म होता है। किन्तु कुछ दिन बाद सिद्धार्थ प्रवृत्ति से निवृत्ति मार्ग की ओर मुड़ जाते हैं। अन्ततः अनोमा नदी के किनारे कंथक घोड़े तथा सारथि छंदक को छोड़कर ज्ञान की खोज में निकल पड़ते हैं।

भिक्षु तथागत सर्वप्रथम राजगृह में जाकर बासी खिचड़ी खाते हैं। कष्ट के कारण उनके शिष्य भद्रजित छोड़कर भाग जाते हैं। अन्त में सुजाता की खीर खाते हैं, फिर सम्यक् सम्बोधि प्राप्त करके मानव-मात्र के कल्याण के लिये अष्टांग मार्ग का उपदेश देते हैं।

शाक्यकुल के सिद्धार्थ मार की भट्टी में जलकर तथागत बन "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" ज्ञान का प्रसार करते हैं। पंचभिक्षु वर्ग श्रेष्ठिपुत्र यश को प्रव्रज्या देते हैं। राजगृह में निरीह पशुओं पर दया कर वे हिंसा यज्ञ बन्द कराते हैं। तथागत बिम्बसार को दीक्षा देते हैं। गिरिव्रज से कपिलवस्तु जाकर सभी को भिक्षुधर्म में सम्मिलित करते हैं। देवव्रत के विरोध को जीतकर अजातशत्रु को भी

दीप्ति करते हैं। तत्पश्चात गृद्धकूट शालवन में अन्तिम प्रवचन करके पूर्णिमा को तथागत निर्वाण प्राप्त करते हैं।

तप्ता सवरण (सन् १८८३, पृ० ३९), ले० लाला श्रीनिवास दास, प्र० खग विलास यन्त्रालय, बाकीपुर, पात्र पु० ५, स्त्री ६, अंक ५।
घटना-स्थल लग्नमंडप, वन आदि।

इस सामाजिक नाटक में तप्ता और सवरण का सच्चा प्रेम प्रदर्शित है।

तप्ता सखियों सहित लग्नमण्डप में बैठी है। उस की सखी चन्द्रवली यह संदेश सुनाती है कि कोई राजकुमार आखेट खेलने आया है। तप्ता अपने मृगछौने को पकड़ने दौड़ती है। सवरण का साक्षात्कार हो जाता है। दोनों एक-दूसरे की ओर आकृष्ट होते हैं। सवरण वृक्ष की छाया में बैठकर माला गूथने लगता है। तप्ता और सवरण का प्रेमालाप होता है। दोनों विलग होते पर अत्यन्त विरहाकुल होते हैं। एक दिन सवरण के विरह में मूर्छित हो जाने पर तप्ता पहुँच जाती है। तप्ता के दर्शन से सवरण प्रसन्न होकर उससे विवाह का प्रस्ताव रखता है, पर तप्ता कहती है कि विवाह तो पिता सूर्य भगवान् की आज्ञा से ही सम्पन्न हो सकता है। सवरण वसिष्ठ मुनि के पास जाता है। वसिष्ठ मुनि सूर्य भगवान की स्तुति करते हैं। सूर्य भगवान दर्शन देते हैं और वसिष्ठ के आग्रह से सूर्य भगवान् तप्ता का सवरण के साथ विवाह स्वीकार करते हैं।

तमसा (सन् १९६८), ले० जानकी वल्लभ शास्त्री, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री १, अंक-रहित, दृश्य ४।
घटना स्थल तमसा नदी का किनारा।

इस गीतिनाट्य का प्रारम्भ तमसा नदी के वैभवपूर्ण अतीत में होता है। तत्पश्चात् विगत स्मृति के आधार पर वाल्मीकि तमसा तट पर अपने शिष्य भारद्वाज के साथ जाते हैं। उधर से बहेलियों का एक समूह कोलाहल करता हुआ आता है। वाल्मीकि तथा भारद्वाज परस्पर विचारविनिमय करते हुए एक चकवा-दम्पती की ओर संकेत करते हैं जिस पर बहेलियों ने लक्ष्य साधा हुआ है। वाल्मीकि का हृदय नर-पशु की इस नृशंस वृत्ति से द्रवित होता है। इसी समय बहेलिया तीर चला देता है और क्रौंच की आर्तचीत्कार के साथ वाल्मीकि के करुण स्वर में आदिश्लोक—मा निषाद प्रतिष्ठा त्वम्—की सृष्टि होती है।

द्वितीय दृश्य में वाल्मीकि की अन्तर्ध्वनि के रूप में क्रमश छः ऋतुएँ आकर मानो नूतन काव्य सृजन की प्रेरणा दे जाती हैं। तृतीय दृश्य में बहेलिया का पश्चात्ताप वर्णित है। चतुर्थ दृश्य में भारद्वाज वाल्मीकि को परित्यक्ता सीता का परिचय देते हैं जिसके परिणामस्वरूप वाल्मीकि में कवि-संस्कार उदित होते हैं जो आगे चलकर राम-कथा में परिणत होकर कवि को अमर कर जाते हैं।

तमाशा (सन् १९५३, पृ० ९५), ले० सुधांशु शेखर चौधरी, प्र० शेखर प्रकाशन दरभंगा, पात्र पु० ६, स्त्री ८, अंक-दृश्य के स्थान पर १२ झाँकियाँ।
घटना स्थल कलकत्ता का राजपथ, सेठ का बंगला, झोंपड़ी, कलकत्ता का फुटपाथ, भिखारी का घर, सड़क।

इस सामाजिक नाटक में नगर के धनी एवं निर्धनता के शिकार भिखारियों की दशा का वर्णन है।

निम्न मध्यवर्ग का युवक सुधीर एक भिखारी के साथ भिखमंगा की दशा देखने निकलता है। सेठ दामोदर लाल की कोठी पर पहुँचता है तो उसके हाथ पर हंटर की चोट मिलती है। सेठ के परिवार में कलह मचा है और सेठ पालतू कुत्ते को अपने खाने की सजी-सजाई थाली देता है। इस प्रकार भिखारी के साथ सुधीर नगर के धनी और निर्धनता के शिकार भिखारियों की दशा का निरीक्षण करता है। भूख से तड़प कर भिखारी मृत्यु-शैय्या पर लेटा है। वह अपनी बेटी साधना से पूछता है कि बेटा अचल दवा लेकर कब आयेगा। भिखारी की मृत्यु के समय अभिलाषा होती है कि सुधीर साधना से ब्याह कर ले।

दोनों का प्रेम भाव वह देख चुका था। सुधीर भिखारियों की दशा सुधारने का आन्दोलन करने के कारण जेल जाता है। जेल से लौटने पर अचल और साधना की बातें सुनता है। सुधीर अपने मित्र अचल को इसलिए कोसता है कि उसने सुधीर की अनुपस्थिति में भिखारी का घर कुर्क में बिकवा दिया। यह सब खेल वह साधना को प्राप्त करने के लिए करता रहा। सुधीर अचल की बहन रंजना को प्राप्त करना चाहता था। पर वहां से भी निराशा मिली। अतः वह गंगा में डूबने जा रहा था। बीच में अचल उसे पकड़ लेता है।

अब साधना रेडियो स्टेशन पर प्रोग्राम में सम्मिलित होती है। एक दिन दामोदर लाल धन-सम्पत्ति नष्ट होने पर भिखारी-रूप में साधना के पास जाते हैं। वह प्रसन्नता से एक रुपया भीख में प्रदान करती है।

दूर पर एक वैरागी गा उठता है—

"दुनिया एक तमाशा बाबा।"

यह नाटक सन् ५० में कलाकार-संसद, दरभंगा द्वारा अभिनीत हुआ। छात्रों ने अन्य स्थानों पर कई बार इसका अभिनय किया।

तस्वीर उसकी (सन् १९६४, पृ० ६४), ले० : चिरंजीत; प्र० : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; पात्र : पु० ५, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : १, ३, १।
घटना-स्थल : ड्राइंग-रूम।

प्रस्तुत नाटक में लेखक ने चीनी आक्रमण को आधार बनाकर देश-भक्ति का स्वर मुखरित करने का प्रयत्न किया है।

अंजना नाम की नवयुवती अपने कालेज के सहपाठी मदन वर्मा और अनिल वर्मा दोनों भाइयों में से मदन वर्मा को अपना पति बना लेती है। इसके पिता इसका विरोध करते हैं। मदन धीरे-धीरे अपने ससुर के प्रकाशन-गृह पर अधिकार कर लेता है और मैनेजर पाण्डे पर गबन का झूठा आरोप लगाकर उसे निकाल देता है। दूसरी ओर वह नलिन को भी घर से निकाल देता है। नलिन झूठी आत्महत्या का नाटक रचकर पुराने मैनेजर पाण्डे के साथ अलमोड़ा चला जाता है। अंजना अपनी सहेली सावित्री से मिलकर 'रानी झांसी समाज' चलाती है, जिसमें सैनिक शिक्षा दी जाती है। परन्तु मदन अपनी प्रेमिका रोमिला और नये मैनेजर के साथ मिलकर तस्कर-व्यापार करता है। वह इन दुष्कार्यों के अतिरिक्त देशद्रोही भी बन जाता है। इसी बीच रोमिला और नया मैनेजर गिरफ्तार हो जाते हैं। इस गिरफ्तारी के पश्चात् मदन के घर आने पर अंजना उसको पकड़वाने के लिये पुलिस को फोन करती है। मदन पिस्तौल से आत्महत्या कर लेता है।

तहजीब (सन् १९५९, पृ० ७५), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : २।
घटना-स्थल : सेठ की कोठी।

यह नाटक आज के फैशन-परस्त जीवन का चित्र प्रस्तुत करता है। उमाशंकर अपनी पुत्री नीलम को नर्तकी, गायिका के अतिरिक्त मिस इण्डिया और मिस यूनिवर्स भी देखना चाहते हैं। उनके पुत्र किशोर इंग्लैण्ड से नंगी तस्वीरों का ऐसा तोहफा लाए जिसे देख नीलम वासना में भर जाती है और अपने ही पिता के क्लर्क राजशर्मा से अपनी इच्छाओं की पूर्ति करना चाहती है। किन्तु उससे उपेक्षित होने पर उसे घर से जलील करके निकाल देती है। अन्त में नीलम घर से भागकर क्लब में जाती है। राजशर्मा उसे पकड़ पिता के हाथों सौंपता है। तहजीब की इस पराकाष्ठा से वकील उमाशंकर की आंखें शर्म से झुक जाती हैं। वह राजशर्मा को पुनः नौकर रख लेता है।

अभिनय—स्टार्स ऑफ इंडिया लुधियाना द्वारा अभिनीत।

तात्या टोपे (वि० २०१७, पृ० ९२), ले० : श्री पालीराम भट्ट; प्र० : साहित्य निकेतन, कानपुर; पात्र : पु० ३० ; अंक : ३, दृश्य : ४, ५, ४।
घटना-स्थल : बैरकपुर छावनी, नाना साहब का महल, दिल्ली का किला, सती चौराघाट कानपुर, नाना साहब का घर कानपुर, फतेहपुर का युद्ध-क्षेत्र, कानपुर, गोमती का

किनारा, हुमायूँ की कब्र, रेजिडेन्सी, ग्वालियर का किला, युद्ध-क्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक में भारतीय राजा-महाराजाओं की कायरता तथा स्वार्थपरता दिखाई गई है।

भारतीय सिपाहियों पर अंग्रेजों की नीति की प्रतिक्रिया दृष्टिगोचर होती है, व विद्रोह का सकल्प करते हैं। अंग्रेजी सेना का भारतीय सिपाही मगल पाण्डे देश की बलि-वेदी पर उत्सर्ग हो जाता है। पेशवा के नाना साहब अपने निर्वासन-काल में अपने सेनापति तात्या टोपे को लेकर क्रान्ति को भड़काने में प्रयत्नशील हैं, हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य की भावना घर किए है। राजे-महाराजे अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर अपना-अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं, दिल्ली के मुगल बादशाह बहादुरशाह बुजदिलों में से हैं। इस प्रकार नाना साहब का यह कथन—'हमने जो विद्रोह सगठित किया है उसका न तो कोई केन्द्र है और न उसमें प्राण'—आगे चलकर सही साबित होता है। बाद में अंग्रेजों की चालाकी और भारतीय आदर्श का सघर्ष परिलक्षित होता है। द्वितीय अक में नाना साहब और तात्या के बीच में मनमुटाव उत्पन्न हो जाता है। तात्या अपने पद से इस्तीफा दे देता है। नाना साहब लियाकत अली के हाथ सैन्य-सचालन का भार सौंपते हैं, परन्तु अपनी कम सूझ के कारण वह मोर्चे में मुँह की खाता है। नाना साहब सपरिवार आत्महत्या कर लेते हैं। तात्या भरसक प्रयत्न करता है कि स्वाधीनता सग्राम सफल हो परन्तु भारतीय राजाओं की कायरता एव स्वार्थ-नीति से वह टूट जाता है। वह कहता है "भारत का शत्रु अंग्रेज नहीं भारतवासी स्वय है।" अंग्रेज अफसर हैवलाक तात्या के महत्त्व को स्वीकार करता हुआ कहता है "हार तो नेपोलियन का भी हुआ था, तुम्हारा मुल्क अगर तैयार रहता तो तुम जरूर अपने मुल्क को आजाद कर सकता।" अन्त में ग्वालियर-नरेश सिंधिया तथा जागीरदार राव साहब भी अपनी स्वार्थपरक बुजदिल नीति के कारण तात्या को धोखा देते हैं। तात्या पराजित और वन्दी हो जाता है।

'सत्' और 'असत' के सघर्ष में सत् की पराजय, मगल पाण्डे को फांसी, नानासाहब और मनु की मृत्यु तात्या की पराजय से होती है।

तारा (सन् १६५०), ले० भगवतीचरण वर्मा, प्र० साहित्य केन्द्र, इलाहाबाद, पात्र पु० २, स्त्री २, *अक-रहित*, दृश्य ४।

घटना स्थल प्रकृति-स्थली, कुटी आदि।

इस पौराणिक गीतिनाट्य में ऋषि-पत्नी तारा तथा चन्द्रमा के प्रणय-अभिशाप की प्रख्यात घटना है, जिसका केन्द्र-बिन्दु है—धर्म और वासना का तुमुल सघर्ष। आचार्य वृहस्पति की पत्नी तारा के जीवन का मुख्य लक्ष्य सयम की स्थापना है। प्रारम्भ में तप साधना की शुष्क-कठोर भूमि पर तारा का सौरभमय रूप, अतृप्त, उद्दाम-यौवन विद्रोह कर उठता है। एक ओर वह वासना-तृप्ति की आकांक्षी है, दूसरी ओर उसका सस्कारी मन नैतिकता की दुहाई देकर कर्त्तव्य-आराधना में शक्ति पाने का असफल प्रयास करता है। कर्त्तव्य और भावना का यह सघर्ष अन्त तक चलता है। द्वितीय दृश्य में अपने शिष्य चन्द्रमा को पढ़ाते समय वृहस्पति के मुख से पुण्य की व्याख्या करते हुए अनायास निकला वाक्य 'प्रकृति स्वय है, पाप-पुण्य कुछ भी नहीं' चन्द्रमा पकड़ लेता है जो बाद में उसकी कामान्ध वासना का सम्बल बनता है। रात्रि के स्निग्ध वातावरण में चन्द्रमा को देखते ही तारा का नारी हृदय पुरुष-कामना से पीड़ित हो जाता है। सहसा चन्द्रमा तारा को माँ सम्बोधित करके उसके कामवेग पर आघात करता है। इसी समय ऋषि चन्द्रमा पर आश्रम का भार छोड़कर बाहर चले जाते हैं। वृहस्पति की अनुपस्थिति दोनों के हृदय में वासनोद्दीपन में सहायक सिद्ध होती है। उनका यौवन नैतिक-सीमाएँ तोड़ मुक्त-प्रवाह में वह जाना चाहता है। चन्द्रमा नर-नारी के शाश्वत सम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में तर्क का आश्रय लेकर तारा के धर्मभीरु हृदय पर विजय प्राप्त कर लेता है और तारा वासना के दुस्तर प्रवाह में सुखमय पाप के लिए आत्म-समर्पण कर देती है। चतुर्थ दृश्य में वृहस्पति कुटी की

शून्यता तथा अपने योगबल से वस्तुस्थिति का बोध कर दोनों को युगयुगान्तर के लिए शाप दे देते हैं।

तिन्दुबुलम (सन् १९५८, पृ० १०१), ले० : लक्ष्मीकान्त वर्मा; प्र० : किताब महल, इलाहाबाद; पात्र : पु० १२, स्त्री ३; अंक : २; दृश्य : ३, ४।
घटना-स्थल : मन्दिर, नदीतट।

गीतगोविन्द के रचयिता जयदेव की जीवन-सम्बन्धी एक किंवदंती के आधार पर लिखा गया नाटक है। कथारम्भ श्री जगन्नाथ मन्दिर के एक कक्ष में होता है। धर्माभिमानी, दम्भी आचार्य सत्यदर्शन मन्दिर में होने वाले तिन्दुबुलम के गान को बन्द कर देता है। उसका विचार है कि गान वासना को प्रदीप्त करता है। पद्मावती नामक देवदासी को तिन्दुबुलम की प्रेमिका घोषित कर प्रेम के अपराध में कैद कर लेता है। पिता देवव्रत पुत्री पद्मावती को मारता-पीटता है, लेकिन वह गाने से इन्कार कर देती है। नचिकेता अनेक कापालिक आचार्यों के कार्यों की भर्त्सना करता है। आचार्य देवव्रत को निकाल देता है तथा तिन्दुबुलम का प्रवेश निषेध कर देता है। तिन्दुबुलम समुद्र की लहरियों के संगीत में रम जाता है, वहीं पद्मावती उससे मिलने जाती है तथा आनन्द अनुभव करती है। समय बीतता जाता है और तिन्दुबुलम की साधना बढ़ती जाती है। उसका विचार है—"मैंने पद्मावती से प्रेम किया है, उसके रसमय अभिनय से मैंने गति ली है, उसकी भावमुद्रा से मैंने छन्द लिए हैं, उसके संकेतों से मैंने शब्द लिए हैं।" लेकिन आचार्य सत्यदर्शन देवदासी को पथभ्रष्ट करने के अपराध में तिन्दुबुलम को दण्ड देने पर दृढ़ रहते हैं। पद्मावती कवि जयदेव के प्रेम में सभी बंधन तोड़कर रम जाती है। नचिकेता भी तिन्दुबुलम को यही प्रेरणा देता है कि "इसका भोग करो""इसमें ही तृप्ति मिलती है। त्याग से नहीं।"

अचानक नदी-तट पर राज-सेना का आक्रमण हो जाता है। वे नचिकेता को पकड़ ले जाते हैं और कवि के ताड़-पत्र राजा लक्ष्मणसेन को सौंप देते हैं। राजा ताड़-पत्र पर लिखे गीतों को पढ़कर आत्म-विभोर हो जाता है तथा कवि की तलाश करता है। कापालिक नचिकेता की सहायता से राजा को कवि तिन्दुबुलम के दर्शन कराता है। आचार्य सत्यदर्शन अन्धा हो जाता है और क्षमा-याचना करता है। अपने पापों का प्रायश्चित्त करता हुआ अपनी पुत्री विपुला को गले लगाता है। वह विपुला की माँ के प्रेम के प्रति भी अपने को कृतज्ञ मानता है। नचिकेता के समक्ष आचार्य अपने को पराजित स्वीकार कर लेता है। पद्मावती भी तिन्दुबुलम की आज्ञा से महाप्रभु के गीत गा उठती है। महाराज कवि-साधना को अमरत्व से रक्षित रखने के लिए गीतों को अपने राज्य में ले जाते हैं। इस प्रकार इस नाटक में एक ओर है मानव का सहज प्रेम और दूसरी ओर है देवदासी प्रथा का अभिशाप—धर्म के नाम पर किया जाने वाला अत्याचार। यह नाटकीय कथानक मध्ययुगीन धर्म की विसंगतियाँ प्रस्तुत करता है।

तिलक दहेज (सन् १९७१, पृ० ६८), ले० : रामनिरंजन शर्मा; प्र० : अलका-साधना मन्दिर, पटना; पात्र : पु० ११, स्त्री १; अंक : २; दृश्य : ८, ७।
घटना-स्थल : घर, कालेज, विवाह-मण्डप।

इस सामाजिक नाटक में प्रचलित तिलक-दहेज प्रथा का चित्रण है।

करुणा एक पढ़ी-लिखी युवती है। उसकी शादी के लिये पिता रघुवर तथा भाई रमेश बहुत परेशान होते हैं लेकिन दहेज की प्रथा से तंग आ जाते हैं। वह अपनी सारी जायदाद बेचकर करुणा की शादी एक रईस खानदान में पक्की कर लेते हैं, लेकिन करुणा यह शादी पसन्द नहीं करती। वह अपनी शादी कालेज में पढ़ने वाले एक ग्रेजुएट लड़के कमलेश के साथ करना चाहती है। कमलेश और करुणा में वर्ण-वैभिन्य होते हुए भी दोनों की शादी तय हो जाती है। गाँव के लोग इसे परम्परा के विरुद्ध मानकर विवाह-मण्डप में विघ्न डालते हैं। करुणा का भाई रमेश बड़ी बहादुरी से इन लोगों को मारकर हटाता है। कमलेश और

करुणा भी डटकर मुकाबला करते हैं। कमलेश के सिर में चोट आती है जिससे रक्त बहता है। इतने में पुलिस आकर सभी लोगो को गिरफ्तार कर लेती हैं। कमलेश अपने बहते हुए रक्त से करुणा की माग में सिंदूर लगा देता है।

अभिनय—कलामच द्वारा घटना मे अभिनीत।

तिलस्मानी पुतली मारूफये सहरसामरी जमशेदी (सन् १९१३), ले० मिर्जा नज़ीर बेग, प्र० नजीर मतबा इलाही, आगरा, पात्र पु० ७, स्त्री २।

इस सगीत नाटक मे जादू का भाव तथा प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम दिखाया गया है।

इसका प्रारम्भ तूफान फलक नामक प्रसिद्ध जादूगर और उसकी दो पुत्रिया, मलिका पुतली और खुरशेद निगार, से होता है। जादूगर अपने जादू की शक्ति से दिलयारबाद के राजकुमार जवाबख्त को सुषुप्तावस्था मे उठा ले जाता है। वहा उसकी पुत्री खुरशेद निगार उसके सौंदय पर मुग्ध हो जाती है। राजकुमार की खोज-बीन प्रारम्भ हो जाती है। सुल्तानबख्श का मत्री-पुत्र नजूमी की घटना का पता चलने पर शहजादे की तलाश मे निकल पडता है। सयोग से वह जादूगर की पुत्री मलिका पुतली से मिलता है। वे दोनों एक-दूसरे के प्रति आकृष्ट हो जाते हैं। वह भी उनके तिलस्म की दुनिया म जा फँसता है। वे दोनो विभिन्न उपायो द्वारा जादूगर की दुनिया से निकलते हं। अन्त मे दोनो का विवाह हो जाता है।

तिलोत्तमा (सन् १९७२, पृ० १०८), ले० मैथिलीशरण गुप्त, प्र० साहित्य सदन, चिरगाव, झासी, पात्र पु० ११, स्त्री ६, अक ५।

घटना स्थल देवदानव सभा।

इस पौराणिक नाटक मे तिलोत्तमा के सौन्दर्य पर मुग्ध असुरो का सवनाश दिखाया गया है।

असुर लोकेश की तपस्या करके अजेय वरदान प्राप्त करते हैं। जिससे दानव देवताओ को जीतने के लिये उनसे युद्ध करते हैं। उनके प्राप्त वरदान का पता चलने पर कुबेर सारी बात देवराज इन्द्र से बताते है। देवता असुरो के अत्याचार से अत्यन्त दुखी हो लोकेश ब्रह्मा के पास जाकर अपनी दुखद घटना सुनाते है। ब्रह्मा जी दैत्यो के नाश के लिये एक सुन्दरी तिलोत्तमा का उत्पत्ति कर उसे दैत्यराज सुन्द और उपसुन्द के पास भेज देते हैं। मदान्ध दैत्यराज जब तिलोत्तमा को देखते हैं तो दोनो उसे अपनी-अपनी पत्नी बनाना चाहते है। तिलोत्तमा के कहने पर दोनो भाई आपस मे लडकर अपनी वीरता का परिचय देते हुए अन्त मे मर जाते हैं जिससे देवताओ का भय दूर हो जाता है। सब खुश होकर इन्द्राणी तथा अप्सराओ के साथ स्वर्ग चले जाते हैं।

तीन दिन तीन घर (सन् १९६१, पृ० १७१), ले० शील, प्र० लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र पु० १५, स्त्री ५, अक ५।

घटना स्थल गली, मकान।

इस सामाजिक नाटक म तीन प्रकार के घरो को लेकर समाज की भिन्न-भिन्न समस्याओ को परखा गया है। नाटक के प्रथम अक मे एक मजदूर की हत्या कर उसे रुई के ढेर म दबा दिया जाता है। फलस्वरूप मिलो मे हडताल हो जाती है। इस सत्य को प्रभात अपने समाचार पत्र मे प्रकाशित करता है, लेकिन उसे नौकरी से अलग कर दिया जाता है। इसी हडताल के बीच हीरालाल चोरबाजारी से धनी बन जाता है। नाटककार तथ्यो के आधार पर कहना चाहता है कि पूजीपतियो को हटाकर वर्गहीन समाज की स्थापना करना ही भारत के लिये श्रेष्ठ है। इस सघर्ष मे मजदूर का सबसे बडा महत्त्व है।

तीन पग (सन १९६४, पृ० ८०), ले० अम्बिका प्रसाद दिव्य, प्र० साहित्य सदन, अजयगढ, पात्र पु० ८, स्त्री १०, अक ३, दृश्य ४, ४, ५।

घटना-स्थल महल, अरण्य, राजभवन, यज्ञमण्डप।

इस नाटक में बलि वामन की पौराणिक कथा को कल्पना के आधार पर एक नई दृष्टि से देखा गया है। वामन की पत्नी महान् लावण्यमयी युवती है। उन पर वामन का छोटा भाई कुदृष्टि डालता है। सतीत्व रक्षा के अभिप्राय से वामन उसे लेकर एक अरण्य में रहने लगते हैं परन्तु राजा बलि को पता चलने पर वे उनकी पत्नी को छीन लाते हैं। रानी मंजुला उसके सतीत्व की रक्षा में सहायता करती है। बलि इस पर विजय प्राप्त करने के लिये यज्ञ करवाते हैं। यज्ञ के दिन वामन तीन पग पृथ्वी दान मांगने आते हैं। राजा बलि भगवान् की इस लीला से अनभिज्ञ रहकर तीन पग धरती दान देता है। इस पर भगवान् खुश होकर राजा बलि को पाताल भेज देते हैं।

तीन युग (सन् १९५८, पृ० ११८), ले० : विमला रैना; प्र० : किताब महल, जीरो रोड, इलाहाबाद; पात्र : पु० १२, स्त्री ८; अंक-रहित, दृश्य : ४।
घटना-स्थल : विशाल भवन का कक्ष, देश के विभिन्न भाग, आगन।

यह भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम की घटनाओं पर आधारित सामाजिक नाटक है। सन् १९२० से १९५७ तक की प्रमुख आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक घटनाओं को नाटक में संजोया गया है।

रायबहादुर शंकरलाल प्रातःकाल अपने पुत्र कैलाश से अखबारों में छपी हुई भारतीय राजनीति-सम्बन्धी उथल-पुथल की घटनाओं को सुन रहे हैं। राय साहब अंग्रेजियत के रंग में रंगे हैं किन्तु उनका बड़ा पुत्र कैलाश राष्ट्रीय-विचारधारा का प्रबल समर्थक है। रायसाहब बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ाते हैं। अंग्रेजी से दुःखी रायसाहब की पत्नी कभी-कभी घर में विरोध भी करती है। रायसाहब की पुत्रवधू भारतीय संस्कारों की नारी है तथा पति कैलाश के प्रति समर्पित रहती है। कैलाश प्रायः कांग्रेस के आन्दोलन में भी भाग लेता है और जेल जाता है। रायसाहब उसके मार्ग में बाधक कभी नहीं बनते हैं। रायसाहब का छोटा पुत्र गरमदल का सेनानी है। वह अपने मित्र चन्द्रमोहन के साथ क्रान्ति की योजनाएँ बनाता रहता है। दोनों ही सशस्त्र क्रान्ति में दृढ़ विश्वास रखते हैं।

रायसाहब के उसी घर में दूसरा युग आरम्भ होता है। कमरे में से विक्टोरिया की मूर्ति हटाकर गान्धी जी की मूर्ति लाई जाती है। कैलाश कांग्रेस का बड़ा नेता बनकर देशोद्धार पर भाषण देता है। गरमदल के राजीव तथा चन्द्रमोहन भी अपना क्रान्ति-कार्य निरन्तर चलाते हैं। रायसाहब की पुत्री प्रेम चन्द्रमोहन की प्रेमिका बनकर क्रान्ति में भाग लेती है। कैलाश का पुत्र मुन्ना भी क्रान्ति में चाचा-पिता के साथ सक्रिय है। कैलाश को जेल की लम्बी सजा हो जाती है।

अकेले शंकरलाल घर पर रह जाते हैं। शेष सभी आन्दोलनों में सक्रिय हैं। नए फैशन के कारण पुराने विचारों की रायसाहब की पत्नी छोटी बहू की आलोचना करती रहती है। स्वतन्त्रता आन्दोलन की क्रान्ति के मध्य ही भारत-पाक बटवारे का प्रश्न उपस्थित होता है। आजादी मिलने पर कैलाश जेल से छूट आता है।

आजाद देश की नवीन पीढ़ी का प्रतिनिधि मुन्ना स्वतन्त्रता-पूर्व के नेताओं की काहिली के कारण खिलाफत करता है। देश में अनन्त समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं, लेकिन नेता सुख भोग रहे हैं। शंकरलाल नई पीढ़ी को उपदेश देते हैं कि पुराने लोगों को छोड़कर वे अपना भविष्य स्वयं ईमानदारी से जगमग करें, इसी में स्वतंत्र राष्ट्र का हित निहित है।

तुम मुझे खून दो (सन् १९६६, पृ० ८५); ले० : देवी प्रसाद धवन 'विकल'; प्र० : चैतन्य प्रकाशन मन्दिर, कानपुर; पात्र : पु० ११; अंक : ३, दृश्य : १०, १०, ७।
घटना-स्थल : सुभाष का घर, विलायत, सिंगापुर, जापान आदि।

इस राजनीतिक नाटक में सुभाष बाबू का भारत की आजादी के लिए सच्चा देशप्रेम चित्रित है।

भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने देशवासियों से कहा था

"तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा।" उनके इस कथन को देशवासियों ने एक स्वर से माना। नेताजी अपने माता-पिता और गुरु माधव से देश-सेवा का पाठ सीखते हैं। हैदर गुण्डे को सही रास्ते पर लाते हैं। वे विलायत से आई० सी० एस० की परीक्षा पास करते हैं किन्तु तुरन्त ही उससे इस्तीफा देकर देश की आजादी की लड़ाई में कूद पड़ते हैं। सिंगापुर मे आजाद हिन्द-सेना का सगठन करते है। देशवासी उन्हे सोने और हीरे में तोलकर उनका सम्मान और मदद करते हैं। वे दो बार अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने जाते हैं। फिर देश को स्वतन्त्र करने के लिए जी-जान से जुट जाते हैं किन्तु सिंगापुर से जापान जाते समय उनका वायुयान दुर्घटना-ग्रस्त हो जाता है। उसमें आग लग जाने से उनका प्राणान्त हो जाता है।

तुम्हें रुपया खा गया (सन् १९५५, पृ० ८३), ले० भगवती चरण वर्मा, प्र० मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ३, २, २।
घटना-स्थल शयनागार, दफ्तर, लॉन।

इस सामाजिक नाटक में रुपये को ही प्रेम की पराकाष्ठा तथा दुर्दशा का कारण बनाया गया है।

सेठ मानकलाल २० वर्ष पूर्व किसी फर्म में क्लर्क था। अल्प आय होते हुए भी परिवार सुखी था। अचानक एक दिन उसके विचार बदलते हैं और वह आमदनी बढ़ाने के सिलसिले में उस फर्म से ५,००० रु० तथा कुछ कागज उड़ाकर दूसरे नगर में आ जाता है। वहां वह एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्ट का धंधा करता है। कितनी ही झूठी कम्पनियां बनाता और बिगाड़ता है। फलतः वह करोड़पति बन जाता है। मानकलाल अपने इस करोड़पति के जीवन में यह अनुभव करता है कि उसकी पत्नी, पुत्र, पुत्री, नौकर, चाकर सभी केवल उससे पैसे के लिये प्रेम करते हैं। इससे उसकी आत्मा की शान्ति नष्ट हो जाती है। एक बार सेठ बीमार होता है किन्तु उस की पत्नी मसूरी में किसी कला-केन्द्र का उद्घाटन करने में व्यस्त रहती है। पुत्र पांच लाख रुपये बनाने के चक्कर में दिल्ली से कलकत्ता तथा कलकत्ता से दिल्ली एक कर रहा है। सेठ में विरक्ति की भावना जागृत होती है और वह अपनी रुग्णावस्था में ही रुपये की माला फेरना शुरू कर देता है। उसका बेटा मदन जब आकर देखता है कि पिता ने अपनी बीमारी के दौरान सट्टे में ७० लाख रुपये पर पानी फेर दिया है तब वह सेठ को पागल करार कर देता है। पिता के कमरे से फोन हटवा देता है। इसी अवसर पर डा० का पिता किशोरीलाल आता है। यह वही कैशियर है जो मानकलाल के बदले में पहली फर्म में पांच हजार रुपये के लिये जेल काट कर आया हुआ होता है। किशोरीलाल बदले की अपेक्षा सहानुभूति ही व्यक्त करता है और अन्त में वह मानकलाल को बताता है कि कि तुम्हें रुपया खा गया। इसी चिन्ता में मानिकलाल को वस्तुतः टी० बी० हो जाती है।

तुलसी और सूर (सन् १९५८, पृ० ८८), ले० मदन गोपाल सिंघल, प्र० भारतीय साहित्य प्रकाशन, २३२, स्वराज्य पथ, सदर मेरठ, पात्र पु० ४, स्त्री ८, दृश्य : तुलसी ११, सूर ६।
घटना स्थल तुलसी की कुटिया, मार्ग, चित्रकूट, नाभा जी का स्थान, कृष्ण मंदिर, बैठक, गोस्वामी जी का स्थान, सूर की कुटिया, जंगल, श्रीनाथ जी का मंदिर।

यह धार्मिक नाटक एक तरफ तुलसी की भक्ति, सहनशीलता और निरभिमानिता पर आधारित है तो दूसरी ओर सूर के जन्मांध होने का समर्थन पुष्टि मार्ग के उस सामान्य सिद्धान्त के आधार पर ही किया जाता है जिसके अनुसार प्रभु की नित्य लीलाओं में प्रवेश पा चुके हुए पुष्टि जीव प्रतिक्षण कृष्ण की लीलाओं का साक्षात् दर्शन करते हैं। उसके लिए चर्म-चक्षुओं की नहीं आत्मिक दृष्टि की आवश्यकता होती है जो सूर को सहज प्राप्त है। वास्तव में दोनों रूपक एकांकी के अधिक समीप जान पड़ते हैं।

तुलसीदास (सन् १९५१, पृ० ७०), ले० : श्रीराम शर्मा; प्र० : हिन्दी भवन, हिन्दी मार्ग, नाम पल्ली रोड, हैदराबाद; पात्र : पु० १२ स्त्री १ तथा साधु और नर्तकियां, अंक : ४।
घटना-स्थल : कवि-पत्नी का गृह, तपोभूमि, नदीतट, काशी विश्वनाथ का मंदिर।

महाकवि तुलसीदास जी के जीवन की घटनाओं पर आधारित ऐतिहासिक नाटक है। कथा का आरम्भ तुलसीदास तथा रत्नावली के प्रेम-सम्बन्ध से होता है। एक बार रत्नावली अपने भाई के साथ तुलसीदास की अनुपस्थिति में अपने मैके चली जाती है। पत्नी-वियोग में व्यथित हो तुलसी उसके घर पहुँचते हैं। वहां पर फटकारे जाने पर वे विरक्त हो काशी चले जाते हैं। काशी में तुलसीदास जी रामोपासना में लीन हो जाते हैं। तुलसी को विख्यात होते देख अन्य सम्प्रदाय के लोग उनको बदनाम करने के लिये षड्यन्त्र रचते हैं। लेकिन तुलसी से परास्त हो उनकी शिष्यता स्वीकार कर लेते हैं। इन्हीं दिनों टोडरमल के पुत्र ज्ञानमल्ल तथा ज्ञानमल्ल के मित्र शोभराज राजदरबारी कवि आचार्य केशव के अश्लील शृंगारी काव्य को सराहने थकते नहीं हैं। केशव वृद्ध होने पर भी हृदय में रंगीन हैं अतः अपने बालों की सफेदी से व्यथित हैं। वे जहांगीर के साथ काश्मीर-यात्रा करते हैं। लौटने पर कवि तुलसीदास की लोकप्रियता से परिचित होते हैं। केशव ईर्ष्याविष्ट तुलसी की सतत निन्दा करते हैं तथा उनके यश को मलिन करने के लिए छन्दों तथा अलंकार के वैचित्र्य से भरपूर 'रामचन्द्रिका' की रचना करते हैं। तुलसी से प्रभावित टोडरमल्ल मृत्यु से पूर्व चुपचाप अपनी वसीयत तुलसी को लिख जाते हैं लेकिन विरागी भक्त तुलसी सम्पत्ति को स्वयं न लेकर उनके परिवार तथा विद्यालय को दान दे देते हैं। अचानक तभी तुलसी से रत्नावली का मिलन होता है। महामारी से ग्रस्त तुलसी शान्तिपूर्वक स्वर्ग चले जाते हैं।

तुलसीदास (सं० १९९१, पृ० ५४), ले० : जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी; प्र० : गंगा पुस्तक कार्यालय लखनऊ; पात्र : पु० ७, स्त्री १; अंक : ३; दृश्य : ७, ९, ९।
घटना-स्थल : ससुर का घर, गंगा का तट, काशी विश्वनाथ का मंदिर।

प्रस्तुत रूपक गोसाईं-चरित्र के आधार पर लिखा गया है। इसमें गोस्वामी जी के जीवन की मुख्य घटनायें ही ली गई हैं। नाटक में कल्पित पात्रों का भी प्रयोग है। वर्तमान युग के अनुरूप गोस्वामीजी का दलितोद्धारक रूप रंगमंच के लिए अत्यन्त उपयुक्त है।

तुलसीदास (सन् १९२२, पृ० १४३), ले० : बदरीनाथ भट्ट; प्र० : रामभूषण पुस्तकालय, आगरा; पात्र : पु० ८, स्त्री ५; अंक : ३, दृश्य : ८, ८, ५।
घटना-स्थल : तुलसीगृह, सोरों, अवध, आगरा, काशी।

इस नाटक में भक्त शिरोमणि तुलसीदास की जीवन-झांकी प्रस्तुत की गई है।

तुलसीदास का साला अपनी बहन रत्नावली की दुर्दशा देखकर उसे अपने घर ले जाना चाहता है। पर तुलसीदास के आग्रह से रत्नावली द्विविधा में पड़ जाती है। भाई के आग्रह करने पर वह तुलसीदास की अनुपस्थिति में भाई के साथ पितृगृह चली जाती है। तुलसीदास अपनी स्त्री पर रुष्ट हो ससुराल चल पड़ते हैं। वहां पहुँचने पर रत्नावली कहती है—"बनाओ हाड़, रक्त या चाम जिस में प्रेम करते हो, जो होता राम में यह प्रेम तो फिर क्या नहीं होता।" तुलसीदास वहां से खिन्न होकर गुरु नरहरिदास के पास जाते हैं। वहां से ज्ञानोपार्जन कर अवध पहुँचते हैं।

दूसरे अंक में तुलसीदास काशी में एक प्रेत को प्रसन्न करके उससे भगवद्दर्शन का वरदान मांगते हैं। प्रेत तुलसीदास को कर्णघंटा पर होने वाली रामकथा में कोढ़ी के रूप में कथा श्रवण करने वाले हनुमान के पास भेजता है। तुलसीदास कोढ़ी रूपधारी हनुमानजी की स्तुति करते हैं। हनुमान तुलसीदास को चित्रकूट में रामदर्शन का वरदान देते हैं। अब तुलसीदास भक्ति से सिद्ध

महात्मा होकर आगरा में एक पागल हाथी से जनता की रक्षा करते हैं। अकबर खानखाना, बीरबल और मानसिंह तुलसीदास की भक्ति से प्रभावित होते हैं। तुलसीदास जीवन के अन्त में प्लेग से पीड़ित होते हैं। उसी समय रत्नावली भी वहां पहुंच जाती है और तुलसीदास के शव को प्रणाम कर वह भी प्राण छोड़ देती है।

तू कौन (सन् १९३१, पृ० ८०), ले० रामशरण आत्मानन्द अमरोही, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ११, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य १०, ११, ५। घटना-स्थल मेला, गंगातट, साधु की कुटी, विवाह-मण्डप।

इस सामाजिक नाटक में पत्नी का सच्चा पति प्रेम दिखाया गया है।

सरूप एक मेले में खो जाता है। लोग उसके गंगा में बहकर मर जाने की कल्पना कर लेते हैं। इस समाचार से लोग उसकी पत्नी दुर्गा को विधवा समझने लगते हैं। किन्तु भाग्य से एक साधु की कुटी में सरूप और दुर्गा की भेंट होती है। दोनों आपस में प्रेम से मिलते हैं पर इसी बीच रजीत भी दुर्गा से प्रेम करता है। दुर्गा के पिता रजीत के साथ उसकी शादी तय करते हैं। यद्यपि इस विधवा-विवाह में उन्हें बड़ी कठिनाई होती है तथापि शादी के अन्तिम समय में दुर्गा द्वारा सरूप के बचपन के चित्रों को दिखाने से यह प्रमाणित हो जाता है कि दुर्गा विधवा नहीं सधवा है और उसका असली पति सरूप अभी जीवित है। अतः विवाह-मण्डप में ही रजीत यह रहस्य जानकर उसे पुनः उसके पति सरूप के साथ कर देता है।

तेरो सितम (सन् १९२३, पृ० १०४), ले० बी० डी० गुप्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, अंक ३, दृश्य ७, ६, ३। *घटना-स्थल सीजर का शाही बाग, सीजर* मीनार के ऊपर कमरा, शाही दरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक में दुष्ट राजा सीजर की व्यभिचारिता तथा वीर सेना मारकस की वीरता प्रस्तुत है।

सीजर के दरबार में सुन्दरी मार्गिन मरसिया फूल की डाली लेकर सेवा में उपस्थित होती है। सीजर उसे एकान्त में ले जाकर उसका सतीत्व हरण करना चाहता है किन्तु वह वीरतापूर्वक उसकी कमर से रिवाल्वर खींचकर फायर करती है। गोली कान के पास से निकल जाती है। मरसिया नदी में कूदकर निकल भागती है। सीजर उसे पकड़ने की आज्ञा देता है।

सीजर के आनन्द भवन में मरसिया भेषधारी मार्टन बन्दी-रूप में आता है। सीजर कहता है—ओ सुनहरी नागिन, तूने मुझपर फायर किया था क्या अब भी तू मेरे हाथों से निकल सकती है। मार्टन अपने सर से टोप और गाउन उतार देता है और ललकारता है कि मैं एक स्त्री का सतीत्व बचाने के लिये प्राण देने को तैयार हूँ। मार्टन का वध होता है और सीजर उसकी लाश पर ठहर जमाता है।

सरजीर और सीजर में ईश्वर के अस्तित्व के विषय में बहस होती है। सीजर उसे तलवार से मारना चाहता है पर वह भाग निकलता है। रोम के ईसाई मुहल्ले में आग लगा दी जाती है। सीजर प्रसन्न होकर देखता है। एक स्त्री अपने मृतक बच्चे को लेकर सीजर के सामने आती है किन्तु सीजर वश्याओं से घिरा शराब पी रहा है। नाटक के अन्त में *मारकस नामक वीर सेनानी को* मरसिया के द्वारा सीजर के पापों का पता चलता है। सीजर शत्रुओं से घिर जाता है और अन्त में धधकती आग में जल मरता है। मारकस राजकाज सम्हालता है। लुई अपनी बेटी मरसिया का विवाह मारकस से करते हुए कहती है—मैंने प्रतिज्ञा की थी कि प्रजा के कष्ट हरने वाले को ही अपनी लड़की दूंगी।

तोता मैना (सन् १९६२, पृ० ७३), ले० डा० लक्ष्मीनारायण लाल, पात्र पु० ८ और तोता मैना, अंक ३।

इस नाटक में तोता मैना सूत्रधार एवं नटी के रूप में आपसी वार्तालाप से कथा का दिग्दर्शन कराते हैं। तोता पुरुष-पक्ष तथा मैना स्त्री पक्ष को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिये अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं। दोनों अपने-अपने पक्ष की पुष्टि के लिये अनेक कथाओं, घटनाओं को

दृष्टान्त-रूप में रखते हैं। विवाद अधिक बढ़ने पर हंस आकर दोनों को समझाते हुए कहता है—"इस दुनिया में मर्द सभी एक-से नहीं होते···सभी औरतें एक ही तरह की नहीं होतीं"—हंस तोता-मैना का मतभेद दूर कर दोनों की आपस में शादी करा देता है। नाटक प्रथम बार लखनऊ थियेटर द्वारा १९६१ में और थियेटर यूनिट, बम्बई द्वारा प्रदर्शित।

त्याग या ग्रहण (सन् १९४३, पृ० १२२), ले० : सेठ गोविन्द दास; प्र० : रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद; पात्र : पु० ५, स्त्री २; अंक : ५; दृश्य-रहित।

घटना-स्थल : संपादक का कार्यालय, भवन का कक्ष, आश्रम।

इस नाटक में गांधीवाद तथा साम्यवाद की श्रेष्ठता के प्रश्न को उठाकर समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। धर्मध्वज गांधीवादी है और नीतिराज साम्यवादी। गांधीवाद त्याग में विश्वास करता है और साम्यवाद मानव के मनोविज्ञान को लेकर नीतिराज के माध्यम से व्यक्त हुआ है। इन दोनों ही पात्रों के मध्य, नाट्यकार ने रुमानी भूमिका में विमला देवी को (एम० ए० प्रथम श्रेणी पास) नायिका के रूप में प्रस्तुत किया है। धर्मध्वज के चित्रण में आदर्श को दिखाया गया है जबकि नीतिराज के माध्यम से नवयुवक-वर्ग पर व्यंग्य किया गया है। साम्यवाद अवगुणों को तो अपना रहा है किन्तु उसके गुणों से दूर होता जा रहा है। नीतिराज के प्रति सर्वप्रथम विमला आकृष्ट होती है। वह उसकी साम्यवादी विचारधारा से सहमत रहती है। नीतिराज से वह स्वच्छन्द प्रणय-संभोग करती है किन्तु जब नीतिराज को यह मालूम होता है कि विमला गर्भवती हो चुकी है तो वह भावी भय से घबड़ा जाता है। नीतिराज को लगता है कि इस तरह से वह अपनी पैतृक सम्पत्ति से च्युत कर दिया जायेगा। अतएव वह विमला से विवाह का प्रस्ताव रखता है। जब विमला को यह पता लगता है कि नीतिराज साम्यवाद के सिद्धान्तों से हट रहा है जिसके मूल में उसकी कायरता है तब वह उससे घृणा करने लगती है। इस अवसर पर वह कहती है कि मैं अपना बालक नदी में फेंक दूँगी या किसी अनाथालय को दे दूँगी किन्तु किसी कायर की पत्नी बनना कभी भी पसन्द नहीं करूँगी। ऐसे अवसर पर धर्मध्वज सारी परिस्थिति को जानता हुआ भी उसकी सहायता में प्रवृत्त होता है।

त्यागी युवक (वि० १९९४, पृ० ७६), ले० : अमर विशारद; प्र० : तिलक पुस्तक भण्डार, मधुपुर, संथाल परगना; पात्र : पु० १५, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ७, ६, ५।

घटना-स्थल : रास्ता, शराबी, पियक्कड़ का मकान, आदित्यसेन जमींदार की कचहरी, शराब की दुकान, इनायतअली का घर, सड़क, झंडे से ढका शव।

इस दुःखान्त नाटक में दो त्यागी युवकों का देश को अंग्रेजी सत्ता से मुक्त कराने के लिये किये अद्भुत बलिदान को दिखाया गया है।

रवीन्द्रनाथ के गान 'अन्तर मम विकसित करो···' से मंगलाचरण होता है और द्वितीय दृश्य में एक ग्रेजुएट नवयुवक उदय हाथ में बी० ए० की डिग्री लेकर मार्ग में उपाधि की निरर्थकता और बेकारी की समस्या पर सोचता जा रहा है। उसका नेता दिवाकर किसानों और मजदूरों की दुर्दशा का कारण विदेशी शासन बतलाकर कहता है—"भारत स्वतन्त्र होकर सबसे पहले किसानों और मजदूरों को ऋण-मुक्त करेगा। उन्हें उनकी जमीन का मालिक बना, उनके भोजन-वस्त्र और स्वास्थ्य-शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करेगा और शासन की बागडोर उनके हाथों में देगा। उदय को यह सुनकर मानो मार्ग मिल जाता है। उदय को मार्ग में एक चोर हथकड़ी-बेड़ी में जकड़ा थानेदार द्वारा पिटता दिखाई पड़ता है। चोर कह रहा था "हुजूर दो दिन से कुछ खाया नहीं था, इसलिये एक रोटी वाले की दुकान से आँखें बचाकर चार रोटियाँ उठाईं कि पकड़ा गया।"—दारोगा फरीद खाँ उसकी दीन दशा देखकर दुःखी होता है पर कानून के अनुसार चोर को दंड देना ही पड़ता है।

प्रथम अंक में शराबियों की दुर्दशा दिखाई गई है। सत्यवती अपने शराबी पति से तंग आकर कहती है—"पुरुष कुछ भी करे स्त्री खोट नहीं सकती। कहां हैं हिन्दू धर्म के ठेकेदार? वे विवाह की अध्यात्मवादिता दिखलाये।" इसी अंक में एक अछूत, उदय और दिवाकर को पीठ दिखाते हुए कहता है—"पीठ फाटि गेल सरकार! मारत-मारत दम निकाल दिहिन।" इस हरिजन को केवल अछूत होने के कारण सवर्णों ने पीटा था। उदय और दिवाकर उक्त समस्याओं का मूल कारण अंग्रेजीराज मानकर विदेशी सत्ता से देश को मुक्त कराने के लिए घर-बार छोड़ देते हैं।

उदय और दिवाकर जमींदार आदित्यसेन के विरुद्ध किसानों और मजदूरों का जत्था लेकर जुलूस निकालते हैं। उनका नारा है "जमीन किसानों की, कारखाना मजदूरों का, गुलामी मौत है।" जमींदार आदित्यसेन गुंडों द्वारा इतना पीटा जाता है कि उसके जीवन की कोई आशा नहीं।

तीसरे अंक में राष्ट्रीय मुसलमान इनायत अली देश की दशा देखकर कहता है—"वे मुसलमान हो नहीं सकते जो हिन्दुस्तान को गुलाम बनाये रखने में अंग्रेजों के मददगार हैं। इनायत अली की गोद में मरणासन्न दिवाकर लेटा है। वह मरते समय कहता है "भगवान मुझे फिर नयी ताकत, नए जोश के साथ भेजे।" दिवाकर को देखकर उदय रोता है तो दिवाकर कहता है, "कल २६ जनवरी है, जाओ और थाने पर स्वतंत्रता का झंडा गाड़ आओ।" उदय तिरंगा झंडा गाड़ने फरीद खां के थाने पर जाता है। ज्योंही झंडा फहराने का प्रयास करता है कि सार्जेंट मि० फाम्स उसको बड़ी निर्दयता से पीटता है। उदय के प्राण उसी समय निकल जाते हैं। इनायत अली के मकान पर उदय और दिवाकर के शव अगल-बगल में रखे जाते हैं। शव तिरंगे में ढके हैं। सभी अमर शहीदों की जय बोलते हैं। उदय के पिता भानु प्रकाश के रोदन के साथ नाटक समाप्त होता है।

त्रिकोण की भुजाएं (सन् १९७०, पृ० ८४), ले० डॉ० चन्द्रशेखर, प्र० आत्माराम एण्ड सन्ज, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री १, अंक-रहित, दृश्य ८।

घटना-स्थल पाठशाला, होस्टल, हास्पिटल, गान्धीरोड।

इस सामाजिक नाटक में सच्ची प्रेमिका का कुटिल, वासनासक्त प्रेमी के साथ प्रेम दिखाया गया है।

इस ध्वनि-नाटक में त्रिकोण की भुजाएँ नमिता, दिवाकर और लोकेश हैं। नमिता अपने प्रेमी दिवाकर को पाने के लिए ही अपनी अभिलाषाएँ एवं परिवेश त्याग कर आधुनिक बन जाती है। दिवाकर नमिता को केवल वासनाओं की तृप्ति का साधन समझता है। वह मेजर गुप्ता, विद्यार्थिया आदि के सामने नमिता का परिचय 'मिस्टर' 'कजिन' के रूप में देता है। नमिता दुनिया के लाछन से डर कर दिवाकर पर विवाह करने के लिए दबाव डालती है लेकिन दिवाकर शादी करने से अनिच्छा प्रकट करता है। दिवाकर अपने स्कूटर पर नमिता को होस्टल छोड़ने जा रहा था कि भयंकर दुर्घटना हो गई। दिवाकर बच गया लेकिन नमिता की दोनों टांगें काटनी पड़ी। प्रो० शर्मा नमिता की जीवन-रक्षा के लिए अपना खून देते हैं। दिवाकर दुर्घटना के दूसरे दिन ही विश्वविद्यालय के 'टूर' में अजन्ता की गुफाएँ देखने चला जाता है। होश आने पर नमिता प्रो० शर्मा को सामने खड़ा देख दिवाकर के लिए तड़प उठती है।

अब प्रो० शर्मा नमिता के दुःख के साथी बन जाते हैं। वे कुछ पुस्तकें और अपनी डायरी पढ़ने के लिए नमिता के पास हास्पिटल में भिजवा देते हैं। डायरी पढ़कर उसे प्रो० शर्मा की उदात्त भावना और दिवाकर के लुभावने चेहरे, कुत्सित वासनाओं का पता चलता है। वह डायरी के अन्तिम पन्ने पढ़ती हुई तिलमिला उठी कि दिवाकर दुर्घटना के दूसरे दिन ही अनिता से शादी करके 'टूर' पर चला गया। उसके जीवन-सपने चकनाचूर हो गये। वह आत्महत्या करने के लिए स्टो-

साकेत पर आक्रमण करते हैं, दूसरी ओर से विश्वामित्र। आपत्ति के क्षण में वसिष्ठ अपने कृत्य पर पश्चात्ताप करते हैं। तभी विश्वामित्र मैत्री का हाथ आगे बढ़ाकर सम्मिलित सैन्य से हैहयराज को परास्त कर देते हैं। वसिष्ठ और विश्वामित्र की मैत्री के फलस्वरूप वर्णविद्वेष की अग्नि शान्त हो जाती है और त्रिशंकु राजपद तथा विश्वामित्र ब्रह्मर्षि-पद पाते हैं।

थके पाव (वि० २०१२), ले० भगवती चरण वर्मा, प्र० साहित्य सदन, देहरादून, [उपन्यास का नाटक रूपांतर अभिनय के लिए]

इस नाटक में तीन पीढ़ियों का कथानक है। विवाह और परिवार-वृद्धि के कारण प्रत्येक व्यक्ति को जीवन कष्टमय प्रतीत होता है।

कथा का नायक नौकरी के लिए इण्टरव्यू में जाता है पर वहां सिफारिश के बल से अयोग्य व्यक्ति चुना जाता है। घर लौटते ही वह ज्वरग्रस्त होता है। उसकी बहन के विवाह में दहेज के कारण परिवार पर ऋण होता है।

किसी प्रकार नौकरी प्राप्त करने पर जो वेतन मिलता है वह इतना अल्प है कि तीन-चार बच्चों और स्त्री के साथ निर्वाह करना कठिन है। भाई सिनेमा में धनोपार्जन करता है। वह बहन के विवाह में कोई योगदान नहीं देता है। परिणामतः परिवार छिन्न भिन्न होता है। उस दिन वर्क के परिवार में उसका लड़का परीक्षा में अनुत्तीर्ण होता है। आगे चलकर एक छात्रावास में उसके लिये द्रव्य का अभाव पड़ता है। यही क्लर्क फर्म में रिश्वत लेता है, क्योंकि पुत्र की पढ़ाई का खर्चा देना है। हृदय में कोलाहल मचता है। प्रातःकाल फर्म के स्वामी को सूचित करता है कि जो सैम्पिल पास था उसके अतिरिक्त दूसरा माल रिश्वत लेकर हमने पास कर दिया है। मैं बेईमान हूँ पर यह बेईमानी मैंने अभाव और बहन-बेटी की शादी में दहेज के रुपयों के लिये की है। मालिक क्षमा नहीं करता है। रिश्वत का रुपया लौटा देता है पर नौकरी से त्यागपत्र मांगता है। परिवार पर बड़ा प्रहार होता है और अन्त में क्लर्क आत्महत्या कर चिन्ता से मुक्त होता है।

थोड़ी देर पहले और थोड़ी देर बाद (सन् १९३८), ले० सत्यदेव दूबे, *पात्र* पु० ३, स्त्री १, *अंक* १, दृश्य-रहित।

घटना-स्थल कमरा।

इस सामाजिक नाटक में आधुनिक मानव के मानसिक द्वन्द्व को प्रदर्शित किया गया है। वर्तमान युग में परिस्थितियों के द्रुतगति से बदलने के कारण कोई निर्णय लेना असम्भव हो गया है।

नाटक का नायक रमेश जीविका का कोई साधन न होने के कारण अपनी प्रेयसी कमला से विवाह नहीं कर पाता। वह कर्त्तव्य को प्यार से अधिक महत्त्व देता है। इसी कारण कमला भी आत्महत्या करने की चेष्टा करती है। किन्तु बच जाती है। चन्दन नामक एक युवक कमला से विवाह का प्रस्ताव करता है किन्तु कमला और रमेश के प्रेम का रहस्य ज्ञात हो जाने पर वह अपना विचार बदल देता है। वह रमेश के लिए जीविका का साधन जुटा देता है। अचानक कमला की भी लाटरी निकल आती है। इस प्रकार अर्थ की समस्या दूर हो जाने पर दोनों का विवाह जाता है।

द

दंगा (सन् १९५७), ले० : गिरिजाकुमार माथुर; पात्र : पु०-स्त्री०; अंक-दृश्य-रहित। घटना-स्थल-रहित।

समसामयिक परिवेश पर आधारित यह एक रेडियो संगीत-रूपक है। भारत-पाकिस्तान के विभाजन की साम्प्रदायिक पृष्ठ-भूमि पर कवि ने घृणा और कटुता दोनों का दिग्दर्शन कराया है जिसमें तत्कालीन जनता में व्याप्त भय, अनास्था, अनिश्चितता और आक्रोश की तीव्र अभिव्यक्ति मिलती है।

दंत मुद्रा (वि० २०२४, पृ० ८३), ले० : सीताराम चतुर्वेदी; प्र० : अखिल भारतीय वि० प० काशी; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ३, ४, ४।
घटना-स्थल : अध्ययनकक्ष, प्रमोदवन, ब्रह्मचारी का स्थान, आवास, भवन का बाहरी हिस्सा, शयनागार, कुटिया, न्यायसभा।

इस ऐतिहासिक नाटक में सम्राट् अशोक की गुप्त नीतियाँ दिखाई गई हैं।

शिशुपाल अशोक के समय का एक मनस्वी ब्राह्मण है, जो चाणक्य का शिष्य होने के नाते यह सोचता है कि मैं राज्य का संचालन भली-भाँति कर सकता हूँ। संयोगवश एक दिन अशोक भटकता हुआ उसके यहाँ पहुंचता है लेकिन उसे अपना परिचय नहीं देता। शिशुपाल उससे अशोक की बुराई करता है। अगले दिन राज-दरबार में शिशुपाल को बुलाकर उसे न्यायमंत्री बना दिया जाता है। अशोक क्रूर एवं विलासी स्वभाव का होने के कारण एक दिन सेवक की हत्या करके शिशुपाल को आदेश देता है कि अगर आपने हत्यारे का पता न लगाया तो आपको मृत्युदंड दिया जायगा।

यह १९४४ में अभिनव रंगशाला के दृश्य पीठात्मक पेटिका रंगमंच पर, १९४९ में सतीशचन्द्र कालिज, बलिया के रंगमंच पर तथा १९६६ में डोगरा महाविद्यालय में सफलतापूर्वक अभिनीत हुआ। इसमें लेखक ने स्वयं भी अभिनय किया था।

दक्षयज्ञ-विध्वंस (सन् १९१४, पृ० ६३), ले० : प्र० : कैलासपति द्विवेदी और कमलधारी; पात्र : पु० ७, स्त्री ६; अंक : ४; गर्भांक : १, ४, ४, १।
घटना-स्थल : दक्षपुरी, राजसभा, कैलास-पर्वत ब्रह्मलोक, सदाशिवपुरी।

इस पौराणिक नाटक में सती का पितृ-गृह में प्राण-त्याग तथा शिव द्वारा दक्षयज्ञ का विध्वंस दिखाया गया है।

स्तुति के उपरान्त दक्ष के दरबार में वीणा बजाते नारद आते हैं। दक्ष नारद से अपने जामाता शिव द्वारा अपमान के प्रतिशोध का उपाय पूछते हैं। भृगु-यज्ञ-सभा में सभी देवताओं ने दक्ष की अभ्यर्थना की किन्तु शंकर अहंकारवश खड़े भी नहीं हुए। अतः दक्ष-यज्ञ में शंकर को निमंत्रण नहीं दिया जायगा। यदि वे आयेंगे तो बहिष्कृत कर दिये जायेंगे। दक्ष-पत्नी प्रसूती इस प्रस्ताव का विरोध करती हैं और नारद से अनुरोध करती हैं कि सती से यहाँ आने का आग्रह करना। नारद शंकर के पास पहुँचकर दक्ष की सारी योजना समझाते हैं और दोनों का कलह देखने के लिए उत्सुक होते हैं। शंकर नारद से प्रार्थना करते हैं कि सती से इसकी चर्चा न करना। अब नारद बैकुंठधाम, ब्रह्मलोक, पाताल, चन्द्रलोक, इन्द्रलोक में जाकर लक्ष्मी-नारायण, ब्रह्मा, वासुकी, चन्द्र, कृत्तिका, अश्विनी-भरणी को दक्ष-यज्ञ का संदेश सुनाते हुए सती के पास पहुँचते हैं और दक्ष-यज्ञ की बात सुनाते हुए कहते हैं—"दुख का विषय है कि आपको निमंत्रित नहीं किया है, पर आप अपने पिता के गृह अवश्य जाना। अब अश्विनी आदि देवियाँ सती के पास आकर उनसे साथ चलने का आग्रह करने लगीं तो वह शिव से

अनुमति लेने जाती हैं, पर शिव कहते हैं—"देखो सती, तुम मुझको त्यागकर मत जाओ।" सती शिव की अवहेलना कर पितृ-गृह को प्रस्थान करती है। शिव नंदी को भेजते हैं कि सती को मार्ग से लौटा लाओ। सती किसी की कुछ न सुनकर दक्ष के अन्तःपुर में पहुँच जाती हैं। मां बेटी को आभूषण-रहित देखकर कहती हैं—"महाराज को मैं क्या कहूँ। भिखारी वर से ब्याह करके लड़की का हाथ पाव पकड़कर पानी में फेंक दिया है।"—इतना कहकर रोदन करती हैं। दक्ष सती को देखकर क्रुद्ध होते हैं। सती कहती है—"पिताजी, पितृभवन बिना निमंत्रण के कन्या आ सकती है। गुरुगृह और माता-पिता के गृह अपमान कैसा।"

दक्ष शिव की घोर निंदा करते हैं, और कहते हैं "जब वह मरेगा तो अन्न-वस्त्र देकर तेरा पालन करूँगा।" पति की घोर निन्दा सुनकर सती व्याकुल हो उठती हैं और योगासन से प्राण-त्याग करती हैं। नंदी से सती का प्राणत्याग सुन शंकर वीरभद्र से कहते हैं "तुम दक्षालय जाकर दक्ष-यज्ञ विध्वंस करो और दक्ष का विनाश करके तब आओ।" —वीरभद्र तथा भूतगणों के आतंक से भृगु आदि मुनि, यज्ञकर्ता ब्राह्मण, देवगण भागकर प्राण बचाते हैं। वीरभद्र दक्षराज का मस्तक काटकर अग्नि में निक्षेप करता है। प्रसूती महादेव से अपने वैधव्य-निवारण की याचना करती है। महादेव के आदेशानुसार नन्दी छाग का मुंड काटकर प्रभु को देता है। महादेव छाग का मुंड कन्धे पर रखकर संजीवनी मंत्र का उच्चारण करते हैं। दक्ष जीवित होकर क्षमा-याचना करते हैं और भगवान् के चरणों में अनुरक्ति का वरदान माँगते हैं।

दुबे का थार (वि० २००८, पृ० ८१), ले० माधव प्रसाद दुबे, प्र० द्विवेदी बंधु, ६ राहा, बजरिया, इटावा (उत्तर प्रदेश), पात्र : पु० १९, स्त्री ३, दृश्य ४५।
घटना-स्थल बाग, युद्धशिविर, साधुकुटीर, गढ़ी विक्रमपुर, बन्दीगृह की कोठी, युद्धक्षेत्र।

इस अर्ध ऐतिहासिक नाटक में औरंगजेब के समय की राजनीति का परिचय मिलता है। युद्ध में अभिभावक की मृत्यु के कारण गम्भीर सिंह की शिक्षा का भार प्रभाकर-सिंह पर आ पड़ता है। प्रभाकर सिंह 'हाजिरी दरबार' में ऊब जाते हैं। वे अपने भाजे को शस्त्र-विद्या में निपुण कर उसे सेनापति बना देते हैं।

दारा मोहिनी के साथ विवाह कर देने का प्रस्ताव करता है, किन्तु उसे ठुकराकर प्रभाकर सिंह साधु हो जाते हैं। गम्भीर सिंह भी सेनापति-पद को त्यागकर गुलामी की बेड़ी तोड़ डालता है। उत्तर-दक्षिण में रणधीर सिंह औरंगजेब के मातहत रहकर लड़ाइयों में भाग लेता है। वहाँ उसके हाथ औरंगजेब को दबाने की कुंजी हाथ आ जाती है। सुजान सिंह अन्त समय अपने भाई-बहिना की रक्षा का रणधीर सिंह से वचन लेते हैं।

मुबारक अलीशाह से कदाचित् किसी कलंक के भय से दारा दबा हुआ था जिसके कारण वह जनता पर बहुत अत्याचार करता था वह मोहिनी के पीछे पड़ जाता है। कर्त्तव्य-पथ निश्चित करने के लिये रणधीर-सिंह आगरा जाता है, वहां उसे गम्भीर सिंह मिल जाता है। दोनों मोहिनी का उद्धार कर, अपने भाई-बहिना की सहायता करते हैं, अत्याचारी नवाबों का अन्त करते हैं, औरंगजेब के मातहत रहकर उसे बादशाह बनने में मदद देते हैं।

दमयंती स्वयंवर (वि० १९४९, पृ० ६४), ले० बालकृष्ण भट्ट, प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पात्र पु० २६, स्त्री ११, अंक १०, गर्भांक २१।

यह नाटक रूप के 'नैषध-चरित' पर आधारित है। इसमें विदर्भ-नरेश भीम की लोक-विख्यात सुन्दरी कन्या दमयंती का स्वयंवर वर्णित है। नैषध-नरेश नल उस पर आसक्त हो जाता है। उधर नल के रूप-गुण की प्रशंसा सुन दमयंती के मन में उसके प्रति पूर्वराग उत्पन्न होता है और सोन के हंस द्वारा नल का संदेश प्राप्त कर वह उसे पति-रूप में वरण करने का निश्चय करती है। अब राजा भीम दमयंती-स्वयंवर का आयोजन करते हैं जिसमें नाग, यक्ष, किन्नर, देवता, मनुष्य आदि सभी योनियों के पुरुष आते हैं,

घटना स्थल राजगढ़ दुर्ग, राजगढ़ का जेलखाना, शाइस्ताखाँ का महल, मठ, मैनाजी का मकान, राजगढ़ दुर्ग का महल, रामभोली की कोठरी, हनुमान जी का मन्दिर, सिंहगढ़ दुर्ग, अंतपुर, शिव का मन्दिर, घाटियाँ, पहाड़ी, वन प्रदेश।

इसमें प्रेमी-प्रेमिका के सच्चे प्रेम के साथ दलजीत सिंह की अद्भुत वीरता का वर्णन है।

कथा का नायक दलजीत सिंह वीर-केसरी परिवार का है। उसी तलहर ग्राम में किशनपत जमींदार की रामभोली नाम की कन्या है, दलजीत सिंह और रामभोली का परस्पर प्रेम है। परन्तु किशनपत रामभोली की शादी शेरसिंह मरहट्टा से करना चाहता है। रामभोली के स्पष्ट वह देने पर किशनपत दलजीत सिंह पर कुपित हो जाता है। तथा शिवाजी से शिकायत कर उसे कैद करवा देता है। कैदखाने में जब एक दिन कुंवर दलजीत को यह मालूम होता है कि यवनों की सेना महाराष्ट्र में घुसी चली आ रही है तो वह जेलखाने की दीवार फाँदकर बाहर आ जाता है और सारी बाधाओं को तोड़ता हुआ दुश्मनों के दाँत खट्टे करता आगे बढ़ता रहता है। पूना में वह मुगल सिपाहियों द्वारा कैद कर लिया जाता है। इधर रामभोली कुंवर को छुड़ाने के लिए अपनी सखी कमला को भेजती है। कमला दलजीत सिंह का पता लगाकर शिवाजी को सूचित करती है और शिवाजी उसे छुड़ा ले जाते हैं।

शेरसिंह रामभोली से विवाह करने के लिए अभी भी लालायित है। वह धोखे से रामभोली को हनुमान जी के मन्दिर में बुलवाता है पर रामभोली के विवाह से इन्कार करने पर उसे भयानक जंगल में छोड़ आता है।

कुंवर लौटकर रामभोली को कहीं नहीं पाता, अतः उसकी तलाश शुरू कर देता है। शेरसिंह दलजीत सिंह पर राजद्रोह का आरोप लगाकर उसकी शिकायत शिवाजी से कर देता है। उधर दलजीत सिंह सलहारगढ़ को मुसलमानों से बचाकर पाँच हजार की पदवी लेता है। तत्पश्चात् पनाद्दुर्ग पर अपना कौशल दिखाकर शिवाजी को मोहित कर लेता है। शिवाजी जब दलजीत सिंह को पदवी देने के लिए दरबार लगाकर बैठे थे तभी वहाँ शेरसिंह के फंदे से निकलकर रामभोली पहुँचती है। रामभोली की फरियाद पर शिवाजी दुष्ट शेरसिंह को कत्ल की आज्ञा देते हैं। रामभोली कुंवर दलजीत सिंह को देखकर उनकी गोद में ही प्राण त्याग देती है। कमला भी अपनी प्यारी सखी के शोक में हीरा की कनी चूस लेती है। इस दुःखद अन्त को देखकर कुंवर भी आत्महत्या का प्रयत्न करता है परन्तु तभी एक महात्मा सन्यासी पहुँचते हैं और उसे ऐसा न करने का उपदेश देते हैं। दुखित कुंवर संसार को निस्सार समझ महात्मा के साथ चल देता है।

दलित कुसुम (सन् १९८६, पृ० १८४), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० गया प्रसाद एण्ड सन्स आगरा, पात्र पु० ५, स्त्री ३, दृश्य ५, ५, ५, ५।

घटना स्थल मंदिर, विधवा आश्रम।

इस सामाजिक नाटक में बाल विधवा की दुर्दशा दिखाई गई है।

कुसुम बाल विधवा है। वह इस संसार से ऊबकर परलोक के विषय में सोचती है। एक मन्दिर का महन्त कुसुम को कलुषित करना चाहता है। एक डाक्टर से कुसुम के विवाह की बातचीत होती है, परन्तु महन्त डाक्टर को भी धोखा देता है। दुखी होकर वह अपने श्वसुर के घर जाना चाहती है, परन्तु वहाँ भी उसको कोई रहने नहीं देता। कुसुम विधवा आश्रम में आश्रय लेना चाहती है, परन्तु वहाँ पर भी बची जान के डर से नहीं जाती। वह मिशनरी संस्था में जाती है, परन्तु ईसाई हुए बिना वहाँ भी आश्रय नहीं मिलता। वह भटकती-भटकती एक दिन अपने बाल सखा कुंज की मोटर के नीचे दब जाती है। किंतु कुंज उसे बचा लेता है। जब वह यूथिका के साथ एक दासी के रूप में रहने लगती है। बाद में कुंज उसको एक बाल विद्यालय में जगह दिला देता है। जब विधवाश्रम के मैनेजर को यह सब खबर मिलती है तो वह अपने आश्रम की पोल

खुलने के डर से कुसुम के विपरीत नारे लगवाने आरम्भ कर देता है। इस भारी अपमान को देखकर वह मूर्च्छित हो जाती है। अब कुसुम का 'बायकाट' विद्यालय में भी हो जाता है। एक कुट्टिनी उसको रसिकलाल के घर ले जाती है। जहाँ रसिकलाल दलित कुसुम के साथ बलात्कार करता है। कुसुम अब अपने को जीवित रखने में असमर्थ पाकर आत्महत्या के लिए गंगा में कूद पड़ती है, परन्तु तुरन्त ही पुलिस के द्वारा निकाल ली जाती है। कुसुम पर आत्महत्या का अभियोग चलता है, जहाँ उसकी मृत्यु बयान देते-देते ही हो जाती है।

दशाश्वमेध (वि० २००८, पृ० १२०), ले० : लक्ष्मीनारायण मिश्र; प्र० : हिन्दी भवन इलाहाबाद; पात्र : पु० १२, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : २, २, २।
घटना-स्थल : राजभवन, शिव मंदिर, अष्ट भुजा का मंदिर, दुर्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक में काशी में गंगा के तटवर्ती स्थान दशाश्वमेध का वर्णन है जहाँ पर अश्वमेध-परम्परा प्रचलित है।

ईसा की तीसरी शती में भारशिव नागों की एक ऐसी शक्ति उठ खड़ी हुई, जिसने विदेशी कुषाण-शक्ति को देश के बाहर खदेड़ते हुए गंगा-यमुना की धारा को मुक्त कर पूर्वजों के स्वर्ग का द्वार खोल दिया। इस नाटक में पद्मावती (एक स्थान विशेष) का तरुण वीरसेन नाग, कुषाण शक्ति का भीतर से पता लगाने के लिये मथुरा के कुषाण-राज वासुदेव की सेना में एक सामान्य सैनिक के रूप में कार्य करने लगता है। और वीरसेन मथुरा की कुषाण सेना में रहते हुए अपने जातीय संगठन को बराबर बढ़ाता रहा। वीरसेन के कुषाण-सेना में नौकरी कर लेने से अराजकता बन्द तो हो जाती है पर उसके संकट के दिन नहीं मिटते। कुषाण शक्ति का पूर्वी क्षत्रप अंगारक, वासुदेव की पुत्री कौमुदी को अपनी प्रिया बनाने की चिन्ता में काशी छोड़कर मथुरा में डेरा डालता है। किन्तु कौमुदी वीरसेन नाग की ओर आसक्त है। पर वीरसेन नाग कभी भी कामना की आँखों से न तो राजपुत्री को देखता है न उसकी सखियों को। उसके इस संयम और आचरण से राजपुत्री सूर्य-किरणों से हिम-सी पिघल उठती है। दूसरी ओर अंगारक उसे अपनी भेंट और आग्रह के विविध रूपों से तंग कर देता है। वीरसेन को अपने सिद्धि-मार्ग का अवरोधक मानकर शिव-मन्दिर में पूजा करते समय अंगारक उसकी हत्या का षड्यन्त्र करता है, पर वीरसेन शत्रु-शस्त्रों को अपने अर्घ्य-पात्र पर रोक कर उनका शस्त्र छीनकर शत्रुओं को आहत करता है और प्रतिज्ञा करता है...."अंगारक को जिस दिन मैं युद्ध में मारूंगा, शिवपुरी काशी में मैं अश्वमेध यज्ञ करूंगा।" अंगारक और वीरसेन के द्वन्द्व-युद्ध की बात काशी के उस पार गंगा की रेती में निश्चित होती है।

दूसरे अंक में अंगारक और वीरसेन के द्वन्द्व-युद्ध में अंगारक की मृत्यु होती है।

तीसरे अंक में वीरसेन की प्रतिज्ञा पूरी होती है। वर्ष की अन्तिम सन्ध्या में वह मथुरा के दुर्गद्वार पर विजयी के रूप में पहुँचता है, जहाँ राजपुत्री कौमुदी उसका स्वागत करती है। फलतः वीरसेन उसे समूचे राज्य की स्वामिनी स्वीकार करता है। अश्वमेध-यज्ञ का जो संकल्प एक वर्ष पूर्व मथुरा में किया था, वह काशी में गंगा के तटवर्ती स्थान-विशेष पर पूरा होता है। वहाँ भविष्य में अश्वमेध की परम्परा चल पड़ती है। वही स्थान नाटक में दशाश्वमेध कहा गया है जिस नाम से काशी में आज भी उसकी ख्याति है।

दहेज (सन् १९३९, पृ० ६४), ले० : पं० शिवदत्त मिश्र; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स, वाराणसी; पात्र : पु० ५, स्त्री २; अंक-रहित; दृश्य : ६।
घटना-स्थल : कमरा, मकान।

इस सामाजिक नाटक में दहेज-प्रथा की समस्या तथा उसका समाधान प्रस्तुत है।

मनोहरलाल अपने लड़के चन्द्रकुमार की शादी बहुत बड़े दहेज के साथ करना चाहता है। उसे प्रेम बहू से नहीं वरन् पैसे से है। प्यारेलाल उर्वशी का प्रेमी है पर वह उसे नहीं चाहती। प्यारेलाल उसे प्राप्त करने के अनेक उपाय करता है किन्तु

सब में असफल होता है। अन्त में दहेज के अभाव में भी चन्द्रकुमार अपने पिता की इच्छा न रहते हुए उर्वशी से विवाह कर आदर्श नीति का पालन करता है।

दहेज (सन् १९५१, पृ० ८०), ले० न्यादर सिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० १०, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ८, ६, ५।
घटना-स्थल उमाशंकर का घर, वेश्या-गृह।

इस नाटक में दहेज-प्रथा को लेकर समाज की बुराइयों का वर्णन है। गरीब होने से उमाशंकर की तीन लड़कियों में किसी का विवाह नहीं हो पाता। किसी प्रकार घर गिरवी रखकर वह एक पुत्री का विवाह करता है किन्तु पर्याप्त दहेज के न देने से पुत्री को ससुराल में कष्ट दिया जाता है। दूसरी लड़की पिता की गरीबी देखकर आत्महत्या करती है। तीसरी लड़की पिता के ऋण चुकाने के लिये फिल्म हीरोइन बनने के लोभ में गुण्डों के हाथों पड़कर वेश्या बन जाती है। अन्त में भाई किशोर को पहली पुरस्कार से धन मिलता है और उसी से सबका कष्ट दूर होता है।

दादा और मैं (सन् १९६४, पृ० १३६), ले० गोपालराम, पात्र पु० ३, स्त्री ३, अंक ४, दृश्य ३, ३, ३, ४।
घटना-स्थल घर का आंगन, घर, वाटिका, पुस्तकालय।

यह एक प्रहसन है जिसमें स्त्री-भीरु दो नवयुवकों की मनोवृत्ति का उपहास करते हुए अन्त में उनका विवाह करा दिया जाता है।

कल्याणी मदन से कहती है कि वह अपना विवाह करा ले, किन्तु मदन स्त्री से बराबर डरता है। वह अपने छोटे भाई अनन्त से बहुत प्रेम करता है और ब्याह न करने का कारण बनाता है कि वह के आते ही दोनों भाइयों में मनोमालिन्य हो जाएगा। अनन्त (छोटा भाई) भी स्त्री से बहुत डरता है। अनन्त के विवाह के लिये कल्याणी रामनारायण की पुत्री सुन्दरी का प्रस्ताव रखती है। रामनारायण मान जाते हैं। मदन तथा अनन्त लड़की देखने के लिये जब रामनारायण के घर जाते हैं तो सुन्दरी तथा उसकी सहेली कौशल्या मार्ग में एक वृक्ष की आड़ लेकर उनको देखती हैं। किन्तु जब इन दोनों की नजर लड़कियों पर पड़ती है तो डर के मारे मदन तथा अनन्त भागते हैं। उनका चश्मा वहीं छूट जाता है। घर पर अनन्त तथा सुन्दरी का साक्षात्कार होता है पर अनन्त सुन्दरी को ठीक से नहीं देख पाता। एक बार सुन्दरी अनन्त के पास अकेली जाती है तथा उससे बातचीत करती है। अनन्त उसे न पहचानने के कारण, सुन्दरी के बारे में पूछता है कि वह कैसी है। सुन्दरी कौशल्या से यह बता देती है और कौशल्या मदन से कहती है कि उनका भाई स्त्रियों से अभद्र व्यवहार कर प्रेम रखाता है। मदन उसे स्वीकारता तो नहीं पर कौशल्या तर्क-वितर्क से उस समय अनन्त को नाराज कर देती है। कौशल्या सुन्दरी को मदन के सामने पुनः लाकर यह कहला लेती है कि मदन के लिये इससे उपयुक्त वहू न मिलेगी। वह शादी कराने को तो तैयार है पर अनन्त माने तो। दूसरी ओर सुन्दरी अनन्त से यह विश्वास ले लेती है कि अनन्त उसी से शादी करेगा, सुन्दरी से नहीं। इस प्रकार भुलावे में डालकर सुन्दरी अनन्त के हृदय के प्रेम की दृढ़ता पा लेती है और मदन के सामने भेद खोल दिया जाता है। कौशल्या के हृदय में मदन के लिये स्थान बना है। मदन तथा अनन्त एक-दूसरे की बात टालते नहीं, इसलिये कौशल्या तथा सुन्दरी की उपस्थिति में अनन्त मदन से यह कहलवा लेता है कि वह भी कौशल्या से प्रेम करता है। और रामनारायण मदन-कौशल्या तथा अनन्त-सुन्दरी का ब्याह कर देता है।

दानवीर कर्ण (सन् १९५२, पृ० ६४), ले० न्यादरसिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० १६, स्त्री ८, अंक ३, दृश्य ६, २, ५।
घटना-स्थल दुर्योधन का राजभवन, कुरुक्षेत्र।

इस पौराणिक नाटक में वीर कर्ण की दानवीरता का चित्रण है।

नाटक का प्रारंभ कुंती की वर-प्राप्ति पर सूर्य का स्मरण तथा उनके आशीष से पुत्र-प्राप्ति, पिता सूरसेन द्वारा लोकलज्जा से उसका परित्याग और अधिरथ द्वारा कर्ण के पालन से होता है। प्रथम अंक में कौरव-गुरु द्रोणाचार्य अपने शिष्यों के ज्ञान का प्रदर्शन कराते आते हैं। उसमें पांडवों की विजय-प्राप्ति पर दुर्योधन और कर्ण अप्रसन्नता प्रदर्शित करते हैं। कर्ण के अपमान का बदला चुकाने तथा उसे अपने पक्ष में लेने के लिये दुर्योधन उसे बंग देश का राजा बनाता है।

द्वितीय अंक में द्यूत-क्रीडा में हारी, द्रौपदी का चीरहरण, १२ वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास दिखाया गया है। उसी में कृष्ण कौरवों से सन्धि कराने में असफल होते हैं जिससे महाभारत होता है।

महाभारत में कर्ण के प्रसंग को ही लिया गया है। कर्ण कुन्ती, इन्द्र और श्रीकृष्ण को कवच-कुंडल, शस्त्र और स्वर्णदान देता है। स्वयं कृष्ण उसकी वीरता की प्रशंसा करते हैं।

दानवीर कर्ण (सन् १६५२, पृ० ७६), ले०: आर० एल० गुप्ता, 'मायल देहलवी'; प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली; पात्र : पु० १७, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ८, ५, ५।
घटना-स्थल : कुरुक्षेत्र, मालदेश, मृत्युशैय्या ताप्ती नदी का किनारा।

इस पौराणिक नाटक में दानी कर्ण की भगवान् कृष्ण द्वारा ली गई परीक्षा का वर्णन है।

कर्ण कुन्ती से जन्मा कुमारी अवस्था का पुत्र है। इसीलिए कुन्ती उसका परित्याग कर देती है। सारथी उसका पालन-पोषण करता है और दुर्योधन उसे माल देश का राजा बना देता है। इसलिए वह उसकी मदद के लिए बाध्य है। महाभारत के युद्ध में वह दुर्योधन की ओर से पांडवों से लड़ता है। अपनी तपस्या एवं शौर्य से वह इन्द्र से कुंडल और कवच प्राप्त करता है, जिनके होते हुए कर्ण की मृत्यु संभव नहीं। यह जानते हुए भी कर्ण उन सबको अपनी मां को दान में दे देता है और स्वयं मृत्यु का आवाहन करता है। मरते समय कृष्ण ब्राह्मण के वेश में उसके दांत में लगे हुए सोने को मांग कर उसकी दान-वीरता की परीक्षा लेते हैं, जिसमें कर्ण खरा उतरता है। लेकिन कृष्ण मुंह से निकले हुए जूठे सोने को लेने से इन्कार कर देते हैं। तब कर्ण घायल अवस्था तथा मृत्युशय्या पर पड़े होने पर भी बाण चलाकर पाताल गंगा के जल से धोकर उसे पवित्र करता है और फिर शुद्ध सोना दान देता है। कृष्ण इस अपूर्व दान से प्रसन्न होकर उसे वर मांगने को कहते हैं। तब कर्ण कहता है—जैसे मैं कुंआरी स्त्री से पैदा हुआ हूं वैसे मुझे कुंआरी पृथ्वी पर जलाया जाय।" यद्यपि यह कठिन था फिर भी कृष्ण ताप्ती के किनारे सुई की नोक पर जमीन देखकर और वहीं अपनी हथेली पर कर्ण का मृतक शरीर भस्म कर, वरदान पूरा करते हैं।

दानवीर कर्ण (सन् १६३६, पृ० ६६), ले०: शम्भूप्रसाद उपाध्याय; प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, वाराणसी; पात्र : पु० १६, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ६, ४, ५।
घटना-स्थल : द्रोणाचार्य का आश्रम, कौरवो-पांडवों के राजभवन, कुरुक्षेत्र।

इसमें दानी कर्ण की दानवीरता चित्रित की गई है।

कौरवों की राज-सभा में जब द्रोणाचार्य के शिष्यों के बल की परीक्षा हो रही थी उसी समय कर्ण भी वहां आ जाता है जिससे अर्जुन शक्ति-परीक्षा को तैयार नहीं होते, यह कहते हैं कि यह तो सूत-पुत्र है। नीच कुल से लड़ना हमारी प्रतिष्ठा के विरुद्ध है। तब दुर्योधन उसे अंग देश का राजा बनाते हैं। फिर भी अर्जुन उससे शक्ति-परीक्षण नहीं करते। कर्ण गुरु सेवा से परशुराम द्वारा पांच अजेय बाण प्राप्त करते हैं तथा अपने पिता सूर्य से कवच और कुण्डल। इन अस्त्रों के रहते कर्ण को कोई नहीं मार सकता। पर महाभारत के युद्ध में कृष्ण पहले तो

उसे अपनी ओर मिलाना चाहते हैं, क्योंकि कर्ण कुन्ती के गर्भ से कौमार्यावस्था में उत्पन्न हुआ उसका ही पुत्र है। पर कर्ण अपने मित्र दुर्योधन को दिए गए वचन से नहीं हटता। कर्ण की दानशील प्रवृत्ति से लाभ उठाकर कुन्ती उससे कुण्डल और कवच दान में माँग लेती है। इनके अभाव में वह अर्जुन के बाणों से घायल होता है। तभी घायलावस्था में कृष्ण और अर्जुन साधु के वेश में पहुँच उससे दान माँगते हैं। कर्ण अपने दाँत में लगे हुए सोने को हाथों से उखाड़कर दाँत समेत देते हैं, पर जूठा रहने से कृष्ण इन्कार करते हैं तब कर्ण अपने बाण से पाताल गंगा से पानी निकाल उसे धोकर पवित्र करके कृष्ण को दान देते हैं। जीवन के अन्तिम समय तक उस दानवीर ने अपने स्वभाव को नहीं बदला और इसी कारण उसे हार भी खानी पड़ी फिर भी कर्ण दान को प्रथम स्थान देता ही रहा।

दानवीर बलि (सन् १९५८, पृ० १२८), लें० सुशील कुमार शर्मा 'मायावी', प्र० श्याम घाट, मथुरा, पात्र पु० १४, स्त्री ८, अंक ३, दृश्य १०, ७, ५।
घटना-स्थल सुरलोक, पाताल, राजा बलि का महल।

इस पौराणिक नाटक में राजा बलि की दानवीरता तथा भक्ति की महिमा दिखाई गई है।

दैत्यराज बलि को जीतने के लिए स्वयं भगवान् को वामन रूप धारण कर अवतार लेना पड़ता है। राजा बलि बड़ा दानी है। इसलिए वामन भगवान् तीन पैर पृथ्वी माँगकर सारी सृष्टि को दो पैरों में ही नाप लेते हैं। तीसरे पैर की पूर्ति के लिए राजा बलि को अपना शरीर नपवाना पड़ता है। इससे भगवान प्रसन्न होकर उनसे वरदान माँगने को कहते हैं। तब बलि कहता है कि आप मुझे इस वामन रूप में प्रतिदिन मेरे महल के फाटक पर मिला करें जिससे मैं नित्य आपका दर्शन कर सकूँ। भगवान् बलि की इस इच्छा को पूरा कर उसके दरवाजे पर गदा लेकर द्वारपाल का काम करने लगते हैं।

दानी कर्ण (सन् १९३८, पृ० १२३), लें० बेनीराम त्रिपाठी 'माली', प्र० बाबू ठाकुर प्रसाद गुप्त बुकसेलर, बनारस सिटी, पात्र पु० १६, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ११, ५, ७।
घटना-स्थल कुरुक्षेत्र, द्रोण का आश्रम, राजमहल।

दानी कर्ण के जन्म से लेकर उसके मरण तक की कथा इस नाटक का आधार है। कुन्ती के प्रथम पुत्र कर्ण का पालन अधिरथ सूत करता है। द्रोणाचार्य उसे नीच-पुत्र होने के कारण शिक्षा देने से इन्कार कर देते हैं फिर कर्ण तप करके इन्द्र से अमोघ कुंडल और कवच प्राप्त करता है। इसके रहते हुए उसकी मृत्यु संभव नहीं थी किन्तु अपने दानी स्वभाव के कारण वह यह जानते हुए कि वे मेरे रक्षक हैं, फिर भी उनको दान दे देता है और मरणावस्था में अपने सोने के दाँत भी दान देकर अपनी दानवीरता का परिचय देता है।

दानी कर्ण (पृ० ११०), लें० एक नाटक प्रेमी, प्र० श्रीयुत बाबू सूर्य नारायण जी द्वारा जगन्नाथ प्रिंटिंग वर्क्स, रामघाट, काशी, पात्र पु० १०, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ७, ७, ५।
घटना-स्थल महल, आश्रम, तपभूमि, जंगल कुरुक्षेत्र।

प्रस्तुत नाटक दानी कर्ण की दानशीलता का विस्तृत परिचय देता है। कृष्ण भी कर्ण की महान् दानशीलता व उदारता से प्रभावित होते हैं।

दामाद (सन् १९५ , पृ० ९८), लें० रमेश मेहता, प्र० • बलवन्त प्रकाशन, नई दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ६, अंक ६।
घटना-स्थल कॉलेज, म्युनिसिपल्टी, घर, कमरा।

इस सामाजिक नाटक में दामाद के रूप में चापलूस लोगों की धोखाधड़ी चित्रित है।

छज्जूराम कई बार मैट्रिक में फेल होने पर भी सिफारिश से म्युनिसिपेल्टी में इंस्पेक्टर की नौकरी प्राप्त कर लेता है जहाँ

वह बहुत घूस लेता है। उसके साथ कमला की शादी तय होती है किन्तु हरिप्रकाश कमला का प्रेमी है। हरिप्रकाश का दोस्त छज्जूराम अपने मित्र के लिए बनावटी रूप में अपनी शादी कमला से करता है किन्तु वास्तविक रूप से दूल्हे के रूप में हरिप्रकाश जाता है। इस तरह वह अपने मित्र का फर्ज पूरा करता है। किन्तु इस धोखाधड़ी के लिए कमला का पिता छज्जूराम पर मुकदमा चलाता है पर कमला के बीच-बचाव के कारण छज्जूराम को क्षमा कर दिया जाता है। तब वह कमला को अपनी बहन मानकर अपने उच्च चरित्र का प्रमाण देता है।

दालमंडी रहस्य (सन् १९००, पृ० ३६), ले० : बाल कृष्ण शर्मा; प्र० : वसंतू लाल बुकसेलर, चाँदनी चौक, काशी; पात्र : पु० ५, स्त्री ३; दृश्य : ४।
घटना-स्थल : काशी के दो मकान, मार्ग और दालमंडी का कोठा।

इस नाटक में वेश्यागामी तथा वेश्याओं के व्यवहार का चित्रण है।

दास जी (खत्री) की जाफरान जान वेश्या से आशनाई है। मल्लजी और चिथरू पंडित उनके मित्र हैं। होली के अवसर पर दास जी इस वेश्या के यहाँ जाना चाहते थे, किन्तु रुपए की कमी थी। सब निश्चय करते हैं कि एक सौ रुपए की गाड़ी लेकर चला जाय। रास्ते में खूब होली गाई जा रही है। दालमंडी में वेश्यायें कोठे पर बैठी हैं। दास जी चिथरू पंडित के साथ जाफरान जान के कोठे पर पहुँचते हैं। खूब शराब के साथ नाच-गाना होता है। रुपयों की नोच-खसोट होती है। रात बहुत बीतने पर दास जी के मुनीम आते हैं। फिर पुलिस वाले दास जी को पकड़कर थाने पर ले जाते हैं। थाने की कथा दूसरे भाग में छपी होगी, पर वह भाग उपलब्ध नहीं।

दाहर अथवा सिंधपतन (सन् १९३३, पृ० १५४), ले० : उदयशंकर भट्ट; प्र० : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; पात्र : पु० १६, स्त्री ३; अंक : ५; दृश्य : ६, ५, १०, ६, ४।

घटना-स्थल : सिंध, बगदाद।

इस ऐतिहासिक नाटक में सिंध-पतन का कारण देशद्रोहियों को बताया गया है।

सिंध-राज दाहर अपने राज्य में शान्ति एवं सुरक्षा स्थापित करने के विचार से पूर्वजों द्वारा अपदस्थ छोटे-छोटे राज्यों को पुनः अधिकार देना चाहते हैं। इसी बीच बगदाद के खलीफा की ओर से अरबी व्यापार को स्वतंत्र करने का संदेश आता है। यह संदेश राजा की उत्तेजना का कारण बनता है। परिणामस्वरूप संदेश की अवहेलना करते हुए राजा दाहर कड़ा प्रत्युत्तर भेजता है जिससे क्रोधित होकर हैजाज सिंधराज को अपदस्थ करने के लिये अपनी सेना भेजता है, पर पराजित होता है। बौद्ध धर्मावलम्बी ज्ञानबुद्ध देश-द्रोही के रूप में हैजाज के सेनापति अब्दुल्ला की मृत्यु से दुःख प्रकट करता है और हैजाज को सहायता का वादा करता है।

इस अवसर का लाभ उठाकर मुहम्मद बिन कासिम के संचालन में फिर एक बार सिंध पर चढ़ाई होती है। ज्ञानबुद्ध खुलकर अपने देशद्रोह का परिचय देता है। उसी के षड्यंत्र से राजा दाहर मारा जाता है, और सिंध को पराजित होने से नहीं बचाया जा सका।

दिग्विजय (सन् १९६३), ले० : सुमित्रानन्दन पंत; पात्र : पु० ३, स्त्री ३; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : नहीं।

यूरी गगारिन की अन्तरिक्ष-यात्रा से प्रेरित इस लघु गीति-नाट्य में कवि ने मानव को उसकी अन्तरिक्ष-विजय पर बधाई देते हुए मानव का मूल्यांकन किया है। यह सत्य है कि सब्द-गति का अतिक्रमण कर मानव निस्सीम अन्तरिक्ष को नाप आया है। संभव है आगामी प्रयासों में वह मंगल, चन्द्र, शुक्रादि ग्रहों पर भी विजय प्राप्त करले किन्तु इससे क्या वह काल-नियति के लौह-चक्र से बच सकता है? कवि ने नील-ध्वनि के द्वारा एक संदेश प्रेषित किया है कि केवल भौतिक विकास से मानव

का कल्याण सभव नही, क्योंकि जिस ग्रह पर भी वह जाएगा उसके साथ भू-मन-जीवन का समस्त नैराश्य, विषाद, राग-द्वेष, स्वार्थ भी वहाँ जाएगा और शीघ्र ही उन ग्रहों की स्थिति भी पृथ्वी-जैसी हो जाएगी। अत शान्ति, ज्योति, आनन्द, सौन्दर्य, प्रीति तथा अमृत-तत्व प्राप्त करने के लिए नियति के ऊर्ध्व शिखरो पर आरोहण करके मानव को आत्मजयी बनाना होगा। कवि के मतानुसार ऊर्ध्व-चेतना तथा निम्न-चेतना अर्थात् ज्ञान-विज्ञान मे मूलत कोई भेद नही है। दोनों ही जीवन का दिग्दर्शन कराते है। अन्तर केवल दृष्टि मे आया है। इसी भेद के समन्वय के साथ ही गीति नाट्य समाप्त होता है।

दिल की प्यास (सन् १६३६, पृ० ६६), ले० आगा हश्र कश्मीरी, प्र० बम्बई बुक डिपो, कलकत्ता, *पात्र* पु० ५, स्त्री ५, *अक-रहित*, *दृश्य* २७।
घटना-स्थल घर का कमरा।

इस नाटक मे पुरातन तथा आधुनिक विचारधारा का सघर्ष दिखाया गया है।

यह सघर्ष एक शिक्षित रईस, नवीन सभ्यता के पुजारी और स्त्री स्वातन्त्र्य के पक्षपाती मदनमोहन के घर मे घटित होता है। मदन अपनी पति-परायणा पतिव्रता पत्नी कृष्णा से अप्रसन्न होकर दूसरा विवाह फैशन-परस्त मनोरमा से कर लेता है। कृष्णा पति की प्रसन्नता के लिये अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर देती है और मनोरमा से शादी करने की भी स्वीकृति दे देती है। किन्तु वही मनोरमा उससे सौतिया डाह उत्पन्न करके उसे घर से निर्वासित कराती है। फलत कृष्णा स्वामि-भक्त नौकरानी शकरी के साथ मिठाई करके अपना निर्वाह करती है। पर उसे अपने पति का सदैव ध्यान रहता है। एक समय तो कृष्णा पति की बीमारी मे पुरुष का वेश बना पति की सेवा करती है और मनोरमा सोसाइटी और फैशन मे पति की चिन्ता नही करती। अन्त मे रहस्योद्घाटन होने पर कृष्णा के व्यक्तित्व से पराभूत होकर मदन डाक्टर और मनोरमा की आँख खुलती है और मदन पुन कृष्णा को अपनाता है।

दिल की प्यास (सन् १६३६, पृ० ११२), ले० शिवरामदास गुप्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० ७, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* १०, ६, ४।
घटना-स्थल मकान, झोपडी, अस्पताल।

इस सामाजिक नाटक मे व्यभिचारी मनुष्य की दुर्दशा तथा पत्नी की पतिपरायणता दिखाई गई है।

सदन एक शराबी तथा सुन्दरियो का रूप पिपासु दुराचारी व्यक्ति है जो एक फैशनेबुल पढी लिखी युवती मनोरमा के लावण्य पर आसक्त होकर अपनी पतिव्रता पत्नी सरला को घर से निकाल देता है। गरीब युवती सरला रोहिणी के घर अपने पुत्र दीपक को लेकर रहती है। अचानक दीपक बीमार हो जाता है। गरीबी के कारण दवा न होने से दीपक मर जाता है। सदन भी अकस्मात् बीमार पडता है, लेकिन फैशनेबुल मनोरमा उसकी परवाह नही करती। किन्तु पतिपरायणा सरला पुरुष वेष धारण कर सेवक के रूप मे अपने पति की सेवा करती है। अन्त म सरला की सेवा से सदन ठीक हो जाता है। वह अपने किये हुए पापो पर पश्चात्ताप करता है और मनोरमा को पिस्तौल मारना चाहता है। तब सरला अपने वास्तविक रूप मे प्रकट हो जाती है, जिससे सदन, सरला और मनोरमा अपने दिल की प्यास क्रमश पश्चात्ताप, पति-सेवा तथा तलाक के कडुए घूट से बुझाते है।

दिलफरोश (सन् १६१८, पृ० ११०), ले० मेहदी हसन लखनवी, प्र० भार्गव पुस्तकालय, काशी, *पात्र* पु० ८, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ८, ६, ८।
घटना-स्थल बगदाद, मिस्र, कचहरी।

इस नाटक का आधार शेक्सपियर का मर्चेण्ट आफ वेनिस है।

इस नाटक मे जादुई अगूठी की अद्भुत करामात से दो बिछुडे दिलो का मिलान किया गया है।

बगदाद के व्यापारी की मृत्यु पर उसका बडा पुत्र इकराम सम्पूर्ण सम्पत्ति पर अपना अधिकार कर लेता है, और वह अपने नेक-

भाई करीम को कुछ भी नहीं देता। एक व्यापारी खुदादाद, करीम की सहायता करता है। उसी समय करीम को मिस्र की शाहजादी के स्वयंवर का पता चलता है, जिसमें एक तिलस्मी बक्स में उसका चित्र है। जो उस चित्रवाले सन्दूक को पहचानने में सफल हो, राजकुमारी उसके साथ विवाह करेगी और अपनी सम्पत्ति का मालिक भी बना देगी। करीम बरगन यहूदी से दस हजार रुपये खुदादाद की जमानत पर लेकर मिस्र के लिये प्रस्थान करता है।

बरगन यहूदी इस शर्त पर रुपया देता है कि यदि वह निश्चित समय पर रुपया वापस न करेगा तो वह खुदादाद के शरीर से आधा सेर मांस काट लेगा। विवशता के कारण खुदादाद करीम की सहायतार्थ उस शर्त को मान लेता है।

करीम अपनी प्रियतमा से मिलकर रहस्य-मयी चाभी से स्वर्ण और चांदी के आकर्षण से बचकर तिलस्मी लोहे के सन्दूक को पसंद करता है और शीरी को प्राप्त करता है। जब वह आनन्द की लहरों में निमग्न था तभी उसे खुदादाद का संदेश मिलता है कि रुपये समय पर न पहुँचने के कारण वह बरगन की चाल का शिकार हो गया है। करीम अपनी प्रेयसी शीरी को सारा किस्सा समझाकर पर्याप्त धन लेकर बगदाद आता है और खुदादाद की जमानत करके उसे बरगन से मुक्ति दिलाने का प्रयास करता है। शीरी भी अपने पति के वफादार मित्र खुदादाद के सहायतार्थ वकील बनकर अपनी सहेली गुलशन को मुहर्रिर बना पुरुष-वेश में कचहरी में उपस्थित होती है। वह करुणा की प्रार्थना कर बरगन को जब नहीं समझा पाती है तो रक्त की एक बूंद बहाये बिना मांस लेने के निर्णय द्वारा न केवल न्याय करवाती है, बल्कि खुदादाद को छुड़ाने के साथ आधी सम्पत्ति उसे और आधी उसकी लड़की तथा दामाद के नाम जारी करा देती है। शीरी शादी में दी हुई अपनी अंगूठी इनाम में लेकर गुलशन के साथ वापस चली जाती है। करीम भी खुदादाद और अहमद के साथ वहीं पहुँचता है। वहां अंगूठी का रहस्य खुलता है और शीरी की चमत्कारिता से सभी अभि-भूत हो उठते हैं।

अभिनय—न्यू अल्फ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी द्वारा अभिनीत।

दिलेर दिलशेर उर्फ चोरी व सरजोरी (सन् १८९०, पृ० ११०), ले० : मुन्शी विनायक प्रसाद 'तालिब'; प्र० : काजीवाला, जामे जमशेद प्रेस, बम्बई; पात्र : पु० ७, स्त्री २; अंक (बाब) : ३।

घटना-स्थल : जंगल, कारागार, कोतवाली, बनमार्ग।

ओपेरा शैली के गीति-नाट्य में दिलशेर की ठगी तथा जालसाजी का वर्णन है।

दिलशेर लोगों को ठगी, जालसाजी और छल-कपट से लूटता है। उसकी पत्नी अल-लामा भी कम भयानक नहीं है। वह भी यात्रियों की हत्या करती है। इन लुटेरों के कारण यात्रियों, अमीरों और निरपराध लोगों का जीवन सर्वदा भय और शंका में रहता है। सौदागर मुसर्रफ की भतीजी का दिलशेर से प्रणय-सम्बन्ध स्थापित है। सौदागर की भतीजी उस भयानक मनुष्य के बीभत्स कृतियों से परिचित होकर भी उसके प्रणय में आबद्ध हो जाती है। अन्ततोगत्वा कोतवाल उस नर-पिशाच को यत्न-पूर्वक बन्दी बनाने में सफल होता है। किन्तु दण्ड पाने से पूर्व ही दिलशेर, हिरासत में विष पीकर आत्महत्या कर लेता है। उसकी परकीया नायिका उसके बन्दी बनाले जाने पर बहुत दुःखी होती है। वह भी दिलशेर के साथ उसी के पास पहुँचकर दम तोड़ देती है।

अभिनय—विक्टोरिया नाटक-मंडली द्वारा अभिनीत।

दिल्ली से नेफा तक (सन् १९६८, पृ० १), ले० : देवी प्रसाद धवन; प्र० : चेतना प्रकाशन मंदिर, कानपुर; पात्र : पु० १३, स्त्री २।

घटना-स्थल : जनपथ, नेहरू का भवन, पीकिंग का नगर, पीकिंग का राज महल।

इस नाटक में राष्ट्रीयता का स्वर

मुखरित है। इसमें नानाराव, तात्या टोप, लक्ष्मीबाई, चन्द्रशेखर आजाद, नेहरू, शास्त्री, कृष्ण मेनन, चह्वाण, मोरारजी देसाई, अयूबखाँ, मुट्टो, माउत्से-तुंग, चाऊ एन लाई आदि सभी पात्रों के संवाद सुनाई देते हैं। और साथ ही दिल्ली, पाकिस्तान, चीन आदि के दृश्य भी दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है लेखक ने प्रसिद्ध नेताओं के भाषणों की 'अखबारी कतरनों' को एक साथ पिरा-कर रख दिया है।

दीवान बहादुर (सन् १६३६, पृ० ११३), ले० देवदत्त, प्र० श्यामलाल प्रेस, मौनी हारी, पात्र पु० २०, स्त्री ७, अंक ४, दृश्य ६, ६, ५, ७, ६।
घटना-स्थल मदन पल्ली में कॉलेज का मैदान।

इस सामाजिक नाटक में दीवानबहादुर दोर्ण स्वामी अय्यगार के समाज सुधारवादी कार्यों पर प्रकाश डाला गया है।

जिस समय समाज में विधवा-विवाह पर हस्तक्षेप किया जाता था, उस समय दीवान बहादुर अपनी विधवा पुत्री कोमलम् का विवाह करके समाज को श्रेष्ठ उदाहरण उपस्थित करता है।

दिवास्वप्न (सन् १६६१), ले० प्रेम नारायण टंडन, प्र० विद्या मन्दिर, लखनऊ, पात्र पु० १, स्त्री १, अंक दृश्य-रहित।
घटना-स्थल प्रकृति-स्थली।

दिवास्वप्न कच-देवयानी की पौराणिक गाथा पर आधारित गीति-नाट्य है। देवयानी कच से प्रेम करती है, किन्तु कच की ओर से प्रणय-प्रतिदान के कोई प्रत्यक्ष संकेत न पाकर वह दिवास्वप्न द्वारा उसकी कल्पना करती है। दिवास्वप्न के आधार पर अन्त में देवयानी मिलन सुमनों की माला गूँथे बैठी रहती है। इस स्वप्न के टूटने पर नारी-रूप की विकलता देवयानी को व्यथित कर देती है। प्रणय की इसी विकलता में गीति-नाट्य समाप्त होता है।

दिव्यलीला (सन् १६६०, पृ० ८८), ले० वीरसिंह कलचुरी, प्र० मेहेर पब्लिकेशन्स, अहमद नगर, पात्र पु० १६, स्त्री ५, अंक ४, दृश्य ६, ६, ६।
घटना-स्थल रंगभूमि, गाँव, पार्क, मकान, एकांत आफिस।

इस सामाजिक नाटक में नई तथा पुरानी पीढ़ी के मतभेद को साधु महात्माओं की दिव्यलीला द्वारा दूर किया गया है।

नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी की जमींदारी को समाज के लिए घातक समझ रही है। जमींदार रमाकान्त का पुत्र सतीश विलायत जाने के लिए पिता द्वारा प्रदत्त धन गरीबों में बाँट देता है। वह चाहता है कि गाँव वालों से कर्ज का पैसा न लिया जाय। पिता से विचार साम्य न होने से वह घर पर एक पत्र छोड़कर चला जाता है। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि उसके मानसिक कष्ट को दूर करने के लिए अन्तरिक्ष से ध्वनि आ रही है।

इधर मारिस कालेज के छात्रों में मेहेर बाबा का प्रसंग लेकर दो विरोधी प्रतिक्रिया हो रही है। जॉन मेहेर बाबा की प्रशंसा करता है पर ईरानी उनको पाखंडी कहता है। जॉन का प्रवेश रमाकान्त के सम्बन्धी चतुर्वेदी के घर में है। चतुर्वेदी का परिवार सतीश के भाग जाने से विकल है। २१ वर्षीया कन्या श्यामा जॉन से शान्ति की कामना में मेहेर बाबा के फोटो माँगती है। जॉन और उसके मित्र अली में मेहेर बाबा के विषय में विवाद छिड़ता है। जॉन आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिकी विज्ञान में अन्तर स्पष्ट करता है। वह कहता है—"आध्यात्मिक विज्ञान का मकसद मन को निर्मल करता है और एक ही इलाज है प्रेम, यही प्रेम बाबा की देन है।"

इधर रमाकांत के गाँव का लकड़हारा भैरव मेहेर बाबा का भक्त है। वह कहता है, कि भाई बाबा की कृपा हो जाय तो सतीश घर लौट आये। विलासी रमाकान्त को अब मेहेर बाबा की धुन समाती है और वह साधु-महात्माओं में विश्वास करने लगते हैं। इधर सतीश और नरेश पूना के एक उपवन में हरिदास बाबा से उनके जीवन और मेहेर बाबा की कृपा के विषय में पूछते हैं। सतीश के मन में मेहेर बाबा के प्रति श्रद्धा उमड़ती

है। इधर श्यामा के पास बाबा का तार आता है। उधर सतीश मेहर बाबा के आदेश से अपने गाँव पहुँच जाता है। सतीश में और भी परिवर्तन आ गया है। पहले निर्धनों को पैसा देने में उसे इस अभिमान का अनुभव होता कि मैं मदद कर रहा हूँ। अब उसको ऐसा प्रतीत होता है कि सब कुछ बाबा करा रहे हैं। अब रमाकान्त मेहर बाबा का शिष्य बन जाता है और ईरानी, जॉन, अली, रमेश उसकी बहन लीला, श्यामा, चतुर्वेदी आदि मेहर बाबा के भक्त बन जाते हैं। सब मिलकर मेहर बाबा के चित्र की आरती उतारते हैं।

दीन नरेश (सन् १९४९, पृ० ८५), ले० : डा० सरनामसिंह शर्मा 'अरुण'; प्र० : कन्हैयालाल एण्ड सन्स, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर; पात्र : पु० ७, स्त्री ७; अंक : ५। घटना-स्थल : ऋषि सान्दीपन के आश्रम में यज्ञ वेदिका, विप्र सुदामा का भग्न कुटीर, मार्ग, राजकीय अतिथि शाला, अभिनव सुदामापुरी।

'दीननरेश' का पौराणिक कथानक कृष्ण-सुदामा की मैत्री पर आधृत है।

सुदामा अलौकिक भाव-भक्ति के उत्साह में त्याग और तपस्या का प्रखर जीवन बिताता है किन्तु पत्नी के वात्सल्य से वह प्रखरता अति आर्द्र हो जाती है और सुदामा मानवीय करुणा से पसीज कर पत्नी के निर्देश को स्वीकार कर लेते हैं और कृष्ण के पास जाते हैं। किन्तु भक्ति का वातावरण कहीं भी विगलित नहीं होने पाता। कृष्ण से विदा होते समय भी याचना पर स्वाभिमान आरूढ़ रहता है। फिर भी वे मानवीय चिंता में आग्रस्त ही लौटते हैं। नाटक भक्ति और भगवद्-अनुग्रह के साथ लीला के वातावरण में समाप्त होता है।

अभिनय—जयपुर में सन् १९४९ में अभिनीत।

दीवार (सन् १९५२, पृ० ९६); ले० : पृथ्वीराज कपूर; प्र० : रमेश सहगल और इन्द्रराज आनन्द, बम्बई; पात्र : पु० १३, स्त्री ५; अंक : ३। घटना-स्थल : घर।

यह नाटक पाकिस्तान की पृष्ठभूमि पर तैयार किया गया है। वस्तुतः इस नाटक में दो भाई हिन्दू और मुसलमान के प्रतीक के रूप में रंगमंच पर उपस्थित होते हैं। अतिथि-पूजा के प्रेमी ये दोनों भाई विदेश से आए कुछ फिरंगियों को अपने घर में शरण देते हैं किन्तु वे अतिथि भेद-नीति का प्रयोग कर इन दोनों भाइयों के मध्य फूट का बीज बोकर एक दीवार खड़ी करते हैं। फलतः एक घर दो भागों में बँटकर भारत-पाकिस्तान के रूप में प्रकट होता है।

दीवाला (सन् १९६२, पृ० ५६) ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र : पु० ६, स्त्री १; अंक : २ दृश्य : २; घटना-स्थल : द्यूतक्रीड़ा-स्थल, मकान, महल।

इस सामाजिक नाटक में जुआरियों की प्रवृत्तियों का परिचय मिलता है।

शंकर जुआ और शराब का अभ्यासी है। वह जीवन के प्रत्येक क्षण में जुआ के शकुन देखता है किन्तु असफल रहता है। उसका पड़ोसी शम्भू उसे बहुत समझाता है। कमला भी रोकती है। किन्तु उसे एक दाव में लक्षाधीश बनने का अरमान है। अन्त में वह मंगल साधु की शरण लेता है। उसे विश्वास होता है कि किसी महात्मा का आशीर्वाद ही साथ दे तो वह विजयी हो सकता है। वह क्रुद्ध होकर उसकी हत्या पर आरूढ़ हो जाता है, जिससे साधु उसे आशीष देता है। उसकी पत्नी उसे अपने जेवर दाँव पर लगाने को देती है। वह मकान भी दाव पर लगा देता है किन्तु सब को हार जाता है। अन्त में वह दीवाली को दिवाला कहकर उत्सव बन्द करने को कहता है।

दुःख पर्यों (सन् १९२१, पृ० ११४) ले० : सेठ गोविन्ददास; प्र० : गंगा प्रसाद एण्ड संस आगरा; पात्र : पु० ५, स्त्री ३; अंक : ४। घटना-स्थल : वकील का घर।

इस नाटक में मनुष्य की ईर्ष्या-प्रवृत्ति

को दुख का कारण बताया गया है।

एक परिवार का नेता यशपाल साधारण कोटि का वकील है। उसकी पत्नी सुखदा सुख और शील की खान है। ब्रह्मदत्त छात्र-वृत्ति देकर विद्यार्थी जीवन मे उसकी सहायता करता है। अनेक बार उपकार करने वाले के प्रति सबसे अधिक ईर्ष्या की उत्पत्ति होती है। अत यशपाल के हृदय म ब्रह्मदत्त के बढते हुए प्रभाव के कारण ईर्ष्या का प्रादुर्भाव होता है। ब्रह्मदत्त कौंसिल के लिये चुनाव लडता है। यशपाल उसके विरोध मे एक मोची को खडा करता है। ब्रह्मदत्त हार जाता है। इस प्रकार मे यशपाल ऐसे-ऐसे कार्य करता है जो एक गाँधीवादी के लिए अशोभनीय है। यशपाल का यथार्थ रूप जनता समझ लेती है जिससे उसका सार्वजनिक जीवन आरम्भ मे ही नष्ट हो जाता है। इसके कारण ही उसके सुखी कौटुम्बिक जीवन की भी इस ईर्ष्या यज्ञ मे आहुति हो जाती है।

दु खिनी बाला(सन् १८६८, पृ० १३), ले० राधा कृष्णदास, प्र० हरिप्रकाश, यन्त्रालय बनारस, पात्र पु० ४, स्त्री ३, अक रहित, दृश्य ६।
घटना स्थल गाँव, प्रकोष्ठ।

इस छोटे से रूपक मे बाल-विवाह समस्या तथा जन्मपत्री पर विश्वास करने वाले माता पिता का वर्णन है जो सुयोग्य वर छोड कर अयोग्य वर के साथ बिना गुण दोष पर विचार किये ही अपनी सन्तान को आजन्म कष्ट के समुद्र म डाल देते है।

गोवर्धनदास बिना कुछ सोचे समझे योग्य वर छोडकर अपनी कन्या सरला का विवाह अनपढ और अयोग्य वर लल्लू के साथ इसलिये कर देते है कि सरला की जन्म-कुण्डली लल्लू की जन्म-कुण्डली से मेल खा जाती है। कुछ ही दिन पश्चात सरला विधवा होकर पिता के घर आ जाती है। सरला की अवस्था शोचनीय है। उसके मन मे दूसरा विवाह करने की इच्छा पनपती है किन्तु इस नन्ही-सी कोपल पर समाज का कठोर नियम है। अन्त मे वह अपने धर्म की रक्षा के लिये विषपान कर लेती है।

दुर्गावती (वि० १९८२, पृ० १६६), ले० बदरीनाथ भट्ट, प्र० गगा ग्रथागार, लखनऊ, पात्र पु० १६, स्त्री २, अक ३, दृश्य ७, ७, ४।
घटना-स्थल आगरा का किला, नगर के पास मैदान, युद्धभूमि।

इस ऐतिहासिक नाटक मे वीरागना दुर्गावती की वीरता चित्रित है।

जबलपुर के निकट स्थित गढमडल की रानी दुर्गावती का विवाह सग्राम-सिंह के पौत्र दलपति शाह से होता है। रानी विवाह के चार वर्ष उपरात विधवा हो जाती है। पुत्र को राज्यभार सौंप वह मालवाधिपति बाजबहादुर को जीतकर भोपाल प्रान्त राज्य म मिला लेती है। अपने मत्री बाबू अधारसिंह की सहायता से वह मुगल-सम्राट् से लोहा लेती है। शत्रु की प्रबल शक्ति को जीतने म असमर्थ होने के कारण युद्धक्षेत्र म आहत होती है। स्वर्ग-मार्ग मे यम देवी दुर्गावती का स्वागत करते हैं।

दुर्गा-विजय-नाटक (वि० २०१५, पृ० २७), ले० श्री जीवनाथ झा, प्र० वैदेही समिति, लाल बाग, दरभगा, पात्र पु० १४, स्त्री २, अक २, दृश्य ६।
घटना-स्थल तपोवन म मुनि की कुटी, राज-मार्ग, हिमालय की गुफा, शुम्भ का दरबार, युद्धभूमि, निशुम्भ का दरबार।

प्रस्तुत नाटक की कथा-वस्तु मार्कण्डेय पुराणस्थ दुर्गा सप्तशती के कथाश को लेकर लिखी गई है। असुर-राज शुम्भ देवताओ को जीतकर अपना आधिपत्य जमा लेता है। भय से इन्द्रादि सभी देवता भागकर जगल मे छिप जाते हैं। शुम्भ मदमत्त होकर गोवश का वध करता है तथा लोगों को ईश्वर के नामोच्चारण के बदले शुम्भ शुम्भ जपने की आज्ञा देता है। साथ ही पूजा पाठ यज्ञादि का भी निषेध कर देता है। ऋषि मुनियों की हत्या होने लगती है। सभी स्थानों पर त्राहि-त्राहि मचती है। ऐसी स्थिति मे देवता गण मिलकर दुर्गा की सामूहिक स्तुति करते है, जिसके फलस्वरूप दुर्गा का प्रादुर्भाव होता है। ऋषि-मुनि एव देवताओ की दुर्दशा देख-

कर वे मोहिनी रूप में असुरों के साथ युद्ध करती हैं। असुरों का संहार कर दुर्गा इन्द्र को पुनः त्रिभुवन के राज-सिंहासन पर बैठाती हुई धर्म की स्थापना करती हैं।

दुल्ला-भट्टी (सन् १९६०), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पात्र : पु० ८, स्त्री ५, अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : नदी-तट, कारागार, गाँव।

पंजाब की लोककथा पर आधारित 'दुल्ला-भट्टी' संगीत-नाटक प्रेम का एक नया रूप प्रस्तुत करता है। नदी से जल भरकर लाती नूरी (भट्टी का असली नाम नूरी था) का घड़ा गाँव का आवारा दुल्ला फोड़ता है। अतः दोनों में झगड़ा होता है, जिसमें नूरी दुल्ला को कटुवचन कहती है। यह बात दुल्ला को लग जाती है और वह अपनी माँ से अपने पिता के हत्यारे का पता पूछता है। माँ के मुँह से अकबर का नाम सुनते ही वह उसका दुश्मन बन शाही खजाने लूट लेता है। कर्तव्य के प्रति उसकी यह सच्ची लगन नूरी को भी उसके प्रेम में दीवाना बना देती है। उधर अकबर शाही खजाना लूटने वाले डाकू को पकड़ने के लिए मिर्जा निजामुद्दीन के पुत्र हैदर को भेजता है। गाँव में प्रवेश करते ही हैदर की दृष्टि नूरी पर पड़ती है और वह उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाता है। वहाँ हैदर दुल्ला की माँ के पास ठहरता है, क्योंकि बचपन से उसने ही हैदर को पाला था। अवसर पाते ही हैदर दुल्ला से नूरी के रूप की चर्चा करते हुए उससे विवाह की कामना व्यक्त करता है। दुल्ला अपने प्रेम का बलिदान करके उसका विवाह नूरी से करा देता है। घर पहुँचकर हैदर को अपने पिता मिर्जा का विरोध सहना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप दोनों को कारागार की अंधेरी कोठरियों में डाल दिया जाता है। वहाँ नूरी उस कबूतर द्वारा जो विदा के समय दुल्ला ने उसे भेंट-स्वरूप दिया था—संदेश भिजवाती है। दुल्ला आकर हैदर और नूरी को छुड़ाने में सफल होता है। किन्तु संघर्ष में घायल होने के कारण दोनों की मृत्यु होती है।

दुविधा (सन् १९६८, पृ० ६८), ले० : पृथ्वी नाथ शर्मा; प्र० : हिन्दी भवन, जालंधर; पात्र : पु० ५, स्त्री १; अंक : ३, दृश्य : ४, ५, ४।
घटना-स्थल : मकान का एक कमरा।

इस नाटक में उच्च शिक्षा-प्राप्त एक युवती के प्रेम और विवाह की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। इसकी नायिका सुधा भावुकता में डूबकर कल्पना के सहारे अपने प्रेम के विषय में एक रंगीन जीवन की आशा करती है और उत्तेजित भी इसी कल्पना के आधार पर होती है। सुधा के दो प्रेमी हैं। पहला प्रेमी केशव बैरिस्टर है और दूसरा विनय अभी बेकार है। केशव नारी की भावुकता को कुरेद कर उसे फुसलाने में चतुर पुरुष है और विनय निराशा और उद्विग्नता से ओतप्रोत आत्माभिमानी प्रेमी है। ऐसे प्रेमियों के चक्कर में पड़ी हुई सुधा 'दुविधा' में पड़ जाती है, जिसमें कोई निष्कर्ष निकालने में कठिनाई होती है। सुधा की अनंत कल्पनाएँ 'माया मिली न राम' के रूप में अपूर्ण रह जाती हैं किन्तु अंततः सुधा वैवाहिक जीवन से समझौता करने का निश्चय करती है।

दुश्मन (सन् १९७१, पृ० ६५), ले० : दया प्रकाश सिन्हा; प्र० : साहित्य केन्द्र प्रकाशन, दिल्ली; पात्र : पु० ३, स्त्री २; अंक : ३।

यह हास्य-नाटक परिवार-नियोजन की समस्या पर आधारित है।

नाटक का नायक हिकमत सिंह पहलवानी में रुचि रखता है और ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा करता है। वह अपने प्रतिद्वंद्वी से ऊँचा रहने का प्रयत्न करता है। उसके मामा और माँ-बाप चाहते हैं कि हिकमत विवाह करले परन्तु वह नहीं मानता। उसके प्रतिद्वन्द्वी के यहाँ विवाह होता है। जिस कमरे में हिकमत कसरत करता है उसकी एक दीवार में छेद होता है, जिसकी दूसरी ओर दुश्मन का घर होता है। हिकमत का मामा उस

छेद मे देखकर उसे चिढाता है, और दुश्मन की दुल्हन की प्रशसा करता है। हिकमत उस छेद को अपने शिष्य द्वारा बन्द करवा देता है, परन्तु स्वय चुपके से देखने लगता है। मामा के समझाने पर विवाह के लिए तैयार हो जाता है। विवाह के पश्चात वह अपनी पत्नी लीला की उपेक्षा करता है। परन्तु जब दुश्मन के यहाँ लडका होता है तो वह भी उससे ऊचा उठने के लिए ब्रह्मचर्य तोड देता है। उसके छ बच्चे हो जाते हैं। वह उनकी ठीक प्रकार से देखभाल नही कर पाता। एक दिन उसका एक बच्चा दुश्मन के लडके से पिटकर आता है, तब मामू कहता है "अपनी हैसियत से ज्यादा बच्चे पैदा करके तुमने स्वय अपने परिवार को हरा दिया।" अन्त मे निष्कर्ष निकलता है कि सबको अपनी आमदनी के अनुसार बच्चे पैदा करने चाहिए।

अभिनय—प्रस्तुत नाटक का प्रदर्शन और प्रसारण कई बार हो चुका है।

दुश्मने ईमान (सन् १९२८, पृ० १४६), ले० जलाल अहमद 'शाद', प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, पात्र पु० १५, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ८, ७, ३।

घटना-स्थल पुनगाल का राजभवन, जगल, वन मार्ग।

इस नाटक मे सती स्त्रियो के सतीत्व की रक्षा दिखाई गई है।

सईदा पुनगाल के उजडे शाही खानदान की नेक शहजादी है। सईदा पर आशिक गम्माज अपने मित्र तसदीक को उसके पास भेजता है। सईदा के पास जाकर तसदीक उसको सताता है तभी खम्भे से दो व्यक्ति प्रकट होकर तसदीक को सन्मार्ग बताते हैं। तसदीक तभी से सईदा का मददगार हो जाता है। गम्माज की बहन हसीदा भी सईदा को बडा ही कष्ट पहुँचाती है। वह सईदा के लडके सिराज को मार डालती है जिसका बदला लेकर तसदीक हसीदा की शादी मत्री जमीर के साथ कर देता है। इधर तसदीक गम्माज के लडके बिरजिस तथा जासूस कजलक को मार डालता है। सईदा की नेकनामी मे गम्माज की लडकी नाजनी भी उसका साथ देती है। अन्त मे तसदीक तथा मुहाफिज दोनो मिलकर गम्माज को कैद कर लेते हैं और वह दुष्ट स्वय पश्चात्ताप करके मर जाता है। अन्त मे सईदा और तसदीक बिछडे हुए भाई बहन मिल जाते है।

दूज का चाँद (सन् १९३०, पृ० १३२), ले० शिवराम दास गुप्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० ६, स्त्री ५, *अक* ३, *दृश्य* ७, ७, ३।

घटना स्थल मोतीलाल का घर, मदिरा-गृह, वेश्यागृह।

इस सामाजिक नाटक मे शराबी मोतीलाल का पतन दिखाया गया है तथा उसकी पत्नी शान्ता का पतिव्रता रूप दिखाकर नारी के आदर्शों की रक्षा की गई है। मोतीलाल के दोस्त गौरीनाथ, गोपीनाथ तथा केशव राम दुराचारी हैं—और कामलता वेश्या से प्रभावित होकर मोतीलाल को भी पथभ्रष्ट करते हैं। मोतीलाल का पुराना नौकर गोवर्धन सच्चरित्र और ईमानदार है। किन्तु दोस्तो के कहने मे मोतीलाल उसे निकाल देता है। गोवर्धन इतने पर भी अपने स्वामी की सदैव रक्षा करता है और उनके कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहता है। शान्ता की धर्म-परायणता ही मोतीलाल के आखिरी दिनो मे सहायक होकर उसे सुधार की ओर प्रेरित करती है।

दूतांगद व्यायोग (वि० १९९०, पृ० ८२), ले० रघुनदन दास, प्र० नरेन्द्रदास विद्यालकार, *पात्र* पु० १०।

घटना स्थल रामादल, वन, समुद्र, रावण का दरबार, पवन, सभा।

यह मैथिली नाटक सीता की खोज मे भेजे गये दूत अगद की रावण-दरबार मे दिखाई गई वीरता का परिचय देता है।

राम-दूत के रूप मे अगद लका जाकर रावण को राम का यह सदेश देते है कि अपने कर्म पर पश्चात्ताप करते हुए रावण राम की शरण मे जाकर विनयपूर्वक सीता को

समर्पित करे नहीं तो बुरे परिणाम भोगने को तैयार रहे। इस प्रश्न को लेकर सभा में रावण और अंगद के बीच विवाद उत्पन्न होता है। रावण अपने पक्ष को उचित ठहराते हुए अहंकारपूर्ण शब्दों में राम का परिहास करता है तथा उनके संदेश को ठुकरा देता है। बदले में अंगद रावण को अपमानजनक शब्दों, व्यंग्यों और कटूक्तियों से आहत कर इतना क्रुद्ध कर देते हैं कि वह इन्हें मारने का आदेश देता है। किंतु अंगद साहसपूर्वक अपना दाहिना पैर जमाकर यह चुनौती देते हैं कि यदि कोई पाँव हटा देगा तो वह अपनी पराजय स्वीकार कर लेंगे। फलतः रावण के गर्व भरे आदेश से सभा में उपस्थित अनेक वीर राक्षस पाँव हटाने आते हैं परन्तु असफल होते हैं। इस असफलता पर क्रुद्ध हो रावण अपने वीरों को धिक्कारते हुए स्वयं अंगद का पैर पकड़कर उसे फेंकने को उद्यत होता है, किंतु वह यह कहते हुए हट जाता है—'मेरा पैर धरने से अच्छा है राम का पैर पकड़।' रावण लज्जित हो जाता है। तदनंतर राम के वचनों को स्मरण दिलाकर अंगद राम के युद्ध-शिविर में जाते हैं और रावण की सभा में हुई बातों तथा घटनाओं का विवरण देकर लक्ष्मण से साधुवाद पाते हैं।

दूध का दूध पानी का पानी (सन् १८८२) (भाण) ले०: प्रतापनारायण मिश्र; ब्राह्मण खण्ड १ संख्या ६ में प्रकाशित।

यह भाण्ड शैली में लिखा नाटक है। इसमें एक ब्राह्मण मंच पर उपस्थित होकर सारी कथा आकाश-भाषित के रूप में प्रस्तुत करता है। इसमें विजयसिंह के दत्तक पुत्र बालकृष्ण की समस्त सम्पत्ति टेकचन्द नामक एक बनिये द्वारा हड़प लेने की कथा ली गई है। यह नाटक अपूर्ण है। ब्राह्मण पत्र के अतिरिक्त अन्य कहीं इसका प्रकाशन भी नहीं हुआ है।

इसकी भाषा में बैसवाड़ी का प्रभाव है। नाटक में गद्य और पद्य दोनों का प्रयोग है।

देखा देखी (सन् १९५६, पृ० ६२), ले०: वृन्दावन लाल वर्मा; प्र०: मयूर प्रकाशन, झाँसी; पात्र: पु० ७, स्त्री ३; दृश्य: ३। घटना-स्थल: बढ़ई का घर, मोतीलाल का मकान।

इस सामाजिक नाटक में निम्न मध्यवर्गीय परिवार का थोथा प्रदर्शन दिखाया गया है। चाँदीलाल अपने पुत्र के जन्म-दिन के उत्सव को धनाढ्य लोगों के अनुरूप मनाना चाहता है। पत्नी के निरन्तर आग्रह के कारण प्रदर्शन पर वह अपनी सीमा से अधिक खर्च कर देता है। इसको पूरा करने के लिए वह रिश्वत लेता है और इसी से इल्जाम का अभियोग उस पर लगा दिया जाता है। अभियोग से तो बच जाता है, परन्तु वह अपने पड़ोसी चमनलाल बढ़ई के हाथ अपना मकान बेच देता है। चमनलाल की पत्नी भी अपने पुत्र बीरू के जन्म-दिन को बड़े लोगों की तरह ही मनाना चाहती है। कर्म की महत्ता समझने वाले चमन लाल के पुत्र बीरू को बढ़ई का काम करते समय अपने कपड़ों के खराब होने का भय सदा बना रहता है। इस प्रकार लोग दूसरों की देखा-देखी अपने सामर्थ्य से अधिक दिखावे का कार्य करने लगते हैं जो कि बाद में दुःखों का कारण बन जाता है।

देव और मानव (सन् १९५५, पृ० १५३), ले०: चन्द्रगुप्त विद्यालंकार; प्र०: अतर चन्द कपूर, दिल्ली; पात्र: पु० ७, स्त्री ३; अंक: ५, दृश्य-रहित। घटना-स्थल: दक्ष का राजदरबार, कैलाश पर्वत, देवों की राजधानी।

इस पौराणिक नाटक में गौरीशंकर की प्रचलित कथा वर्णित है। प्रजापति दक्ष के दरबार में वसन्तोत्सव के समय राजकुमारी पार्वती अपनी सखी तिलोत्तमा के साथ विद्यमान है। नगर कन्याएँ तथा राजनर्तकी महाराज के सामने निकलकर गीत गाती है। नृत्य समाप्त होने पर त्रिशूलधारी शिव प्रवेश करते हैं। शिव की दृष्टि सती पर पड़ती है। वह सहसा आह्लाद से भरकर डमरू बजाते हैं। दूसरे अंक में देवों की राजधानी कैलाशपुरी में वरुण, सोम, अग्नि, अंगिरस, प्रद्युम्न, बृहस्पति, सूर्य के वार्तालाप के

समक्ष महाराज शिव और चित्रांगदा का प्रवेश होता है। थोडी देर मे प्रजापति दक्ष का दूत आता है। चित्रांगदा और शिव का नृत्य होता है। नृत्य के उपरांत चित्रांगदा शिव से दक्ष-कन्या के विवाह के बारे मे निर्णय पूछती है। शिव कहते है कि सती एक शक्ति है जो देव और मानव के बीच की खाई पाट सकती है।

तीसरे अक मे सती के मामा पाचालेश्वर और दक्ष का वार्तालाप है। पाचालेश्वर शिव के साथ सती के विवाह का विरोध करते है, किन्तु दक्ष सती का विवाह शिव के साथ कर देते हैं। वहा से लौटकर शिव-सती कैलाशपुरी के राजकीय उद्यान मे आकर वरुण, अग्नि, वृषभ, सोम, सूर्य आदि देवो से कहते हैं—"मानव जाति के सबसे श्रेष्ठ रत्न (सती) से मेरे विवाह का उद्देश्य ही यह है कि मैं मानव और देव की कला और संस्कृति के सम्मिश्रण से एक उच्चतम संस्कृति का निर्माण कर सकूँ।"

पाँचवे अक मे कनखल मे अग्निष्टोम यज्ञ होता है। उस यज्ञ मे शिव और सती सम्मिलित नही हैं। दक्ष ने उन्हे निमत्रण नही दिया था तो भी सती अस्त-व्यस्त रूप से यज्ञ मे पहुँच जाती है और चीत्कार करती हैं। दक्ष सती की भर्त्सना करते हैं। यज्ञ-कार्य के मध्य मे ही डमरू बजाते शिव भी पहुँच जाते है। दक्ष उनकी भी भर्त्सना करते हैं। क्रोधित शिव अपना सहारकर्त्ता रूप दिखलाते हैं। सती धधकती हुई ज्वाला मे कूद पडती है। तभी चारो ओर एक ध्वनि सुनाई पडती है "सती-सती-सती—।"

अभिनय—पजाब ड्रामा लीग द्वारा लाहौर मे अभिनीत।

देव कन्या (सन् १९३६, पृ० ८५), ले० पण्डित श्री कृष्ण मिश्र, एम० ए०, बी० एल०, प्र० वाणी-मदिर, मुगेर, पात्र पु० ७, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ५, ४, ५।
घटना स्थल गुरुपुर का गौरीशकर मन्दिर,

इस सामाजिक नाटक मे सच्चे प्रेमी और प्रेयसी का मिलन प्रस्तुत है।

गौरीशकर-मदिर मे आचार्य मार्तंड और भास्कर के सामने आकर राजमती और उसकी कन्या मेनका प्रणाम करती हैं। एक बार मार्तंड और भास्कर मेनका को मन्दिर म पकडना चाहते हैं लेकिन वह चीत्कार करती भाग जाती है। तभी राजमती दौडकर वहाँ आ जाती है।

मेनका हरिजनो के मुख्य सेवक चन्द्रशेखर से प्यार करती है। कालान्तर मे राजमती के भवन मे शय्या पर सोती हुई मेनका के कमरे मे राजराघव दबे पाँव प्रवेश करता है। मेनका की नींद टूट जाती है और वह राजराघव को देखकर चकित हो जाती है। राजराघव के रानी बनने के प्रस्ताव को मेनका अस्वीकार कर देती है। राजराघव मेनका का हाथ पकडता है जिससे वह चिल्लाती है। इसी बीच चन्द्रशेखर, शशी और मार्तंड, पुजारी और कई सिपाही लाठी लिये घुस आते है। चन्द्रशेखर मेनका को लेकर भाग जाता है। कालान्तर मे राजराघव चन्द्रशेखर के पास जाकर उसे जान से मार डालने की धमकी देता है और मेनका को प्रियतमा बनाना चाहता है। मेनका चन्द्रशेखर के बन्धन से मुक्त होने की शर्त पर प्रियतमा बनना स्वीकार कर लेती है। थोडे ही समय मे मेनका राजराघव को मदिरा पिलाकर शैय्या पर सुला कटारी उसके सीने मे मारना चाहती है कि चन्द्रशेखर आकर हाथ पकड लेता है जिससे राजराघव बच जाता है। उसी समय राजराघव चन्द्रशेखर को आशीर्वाद देता हुआ मेनका और चन्द्रशेखर के हाथ को आपस मे मिला देता है। इस प्रकार मेनका चन्द्रशेखर की प्रियतमा बन जाती है।

देवता (वि० २०१०, पृ० १०८), ले० आचार्य सीताराम चतुर्वेदी, प्र० पुस्तक सदन, बनारस, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अक ३, दृश्य-रहित।
घटना स्थल भवन, सडक, उपवन।

इस सामाजिक नाटक मे अच्छे और बुरे लोगो के कार्यो का परिणाम दिखाया गया है। न्यायधीश देवशकर के दो पुत्र जयशकर तथा जटाशकर और पुत्री माया विधिवत् शिक्षित

बनते हैं। इस समय द्वितीय महायुद्ध होने से सभी वस्तुयें पूरी महँगाई पर हैं। ब्लैक मार्केट चलता है। लोग जयशंकर को क्लोथ कन्ट्रोलर होने के नाते घूस देने का प्रयत्न करते हैं किन्तु असफल रहते हैं। इधर देवशंकर का पड़ोसी वसंतलाल पूरणमल को एक चक्कर में पड़ा देखकर स्वयं गरीब होने के नाते उनका कार्य करके १०,००० रु० ठहरा लेता है। उसको गुप्त रूप में जयशंकर के यहां पहुँचा देता है।

इन्हीं दिनों बड़ोदा कॉलिज की अध्यापिका शान्ता बहन भी देवशंकर के पड़ोस में रहने लगती है। वसंतलाल ने इनके पिता से पांच हजार रुपये लिये थे। मांगने पर उसने उनकी हत्या भी कर दी थी। जब शांता को पता लगा तो वह खुशामद करने पर उसे छोड़ देती है।

पूरणमल से रुपये लेने पर वसंतलाल फिर मदिरा पीने लगता है। वह पूरणमल की सलाह से शान्ता के घर में आग लगाता है। इस अपराध में वे जयशंकर को फंसा देते हैं क्योंकि उनके यहां दस हजार रुपये थे। परन्तु वह निर्दोष था क्योंकि उसको अभी यह भी पता न था कि वे रुपये कहाँ से आये।

देवशंकर उसको सात साल का कारावास देते हैं। परन्तु इस रहस्य का पता लगने पर वसंतलाल पकड़ा जाता है और जयशंकर देवता के कुल का देवता माना जाता है।

देवयानी (सन् १९२२, पृ० १०६) ले० : जमुना दास मेहरा; प्र० : दुर्गा प्रेस, कलकत्ता; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ८, ८, ५।
घटना-स्थल : देव लोक, शुक्राचार्य का आश्रम।

इस पौराणिक नाटक में शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी के पतन का कारण बताया गया है।

दैत्यों के राजा वृषपर्व देवताओं पर विजय पाने का सामर्थ्य न रहने पर भी मृतसंजीवनी विष्णु द्वारा प्राप्त कर सदा राक्षसों की विजय कराते हैं। इससे देवगण अपने गुरु बृहस्पति से मिलकर सभा में निर्णय करते हैं कि नरलोक में जाकर शुक्राचार्य से मृतसंजीवनी विद्या प्राप्त करें। इस काम के लिए गुरु-पुत्र 'कच' भेजे जाते हैं। कच शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर मृतसंजीवनी प्राप्त करते हैं। देवयानी का पतन होता है। कच के अधिक परिश्रम से देवों की दानवों पर विजय होती है जिससे देवयानी का भी उद्धार हो जाता है। वह अपने स्थान को पुनः प्राप्त करती है।

देवयानी (सन् १९४४, पृ० ६६), ले० : कुमारी तारा वाजपेयी; प्र० : इंडियन प्रेस, लिमिटेड इलाहाबाद; पात्र : पु० १३, स्त्री २; अंक : ३, दृश्य : ६, ७, ६।
घटना-स्थल : देव लोक, शुक्राचार्य का आश्रम।

इसमें ऋषि-कन्या देवयानी तथा देवगुरु पुत्र की प्रणय कथा के साथ देवताओं की विजय और असुरों की पराजय का वर्णन है।

नाटक में महाभारत प्रसिद्ध कच और देवयानी के प्रसिद्ध उपाख्यान को आधार बनाया गया है। इसमें देवयानी के चरित्र को महत्व देकर नायिका का स्थान प्रदान किया गया है। ऋषि-कन्या देवयानी में आदर्श चरित्र सफलता से अंकित किया गया है। देवयानी का चरित्र भावुक हृदय को आकर्षित करने वाला है।

देवयानी (सन् १९५४, पृ० १११), ले० : सियाराम सिंह 'बन्धु'; प्र० : नव बिहार पुस्तक मन्दिर, पटना; पात्र : पु० ७, स्त्री २; अंक : ३, दृश्य : ७, ५, ४।

यह नाटक महाभारत कालीन कथाओं के आधार पर लिखा गया है। देवासुर संग्राम में देवयानी (शुक्राचार्य की पुत्री) का चरित्र प्रकाश में लाना ही इस नाटक का उद्देश्य है। शर्मिष्ठा (वृषपर्वा की पुत्री) देवयानी की मदद करती है तथा पुरु सदैव उसके कार्यों का प्रेरणा स्रोत बना है। देवयानी से कच का प्रेम होता है जिसके कारण वह देवयानी के पिता शुक्राचार्य से संजीवनी विद्या सीख जाता है। इस संजीवनी विद्या के द्वारा

ही दानवों पर देवताओं को विजय मिलती है।

देवर-भाभी (सन् १९६५, पृ० ८४), ले० सौनाग्य चौधरी 'मस्ताना', प्र० ग्रंथालय प्रकाशन, दरभंगा, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अंक ४, दृश्य ५, ७, ७, ६।
घटना-स्थल घर, आंगन, बगीचा।

इस सामाजिक नाटक में विधवा जीवन से सम्बन्धित दुःखद घटनाएँ समाज का सजीव चित्रण करती हैं। मनोरमा विधवा नारी है। अतएव उसके सास-श्वसुर सब उसे कष्ट देते हैं। भाभी के कष्ट को देख देवर प्रदीपकुमार उसकी सहायता करता है तथा भाभी के हृदय में खुशी भरने के लिए वह अपनी पत्नी ज्योति का प्यार भी ठुकरा देता है। अन्त में उसकी ही विजय होती है और सभी परिजन अपनी त्रुटियों पर पश्चात्ताप करते हैं।

देवर्षि नारद (सन् १९६१, पृ० १२८), ले० राधेश्याम कथा वाचक, प्र० राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, पात्र पु० १३, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ४, ५, १।

इस पौराणिक नाटक में देवर्षि नारद के जीवन की कतिपय घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है। इसमें दिखाया गया है कि महापद प्राप्त करने वाले तपस्वी भी किस तरह बंदर का रूप धारण करके मायानगरी की विश्वमोहिनी के चक्कर में पड जाते हैं, लेकिन भगवान् हमेशा भक्तों की मदद करके उनका धर्म बचाते हैं।

देवाक्षर चरित (सन् १८५४, पृ० ६७), ले० रविदत्त शुक्ल, प्र० आर्य देशोपकारिणी सभा, बलिया, पात्र पु० ६, अंक-*रहित दृश्य* ६।

इस नाटक में देवनागरी लिपि की महत्ता का नाटकीय ढंग से उल्लेख किया गया है। (लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया में लिखा है—"यह नाटक बनारस में रामलीला के अवसर पर जिलाधीश डी० टी० रावट की अध्यक्षता में खेला गया था।"

अंग्रेजी राज्य में नागरी लिपि की उपेक्षा पर नाटककार को बडी वेदना होती है। उसी से प्रेरणा पाकर देवनागरी लिपि को समुचित स्थान दिलाने के उद्देश्य से इस नाटक का प्रणयन किया गया है।

देवी देवयानी (सन् १९३४, पृ० १३३), ले० रामस्वरूप चतुर्वेदी, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० १६, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य १०, ६, ४।
घटना-स्थल आकाशमार्ग, शुक्राचार्य की कुटी, जंगल में कच का गाय चराना, मार्ग, ययाति का भवन, वाटिका।

भूमिका लेखक इस नाटक-रचना का प्रयोजन बताते हुए लिखते हैं—"पौराणिक आधार पर वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाओं का चरित्र-चित्रण करते हुए सामाजिक समस्याओं का हल करने वाले नाटकों का सर्वथा अभाव है। देवी देवयानी की रचना कर नाट्यकार ने नाट्य संसार की इस कमी को पूरा कर हिन्दी साहित्य का क्षेत्र बढाया है।"

दैत्यराज वृषपर्वा के दरबार में शुक्राचार्य संजीवनी विद्या का प्रभाव दिखाते हैं और देवासुर संग्राम में मृत सभी दैत्य पुनः जीवित हो उठते हैं। बृहस्पति का पुत्र कच देवदुर्दशा से चिन्तित होकर कहता है—"इस दैत्यनगरी में व्यभिचारी अबलाओं के सतीत्व को डिगा रहे हैं। इधर भाई-भाई के मिटाने का यत्न करता है तो उधर पुत्र पिता को मारने की युक्ति सोचता है।" इसी के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों का दिग्दर्शन कराया गया है।

कच दैत्यों से देवरक्षा के लिए देवगुरु शुक्राचार्य के आश्रम में शिष्य बनते हैं। शुक्राचार्य कच का परिचय अपनी कन्या देवयानी से कराते हैं। देवयानी प्रसन्न होकर कहती है—"कच तो मेरा आधा काम बटायगा, अवकाश के समय घडी दो घडी मेरा मन बहलायेगा।" कच देवयानी दोनों वर्षों तक साथ-साथ रहते हैं। एक दिन नारद कच (बृहस्पति पुत्र) को देखकर दैत्यों से सारा रहस्य खोल देते हैं। दैत्यराज और शुक्राचार्य कच को प्राण-दंड देते हैं पर देवयानी के आग्रह से कच की प्राण रक्षा होती है। कुछ

दिनों के उपरान्त कच पिताजी के पास लौटने की अनुमति माँगता है। देवयानी उससे अपना प्रेम-भाव स्पष्ट करके परिणय की भीख माँगती है। कच देवयानी को भगिनी पुकारता रहा है। वृषपर्वा की कन्या शर्मिष्ठा देवयानी के साथ कच को लेकर छेड़छाड़ करती है। देवयानी क्रुद्ध होती है और देवयानी शर्मिष्ठा में विवाद खड़ा हो जाता है। दोनों में पिता की शक्ति को लेकर कलह होने लगता है। अन्त में इन्द्र के आक्रमण करने पर वृषपर्वा शुक्राचार्य के पैरों पर गिरता है। इस प्रकार ज्ञान को धन से महत्तर सिद्ध किया गया है।

इसी के साथ दूसरी कथा ययाति और पुरु की चलती है। ययाति पुरु से युवावस्था माँग लेता है। वैद्य के प्रयास और पुरु के स्वेच्छा वृद्धत्व से ययाति युवा बन जाता है। इसी स्थल पर राज्य के लिए द्रुह्य, अनु, यदु और तुर्वस आदि भाइयों में घोर कलह दिखाया गया है। ययाति इन्द्र से इन्द्रासन खाली करने को कहता है किन्तु देवगण उसे धक्का देकर नीचे गिरा देते हैं। ययाति अपने पुत्र पुरु से क्षमा याचना करता है। पुरु पुनः तरुण और ययाति वृद्ध हो जाता है। देवयानी अपने हाथों से राजमुकुट पहनाते हुए कहती है—"अच्छा बेटा पुरु ! लो, मेरा भी प्रसाद लो।"

देवी द्रौपदी (सं० १९८२, पृ० ५८), ले० : रामचरित उपाध्याय; प्र० : गंगा पुस्तकमाला कार्यालय अमीनाबाद-पार्क लखनऊ; *पात्र :* (महाभारत के सभी प्रमुख पात्र); *अंक :* *दृश्य :* के *स्थान* पर १० भागों में नाटक विभक्त।

घटना-स्थल : पांचाल की राजधानी, विवाह-मंडप, युद्ध-क्षेत्र, महाराजा युधिष्ठिर की राजधानी।

यह नाटक नहीं नाटकीय शैली पर लिखी देवी द्रौपदी की जीवनी है जिसमें उस का जन्म राजा द्रुपद के यज्ञ-कुंड से दिखाया गया है। याज्ञसेनी का लालन-पालन पांचाल नरेश द्रुपद के द्वारा होने से उसे द्रौपदी, पांचाली और याज्ञसेनी कहा गया। द्रौपदी बाल्यकाल में कन्या-कौमुदी नामक ग्रंथ पढ़कर सदाचरण की शिक्षा ग्रहण करती है। वह संगीत का विधिवत् अध्ययन करती है। स्वयंवर में कर्ण द्रुपद की प्रतिज्ञा के अनुसार मत्स्य-वेध करता है किन्तु द्रौपदी कर्ण के क्षत्रिय कुमार होने में सन्देह के कारण उसे जयमाला नहीं पहनाती। आगे चलकर एक मुनि द्रौपदी के पूर्व जन्म की कथा सुनाकर उसके पंचपति होने का समर्थन करता है। द्यूत-क्रीड़ा में हारने पर पाण्डव वनवासी बनते हैं। गुप्तवास के दिनों में कीचक पांचाली पर आसक्त हो जाता है। द्रौपदी उसे धर्म-पिता सम्बोधन करती है पर वह कामासक्त होने के कारण बलात्कार करना चाहता है। भीम समय से पहुँचकर उसकी टाँगें पकड़कर चीर डालता है। अब भीम, युधिष्ठिर और अर्जुन की शान्ति-प्रस्तावना को अस्वीकार कर द्रौपदी के कथनानुसार कौरवों से युद्ध का आग्रह करता है।

कृष्ण के प्रयास करने पर भी कौरव शान्ति-प्रस्ताव को ठुकरा देते हैं। अन्त में महाभारत का युद्ध होता है। कृष्ण के प्रताप से कौरव पराजित होते हैं। अन्तिम दृश्य में अश्वत्थामा, भीम और युधिष्ठिर में धर्माधर्म पर तर्क-वितर्क होता है। भीम का मत है कि शिशु-घातक दुष्ट को प्राणदण्ड देना समुचित है, किन्तु द्रौपदी अर्जुन से निवेदन करती है—"अश्वत्थामा के वध से क्या आपके पुत्र जी सकते हैं ?"

पतिशोक से व्याकुल गुरु-पत्नी की हृदय-वेदना का ध्यान दिलाकर द्रौपदी अश्वत्थामा को मुक्त कराती है। इस प्रकार द्रौपदी के चरित्र का महत्व दिखाया गया है।

देश का दुर्दिन (सन् १९५०, पृ० ६४) ले० : शिवरामदास गुप्त; प्र० : उपन्यास बहार, काशी; *पात्र :* पु० १४, स्त्री २; *अंक :* २, *दृश्य :* ७, ५;

घटना-स्थल : उद्यान, समरसिंह का भवन, युद्ध शिविर, रणक्षेत्र, राजभवन, दुर्ग का भाग, नदी तट, मार्ग, मंत्रणाभवन।

इस ऐतिहासिक नाटक में मुगलों के क्रूर अत्याचार से देश की दुर्दशा का विवरण मिलता है।

मुगल बादशाह जहाँगीर मेवाड़ पर

आक्रमण का भार अपने सहयोगी महावन खा को सौंपता है। सम्मुख युद्ध में राणा पक्ष की अपार क्षति होती है। राणा अपने स्वबन्धु की हत्या के प्रतिशोध की भावना से महावन खा से युद्ध कर वीरगति प्राप्त करना चाहते हैं, परन्तु मानसी एव कल्याणी के हस्तक्षेप के कारण भीषण रक्तपात सम्भव नहीं होता। मुगल बादशाह जहाँगीर राणा के गले में जयमाला डालकर हिन्दू मुस्लिम ऐक्य का जय-घोष करता है। नाटक की इस प्रधान कथा के साथ अजय एव मानसी की कथा सयोजना भी हुई है।

देश का दुर्दिन (वि० २०००, पृ० ८८) *ले० दाऊदयाल गुप्त, प्र० हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा,* पात्र पु० २३, स्त्री १०, *अक ३, दृश्य ७, ७, ४।*

इसमें हिन्दू-मुस्लिम-कलह निम्नों की दुर्दशा, डाक्टरों की निदयता और मजदूर-सगठन का विवरण है। हैदराबाद में सत्याग्रहियों के आन्दोलन से देश-भक्त वीरो का परिचय मिलता है।

देशभक्त नामक हिन्दू की साम्प्रदायिकता की ज्वाला मे हत्या हो जाती है। उसकी पत्नी श्यामा अजीतसिंह नामक दुराचारी जमींदार के चगुल में पड जाती है परन्तु अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अजीतसिंह का छुरा मे मारकर स्वय भी आत्मघात कर लेती है। दूसरी कथा जातिभेद की समस्या से सम्बन्ध रखती है। अछूत सोहन और उसकी कन्या राधा की कथा में बीमार राधा एक दिन स्वप्न में देखती है मानो कोई योगी कह रहा है कि तुम प्रसाद का एक फूल मँगवाकर अगर नहीं सूँघोगी तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है। पिता बेटी के इस स्वप्न को सुनकर हतप्रभ रह जाता है। उसकी जिद पर वह मन्दिर तो जाता है परन्तु वहाँ अन्य भक्तो द्वारा बुरी तरह पीट दिया जाता है। लौटने पर राधा की मृत्यु हो जाती है। सोहन विक्षिप्त-सा बडबडाता है "प्राण रख दो एक तरफ इस नीच की सन्तान का। धर्म के काँटे पै रख दो, फूल को भगवान का, देख लो फिर कौन भारी और हल्का कौन है।"

इसके अतिरिक्त 'मजदूर फैडरेशन की मीटिंग के दृश्य में नाटककार ने यह दिखाया है कि किस प्रकार पदाधिकारियों के विश्वासघात के कारण हमारी सस्थाओं का सर्वनाश हो जाता है। नाटक की अन्य प्रमुख घटनाओं में काग्रेस के जुलूस, शिवमदिर-सत्याग्रह, महिलाओं का अपमान आदि हैं जो तत्कालीन समाज को प्रतिबिम्बित करते हैं।

देश दशा (सन् १८६२, पृ० ४०), ले० गोपालराम, प्र० बिहार बन्धु, छापाखाना, बाँकी पुर, पात्र पु० ११, स्त्री २, अक ७, दृश्य १, २, २, १, २, २।

घटना स्थल पोस्ट आफिस, कचहरी, लूटू सेठ का महल।

इस नाटक म नाटककार ने देश की दुर्गति का चित्र खींचा है। सवमोग दास एक दरोगा है, स्वार्थचन्द मुशी तथा एक कान्सटेबल चटोरी हैं जो लोगों से घूस लेते ह तथा दूसरों को वे बात पर हवालात में बद कर देते हैं तब मुकदमा होने पर उसे दबाकर रफा-दफा कर देते हैं।

देश दशा (वि० १६८० पृ० १०५) ले० बाबू कन्हैयालाल, प्र० उपन्यास बहार आफिस, पात्र पु० ४, स्त्री ३।

इस सामाजिक नाटक में विवाह समस्या का आधुनिक चित्रण है।

इसका प्रमुख पात्र मुहम्मददीन अग्रेजी-शिक्षा प्राप्त एक नवयुवक है। उसका विवाह एक ग्रामीण बालिका से निश्चित हो चुका है, किन्तु मुहम्मददीन की इच्छा है कि वह एक फैशनेबल चचल लडकी से विवाह करे। अब वह अशिक्षित, गवार, इण्डियन गर्ल से विवाह करना अपना अपमान समझता है। अतएव उस लडकी के पिता खुदाबख्श को उसकी कन्या से विवाह के लिए अस्वीकृति भेज देता है।

इस नाटक में मि० वाई भारतीय नवयुवकों को सावधान करते हुए कहते हैं कि आख मूँद कर नकल करने से भारत का

कल्याण नहीं हो सकता तथा यदि किसी अशिक्षित बालिका से किसी शिक्षित पुरुष का विवाह हो जाये तो उसका धर्म है कि अपनी पत्नी को स्वयं पढ़ा कर गृहस्थी के उपयुक्त बनाए।

देश भक्त (सन् १९३७, पृ० १३६), ले० : महाराज राज बहादुर 'सरद' बी० ए०; प्र० नेशनल बुक डिपो, नई सड़क दिल्ली; अंक : ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : उदयपुर का विलास भवन।

इस ऐतिहासिक नाटक में देशभक्त राणा प्रताप की वीरता का विवरण मेवाड़ की इस कहावत के आधार पर है—

'जननी तू ऐसो जन जैसो राणा प्रताप'

जब राणा प्रताप मेवाड़ की गद्दी पर बैठता है तो उसके पास न कोई राज्य है और न राजधानी लेकिन उसके हृदय में राजपूती उमंग है। उसके रक्त में देश भक्ति की तरंग है। राणा प्रताप के मित्र और सहायक बीकानेर, मारवाड़, अजमेर और बूँदी के राजा शत्रुओं से जा मिलते हैं मगर यह देशभक्त धर्म के सहारे रण में खड़ा हो जाता है। वह पहाड़ों की गुफाओं में रहता है; उसके बाल-बच्चे उसके सामने दाने-दाने को तरसते हैं लेकिन उस प्रतापी का पाँव धर्म के रास्ते से नहीं हटता है। अजमेर का मानसिंह शोलापुर में विजयी बनकर प्रताप से मिलने आता है तो प्रताप उस देशद्रोही के मान—शौकत का ख्याल न कर उसके स्वागत के लिए कदम आगे नहीं बढ़ाते हैं। वह प्रायः कहा करते हैं कि अगर मेरे और राणा सांगा के दरम्यान उदयसिंह गद्दी पर न बैठा होता तो चित्तौड़ कभी मेरे हाथों से न जाता।

एक तरफ तमाम हिन्दुस्तान का शहनशाह अकबर है और दूसरी ओर बाप्पा रावल का नामलेवा प्रताप अपने गिने-चुने राजपूतों को लेकर मैदान में खड़ा होता है। इस पर भी राजपूत वीर अपना सर नहीं झुकाते हैं। प्रताप मरते दम तक देश की आन और शान को निभाता रहा।

देश भक्त नर्तकी (सन १९५२, पृ० १७६), ले० : सैयद कासिम अली; प्र० : सुषमा साहित्य मंदिर, जवाहरगंज, जबलपुर, पात्र : पु० १४, स्त्री १; अंक : ३, दृश्य : १०, ७, ४।

घटना-स्थल : दिल्ली दीवान खास, अटक का सीमावर्ती गाँव, शाहजादा करीमुल्ला का महल, नादिरशाह का शयनागार, दिल्ली की सुनहरी मस्जिद, ईरान में नादिरशाह का स्वागत।

इस ऐतिहासिक नाटक में देश-भक्त राज-नर्तकी का अमर बलिदान दिखाया गया है।

दिल्ली के दीवान खास में मुहम्मद शाह बादशाह के दरबार में गुमान तथा अन्य कविगण काव्य पाठ करते हैं। तदुपरान्त नर्तकियों के नृत्यगान के उपरान्त प्रधानमंत्री मुहम्मद अमीन खाँ नादिरशाह का लिखा पत्र बादशाह के सामने रखता है, जिसमें लिखा है—"मैं इस्लाम और पैगम्बर की भक्ति की प्रेरणा से तुम्हें दरअसल दिल्ली की गद्दी छोड़ने का आदेश देता हूँ। तीन दिन के भीतर सारी धन-दौलत मुझे सुपुर्द कर दो वरना मेरा काफिला तलवार से तुम्हारे कुफ्र का अंत करके रहेगा।" एक सैनिक दरबार में आकर अटक पर ईरानियों के आक्रमण का संदेश देता है। उपमंत्री वीरेन्द्र सिंह बादशाह को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करते हैं किन्तु मुगल दरबार का शक्तिशाली सामंत आसफजहाँ निजामुल मुल्क प्रधान सेनापति सआदत खाँ से गुप्त मंत्रणा करता है, जिसका कथन है "मुझे गुलामी पसन्द है पर उस काफिर रंगीलेशाह की छत्रछाया में सरदारी पसंद नहीं। उसने सैयदों का खात्मा कर दिया है"। इधर शहजादा करीमुल्ला प्रसिद्ध नर्तकी हूर के प्रेम में उन्मत्त होकर विश्वासपात्र नौकर अली मुल्ला का सत्परामर्श अवज्ञा के कानों से सुनते हैं।

अटक के हिन्दू-मुसलमान विदेशी आक्रमण की तैयारी करते हैं। हिन्दुओं को भय होता है कि कहीं मुसलमान भाई आक्रमणकारियों को मुसलमान समझकर देश-द्रोह न करें पर मुसलमान आश्वासन देते हैं। "नहीं चौधरी जी हमारा मजहब भले ही इस्लाम है, पर मुसलमान होने के पहले

हम हिन्दुस्तानी है।" चौधरी को नादिरशाह का सैनिक धमकाते हुए कहता है—"ईरान का इस्लामी बाद शाह खुदा के बन्दे की हैसियत से हिन्दुस्तान मे कुफ्र का नाश करने के लिए यहाँ आ रहा है। उसके स्वागत और फौज का प्रबन्ध करो।" चौधरी बादशाह के दरबार मे दुहाई भेजता है।

नादिरशाह सीमान्त प्रदेश पजाव को रौंदता करनाल के मैदान मे पहुँचता है। वीरेन्द्रसिंह और हैदर बख्श बहादुरी से लडते है पर अनुशासन हीनता और अधिकारियो के निरुत्साह के कारण मुगलो की पराजय होती है। उधर दिल्ली म शहजादा नन्ही हूर के नशे में डूबा है और नादिरशाह दिल्ली पर धावा बोल देता है। वह दीवाने खास मे मुहम्मदशाह को समझाता है कि गद्दारो और फूट से तुम्हारी सल्तनत बरबाद हो रही है। तुमने हिन्दुओं को भी जागीर दे रखी है, मुझे धन दौलत चाहिए। मुहम्मद शाह नादिर की सभी शर्ते मान लेता है और हूर के नृत्य-सगीत से आक्रमणकारियो का स्वागत होता है। नादिर-पुत्र शाहजादे और रजा का हूर के प्रति आकर्षण होता है। इधर नहमपाशा नामक नादिर का वफादार सैनिक सूचना देता है कि हमारे तीन सिपाहियों को भीड ने मार डाला। नादिर हुक्म देता है—'नालायक मुगल सत्ता का सम्पूर्ण कोष लूट लो। मारो, काटो जो चाहो सो करो।' इस हत्याकाण्ड के उपरान्त हूर को रजा शाह अपने साथ ईरान लाता है। रजा शाह और नादिर मे कलह होता है। रजा शाह बन्दी बनाया जाता है। उसकी आँखें निकलवा ली जाती हैं। हूर से नादिर की शादी होती है किन्तु पहली रात को शराब के बहाने विष पिलाकर वह नादिर से अपने देश पर किये गये अत्याचारो का बदला लेती है। उसकी भी हत्या की जाती है। देशभक्ति के लिए प्राणो की बलि देती है। वह अन्त मे गाना गाती स्वर्ग को जाती है।

देश-भक्त मालवीय (सन् १९६८, पृ० ५५), ले० मोहनलाल तिवारी, प्र० नाट्य सघ, वाराणसी, पात्र २४, अक ३, दृश्य २, ३, ४।

घटना स्थल प्रयाग।

प्रयाग मे मालवीय जी अपने निवास-स्थान पर बैठे पूजा कर रहे हैं। थोडे ही समय मे उनके मित्र श्री नाथ जी आ जाते हैं। उनमे कुछ बाते होती है। फिर तिलक जी आ जाते है और महामना का काशी जाकर हिन्दू यूनिवर्सिटी के निर्माण की राय देते है। मालवीय जी प्रसन्नतापूर्वक इस राय को स्वीकार करते है। स्थान शिमला मे मालवीय जी अपने अनेक साथियों के साथ बैठे हुए काशी विश्वविद्यालय के निर्माण की चर्चा करते हैं। कालान्तर मे काशी मे अन्य सज्जनो के साथ विश्वविद्यालय-शिलान्यास-समारोह होता है। अनेक राजा भी उपस्थित हैं। मालवीय जी गोलमेज परिषद् से लौट कर आते हैं। एक वृद्धा के बेटे को फासी से बचाने के लिये आदमी भेजते हैं। तीन आदमी आकर मालवीय जी से प्रश्न करते हैं और उनका यथोचित उत्तर पाते हैं। मालवीय जी अपने साथियो से भिक्षा माँगकर विश्वविद्यालय का निर्माण कर देते हैं। दीक्षान्त-समारोह मे मालवीय जी टैगोर और कुलसचिव का भव्य स्वागत करते हैं। मालवीय अपने भाषण मे वहाँ उपस्थित छात्रो तथा नवयुवको को देशप्रेम की भावना के प्रति जागृत करते हैं।

देशी कुत्ता विलायती बोल (सन् १८९९), ले० राधा कान्त लाल, प्र० ग्रथकार, हसुआ।

इस नाटक मे पाश्चात्य सस्कृति पर हास्यास्पद व्यग्य किया गया है। इसमे भगवती बाबू का प्रथम पुत्र मि० सहाय इग्लैण्ड मे शिक्षा प्राप्त करता है। वहाँ की सस्कृति मे सराबोर अपने प्रथम पुत्र की मन स्थिति तथा उसकी वेषभूषा देखकर भगवती बाबू विकल हो जाते हैं।

इस नाटक मे भोंडे विचारो का प्रकाशन हुआ है। विलायत से लौटे मि० सहाय का कुत्ते का मुह चूमना तथा पाश्चात्य सभ्यता मे दीक्षित मि० प्रसाद की नाक काट लेना, भोंडेपन के ही अतर्गत आता है।

देशोद्धार या राणाप्रताप नाटक (सन् १६२२, पृ० ८६), ले० : दुर्गाप्रसाद जी गुप्त; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस; पात्र : पु० १०, स्त्री २, अंक : ३, दृश्य : ६, ६, ५।

घटना-स्थल : सीमाप्रान्त, राजभवन, मीना-बाजार, विलासभवन, बारहदरी, बगीचा, दरबार, राजपथ, मुगल कैम्प, वनपथ, पहाड़ी नदी, पहाड़ी खोह, सीमाप्रान्त, पहाड़ी किला।

इस ऐतिहासिक नाटक में महाराणा प्रताप की अद्भुत देशभक्ति और वीरता का वर्णन है जिसे देखकर अकबर भी उनकी सराहना करता है।

महाराणा प्रताप वीरों को तन-मन-धन लगाकर मातृभूमि की रक्षा करने के लिए प्रेरित करते है, किन्तु उनका भाई शक्ति सिंह अकबर से मिलकर अपनी बहन का सम्बन्ध उनसे स्थापित करता है। शहंशाह अकबर शक्तिसिंह को अपनी तरफ मिला लेते हैं। दूत द्वारा एक पत्र राणा प्रताप के यहां भेजते हैं जिसमें सन्धि की शर्त होती हैं पर राणा प्रताप प्रस्ताव स्वीकार नहीं करते। शक्तिसिंह अपने प्रतिशोध के लिए मेवाड़ पर आक्रमण कर देते हैं।

इसमें प्रताप और अकबर के युद्ध के साथ एक प्रेम-कथा भी जुड़ी है जिसमें मालती अपने पति को युद्ध के लिए भेज देती है तथा खुद भी लड़ने के लिए जाती है। दूसरे अंक के पांचवे दृश्य में शाहजादे सलीम और मानसिंह अपनी सेना को युद्ध के लिए ललकारते हैं और इधर अमर सिंह बाल-सेना के साथ, गुलाबसिंह भीलों के साथ जननी जन्मभूमि और महाराणा प्रताप की जयजयकार करते युद्ध-क्षेत्र में कूद पड़ते हैं। युद्ध करते-करते कई यवन सैनिक अमर-सिंह को घेरकर कलेजे में खंजर भोंकना चाहते हैं। मालती वीर वेष में पहुँचकर सिपाहियों को मार गिराती है। सैनिक मालती की ओर बढ़ते हैं; अमरसिंह और गुलाबसिंह पहुँच जाते हैं। यवन-सेना प्रताप को घायल करती है। झालासिंह प्रताप का टोप पहनकर बन्दी बन जाते हैं, और प्रताप चेतक पर सवार होकर नदी पारकर जाते हैं, किन्तु चेतक मर जाता है। शक्तिसिंह में भ्रातृप्रेम उमड़ता है और वह प्रताप के पैरों पर गिरकर क्षमा याचना करता है। प्रताप शक्तिसिंह को कलेजे से चिपका लेता है। इधर जब सलीम प्रताप की वीरता की कहानी अकबर को सुनाता है तो सम्राट् महाराणा के शौर्य से प्रसन्न होकर सलीम को आदेश देते हैं—"बाद बरसात के फिर लड़ाई शुरू कर दी जाय और उस प्रताप को जिन्दा गिरफ्तार कर मेरे रूबरू हाजिर किया जाय।" उदयपुर आदि स्थानों पर मुगलों का अधिकार होने से महाराणा की सन्तान को घास की बनी रोटियां खानी पड़ती हैं। एक दिन एक जंगली न्योला राणा की पुत्री के हाथ से रोटी का टुकड़ा लेकर भाग जाता है। बच्चों को भूख से तड़फते देखकर राणा रोदन करने लगते हैं। इसी समय मुगलों का आक्रमण होता है। महाराणा बच्चों को भीलों को सौंप युद्ध क्षेत्र में कूद पड़ते हैं। धनाभाव के इन क्षणों में भामाशाह अपनी सारी सम्पत्ति राणा को युद्ध के लिए प्रदान करते हैं। गुलाबसिंह, मालती, महाराणा तथा सैनिक योजना बनाकर युद्ध करते हैं। मालती चित्तौड़ दुर्ग पर चढ़कर यवन-पताका नीचे गिरा देती है। प्रताप यवन द्वार-रक्षकों को मारकर दुर्ग में प्रविष्ट हो युद्ध करके विजयी होते हैं। मालती गुलाबसिंह के पैरों पर गिरती है। प्रताप कोट-रक्षक को पकड़ लेते हैं। जननी जन्मभूमि की जयजयकार और हर हर महादेव के साथ नाटक समाप्त होता है।

दो दूरदेशी (सन् १८७८), ले० : धनजंय भट्ट; पात्र : पु० २, अंक रहित।
घटना-स्थल : कक्ष।

इसमें दो पात्रों के माध्यम से भारतीयों द्वारा दिखाई जाने वाली झूठी राजभक्ति के प्रति कठोर व्यंग्य किया गया है।

इसमें दो दूर देशों के दो पात्र हैं। एक पात्र हिन्दुस्तानी और दूसरा पात्र अंग्रेज है। इन दोनों पात्रों के कथोपकथन द्वारा अंग्रेज शासकों की स्वार्थपूर्ण नीति एवं भारतीयों से घृणा पर प्रकाश डाला है। इसमें अंग्रेज पात्र शासन की असमानता की नीति

को तर्कों के साथ प्रस्तुत करता है। हिन्दुस्तानी पात्र अंग्रेजों द्वारा भारतीयों की उपेक्षा, प्रताड़ना, तिरस्कार, काले-गोरे के भेदों के सापेक्ष परिणामों को व्यक्त करता है।

दो धारी तलवार (सन् १९२३, पृ० २२), ले० दुर्गाप्रसाद गुप्त, प्र० रत्नाकर पुस्तकालय, बनारस, पात्र पु० १२, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ६, ५, ४।
घटना-स्थल घर, वेश्या गृह, जंगल, वन-मार्ग।

इस सामाजिक नाटक में पतिव्रता पत्नी को अपने सतीत्व की रक्षा में विजय दिखाई गई है।

माधवदास का दगाबाज दोस्त सुखदेव शर्मा उसे हुस्ना नामक वेश्या के चंगुल में फँसा देता है। माधवदास की जिन्दगी तबाह हो जाती है। वह हुस्ना के कहने पर अपनी विवाहिता पत्नी को ठोकर मारकर घर से निकाल देता है।

माधवदास का लड़का मोहन अपनी मा सुशीला को साथ लेकर जंगल में चला जाता है, जहाँ पर दुष्ट रामसिंह मौका पाकर सुशीला से प्यार जताता है। सुशीला इन्कार करती है, तो रामसिंह कहता है कि तुम्हारा बेटा तेरे सामने कत्ल किया जायेगा अब भी समय है मान जा। फिर भी वह नहीं मानती है। रामसिंह बलात्कार करना चाहता है तब तक अचानक बिजली गिरती है। रामसिंह मर जाता है। मोहन और सुशीला बच जाते हैं।

अन्त में सुशीला अपनी पति-भक्ति में जीवन में विजय पाती है।

दो नाटक (वि० १९९६, पृ० १६४) ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० दी एज्यूकेशन प्रेस आगरा, पात्र पु० ६, स्त्री २, अंक ५, दृश्य ५, ५, ५, ५, ५।
घटना स्थल शहर का गृह, ग्राम।

'दो नाटक' सामाजिक त्रासदी है। 'पतित सुमन' तथा 'दलित कुसुम' दोनों ही नायिकाएँ आत्महत्या करती हैं। 'दलित कुसुम' का आरम्भ बचपन के साथियों के खेल से होता है। बाल विवाह के बाद कुसुम बाल विधवा हो जाती है। वैधव्य अवस्था के बीच में ही डॉ० मदन आकर उससे विवाह का प्रस्ताव रखता है। माँ के समझाने पर कुसुम तैयार हो जाती है, लेकिन रसिक नामक धूर्त व्यक्ति डॉ० मदन को भड़का देता है जिसमें वह छोड़कर चला जाता है। कुसुम दरबदर भटकती है। बैरिस्टर कुंज उस की स्थिति पर चिन्तित होकर अध्यापिका बनवा देता है। यहाँ भी रसिक उसका पीछा नहीं छोड़ता, वह आकर बलात्कार करता है। विवश होकर कुसुम आत्महत्या कर लेती है।

नाटक 'पतित सुमन' एक सयोग-प्रधान घटना पर आधारित है। आरम्भ में विश्वनाथसिंह तथा सुमन का प्रेम सम्बन्ध दिखाया गया है। दोनों प्रणय-सूत्र-बन्धन में जकड़ने को ही हैं कि एक वृद्धा आकर उन दोनों को भाई-बहिन सिद्ध कर देती है। हृदय से व्यथित सुमन का विवाह विक्रमसिंह से हो जाता है। गाँव की दीवालों में बन्द सुमन दुःखी है। वह काव्य-कला का घर पर ही अभ्यास करके समय काटती है। सहसा कहीं सार्वजनिक सभा का सेवक विश्वनाथसिंह आकर कुसुम का घाव हरा कर देता है। आपसी परिस्थितियों में मजबूर होकर सुमन आत्महत्या कर लेती है।

दो भाई (सन् १९३३, पृ० ६७), ले० आनन्द, प्र० हिन्द एस० पी० सी० केन्द्र, इंडिया, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य २।
घटना स्थल व्यापारी का घर, अस्पताल, कक्ष।

एक व्यापारी पतरस के शशि और निर्मल दो पुत्र होते हैं। शशि व्यापार में लग जाता है पर निर्मल नाटक मंडली में अपना धन उड़ाने लगता है जहाँ इसका प्रेम गाँव की डाक्टरनी कला के साथ होता है। वह आभा नर्तकी के जाल में भी फँस जाता है, जिसमें निर्मल और शशि में अनबन होती है। निर्मल एक नर्तकी से शशि का ब्याह रुचिकर नहीं मानता। अन्त में ईसाई धर्म-प्रचारक पादरी हस के द्वारा सब में समझौता हो जाता है।

दौलत की दुनिया (सन् १९३३, पृ० १०४), ले० : शिवरामदास गुप्त; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड संस, बुक्सेलर, वाराणसी; पात्र : पु० १२ स्त्री २; अंक ३, दृश्य : ९, १२, ७, ४।

घटना-स्थल : वेश्यागृह, गंगा तट।

इस सामाजिक नाटक में व्यभिचारियों द्वारा सती साध्वी विधवा स्त्रियों की दुर्दशा चित्रित है।

विधवा स्त्री को संसार में जीने का कोई अधिकार नहीं है। आठ वर्ष की बालिकाएं साठ वर्ष के बूढ़े को भेंट चढ़ाई जाती है। विधवाएँ घर की कूड़ा और वेश्याएँ मस्तक का चन्दन समझी जाती है। लक्ष्मीकान्त दौलत की छुरी से हत्या करने वाला एक विलासी पुरुष है जो फूलकुमारी नामक गरीब स्त्री की इज्जत को लूटता है। फलतः फूलकुमारी व्यभिचारी गौरीशंकर तथा बिहारीलाल से आतंकित होकर वेश्या बन जाती है। लक्ष्मीकान्त सावित्री देवी पर झूठा लाछन लगाता है। फिर भी सावित्री अपने धर्म को बचा लेती है। अन्त में फूलकुमारी, उसका भाई गजाधर और सावित्री गंगा तट पर मिलते हैं। अकस्मात् फिर वहां पर भी लक्ष्मीकान्त पहुँच जाता है, जहाँ उसके द्वारा गजाधर की हत्या होती है तथा फूलकुमारी और सावित्री दोनों धर्म की देवियाँ लक्ष्मीकान्त को मारकर स्वयं भी आत्महत्या कर लेती है। इस प्रकार दौलत की दुनिया में पाप का नाश और धर्म की विजय होती है।

द्रौपदी (सन् १९७०, पृ० ३१) ले० : सुरेन्द्र वर्मा; प्र० : नटरंग पत्रिका, (खंड ४ अंक १४) दिल्ली; पात्र : पु० ५, स्त्री २; अंक: २, दृश्य-रहित।

घटना-स्थल : घर, दफ्तर, पार्क।

इस नाटक में आज के युग में व्याप्त भौतिक-ऐश्वर्य और सैक्स की भूख का यथार्थ चित्र अंकित किया गया है।

आज का व्यक्ति इस भौतिकता के पीछे भागने से कितना खंडित हो गया है—इसका प्रतिनिधित्व मनमोहन करता है। सफेद नकाबवाला (मनमोहन की अन्तरात्मा और विगत प्रसन्नता का प्रतीक), काले नकाब वाला (अनैतिकता का प्रतीक), पीले नकाब वाला (आफिस में काम करने वाले व्यक्तित्व का प्रतीक) लाल नकाब वाला (सैक्स की भूख) ये चारों व्यक्ति मनमोहन के ही खंडित रूप हैं। इन प्रतीकात्मक पात्रों को लेकर लेखक मनमोहन की त्रासदी चित्रित करता है। नाटक में किसी निश्चित कथा का समावेश नहीं है क्योंकि लेखक कथा को प्रमुखता न देकर चरित्र को प्रमुखता देता है। उसकी पुत्री सुरेखा इन पांचों व्यक्तियों का सामना करती है। पुत्र अनिल और पुत्री अलका आज की युवा-पीढ़ी का कच्चा चिट्ठा खोल देते हैं।

प्रस्तुत नाटक का प्रथम प्रदर्शन ४ फरवरी ७१ को दिशांतर (दिल्ली) संस्था द्वारा हुआ है।

द्रौपदी (सन् १९४५, पृ० ४४) ले० : भगवती चरण वर्मा; प्र० : भारती भण्डार, प्रयाग। संकलित विपथगा में; पात्र : पु० १०, स्त्री २; अंक : १, दृश्य : १०।

महाभारत की प्रसिद्ध कथा पर आधारित 'द्रौपदी' गीतिनाट्य मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। प्रायः द्रौपदी को महाभारत का मूलकारण माना गया है किन्तु लेखक उसका कारण पूरे युग को मानते हुए कहता है—"हिंसा घृणा उस युग के व्यक्तियों में पाप नहीं समझे जाते थे। महाभारत में जो विनाश हुआ वह मानव-विनाश नहीं था, वह युग की मान्यताओं का विनाश था।"

द्रौपदी में घृणा, हिंसा की भावना पूर्व प्रसंगों से सम्बन्धित है। द्रोणाचार्य द्वारा द्रौपदी के पिता का अपमान उन सब घटनाओं के मूल में दृष्टिगोचर होता है। कौरवों से अपने पिता का प्रतिशोध लेने के लिए ही द्रौपदी निराश्रित पांडवों का वरण करके पांच पतियों की भार्या बनती है और सम्पूर्ण कौरव वंश के विनाश का अवसर प्रस्तुत करती है।

द्रौपदी चीर हरण (वि० १९५५, पृ० ७५) ले० : वामनाचार्य गिरि; प्र० : लहरी प्रेस

बनारस, पात्र पु० २५, स्त्री १, अंक ५, दृश्य ३, ३, ३, ३, १।
घटना-स्थल राजसभा।

इस नाटक का भी वही कथानक है जो द्रौपदी-चीर-हरण नाटक में सामान्यतः पाया जाता है।

द्रौपदी वस्त्र हरण अथवा पाण्डव वन गमन (वि० १९५३, पृ० १०३), ले० प्रभुलाल अस्थाना, प्र० वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, पात्र पु० २३, स्त्री १, अंक ४, दृश्य ३, ४, २, ५, ५।

इसका भी कथानक महाभारत वर्णित कथाओं जैसा है।

द्रौपदी चीर हरण (सन् १९६०, पृ० ७०), ले० रामजी शर्मा, प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस, पात्र पु० २०, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ४, ५, ३।
घटना-स्थल राजसभा।

इस पौराणिक नाटक में दुष्ट दुःशासन द्वारा पाण्डव पत्नी द्रौपदी के चीर हरण की कथा वर्णित है।

इस नाटक में भीम अपने नए भवन को दिखाने के लिए दुर्योधन को आमन्त्रित करते हैं और दुर्योधन और शकुनि उसे देखने आते हैं। जब दुर्योधन फर्श को जल समझकर अपने जूते उतारने लगता है तो भीम, द्रौपदी आदि हँस पड़ते हैं। फिर जल को फर्श समझ उसमें दुर्योधन गिर पड़ता है और तब द्रौपदी कहती है—"अंधे के अन्धी ही सन्तान होगी है जिसे दिन में भी दिखाई नहीं पड़ता।" इस व्यंग्य से दुर्योधन नाराज हो द्रौपदी को दरबार में नंगी करने का प्रण करता है। और जब शकुनि की चाल से युधिष्ठिर जुए में सब कुछ हारकर द्रौपदी को भी हार जाता है तब दुर्योधन उसे अपनी रानी बनाने का प्रयास करता है। द्रौपदी के विरोध करने पर भरी सभा में दुःशासन उसकी साड़ी को खींच कर नंगी करने की आज्ञा देता है, किन्तु दुःशासन द्रौपदी की साड़ी खींचते-खींचते थक जाता है पर द्रौपदी नंगी नहीं हो पाती। तब द्रौपदी कृष्ण को याद करती है। भगवान कृष्ण उसकी रक्षा करते हैं।

द्रौपदी चीर हरण (सन् १९६८, पृ० ७६) ले० न्यादरसिंह बेचैन, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० १६, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ४, ६, २।
घटना-स्थल राजसभा।

नाटक की कथावस्तु महाभारत के द्रौपदी चीर हरण प्रसंग से ली गई है। इसमें पाडवों के राजसूय यज्ञ के समय भीम दुर्योधन को मयदानव की शिल्प-कला दिखाते हैं। उसमें दुर्योधन धोखा खा जाता है। द्रौपदी उस पर व्यंग्य करती है "अंधे की सन्तान भी अंधी होती है।" दुर्योधन इस अपमान का बदला लेने के लिए शकुनि और कर्ण की मदद से द्यूतक्रीडा का कार्यक्रम बनाता है। धृतराष्ट्र और गांधारी भी पुत्र की उस विजय में सहायता करते हैं और विदुर की नीति-सूचक बातों पर ध्यान नहीं देते। धृतराष्ट्र की तरफ से निमन्त्रणपत्र पाकर युधिष्ठिर भाइयों के साथ कौरव-भवन पधारते हैं और नीति विरुद्ध द्यूत को स्वीकार करते हैं। शकुनि के कौशल से युधिष्ठिर अपना समस्त राजपाट, धन-सम्पत्ति यहाँ तक कि भाई और द्रौपदी को भी हार जाते हैं। दुर्योधन प्रतिशोध के रूप में द्रौपदी को नग्न होकर अपनी जांघ पर बैठने का आदेश देता है। द्रौपदी न्याय की दुहाई देती है किन्तु भीष्म, विदुर, धृतराष्ट्र और द्रोण भी रक्षा में तत्पर नहीं होते। अन्त में भगवान् कृष्ण उसकी रक्षा करते हैं।

द्रौपदी स्वयंवर (सन् १९२६, पृ० १२२), ले० ज्वालाराम नागर, प्र० आदर्श प्रेस, काशी, पात्र पु० १६, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ७, ६, ३।
घटना-स्थल द्रुपद की सभा।

इस पौराणिक नाटक में द्रौपदी के स्वयंवर की कथा वर्णित है।

राजा द्रुपद की सभा में द्रोणाचार्य का अपमान होता है जिससे उनकी दशा विक्षिप्त-सी होती है। वे कौरव पांडवों को

धनुर्विद्या की शिक्षा देते हैं। वे एकलव्य की गुरुभक्ति की परीक्षा लेते हैं तथा अर्जुन को ब्रह्मास्त्र प्रदान करते हैं। द्रोणाचार्य युद्ध की रचनाकर द्रुपद को बन्दी बनाते हैं और पुनः राजा द्रुपद को आधा राज्य लौटाकर मुक्त कर देते हैं। स्वयंवर होना है जिसमें अर्जुन लक्ष्यभेद कर द्रौपदी को प्राप्त करते हैं।

द्रौपदी स्वयंवर (सन् १९३० पृ० १७२) ले० : पं० राधेश्याम कथावाचक, प्र० : राधेश्याम पुस्तकालय बरेली; पात्र : पु० ३३, स्त्री ८; अंक : ३, दृश्य : ७, ८, ४। घटना स्थल : राजा द्रुपद की राज सभा।

इस नाटक के द्वारा द्रौपदी-स्वयंवर में भगवान श्री कृष्ण की लोकोत्तर-चमत्कार वाली झाँकी देखने को मिलती है। उसके अतिरिक्त पांडवों के पराक्रम की घटनायें, कौरवों की कुटिल नीतियाँ, शकुनि मामा के व्यंग्य तथा विदुर की पवित्र वृत्तियों का भी चित्रण है। महर्षि वेदव्यास के पुण्य दर्शन में इस नाटक की समाप्ति होती है।

द्वापर का द्वन्द्व (पृ० १५४), ले० : श्री श्याम बिहारी दास, 'नवानी', प्र० : बिहारी बन्धु ग्राम, पोस्ट नवानी, जिला दरभंगा, पात्र : पु० १६, स्त्री १०।

इस पौराणिक नाटक में महाभारत युद्ध के कारणों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें कृष्ण के चरित्र से सबंधित अनेक प्रासंगिक घटनाओं का उल्लेख किया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि और भी विशाल व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हुए थे। किन्तु फिर भी कृष्ण के चरित्र पर ही क्या विशद रूप में भागवत कार ने विचार किया है। अतएव नाट्य-कार ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि वस्तुतः द्वापर युग द्वन्द्व का युग था। अनेक द्वन्द्व युक्त प्रासंगिक एवं अप्रासंगिक कथाओं का उल्लेख उसमें हुआ है। यही कारण है यह नाटक धार्मिक न रह कर एक राजनैतिक नाटक बन गया है; किन्तु इतना मानना ही पड़ेगा कि नाट्यकार ने धार्मिकता को सुरक्षित रखने का भरपूर प्रयास किया है।

द्वापर की राज्य क्रान्ति (सन् १९४०, पृ० ८८) ले० : किशोरीदास वाजपेयी शास्त्री, प्र० : हिमालय एजेन्सी कनखल यू० पी०; पात्र : पु० ११, स्त्री ४; अंक : ५, दृश्य : ४, २, २, २, २।
घटना-स्थल : उद्यान में सरोवर तट, गांव की चौपाल, सुदामा की झोंपड़ी, कृष्ण की विनोदशाला।

गुरु सन्दीपन कहते हैं कि देश की एकता बनाए रखना और अशिक्षा दूर करना राज्य का कर्त्तव्य होता है। सुदामा उनके कथन का समर्थन कर यथाशक्ति काम करने की प्रतिज्ञा करते हैं। सुदामा अपना सर्वस्व देकर भी देश-सुधार में लगने की घोषणा करते हैं।

देश-प्रेम, गरीबोद्धार और अशिक्षा दूर करने का व्रत लेकर सुदामा गांव में आते हैं और निःस्वार्थ सेवा में लग जाते हैं। वे किसानों को अत्याचार-अनाचार का डटकर मुकाबला करने के लिए उकसाते भी हैं। उधर कृष्ण विजयनगर आदि छोटे-छोटे राज्यों को समाप्त कर एक बड़ा और शक्तिशाली राज्य बनाने की योजना बनाते हैं। विजयनगर का मंत्री सर्वीश के साथ मिलकर धन का लालच देकर सुदामा को राजमहल में पकड़वाने की योजना बनाता है।

सर्वीश अपनी योजना में असफल होता है। सुदामा लक्ष्मी-लोभ को पैरों तले रौंदते हैं, सुदामा की सहायता से कृष्ण विजयनगर पर अधिकार कर लेते हैं। पंडिताइन (सुदामा की पत्नी) सुदामा से कहती है कि कृष्ण से मिलना चाहिए। पहले तो सुदामा आनाकानी करते हैं किन्तु बाद में पत्नी समझाती है "क्या कोई किसी से कुछ लेने ही जाता है! कुसुम चन्द्रमा का क्या छीन लेता है और कमल भास्कर का क्या लूट लेता है; अपने मित्र का उदय देखकर सब का दिल खिल उठता है।" सुदामा तैयार होते हैं पर उनके पास भेंट देने को कुछ भी नहीं। सुदामा पंडिताइन से कहते हैं "पाव डेढ़ पाव चावल तो मंगल द्रव्य है। मित्र ही तो है, बादशाह से

मिलने मैं नही जा रहा हूँ ।" वे चावल लेकर द्वारिका को प्रस्थान कर देते हैं।

चौथे अक के आरम्भ मे परिस्थान उद्धव और कृष्ण सरस वार्तालाप करते दिखाई पडते हैं। इसी बीच सुदामा के आगमन का समाचार सुनकर कृष्ण बाहर आते हैं। उन्हे आदर पूर्वक राजमहल मे ले जाकर पति-पत्नी दोनों सुदामा का चरण पखारते हैं। रुक्मिणी प्रसाद के बदले सुदामा को धन-राज्य देना चाहती है। पहले तो कृष्ण कहते हैं कि सुदामा राज्य सुख और धन को तृण समझते हैं किन्तु आग्रह करने पर धन प्रदान करने के लिए राजी हो जाते हैं।

पाचवे अक मे द्वारिका से लौटे सुदामा का स्वागत करने के लिये भीड लगी है। अपने मत्रणा-गृह मे सुदामा मित्र से कहते हैं कि गंना का खर्च कम करके अशिक्षा और भुखमरी दूर कीजिए। इस तरह प्रजातत्र की स्थापना एव प्रजा की भलाई के सकल्प के साथ नाटक समाप्त होता है।

ध

धरती और आकाश (सन् १६७४, पृ० ६४) ले० शम्भूनाथसिंह, प्र० गान्धी ग्रन्थागार, बनारस, पात्र पु० ११, स्त्री २, अक ८।

घटना-स्थल सेठ की गद्दी, ग्राम का मैदान।

यह नाटक मूलत सामाजिक समस्याओ पर प्रकाश डालने के लिए लिखा गया है। सेठ लक्ष्मीपति नवीन फैक्ट्री खोलने की योजना बनाकर राय साहब से खरीदी हुई जमीन में 'पावर हाउस' बनाना चाहता है। इसी बगले के पास जनसेवक कलाकार प्रजापति रहता है। धूर्त सेठ अपने स्वार्थ के चक्कर मे अपने भाई ज्ञानचन्द को पागल सिद्ध करके उसका हिस्सा हडप लेना चाहता है। ज्ञानचन्द सेठ की काली करतूतों से पूरी तरह परिचित है। सेठ लगातार रिश्वत के बल पर पुलिस अफसर तथा मन्त्री आदि सभी से नाजायज काय करवा कर किसान मजदूरों का गला घोटता है। ज्ञानचन्द मजदूरों म सेठ के अत्याचारो के प्रति जागृति उत्पन्न करता है। लेकिन सेठ मजदूर नेताओं को धोखा देकर निकलवा देता है। वह बुद्धिमान् ज्ञानचन्द को पागल सिद्ध कर पुलिस में पकडवा देता है। तभी सेठ के खिलाफ जनता विद्रोह करती है, पुलिस गोली बरसाती है। भोले जन-नेता मारे जाते है। सेठ अपनी योजनाओं मे सफल होता है और विद्रोही जनता भी धीरे-धीरे सेठ के चक्कर मे आ जाती है।

इस प्रकार जन-शान्ति की घोषणा के साथ नाटक समाप्त होता है।

धरती की बेटी (सन् १६६० पृ० ८४) ले० रामस्वाथ चौधरी 'अभिनव', प्र० अभिनव साहित्य प्रकाशन, मुजफ्फर पुर, पात्र पु० ११, स्त्री ३, अक नही, दृश्य १०।

घटना स्थल राजा विदेह का राजभवन, आचाय कनकाभ का आश्रम।

भूमि-कन्या सीता के जन्म पर नाटक की कथा आधारित है। अनावृष्टि आदि दैवी प्रकोप के कारण देश मे भीषण अकाल से लूटपाट जैसे समाज विरोधी काय कोढ म खाज की सी स्थिति उत्पन्न कर देते हैं। आचाय कनकाभ अपने शिष्यों सहित इन समाज विरोधी गतिविधियों का प्रबल विरोध करते हैं। अकाल की भीषण स्थिति मे क्षुधातुर लोग अत्यल्प खाद्यान्न के लिए एक दूसरे के प्राण हर लेते हैं, माताएँ निर्मोह होकर अपनी सतान का परित्याग कर देती हैं। इसी प्रकार की परित्यक्ता सद्यजाता कन्या विदेहराज जनक को भूमि शोधन-अभियान के अवसर पर प्राप्त होती है। कनकाभ की कन्या-सम्बन्धी भविष्यवाणी के साथ कथा की परिसमाप्ति होती है। सीता के

जन्म-रहस्य की कथा के साथ-साथ आचार्य कनकाभ एवं उनके शिष्य मलय तथा महीरथ एवं वसुमति की घटनाएँ भी संयोजित हैं।

धरती की महक (सन् १९५६, पृ० १५३)
ले० : रामावतार चेतन, प्र० : हिन्दी भवन इलाहाबाद; पात्र : पु० २०, स्त्री २; अंक : ३।

घटना-स्थल : गाव का खेत, पुलिस स्टेशन।

इस सामाजिक नाटक में ग्रामीण कुरीतियों और दुर्व्यवस्थाओं को दूर करने वाले एक शिक्षक का प्रयास वर्णित है।

नाटक का नायक शिवसागर मध्यमवर्ग का एक शिक्षक है जो समाज सेवा के उद्देश्य से नगर त्याग कर गाँव में आकर रहने लगता है और अपने कुछ नवयुवक साथियों के सहयोग से गाँव की दशा सुधारने में तत्पर है, परन्तु पग-पग पर उसका विरोध होता है। जमींदार, उसके चाटुकार मित्र, उनके सहायक गुंडे सभी गाँव में मनमाना अत्याचार करते हैं। अफीम का अवैध व्यापार, खेतों और घरों में चोरी, ढोरों का अपहरण—इन सबसे उनको धन प्राप्त होता है जिसका कुछ अंश पुलिस अधिकारियों का मुंह बंद करने के लिए निश्चित है। यदि शिवसागर जैसे कुछ व्यक्ति उसका विरोध करते हैं तो उनके घर चोरी कराई जाती है, उन्हें मार-पीट की धमकी दी जाती है और उनके चरित्र को कलंकित करने का प्रयास किया जाता है। इन सबसे तंग आकर शिवसागर उन गुण्डों को, जिनके कारण गाँव में लोगों का जीवन दूभर हो गया था, मार डालता है और स्वयं पुलिस को आत्मसमर्पण कर आत्म बलिदान द्वारा जनता की आँखें खोल देता है।

धरती माता (सन् १९५४, पृ० ५२), ले० : रघुवीर शरण मित्र; प्र० : भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; पात्र : पु० १०, स्त्री ५; अंक-रहित। दृश्य : ५।

घटना-स्थल : धरती माता का मंदिर, खेत।

इस सामाजिक नाटक में सत्य की असत्य पर और धर्म की अधर्म पर विजय दिखाई गई है। गाँव के किसान अपने खेतों में कठिन मेहनत करके अच्छी फसल उगाते हैं। गाव का मुखिया धनदेव भी किसानों को पुत्रवत् प्यार करता है। लेकिन विनाश और पाप-वृद्धि नाम की दुष्टात्माओं को किसानों का ऐश्वर्य और सुख अच्छा नहीं लगता। वे गाँव के मुखिया धनदेव को बहकाते हैं। धनदेव इनके कहने पर गाँव वालों को तंग करता है। वही धनदेव जो गाँव की बहू-बेटियों को अपनी बहू-बेटी समझता था अब उन्हीं का सतीत्व लूटने को तैयार है। वह निरीह बच्चों और बूढ़ों की हत्या कराने लगता है। उसके अत्याचार से किसानों के रक्षक देवतागण भी दुःखी हो जाते हैं।

लेकिन अन्त में धर्मराज के प्रयास से सत्य की असत्य पर, धर्म की अधर्म पर और अहिंसा की हिंसा पर विजय होती है। धनदेव अपने कर्मों पर पश्चात्ताप करता है। विनाश और पाप-वृद्धि को भी धर्मराज क्षमा प्रदान कर देते हैं।

धरती से गगन (सन् १९५०, पृ० ८०), ले० : सतीश दे; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली; पात्र : पु० १२, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : १, १, १।

घटना-स्थल : फैक्टरी, छोटी सी खोली।

यह परिवार-नियोजन की समस्या पर लिखा गया हास्यपूर्ण सामाजिक नाटक है। दुर्गाप्रसाद एक फैक्टरी में काम करने वाला मजदूर है। वह एक खोली में अपने एक दर्जन बच्चों और बीवी सुन्दरी के साथ किसी तरह दिन गुजारता है।

उसके सभी बच्चे मारे-मारे फिरते हैं। दो एक बच्चे तो दवा के अभाव में मर जाते हैं। किन्तु उसका दूसरा पुत्र प्रेम एक अमीर लड़की गीता से प्रेम करता है और जब गुड़िया-गुड्डे की शादी बच्चे कर रहे थे तो उसी समय गीता और प्रेम का भी विवाह हो जाता है तथा दहेज के रूप में ३) की परिवार नियोजन की पुस्तक माता-पिता की ओर से भेंट की जाती है।

धरादीप—'धूप के धान' मे सकलित (सन् १९६०), ले० गिरिजाकुमार माथुर, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ काशी, पात्र प्रतिपय स्वर, *अंक-दृश्य-रहित।*

'धरादीप' सगीत रूपक मे दीपावली को देशकाल की सीमाओ से मुक्त एव चिरन्तन धरातल प्रदान किया गया है। दीपावली उस सामाजिक सुख का प्रतीक है जहाँ समस्त रोग-शोक तथा बाधा दीपक की लौ मे जल जाते हैं। कवि के अनुसार दीवाली प्रत्येक युग की धरोहर है। कदाचित् इसलिए उसने प्रत्येक अमावस्या की रात्रि के साथ दीवाली की उद्‌भावना की है। विभिन्न महापुरुषो ने अवतार लेकर इस दीप को प्रज्ज्वलित रखा है।

धर्म ईमान (सन् १९६२, पृ० ६०), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री २, अक २। घटना स्थल ग्रामीण मकान, बैठक।

हिन्दू-मुस्लिम धर्म के आधार पर लिखा गया यह एक सामाजिक नाटक है। कुन्दन अपने प्राणो की बाजी लगाकर बशीर के प्राणो की रक्षा करता है। फिर कुन्दन के मासूम बच्चे गोपी की परवरिश बशीर का भाई रहमत खाँ करता है। किन्तु इस काय के लिए उसे मजहब के ठेकेदारो से उलझना पडता है जिससे वह अपनी कौम का गद्दार साबित होता है। उसे दुखी होकर अपनी बीबी नसीम की भी हत्या करनी पडती है। अन्त मे रहमत अपना इस्लामी फर्ज पूरा कर गोपी के साथ अपनी बेटी रजिया की शादी करके हिन्दू मुस्लिम धम को एक सूत्र म बाध देता है।

धर्म की धुरी (सन् १९५३, पृ० ९८), ले० राजा राधिकारमणप्रसादसिंह, प्र० राजराजेश्वरी साहित्य मदिर, पटना, पात्र पु० ११, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ३, २ ८।
घटना स्थल वैष्णव मठ, मदिर, मकान।

इस सामाजिक नाटक मे धर्म के आधार पर साम्प्रदायिक सकीर्णता को दूर करने का प्रयास है।

वैष्णव मठ के महन्त सत सरनजी गाधीवादी विचार के हैं। वह १९४७ ई० के साम्प्रदायिक झगडो मे एकता स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है। विभाजन के समय पश्चिमी पजाब के कुछ लोगो के साथ राय साहब गुलजारीलाल साम्प्रदायिकता की अग्नि प्रज्ज्वलित करके मुसल्मानो से प्रतिशोध लेना चाहते हैं।

इधर मुल्ला करीमियाँ भी साम्प्रदायिकता की अग्नि भडकाता रहता है। दोनो वर्गों म सघर्ष होता है पर अहमद मुकुन्द की रक्षा मुसलमानो के आक्रमण से करता हुआ स्वय मारा जाता है। गुलजारीलाल की भतीजी कमला सत सरन जी के मदिर मे शरण लेने आती है। जहाँ कमला और मुकुन्द मे प्रेम देखकर महन्त जी उनकी शादी कर देते है। अहमद और सन्तसरन के प्रयास से साम्प्रदायिकता की आग बुझ जाती है।

धर्म चक्र (सन् १९६१, पृ० ४५), ले० रामस्वार्थ चौधरी 'अभिनव', प्र० अभिनव साहित्य प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अक नहीं, दृश्य ६।
घटना स्थल मगध सम्राट अशोक का राज दरबार, कलिंग।

इस ऐतिहासिक नाटक मे कलिंग युद्ध के बाद अशोक तथा कलिंग कुमारी *प्रणयलता* द्वारा धर्म प्रचार की कथा वर्णित है।

सम्राट अशोक कलिंग युद्ध के भीषण नरसहार से भयभीत होकर अहिंसा का व्रत ठान लेता है तथा देश मे बौद्ध धम की स्थापना के लिए कृत सकल्प हैं। कलिंग के राजकुमार इन्द्रजीत और राजकुमारी प्रणयलता ज्ञानगुप्त की मदद से सम्राट् अशोक से बदला लेना चाहते है किन्तु अशोक की नीतियो मे प्रभावित हो ऐसा नहीं कर पाते। अशोक इन्द्रजीत मे कहता है—"देखो राजकुमार! मगध वाले न मागध बनकर रह सकते है न कलिंग वाले कलिंगी बनकर। इन सीमाओ से ऊपर उठकर सबसे पहले उन्हे मनुष्य बनकर रहना होगा। मगध और कलिंग का प्रीतिसम्बन्ध अक्षुण्ण रहे, इसके लिए मैं इन दो

राजवंशों को एक सूत्र में आबद्ध देखना चाहता हूँ।" इन्द्रजीत इस कथन से प्रभावित होता है और प्रणयलता अशोक के चरित्र से। अन्ततः प्रणयलता अशोक की रानी बनकर उनके बौद्ध धर्म के संचालन तथा अहिंसा के प्रचार में सहयोग देती हुई धर्म-चक्र को घुमाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती है।

धर्मपाल-शान्ता (सन् १९५२, पृ० ६८), ले० : न्यादरसिंह 'बेचैन'; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली; पात्र : पु० १३, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ६, ७, ५।
घटना-स्थल : घर, कमरा, जंगल, वनमार्ग, एक्नुर का घर।

इस सामाजिक नाटक में अनमेल विवाह के दुष्परिणामों को दिखलाया गया है। युवती कामकला का विवाह बूढ़े कल्याणसिंह से होता है किन्तु काम-पीड़ित-कामकला एक दिन अपने सौतेले पुत्र धर्मपाल से काम-शांति की याचना करती है पर वह अपनी विमाता की प्रतिष्ठा रखते हुए उसे इन्कार करता है, तब कामकला त्रियाचरित्र के माध्यम से उस पर आरोप लगाती है। फलतः वह घर से भाग जाता है। रास्ते में उसे अनजाने में उसके साले लूटने के बहाने से घायल करते हैं। अन्त में वह अपनी ससुराल पहुँचकर अपनी पत्नी शान्ता से सारी बातें बताता है। वह उसकी मदद करती है जिसके कारण सब लोग अपनी-अपनी भूलों पर पश्चात्ताप करके प्रेम से रहने लगते हैं।

धर्मयोगी (सन् १९२१; पृ० १२२), ले० : मुन्शीजायक साहब; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० २१, स्त्री ६; अंक : ३, दृश्य : ८, ८, ३।
घटना-स्थल : वेश्यागृह, मकान।

इस नाटक की कथा वेश्यावृत्ति पर आधारित है। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार सम्पन्न परिवार के लोग बिना अपनी मर्यादा का ध्यान किए वेश्यावृति के शिकार हो जाते हैं। पर अन्त में निराशा और बर्बादी ही हाथ लगती है। उन्हें पुनः अंतिम सहारा भी उसी परिवार में मिलता है जिसकी पूर्व उपेक्षा करके वे वेश्यावृति में अग्रसर होते हैं।

धर्मराज (सन् १९५६, पृ० १८२), ले० : आचार्य चतुरसेन शास्त्री; प्र० : राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली; पात्र : पु० २२, स्त्री ८; अंक : ५; दृश्य : ११, ११, ११, ११, ११।
घटना-स्थल : मथुरा का नगरद्वार, पाटलीपुत्र राजप्रासाद।

इस ऐतिहासिक नाटक के द्वारा सम्राट् अशोक के समय में प्रचलित भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर प्रकाश डाला गया है। क्रूर और क्रोधी शासक अशोक कलिंग विजय के पश्चात् बौद्ध धर्म का अनुयायी हो जाता है। युद्धोपरांत कलिंग महाराजा और राजकुमार को जीवित पकड़ लानेवाले को अशोक पुरस्कार देने के लिए कहता है। कलिंग राजकुमारी की आकृति अपने भाई से मिलती है जिससे वह स्वयं को कलिंग राजकुमार कह कर बन्दी बनवा लेती है। किन्तु आचार्य उपगुप्त के कहने पर अशोक कलिंग राजकुमार को बन्दीगृह से मुक्त करता है लेकिन जब पता चलता है कि वह राजकुमारी है तो वह उससे विवाह कर लेता है। अशोक अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए लंका भेजता है। वृद्धावस्था में अशोक एक दासी से विवाह कर लेता है जो अशोक के पुत्र कुणाल से प्रणय याचना करती है लेकिन ठुकराई जाने पर ईर्ष्या की अग्नि में जलने लगती है। षड्यन्त्र से वह कुणाल की आँखें निकलवा लेती है। कुणाल का पुत्र सम्प्रति राज्याधिकारी बनता है। और कुमार महेन्द्र धर्म प्रचार करते हुए निर्वाण प्राप्त करते हैं।

धर्मात्मा (सन् १९८०, पृ० १४०), ले० : शिवराम दास गुप्त; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० १०, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : १३, ६, ८।
घटना-स्थल : बनारस में एक व्यापारी की दुकान, मंदिर।

यह सामाजिक नाटक प्रेमचन्द के

उपन्यास 'कर्मभूमि' पर आधारित है। इसमें पाखंडियों के ढोंग का पर्दाफाश किया गया है। बनारस में धर्मदास साड़ियों के सबसे बड़े व्यापारी हैं, जिनके यहाँ मजदूर वर्ग अपनी मजदूरी बढ़ाने के लिए बगावत करते हैं। मजदूरों की उचित माँग को देखकर धर्मदास का पुत्र अमरनाथ उनका साथ देता है। समाज का पूँजीपति ऊपर से देखने में कितना धर्मात्मा लगता है पर वह मजदूरों का खून चूसने में तनिक भी नहीं हिचकिचाता। इसी प्रकार आचार्य जी धर्म के ठेकेदार हैं किन्तु चुनिया नामक धोबिन के प्रेम में फँसकर उससे अपना सम्बन्ध रखते हैं। एक दिन जब वह मंदिर में पूजा करने की इच्छा करती है तब आचार्य उसका विरोध करते हैं तथा चुनिया को मारना चाहते हैं किन्तु धोखेबाज आचार्य को सबक सिखाने के उद्देश्य से चुनिया उन्हें छुरे से घायल कर स्वयं भी मर जाती है। अन्त में सबको अपनी भूल का पता चलता है और फिर नए समाज का उदय होता है।

धर्माधर्म युद्ध (सन् १९२२, पृ० १२२), ले० लाला किशन चन्द जेबा, प्र० लाला लाजपत राय पृथ्वीराज साहनी, लाहौर, अंक ३, दृश्य ४, ६, ३।
घटना स्थल दुर्योधन की राज्य सभा।

इस पौराणिक नाटक में कौरव-पाण्डव युद्ध का वर्णन है। दुर्योधन के अत्याचारों से प्रजा त्रस्त है। दुष्ट दुर्योधन चालबाजी से जुए में पाण्डवों का सर्वस्व अपहरण कर लेता है। भीष्म जैसे सत्यव्रती को भी उसके प्रतिकूल बोलने की हिम्मत नहीं पड़ती। अन्त में कौरव पाण्डवों का युद्ध होता है जिसमें पाण्डवों की विजय होती है। अपने सारे छल बल के बाद भी दुर्योधन हारता है अर्थात् धर्म की विजय एवं अधर्म की पराजय होती है।

धर्मालाप अर्थात भारतीय नाना धर्मों का वार्तालाप (सन् १८८४), ले० राधाकृष्ण दास, प्र० धर्मामृत यन्त्रालय, काशी, पात्र २२, अंक-रहित।
घटना-स्थल सनातन धर्मियों की एक सभा।

वृद्ध सनातन धर्म की एक सभा में पंडित, वैरागी, वेदान्ती, ब्राह्मण, पुरोहित, शैव, शाक्त, कौल, वैष्णव, मारवाड़ी, साहोजी, बाबू साहब, लाला साहब, पचगीरिए, दयानंदी, थियोसॉफिस्ट, न्यू फैशनिये, नेटिव क्रिश्चियन, प्रेमी भक्त आदि अपने अपने परस्पर विरोधी विचार व्यक्त कर, दुखी और निराश होते हैं क्योंकि सनातन धर्म इनके उद्धार और ऐक्य के लिए सचेष्ट है। वह अपनी दुर्दशा की चिंता से अचेत हो जाता है। ऐसी स्थिति में साहस और आशा उसकी रक्षा करते हैं और सहयोग के लिए प्रतिज्ञा करते हैं। सनातन धर्म सचेत होने पर विलाप करता है। अंत में ३ अप्सराएँ सनातन धर्म के जय की कामना करती हुई एक गीत गाती हैं।

धर्मावतार (सन् १९२५, पृ० ६५), ले० सरयू प्रसाद 'बिन्दु', प्र० एम० आर० बेरी एण्ड कम्पनी, कलकत्ता, पात्र पु० ११, स्त्री १, अंक-रहित दृश्य ९।
घटना-स्थल जंगल, मार्ग, कमरा, आर्य-समाज मंदिर।

इस प्रहसन के प्रस्ताव में सूत्रधार कहता है—

आज अभिनय रचायेंगे देशोद्धार का
दृश्य सबको दिखायेंगे अछूतोद्धार का॥

इसमें धर्म के नाम पर ढोंगियों द्वारा हिन्दू धर्म की दुर्बलता चित्रित है।

नाटक का नायक घुरहू चमार जालिम खाँ जमींदार का नौकर है। जमींदार एक दिन घूमने-घूमते एक जंगल में प्यास से बेचैन हो जाता है। उस जंगल में एक झोपड़ी है जिसमें सुशीला भाई विद्याधर के साथ रहती है। विद्याधर दरी पर प्यासे जमींदार को बिठाता है और सुशीला जल लाकर उसे पिलाती है। जमींदार जालिम खाँ सुशीला के सौंदर्य पर रीझकर उसका अपहरण करना चाहता है। जब घुरहू उसका विरोध करता है तो वह उस मारने की धमकाता है। जालिम विद्याधर को मारकर सुशीला का अपहरण करता है। सुशीला के पिता प० पवित्राचार्य अपनी लड़की के उद्धार का प्रयत्न

नहीं करते बल्कि कहते हैं—

"बेटा मरे लड़की हरे इसका नहीं कुछ ध्यान है। पूजा करे ठाकुर की ये हिन्दू धरम का ज्ञान है।" घुरहू पुलिस को सूचित करता है। पुलिस सुशीला को जमींदार के घर से निकालकर बन्दीगृह में रखती है। जालिम वहाँ पहुँचकर सुशीला का सतीत्व हरण करना चाहता है। घुरहू पहुँचकर सुशीला की रक्षा करता है। पवित्राचार्य मंदिर में अछूतों को घुसने नहीं देते, पर दान-दक्षिणा चुपके से ले लेते हैं। घुरहू को अछूत समझकर उसे मंदिर से निकालने लगते हैं। घुरहू सुशीला को दुष्टों से बचाकर लाया है। पर पवित्राचार्य अपनी बेटी को घर में रखना नहीं चाहते। यहाँ सुशीला और उसके ढोंगी पिता का वार्तालाप हिन्दू-धर्म की दुर्बलताओं का दिग्दर्शन कराता है। आर्य समाज के प्रचारक स्वामी विद्यानंद सुशीला को समझाते हुए कहते हैं—"हिन्दू धर्म अपनी बिछुड़ी हुई सन्तानों को तो मिला ही सकता है किन्तु उसमें विधर्मियों को भी मिला लेने की शक्ति है।" सुशीला और घुरहू का ब्याह हो जाता है।

धर्मोजय वा वीर विजय (सन् १९२१, पृ० १४१), ले० : कुंजीलाल जैन; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, बनारस; पात्र : पु० १३, स्त्री ८; अंक : ३, दृश्य : ६, ८, १०।

इस सामाजिक नाटक में धर्मोपदेश के साथ सत्यनारायण के व्रत और भक्ति-भावना का प्रभाव दर्शाया गया है। भक्तों की पुकार सुनकर सच्चिदानन्द सत्य नारायण प्रत्येक अवसर पर उनकी सहायता करते हैं। सत्यनारायण के प्रभाव के कारण बिना प्रयास के ही श्रीपाल शंकरगढ़ का राजा बन जाता है। पर अजयपाल विश्वासघात तथा छल के द्वारा श्रीपाल का राज्य हरण कर लेता है। श्रीपाल परिवारसहित जंगल में छिप जाता है। अजयपाल के जासूस श्रीपाल-सिंह तथा उसकी पत्नी गोमती को पकड़कर ले आते हैं। अजयपाल गोमती पर कुदृष्टि रखता है किन्तु सत्यनारायण भगवान साक्षात् दर्शन देकर गोमती के सतीत्व की रक्षा करते हैं। उनकी कृपा से पुनः राजा को अपना राज्य वापस मिलता है।

धारेश्वर भोज (सन् १९५८, पृ० १७२), ले० : ओंकारनाथ दिनकर; प्र० : रायल बुक एजेन्सी, अजमेर; अंक : ३, दृश्य : ५, ५, ४।

घटना-स्थल : धारानगरी की धर्मशाला, राजा भोज का मलणाक कक्ष, अध्ययन कक्ष, शारदा सदन।

इस ऐतिहासिक नाटक में धारेश्वर भोज-राज द्वारा तैलपराज से लिये गये प्रतिशोध का वर्णन है।

महाकालेश्वर के पूजा पर्व पर राजमाता मृणालवती की संतप्त तथा अज्ञात आत्मा धारेश्वर भोजराज को तैलपराज से प्रति-शोध के लिये प्रेरित करती है और भोज-राज महारात्रि का उत्सव अधूरा ही छोड़कर युद्ध की तैयारी करते हैं। धारानगरी की राजकीय धर्मशाला में यदि सैनिक सेठ तथा यात्रियों पर आक्रमण करते हैं, परन्तु क्षेमेन्द्र तथा भोजराज सेनापति के सहित पहुँच कर उनकी रक्षा करते हैं। तृतीय दृश्य में दानवीर भोज का चित्रण है। चतुर्थ में क्षेमेन्द्र विजयातिलका आदि राजकवि धन-पाल सरस्वती की वाटिका में क्रीड़ा करते हैं। भोजदेव अपने मंत्रणा कक्ष में रण-विजय पर विचार विमर्श करते हैं, किन्तु कविराज धन-पाल अपने अहिंसात्मक विचारों से धारेन्द्र को व्यर्थ रक्तपात से पृथक् करते हैं।

प्रथम दृश्य में विजयातिलका क्षेमेन्द्र के उत्थान का चित्रण है। द्वितीय दृश्य में पाटना-धिपति गुर्जरेश्वर भीमदेव अपनी परिषद् में सोमनाथ-पराजय तथा भोज के यश पर विचार-कर मालवेन्द्र भोज के पराभव की योजना बनाते हैं। दृश्य तीन में मालव की परम-भट्टारिका कांचनमाला विजया के साथ खेलती हुई तैलंग-विजयी भोज का स्वागत करती है। दृश्य चार में भोज की परिषद् में दिग्विजय की चर्चा होते-होते ही गुर्जरेश्वर स्वयं विप्ररूप में दामोदर मेहता के साथ महायक सन्धि-विग्राहक की हैसियत से आते हैं तभी भोजराज सामुद्रिक विद्या के ज्ञान से उन्हें पहचान लेते हैं किन्तु बहाना करके भीमदेव

निकल जाते हैं। भोज मदनोत्सव मनाकर परिजन-पुरजन को आनन्दित करते हैं।

विद्यावीर भोज अपने अध्ययन कक्ष में धनपाल सरस्वती को अपने जलयान, वायुयान, स्वचालित यन्त्रों की रचना दिखाते हैं। दूसरे दृश्य में गुर्जरेश्वर भीमदेव मन्त्रणाकक्ष में विचार-विमर्श करके सोमनाथ की नर्तकी चकुला देवी को परमभट्टारिका का पद देकर धारानगरी जाने से रोकते हैं। तृतीय दृश्य में धारा के शारदा-सदन में विजया तथा क्षेमेन्द्र भोज प्रशस्ति का स्पष्ट दिखाकर भोजराज को प्रसन्न करते हैं तथा परिषद् में उच्चस्थल देकर प्रणयसूत्र में बंधते हैं। अन्तिम दृश्य में भोज आचार्य धनपाल सरस्वती से मंजरीग्रंथ सुनकर उसका नायक स्वयं बनने का प्रस्ताव करते हैं किन्तु आचार्य इसका विरोध करते हैं। फलतः भोज मंजरी को अग्नि में डालते हैं। इस पर धनपाल संज्ञाशून्य हो जाते हैं और इसी दुःख में भोज भी बेहोश हो जाते हैं किन्तु तिलका और क्षेमेन्द्र की पुनर्रचना के आश्वासन पर दोनों स्वस्थ होकर मंजरी का नाम 'तिलक-मंजरी' रख देते हैं तथा भोजराज यज्ञ वलि-निरोध की आज्ञा प्रसारित कराते हैं।

धीरे-धीरे (वि० १९९६, पृ० ९७), ले० वृन्दावन लाल वर्मा, प्र० गंगा ग्रंथागार, लखनऊ, पात्र पु० १८, स्त्री १, अंक ३, दृश्य-रहित।

घटना स्थल जमींदार का भवन, ग्राम-क्षेत्र।

जमींदार तथा जनता के बीच उभरने वाले संघर्ष का चित्र इस राजनैतिक नाटक में मिलता है। जमींदार राव गुलाबसिंह अपनी चालाकी से जगत् में प्रतिष्ठा बनाये रखना चाहता है। वह सरकार द्वारा जमींदारों के प्रति किये जाने वाले विरोध में भी सतर्क है। वह अपने कारिन्दा चन्दनलाल को लगातार यही समझाता रहता है कि गाँववालों को अप्रसन्न मत होने दो। तभी राष्ट्रीय संघ का एक देहाती नेता सगुनचंद उनसे यहाँ चन्दा लेने आता है। जमींदार का आतिथ्य पाने पर भी वह गाँव वालों को उनके अधिकारों के प्रति सजग करता है। गाँववालों के साथ सगुनचंद के उपदेशों से जमींदार का झगड़ा हो जाता है। थानेदार आता है और प्रभावहीन सिद्ध होकर लौट जाता है। जमींदार के अत्याचार की सूचना नेता जी लखनऊ भेजते हैं वहाँ भी अधिकारी शिकायत पर अधिक ध्यान नहीं देते हैं। उनका कहना है कि जमींदार तथा जनता के बीच सुधार धीरे-धीरे ही होगा।

धूप छाँह (सन् १९५०), ले० आरसी प्रसाद सिंह, प्र० नई धारा, पटना, पात्र पु० ११, स्त्री ७, अंक दृश्य-रहित।

यह संगीतरूपक मानव-जीवन का एक व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है जहाँ कुछ भी स्थिर नहीं है, सभी कुछ अस्थिर है। लेखक *ने जीवन को धूप छाँह माना है। सुख दुःख* हास-अश्रु, मिलन-विरह का उन्मुक्त विलास मानव नियति की किसी अदृश्य डोर में बँधे हुए हैं। इस स्थिति का समाधान है—आत्म-साक्षात्कार, जिसके उपरान्त मानव द्वन्द्वातीत स्थिति में पहुँच जाता है।

धूतराज (सन् १९३५, पृ० ६१), ले० सीताराम गुप्त 'विनोद', प्र० सीताराम गुप्त, कबीर चौरा, काशी, पात्र पु० ५, स्त्री नहीं, अंक रहित, दृश्य ११।

घटना स्थल जमींदार का घर, इम्पीरियल होटल, बम्बई में एक होटल।

इस प्रहसन में दो धूर्तों की ढोंग विद्या का नाटकीय रूप दिया गया है।

इसमें दिनेश तथा वसन्त दो दोस्त मौजीमल के कहने पर बम्बई जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। दिनेश तथा वसन्त दोनों जनाने लिबास में होते हैं। दिनेश देखने में बड़ा ही सुन्दर लगता है जिसे देखकर एक ठाकुर जमींदार प्रेममुग्ध होकर उसे अपने घर ले जाता है। वहाँ से दिनेश तथा बसंत तिजोरी से चेक बुक तथा कुछ पैसे लेकर रातोंरात भागकर इम्पीरियल होटल में रुकते हैं। वहाँ पर वे अपने शानो-शौकत का झूठा ढोंग दिखाकर होटल के मैनेजर से भी दो हजार रुपया लेकर तथा अपनी कार

जमानत पर छोड़कर चले जाते हैं। रास्ते में वे एक भिखारी को कुछ पैसे देकर उसे अपने साथ ले लेते हैं। फिर उसे राजा का लिबास पहनाकर और खुद मुसाहिबों के लिबास में बम्बई के एक बड़े होटल में जाकर ठहरते हैं। वहां भी ये अपना राजा होने का झूठा ढोंग रचकर बड़ा धन खर्च करते हैं। जब पैसे कम होने लगते हैं तो अम्बालाल सेठ को ४२० पढ़ाकर उनसे ५० हजार रुपये ऐंठते हैं। अन्त में ये दोनों धूर्त पकड़े जाते हैं और उनकी वास्तविकता का पता चलता है।

धूर्त समागम (सन् १९६०, पृ० ७०), ले० : ज्योतिरीश्वरठाकुर, संपादक जयकान्त मिश्र; प्र० : अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति संस्कृत, प्राकृत, मैथिलीगीत इलाहाबाद; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक-दृश्य-रहित।

घटना-स्थल : खुला मैदान, आश्रम, संन्यासिनी वेश धारिणी वेश्या का गृह।

संस्कृत भाषा में नान्दी पाठ के उपरांत नटी वसन्तश्री का गुणगान करती है। सूत्रधार सूचना देता है कि गणिका-विलासी, सद्धर्म परित्यागी विश्वनगर नामक संन्यासी कमंडल धारण करके आ रहा है। विश्वनगर का अनुगमन करते हुए स्नातक प्रविष्ट होता है। स्नातक अनंगसेना नामक वेश्या के सौन्दर्य का वर्णन करता है। विश्वनगर अपनी प्रेयसी सुरतिप्रिया के सौंदर्य पर मुग्ध होता है। दोनों मृतांगार ठाकुर के आश्रम पर भिक्षार्थ पहुँचते हैं। ठाकुर पड़ोस में पुत्रोत्पत्ति के कारण अशौच का बहाना बनाकर उन दोनों को पार्श्ववर्तिनी स्त्री सुरतिप्रिया के पास भेज देता है। वहाँ पहुँचकर विश्वनगर मांस, माछ, बट, बड़ी, दाल, मद्य: जमाया, दही, गौन्धा दूध आदि रसमयी वस्तुयें मांगता है। सुरतिप्रिया विश्वनगर पर प्रसन्न होकर धर्म के लिए अपना शरीर और प्राण भी अर्पण करने का वचन देती है। सुरतिप्रिया को भोजन की तैयारी का आदेश देकर वह स्नातक के साथ आगे बढ़ता है। स्नातक सहसा अनंगसेना को देखकर नाचने-गाने लगता है और इधर मदनाभिभूत विश्वनगर अनंगसेना से कामसिन्धु में निमज्जित होने की प्रार्थना करता है। ज्योंही वह अनंगसेना के वस्त्र पकड़ता है, स्नातक अपने गुरु को धिक्कारता हुआ कहता है—'इसे मैं पहले ग्रहण कर चुका हूँ। यह तो पुत्र-वधू हो चुकी।' विश्वनगर स्नातक को धिक्कारता हुआ कहता है—'यह तो तेरी गुरु पत्नी है, अतः मातृ तुल्या है।' स्नातक क्रुद्ध होकर कहता है—'रे लम्पट, यदि इस तरह बोलेगा तो बेल के समान तेरा सिर लाठी से चूर-चूर कर दूंगा।'

इन दोनों के बढ़ते विवाद को देखकर अनंगसेना असज्जाति मिश्र को निर्णायक ठहराती है। विश्वनगर इस प्रस्ताव से सहमत हो जाता है किन्तु स्नातक अपनी गांठ का धन दिखाकर अनंगसेना को अपने पक्ष में लाने का प्रयास करता है।

दूसरे अंक में असज्जाति मिश्र असन्तोष प्रकट करते हुए कहता है—'इस नगर में आठ दिन निवास करते हो गया किन्तु न तो किसी विवाद में पंच बनाया गया, न कपट श्राद्ध का लाभ हुआ और न गणिका-जन आलाप सुनने को मिला।' उसी समय अनंगसेना विश्वनगर और स्नातक का विवाद निपटाने पहुँचते हैं। स्नातक अपनी झोली में भांग और गांजा लेकर जाता है और असज्जाति को उत्कोच रूप में धन प्रदान करता है। असज्जाति मिश्र अनंगसेना के सौन्दर्य पर मुग्ध होता है। वह वादी-प्रतिवादी का विवाद सुनकर निर्णय देता है कि तुम दोनों ने पूर्व ही स्वप्न में इससे मेरा परिचय हो चुका है। इस कारण यह हमारी वल्लभा है। उसी समय विदूषक पहुँचकर कहता है—"यह मिश्र महोदय बूढ़ा है, संन्यासी निर्धन, स्नातक स्वेच्छाचारी अतः इन सबको छोड़कर मेरे संग अपने यौवन को सफल करो।" इसी समय मूलनाशक नापित आता है और अनंगसेना और असज्जाति से क्षौर कर्म का पारिश्रमिक मांगता है। असज्जाति गांजा-भांग की झोली दे देता है। उसकी रस्सी से नापित असज्जाति के हाथ पैर बांध देता है। मिश्र उससे बंधन छोड़ने की प्रार्थना करता है। नापित हिला-हिलाकर देखता है और कहता है—'हे मिश्र, तुम मरे या जीवित हो ?"

धूल भरे हीरे (पृ० १००), ले० श्रीमूत, प्र० नरवदा धुरंडिपो, जबलपुर, पात्र पु० २२, स्त्री , अंक-दृश्य रहित।
घटना स्थल बरगद का पेड, शराब की दुकान।

इस सामाजिक नाटक में छोटे बच्चों की दुर्दशा तथा उसका समाधान प्रस्तुत है।

इस नाटक में उन भोले बालकों की कहानी है जो माता पिता व समाज की घोर उपेक्षा तथा दुर्व्यवहार के कारण अपराधी का जीवन व्यतीत करते हैं। सुशील इन सभी बच्चों को इकट्ठा करके बरगद के पेड के नीचे 'बाल कुटीर' की तख्ती लटकाकर इनके जीवन को उपयोगी बनाने का काम शुरू कर देता है। सुशील गांधीजी के बुनियादी तालीम (बेसिक शिक्षा) के अनुसार ऐसे बच्चों को शिक्षा देने के साथ ही साथ खादी, चरखा और खेती-बाड़ी का काम भी सिखाता है। बच्चों के बनाये हुए खादी के वस्त्र एवं चरखा देश भर में बिकने लगते हैं। बच्चे आसाम के भूकंप पीड़ितों के लिए आर्थिक सहायता भेजते हैं और शराबबंदी के लिए दुकानों पर भूख-हड़ताल भी करते हैं। इस प्रकार इन बिगडे हुए बच्चों का जीवन सुधर जाता है।

ध्वंस शेष (सन १९५२), ले० सुमित्रानंदन पन्त, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, अंक-रहित, दृश्य ४।
घटना स्थल राजमार्ग, खँडहर, सिन्धु तट पर आश्रम।

इस नाटक की कथा प्रस्तर युग से प्रारंभ होकर पूँजीवादी युग तक आती है जिसमें मानव-संस्कृति का विकास दिखाकर यह प्रमाणित किया गया है कि प्राचीन जीवन का युग समाप्त हो चुका है। इस बदलते हुए मानव की चेतना धर्म, राजनीति दर्शन पर आधारित है। इसमें वर्तमान यांत्रिक युग में महाविनाश के लक्षण परिलक्षित हो रहे हैं। इस नाटक का पात्र वृद्ध अन्तश्चेतना का विश्वास करता है। युवती आधुनिक सभ्यता की प्रतीक है। पंत जी ने इस नाटक में विश्व-युद्ध का कारण खोजने की चेष्टा की है जिसमें वे भौतिकवादी मन की अधता, द्वेषादि दुर्गुणों का कारण बताते हैं। कवि ने विनाश में भी सौन्दर्य का अंकन करना चाहा है। अतः प्रलय के उपरांत ध्वंस-शेष की खुदाई द्वारा कवि को गत युग के मनोविज्ञान, दर्शन, धर्म, इतिहास आदि का स्वरूप मिलता है। इस नाटक का अंत उर्ध्वचेतनावाद के आधार पर समन्वय स्थापित करके भविष्य के सुखों की कल्पना के साथ हुआ है।

ध्रुव तपस्या (सन् १९२३, पृ० ८४), ले० रामनारायण सिंह जायसवाल, प्र० भारत प्रेम, पियरी कला, काशी, पात्र पु० ७, स्त्री ४, अंक ४, दृश्य २, ५, ५, ३।
घटना स्थल राजा उत्तानपाद की सभा।

यह नाटक पौराणिक कथाओं के आधार पर ध्रुव की तपस्या और उनके माता-पिता के चरित्र को चित्रित करता है। अन्त में ध्रुव की विजय दिखाकर न्याय और धर्म को ऊँचा उठाया गया है।

ध्रुवतारा (सन् १९५५, पृ० १०६), ले० दयाशंकर शर्मा एम० ए०, प्र० श्री राम मेहरा, एण्ड कम्पनी, आगरा, पात्र पु० १०, स्त्री ५, अंक ४, दृश्य ४, ७, ७, ८।
घटना-स्थल आर्यावर्त का राजमहल, कैलाश-पुरी, गंगातट।

इस ऐतिहासिक नाटक में कुशानों के शासनकाल की अन्तिम दुर्व्यवस्था का वर्णन है।

कुशानों की प्रबलता के कारण भार-शिवों को लगभग आधी शताब्दी तक मध्य-प्रदेश की पहाड़ियों में रहना पड़ता है। गंगा के पुनीत तट पर पहुँचकर भारशिव नरेश कुशानों की विभीषिका से आक्रान्त हो आर्यावर्त के उद्धार का बीड़ा उठाते हैं। भारशिवों ने उस समय शिव का आह्वान किया और शिव गंगा तट के मैदान में वहाँ के निवासियों को अपना ताण्डव नृत्य दिखाते हैं। नाग राजा भी भारशिव बनकर गंगातट के मैदान में राष्ट्रीय नृत्य करते हैं। उस समय

के भारशिव राजाओं में, वीरसेन, स्कन्द नाग, भीमनाग, देवनाग, भवनाग आदि नाम उल्लेखनीय हैं। नाटक में वीरसेन अन्धकार-युगीन भारत का ध्रुव तारा है।

भारशिवों ने अनेक बार वीरता पूर्वक युद्ध किये और उनके प्रयास से आर्यावर्त्त के कुषाणों का शासन धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है। कुषाणों को आर्यावर्त्त से खदेड़कर फिर से हिन्दू राज्य स्थापित करने में यशस्वी वीरसेन का प्रमुख हाथ रहा। वीरसेन के आविर्भाव और उत्कर्ष ने एक स्वदेशी युग आरम्भ होता है, विदेशी शासन समाप्त होता है। अन्धकार-युगीन भारत का ध्रुवतारा वीरसेन पथ-भ्रष्ट भटकती हुई जनता को ठीक दिशा की ओर अग्रसर कर देता है।

ध्रुवलीला (सन् १९२६), ले० : आनन्द प्रकाश 'कपूर'; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० १०, स्त्री ७; अंक : ३, दृश्य : ७, ८, ४।

घटना-स्थल : राज्य भवन, वन मार्ग आदि।

इस नाटक में भक्त बालक ध्रुव की पौराणिक कथा है। ध्रुव का सौतेली माँ द्वारा अपमानित होना, जंगल में तपस्या करना, वरदान प्राप्त करना आदि का वर्णन है। अन्त में नाटककार ने सौतेली माँ सुरुचि से अपने कुकृत्य का पश्चात्ताप करा कर और भक्त ध्रुव को पुनः उससे मिलाकर नाटक को सुखान्त कर दिया है।

ध्रुवस्वामिनी (सन् १९३३, पृ० ५६), ले० : जयशंकर प्रसाद; प्र० : भारती भण्डार, काशी; पात्र : पु०७, स्त्री ५; अंक : ३।

घटना-स्थल : राजमहल, शकराज का शिविर।

इस नाटिका में इतिहास-प्रसिद्ध गुप्तवंश की वह घटना कथावस्तु बनाई गई है, जिसमें स्त्री का पुनर्विवाह कराया गया है। महाराज समुद्रगुप्त के दो पुत्र हुए—रामगुप्त और चन्द्रगुप्त। चन्द्रगुप्त के शौर्य पर प्रसन्न होकर महाराज समुद्रगुप्त उसी को युवराज-पद प्रदान करना चाहते हैं, किन्तु चन्द्रगुप्त अपने ज्येष्ठ भ्राता रामगुप्त के लिए यह वैभव त्याग देता है। इसी प्रकार उस काल की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी ध्रुवस्वामिनी के वाग्दत्ता होने पर भी उसका परिणय रामगुप्त के साथ स्वीकार करता है। रामगुप्त ऐसा विलासी, कायर और कुलकलंकी निकलता है कि आक्रमणकारी शकों से युद्ध न करके हिजड़ों, कुबड़ों और सुन्दरियों के मध्य जीवन व्यतीत करने लगता है और शकों से सन्धि करने के लिए अपनी धर्मपत्नी ध्रुवस्वामिनी को शकराज के हाथों में समर्पित करने को प्रस्तुत हो जाता है। चन्द्रगुप्त कलंक-सागर में गुप्तकुल-यश को निमग्न होते देख स्त्री-वेष में ध्रुवस्वामिनी के साथ शकराज के पास जाता है, और उसका वध करके लौटता है। ध्रुवस्वामिनी की ओजस्विता से प्रभावित होकर सामन्तवर्ग रामगुप्त का विरोध करते हैं। परिणाम यह होता है कि एक सामन्त रामगुप्त का वध कर देता है और पुरोहितों की शास्त्रविहित सम्मति से विधवा ध्रुवस्वामिनी का पुनर्विवाह चन्द्रगुप्त के साथ होता है। चन्द्रगुप्त सम्राट् और ध्रुवस्वामिनी महादेवी बनती हैं। आचार्य मिहिरदेव की कन्या अपने प्रियतम शकराज का शव ध्रुवस्वामिनी से भीख माँग कर लाती है।

न

नंद विदा नाटक (सन् १९००, पृ० ५३), ले० : बलदेव प्रसाद मिश्र प्र० : इंडिया लिटरेचर सोसायटी द्वारा प्रकाशित एवं तत्व प्रभाकर प्रेस में मुद्रित; पात्र : पु० १०, स्त्री ८; अंक : ५, दृश्य : ४, ३, ५, ५, १।

घटना-स्थल : नन्द भवन, पथ, राजमार्ग, मंदिर।

इस पौराणिक नाटक में कंसवध के लिए कृष्ण का मथुरागमन तथा गोकुल का पुनरागमन दिखाया गया है।

कंस की रानियाँ—अस्ति और प्राप्ति के कथोपकथन से विदित होता है कि कंस ने एक लाख राजाओं को अधिकारी गुफा में बलि के लिये बंद कर रखा है। कंस के अत्याचार से प्राप्ति दुखी है और उसे अनुचित मानती है। अस्ति उसका विरोध करती है। इसी बीच कंस आकर उन्हें नारद का यह वचन बताता है कि 'ब्रजभूमि के कृष्ण-बलराम तुम से शत्रुता रखते हैं। इसलिये धनुष यज्ञ के बहाने बुलाकर उन्हें मार डालो।' वह यह भी बताता है कि नारद के चले जाने के बाद अनेक भयंकर अपशकुन हुए। प्राप्ति इस कार्य को अनुचित कहती है किंतु अस्ति उस का समर्थन करती है। पश्चात् अक्रूर को अपना अभिप्राय समझाकर कंस उन्हें ब्रजभूमि से कृष्ण, बलराम, नंद-उपनंद सहित समस्त ब्रजवासियों को धनुषयज्ञ के अनुष्ठान के बहाने निमंत्रित करने को भेजता है।

प्रातःकाल के समय कृष्ण को जगाकर समस्त गोप-सखा गोचारण के लिए वन को जाते हैं। कृष्ण और बलराम के घर लौटने पर कंस दूत अक्रूर नंद को कंस का न्योता देते हैं। ब्रजभूमि में मथुरा की यात्रा के लिए डुगडुगी फिराई जाती है। कृष्ण सखाओं के साथ मथुरा प्रस्थान करते हैं।

मथुरा के राजमार्ग पर सखाओं सहित कृष्ण बलराम कंस के घोड़े छुटाने, वसुदेव को कारामुक्त करवाने, महल को तोड़ फोड़ डालने की प्रतिज्ञा करते हुए जाते हैं और कंस के धोबी को मारकर उसके कपड़े छीन एक दर्जी के सहयोग से पहनते हैं।

आगे बढ़ने पर कंस की दासी कुब्जा उन्हें चन्दन लगाती है। कृष्ण प्रसन्न होकर उसके कूबड़ को सीधा करते हुए उसे सुंदर स्त्री का रूप प्रदान करते हैं।

कंस शयनागार में ही नरक के प्रेतों को देखता है, फिर वह किसी नंगे पिशाच को अपनी ओर आता हुआ देख उसे मारने को उद्यत होता है और भयग्रस्त हो प्रलाप करता है। पति की ऐसी दशा देख प्राप्ति कालिका देवी के मंदिर में जाकर पति की कुमति को दूर करने की प्रार्थना करती है और उस की प्राणरक्षा के निमित्त आत्मबलि देने का संकल्प करती है। इसी बीच देवी की प्रतिमा काँप कर फट जाती है। उसके साथ राजलक्ष्मी भी मथुरा छोड़कर चल देती हैं। राजलक्ष्मी से इसकी सूचना पाकर प्राप्ति भी वहाँ से निराशापूर्वक लौट आती है।

राजमार्ग पर दो नगरवासियों के वार्तालाप से प्रकट होता है कि किस प्रकार कंस मारा गया और कृष्ण बलराम ने कुवलय हाथी, मुष्टिक और चाणूर सहित कंस का वध किया। इस चर्चा के साथ ही कृष्ण बलराम आदि गोपों की प्रार्थना करते हुए आते हैं। जब देवियाँ उनका जयजयकार करती हैं और मथुरावासी स्वागत गान गाते हैं।

जय ध्वनि के साथ कृष्ण कारागार में बन्द माता-पिता के चरणों में प्रणाम करते हैं। देवकी पुत्र-वत्सलता में मग्न हो उन्हें गोद में बैठाती है।

कंस के मरने के बाद प्रजा-रक्षण का कार्य कृष्ण अपने हाथ में लेते हैं। निराश हो नंद और उपनंद 'हम जनि बिसारियो' कहकर रोते हुए ग्वाल बाल के साथ ब्रज को प्रस्थान करते हैं। इधर कृष्ण-बिछोह से कातर यशोदा पूर्व वृत्तांत सुनकर विलाप करती हुई मूर्छित हो जाती है। यमुना तीर पर गोपियों सहित राधा कृष्ण के विरह में व्याकुल हो विलाप तथा प्रलाप करती है। वृंदा और ललिता उन्हें अनेक प्रकार से समझाती हैं पर वे कृष्ण के बिना जीना नहीं चाहती। अंत में कृष्ण 'राधे-राधे' कहते हुए आते हैं। वह दौड़कर उन्हें भेंटती है।

नन्दोत्सव अथवा बौका यात्रा (सन् १९६८, पृ० ४), ले० गोपाल आना रचनाकाल १६ वीं शती, प्र० हिंदी विद्यापीठ आगरा, पात्र पु० ३, स्त्री गोपियाँ, अंक-दृश्य-रहित।

घटना-स्थल नन्द गृह, गोकुल।

नन्द के घर में मधुर मूर्ति बालक उत्पन्न होने का समाचार सुनकर गोपियाँ एकत्रित होती हैं और महोत्सव की योजना बनाती हैं। इसी समय गर्ग पुरोहित भी वहाँ आते

है। यदुवंशियों के गुरु गर्ग नन्द के कहने पर कृष्ण का जातकर्म कराते हैं तथा कृष्ण के अवतार धारण करने की बात बताते हैं। कृष्ण पर आने वाली बाधाओं से रक्षा का संकेत करते हैं। इसके उपरान्त गर्ग कृष्ण की स्तुति कर अपने घर जाते हैं। गोपियाँ हर्षोल्लास के साथ पुष्प वर्षा करती हैं। ऋषिगण वेदध्वनि करते हैं तथा देवता गण भी आकाश से पुष्पों की वर्षा करते हैं। दिशाओं में शंख, ढोल और डफली की आवाज गूँजने लगती है।

नइकी दुनिया (सन् १९५०, पृ० ८०), ले० : राहुल संस्कृत्यान (भोजपुरी का नाटक), अंक : ४; पात्र : पु० ६, स्त्री ५।

इस नाटक में कुरीतियों से जकड़ी पुरानी पीढ़ी और स्वाधीनचेता नवयुवकों की कहानी है। रजपूतिन जगरानी अपने बेटे रामधनी से दीन-दुनिया की बातें कर रही है। वह अपने पोते बटुक की शैतानियों की शिकायत करती हुई कहती है कि वह मुकफल्ला के यहाँ जाकर अंडा खाता है और एक दिन अंडा लाकर कहता है कि इयवा (जगरानी) ये ठाकुर जी हैं इनकी पूजा कर। जगरानी सचमुच उसे ठाकुर जी समझकर नहा धोकर उसकी पूजा कर चरणामृत लेती है। बटुक उसी के सामने अंडे को फोड़कर खाता है तो जगरानी को अपनी भूल मालूम होती है। जगरानी प्रायश्चित करने के लिए सात दिन तक केवल जल पर उपवास रखती है। बटुक इयवा को जब यह बताता है कि यह घटना सारे गाँव को मालूम है तो बुढ़िया रोने लगती है कि हाय अब कौन राजपूत बटुक के साथ अपनी लड़की की शादी करेगा। लेकिन जब बटुक उसे बताता है कि गाँव के सारे लड़के मुकफल्ला के यहाँ हर इतवार को अंडा खाते हैं तब कहीं बुढ़िया शान्त होती है।

बटुक बड़ा होकर कम्युनिस्ट हो जाता है। वह जापानियों से लड़ने के लिये अंग्रेजों की सेना में भरती होता है। बटुक कायस्थ की लड़की सोना से शादी करता है। जगरानी के विचार अब बदल गए हैं। अब अपने पोते और उसके साथियों के कामों की बड़ाई करती है। बटुक सोना, सुगिया, बतुलिया, महदेई आदि से मिलकर गाँव में कम्यून स्थापित करता है। ये सब मिलकर खेती करते हैं। विचार विमर्श करके अपनी समस्या हल कर लेते हैं।

नई गीता (सन् १९२८), ले०: प्रो० सरदार मोहनसिंह स्वरावली में संकलित; प्र० : राम लाल सूरी, अनारकली लाहौर; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : ७, दृश्य-रहित। घटना-स्थल : का उल्लेख नहीं है।

इस धार्मिक नाटक में कृष्ण का उपदेश संवादों के माध्यम से समझाया गया है।

प्रस्तुत नाटक में प्रत्येक अंक की कथा स्वतंत्र रूप से लिखी गई है। प्रथम अंक में राधा का संवाद, द्वितीय अंक में पुजारी और दर्शक के संवाद द्वारा गीता उपदेश समझाया गया है। तृतीय अंक में मित्र और विश्वमित्र वार्तालाप करते-करते पुनः कृष्ण के गीतामृत की चर्चा करते हैं। दोनों कर्तव्य पालन पर बल देते हैं। चौथे अंक में साथी लीडर कृष्ण की बात सुनते हैं। और भक्ति उपदेश से (गीता के) प्रभावित होते हैं। कृष्ण का कहना है "मेरी भक्ति में पौरुष है, भक्ति से दुःख की निवृत्ति है और अपने आप में प्रवृत्ति है। पांचवें अंक में कृष्ण कवि और उसके मित्र को गीता का उपदेश देते हैं और दोनों कृष्ण से अत्यन्त प्रभावित होते हैं। छठे अंक में बुढ़िया भी विधवा कृष्ण का उपदेश सुनकर चमत्कृत रह जाती है। सातवें अंक में राधा और कृष्ण संवाद है। कृष्ण राधा से कहते हैं "हे राधे लोग मुझको नहीं समझे। मैं ही सुख हूँ, मैं ही जीवन हूँ और मैं ही पुण्य हूँ।"

नई राह (सन् १९६८, पृ०१०८), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली; पात्र : पु० ४, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ३, २, २। घटना-स्थल : करोड़ीमल की कोठी, घर का सायबान आदि।

इस राजनीतिक नाटक में पंचवर्षीय योजनाओं की असफलता पर विचार किया गया है।

नाटककार कहता है—"हमारे देश को स्वतंत्र हुए इतने वर्ष हो गए और देश को उन्नत और विकसित करने के लिए शासन द्वारा योजनाबद्ध तरीके से निरन्तर प्रयास हो रहा है फिर भी देश में आशा के अनुरूप खुशहाली नहीं आई? इसका क्या कारण है?" इस समस्या पर स्वयं लेखक ही विचार प्रस्तुत करते हुए कहता है "स्वतंत्र हो जाने से कोई देश सुखी नहीं हो जाता। खुशहाल, सुखी और समर्थ होने के लिए राष्ट्र को आवश्यक श्रम करना पड़ता है और चूंकि हमारे देश की अधिकांश आबादी गाँव में है, इसलिए हमारा कर्त्तव्य गाव को आत्मनिर्भर और सुखी बनाना है।" इसी के साथ बेरोजगारी आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। सेठ करोड़ी मल कहता है "कोट खोलने के लिए मैं सौ रुपये महीने पर एम० ए० पास बाबू रख सकता हूँ। सौ रुपये महीने पर घर का काम करने वाला नौकर नहीं मिलेगा, लेकिन एम० ए० पास बाबू मिल जायेगा।" नाटककार ने इन्हीं विचारों को किशोर, सेठ करोड़ी मल, विनोद, लता, जानकी, रहीम, फातमा इत्यादि पात्रों के द्वारा नाट्यरूप प्रदान किया है।

नई रोशनी का विष (सन् १८८४), ले० बालकृष्ण भट्ट, प्र० हिन्दी प्रदीप, पात्र पु० ५, स्त्री ५, अंक ५।
घटना स्थल किसान का घर, सेठ की कोठी, वेश्या घर।

इस सामाजिक नाटक में नई सभ्यता के अन्धानुसरण कर्ताओं की दुर्गति दिखाकर उनसे प्रायश्चित कराया गया है।

नाटक के पात्र फारसी और अंग्रेजी शब्दों का खुल कर प्रयोग करते हैं। इस नाटक का मुख्य पात्र किसान का बेटा भानुदत्त वकालत पढ़ने जाता है। वहाँ कुछ यारों के चक्कर में पड़कर वेश्यागामी बन जाता है। नये फैशन में पागल होकर चलचित्र अभिनेत्री पर आसक्त होता है। प्रमदा का वास्तविक प्रेम अन्य के साथ है पर रुपया ऐंठने के लिये भानुदत्त को अपने जाल में फँसाए रखती है। दूसरी ओर चलदत्त के वणिक पुत्र ताराचन्द से भी रुपया खींचती है। भानुदत्त सब कुछ खो कर गाँव को लौटता है। गाँव में भानुदत्त के पिता विश्वामित्र और माता सीमन्तिनी पुत्र की दयनीय स्थिति देखकर दुखी होते हैं। भानुदत्त अपने अपराधों और दुष्कर्मों के के लिये प्रायश्चित करता है। ताराचन्द भी पश्चाताप करते हुए कहता है—'आप लोगों ने सचमुच मेरी आँखें खोल दीं। अब ऐसी गुस्ताखी न होगी।'

इसी प्रकार अन्य सभी नई रोशनी के पात्रों की दुर्गति होती है और सभी प्रायश्चित करते हुए चित्रित किए गए हैं।

नई रोशनी नया कदम (पृ० ८८), ले० रामनिरंजन शर्मा 'अलख', प्र० साधना मन्दिर, पटना, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अंक २, दृश्य ११, ११।
घटना-स्थल होटल, कारखाना, शहर।

इस सामाजिक नाटक में स्वेच्छा विवाह को नया कदम दिखाया गया है।

एक मेकेनिकल इंजीनियर प्रकाश नौकरी की तलाश में—घूमता रहता है। अचानक उसकी सी० आई० डी० इन्सपेक्टर कैलाश से भेंट हो जाती है जो अपने को नौकरी का खोजी बनाता है। एक बार एक होटल में बदमाश मि० इकबाल से इन दोनों की मुलाकात हो जाती है। मि० इकबालसिंह से किसी बात के सिलसिले में इन सबमें नाराजी हो जाती है। वहीं पर अचानक सेठ ज्ञानचन्द्र की पुत्री सरिता से इन दोनों की बातचीत होती है। सरिता के सहयोग से प्रकाश को ज्ञानचन्द के कारखाने में मेकेनिकल इंजीनियर तथा कैलाश को मोटर ड्राइवर का काम मिल जाता है। एक गरीब व्यक्ति शशिभूषण गाव के अन्यायी तथा धनीमानी लोगों से आतंकित होकर अपनी पुत्री अरुणा के साथ शहर चला जाता है। प्रकाश से मुलाकात हो जाने से उसे रहने की जगह मिल जाती है। एक बार इकबाल सेठ ज्ञानचन्द्र की लड़की सरिता को उठा ले जाता है। प्रकाश और कैलाश बड़ी वीरता से सरिता को मुक्त कराते हैं। तथा बदमाश

इकबाल का पता पुलिस सुपरिंटेंडेण्ट को देकर गिरफ्तार करा के कलाश अपनी चतुराई का परिचय सबको देता है। अन्त में प्रकाश की शादी सरिता के साथ और अरुणा की शादी कैलाश के साथ होती है।

नकाब पोश उर्फ मौत का फरिश्ता (सचित्र जासूसी नाटक) (सन् १९३२, पृ० १२१), लें० : स्वर्गीय दुर्गा प्रसाद गुप्त; प्र० : एस० आर० बैरो एण्ड कम्पनी, २०१, हरीसन रोड, कलकत्ता; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ७, ६, ४।

इस जासूसी नाटक मे धोखा हत्या आदि दृश्यों के द्वारा अपराधी डाकू को दंडित दिखाया गया है। क्रूरसिंह जालिम खाँ के नाम से मशहूर एक खूंखार डाकू है। वह बीरसिंह की पुत्री सुशीला का अपहरण करना चाहता है। वह निश्चित दिन आने के लिए पत्र देकर बीरसिंह के मकान मे आ जाता है। वीरसिंह के घर पर उसका दामाद प्रेमचन्द और सी० आई० डी० इन्सपेक्टर सोये हैं। डाकू एक ही झपटे में वीरसिंह के सर को काट तलवार छोड़ भाग जाता है। प्रेमचन्द वहाँ आकर तलवार उठाकर देखता है। इतने मे इन्सपेक्टर आ जाता है और प्रेमचन्द को हथकडी लग जाती है।

महल मे सुशीला मालती के साथ शोकाकुल वेश में प्रवेश करती है जालिम खाँ पुलिस इन्सपेक्टर के वेश मे और डाकू सिपाही के वेश में प्रवेश कर धोखे से सुशीला को बँगले के बहाने लेकर चल देता है। महल में ले जाकर वह उसे अपना बनाना चाहता है। सुशीला के अस्वीकार करने से वह ज्यों ही धक्का देता है कि खिड़की से एक तीर अन्दर आता है जिस पर मौत का फरिश्ता लिखा है। मालती के आग्रह से क्रूरसिंह सिपाहियों पर हमला कर प्रेमचन्द को उठा ले आता है और उसके घर पहुँचा देता है। मालती के द्वारा प्रेमचन्द डाकू के यहाँ जाता है। क्रूरसिंह सुशीला का हाथ पकड़कर वध करना चाहता है कि पीछे से प्रेमचन्द पिस्तौल के कून्दे से डाकू को मारकर सुशीला को ले भागता है। डाकू पीछा करते हैं। नकाब पोश बम फेंक कर क्रूरसिंह को गिरफ्तार कर लेता है। वीर सिंह इधर जिन्दा है जिसने नकली शरीर बनाया था। कोतवाली में मजिस्ट्रेट के द्वारा क्रूरसिंह को फांसी और डाकुओं को कालेपानी की सजा हो जाती है और शेष व्यक्ति छूट जाते हैं।

नक्शे का रंग (संकेत रूपक नाटक), (वि० १९९८, पृ० ८४); पात्र : ६; अंक-रहित ; दृश्य : ६।

इस नाटक मे सभ्यता और संस्कृतियों के समन्वय से होने वाले परिवर्त्तनों का समाज पर प्रभाव दिखाया गया है। यह संकेत रूपक नाटक है। इसके प्रत्येक पात्र किसी न किसी भाव संकेत के परिचायक हैं। इसमे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के आधार पर बदलते सामाजिक स्तर का मूल्यांकन किया गया है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में आधुनिकता का समन्वय होने से समाज में उथल-पुथल होता है जन-जीवन शंकालु होता है। पर आगे चलकर समाज उसे अंगीकार कर लेता है। यही इस नाटक का मूल भाव है।

"नजर बदली बदल गये नजारे" (सन् १९६१, पृ० ९१); लें० : राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह; प्र० : अशोक प्रेस, पटना; पात्र : पु० १०, स्त्री २।

इस सामाजिक नाटक में राजनीति और आर्थिक शक्ति के प्रभाव से अछूत समस्या का स्वतः उन्मूलन दिखाया गया है।

दीवान रामसिंह, रायबहादुर ठा० सरदारसिंह की जायदाद और जमींदारी के प्रबन्धकर्त्ता हैं। रायबहादुर साहब के रहन-सहन का स्तर बहुत ऊँचा है और पारिवारिक वातावरण पूर्णतया सामन्तवादी है। उनके देवालय में पुजारी आरती पूजा करता है तो विलासालय में मोहिनी बाई वेश्या नृत्य और संगीत।

रायबहादुर की जमींदारी में देवराम की पत्नी फुलिया और सोहन, मोहन दो पुत्र रहते हैं। अविवाहित मोहन

छात्र है और विवाहित सोहन जीविकोपार्जन में लगा है। सारा परिवार एक नन्हीं-सी झोंपड़ी में रहता है। झोंपड़ी के समीप रायबहादुर की जमीन है जिस पर एक और झोंपड़ी लगाने के लिये देवराम ठाकुर से प्रार्थना करता है। ठाकुर अनुमति दे देते हैं किन्तु दीवान निधान रामदेव से रिश्वत न मिलने पर रुष्ट होकर उसकी पीठ की खाल उधेड़वा देते हैं।

पाँच-सात वर्ष बाद जमींदारी का उन्मूलन हो जाने पर ठाकुर साहब और दीवान अर्थ संकट में फँस जाते हैं पर देवराम चमार का लड़का मोहन पढ़ लिख कर उच्च पद पर आसीन हो जाता है और मिनिस्टरों के सम्पर्क में आ जाता है। वह गाँव का मुखिया बनता है। उसके यहाँ मंत्रीगण ठहरते हैं और उसका सर्वत्र आदर-सत्कार होता है। पुजारी जी सदा रामदेव को अछूत समझकर दूर रहा करते थे, पर अब अपने बेटे की नौकरी के लिए उसके पीछे-पीछे फिरते हैं और उसके पोतों को कन्धे पर बिठा कर घूमते हैं।

ठाकुर साहब विधान सभा के लिये खड़े होने के लिये कांग्रेस का टिकट चाहते हैं और उसके लिये रामदेव की खुशामद करते हैं। रामदेव के जन्म दिन पर उत्सव होता है। ठाकुर साहब उन्हें अभिनन्दन ग्रंथ प्रदान करते हैं और एक रंगीला युवक मस्त होकर गाता है—

"नजरें बदल गईं, तो नजारे बदल गये।
जब सुबह हो गई, तो सितारे बदल गये॥

न धर्म न ईमान (सन् १९७०, पृ०८०), ले० रेवतीसरन शर्मा, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पात्र पु० ३, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य रहित।
घटना-स्थल कमरा, आंगन।

इस नाटक में लेखक वैवाहिक मूल्यों को परिवर्तित रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा करता है।

युवक दिनेश अपने पुरातनवादी परिवार के कारण दया से विवाह नहीं कर पाता और दया का विवाह रामदयाल नामक एक अधेड़ से हो जाता है। विवाहोपरान्त दया को क्षय-रोग हो जाता है। रामदयाल उसका इलाज नहीं करवाता। दादी झाड़-फूंक के द्वारा उसे ठीक करवाना चाहती है। वह डॉक्टरी इलाज का विरोध करती है। परिणामस्वरूप दया को मृत्यु से जूझना पड़ता है। लेकिन दिनेश अपना रक्त देकर उसकी रक्षा करता है। दया के अन्तर्मन में विद्रोह प्रस्फुटित होता है और वह समाज को चुनौती देती हुई दिनेश का हाथ थाम लेती है। अभिनय दिल्ली की संस्था 'कला साधना मन्दिर' द्वारा सफलतापूर्वक प्रदर्शन।

नन्हीं दुल्हन—नाट्यावाद (वि० १९८७, पृ० १८३), ले० श्री पंडित 'शैदा', प्र० दि इंडियन सोशल रिफार्म पब्लिशिंग कम्पनी, ८६ बी, रोशन मिल्स रोड, कलकत्ता, पात्र पु० १४, स्त्री १०, अंक ३, दृश्य १०,१०, ५।
घटना-स्थल गोशेर, भवन, ड्राइंगरूम, अदालत, पानीपत अन्तःपुर।

इस सामाजिक नाटक में हिन्दू बाल-विधवा की समस्या दिखाई गई है। समस्या के समाधान रूप में 'विधवा विवाह' का चित्रण भी किया है। नाटक के अन्त में सावित्री बाल विधवा गार्गी का विवाह मदन से करती है और सावित्री के स्वर में जैसे नाटककार की आकांक्षा मूर्तिमान हो उठती है—"जब तुम जैसे भारत के वीर सपूतों ने विधवा उद्धार पर कमर बाँध ली तो फिर यह भी समझ लीजिए कि भारत वर्ष का बेड़ा पार है बाल विधवाओं के डूबते बेड़े को पार लगाया जायेगा।"—

नाटक का प्रारम्भ आनन्दी मिश्र तथा सरस्वती की बातचीत से होता है, पुरोहित आनन्दी मिश्र धर्म और समाज का झूठा भय दिखाकर सरस्वती को आठवें वर्ष में ही अपनी पुत्री सावित्री का विवाह नौ वरस के देव से करने पर विवश करता है। सावित्री के पिता व्रजमोहन बाल-विवाह का लाख विरोध करते हैं—उन्हें अपनी बेटी के भविष्य की चिन्ता है—पर जबरदस्ती सावित्री का विवाह कर दिया जाता है। व्रजमोहन के माध्यम से धर्म के ढोंगी पंडितों

पर करारी चोट की गई है—"हिन्दू-कन्याओं के सुख सौभाग्य को बाल-विवाह की धार्मिक नीलामी पर चढ़ाकर दूसरे से बोली दिलाने वाले दल्लालो ! . . . हमारे घरों में घुस-कर भोली-भाली अनपढ़ औरतों को अपना मनमाना धर्मशास्त्र पीट-पीटकर गुनाओ और उनसे रुपये ऐंठकर वेश्याओं का घर भरो।" थोड़े ही दिनों में सावित्री विधवा हो जाती है और उस पर होने वाले अत्याचारों की—संख्या दिनोंदिन बढ़ती जाती है—बूढ़े हो या अधेड़ कोई भी अपना दाव लगाने में नहीं चूकता—इन वृद्धों की काली करतूतों पर करारी चोट की गई है। परिस्थितियों के सभी थपेड़ों को सहते हुए भी सावित्री आखिर तक अपने पातिव्रत धर्म का निर्वाह करती है। इसी तरह लज्जा नाम की एक बाल-विधवा की अवस्था का भी सजीव चित्रण किया गया है जो अपने बहनोई के चक्कर में फँसकर अंत में अपने शिशु को गंगा में प्रवाहित करती हुई पुलिस द्वारा पकड़ी जाती है। वह आत्महत्या कर लेती है। सावित्री, माधोमिश्र तथा अन्य नेतागण मिलकर यह नियम बनाते हैं कि भारत में सोलह वर्ष से कम उम्र की हिन्दू-कन्या का विवाह नहीं हो सकता तथा नवयुवकों को बाल-विध-वाओं से विवाह के लिए प्रेरित करते हैं।

नया अवतार (सन् १९२८); ले० : प्रो० सरदार सिंह; प्र० : रामलाल सूरि; पात्र : पु० ८, स्त्री ४; अंक : ५, दृश्य-रहित।

इस नाटक में स्वतंत्रता को नया अव-तार माना गया है। कलयुग का पूरा प्रभाव देश पर दिखलाया गया है। रायबहादुर प्राणनाथ नेता के रूप में नये अवतार द्वारा देश के कल्याण के लिए नये धर्म का उद्-घोष करते हैं और नया अवतार देश के कल्याण के लिए नीति, धर्म, सत्य, न्याय, प्रेम की शिक्षा देता है और पक्षपात, घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, वैर, धोखे आदि से दूर रहने की शिक्षा देता है। पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ पर नये अवतार के उपदेश का प्रभाव पड़ता है और वे सब अपने घरों को शांति, सुन्दरता और आनन्द का केन्द्र बनाना चाहती है। ऊँच-नीच सभी नये अवतार के उपदेश से प्रभावित होते हैं और देश की समस्या को सुलझाने की प्रतिज्ञा करते हैं।

नया जन्म (पृ० ७५), ले० : रामाश्रय दीक्षित; प्र० : साहित्य निकेतन, कानपुर; पात्र : पु० ९; अंक-रहित; दृश्य : ३।
घटना-स्थल : कमरा।

इस राजनीतिक नाटक में युक्तिनाथ नामक प्रपंची व स्वार्थी राजनैतिक नेता विनोद, सुरेश, रमेश तथा चितरंजन आदि युवक विद्यार्थियों को प्रान्त का विभाजन कर देने के विरुद्ध आन्दोलन करने के लिये भड़काता है। सभी विद्यार्थी युक्तिनाथ के राजनैतिक चक्कर में आ जाते हैं और आन्दोलन शुरू कर देते हैं। मधुसूदन उसका विरोध करता है। आन्दोलन में विनायक का छोटा भाई विनोद काफी आहत हो जाता है। छोटे भाई को आहत देखकर विनायक बड़ा क्रुद्ध होता है और वह युक्तिनाथ को मारने की प्रतिज्ञा करता है। प्रतिज्ञा की खबर चित-रंजन युक्तिनाथ के पास पहुँचाता है जिससे युक्तिनाथ डर जाता है और औरत की वेषभूषा बनाकर विनायक के घर आता है। विनायक के दादा न्यायप्रिय सुमति के सामने अपने किये गये कुकर्मों के लिये पश्चात्ताप प्रगट करता है। अन्त में सुमति-स्वरूप विनायक को बहुत समझाते हैं जिससे विनायक युक्तिनाथ की हत्या नहीं करता है। युक्तिनाथ बाद में प्रत्यक्ष रूप में प्रकट होकर विनायक से अपनी गलतियों के लिये क्षमा प्रार्थना करता है। अन्त में राष्ट्रीय गीत के साथ नाटक समाप्त होता है।

नया रूप (सन् १९६२, पृ० ८३), ले० : पृथ्वीनाथ शर्मा; प्र० : आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री ७; अंक : ३, दृश्य : ९।
घटना-स्थल : साधारण कमरा, ड्राइंगरूम, क्लब का कमरा।

प्रस्तुत नाटक में धन के आधार पर विभाजित वर्ग व्यवस्था में प्रचलित वैवाहिक

प्रणाली का दोष दिखाया गया है। समाज में दो वर्ग हैं—धनी वर्ग, निर्धन वर्ग। रोशनलाल और मास्टर रामस्वरूप क्रमश इन्हीं के प्रतिनिधि हैं। रोशनलाल मास्टर की पुत्री रानी से विवाह करने से इन्कार कर देता है क्योंकि वह कलक्टर से आई० ए० एस० बन गया है। वह राधिका से विवाह कर लेना है क्योंकि वह आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है। मास्टर रामस्वरूप की पुत्री रानी स्वयं अपनी योग्यता से रोशनलाल से भी ऊँचे पद पर पहुँच जाती है। लेकिन वह नारी न रहकर अर्धनारीश्वर बनकर रह जाती है। उसका यह नया रूप समाज के वैषम्य को झकझोर देता है।

नया समाज ले० उदयशंकर भट्ट, पात्र पु० ८, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ३, ३।
घटना-स्थल जमींदार का टूटा बँगला।

उदयशंकर भट्ट का 'नया समाज' जमींदारी-प्रथा के उन्मूलन के उपरान्त जमींदारों की परिस्थिति दिखलाने के उद्देश्य से लिखा गया है। इस नाटक में जमींदार मनोहरसिंह के परिवार का चित्रण किया गया है। जमींदारी के उन्मूलन से उनकी आर्थिक स्थिति शोचनीय बन गई है, तो भी उनके परिवार के रहन-सहन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। उनका पुत्र चन्द्रवदनसिंह ईसाई कन्या 'रोटा' से प्रेम करता है और पुत्री 'कामना' कल्पालोक में विचरण करती है तथा अपने नौकर रूपा (जो पुरुष-वेशधारी कन्या है) पर मुग्ध है। एकबार चन्द्रवदन रूपा के सौंदर्य पर रीझ कर उससे विवाह करने के लिए तत्पर होता है। उसी समय एक गड़रिया रहस्योद्घाटन करता है कि रूपा तो मनोहर की जारज कन्या है जिसे मृतक समझकर गाड़ दिया गया था। रूपा के दुखी होने पर 'कामना' सान्त्वना देती है कि हम दोनों एक ही पिता की सन्तान हैं।

अब मनोहरसिंह किंकर्त्तव्यविमूढ बन जाते हैं। इसी समय उनके मित्र धीरेन्द्रसिंह के पुत्र कह उठते हैं, "रूपा निर्दोष है। मैं उसे स्वीकार करता हूँ।"

इस नाटक में जमींदारी के दिनों के जमींदारों के उच्छृंखल चरित्र का चित्र उपस्थित किया गया है। उनकी वर्तमान स्थिति का यदि यथार्थ चित्रण किया गया होता तो यह एक सफल नाटक सिद्ध होता। इसमें नाटककार किसी एक समस्या को प्रमुखता नहीं प्रदान कर सका है। यौन-समस्या, जारज-समस्या, प्रतिलोम विवाह-समस्या, आर्थिक समस्या आदि अनेक समस्याएं आपस में उलझती हुई दीख पड़ती हैं और कोई भी समस्या पूरी तरह उभरकर धरातल पर नहीं आ पाती।

नये रिफार्मर (सन् १९११), ले० राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, प्र० काशी की मनोरंजन मासिक पत्रिकाओं में प्रकाशित।

यह एक व्यंग्य प्रधान प्रहसन है। इसमें एक सेठ प्राचीन परम्परा का अंधविश्वासी है और उनका पुत्र रमेश पाश्चात्य सभ्यता में रँगा हुआ है। सेठ जी का अन्धविश्वास एक अंधे कुएं के समान है जो गलत दिशा में कदम बढ़ाने की प्रेरणा देता है। उनका पुत्र रमेश आधुनिक युग की आवश्यकताओं को देखकर समाज में सुधार लाना चाहता है, किन्तु सुधार की जो योजना बनाता है वह समाज का पतन की ओर ले जाने वाली है। इसीलिए रमेश को 'नया रिफार्मर' के नाम से घोषित किया गया है। इसकी पाण्डुलिपि एक नगर से दूसरे नगर तक अभिनय के लिये घूमती रही इसी कारण इसका प्रकाशन बहुत देर में हुआ।

नये हाथ (पृ० १८४), ले० विनोद रस्तोगी, प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य रहित।
घटना स्थल कमरा।

इस नाटक में ऐसे जमींदारों की कथा है जो जमींदारी उन्मूलन के बाद भी अपने खोखलेपन को छिपाने के लिए वाह्याडम्बर का आश्रय अत्यधिक लेते हैं। इसके साथ

ही साथ आज के युवा-वर्ग का वैवाहिक मर्यादाओं के प्रति विद्रोह भी प्रदर्शित किया गया है। ठाकुर अजयप्रताप पर राजा नरेन्द्रपाल का ऋण बढ़ने पर उनकी पत्नी अपनी पुत्री माला का विवाह नरेन्द्र के पुत्र कुँवर महेन्द्रपाल से करने का परामर्श देती है ताकि ऋण की समस्या ही न रहे। परन्तु महेन्द्रपाल विवाह के पक्ष में नहीं। कुँवर महेन्द्रपाल को जब इस आशय का पता लगता है तो वे माला के प्रेमी को विद्रोह करने का परामर्श देते हैं। अन्त में स्थिति यहाँ तक आती है कि अजयप्रताप आत्म हत्या करने लगते हैं। दासी नामक दासी ठाकुर साहब की जारज पुत्री है।

नरमेध (सन् १९३१, पृ० २४), ले० : गिरिराज किशोर; पात्र : पु० ५, स्त्री ३; अंक : ३, नटरंग-अंक : १५।
घटना-स्थल : कलकत्ता।

इसमें आधुनिक कुण्ठाग्रस्त विवाहिता नारी की मनोवेदना का परिचय मिलता है। इन्द्रदेव की पत्नी पति के अधूरे प्रेम से असंतुष्ट रहती है। और अपने पूर्व प्रेमी के साथ विचरण करने वाले सुखमय क्षणों की स्मृति में संजोये रहती है। पति इस तथ्य से अवगत होने पर उसके प्रति अपना हार्दिक प्रेम प्रदर्शित करना चाहता है। यहां तक कि कभी अपनी बात पर आग्रह नहीं करता। उसे भी पत्नी तारा वैरागापन्न समझती है। तारा के पुत्र बन्दु और उसके प्रेमी की पुत्री चंदा में आपस में प्रेम है पर तारा उनके विवाह में बाधा डालती है ताकि अत्यन्त समीपता के कारण नरेन्द्र और उसके पूर्व प्रेम का उद्घाटन न हो जाय।

नरसी भगत (नरसी का भात) (सन् १९६७, पृ० ७४), ले० : श्यामसिंह बैचैन; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री ८; अंक : ३, दृश्य : ६, ५, ६।

यह जीवनीपरक धार्मिक नाटक है। इसमें नरसी भक्त की कथा का उल्लेख है। जूनागढ़ के नरसी महता बड़े धनी, कंजूस माया में अधिक लिप्त थे। भगवान इस भक्त के उद्धार का निर्णय करते हैं और इनको ज्ञान देने के लिए साधु बनकर गंगातट पर वहीं पहुँचते हैं जहाँ नरसी महता स्नान घाट पर नहाने जाते थे। साधु ने याचना की। नरसी ने टालना चाहा। अन्त में विवश होकर नरसी ने एक टका देने का वचन दिया और शर्त रखी कि साधु उससे पूर्व उनके दरवाजे पर पहुँच जाय। साधु शर्त स्वीकार करता है। नरसी अपने रथवान को तेजी से रथ भगाने का आदेश देते हैं किन्तु तो भी उससे पूर्व ही साधु उनके दरवाजे पर खड़ा मिला। नरसी फिर भी टका न देने के लिए नौकर से कहलाते हैं कि सेठ बीमार है। साधु कहता है कि वह अच्छे होने पर ही टका लेगा। अब नरसी अपने आपको मरा घोषित करता है और अरथी पर लेट कर श्मशान ले जाया जाता है। साधु टका लेने पर डटा है। अब भगवान नरसी बनकर सब कार्य करते हैं और चक्र तथा माया को आदेश देते हैं कि वे नरसी को रास्ते पर लायें। उधर नरसी को बाँध कर चक्र सुदर्शन झाड़ी में डाल देता है। माया उसे भगवान कृष्ण के पास भेजने की प्रेरणा करती है और भगवान वहाँ जाकर उसे इस संकट से बचाते हैं। अब वह सेठ के घर पहुँचता है तो दरबान उसे रोक देता है। अन्त में भगवान नरसी बनकर नरसी को दर्शन देते हैं। तब उसे ज्ञान होता है और समस्त सम्पत्ति लुटा कर वह साधु हो जाता है। वहाँ पर उसकी लड़की का भात भरने का निमंत्रण आता है और उसे भी भगवान भरते हैं।

नर हत्या (सन् १९२५, पृ० १२२), ले० : हरिचरणलाल; प्र० : प्रेमधन नागरी, नाट्य समिति; पात्र : पु० ११, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ७, ७, १२।

प्रस्तुत नाटक में नाटककार विवाह में दहेज की कुप्रथा को दूर करने की आवश्यकता बताता है। इस नाटक में गोपाल के पिता पुत्र का विवाह अधिक दहेज लेकर करते हैं। लड़की के पिता इतने गरीब हैं कि

वे उसे आसानी से दे नही सकते। अतः वह अपनी सारी जायदाद बेचकर लडकी की शादी करते है। इस पर गोपाल को हार्दिक दुख पहुँचता है और वह मर जाता है। उसकी स्त्री भी उसके चरणो पर सिर रखकर मर जाती है। मरते समय कहती है—"हे प्राणनाथ ! क्या तुम मेरे लिए स्वर्ग मे दूसरा वर खोजने जा रहे हो ? क्या वहा ईश्वर न्यायी है क्या वहाँ जाने मे अकेले कष्ट नही होगा ? प्राणेश्वर अकेले वहाँ कष्ट होगा इस दासी को भी साथ लेते चलिए नाथ ! जब आप अकेले चलते-चलते थक जावेंगे तो यह हतभागिनी आपके चरणो की सेवा करेगी आपका श्रम दूर करेगी बोलिए क्या आज्ञा है !"

नर्स (सन् १९५६, पृ० ६२), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ४, अक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल घर, नर्स का क्वाटर।

इस सामाजिक नाटक मे अपनी पत्नी को छोड प्रेयसी के चक्कर मे पडने वाले की दुर्दशा दिखाई गई है। कमल अपनी सुघड पत्नी को छोड अन्य लडकियो से प्रेम करता है। इसी अनाचार के कारण कमल की पत्नी ऊषारानी आत्महत्या कर लेती है। तब कमल अपनी प्रेमिका नर्स सध्याकुमारी के पास जाता है जहाँ उसे यह फटकार मिलती है—'तुम ऊषा से घृणा करते थे और सध्या तुम जैसे कामी पुरुषो से घृणा करती है। तुम्हारे लिये बस यही उचित है कि तुम इस घर की सुनसान वीरान दीवारो से अन्धकार मे टक्करें मारो और ऊषा के लिए तडप-तडप कर मर जाओ।' इस तरह कमल न इधर का ही रह सका और न उधर का ही।

नल दमयन्ती नाटक (सन् १९००, पृ० ११६), ले० ब्रह्मदत्त शास्त्री, प्र० गयाप्रसाद ऐण्ड सन्स, बुक सेलस, शफाखाना रोड, आगरा, पात्र पु० २१, स्त्री ९, अक ३, दृश्य १०, १०, १०।

यह नाटक नल-दमयन्ती की अपूर्व प्रणय गाथा को अपने मे समाहित किए हुए है। विवाह के उपरान्त नल जुए मे सब कुछ हार कर दमयन्ती के साथ वनवास का दण्ड पाता है। जगल मे दोनो बिछुड जाते है। परन्तु अन्त मे फिर दैवयोग से दोनो का मिलन हो जाता है और दोनो एक दूसरे को समर्पित हो जाते हैं।

नल दमयती ले० चन्द्रभान 'चन्द,' प्र० देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० १२, स्त्री ६, अक ३।

इस पौराणिक नाटक मे राजा नल की जीवन-गाथा विवाह पूर्व से लेकर पुन राज्य प्राप्ति तक वर्णित है। राजा नल स्वप्न मे दमयन्ती को देखकर उसके दर्शन के लिये व्याकुल हो उठता है। सरोवर मे तैरते हुए राजहस को पकडकर दमयन्ती के पास सन्देश भेजता है। हस दमयन्ती को नल का सन्देश सुनाता है। वह भी नल से मिलने के लिये व्याकुल होती है। उसने नल को जयमाला पहनाने की प्रतिज्ञा की। भीमसेन ने अपनी पुत्री के विवाह के लिये स्वयवर की घोषणा की। नल स्वयवर मे उपस्थित होने के लिए जा रहे है। इन्द्र आदि देवता अपना दूत दमयन्ती के पास भेजते हैं। स्वयवर मे देवता नल का ही वेश बना उसके पास बैठते है। दमयन्ती देवताओ के छल से परेशान व दुखी होकर उनसे विनती करती है। देवता प्रसन्न होकर नल-दमयन्ती को वर देकर चले जाते है। दमयन्ती नल के गले मे जयमाला डालती है। कलि भी दमयन्ती से विवाह करने का इच्छुक था। जब नल-दमयन्ती के विवाह का इन्द्र से समाचार मिला वे क्रुद्ध होकर नल को नष्ट करने का उपाय सोचने लगे। कलि पुष्कर को प्रेरित कर नल को जुआ मे हराकर राज्य से निकाल देता है। दमयन्ती बच्चो को अपने पीहर भेजती है और जगल म भूख-प्यास से तडपती हुई नल के साथ भटकने लगती है। नल एक दिन सोती हुई दमयन्ती को छोड-कर भाग जाता है। दमयन्ती जगन पर पति-वियोग मे विलाप करती है। अजगर,

शिकारी के अत्याचारों को सहती हुई एक दिन दमयन्ती पगली बनी हुई नगरी में पहुँचती है जहाँ राजमाता दासी का काम देकर उसकी रक्षा करती है। दमयन्ती सुनन्दा की दासी बन कर रहने लगती है। एक दिन एक ब्राह्मण दमयन्ती को पहचान लेता है और दमयन्ती को पीहर पहुँचा देता है।

राजा नल कोरटक के वरदान से रूप बदल कर राजा ऋतुपर्ण के सारथी बनकर अपने दुःख के दिन बिताते हैं। दमयन्ती नल को खोजने के लिये सब देशों में दूत भेजती है। अवध से लौटे दूत ऋतुपर्ण के सारथी बाहुक की विलक्षणता का समाचार दमयन्ती को देते हैं। दमयन्ती को विश्वास हो जाता है कि नल ही सारथी का रूप बनाकर दुःख के दिन व्यतीत कर रहे हैं। दमयन्ती के पुनः स्वयम्वर में ऋतुपर्ण के साथ सारथी रूप में नल आते हैं। दमयन्ती और नल का मिलन होता है। नल निषध देश पहुँचकर पुष्कर को जुए में हराते हैं और राज्य पुनः प्राप्त करते हैं।

नल-दमयन्ती (सन् १९००, पृ० ९६), ले० : भक्त हरगोविन्द गाधी, उर्फ गोविन्द; प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, देहली; पात्र : पु० १६, स्त्री ६; अंक-रहित।

इस नाटक में प्रसिद्ध नलदमयन्ती की प्रेम कथा का वर्णन है। राजा नल को धोखे से उनका भाई पुष्कर निकाल देता है। वे जंगलों में मारे-मारे फिरते हैं। दमयन्ती भी बिछुड़ जाती है। अन्त में राजा नल इन्द्र आदि देवताओं की सहायता से अपना राज्य वापस पाते हैं तथा अपने भाई पुष्कर को अपराध स्वीकार करने के कारण क्षमा करके अपनी उदारता का भी परिचय देते हैं।

नल दमयन्ती नाटक (सन् १९०५, पृ० ५२), ले० : महावीरसिंह वर्मा; प्र० : इंडियन प्रेस, प्रयाग; पात्र : पु० ७, स्त्री २; अंक : ५, दृश्य : ३, ३, ३, ३, ३। घटना-स्थल : राजभवन, घोरवन, अयोध्या की राजसभा।

इस पौराणिक नाटक में दाम्पत्य जीवन के सत्य प्रेम की विजय दिखाई गई है। नल दमयन्ती का विवाह वैदिक विधि से होता है। उन्हें एक पुत्र और एक कन्या उत्पन्न होती है। द्वापर और कलि की छलना से नल अपने अनुज पुष्कर के हाथ द्यूत-क्रीड़ा में हार जाते हैं। दम्पति वन में जाते हैं। भूख से सन्तप्त राजा एक पक्षी पकड़ने को वस्त्र फेंकते हैं। पक्षी उसे लेकर उड़ जाता है। राजा दमयन्ती को निद्रावस्था में छोड़ कर चले जाते हैं। दमयन्ती किसी प्रकार पितृगृह पहुँचती है। कालान्तर में उनका पुनः स्वयंवर होता है। छद्मवेशी महाराज नल स्वयंवर में पहुँचते हैं। राजा भीम अपने जामाता नल को पहचान लेता है और उन्हें राज देकर सन्यास ले लेता है। राजा नल पुनः निषध देश में आते हैं और पुष्कर से अक्ष-क्रीड़ा में राज्य जीत लेते हैं।

नाटक का उद्देश्य है इस कथा को श्रवण और कीर्तन करके धर्म में बुद्धि स्थिर करना। नाटककार की दृष्टि अभिनय की ओर नहीं रही है।

नल दमयन्ती या दमयन्ती स्वयंवर नाटक (सन् १८९७, पृ० ३०) ले० : बालकृष्ण भट्ट; प्र० : पत्रिका (हिन्दी प्रदीप) अंक : १०।

इस पौराणिक नाटक में नल दमयन्ती की कष्ट सहिष्णुता और सत्यप्रियता का परिचय मिलता है। विदर्भ देश के राजा भीम की पुत्री दमयन्ती अपने सौन्दर्य के लिये सारे देश में प्रसिद्ध है। उसका चित्र पाकर नल उसके सौन्दर्य पर आसक्त होता है। दमयन्ती भी नल के अद्भुत गुणों की चर्चा सुनकर उस पर मोहित होती है। नल स्वर्ण हंस के द्वारा अपने विवाह का प्रस्ताव दमयन्ती के पास भेजता है। दमयन्ती नल से विवाह करने का संकल्प करती है। पिता आयोजित स्वयंवर में दमयन्ती नल को पति रूप में वरण करती है। इससे रुष्ट होकर कलिदेव नवदम्पति को दण्ड देने के उद्देश्य से

द्यूतक्रीडा की युक्ति निकालता है। राजा नल जुए में सब कुछ हार कर जंगल को प्रस्थान करता है।

दमयन्ती को वन में अत्यन्त कष्ट में देखकर नल उसे सोती हुई छोड़ घने वन में छिप जाते हैं। एक ऋषि की सहायता से दमयन्ती चेदि नगर के राजा के यहाँ दासी रूप में जीवन निर्वाह करती है। कुछ समय में अपने पिता भीम के यहाँ पहुंचा दी जाती है। दमयन्ती के पिता पुत्री के सुझाव पर दूसरे स्वयंवर की आयोजना करते हैं। यह युक्ति सफल हो जाती है और अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के सारथी रूप में नल भी स्वयंवर में सम्मिलित होते हैं और दोनों का मिलन हो जाता है।

नल दमयन्ती (सन् १९६४, पृ० १०३), ले० डॉ० लक्ष्मण स्वरूप एम० ए०, प्र० प्रकाश चन्द गुप्त, स्वतन्त्र भारत प्रकाशन, ४२३, कूचा बुलाकी बेगम, एस्प्लेनेट रोड, दिल्ली, पात्र पु० ३६, स्त्री ७, अंक ३, दृश्य ४,५,५।

यह पौराणिक नाटक पश्चिमी विद्वानों में नलोपाख्यान की लोकप्रियता के कारण लिखा गया। आख्यान में परिवर्तन का कारण देते हुए नाट्यकार लिखता है "मेरे विचार में नाटक की दृष्टि से ये परिवर्तन आवश्यक हैं। कथा के आधारभूत अंशों को छोड़ा नहीं गया। उनको वैसा ही रहने दिया गया है। परिवर्तनों का उद्देश्य आधार-भूत अंश को अधिक उज्ज्वल और अधिक स्पष्ट करता है।"

प्रथम अंक के प्रथम दृश्य में महाराज भीम के दरबार का विस्तृत विवेचन तथा रंगमंच सज्जा के स्पष्ट संकेत देकर दरबार में महाराज का प्रवेश और विन्ध्याघाटी में वीरतापूर्वक लड़कर काम आने वाले वीरों को उपाधियाँ तथा धन देने की घोषणा की जाती है। राजा सेनापति वज्रसिंह की विधवा पत्नी विजयादेवी की पुत्री अनन्ता की शादी का भार अपने ऊपर लेता है और उसकी तैयारी शुरू करता है। इसी समय राजा को सूचना मिलती है कि हस्तिशाला का हाथी बिगड़ गया है। उसने महावत को मार दिया है और वह नगर की ओर उपद्रव करता बढ़ रहा है। राजा मन्त्री सुनीति से हाथी पकड़कर प्रजा की रक्षा का आदेश देता है। इतने में रानी चन्द्रकान्ता अपनी राजकुमारी के प्राण रक्षा की चिन्ता प्रगट करती है। वह अपनी सखी से मिलने नगर को गई थी। राजा दमयन्ती की शूरता के प्रति आश्वस्त हैं। किन्तु सूचना मिलती है कि लौटते समय मार्ग में कहार और रक्षक अपने अस्त्र शस्त्र छोड़कर भाग गये हैं और दमयन्ती अकेली पड़ गई है। संयोग से हाथी एक परदेशी का पीछा करता है और दमयन्ती के कुशल बाण-चालन से परदेशी की रक्षा ही नहीं होती, बल्कि राजकुमारी भी निरापद हो जाती है और अपने महल को वापस पहुँचती है।

दूसरे दृश्य में वसन्त श्री का वर्णन है जिसमें दमयन्ती के यौवन-विलास का सुन्दर वर्णन तथा सखियों के साथ वाटिका भ्रमण है। वाटिका में दमयन्ती की सखी द्वारा एक परदेशी, जो बाग में अनधिकृत प्रविष्ट हो राजकुमारी के प्रति मस्त हाथी से रक्षा किये जाने के प्रति कृतज्ञता प्रगट करना चाहता था, बन्दी रूप में लाया जाता है और राजा नल के शौर्य, सौन्दर्य, पराक्रम, विद्वता आदि का वर्णन कर दमयन्ती को प्रभावित करता है। दमयन्ती उसे दूत बनाती है और उसके स्वयंवर में प्रवेश की व्यवस्था करती है। तृतीय दृश्य में बाग में चलने वाले और माली के हास्य विनोद पूर्ण संवाद के साथ चण्ड और दामोदर का प्रवेश होता है। चण्ड महाराज नल की वीरता और अपनी पराजय से क्षुब्ध प्रतिशोध की अग्नि में प्रज्ज्वलित हो रहा है और नल को पराजित करने की योजना प्रगट करता है। चतुर्थ दृश्य में नल के दरबार, उसके सभासद और भेंट देने वाले विभिन्न देशों के राजाओं द्वारा राजा नल के शौर्य, ऐश्वर्य एवं प्रताप का वर्णन है। इसी दृश्य में हंस दमयन्ती का चित्र प्रस्तुत करता है और राजा नल कुण्डिनपुर के राजा भीम द्वारा आयोजित दमयन्ती के स्वयंवर में जाने का निर्णय करता है

तथा दामोदर पर विद्रोह का अभियोग लगाकर उसे बन्दी बनाया जाता है। इस प्रकार प्रथम अंक में पक्ष और प्रतिपक्ष के समस्त नायक अपने चरित्रगत विशेषता के साथ प्रगट हो जाते हैं।

दूसरे अंक में प्रथम दृश्य नायक नल के विरुद्ध प्रति नायक चण्ड तपस्या करके देवताओं का सहयोग प्राप्त करता है और इन्द्र के प्रति वचनबद्ध होकर नल उसके दूत का कार्य करने के लिये तत्पर हो जाता है। दूसरे दृश्य में नल इन्द्र की मुद्रिका के प्रभाव से अदृश्य रहकर दमयन्ती के भवन में प्रवेश करता है और उसके अनिंद्य सौन्दर्य से प्रभावित होता है। नल प्रगट होकर दमयन्ती से देवराज इन्द्र का सन्देश देता है किन्तु क्षत्रिय कुमारी नल में दृढ़ आस्था प्रगट करती है। भेद खुलने के भय से हंस (दूत) के पहुँचने पर वह पुनः अन्तर्धान हो जाता है। किन्तु दमयन्ती को हंस द्वारा पता चल जाता है कि यह दूत नल ही था। उधर तीसरे दृश्य में चण्ड और नल द्वारा अपमानित पुष्पपुरी के राजा नायक को परास्त करने की रणनीति तैयार करते हैं। चौथे दृश्य में स्वयंवर होता है जिसमें देवता नल का रूप धारण कर भ्रम पैदा करते हैं किन्तु सती दमयन्ती की प्रार्थना पर देवता अपने रूप धारण कर लेते हैं और दमयन्ती नल को पहचान कर जयमाला पहना देती है। इसके उपरान्त की घटना प्रसिद्ध कथा के आधार पर है।

लाहौर कालेज फार वी मेन की तरफ से ११ नवम्बर सन् १९३६ ई० को लाहौर की प्रसिद्ध रंगशाला प्लाजा थियेटर में अभिनीत हुआ।

नल दमयन्ती नाटक (पृ० ९६), ले० : स्वर्गीय दुर्गा प्रसाद जी; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस; पात्र : पु० ११, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ६, ६, ६।

इस पौराणिक नाटक की रचना दाम्पत्य प्रेम की पवित्रता प्रदर्शित करने के लिये हुई। कथावस्तु पूर्ववत है।

नव प्रभात (सन् १९६४), ले० : विष्णु प्रभाकर; प्र० : सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; पात्र : पु० ५, स्त्री ३; अंक : ३। *घटना-स्थल :* राज भवन, जंगल, स्वयंवर।

प्रस्तुत ऐतिहासिक नाटक में सम्राट अशोक के हृदय परिवर्तन की कथा को आधार बनाया गया है। बौद्ध धर्म की महिमा दिखाना ही लेखक का उद्देश्य है।

सम्राट अशोक कलिंग विजय के पश्चात् चिंतित हो जाता है। कलिंग के युवराज कुमार को बन्दी बना लिया जाता है। किन्तु वह अपने स्वाभिमान के कारण अशोक के सामने नहीं झुकता। इससे क्रुद्ध हो अशोक उसे प्राण-दण्ड की आज्ञा देता है। कुमार अशोक का तिरस्कार करता है। अशोक के हृदय में कुमार की बातों से द्वन्द्व उठता है। इसी बीच कुमार की बहिन भिक्षुणी के रूप में अशोक की भर्त्सना करती है। कुमार और उसकी बहिन की बातों से अशोक को युद्ध से घृणा हो जाती है—वह अहिंसा की बातें सोचने लगता है। अशोक प्राण दण्ड की आज्ञा वापिस ले लेता है। इस शुभ समाचार को अशोक की बहिन संघमित्रा कलिंग के युवराज कुमार को सुनाने जाती है, क्योंकि वह उससे प्रेम करती है। परन्तु कुमार अपनी कटार से आत्महत्या कर लेता है। अन्त में सभी बौद्ध धर्म ग्रहण कर लेते हैं।

नवयुग (सन् १९३४, पृ० १११), ले० : प्रेमशरण सहाय सिनहा; प्र० : केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ; पात्र : पु० ७, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ६, ७, ५।
घटना-स्थल : आश्रम, राजप्रासाद।

यह आधुनिक संदर्भ में लिखा हुआ एक सामाजिक नाटक है। इसमें सेवा, प्रेम एवं समाज में होने वाले व्यभिचारों पर प्रकाश डाला गया है। डॉ० सी० पी० हाटक और तारा की प्रेम कहानी है। डॉ० हाटक और तारा आश्रम बनाकर संसार की सेवा में लग जाते हैं।

साधु राजकुमार नष्टपुर और

राजकुमारी भीषणपुर की प्रेम कहानी भी मिलती है। नाटक में अँग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग है।

नवविहान (सन् १९६५ पृ० ११६), ले० ओंकारनाथ दिनकर, प्र० वोरा एण्ड कम्पनी, लि० कालवादेवी, बम्बई ३, पात्र पु० ६, स्त्री ८, अंक ३, दृश्य १, १, १।

घटना स्थल मूर्तिकार मृगांक की शिल्प-निर्माण शाला, डॉ० अणु का चिकित्सालय तथा कला-भवन।

इस राजनीतिक नाटक में भारतीय संस्कृति, उद्योग, व्यापार एवं विज्ञान की प्रगति दिखाई गई है। मृगांक मूर्तिकार अपनी शिल्पशाला में मूर्तियाँ बनाने में संलग्न है। वह देश की स्थिति से अधीर हो ही उठता है कि शरणार्थी मधुसूदन दत्त अपनी व्यथा लिये मृगांक के पास आते हैं। वे प्रकट करते हैं कि वे अपहृत पुत्री आरती को गत १७ वर्ष से खोज रहे हैं किन्तु वह अभी तक उन्हें मिली नहीं है। वे उसकी मूर्ति बनवाकर अपने कलाभवन में स्थापित करना चाहते हैं। मूर्तिकार स्वीकार कर लेता है। उसके बाद एक व्यापारी आता है और उसी मूर्ति का सौदा करता है जिसे मृगांक अस्वीकार कर देता है किन्तु व्यापारी कुटिलता से धन राशि उसकी अनुपस्थिति में छोड़ जाता है। तब एक आदर्श व्यापारी उसके पास आता है और वह प्रकट करता है कि मूर्तिकार ने जो मॉडल बनाये हैं विदेशों में उनकी माँग है। वह उन्हें निर्यात करेगा और विदेशी मुद्रा उपलब्ध होगी।

द्वितीय अंक में डाक्टर अणुजित के कक्ष में अर्चना और वन्दना कला तथा विज्ञान की महत्ता पर तर्क-वितर्क करती हैं। डॉ० अणु विज्ञान का महत्त्व प्रदर्शित कर अणु शक्ति के शान्तिमय प्रयोगों पर प्रकाश डालते हैं। विज्ञान के बढ़ते चरण, विज्ञान के अनुसंधानों का परिचय सामाजिकों को देते हैं। विज्ञान कल्याणकारी है, विध्वंसक नहीं। वह व्यापार, उद्योग, चिकित्सा सभी क्षेत्रों में विज्ञान देखता है। मशीनों, बाँधों, खेतों-खलिहानों में सर्वत्र विज्ञान की उपादेयता सिद्ध करता है।

तृतीय अंक में विशाल कला-भवन में विज्ञान, कृषि, उद्योग, व्यापार, कला और संस्कृति की प्रगति दिखाई गई है। मानो कला-भवन तीर्थ-स्थल एवं संगम बन गया है। कृषि विज्ञान और उद्योगों का कला-संस्कृति के माध्यम से उत्तर से दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में ऐक्य भावना का प्रतिबिम्ब सर्वत्र झलकता है। नाटक का उद्देश्य देश में कला संस्कृति, उद्योग, व्यापार, वैज्ञानिक दृष्टि तथा स्वस्थ समाज का दिग्दर्शन है।

नवीन भारत (सन् १९२७, पृ० १३३), ले० किशनचन्द 'जेबा', प्र० लाजपतराय पृथ्वीराज साहनी, लाहौर, पात्र पु० १८, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ८, ६, ४।

घटना स्थल भागीरथी का तट, मन्दिर, महल, ऋषि-आश्रम, कबीर का मकान, मार्ग, सार्वजनिक सभा भवन।

इस राजनीतिक नाटक में कबीर के जीवन द्वारा देश में ऐक्य स्थापन की पद्धति पर विचार किया गया है। नाट्यकार भूमिका में लिखता है—"आजकल भारत में हर तरफ इत्तिहाद की ध्वनि गूंज रही है। जिस कदर भारत को इस वक्त एकता की जरूरत है उतनी जरूरत स्वराज्य की भी नहीं। हमने वर्तमान राजनैतिक अवस्था पर जितने नाटक लिखे हैं उनमें इस बात की वाकई कमी थी और उनमें एकता के मुताल्लिक कोई प्लाट न था। इस कमी को पूरा करने के लिए दैवयोग से महात्मा कबीर का जीवन चरित्र स्मरण हुआ और उसी का नाटक लिखना आरम्भ किया।"

महात्मा कबीर हिन्दू और मुसलमानों को समीप लाने का जीवन भर प्रयत्न करते हैं। वह सबको प्रेममंत्र से बाँधते हैं। सिकन्दर लोदी गौरक्षक शासक है। ईद के दिन गौ हत्या बन्द कराने के लिये महात्मा कबीर कृतसंकल्प हैं। कबीर की धर्म पुत्री कमाली हिन्दू लड़कियों के साथ गौरक्षा की पताका फहरा रही है। कबीर प्रतिज्ञा करते हैं कि यदि कसाई गौहत्या नहीं बन्द

करते तो वह अपना सर उनकी तलवार के सामने रख देंगे। गुल्फी खाँ नामक नेक मुसलमान कबीर का साथ देता है। कुर्बानी पर तुले मुसलमान कुरबानी के लिये गाय का जलूस निकालते हैं। कबीर, दादू कमाली के साथ सामने जाकर मुसलमानों को समझाते हैं। किन्तु जल्लाद कमाली की छाती में तमाचा मारता है। कमाली की दोनों छातियों से दूध की चार धारें होकर निकलती हैं। भगवान लक्ष्मीनारायण दर्शन देते हैं। शेषनाग के दोनों ओर मस्जिद और मन्दिर का दृश्य दिखाई देता है।

सुशीला नामक एक हिन्दू विधवा की रक्षा कबीर मुसलमानों से करते हैं और उनके पुत्र के लिये अपने पुत्र कमाल का बलिदान करते हैं। कोई कहती है—तेरे बच्चे को जिलाया आप खेला जान पर। क्या हुआ जो मर गया बच्चा मेरा ईमान पर।

नवीन वेदान्त नाटक (सन् १८८७, पृ० १८), ले० : जगन्नाथ शास्त्री; प्र० : काशी समस्ता यंत्रालय, मेरठ; पात्र : पु० ३, स्त्री २; अंक : दृश्य-रहित।

इस नाटक में आर्यधर्म के विविध सम्प्रदायों का परस्पर खंडन-मंडन है। इस पुस्तक में कथा की अपेक्षा घटनाओं का क्रम इस प्रकार है—'एक वेदान्ती का प्रवेश होता है जो संसार को स्वप्नवत बताकर सम्पूर्ण जगत में ब्रह्म की लीला का कथन करता है। तत्पश्चात एक वैष्णव चक्रान्ती उसका खंडन करता है। पुनः वेदान्ती उसके तर्कों का खंडन करता है। दोनों एक दूसरे का खंडन और अपना-अपना प्रतिपादन करते हैं। इसी बीच 'एक आर्य का प्रवेश' होता है जो वेदान्ती को चुटकी काटता है। वेदान्ती 'मरा-मरा' कहकर चिल्लाने लगता है और 'आर्य' उसकी चिल्लाहट को दृष्टांत बनाकर ब्रह्मवाद का खंडन करता है। उसका कथन है—'अरे तू ब्रह्म कैसा? कहीं ब्रह्म भी मरा-मरा कहता है।' यह अपने तर्कों से वेदान्ती और चक्रान्ती के सिद्धान्तों को भ्रमपूर्ण बताकर शास्त्रवाद को प्रमाण मानता है। वेदान्ती उसका विरोध करता है। 'इतने में एक सर्प निकलता है और वेदान्ती डर कर भागता है।' आर्य पुनः उसके आचरण का दृष्टांत देकर ब्रह्मवाद को गलत ठहराता है। अन्त में वैष्णव भी आर्य के मतों का पोषण करते हुये वेदांती के ज्ञानवाद को अनुचित कहता है। इस पर आर्य का कथन है—'हम किसी के दोष नहीं देखते। हम तो यही कहते हैं किसी मार्ग में क्यों न हो जिसका अन्तःकरण में सच्चा भाव है उसी को मोक्ष है बाहर का स्वाग दिखाने से नहीं।'

नहुष नाटक (वि० २०११, पृ० १०१), ले० : महाकवि गिरधर दास; प्र० : नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; पात्र : पु० ३१, स्त्री ३; अंक : ६।

घटना-स्थल : राजभवन, आश्रम आदि।

नहुष नाटक (वि० १८६८), ले० : बाबू गोपाल चन्द्र (उपनाम गिरिधरदास) प्र० : कविवचन सुधा में काशी ना० प्र० सभा; पात्र : पु० १२, स्त्री ३।

कृष्ण-स्तुति नान्दी के उपरान्त सूत्रधार विनयपूर्वक सभासदों से अपने प्रस्तुत नाटक को देखने की प्रार्थना करता है। नाटककार 'गिरिधरदास' का महाराज रूप में परिचय भी देता है उसने में ही नेपथ्य से 'अरे मौलू-पाधम !···कहै तेहि बैठि है मानव क्षुद्र अरे नट पापी गवार लबार।' की आवाज आती है। इन्द्र के आगमन की सूचना से सूत्रधार 'अब इत रहनो उचित नहिं' कह कर चला जाता है। साथ ही प्रस्तावना का अन्त तथा प्रथम अंक का आरम्भ होता है। 'गौर शरीर अबीर से लोचन' की पूर्व निर्दिष्ट वेष भूषा में इन्द्र प्रवेश करता है। क्रोध मुद्रा में रंगमंच पर इधर-उधर घूमता है। उसे नेपथ्य से यह सुनाई पड़ता है—'शठि के ब्राह्मन मस्तक मे यह अपने को धरमात्मा मानै' और साथ ही ब्रह्महत्या विकराल शरीर धारण कर सामने आती दिखाई पड़ती है। इन्द्र उसके पूर्व ही भाग जाता है। 'भाग्यों जाय है' कहती हुई जयन्त और कार्तिकेय का प्रवेश होता है। जयन्त

कार्तिकेय से वृत्तासुर वध के विषय में वार्तालाप होता है। कार्तिकेय को इस पर आश्चर्य होता है और वह कहता है 'क्या तुम युद्ध में नहीं थे जो इस प्रकार पूछ रहे हो ?' जयन्त ने बतलाया जबसे पिता ने शत्रुभय से घर छोड़ा है तब से 'गिरिधारन के ध्यान में समय बिताया करती है हम उसी की परिचर्या में लीन थे, युद्ध में साथ न रहे।' कार्तिकेय ने जयन्त से पूरा वृत्तान्त सुनाया। उसने बतलाया कि देवताओं की विजय पर दधीचि की हड्डी से बने वज्र द्वारा ही वृत्रासुर का वध हो सकेगा। ऐसी आकाशवाणी होने पर देवताओं ने दधीचि से उनकी हड्डी लेकर वज्र बनवाया (विश्वकर्मा से) और इन्द्र प्रमुख सब युद्ध में उतरे। वृत्रासुर भी अपनी प्रचण्ड सैन्यशक्ति से इन्द्र के प्रतिपक्ष में उतरा। घोर युद्ध में 'धनु चाप टकारि कै हने अनेकन पत्र, तिनहि सहत दौरत भयो महाकाल सम वृत्र।' यहाँ तक कि देवताओं में हाहाकार मच गया। लेकिन मातलि के रथ ले आने पर उस पर सवार हो इन्द्र वज्र प्रहार से उसकी एक भुजा काट डालता है। परिघ प्रहार से वज्र उसके शरीर में से पृथ्वी पर गिरता है। इन्द्र लज्जावश उसे उठाना नहीं चाहते। परन्तु वृत्रासुर स्वयं उन्हें समझाता है कि ' जहाँ सभा तहाँ इक जीतत इक परत ध्रुव' ताल तुम भय लाज तजि वज्र उठावहु हाथ समर करहु मम साथ'। शत्रु की इस धर्मप्रवणता से मुग्ध होकर इन्द्र स्वयं उसकी प्रशंसा करता है और वज्र उठाकर उसकी दूसरी भुजा भी काट देता है। भुजा और *अस्त्र के बिना वृत्र मुँह फैलाकर रथ सहित* इन्द्र को निगल जाता है। पर कृष्ण कवच प्रभाव से उसके कुक्ष भाग से उसे काट देते हैं और सकुशल बाहर आ जाते हैं। पुन 'वर्द्ध वर्ग्स मे काटि कै महिमास्यौ अरिमाथ'। अन्त में उसकी ज्योति निकलकर आकाश में लीन हो जाती है। आगे शत्रु को मारकर वे कहाँ गये—यह उसे नहीं मालूम है। मातलि का प्रवेश इसी क्षण होता है। वह बतलाता है कि हत्या के लगने से वह कहाँ गए वह भी नहीं जानता।

नहुष निपात (सन् १९६१), ले० उदयशकर भट्ट, प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, पात्र पु० १, स्त्री १, *अक-रहित।*
घटना स्थल स्वर्ग।

'नहुष-निपात' नहुष के स्वर्ग पतन की पौराणिक कथा पर आधारित गीतिनाट्य है। उदयशकर भट्ट ने नहुष के स्वर्गारोहण तथा उसकी अन्ध कामवृत्ति के कारण स्वर्गावतरण की घटना को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। भट्ट जी के अनुसार "आज के जीवन में नहुष की चेतना उसका कार्य-कलाप उसका प्रच्छन्न लक्ष्य जैसे मनुष्य का अवान्तर रूप बन गया है, *जिसे वह अपने अन्तरतम की अवचेतना में सहज आबद्ध पाता है।*" मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि पर आधुनिक मानव की कामवृत्ति का अबाध-प्रवाह मानो नहुष में आकर पुँजीभूत हो गया है। अपने तप-बल से नहुष *इन्द्र का पद प्राप्त करने में सफल हो जाता* है किन्तु स्वर्ग में इन्द्राणी के रूप पर मोहित नहुष धर्म की मर्यादा भी भूल जाता है। इन्द्राणी के अनुरोध पर वह सप्तऋषियों के कंधों पर उनसे मिलने जाता है। यह मिलन-आकांक्षा इतनी प्रबल हो जाती है कि नहुष ऋषियों पर पदाघात करने में भी सकोच नहीं करता। परिणामस्वरूप सर्पयोनि में उसका पतन होता है। यदि लेखक के प्रारम्भिक वक्तव्य देखे बिना गीतिनाट्य पढा जाय तो लेखक का उद्देश्य गौण पड जाता है। काव्योत्कर्ष की दृष्टि से नहुष निपात अधिक सफल नहीं कहा जा सकता। स्वर्गादि के वर्णन भी भट्ट जी के अन्य गीति-नाट्यों की भाँति काव्य माधुर्य से पूर्ण नहीं हो पाए हैं। सक्षेप में नहुष निपात गीतिनाट्य की *आत्मा के स्पर्श में असफल रहा है।*

नाग पुत्र शालिवाहन (सन १९००, पृ० ६२) ले० हरी कृष्णाजि जौहर साहित्यालकार, प्र० उपन्यास बहार आफिस, *बनारस*, पात्र पु० ६, स्त्री १। *घटना स्थल* राजभवन, जगल, युद्धक्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक में लोकप्रिय

राजा शालिवाहन की विजय दिखाई गई है। इसमें दक्षिण भारत का सम्राट सुशर्मा जब राज्य छोड़ संन्यास धारण कर लेता है तब उसका मंत्री शूद्रक राज्य लेना चाहता है किन्तु प्रजा उसे नहीं चाहती। अन्त में नागपुत्र शालिवाहन अपनी वीरता से शूद्रक को हरा दक्षिण भारत का लोकप्रिय राजा बनता है।

नागरी विलाप (सन् १८८५, पृ० ३२), लें० : रामगरीब चतुर्वेदी; प्र० : केदार नाथ जी, बनारस लाईट यंत्रालय, बनारस; *अंक-रहित : दृश्य : ५।*
घटना-स्थल : खंडहर, बाबू हरिश्चन्द्र का द्वार, प्रिंसपल का बंगला।

इस राजनीतिक नाटक में अंग्रेजी उर्दू के अत्याचार से नागरी का विलाप दिखाया गया है। गौरवर्णा देवनागरी उज्ज्वल वस्त्र पहने उजड़े स्थानों को देखकर विलाप करती है कि "भाग देश ही सत्यानाश हो गया। हे विधिना मेरी परोसिन मियाँ मुगल खाँ की बहू बीबी उर्दू जान का घर तो भली भाँति उत्तम बना है, पर मेरी यथा दशा।" नागरी आत्मघात करने को प्रस्तुत होती है उसी समय एक लड़खड़ाती सी आवाज सुनाई पड़ती है 'तुहार एक पुत्र हरिश्चन्द्र काशी में बांटे वहाँ जाऊ सब हाल कहि-हेसा।'

नागरी हरिश्चन्द्र के द्वार पर पहुँचती है। हरिश्चन्द्र जी के भ्राता राधाकृष्ण दास उसका रोदन सुनकर उसका दुःख पूछते हैं। दोनों में वार्त्तालाप होता है। नागरी प्रार्थना करती है कि सूबे के गवर्नर सर अल्फर्ड लायल महोदय से प्रार्थना कीजिए। वह हमारा दुःख दूर कर सकते हैं। वहाँ से नागरी क्वीस कालेज के प्रिंसपल के बँगले पर जाती है और उनसे अपनी व्यथा सुनाती है। प्रिंसपल प्रभावित होकर टाउनहाल में एक सभा करते हैं जिसमें सुमतचन्द्र प्रिंसपल साहब के प्रस्ताव का समर्थन करते हैं। नागरी अपनी अर्जी पढ़कर सुनाती है। सभाजन समर्थन करते हैं और गवर्नर के पास अर्जी भेजी जाती है। सम्पूर्ण सभाजनों के हस्ताक्षर को नत्थी कर दिया जाता है।

नाच रही जलधार (सन् १९६३), लें० : मनोहर प्रभाकर; प्र० : कल्याणमल एण्ड संस, जयपुर;

'नाच रही जलधार' संगीत-रूपक में पावस ऋतु की भिन्न भावात्मक तथा सवेदनात्मक झाँकियाँ प्रस्तुत की गई हैं। सावन के आते ही उल्लसित वातावरण में पीहू-पीहू की प्रणयपुकार चहुँ ओर गुंजायमान हो उठती है, जो संयोगियों के लिए तृप्ति-पर्व के रूप में उपस्थित होती है। वियोगियों के लिये यही सावन कष्टकर होता है। इन सबमें प्रथम लेखक ने सावन को कल्याणकारी रूप में प्रस्तुत किया है। रूपक के अन्त में सावन की स्तुति की गई है।

नाटक तोता-मैना (सन् १९६२), लें० : लक्ष्मीनारायण लाल; प्र० : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद; *पात्र :* पु० ६, स्त्री २; *अंक-दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल : मुक्ताकाशी लोकमंच।

प्रस्तुत नाटक स्त्री और पुरुष के उत्तम और अधम गुणों को कलात्मक ढग से प्रस्तुत करता है। यह तोता-मैना की प्रसिद्ध लोककथा पर आधारित है।

तोता-मैना पुरुष-स्त्री के प्रतीक हैं और दोनों ही अपने को श्रेष्ठ घोषित करते हुए तर्क देते हैं और उसको प्रमाणित करने के लिए किस्सों का आधार ग्रहण करते हैं। लेखक इन किस्सों को रंगमंचीय आधार देता है। तोता-मैना की नोक-झोंक चलती रहती है और दोनों ही अपने को श्रेष्ठ मानते हैं। अन्त में हंस आकर उनका समझौता कराते हुए विवाह करा देता है।

नाटक सम्भव (सन् १९०४, पृ० ९६), लें० : किशोरीलाल गोस्वामी; प्र० : काशी लहरी में प्रथम बार मुद्रित; *पात्र :* पु० ११, स्त्री ५; *अंक-रहित; दृश्य :* ६।

बीच में अंकावतार पृ० ७३ से ८७ तक है। प्रारम्भ में प्रस्तावना फिर विष्कम्भक है और तब पहला दृश्य प्रारम्भ होता है।

इसमे नाटक की समीक्षा रूपक के माध्यम से व्यक्त की गयी है। नाटक के स्थायी महत्त्व को जन साधारण तक पहुँचाने का अच्छा माध्यम लेखक ने चुना है। नाटक मे भरत नाटक के महत्त्व को बताते हुए कहते हैं कि 'यदि सासारिक जन नाटक विधा पर पूर्ण श्रद्धा करके इसमे कुशल होगे तो उन्हे सभी इच्छित पदार्थ अनायास प्राप्त होगे। क्योकि नाटक की महिमा ही ऐसी है।' सब देवता नाट्यदेवी की प्रार्थना करते हैं—

जय जय बीनापानि,
सरोज बिहारिनि माता।
नाटक रूपिनि, देवि,
करौ नित सुखद प्रभाता।
सब की रुचि या माहिंहोय।
सोई वर दी जै।
कृपा कटाछनि हेरि,
वेगि दुख परि हरि लीजै॥

नाना फडनवीस (सन् १६४६, पृ० ११४), ले० परिपूर्णानन्द वर्मा, प्र० सिटी बुक हाउस, कानपुर, पात्र पु० १८, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ४, ६, ५।

इस ऐतिहासिक नाटक मे प्रसिद्ध मराठा राजनीतिज्ञ नाना फडनवीस की वीरता और नीतिमत्ता का वर्णन है। इस नाटक मे उस काल की घटनाओ का उल्लेख है जब बगाल मे वारेन हेस्टिंग्स का शासन था। उस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी का विस्तार हो रहा था। मुगल साम्राज्य का दीपक बुझ रहा था और उसका स्थान मराठे आदि ले रहे थे। नाटक मे नाना फडनवीस के तत्कालीन कार्यों का वर्णन है।

नोट—पुस्तक के दो भाग हैं। प्रथम भाग मे नाना का जीवन-चरित्र है तथा दूसरे भाग मे नाटक है। जीवन-चरित्र ६० पृ० का है। कुल पृष्ठ हैं—११४।

नायकक नाम जीवन (सन् १६७१, पृ० २+११२), ले० नचिकेता, प्र० अखिल भारतीय मिथिला सघ, ६/१, खेलात घोष लेन, कलकत्ता, पात्र पु० १६, स्त्री २, अक ५, दृश्य ११।

घटना-स्थल नाट्यकार का आवास, शून्य स्थान, ड्राइगरूम, कालू सरदार का अखाड़ा, शक्ति का प्रकोष्ठ, पाक, ड्राइगरूम, विनय का घर एव नवल का घर इत्यादि।

इस सामाजिक नाटक मे चोरबाजारी, गुडागर्दी और नशाखोरी की समस्यायें उठाई गई हैं। इसकी कथा-वस्तु त्रिकोणात्मक है। व्यवसायियो के बीच चोरबाजारी, गुण्डो द्वारा लडकियो और बच्चो के अपहरण, नशाखोरी का दुष्परिणाम सम्बन्धी तीन कथायें साथ चलती है। लोभी, स्वार्थी, उच्चाभिलाषी व्यवसायी शक्ति अपने प्रपच जाल मे अथ सवस्व, महत्त्वाकाक्षी व्यवसायी लखपति को फँसाकर स्वय उच्च कोटि का व्यवसायी बनना चाहता है। अर्थ पिशाच गुण्डा कालू सरदार अपन बल-प्रयोग द्वारा सब पर विजय प्राप्त करने की कोशिश करता है किन्तु परिस्थिति इस तरह परिवर्तित हो जाती है जिसके फलस्वरूप उसके गुट मे वैमनस्य और फूट हो जाती है और मनूराम दल से अलग हो जाता है। व्यवसायी भी इन गुण्डो को अपने व्यवसाय मे अत्यधिक प्रश्रय देते है। चोरबाजारी मे पिता और पुत्र के बीच सघर्ष होता है। जहाँ पिता लोभ-ग्रस्त होकर चोरबाजारी करने मे दत्तचित्त है वहीं पुत्र समाज सुधार की बातें करता है। सदभ मे व्यवसायियो की अनैतिक दुश्चरित्रता का पर्दाफाश भी किया है। विनय शराब के लिये अपनी पुत्री सुनीता को शक्ति के इशारे पर नाचने का आग्रह करता है।

यह नाटक अखिल भारतीय मिथिला सघ कलकत्ता द्वारा आयोजित विद्यापति पर्व के अवसर आन्ध्र एसोसियेशन हॉल मे प्रथम बार अभिनीत हुआ था। इसकी सफलता का अनुमान इसके बगला भाषा मे अनूदित कर मचस्थ होने से भी लगाया जा सकता है।

नारद की वीणा (वि० २००३, पृ० १३६), ले० : लक्ष्मीनारायण मिश्र; प्र० : किताब महल, प्रयाग; पात्र : पु० १२, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : आश्रम, राजमहल, युद्धक्षेत्र।

मिश्रजी ने प्रागैतिहासिक काल की एक घटना के आधार पर 'नारद की वीणा' नामक नाटक की रचना की है। 'देवी भागवत' में नर और प्रह्लाद के युद्ध का जो वर्णन है, उनके माध्यम से धर्म और आपद्धर्म की विवेचना इस नाटक में की गई है। इसका कथानक हिरण्यकशिपु के वध के उपरान्त प्रारम्भ होता है। अपने पिता की मृत्यु का कारण प्रह्लाद क्यों और कैसे हुआ इसका बौद्धिक उत्तर देने का प्रयास इस नाटक में मिलता है। आर्यों के भारत-आगमन से यहां के मूल निवासियों के सम्मुख जो विकट समस्या खड़ी हुई, उसके सुझाव में शैवों और वैष्णवों में मतभेद हुआ। शैवागम मुद्राग्रह के कारण विकट परिस्थिति में भी धर्म में परिवर्तन नहीं चाहता, किन्तु वैष्णव धर्म उदार और समन्वयवादी होने से आततायी से भी समझौता करता है। हिरण्यकशिपु शैव और प्रह्लाद वैष्णव था। जातीय हित के लिए एक शैव का वध अनिवार्य बन गया। अतः सिंह की खाल के आवरण में छिपकर मानव हिरण्यकशिपु का वध करता है। इस षड्यन्त्र में प्रह्लाद का हाथ है, यह नाट्यकार की नवीन स्थापना है।

आर्य जाति इस देश में आने पर भी कच्चा मांस खाती व यायावर के रूप में स्थान-स्थान पर घूमती रहती थी। आर्य किशोर-किशोरियों के साथ स्वच्छन्द विहार करते। इसके प्रतिकूल यहाँ के मूल निवासी आश्रमों में रहते, अध्यात्म-विद्या की खोज करने के लिए संयममय जीवन बिताते और परिणय में कन्यादान को महत्त्व देते।

कालान्तर में आर्य अपनी सन्तान को इन आश्रमों में शिक्षा के लिए भेजना प्रारंभ करते हैं। गुरुवर्ग अनार्य है, किन्तु अपने सहज औदार्य से आर्य-सन्तान की उचित शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करता है। मंस्कृत, सोमश्रवा, सुमित्र आर्यकुमार हैं, चन्द्रभागा आर्य-कन्या आश्रम में ही सुमित्र और चन्द्रभागा में प्रेम होता है। अनार्य महर्षि नर, आचार्य नारायण और वैष्णव भक्त नारद और प्रह्लाद के सहयोग से सुमित्र और चन्द्रभागा का विवाह अनार्य-पद्धति पर होता है। इस परिणय में अनार्य-विधि कन्यादान का सर्वप्रथम प्रयोग होता है। आर्य कच्चा मांस खाना छोड़ देते हैं। आर्यों की यज्ञ-व्यवस्था अनार्य आश्रम में स्वीकृत होती है।

ऋषियों के हाथ में अस्त्र-शस्त्र देख प्रह्लाद हिंसा का विरोध करते हैं। नर और प्रह्लाद में युद्ध होता है। नर प्रह्लाद को हरा देता है। किन्तु नारायण अनासक्त भाव से यह सब देखता है। नारायण जैसे आचार्य की बुद्धि एवं आश्रम का इतना प्रभाव पड़ता है कि आर्य भी अपने शव को गाड़ना छोड़कर उन्हें भस्म करने लगते हैं। वे भारत की उपनिषदों की मूलभूत ब्रह्म भावना को स्वीकार कर लेते हैं।

नर और प्रह्लाद के युद्ध में प्रह्लाद एक ऐसे नवीन आग्नेयास्त्र का प्रयोग करते हैं कि सभी वीर चकित रह जाते हैं। किन्तु उनकी मुखमुद्रा युद्धकाल में क्रोधावेश के कारण नितान्त परिवर्तित हो जाती है। उनके नेत्रों से आग निकलने लगती है। इस कारण उनकी पराजय होती है और महर्षि नर की विजय। नारायण नितान्त शान्त मुद्रा में अपना कार्य करता हुआ कहता है "संघर्ष और तप से ही यह प्रकृति पूर्ण है और प्रकृति के पूर्ण होने से ही हम भी पूर्ण हैं। द्रोह और वैर में नहीं। दो नदियों के मिलने में पहले-पहले संघर्ष होता है और फिर एक धार हो जाती है।" प्रह्लाद की हार का कारण बताते हुए नारायण कहता है, "प्रह्लाद वीर हैं, विख्यात धनुर्धर हैं, किन्तु तब भी इनकी उत्तेजना पराजित करेगी। जो भीतर से शान्त नहीं है, वह विजय के समीप नहीं जा पाता।"

वैदिक काल के नर-नारायण महाभारत काल में अर्जुन और कृष्ण बनते हैं।

नारदमोह नाटिका (सन् १९६६, पृ० ७८), ले० : शुकदेव नारायण; प्र० :

मैथिल प्रिंटिंग वर्क्स, मधुबनी, पात्र पु० १८, स्त्री ५, अंक-रहित, दृश्य ११।

नारद पर्यटन करते हुए हिमालय की एक रम्य गुहा में विष्णु के ध्यान में मग्न हो जाते हैं। उन्हें समाधि में स्थिर देख दो गंधर्व यह अनुमान लगाते हैं कि अमरावती का ऐश्वर्य तथा इन्द्र पद प्राप्ति हेतु ये तपस्या कर रहे हैं। वे इन्द्र के पास जाकर यह सूचना देते हैं। इन्द्र डर जाता है और उनका तप भंग करने के लिये कामदेव के साथ रंभा को भेजता है। दोनों के अनेक प्रयत्नों के बावजूद मुनि का ध्यान भंग नहीं होता। अंत वे हारकर मुनि की स्तुति करते हैं। ध्यान से जगने पर सारा वृत्तांत बताते हुए वे मुनि के शरण में जाते हैं। मुनि उन्हें क्षमा कर देते हैं। पश्चात् नारद स्पष्ट बताते हैं—"मुझे राज्य से क्या प्रयोजन, यह रमणीय स्थान देखा नारायण का स्मरण हुआ अतएव ध्यान करने को बैठ गया। जाओ इन्द्र से कह देना कि नारद को राज्य पद की अभिलाषा नहीं है। वह अपने मन में किसी बात की चिंता न करें।"

समाचार पाकर इन्द्र लज्जित होकर अपने किए पर पछताता है। इधर कामदेव से अविजित रह जाने से नारद के मन में अभिमान जगता है। वे महादेव जी के पास जाकर सारा वृत्तान्त कह सुनाते हैं। महादेव उन्हें इस शिक्षा के साथ विदा करते हैं—"ये बातें विष्णु को कदापि कर्ण सुखदायी न होंगी। अतः जिस प्रकार से काम चरित्र मुझसे कह सुनाया है, विष्णु से कभी न सुनावेंगे।' किन्तु नारद घूमते-घामते विष्णु के पास पहुँच जाते हैं और सारी बातें पूर्ववत् कह डालते हैं। उनके चले जाने पर विष्णु नारद के मन में जमे गर्व के अंकुर को उखाड़ने और अपने भक्त की रक्षा करने के लिए विश्वकर्मा को नारद के मार्ग में एक अपूर्व माया प्रेरित नगर के निर्माण का आदेश देते हैं जहाँ अपूर्व सुंदरी राज्य कन्या का स्वयंवर समारोह रचा जा रहा हो। विश्वकर्मा आदेश का पालन करते हैं। मार्ग में जाते हुए नारद उस वैभवशाली नगर के राजा के महल में पहुँचते हैं। राजा शीलनिधि उनका आदर-सत्कार कर, अपनी कन्या के स्वयंवर समारोह की सूचना देते हैं और कन्या के शुभाशुभ भविष्य फल बताने की प्रार्थना करते हैं। नारद कन्या को देखते ही उसके रूप सौंदर्य पर आसक्त हो जाते हैं और हाथ की रेखाओं का यह फल जानकर उसके साथ विवाह करने की उत्कंठा उनके मन में प्रबल होती है कि इसमें विवाह करने वाला अविजित और सर्वसेव्य होगा। चंचलचित्त नारद कन्या को सुलक्षणा बताकर शीघ्र ही उसको प्राप्त करने का उपाय ढूंढने के लिए वहाँ से चल देते हैं। नारद उसके विरह से व्यथित वन में विलाप करते हैं और विश्वमोहिनी नामक उस कन्या को आकृष्ट करने के लिये विष्णु से उनका रूप-सौन्दर्य मांगने के उद्देश्य से स्तुति करते हैं। स्मरण करते ही विष्णु प्रकट होते हैं। नारद अपनी बात कह सुनाते हैं। भक्त की भलाई के लिये भगवान बंदर का रूप देकर नारद को इस ढंग से विदा करते हैं कि वह निश्चिन्त रहें और शाप न सकें। इधर विष्णु स्वयं राजा का वेष बनाकर स्वयंवर में जा पहुँचते हैं।

समय से स्वयंवर आयोजित होता है। अनेक देश के राजे महाराजे उपस्थित होते हैं। विश्वमोहिनी के पहुँचते-पहुँचते नारद भी एक स्थान प्राप्त कर लेते हैं। जयमाला लिये विश्वमोहिनी क्रमशः नयपाल, मैथिल नरेश, अवधेश, हस्तिनापुराधीश आदि के वृत्तान्त और गुण कार्य सुनती हुई आगे बढ़ती है। नारद की ओर एक बार देखकर पुनः उधर नहीं देखती। अन्त में वह राजा के वेष में स्थित विष्णु के गले में जयमाल डाल देती है। स्वयंवर से निकलने पर नारद निराश और दुःखी होते हैं। ब्राह्मणवेषधारी शिव के दो गण उनका उपहास करते हैं। वे उनके रूप की प्रशंसा कर उन्हें जल या शीशे में अपना मुँह देखने की राय देते हैं। जल में अपनी बंदर की आकृति देख नारद अत्यन्त क्रुद्ध हो पहले उन गणों को राक्षस होने का शाप देते हैं, फिर आगे लक्ष्मी और विश्वमोहिनी सहित विष्णु को देख उन्हें खरी खोटी सुनाते हुए यह शाप देते हैं कि 'जिस देह से ठगे हो वही देह धारण करो, हुमने

मेरी बंदर की आकृति की है इसलिए तुम्हारी सहायता बंदर ही करेंगे और जिस प्रकार मैं स्त्री-वियोग में दुःखी हुआ हूँ उसी प्रकार तुम भी नारी-वियोग में दुःखी होगे।' विष्णु शाप को अंगीकार कर अपनी माया खींच लेते हैं जिससे वे अपनी कथनी और करनी पर पछताते हुए लज्जित होते हैं। विष्णु उन्हें शिव का जप करने का आदेश और आशीर्वाद देकर अन्तर्धान हो जाते हैं। नारद उन गणों को विष्णु के हाथों मर कर मुक्त होने का वरदान देते हैं।

नारी (पृ० ६१), ले० : वैकुण्ठनाथ दुग्गल; प्र० : राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : २, १, २।

घटना-स्थल : ड्राइंगरूम, पार्क, शिव मन्दिर, जेल एवं बैठक।

इस सामाजिक नाटक में नारी के पावन प्रेम से पति की रक्षा दिखाई गई है। वीणा एक सुगृहिणी है। वह पति को ही भगवान मानती है। वीणा का पति जीवन आधुनिक विचारों का युवक है। वह क्लबों में जाना पसंद करता है लेकिन वीणा को यह सब अरुचिकर है जिससे जीवन वीणा पर कभी-कभी व्यंग्य कसता है। जीवन रजनी नाम की एक आवारा लड़की की रक्षा एक बदमाश से करता है लेकिन रजनी जीवन को ही दोषी ठहराती है। जिससे जीवन पुलिस के चक्कर में फँस जाता है। लेकिन किसी तरह बच निकलकर घर पहुँचता है। घर पर रामचन्द्र नाम के बदनाम वकील से वीणा को विचार-विमर्श करते देख उसके चरित्र पर सन्देह हो जाता है और घर छोड़कर भाग जाता है। जीवन आत्मघात करना चाहता है, इस प्रयास में वह बन्दी बना लिया जाता है। वीणा भी जीवन से निराश होकर गंगा जी में कूदना चाहती है लेकिन उसका मन उसे रोक देता है। एक मंदिर में उसकी भेंट प्रकाश नाम के दार्शनिक युवक से होती है जिससे वीणा बहुत प्रभावित होती है। संयोगवश वीणा को खोजते हुए रामचन्द्र वकील भी वहीं पहुँच जाता है जिसकी वीणा हत्या करा देती है। प्रकाश वीणा का यह अपराध खुद स्वीकार कर लेता है और वीणा को जीवन की रक्षा के लिए भेज देता है। वीणा के प्रयास से जीवन छूट जाता है। प्रकाश भी पागल करार करके छोड़ दिया जाता है।

नारी की साधना (सन् १९५४, पृ० ६०), ले० : अभयकुमार यौधेय; प्र० : शशांक प्रकाशन, मेरठ छावनी; पात्र : पु० ४, स्त्री ४; अंक : २; दृश्य : ३, २।

घटना-स्थल : कमरे का भीतरी भाग, सभी दृश्य एक कमरे में प्रदर्शित।

इस सामाजिक नाटक में क्रूर पति के कारण आजीवन कष्ट सहन करके पातिव्रत की साधना करने वाली नारी की करुण कहानी है। भारतीय संस्कृति में परिपालित करुणा अपने पति राजन को जब स्वामिन् कहकर संबोधित करती है तो वह क्रुद्ध होकर डार्लिंग आदि अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग के लिये उसे बाध्य करता है। एक दिन राजन करुणा की भारतीयता पर क्रुद्ध होकर उसे बेंतों से पीट रहा था कि उसका (करुणा का) बड़ा भाई भैया बहिन की रक्षा करता है और अपने बहनोई को उसकी क्रूरता का दंड देना चाहता है पर बहिन अनुनय-विनय करके भैया को अपने घर भेज देती है और उससे हस्तक्षेप न करने का आग्रह करती है। राजन करुणा पर अकारण क्रुद्ध होकर अन्यत्र चला जाता है और उसकी सुधि भी नहीं लेता। करुणा स्वयं जीविकोपार्जन को विवश होती है। मकान का किराया न देने पर मकान मालिक उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता है और धन का लोभ दिखाता है। राजन का मित्र चौल उस पर बलात्कार करना चाहता है पर वह पतिव्रता नारी वीरता से सबका सामना करती है। पति की रुग्णावस्था का समाचार देने वाले दो युवकों के साथ दासी गौरी को रुपया देकर भेजती है। दोनों युवक मोटर में गौरी से रुपया छीन कर उस पर बलात्कार करना चाहते हैं। जब वह चिल्लाती है तो उसकी रक्षा को संयोग से करुणा का भाई भैया पहुँच

जाता है। युवक भैया को बन्दूक से आहत करते हैं। उसी दशा में बेहोश गौरी को उठाकर भैया करुणा के पास पहुँचा देता है। करुणा की सखी सुषमा पाँच सहस्र रुपया अपनी सखी को देती है जिसको छीनने के लिये गुंडे प्रयत्न करते हैं। इधर राजन रुग्णावस्था में ही अस्पताल से भी बाहर कर दिया जाता है। वह पटरी पर कराहता रहता है। पति की दुर्दशा सुनकर करुणा उसके पास पहुँचकर उसकी सेवा-शुश्रूषा करती है। भैया की लाश देखकर राजन पश्चात्ताप करता है और करुणा से क्षमा याचना करता है। करुणा उसके चरणों पर गिरकर रोती है। अन्त में दोनों अपने घर चले आते हैं। नाटक रंगमंच को दृष्टि में रखकर लिखा गया है।

नारी जागरण नाटक (पृ० १२७), ले० गोपाल शास्त्री 'दर्शन केशरी', प्र० व्यवस्थापक 'शास्त्री मंडल' गाडन कालोनी वाराणसी, पात्र पु० २५, स्त्री ३, अंक ७, दृश्य ३, २, १, ४, २, ३, २।

इस पौराणिक नाटक में नारी जाति के प्रति उत्पन्न हीनभावना को सतियों के आदर्श द्वारा पुनः दूर करने का प्रयास किया गया है। इसमें गार्गी तथा आत्रेयी आदि भारतीय नारियों का सच्चरित्र वर्णित है। साथ ही द्रौपदी जैसी आर्य पत्नी के सतित्व का और सीता की अग्नि परीक्षा के साथ उनकी पतिपरायणता का अच्छा परिचय मिलता है। पराधीन लोगों में स्त्रियों के प्रति उन्नत भावनाएँ विलीन हो जाती हैं। मानव की यह उदासीनता आजादी के बाद जब देश स्वतन्त्र हो जाता है तो पुनः आर्य महिला विशेषज्ञों द्वारा दूर कराया गया है। वे नारी को कुदृष्टि से देखने वाले का ध्यान नारी जागरण की ओर आकृष्ट करते हैं। प्राचीन काल की नारियाँ हमेशा अपने भारतीय मर्यादा के अन्दर रहती थीं किन्तु आधुनिक नारियाँ उस मर्यादा का उल्लंघन करती हैं। इनके समस्त दोष का मूल कारण पुरुष वर्ग है। इसमें द्रौपदी जैसी नारियों का साहस दिखाया गया है। जो वीरतापूर्वक व्यंग्य भरे शब्दों से अपने पति को उपदेश देती है। नाटककार ने बाल-विवाह समस्या को भी दूर करने का प्रयास किया है।

नारी हृदय (पृ० १४७), ले० हनुमान तुलसीदत्त संदा, प्र० श्री व्यास साहित्य मंदिर, कलकत्ता, पात्र पु० ४, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ८, ८, ६। घटना-स्थल वनभूमि, राजमहल, उद्यान।

उज्जैन के विख्यात राजा विक्रम मनोरमा से जंगल में गंधर्व-विवाह करते हैं। एक दिन दूत द्वारा मातेश्वरी के शोकग्रस्त होने का समाचार पाकर वे वहाँ से राजधानी चल पड़ते हैं। जाते वक्त वह 'रक्षा' दे जाते हैं जो विपत्ति के समय काम आ सकती है। एक दिन एक भिखारी के आने पर विक्रम का पुत्र राज उस तावीज को भीख में दे देता है। भिखारी स्वर्ण लेकर कागज लौटा देता है। राज जब कागज को पढ़ता है कि "कुंवारी कन्या को कलंक का टीका लगाया, जिसे गर्भ रहा" तो माँ पर क्रोधित होता है किन्तु माँ के द्वारा यह बताने पर कि उसने विक्रम से विवाह किया था, उसका क्रोध शान्त हो जाता है। वह अपने पिता से मिलने उज्जैन जाता है और बड़ी चालाकी से उन्हें भ्रम में डालकर मंदिर में बन्द करता है। दूसरे दिन कृत्रिम बोली बोलकर राजा को फँसाने के अपराध में पकड़ा जाता है, तो अपना अपराध स्वीकार करते हुए उनका पत्र दिखाता है। राजा बीस वर्ष पहले की घटना को स्मरण करके अपने पुत्र को प्रसन्नतापूर्वक छाती से लगाते हैं।

नर्तकी रम्भा नारी चरित्र से राज से विवाह करने की योजना बनाती है किन्तु विक्रम को यह मंजूर नहीं। वे एक महल बनाकर रम्भा को कैद कर लेते हैं और पुत्र से कहते हैं कि रम्भा से भूलकर भी न मिले। विक्रम पुत्र राज की अंगूठी दिखाकर सकल बकल रम्भा के दरवाजे के चौकीदार को बताते हैं कि आज से मैं यहाँ नौकरी करूँगा। सकल बकल की सहायता से रम्भा कैदखाने से बाहर आ जाती है तथा ग्वालिन का वेष बनाकर राज से मिला करती है। राजकुमार राज से उसको पुत्र होता है। राजा विक्रम को नौकरों द्वारा यह समाचार मिला कि

रम्भा के घर में लड़के के रोने की आवाज आ रही है। वे रम्भा को बुलाने के लिए आदेश देते हैं। रम्भा योगिनी के वेष में संजीवनी विद्या सीखती है। सभा में सभी रम्भा को पापिनी की सजा देते हैं। पूछने पर राज भी बताते हैं कि वे रम्भा से कभी नहीं मिले। अन्त में रम्भा दूध बेचने वाली ग्वालिन और योगिनी के रूप में संजीवनी विद्या सिखाने वाली का स्मरण कराकर राज से स्वीकार करा लेती है कि वह राज की प्रेयसी है। राजा विक्रम नारी चरित्र का स्मरण दिलाकर विजयोद्घोष करता है। राजा विक्रम राजकुमार और रानी रम्भा के जय जयकार के बीच सभा बन्द करते हैं।

नाश की नसैनी (सन् १९६३, पृ० ९६), ले० : प्रतापनारायण उपाध्याय; प्र० : राकेश प्रकाशन मंदिर, लश्कर; पात्र : पु० १६, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ७, ५, ५।

इस सामाजिक नाटक में मद्यपान के दोषों को दिखाकर समाज को सुधारने का प्रयास किया गया है। भूतपूर्व जमींदार रामसिंह शराबी है तथा मोतीसिंह और इरू श्रमिक रामसिंह के शराबी दोस्त हैं जिनके कारण जमींदार से लेकर मजदूर वर्ग तक सबमें शराब की आदत पड़ गयी है। किन्तु उसकी पत्नी मुनिया और रामसिंह की पत्नी राजकुमारी के प्रयासों से सबकी आदतें छूटती हैं और सभ्य समाज की स्थापना होती है।

'निगाहे गफलत उर्फ भूल में भूल, काँटों में फूल' नाटक ले० : विनायक प्रसाद 'तालिब'; प्र० : इस नाटक का प्रकाशन विक्टोरिया मण्डली के द्वारा संभवत: बाटलीवाला, दी जमशेद जी, नागरवाल जी, बम्बई से हुआ; पात्र : पु० ८, स्त्री २।

इस सामाजिक नाटक में उतावलेपन को अनर्थ की जड़ सिद्ध किया गया है। नाजिम कृषक अपनी पतिपरायणा पत्नी नरगिस के साथ प्रेमपूर्वक अपना निर्वाह करता है। धूर्त 'शातिर' उनके मधुर दाम्पत्य जीवन में प्रवेश कर भ्रम उत्पन्न करता है और नाजिम को छल से नरगिस के कुलटा होने का विश्वास उत्पन्न करा देता है। उस निर्दोषा सती के चरित्र को लांछित कर स्थिति यहाँ तक पहुँचा देता है नाजिम उस अबला की गोद में पुत्र काजिम को छोड़ अन्यत्र चला जाता है। नरगिस अपने पुत्र के साथ किसी प्रकार से कपड़े सी कर अपना निर्वाह करती है। उसकी ऐसी दशा पर करुणा विगलित उसके चाचा सलीम चाची जीनत नरगिस की बड़ी सहायता करते हैं।

नरगिस और उसकी बहिन सम्बुल शातिर नाजिम को नरगिस की सौतेली बहिन सम्बुल को, जो सर्वथा रूप साम्य है। अपने पति मसरूर से प्रेमालाप करते दिखाकर शातिर नाजिम के मन में शंका उत्पन्न करा देता है कि नरगिस मसरूर से फँसी है। नाजिम उस झूठे सत्य को यथार्थ मान कर अपनी पत्नी को कलंकिनी समझता था क्योंकि मसरूर बड़ा दुश्चरित्र व्यक्ति था। वह इस धोखे को न समझ पाकर और 'शातिर' की चाल का शिकार हो गया।

शातिर और औरंग ठग विद्या के बल पर अत्यधिक धनराशि एकत्रित करते हैं। वह समस्त धनराशि वह अपनी दो पुत्रियों में बाँट गया था। उनके पास से नोटों का बण्डल बरामद हो जाता है और उसे उन लड़कियों को वापस दिया जाता है।

उधर मसरूर अपनी पत्नी सम्बुल को छोड़कर अन्य प्रेयसी के साथ कहीं से पलायन कर जाता है। सम्बुल नैराश्यान्धकार। में अपना पथ निर्धारित नहीं कर पाती और नदी की लहरों में अपना जीवन झोंक कर संसार के दुखों से छुटकारे का प्रयास करती है। नाजिम भी उसी नदी में अपने आपको विसर्जित कर नरगिस के वियोग की अग्नि से मुक्ति पाने गया था। नाजिम अपनी साली सम्बुल को डूबने से बचा लेता है। सम्बुल होश में आती है और उसके द्वारा शातिर के षड्यन्त्र का रहस्य खुल जाता है। नाजिम अपनी साली के साथ घर आता है। वह अपनी पत्नी से और सम्बुल अपनी बहिन से मिलती है। नगर

कोतवाल शेरखाँ और चाचा सलीम की सहायता से शातिर और जौरा दोनों ठग पकड़ी होते हैं और दण्डित होकर अपने कर्मों का फल पाते हैं।

निमाड केशरी या तालिया भील (पृ० १२७), ले० शिवदत्त शयनी, प्र० नाना मुकुन्द नवले श्री शिवाजी प्रिंटिंग प्रेस, हरदा, (मौ० पी०), पात्र पु० १०, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ६, ६, ७।
घटना-स्थल नदी तट।

इस राष्ट्रीय नाटक में निमाड केशरी तालाभील का वीर चरित्र वर्णित है। इस नाटक में देश-भक्ति की भावना दिखाई गई है। राष्ट्र-जाति समाज की सेवा ही इस नाटक का मूल उद्देश्य है। गँवार भील के चरित्र को उदात्त बनाया गया है। तालिया यशोदा, बिसनीया, दौलिया, शिवा पटेल, हिम्मत पटेल, जालिम आदि ऐतिहासिक पात्र हैं। अन्य पात्र काल्पनिक हैं। नाटक तालिया की मृत्यु यशोदा के साथ विषपान द्वारा होती है। भूमिका में नाटककार ने लिखा है "नाटक" का कुछ अंश प्रकाशक ने किसी कारणवश छोड दिया है जिससे कथावस्तु में यत्र-तत्र कुछ वैषम्य आ सकता है।"

निर्भय-भीम-व्यायोग (वि० १९७२, पृ० १६), ले० रामदहिन मिश्र "काव्य-तीर्थ", प्र० ग्रन्थ माला कार्यालय, बाकीपुर श्री लक्ष्मीनारायण, प्रेस, बनारस सिटी में मुद्रित, पात्र पु० ६७, स्त्री ३।
घटना-स्थल पर्ण कुटीर, जंगल।

इस पौराणिक नाटक में भीम की वीरता द्वारा ब्राह्मण पुत्र की रक्षा दिखाई गई है। संस्कृत मध्यम व्यायोग की कथा के आधार पर इसका कथानक निर्मित है। हिडिम्बा की आज्ञा से उसका पुत्र घटोत्कच एक ब्राह्मण को कष्ट दे रहा है। ब्राह्मण के मध्यम पुत्र को घटोत्कच मार डालना चाहता है। भीम उस ब्राह्मण की रक्षा के लिए ठीक समय पर पहुँच जाते हैं। और उस ब्राह्मण के स्थान पर स्वयं अपने प्राण देने के लिये राक्षसी हिडिम्बा के सामने उपस्थित होते हैं। हिडिम्बा अपने पति को पाकर मुग्ध हो जाती है। वह इस रहस्य का उद्घाटन करती है कि उन्हीं से मिलने के लिए यह युक्ति निकाली गई थी। वह घटोत्कच को उसके पिता का परिचय देती है। इस प्रकार निर्भय भीम ब्राह्मण की रक्षा के साथ-साथ हिडिम्बा और घटोत्कच को भी सन्तुष्ट करते हैं।

निर्मोहिया (सन् १९६३), ले० श्री महात्म्यसिंह चौहान, पात्र पु० ५, स्त्री २, अंक-रहित, दृश्य ३९।
घटना स्थल पाठशाला, थाना, जज का *बँगला।*

गीता और विनोद एक कक्षा में साथ-साथ पढ़ते हैं। दोनों अपनी कक्षा के मेधावी छात्र हैं। परीक्षा में विनोद का सदैव प्रथम तथा गीता का द्वितीय स्थान रहता है। दोनों प्रेमसूत्र में बँध जाते हैं। जमींदार अपने व्यक्तिगत प्रभाव से प्रधानाचार्य आदि पर दबाव डालकर चाहता है कि उसकी पुत्री गीता को प्रथम स्थान दिया जाय।

जमींदार विनोद तथा उसके बड़े भाई खेलावनसिंह से कुछ विरोध भाव रखता है। खेलावनसिंह एक अच्छे पहलवान हैं। जमींदार के पहलवान को कुश्ती में हार खानी पड़ती है। यहाँ बेगारी के खिलाफ लोगों को जमींदार के विरुद्ध उभाड़ने में खेलावनसिंह सक्रिय भाग लेता है। जमींदार खेलावनसिंह को नीचा दिखाने के लिए प्रत्येक सम्भव उपायों को अपनाता है। अन्त में दरोगा को घूस देकर खेलावनसिंह के खिलाफ चोरी के अभियोग में मुकदमा चलवाता है। परन्तु खेलावनसिंह तथा जमींदार के आपसी मनभेद का गीता-विनोद के प्रेम पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। विनोद जब विलायत चला जाता है तो वहाँ से गीता के नाम भेजे गये पत्रों को पढ़कर जमींदार गीता की शादी किसी अन्य से कर देना चाहता है। परन्तु गीता स्पष्ट कहती है कि वह विनोद के अतिरिक्त अन्य किसी से भी शादी नहीं करेगी। अन्त में जब विनोद डिस्ट्रिक्ट जज होकर आता है तो

और जितेन्द्र को सौंप कर महादेवी के साथ तप करने चले जाते हैं।

निशीथ (वि० १९९०, पृ० ८७), ले० कुमार हृदय, प्र० तरुण भारत ग्रन्थावली कार्यालय दारागज, प्रयाग, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ५, ५, ५।
घटना-स्थल सुमेरपुर।

इस सामाजिक नाटक में विधवा समस्या उठाई गई है। सुन्दरी एक विधवा ब्राह्मणी है। व्रजेन्द्र, सुमेरपुर का जमींदार अपने शक्ति के बल पर कामतृप्ति के लिये सुन्दरी का अपहरण कर लेता है। सुन्दरी व्रजेन्द्र के यहाँ से निकल कर निकल जाती है। गंगा तट पर एक पाखंडी साधु से भेंट होती है वह भी सुन्दरी को अपने जाल में फँसाना चाहता है। सुन्दरी गंगा में कूद कर उनसे पीछा छुड़ाती है। महंत लक्ष्मीनारायण उसे अचेतावस्था में गंगा से निकाल कर अपने आश्रम में रखते हैं। इसी प्रकार सुन्दरी दर-दर भटकती रहती है। समाज में उसे कहीं सच्चा आश्रय नहीं मिलता। वह भागती-फिरती है और व्रजेन्द्र के गण उसके पीछे लगे रहते हैं। निशीथ एक क्रान्तिकारी युवक है जो सुन्दरी को पुनः व्रजेन्द्र के जाल में पड़ने से बचा लेता है। इसी प्रकार समाज के नियमों से आक्रान्त दुःख झेलते हुए सुन्दरी व्रजेन्द्र के जाल में पुनः फँसती है और उसी के पिस्तौल से उसकी और अपनी हत्या कर लेती है।

निष्कलंक (सन् १९७०, पृ० १०८), ले० जनार्दन झा, प्र० जन प्रकाशन समिति, १६/३, उपानगर, कलकत्ता—३१, पात्र पु० १५, स्त्री ३, अंक २, दृश्य १२।
घटना-स्थल मुजफ्फरपुर का एक उपवन, दयाशंकर का आवास, विमल का घर, नूनू-बाबू का मकान, श्मशान, कमल का निवास-स्थान, शिवालय, ग्रीन होटल की एक गुप्त कोठरी एवं मजिस्ट्रेट कोर्ट इत्यादि।

इस सामाजिक नाटक में प्रेम के विभिन्न स्तरों और रूपों को दिखाया गया है। नाट्य-कार डाक्टर और नर्स की प्रेम-कथा को केन्द्र बिन्दु बनाता है। पूर्णिमा अवैध प्रेम के फल-स्वरूप उत्पन्न पुत्री है जो अपने जीविकोपार्जन का एकमात्र व्यवसाय नर्स होने में मानती है। विमल का जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ है। वह व्यवसाय से डाक्टर है। डाक्टर और नर्स का प्रेम होता है। एक अन्य पात्र पूर्णिमा से शादी करना चाहता है, किन्तु इसी बीच पूर्णिमा का अपहरण भी हो जाता है और आपस में लड़ाई शुरू हो जाती है। पूर्णिमा के सतीत्व को भंग करने की नानाविध चेष्टा की जाती है, किन्तु पूर्णिमा के सतीत्व पर कोई आँच नहीं आने पाती। इस दुर्घटना से विमल अधिक उदास हो जाता है। दयाशंकर के कहने पर भी पूर्णिमा की शादी का विमल को विश्वास नहीं होता। कोर्ट में लोगों को अनेक रहस्यमय बातों की जानकारी होती है। राधा सारी बातों पर प्रकाश डालती हुई बताती है कि पूर्णिमा का जन्म कैसे हुआ। वह इस बात का भी विश्वास दिलाती है कि पूर्णिमा निष्कलंक है। अन्ततः विमल को सफलता मिलती है। विमल और पूर्णिमा का विवाह हो जाता है।

निष्फल प्रेम जर्मन नाटक के आधार पर (सन् १९६१, पृ० ४४), ले० सरस राम गुप्ता 'उम्मीद', प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ५, स्त्री ३, अंक २, दृश्य ४२।
घटना स्थल साधारण घर, वाटिका।

इस सामाजिक नाटक में एक नायिका के दो प्रेमियों की कहानी है। नाटक की नायिका सरला के दो प्रेमी हैं—फणीन्द्र और विपिनविहारी। फणीन्द्र सच्चा प्रेमी है किन्तु विपिनविहारी पैसे का साथी। फणीन्द्र इंगलैंड चला जाता है तो सरला बहुत दुःखी होती है। विपिनविहारी के प्रति सरला के हृदय में घृणा है। विपिनविहारी यह जान कर सरला के प्रति दुर्व्यवहार करता है। वह सरला के पिता से दहेज में रुपया चाहता है। सरला दुःखी होकर एक स्थान पर कहती है—

"मेरे पिता के पास तुम्हें दहेज में देने के लिए रुपया नहीं रहा, मेरा भाई चोर है, और तुम एक प्रतिष्ठित खंजाची बन गए हो; इसलिए तुम मुझसे विवाह नहीं कर सकते।"

अन्त में वह आत्म हत्या कर डालती है।

निस्तार (सन् १९५५, पृ० ८३), ले० : वृन्दावनलाल वर्मा; प्र० : मयूर प्रकाशन, झांसी; पात्र : पु० ४, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ८, ७, ४।

घटना-स्थल : गांव का दृश्य।

वर्मा जी ने अछूतोद्धार की समस्या को लेकर प्रस्तुत नाटक की रचना की है। देश में एकता और समानता को स्थापित करने के लिए छुआछूत को मिटाना कितना आवश्यक है—यही इस नाटक का उद्देश्य है।

बरसातीलाल (गांव का मुखिया) और जटाफिकर (अपने को ऊंची जाति का मानने वाला) दोनों ही सारे गांव के अछूतों को अपने गांव के कुंओं से पानी नहीं लेने देते। अछूतों के लिए एक कहार है जो बड़ी मुश्किल से उन्हें पानी देता है। एक दिन प्यास के कारण मोहना हरिजन की पत्नी चाई और पुत्र नन्दू कुएं से पानी भरने का प्रयत्न करते हैं क्योंकि कहार उन्हें पानी देने से इनकार कर देता है। जिसके फलस्वरूप सारा गांव उनका विरोधी हो जाता है। इधर सारे हरिजन हड़ताल कर देते हैं। उपेन्द्र अहिंसा के द्वारा गाव में सुधार लाने का प्रयत्न करता है। इसके विपरीत हरिजनों का नेता लीलाधर विद्रोह और लड़ाई की बात करता है। उपेन्द्र हरिजनों और गाव के अन्य लोगों को (जो अपने को ऊंची जाति का समझते हैं) समझाता है। उसकी सब बातों का समर्थन जटाफिकर की बहिन कादम्बिनी और बरसाती लाल की पुत्री सेवती भी करती है। उपेन्द्र के प्रयत्नों के फलस्वरूप हरिजनों को कुओं से पानी लेने और मन्दिरों में प्रवेश पाने का अधिकार मिल जाता है।

नींव की दरारें (सन् १९६४, पृ० ११८) ले० : श्री कृष्णकिशोर श्रीवास्तव; प्र० : राजपाल एण्ड सन्स; पात्र : पु० ५, स्त्री ३।

घटना-स्थल : घर, खंडहर।

इस प्रतीकात्मक नाटक में भाषापरक राज विभाजन से देश की क्षति दिखाई गई है। एक मां के तीन पुत्र एक ही घर में रहते हैं। परन्तु किन्हीं कारणों से उनमें मतभेद हो जाता है और वे परस्पर संघर्ष करके घर का बंटवारा कर लेते हैं। उस घर की नींव में गहरी दरार पड़ जाती है, किन्तु उनमें से किसी को उस दरार की चिन्ता नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थ से प्रेरित होकर अपनी ही सुख समृद्धि में संलग्न है। नींव में दरार पड़ी है अतः परिणाम यह होता है वह भवन ध्वस्त हो जाता है और सबकी मां उसी के नीचे दबकर मर जाती है।

यह एक सांकेतिक नाटक है जिसका उद्देश्य है भारत के प्रत्येक जाति में एकता की स्थापना।

नाट्यकार इसकी भूमिका में कहते हैं कि "हमारे कई साथियों के लिए नींव की दरारें कितने अंशों में जीवित है उसे समय ही बताएगा। मुझे तो इतना ही बतलाना है कि अपने देश में भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की प्रतिक्रिया में जो वियोजन तथा विसंघटन हुआ है यह उससे अनुप्राणित है तथा भावनात्मक एकता के बारे में जो प्रायश्चित्त की ध्वनियां निहित हैं वह उनसे प्रतिध्वनित है।"

इस नाटक का उद्देश्य है भारत में विद्यमान भेद-भाव के अनेक दरारों को मिटा देना।

नीच [क्रान्तिकारी सामाजिक नाटक] (सन् १९३१, पृ० १४८), ले० : नरेन्द्र; प्र० : चांद कार्यालय, इलाहाबाद; पात्र : पु० १४, स्त्री ३; अंक : ४; दृश्य : ५, ६, ६, ५।

घटना-स्थल : मन्दिर, कमरा, गंगातट।

नाट्यकार इसे समस्या नाटक कहते हैं।

समाज के कतिपय ऊंचे कहलाने वाले इसमें महापुरुषों द्वारा 'नीच' कहलाये जाने वाले व्यक्तियों के ऊपर किये गये अत्याचारों का चित्रण किया गया है।

रामनाथ एक कट्टर सनातन धर्मी है। वह मन्दिर मे पूजा करने जाता है। बिहारी एक भंगी है। वह नाली साफ करता है और रामनाथ से प्रार्थना करता है कि ठाकुर जी का दर्शन मुझे भी करने दीजिए पर रामनाथ कहता है 'अबे! तेरी तकदीर में दर्शन करना बदा होता तो तू मेहतर क्यों बनता।' बिहारी का बेटा पीरू आर्यसमाज मन्दिर मे होने वाले व्याख्यान की चर्चा करता है जिसमे अछूत को भी ठाकुर जी के दर्शन का अधिकार बताया जाता है। रामनाथ के मन्दिर मे मालती वेश्या का गान होता है। रामनाथ पुजारी का पुत्र श्यामनाथ मालती वेश्या मे प्रेम दिखाता है। वह उसे समझाती है कि तुम अपनी स्त्री से प्रेम करो। प्रेम परमेश्वर के समान अनादि है।

श्यामनाथ का एक दुश्चरित्र मित्र राधाकृष्ण है। वह बिहारी भंगी की कन्या तारा को बलात् अपने वश मे करना चाहता है पर तारा अटल रहती है। भीमराज नामक जमींदार भी उसके साथ अत्याचार करना चाहता था पर तारा अटल रही। भीमराज जीवन के अन्त मे तारा से क्षमा मांगता है "कौन कहता है तुम नीच हो, तुम भगिन हो, सतीत्व की मूर्ति, सत्य के प्राण को कौन दुष्ट नीच कहता है। तारा! तुम संसार में सबसे बड़े ब्राह्मण मे भी बड़ी हो। अपने पैरों की धूल दो, मैं उसे अपने सिर पर रखकर स्वर्ग को निष्कटक जाऊं।"

नीलकंठ ले० वृन्दावन लाल वर्मा, प्र० सत्यदेव वर्मा बी ए एल एल बी०, मयूर, प्रकाशन, झांसी, पात्र पु० ५, स्त्री १, अंक ३, दृश्य ४, ५, ५।
घटना-स्थल उज्जैन नगर।

इस वैज्ञानिक नाटक मे साहित्य संगीत और विज्ञान का सम्बन्ध दिखाया गया है। मदनलाल हरनाथ को पारदर्शी यन्त्र के अनुसंधान कार्य मे आर्थिक सहायता के उपलक्ष मे इस व्यापार मे आधे का अधिकारी होना चाहता है जिसे हरनाथ स्वीकार करता है, पर प्रयोगशाला के निर्माण हेतु १० लाख की मांग (Demand) करता है जिसके बाद वर्षों से तैयार नुसखे को मदनलाल को दिखाता है। मदनलाल कुछ आश्वासन देकर चल देता है।

उज्जैन के सार्वजनिक भवन के हाल मे हरनाथ के सभापतित्व म सभा होती है जिसमे उनके आदेशानुसार बदलू खां तथा गंगा और उर्मिला का सहगान होता है फिर सभा का विसर्जन होता है। बदलू के साथ सोंटू और फत्ते चोर उचक्के भी आते हैं।

उज्जैन की एक गली में कुछ स्त्रियों के साथ जाते हुए सोंटू और फत्ते सांय-सांय की आवाज से अशांति पैदा करते हैं इसी बीच सोंटू गंगा के गले स हार खींचकर ले भागता है शिवकंठ की सहायता से पुलिस आती है और आवश्यक जानकारी के बाद थाने में रिपोर्ट लिखी जाती है।

उज्जैन मे मदनलाल की कोठी पर सोंटू और फत्ते आते हैं। सोंटू चक्कू निकालता है पर मदन का रिवाल्वर देख सहम जाता है और क्रोध मे "कमीना रही वा" कहकर चला जाता है।

एक उद्यान मे काशीनाथ पौराणिकता मे विश्वास कर हठयोग के महत्त्व को सिद्ध करते हैं। हरनाथ आधुनिक विज्ञान युग को ध्यान मे रखकर मानव समाज के लाभ हेतु उपाय बताता है। स्वयं को "बुद्धिवादी" कहता है। काशीनाथ वैज्ञानिक यन्त्र आदि की कटु आलोचना करता है। हरनाथ के अनुसार "विज्ञान विवेक पर आधारित है।" इसी प्रत्याख्यान मे मदनलाल आ जाते हैं। प्रसंग बदल जाता है और हार आदि की चोरी के बारे मे चर्चा प्रारम्भ हो जाती है।

शिप्रा नदी पर सोंटू और फत्ते की हार सम्बन्धी चर्चा होती है। फत्ते को सोंटू पर अविश्वास होता है। और उसे चक्कू मार घायल कर नदी पार चला जाता है। घायल सोंटू पुलिस द्वारा पकड़ा जाता है और उचित कार्यवाही के बाद अस्पताल भेज दिया जाता है।

अस्पताल मे पुलिस अफसर जांच हेतु

काशीनाथ आदि के साथ जाते हैं और जांच करते हैं पर पुलिस अफसर को सफलता नहीं मिलती।

सिद्धिहर नामक तीर्थ स्थान पर साधुओं के बीच फत्ते साधु वेश में आता है किन्तु पुलिस उसको गिरफ्तार करती है। समाचार पत्र बेचने वाले प्रमुख खबरों को कहकर सड़कों पर अखबार बेचते हुए जाते हैं।

हरनाथ के मकान पर गंगा, उर्मिला कहानी और कुछ चित्र लेकर आती है। कहानी का शीर्षक है 'नीलकंठ' जिसमें समुद्र-मंथन की पौराणिक गाथा को आधार मानकर (१४ रत्नों के अतिरिक्त) १५ वें 'प्रकृति पर विजय' १६ वें 'मन पर विजय की कथा' और जोड़ी गई है। गंगा कहानी सुनाती है उर्मिला चित्र दिखाती है। इसी बीच काशीनाथ आकर योगशाला की भूमि प्राप्ति की बात बताते हैं। मदन लाल भी आते हैं कुछ देर बाद फत्ते को साथ लिए पुलिस आती है और उचित जानकारी के बाद चोरी की घटना स्पष्ट होती है पर हरनाथ, फत्ते बयान देने से इन्कार करते हैं पर पुलिस वाले फत्ते को घसीटते हुए ले जाते हैं।

उधर सोटू नदी पर जाकर चोरी न करने की कसम खाता है। इसी बीच सिपाही धोबी के साथ आकर सम्मन के तामिल हेतु सोटू को साथ ले जाते हैं।

उज्जैन में हरनाथ प्रयोगशाला में नए प्रयोग की बताते हैं (जिसकी प्रेरणा गंगा, उर्मिला से प्राप्त हुई थी) शिवकंठ भी आते हैं। हरनाथ शिवकंठ नाम से मिलते-जुलते शब्द 'नीलकंठ' को आधार बनाकर नीलकंठ से मनोविनोद युक्त वार्ता करता है। पुनः कहानी के आधार पर अपना उद्देश्य बताता है। "समाज के हलाहल को पीते रहो, उसे पेट में न पहुँचा कर गले में रखे रहो—दूसरे के दृष्टिकोण को समझते रहने की कोशिश करते रहो; निःस्वार्थ परसेवा करो, विलासियों की तटस्थता और त्यागियों के अहंकार से दूर बने रहो" काशीनाथ प्रतिवाद करने के लिए उत्सुक होता है पर उचित समय पर गंगा स्वरचित गीत (उपर्युक्त उद्देश्य से युक्त) गाती है—'आगे चले चलो, आगे बढ़ते चलो' यहीं पटाक्षेप हो जाता है।

नीलकंठ निराला (सन् १९५६), ले० : रामेश्वर कश्यप; प्र० : राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल, पटना; पात्र : पु० ६, स्त्री १; अंक-रहित; दृश्य : १। घटना-स्थल : कमरा।

'नीलकंठ निराला' गीति-नाट्य महाकवि निराला के महान् व्यक्तित्व के प्रति एक श्रद्धांजलि है। निराला जी के जीवन से कतिपय प्रसंगों का चयन कर लेखक ने उन्हें नाटकीय रूप देने का प्रयत्न किया है। निराला जी ने जीवन में जो भी प्राप्त किया उसे मुक्तहस्त से निर्धनों में लुटा दिया। इसके पीछे लेखक एक मनोवैज्ञानिक सत्य का अवलोकन करता है। उसका निष्कर्ष है कि निराला जी अपने जीवन की उपलब्धियों से सन्तुष्ट नहीं थे। इसीलिए उनमें विद्रोही व्यक्तित्व विकसित हुआ। उनके प्रलाप इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं। ये प्रलाप उनकी विभिन्न मनःस्थितियों के द्योतक हैं। यद्यपि इसके सभी पात्र काल्पनिक हैं तथापि इन पात्रों का निराला के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। हजारी, श्यामलाल तथा भिखारिन उन व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें निराला का सहयोग प्राप्त था। डॉ० लाल निराला के कवि जीवन की उपेक्षा का प्रतीक हैं। साहित्य-प्रेमी भविष्य में निराला-कृति के मूल्यांकन की ओर संकेत करता है। बीच-बीच में 'सरोज-स्मृति' के अंश निराला की आन्तरिक करुणा के द्योतक हैं।

नील देवी (सन् १८८१), ले० : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; प्र० : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; पात्र : पु० १८, स्त्री ५; अंक : १०।

इस गीतिरूपक में धर्मनीति और राजनीति का सामंजस्य एवं हिन्दू ललना की शूरवीरता दिखाई गई है। नाटक समर्पण करते हुए भारतेन्दु जी इसका उद्देश्य इस प्रकार स्पष्ट करते हैं—'जिस भांति अंग्रेज स्त्रियां अपना स्वत्व पहचानती हैं, अपनी जाति और अपने देश की सम्पत्ति विपत्ति को

समझती हैं, उसमे सहायता देती है, उसी भाँति हमारी गृहदेवियाँ भी वर्तमान हीनावस्था का उल्लंघन करके कुछ उन्नति प्राप्त करें, यही लालसा है।' इसी उद्देश्य से पंजाब के राजा सूर्य देव की पत्नी नील देवी का शौर्य इस नाटिका मे दिखाया गया है।

राजा सूर्यदेव पर रात्रि म अचानक धावा बोलकर अमीर अब्दुशशरीफ खा सूर उसके राज्य का जीत लेता है। राजा को एक पिंजड़े मे बन्दकर धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया जाता है। राजा के अस्वीकार करने पर सैनिक उसका वध करने दौड़ते हैं। वह कई यवनो का सहार कर वीरगति पाता है। राजा की मृत्यु के कारण अधिकाश राजपूत सैनिक युद्धक्षेत्र मे भाग जाते है। रानी नीलदेवी विजय की कोई आशा न देख नर्तकी के छदमवेश मे अमीर अब्दुशशरीफ खा के मनोविनोद मे पहुँचती है, और मदिरा से चूर अमीर जब उसे पकड़ने को उद्यत होता है तो वह छिपे अस्त्र स उसका सहार करती है। रानी अत मे यह कहते हुए सुनी जाती है—'मेरी यही इच्छा थी कि मैं इस चाडाल का अपने हाथ मे वध करूँ—सो इच्छा पूर्ण हुई। अब मैं सुख पूवक सती हूँगी।"

नूरजहां (सन् १९२५), ले० आरसीप्रसाद सिंह, प्र० गाधी हिन्दी पुस्तक भण्डार, झांसी, पात्र स्त्री २, अक-रहित, दृश्य १।
घटना-स्थल कमरा।

नूरजहाँ के चारित्रिक औदात्य को उभारना ही इस ऐतिहासिक नाटक का प्रमुख उद्देश्य है। इस गीतिनाट्य मे पूर्व स्मृति द्वारा नूरजहाँ के चरित्र पर प्रकाश डाला गया ह। नूरजहाँ तथा उसकी पुत्री लैला के वार्त्तालाप द्वारा ज्ञान होता है कि बीते यौवन के प्रति उसम आज भी आकर्षण है। इसी रूप के द्वारा अपने पति शेर अफगन की मृत्यु के पश्चात् वह सम्राट् को जीत सकी थी। इसके लिए उसमे पश्चात्ताप नहीं है क्योंकि उस असहाय अवस्था मे सम्राट् को अपनाना ही उचित मार्ग था। इसके अतिरिक्त वैभव की आकाक्षा सबमे होती है।

नूरानी मोती (सन् १९४८, पृ० ६४), ले० प्यादर सिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० ९, स्त्री ७, अक ३, दृश्य ७, ५, ६।

इस तिलस्मी नाटक मे दान, धर्म, सत्य मार्ग पर चलने वाले एक मनुष्य की सुख-दुख भरी कहानी ह। नीतिसेन सेठ श्यामलाल का परोपकारी इकलौता पुत्र है। निर्धन और उसके स्त्री-बच्चे कई दिनो से भूख से तड़प रहे है। नीतिसेन सौ रुपए देकर उनकी सहायता करता है। अकाल-पीड़ित किसान नीतिसेन के पास सहायता मागने आते हैं तो वह उन्हें पशुओं के लिए एक हजार रुपये देता है। एक साधु ससार की असारता को बतलाने वाला गीत गाता हुआ जाता है, नीतिसेन उस साधु को दस हजार रुपया सबके मना करने पर भी दे देता ह। सेठ ने गुस्से मे नीतिसेन को घर स निकाल दिया। नीतिसेन की माता जाता चलते समय अपने बेटे को दो लड्डू देकर कहती है कि अगर कभी लगातार चार पहर भोजन न मिले तो य लड्डू खा लेना।

नीतिसेन काम की तलाश मे कई दिनो तक भटकता फिरा लेकिन उसे कोई रोजी का ठिकाना नहीं मिला। हताश होकर वह अपने ससुराल जा पहुचा और वेश बदलकर, हरिनाम रखकर वहीं नौकर बन गया। रेणुका नामक स्त्री की पाप वासना को तृप्त न करने पर वह शोर मचाती है कि जबरदस्ती मेरी इज्जत लूट रहा था। हरि के मना करने पर भी मोहल्ले वाले उस बेचारे को बहुत पीटते हैं।

नीतिसेन इस विपत्ति मे अपने सगे लोगो को भी पराया बनते देख बहुत दुखी हो विश्राम करने के लिए एक पेड के नीचे जा बैठता है। नीद मे उसे गुरु साधु कहता है कि तू राजा यशवन्तसिंह के पास जा और नेपाली जादूगर को मारकर उनकी लड़की से शादी कर। नीतिसेन राजा यशवन्तसिंह के पास पहुँचा और उनकी राजकुमारी का

रोग दूर कर देने का वचन दिया है। राजकुमारी के भवन में नीतिसेन जैसे ही घुसा वैसे ही नेपाली जादूगर आ पहुँचा। नीतिसेन साधु की दी माला की शक्ति से जादूगर को मारकर राजकुमारी को रोगमुक्त करता है। राजा राजकुमारी का विवाह नीतिसेन के साथ करता है और उसे आधा राज्य भी दे देता है। नीतिसेन राजकुमारी को साथ लेकर रेणुका के पास पहुँचा जो होली के दिन बड़ी बेकरारी से उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। नीतिसेन अंगूठी दिखलाकर उसके व्यभिचार की याद दिलाता है। रेणुका अपने अपराध के लिए क्षमा माँगती है। राजकुमारी के कहने पर वह रेणुका को भी अपने साथ ले चलता है। अब नीतिसेन अपनी दोनों पत्नियों के साथ सुशीला के पास गया। श्यामलाल अपने बेटे को घर से निकाल देने पर बहुत पछताता था। कान्ता तो बेटे के वियोग में रो-रोकर अन्धी हो गई। नीतिसेन दोनों पत्नियों के साथ घर पहुँचता है तो माँ-बाप को बहुत सुख-सन्तोष होता है। नीतिसेन गुरुजी को याद करता है। साधु प्रकट होकर नीतिसेन को माला देता है जिससे वह अपनी माता की आँख ठीक कर देता है।

नृसिंहावतार अर्थात् प्रह्लाद नाटक (सन् १९०६, पृ० ६४), ले० : रामभजन मिश्र; प्र० : बाबू कन्हैयालाल बुकसेलर और पब्लिशर; पात्र : पु० १२, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य: ४, ७, ११।

घटना-स्थल : इन्द्र का दरबार, राजभवन, मुनि कुटी, तपोवन, राजसभा, इन्द्रलोक, कैलाश पर्वत, बाजार, पाठशाला, नगर का मार्ग, श्मशान।

यह दृश्यों में नहीं अंकों में विभाजित है। इस पौराणिक नाटक में हिरण्यकश्यप द्वारा प्रह्लाद पर किये गये अत्याचारों का वर्णन है। तथा प्रह्लाद को बचाने के लिए भगवान का नृसिंहावतार धारण करने की कथा है। इसमें चौपाइयों के साथ ही हिन्दी गजलों का भी प्रयोग है। इसके शेर लैला-मजनू के शेरों के समान हैं। पूरा नाटक गेय है।

नेक व बद का फैसला उर्फ खूबसूरत बक्ता (सन् १९०७, पृ० ११८), ले० : अशान्त बाबू; प्र० : बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस; पात्र : पु० १३, स्त्री ८; अंक : ३; दृश्य : ६, १४, ५।

घटना-स्थल : संकेत नहीं।

यह नाटक प्रेमकथा से भरा है। यह दिखाया गया है कि अच्छे का फल अच्छा और बुरे का फल बुरा होता है। ताफीक और मरहूम शाह फिरोजिस के वफादार जनरल व सिपहसालार हैं और कल्लू बेग तथा उसका बेटा तुगरल बेवफा सिपहसालार है। शम्शा—फिरोजाबाद की सुल्तानाशाह की दगाबाज बहन है। यही मुख्य पात्र हैं शेष पात्र प्रेम कथायें पैदा करने के लिए रखे गये हैं। बेवफा सिपहसालार कल्लूबेग तथा धोखेबाज शाह की बहन शम्शा दोनों षड्‌यन्त्र रचते हैं। शम्शा राज्यलिप्सा से अपने पति और भाई का कत्ल करा देती है। शाह के लड़के को कल्लू की सहायता से बन्दी बना लेती है और उसे एक मकान में रख उस मकान को सुरंग से उड़ा देना चाहती है पर ठीक समय पर शाह के लड़के के रक्षक आ जाते हैं। लड़का बच जाता है। कल्लू तथा शम्शा पकड़ लिए जाते हैं। शम्शा अपने पिस्तौल से कल्लू को गोली मारकर स्वयं गोली मार लेती है और उन दोनों को कुकृत्यों का फल मिल जाता है।

नेताजी सुभाष बोस (सन् १९५१), ले० : कर्नल शाहनवाज खाँ के आजाद हिन्द फौज के इतिहास पर आधारित। प्र० : गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा।

कांग्रेस से मतभेद के बाद नेताजी, देश से भागकर काबुल पहुँचते हैं। उत्तमचन्द और भगतराम से भेंट। जर्मनी में हिटलर से साक्षात्कार। सिंगापुर में सेना की तैयारी और युद्ध। जापान के शस्त्रसमर्पण के बाद आजाद हिन्द सेना की पराजय। नेताजी का अन्तर्धान होना दिखाया गया है, मृत्यु नहीं। अन्त में, सहगल, ढिल्लन और शाहनवाज इत्यादि पर मुकदमा चलता

है। आजाद हिन्द सेना की मुकदमे में विजय।

नेत्रोन्मीलन नाटक (वि० १६७१, पृ० १३६), ले० पं० श्यामविहारी मिश्र, एम० ए० एवं पं० शुकदेव विहारी मिश्र, बी० ए०, प्र० साहित्य सम्वर्द्धिनी समिति, कलकत्ता, पात्र पु० २८, स्त्री ४, अंक ५, दृश्य ७, ६, ६, ४, ३।
घटना-स्थल घर, न्यायालय।

इस सामाजिक नाटक में सामयिक समस्याओं पर गम्भीरता से विचार किया गया है। इसमें आपसी वैमनस्य के कारण मारपीट होती है। परिणाम स्वरूप दोनों पक्ष न्यायालय में जाते हैं। न्यायालय मालिक बाग का महानन्द प्रजापति नाटक का मुख्य पात्र है जो लड़ाई करता है। झगड़े और मारपीट का फल न्यायालय की हैरानी, अपव्यय वकीलों और गवाहों की सिफारिश, अधिकारियों की रिश्वत आदि में दिखाया गया है। दोनों पक्ष निर्धन होकर परेशान रहते हैं। न्यायालय में विजेता भी अपव्यय के कारण निर्धन बन जाता है तब दोनों की आंखें खुलती हैं।

नाटक में रोचकता लाने के लिए वकीलों की बहस, गवाहों के साथ जिरह, न्यायाधीश की चुटकी आदि का सहारा लिया गया है।

नेफा की एक शाम (नाटक) ले० ज्ञानदेव अग्निहोत्री, अंक २, दृश्य रहित।
घटना-स्थल पहाड़ियों के पास झोपड़ी, पुल आदि।

इस राजनीतिक नाटक में नेफा की सीकयाग नदी के तट पर कुकुरमुत्तों की आकृति वाली झोपड़ियों में बसी आदिवासियों की चीनी आक्रमण के समय अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये किए गए शौर्य एवं बलिदान पूर्ण गुरिल्ला लड़ाइयों का चित्र प्रस्तुत किया गया है। प्रथम अंक में मातई के दो पुत्रों देवल और नीमो की पारस्परिक कटुता का कारण सुहाली बनती है। मातई और देवल दोनों ही उसे शंका की दृष्टि से देखते हैं किन्तु नीमो उसके प्रेमपाश में बंधा होने के कारण उसको छोड़ता नहीं है। यह चीनी कैम्प की जासूस सिद्ध होकर बाद में नीमो के द्वारा ही मारी जाती है। इसी प्रथम अंक में गोगो की पार्टी का गुप्त संगठन भी प्रकट होता है, देवल जिसका सदस्य है। यह संगठन अपनी छापामार लड़ाइयों से चीनी सेना का प्रतिरोध करता है। चीनी जासूस बॉंगचू घायल होकर मातई द्वारा बचाया जाता है और वही आकर देवल तथा गोगो को मारना चाहता है। मातई को भी पीड़ित करता है किन्तु सुहाली द्वारा प्रेरित नीमो यहीं से बॉंगचू की गतिविधि को समझता है और बड़ी समझदारी से बॉंगचू को मारकर देवल, गोगो और मातई की रक्षा करता है तथा दूसरे अंक में सभी मिलकर चीनी आक्रमण का विरोध करते हैं। दूसरे अंक में शिकाकाई नाम की युवती आकर इनके दल में मिल जाती है। चीनी सीकयाग नदी को पार करना चाहते हैं। यहीं पर पुल उड़ाने के प्रयास में मातई के दोनों पुत्र पुल उड़ाने की सफलता के साथ युद्ध में काम आ जाते हैं। मातई वीरांगना की भांति अपने पुत्रों को मातृभूमि की वेदी पर बलि देकर अन्त में भारतीय सेना द्वारा चीनियों पर विजय का बिगुल सुनती है। शिकाकाई जो देवल की पत्नी बन चुकी थी, गर्भवती है। उसकी सन्तान का नाम 'लालटेन' रखा जाता है।

नेहरू अन्तिम झलक (सन् १९६४, पृ० ११७) ले० डॉ० प्रेमनारायण टंडन, प्र० हिन्दी साहित्य भंडार, गंगाप्रसाद रोड लखनऊ-३, पात्र पु० ३, स्त्री १, अंक १, दृश्य-रहित।
घटना स्थल प्रधानमन्त्री के भवन का भीतरी कक्ष।

इस राजनीतिक नाटक में भारत के प्रधानमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के परिवार एवं उनके व्यक्तिगत जीवन की अन्तिम स्थिति का चित्रांकन किया गया है। प्रस्तुत नाटक का अधिकांश छायाचित्र के रूप में दिखाया गया है। वस्तुतः नेहरू का मृत्यु दिवस भारत के इतिहास में सबसे अभागा दिन माना जायगा। उनके अकस्मात् निधन का

ऑफिसों में नौकरी योग्यता के कारण नहीं सिफारिश के बल पर मिलती है। वेंकटाचारी का प्रिय विजयराघव की नियुक्ति पहली नियुक्ति को रद्द करके की जाती है। व्यापारी अफसरों के पास लड़कियाँ भेजकर उनके द्वारा अपना काम निकलवाते हैं। कमला नामक एक लड़की आर्थिक कठिनाइयों के कारण सरकारी अधिकारी मदनानंद की सहायक बनती है। उसे व्यापारियों और अफसर के सब रहस्य ज्ञात होते हैं। भंडा फूटने के डर से हेमन्त बन्दूक तानकर कमला से जबरदस्ती एक पत्र पर हस्ताक्षर कराता है। सबका पाप उसके सिर मढ़ा जाता है। राजीव के विरोध करने पर हेमन्त उसे भी मार डालना चाहता है। चतुराई से हेमन्त के सभी टेलीफोनों का रिकार्ड होता रहता है। अन्त में हेमन्त को भी आत्महत्या करनी पड़ती है। वही रात न्याय की रात मानी गई है।

न्याय के न्याय (पृ० १६८), ले० दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ', प्र० नवसाहित्य मंदिर, शाहाबाद, पात्र पु० १६, स्त्री ६, *अंक* ३, *दृश्य* ६, ६, ७।
घटना-स्थल राजभवन, विंध्याटवी, वाल्मीकि आश्रम।

भोजपुरी बोली में लिखा यह नाटक प्रगतिवाद के आधार पर राम का चरित्र वर्णन करता है। राम जन्म के समय राजकोश का धन खर्च नहीं किया जाता। उसे राम-रावण युद्ध में खर्च करना दिखाया गया है। राम कथा की प्रमुख घटनाओं-विशेषतः सम्बूक वध, ब्राह्मण पुत्र को पुनरुज्जीवित करना, सीता का पुन निष्कासन धर्म सगत एव विधान सगत दिखाया गया है। सम्पूर्ण रामकथा को तीन अंकों में दिखाना नाट्यकार की कला का सूचक है। सीताजी वाल्मीकि आश्रम में लवकुश के साथ आकर शरण लेती हैं। मुनि आशीर्वाद देते हैं—"बेटी तोहार मनसा अछर-अछर पूरा होखी।" नाटक के अन्त में राम सिंहासन पर लव को युवराज पद पर असीन करते हैं। रामभक्त का संकेत विस्तार से दिया गया है।

न्याय सभा नाटक (सन् १८८०, पृ० ७१), ले० रत्न चन्द्र वकील, प्र० धार्मिक सभालय प्रयाग, पात्र पु० ५, अन्य स्त्री ०, अंक ३, दृश्य ४, २, ५।
घटना स्थल आगरा बादशाह की कचहरी खास, बीरबल का स्थान।

इस ऐतिहासिक नाटक में बादशाह अकबर की न्यायप्रियता दिखाई गई है। उनके अधिकारी कहीं प्रजा के साथ अन्याय या अत्याचार तो नहीं कर रहे हैं, इसका सम्राट् को पूरा ध्यान रहता है। इसमें न्याय की विजय और अन्याय की पराजय पर अलग-अलग प्रकाश डाला गया है। राजा और प्रजा के धर्म और राज्याधिकारियों को शिक्षा की बातें बताई गई हैं।

अकबर को न्याय करने में मित्र बीरबल की बुद्धिमानी से कितनी सहायता मिलती थी इसका भी चित्र खींचा गया है।

न्याय आयुष्मती सुशीला (वि० १९८५, पृ० १३६), ले० कृष्णानन्द मोहता, प्र० हनुमान पुस्तकालय, श्री सुधारक साहित्य व संगीत समिति, भिवानी (पंजाब), *पात्र* पु० ६, स्त्री ४, अंक ३।
घटना-स्थल महल, दरबार, कौमिक महल, बाग, कोठी, अगला महल, रास्ता, गंगा तट कारागार, सेवा समिति भवन।

इस सामाजिक नाटक का उद्देश्य पुनर्विवाह के संस्कार को कायरूप में परिणित करना ही है।

एक धनाढ्य वैश्य वीरसेन अपनी विधवा पुत्री सुशीला के भविष्य के प्रति चिन्तित है। अपने सभासद सुबोध के साथ सुशीला के पुनर्विवाह के प्रस्ताव पर राजी हो जाता है, परन्तु एक सभासद शकुनी उनकी बात का विरोध करता है और वह जनेऊ तथा शिखा को हाथ में लेकर शपथ खाता है कि वह कभी ऐसी अनीति नहीं होने देगा। सुबोध कहता है—"साहसी पुरुषों की तरह, संकुचित भावों से नहीं बल्कि आत्मा को विकासमय करके विधवाओं पर दया करो"। भोजनभट्ट शकुनी वीरसेन के पुत्र जयमल को भी अपने पक्ष में मिला लेते हैं। उसे लालच देता है कि वीरसेन, सुशीला

सुबोध तीनों का काम तमाम कर सुशीला के नाम की गई सम्पत्ति के मालिक तुम बनो। वह धन के लोभ से पिता को बन्दी कर देता है और बहन को भूल जाता है पर अन्त में सुबोध के सफल प्रयासों द्वारा वीरसेन मुक्त हो जाते हैं। सुशीला बचा ली जाती है और सुशीला सुबोध का विवाह हो जाता है। आनन्दीबाई नामक एक अन्य बाल विधवा के माध्यम से नाटककार ने उन ढोंगी पंडितों की पोल खोल दी है जो धर्म का ढोंग रचाकर स्वयं वासना में जकड़कर विधवाओं को वैधव्य में पड़े रहने पर विवश करते हैं। वे पुनर्विवाह का विरोध करते हैं। ऐसे पण्डितों का अन्त में विचार परिवर्तन हो जाता है। भोजनभट्ट को आनन्दी से विवाह करना पड़ता है।

न्यू-जेंनटिल-मैन या नये विगड़ैल (सन् १९२३, पृ० ६१), ले० : हरशंकर उपाध्याय; प्र० : श्री काशी नाटक माला, कार्यालय, न० १०, मिश्र पोखरा, काशी; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक-रहित; दृश्य : ८।
घटना-स्थल : सुसज्जित कमरा, दौलतराम का भीतरी महल इत्यादि।

प्रस्तुत प्रहसन के लिखने का उद्देश्य बताते हुए लेखक लिखता है "आजकल बाबू लोग, महाशयगण, पर्दे की आड़ में क्या कर रहे हैं। जनता उनके धोखे में आकर कैसी फंसती है। फल क्या होता है यही आगे और दिखाने का विचार है।" रईस दौलतराम अपनी बैठक सजाये बैठा है। मस्तराम उनकी बड़ाई कर रहा है। दौलतराम अपनी बैठक को विदेशी रंग-ढंग से सजाता है। उसका मत है कि जब तक हम अपने को विदेशी ढंग से नहीं सजायेंगे रईस नहीं कहलायेंगे—

> यदि हम स्वदेशी वस्तु को,
> निज देश में अपनायेंगे।
> रईस नहीं कहलायेंगे,
> पदवी नहीं फिर पायेंगे॥

दौलतराम मोहनीबाई को अपने रखैल के रूप में रखता है। दौलतराम का भाजा राजाराम का मत है कि जो सच्चे रईस हैं, वे वेश्याओं से ही प्रेम करेंगे और अपना धन नष्ट करेंगे। दौलतराम तत्कालीन परिवेश को रूपायित करते हुए कहता है "सुनो, आजकल पहले अपना बबुआना, इसके बाद रखैल को गहना बनवाना, जोरू को चिथड़े पहिनाना और रण्डी को पैरों पर भगाना ही रईसी का बाना है।" भाई खाने को न पाये लेकिन रण्डी का भाई सारा माल हजम कर जाये। फिर भी मूछों पर ताव रहेगा। दौलत राम का मन्त्री मस्तराम मोहिनी बाई के सहारे दौलतराम का सब धन ले लेता है और शेष नष्ट भी करा देता है।" अन्त में मोहनी दौलतराम का साथ छोड़कर मस्तराम को अपना लेती है। दौलतराम लौटकर अपने भाई के पास आता है और उससे प्रायश्चित रूप में अपने को उससे पीटने के लिए याचना करता है। उसका भाई भ्रातृत्व प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करते हुए कहता है "ऐसा हो नहीं सकता। दया धर्म का मूल है। भाई-भाई को न माने तो यह उसकी भूल है।" और अन्त में दोनों भाई गले मिलते हैं। दौलतराम सुधर जाता अपने परिवार में सबसे प्यार करने लगता है।

न्यू लाइट (सन् १९३४, पृ० ३७), ले० : शिवराम दास गुप्त; प्र० : उपन्यास बहार ऑफिस, काशी; पात्र : पु० ४, स्त्री १; अंक : १; दृश्य : ६।
घटना-स्थल : मकान, बाग, मार्ग, सभाभवन, ऑफिस।

इस प्रहसन में आधुनिक जीवन की अंग्रेजियत के प्रभाव से आने वाली विडंबनाओं पर व्यंग्य है। डाक्टर लाइमजूस फैशनेबुल बेटी सरला तथा खद्दरधारी दामाद मोहनदास के साथ बातें करते हुए बार-बार न्यूलाइट के अनुसार जीवन बिताने का उपदेश देता है। सरला अपने पिता की शिक्षा के अनुसार पुरुषों के साथ टेनिस खेलने जाती है पर मोहनदास विरोध करता है। इस कारण श्वसुर और दामाद में कलह उठ खड़ा होता है पर सरला एक ऊँचे पद पर नियुक्त हो जाती है। मोहन भी न्यू लाइट में रंग जाता है। दोनों का वार्तालाप इस

प्रकार है—

सरला—माई डीयर हस्बैंड ।

मोहन—माई डीयर वाइफ ।

सरला—तुम कब देशी जूते और हिन्दुस्तानी धोती का बायकाट करोगे ।

मोहन—जब तुम विलायती वदरिया से भारत की देवी बन जाओगी । इसी प्रकार आफिस में काम करने वाले क्लर्कों में होने वाले हँसी-मजाक पर व्यंग्य किया गया है ।

यह एक सफल प्रहसन है जो अल्प पात्रों के द्वारा खेला जा सकता है ।

प

पञ्च-प्रपञ्च (वि० १९८२, पृ० २०), ले० कमलनाथ अग्रवाल, प्र० अग्रवाल बुक डिपो चौखम्भा, काशी, पात्र पु० ८, स्त्री ०, अंक-रहित, केवल पाच दृश्यों में ।

घटना स्थल कम्पनी बाग, एक चौरास्ता, सेठ वशीलाल का कमरा ।

यह प्रहसन चुनावों में धन लेकर वोट डालने वालों पर व्यंग्य करता है । सेठ वशीलाल काशी के नामी सेठ हैं उनके विरुद्ध एक असहयोगी स्वराज्य दल वाले उम्मीदवार वंशावनंदन एलेक्शन लड़ते हैं । पहले तो सेठ जी का बोलबाला रहता है परन्तु जनता के जग जाने पर चुनाव में सेठ जी हार जाते हैं और गाधी जी के दल के नेता वकील गिरधारीलाल को जनता अपना उम्मीदवार चुन लेती है । अतः अन्य उम्मीदवार हार जाते हैं ।

पञ्चभाषा विलास नाटकम् (सन् १९६७, पृ० २२), ले० शहाजी (शाहजी), प्र० तंजाऊर शरभोजी महाराजा सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजौर (मद्रास), पात्र पु० ४, स्त्री ४, अंक-दृश्य रहित ।

धर्मराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में अनेक देशों के राजा सपरिवार आते हैं । इसमें श्रीकृष्ण भी सम्मिलित होते हैं । उस समय चार राजकुमारियाँ श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाती हैं और उन में प्रेम करने लग जाती हैं । द्रविड देश की राजकुमारी कान्तिमति, आन्ध्रदेश की राजकुमारी कलनिधि, महाराष्ट्र की राजकुमारी कोकिलवाणी, उत्तर प्रदेश की राजकुमारी सरसशिखामणी पूर्वराग एवं विरह ताप का अनुभव कर, श्रीकृष्ण के समक्ष अपनी-अपनी भाषा में प्रेम निवेदन करती हैं । सौतिया-डाह के मारे एक दूसरे से झगड़ती हैं । अन्त में श्रीकृष्ण उन सबको स्वीकार करते हैं और उन-उन भाषाओं में उनसे बातचीत कर उन सबको सन्तुष्ट करते हैं । मंगल गीत के साथ नाटक समाप्त होता है ।

इस नाटक में सूत्रधार संस्कृत भाषा का प्रयोग करता है । इस प्रकार इस नाटक में संस्कृत, तमिल, तेलुगु, मराठी और हिन्दी पाँच भाषाओं का प्रयोग किया गया है ।

पचमागी (सन् १९६१, पृ० ११८), ले० राजकुमार, प्र० हिन्दी प्रचार पुस्तकालय, वाराणसी, पात्र पु० ६, स्त्री ०, अंक ३, दृश्य २, २, २ ।

घटना-स्थल भारत चीन की सीमा, युद्ध भूमि ।

इसमें राष्ट्र की ज्वलन्त समस्या को आधार मानकर पर्वतीय क्षेत्रों की यथार्थ स्थिति को तीखे व्यंग्य के साथ प्रस्तुत किया गया है । नाटक का मुख्य विषय है चीनी गुप्तचरों और साम्यवादी एजेन्टों द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों में साम्यवादी प्रचार, भारत पर सीमा के अतिक्रमण की साधारण और

न्यायोचित घटना बताना, चीनियों के विभिन्न षड्यन्त्रों और षड्यन्त्र के तरीकों का उद्घाटन करना और भारत की जनता, पुलिस और अन्य अधिकारियों को सचेत करना। चीनी एजेन्ट सीमावर्ती क्षेत्रों में वहां के निवासियों को उनकी गरीबी, सरलता आदि से लाभ उठाकर देशद्रोही बना अपना उल्लू सीधा करते हैं। वे सीमा के प्रश्न को बनावटी साम्राज्यवादियों द्वारा उत्पन्न किया गया, पूंजीपतियों की युद्धप्रियता का निदर्शन आदि कहकर उसे टालने का प्रयास करते हैं। वे जनता को भड़काकर पुलिस का ध्यान अपनी ओर से हटाकर और उलझनों में डालते हैं ताकि उनका षड्यन्त्र सफल हो सके। उन्हें सैनिक भेद लेने में भय नहीं लगता, वे सीमा पार से प्रचार साहित्य का बंडल प्राप्त करते रहते हैं और चीनियों के विरुद्ध युद्ध-विरोधी प्रचार करने में नहीं चूकते। सीमावर्ती पर्वतीय क्षेत्रों की यथार्थ स्थिति—उनकी असहाय निरावलम्ब स्थिति, उनका धर्म के नाम पर शोषण, चुनाव के समय उनकी खुशामद और तदनन्तर उपेक्षा, मंहगाई, प्रतिदिन की आवश्यक वस्तुओं-कपड़ा, नमक, तेल आदि के अभाव, आदि का चित्रण कर लेखक ने वास्तविकता से परिचित कराने का प्रयास किया है।

पंचवटी (सन् १९५५), ले० : शम्भू दयाल सक्सेना; प्र० : नवयुग ग्रन्थ कुटीर,बीकानेर; पात्र : पु० १, स्त्री २।

महाराज राम विमान से गोदावरी तट पर उतरकर अपने परिचित स्थानों को देखते हैं। राम सोचते हैं कि वह गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से सभी पवित्र तीर्थों में स्नान कर आये हैं लेकिन उन्हें मानसिक शान्ति क्यों नहीं मिल रही है। राम को गोदावरी के तट पर कुछ शीतलता का अनुभव होता है। राम को सीता की सखी वासन्ती दिखाई देती है। वह राम को नहीं पहचान पाती क्योंकि अब वह वनवासी राम न होकर अयोध्या-नरेश राम हैं। राम के अपना परिचय देने पर वह पहचान लेती है। राम अपना अपराध स्वीकार कर लेते हैं। वह कहते हैं—राम के दो रूप हैं एक रूप में वह महाराजा हैं दूसरे रूप में केवल रामचन्द्र। राम सीता को निरपराधिनी मानते हैं और उनके वियोग में अश्रु बहाते हैं। राम को वासन्ती अनेक स्थलों की सैर कराती है। घूमते-२ राम जब सेहुंड के वृक्ष के पास आते हैं तो वहां सीता द्वारा सुन्दर अक्षरों में अपना नाम लिखा देखकर व्याकुल हो जाते हैं। इसके साथ ही राम को अश्वमेध यज्ञ का ध्यान है। धनुभंग का चित्र देखकर तो रो पड़ते हैं। वासन्ती रामचन्द्र जी को विमान पर चढ़ा कर स्वयं मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ती है।

पंचवटी प्रसंग (सन् १९३१), ले० : सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला।

इस नाटक में रामायण के प्रसिद्ध प्रसंग सूर्पणखा के प्रणय निवेदन का, बिना किसी परिवर्तन के चित्रण हुआ है। इसके साथ ही राम-लक्ष्मण सीता के पंचवटी-जीवन का चित्रण है। छंद की दृष्टि से यह नाटक कवित्त की आधी पंक्ति को आधार बनाकर मुक्त छंद में लिखा गया है। इस गीतिनाट्य में गीतिमय स्वर आरम्भ से अन्त तक अनुस्यूत है। इस कृति में प्रेम और सौन्दर्य के प्रति अधिकाधिक सूक्ष्म और अतीन्द्रिय रूप का सद्भाव व्यक्त हुआ है। इस कथा में अधिकांश स्थलों पर कवि मात्र संकेतों से संबोधन देता हुआ आगे बढ़ गया है।

पंजाब केसरी (सन् १९२८, पृ० ११६), ले० : जमना दास मेहरा; प्र० : नारायण दत्त सहगल, लाहौर।
घटना-स्थल : घर, विद्यालय।

लाला लाजपतराय के जीवनी के आधार पर यह नाटक प्रस्तुत किया गया है। जिसमें छात्र एवं अध्यापक के कर्त्तव्य दिखाये गये हैं। नाटक में लाला लाजपतराय और एक अध्यापक का संवाद दिया गया है। उन कठिनाइयों का विवरण दिया गया है जो इस देश में शिक्षा प्रचार के मार्ग में बाधा डालने वाली हैं। इस अशिक्षित और निर्धन देश में विद्यादान को महादान समझा जाता है किन्तु निर्धनता के कारण विद्यार्थी पुस्तक नहीं

खरीद पाता। वेतन की कमी के कारण अध्यापक अपना परिवार नहीं पाल पाता तो भी लाला लाजपतराय एक स्थान पर कहते हैं कठिनाइयां सहकर भी जो अध्यापक विद्यार्थियों को विद्यादान देते हैं वे पुण्य कमाते हैं। शिक्षा प्रचार हेतु दीन-हीन विद्यार्थियों को पुस्तक की सहायता संस्था की ओर से होनी चाहिए।

पंजाब मेल (सन् १९३६, पृ० १२७), ले० मुंशी अजगम अली साहब, प्र० उपन्यास बहार आफिस काशी, बनारस, अंक ३, दृश्य ७, ७, ६।
घटना-स्थल नगर रामगढ़, स्टेशन, घर आदि।

इस जासूसी नाटक में धन लाभ, वासना पूर्ति के कारण हत्यायें दिखाई गई है। नाटक के प्रथम अंक में स्टेशन मास्टर प्रेमचन्द के भ्रष्ट जीवन को प्रगट किया गया है। वह पत्नी विहीन है। वह अपनी पुत्री पद्मावती की शादी रामगढ़ के वृद्ध राजा मानसिंह से करके निश्चिन्त हो गया है। प्रेमचन्द कुलिया द्वारा रेल गोदाम से सभी उपभोग्य सामानों की चोरी करता है। स्वयं मुसाफिरों को लूटता है। इस चोरी के धन को मैत्री के नाम पर रेल कमचारिया की पत्निया के घर पहुँचाता है और बदले में अपनी वासना-पूर्ति करना चाहता है। वह धनीराम गार्ड की पतिव्रता पत्नी सुन्दरी पर भी गुप्त मिलन प्रारम्भ करता है और चनापा मद्रासी बुकिंग क्लर्क की शिलि क्या रमा का भी गाँठने का प्रयास करता है। धनीराम की अनुपस्थिति में रेल्वे पुलिस की सहायता से एक चोरी का चादी का पार्सल सुन्दरी को देकर अपना प्रणय निवेदन करता है। वह सती उसे दुत्कारती है कि उसी समय धनीराम आ जाता है और प्रेमचन्द के दिये हुये हार को सुन्दरी के हाथ में देखकर शंका करता है। धनीराम का नौकर घसीटाराम, जो छिपकर प्रेमचन्द की पाप वार्ता को सुन रहा था, धनीराम को वास्तविकता से परिचित कर सती की रक्षा करता है। प्रेमचन्द चादी के पार्सल की चोरी के अभियोग में उसे पकड़ना चाहता है कि धनीराम सिपाही को गोली मारकर फरार हो जाता है। प्रेमचन्द भी सुन्दरी को चोरी के अभियोग में हवालात भिजवा देता है। करीमबेग, धनीराम की सहायता के लिए पहुँचता है और उसके पुत्र मोहन को धनीराम के पास भेजने का प्रबन्ध करता है। मोहन के पास २००० रु० देखकर कुली प्रेमचन्द की सहायता से उसका वध कर रु० लेना चाहता है। मोहन तो छिप जाता है किन्तु प्रेमचन्द का लड़का रतीलाल शराब के नशे में उसी में सो जाता है और मोहन के धोखे में मारा जाता है। करीम बेग प्रेमचन्द और इन्सपेक्टर की साजिश को बैरा बनकर ताडता है और कत्ताल के द्वारा इन्सपेक्टर को मुअत्तिल कराके सुन्दरी की जमानत करता है।

धनीराम और घसीटाराम मानसिंह की पुत्री चन्द्रिका का चम्पतराय द्वारा आभूषण छीन कर वध करते से रक्षा करते है। क्योंकि प्रेमचन्द की युवा पुत्री पद्मावती बूढ़े से क्या प्रसन्न हो सकती थी। उसने चम्पतराय के द्वारा चन्द्रिका का वध कराकर अपना मार्ग निष्कटक बनाना आवश्यक समझा। राजा भी इस षड्यन्त्र में रानी के हाथ होने की शंका करता था कि भेद ही सारा प्रकट हो गया। राजा ने धनीराम गार्ड को दीवान बनाया। दीवान धनीराम रानी पद्मा को मुक्त कराता है और चम्पतराय को भी क्षमा प्रदान करता है। पद्मा अपने भाई के वध का समाचार पाती है। सुन्दरी न्यायी जज द्वारा निर्दोष सिद्ध हो जाती है। और करीमबेग की चतुराई से घायल सिपाही को प्रस्तुत कर धनीराम भी हत्या के केस से मुक्ति पाता है। दोनों धनीराम के पास पहुँचते है। धनीराम सुन्दरी को रानी की नौकरानी और मोहन को भी नौकर रख लेता है। पद्मा पुनः चम्पतराय को अपने मोहनी मंत्र से षड्यन्त्र का पात्र बनाती है और मानसिंह को मार कर उसके वध का अभियोग सुन्दरी पर लगाना चाहती है। सुन्दरी सत्य और स्वामिभक्ति से उसके षड्यन्त्र को असफल बनाती है, परन्तु अपराधिनी बनकर कारागार की हवा खाती है।

चनापा (मद्रासी) के घर प्रणय के अभद्र प्रदर्शनों में प्रेमचन्द के स्थान पर

रामाराव बाजी मार लेता है और प्रेमचन्द तथा चनापा शराब के साथ अपनी-अपनी लगन का प्रबन्ध कर रहे हैं। प्रेमचन्द रंभा से लगन करना चाहता है और चनापा किसी विधवा।

रानी पद्मावली पुन: चम्पतराय के साथ षड्यन्त्ररत दिखाई देती है। वह उनको अपना प्रेमी राजा बनाना चाहती है। उधर धनीराम पर भी प्रेम का ढोंग करती है और उसे पति तथा राजा का लोभ दिखा न्याय के नाम से सुन्दरी का वध कराना चाहती है। राज्य लिप्सा और रूप आकर्षण धनीराम को पतित कर देते हैं और वह अपनी निरपराध सती का वध करने का दण्ड देता है। करीमबेग फकीर बनकर मोहन सुन्दरी की रक्षा करता है और धनीराम को धिक्कारता है। वही चम्पतराय को सचेत करता है और रानी आत्महत्या करती है। चन्द्रिका रानी तथा मोहन उसका पति बन जाते हैं। पद्मावती की विलासिता और अनाचार का अन्त होता है।

प्रेमचन्द भी अपने पुत्र की हत्या में हाथ होने और स्टेशन दुर्घटना के कारण पकड़ा जाता है। वह अपना अपराध स्वयं अनुभव करता है।

पन्द्रह अगस्त (सन् १९६०, पृ० ४६), ले०: ठाकुरप्रसाद सिंह; प्र० : राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ; पात्र : पु० ८, स्त्री १; अंक : ४; दृश्य-रहित।

इस प्रतीकात्मक नाटक में स्वतन्त्र भारत के आरम्भिक वर्षों में होने वाली उथल-पुथल का चित्रण है। नाटक में अंकों के प्रारम्भ में पूर्वार्ध तथा अन्त में काव्यार्थ का आयोजन परिस्थितियों के स्थापन एवं अवसान का सूचक है। नाटककार रामाप्रसन्न, बलराज, चेतन, नन्दिनी, वल्लभ, जितेन्द्र इत्यादि पात्रों के द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश की उथल-पुथल चित्रित करता है। देश में कैसे साम्प्रदायिकता की लहर फैली, सैकड़ों व्यक्ति पतझड़ के पत्तों की तरह अलग हो गये परन्तु देश इन सब अवरोधों के बीच से आगे बढ़ा और सह-अस्तित्व, सद्भाव के महत् उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयास करता गया। इन घटनाओं को प्रतीकात्मक कथा के माध्यम से संवाद के रूप में दिखाया गया है। विभिन्न प्रतीकों में 'मशाल' भविष्य का संकेत करता है जबकि 'तलवार' अतीत की परम्पराओं का द्योतन करती है।

पग-ध्वनि (सन् १९५२, पृ० १०५), ले० : आचार्य चतुरसेन शास्त्री; प्र० : आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली; पात्र : पु० २०, स्त्री १२; अंक : ६; दृश्यरहित।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आदर्शों पर आधारित प्रस्तुत समस्या नाटक में नोआखाली के हिन्दू-मुस्लिम विद्रोह का चित्र खींचा गया है। छः अंकों वाले इस नाटक में प्रत्येक अंक में केवल एक दृश्य है और वे न परस्पर सम्बद्ध हैं और न उनमें कोई संगठित कथानक ही है। उसमें केवल भावना के रेखाचित्र हैं। लेखक के शब्दों में "भूमि में केवल प्यार की पीड़ा है, प्रस्तावना में पूजा है। प्रथम अंक में गांधी-दर्शन, दूसरे में गांधी-भावना, तीसरे में गांधी-प्रभाव, चौथे में गांधी जीवन और पांचवें में विरोध-निराकरण और छठे में गांधी-आदर्श है।" प्रथम अंक में गुरुदेव रवीन्द्र तथा शान्तिनिकेतन के एक अध्यापक के बीच वार्तालाप द्वारा यह प्रतिष्ठित कराया गया है कि युद्ध पशु की प्रकृति है और मानव जीवन प्रत्यक्ष धर्म और सत्य पर आश्रित हुए बिना अपूर्ण है। गांधी जी ने इन्हीं को अपनाया है जिससे वे 'कालपुरुष' हो गए हैं। दूसरे अंक में नोआखाली में हुए अनाचार और हिंसा के ताण्डव नृत्य का संकेत कर यह सन्देश दिया गया है कि मानव को भय से भयभीत नहीं होना चाहिए। वह शोक और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकता है उनकी अवमानना और उपेक्षा द्वारा। तीसरे और पांचवें अंक में गांधी जी के सौम्य व्यक्तित्व का मुसलमानों के हृदय पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन है जिससे कट्टर मुसलमान भी उनके भक्त बन जाते हैं। चौथे अंक में बा की करुणापूर्ण मृत्यु तथा ब्रिटिश शासन की निष्ठुर हृदयता का परिचय दिया गया है। छठे अंक में प्रतीकवादी पद्धति पर नागरिकता, सभ्यता, अहिंसा, राजनीति हिंसा

पूँजी, सत्य, धर्म, सत्याग्रह और असहयोग को पात्रों के रूप में प्रस्तुत कर उनमें विरोधी पात्रों का संघर्ष दिखा यह बताया गया है कि अहिंसा की शरण लेने और सत्य मार्ग का अनुसरण करने से ही मानव का कल्याण है।

पगली (सन् १९५९, पृ० ६४), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री २, अंक ३, दृश्य-रहित।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमें एक मासूम भिखारिन की कहानी है जिसे प्रकृति ने सुन्दरता तो दी है किन्तु समाज ने उससे सब कुछ छीन लिया। अन्त में वह 'पगली' बन निर्दयी-समाज में घूमती रहती है।

पठान ले० पृथ्वीराजकपूर, प्र० पृथ्वी थियेटर्स, बम्बई, अंक ३, दृश्य ११।

इस राजनीतिक नाटक में हिन्दू मुसलमान का स्वाभाविक प्रेम दिखाया गया है। इस नाटक में पश्चिमी सीमा प्रान्त में बसे हिन्दू मुसलमान, सिख परिवारों के परस्पर प्रेम का स्वस्थ चित्रण किया गया है। इस नाटक का आशय धर्म की आड में लड़ाई और वैमनस्य को पनपाने वालों के लिए एक सीख है। नाटक में दिखाया गया है कि किस तरह हिन्दू और पठान संकट आने पर एक दूसरे के सहायक होते हैं तथा मर मिटने के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे ही आदर्श पठान परिवारों के त्यागमय जीवन की इस नाटक में अमर कथा कही गई है। इस नाटक की पृष्ठ भूमि रूमानी है तथा नाटक का आरम्भ होते ही पाठक और प्रेक्षकों को यह आभास सरलता से मिल जाता है कि वह सीमाप्रान्त के परिवारों का प्रत्यक्ष साक्षात् कर रहा है।

पड़ोसी (सन् १९६२, पृ० ८०), ले० वीरेन्द्र नारायण, पात्र पु० ५, स्त्री ४, अंक ३।

इस राष्ट्रीय नाटक में पंजाबी, मद्रासी तथा बंगाली पड़ोसी परिवारों को एक दूसरे की मुसीबतों को सुलझाने में अपना सहयोग देते दिखाया गया है।

किसी बड़े शहर के किसी बड़े मकान में पंजाबी, मद्रासी तथा बंगाली परिवार साथ-साथ रह रहे हैं। चावला, अय्यर तथा बनर्जी परिवारों के बच्चे पम्मी, सरला तथा अरुण एवं ममता के बीच जाति भेद का स्वर उठता है किन्तु बनर्जी उसे नहीं मानते। वे बराबर जाति भेद को दूर कर राष्ट्र की एकता का स्वर मुखरित करते हैं। एक बार मद्रासी अय्यर की पत्नी बीमार होती है तो उनको रक्त की जरूरत पड़ती है। बनर्जी साहिब खून देने के लिए तैयार हो जाते हैं। इस प्रकार अय्यर पत्नी के जीवन की रक्षा होती है। बनर्जी को अपनी बेटी ममता की शादी करनी है। लड़के वालों की मांग दस हजार की है। इस संदर्भ में अय्यर साहब उनकी सहायता करने का वायदा करते हैं। लड़का नौकरी की तलाश में है। जहां वह नौकरी करना चाहता है वहां अय्यर का एक रिश्तेदार है। अय्यर नौकरी उसे कह कर दिलवा देंगे तथा लड़के के पिता से कहेंगे कि दस हजार के बदले नौकरी स्वीकार करो और यदि ऐसा नहीं होगा तो अय्यर को अपनी एक लड़की की शादी करनी है, वह यह मान लेगा कि दो लड़कियों की शादी करनी है। चावला भी ममता को अपनी ही बेटी समझकर उसके लिए यथोचित सहायता करने का प्रण करते हैं। इस प्रकार ममता की शादी कलकत्ता में तय हो जाती है और तीनों परिवारों की सहायता से उसकी तैयारी शुरु हो जाती है। सिद्ध हो जाता है कि देश एक है।

पड़ोसी (पृ० ६४), ले० शिवदत्त मिश्र, प्र० ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर, वाराणसी, पात्र पु० ५, स्त्री २, दृश्य १६।

घटना-स्थल गाँव, नगर, जंगल, घर।

इस सामाजिक नाटक में एकता के बल पर डाकुओं पर विजय दिखाई गई है। प्रदीप कुमार एक साहसी तथा उपकारी नौजवान है। जो डाकू अमरोला के गिरोह से अपने गांव की रक्षा करना चाहता है। देवेन्द्रसिंह

की लड़की देवकुमारी अपनी इच्छा से प्रदीप कुमार के गले में माला डालती है जिससे पिता नाराज हो जाते हैं। अचानक प्रदीप कुमार डाकुओं द्वारा गिरफ्तार कर लिया जाता है। लेकिन अपनी तीव्र बुद्धि से डाकुओं से छुटकारा पा जाता है। छुटकारा पाने पर प्रदीप कुमार अपनी पत्नी देवकुमारी के आभूषणों को बेचकर तथा संग्रामसिंह द्वारा डाकुओं के इकट्ठा किये हुए धन से एक संगठन तैयार करता है जिसमें लालसिंह सहित कुछ साथियों की मदद से डाकुओं को भगाने में तथा उन पर विजय प्राप्त करने में सफल होता है।

पतन (सन् १९३७, पृ० १५६), ले० : जी० पी० श्रीवास्तव; प्र० : साथी पब्लिशिंग हाउस, प्रयाग; पात्र : पु० १५, स्त्री ३; अंक-रहित : दृश्य . ६, ४।
घटना-स्थल : सड़क, कच्चा मकान, फुलवारी, मकान, आश्रम, स्टेशन आदि।

इस सामाजिक नाटक में स्वेच्छा प्रेम और उसका परिणाम दिखाया गया है। भूमिका के आरम्भ में नाट्यकार लिखते हैं "अपने ढंग का यह अद्वितीय तथा निराला सामाजिक नाटक मैं हिन्दी प्रेमियों की सेवा में उपस्थित कर रहा हूँ। भाषा उसकी अत्यन्त सरल तथा प्रतिदिन के संकेत की है।" आगे लिखते हैं "कि चित्रपट के लिए ऐसे भावपूर्ण नाटकों की संख्या कम होने के कारण यह चित्रपट के लिए विशेष रूप से लिखा गया है।"

सतीशचन्द्र एक आदर्श मध्यवर्गीय मनुष्य है जो पी० पी० आर्ट के ऑफिस में क्लर्की करता है। स्वाभिमानवश वह अपने लख-पति चचेरे भाई विमलचन्द्र के पास नहीं जाता परन्तु विमलचन्द्र की मृत्यु के पश्चात् मित्र प्रफुल्ल के प्रयत्न से वह विमलचन्द्र की अचल सम्पत्ति की देख-रेख करने लगता है। उसकी आदर्श पत्नी कमला की सर्प-दंश से मृत्यु हो जाने के बाद पुत्री प्रभा ही उसके लिए सब कुछ है। षोडशी प्रभा विजय नामक भ्रष्ट आचरण युवक के भुलावे में पड़कर उससे प्रेम करने लगती है। जबकि प्रभा के ब्याह की तैयारी हो रही थी तभी विजय उसे अपने प्रेमजाल में फँसाकर भगा ले जाता है। सतीशचन्द्र प्रभा की चिट्ठी से यह समझते हैं कि वह मर गई और विरक्त होकर अपनी सारी सम्पत्ति अनाथालय और धर्मशाले को दान दे देते हैं तथा स्वयं संन्यास ले लेते हैं। उधर प्रभा विजय की दुश्चरित्रता तथा उपेक्षा से पीड़ित होकर भाग जाती है परन्तु कहीं न शरण पाने के कारण सिद्धा-हन तिरती हुई मर जाती है। मृत्यु के पश्चात् उसकी लाश विजय और प्रफुल्ल आदि के समक्ष आती है। विजय को बड़ा ही पश्चा-त्ताप होता है और वह स्वयं भी अपनी सारी सम्पत्ति दान कर संन्यास ले लेता है तथा सतीश के साथ धार्मिक जीवन व्यतीत करने लगता है।

पतित पंचन (सन् १८८८), ले० बाल-कृष्ण भट्ट।

इस प्रहसन में कांग्रेस विरोधियों का परिहास दिखाया गया है। 'हिन्दी प्रदीप' में इसका धारावाहिक प्रकाशन १८८८ ई० में हुआ था। प्रस्तुत नाटक में भट्ट जी ने कांग्रेस विरोधियों की कटु आलोचना की है क्योंकि ये लोग अंग्रेजों के सहायक हैं। इस युग में सर सैयद अहमद खाँ और शिवप्रसाद ये दोनों अंग्रेजों के प्रसिद्ध खुशामदी हैं। कांग्रेस की एक सभा हो रही है उसमें पांच कांग्रेस विद्रोही आते हैं और सभा में विघ्न डालते हैं। लेकिन सभा में उनको कोई नहीं पूछता और अपना मुंह लेकर लौट आते हैं।

कुनर्क वागीश भट्टाचार्य, मुहम्मद फाजिल, सरसैयद अहमद खाँ, एक जमींदार और मुंशीसाजार ये पांच व्यक्ति कांग्रेस के शत्रु हैं। नाटक में इनका अनुचित चरित्र चित्रित किया गया है।

पतित सुमन (वि० १९९९, पृ० ७८), ले० : सेठ गोविन्ददास; प्र० : गयाप्रसाद एण्ड सन्स आगरा; पात्र : पु० २, स्त्री ४; अंक : ५; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : शहर का उद्यान, देहात का मकान, शहर का मकान।

सुमन महामाया की पालित लड़की है।

वह उसके पुत्र विश्वनाथ के साथ खेलकर पली है। दोनो मे आपस मे बडा प्रेम है। जब ये दोनों काफी बडे हो जाते हैं तो महामाया सुमन के जन्म का रहस्य खोल देती है। सुमन एक वेश्या की लडकी है। इसका परिणाम सुमन और विश्वनाथ दोनों के लिए ही बुरा निकलता है। सुमन का विवाह एक देहाती विक्रमसिंह के साथ हो जाता है। इधर विश्वनाथ का विवाह देवयानी से हो जाता है। विश्वनाथ एक दिन जमीदार एसोशियेशन के सभापति के रूप मे विक्रमसिंह के गाव मे आते है। वहा पर विश्वनाथ की भेंट सुमन से हो जाती है। विश्वनाथ विक्रम को २०० रु० माहवार पर अपने यहा रख लेते हैं। परन्तु सबको सुमन के जन्म पर संदेह हो जाता है। उसके चरित्र पर भी लोग सन्देह करने लगते हैं। इस प्रकार के घृणित जीवन से ऊब कर अन्त मे सुमन अपनी हत्या कर लेती है।

पति पत्नी (सन् १९६७, पृ० ११०), ले० अमृत कश्यप, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल घर।

इस सामाजिक नाटक मे पति-पत्नी को सुखी जीवन का मार्ग दिखाया गया है। इसमे दो गृहस्थो का वर्णन है। इसकी कथा सारे समाज की कथा है। विवाह होने से परस्पर पति-पत्नी के क्या कर्तव्य होने चाहिए इसका ही चित्रण इसमे है। पत्नी को पति पर हावी नही रहना चाहिए जैसाकि लक्ष्मी करती है। और न पति को पत्नी पर अत्याचार ही करना चाहिए जैसाकि निहाल चन्द करता है। आज के समाज म दोनो का समान स्तर है तथा दोनो के बराबर सतुलित रहने पर ही गृहस्थ की गाडी चल सकती है। यह शिक्षाप्रद नाटक है तथा वर्तमान समाज के खोखलेपन का स्पष्ट अकन करता है।

पति परमेश्वर (सन् १९००, पृ० ४८), ले० दौलतराम कुकरेजा, प्र० सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर, पात्र पु० ५, अक २।

इस सामाजिक नाटक में पति के अन्यायों को सहन करते हुए भी भारतीय नारी की पतिभक्ति दिखाई गई है। भक्तराम की तीन लडकियां हैं—रुक्मणी, कमला और रजनी। रुक्मणी का विवाह एक नपुसक व्यक्ति से हो जाता है। अत वह पितृ गृह लौट आती है। कमला को घर का काम इतना अधिक करना पडता है कि वह बीमार हो जाती है। उचित पथ्य, औषधि न मिलने से कमला की अकाल मृत्यु हो जाती है। भक्तराम के बडे लडके राम का विवाह हो जाता है। छोटा पुत्र लक्ष्मण कैप्टन बन जाता है। कुछ समय पश्चात् छोटी पुत्री रजनी का विवाह सुरेश नाम के युवक स हो जाता है जो कुसगति मे पडकर अपनी पत्नी और पुत्र को घर से निकाल देता है। इधर भक्तराम का स्वर्गवास हो जाता है। राम सुरेश को समझाता है परन्तु वह उसको भी अपमानित करता है। रजनी स्वय पढ-लिखकर एक कॉलिज की प्रिंसिपल बन जाती है। अन्त मे सुरेश ठोकरें खाकर सन्मार्ग पर आता है। जब वह अपनी पत्नी रजनी से मिलता है तो उसे मालूम होता है कि रजनी अब भी उसे परमेश्वर की तरह पूजती है।

पति भक्ति (पृ० ११२), ले० विश्वनाथ पोखरेल, प्र० ठाकुर प्रसाद गुप्ता बुकसेलर, वाराणसी, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक ३, दृश्य ६, ४, ३।

इस शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक मे पत्नी की साधुता स पति का सुधार होता है। इसमे लक्ष्मी पतिभक्त पत्नी है। लक्ष्मी का पति अमीरचन्द शराब के नशे मे एक वेश्या कुन्दन से प्यार करने लग जाता है और लक्ष्मी तथा पुत्र महेन्द्र को घर से निकाल देता है। आत्माराम एक रईस व्यक्ति है जो अमीरचन्द को बुरे कर्मों मे बचने के लिए समझाता है तथा दुखी लक्ष्मी को सान्त्वना देता है। अकस्मात् अमीरचन्द तथा कुन्दन मे बिगाड हो जाता है। गुण्डा युसुफ कुन्दन से प्रेम करता है किन्तु वह गुण्डे को नही चाहती। वह अमीरचन्द का कत्ल कर देता है जिसके अपराध मे मानिकचन्द

गिरफ्तार हो जाता है। अन्त में मित्र आत्मा राम की मदद से लक्ष्मी जज के समक्ष हत्या का अपराध अपने ऊपर मान लेती है। लक्ष्मी की पतिभक्ति को देखकर कुन्दन वेश्या भी वहाँ प्रकट होकर सारा वृत्तान्त बता देती है। अन्त में सभी को छुटकारा मिल जाता है किन्तु युसुफ को काला पानी की सजा दी जाती है।

पतिभक्ति (सन् १९२३, पृ० १०४), ले० : श्यामाचरण जौहरी; प्र० : उपन्यास बहार ऑफिस, काशी; पात्र : पु०, स्त्री; अंक : ३; दृश्य : ७, ३, ३।
घटना-स्थल : तपोवन, शिविर, फुलवारी, नदी तट, राजदरबार, जंगल का रास्ता।

इसमें सती सुकन्या के पातिव्रत की महिमा दिखाई गई है। सुकन्या बाल्यकाल में सखियों के साथ एक तपोवन में जाती है। उसे दो चमकते हुए रत्न जैसे पदार्थ मिट्टी के ढेर में दिखाई देते हैं। सुकन्या उनमें काँटे चुभा देती है। उन रत्नों से रक्त की धारा प्रवाहित होती है। फिर किसी के कराहने की आवाज सुनाई पड़ती है। ज्ञात होता है कि वह च्यवन ऋषि वहाँ तपस्या कर रहे थे। अतः सुकन्या माता-पिता के मना करने पर भी बूढ़े च्यवन से विवाह कर आजीवन उनकी सेवा करती है। उसकी तपस्या से च्यवन वृद्ध से युवा बन जाते हैं।

पतिभक्ति नाटक अर्थात् (सती अनुसूया) (सन् १९६५, पृ० ७३), ले० : दाऊदयाल गुप्ता 'साहित्य रत्न' प्र० : हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा; *पात्र:* पु० १२, स्त्री ६; *अंक :* ३; *दृश्य :* १०, ५, ४।

इस पौराणिक नाटक में सती अनुसूया की पतिभक्ति दिखाई गई है। सती अनुसूया अपने पति के लिए जल की तलाश में व्यग्र भाव से घूमती हुई भागीरथी से प्रकट होकर जल देने की प्रार्थना करती है और जल पाकर पति को भी गंगा का दर्शन कराती है। वह अपने सतीत्व के प्रताप से तपस्विनी सत्यवती को सदेह स्वर्ग भेजती है जिससे स्वर्ग में कुहराम मच जाता है। सत्यवती स्वर्ग से वापस आती है और नित्यानन्द सूरदास से शादी कर उनकी सेवा करती है। एक दिन पति-मृत्यु के ऋषि शाप को सतीत्व के बल से रोक लेती है। एक दिन वह सती सूर्य को उगने से रोक देती है। पर अन्त में पति के मरने पर प्राण त्यागती है पर अनुसूया के प्रताप से दोनों जीवित हो जाते हैं। त्रिदेवियाँ काम भेजकर सती अनुसूया की परीक्षा लेती हैं। 'काम' अत्रि के वेश में सती को छलना चाहता है। सती तप से उसे पहचान जाती है। काम नतमस्तक हो स्वर्ग लौट जाता है।

त्रिदेवियाँ अपने-अपने पतियों ब्रह्मा, विष्णु, महेश से सती अनुसूया की परीक्षा लेने को कहती हैं। वे तीनों जाते हैं और अत्रि मुनि के आदेश से तीनों को छः-छः मास के पुत्र बनाकर अनुसूया हाथ से अपना दुग्ध पिलाती है। त्रिदेवियाँ विचलित होकर सती के पास संन्यासिनी बनकर आती हैं और अपने-अपने पति माँगती हैं। सती पहचान जाती है और अत्रि के आदेश से उन्हें अपने स्वरूप में होने की अनुमति प्रदान कर तीनों देवियों को सौंपती है। उनके सतीत्व से त्रिदेवियाँ, इन्द्र, काम, त्रिदेव आदि नतमस्तक होते हैं।

नाटक में मध्यान्तर के निमित्त हास्य कथा का आयोजन किया गया है। अवधूनाथ, किचलू, बदलू, कंकाली आदि के प्रसंग अधिकारी कथा के साथ-साथ चलते रहते हैं। नाटककार ने सती धर्म की प्रतिष्ठा तथा नैतिक शिक्षा देने के लिये ही नाटक लिखा है।

पत्नी-प्रताप या सती अनुसूया नाटक (सन् १९०७, पृ० ११७), ले० : मुंशी नायक साहब, शिवराम दास गुप्त; प्र० : उपन्यास बहार ऑफिस, बनारस; *पात्र :* पु० ४, स्त्री ६; *अंक :* ३; *दृश्य :* ८, ६, ३।

इसकी कथा उपर्युक्त नाटक जैसी ही है।

पत्नी-प्रताप (पृ० १७७), ले० : नारायण प्रसाद बेताब; प्र० : बेताब प्रिंटिंग वर्क्स, देहली; *पात्र :* पु० ८, स्त्री ७; *अंक :* ३; *दृश्य :* ८, ८, ६।

यह एक पौराणिक नाटक है। इसमें अत्रि और अनुसूया की प्रसिद्ध कथा है। देवी अनुसूया के पास ब्रह्मा, विष्णु, महेश अतिथि के रूप में आते हैं और अनुसूया से दिगम्बरा रूप में भोजन कराने के लिए आग्रह करते हैं। तब अनुसूया त्रिदेवों को अपने शिशु रूप में देखकर भोजन कराने को प्रवृत्त होती है और उसी समय स्तनों से दूध गिरने लगता है फलतः ब्रह्मा, विष्णु, महेश, दत्तात्रेय भगवान के रूप में प्रकट हो अनुसूया को कृतार्थ करते हैं।

पत्नी प्रसाद (सन् १६७०, पृ० ११), ले० : शंकरदेव, प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, पात्र पु० ६, (बालक-वृन्द और ब्राह्मण समूह), स्त्री २, (बहुत सी ब्राह्मण वधुएं और गोपियाँ), अंक-दृश्य रहित।

इस पौराणिक नाटक में ब्राह्मणियों का कृष्ण प्रेम दिखाया गया है। एक दिन कृष्ण गोपगणों के साथ गोचारण हेतु वृन्दावन में घूमते-घूमते एक अशोक वृक्ष की छाया में क्षुधातुर होकर बैठे हैं। गोपगण कृष्ण से अपनी क्षुधा की चर्चा करते हुए भोजन की व्यवस्था का आग्रह करते हैं। पास में ब्राह्मण एक यज्ञ कर रहे हैं। कृष्ण भूखे ग्वालों को यज्ञ में ब्राह्मणों से याचना के लिए भेजते हैं किन्तु गर्व से भरे ब्राह्मण ग्वाल बालों की यज्ञ में प्रार्थना ठुकरा देते हैं। ग्वाल बाल कृष्ण से ब्राह्मणों की भर्त्सना की चर्चा करते हैं। तब कृष्ण ग्वालों को ब्राह्मण स्त्रियों के पास भेजते हैं। ब्राह्मण स्त्रियां कृष्ण का सादेश सुनकर ग्वाल बच्चों को भोजन देती हैं और कृष्ण की श्रद्धापूर्वक आराधना करती हैं। ब्राह्मण अपनी स्त्रियों को कृष्ण की आराधना से रोकते हैं और एक निर्दय ब्राह्मण तो अपनी स्त्री को घर में बन्द कर देता है। वह ब्राह्मणी कृष्ण के चरणों का ध्यान करती हुई शरीर त्याग देती है। उस निष्ठुर ब्राह्मण के हृदय में परिवर्तन होता है और वह अपने निष्ठुर कृत्यों पर पश्चात्ताप करता है। फिर कुमारियां कृष्ण के पास आती हैं। कृष्ण और ब्राह्मण कुमारियों का मार्मिक संवाद होता है। यज्ञ में द्विज कुमारियों को आमन्त्रित देवताओं का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। कृष्ण की शक्ति देखकर यज्ञकर्त्ता ब्राह्मण चकित रह जाते हैं और अपना गर्व त्यागकर कृष्ण की भक्ति करने लग जाते हैं।

पत्नी व्रत वा ऋतुध्वज मदालसा (सन् १६२१, पृ० १०३), ले० श्रीयुत चन्द्र बरेली, प्र० उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, बनारस, पात्र पु० ३, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ६, ८, ७।
घटना स्थल राजमहल शत्रुजित का दरबार।

इस पौराणिक नाटक में सती मदालसा की कथा के द्वारा सतीत्व की महिमा दिखाई गई है। यह नाटक लेखक ने १८ वर्ष की अवस्था में लिखा है। संवाद पद्य-गद्यात्मक हैं। मदालसा कहती है—दामिनि दमके चहुतरफ रह्यो है मघवा छाय। रिमझिम पड़त फुहार सखीरी पिय अजहूँ नहीं आय।

सखियां—आवेंगे श्री महाराज, महारानी करलो शृंगार। नाटक के अन्त में महाराज ऋतुध्वज एवं मदालसा को सौंपकर तपस्या के लिए तपोवन चले जाते हैं। इस प्रकार इस नाटक में सतीत्व की महिमा का वर्णन है।

पद्मिनी (सन् १६२६, पृ० १६०), ले० किशनचन्द जेबा, प्र० नेशनल बुक डिपो नई सड़क, देहली, पात्र पु० ६, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ६, ५, ६।
घटना-स्थल वाटिका, राजा भीमसिंह का राज प्रसाद, शाही दीवान, रास्ता, रनवास, चिता की राख।

इसमें इतिहास-प्रसिद्ध सती नारी पद्मिनी के बलिदान की घटना व्यक्त की गई है। पद्मिनी के सौंदर्य की प्रशंसा सुनकर अलाउद्दीन चित्तौड़ पर आक्रमण करता है। वह दर्पण में पद्मिनी की छाया देखकर उसे अधिकार में करने की चेष्टा करता है। तीसरे अंक में रूह प्रकट होकर अलाउद्दीन को समझाती है पर वह अडिग रहता है। नदी और वदी भी पात्र बनकर उसे समझाती हैं पर वह घोड़े से राजपूतों को अपनी विशाल शक्ति

से पराभूत करता है। राजपूत युद्ध में काट मरते हैं और पद्मिनी सहित राजपूतनियाँ जौहर में भस्म हो जाती हैं। राख की ढेर देखकर अलाउद्दीन प्रतिज्ञा करता है—

न हो पूजन जहाँ दोनों का
ऐसा घर नहीं होगा;
गौ और धर्म को भारत में
कोई डर नहीं होगा ।।

भारतीय पतिपरायण नाटक माला का यह प्रथम रत्न है।

पद्मिनी (सन् १९५४, पृ० ६८), ले० : पी० दामोदर शास्त्री; प्र० : विजय प्रकाशन मथुरा; पात्र : पु० १०, स्त्री ३; अंक : ४; दृश्य : ४, १०, ४, १।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। पद्मिनी के बलिदान के आधार पर राजपूत स्त्रियों का सतीत्व दिखाया गया है। अलाउद्दीन अपनी गुजरात विजय के बाद कमलादेवी से प्रेमालाप कर रहा है। कमलादेवी अपने अकेलेपन से ऊब चुकी है। वे अपने साथ देवलदेवी तथा अन्य रानियों के रहने के लिए आकांक्षा करती हैं। तब अलाउद्दीन कहता है कि मैं तुम्हारे साथ रहने के लिए चित्तौड़ की पद्मिनी को लाऊंगा जो कि बहुत सुन्दर है तथा उसकी प्रशंसा मैंने बहुतों से सुन रखी है। तब कमलादेवी कहती—है किन्तु वह राजपूत रमणी है, ध्यान रखना। उसका यही कथन ही पद्मिनी के शौर्य का प्रमाण देता है। अलाउद्दीन चित्तौड़ पर आक्रमण करता है किन्तु उसकी विजय नहीं होती। पर अन्त में वह धोखे से भीमसिंह को गिरफ्तार कर लेता है। गोरा बादल अलाउद्दीन के विरुद्ध युद्ध करते हैं किन्तु हारते हैं। अलाउद्दीन जीतने के बाद राजमहल में प्रवेश करता है पर तब तक पद्मिनी चिता में जलकर जौहर कर लेती है और वह हाथ मलता रह जाता है।

नाटककार उसके बाद चौथे अंक में चित्तौड़ को पुनः संगठित होने की कल्पना कर अजयसिंह को महाराजा बनाता है तथा चित्तौड़ की स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण बनाने का प्रयास करता है।

पद्मिनी (सन् १९५६, पृ० २३४), ले० : पं० रूपनारायण पाण्डेय; प्र० : रामकुमार प्रेस, बुक डिपो, लखनऊ; पात्र : पु० १४, स्त्री ६; अंक : ५; दृश्य : ६, ५, ६, ८, ६। घटना-स्थल : चित्तौड़, युद्ध भूमि, जौहर ।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है जिसमें अलाउद्दीन की क्रूरता, राजपूतों की शूरता और राजपूतनियों की वीरता प्रदर्शित है। दिल्ली के तख्त पर अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा जलालुद्दीन को मारकर बैठ गया। वह उस समय वजीर की पुत्री नसीबन से प्रेम करता था किन्तु सम्राट बनते ही उसे त्याग दिया। यद्यपि उसका निकाह हो चुका था। नसीबन चित्तौड़ में आकर शरण लेती है। जब बादशाह के सिपाही गुजरात जीतने जाते हैं तब वह उनसे मिलती है। गुजरात की रानी कमलादेवी अपने पति के मारे जाने के बाद अलाउद्दीन के हरम की रानी बन जाती है। अलाउद्दीन उसकी प्रशंसा करता है तब नसीबन कहती है कि चित्तौड़ की रानी इससे कई गुना सुन्दर है। ऐसी तो उसकी बाँदियाँ हैं। यह सुन अलाउद्दीन उसे देखने और प्राप्त करने की प्रतिज्ञा करता है पर नसीबन कहती है कि आप जीते जी उसे देख नहीं सकते। अलाउद्दीन चित्तौड़ पर आक्रमण करता है पर हार जाता है तब वह कूटनीति से काम लेता है और राणा भीमसिंह का मेहमान बन अन्दर जाता है। फिर राणा भीमसिंह उसे पहुँचाने जाता है तब अलाउद्दीन उसे गिरफ्तार करवा लेता है। पद्मिनी गोरा और बादल की सहायता से ७०० डोलियों में आत्मसमर्पण करती है किन्तु इसमें सभी सिपाही थे बादल राणा को अलाउद्दीन के अधिकार से मगा लाता है। इसमें नसीबन बड़ी मदद करती है। अन्त में बादशाह की सेना चित्तौड़ को घेर लेती है। राणा भीमसिंह और पद्मिनी आपस में मिलते हैं और एक साथ जौहर करके चिता में जल जाते हैं तथा पद्मिनी अपने सतीत्व की रक्षा करती है।

जायसी के पद्मावत से इस कथा में बड़ा अन्तर है। पात्र और कथा में काफी परिवर्तन है जो कि नाटककार की कल्पना

का प्रमाण मालूम पड़ती है।

पनाह (सन् १९५७, पृ० १३९), ले० बलराम चौहान, प्र० आदर्श पुस्तक भंडार, कलकत्ता, पात्र पु० १३, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ८, ७, ६।
घटना स्थल राजदरबार, शाही महल, युद्ध-स्थल, शिविर, शाही बाग, राजपथ।

ऐतिहासिक धरातल पर आधारित 'पनाह' नाटक राजपूतों के शौर्य, स्वाभिमान की उज्ज्वल गाथा है। शरण में आये हुए की हर प्रकार से अपनी जान की बाजी लगाकर भी रक्षा करना भारतीय आदर्श है—यही स्पष्ट करना नाट्यकार का उद्देश्य है।

प्रथम अंक का प्रथम दृश्य शिविर का है जहाँ मीर मुहम्मद जलीलो की गुलामी बर्दाश्त न कर सकने के कारण रणथम्भौर के राजा हम्मीर की पनाह में जाता है। दूसरा दृश्य राजदरबार का है—जहाँ राजा हम्मीर की न्यायप्रियता का चित्रण हुआ है। भाई होते हुए भी भोजदेव को उसके विश्वासघात के दण्डस्वरूप निर्वासन देते हैं तथा अलाउद्दीन के शौर्य की परवाह न करते हुए उसके बागी मीर मुहम्मद को पनाह देते हैं। तीसरा दृश्य शाही महल का है जिसमें बागी मीर मुहम्मद को पनाह देने वाले राजा हम्मीर पर आक्रमण की बात होती है। चौथा दृश्य शाही महल का है जिसमें शाहजादा मुबारक के माध्यम से राजाओं की विलासिता का यथार्थ चित्रण किया गया है। बादशाह का कानून केवल प्रजा के लिए है। शहजादे के लिए नहीं जो शराब के प्यालों में डूबा हुआ है। नसरत खाँ शाहजादा मुबारक को शहर कोत-वाल की लड़की नादिरा के लिए उकसाता है और दोनों नादिरा के पास जाते हैं। पाँचवें दृश्य में अलाउद्दीन गुजरात की रानी कमला की जिद् को देखते हुए उसे हथकड़ियाँ पहना खाना बन्द करने का हुक्म देता है। छठे दृश्य में शाहजादा मुबारक के लाख प्रलोभनों पर भी नादिरा नहीं मानती और वे उसे पाँच दिन का वक्त सोचने के लिए देते हैं—कारण नादिरा मीरमुहम्मद को चाहती है। सातवाँ दृश्य शाही महल का है। सिपाही भोजदेव को कैदी जासूस समझ राजा के सामने पेश करते हैं। अलाउद्दीन भोजदेव को राजा हम्मीर का भाई जानकर उसके मिलता बढ़ाकर शाही महल में रहने की व्यवस्था करते हैं तथा रणथम्भौर पर हमला करने के लिए फौज कूच करती है। आठवाँ दृश्य शाही बाग का है जहाँ कमला भोजदेव को अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेष्ट करती है तथा भोजदेव शाहजादा मुबारक के इरादे को नाकाम कर देता है और नादिरा भाग जाती है।

दूसरे अंक के पहले दृश्य में राजदरबार में अलाउद्दीन का पत्र पढ़कर आक्रमण की तैयारी की जाती है जिससे राजपूतों का शौर्य झलकता है। दूसरे दृश्य में पठान सिपाही दुश्मन की ताकत से परेशान हैं और शाहजादा मुबारक इश्क में अंधा होकर किले की तरफ बढ़ता है जहाँ नादिरा भागकर छिप गई है। तीसरे दृश्य में पुरुषवेश में नादिरा को मीर मुहम्मद पहचान नहीं पाता और रतिपाल नादिरा को जासूस समझ कर मीरमुहम्मद की वफादारी पर शक करते हैं। मीरमुहम्मद झूठा इल्जाम नहीं सह सकता और अकेले दुश्मन से जूझने के लिए चल पड़ता है। चौथे दृश्य में मीरमुहम्मद नसरत खाँ को कत्ल कर शाहजादे का पीछा करता है और राजा हम्मीर नादिरा को रणथम्भौर ले जाते हैं। पाँचवें दृश्य में राजा हम्मीर विजय के उपलक्ष्य में मीरमुहम्मद नादिरा को सौंप देते हैं। छठे दृश्य में पठान सैनिक अपनी हार का कारण शाह-जादा मुबारक को मानकर उसे परेशान करते हैं। सातवें दृश्य में भोजदेव अलाउद्दीन को कमला पर जुल्म करने से रोकता है। और भोजदेव पर अलाउद्दीन के वार करने पर बीच में आकर कमला अपने प्राण दे देती है।

तीसरे अंक में अलाउद्दीन अपनी हार का जीत में बदलता है। सन्धि के नाम पर तथा भोजदेव का झूठा नाम लेकर छल से रण-थम्भौर जीत लेता है इसमें राजा हम्मीर की शरणागत वत्सलता का सुन्दर चित्रण है। वे अपनी मौत से पहले मीरमुहम्मद को किसी सुरक्षित स्थान पर भेज देना चाहते हैं और मीर भी उनकी पूरी सहायता करता है।

पन्ना धाय (पृ० १२०), ले० शिवप्रसाद चारण, प्र० महर्षि मालवीय इतिहास

परिषद् उपासना मन्दिर उगड्डा (गढ़वाल), पात्र : पु० १७, स्त्री ७; अंक : ३; दृश्य : १०, १०, ७।
घटना-स्थल : चित्तौड़ कमलनेर, वनमार्ग राजप्रासाद।

प्रस्तुत ऐतिहासिक नाटक में सिसोदिया कुल के वंशधर की रक्षा करने वाली पन्ना धाय का पुत्र-बलिदान दिखाया गया है। राजा विक्रमादित्य को वनवीर मार डालता है। विक्रमादित्य के मारे जाने से प्रजा वनवीर के विरुद्ध हो जाती है। वह उदयसिंह को भी मार डालने की बात करता है परन्तु पन्ना धाय इस बात को सुन लेती है और उसे बचा लेती है। बड़ा होकर उदयसिंह छोटी सी सेना और दूसरे राजाओं का सहारा लेकर वनवीर पर चढ़ाई कर देता है। वनवीर हार जाता है। अन्त में वनवीर को राजगद्दी से उतरना पड़ता है तथा उदयसिंह वनवीर को क्षमा भी कर देता है।

परदा (सन् १९३६, पृ० ५६), ले० : श्रीयुत महावीर वेनुवंश; प्र० : हिन्दी प्रचारिणी सभा यवतमाल; पात्र : पु० १३, स्त्री ८; अंक : १; दृश्य : ८।
घटना-स्थल : घर, सभास्थल।

'परदा' एक सामाजिक नाटक है। इसमें पर्दाप्रथा पर प्रहार किया गया है। नाटक की एक पात्र चम्पा के शब्दों में—"हमारी सभा प्रस्ताव करती है कि स्त्री समाज में पर्दारूपी एक अगाध्य बीमारी घुसी हुई है, इससे स्त्रियों का शारीरिक, नैतिक और आत्मबल नष्ट होकर स्त्रियां डरपोक और कायर बन जाती हैं। अन्त में क्षय जैसी बुरी बीमारी के चंगुल में फंसकर शीघ्र ही काल के जाल में समा जाती हैं। इसलिए स्त्रियों को पर्दा एकदम हटा देना चाहिए।

परदे की ओट अक्ल की चोट उर्फ मूर्खानन्द (सन् १९६४, पृ० ६२), ले० : मूलचन्द बेताब; प्र० : जवाहर बुक डिपो, मेरठ; पात्र : पु० ७, स्त्री ७।
घटना-स्थल : सेठ का घर, विवाह मंडप।

इस सामाजिक नाटक में चार विवाह करने वाले मूर्खानंद का चित्रण है।

यह एक देहाती ड्रामा है। जबलपुर शहर के सेठ लक्ष्मी चन्द जौहरी के चार लड़के हैं। उनमें से तीन की शादी हो चुकी है। सबसे छोटे विक्रमसेन उर्फ मूर्खानन्द ही सदैव शादी से इन्कार करता था; किन्तु जब उनकी तीनों भाभियां माला, बाला, उर्मिला उसे ताने मारने लगती हैं, तब वह अपने साहस, बुद्धि आदि से 'राजा, वजीर, नट और सेठ की लड़की से कुल चार शादियां करता है। इस तरह विक्रमसेन उर्फ मूर्खानन्द काफी मालदार और राजा बन बैठता है।

परमभक्त प्रह्लाद-नाटक (सन् १९३३, पृ० १८४), ले० : राधेश्याम कथावाचक; प्र० : राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली; पात्र : पु० १०, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : ७, ६, ६।
घटना-स्थल : हिरण्यकश्यप की राजधानी राक्षस-दुर्ग, खम्भा।

इस पौराणिक नाटक में प्रह्लाद की सत्यनिष्ठा और ईश्वर-भक्ति दिखाई गयी है; हिरण्यकश्यप एक आततायी एवं परम अभिमानी राजा है। वह ईश्वर को नहीं मानता तथा स्वयं को ईश्वर कहता है। ईश्वर का नाम लेने वालों को वह मृत्युदण्ड देता तथा नाना प्रकार से प्रताड़ित करता है। पर उसी का पुत्र प्रह्लाद ईश्वर का परम भक्त है। हर कष्ट के बाद भी वह ईश्वर का नाम लेना नहीं छोड़ता जिसके परिणाम-स्वरूप हिरण्यकश्यप उसे मार डालना चाहता है; परन्तु भगवान् स्वयं नरसिंह के रूप में प्रकट हो उसकी प्राण रक्षा करते हैं एवं हिरण्यकश्यप को मार डालते हैं।

परमवीर चक्र (वि० २०१०), ले० : कुँवर वीरेन्द्र सिंह रघुवंशी; प्र० : आर्मी गारकेट्टी स्टोर्स, दिल्ली; पात्र : पु० १८, स्त्री २; अंक : २, दृश्य : ८, ७।

इस सामाजिक नाटक में प्रेमी-प्रेमिका का कष्ट सहन के उपरान्त मिलन और देश-हित दिखाया गया है।

नाटक का नायक रणधीर अपने सहयोगी विजय सिंह एवं जमाल के सहयोग से असामाजिक तत्वों के चंगुल से फँसी अछूत कन्या

निर्मला का उद्धार करता है। निर्मला अपने उद्धारकर्ता रणधीर के प्रति सहज रूप से आकृष्ट हो जाती है। विजय सिंह निर्मला की विधर्मी सखी नसीम के प्रेमपाश में आबद्ध हो जाता है, परन्तु पारिवारिक विरोध के कारण वे प्रेमी-प्रेमिका वैवाहिक बंधन में बँध नहीं पाते। हताश होकर रणधीर एवं विजय सैनिक प्रशिक्षणार्थ विदेश चले जाते हैं। निर्मला एवं नसीम 'परिचारिका' का पद ग्रहण कर देश-सेवा का मार्ग पकड़ती हैं। कतिपय स्वार्थान्ध व्यक्तियों के कारण देश का विभाजन होता है। काश्मीर पर पाकिस्तानी सैनिक प्रबल आक्रमण करते हैं। जनरल करियप्पा के अनुरोध पर रणधीर एवं विजय अपने प्राणों पर खेल कर शत्रुओं पर प्रबल आक्रमण करते हैं। अपने बुद्धि-चातुर्य से वे शत्रुओं से घिरी भारतीय सेना की रक्षा करने में सफल होते हैं। इस प्रयत्न में रणधीर एवं विजय दोनों स्वयं युद्ध के अग्रिम मोर्चे में घिर जाते हैं। संकट की वेला में निर्मला एवं नसीम दोनों किसी प्रकार अपनी प्राण-रक्षा करती हैं। शत्रु का पराभव हो जाता है। रणधीर एवं विजय को अपने शौर्यपूर्ण कार्यों के लिए "परमवीर चक्र" का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त होता है। रणधीर निर्मला और विजय तथा नसीम वैवाहिक बन्धन में आबद्ध हो जाते हैं।

परशुराम नाटक (सन् १८३१ पृ० १२६), ले० अज्ञात, प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर राज-दरवाजा, बनारस, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ६, ७, ५। घटना-स्थल आश्रम-स्थान, वन, धनुषयज्ञ।

यह पौराणिक नाटक है। इसमें परशुराम की पौराणिक कथा नाटकीय ढंग से प्रस्तुत की गई है।

परशुराम कार्त्तवीर्य संहार (सन् १६५०, पृ० ११२), ले० विश्व, प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर, बनारस, पात्र पु० ६, स्त्री १, अंक ३, दृश्य ६, ७, ४। घटना स्थल तपोवन, युद्धक्षेत्र, राजप्रासाद।

यह एक पौराणिक नाटक है, जिसमें परशुराम पितृवध का बदला कार्त्तवीर्य से लेते हैं। ऋषि जमदग्नि के यहाँ भगवान विष्णु परशुराम के रूप में क्षत्रियों के अत्याचार को पृथ्वी से हटाने के लिए अपना छठा अवतार लेते हैं। परशुराम पितृभक्त हैं। एक बार उनकी माँ रेणुका अपने पति जमदग्नि के लिए गंगा में जल लेने जाती हैं, किन्तु वहाँ सध्या के सुहावने वातावरण को देखने में देर हो जाती है अतः ऋषि को सन्ध्या में अनावश्यक विलम्ब होता है। इससे वे बड़े कुपित होते हैं और परशुराम को आज्ञा देते हैं कि पति की अवज्ञा करने वाली इस स्त्री का सिर काट दो। परशुराम पिता की आज्ञा सर्वोपरि मान ऐसा ही करते हैं किन्तु जमदग्नि पुनः अपने तपोबल से रेणुका को जीवित कर देते हैं।

जमदग्नि के पास इन्द्र की दी हुई कामधेनु गाय है, जिसे कार्त्तवीर्य हठात् लेने का उपक्रम करता है और जमदग्नि के न देने पर उनकी हत्या करता है। परशुराम को पता चलने पर वे कार्त्तवीर्य को समूल नष्ट करने की प्रतिज्ञा करते हैं। आखिरकार वे कार्त्तवीर्य, उनकी पत्नी, एवं पुत्र निमिवीर्य की हत्या कर क्षत्रियों को समूल नष्ट कर अपने पिता की हत्या का बदला लेते हैं।

परशुराम-विजय व्यायोग (सन् १८३५, पृ० ३०), ले० गणपति श्री कपिलेन्द्रदेव, प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, पात्र पु० ३, स्त्री २, अंक-दृश्य-रहित। घटना-स्थल शिव निवास, कैलास, गगानट, मार्ग।

इस पौराणिक नाटक में परशुराम और सहस्रबाहु का युद्ध दिखाया गया है।

भगवान् विष्णु, कृष्ण और रुक्मिणी की स्तुति के उपरान्त सूत्रधार जगन्नाथ-महोत्सव की दर्शनार्थी जनता को नाटक के अभिनय की सूचना देता है। इसके बाद सूत्रधार पारिपार्श्विक से शंकर के शिष्य उस परशुराम की प्रशंसा करता है जो तीनों कालों के विज्ञाता हैं। पारिपार्श्विक भी कपिलेन्द्र की उपमा परशुराम से देता है। इसके बाद परशुराम जी आकर भगवान् शंकर के आशीर्वाद तथा अपने पौरुष का वर्णन करते हैं। अचानक पितृ-शिष्य शाण्डिल्य की आवाज सुनकर

पहचान लेते हैं। शांडिल्य के मुख से पितृवध का समाचार सुनकर वे शोक-संतप्त हो जाते हैं और पितृवध कर्त्ता कार्त्तवीर्य के भुज समूह को नष्ट करने तथा विकराल रक्त-पान की स्थिति उत्पन्न करने की प्रतिज्ञा करते हैं। इसके उपरान्त परशुराम शांडिल्य से अलग होकर सहस्रबाहु को ढूंढने चले जाते हैं तथा शांडिल्य भी सहस्रबाहु के पास जाकर परशुराम के क्रोध का सारा कारण बताते हैं। सहस्रबाहु क्रुद्ध होता है तथा परशुराम और शांडिल्य को मारना चाहता है, लेकिन विदूषक उसे इस कुकृत्य से रोकता है। फिर भी राजा सहस्रबाहु तीनों लोकों को ब्राह्मणों से रहित कर देने की प्रतिज्ञा करता है। इसी बीच राज-महिषी चन्द्रवदना आकर राजा से अपने स्वप्न का सारा हाल बताती है। वह स्वप्न में देखती है कि एक ब्राह्मण-कुमार हाथ में धनुष-बाण लिये हुए आता है और वह राजा सहस्रबाहु का सिर काट डालने को कहता है। चारों तरफ रुधिर की वृष्टि हो रही है। यह सुनकर राजा अपने सेनापति धनुप्रताप को चतुरंगिणी सेना तैयार करने का आदेश देता है। इतने में परशुराम का आगमन होता है। युद्ध का आह्वान होता है। परशुराम अपने परशु से हैहयराज सहस्रबाहु की सब भुजाओं को काट देते हैं।

यह नाटक संस्कृत में है किन्तु गीत हिन्दी में हैं।

परियों की हवाई मजलिस उर्फ कमरुज्जमा और माहलका नाटक, (सन् १८८३), ले० : मोहम्मद मियाँ 'मंजूर' ; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : ३।

घटना-स्थल : परिस्तान, राजमहल, आकाश

इस पद्यबद्ध तिलस्मी नाटक में शाहजादा और शाहजादी की प्रेमकथा जादू और तिलस्म के आधार पर वर्णित है।

बादशाह जहाँदारशाह, हलब नामक नगर का राजा था। उसका पुत्र शाहजादा स्वप्न में कोहकाफ (काकेशस पर्वत) के बादशाह शाहे जीन की पुत्री माहलका को देख उस पर मुग्ध हो जाता है। उसका स्वप्न प्रातः देर तक चलता रहा। शाहजादे को देर तक सोता देख नौकर उसे जगाता है। कमरुज्जमा स्वप्न में व्याघात उत्पन्न करने पर क्रुद्ध हो नौकर को मारने दौड़ता है। वह मंत्री की शरण जाता है। कमरुज्जमा वजीर के विरुद्ध भी तलवार उठाता है किन्तु शाहजादी की तलाश में सहायता का वचन देने पर वह उसे छोड़ देता है। अब दोनों शाहजादी माहलका की खोज में चल पड़ते हैं, किन्तु माहलका का महल परिस्तान होने के कारण दैवी शक्तियों से सुरक्षित है। उसमें प्रवेश के लिये जादू और तिलस्म का ज्ञान आवश्यक है। संयोग से कमरुज्जमा को इस साहसिक यात्रा में एक सिद्ध मिलता है। सिद्ध अपने दिव्य ज्ञान से शाहजादे की अभिलाषा ताड़ कर उसे एक 'असा' (गदा) देकर समझाता है कि इससे वह सारी कठिनाइयों पर विजयी होगा। अब क्या था? कमरुज्जमा माहलका के रक्षकों को 'असा' से किनारे लगा कोहकाफ तक पहुँच जाता है।

परिस्तान की हवाई मजलिस में परियाँ माहलका के लिये गजल पेश करती हैं और वह पवन-मार्ग से अदृश्य होती है। उसकी दाया शाहजादे कमरुज्जमा के पहुँचने का समाचार उसे देती है, किन्तु शाहजादी तो विरह-विह्वला उन्मना ही बनी रहती है। दाया उसे समझाती है और कहती है तेरी शादी तो उससे ही हो गई है। उधर शाहजादे को देखकर देव दंग रहता है किन्तु 'असा' से वह नतमस्तक हो ताली बजाकर माहलका को बुलाता है। दोनों एक दूसरे को देखकर अपना प्यार प्रकट करते हैं। संयोग से जीन का शाह भी उपस्थित होता है और अपना आश्चर्य प्रकट करता है। कमरुज्जमा शाहे जीन से अपनी इच्छा प्रकट करता है, और शाह दोनों के हाथ पकड़ा देता है। नृत्य-गीत के साथ नाटक समाप्त हो जाता है।

यह नाटक इतना प्रसिद्ध हुआ कि इसके अनुकरण पर हाफिज अब्दुल्ला ने 'हवाई मजलिस व हतफ नौरंग तिलस्में', मुंशी 'रौनक' ने परियों की हवाई मजलिस, मौलवी मोहम्मद अब्दुल ने जलस-ए-परिस्तान, 'आराम' ने कमरुज्जमा व बज्मआरा लिखा। उक्त

समस्त नाटकों की कथा वस्तु समान है। केवल नामों में अन्तर पाया जाता है। इम्पीरियल थियेट्रिकल कंपनी द्वारा सन् १८८३ में धौलपुर में अभिनीत।

परिवर्तन ही उन्नति है (सन् १६६६, पृ० ६६), लें० महादेव प्रसाद शाण्डिल्य 'माधव', प्र० रामकुँवर प्रकाशन, बालाघाट, पात्र पु० १८, स्त्री ०, अंक ३, दृश्य ४, ३, ५।
घटना-स्थल राजस्थान का गाव, राजमहल।

यह नाटक सामयिक समस्याओं पर आधारित है। राजस्थान में सन् १६४७ में भीषण अकाल पडता है, जिससे जनता में त्राहि-त्राहि मच जाती है। राजा कर्णसिंह जनता की मदद के लिए चिन्तित हैं। व नगर के सेठों से सहयोग चाहते हैं किन्तु व्यावसायिक मण्डली के मंत्री सेठ गिरधारी लाल समय से फायदा उठाने के लिए सभी सेठों से अनाज को गोदामों में दबा देने का सुझाव देते हैं। फलत सभी व्यापारी ऐसा ही करते हैं जिससे अकाल की स्थिति और बिगड जाती है, किन्तु राजा कर्णसिंह के नियम और प्रयासों से स्थिति में सुधार आता है और व्यापारी अन्नभंडार जनता को सौंप देते हैं। इसी परिवर्तन में प्रजा में आनन्द की लहर आ जाती है और राजा साहब के प्रयास की सराहना होती है।

चोर बाजारी, घूसखोरी, सामन्तशाही आदि का निराकरण प्रस्तुत नाटक का बडा उद्देश्य है। साथ ही इसमें कोई भी स्त्री पात्र नहीं है। यह इसकी दूसरी विशेषता है। इसका राजस्थान में अभिनय भी हो चुका है।

परिवर्तन (सन १६१४, पृ० १७२), लें० पं० राधेश्याम कथावाचक, प्र० श्री राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, पात्र पु० ७, स्त्री ८, अंक ३ दृश्य १०, ११, २।
घटना-स्थल नगर, गाव, घर, वेश्यागृह।

यह एक सामाजिक नाटक है, जो शिक्षाप्रद होने के साथ-साथ मनोरंजक भी है। आजकल के नवयुवक कुसंगत में पडकर किस प्रकार से अपना सर्वनाश कर बैठते है और किस प्रकार उनका घर नरक के तुल्य बन जाता है, ये बातें इस नाटक में भलीभाँति दिखाई गई हैं। नाटक का नायक श्यामलाल आरम्भ में सदाचारी एक हिन्दू, सद्गृहस्थ, आदर्श पति तथा आदर्श पिता है। श्यामलाल अपनी पत्नी लक्ष्मी से अत्यधिक प्रेम करता है। वही श्यामलाल आगे चलकर एक वेश्या पर आसक्त होकर सब कुछ भूल जाता है। जिस समय उसका वफादार नौकर शम्भू उसको लक्ष्मी की मृत्यु की सूचना देता है और उसकी अन्त्येष्टिक्रिया के लिए श्यामलाल से घर चलने की प्रार्थना करता है, उस समय वही श्यामलाल अपनी पत्नी लक्ष्मी की इतनी भर्त्सना करता है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। कितना विकट परिवर्तन है सहसा विश्वास नही होता। बिहारी एक दुराचारी व्यक्ति है। उसका नौकर रमजानी भी बडा ही दुष्ट प्रकृति का है। दोनों मिलकर श्यामलाल को वेश्या के चक्कर में फँसा देते हैं। लक्ष्मी अपना भेष बदलकर उसी वेश्या चन्दा के यहा नौकरी कर लेती है, जो कि एक अस्वाभाविक बात हो सकती है।

नाटक में विद्या तथा ज्ञानचन्द्र वकील की बातें बडी मनोरंजक हैं। माया की अपेक्षा विद्या के प्रति वकील साहब के विचार बहुत सुन्दर है। शम्भू दादा की स्वामिभक्ति भी आदर्शमय है। गोल्डन गोली एक औषधि है, जिससे संसार के समस्त रोगों को दूर करने का दावा किया जाता है। नाटक में एक आदर्श कोर्ट की स्थापना की गई है जिसमें अपराधी को जैसे को तैसा दण्ड दिया जाता है। अन्त में चन्दा वेश्या का पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त भी अच्छा हुआ है। अतएव चन्दा वेश्यावृत्ति छोडकर नारी जाति के उद्धार का कार्य अपने हाथ में लेती है। परिवर्तन में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक परिवर्तन ही परिवर्तन है। नाटक के सभी पात्रों में परिवर्तन ही होता चला गया है।

इसका प्रथम अभिनय साहित्य सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन के समय सन् १६२५ में हुआ।

परिवर्तन (सन् १६३७, पृ० १५६), लें० बाबू गंगाप्रसाद एम० ए०, प्र०

भारतीय साहित्य मन्दिर, चांदनी चौक, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री ६; अंक रहित; दृश्य : ३।

इसमें स्त्री-स्वातंत्र्य की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। 'परिवर्तन' में परंपरा द्वारा निश्चित वर्तमान स्त्री-समाज के शोचनीय बन्धन पद के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन है। अविवाहित अवस्था मे माता-पिता से निःसीम अधिकार प्राप्त नारी विवाहित जीवन में पति के निरंकुश और अनुचित दवाव के विरुद्ध क्षोभ एवं क्रान्ति का आन्दोलन करती है।

परिवार के शत्रु (सन् १९६१, पृ० ११४), ले० : इन्द्रसेन सिंह 'भावुक'; प्र० : मनोरमा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली; पात्र : पु० ११, स्त्री ४; अंक : ३ दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : ठाकुर साहब की बैठक।

इस सामाजिक नाटक में जमींदारी उन्मूलन के उपरान्त शराबी जमींदारों की दुर्दशा दिखाई गई है। ठाकुर रणविजय सिंह पुराने जमींदार हैं। वे शराब, गांजा, भांग के पक्के शौकीन हैं। जमींदारी समाप्त होने पर अपनी आदत और शान को बनाये रखने के लिए मजबूर हैं। सारा परिवार इसी नशे का दास है। पुत्र रामसिंह, सूर्य, कमल नाती-पोते सब शराबी हैं। भगवती, जानकी देवी आदि इसका विरोध करती हैं। इसीलिए सभी लोग उन्हें परिवार का शत्रु कहते हैं। ठाकुर अपनी इसी आदत के कारण सेठ छदंकी का कर्जदार हो जाता है। बाद में कमल के सुधर जाने से वह कर्ज चुका देता है किन्तु घर छोड़ देता है। अन्त में सब के घर छोड़ने पर ठाकुर साहब अपने को ही इसका दोषी मानते हैं और बन्दूक से आत्महत्या कर के प्रायश्चित्त कर लेते हैं।

परीक्षित (सन् १९००, पृ० १०८), ले० : आनन्दप्रसाद कपूर; प्र० : उपन्यास बहार ऑफिस, काशी; पात्र : पु० ६; अंक : ३; दृश्य : ८, ७, ५।

यह एक धार्मिक नाटक है। महाभारत के युद्ध के उपरान्त कुमार परीक्षित ही सम्राट् बनते है। एक दिन राजा परीक्षित शिकार खेलने गए जहां पर उन्हें बड़ी प्यास लगी। वे भिण्डी ऋषि के आश्रम में प्यास बुझाने जाते हैं। ऋषि तपस्या में लीन हैं। परीक्षित उनसे पानी मांगते हैं किन्तु ऋषि तप में निरत होने से परीक्षित की बातें नहीं सुनते। तब परीक्षित पास ही पड़े एक मरे हुए सांप को उनके गले में डाल देते हैं और वहां से प्यासे ही लौट आते हैं। कुछ देर के उपरान्त भिण्डी ऋषि का पुत्र शृंगी ऋषि पिता का अपमान समझ परीक्षित की दुष्टता जान लेता है और शाप देता है कि राजा परीक्षित को आज से सातवें दिन तक्षक सर्प डसे और उसका विनाश हो।

जब इस शाप को भिंडी ऋषि सुनते हैं तो अपने अबोध पुत्र की अज्ञानता से दुःखी होते हैं और कुमुर्क के द्वारा राजा परीक्षित को सूचना भिजवाते हैं कि वह अपने मोक्ष का साधन प्राप्त कर लें। फलस्वरूप राजा हरिद्वार में अपने मोक्ष का उपाय करते हैं। तक्षक जब उन्हें डसने जाता है तब धनवन्तरी राजा की रक्षा को तत्पर होता है किन्तु तक्षक अपने वार्तालाप से उसको परास्त करता है और कहता है कि "जिसकी मृत्यु आ जाती है उसको कोई नहीं बचा सकता। भगवान् श्रीकृष्ण को वधिक के हाथ मरना पड़ा था।" अन्त में तक्षक सूक्ष्म रूप धारण कर परीक्षित को डसने के लिए चल पड़ता है। हरिद्वार मे राजा परीक्षित को शुकदेव एक फूल सूंघने को देते हैं। उसमें कीड़े के रूप में बैठा तक्षक उन्हें काट लेता है और उनकी मृत्यु हो जाती है।

पर्व-दान (सन् १९५२), ले० : मोहनलाल 'जिज्ञासु'; प्र० : भारत भारती, लिमिटेड, दिल्ली; पात्र : पु० १२, स्त्री १२; अंक : ३; दृश्य : ५, ६, ७।
घटना-स्थल : वन, जाह्नवी-तट।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण और अर्जुन के युद्ध की स्थिति दिखाई गई है। महाभारत के युद्ध के पश्चात् कृष्ण-अर्जुन अपनी-अपनी पत्नी सत्यभामा और द्रौपदी के साथ वन-विहार के लिए जाह्नवी-तट पर जाते हैं पर उनके वन-विहार का आनन्द

नारद के षड्यन्त्र से कलुषित हो जाता है। उनकी प्रेरणा से पहले से ही उच्छृंखल गन्धर्व ऋषिकुमारों को त्रस्त करते हैं और गन्धर्वराज चित्ररथ गालव ऋषि की अंजलि में उच्छिष्ट मदिरा डालकर उन्हें क्रुद्ध कर देता है। नारद गालव को कृष्ण के पास भेजकर तथा स्वयं भेंट के समय उपस्थित होकर कृष्ण से चित्ररथ का शिरच्छेद करने की प्रतिज्ञा करा लेते हैं। उसके बाद नारद एक ओर द्रौपदी और दूसरी ओर चित्ररथ को बहकाकर जाह्नवी-तट पर ले जाते हैं और वहां चित्ररथ की पत्नी से रुदन के द्वारा द्रौपदी के हृदय में उसके प्रति करुणा जाग्रत कर पर्व-दान करा देते हैं। पर्व दान का अभिप्राय है चित्ररथ को अभयदान। द्रौपदी के पर्व-दान की रक्षा के निमित्त अर्जुन को, जिन्हें कृष्ण की प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में कोई ज्ञान न था, कृष्ण से युद्ध के लिए सन्नद्ध होना पड़ता है। परन्तु कौशिक आदि गालव-शिष्यों के प्रयत्नों से ऋषि को ब्राह्मणत्व का बोध और नारद के षड्यन्त्र का रहस्य ज्ञात हो जाता है और गालव के कहने से युद्ध शान्त हो जाता है।

पवनजय (सन् १६५८, पृ० १५६), ले० ओंकार नाथ दिनकर, प्र० एज्युकेशनल पब्लिशर्स, ब्यावर, अजमेर, पात्र पु० १४, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ४, ३, ५।
घटना-स्थल गृह, उद्यान, मैदान।

हिंसा पर अहिंसा की विजय प्रतिष्ठित करना ही इस नाटक का उद्देश्य है। जैन-रामायण और जैन-पद्म-पुराण से प्रेरणा ग्रहण कर लिखा गया संस्कृति-प्रधान पौराणिक नाटक है, जिसमें पवनजय की वीरता की कथा अजना के घर से आरम्भ होती है। अजना का विवाह पवनजय से हो जाता है पर मिश्रकेशि की कुटिलता के कारण पवनजय अजना को त्याग देते हैं। शान्ति के पूजक प्रह्लाददेव की भी रावण से युद्ध के लिए पवनजय को अनुमति मिल जाती है। अजना को ठुकराकर पवनजय युद्धक्षेत्र में चले जाते हैं। यहीं प्राकृतिक शोभा तथा पशु पक्षियों का पारस्परिक अकृत्रिम अनुराग देखकर उनका मन द्रवित हो जाता है। अचानक क्रौंचपक्षी का हृदय-द्रावक विलाप उन्हें अपनी प्रिया का स्मरण दिला देता है। बस, उनके हृदय के संयम के बांध टूट जाते हैं। प्रेमी पवनजय आधी रात को ही प्रिया के द्वार खटखटाते हैं। प्रिया नींद में जागकर उनके चरणों में गिरती है। अजना अपने सत्कार में अपने प्रिय को रिझाकर उसमें समष्टि-कल्याण की भावना जागृत करती है।

युद्धस्थल से लौटे पवनजय में अनीति तथा अत्याचार के प्रति घोर घृणा है। *अजना के उपदेशों की शक्ति ने उन्होंने बल-*वान रावण के समक्ष भी अपने को विजयी बनाया है। पवनजय की चारित्रिक पवित्रता, निष्ठा एवं दृढ़ता ने रावण का गर्व चूर कर दिया। प्रह्लाददेव की मनोकामना भी पूर्ण हुई। सत्य-अहिंसा का आधार ग्रहण कर पवनजय, विद्युत्प्रभ और मिश्रकेशि के भी विचारों में आमूल परिवर्तन कर उनको भी लोक कल्याण के मार्ग में प्रवृत्त करते है। पवनजय भरत चक्रवर्ती का जय-जयकार ध्वनित करते हैं।

पशु-बलि (सन् १६४०, पृ० ६४), ले० शिवरामदास गुप्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ८, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ६, ८, ६।

यह नाटक प्रभात की फिल्म अमृत मंथन के आधार पर लिखा गया है। देवी के मन्दिर में पशु-बलि और हिंसा का साम्राज्य छाया हुआ है जिसके समर्थन में राजगुरु शास्त्री है। राजा रविवर्मा अपने राज्य में हिंसा को समाप्त कर पशु-बलि को बन्द करना चाहता है, किन्तु राजगुरु उसे ऐसा करने से रोकता है। माधव गुप्त, मोहनी, सुमित्रा, विश्वास गुप्त की विरोध के कारण सफलता नहीं मिलती। अन्त में बौद्धों के प्रभाव से राज्य में पशु-बलि समाप्त होने पर अहिंसा का स्वच्छ वातावरण स्वतः निर्मित होता है और माधवगुप्त तथा मोहनी का आपस में मिलन हो जाता है।

पश्चात्ताप (सन् १९५६, पृ० ५३), ले० : कृष्ण मुकुट नाट्याचार्य; प्र० : जवाहर बुक डिपो, मेरठ; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : २; दृश्य : १, १।

इस सामाजिक नाटक में अछूतोद्धार की समस्या का समाधान प्रस्तुत किया गया है। इसमें मन्दिर में अछूत प्रवेश का विरोध समाप्त किया गया है। पुजारी का लड़का मतू चमार के लड़के की मदद करता है और दोनों आपस में दोस्त होते हैं। अन्त में पुजारी की लड़की मूर्ति के प्रयासों से रामलाल चमार को मन्दिर में आने की अनुमति मिल जाती है और पुजारी स्वतः कह उठता है "मंतू चमार नहीं महापुरुष है।"

पश्चात्ताप (सन् १९०१, पृ० ७३), ले० : जगमोहन नाथ अवस्थी; प्र० : न्यू लिटरेचर, इलाहाबाद; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; : अंक-रहित; दृश्य : ११।
घटना-स्थल : आगरे का दुर्ग, चित्तौड़ का राजमहल; सैनिक शिविर।

इस ऐतिहासिक नाटक में अकबर का चित्तौड़ पर आक्रमण दिखाया गया है। अकबर की बन्दूक से जयमल आहत होता है। राजपूतनियाँ जौहर की ज्वाला में जलती हैं। अकबर बीरबल के साथ दुर्ग में प्रवेश करता है। वहाँ पर प्रज्वलित अग्नि ज्वालायें देखता है। बीरबल कहता है—"हिन्दुत्व, सतीत्व एवं वीरत्व साथ-साथ जल रहे हैं।"

अकबर को अपने कृत्यों पर पश्चात्ताप होता है। वह पागल-सा होकर कहता है—"हाय ! जीवन ! घोर अन्धकार, घोर पाप और घोर अन्याय ! मैंने यह क्या किया ? मुझे धिक्कार है।"

पहला राजा (सन् १९६६, पृ० ११७); ले० : जगदीशचन्द्र माथुर; प्र० : राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री ५; अंक : ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : आश्रम, वृक्ष, नदी

इस नाटक में वैदिक, पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथा को आधार बनाकर समसामयिक समस्याओं का अन्वेषण किया गया है।

लेखक ने तीन कथासूत्रों को, साथ-साथ पिरोया है—पृथु और अर्चना; कवष और उर्वि; अत्रि, गर्ग और शुक्राचार्य की घटनायें हैं। सुनीथा की कथा इनकी सहायक बनती है। इसमें शव-मंथन-प्रक्रिया में प्रतीकात्मकता है। ऋषियों द्वारा मंत्र-बल से ब्रह्मावर्त के शासक वेन को मारना ऐसी परम्परा का अंत है, जो दुर्विनीत और उद्दंड राजाओं की थी। उसके शव-मंथन का अर्थ है कि उसमें सत्य का तेजोमय और सर्वग्राही अंश प्राप्त किया जाए। इस मंथन से तेजोमय प्रताप वाला कृष्णवर्ण का एक व्यक्ति पृथु निकलता है, जिसे वेन के पापों का प्रतीक माना जाता है ! पृथु को आर्य-जाति का पहला राजा घोषित किया जाता है। वह अपनी शक्ति से धरती का दोहन कर अनेक सम्पदाओं को खोज निकालता है। धरती को पृथु राजा के कारण ही 'पृथिवी' की संज्ञा दी जाती है। पृथु पुरुषार्थ का प्रतीक है, जिसे उर्वि (पृथ्वी का ही दूसरा नाम) चुनौती देती है। पृथु उसकी चुनौती को स्वीकार कर स्वयं परिश्रम करके उन्नति करता है। इसलिए उर्वि पृथु की प्रिया बनी रहती है जबकि उसकी पत्नी अर्चि का संबंध काम-जन्य संतोष तक ही रहता है। इस प्रकार लेखक ने कर्म और काम का सुन्दर समन्वय दिखाया है। ऋषिगण जो विभिन्न मंत्रालयों का प्रतिनिधित्व करते हैं—पृथु को सहयोग नहीं देते। लेकिन पृथु स्वयं कुदाली लेकर परिश्रम करने के लिए उपस्थित हो जाता है।

पहिली भूल (सन् १९३२, पृ० १७१), ले० : शिवरामदास गुप्त; प्र० : सत्यनाम प्रेम, बनारस सिटी; पात्र : पु०, १२ स्त्री; ६ अंक : ३; दृश्य : ११, १०, ४।
घटना-स्थल : पहाड़ी, उद्यान मार्ग, महल, बाग, नदी का किनारा, मकान, दरबार, कुटी, कारागार, झोंपड़ी, नदी।

इस सामाजिक नाटक में प्रेम को विचारों की पवित्रता, सहनशीलता, स्वार्थत्याग,

आत्म समर्पण के बलपर श्रेयस्कर और कपट, छल, प्रतिशोध, वासना, दुष्कामना के आधार पर विनाश कर दिखाया गया है। नाटक का नायक गोपाल गोविन्द सिंह की पुत्री लक्ष्मी से प्रेम करता है और उसीसे विवाह करता है। परित्यक्ता हीरा गोपाल की बचपन की बातों को याद रख, उससे प्रेम करती है परन्तु उसका प्रेम कपट, प्रतिकार की भावना से पूर्ण होता है। गोपाल और लक्ष्मी के विवाह होने की सूचना पाकर वह कामुक अरुण से मिलकर प्रतिशोध लेना चाहती है। लक्ष्मी ने अरुण को अपशब्द कहे थे इसलिए वह भी लक्ष्मी तथा गोपाल से प्रतिशोध लेने के लिए जाल बुनता है। लक्ष्मी की सखी गोपाल के प्रति अपशब्द कहती है, परन्तु गोपाल को यह भ्रम हो जाता है कि लक्ष्मी ने ही अपमानजनक शब्द कहा है। अत वह विवाह के बाद उसका मुह न देखने की प्रतिज्ञा कर लेता है, जो उसकी 'पहिली भूल' प्रमाणित होती है। हीरा लक्ष्मी की दासी बन गोपाल की दी हुई अगूठी चुरा लेती है और लक्ष्मी पर दुश्चरित्रता का मिथ्या दोषारोपण कर घर से निकलवा देती है। लक्ष्मी के पिता गोविन्दसिंह भी पुत्री को तिरस्कृत कर देते हैं। अरुण सिंह का सत्य-वक्ता सेनापति अश्वपति, जिसे गोपाल डाकुओं के हाथो से बचाता है, साधु वेष मे एक कुटी मे जीवन बिताते हुए लक्ष्मी तथा उसकी सखी कमला को शरण देता है। अन्त मे हीरा का हृदय-परिवर्तन चित्रित किया गया है। वह अपने कुकर्मों का प्रायश्चित्त करने के लिए गोपाल को अपने वस्त्र पहनाकर भागने पर विवश करती है और अन्त मे पहले अरुण का वध कर स्वय भी आत्महत्या कर लेती है। गोपाल लक्ष्मी को ढूँढने हुए जगल मे पहुँच जाता है। अश्वपति के शिष्य उसे बचा लेते हैं। समरसिंह तथा गोविन्दसिंह भी अपनी भूल पर पछताते हुए आ पहुँचते हैं।

समरसिंह के पुत्र गोपाल तथा लक्ष्मी के माध्यम से आदर्श प्रेम का चित्रण किया गया है। भारतीय नारी सहप सब बाधाओं को झेल लेती है, पर अपनी मर्यादा पर आच नहीं आने देती।

पाँच बड़े (सन् १९५७, पृ० ६४), ले० वीरेन्द्र कश्यप, प्र० नवयुग प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ३, अक ३, दृश्य १, १, १।
घटना-स्थल घर, पेंटर का कमरा, भोजनालय।

इस सामाजिक नाटक मे साहित्यकार के द्वारा देश और समाज मे परिवर्तन दिखाया गया है।

एक परिवार के पाँच सदस्य अपने-अपने को बडा समझते हैं। लडका स्टेट ऐक्टर, लडकी राइटर, बीबी पेण्टर तथा पति सिंगर और नौकर बावर्ची खाने का माहिर। नाटक मे शुरू से अन्त तक लेखक की प्रशसा तथा उनके द्वारा समाज, भाषा, रहन-सहन सब कुछ बदला जा सकता है, इसी का प्रभाव दिखाया गया है। सविता इसकी प्रशसा मे अपना सबसे अधिक समय गवाती है। नौकर पाण्डुरग अपने महाराष्ट्री हिन्दी बोलने के कारण एक हास्य पात्र का रूप धारण कर लेता है।

अभिनय—विभिन्न सस्थाओं द्वारा अभिनीत।

पाचाली (रेडियो गीति-नाट्य) (सन् १९६८ 'तमसा' मे सगृहीत), ले० जानकी वल्लभ शास्त्री, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,

'पाचाली' गीति-नाट्य उपेक्षिता द्रौपदी की पीडा और उसकी मार्मिक व्यथा को अभिव्यक्ति करता है। सामाजिक आदर्श, मर्यादा तथा प्रणयाकाक्षा का द्वन्द्व द्रौपदी के स्वयवर-प्रसग द्वारा अभिव्यजित किया गया है। पाँचो पाडवो मे घिरी पाचाली की घुटन, आतक्रन्दन नाटकीय-परिवेश मे मुखर हो उठा है।

द्रौपदी-स्वयवर मे जब कर्ण, शल्य, दुर्योधन, शाल्व आदि महारथी लक्ष्य-वेध मे असफल रहते हैं, तब द्रुपद की असहाय एव कातरवाणी सुनकर विप्र वेशधारी अर्जुन लक्ष्यवेध करके पाचाली को प्राप्त कर लेता है। मार्ग मे भीम द्रौपदी को वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए बताता है कि लक्ष्य वेधने

वाला कोई और नहीं वरन् अर्जुन ही था। इस पर अर्जुन की चिरप्रशंसिका द्रौपदी प्रफुल्लित हो उठती है। घर आकर उस नवीन भिक्षा का माँ को दर्शन कराने की लालसा में अर्जुन तथा द्रौपदी जीवन के लिए एक अभिशाप ले बैठते हैं। माँ के मुँह से निकला एक वाक्य—"पाँचों मिलकर भोगो, यहीं पांचाली का क्रन्दन प्रारंभ होता है, जो अन्त तक प्रभावित करता है। पाँच हृदयों को अभयदान देने वाली नारी स्वयं जीवन-पर्यन्त विष पीती रहती है।

प्रस्तुत कथा में कतिपय मौलिक उद्भावनाएँ भी की गई हैं। महाभारत में कर्ण को अवैध बताकर स्वयंवर से वंचित रखा गया था किन्तु 'पांचाली' में यह भी प्रयत्न करता है। इसके साथ ही कवि ने अर्जुन के लक्ष्यवेध का कारण द्रौपदी के पिता द्रुपद की दयनीय स्थिति बताया है। इस प्रकार द्रौपदी एवं कुन्ती के माध्यम से नारी-हृदय की शतरूपा वेदना का चित्रण किया गया है।

पांचाली (सन् १९६३जसमा तथा अन्य संगीत रूपक में संकलित ।); ले० : मनोहर प्रभाकर; प्र० : कल्याणमल एंड संस, जयपुर,

इस संगीत रूपक में द्रौपदी के अपमान का दुष्परिणाम दिखाया गया है।

'पांचाली' संगीत-रूपक महाभारत की प्रसिद्ध कथा पर आधारित है, जिसके अन्तर्गत द्रौपदी-स्वयंवर, युधिष्ठिर की द्यूत-क्रीड़ा, उसमें पत्नी तथा भाइयों का हार जाना तथा अन्त में स्वर्गारोहण आदि घटनाएँ नैरेशन द्वारा व्यंजित की गई है।

पांडव प्रताप (सन् १९१७, पृ० ११०), ले० : हरिदासमाणिक; प्र० : माणिक कार्यालय, काशी; पात्र : पु० १७, स्त्री ७; अंक : ३; दृश्य : ८, ८, ५।
घटना-स्थल : राज सभा, इन्द्रप्रस्थ का नगर-भाग, राजगृह, मगध का नगर मार्ग, जरासंध का अन्तर गृह, उपवन, मार्ग, बन्दीगृह, राजसभा।

इस पौराणिक नाटक में महाभारत के आधार पर पांडवों की विजय-कथा प्रदर्शित की गई है। धर्मराज राजसूय-यज्ञ के विषय में परामर्श करने के लिए ढोलक शास्त्री को कृष्ण के पास द्वारका भेजते हैं। कृष्ण युधिष्ठिर को समझाते हैं कि जरासन्ध को मारे बिना यज्ञ पूरा नहीं हो सकता। ढोलक शास्त्री जरासन्ध के दरबार में जाते हैं, पर उन्हें बलि चढ़ाने को जरासन्ध के सिपाही पकड़ ले जाते हैं। जरासन्ध और भीम का मल्ल युद्ध होता है, जिसमें जरासन्ध मारा जाता है। जरासन्ध की मृत्यु पर अनेक बन्दी राजा उसके कारागार से मुक्त किए जाते हैं। युधिष्ठिर यह सुनकर प्रसन्न होते हैं कि उनके भ्राता विजयी होकर धन-धान्य सहित लौटे हैं।

तीसरे अंक में कृष्ण के द्वारा शिशुपाल का वध होता है और महाराज युधिष्ठिर सम्राट् पद ग्रहण करते हैं।

यह नाटक सात जून सन् १९१२ को काशी की प्रसिद्ध नागरी नाटक मंडली द्वारा काशीनरेश की उपस्थिति में अभिनीत हुआ।

पाकिस्तान (सन् १९४६, पृ० १६८), ले० : सेठ गोविन्ददास; प्र० : किताब महल, इलाहाबाद; *पात्र :* पु० १०, स्त्री ६; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : ड्राइंगरूम।

इस राजनीतिक नाटक में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को एक राष्ट्र के रूप में देखने का स्वप्न है।

मुसलिम लड़की जहांआरा और एक हिन्दू लड़के शान्तिप्रिय में शुद्ध भाई-बहन का संबंध है। वे एक दूसरे से प्रेम करते हैं। एक दिन टेनिस कोर्ट में जहांआरा, शान्तिप्रिय, पीरबख्श, दुर्गा, अमरनाथ तथा कुछ अन्य स्त्री-पुरुषों में पाकिस्तान पर चर्चा चलती है और मत वैभिन्न के कारण तकरार सी हो जाती है। अमरनाथ राष्ट्रवादी कांग्रेसी है और कांग्रेस की नीति के आधार पर वह पाकिस्तान का स्वप्न देखने वाले कट्टर साम्प्रदायिक मुसलमानों की आलोचना करता है। इस प्रकार दो दल हो जाते हैं। दोनों दलों में यह निश्चय होता है कि सारे

देश में चुनाव हो और उसी के अनुसार देश का बटवारा हो। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो अलग अलग राष्ट्र बनते हैं। पाकिस्तान के मन्त्रिमडल की प्रधान जहाआरा और मन्त्री पीरबख्श होना है, हिन्दुस्तान के शान्तिप्रिय और दुर्गा देवी। अमर और महफूज दोनो ही राष्ट्रवादी हैं किन्तु इनकी कोई नही सुनता है।

दोनों ही राष्ट्रों में अल्प-सख्यकों द्वारा झगडा आरभ होता है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के मत्रियो को त्यागपत्र देना पडता है। इस प्रकार राष्ट्रीय आदोलन आरभ हो जाता है।

नाटक मे कही-कही पर हिंदू-मुसलमानो को बडा मित्र दिखाया गया है, किन्तु पाकिस्तान की कुत्सित भावनाओं के कारण दोनो राष्ट्रो मे खिचाव बढ जाता है।

पाकिस्तान की पोल (सन् १९६४, पृ० ६८), ले० ज्ञानीराम शास्त्री, प्र० ज्ञान प्रकाशन, माफत जयहिन्द कॉलेज, लुधियाना, पात्र पु० ८, स्त्री नही, अक-रहित, दृश्य ७।
घटना-स्थल कवि का घर।

इस गीतिनाट्य मे पाकिस्तान की मनोवृत्ति का परिचय दिया गया है।

सन् १९६४ मे भारत पर पाकिस्तान के आक्रमण तथा उसके परिणामो का वर्णन ही इस नाटक का उद्देश्य है। विशेषत स्वय कवि ही नाटक का पात्र बन हरियाणा के ग्रामीण किसानो को पाकिस्तान के सैनिको की गद्दारी तथा भारत के वीरो का दृश्य वार्तालाप के रूप मे दिखाता है। लालबहादुर शास्त्री के प्रयासो तथा उनके देश-प्रेम को भी इस नाटक मे वर्णित किया गया है।

वस्तुत यह गीतिनाट्य हरियाणवी के प्रभाव से ओतप्रोत है।

पाटलीपुत्र का राजकुमार (सन् १९६८, पृ० ७८), ले० चतुर्भुज, प्र० साधना मन्दिर, पटना-४, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक ३, दृश्य ६।
घटना-स्थल महल, पथ।

इस ऐतिहासिक नाटक मे कुणाल को अधा करने का एकमात्र कारण तक्षशिला की दुष्टता को सिद्ध किया गया है।

अशोक-पुत्र कुणाल बडा सुन्दर था तथा साथ ही योग्य भी। धारणा है कि तिष्यरक्षिता ने उससे प्रणय न पा उसकी आँखें निकलवा ली। नाटककार ने ऐतिहासिकता की रक्षा करते हुए यह दिखाया है तिष्यरक्षिता के मन मे उसके लिए पुत्र-भाव था तथा कुणाल उसकी पूजा माँ समझ कर करता था। लेकिन तक्षशिला के प्रधान की दुष्टता के कारण कुणाल नेत्रहीन बना। बाद मे यह रहस्य खुला।

पाथेय (सन् १९६८, पृ० १०, ५१), ले० गुणनाथ झा, प्र० घनानाथ साहित्य सदन, ग्राम-पत्रालय—रैयाम, जिला दरभगा, पात्र पु० ४, स्त्री १, अक रहित, दृश्य १।
घटना-स्थल गगाधर मिश्र का डेरा।

इस सामाजिक नाटक मे शहरी जीवन से ग्राम्य-जीवन को सुखकर दिखाया गया है।

मिहिर सतत रंगीन वातावरण का चित्रण कर सुनीना के हृदय मे स्वाभाविक रूप से प्रेम जाग्रत करता रहता है। मिहिर से प्रेरित होकर सुनीना सवत्र अपने भावी जीवन की कल्पना करती रहती है, किन्तु इस पर तुषारपात तब होता है, जब मिहिर यह निश्चय करता है कि वह नौकरी नही करेगा और शहरी वातावरण का परित्याग कर ग्रामीण-जीवन व्यतीत करेगा। सुनीना की अभिलाषा के प्रतिकूल ही वह यह निर्णय लेता है। इसमे नाट्यकार ने इस ओर सकेत किया है कि समाज की उन्नति तभी सभव है जब कि शिक्षित व्यक्ति शहरी मनोमुग्धकारी परिवेश का त्याग कर ग्रामोन्मुख होंगे।

पादुकाभिषेक (वि० २०२५, पृ० ११०), ले० सीताराम चतुर्वेदी, प्र० अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी, पात्र।

पु० २६, स्त्री १६; अंक : ३, दृश्य : ४, ५, ४।
घटना-स्थल : राजोद्यान, वन-पथ, राज-वाटिका, धनुप-यज्ञ का मंडप, कुटिया, वीथिका, कोप-भवन, अन्तःपुर की वीथिका, विलास-कक्ष, चित्रकूट।

इस पौराणिक नाटक में सीता-स्वयंवर से लेकर भरत के चित्रकूट से वापस आने तक की कथा दिखाई गई है।

विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण-प्रस्थान से लेकर खरदूषण-वध, अहल्या-उद्धार, धनुर्भंग, सीता-राम-विवाह, मंथरा के कुचक्र से राम का वनवास, चित्रकूट में भरत की विनती पर राम का पादुका प्रदान, अयोध्या के सिंहासन पर राम की पादुका का अभिषेक वर्णित है।

इसे वसंत कन्या महाविद्यालय काशी ने १९६६ में खेला। इसे चित्रमय, दृश्यपीठात्मक तथा चत्रिल मंच पर सफलतापूर्वक खेला जा सकता है।

पाप की छाया (सन् १९६०, पृ० ३३), ले० : पं० सीताराम चतुर्वेदी; पात्र : पु ६, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : गृहस्थ का मकान, सेठ की कोठी, डाक्टर का अस्पताल।

इस मनोवैज्ञानिक नाटक में धरोहर का धन न लौटाने पर मानसिक पीड़ा दिखाई गई है।

कमलाकान्त एक धार्मिक विचार के पुरुष हैं। उनके मित्र श्याम मोहन उनके पास दस हजार रुपये तथा अपनी पत्नी के आभूषण धरोहर रूप में रखकर किसी कार्यवश आसाम चले जाते हैं। जहाँ उनकी कुछ समय बाद मृत्यु हो जाती है। इस बीच कमलाकान्त के पुत्र श्रीकान्त अमरीका के एक विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए जाने को तैयार हो जाते हैं। यात्रा के खर्च के लिए कमलाकान्त धरोहर का रुपया अपने पुत्र को दे जाते हैं तथा आभूषण बेचकर एक कम्पनी का शेयर खरीदते हैं। उन्हें बड़ा घाटा होता है, जिस कारण कमलाकान्त को सदैव यह चिन्ता सताने लगी है कि श्याममोहन का रुपया कैसे अदा किया जाएगा। कभी-कभी उन्हें श्याममोहन की मृत छाया भी दिखाई पड़ने लगी। कुछ लोग उन्हें समझाते हैं कि अब कौन माँगने आएगा पर इसी बीच श्याममोहन का पुत्र ब्रजमोहन रुपया मांगने आता है जिसे कमलाकान्त के मैनेजर एक हजार रुपया देकर टालना चाहते हैं; पर श्याममोहन की पत्नी को बड़ा असन्तोष होता है, जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। अब तो कमलाकान्त को दो मृतात्मा की छाया दिखाई पड़ने लगी है। इसी बीच अमरीका में उनके पुत्र श्रीकान्त को एक कार-दुर्घटना में गंभीर चोट आ जाती है। अब पुनः कमलाकान्त और अधिक विचलित होता है। विक्षिप्तावस्था में वह अपना रुपया तथा पत्नी का आभूषण ब्रजमोहन के नाम करके उद्धार पाने का उपक्रम करता है और तभी श्रीकान्त के अच्छा होने का समाचार भी मिलता है। परिस्थिति अनुकूल एवं सहायक होने पर कमलाकान्त का मानसिक द्वन्द्व समाप्त होता है और पाप की छाया अदृश्य हो जाती है।

पाप-परिणाम (सन् १९२४, पृ० १६७), ले० : जमुनादास मेहरा; प्र० : रिखबदास बाहिती, प्रोप्राइटर दुर्गा प्रेस, और आर० टी० बाहिती एण्ड को०, नं० ४ चोर बगान, कलकत्ता; पात्र : पु० १८, स्त्री ६; अंक : ३; दृश्य : ११, ६, ६।
घटना-स्थल : वेश्या-घर, मध्यम वर्ग का घर।

इस सामाजिक नाटक में वेश्यागामी तथा अन्य पाप-कर्मियों को पाप का दुष्परिणाम भोगते दिखाया गया है।

समय के परिवर्तन से वेश्याओं की अधिकता होती है। कितने ही मनुष्यों का अपव्ययी और कुकर्मी बन जाना, वर्तमान समय के कपटी मित्रों तथा झूठे स्वामिभक्त और दुर्जन सेवकों आदि की सामाजिक विकृतियों का सजीव चित्रण इसकी अपनी विशेषता है।

पारस (सन् १९६६, पृ० ८२), ले० : पं० सीताराम चतुर्वेदी; प्र० : टाउन डिग्री कालेज, बलिया; पात्र : पु० ८, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य रहित।

घटना-स्थल झोपडी और चौपाल।

इस सामाजिक नाटक मे ग्रामीण जीवन की झाँकी प्रस्तुत की गई है।

इसमे यही दिखाया गया है कि किस प्रकार गाँव के विभिन्न वर्गों मे सघर्ष होता है, किन्तु उनका नायक अपनी सज्जनता और साधुता के कारण सबके हृदय पर विजय प्राप्त करके सबका प्रिय पात्र बन जाता है। इसे १६५६ में टाउन डिग्री कॉलिज बलिया स्थित पीठ आकाश रेखा रगमच (स्टेटिक सेटिंग स्काई लाइन थियेटर) पर खेला गया। इसे पेटिका मच पर भी खेला जा सकता है।

पारिजात हरण(सन् १६६८, पृ० ३५), ले० शकर देव, प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, पात्र पु० ८, स्त्री ६, अक-दृश्य-रहित। घटना स्थल द्वारिकापुरी, प्राग्ज्योतिषपुरी, अमरावती पुरी, कामरूप।

इस अकिया नाटक मे कृष्ण के पारिजात-हरण की कथा प्रस्तुत की गई है।

सर्वप्रथम सस्कृत मे कृष्ण द्वारा पारिजात-हरण का वर्णन किया गया है। फिर सूत्रधार पारिजात-हरण नाट के अभिनय का सदेश दर्शकों को सुनाता है। इसके बाद कृष्ण के नखशिख का वर्णन होता है। नारद इन्द्र के साथ आकर भगवान् कृष्ण को पारिजात का पुष्प देकर उसकी महिमा का वर्णन करते हैं कि इसकी गध जिस घर मे होती है वह घर सब प्रकार के वैभव से भरा रहता है। श्रीकृष्ण वह पुष्प रुक्मिणी के माथे पर चढाते हैं। इसके बाद नारद नरकासुर के उत्पात का वर्णन करते हैं। इसी समय पुरन्दर भी आकर नरकासुर द्वारा वरुण का छत्र छीनने का सदेश सुनाता है। कृष्ण तुरन्त प्राग्ज्योतिषपुर जाकर उसको दडित करने का आश्वासन देते हैं। नारद वहाँ से सत्यभामा के पास जाकर कृष्ण द्वारा पारिजात पुष्प रुक्मिणी को देने की बात बताते हैं तथा सत्यभामा को सपत्नी का अभ्युदय सहने पर धिक्कारते हैं। यह सुनकर सत्यभामा दुखी होती है। सत्यभामा के दुखी होने का सदेश नारद कृष्ण के पास पहुँचाते हैं जिससे कृष्ण आकर सत्यभामा को शतपुष्प लाने का वचन देते हैं।

अब भगवान कृष्ण सत्यभामा के साथ गरुड पर सवार होकर प्राग्ज्योतिषपुर पहुँचते हैं। वहाँ पर भगवान् और नरकासुर मे युद्ध होता है। भगवान् चक्र सुदर्शन से उसका सिर काट देते हैं। उसके पुत्र भगदत्त को कामरूप का राजसिंहासन देते हुए सोलह सहस्र कन्याओं को मुक्त कर देते हैं। वहाँ से भगवान् अमरावतीपुरी पहुँचते हैं। वहाँ सत्यभामा को पारिजात वृक्ष का दर्शन कराते हैं। सत्यभामा पारिजात वृक्ष लेने का आग्रह करती है जिससे भगवान् नारद को पारिजात वृक्ष लेने के लिए भेजते हैं। नारद जाकर इन्द्र से निवेदन करते हैं तो इन्द्राणी और इन्द्र दोनो उसे देने से इन्कार कर देते हैं। नारद आकर सारा हाल कृष्ण से बताते हैं। पुन सत्यभामा पारिजात वृक्ष के लिए आग्रह करती है। इधर इन्द्राणी भी देवदुर्लभ पारिजात वृक्ष को मनुष्य तक ले जाने के लिए इन्द्र को धिक्कारती है।

इधर इन्द्र युद्ध की तैयारी करता है और उधर शची भी सत्यभामा से कृष्ण की निन्दा करती है, तथा सत्यभामा भी इन्द्र की सारी बुराई खोलती है। इन्द्राणी इन्द्र को धिक्कारती है जिससे इन्द्र भगवान् कृष्ण से युद्ध करने को प्रस्तुत होता है। इन्द्र प्रहार करता है। भगवान् उसे सहन कर लेते हैं। भगवान् के चक्रसुदर्शन को देखते ही इन्द्र भागता है। इन्द्र को भागता देख सत्यभामा उसे लज्जित करती है। तब इन्द्र सत्यभामा को कृष्ण पत्नियों मे सबसे बडी बताता है तथा अपने को धिक्कारता हुआ कृष्ण को दण्डवत प्रणाम करता है। कृष्ण उन्हे ज्येष्ठ भ्राता होने का आश्वासन देते है। फिर इन्द्र पारिजात वृक्ष को प्रसन्नतापूर्वक कृष्ण को देते है। पारिजात वृक्ष को लेकर सत्यभामा रुक्मिणी के पास जाती है और अपने सौभाग्य की महिमा का वर्णन करती है। रुक्मिणी भी जगद्गुरुस्वामी कृष्ण की महिमा का वर्णन करते हुए कहती है कि उनको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आसानी से करतल हो जाता है। अन्त मे सत्यभामा की प्रार्थना पर भगवान् पारिजात वृक्ष का रोपण उसके द्वार पर करते हैं।

अन्त में भगवान् कृष्ण की लीलाओं का उल्लेख करते हुए नाटक समाप्त होता है।

पार्वती (सन् १९५८ पृ० ९७), ले० : उदयशंकर भट्ट; प्र० हिन्दी भवन इलाहाबाद *पात्र :* पु० ४, स्त्री ६; *अंक :* २; *दृश्य :* ३, ४।

यह सामाजिक नाटक समाज की कतिपय ज्वलन्त समस्याओं का उद्घाटन करता है। परमानन्द एक निर्धन परिवार का व्यक्ति है जिसको उसकी गरीब माँ ने बड़े कष्टों से पाला-पोसा है। इसके विपरीत उसकी पत्नी गुलाब एक बड़े घर की बेटी है इसलिए दोनों के संस्कारों में विरोध है। गुलाब अपनी महानता के दर्प एवं आधुनिकता के दंभ में अपनी सास को अपमानित करके घर से निकाल देती है। खर्चीले जीवन के निर्वाह के लिये वह स्वयं तहसीलदार पति की आँखों की आड़ में छोटे कर्मचारियों से मनमाना रिश्वत लेती है। ऐसे ही एक रिश्वत के संदर्भ में पकड़े जाने पर परमानन्द दण्डित किया जाता है और उसे नौकरी से अलग होना पड़ता है। परमानन्द की नौकरी छूटने पर गुलाब को वास्तविकता का ज्ञान होता है और उसे अपनी सास पार्वती के अपमान करने का बड़ा पश्चात्ताप होता है। अन्त में वह रास्ते पर आ जाती है और उसका पारिवारिक जीवन सुखी बन जाता है।

पार्वती और सीता (सन् १९३५), ले० : आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव; 'झांकी' में संग्रहीत; प्र० : गांधी हिन्दी पुस्तक भंडार।

'पार्वती और सीता' गीति-नाट्य रामायण की चिर-परिचित कथा पर आधारित है। प्रारंभ में सीता के गौरी-पूजन से पार्वती प्रसन्न होती हैं तथा सीता को उसका भविष्य बताती हैं कि राम से विवाह होने पर कितनी कठिनाइयाँ उपस्थित होंगी। इस स्थल पर पार्वती सीता के अनिश्चित भविष्य का व्यापक चित्र प्रस्तुत करती हैं। राम-वन-गमन, रावण द्वारा सीता हरण, राम द्वारा सीता की अग्नि परीक्षा, लोकोपवाद के कारण पुनः सीता-त्याग, सीता का दो पुत्रों को जन्म देना, वाल्मीकि के प्रयत्नों से दोनों का पुनः मिलन तथा प्रजा के आग्रह पर सीता से पुनः पवित्रता के प्रमाण की माँग आदि घटनाएँ पार्वती द्वारा सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत की गई हैं। इस पर भी राम के प्रति सीता की अचल निष्ठा देखते हुए पार्वती आशीर्वाद देती हैं।

पाषाणी (सन् १९५८), ले० : आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री; प्र० : लोक भारती, इलाहाबाद; *दृश्य :* ३।

इस गीतिनाट्य के कथानक का आधार रामायण की कथा है। इसमें पाषाणी का अन्तर्द्वन्द्व दिखाया गया है। गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या ही पाषाणी है। इसमें तृप्त-अतृप्ति और अतृप्त-तृप्ति का अन्तर्द्वन्द्व है। इस गीतिनाट्य में संगीत का सहारा लिया गया है। वस्तुतः एक रात का समय ही इसकी मूल घटना में व्यतीत होता है। अतएव कथावस्तु को एक रात में गायी जाने वाली समस्त रागरागनियों में अनुबन्धित कर गीतों के माध्यम से पाषाणी के हृदय के अन्तर्द्वन्द्व को प्रस्तुत किया गया है। इसमें तपोवन का परिवेश भी संगीत में सहायक हुआ है। पाषाणी अन्त तक अतृप्त एवं तृपित पाषाणी रूप में ही रहती है।

पिताहत्या नाटक (सन् १९५५), ले० : राम अयोध्या राय; प्र० : दूधनाथ पुस्तकालय एंड प्रेस, कलकत्ता; *पात्र :* पु० ३, स्त्री ४; *अंक-दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल : वेश्यागृह, घर, मार्ग।

धनी परिवार के वेश्यागामी लड़के कुचेष्टाओं का शिकार होकर अपने पिता के धन, मान और प्राण के ग्राहक हो जाते हैं। यही इस सामाजिक नाटक का कथ्य है।

महेश्वर युवावस्था में पैर रखते ही वेश्यागामी हो जाता है। शादी के उपरान्त भी पुरानी आदत नहीं छूटती है। पत्नी के वस्त्राभूषण बेचता है। पिता जब वेश्या के यहाँ जाकर पुत्र को धिक्कारता है तो वह पिता को गोली मार देता है। विवाहिता पत्नी सास

से रुपया लेकर घूस के द्वारा उसे छुड़ा देती है। महेश्वर फिर भी पत्नी की उपेक्षा करता है। महेश्वर अन्त मे कोढ़ी हो जाता है और अपनी पत्नी के पास आना चाहता है। पत्नी आधी रात को वेश्या के घर से उठा कर उसे अपने घर लाती है। रास्ते मे साधू को स्त्री के पैर की ठोकर लगती है और वह शाप देता है कि तू प्रातःकाल विधवा हो जा। पत्नी श्यामवती अपने सतीत्व बल से सूर्योदय को रोक लेती है। भगवान् विष्णु प्रकट होते हैं और सती नारी की कामना पूर्ण होती है।

पिम्परा (वि० १५७५, पृ० ६), ले० गुदुरा झुमुरा माधवदेव, प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, पात्र पु० ३, स्त्री ३, अक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल नन्द गाँव, गोकुल।

इस अंकिया नाट मे संस्कृत विरचित नान्दी के उपरान्त कृष्ण-गोपी का सवाद पाया जाता है। कृष्ण नवनीत खाने के लिए गोपियो के घरो मे घुस जाते हैं। गोपियाँ कृष्ण से घर मे घुसने का कारण पूछती हैं। कृष्ण अपनी चोरी को छिपाने के लिए अनेक झूठ बनाते हैं। गोपियाँ कृष्ण को यशोदा के पास ले जाती है और कृष्ण की सारी बातें बताती हैं। यशोदा गोपियों को उल्टी-सीधी बातें कहती है, तथा साथ ही साथ कृष्ण को खूब डाट सुनाती है। यशोदा की बातें सुनकर कृष्ण के साथी उनकी महिमा का वर्णन करते हुए यशोदा और गोपियो की बातो का विरोध करते हैं। इस तरह से सारे नाटक मे सवाद ही दिखाया गया है।

पियामोर बालक (वि० १९६७, पृ० ६४), ले० रामचन्द्र चौधरी, प्र० वीणा प्रकाशन, लहेरिया सराय, दरभगा, पात्र पु० २३, स्त्री १०, अक ४, दृश्य २४।
घटना-स्थल कुशेश्वर स्थान का महादेव मदिर, मध्यम श्रेणी के गृहस्थ का आवास, दरवाजा, मध्यम श्रेणी के ब्राह्मण का दरवाजा, विवाह मण्डप, कमला नदी की धारा, प्राङ्गण, स्टेशन, आशुतोष कॉलेज का प्राङ्गण, नवजीवन होटल, शयनकक्ष, नलिनी का शयनकक्ष, गगा तट, अलीपुर चिड़ियाघर, शयनकक्ष, रेलवे स्टेशन एव आर्य समाज मदिर।

इस सामाजिक नाटक मे अनमेल विवाह की समस्या की ओर सकेत है। कुमुदिनी का अनन्यप्रेमी शेखर उससे विवाह करने को व्यग्र है किन्तु जब दोनो की शादी नही हो पाती तब शेखर कुमुदिनी के पिता को दुःखी करना प्रारभ करता है। शम्भुनाथ के द्वारा स्थिर शादी को भी वह विघटित करने का प्रयास करता है, किन्तु मधुकर के पिता नरोत्तम, शेखर की सर्वथा उपेक्षा कर बारात सजाकर आते हैं एव मधुकर और कुमुदिनी की शादी हो जाती है। कुछ समय के बाद कुमुदिनी ससुराल चली जाती है। मधुकर प्रथम श्रेणी मे मैट्रिक पास करने पर विद्योपार्जन के निमित्त कलकत्ता जाता है। वहाँ उसकी भेंट नलिनी नामक लड़की से होती है जो पी-एच० डी० कर रही है। धीरे-धीरे नलिनी और मधुकर मे सामीप्य हो जाता है और अपनत्व की भावना बढने लगती है। नलिनी मधुकर की द्रव्य से भी सहायता करती है और अन्ततः दोनो मिलकर आर्य-समाज के मदिर मे जाकर शादी कर लेते हैं।

पीरअली (सन् १९५७, पृ० ६४), ले० लक्ष्मीनारायण, प्र० पीपुल्स पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली। *अंक-रहित*, दृश्य ८।

इस राजनीतिक नाटक मे गुप्त वेशधारी क्रान्तिकारियों का स्वातत्र्य प्रेम दिखाया गया है। प्रथम दृश्य अहमद और जसवत के बगावत सम्बन्धी वार्तालाप से आरम्भ होता है। इन्हीं की वार्ताओं से 'पीरअली' का भी परिचय मिलता है। पीर-अली बगावत करनेवालो का नेता है। उसके पकड़ने के लिए सूबेदार हिदायत और अग्रेज आफिसर 'नेशन' प्रयत्न पर हैं। वह उनके सामने से फकीर के वेश मे निकल जाता है। एक पत्र भी, कोतवाल मेंहदी अली के नाम से 'नेशन' लिख कर देता है, परन्तु शीघ्र ही सिपाही आकर बताता है कि यह छद्म-वेशधारी फकीर पीरअली ही है तो वे अपनी पिस्तौलें सँभाल कर पीरअली के पीछे दौड़ते हैं। 'पीरअली' को पकड़ने या शूट करने का उनका प्रयत्न असफल ही रहा, परन्तु उसे

बचाने में सुल्तान नामक व्यक्ति, जो कि पीरअली का अभिन्न सहायक था—गोली का शिकार होता है। 'या अल्ला' की आर्तवाणी के साथ ही 'पीरअली' का प्रथम दृश्य भी समाप्त होता है।

द्वितीय दृश्य में पीरअली अपना नाम परिवर्तित कर अब्दुल्ला नामक पुस्तक विक्रेता बनकर पटना के एक बाजार में दिखाई देता है। बगावत के कार्य का संचालन वह गुप्त सूत्रों से कर रहा है। पटने के कमिश्नर टेलर साहब की मुनादी (घोषणा) होती है कि जो जीवित या मृत किसी भी रूप में पीरअली को प्रस्तुत करेगा, दो हजार रुपयों से पुरस्कृत किया जायगा। 'करामात' नामक सी० आई० डी० इन्स्पेक्टर उसकी दूकान से पुस्तकें ले जाते हैं और 'पीरअली' (अब्दुल्ला) से इनाम पाने पर उसके मूल्य चुकाने का वादा करते हैं। पीरअली के एक सहायक का प्रवेश होता है। वह एक पत्र पीरअली को देता है। शीघ्र ही हो हल्ला होता है। सब लोग दूकानें बन्द करते हैं।

इसी प्रकार विविध वेशों में पीरअली अपने साथियों को अंग्रेजों के विरुद्ध उभाड़ता है और पकड़े जाने पर जज टेलर साहब से देश स्वातंत्र्य के लिए बहस करता है।

पुण्य पर्व (वि० २००६, पृ० १३८), *ले०: सियारामशरण गुप्त; प्र० :* साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी; *पात्र :* पु० ६, स्त्री ३, अन्य राज्य कर्मचारी; *अंक:* ३; *दृश्य :* ३, २, ३।
घटना-स्थल : तक्षशिला का गुरुकुल, नरमेध स्थल, राजभवन।

इस सांस्कृतिक नाटक में राजा ब्रह्मदत्त का हृदय-परिवर्तन दिखाया गया है। वाराणसी का निष्कासित राजा ब्रह्मदत्त सोमवती अमावस्या की रात्रि को नरयज्ञ में बलि देने के लिए एक सौ एक मनुष्यों को अपने अनुचरों द्वारा बन्दी बनाता है। इन्द्र-प्रस्थ के राजा सुतसोम (बोधिसत्व) तक्षशिला के गुरुकुल में ब्रह्मदत्त के सहपाठी थे। वे, नर-यज्ञ की बात सुनकर जनता के प्राण-रक्षणार्थ ब्रह्मदत्त को सुधारना चाहते हैं। इसी बीच ब्रह्मदत्त के एक अनुचर द्वारा सुतसोम बन्दी रूप में ब्रह्मदत्त के पास लाए जाते हैं। बन्दी सुतसोम ब्रह्मदत्त को नरमेध बन्द करने के लिए समझाते हैं। ब्रह्मदत्त प्रथम तो सहमत नहीं होता, लेकिन अन्त में अन्तःकरण में प्रभावित हो जाता है। तभी सुतसोम अन्य बन्दियों की मुक्ति दिलवाने के लिए बलि होने को तैयार हो जाता है। इससे प्रभावित होकर ब्रह्मदत्त नरमेध का विचार त्याग देता है। वह सुतसोम के समक्ष आत्मसमर्पण कर उन्हें अपना आचार्य स्वीकार कर लेता है। दोनों का प्रगाढ़ प्रेम-सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

पुजारी (सन् १६५६, पृ० ७२), *ले० :* जगदीश शर्मा; *प्र० :* देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली; *पात्र :* पु० ८, स्त्री २; *अंक :* ३; *दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल : मन्दिर।

इस सामाजिक नाटक में एक पुजारी के जीवन की घृणित लीलाओं को व्यक्त किया गया है।

मन्दिर का पुजारी गंगाराम धर्म की आड़ में न जाने कितने दोषों का भागी बनता है। एक दिन अवसर पाकर पुजारी शराब के नशे में कम्मो महतरानी को बाँहों में कस लेता है और फिर होश आने पर अपने ऊपर गंगाजल छिड़ककर पवित्र पुजारी का ढोंग रचता है।

पुराने ढर्रे का बाप और नई चाल का बेटा (सन् १९१७, पृ० ४५), *ले० :* पं० मंगनीराम शर्मा; *प्र० :* सं० ध० कुमार सभा, मेरठ; *पात्र :* पु० २, स्त्री १; *अंक :* २; *दृश्य :* १।
घटना-स्थल : घर।

इस सामाजिक नाटक में पिता-पुत्र की विचार-विभिन्नता के कारण कटुता दिखाई गई है।

पुराने विचारों के पिता और आधुनिक तथा निर्लज्ज प्रतीत होने वाले पुत्र के बीच

विवाद होता है। पुत्र पिता के समय सिग्रेट पीता है और तथाकथित सुधारवादी पिता उसे उसके दुर्गुणों को समझाता है। पिता और पुत्र का कटु सम्बन्ध इसमे चित्रित किया गया है।

पिता पुत्र को सूर्योदय से पूर्व उठो, सिग्रेट छोडने का उपदेश देता है। अपने आदर्शों की पुष्टि के हेतु वह आधुनिक भारतीय मनीषियों—तिलक, गोखले, स्वामी विवेकानन्द इत्यादि के जीवन-चरित्र को उदाहरणार्थ अपने पुत्र के समक्ष रखता है। धर्म-शास्त्रो की महत्त्वपूर्ण मान्यताओ के अतिरिक्त वह स्वदेशप्रेम तथा मातृभाषा का महत्त्व भी अपने पुत्र को समझाता है। पुत्र, पिता से अपनी सहमति तथा असहमति प्रकट करता रहता है।

पुरु और एलेक्जेण्डर (सन् १९४२, पृ० ७५), ले० हरिश्चन्द्र सेठ, प्र० इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग, पात्र पु० १०, स्त्री २, अक ५, दृश्य ६, ७, ८, ७, ६।
घटना-स्थल तक्षशिला विद्यापीठ, राजभवन, कारागार, सिन्धु नदी।

इस ऐतिहासिक नाटक मे ग्रीक का भारत पर आक्रमण दिखाया गया है। एलेक्जेंडर का भारतीय आक्रमण हिन्दूकुश और सिन्ध के मध्यवर्ती प्रदेश से आरम्भ होता है। यहा पर अश्वक नामक क्षत्रिय जाति एलेक्जेंडर के छक्के छुड़ाती है। नौ मास बाद एलेक्जेंडर नाना तरह के अत्याचार करता है। सिन्धु को पार करने के लिये वह तक्षशिला-नरेश आम्भी को अपनी तरफ मिला लेता है और सन्धि के अनुसार फारस मे लूटा हुआ सोना चांदी आम्भी को देता है, अन्त उसके सेनापति तक रुष्ट हो जाते है। वह फिर पुरु से सन्धि कर लेता है। उसके लौटने के समय उसका राज्य झेलम से लेकर व्यास तक फैल जाता है।

पुरु-विक्रम नाटक (सन् १९०५, पृ० १३५), ले० खेमराज श्री कृष्णदास, प्र० श्री वैकटेश्वर स्टीम यन्त्रालय, बम्बई। पात्र पु० ६, स्त्री ६, अक ५, दृश्य २, १, २, १, ३।
घटना-स्थल कोहिमा, वितस्ता नदी के किनारे पर बनाया हुआ राजा तक्षशिला का मन्दिर।

यह नाटक सिकन्दर शाह की शूरवीरता पर आधारित है।

इलविला, जो पुरुराज से प्रेम करती है, सिकन्दरशाह के जेल मे बन्द रहती है। वह पुरुराज को पत्र लिखती है। पुरु अलेक्जेंडर मे युद्ध होता है और वह छूट जाती है तथा दोनो का मिलाप होता है।

पुरु-विक्रम नाटक (सन् १९०८, पृ० १३५), ले० शालिग्राम वैश्य, प्र० वेंकटेश्वर प्रेस, बबई। पात्र पु० ८, स्त्री ८, अक ५, दृश्य ६।
घटना स्थल पर्वत प्रदेश, पुरु का डेरा।

इस ऐतिहासिक नाटक मे भारत पर सिकन्दर के आक्रमण की घटना इतिहास को दृष्टि मे रखकर लिखी गई है। इस नाटक की नायिका इलविला ने सिकन्दर के आक्रमण के पूर्व पचनद नरेश पुरु को अपना प्रियतम स्वीकार किया था, किन्तु आक्रमण के उपरान्त देश की लज्जा बचाने के लिये उसने प्रतिज्ञा की कि यवनो को देश से निष्कासित करने वाले वीर योद्धा को ही वह पति-रूप मे स्वीकार करेगी। यवनो से युद्ध करने से पूर्व पुरुराज इलविला से जब प्रेम-प्रदर्शन करते है तो वह कर्त्तव्य की स्मृति दिलाते हुए कहती है कि "जाओ राजकुमार! प्रथम युद्ध मे जय-लाभ करो, यह प्रेमालाप का वक्त नही है।"

युद्ध के उपरान्त जब यह मिथ्या अफवाह फैलती है कि पुरुराज की मृत्यु हो गई है, तो इलविला देश हित अपने को बलिदान करने के लिये सन्नद्ध हो जाती है और सकल्प करती है कि देश की रक्षा के उपरान्त अपने प्रियतम पुरु से स्वर्ग मे मिलने के लिये लौकिक लीला समाप्त कर दूँगी।

नाटक के अन्त मे पुरुराज यूनानियो को पराजित करने मे समर्थ होते है और इलविला और पुरुराज का परिणय सम्पन्न

होता है।

पुलिस (सन् १६००, (लीथो में) पृ० ३१), ले० : पं० मूलचन्द वाजपेयी; अंक-दृश्य-रहित।

इस सामाजिक नाटक में पुलिस का अत्याचार और थानेदारों का भ्रष्टाचार दिखाया गया है।

नाटक का नायक धनदास बहुत ही सात्विक विचारों का व्यक्ति है वह अहिंसा को परम धर्म मानता है। एक दिन वह अपने इलाके के थानेदार को घर पर आमंत्रित करता है। थानेदार ऐसा मांसाहारी है कि एक दिन भी मुर्गा, मछली के बिना भोजन करता ही नहीं। धनदास धर्म-संकट में पड़ जाता है। वह थानेदार से मांसाहार के विषय में अपनी असमर्थता प्रकट करता है और उन्हें निरामिष ही भोजन देता है। थानेदार का साथी छट्टू मियां घोर मांसाहारी है अतः धनदास और छट्टू मियां में वादविवाद छिड़ जाता है और वह छट्टू मियां को कायल कर देता है कि मांसाहार मानव शरीर के लिए सर्वथा आवश्यक नहीं।

[कुछ लोग इसे एकाकी नाटक मानते हैं पर इसे लघु नाटक कहना उचित है।]

पूरण भक्त (करुणा और भक्ति प्रधान ऐतिहासिक नाटक), (सन् १६१७, पृ० १०१), ले० : पं० रामप्रसाद मिश्र 'श्याम' मस्ताना; प्र० : प्रोप्राइटर सरयूप्रसाद श्रीवास्तव, अयोध्या; पात्र : पु० १३, स्त्री ६, अंक : ३; दृश्य : १४, ८, ४।
घटना-स्थल : शिव मन्दिर, जंगल, कुँआ।

स्यालकोट-महाराज शंखपति पुत्र पैदा होने की सूचना पाकर बहुत खुश होते हैं लेकिन ज्योतिष के अनुसार मूल नक्षत्र अशुभ होने से १६ वर्ष तक शिशु-मुख देखना वर्जित होने के कारण राजा बहुत दुःखी होते हैं। राजमहल में एक तरफ बधाई बजती है दूसरी ओर महारानी इच्छरा की आंखों में पट्टी बाँध दी जाती है। इच्छरा बच्चे को देखने के लिये तड़पती है। उसी समय उसी स्थान पर ज्योतिषी जी मंत्री के साथ बच्चे को लेने आ जाते हैं, अतः बच्चे को ले जाने से इच्छरा बहुत दुखी होती है।

सोलह वर्ष व्यतीत हो जाने पर ज्योतिषी जी पूरन को उसके माता-पिता के पास लाते हैं। पूरन अपने माता-पिता को प्रणाम कर छोटी माता को प्रणाम करने के लिये जाता है। विमाता लूना को प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करता है। लूना पूरन को बुलाने के लिये नौकरानी को आज्ञा देती है। पूरन को पुनः चलते समय अनेक अपशकुन मिलते हैं लेकिन महल में जाकर लूना को प्रणाम करता है। लूना बुरी निगाहों से उसे अपना पति बनाने का प्रस्ताव रखती है। पूरन के अस्वीकार करने पर राजा के द्वारा राजकुमार को फांसी दे दी जाती है। फांसी पर चढ़ते ही शंखपति एक-दो तीन बोलता है तो बिजली की चमक के साथ फांसी टूट जाती है और भारत माता प्रकट हो जाती है, परियां माला पहनाती है। लूना के हठ करने पर जंगल में पूरन के हाथ को काटकर लाश को कुँए में फेंक दिया जाता है। गोरखनाथ की कृपा से पूरन कुँए से बाहर आ जाते हैं। भारत माता की कृपा से हाथ आकर जुड़ जाते हैं। कालान्तर में गुरु कीआज्ञा से पूरन अपने घर जाता है और इच्छरा की आँख ज्यों की त्यों हो जाती है। पूरन अपने माता-पिता को प्रणाम कर फिर गुरु गोरखनाथ के पास आ जाता है।

पूर्व की ओर (सन् १६५५, पृ० १६६), ले० : वृन्दावनलाल वर्मा; प्र० : मयूर प्रकाशन, झाँसी; पात्र : पु० १०, स्त्री २; अंक : ४; दृश्य : ७, ८, ८, ७।
घटना-स्थल : राजभवन, महाचैत्य, समुद्र, द्वीप।

इस ऐतिहासिक नाटक में मगध-राजकुमार अश्वतंग की विजय दिखाई गई है।

धान्यकटक के राजा वीरवर्मा पल्लवेन्द्र के भतीजे अश्वतंग अपने विदूषक साथी गजमद तथा सात सौ सैनिकों के साथ प्रतिष्ठान नगर पर आधिपत्य करने के लिए कुचक्र

रखते हैं। प्रतिष्ठान को नियन्त्रण मे लेने से पूर्व अश्वतुग अपने साथियो सहित नागार्जुनी कोंडा के स्थविर जय से मिलता है तथा चोल-नरेश के काची पर आक्रमण होने तथा द्रव्य की अपार आवश्यकता बताते हुए, नागार्जुन की स्वर्ण-निर्माण-विधि को जानने का प्रयत्न करता है। स्थविर के न बताने पर उसे बन्दी बना लिया जाता है। नागार्जुनीकोंडा के निकट के एक गाँव के श्रेष्ठी चन्द्रस्वामी को भी, काची की मुक्ति के लिए स्वर्ण न देने पर वृक्ष मे बाँध दिया जाता है। प्रतिष्ठान नगर पहुँचकर अश्वतुग उस प्रान्त पर अपने शासक नियुक्त होने का आदेश-पत्र भट्टनागर को देता है। इसी समय महादडनायक अश्वतुग को बन्दी बनाने की राजाज्ञा लेकर उपस्थित होता है और अश्वतुग सहित सभी साथियो को बन्दी बनाकर धान्यकटक की ओर प्रस्थान करता है। राजा वीरवर्म्मा अश्वतुग तथा उसके सभी साथियो को महाचैत्य के अपमान, चन्द्रस्वामी को लूटने, प्रतिष्ठान के भट्टनागर के अपमान आदि अपराधो के लिए देश से निष्कासित करने की आज्ञा देते हैं।

अश्वतुग अपने सभी साथियों-सहित श्रेष्ठी चन्द्रस्वामी के जलयान द्वारा एक द्वीप मे निष्कासित होता है। समुद्र मे तूफान आने से सभी यात्री प्रबल लहरो द्वारा नागद्वीप के किनारे फेंक दिए जाते हैं। नागद्वीप के नरभक्षी निवासी गजमद, चन्द्रस्वामी, महानाविक, अश्वतुग आदि को पकडकर लकडो से बाँधकर पेडो से टिका देते हैं। महानाविक अपने कुछ नाविको के साथ बन्धनो को तोडकर भाग खडे होते हैं और समुद्र के किनारे खडे यान पर चढ जाते है। द्वीपवासी उन्हे पकडने आते हैं किन्तु महानाविक के तीर से वृद्ध की मृत्यु होती है। साथ ही महानाविक यान को समुद्र मे सरकाने मे भी सफल हो जाता है।

इधर अश्वतुग, गजमद आदि के बलिदान की तिथि पूर्णिमा निश्चित की जाती है। द्वीप की सबसे अधिक शक्तिशाली नारी धारा भारतीय भाषा से अपरिचित होने पर भी अश्वतुग की ओर आकर्षित होती है। द्वीप के मुखिया बनने तथा अश्वतुग से शादी करने के प्रश्न पर द्वीप की एक अन्य स्त्री तुम्बी से धारा का युद्ध होता है। धारा लौह-बाण से तुम्बी को पराजित करती है और उसे बन्दी बनाकर अग्नि मे स्वाहा करने को तत्पर होती है। अश्वतुग के प्रयत्न से धारा तुम्बी को छोड देती है तथा उससे मित्र बने रहने की शपथ ले लेती है। इसके उपरान्त महानाविक, जयस्थविर, कन्दर्पकेतु, गौतमी आदि को लेकर पुन नागद्वीप आता है और अश्वतुग को वापस चलने को विवश करता है। द्वीप की रानी धारा भी नागद्वीप का शासन तुम्बी को सौंपकर अश्वतुग के साथ चल देती है।

वारुणद्वीप जाते हुए महायान पर गौतमी तथा धारा म द्वन्द्व छिड जाता है किन्तु अश्वतुग के प्रयत्न से धारा गौतमी से क्षमा माँगती है। वारुणद्वीप पहुँचकर अश्वतुग अन्न समस्या को सुलझाकर भूमि को उर्वर बनाने मे जुट जाता है। वारुणद्वीप की प्रजा अश्वतुग को अपना शासक नियुक्त करती है। अश्वतुग वारुणद्वीप मे उत्कृष्ट शासन, कला आदि के आयोजन के साथ भारतीय संस्कृति के तत्वों को स्थापित करने की प्रतिज्ञा करता है और भारत की जयजयकार के साथ नाटक समाप्त होता है।

पूर्व भारत नाटक (वि० १९७९, पृ० १७६), ले० *श्याम बिहारी मिश्र एव शुकदेव बिहारी मिश्र*, प्र० गगा पुस्तकालय कार्यालय, लखनऊ, *पात्र* पृ० १७, स्त्री ३, *अक* ३, *दृश्य* ६, ११, ११।

इस पौराणिक नाटक मे महाभारत युद्ध से पूर्व घटित घटनायें दिखाई गई हैं।

कौरव-पाण्डवो की कथा के साथ हिडिम्ब और हिडिम्बा नामक राक्षसो की कथा और द्वितीय अक मे एक ग्रामीण की दो चण्डूबाजो से बातें, ग्रामीण बोलचाल की भाषा मे प्रदर्शित की गई हैं। जैसे—

हिडिम्बा—अरी देखु न कहौ मनई हैं। कहूँ कइयो जने जानि परत नाहे।

हिडिम्बा—अरे उइका परे अहै देखु न।

सम्पूर्ण नाटक पूर्व महाभारत की कथा के साथ हास्योत्पादक कथा का भी निर्वाह

करता है।

पृथुचरित्र अथवा वेणु संहार नाटक (वि० २००४), ले० : बालकृष्ण भट्ट; प्र० : नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सर्वप्रथम 'हिन्दी प्रदीप' के कार्तिक से फाल्गुन वि० १९६६ तक के अंक में धारावाहिक प्रकाशित; पात्र : पु० १२, स्त्री १; अंक : ३, दृश्य : ८ : (गर्भांक)

सुनीथा-पुत्र वेणु राजगद्दी पाकर निरंकुश हो जाता है। वह राज में ढिंढोरा पिटवा देता है कि कोई भी यज्ञ, दान, हवन आदि न करे। इससे नागरिक चिंतित हो जाते हैं। वेणु के राज्य में कुप्रवृत्ति अपना प्रभाव फैलाने लगती है। अतः नागरिकगण भृगु मुनि के आश्रम में जाकर राजा के अत्याचार का विवरण देते हैं। मुनि उन्हें आश्वस्त करते हैं। दुर्दैव और अनीति भी उसी ओर से अश्लील कथोपकथन करते हुए जाते हैं। उधर राजा की आज्ञा के अनुसार 'सुचाल्वर्द्धिनी' सभा के सभापति को १० वर्ष के कारावास का और 'विद्याविनोदिनी' पाठशाला के अध्यापक को देश-निर्वासन का दंड दिया जाता है। उसके विपरीत महाराज की हां में हां मिलानेवाले और स्वार्थ के लिए देश की हानि करनेवाले को क्रमशः 'महामहोक्ष' तथा 'अर्थपिशाच' की पदवी से अलंकृत किया जाता है। राज-पुरोहित कुक्कुट मिश्र अपने प्रभाव और पांडित्य का स्वयं बखान करते हुए पंडितानी द्वारा डांटे जाते हैं। राजा के कुशासन, स्वार्थी खुशामदियों की चहल-पहल, ऋषियों के अनादर और यौवन, धन, प्रभुतासंपन्न घमंडी राजा के अविवेक के विरुद्ध वृद्धश्रवा नामक कंचुकी अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करता है। वेणु सार्वभौम चक्रवर्ती होकर बुद्धिमान् विद्वान् को अपने आगे नीच समझता है। वह अपने को सर्वपूज्य देवता सिद्ध करता है। उसकी नीति से वर्णाश्रम-धर्म विशृंखलित हो जाता है। चारों ओर ब्राह्मणों की दुर्गति होती है। इन सब अत्याचारों से ऊबकर ऋषिगण वेणु के यहां जाते हैं। वेणु उनका अपमान करता है। अस्तु उसे मदोद्धत देख पहले तो भृगु समझा-बुझाकर न्याय मार्ग पर चलने की शिक्षा देते हैं परन्तु पुनः अपमानित होने पर वे वामदेव, अत्रि, मंत्रवरुणि आदि की सहायता से मारणमंत्र पढ़कर कुशा से कमंडल का जल वेणु के ऊपर डालते हैं जिससे वेणु निर्जीव होकर सिंहासन के नीचे गिर पड़ता है।

पृथ्वी कल्प (सन् १९६०), ले० : गिरिजाकुमार माथुर, खण्ड : ४। प्र० : कल्पना पत्रिका अप्रैल १९६१।

इस गीतिनाट्य के कथानक में आधुनिक विज्ञान के समस्त आविष्कारों के चित्रण के साथ युद्ध और शान्ति की अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि को ग्रहण किया गया है। स्वर्णादित्य की अध्यक्षता में भयंकर अनामयिक शक्तियों के साथ मानवीय जीवन का चरम संघर्ष दिखाया गया है। नाटक के अन्त में नागरिक जीवन के प्रतीक 'जनमोहन' की विजय दिखाई गई है। यह समस्त रचना चार खण्डों में विभाजित की गई है। इसके पहले खण्ड में नीहारिका चक्र है जिसमें मनोमाया : फेण्टेसी को प्रस्तुत किया गया है। दूसरा—स्वर्णादित्य, खण्ड है जिसमें वर्तमान व्यावसायिक पद्धतियों को प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है। तीसरे—लौहदेश में राज्यवाद, सैन्यवाद, अधिनायकवाद, सामष्टिवाद अथवा यंत्रवादी सामूहिक तत्त्वों की वस्तुस्थितियों को प्रस्तुत किया गया है। नाटक के अंतिम भविष्य खण्ड में विश्व के परिवर्तित मूल्यों को मानव-समाज के कल्याण में बदलते हुए चित्रित किया गया है।

पृथ्वीराज (सन् १९५१, पृ० २०२), ले० : हरिशरण श्रीवास्तव; प्र० : राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली; पात्र : पु० १६, स्त्री २; अंक ४ दृश्य : ६, ५, ६, १०।
घटना-स्थल : आबूपर्वत पर आश्रम, अजमेर में वाटिका, पृथ्वीराज का आखेट शिविर, युद्धक्षेत्र, अचलगढ़, गजनी गोरी का दरबार, पट्टन में भीमदेव का दरबार, नागौर का रणक्षेत्र, कर्णाट की वेश्या का महल, कन्नौज में संयोगिता स्वयंवर, शाहेगोर का दरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक में पृथ्वीराज का

शौर्य और उसका पतन दिखाया गया है।

प्रत्येक अंक में प्रहसन का दृश्य स्वतन्त्र रूप से जोड़ दिया गया है। प्रस्तावना में नट कहता है कि पृथ्वीराज रासो और मराल कविकृत चौहान-चरित्र के आधार पर पृथ्वीराज के जीवन को नाटक रूप में खेलना है। महाराज सोमेश्वर अपनी रानी से पृथ्वीराज की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि मैंने चन्द जैसा पंडित, कैमास जैसा राजनीतिज्ञ, कान्हराय, निठुरराय, जैतसिंह जैसे सामन्त एकत्र कर दिए हैं। हिन्दू-राज का यश विश्वविख्यात होगा। एक दिन पृथ्वीराज के दरबार में सुल्तान गोर का दूत अरब की शाही पर्वाना लेकर आता है कि हमारे विद्रोही बन्धु हुसैन खां को हमें दे दो। पृथ्वीराज दर्प से उसका अनादर करता है। इधर भारत में संयोगिता के विवाह के कारण कई राजा पृथ्वीराज के वैरी हो जाते हैं। पृथ्वीराज अपने सेनापति चामुंड राय को अपमानित करके बन्दी बना लेता है। गोरी कई बार पराजित होता है पर अन्त में जीत जाने पर दिल्ली में कत्लेआम कराता है। पृथ्वीराज गोरी के दरबार में बन्दी बना लिया जाता है। गोरी उसकी इस सूझना पर हँसता है कि उसने हमें पराजित करके फिर छोड़ दिया। गोरी जल्लादों को बुलाकर पृथ्वीराज की आँखें निकल्वा लेता है। बन्दीगृह में पृथ्वीराज और चन्दबरदाई एक दूसरे को बाणों से मारकर मर जाते हैं।

पृथ्वीराज चौहान (सन् १९५२, पृ० ६०), ले० न्यादर सिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० १२, स्त्री ७, अंक ३, दृश्य ७, २, ७।

इस ऐतिहासिक नाटक में पृथ्वीराज चौहान के वीरतापूर्ण कार्यों का चित्रण किया गया है। पृथ्वीराज धन-लोलुप शाहबुद्दीन को युद्ध में अनेक बार पराजित करता है और हर बार क्षमा मांगने पर उसे छोड़ भी देता है। अनंगपाल अपने नाती पृथ्वीराज चौहान को दिल्ली का राज सौंप देता है। पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य मिलने से जयचन्द चिढ जाता है और वह दिल्ली का राज हस्तगत करने का उपाय सोचकर राजसूय यज्ञ तथा साथ ही संयोगिता का स्वयंवर करने का निश्चय करता है। पृथ्वीराज को अपमानित करने के लिए उसकी मूर्ति द्वार पर रखवा देता है तथा पृथ्वीराज के पास राजसूय-यज्ञ का निमन्त्रण भेजा जाता है लेकिन यह जयचन्द का निमन्त्रण ठुकरा देता है। संयोगिता अपना प्रेम-पत्र जोधामल के द्वारा पृथ्वीराज के पास भेजती है और उसमें स्वयंवर के समय आकर अपनाने का आग्रह करती है। पृथ्वीराज सेना तैयार करके कन्नौज जा पहुँचता है। संयोगिता स्वयंवर-द्वार पर रखी पृथ्वीराज की मूर्ति को जयमाला पहना देती है। जयचन्द संयोगिता को तलवार निकालकर मारने दौड़ता ही है कि पृथ्वीराज संयोगिता को घोड़े पर बैठा कर दिल्ली चल पड़ता है।

पृथ्वीराज कैमास को कर्नाटकी के साथ व्यभिचार करते देख तीर से उसे मार देता है। चामुण्डराय पृथ्वीराज के पागल हाथी को जनता तथा अपनी रक्षा के लिए मारता है। पृथ्वीराज इस बात से नाराज होकर चामुण्डराय को बन्दी बनाता है। पृथ्वीराज अब राज-काज छोड़कर भोग विलास में लिप्त हो जाता है। माहोबा की लड़ाई में अपनी बहुत बड़ी सेना व्यर्थ ही नष्ट करता है। शाहबुद्दीन उपयुक्त समय देखकर भारत को जीत इस्लाम धर्म का झंडा फहराने के लिए भारत आता है। शाहबुद्दीन और जयचन्द पृथ्वीराज पर आक्रमण करते हैं। पृथ्वीराज लड़ते-लड़ते मुगल सेना से घिर जाता है। विजयसिंह को सेना लेकर मदद करने की आज्ञा देता है लेकिन वह धोखा देकर जयचन्द से जा मिलता है। शाहबुद्दीन पृथ्वीराज को कैद करके उसकी आँख फोड़ देता है। जयचन्द को भी विश्वासघात का इनाम कत्ल के रूप में मिलता है। शाहबुद्दीन पृथ्वीराज को अंधा करके गजनी के दखाने में डाल देता है। चन्द कवि साधु का वेश धारण कर गजनी पहुँचता है और पृथ्वीराज से मिलता है। चन्द्र कवि के कहने पर शाहबुद्दीन पृथ्वीराज को शब्द-वेधी बाण का करिश्मा दिखाने का प्रबन्ध करता है। चन्द्रवरदाई के संकेत देने पर पृथ्वीराज

शाहबुद्दीन को बाण से मार डालता है और पृथ्वीराज और चन्द्रकवि भी कटार मारकर आत्महत्या कर लेते हैं।

इस प्रकार नाटक में पृथ्वीराज और जयचन्द के वैर का परिणाम दिखाया गया है।

पैंतरे (सन् १९५२, पृ० १६०), ले० : उपेन्द्रनाथ 'अश्क'; प्र० : नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद; पात्र : पु० २० स्त्री १०; अंक : ३; दृश्य : २, २, २।
घटना-स्थल : बंबई का फ्लैट, मकान की सीढ़ी

'पैंतरे' व्यंग्य-हास्य-प्रधान, बम्बई के फिल्मी क्षेत्रों में काम करनेवाले कवि, अभिनेता, लेखक रंगरूट, निर्देशक आदि के जीवन का चित्र उपस्थित करनेवाला त्रिअंकीय नाटक है। इसमें प्रमुख समस्या आवास की अप्राप्ति की है तथा अनुवर्ती समस्या है—भारतीय चलचित्रों में छद्म व्यवहार। परिशिष्ट में अश्क ने स्वयं लिखा है कि उनको इसकी मूल प्रेरणा मकानों की समस्या से प्राप्त हुई है।

नाटक के प्रथम अंक में अभिनेता रशीद-भाई सामाजिक फिल्म के डाइरेक्टर कादिर को सपरिवार चाय पर आमन्त्रित करता है और उस फिल्म में काम पाने के प्रलोभन से बम्बई नगर में मकान की समस्या जटिल होते हुए भी अपना आवास-स्थान डाइरेक्टर को समर्पित कर देता है और स्वयं अपने मित्र शाहबाज के यहां निवास प्रारम्भ करते हुए यह आश्वासन देता है कि डाइरेक्टर साहब की कृपा से आपको भी फिल्म में समुचित कार्य दिला दूंगा। इसी प्रलोभन से शाहबाज अपना आवास गृह रशीद को समर्पित कर स्वयं नौकरों के साथ सीढ़ी पर सोता है। शाहबाज रशीद भाई की सब प्रकार के मस्केबाजी करता है और उन्हें मदिरालय में प्राय: सन्तुष्ट करने का प्रयास करता है। तीसरे अंक में कादिर और शाहबाज के पड़ोसी पंजाबी किरायेदारों और गुजराती सेठों के बीच नित्य होनेवाले कलह का वीभत्स चित्रण है। नाटक का पर्यवसान उस स्थान पर होता है जहां शाहबाज नौकरों के साथ सीढ़ी पर सोते हुए कहता है :

"अरे भाई, एक फिल्म में हमें नौकर का पार्ट अदा करना है। कुछ दिन तुम्हारे पास सीढ़ी पर सोकर देखें कि तुम लोगों पर कैसी गुजरती है। तभी तो अच्छा पार्ट कर पाएँगे।"

इस नाटक में दो प्रमुख पात्र हैं रशीद और प्रकाश। रशीद के द्वारा बड़े नगरों में आवास-समस्या व कृत्रिम फिल्मी-जीवन का भण्डाफोड़ तथा प्रकाश के द्वारा उन साहित्यकारों की प्रतिभा का हनन दिखाया गया है जो फिल्मी क्षेत्र के असाहित्यिक परिवेश में उत्तरोत्तर ह्रासोन्मुख एवं आदर्शच्युत हो जाते हैं।

पैसा (सन् १९५५), ले० : पृथ्वीराज कपूर; प्र० : पृथ्वी थियेटर्स, बम्बई; पात्र : पु० ६ स्त्री ४ अंक : ४।
घटना-स्थल : बम्बई नगर।

नाटक में पैसे की भूख से शान्तिलाल नरपिशाच बन जाता है। शान्तिलाल बैंक का मैनेजर है जिसका मासिक वेतन ४००) है। परिवार सुखी है। परन्तु उसी बम्बई में रहने लगता है जहां मनुष्यों के बजाय यंत्र रहते हैं। इसका जीवन दुःखमय हो जाता है। घर के कलह से छुटकारा पाने के लिये एक धूर्त मित्र कालिदास के काले बाजार में भागीदार बन जाता है।

शान्तिलाल पैसे के लोभ में अपनी लड़की का विवाह एक वृद्ध से करता है। वह धन-लोभ-विरोधी अपने पुत्र मोहन को घर से निकाल देता है। कालिदास को भी दिवालिया बना देता है। कालिदास आत्महत्या के लिये विवश हो जाता है। अन्त में स्वयं भी मानसिक रोग का शिकार हो जाता है। वह हर समय पैसा-पैसा चिल्लाता है। अपनी पुत्री के वैधव्य की भी परवाह नहीं करता है। जब पत्नी सुशीला की आँखें खुलती हैं तो पश्चात्ताप करती है क्योंकि उसी के असंतोष ने पति को ऐसा लोभी बनाया। भूल मानकर लड़की का पुनः विवाह करती है। सारा धन दीन-दुखियों में बाँट देती है।

अभिनय—अनेक बार विज्ञान भवन

दिल्ली में १६५६ में।

पैसा परमेश्वर (सन् १९५२, पृ० १८४), ले० । रामनरेश त्रिपाठी, प्र० हिन्दी मंदिर प्रकाशन, नयी दिल्ली, *पात्र* पु० २६ स्त्री ८, अंक ३, दृश्य १०, ११, ११।

पैसा परमेश्वर वस्तुत अजनबी नाटक का संशोधित और परिवर्द्धित रूप है। उस नाटक में जहाँ आधुनिक जीवन मे व्याप्त छल-छद्म और भ्रष्टाचार पर जोर दिया गया है वहाँ इसमे पैसा को परमेश्वर सिद्ध किया गया है। कथानक में समानता है पर पैसा को परमेश्वर सिद्ध करने के लिए लेखक ने कुछ नये दृश्य जोड दिये हैं। इस नाटक में ११ दृश्य अतिरिक्त हैं। प्रस्तुत शीर्षक को स्पष्ट करते हुए लेखक ने स्वयं कहा है *"वर्तमान* सभ्यता मनुष्य की सभ्यता नहीं पैसे की सभ्यता है। इस सभ्यता मे सर्वत्र ईर्ष्या, राग द्वेष, पर-निन्दा, छल-कपट, मिथ्याभिमान और असत्य ही के दृश्य देखने को मिलते हैं। यह सभ्यता तो वास्तव में पैसे की छीना-झपटी का एक सुसस्कृत रूप है और शिष्टाचार, नम्रता, मधुर वाक्य विलास में आदि सब पैसे की रूक्षता को कम करने के लिये है।"

नाटक का नायक अजनबी समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों में मिलता है। सभी उसका सम्मान करते हैं और वह बडी सफाई से सब की पैसे की भूख से अवगत हो जाता है। सेठ, वकील, डॉक्टर, शिक्षक, लेखक, सम्पादक, चोर, डाकू, साधु, महन्त, वेश्या, बुद्धिजीवी सभी पैसे को ही सब कुछ मानते हैं और उसे प्राप्त करने के लिए घृणित से घृणित कार्य करने में भी संकोच नहीं करते। पैसे के साम्राज्य में दो वर्ग हो गए हैं—व्यापारी वर्ग और श्रमिक अथवा किसान वर्ग। व्यापारी वर्ग कुछ ऐसी तरकीब निकाल लेता है जिससे सारा पैसा लौटकर पुन उसी के पास आ जाता है, और किसान अथवा श्रमिक पुन गरीब का गरीब बना रहता है। लेखक अनेक रुचिकर उदाहरणों द्वारा यह सिद्ध करने की चेष्टा करता है कि आधुनिक युग मे पैसा ही परमेश्वर है।

पैसा बोलता है (सन् १९७१), ले० रमेश मेहता, प्र० कला ससार, दिल्ली, पात्र पु० ७, स्त्री ४, अंक २, दृश्य-रहित। *घटना-स्थल* . मकान का ड्राइगरूम।

इस सामाजिक नाटक मे पैसे का महत्व और उसकी आवश्यकता दिखाई गई है। सरकारी कर्मचारी राधेगोपाल अवकाश प्राप्त होने पर ४००) मासिक पेंशन पाता है। उसकी स्त्री तारा नामक नौकरानी की सहायता से घर का कामकाज चलाती है। सुरेश और उमेश दो लडके हैं जिन्हें कहीं नौकरी नहीं मिलती। बडा लडका सुरेश फिल्म में रुचि रखता है। नौकरानी के गाँव-घर का एक ग्रामीण व्यक्ति पचू राधेगोपाल के घर का दिन भर काम करके केवल रोटी पर ही अपमानित भाव से जी रहा है। बडा लडका सुरेश एक दिन पचू को जूतों से इसलिए पीटता है कि वह (पचू) बाजार से उसकी अपेक्षा चीजें सस्ती क्यों लाता है। सुरेश लाता तो पैसा बचाता। तारा नौकरानी बेचारे पचू को भूख और अपमान से बचाने का प्रयास करती रहती है पर उसे नित्य लात-घूसा सहना पड़ता है।

एक दिन लाटरी का टिकट बेचने वाले वल्की बाबू राधेगोपाल के घर आकर सूचना देते हैं कि पचू के नाम से एक लाख पचहत्तर हजार रुपए की लाटरी आई है। अब पचू को कोट-पैंट पहनाकर सोफासेट पर बिठाया जाता है और राधेगोपाल उसे घर का मालिक घोषित करता है। सुषमा का प्रेम-पत्र पचू भूल से मेज पर छिपाकर रख देता है जो उसके विवाह सम्बन्ध की चर्चा करते समय लडके के पिता के हाथ लग जाता है और सम्बन्ध टूट जाता है। जहाँ पचू को घरवालों की मार पडती थी वहाँ लाटरी मिलने पर उसके पैसे को हथियाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति उसको सिफारिश करता है और माँ-बाप लडकी सुषमा का ब्याह उसी के साथ करने की योजना बनाते है। कभी-कभी बाप-बेटे उसके दोनों हाथ अपनी-अपनी ओर खींचते हैं तो वह विकल होकर कहता है कि 'मैं किसी की नहीं मानूगा अपने मन की करूँगा।' इतने में पता चलता है कि पचू के नाम लाटरी नहीं

आई है। अब फिर राधेगोपाल और उसके घर वाले उसे लात मारकर निकाल देते है। इतने में फिर पंचू को वास्तव में लाटरी का रुपया मिलता है और तब नौकरानी तारा पंचू को समझाकर उसे साथ ले गठरी-पोटली बाँध गाँव को चल पड़ती है। राधेगोपाल, उसकी स्त्री-बच्चे मुँह फाड़े यह सब घटनायें सपने की तरह देखते रह जाते हैं।

अभिनय : लकीस्टार और कला संसार द्वारा ता० ८ मित० १९७२ को दिल्ली में अभिनीत हुआ।

यह नाटक शंभू मित्रा और अमित मैत्रेय के कंचन रंग पर आधारित है, फिर भी इसके रूपान्तर में मौलिकता है।

पौरस सिकन्दर (सन् १९२८, पृ० ९५), *ले० :* बा० कन्हैयालाल मिश्र तसव्वर; *प्र० :* ठाकुर प्रसाद एण्ड संस बुकसेलर, वाराणसी; *पात्र :* पु० ८, स्त्री ४; *अंक :* ३; *दृश्य :* ६, ६, ४।
घटना-स्थल : पहाड़ी नदी का तट, यूनानी शिविर, बाग, किले का मैदान, दरबार, राजमहल, तहखाना, रास्ता, कारागार।

पारसी नाट्य-शैली का यह नाटक सिकन्दर और पौरस के युद्ध की इतिहास-प्रसिद्ध घटना पर आधारित है। बन्दी पौरस सिकन्दर के समक्ष निडर रहता है। राजोचित व्यवहार की कामना प्रकट करने के अतिरिक्त शेष सभी घटनाएँ सर्वथा काल्पनिक हैं। सिकन्दर द्वारा पौरस के पुत्र दिवाकर को बन्दी बनाना, उसकी हत्या की चेष्टा, अटक की राजकुमारी इन्दिरा के सहयोग से सुरक्षित बच निकलना, अम्बालिका की सिकन्दर के प्रति आसक्ति, युद्ध-भूमि में धोखे से तक्षशील के प्रहार से पौरस का आहत हो बन्दी होना, तक्षशील द्वारा इन्दिरा को बहन बनाकर पौरस का उसके साथ विवाह कर अफगानिस्तान और तुर्किस्तान राज्य को दहेज स्वरूप दे देना, तक्षशील का आत्मघात आदि सर्वथा काल्पनिक घटनाएँ हैं। उर्दू-शैली के पद्यात्मक संवादों की रवानगी के बीच संस्कृत के तत्सम शब्दों के गलत प्रयोग भी मिलते हैं। पौरस, सिकन्दर तथा तक्षशील के अतिरिक्त शेष सभी पात्रों के नाम काल्पनिक हैं।

प्यास (सन् १९६२, पृ० ६०), *ले० :* जगदीश शर्मा; *प्र० :* देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली; *पात्र :* पु० ५, स्त्री १; *अंक :* २। *घटना-स्थल :* घर।

इस सामाजिक नाटक में धन लोभ, और शराब का दुष्परिणाम दिखाया गया है।

बाबू कुन्दन को जुए का शौक है। वह अपनी हार पर जी भरकर शराब पीता है और उसकी यह आदत इस कदर बढ़ चुकी है कि उसे अपनी बढ़ती प्यास पर काबू पा लेने का कोई भी जरिया नहीं सूझ पाता है। दूसरी ओर कुन्दन का छोटा भाई इतनी सादगी से जिन्दगी बिता रहा है कि बहुत छोटी सी आमदनी में भी वह अपने परिवार को अच्छी तरह पाल लेता है। कुन्दन के दिल में छोटे भाई के लिये जितनी नफरत है, हीरालाल के सीने में बड़े भाई के लिये उतना ही आदर है। किन्तु कुन्दन की स्त्री के कारण दोनों भाई अलग हो जाते हैं।

कुन्दन का पिता एक बन्द तिजोरी छोड़कर मरा है और साथ ही अपने दोनों बेटों के नाम एक-एक पत्र भी, जिनके अनुसार तिजोरी हीरालाल के पास है, पर कुन्दन तिजोरी लेना चाहता है। कुन्दन तिजोरी के लिये अपने साथी को एक हजार रुपया देकर एक रात में अपने छोटे भाई पर हमला कर उसके खून में हाथ रंग लेता है!! कुन्दन तिजोरी पर कब्जा कर, खूब शराब पीकर उसे तोड़ने लगता है। कुन्दन तिजोरी तोड़ते वक्त हाँफ रहा है। वह दौलत की खुशी बरदाश्त नहीं कर पा रहा है। उस तिजोरी में कागजों में लिपटी एक गड्डी निकलती है किन्तु गड्डी नोटों की नहीं बल्कि नसीहत की होती है।

कुन्दन का रोम-रोम काँप जाता है। वह महसूस करता है कि "महज मेरी अन्धी ख्वाहिश ने मुझे भाई का लहू बहा देने पर मजबूर किया" और कुन्दन···अपनी प्यास ···अन्धी ख्वाहिश, और हत्यारे शरीर पर

खिलखिला कर हँस पड़ता है वह कुन्दन के पागलपन की कभी न खत्म होने वाली हँसी थी।

प्रकाश (सन् १९३५, पृ० २१८), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० भारतीय साहित्य मंदिर दिल्ली, पात्र पु० ९, स्त्री ७, अंक ३, दृश्य ६, ७, ८।
घटना स्थल गाँव का घर, राजमहल, सहभोज, विशाल सभा, बन्दीगृह।

यह सामाजिक नाटक तत्कालीन राजनीति के परिप्रेक्ष्य में उच्च मध्य वर्ग की सामाजिक एवं नैतिक अवस्था को चित्रित करता है।

राजा अजयसिंह एक समृद्ध जमींदार और अंग्रेजी राज का भक्त है। उसकी परित्यक्ता पत्नी तारा अपने पुत्र प्रकाश का गाँव में किसी प्रकार पालन-पोषण करती है। युवा प्रकाश गाँव से नगर में आकर संयोगवश राजा अजयसिंह के दरबार में प्रवेश पा जाता है, पर अजय और प्रकाश पिता-पुत्र के नाते से अनभिज्ञ रहते हैं।

एक दिन राजा अजयसिंह गवर्नर को पार्टी देते हैं जिसमें हिन्दू महासभावादी मिनिस्टर प० विश्वनाथ, मुस्लिम लीग के नेता मौलाना शहीदबख्श, पत्रकार कन्हैयालाल वर्मा, वकील डॉ० नेस्टफील्ड भी सम्मिलित होते हैं। ये सभी पात्र स्वार्थी, ढोंगी, जनता के शोषक एवं अंग्रेज भक्त हैं। पार्टी में स्वदेशी एवं विदेशी मिष्ठानों और पकवानों की व्यवस्था है। विदेशी राजभक्त स्वदेशी वस्तुओं का तिरस्कार करते हैं। अतः प्रकाश आवेश में आकर उनका विरोध करते हुए वक्तृता देता है। स्वदेश भक्त उस सहभोज का सामूहिक रूप से बहिष्कार करते है। प्रकाश जनता में राज्याधिकारियों और धूर्त राज-भक्तों का भंडाफोड़ करता है। अपनी माता तारा की शिक्षा-दीक्षा, अपने शुद्ध आचरण एवं जनसेवा के बल पर वह जनता का प्रिय नेता बन जाता है। राजा अजयसिंह की जमींदारी में विद्रोह फैलाने के अपराध में वह बन्दी बनाया जाता है। उसी समय राजा अजयसिंह को पता मिलता है कि प्रकाश उसकी परित्यक्ता पत्नी तारा का पुत्र है।

प्रकाश-स्तम्भ (सन् १९५४, पृ० १२०), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० हिन्दी भवन, जालन्धर और इलाहाबाद, पात्र पु० ७, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य २, ३, २।
घटना स्थल सरोवर के तट के निकट आम्र-वृक्ष, गुफा, मन्दिर।

इस ऐतिहासिक नाटक में चित्तौड़ के राणा बप्पा का विवाह अरबी सेनापति की कन्या हमीदा से कराया गया है।

कालभोज बप्पा चित्तौड़-नरेश मानसिंह की बहिन का पुत्र है। राजकुमार बप्पा वास्तविकता में अनभिज्ञ होने के कारण अपने को भील जाति का ही लड़का समझता है। वह गुरु हारीत से शिक्षा-दीक्षा ग्रहण करता है। बचपन में बप्पा का नागदानरेश की पुत्री पद्मा से खेल-खेल में विवाह हो जाता है। पद्मा इस विवाह को नहीं मानती। कायर मानसिंह को बन्दी बनाकर लाया जाता है। तब बप्पा की माँ ज्वाला रहस्योद्घाटन करती है कि बप्पा क्षत्रिय है। पद्मा बप्पा से प्रेम करने लगती है। नागदा नरेश बप्पा के क्षत्रिय होने का प्रमाण मांगते हैं। बप्पा के गुरु हारीत सेना संगठित करते हैं और बप्पा अपने शत्रुओं से प्रतिशोध लेता है। अरबी सेना से घमासान युद्ध होता है। बप्पा विजयी होता है। रणक्षेत्र में बप्पा को एक अरबी सेनापति की कन्या हमीदा मिलती है वह उसको घर पहुँचाने के लिए कहता है लेकिन अरबी कन्या नहीं मानती। बप्पा का विवाह अरबी कन्या हमीदा से हो जाता है। यही नाटक का अन्त होता है।

प्रगति की ओर (पृ० ७१) ले० जगदीश मिश्र, प्र० किशोर प्रकाशन, कानपुर, अंक ३, दृश्य ७, ७, ७।
घटना-स्थल भवन, पंचायत, अदालत, सभा स्थल, वेश्यागृह, हरिजन कमल की झोपड़ी।

इस सामाजिक नाटक का मूल उद्देश्य जनता में फैली हुई कुरीतियों की ओर ध्यान दिलाना तथा योजनाओं का महत्त्व बतलाना

है।

पचीस वर्षीय महेन्द्र धनिक एवं सम्भ्रान्त नागरिक है। वह अपने मित्रों की प्रसन्नता के लिए संकोचशीलतावश शराब के साथ अन्यान्य दुर्व्यसनों से आक्रान्त होकर अपना चरित्र, धन और स्वास्थ्य सब कुछ खो देता है। मनमोहन महेन्द्र का अन्तरंग साथी है पर अन्त में सभी कुरीतियों को छोड़कर देश का सच्चा कार्यकर्ता बन जाता है। करुणा महेन्द्र की लज्जाशीला पत्नी है। पति द्वारा तिरस्कृत होने पर ग्राम-सेविका बन वह देश सेवा में लग जाती है। उसका पति महेन्द्र सलोनी नामक वेश्या के जाल में तब तक फँसा रहता है जब तक उसकी सारी सम्पत्ति लुट नहीं जाती। सलोनी एक दिन फटकारते हुए कहती है—"इस कमीने को यहाँ से निकाल बाहर करो, लाख कहा, यहाँ से निकलने का नाम ही नहीं लेता है, बेशरम!"

तीसरे अंक में महेन्द्र चर्खा चलाती हुई करुणा के स्वच्छ एवं सादे कक्ष में पहुँचकर क्षमा याचना करता है। करुणा पति के चरणों को स्पर्श करके उन्हें देश-सेवा के लिए प्रेरित करती है। महेन्द्र प्रतिज्ञा करता है—

"दीन-दुखियों को गले से लगाते हुए एक बार अवश्य ही भारत को स्वर्ग-सा बना देंगे।"

इसी प्रकार अट्ठाइस वर्षीय उत्साही युवक किशोर हरिजन-कन्या चन्द्रा से विवाह करके अपने आदर्श की रक्षा करता है। सलोनी वेश्या भी अपने अधम आचरण से दुखी होकर वेश्यावृत्ति त्याग सामाजिक कार्यों में जुट जाती है।

प्रणवीर (वि० १९९२, पृ० १२९), ले० : बलदेव प्रसाद खरे; प्र० : निहाल चन्द एंड कम्पनी, कलकत्ता; *पात्र :* पु० २१, स्त्री ४; *अंक :* ३; *दृश्य :* ६, ६, ५।
घटना-स्थल : उद्यान, जंगल, भवन।

इस सामाजिक नाटक में आदि से अन्त तक दानी-धर्मात्मा महाराज हरिश्चन्द्र सम्बन्धी घटनाओं को आधार मानकर आज के समाज का चित्र प्रस्तुत किया गया है। रायबहादुर, काशीनाथ राव, सुजान सिंह, अब्दुल अजीज दीनानाथ झा, आदि भ्रष्ट सरकारी अधिकारी हैं। मोहनलाल, एक सच्चा देशभक्त है जो अनेक कठिनाइयों के आने पर भी अपने सिद्धान्त से विचलित नहीं होता। धोखे से उसका घरबार सब कुर्क हो जाता है। सबको त्यागकर उसे दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं। परन्तु अन्त में मोहन की विजय होती है। नाटक सामाजिक होते हुए भी घटनाएं एवं दृश्य कहीं-कहीं पौराणिक जैसे हैं; जैसे देवियों का प्रकट होकर मोहन की स्त्री सरस्वती की रक्षा करना एवं शंकर जी का प्रकट होकर भविष्यवाणी करना।

प्रताप-प्रतिज्ञा (सन् १९२९, पृ० ११२), *ले० :* जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द; *पात्र :* पु० १५; *अंक :* ३; *दृश्य :* ६, ७, ६।
घटना-स्थल : हल्दीघाटी, जंगल, युद्ध-मैदान।

इस ऐतिहासिक नाटक में महाराणा प्रताप का स्वातंत्र्य प्रेम दिखाया गया है।

शिशोदिया वंश की महिमा के ठीक विपरीत आचरण करने के कारण जनता जगमल से राजदण्ड छीनकर महाराणा प्रताप सिंह के हाथों में सौंपती है। आखेट के अवसर पर अनुज शक्तिसिंह द्वारा किए गए उद्दण्ड व्यवहार के कारण महाराणा प्रताप सिंह उसे निष्कासित करते हैं। प्रतिशोध की भावना से शक्तिसिंह मुगल बादशाह अकबर से जा मिलता है। दक्षिण विजय से लौटते हुए राजा मानसिंह प्रतापसिंह के यहाँ जाता है किन्तु भोजन के समय राणा को अनुपस्थित पाकर वह अपने को अपमानित अनुभव करता है। इस अपमान के प्रतिशोध के लिए वह अकबर से आक्रमण की अनुज्ञा प्राप्त करता है। मानसिंह एवं शक्तिसिंह के नेतृत्व में मुगल सेना राणाप्रताप पर आक्रमण करती है। हल्दीघाटी के इतिहास प्रसिद्ध युद्ध में प्रताप अपने प्राणों पर खेल जाना चाहते हैं, परन्तु वीर चन्द्रावत राणा के छत्र को अपने सिर पर रख कर उनके प्राणों की रक्षा करता है। प्रताप को इस प्रकार बचकर निकलते देख दो मुगल सैनिक उनका वध करना चाहते हैं, परन्तु शक्तिसिंह मुगल

सैनिकों की हत्या कर प्रताप के प्राणों की रक्षा करता है। स्वातंत्र्य रक्षा के लिए राणा जंगलों में अनेक विपत्तियाँ झेलते हैं, परन्तु ऊदबिलाऊ द्वारा पुत्री के हाथ से घास की रोटी छिन जाने पर उनका धैर्य टूट जाता है। विचलित हो वे अकबर के पास सन्धि-प्रस्ताव भेजते हैं, परन्तु पृथ्वीसिंह अकबर के पूछने पर पत्र की सत्यता में सन्देह व्यक्त करते हैं और प्रताप के पास वीरोचित पत्र प्रेषित कर उन्हें उद्बोधित करते हैं। पृथ्वीसिंह के उद्बोधन एवं भामाशाह से प्राप्त धन के आधार पर राणा पुनः सैन्य एकत्रित कर मेवाड़ के अतिरिक्त शेष सभी स्थल हस्तगत करने में सफल हो जाते हैं। मेवाड़-स्वाधीनता की कामना लिए हुए ही महाराणा स्वर्ग सिधार जाते हैं।

प्रतिशोध (सन् १९३७, पृ० १४४), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० हिन्दी भवन, रानी मण्डी, इलाहाबाद, पात्र पु० १६, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ८, ९, ८।
घटना-स्थल विन्ध्यवासिनी का मंदिर, पर्वत, वन, युद्ध-मैदान।

लालकृत, 'छत्रप्रकाश' की घटनाओं को आधार बनाकर, राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत वीर छत्रसाल पर लिखा गया ऐतिहासिक नाटक है। प्रारम्भ में देवी विन्ध्यवासिनी, छत्रसाल के पिता चम्पतराय, तथा माँ लालकुँवरि की त्याग-गाथा है। मातृ-पितृ-विहीन छत्रसाल को प्राणनाथ कुल का इतिहास बताते हुए कर्तव्य के प्रति सजग करते है। छत्रसाल योजना बनाकर अंगदराय के साथ औरंगजेब की सेना में भर्ती होकर युद्ध में बादशाह का साथ देता है किन्तु यश का अधिकारी अन्य व्यक्ति ठहराया जाता है। इस कपटपूर्ण व्यवहार से क्षुब्ध होकर, शाही-आश्रय को तिलाञ्जलि देता हुआ छत्रसाल शिवाजी के पास जाता है। शिवाजी के अस्तित्व से उसे नया जीवन मिलता है। वह स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा को दुहराता हुआ बुन्देलखण्ड लौट जाता है। इधर ओरछे की कुटिल रानी हीरादेवी आस-पास के राजाओं को बुलाकर छत्रसाल के विरुद्ध षड्यन्त्र रचती है, लेकिन प्राणनाथ की प्रेरणा से छत्रसाल स्वतन्त्रता के लिए कमर कस लेता है। तभी औरंगजेब के सेनापति आक्रमण करते हैं किन्तु छत्रसाल उन्हें पछाड़ देता है। अपनी पराजय सुनकर औरंगजेब काँप जाता है। अनेक वीरों के सम्मिलित प्रयास से छत्रसाल अपना प्रतिशोध पूरा करता है। बुन्देलखण्ड में स्वतन्त्रता-सूर्य चमकता है। छत्रसाल आरती सजाकर देवी विन्ध्यवासिनी के चरणों में अपने को समर्पित कर देता है।

प्रतिशोध (सन् १९६५, पृ० १२८), ले० : वीरेन्द्र नारायण, प्र० हरिनाम कला पुस्तक भण्डार, नई सड़क, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री २, अंक ५, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल स्वरूप का घर, युद्ध-मैदान।

प्रस्तुत नाटक भारत-पाकिस्तान युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है। एक दिन स्वरूप के घर उसका दोस्त अहमद आता है। वास्तव में अहमद भारत के खुफिया विभाग का अफसर होता है परन्तु वह अपना वास्तविक परिचय किसी को नहीं देता। कई कारणों से स्वरूप और उसके छोटे भाई को अहमद पर शत्रु के जासूस होने का सन्देह होने लगता है। अहमद गुप्त रूप से रहस्य जान लेता है और शत्रुओं के जासूसों के षड्यन्त्रों को असफल बनाने का पूरा प्रयत्न करता है। अन्त में स्वरूप को अहमद के वास्तविक रूप का पता चल जाता है और वह पूरा प्रतिशोध लेता है।

प्रबुद्ध यामुन (वि० १९८६, पृ० १७९), ले० वियोगी हरि, प्र० गंगा पुस्तकालय कार्यालय, लखनऊ, पात्र पु० १७, स्त्री १०, अंक ५, दृश्य ५, ५, ६, ५, ४।
घटना-स्थल अरण्यप्रदेश, वन, मंदिर।

यह धार्मिक एवं दार्शनिक नाटक आलवदार यामुनाचार्य और उनकी पत्नी सौदामिनी देवी के जीवन की घटनाओं को लेकर लिखा गया है। युवराज यामुन नीलाचल के सीमांत पर अरण्य प्रदेश में पहुँचते हैं। वहाँ इनकी साधना और तपस्या से प्रसन्न होकर भक्ति

दर्शन देती है। यामुन की पत्नी सौदामिनी पतिचरण के दर्शन कर महाराज वीरसेन की रानी मंजुभाषिणी के साथ वन में पहुँचती है। यामुनाचार्य अपने शिष्यों के सहित श्रीरंग के मंदिर में पहुँचते हैं। वहाँ विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के प्रतिपादन के लिए एक नवीन भाष्य लिखना चाहते हैं। कांचीपूर्ण और यामुनाचार्य में शंकर भाष्य पर विवाद होता है। यामुनाचार्य कहते हैं कि यद्यपि शंकराचार्य ने प्रकट रूप से भक्ति का निरूपण नहीं किया, तथापि उनके हृदय में अखंड भक्ति की दिव्य ज्योति प्रज्ज्वलित रहती थी।

पंचम अंक में यामुनाचार्य अपनी माता का कुशल समाचार जानने को उत्सुक होते हैं। ज्ञात होता है कि उनकी माता, पत्नी सौदामिनी के साथ ६ महीने से उन्हें खोज रही है। यामुनाचार्य कावेरी तट पर एक झोंपड़ी में कुश शय्या पर लेटी मां का दर्शन करते हैं। सौदामिनी उनके चरणों पर गिरकर क्षमायाचना करती है। यामुन की माता श्रीरंग के मन्दिर में जाती है, जहाँ वह सिद्ध वैष्णव महात्मा ध्यान पूजा में अहर्निश डूबे रहते हैं।

प्रबुद्ध सिद्धार्थ (सन् १९५६, पृ० १६४), ले० : रामप्रसाद विद्यार्थी 'रावी'; प्र० : रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा; पात्र : पु० १६, स्त्री ६; अंक : ४; दृश्य : ६, ६, ८, ३।
घटना-स्थल : जंगल, राज्यसभा, कपिलवस्तु, बुद्ध संघ।

गौतम बुद्ध की शिक्षा का प्रभाव स्पष्ट करने के उद्देश्य से लिखा गया यह ऐतिहासिक नाटक सर एडविन आर्नल्ड की प्रसिद्ध काव्य-कृति "दि लाइट आफ एशिया" तथा बुद्ध जीवन सम्बन्धी अन्य पुस्तकों में पाई जाने वाली घटनाओं और प्रसंगों पर आधारित है। उसके पात्र भी कतिपय स्वकल्पित पात्रों को छोड़कर बौद्ध-ग्रंथों में पाए जाने वाले पात्र ही हैं। नाटककार गौतम के जीवन की लगभग सभी प्रसिद्ध घटनाओं—देवदत्त के बाण से आहत हंस और उसको लेकर राज्यसभा में प्रस्तुत न्याय प्रसंग, धावन प्रतियोगिता और उसमें बुद्ध की उदारता, रूप-प्रतियोगिता का आयोजन, उसमें गौतम का यशोधरा के प्रति आकर्षण और तदुपरान्त विवाह, महाभिनिष्क्रमण, कृच्छ साधना और उससे असंतोष, पुत्र की मृत्यु से संतप्त माता को सान्त्वना, ग्वाले द्वारा मूर्छित बुद्ध को क्षीरपान कराना, बिम्बसार का राज्यार्पण, सुजाता द्वारा खीर खिलाना, तपस्या के समय आने वाली बाधाएँ और प्रलोभन तथा उन पर विजय, कौण्डिन्य को अष्टांग मार्ग की शिक्षा, कपिलवस्तु में भिक्षाटन के कारण पिता का रोष, पर बाद में संघ में सम्मिलित होना, दस्यु-नायक का हृदय-परिवर्तन, मृत्यु-समय सुभद्र को दीक्षा और उनके उद्देश्य, सिद्धान्त, और ज्ञान-चर्चा आदि को नाटक में समाविष्ट किया गया है।

प्रबोधनाट (वि० १७००, पृ० ३३), ले० : जसवन्त सिंह; प्र० : जसवन्त सिंह ग्रन्थावली में प्रकाशित; पात्र : अंक, दृश्य और घटना-स्थल का उल्लेख नहीं।

प्रबोधनाट की दो हस्तलिखित प्रतियाँ उदयपुर और जोधपुर के भांडागारों में उपलब्ध हैं। उदयपुर की प्रति में प्रबोधनाट और जोधपुर की प्रति में प्रबोध नाटक नाम दिया गया है। यह न तो संस्कृत के प्रबोध-चन्द्रोदय नाटक का अनुवाद है और न रूपान्तर। नाट्यकार उक्त संस्कृत नाटक की कथा के आधार पर स्वतंत्र रचना करता है अतः वह कहीं भी अनुवाद का उल्लेख नहीं करता। जहाँ प्रबोध चन्द्रोदय नाटक ६ अंकों में विभक्त है वहाँ प्रबोधनाट में कोई अंक नहीं। संस्कृत नाटक में प्रत्येक अंक का सम्बद्ध विषय के अनुसार नामकरण किया गया है किन्तु इस नाट में इस प्रकार का कहीं विभाजन नहीं। प्रबोध चन्द्रोदय की मूल कथा को ब्रजभाषा गद्य और १७ छंदों में निबद्ध किया गया है।

सूत्रधार मंगलपाठ के अन्त में नटी को बुलाकर कहता है कि परम विवेकी महाराज अपने सभासदों में विवेक उत्पन्न कराने के लिए प्रबोधनाट का अभिनय करने की आज्ञा देते हैं। यह वचन यवनिका से काम सुनता है

अन रति के साथ रगमच पर सम्मुख आकर कहता है—"जौलौं ए मेरे बान हैं तौं लौं विवक कौ कहा सामथ है और प्रबोध कैसें होईयो।" काम रति को समझाते हुए कहता है कि "हमारो अरु विवेक कौ एकै जु पिता है पर मन कै दोइ स्त्री हैं। एक तौ प्रवृत्ति एक निवृत्ति। प्रवृत्ति तें उपजे तिनकैं मोह प्रधान। अरु निवृत्ति ते उपजे तिनकैं विवेक प्रधान।"

इसी समय विवेक मति सहित आते हैं और विवेक मति को समझाते हुए कहते हैं "जद्यपि पुरुष बुद्धिवान धीरजवान है तऊ स्त्री हर्यो है मन जाकौ तिन सहजें धीरज छाड्यो, माया कै सग तें आपनपौ भून्यौ।"

महाराज विवेक बधनमुक्त होकर ब्रह्मएक्ता की प्राप्ति का उपाय बताते हैं। इसी समय दम आकर ब्रह्मज्ञानी, अग्निहोत्री एव तपस्वियों का परित्रगन भडाफोड करता है। यहा महामोह का सेवक क्रोध, यवनिका मे कहता है—"मैं सुर्यौ साति सद्धा आसतिक्ता महाराजा महामोह कौं द्वेष करै हैं।" यहाँ काम प्रतिज्ञा करता है कि "हौं सब सृष्टि कौ अधकरौं, अधीर करौं, अज्ञान करौं।"

इधर आस्तिकता आज्ञा देती है कि "राजा विवेक सौं जाइ कहौं कि महामोह कौं निरमूल करैं।" राजा विवेक वस्तुविचार को महामोह सेना से लडने को भेजता है। शत्रु सेनापति क्रोध से लडने के लिए धीरज कोऔर लोभ पर विजय प्राप्त करने हेतु सन्तोष को नियुक्त करता है। विवेक वाराणसी नगरी मे गगातट पर बैठकर युद्ध-क्रीडा देखना है। श्रद्धा आस्तिकता को युद्ध का वृत्तान्त सुनाती है कि वस्तु विचार न्याय वैशेषिक को, धीरज मीमासा पातजल को, सतोष वेदान्त-साख्य को मोह की सेना से लडने भेजने हैं। महामोह अपने सैनिक काम, क्रोध, लोभ, पाखड शास्त्र और नास्तिक तर्क को रणक्षेत्र म भेजता है। युद्ध मे महामोह की सेना पराजित होती है अन वह कही छिप जाता है "मनहूँ पुत्र पौत्र वियोग तें प्रानत्याग करिबे कौं भयो है।"

अब पुरुष प्रसन्न होता है और उपनिषद् उसे समझाना है कि "ईश्वर तोतैं न्यारौ नोहीं। तुमहूँ ईश्वर तें न्यारे नोही पैं अग्यान करिकै न्यारे भए हौ।" पुरुष प्रसन्नता से देवी आस्तिकता के चरणों पर गिरकर निवेदन करता है—"देवी के प्रसाद तें कहा कठिन होय"। अन्त मे सूत्रधार आशीर्वाद देते हुए कहता है कि जब तक गगा का प्रवाह पृथ्वी मडल पर है तब तक राजा विवेक सुखसम्पति सहित नवखड पर राज्य करें।

प्रभावती हरण (सन् १६१५, पृ० ७२), ले० जगतप्रकाश मल्ल, प्र० डॉ० लेखनाथ मिश्र, ग्राम पौता, पोस्ट अररेहाट, जिला दरभगा, पात्र पु० ११, स्त्री ६, अक के स्थान पर दिवस का उल्लेख है, दृश्य विभाजन नही।

इस पौराणिक नाटक मे प्रभावती और प्रद्युम्न का प्रेम दिखाया गया है।

नेपाल और मैथिली नाटक की परम्परा म 'प्रभावती हरण' एक कडी है। नान्दीपाठ के पश्चात् सूत्रधार और नटी रगमच पर उपस्थित होकर पुन अभिनयोपयुक्त वेश धारण करने के लिए रगशाला मे चले जाते है। कृष्ण, सत्यभामा और रुक्मिणी उपवन मे उपस्थित होकर श्रृगार रस पूर्ण वार्तालाप करके अन्त पुर में प्रवेश करते है। वज्रनाभ असुर की हत्या के उद्देश्य से इन्द्र का आदेश पाकर हस और हसी प्रभावती तथा प्रद्युम्न का मिलन कराने जाते हैं। जिस समय हस और हसी सरोवर की शोभा देखते हैं उसी समय प्रभावती वहाँ पहुँच जाती है। प्रभावती हस और हसी की रूप-सुषमा से प्रभावित हो जाती है। वार्तालाप के मध्य कृष्ण-पुत्र प्रद्युम्न-की चर्चा होनी है। प्रभावती अपने पिता और कृष्ण की शत्रुता की चर्चा करती है, किन्तु हसी द्वारा बारम्बार आग्रह करने पर वह उसकी स्वीकृति दे देती है। प्रभावती की विरह-ज्वाला में मुक्ति के लिए हसी उपाय करती है। घटनाओं का सयोजन इस प्रकार किया गया है कि वज्रनाभ और हसी दोनो की भेंट होती है। तत्पश्चात् वज्रनाभ द्वारा प्रेषित दूत भद्र कृष्ण के समीप जाते है। उपयुक्त अवसर पाकर देवेन्द्र निवेदन करते हैं कि तुरत प्रद्युम्न को भेजकर वज्रनाभ वध द्वारा देवताओं का उपकार कीजिये। कृष्ण प्रद्युम्न को हस-हसी के साथ भेज देते हैं।

सभी वज्रनाभ के समक्ष प्रस्तुत होकर राम-जन्म का नृत्य करते हैं। नृत्य को देखकर राजा अत्यधिक प्रसन्न होते हैं। इधर मालिनि प्रभावती को माला देने के लिए जाती हैं और प्रद्युम्न भ्रमर का छद्म वेष धारण कर वहाँ पहुँचते हैं। उस समय प्रभावती हंसी से अपनी विरह-वेदना कहती हैं। तत्क्षण प्रद्युम्न भ्रमर रूप का परित्याग कर अपना सही रूप प्रकट करते हैं। हंसी प्रभावती और प्रद्युम्न का परिचय कराकर वहाँ से चली जाती है। इस प्रकार हंस और हंसी के प्रयास से प्रभावती और प्रद्युम्न का मिलन संभव होता है। प्रभावती की सखियाँ प्रद्युम्न के विषय में सारी बातें जानकर प्रसन्न होती हैं। प्रभावती की माँ वज्रनाभ को सूचित करती है कि प्रभावती के भवन में किसी पुरुष का आगमन हुआ है। इससे वज्रनाभ क्रोधावेश में आकर प्रद्युम्न को घेर लेता है। इसी अवसर पर कृष्ण भी अपने परिजनों के साथ प्रवेश करते हैं। दोनों दलों में भयंकर युद्ध होने पर वज्रनाभ मारा जाता है। कृष्ण प्रद्युम्न का राज्याभिषेक वज्रपुर में करते हैं। तत्पश्चात् सभी द्वारका लौटते हैं।

'प्रभावती हरण' में गद्य और पद्य दोनों सहयात्री हैं। बीच-बीच में संस्कृत श्लोकों का भी प्रयोग हुआ है।

प्रभावती हरणम् (सन् १८६५, पृ० २८), ले० : भानुनाथ; प्र० : राजकीय यन्त्रालय में हरिभक्त नारायण द्वारा मिथिला में प्रकाशित; पात्र : पु० १०, स्त्री ३; अंक : ४; दृश्य-रहित।

इस पौराणिक नाटक में प्रभावती और प्रद्युम्न का परिणय दिखाया गया है।

वज्रपुर के राजा वज्रनाभ की पुत्री प्रभावती कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के साथ प्रेम करती है। इसमें शृंगारिक विषय-वस्तु की अधिकता है। अनेक स्थलों पर नाट्यकार अपहरण संबंधी दृश्यों का चित्रांकन करता है। इसकी कथा-वस्तु जगत प्रकाशमल्ल कृत प्रभावती हरण से मिलती है। इसका 'पारिपार्श्विक' भी रत्नपाणि के 'तटस्थ' के समान काम करता है। वह उद्धरणों पर अपनी सम्मति भी देता चलता है। इसमें हास्य के कुछ उदाहरण मिलते हैं। इस नाटक के कतिपय मैथिली गीतों पर विद्यापति का प्रत्यक्ष प्रभाव है।

प्रभास मिलन नाटक (वि० १९६०, पृ० १४८), ले० : बलदेव प्रसाद मिश्र; प्र० : वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई; पात्र : पु० ६, स्त्री ५; अंक : ६; दृश्य : ६, ४, १, ३, ३, २।
घटना स्थल : प्रभास क्षेत्र।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण एवं ब्रजवासियों का प्रभास क्षेत्र में पुनर्मिलन दिखाया गया है।

नाटक भक्ति रस प्रधान है। इसमें भक्ति की महिमा का वर्णन किया गया है तथा उसे जीवन में सर्वोपरि व आदर्श स्थान दिया गया है। नाटक का मुख्य भाव यह है कि बिना कृष्ण के चरणारविन्दों में मन लगाये किसी की गति नहीं होती।

प्रयाग रामागमन (सन् १९११, पृ० ३४), ले० : बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'; प्र० : आनन्द कादम्बिनी यन्त्रालय, मिरजापुर; पात्र : ६; अंक दृश्य रहित।
घटना-स्थल : प्रयाग भारद्वाज का आश्रम, गंगातट, वन।

इस धार्मिक नाटक में राम-लक्ष्मण और सीता का प्रयाग में आगमन दिखाया गया है।

इसमें गंगा-स्तुति स्वरूप नांदी और अंत में आशीर्वाद स्वरूप भरतवाक्य है, और पात्रों के प्रवेश का संकेत भी कर दिया गया है। निषाद अवधी, सीता ब्रजभाषा और अन्य पात्र खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग करते हैं। नाटक में कुल १५ पद्यों का व्यवहार हुआ है। नाटककार की भूमिका के अनुसार प्रयाग की युक्तप्रांतीय प्रदर्शिनी के अवसर पर अभिनय के लिए इसकी रचना सन् १९१० में हुई थी। 'इसमें रामचन्द्र जी का वनयात्रा में प्रयाग आना और भारद्वाज का अतिथि होना वर्णित है। कथा का आधार वाल्मीकि रामायण है।'

निषाद द्वारा नाव से गंगा पार होने के पश्चात् राम उसे विदा करते हैं और भाई तथा पत्नी से गंगा तथा वन की शोभा और प्रयागराज की महिमा का वर्णन करते हुए भारद्वाज के आश्रम में पहुँचते हैं। वहां आतिथ्य स्वीकार कर प्रात काल चल देते हैं।

प्रलय और सृष्टि (सन १९५७), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली, (शाप, वर तथा अन्य एक पात्री नाटक में सकलित), *अक दृश्य रहित।*

यह मोनोड्रामा है। इसमें एक व्यक्ति चश्मा, नोटबुक, कलम, लाइट हाउस, टावर, घण्टा, चिमनी, बादल, धरती इत्यादि से बातें करता हुआ प्रस्तुत किया जाता है। इसका एक पात्री नायक मजदूरों की हड़ताल कराता है। तदुपरान्त हड़तालियों के जुलूस का नेतृत्व करने जाता है। मार्ग में वह उपर्युक्त जड पात्रों से बातें करता है। वार्तालाप में साम्यवाद के सिद्धांत रखता है। विविध राजनीतिक वादों पर विचार करता हुआ वह साम्यवाद को भी अन्य वादों की तरह एकांगी मानता है। एक स्थान पर कहता है—"मेरा मकान भी गिरा मैं मजदूरों का नेता, मेरा मकान कैसे गिरा? यह इकना कैसे हो गया । तो क्या मेरा वाद भी इकगा है।" इस प्रकार राजनीतिक जीवन, सामाजिक स्थितियां और मान्यताओं पर व्यग्य किया गया है।

प्रलय से पहले (सन् १९३८, पृ० ८२), ले० ज्वालाप्रसाद सिंहल, प्र० सद्ज्ञान सदन, इन्दौर, पात्र पु० २१, स्त्री १, अक रहित, दृश्य २२।
घटना-स्थल राज दरबार, इन्द्र सभा, हिमालय पर्वत, चौराहा।

नाट्यकार का कथन है "अब रात भर खेले जाने वाले नाटकों की आवश्यकता नहीं है। अब तो केवल दो घटे में समाप्त होने वाले नाटकों की जरूरत है। अक भी दो से अधिक न हों। उनमें बातचीत भी छोटे वाक्यों द्वारा हो। घटनाक्रम तेज हो। नाटक की कथा उसकी ललित भाषा में न होकर उसके घटनाक्रम और अभिनय की यथार्थता में है।"

इस नाटक में प्रह्लाद, हिरण्यकश्यप, और होलिका की प्रसिद्ध कथा दी हुई है। हिरण्यकश्यप प्रह्लाद को अधर्म की ओर ले जाना चाहता है किन्तु वह अडिग रहता है। रानी कयाधु उसे बहुत समझाती है किन्तु वह पहाड़ से गिरने और आग में जलने को तैयार हो जाता है पर सत्य को नहीं छोड़ना चाहता।

होलिका उसे गोद में लेकर आग में जलने बैठ जाती है। वह कहती है "मेरे पास अग्नि भेदक लेप लगी चादर है, उसको ओढ लूंगी तो जलूंगी नहीं"। किन्तु होलिका जल जाती है। अन्त में प्रह्लाद को खंभे में बाँधकर मारने की तैयारी होती है। हिरण्यकश्यप जब तलवार उठाकर मारने चलता है तो एक तीर उसकी तलवार के दो टुकड़े कर देता है और दूसरा हिरण्यकश्यप की छाती को बेध देता है। दो तीर हिरण्यकश्यप के दूसरे दोनों बेटों को लगते हैं। वे भूमि पर गिर जाते हैं। इसी समय आर्यावर्त के सम्राट् नरसिंह देव घोड़े से उतरते हैं। नारद मुनि आकर प्रह्लाद को आशीर्वाद देते हैं।

प्रवास (वि० १९९८, पृ० १७८), ले० कमलकान्त वर्मा, प्र० तुलसीप्रसाद खेतान, खेतान हाउस, कलकत्ता, अक २, दृश्य १५, १६।
घटना-स्थल चौपाल, वन का दृश्य, बैठक, घर का बरामदा, राजाराम के घर का भाग, हिमालय पर्वत का एक शिखर।

यह नाटक देहाती चौपाल में अलाव के चतुर्दिक बैठे किसानों के वार्तालाप से आरम्भ होता है। कलकत्ता में स्वच्छन्द घूमने वाली स्त्रियों को हिडिम्बा की संतान बनाकर उनका मजाक उड़ाया जा रहा है। अल्गू, शकर, दामोदर ऐसी ही बातें कर रहे हैं। मनोहर हरदत्त से उसके पुत्र विमल को लेकर कलकत्ते जाना चाहता है। हरदत्त के रोकने पर भी वह कलकत्ता पहुंचता है। मनोहर ग्रामीण किसान अब कलकत्ता में लक्षाधीश हो जाता है और उसकी कन्या कृष्णा रेडियो पर संगीत का कार्यक्रम देने लगी है। रात्रि की

अतिवेला में भी वह अकेले लौटती है। ग्राम की वही लड़की नगर में कितनी स्वच्छन्द विचरती है। माता को उसके विवाह की चिन्ता है पर कृष्णा निश्चिन्त है। मूल कथा के साथ कलकत्ते के बाजार का दृश्य जोड़ दिया गया है। मच्छी की बड़ी बड़ाई की गई है। बंगाली डाक्टर मच्छी की और पुरविहा पापड़ की प्रशंसा करता है। इसी प्रसंग में सन्देह रोग को सबसे भयंकर माना गया है।

मनोहर के पुत्र श्यामल का कुचक्री मित्र, एक डाकू सरदार का लड़का राजाराम कृष्णा से रुपये के लोभ में विवाह करना चाहता है। इस नाटक में कलकत्ते के जीवन, वेश्याओं की दशा, ग्रामीण परिवार के समृद्ध होने पर सन्तान के स्वच्छन्द जीवन का चित्रण है। ग्राम से बंगाल में प्रवासी बनने वाले परिवार की जीवनगाथा, प्राचीन और नवीन संस्कृतियों का संघर्ष दिखाया गया है।

अभिनय—यह नाटक भागलपुर में होने वाले अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के चतुर्थ अवसर पर अभिनीत—

प्रह्लाद चरित (सन् १८६५, पृ० ६६), ले० : लाला श्रीनिवास दास; प्र० : खेमराज श्रीकृष्ण दास वेंकटेश्वर छापाखाना, बम्बई; पात्र : पु० ८, स्त्री १; अंक रहित; दृश्य : ११।
घटना-स्थल : पाठशाला।

इस पौराणिक नाटक में प्रह्लाद और हिरण्यकश्यप के आख्यान द्वारा भक्त की महिमा दिखाई गई है।

इसकी कथा प्रसिद्ध विष्णुभक्त प्रह्लाद और नरसिंहावतार द्वारा हिरण्यकश्यप के वध पर आधारित है। इस नाटक का प्रमुख पात्र प्रह्लाद एक उपदेशक गुरु प्रतीत होता है। वह अपने गुरु को भी उपदेश देता है। इसमें होली, प्रह्लाद की बुआ के रूप में प्रस्तुत नहीं की गई है। हास्य की योजना प्रह्लाद के साथियों के माध्यम से पाठशाला में की गई है। पुराणों के प्रति नाट्यकार का मोह इस नाटक में अलौकिक घटनाओं को जोड़ने के लिए प्रेरित करता रहा है।

प्रह्लाद चरितामृत नाटक (सन् १९०३, पृ० ६२), ले० : जगन्नाथशरण; प्र० : सारन सुधाकर प्रेस, छपरा; अंक : ४; दृश्य : ३, ३, ३, ४।
घटना-स्थल : राजमन्दिर एवं राजसभा।

इस पौराणिक नाटक में प्रह्लाद की भक्ति का प्रभाव दिखाया गया है।

इसमें भक्त प्रह्लाद का चरित्र है। प्रह्लाद की भक्तिभाव एवं उसके पिता के कुकृत्य का इसमें वर्णन है। नाटक के अन्त में भगवान् नरसिंह प्रकट होकर प्रह्लाद की रक्षा एवं उसके पिता का वध करते हैं। अन्त में प्रह्लाद के गुणगान के साथ नाटक समाप्त होता है।

प्रह्लाद नाटक (सन् १९१९), ले० : सुन्दरलाल शर्मा त्रिवेदी; प्र० : हिन्दी प्रेस, प्रयाग; अंक : ४।
घटना-स्थल : पाठशाला, पहाड़, होलिका।

इस पौराणिक नाटक में प्रह्लाद के शिक्षाकाल से हिरण्यकश्यप के वध तक की कथा द्वारा भक्ति महिमा दिखाई गई है।

हिरण्यकश्यप तप द्वारा ब्रह्मा को प्रसन्न कर यह वरदान प्राप्त कर लेता है कि उसे मनुष्य, देव, दानव, पशु आदि किसी से कभी भय न होगा। मृत्यु उसकी दासी बनी रहेगी। किसी भी काल या स्थान में वह न मारा जा सकेगा। इस वरदान से वह उन्मत्त और स्वच्छंद होकर अत्याचार पूर्वक शासन करता तथा लोगों को सताता है।

इसका पुत्र प्रह्लाद इसके विपरीत पांडे जी के पढ़ाये पाठ के प्रतिकूल विष्णु को महान् और पिता को हीन कहता-मानता है। इसका अनुसरण पाठशाला के अन्य विद्यार्थी भी करते हैं। पांडे जी की शिकायत पर हिरण्यकश्यप प्रह्लाद से अपने चिर-शत्रु के नाम जाप का निषेध करता है जिसे वह अस्वीकार करता है। फलतः उसे मार डालने के अनेक उपाय किये जाते हैं। फिर भी वह ऊँचे पहाड़ से गिराने, होलिका के गोद में बैठाकर जला डालने, समुद्र में फेंकने, पागल हाथी से कुचलवाने, शूली पर चढ़ाने

से भी वच जाता है। अन्त मे हिरण्यकश्यप स्वय तलवार से उसके वध को उद्यत होता है और प्रह्लाद को अपने राम की सहायता से बच निकलने की चुनौती देता है। प्रह्लाद के एकाएक यह कहते ही कि इसी खभे मे राम हैं, खभे को फाडकर नृसिंह प्रकट होते है और हिरण्यकश्यप का वध कर डालते है।

इसका अभिनय प्रयाग मे सन् १९११ मे हुआ।

प्राणेश्वरी (सन् १९३१, पृ० ९७), ले० डॉ० धनीराम प्रेम, प्र० चाँद कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अक २, दृश्य ५, ६।
घटना स्थल सगीत सभा।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेयसी और प्रेमी की मिथ्या आशका का निवारण दिखाया गया है।

मदन मालती का प्रेमी है। मालती के पिता दयाशकर दोनो के प्रेम को देखकर एक रात्रि मे सगीत सभा का आयोजन करते है। उसमे मदन व मालती के विवाह की घोषणा करना चाहते हैं। वे एक सगीत मण्डली को बुलाते हैं परन्तु सगीत मण्डली के अध्यक्ष प्राणनाथ देर से आते है। दयाशकर उन्हे निकाल देते है। बाद मे मण्डली के दो सदस्य गोपाल व गणेश भी वहा पहुँचते है। मालती इस सभा मे कलकत्ते के राजा श्यामदास व रानी को भी निमन्त्रित करती है परन्तु किसी कारण वे नही आते। मालती गोपाल को राजा कहकर परिचय कराती है परन्तु बाद मे असली राजा रानी भी आ जाते हैं। गोपाल का भेद खुलता है। उधर गोपाल की पत्नी, को जो वहाँ आ जाती है— मिर्गी के दौरे पडते हैं। वह मदन के गले लिपटती है। गोपाल के कहने पर मदन उसे प्राणेश्वरी कहकर जान छुडाना है, परन्तु मालती यह देख लेती है और मदन को अपमानित कर देती है। बाद मे गोपाल मालती को सही बात बताता है। इस पर मालती मदन से क्षमा-याचना करती है। इस प्रकार दोनो प्रेमी मिल जाते हैं।

प्रियदर्शी (सन् १९६२, पृ० १०५), ले० जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द, प्र० गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल राजभवन, युद्ध-क्षेत्र, ग्राम।

इस ऐतिहासिक नाटक मे किसानो के योगदान तथा सैनिको की शक्ति द्वारा राज्य-क्रान्ति से उन्नति दिखाई गई है।

पाटलिपुत्र मे उपगुप्त अशोक को सौतेले भाई राजकुमार सुमन के खिलाफ युद्ध करने के लिए उत्साहित करता है। सुमन अयोग्य एव क्रूर व्यक्ति है, पर मरणासन्न राजा-बिन्दुसार उसी को अपना उत्तराधिकारी घोषित करना चाहता है। अशोक युद्ध के लिए तैयार हो जाता है। इसी समय रगमच पर सैनिक महाबल पत्नी विमला सहित आता है। विमला महाबल को एक मौन सैनिक मात्र नही रहने देना चाहती। वह कहती है कि "आपमे वीरता के साथ साथ विवेक की मात्रा भी बढनी चाहिए"। अन्त मे महाबल उसके आग्रह से अशोक के समर्थन मे आन्दोलनकारियों का साथ देने की इच्छा व्यक्त करता है। तपन एक लेखक हैं, वह राजनीतिज्ञों की अवसरवादिता एव द्विमुखता की कटु आलोचना करता है। वह परिहास मे अपनी पत्नी से कहता है 'अपन राम तो तटस्थ ही रहगे। केवल शब्दो का उपयोग करेंगे। कभी एक पक्ष की आलोचना कभी दूसरे की जब किसी एक पक्ष के पूर्ण विजयी होने की पूरी सम्भावना देख लेंगे तब अपनी तटस्थता की माया समेटकर प्रकट रूप मे उसी के साथ हो जायेंगे"। शीला और तपन के जाने के बाद सुशील और सरला वार्तालाप करते हुए प्रवेश करते है। ये ग्रामीण दम्पति तथा पाटलिपुत्र के ग्रामीण निवासी भी सुमन के उद्दण्ड व्यवहारों से ऊब चुके है। किसान कहते है "समाज मे कभी ऐसा युग भी तो आना चाहिए जिसमे किसान सर्वोपरि हों"— राजनीति मे किसानों का महत्त्व सैनिको से बहुत अधिक होना चाहिए, क्योंकि सैनिक जिस धन के दास बनकर शासको की शक्ति बढाते हैं उस धन के मूल स्रोत तो किसान

व्यावहारिक जगत् में संभव नहीं। इसीलिए एक युवती करुणा प्रेम की व्यापक परिभाषा देते हुए उसे सत्य, शिव और सुन्दर गुणों से विभूषित करती है। अंत में कवि जग से पलायन का खंडन करके जीवन की कठोर भूमि को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाता है क्योंकि एकांतीपन, निराश्रित तथा अनास्थापूर्ण अतृप्त स्थितियों को प्रेम ही परस्पर सम्बद्ध किए रहता है।

प्रेम की ज्वाला (पृ० ६०), ले० पं० शिवदत्त मिश्र, प्र० ठाकुर प्रसाद एंड सन्स, बुकसेलर, वाराणसी, पात्र पु० ५, स्त्री २, अंक-रहित, दृश्य ६।
घटना-स्थल घर, नगर, जंगल, आश्रम।

यह एक सामाजिक नाटक है। ईश्वरभक्त-वेद की पत्नी रमा पतिव्रता नारी है। वेदराम का लड़का शोभाराम बचपन से ही भगवान की भक्ति में लीन हो जाता है। रमा के आग्रह पर इन्द्रकुमार शोभाराम को ईश्वर-भक्ति से मोड़ने के लिए एक रूपवती युवती चन्द्रावती को उसके पास भेजता है। शोभाराम पहले तो चन्द्रावती को साधारण नारी समझकर उससे कुछ बातें कर लेता है जिससे चन्द्रावती को शोभाराम को पथ-भ्रष्ट करने की आशा प्रतीत होती है और उसे अपने प्रेम में बाँधने का प्रयास करती है। लेकिन अन्त में शोभाराम के दृढ़ वैराग्य से चन्द्रावती की आँखें खुल जाती हैं और वह पश्चात्ताप करती है। पश्चात्ताप से हृदय निर्मल होता है। निर्मलता से सुधार, सुधार से ज्ञान और ज्ञान से ही मोक्ष प्राप्त होता है।

प्रेम की वेदी (सन् १९१९ पृ० ७०), ले० प्रेमचन्द, प्र० हंस प्रकाशन इलाहाबाद, *अंक-रहित*, दृश्यों में विभाजित।

यह सामाजिक नाटक प्रेम के क्षेत्र में धर्म का बन्धन अस्वीकार करके प्रेम की वेदी पर उसका बलिदान करता है।

इस नाटक में प्रेमचन्द ने विवाह की एक समस्या उठाई है। इस समस्या के अन्तर्गत धर्म की रूढ़िबद्धता तथा संकुचित परिभाषा के प्रति विभिन्न तरह के विद्रोही स्वर को प्रस्तुत करना चाहा है। इसमें जेनी नामक एक ईसाई लड़की योगराज नामक हिन्दू से विवाह करना चाहती है। धर्म दोनों की अभिलाषा में बाधक होता है। नायिका जेनी के हृदय में प्रेम तथा धार्मिकता के मध्य संघर्ष चलता है, और अन्ततोगत्वा धर्म को ढकोसला घोषित करती हुई सारे बनावटी बंधनों को, अपने आत्मगत प्रेम की वेदी पर अर्पित करती है।

प्रेम के तीर (सन् १९३५, पृ० २१८), ले० राजा चक्रधर सिंह, प्र० साहित्य समिति, रायगढ़, पात्र पु० ११, स्त्री ५ इत्यादि, *अंक* ३, दृश्य ७, ८, ७।

इस सामाजिक नाटक में राजकुमारी के अपहरण द्वारा विवाहेच्छा की पूर्ति का परिणाम दिखाया गया है।

कन्नौज महल के एक हिस्से में महाराज सूर्यसिंह अपने मंत्री प्रभाकर सिंह के साथ टहलते हुए कुछ बातें कर रहे हैं। मालवाधिपति अजीतसिंह एकान्त उपवन के मैदान में टहलते हुए डाकुओं के एक दल के सरदार कालू को उज्जैन की राजकुमारी प्रभा का अपहरण करने के लिए डेढ़ लाख रुपये देते हैं। डाकू प्रभा को उड़ाकर अपने पास ला उसे अपनी रानी बनाने को उत्सुक होता है, किन्तु रानी के अस्वीकार करने से वह उस का जबरदस्ती हाथ पकड़ता है। इसी समय चन्द्र अपने साथियों सहित उसे घेर लेता है, चन्द्रसिंह उसको पिस्तौल से मार देता है। अब अजीतसिंह प्रभा को लेने आ जाता है। चन्द्रसिंह से युद्ध होता है। चन्द्रसिंह उसके सीने पर चढ़कर तलवार भोंक देना चाहता है लेकिन अन्त में वह चन्द्रसिंह से क्षमा माँगता है। प्रभा अपने घर जाकर अपने पिताजी को प्रणाम करती है और उसी राज-भवन में प्रभा और चन्द्रसिंह का विवाह हो जाता है।

प्रेम प्रशंसा (सन् १९१४, पृ० ६०), ले० पाण्डेय लोचन प्रसाद, प्र० हरिदास एंड

कम्पनी, कलकत्ता; *पात्र :* पु० ६, स्त्री ६; *अंक :* ४; *दृश्य :* ३, ३, ३, ३ ।
घटना-स्थल : घर, गांव ।

इस प्रहसन में सम्मिलित हिन्दू कुटुम्ब की स्थिति का पूरा चित्रण किया गया है। भाई-भाई में विरोध कराने वाली स्त्रियों के कलह से घर में अशान्ति दिखाई गई है।

गृहस्थाश्रम के सुख-दुःख, स्त्री जाति की निन्दा और स्तुति, माया-मोह से आत्मोन्नति में बाधा आदि विषयों का चित्रण मिलता है।

प्रेम बन्धन (सन् १९२५, पृ० ८५), ले० : रामशरण 'आत्मानन्द'; प्र० : उपन्यास बहार आफिस काशी, बनारस; *पात्र :* पु० ६, स्त्री २; *अंक :* ३; *दृश्य :* १०, १२, ५ ।

इस सामाजिक नाटक में एक व्यक्ति अपने मित्र के कारण दुराचरण का झूठा आरोप स्वीकार करता है किन्तु उसका परिणाम सुखद होता है।

हेडमास्टर और वीना दो अलग-अलग शरीर हैं किन्तु उनकी आत्मा एक है। पर प्रतिष्ठित जमींदार भानुप्रताप अपनी पुत्री वीना की शादी अपने मित्र गोकुल के लड़के सुरेश के साथ करना चाहते हैं। सुरेश विलायत पास एक दुराचारी युवक है। वह स्वयं भोला की लड़की गौरी के साथ दुर्व्यहार करता है, किन्तु इसका झूठा आरोप हेडमास्टर पर लगाता है। हेडमास्टर इस आरोप को भानुप्रताप की श्रद्धा और भक्ति तथा वीना के सत्य-प्रेम के कारण स्वीकार कर लेता है। अंत में इस रहस्य का भंडाफोड़ हो जाता है जिससे वीना और सुरेश की शादी भी स्थगित हो जाती है और हेडमास्टर को जेल से मुक्ति मिल जाती है। वीना तथा युवक हेडमास्टर का विवाह भानुप्रताप आदरपूर्वक सम्पन्न कराते हैं।

प्रेम वाटिका (सन् १९९२), ले० : राजेन्द्र बहादुर सिंहदेव बर्मा; प्र० : भारत जीवन प्रेस, काशी; *पात्र :* पु० १२, स्त्री ६; *अंक-रहित; दृश्य :* ८ ।
घटना-स्थल : राजसभा, वाटिका, राजमार्ग ।

इस धार्मिक नाटक में महाराज दशरथ की सभा में विश्वामित्र के आगमन से परशुराम की क्षमा याचना तक की कथा को आठ दृश्यों में प्रदर्शित किया गया है। इसको रामलीला की दृष्टि से लिखा गया है। इसका गद्यभाग नाट्यकार द्वारा विरचित है किन्तु पद्यभाग गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस से उद्धृत किया गया है। नाटक का प्रारम्भ और अन्त दोनों गोस्वामी जी के विनय पदों से ओतप्रोत है।

प्रेम मंजरी ((सन् १९५१, पृ० ६६), ले० : महाराजाधिराज श्री सिनगाधिपदेवसिंदेगेन विरचित; प्र० : भारत जीवन यन्त्रालये बाबू रामकृष्ण वर्म्मणा, काशी में मुद्रित; *पात्र :* पु० ३, स्त्री ५; अंक रहित; *दृश्य :* ३ ।
घटना-स्थल : नन्दन भवन ।

नाटक में कृष्ण और गोपियों के प्रेम-सम्बन्ध की कहानी का वर्णन है। उद्धव जी गोपियों को उपदेश देते हुए कृष्ण के प्रेममय चरित्र का रहस्योद्घाटन करते हैं। राधाकृष्ण का चरित्र ही अद्भुत है। मनुष्य निरन्तर दूसरों के विषय भोग का वर्णन अथवा मनन करने में निष्फल परिश्रम करता है क्योंकि इस प्रक्रियारूपी घृत की आहुति से भोगाग्नि कब शान्त होती है। हां ऐसे प्राणी परमात्मा की लीला का मनन करने से वासनारहित हो सकते हैं।

पूरा नाटक दोहा और चौपाइयों में लिखा गया है।

प्रेम-महिमा (सन् १९६१, पृ० १५८), ले० : भाऊ कलचुरी; प्र० : आदि के० ईरानी, मेहरे पब्लिकेशन्स, किंग्स रोड, अहमदनगर, महाराष्ट्र; *पात्र :* पु० ७, स्त्री ३; *अंक :* ३; *दृश्य :* ६, ६, ६ ।
घटना-स्थल : विश्वनाथ का घर, बिहारी का घर, सड़क, घसीटा की झोपड़ी, मेहर बाबा का स्थान ।

इस धार्मिक नाटक में प्रेम द्वारा कलह

का नाश दिखाया गया है। भूमिका मे बताया गया है कि 'प्रेम-महिमा' प्रेमावतार मेहरे बाबा की ईश्वरीय अभिव्यक्ति के क्रम मे उनकी एक और दिव्य किरण है जिसके प्रकाश मे अनेक जन, जो माया के मौजूदा घोर अन्धकार मे भटक रहे हैं, मार्ग पर आ सकेंगे।" इसमे युगावतार मेहरे बाबा के कुछ प्रेम सन्देशो का सग्रह है।

एक पुराने जमीदार विश्वनाथ मेहर बाबा के उपासक मे हैं। बिहारी पण्डित उनका कट्टर विरोध करता है। वह अपने भाई घसीटा को घर से निकाल देता है क्योकि वह मेहर बाबा की शिक्षा का प्रचार करता है। विश्वनाथ एव घसीटा मेहर केन्द्र की स्थापना करते हैं परन्तु बिहारी, बाँके, झगड़ू आदि कट्टर पन्थियो को लेकर उनके जप मे विघ्न डालता है। विश्वनाथ की पत्नी आशा भी पुराने अन्ध भक्तो मे है तथा विश्वनाथ की भतीजी शोभा को मेहर-भक्त होने के नाते कष्ट दिया करती है। बिहारी का पुत्र सुरेश धर्म पर किताब लिख रहा है एव धर्म के प्रेममय रूप पर ही विश्वास करता है। वह पिता बिहारी द्वारा घर से निकाली फुफेरी बहन पद्मा की सदा हिमायत करता है तथा उसे मेहर केन्द्र मे आश्रय दिलाता है। कई घटनाओ के कारण अन्त म बिहारी पण्डित, आशा तथा बाँके आदि की आँख क्रमश खुल जाती हैं। वे प्रेम एव धर्म के वास्तविक तत्व को समझ लेते है और आपस के विरोधो को मिटाकर प्रेम महिमा के प्रचार मे लग जाते हैं।

प्रेम या पाप (सन् १९४६, पृ० ६४), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद, पात्र पु० ३, स्त्री ४, *अक ३, दृश्य रहित।*

इस सामाजिक नाटक मे कला के नाम पर होनेवाले दुराचरण का चित्र खीचा गया है।

शेयर बाजार के व्यापारी लक्ष्मी निवास की पत्नी कीर्ति नृत्य-सगीत के द्वारा अपना नाम सार्थक करना चाहती है। लाला जी कीर्ति का सगीत नृत्यादि की शिक्षा देने के लिये कलानाथ कवि को नियुक्त करते हैं। अपने *व्यापारिक कार्यों मे व्यस्त रहने के कारण* लाला जी को अपनी रूप-लावण्यमयी पत्नी की देखभाल का समय नही मिलता। क्रमश कलानाथ और कीर्ति का अवैध प्रेम सम्बन्ध बढता जाता है। वह कीर्ति की कला पर एक *महाकाव्य की रचना करना चाहता है,* परन्तु जब कीर्ति इस कार्य मे उसको असमर्थ देखती है तो इस प्रेम को पाप समझकर वह नरेन्द्र नामक एक सिनेमा डायरेक्टर के सम्पर्क मे आती है जहा उसका पूर्ण रूप से पतन होने लगता है।

रूपगर्विता, वासना लोलुप सौ दर्योपासक कीर्ति नृत्य एव गान मे तब तक मग्न रहती है जब तक उसके घर की सुख शान्ति, पति का प्रेम, घर का पावन वातावरण नष्ट नही हो जाता।

कीर्ति यश-मोह से इतनी पागल है कि जो उसकी प्रशसा करता है उसी के साथ प्रेम करने लगती है।

प्रेम-योगिनी (वि० १९७८, पृ० १५२), ले० रामेश्वरी प्रसाद 'राम', प्र० बाढ, *जिला पटना,* पात्र पु० १३, स्त्री ६, अक ३, दृश्य २२।

पिता अपनी पुत्री के विवाह की चिन्ता से चिन्तित है। अन्त मे वह एक वृद्ध रईस से उसका विवाह करना निश्चित करता है। उसकी पत्नी इस बात का विरोध करती है किंतु पिता दस हजार रुपय के लालच मे आकर अपना निर्णय नही बदलता। वृद्ध रईस एक धूर्त ब्राह्मण का अपने विवाह सम्बन्धी कार्यों के लिए नियुक्त करता है। युवती पुत्री माधव नामक एक युवक से प्रेम करती है। उस राज्य का प्रधान मंत्री युवती का अपहरण कर लेना है तथा अपनी कुत्सित वासना की पूर्ति करना चाहता है। युवती के अपूर्व साहस के आगे वह कुछ नहीं कर पाता। फकीर वेश धारण किए हुए राजा के द्वारा समस्त षड्यन्त्रो का उद्घाटन होता है तथा मत्री को कैद कर लिया जाता है। युवती को मुक्त कर दिया जाता है। युवती योगिनी बनकर अपने प्रिय को ढूँढने निकल पडती है।

प्रेम योगिनी (सन् १८७४), ले० : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; प्र० : हिन्दी पुस्तक भंडार, लहरिया सराय; दृश्य : ४।

यह नाटक अपूर्ण है। प्रथम दृश्य में काशी के गुण्डे और दुश्चरित्र व्यक्तियों का वर्णन और दूसरे में महात्माओं और दर्शनीय स्थानों का उल्लेख है। वास्तव में इस नाटक में कोई सम्बद्ध कथा नहीं है, अपितु बाबू व्रजरत्नदास के अनुसार 'यह तो किसी रमते-राम का एक तीर्थ स्थान में जाकर उसकी विशेषता का ऐसे रूप में वर्णन करने का प्रयास है।' बाद में जोड़े गये दृश्यों में से एक में 'बहरी तरफ' जाने की प्रथा का वर्णन है तथा गैबी में एकत्र होने वाले गुण्डों, भडेरियों और दलालों के द्वारा देश की पतनोन्मुख परिस्थिति को इंगित किया गया है, पंछियों की खोज में निकले घनदास तथा वनितादास की बातचीत से यह स्पष्ट हो जाता है।

दूसरा दृश्य स्टेशन का है। इसमें यह दिखलाया है कि किस प्रकार पण्डे काशी की महत्ता का गुणगान कर भोली स्त्रियों को फँसाते हैं। इस नाटक की महत्ता केवल इतनी ही है कि उसके प्रत्येक पात्र काशी के सामयिक समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस नाटक में काशी की धार्मिक तथा अभिजात वर्ग के लोगों के व्यसनों और बुराइयों का उद्घाटन यथार्थरूप में हुआ है।

प्रेम लोक (सन् १९३४, पृ० ११८), ले० : रामनरेश त्रिपाठी; प्र० : हिन्दी मन्दिर, प्रयाग; अंक : ५; दृश्य : २६।

यह नाटक स्त्रियोपयोगी है। इसमें संसार की असारता एवं दुखों की अतिशयता का चित्रण करने के साथ ही त्रिपाठी जी ने अनेक काल्पनिक चित्रों का संबल ग्रहण कर प्रेम की महत्ता का प्रतिपादन किया है। इस दुःखमय संसार से दूर किरण और तारा प्रेम की खोज में चन्द्रलोक जाते हैं और चन्द्रलोक में कुछ समय रहकर वे अपने अनुभवों को संचित कर पुनः पृथ्वी पर लौट आते हैं। संपूर्ण नाटक में प्रेमानंद का चित्रण हुआ है।

प्रेम विकास नाटक (सन् १८९०, पृ० १४), ले० : व्रजजीवन दास, दीक्षावाक गुजराती ठाकुर विष्णुदत्त जी; प्र० : विक्टोरिया प्रेस, बनारस; पात्र : पु० २, स्त्री २; अंक : घटनानुसार दो भागों में विभाजन, प्रत्येक भाग ४ अंकों में।
घटना-स्थल : वृन्दावन कुंज।

इस नाटक में कृष्ण एवं राधा तथा उनकी सखी ललिता के प्रणय-संवाद में प्रेम के स्वरूप का वर्णन किया गया है।

प्रेम सुन्दर नाटक (सन् १८९२, पृ० १०६), ले० : शिवदयाल सिंह वकील 'मुंशी'; प्र० : यूनियन प्रेस कं०, जबलपुर; पात्र : पु० १७, स्त्री ६; अंक : ४; दृश्य : ३, ६, ५, ४।

इस नाटक का विषय प्रेम है और उसका नामकरण भी नायक और नायिका के नाम पर किया गया है। नायक प्रेम रूपवान् होने के साथ सभी गुणों से युक्त है। नायिका 'सुन्दर' भी प्रेम के नाम से प्रणय का अनुभव करती है और वाटिका में प्रथम दर्शन में ही वह 'प्रेम' के लिये अपने आपको समर्पित कर बैठती है। नायक और नायिका का प्रणय बन्धन इतना दृढ़ है कि वे संसार के समस्त कष्टों और रुकावटों का सामना करते हुए अन्त में विवाह बन्धन में आबद्ध हो सर्वदा के लिये जीवन साथी बन जाते हैं।

नाटककार ने प्रथम दर्शन के प्रणय को वैवाहिक जीवन में परिणत कर नाटक की परिसमाप्ति की है। नायिका 'सुन्दर' की रचना लेखक ने रीतिकालीन नायिकाओं के रूप में ही की है, क्योंकि नायिका के विरह वर्णन में चन्दनादि शीतल सुवासित पदार्थों को दाहक रूप में प्रस्तुत किया है।
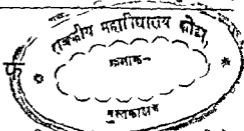
फदी (सन् १९७१ पृ०, १०६), ले० शकर दोष, प्र० अनादि प्रकाशन इलाहाबाद, पात्र ९, पु० ३ अक ३।
घटना-स्थल जेल, कन्सलटेशन रूम।

आधुनिक यात्रिक एव कृत्रिम जीवन के सवास को झेलने वाले युवक की करुण कथा है। फदी अपने पिता को कैंसर की असह्य यन्त्रणा से मुक्ति देता है लेकिन वह स्वय विसगतियो एव परिस्थितियो के जाल-फाँस मे जकड उठता है। एक पशु मनुष्य की करुणा का पात्र हो सकता है पर एक व्यक्ति समाज की करुणा का पात्र नहीं हो सकता है। कैंसर की असाध्य यत्रणा से तडपते पिता को मौत से मुक्ति देना अपराध है। वकील द्वारा फदी को बचाने के तर्क, पूर्वाभ्यास, अदालत मे बहस सब कुछ है लेकिन न्यायाधीश के निर्णय को पाठको और दर्शको पर छोड दिया गया है।

अभिनय जबलपुर २-१-७२।

फर्ज और मुहब्बत (सन् १९५६, पृ० ८०), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० ५, अक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल प्रभात भारती का मकान।

इस नाटक मे प्रेम और कर्त्तव्य का द्वन्द्व दिखाया गया है। प्रभात भारती अपने निर्देशन मे कला सीखने वाली शारदा कुमारी से प्रेम करता है, किन्तु उसकी तरफ प्रभात-भारती का मित्र राजेश भी आकर्षित है। इसलिए मित्र के फर्ज को निभाने के लिए प्रभात-भारती अपना प्रेम दबाकर शारदा को राजेश के घर भेज देता है, किन्तु राजेश प्रेम को पवित्र रखने के लिए शारदा कुमारी को प्रभात-भारती के चरणो मे समर्पित कर देता है, ताकि एक कलाकार की कला न मिटने पावे। फर्ज और मुहब्बत की यह अजीब-सी कहानी है।

फिर बाजेगी शहनाई (सन् १९६४ पृ०७२), ले० सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भडार दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक-रहित, दृश्य ३।
घटना स्थल धोबी का घर।

इस नाटक मे वैमनस्य को दूर कर आपस मे प्रेमभाव स्थापित करने का प्रयास है। यह नाटक धोबियो के दो ऐसे खानदानो से सबधित है, जिनमे उत्पन्न दो प्रेमी अपने घरानो की पुरानी दुश्मनी की वजह से एक दूसरे से न तो प्रेम ही कर सकते है और न ही शादी। किन्तु नई पीढी पारिवारिक पुरानी नफरत और दुश्मनी पर पर्दा डाल देती है, और इस प्रकार वर्षों की शत्रुता मैत्री मे बदल जाती है।

फुलवारी लीला (सन् १९३६, पृ० ४८), ले० मुन्शी वागेश्वरी दयालु, प्र० भार्गव पुस्तकालय बनारस सिटी, पात्र पु० १२, स्त्री ४, अक २, दृश्य ६, २।
घटना स्थल मिथिलापुर के निकट का स्थान, वाटिका, जनकपुर, राजा जनक की सभा।

इस पौराणिक नाटक मे भगवान् श्री राम और लक्ष्मण के द्वारा मिथिला की सुन्दर वाटिकाओं का सौन्दर्य दिखाया गया है। दूसरे दृश्य में जनकपुर का बाजार तथा तत्कालीन संस्कृति का परिचय दिया गया है, जहाँ मालिन राम से पूछती है कि "हे प्रभु! सब फूलो मे तो आप ही निवास करते है अब किस फूल का गजरा बनाकर आप के गले मे डारें।" मालिन की बात सुन भगवान् राम प्रसन्न होकर लक्ष्मण को उसे पुरस्कार देने

का आदेश देते हैं। राम और लक्ष्मण विश्वामित्र की आज्ञा से नगर का अवलोकन करने जाते हैं। जनकपुर की अट्टालिकाओं पर बैठी (सुन्दरियाँ) नारियाँ राम और लक्ष्मण को देखकर मोहित हो जाती हैं।

जानकी जी राम का रूप देखकर विमोहित हो जाती हैं। राम-लक्ष्मण जनकपुरी का अवलोकन कर संध्या करने के लिए आश्रम में लौट आते हैं। सीता भी उदासमना सखियों के साथ घर लौट जाती हैं।

फुलवारी लीला-नाटक (सन् १९३६, पृ० ६३), ले० : मुं० रामगुलाल लाल; प्र० : बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : २; दृश्य : १०, १।
घटना-स्थल : जनकपुर का मीना बाजार, जनक की सभा, मिथिलापुर की वाटिका।

इस पौराणिक नाटक में जनकपुर की फुलवारी लीला का वर्णन है। राम, लक्ष्मण मुनि विश्वामित्र के साथ जनकपुर के सुन्दर उपवन में निवास करते हैं। दोनों भाई गुरु की आज्ञा से नगर का परिभ्रमण करते हैं। जनकपुरी के निवासी राम-लक्ष्मण के अलौकिक सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाते हैं। वे सब सीता के अनुरूप राम को 'वर' पसन्द करते हैं किन्तु धनुष-यज्ञ की शर्त से दुश्चिन्ता में भी पड़ जाते हैं। सारा समाज राम में आस्था रखता हुआ उन्हीं के द्वारा धनुष चढ़ाये जाने की कामना करता है।

राम-लक्ष्मण जनक-वाटिका में फूल लेने वहाँ पहुँच जाते हैं जहाँ सीता भी गौरी-पूजन के लिए पहुँचती है। अचानक दोनों के चार नेत्र होते ही राम और सीता एक-दूसरे पर मुग्ध होते हैं। सीता गौरी से अपने अनुकूल वर-प्राप्ति का आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। नाटक के अन्त में कैकय देश के राजा सत्यकेतु के पुत्रों में सबसे प्रतापी राजा भानुप्रताप की कथा स्वयं विश्वामित्र सुनाते हैं।

फूल और अंगारे (सन् १९२०, पृ० ६४), ले० : भारतेन्दु रामचन्द्र गुप्त; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड संस बुकसेलर, वाराणसी; पात्र : पु० ७, स्त्री २; अंक : ७; दृश्य : ५, ४, ३, २, १, २, ३।
घटना-स्थल : रामदास का घर, जंगल, मार्ग।

इस प्रेम-प्रधान नाटक में असहाय कन्या की प्रतिष्ठा की रक्षा की गई है। एक असहाय गरीब की सुन्दरी कन्या फुलवा के पिता रामदास को जंगल का सरदार मंगलसिंह मार डालता है और फुलवा को लेकर भाग खड़ा होता है। रास्ते में गोपाल मिलता है। मंगलसिंह और उसकी लड़ाई होती है और अन्त में मंगलसिंह हार जाता है। फुलवा अपने प्रेम और प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए गोपाल के साथ आग में जल जाती है।

फूलों का देश (सन् १९६०, पृ ८०), ले० : सुमित्रानन्दन पंत; पात्र : पु० ३; अंक-रहित।

इस गीति नाट्य में अध्यात्मवाद, आदर्शवाद एवं वस्तुवाद-सम्बन्धी संघर्ष की अभिव्यक्ति और उनमें व्यापक समन्वय स्थापित करने की चेष्टा की गई है। विश्व-जीवन में बहिरंग-सन्तुलन तथा परिपूर्णता लाने के लिए दोनों की ही उपयोगिता दिखाई गई है। इसके पात्र हैं : कलाकार, वैज्ञानिक और विद्रोही। कवि और वैज्ञानिक के वार्तालाप से मानव-समस्या को सुलझाने का प्रयास किया गया है। उत्तर शती में सन् १९५१ पात्र बनकर आता है और १९००-१९५० तक विश्व में होने वाली क्रान्तियों का उल्लेख करता है। अंत में भरतवाक्य के रूप में आशा प्रकट की गई है।

फूलों की बोली (सन् १९४०, पृ०, ८०), ले० : वृन्दावनलाल वर्मा; प्र० : मयूर प्रकाशन, झाँसी; पात्र : पु० ४, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ३, ४, ५।
घटना-स्थल : घर, जंगल।

अरब-यात्री अलबरूनी भारत-यात्रा करते हुए उज्जैन भी जाता है। वहाँ पर उसे स्वर्ण-रसायन और व्याप्ती के विषय में पता चलता है, जिसके लोभ में हमारे देश के कुछ लोग अंधे हो रहे हैं। इस नाटक में लेखक का उद्देश्य है कि असली कमाई

पसीना बहाने से प्राप्त होती है न कि कुकृत्यों और अपराधों से।

कामिनी और माया दो प्रसिद्ध गायिकाएँ हैं। माया की कला के पुजारी नगर-सेठ माधव और व्यवसायी पुलिन, इन गायिकाओं की कला का रसास्वादन करने के लिए उनके पास जाते हैं। वहाँ उन्हें एक सिद्ध नामक ठग मिलता है जो साधु के रूप में स्वर्ण-रसायन मंत्र बताने के बहाने इन का सारा धन लूटना चाहता है। वह कामिनी व माया को अपना शिकार बनाकर पुलिन व माधव (ब्याडी) पर भी प्रभाव जमाता है। दूसरे दिन वह (सिद्ध) कामिनी और माया से मिलकर कहता है कि वह उनका सारा स्वर्ण हीरे-मोतियों में परिवर्तित कर देगा और स्वर्ण-रसायन का भेद बतायेगा। वह उनके सारे आभूषण एक मटके में मँगवाकर रख लेता है और माया को स्नान करने के लिए भेज कर सारे आभूषण लेकर अपने साथी बलभद्र के साथ भाग जाता है। नगर से बाहर जाकर आभूषणों में से आधा हिस्सा लेकर भागता है पर दोनों में लड़ाई होती है। सिद्ध अपनी लाठी से बलभद्र के सिर पर घाव करके भाग जाता है। पुलिन घायल बलभद्र को उठाकर माया के घर ले जाता है। बाद में सिद्ध भी पकड़ा जाता है। माया, कामिनी, माधव व बलभद्र सब उसे क्षमा कर देते हैं। अन्त में माया का बलभद्र से और कामिनी का माधव से विवाह हो जाता है।

फेरार (सन् १९५०, पृ० ५६), ले० श्री शारदानन्द झा, प्र० नीर मुक्ति पब्लिकेशन्स, १ सर पी० सी० बेनर्जी रोड, इलाहाबाद, पात्र पु० २१, स्त्री १, अंक ३, दृश्य १७।
घटना-स्थल अनूप का घर, दरोगा का क्वार्टर, पोस्ट आफिस, जमींदार की कचहरी।

इसमें सन् १८५७ के भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम की राजनीतिक घटना का वर्णन है। ब्रिटिश शासक अपनी दमन-नीति के द्वारा इस प्रकार की क्रांतियों को कुचलना चाहते थे। भारतीय भी प्राणों की बाजी लगाकर अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र करना चाहते थे। इसी के फलस्वरूप जगह-जगह पर ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ बगावत होती है। रेलवे-स्टेशन, पोस्ट-आफिसों एवं थानों को लूटा जाता है। स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिकों के खिलाफ सरकार की ओर से मुकदमा चलाया जाता है तथा उन्हें हिरासत में लेने की भरपूर कोशिश की जाती है, किन्तु सरकार के सभी प्रयास नाकामयाब सिद्ध होते हैं। अन्त व्यक्तियों को अपराधी घोषित कर उन पर मुकदमा चलाया जाता है जिसके फलस्वरूप एक को काले पानी की सजा और दूसरे को जुर्माना होता है जिसके साथ नाटक समाप्त होता है।

फैसला (सन् १९८६, पृ०८०), ले० रमेश मेहता प्र० बलवंत राय ऐण्डको दिल्ली, पात्र पु० १३ स्त्री ३ अंक ३।
घटना-स्थल घर, पंचायत भवन।

इस सामाजिक नाटक में हिन्दू विधवा के प्रति समाज की कठोरता, निर्ममता एवं अत्याचारों के साथ उसकी दैन्य-दशा तथा उस के करुणापूर्ण अंत का हृदयविदारक चित्र अंकित है। 'राधा' ऐसी ही अभागिन विधवा है, जो समस्त परिवार की मनोयोग-पूर्वक सेवा के उपरान्त भी अपमान एवं तिरस्कार ही प्राप्त करती है। शोभा तथा चोखेलाल का व्यवहार भी 'राधा' के प्रति अत्यन्त कठोर एवं निर्मम है। इस परिवार में यदि कोई 'राधा' के प्रति सहानुभूति रखता है तो वह है एकमात्र 'बिहारी' जो चोखेलाल का भतीजा है, और इसी कारण वह बेचारा भी चोखेलाल के परिवार के आँख की किरकिरी है। 'जमना' उसकी हत्या के लिए अपने बचपन के प्रेमी हकीम भैरो प्रसाद से एक औषधि प्राप्त करती है और उसे दूध में घोलकर पिलाती है। फलतः बिहारी पागल हो जाता है और उसकी वाक्-शक्ति नष्ट हो जाती है।

चमेली का भतीजा सुरेश एक दिन रात्रि में राधा से अपनी वासना-पूर्ति की याचना करता है, परन्तु मानवता की देवी 'राधा' उसे बुरी तरह से फटकारती है। सुरेश के साथ चोखेलाल की पुत्री शोभा भाग जाती है।

चोखेलाल राधा पर अनैतिकता का दोषारोपण कर उसे घर से निकालने की योजना बनाता है। इस षड्यन्त्र में बिरादरी के पंचों की भी सहायता ली जाती है। चार पंच जो किसी न किसी रूप में चोखेलाल के आभारी हैं, एकमत से राधा को दोषी ठहराते हैं। पांचवें पंच भगत बालकराम इस निर्णय का विरोध करते हैं, परन्तु सरपंच हीरालाल बालकराम के कथनों की अवज्ञा करते हुए अपना निर्णय सुना देते हैं। 'चमेली' अत्यन्त निर्ममतापूर्वक राधा को अपशब्द कहती है और उसे शीघ्र ही घर से निकल जाने का आदेश देती है। परन्तु 'राधा' सारा अत्याचार चुपचाप सहन करते हुए विष पीकर यह कहते-कहते अपने प्राणों का अन्त कर देती है कि—"नेक बहुओं की घर की चौखट से अर्थी निकलती है पाँव नहीं।" इस प्रकार एक हिन्दू विधवा का जीवन हिन्दू समाज के इस अत्याचारपूर्ण विधान एवं दुर्व्यवहार की अग्नि में स्वाहा हो जाता है।

अभिनीत—थ्रीआर्ट्स क्लब दिल्ली द्वारा।

फैसला (सन् १९५८, पृ० ९६), ले० : भुवनेश्वर सिंह; प्र० : ग्रंथालय प्रकाशन, दरभंगा; पात्र : पु० १६, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ५, ५, ५।

घटना-स्थल : डॉ० बसन्त की कोठी, अदालत।

'फैसला' एक मध्यवर्ती परिवार का चित्र प्रस्तुत करता है। धनराज अपनी सम्पूर्ण धन-सम्पत्ति को अपने पुत्र विनय की पढाई में लगाकर स्वयं निर्धन हो जाता है। धनराज के मित्र डॉ० बसन्त विनय की सहायता की दृष्टि से उसे अपनी बेटी वीणा के लिए ट्यूटर के रूप में रख लेते हैं। वीणा विनय के प्रति आकृष्ट है और वीणा की माँ रम्भा भी इसके पक्ष में है, परन्तु रमेश (प्रतिनायक) डॉ० बसन्त के मन में शंका उत्पन्न कर विनय को उनके घर से निकलवाने में सफल हो जाता है। अवसर का लाभ उठाकर वह डॉ० बसन्तलाल की मूल्यवान् वस्तुओं को चुरा ले जाना चाहता है, परन्तु डॉ० बसन्त चोरी करते हुए पकड़ लेते हैं पर वह उनकी हत्या कर भाग जाता है। रमेश छलबल से डॉ० बसन्त की हत्या का दोषारोपण विनय पर कर उस पर अभियोग चलाता है। अदालत में साक्ष्य के अभाव से विनय अपने को निरपराध सिद्ध करने में असफल ही रहता है। फलतः अदालत द्वारा उसे मृत्यु-दण्ड की घोषणा होती है। रमेश वीणा के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखता है, किन्तु वह अपनी इस योजना में असफल रहता है। अदालत में विनय के मृत्यु-दण्ड का समाचार पाकर वीणा रमेश की पिस्तौल से आत्मघात करना चाहती है परन्तु पिस्तौल पर अपने पिता का नाम अंकित देखकर अचेत हो जाती है। रमेश के पास से निकली डॉ० बसन्त की पिस्तौल उसके षड्यन्त्रों का भण्डाफोड़ कर देती है। अन्त में विनय को सम्मान मुक्त कर रमेश पर हत्या का अभियोग चलाकर उसे मृत्यु-दण्ड दे दिया जाता है।

फ्रेम-बिना तसवीर (सन् १९५७, पृ० १०६), ले० : विद्यावती कोकिल; प्र० : ज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद; पात्र : पु०४, स्त्री ३; *अंक :* ४; *दृश्य :* १, १, १, १।

घटना-स्थल : इंगलैंड में डॉक्टर का कमरा, भद्र परिवार का घर, इंगलैंड में भारतीय शैली का सजा कमरा।

इस नाटक के माध्यम से प्राचीन सभ्यता-संस्कृति और मानवतावाद पर प्रकाश डाला गया है।

जन्तु-विज्ञान की प्रोफ़ेसर डॉ० एनी स्लेटरन को विज्ञान में सर्वथा नये दृष्टिकोण का सूत्रपात करने के उपलक्ष्य में उनकी पुस्तक 'द रियल मैन' पर एक लाख का जेम्स पुरस्कार मिलता है, पर उन्हें इससे कोई प्रसन्नता नहीं होती। डॉ० एनी आइन्सटीन, शेक्सपियर, मार्क्स, फादर स्लटेर की वृत्तियों का सामंजस्य एक व्यक्ति में करना चाहती हैं। वैज्ञानिक होने के नाते उन्हें सर्वत्र विज्ञान के द्वारा लायी हुई मूर्ति ही दीखती है। वह कहती है—"संसार के सारे धर्म और उनके भेदभाव, बात की बात में, मिटने जा रहे हैं। धर्म जो कुछ अपना सिर पटककर भी न कर पाया, उसे विज्ञान सहज ही सुलभ बना रहा है। परन्तु धीरे-धीरे उनका दृष्टिकोण बदल जाता है। वे वैज्ञानिकता से अधिक मानवतावाद पर विश्वास करती हैं

और कहती है—मोनिका ने पश्चिम को एकदम हृदयहीन बना डाला है। शिक्षित सामर्थ्यशाली मानव पशु से ऊपर है पर पूर्ण मनुष्यता से अभी नीचे है। भारत-भ्रमण के पश्चात् तो उनका कायापलट ही हो जाता है। लेखिका ने भारतीय आदर्शों का सुन्दर अङ्कन किया है। पश्चिम की भौतिकता, वैज्ञानिकता, अन्वेषणशीलता अब धीरे-धीरे मानवतावाद की ओर बढ़ रही है। पश्चिम क्षणिक प्रसन्नता, क्षणिक सुख शान्ति की तलाश में है। लेखिका अन्त में कहती है—"दुनिया के खाली पड़े फ्रेम में उस मानवता के राजा की फोटो को फिट करो। दुनिया उसके दर्शन करे, उसके चरणों का अनुसरण करे।"

ब

बंद कमरे की आत्मा (सन् १९७२, पृ० ५०), ले० चतुर्भुज, प्र० मगध कलाकार प्रकाशन, १०६, श्रीकृष्ण नगर, पटना, पात्र पु० ५, स्त्री १, अंक-रहित, दृश्य ५। घटना-स्थल दो कमरे।

एक रोमांचकारी रहस्यपूर्ण सामाजिक नाटक जिसका नायक एक ऐसा युवक है जो मरा हुआ समझा जाता है, जिसका दाह-संस्कार तक हो गया है।

बंदी (सन् १९५४, पृ० ३८), ले० जगदीश चन्द्र माथुर, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री २, अंक ३, दृश्य-रहित।

घटना-स्थल गाँव का एक प्राचीन ढंग का बंगला' (तीनों अंकों में एक ही स्थान।)

इस नाटक में गाँव की दशा बताकर उसे बंदीगृह का रूप दिया गया है।

राय तारानाथ कलकत्ता नगर में अपनी पुत्री हेमन्ता, आया और नौकर चैनराम के साथ वर्षों से निवास कर रहे हैं पर मूलत वह एक गाँव में उत्पन्न हुए थे जहाँ वर्षों के बाद इस उद्देश्य से लौटे हैं कि नौकरी से अवकाश ग्रहण करने पर वह शेष जीवन अपनी जन्मभूमि पर बितायेंगे। उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो चुका है। वह गाँव में उन स्थानों को जहाँ उनकी पत्नी पूजा करती थी अपनी कन्या हेमलता को दिखाकर ग्रामीण जीवन के खेत की हरियाली, हँसती हुई चाँदनी, बाँस की झुरमुटों पर ज्योत्स्ना की मुस्कान का वर्णन करते हुए मुग्ध हो जाते हैं। उनकी कन्या का बचपन गाँव में बीता है इसलिए उसके मन में ग्रामीण जीवन के प्रति एक प्रकार का ममत्व है।

बीरेन नामक एक युवक कलकत्ते से इस परिवार के साथ गाँव में रहने आया है और वह ग्रामोद्धार समिति का निर्माण करना चाहता है। इसी गाँव में बालेश्वर उर्फ बी० पी० सिन्हा अपने मित्र करमचन्द के साथ एक क्लब चलाना चाहते हैं।

दूसरे अंक में जज साहब के आगमन के पन्द्रह दिन बाद गाँव के चौधरी और उसके भतीजे बालेश्वर में झगड़ा होता है और बालेश्वर अपने चाचा पर प्रहार करता है गाँव में घर घर झगड़ा, भूखे भिखमंगों की टोली, चीथड़ों में लिपटी औरतें, गरीबी और गंदगी देखकर जज साहब का मन ऊब जाता है। बीरेन बाबू की ग्रामोद्धार समिति में केवल बहसें होती हैं, ऊपर का दिखावा अधिक है और काम कुछ नहीं।

गाँव में अनेक दल बन गये हैं। एक दल-सिन्हा जिन्दाबाद कहता है तो दूसरा दल करमचन्द की जय-जयकार और सिन्हा मुर्दाबाद करता है। बीरेन बाबू के ग्रामोद्धार-समिति के उत्सव में दोनों पार्टी के लोग लट्ठ लेकर पहुँचते हैं और चुनाव में दलबन्दी होने के कारण मारपीट हो जाती है। बीरेन बाबू घायल हो जाते हैं। बीरेन का पुराना सहपाठी लोचनसिंह कॉलिज छोड़कर मुसहरों के बीच

देहाती वेश में गरीबों की सेवा करता है और झगड़े में स्वयं लाठी सहकर वीरेन के प्राण बचाता है। लोचन, जज साहब, हेमलता और वीरेन से ग्रामीणों की सेवा के लिए प्रार्थना करता है किन्तु गांव के झगड़े, गन्दी राजनीति और दारिद्रय आदि को देखकर जज साहब के परिवार को वितृष्णा हो जाती है और वे गांव को छोड़कर सदा के लिए कलकत्ता में बसने चले जाते हैं। केवल जज साहब का नौकर चेतराम और लोचन दृढ़ संकल्प रहते हैं। लोचन चेतराम से कहता है "यकीन रखो चेतराम मैं घुटने नहीं टेकूंगा चाहे जंजीरें मुझे लहूलुहान कर दें चाहे रास्ते के कांटे मेरे तलुवों को छलनी बना दें किन्तु तुम लोगों के बढ़ते कदमों के लिए मैं अपनी हस्ती मिटाने के लिए सदा तैयार रहूँगा।" लोचन चेतराम के साथ जमीन की खुदाई करने चलता है। उसे घायल तथा थका जानकर चेतराम आराम करने के लिए कहता है लेकिन लोचन कहता है "मुझे अपने पसीने के दर्पण में कभी न मिटने वाली छाया देखनी है।" वह कुदाली उठाकर चल पड़ता है।

बंधन (सन् १९४७, पृ० ११२), लें० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : हिन्दी भवन,, रानी मंडी, इलाहाबाद; पात्र : पु० ५, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ६, ६, ५।
घटना-स्थल : झोंपड़ी, कारागार।

इस सामाजिक नाटक में पूंजीपति और मजदूरों के संघर्ष का चित्रण है। युवा मजदूर-नेता मोहन मिल-मालिक रायबहादुर खजांचीराम के अत्याचारों के विरुद्ध अहिंसक क्रांति करता है। सारे मजदूर हड़ताल कर देते हैं। रायबहादुर का पुत्र प्रकाश और पुत्री मालती, मोहन की सहायता करना चाहते हैं लेकिन मोहन अस्वीकार कर देता है। एक दिन मालती अपने कुछ गहने मोहन की बहन सरला को सहायतार्थ देती है। मोहन उन गहनों को वापस करने राय बहादुर के घर जाता है। रायबहादुर उसे चोरी के अपराध में जेल भिजवा देते हैं। मोहन के जेल जाने के बाद मजदूरों की दशा बिगड़ती जाती है। प्रकाश एक मजदूर को अपने ही घर चोरी करने के लिए भेजता है ताकि मजदूरों की हड़ताल सफल हो। चोरी करते समय रायबहादुर आ जाते हैं। मजदूर रायबहादुर को गोली मारकर चला जाता है। प्रकाश इस खून का इलजाम अपने ऊपर ले लेता है। इसी बीच मोहन जेल से छूटकर वापस आ जाता है। मोहन प्रकाश को बचाने के लिए अपने को अपराधी बताता है। दोनों जेल जाते हैं; परन्तु छूट जाते हैं। रायबहादुर भी बच जाते हैं किन्तु उनका हृदय परिवर्तित हो जाता है। अंत में मोहन को मालती के साथ विवाह-बंधन में बंधना पड़ता है। भूमिका में मिलता है कि यह नाटक प्रकाशित होने से पहले खेला जा चुका है।

बंधन अपने-अपने (सन् १९७०, पृ० १४९), लें० : शंकर शेष; प्र० : अनादि प्रकाशन, इलाहाबाद; पात्र : पु० ४, स्त्री १; अंक : ३; दृश्य : १, १, १।
घटना-स्थल : विख्यात लिपिशास्त्री जयंत के घर का ड्राइंग रूम।

यह नाटक उस विद्वान् के जीवन पर आधारित है जिसे अपने जीवन के अन्तिम दिनों में केवल निराशा ही मिलती है।

नाटक का नायक डॉ० जयंत अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का प्राध्यापक है, जो पचास वर्ष की आयु तक केवल अध्ययन और चिन्तन में तल्लीन रहता है। अनादि प्रोफेसर जयंत का छोटा भाई है। वह भी अध्यापक है लेकिन उसका मन चिन्तन और अनुसंधान से परे है। वह हमेशा संगीत-कला, क्रीड़ा और नाटक से प्रेम करता है। चेतना एक विदुषी तथा सीधी-सादी लड़की है जो प्रोफेसर जयंत के निरीक्षण में पी-एच० डी० कर रही है। घर में एक बूढ़े नौकर के अलावा और कोई नहीं है। अचानक नौकर भी रुग्ण होकर गांव चला जाता है जिससे घर का सारा काम चेतना स्वयं करती है। अनादि और चेतना में एक दूसरे के प्रति आकर्षण है। दोनों वैवाहिक बन्धन में बंधना चाहते हैं लेकिन प्रोफेसर साहब के अविवाहित रहने से अनादि शादी करने को तैयार नहीं होता है।

एक बार प्रोफेसर जयंत को उनके मित्र

तर्कतीर्थ मजूमदार नामक चित्रकार के मरने का हाल सुनाते हैं। मजूमदार भी अविवाहित विख्यात चित्रकार था। उसने भी अपना सारा जीवन चित्रकारी में बिताया। अचानक उसकी मृत्यु हो जाती है। परिवार मे कोई न होने से उसकी लाश सड जाती है और मृत्यु के तीसरे दिन पड़ोसी उसकी अन्तिम क्रिया करते हैं। यह हाल सुनकर प्रोफेसर साहब के मन मे अत्यन्त दुख होता है। उनमे परिवार की भावना जागृत होती है। तर्कतीर्थ और चेतना दोनो प्रोफेसर साहब को शादी के लिए प्रेरित करते हैं। वे सब प्रोफेसर साहब के अकेलेपन और सूनेपन को दूर करने का प्रयास करते है।

एक बार प्रोफेसर जयन एक अनुसधान-कार्य के लिए पेरिस जाते हैं। वहाँ बीमार हो जाने से वे काफी अस्वस्थ हो जाते हैं। उन्हें मन मे एक अजीब सूनेपन का अनुभव होता है। वहाँ से लौटने पर चेतना अपने गुरु की काफी सेवा करती है जिससे उन्हे शीघ्र ही स्वास्थ्य-लाभ हो जाता है। पुन तर्कतीर्थ और चेतना के कहने पर वे शादी करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

प्रोफेसर जयन चेतना को अपना जीवन-साथी बनाना चाहते हैं लेकिन वे चेतना से प्रत्यक्ष रूप मे कहने से अपने को असमर्थ पाते हैं। वे चेतना के लिए एक प्रेमपत्र लिखते हैं। चेतना प्रेमपत्र पढकर व्याकुल हो जाती है क्योंकि सदैव उसने उनको पिता और बडे बन्धु की दृष्टि से देखा है और उनकी विद्वता का भक्ति-भावना से आदर किया है। वह बहुत दुखी होती है और घर छोडकर बाहर जाने लगती है। अनादि उसे पुन घर मे वापस ले आता है। दोनो मे प्रेम वार्तालाप होता है जिसे प्रोफेसर जयन ओट में खडे होकर स्तब्ध भाव से सुनते रहते है। फिर वे चेतना और अनादि के पास आकर प्रेमपत्र के टुकडे-टुकडे कर देते हैं। और अपने पुस्तकालय की समस्त पुस्तकों को शिष्या चेतना को प्रदान करते है किन्तु किताबों के रैक से लिपटकर रोते हुए कहते हैं "नही मैं इन्हे नही छोड सकूगा। इनसे हटकर मैंने ससार से केवल एक वस्तु मागी थी। वह भी नही मिली। पुस्तकें मेरा जीवन है, मेरी दिनचर्या, मेरे माता पिता, बन्धु-सखा यही मेरी चेतना है।"

बन्धु भरत (सन् १९३८, पृ० ७५), ले० तुलसीदास राम शर्मा 'दिनेश', प्र० मीरा मदिर, बम्बई, पात्र पु० २३, स्त्री १४, अको के स्थान पर घटना के अनुरूप शीर्षक दिया गया है।
घटना-स्थल महारानी कैकेयी के राज-प्रासाद का प्रथम आगन।

इसमें भरत-शत्रुघ्न के अपने ननिहाल से आने, दशरथ के मरने रामवनगमन की कथा से लेकर भरत द्वारा पादुका-प्राप्ति तक का वर्णन किया गया है।

कैकेयी के व्यवहार से भरत का हृदय विदीर्ण हो जाता है। वे दुखी होकर कौशल्या से कहते हैं—

"माँ, मैं दुनिया की नजरो मे राम का बधु नहीं, कैकयी का पुत्र हूँ। उस राक्षसी के गर्भ मे नव मास रहा हूँ। उस का वर्षों दूध पिया है। भला ये बातें दुनिया कैसे भूलेगी? आज लोगो के सामने मेरा रोना भी "खसम मार सती होय" की कहावत चरितार्थ करेगा।" इस प्रकार से बधु भरत का सच्चा भ्रातृत्व निरुपित किया गया है।

बगावत नाटक (सन् १९१९, पृ० ७२), ले० किरत लखनवी, प्र० श्रीकृष्ण पुस्तकालय, चौक, कानपुर, पात्र पु० १०, स्त्री ३, दृश्य ८, ६, २।
घटना-स्थल महल।

नृत्य-गायन और मद्यसेवन मे मस्त शाहशाह कासिम अपनी प्रजा को सुख के बदले दुख देता है और अपने आपको धन्य मानता है।

सफदर खा उसे शराब छोडकर शाहशाह के कर्त्तव्य निभाने की सलाह देता है, किन्तु शाहशाह उसे शेरशाह का प्रतिनिधि समझ गिरफ्तार करने और वध करने की आज्ञा देता है। सफदर खा वीरता से युद्ध कर बच निकलता है। मलिका भी उसे वेश्याओं के जाल मे निकालने और प्रजा-हित मे न्याय का उपदेश देती है। फलत कासिम उसके

चरित्र पर लांछन लगाता है।

शाहजादा असलम जोहरा नाम की एक भिखारिन के पीड़ा भरे कण्ठ पर मुग्ध हो जाता है और उसे अपनी प्राणेश्वरी बनाने की इच्छा मलिका से व्यक्त कर शाहंशाह से स्वीकृति चाहता है। वह उसके लिए दीवाना हो जाता है और अन्त में मृत जोहरा को प्राप्त करता है।

बागी-दल असलम की दयालुता और न्याय-प्रियता से प्रसन्न रहते हैं। शाहंशाह काशगर जाकर डाकुओं का दमन करना चाहता है। उसे दिलावर बन्दी बनाकर उसके अत्याचारों का बदला लेना चाहता है। शाहंशाह कैद में सिर पटक कर मर जाता है।

सफदर खाँ और उसके बागी साथी शाही फौज को हराकर राज्य पर अधिकार कर लेते हैं। मलिका को वह ताज सौंपते हैं। मलिका उस ताज में शाहंशाह के अन्यायों के रक्त के छींटे अनुभव कर सफदर को प्रजा की भलाई के लिए ताज सौंप देती है।

बज्मे फानी नाटक (सन् १८९८, पृ० ७२), ले० : मेहदी हसन 'अहसन'; प्र० : पारसी थियेट्रिकल कम्पनी; पात्र: पु० १०, स्त्री ३; घटना-स्थल : घर, युद्धक्षेत्र।

इस नाटक में फिरोजाबाद के फिरोज गफरुद्दौला और जहूरुद्दौला नामक दो प्रसिद्ध परिवारों की कथा को शेक्सपियर के 'रोमियो जूलियट' के आधार पर लिखा गया है।

इस में प्रेम और युद्ध का चित्रण है। गुलनार के कारण फिरोज और मुशर्रफ में युद्ध होता है। मुशर्रफ मारा जाता है और नायक-नायिका का विवाह हो जाता है। अतः 'रोमियो जूलियट' की ट्रेजेडी यहाँ गुम्बात हो जाती है। इसके सभी पात्र एक वर्ग के हैं।

बज्मेफर्रुख नाटक मारूफवे फर्रुख सभा हाफिज नाटक (सन् १८८३, पृ० ७८), ले० : हाफिज मोहम्मद अब्दुल्ला; प्र० : पारसी थियेटर कम्पनी।
घटना-स्थल : फर्रुख सभा।

यह ओपेरा पारसियों की 'फर्रुखसभा' के आधार पर लिखा गया है। इस रचना में लेखक ने नाम-मात्र को ही कथा का सहारा लिया है। समस्त कृति नाट्यकार की अपनी कल्पना द्वारा अत्यन्त नवीन रूप में प्रस्तुत है। नाट्यकार ने परिचय में स्वयं कहा है कि—"अगरचे इस नाटक का किस्सा करीब-करीब पारसियों के 'फर्रुखसभा' का है लेकिन दोनों में इस कदर फर्क शायरी व बयान में है कि अगर उसको जमीन तसव्वर करें तो यह आसमान है।" कहीं से ईंट कहीं से रोड़ा एकत्रित कर हाफिज ने अपना उद्देश्य पूरा किया। रचना का उद्देश्य मनोरंजन ही है।

इस नाटक का प्रथम अभिनय १५-१६ जून सन् १८८३ ई० को धौलपुर में किया गया।

बज्मे फीरोज सुल्तान मारूफवे जश्ने परिस्तान, (सन् १८८३, पृ० ८५), ले० : हाफिज मोहम्मद अब्दुल्ला; पात्र : पु० ६, स्त्री ५; अंक : २; दृश्य : ६।
घटना-स्थल : सरन्दीप नगर, जंगल, फिरोजशाह का दरबार, कारागार।

इस ओपेरा में परी का किसी मानव पर आसक्त होने के रोमांसपरक कथानक द्वारा मसनवियों का स्पष्ट प्रभाव दिखाया गया है।

सरन्दीप नगर की परम सुन्दरी राजकुमारी गुलफाम स्वप्न में भारत के राजकुमार शमशाद पर मुग्ध हो जाती है। जागरण में वह वियोगदग्धा अपने प्रियतम के लिए अत्यन्त विकल होती है। वह अपनी प्रिय सखी गुल अन्दाम से अपनी कठिनाई सुनाकर उससे सहायता की प्रार्थना करती है। गुल अन्दाम उसे स्वप्नदर्शन के झूठे प्रणय से विरत होने की शिक्षा देती है, परन्तु प्रेम की दीवानी गुलफाम उसके हितोपदेश पर ध्यान न देकर अपनी पीड़ा में सहायता का वचन लेती है। वह उसके साथ सिद्धनामी नगर के फकीर करामातशाह के पास पहुँचकर प्रार्थना करती है। फकीर अपने चमत्कार से गुलफाम को शमशाद से मिला देता है। एक दिन शमशाद मृगया में हिरन का पीछा करते घने जंगल में पहुँच जाता है।

वहाँ सनोवर परी उसके ऐश्वर्यपूर्ण सौन्दर्य से आहत हो शमशाद को अपने साथ भोग-विलास तथा आनन्द लेने का निमंत्रण देती है। राजकुमार उसके जाल में फँसकर 'गुलफाम' के पास पहुँचा देने के वचन प्राप्त कर लेने पर सनोवर परी की कामपिपासा शान्त करने के हेतु विवश हो जाता है। सनोवर परी के एक मानव के साथ अभिसार को दैवी-विधान-खण्डन का अपराध समझ एक देव फिरोज को इसकी सूचना देता है और फीरोज शमशाद तथा सनोवर परी को बन्दी बनाकर कारागार में डाल देता है।

द्वितीय अंक में 'गुलफाम' अपने प्रियतम को प्राप्त करने के लिए योगिनी बन गृह से निकल पड़ती है। वह अनेक आपत्तियाँ झेल कर परिस्तान पहुँचती है। परिस्तान का देव उस वियोगिनी योगिनी के संगीत की प्रशंसा फीरोजशाह से करता है। फीरोज उसके संगीत-माधुर्य का आनन्द लेने के लिए दरबार में आने की अनुमति देता है। योगिनी के मधुर कंठ और करुण-ध्वनि से प्रभावित होकर उसे वरदान माँगने का आग्रह करता है। गुलफाम उपयुक्त अवसर जानकर शमशाद की मुक्ति का वरदान माँगती है। विवश फीरोज उन दोनों को कारागार से मुक्त कर देता है। दोनों बिछुड़े हृदय मिल जाते हैं।

बड़ा पापी कौन ? (सन् १९४८, पृ० ५३), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० राजकमल दिल्ली, पात्र ७, अंक ३, दृश्य-रहित। *घटना-स्थल* त्रिलोकीनाथ का मकान, केन्द्रीय असेम्बली।

रमाकान्त और त्रिलोकीनाथ दोनों खानदानी रईस एक दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी हैं। त्रिलोकीनाथ को अपने वंश की प्रतिष्ठा बनाये रखने की चिन्ता है, तो रमाकान्त को सार्वजनिक कीर्ति प्राप्त कर अपना व्यापार चमकाने की चिंता है। दोनों ही चैम्बर के प्रेसीडेन्सी के लिए उम्मीदवार हैं। त्रिलोकीनाथ का अधिक बोलबाला है, क्योंकि वह पुराना रईस है। त्रिलोकीनाथ वेश्या संसर्ग में लिप्त है, इधर रमाकान्त गृहस्थों की बहू-बेटियों और विधवाओं को अपनी वासना का शिकार बना रहा है। त्रिलोकीनाथ उस तरह के पाप करता है जो समाज में निंदनीय माने जाते हैं। ये सभी पाप उल्टा त्रिलोकीनाथ को ही हानि पहुँचाते हैं। नया रईस छिपे तौर से पाप करता है जिससे समाज में अनैतिकता फैलती है। त्रिलोकीनाथ का वैभव समाज को उससे नीचे ले जाता है। रमाकान्त का वैभव समाज को परम्परा से परे घोर पतन की ओर ले जाता है।

अन्त में त्रिलोकीनाथ की मृत्यु हो जाती है और रमाकान्त सार्वजनिक कीर्ति प्राप्त करने में सफल होता है। इन दोनों पापियों में यह पता नहीं लगता कि सबसे बड़ा पापी कौन है ?

बड़े खिलाड़ी (सन् १९६७, पृ० १४४), ले० उपेन्द्रनाथ अश्क, प्र० नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र पु० ५, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य-रहित। *घटना-स्थल* मध्यवर्गीय परिवार के घर का दृश्य, (कमरा, बरामदा, रसोई, आँगन)।

इस सामाजिक नाटक में विवाह की समस्या के संदर्भ में निम्न मध्यवर्ग के ओछेपन, संकीर्णता और अशिष्टता को व्यंग्यात्मक ढंग से स्पष्ट किया गया है।

मध्यवर्गीय परिवार की गृहिणी रत्नप्रभा अपनी पुत्री सुजला की शादी के लिए एक संकीर्ण हृदय वाले युवक केवलराम को पसन्द करती है। घर के सभी सदस्य उसका विरोध करते हैं। सुजला का भी मजाक उड़ाया जाता है, परन्तु वह इस संबंध का विरोध नहीं कर पाती। केवल राम और उसकी बहन चतुराई से काम लेते हैं, जिससे यह विवाह नहीं हो पाता।

बड़े दिन की लहर (सन् १९३८, पृ० ६४), ले० मास्टर जान कन्हैया दानी, प्र० नाथ इंडिया क्रिश्चियन ट्रैक्ट ऐंड बुक सोसायटी, पात्र पु० १६, स्त्री २, अंक के स्थान पर भाग दो हैं, दृश्य १२। *घटना-स्थल* बैतलहम का अरण्य प्रदेश।

नाटक का प्रारम्भ नेपथ्य गायन से होता है जिसमें बैतलहम के समीप धर्मरूपी सूर्य के

उदय होने की सूचना दी जाती है। ऑलिम्पस पहाड़ के निवासी रेलेंजर और भारतवासी क्रिश्चलिस का वार्तालाप होता है। प्रथम भाग में ईसामसीह के आगमन की भूमिका है और दूसरा भाग स्वर्गदूत के आगमन से प्रारम्भ होता है। स्वर्गदूत यूसुफ से कहता है कि माता मरियम और नवजात शिशु को लेकर मिस्र देश को जाओ क्योंकि हेरोद राजा बच्चे के प्राण का भूखा है। मरियम बच्चे को गधे पर लादकर मिस्र देश पहुँच जाती है। इस बच्चे के जन्म से पूर्व ज्योतिषियों ने एक अद्भुत तारा पृथ्वी पर आते देखा था। सलोमी ज्योतिषियों को सूचना देती है कि वही स्वर्गीय तारा यूसुफ के घर में बालक रूप में उत्पन्न हुआ है। वही बालक बड़ा होकर ईसामसीह बनता है।

नाटककार का कथन है कि इस पुस्तक में कोई ऐसी बात नहीं रखी गई है जिससे मसीहा-भक्ति तथा आराधना में बाधा पड़े।

बनवीर नाटक (सन् १८८२, पृ० ११२), ले० : गोपालदास गहमर निवासी; पात्र : पु० ३, स्त्री० । अंक-दृश्य-रहित ।

इस ऐतिहासिक नाटक में मेवाड़ के राणा विक्रमादित्य, उदयसिंह और दासी भाई बनवीर की इतिहास-प्रसिद्ध घटनाएँ दी गई हैं। इसमें बनवीर के बलिदान की महत्ता दिखाई गई है। वह कहता है "फिर एक दूसरा राजा होगा; यह सिंहासन उसका होगा। मैं राजा कहकर उसका आदर-मान करूँगा! भला यह मुझसे कैसे हो सकेगा! इसमें तो बड़े बड़े-बड़े के बादल वज्र गिरावें; उसकी चोट की भी कुछ विसात नहीं। तुममें कितना लोभ है राजसिंहासन! कौन महा-शक्ति तुममें है। ओह! कितना गौरव कितना सम्मान कितना प्रभाव तुम में है। तुम में कितनी उच्चता है। किस माया बल पर तुमने मुझको मोहित कर दिया। किस आकर्षण से तुमने मेरा मन, प्राण, ध्यान, ज्ञान, चिन्ता सब खींच लिया।"

बलिदान अर्थात् पुनीत प्रेम (सन् १९३६, पृ० ६८), ले० : बैकुंठ नाथ आनन्द; मेरठ कालिज मेरठ; पात्र : पु० १२, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ४, ४, ५ ।
घटना-स्थल : महाकाली का मन्दिर ।

इस दुःखान्त सामाजिक नाटक में उस समय का चित्र खींचा गया है जब धर्म के नाम पर शासन द्वारा घोर अत्याचार किया जाता था। नाटक की नायिका कमल कुन्दला अपने प्रेम-बाधक पिता अघोरचंद की हत्या कर देती है। कमल कुंडला का प्रेमी आनन्द ही उसके पिता का शत्रु बन जाता है। किन्तु कमल कुंडला द्वारा अपने पिता की हत्या कर दिए जाने पर आनन्द उसे बहुत फटकारता है। फिर भी दोनों का परस्पर प्रेम बना रहता है। अंत में कमल कुंडला मर जाती है और दुःखी आनन्द (कुंडला का प्रेमी) अपने सीने में त्रिशूल मार कर आत्महत्या कर लेता है।

वल्लभ कुल छल दर्पण नाटक (सन् १९०७, हि० सं० पृ० ३९), ले० : स्वामी ब्रह्मानन्द प्र० : यूनियन प्रेस; इलाहाबाद, पात्र : पु० ११, स्त्री ८; अंक : ४; दृश्य-रहित ।
घटना-स्थल : वल्लभ-सम्प्रदाय का आश्रम ।

वल्लभ-सम्प्रदाय के एक शिष्य द्वारा विरचित इस नाटक में सम्प्रदाय के अन्तर्गत कैसे दुराचरण और दंभ का भंडाफोड़ किया गया है। चेलों को सावधान करने के लिए यह नाटक लिखा गया है। इसमें वल्लभ-सम्प्रदाय के गोस्वामी बालकृष्ण लाल का भ्रष्टाचार दिखाया गया है। वह स्त्री वेश बनाकर गलकीर के उत्सव में सम्मिलित होते हैं। वहाँ अनेक वेश्याएँ एकत्र हैं। यमुना नामक दासी मध्यस्थ का काम करती है।

सम्पूर्ण नाटक दोहा, ख्याल, गाना, सवैया से परिपूर्ण है। इसको दो भागों में बाँटा गया है : पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध।

वल्लभाचार्य (सन् १९६७ पृ० ८६), ले०: सेठ गोविन्ददास; । प्र० : वल्लभ सम्प्रदाय वृन्दावन; पात्र : पु० ९, स्त्री १; अंक ३ ।
घटना-स्थल : पाठशाला, राजसभा ।

इस नाटक में महान् पुरुष वल्लभाचार्य की विद्वत्ता, जीवन सम्बन्धी घटनाओं का

परिचय मिलता है।

आरम्भ से ही वल्लभाचार्य जो अपनी अलौकिक प्रतिभा के कारण ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही वेद विद्या में पारंगत हो जाते हैं तथा चौदह वर्ष की अवस्था में कृष्ण-देवराय की सभा के शास्त्रार्थ में विजयी होने से इनको अपार ख्याति मिल जाती है।

बसन्त (सन् १९६१, पृ० ६०), ले० सीताराम चतुर्वेदी, प्र० बेनिया बाग, वाराणसी, पात्र पु० ८, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ३, ३, ३।
घटना-स्थल राजकुमार का मकान, हरगोविन्द का घर, सड़क।

इस सामाजिक नाटक में समाज की बेकारी-समस्या का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

राजकुमार तथा निर्मल कुमार दो सगे भाईयों में बड़ा भाई राजकुमार रोजगार करता है। छोटा भाई निर्मल कुमार बी० ए० पास कर बेकार बैठा है। एक दिन निर्मल को उसका बड़ा भाई राजकुमार कुछ बुरा-भला कहता है। निर्मल घर से तंग आकर अपना भाग्य आजमाने निकल पड़ता है। उसने किसी आफिस में क्लर्कशिप के लिए एक अर्जी दे रखी थी उसका जवाब आता है। उसका नौकर मञ्जू किसी तरह पत्र निर्मल के पास पहुँचा देता है। निर्मल बड़ा प्रसन्न होता है पर वहाँ पहुँचने पर धोखे और घूसखोरी के हथकण्डे नजर आते हैं। जीवन में कोई भी आशा न देखकर विष-पान करने का निश्चय कर लेता है। विष की शीशी खोलता ही है कि उसका मित्र हरगोविन्द पहुँचकर उसकी उस मानसिक स्थिति को बदलता है और अपने व्यवसाय का परिचय देता है। क्षण-भर उसे भी इस दिशा में कुछ सोचने का अवसर मिलता है परन्तु कोई स्पष्ट नीति नजर नहीं आती। कुछ दिनों बाद उसके बच्चों सहित उसके भाई राजकुमार भी बहुत चिंतित होकर उसे खोजते हैं। कोई पता नहीं चलता। एक दिन बसन्त (राजकुमार का लड़का) किसी तरह पता पाता है कि मनोहर हरगोविन्द के घर है, उसका चाचा निर्मल भी वहीं है। उसे खोजने के लिए घर से जा रहा था कि बीच में एक साइकिल वाला उसे साइकिल के पहिये से दबाकर बेहोश कर देता है। हरगोविन्द उसे उठाकर घर ले आता है। पीछे से राजकुमार, लीला आदि सभी वहां आते हैं। अब निर्मल कुमार ने भी खिलौना बनाने का कार्य शुरू कर दिया है। सबका सप्रेम मिलन होता है। पुन एक नूतन शांति का प्रादुर्भाव होता है। इस प्रकार बेकारी के शिकार निर्मल को अन्त में कर्त्तव्य में लगाकर लेखक ने बेकारी का सुझाव पेश किया है।

नाटक काशी में अभिनीत।

बसान (सन् १९५८, पृ० ६४), ले० गोविन्द झा, प्र० दरभंगा प्रेस कम्पनी, (प्राइवेट) लिमिटेड, दरभंगा, पात्र। पु० ११, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य २४।
घटना-स्थल छात्रावास की कोठरी, दरवाजा, वकील साहब का घर, ओझा जी का दालान, वट वृक्ष की छाया, नगर का विशाल पार्क, दिगम्बर की कोठरी, सेवाश्रम का कार्यालय, गाँव से बाहर शिव मंदिर, पुष्पा की कोठरी एवं विवाह मंडप।

इस सामाजिक नाटक में आधुनिक युग के आदर्श को चित्रित किया गया है।

आधुनिकतावादी पुत्र कृष्णकान्त नवीन सभ्यता से प्रभावित होकर पिता द्वारा निर्धारित विवाह को अस्वीकार कर देता है। इसका कारण है कि भावी पत्नी पुष्पा उसके समान सुशिक्षिता नहीं है। इसी के आधार पर वह मिथिला की सभी लड़कियों को अपमानित करता है तथा आधुनिकता से प्रभावित लिली के सौंदर्य पर मुग्ध हो जाता है। ऐसी स्थिति में पुष्पा के हृदय में स्वाभिमान की भावना जगती है और वह आत्महत्या के बहाने घर से बाहर निकल जाती है। कृष्णकान्त के इस दुर्व्यवहार से क्षुब्ध होकर उसके पिता घर से बाहर चले जाते हैं। जब कृष्णकान्त को इसकी खबर मिलती है तब वह भी चिन्तित होकर लिली के सौंदर्य-रूपी प्रेम जाल को तोड़कर बाहर आ जाता

है। कृष्णकान्त इधर-उधर भटक कर अपने पिता को खोजता है किन्तु उसे सफलता नहीं मिलती है। वह विक्षिप्तावस्था में आत्महत्या का निश्चय कर रेल से कटने के लिए एक सेवाश्रम के नजदीक पहुँचता है। वहीं उसकी पिता से भेंट होती है। उस सेवाश्रम की संचालिका पुष्पा के सुन्दर स्वरूप को देखकर वह लज्जित हो जाता है। इसी बीच कृष्णकान्त के वियोग में दुखी लिली भी वहाँ पहुँच जाती है। लिली के प्रेम को देखकर पुष्पा उसकी शादी कृष्णकान्त के साथ करा देती है।

बहादुरशाह (सन् १९६४, पृ० ८०), ले० : चतुर्भुज; प्र० : साधना मन्दिर, पटना-४; पात्र : पु० १०, स्त्री १; अंक : ३; दृश्य : ५।
घटना-स्थल : शिविर, महल, मकबरा।

सन् १८५७ ई० की क्रान्ति पर आधारित यह ऐतिहासिक नाटक है। अंग्रेज सेनापति निकोलसन की वीरता, लाल-किले के भीतर षड्यन्त्र, क्रान्तिकारियों में मतभेद, गोरों का साहस, बहादुरशाह का देश प्रेम, इलाहीबख्श की गद्दारी, दिल्ली का घोर संग्राम और अंत में बहादुरशाह का बन्दी होना—आदि घटनाएँ वर्णित हैं जिनसे हमारा इतिहास भरा है।

बहादुरशाह (सन् १९६२, पृ० ६२), ले० : परिपूर्णानन्द वर्मा; प्र० : भारतीय ज्ञानपीठ; पात्र : पु० १३, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ८, ८, ६।
घटना-स्थल : बिठुर, बरसाती गंगा, बिठूर में गंगा का तट।

इस ऐतिहासिक नाटक में सन् सत्तावन के स्वाधीनता-संग्राम की कुछ घटनाओं का उल्लेख है। अंग्रेजी शासकों की क्रूरता अत्याचार, भारतवासियों के खून में नया जोश पैदा कर देता है और बहुत से भारतीय देश-रक्षा के लिए कुर्बान हो जाते हैं।

अंग्रेजों के अत्याचार से बहादुरशाह की हिम्मत टूट जाती है। उसकी पत्नी जीनत-महल उसे आत्मबल देती है। बहादुरशाह इस पर कहता है 'याद रखो दुनिया वालो! तुम अपनी इस जिन्दगी में जो करम कर रहे हो उसका फल तुम्हारी औलाद को भोगना पड़ेगा।'

अंग्रेजों के निर्दयी सिपाही बहादुरशाह के तीन पुत्रों को कत्ल कर देते हैं।

बाँस की फाँस (सन् १९४७, पृ० ६५), ले० : वृन्दावन लाल वर्मा; पात्र : पु० ४, स्त्री ४; अंक : २; दृश्य : ४, ३।
घटना-स्थल : रेलवे प्लेटफार्म, अस्पताल।

इस सामाजिक नाटक में मानव के प्रेम तथा दया भाव निहित हैं।

इसमें दो कथाएँ एक साथ मिली हुई हैं। एक कथा के मुख्य पात्र गोपाल और फूलचन्द हैं। दो नारी पात्र हैं। मंदाकिनी एक पढ़ी-लिखी युवती है तथा पुनीता एक भिखारिन है। गोपाल और फूलचन्द की मंदाकिनी और पुनीता से प्लेटफार्म पर अचानक मुलाकात होती है। दोनों ही दोनों से आकृष्ट होते हैं। दोनों ही परिचय प्राप्त करने के लिए मंदाकिनी के प्रति अवसर की ताक में रहते हैं। मंदाकिनी गाड़ी बाहर जाती है। गाड़ी आते ही फूलचन्द मंदाकिनी का सामान उठाकर गाड़ी पर रखता है, किन्तु दुर्भाग्यवश गाड़ी आगे जाकर दुर्घटनाग्रस्त हो जाती है। मंदाकिनी और पुनीता दोनों ही घायल अवस्था में अस्पताल लाई जाती है। फूलचन्द, मंदाकिनी की जान की रक्षा के लिए अपना खून देता है। गोपाल भी इस गाढ़े समय पर पुनीता को न केवल खून ही देता है अपितु अपना मांस भी देता है। फूलचन्द अपने सद्कार्यों और त्याग को बताते हुए मंदाकिनी के समक्ष अपने विवाह का प्रस्ताव रखता है। इस प्रस्ताव पर मंदाकिनी अपने पिता तथा परिवार की सहमति के लिए कहती है किन्तु फूलचन्द इसके लिए तैयार नहीं होता है। तब मंदाकिनी इसके प्रस्ताव को ठुकरा कर चल देती है। दूसरी ओर पुनीता गोपाल की सद्भावना तथा उनके आश्वासन पर ही उससे विवाह के लिये तैयार हो जाती है।

बाण-शय्या (वि० १९८९, पृ० १३८), ले० लक्ष्मण प्रसाद 'मित्र', प्र० लक्ष्मण प्रसाद 'मित्र', अमीरगंज, महमूदाबाद, अवध, पात्र पु० २१, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ८, ६, ८।
घटना स्थल कुरुक्षेत्र, बाण शय्या।

इस पौराणिक नाटक में भीष्म पितामह की वीरता का वर्णन है। उनका जीवन सत्य, धर्म, वीरता और दृढ़ता से पूर्ण है। पाण्डव महाभारत के युद्ध में भीष्म द्वारा किए जा रहे नरसंहार को देखकर अत्यन्त चिन्तित हो जाते हैं। वे भीष्म-पितामह से युद्ध न करने का आग्रह करते हैं परन्तु भीष्म इसे इन्कार करते हुए पाण्डवों को अपना मृत्यु-भेद बता देते है जिसमें अर्जुन उन्हें युद्ध में बाणों की शय्या पर धराशायी कर देते हैं। बाणों की शय्या पर भी भीष्म अपनी असीम वीरता का परिचय देते हैं। वे उत्तरायण आने तक इच्छानुसार उसी बाण-शय्या पर जीवित रहते हैं।

बादलों का शाप (सन् १९५४), ले० सिद्धनाथ कुमार, प्र० पुस्तक मंदिर, बक्सर, पात्र पु० २, स्त्री २, अंक-दृश्य-रहित।

इस गीतिनाट्य में आज के रसहीन शुष्क जीवन से पीड़ित, अभिशप्त मानव जीवन की झांकी दिखाई गई है। वह सुख-सुविधाओं के अभाव में पल-पल घुट रहा है। इन अभावों का कारण है—भाग्य का लेख, प्रकृति का शाप अथवा कर्मों का फल। इस प्रतीकात्मक गीतिनाट्य में अभाव-ग्रस्त नैराश्यपूर्ण कुंठित जीवन का विवेचन बादलों के माध्यम से किया गया है। बादल हमारी सुख-समृद्धि का प्रतीक है। परस्पर विश्वास के अभाव में मानव-कृत्य ही इसके दोषी है। अन्त में कवि ने विश्वास को माध्यम बनाकर अभिशप्त जीवन के शाप के निवारण की ओर संकेत किया है।

बादशाह वाजिदअलीशाह (सन् १९६२, पृ० ९१), ले० परिपूर्णानन्द वर्मा, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, पात्र पु० २०, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल छत्तर मंजिल का आलीशान बड़ा कमरा, फरह बख्श की कोठी, बादशाह की जर्द महल कोठी।

इस ऐतिहासिक नाटक में बादशाह वाजिदअलीशाह की राज-काज-सम्बन्धी व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है। इसमें राज्य के शासन से लेकर शाह की मृत्यु तक का वर्णन है। शाह ने उपदेशात्मक रूप में यह शेर कहा है कि—

'दरो दीवार पर हसरत से नजर करते हैं।
खुश रहो अहले वतन, हम तो सफर करते हैं।।

बाप-बेटी (सन् १९६१, पृ० ५४), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली, पात्र पु० ४, स्त्री २, अंक ३, *दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल बाबूजी का मकान।

सामाजिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया यह एक ऐसा नाटक है जिसमें बाप जिन हाथों से एक बेटी की परवरिश करता है, बेटी बाप के उन्हीं हाथों में हथकड़ियाँ डलवा देती है। उसके इस क्रूर व्यवहार से क्रुद्ध होकर उसका प्रेमी केशव कहता है— "अगर तुम अपने बाप की नहीं हो सकी, तो मेरी क्या बन सकोगी?"

बापू-दर्शन (सन् १९२५, पृ० ६०), ले० दास, प्र० उपन्यास-बहार आफिस, काशी, *पात्र* पु० ५, *अंक-रहित, दृश्य* ११।
घटना-स्थल भारत, अफ्रीका, सभा, जलूस।

इस नाटक में गांधी जी के जीवन का वह भाग दिखाया गया है जिसमें वे भारत की स्वतन्त्रता के लिए अंग्रेजों से वार्तालाप करते हैं तथा अफ्रीका में हिन्दुस्तानियों की सेवा करते हुए उनकी आजादी के लिए असहयोग आन्दोलन चलाते हैं। देश की सम्पूर्ण जनता बापूदर्शन में ही अपने जीवन को सफल समझती है।

बापू ने कहा था (सन् १९५८, पृ० १४८), ले० : शम्भूदयाल सक्सेना; प्र० : नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर; पात्र : पु० २४, स्त्री ६; अंक : ३; दृश्य : ११, १०, १२।
घटना-स्थल : स्टेशन शाहदरा, बिड़ला भवन, बापू का कमरा, सेंट्रल जेल।

इस राजनैतिक नाटक में बापू के विचारों को अभिव्यक्त किया गया है।

नाटक की कथावस्तु १० सितम्बर १९४७ ई० से आरम्भ होकर गांधी जी की हत्या पर समाप्त होती है। इसमें भारत-विभाजन के समय का मूर्त रूप प्रस्तुत है। भारत-विभाजन के बाद लूटमार, पैशाचिक हत्याकाण्ड, गुण्डागर्दी आदि अत्याचारों को प्रोत्साहन मिलता है। पाकिस्तान में लाखों हिन्दुओं को प्रतिदिन कत्ल किये जाने और शरणार्थियों की दुर्दशा देखकर गांधी जी के हृदय पर आघात पहुँचता है। अहिंसा के पुजारी गांधी जी मानवता के पाठ पर जोर देते हैं। देश की विभिन्न पार्टियों की विचारधाराओं को भी प्रस्तुत किया गया है।

अन्तिम दृश्य में गांधी जी के जीवन की अन्तिम झांकी प्रस्तुत है। नत्थूराम गोडसे अपने पिस्तौल का घोड़ा दबाता है और बापू 'हे राम' कहकर पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं।

बाबा का ब्याह (वि० १९७०, पृ० ६४), ले० : जीवानन्द शर्मा; प्र० : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद।
घटना-स्थल : सजा कमरा, साधु कुटीर।

इस प्रहसन में सामाजिक समस्याओं पर व्यंग्य किया गया है। पुस्तक की भूमिका से ज्ञात होता है कि प्रहसन रचना का उद्देश्य इसे अभिनीत करना है। इसमें अंगरेजिहा बाबू जैसे पात्र का नर्जन किया गया है। अमावस्या बाबा जैसे पात्र वेदव्यास के उपदेशों की चर्चा करते हैं। संस्कृत के 'नीवि मोऽोहि मोक्षः' जैसे श्लोक पढ़कर प्रहसन के अन्दर परिहास उत्पन्न किया गया है। बीच-बीच में वेश्याओं के गान की भी योजना है। किस प्रकार पंचाग्नि तापने वाला व्यक्ति नारी-सौंदर्य से मोहित होकर सामाजिक नैतिकता का अतिक्रमण करता है?

बाबा की दाढ़ी (सन् १९५०), ले० : कृष्ण जी बागीपुरी; प्र० : कृष्ण जी बागीपुरी; पात्र : पु० ८, स्त्री २; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : साधु कुटीर, खुला मैदान।

इस नाटक में उन पाखंडी साधुओं की जीवन-विडम्बना दिखाई गई है जो इस निर्धन देश में गांजा, भांग आदि दुर्व्यसनों के द्वारा जनता की कठिन कमाई का धन फूंकते हैं। ये अशिक्षित साधू न तो अपना कल्याण कर पाते हैं और न ही देश का। नाटक का प्रमुख पात्र मूर्ति देश की दुर्दशा पर वेदना प्रकट करता हुआ कहता है "समुचित शिक्षा जिसका नाम है सो तो बहुत दूर की बात है आज तो फीसदी में दो-चार लड़के ही शिक्षा पा रहे हैं। इनके लिए शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए।" मूर्ति साधुओं को कामान्ध और चांडाल बताते हुए उद्घोष करता है कि ऐसे लोगों के हाथ से पैसा बचाकर देश की निरक्षरता दूर करने से देश की उन्नति होगी। शिक्षा प्रचार के बिना देश की उन्नति सम्भव नहीं।

बाबा की सारंगी (सन् १९५८, पृ० ९६), ले० : बाबूराम सिंह 'लमगोड़ा'; प्र० : साधना प्रकाशन, वाराणसी; पात्र : पु० १२, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ४, ६, ३।
घटना-स्थल : गांव का घर, वेश्यागृह, आश्रम।

इस नाटक में सारंगी की महत्ता दिखाते हुए उसे जीविकोपार्जन का साधन बताया गया है।

मातृ-पितृ-विहीन रहमत को सारंगी पैतृक सम्पत्ति स्वरूप प्राप्त होती है। सारंगी बजाकर ही वह अपनी जीविका चलाता है। रहमत की अगाध विपदा से द्रवित हो उसका मामा उसे अपने घर ले जाता है, परन्तु पुत्र की मृत्यु के कारण वह भी उसको शारीरिक-मानसिक रूप से प्रताड़ना करता है। वहाँ से निकल कर रहमत संगीताचार्य अरुणहर्ष का आश्रय ग्रहण करता है। अरुणहर्ष उसे संगीत में पारंगत कर गुरु-दीक्षा स्वरूप उससे आजीवन ब्रह्मचारी रहने तथा कला को जीवित रखने का वचन लेता है। गुरु की मृत्यु के उपरान्त रहमत नीरा नाम्नी वेश्या की दत्तक पुत्री वहीदन का संगीत-

शिक्षक नियुक्त होता है। रहमत के कारण उस्ताद गलीमत को आजीविका से हाथ धोना पड़ता है। नवाव वब्बन वहीदन के साथ रात व्यतीत करने के लिए पाँच हजार रुपए तक देना चाहता है, परन्तु तीरा उसके इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती है। सुलेमान वहीदन से विवाह करना चाहता है। प्रतिहिंसा से प्रेरित गलीमत वहीदन की हत्या करना चाहता है, परन्तु सुलेमान द्वारा प्रतिरोध के कारण वह उसकी हत्या नहीं कर पाता है। सुलेमान मरते-मरते गलीमत को मौत के घाट उतार देता है। सुलेमान द्वारा गलीमत को फेंक कर मारे गए छुरे से वहीदन के आहत हो जाने के कारण वह नृत्यादि के अयोग्य हो जाती है। रहमत वहीदन और सर्वसुन्दर गुरु का विवाह करा दक्षिणा स्वरूप उनकी पहली सन्तान को माँग लेता है। वहीदन और सर्व सुन्दर रहमत के उक्त अनुरोध को सहर्ष स्वीकार कर चले जाते हैं। आश्रम में रहमत सत्यवत्व एवं पुण्य को सारंगी-वादन में प्रवीण कर स्वर्ग जाते हैं। अंत में सर्व सुन्दर और वहीदन अपने पुत्र को आश्रम में छोड़ जाते हैं।

बालकृष्ण व कृष्ण चरित्र नाटक (सन् १६२८, पृ० १११), ले० दुर्गाप्रसाद गुप्ता, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, अंक ३ घटना-स्थल गोकुल, वृन्दावन, मथुरा, स्वर्गलोक।

इस सचित्र पौराणिक नाटक में कृष्ण की बाल लीला, रास लीला, कंस की क्रूरता, देवकी वसुदेव की व्याकुलता, देवताओं और पृथ्वी माता की कंस के अत्याचार से कष्टमय पुकार, भगवान का अभयदान, कंसवध आदि प्रसंगों को पारसी थियेट्रिकल नाट्य शैली पर प्रस्तुत किया गया है। नाटक का उद्देश्य कृष्ण-भक्ति की भावना को दृढ़ करना है। इसमें अनेक अलौकिक तत्त्वों का समावेश किया गया है। अनेक गीत जोड़े गए हैं।

बाल खेल व ध्रुव-चरित्र (सन् १८८६, पृ० २४), ले० दामोदर शास्त्री, प्र० खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, पटना, पात्र पु० ७, स्त्री २, अंक ४, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल क्रीड़ा भूमि, राजमहल, तपोवन।

यह पौराणिक नाटक ध्रुव चरित्र को लेकर लिखा गया है। राजा उत्तानपाद की गोद में बैठकर ध्रुव आनन्द का अनुभव करते हैं। इसी समय विमाता सुरुचि वहाँ पहुँच कर उसे गोद से उठा देती है। ध्रुव रोदन करते हैं। उनकी माता सुनीति रोने का कारण पूछती है। माता के उपदेश से ध्रुव घोर तपस्या करते हैं। नारद प्रकट होकर ध्रुव की सत्यनिष्ठा की परीक्षा लेते हैं और आशीर्वाद देते हैं कि तुम्हें भगवद् दर्शन हों। ध्रुव घोर तपस्या करते हैं और भगवान् प्रसन्न होकर उन्हें दर्शन देते हैं। भगवान् से ध्रुव प्रार्थना करते हैं कि 'शुद्ध पुरुषों के शुद्ध आन्तरिक विचार आनन्दपूर्ण और अचल हों।' भगवान् उनकी प्रार्थना स्वीकार करके आदेश देते हैं कि जाओ सुख से राज्य करो, और सांसारिक सुखों से पूर तृप्त हो जाओ। पितर और प्रजा को सन्तुष्ट करके पुन मेरे पास आना।

बाल विधवा-संताप नाटक (सन् १८८२, पृ० ५२), ले० काशीनाथ खत्री, प्र० खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, पात्र पु० १२, स्त्री २, अंक-दृश्य के स्थान पर ३ प्रवेश।
घटना-स्थल खुला मैदान, लीक पीटनदास के घर की बैठक, भवन का कक्ष।

इस पुस्तक के दो खंड हैं। प्रथम खंड में विधवा पुनर्विवाह को शास्त्र-सम्मत सिद्ध करने के लिए पराशर-संहिता, मनुसंहिता, वृहन्नारदीय, याज्ञवल्क्य-संहिता, आदित्य-पुराण, वशिष्ठ संहिता, महाभारत आदि से उद्धरण दिए गए हैं। काशीनाथ जी प्रस्तावना में लिखते हैं—'राधाकृष्णदास जी का "दुखिनी बाला" नाटक पढ़कर मेरे चित में आया कि मैं भी इस विषय में अपनी लेखनी की परीक्षा करूँ। मेरे कुटुम्ब में एक परम गुणवती सुशीला कन्या पर जब वह नौ वर्ष की थी, यह दैवी आपत्ति पड़ चुकी है।"

यह नाटक प्रथम हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका में छप चुका था। पुस्तका-

बार छपाने का उद्देश्य बताते हुए खत्री जी लिखते हैं—'इस उपहार को द्वितीय बार समर्पण करने का यह प्रयोजन नहीं है कि मुझे आप से किसी प्रकार के पारितोषिक प्राप्ति की लालसा है किन्तु मेरा यह अभिप्राय है कि आप मुझ निस्पृह की दशा पर कृपापूर्वक ध्यान देकर मेरे बाल-विधवा संताप संतप्त चित्त को अपनी अनुकूलता रूपी सुधा-सिंचन में···अक्षय पुण्य ग्रहण करें। ···मैं एक दीन स्वदेश हितैषी हूँ और मनसा-वाचा-कर्मणा यही चाहता हूँ कि देशोन्नति की ओर मुझ मद मति का परिश्रम तनिक भी सुकार्य हो जाय तो मैं अपने तई अतीव कृतार्थ समझूँ। जब से विदेशीय विरुद्ध मतावलंबियों ने इस देश पर आक्रमण किया है और अपने अत्याचारों से हमको सर्वथा हतवीर्य और निस्सत्व कर दिया तब से यहाँ श्रुति-स्मृति-निरुपित मर्यादा का क्रमशः लोप होता गया।"

इस नाटक में लोक रीति और शास्त्राज्ञा का संघर्ष दिखाया गया है। लोक पीटनदास की कन्या अबला देई नौ वर्ष की अवस्था में विधवा हो जाती है। कुपंथीराम पुरोहित उन्हें समझाते हैं कि ब्रह्मा के अंक किसी के मेटे नहीं मिटते। उनके मित्र पूरनचन्द, कुल-प्रकाशचन्द्र और वंशीधर भी उन्हें सान्त्वना देते हैं। किन्तु पंडित ज्ञानोदय विधवा के पुनर्विवाह को शास्त्र-सम्मत सिद्ध करके अबला देई का विवाह कराने के पक्ष में हैं। कुपंथीराम पुरोहित पुनर्विवाह का विरोध करता है और शास्त्र से उद्धरण देता है किन्तु शास्त्री जी उन्हीं उद्धरणों का अनुकूल अर्थ निकालते हैं।

अबला देई को किसी भी मंगल कार्य से इसलिए दूर रखा जाता है कि कहीं अमंगल न हो जाए। वह अपने पिता के घर में भी भाभियों से अमंगलकारिणी समझी जाती है। माँ रोती हुई बेटी को रामायण पढ़ने का उपदेश देती है।

वाली-वध (सन् १९५१, पृ० ५६), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक-रहित; दृश्य : ६।

घटना-स्थल : कुटिया, राजप्रासाद, अशोक वाटिका।

इस पौराणिक नाटक में वालि-वध की कथा वर्णित है।

दुष्ट रावण चोरी से सीताजी का अपहरण कर लेता है। राम-लक्ष्मण सीता को खोजते हुए भीलनी की कुटिया पर पहुँच कर प्रेम से जूठे बेर खाते हैं। सहसा भगवान् राम की वानरराज सुग्रीव के साथ मित्रता होती है। सुग्रीव के कष्ट निवारण हेतु राम व्यभिचारी वालि का वध करते हैं। वानरराज सुग्रीव हनुमान, जामवंत आदि अनुचरों को सीता का पता लगाने के लिए भेजते हैं। समुद्र किनारे बैठकर विचार-विमर्श करते हुए बन्दरों को सम्पाती द्वारा यह पता चलता है कि सीताजी को दुष्ट रावण अपहृत करके लंका में ले गया है। हनुमान जी राम द्वारा दी गई मुद्रिका को लेकर लंका पहुँचते हैं। मार्ग में वे लंकिनी को मारकर अशोक वाटिका में प्रवेश करते हैं जहाँ पर वियोगिनी सीता रहती हैं। सीता को देखकर हनुमान राम द्वारा दी गई मुद्रिका सीता के समक्ष गिराते हैं, जिसे देख सीता आश्चर्यचकित होती हैं। फिर हनुमान जी प्रकट होकर अपना सारा परिचय बताते हैं। सीता की आज्ञा से वे अशोक वाटिका के सुन्दर फलों का भक्षण कर वाटिका को नष्ट कर देते हैं और अन्त में रावण की शक्ति का अनुमान लगाने के लिए राक्षसों द्वारा स्वयं बन्दी बन जाते हैं।

बाल विवाह दूषक (सन् १८८५, पृ० ४२), ले० : देवदत्त मिश्र; प्र० : मैनेजर खड्ग विलास; पात्र : पु० ५, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य-रहित।

घटना-स्थल : ग्राम समीप उद्यान।

इस सामाजिक नाटक में बाल-विवाह का विरोध दिखाया गया है।

एक पुरुष का विवाह ६ वर्ष की अवस्था में होता है। ५ वर्ष उपरान्त उसका द्विरागमन होता है। वह अपने पुत्र का विवाह बिना मुहूर्त के ही करता है। उसका गुरु उसे धिक्कारता है कि तुमने इतनी कम अवस्था में अपने लड़के का विवाह एक नीच कुल में क्यों किया? लड़के की अवस्था छोटी है और

कन्या उससे बहुत बडी होती है। गुरु कहता है कि यह विवाह नहीं बल्कि बच्चे के लिए दाई ले जाते हो।

नाटक के अन्त मे दुराचार सिंह उस स्त्री को नौका पर बिठाकर नदी पार ले जाता है। यही नाटक का अन्त होता है।

यह नाटक श्रीमन्महाराजकुमार युवराज भट्टाग बहादुर मल्लजूदेव मझौली-नरेश की आज्ञा से लिखा गया था।

बिजली नाटिका (सन् १९३४, पृ० ५६), ले० ठाकुर वीरेश्वरसिंह प्र० साहित्य-मण्डल, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ५, अक ३, दृश्य २, २, ३।

इस सामाजिक नाटक मे एक वीरागना बिजली की कथा वर्णित है। अपनी माँ की इकलौती लडकी है। एक दिन जब उसे मालूम होता है कि एक कैदी, जिसने उसकी मा को प्रेम का भुलावा देकर गर्भवती छोड दिया जिससे बिजली नामक सतान पैदा हुई, तब उसके अन्दर कैदी के प्रति प्रतिशोध की भावना जागृत होती है। वह मेवाड की सेना मे भर्ती होकर युद्ध मे अपनी बहादुरी दिखाती है। वह उस कैदी को पकडकर निर्ममता से अपनी माँ के समक्ष लाकर कत्ल कर देती है। बिजली युद्ध मे बुरी तरह घायल हो जाती है और अन्त मे वह वीरतापूर्ण मृत्यु का आलिंगन करती है।

बिन बातो के दीप (सन् १९७१, पृ० ९४), ले० डॉ० शकर शेष, प्र० लोक सेवा प्रकाशन, जबलपुर, पात्र पु० ३, स्त्री २, अक ३, दृश्य १, १, १।
घटना स्थल शिवराज का बगला।

शिवराज नाटक का खलनायक है। उसकी अधी पत्नी विशाखा अपने उपन्यासो को बोल-बोलकर पति द्वारा लिपिबद्ध कराती रहती है। लेकिन शिवराज उन्हे विशाखा के नाम से नही बल्कि अपने नाम मे प्रकाशित कराता है। आकाशवाणी पर उसके नाटको की प्रशसा हो रही है। विशाखा का नाम चर्चाओं मे है, यह बात टेप किए हुए रिकार्ड्स की सहायता से सिद्ध होती रहती है। मजु उसकी टाइपिस्ट है। मजु शिवराज को स्वय समर्पित नही होती बल्कि इसकी विवशता उसे समर्पित कराती है। अन्त मे आनन्द द्वारा इसका रहस्योद्घाटन हो जाता है जिसमे शिवराज अपने कृत्यों पर पश्चात्ताप करता है। विशाखा के नेत्रो की ज्योति लौट आती है। आदर्श भारतीय नारी विशाखा अपने पति से कहती है कि "तुम ऐसा ऐलान मत करना कि उपन्यास मेरे नही मेरी पत्नी के लिखे है अन्यथा साहित्यकारो पर से लोगो का विश्वास उठ जाएगा।" नाटक एक मुखर आदर्श लेकर चलता है।

अभिनय काल एव स्थान—भोपाल मे सन् १९७० एव बम्बई मे फरवरी' ७१।

बिना दीवारों के घर (सन् १९६५, पृ० १२८), ले० मन्नू भडारी, प्र० अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ९, स्त्री ४, अक ३, दृश्य २, ३, ३।
घटना-स्थल ड्राइग रूम।

इस नाटक मे लेखिका ने मध्यवर्गीय परिवार मे स्त्री पुरुष के टूटते हुए सबधो को स्पष्ट किया है। इस की मूल समस्या 'स्त्री स्वातन्त्र्य और पुरुष के अह की टकराहट से 'पारिवारिक विघटन' की है।

शोभा अपने एक मित्र जयत की मदद मे कॉलिज प्रिंसिपल नियुक्त हो जाती है, जिससे ईर्ष्यालु अजीत के अह को ठेस लगती है। वह शोभा के सितार-वादन आदि पर भी प्रतिबंध लगा देता है। दोनो के सम्बन्ध बिखरते जाते हैं। इसी तनावपूर्ण वातावरण मे अजित नौकरी छोड देता है ताकि वह एक अच्छी जगह पर नौकरी पा सके—लेकिन उसे नौकरी नहीं मिलती। शोभा के कहने पर जयत गुप्तरूप से अजित के लिए कोशिश करता है। अत मे अजित को नौकरी मिल जाती है। एक पार्टी मे दोनो के कुछ मित्र उन पर व्यग्य करते है, जिससे अजित शोभा से बुरी तरह रूठ पडता है। परिणामस्वरूप शोभा अपनी पुत्री लेकर जाने को तैयार होती है लेकिन अजित के मना करने पर वह पुत्री को छोडकर अकेली ही घर मे चली जाती

है। उसका द्वन्द्व नाटक के अंतिम संवाद में स्पष्ट हो जाता है—"तो मैं अकेली ही चली जाऊँगी। जहाँ मैंने अपने भीतर की पत्नी को मारा है, वहीं अपने भीतर की माँ को भी मार दूँगी।"

मिरांडा कॉलेज, (दिल्ली विश्वविद्यालय में अभिनीत, सन् १९६९ में)

विलखती विधवा नाटक (सन् १९३०, पृ० १३४), ले० : केदारनाथ बजाज; प्र० : नौजवान ग्रन्थमाला दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : मकान, पंचायत, अदालत।

इस सामाजिक नाटक में तत्कालीन भारतीय समाज की विधवाओं की दुर्दशा का वर्णन है।

इसमें ईश्वरचन्द्र विद्यासागर को भी पात्र रूप में सम्मिलित किया गया है जोकि महान् शिक्षा-शास्त्री व समाज-सुधारक थे। नाटक का मूल उद्देश्य विधवाओं की दयनीय दशा सुधारना तथा उन्हें पुनर्विवाह की अनुमति देना है।

विस्मिल की बहक (सन् १९६५, पृ० ८०), ले० : श्यामलाल 'मधुप'; प्र० : मनोरमा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली; पात्र : पु० १४, स्त्री २; अंक-रहित; दृश्य १४।
घटना-स्थल : सभा, इलाहाबाद, कानपुर, अदालत, जेल।

यह राजनीतिक नाटक स्वतन्त्रता-संग्राम से सम्बन्धित है। इसमें क्रांतिकारी विस्मिल का अमर बलिदान चित्रित है। विस्मिल अंग्रेजों के अत्याचारों से क्षुब्ध होकर अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए क्रांतिकारी संग्राम में कूद पड़ते हैं। उनकी शायरी से प्रभावित होकर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, राजेन्द्र लाहिड़ी आदि भी क्रान्तिकारी बन जाते हैं। अन्त में काकोरी षड्यन्त्र केस में अंग्रेज सरकार विस्मिल को फांसी की सजा देती है।

बी० ए० पास मजदूर (सन् १९६८, पृ० ७०), ले० : न्यादर सिंह 'बेचैन'; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० १३, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ६, ३, ७।
घटना-स्थल : मकान, कॉलेज, हस्पताल, फैक्टरी आदि।

इस सामाजिक नाटक में बी० ए० पास बेरोजगार, ईमानदार युवक की दर्दभरी कहानी वर्णित है। शिवसहाय अपने लड़के उमेश को अपनी सम्पत्ति बेचकर तथा लखीमल से कर्ज लेकर पढ़ाता है। सेठ लखीमल को एक गुण्डा धन के लालच में छुरा मारता है। शिवसहाय स्वयं घायल होकर लखीमल की रक्षा करता है। घायल शिवसहाय की अचानक मृत्यु हो जाती है जिससे उमेश बहुत दुखी होता है। वह माता पुष्पा के कहने पर द्वितीय श्रेणी में बी० ए० पास करता है। उमेश नौकरी के लिए बहुत प्रयास करता है, फिर भी उसे नौकरी नहीं मिलती। वह मजबूर होकर एक कुली की मदद से स्टेशन-कुली का काम करने लगता है। एक दिन वह गाड़ी से उतरी एक विद्यावती नामक स्त्री को तांगे में बिठाकर उसके घर ले जाता है। रास्ते में विद्यावती का प्रेमी विनायक कुछ गुण्डों के साथ विद्यावती को मारने के लिए आक्रमण करता है। उमेश अपनी वीरता से गुण्डों को मार भगाता है। विद्यावती उसे अपनी फैक्टरी में काम करने के लिए कहती है, लेकिन उमेश उसे इन्कार करते हुए विनायक से प्रतिशोध लेने के लिए उसके यहाँ चपरासी का काम करने लगता है। विनायक उमेश की मदद से विद्यावती को मारने का षड्यन्त्र रचता है। उमेश विनायक के इस षड्यन्त्र की सूचना कोतवाली में दे देता है। उमेश के बुद्धि-चातुर्य से विनायक विद्यावती के धोखे में चंचल की हत्या कर देता है। उमेश तथा धनपतराम की मदद से कोतवाल विनायक को गिरफ्तार कर लेता है। धनपतराम उमेश की ईमानदारी तथा वफादारी से प्रसन्न होकर उसे अपनी मिल का डायरेक्टर बना देते हैं।

वीर कुमार छत्रसाल नाटक (सन् १९३२, पृ० १५७), ले० : भँवर लाल सोनी; प्र० :

साहित्य निकेतन कार्यालय, इन्दौर, पात्र पु० १२, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ७, ४, ५। घटना-स्थल विचित्र स्थान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे स्वाभिमानी वीर कुमार छत्रसाल की अद्भुत वीरता दिखाई गई है।

महोबा के युवराज छत्रसाल एक असाधारण देशभक्त एवं परमवीर हैं। उस समय भारत पर मुगलो का अधिकार होता है। जयसिंह के अनुरोध पर छत्रसाल देवगढ का किला अपने वश मे कर लेता है परन्तु छत्रसाल इस विजय पर हर्षित नहीं होता। जयसिंह इस विजय की खुशी मे छत्रसाल को इस आशय से दिल्ली बुलवाते हैं कि सम्भवत औरगजेब प्रसन्न होकर छत्रसाल का राज्य स्वतन्त्र कर दे। परन्तु औरंगजेब इस अस्वीकार कर देता है। वीर युवराज छत्रसाल अभिमान के साथ यह कहता चला जाता है कि "जिस तलवार से देवगढ फतह किया वही अब बिजली की भाँति चमककर बुन्देलखण्ड को स्वाधीन करेगी।" बुन्देलखण्ड का हर एक बुन्देला छत्रसाल की तरह वीरता और परिश्रम मे लडता हुआ अपने देश को क्रूर औरगजेब के हाथों से मुक्त करा लेता है।

बीरबल (सन् १९५०, पृ० ११६), ले० वृन्दावनलाल वर्मा, प्र० मयूर प्रकाशन, झासी, पात्र पु० १२ स्त्री ४। घटना स्थल जगल, मठ, मदिर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे अकबर के नवरत्नो मे सर्वप्रमुख बीरबल के व्यक्तित्व की झाँकी प्रस्तुत की गई है। नाटक शिकार के लिए गए हुए अकबर, बीरबल आदि के हास्य विनोद से प्रारम्भ होता है। पुरी जमात के साधु अकबर से सहायता का वचन लेकर गिरियों से शस्त्रों के साथ भिड जाते हैं। जसवन्त इस युद्ध का चित्र उतारता है। इस धर्मान्ध-युद्ध मे अकबर के मस्तिष्क मे सच्चे मजहब का प्रश्न उठता है। अकबर बीरबल से इस विषय पर वाद-विवाद करता है किन्तु कोई निर्णय नही हो पाता। इधर जसवन्त अकबर के कहने से दिल्ली की शेखजादी हसीना का स्त्रीवेश मे चित्र उतारने जाता है। गोमती जसवन्त के बनावटी रूप को पहचान लेने पर भी उसके प्राण तथा कला की रक्षा करने का वचन देती है।

शहजादे के जन्म की खुशी में अकबर फतेहपुर सीकरी में भव्य इमारतें बनवाने की घोषणा करता है। अकबर बीरबल के साथ गाँव का मेला देखने जाता है और वहाँ अपने ही दरबार का स्वाग देखकर भौचक्का रह जाता है। वह हिन्दू-जनता को प्रसन्न रखने तथा रिश्वतखोरी को समाप्त करने की प्रतिज्ञा करता है। मुल्ला दोप्याजा अकबर का बीरबल के प्रति स्नेह देख सशकित रहने लगता है किन्तु अकबर की फटकार के सामने सब कुछ भूल जाता है और महाभारत का फारसी मे अनुवाद करना स्वीकार कर लेता है। अकबर एक ओर राजपूतो के बलिदान तथा बहादुरी की प्रशसा करता है किन्तु साथ ही राजपूती बहादुरी से भी बढकर बहादुरी दिखाने के लिए, तलवार की नोक को अपने पेट मे भोकने को तत्पर होता है। बीरबल अकबर को सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करता है। एक दिन कृष्ण की त्रिभगी मूर्ति अकबर के मन मदिर मे प्रवेश करती है। वह वृंदावन मे कृष्ण-मन्दिर बनवाने की आज्ञा देता है। अकबर अहिंसा, सूर्य-पूजा आदि को ग्रहण करके दीन इलाही-धर्म की घोषणा करता है। इसी समय शेखजादी हसीना दरबार मे आकर अकबर से इन्साफ चाहती है और अकबर उसे बहन बनाकर अपने पाप युक्त-पूर्ण निश्चय का प्रायश्चित करता है। जसवत गौनमी के प्रेम मे पागल होकर आत्म-हत्या कर लेता है। बीरबल अकबर की कामुकता तथा मुल्ला दोप्याजा की शरारत को कम करने के लिए अगियाबेताल का जाल फैलाता है। मुल्ला दोप्याजा बीरबल को काबुल की लडाई के लिए भिजवाकर ही मानता है। बीरबल काबुल की लडाई मे वीरगति प्राप्त करता है किन्तु उसकी मृत्यु अकबर को बेचैन बना देती है। वह अपनी पश्चात्ताप पूर्ण मानसिक स्थिति मे आगरे जाने का निर्णय करता है।

बीरबन्दा बैरागी (सन् १९२९ पृ० १०६), ले० सुवर्णसिंह वर्मा, प्र० शिवराम

दास गुप्त उपन्यास बहार आफिस, बनारस; पात्र : पु० १०, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ७, ६, ४।
घटना-स्थल : अँधेरी गुफा, जंगल, नवाब अब्दुस्समद खाँ तुर्रानी का दरबार, मार्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक में 'वीरबन्दा वैरागी' की जीवनपरक घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है। वीरबन्दा वैरागी गुरु गोविन्द सिंह द्वारा उत्साहित किया हुआ वीर है। इस विषय में इसकी भूमिका में लिखा है—"इसमें सिक्खों के सच्चे दशवें बादशाह, राष्ट्र-निर्माता अद्वितीय वीर मेरे हृदय को सान्त्वना देने वाले श्री 'गुरु' गोविन्दसिंह साहब के द्वारा जागृत किए हुए वीरबन्दा वैरागी का पँवारा है।"

इसमें दया-शांति की व्यवस्था और हिन्दू-मुस्लिम एकता पर प्रकाश डाला गया है। वीरबन्दा के इस वीर चरित्र में सिक्ख धर्म, सिक्ख जाति और हिन्दू जाति का सच्चा प्रेम भली-भाँति दिखाया गया है। गुरु गोविन्द-सिंह ने वैरागी को वीरता की शिक्षा दी है। गोविन्द सिंह के कहने पर कि 'हे छलिय जाहि, डूब मर चूल्लू भर पानी में...' वैरागी कहलाता है 'गुरु जी, मैं सब कुछ हूँ, परन्तु कायर नहीं हूँ।'

नाटक के अंत में करतारसिंह इत्यादि सबकी गरदनें काट दी जाती हैं। बन्दा पर फूलों की वर्षा होती है।

चौसवीं सदी (सन् १९५७, पृ० ६९) ले० : बाल भट्ट मालवीय; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० ८, स्त्री २; अंक : २; दृश्य-रहित।

इस नाटक में भारतीयता और बढ़ती अंग्रेजीयत के बीच संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया गया है। गौ-भक्त पारसनाथ अपनी मंगुरी की कोठी का नाम गोलोक रख कर उसके बाहर गौ की मूर्ति स्थापित करते हैं। वे गौशाला में गायों की बड़ी श्रद्धा से सेवा करते, लेकिन उनके पुत्र मायामणि तथा बहू लोपा उनकी गौभक्ति से घृणा करते हैं। ईर्ष्यावश लोपा एक कुतिया लिण्टी पालती है। वह कोठी का नाम गोलोक की जगह 'लिण्टी पैलेस' रखती है। मायामणि गौशाला की जगह शराब, डांस करने के लिए क्लब बनाना चाहता है। पारसनाथ अपने बेटे-बहू के व्यवहार से दुःखी होकर अपनी समस्त सम्पत्ति व जायदाद गौशाला के नाम कर देना चाहते हैं। गरीबदास अपने पिता के विचार में पूर्ण सहमत हो जाता है। मायामणि और लोपा इसका विरोध करते हैं। माया-मणि अपने पिता को मारकर जायदाद हड़पने की योजना बनाता है। धर्म-द्रोही मायामणि हलुए में तेजाब मिलाकर पारसनाथ को देता है, जिसे खाते ही पारसनाथ को खून की उल्टियाँ होने लगती हैं। हलुआ खिला देने से एक बछड़े की भी मृत्यु हो जाती है। अचानक लोपा की कुतिया भी मर जाती है। वह गुस्से से गौशाला में जाकर गाय की मूर्ति तोड़ने लगती है। मायामणि भी चार-पाँच आदमियों के साथ मूर्ति तोड़ने आ जाता है। पारसनाथ के मना करने पर मायामणि उस को धक्का दे देता है, जिससे पारसनाथ का सिर फट जाता है। गरीबदास पुलिस इंस्पेक्टर बनकर मायामणि को गिरफ्तार कर लेता है।

लोपा पति के जेल में बन्द हो जाने पर एक ईसाई मिण्टल के साथ तिजोरी से सारे गहने और रुपये लेकर भाग जाती है। इसी समय कोहिनूर बैंक भी फेल हो जाता है जिनमें पारसनाथ के रुपये जमा थे। लोपा ने जहर देकर गौ मार दी। पारसनाथ अब मजदूरी करके गुजारा करता है। मनव्वर खाँ मुसलमान होते हुए भी हिन्दू आचार-विचार का है। वह पारसनाथ की लड़की गंगा को अपनी बहन समझकर उनकी गरीबी अवस्था में मदद करता है। एक दिन लोपा भिखारिन के रूप में पारसनाथ के दरवाजे पर भीख माँगने आती है। दयालु पारसनाथ उसे पुनः घर में स्थान दे देता है। इसी समय मिण्टल भी आ जाता है। अब गरीबदास सारे भेद का रहस्योद्घाटन कर देता है। अन्त में सभी मिलकर मायामणि और लोपा को बहकाने वाले धन-लोभी को पुलिस द्वारा गिरफ्तार करवा देते हैं।

बुढ़ापे का नशा (सन् १९३६, पृ० ६६), ले० : जयपाल 'निर्मोही प्र० : भारती

\

आश्रम हेविट रोड, इलाहाबाद, पात्र पु० ६, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य २८।
घटना-स्थल कानपुर की आर्य पुत्री पाठशाला।

इस सामाजिक नाटक में हिन्दू-समाज में उत्पन्न बुराइयों पर प्रकाश डाला गया है। हिन्दू-समाज में स्त्रियों की दशा बड़ी ही दयनीय है। इसमें नवयुवकों का समाज के प्रति सच्चा कर्त्तव्य दिखाया गया है। समाज की सभी समस्याओं के समाधान का प्रयास किया गया है।

लेखक के अनुसार यह नाटक दूषित जीवन के कटु अनुभवों का संकलन मात्र है।

बुढ़ापे की हवस (सन् १९२६, पृ० ३३), ले० रूप बरेली, प्र० शिवराम दास गुप्त उपन्यासबहार बनारस, पात्र पु० ३, स्त्री ३, अंक रहित, दृश्य ६।
घटना-स्थल घसीटामल का मकान।

यह एक प्रहसन है। इसके द्वारा वृद्धावस्था में उत्पन्न काम-पिपासा की इच्छाओं को मानव दुर्दशा का कारण बताया है। वृद्ध घसीटामल कूड़ामल की १८ वर्षीया कन्या रम्या से विवाह करता है। इसके बदले में वह ५०० रुपए भी कूड़ामल को देता है। रम्या बच्चन नामक एक धूर्त युवक से भी अपने प्रेम सम्बन्ध बनाये रखती है। एक दिन बच्चन घसीटा का वेष धारण करके रम्या को घर से ले जाता है तथा असली घसीटा को नकली पति साबित करके पड़ोसियों द्वारा उसकी दुर्दशा करवा देता है।

बूढ़े मुँह मुँहासे लोग देखें तमाशे (वि० १९५१ पृ० ३६), ले० राधाचरण गोस्वामी, प्र० भारत जीवन यन्त्रालय काशी, पात्र पु० ८, स्त्री ६, अंक २, दृश्य ८।
घटना-स्थल तालाब के ऊपर नीम के पेड़ की छाँह।

इस सामाजिक नाटक में जमींदारों के कुकृत्यों तथा शोषण वृत्ति का वर्णन है।

जमींदार लाला नारायणदास एक पतित मनोवृत्ति का व्यक्ति है। वह लगान के बदले मौला नामक मुसलमान युवक की पत्नी को लेना चाहता है। वह गाँव की निप्पी नामक लड़की पर भी अपनी कुदृष्टि डालता है। सिताओ, मौला की पत्नी छन्नो को एक उजड़े शिवालय में लाला से मिलने के लिए ले जाती है। विद्याधर की सहायता से मौला भूत बन कर वहाँ उपस्थित होता है तथा नेपथ्य से भयानक ध्वनि करता है। यह सब देखकर वे लोग अत्यन्त भयभीत हो जाते हैं। फिर मौला अपने वास्तविक वेष में प्रकट होता है। विद्याधर लाला से जुर्माने के रूप में दिया सौ रुपए मौला को दिलवाता है। अन्त में लाला नारायणदास अपने कुकृत्यों पर पश्चात्ताप करता है।

बुद्धशरण गच्छामि (सन् १९५८, पृ० ११६), ले० करतारसिंह दुग्गल, प्र० एम० गुलाबसिंह एण्ड सन्स दिल्ली प्रा० लि०, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अंक-दृश्य रहित।
घटना-स्थल अजन्ता में बनमाल गुफा न० २६।

यह ऐतिहासिक नाटक बौद्ध-शिल्पी मधुरबन्धु के असफल प्रणय प्रसंग की आलोच्य कथा पर आधारित है। थेर मधुरबन्धु के सौन्दर्य पर आकृष्ट हो अपना घर-बार त्यागकर उसे खोजती हुई अजन्ता की गुफाओं तक पहुँच जाती है। मधुरबन्धु अपने मन को मुनि-विदीर्ण कर जीवन पर्यन्त मरमाय रखना चाहता था परन्तु 'महापरिनिर्वाण' के दृश्यांकन में रह-रहकर उसका मन उचट जाता है। इसी से आवेश में आकर वे मधुरबन्धु कोने में छुपकर अपनी ओर निहारती हुई थेर को छैनी की चोट से घायल कर देता है। महापरिनिर्वाण के दृश्यांकन के उपरांत मधुरबन्धु सुध-बुध खो बैठता है। 'भगवान मर गए भगवान मर गए,' कहकर वह अन्य भिक्षुओं को अजन्ता छोड़ने का परामर्श देता है। मधुर के प्रेम रहस्य से अवगत हो जाने पर थेर अपनी पुत्री मजुश्री और जामाता सुमुनि का विवाह करा कर लौट जाती है। सर्प दंश से समानक की मृत्यु और सिंह भय से भिक्षु धर्मदत्त के अजन्ता गुफा छोड़ जाने से नाटक की परिसमाप्ति होती है।

बुद्धदेव (वि० १९९७, पृ० १९२), ले० : विश्वम्भर सहाय 'व्याकुल', मं० मुरारीलाल मांगलिक; प्र० : भारती भण्डार, लीडर प्रेस इलाहाबाद; पात्र : पु० १७, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : ७, ६, ७।
घटना-स्थल : बौद्ध-विहार, एकान्त वन, मैदान, कपिलवस्तु।

इस ऐतिहासिक नाटक में बौद्ध-धर्म से पूर्व फैले अधर्मों पर प्रकाश डाला गया है। धर्म का गला पाखण्ड से दबा रखा है, दया पर हिंसा खड्ग तोल रही है। इसी अधर्म को दूर करने के लिए भगवान् तथागत अवतार लेते हैं। वे मित्रों के साथ नगर-दर्शन करते समय अनुभव करते हैं—'किसान की रोटी में किस प्रकार मिठास के साथ कड़ुवाहट मिली हुई है।' सांसारिक दृश्यों से आक्रान्त हो देवदत्त की हिंसा के विरोधी हो जाते हैं। इधर गौतम में भी वैराग्य जागता है, उधर शुद्धोदन इनके विवाह की तैयारी करते हैं। विवाहोपरान्त दुःख में घुटते गौतम गोपा तथा पुत्र को त्यागकर विश्व-कल्याण के लिए निकल जाते हैं। घोर तपस्या से शरीर सूख जाने पर भी कल्याण का मार्ग नहीं उपलब्ध हो पाता। अचानक नर्त्तकियों के गान से उन्हें 'मध्य-मार्ग' अपनाने का ज्ञान-बोध होता है। वे शूद्र स्त्री की खीर खाकर संसार में ज्ञान के प्रचारार्थ निकल पड़ते हैं। उनके विचारों से प्रभावित हो अनेक लोग उनके अनुयायी हो जाते हैं। अपने विरोधियों को भी अपने तप से पराजित कर वे अपने नगर लौटते हैं। पिता शुद्धोदन माता गौतमी उन्हें सिद्धार्थ संन्यासी रूप में पाकर व्यथित होते हैं। यशोधरा भी 'बुद्धंशरणं गच्छामि' प्रसन्नता से कहती है। विश्व-कल्याणार्थ गौतम सर्वत्र दया, धर्म तथा शान्ति का प्रसार करते हैं।

बुद्धदेव चरित्र (सन् १९०२ पृ० १००), ले० : महेन्द्रनाथ आचार्य; प्र० : भारत जीवन यंत्रालय काशी; पात्र : पु० ८, स्त्री २; अंक : ६; गर्भांक (३, ३, २, २,२, ३)
घटना-स्थल : राजप्रासाद, प्रमोद कानन, अरण्य प्रदेश।

यह नाटक भगवान् बुद्धदेव के चरित्र की प्रमुख घटनाओं के आधार पर निर्मित है। सिद्धार्थ को मृगया के लिए बलदेव-वासुदेव आग्रह करते हैं पर वह जीवन के गहन रहस्यों को सुलझाने में व्यस्त है। एक दिन राजपथ पर वह रथ ले जाते हुए कुछ व्यक्तियों को देख लेते हैं। उनके मन में वैराग्य भाव उठता है। तृतीय अंक में काषाय वस्त्र पहने भिक्षु को देख लेने से उनका वैराग्य दृढ़ होता है। चतुर्थ अंक में सिद्धार्थ और राजा शुद्धोदन का वार्तालाप है। पंचम अंक में छन्दक सिद्धार्थ को लेकर जंगल में जाता है। षष्ठ अंक में विन्ध्याचल प्रदेश में सिद्धार्थ पहुँचते हैं। वहाँ राजा बिंबसार भगवती का पूजन करके पशुओं की बलि देना चाहता है। भगवान् बुद्ध महाराज बिंबसार को उपदेश देते हैं और वह पशुबलि वर्जित कर देते हैं। बुद्ध कौण्डिन्य को भी उपदेश देते हैं। बुद्ध भगवान् यह भी कह देते हैं कि मैं ही जगन्नाथ के रूप में उत्कल प्रदेश में अवतरित होकर देश का कल्याण करूँगा।

बेचारा केशव (वि० १९९०, पृ० ६१), ले० : सीताराम चतुर्वेदी; प्र० : हिन्दी नाटक समिति, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी; पात्र : पु० १०, स्त्री १; अंक-रहित; दृश्य : ५।

'बेचारा केशव' हिन्दी-नाटक-समिति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत प्रथम नाटक है। नाटक की कथा आदर्शवादी भावना से परिचालित है! वयोवृद्ध पं० दीनदयालु जी के पुत्र केशवचन्द्र पर एम० ए० की परीक्षा पास कर लेने के बाद भी नवीन शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और वह प्राचीन परम्परा के अनुसार पिता के वचन को वेदवाक्य मानता रहता है। एक दिन उसका पुराना मित्र रमेशचन्द्र उसे धोखा देकर मदिरा पिला देता है। परिणामतः केशवचन्द्र भी झूठ, चोरी और मदिरा का अभ्यासी बन जाता है। एक दिन वह अपने घर में ही चोरी करके मित्रों के साथ भाग जाता है। परन्तु मित्रों के धोखा करने पर केशवचन्द्र का विवेक जागृत होता है।

उसके विरोध करने पर मित्र उसे बांध देते हैं। अचानक मित्रों को पुलिस पकड़ लेती है केशवचन्द्र पागल हो जाता है जब उसे इस बात का ज्ञान होता है कि पापियों को उचित दंड मिल गया है तो उसका पागलपन दूर हो जाता है।

इसका अभिनय आर्ट्स कालेज काशी में हुआ है।

बेटा तिकड़मचन्द (सन् १६४०, पृ० १२०), ले० ज्योति प्रसाद निर्मल, प्र० अज्ञात, पात्र पु० १६ स्त्री ६।
घटना-स्थल सजा कमरा, क्लब, होटल, सिनेमा।

नाटक की नायिका मालती आधुनिक ढंग की युवती है उसको अपने योग्य कोई वर नहीं दिखाई पड़ता। वह भारत के मारे नवयुवकों को अयोग्य समझती है। वह कहती है कि "टेढ़ी कमर, बालिश्त भर मूँछ, हाथ भर की चोटी, झाड़ी की तरह दाढ़ी, लम्बी नाक, खाली पेट, कोई घुटने के ऊपर धोती पहनने वाले, कोई पजामे के ऊपर पतलून पहनने वाले हिन्दुस्तान के सारे मर्द निकम्मे होने के कारण शादी के नाकाबिल हैं।" नाटक में नायक के दोषों का विस्तृत वर्णन किया गया है किन्तु कहीं यह नहीं स्पष्ट किया गया कि किन गुणों के कारण आधुनिक युग की नवयुवती किसी नवयुवक पर विवाह के लिए मुग्ध होती है।

बेन-चरित्र नाटक (वि० १९७९, पृ०१७६), ले० पं० बदरीनाथ भट्ट, प्र० रामप्रसाद एण्ड ब्रदर्स, आगरा, पात्र पु० १२, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ७, ७, ४।
घटना-स्थल राजमहल एवं आस-पास के स्थान।

इस नाटक में अराजकता के भीषण परिणाम दिखाये गये हैं। राजा के खिलाफ शूद्रों में असंतोष पैदा होता है। राज्य कर्मचारियों के भ्रष्ट आचरण से आतंकित होकर जनता विद्रोह करती है। राजा का पुत्र बेन भी अपनी राज्यलिप्सा और स्वार्थ से पथ-भ्रष्ट हो प्रजा पर जुल्म ढाता है। किन्तु अन्त में प्रजा की विजय होती है। बेन राज्य-विद्रोह के अपराध में कैद किया जाता है। वह अपने कर्मों का फल भुगतता है, क्योंकि बेन ही प्रजा को पथभ्रष्ट करने में प्रमुख रहता है। अन्त में ऋषि मुनियों की प्रार्थना में नाटक समाप्त होता है।

बेनजीर बदरेमुनीर नाटक (सन् १८७६, पृ० ६६) ले०, महमूद खाँ रौनक, प्र० विक्टोरिया प्रेस, बम्बई, पात्र पु० ८, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल सरनद्वीप, जंगल, वनमार्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक में प्रेमी प्रेमिका का अटूट प्रेम दिखाया गया है।

प्रथम अंक में माहरुख परी, जीन के शाहजादे बेनजीर पर मुग्ध होकर उससे अपना प्रणय निवेदन करती है। लेकिन बेनजीर उसके प्रणय को अस्वीकार करता है। परी फिर भी बेनजीर को सैर करने के लिए उड़न खटोला देती है। वह उस पर सैर करता है। उसके माता-पिता अपने पुत्र के शोक में योगी बन जाते हैं।

दूसरे अंक में सरनद्वीप की राजकुमारी बदरेमुनीर के अनिंद्य सौन्दर्य को देखकर बेनजीर उस पर मुग्ध हो जाता है। राजकुमारी भी राजकुमार के प्रणय का शिकार हो जाती है। माहरुख परी अपने प्रियतम पर बदरेमुनीर की इस दखल को चुनौती देने के लिए बेनजीर को बन्दी बनाती है। बदरेमुनीर राजकुमार के वियोग में क्षीण हो जाती है। वह अपनी प्रिय सखी नजमुन्निसा से राजकुमार को खोजने की प्रार्थना करती है। नजमुन्निसा योगिनी बन कर बेनजीर की खोज में चली जाती है।

तीसरे अंक में नजमुन्निसा की भेंट बेनजीर के योगी माता पिता से हो जाती है। वे तीनों ही बेनजीर की खोज में आगे बढ़े। नजमुन्निसा को जंगल में जीन के बादशाह फिरोजशाह मिल जाते हैं। उनकी सहायता से बेनजीर बन्धन मुक्त होता है। बादशाह बदरेमुनीर और उसके पिता को बुलाकर दोनों का विवाह करा देता है। माहरुख परी को क्षमा प्रदान कर भविष्य में ऐसा न करने की चेतावनी दी जाती है।

बेला-चमेली नाटक (सन् १६०२) ले० : अज्ञात; प्र० : मुरारीलाल केडिया द्वारा प्राप्त; पात्र : पु० ६ स्त्री २ अंक-रहित।

इस सामाजिक नाटक में जादूगर द्वारा जादू की क्रिया-कलापों का बहुत अच्छा वर्णन मिलता है। इसमें जादू की कई रहस्यपूर्ण घटनाओं का समावेश होने के कारण नाटक बड़ा ही मनोरंजक तथा हास्यप्रद है। कहीं-कहीं पर सुन्दर गायन का भी आयोजन है। बेला चमेली की प्रेमकथा वर्णित है।

बैंकर सभा (सन् १६१६, पृ० २२), ले० : हरिहर प्रसाद जिजल; प्र० : अग्रवाल प्रेस, गया; पात्र : पु० ५, स्त्री ४; अंक : २; दृश्य : ५, १।
घटना-स्थल : रास्ता, मकान।

यह एक प्रहसन है। इसमें चरित्रहीन लोगों को उपहास का विषय बनाया गया है।

शहर का एक बैंकर ढोंगल साहु है जिसका काम ही मात्र सभा करना और वेश्या रखना है। वह नित्य नई रंगीनियों के बीच, भोग-विलास में लिप्त रहता है। शामत जान उसकी रखी गई वेश्या है। वह शामत जान के अलावा अन्य नई वेश्याओं के साथ भी भोग-विलास की कामना करता है। इस कार्य में उसके नए नौकर फुदना, बहेलिया, बखेड़िया आदि मदद भी करते हैं।

ढोंगल को जुए का भी शौक है। वह वेश्याओं के साथ जुआ खेलता है और सब कुछ हार जाता है। इसके बाद वह बहुत ही पश्चात्ताप करता है। सभी उसकी खिल्ली उड़ाते हैं।

बैर का बदला (सन् १६२२, पृ०५८), ले० : तामसकर गोपाल दामोदर; प्र० : कृष्ण राव भावे जबलपुर; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ७, २, ६।
घटना-स्थल : दरबार, सड़क, बाग, महल कारागृह, गंगा तट, अंतःपुर, जंगल।

इस ऐतिहासिक नाटक में प्रेम को महान् तथा द्वेष को घृणित बताया गया है।

कौशल राज्य काशी के अधीन है। कौशल-नरेश के राज्य कर न देने पर काशी का प्रधान मंत्री विजयसेन कौशल-नरेश दिधीति को देशद्रोही बताकर अपने राजा ब्रह्मदत्त को युद्ध के लिए भड़काता है।

कौशल का राजकुमार दीर्घायु काशी राज की लड़की से प्रेम करता है। यह बात विजयसेन को पसंद नहीं आती क्योंकि वह अपनी लड़की की शादी दीर्घायु के साथ करना चाहता है। महाराज दिधीति प्रधानमंत्री का यह प्रस्ताव अस्वीकार कर देते हैं, जिससे वह उनसे बदला लेने के लिए कौशल पर चढ़ाई कर देता है। युद्ध में महाराज दिधीति कैद कर लिए जाते हैं। दीर्घायु भी काशी में ही गिरफ्तार हो जाता है। मरते समय महाराज दिधीति अपनी पत्नी से पुत्र के लिए संदेश दे जाते हैं कि "द्वेष से द्वेष शान्त नहीं होता द्वेष प्रेम से शान्त होता है।" अतः किसी से बदला लेने की जरूरत नहीं है।

राजकन्या मालती की मदद से दीर्घायु छूट जाता है। वह अपनी माँ द्वारा पिता के अंतिम संदेश को सुनता है, फिर भी वह प्रतिशोध की भावना से काशी-नरेश के यहाँ नौकरी करता है। दीर्घायु अपने गुणों से काशी-नरेश को प्रभावित करके उनका विश्वासपात्र बन जाता है। एक दिन दीर्घायु राज परिवार के साथ आखेट के लिए जाता है। जंगल में हिरण का पीछा करते हुए काशी-नरेश और दीर्घायु बहुत दूर निकल जाते हैं। दोनों परिश्रान्त हो विश्राम करते हैं। काशी-नरेश के सो जाने पर दीर्घायु उन्हें मारने के लिए तलवार निकालता है लेकिन पिता के अन्तिम शब्द के याद आ जाने से प्रहार नहीं कर पाता। उसी समय महाराज की भी नींद खुल जाती है। वे दीर्घायु के हाथ में तलवार देखकर इसका कारण पूछते हैं। दीर्घायु महाराज को सारी घटना बता देता है।

विजयसेन की करतूतों को सुनकर महाराज उसे कैद करवा देते हैं। तथा मालती और दीर्घायु की शादी करके सारा राज्य-भार उन्हें सौंप देते हैं। अन्त में दीर्घायु विजयसेन का भी अपराध क्षमा करा देता है।

बोधिसत्व (सन् १६५०, 'नई धारा' के नवम्बर अक में प्रकाशित), ले० रुद्र, पात्र पु० २, स्त्री २, अक-दृश्य-रहित।

महात्मा बुद्ध के आत्मज्ञान पर आधारित 'बोधिसत्व' एक लघु सगीत रूपक है। प्रारभ मे सरस्वती विजीर्ण वसुधा के लिए शोक प्रकट करती है। तभी गरुड पर सवार श्री नारायण आकर विश्व की दुखद स्थिति के उद्धार हेतु गौतम बुद्ध के अवतार का सकेत कर सरस्वती का शोक निवारण करते हैं। वनदेवी तथा उरु वेला परस्पर वार्तालाप द्वारा बुद्ध की प्रशस्ति करती हैं। एक नारी सुजाता भी खीर बनाकर उनका भाग लगाती है। वह खीर बुद्ध को आत्मिक शक्ति प्रदान करती है और गौतम 'मार' के आक्रमण को भग करके बोधिसत्व प्राप्त कर गौतम बुद्ध बन जाते हैं।

ब्रजबाला (सन् १६४७, पृ० ३३), ले० राजा महेन्द्र प्रताप, प्र० ससार सघ, प्रेस, महाविद्यालय, वृन्दावन, पात्र पु० ५, स्त्री २, अक-रहित, दृश्य ६।
घटना-स्थल श्याम का मकान, जगल, तीर्थ-यात्रा।

इस सामाजिक नाटक मे ऊँच-नीच, जाति-पाति का भेद-भाव मिटाकर प्रेम का साम्राज्य स्थापित किया गया है।

श्याम जी सरस्वती से प्रेम करता है किन्तु लोग उसे बुरा मानते हैं। अफीम बेचने वाला बसन्ता सिपाहियो के रहने पर श्याम को विष देता है, जिससे वह मर जाता है। फिर सरस्वती सुन्दर के साथ तीर्थयात्रा पर निकलती है और अपनी माँ से मिलकर अपनी दुखद कहानी कहती है। अत मे उसका विवाह सुन्दर नामक अहीर से हो जाता है।

ब्रह्मचर्य नाटक (सन् १६४१), ले० स्वामी शिवानद, प्र० जनरल प्रिंटिंग वर्क्स लि०, ८३, पुराना चीना बाजार स्ट्रीट, कलकत्ता, पात्र पु० २५ स्त्री १४, अक ४, दृश्य ३, २, २, ४।
घटना-स्थल युद्धक्षेत्र, ब्रह्मलोक।

इस सामाजिक नाटक मे काम, क्रोध, मद, लोभ और लालसा आदि बुरी प्रवृत्तियाँ मानव की चित्तवृत्ति को दुष्प्रेरित कर विश्व मे अमगल का सृजन कर रही हैं।

रति कामदेव के पास जाकर विवेक राजा ब्रह्मचर्य पार्षद और विभेद की बढती हुई शक्ति से उसे अवगत कराती है। काम देव उसे आश्वस्त करता है। महारानी लालसा अपने अनुचर काम की प्रेरणा से विवेक के विरुद्ध युद्ध छेड़ने का निश्चय करती है। इधर विवेक राजा का मत्री विभेद और ब्रह्मचर्य, काम, उसके सहायकों तथा लालसा को नष्ट करने की योजना बनाते हैं। उसके मित्र तथा सेवक इस उद्देश्य के लिए सचेष्ट होकर युद्ध की तैयारी करते हैं। फलत लडाई छिड जाती है जिसमे लालसा के वीर सैनिक-क्रोध, मोह, द्वेष, कपट, अहकार मारे जाते हैं। ब्रह्मचर्य अपने शत्रुओ को परास्त कर विवेक-राजा विचार, विवेक, विभेद आदि के साथ ब्रह्म से मिलने जाते हैं। इधर घायल लालसा भी महामाया की सेवा से स्वस्थ होकर महा-माया के साथ ब्रह्म से मिलने जाती है। अपने दुष्कृत्यो के लिए क्षमा-प्रार्थी होती है। अन्त मे ब्रह्म सबको आशीष देकर कहते हैं—'जब ब्रह्मचर्य का पालन होता है तब सद्भाव, शाति, आनन्द एव उन्नति का विधान स्वय होता है।'

यह नाटक ६ अप्रैल, १६४० को बिलि-पुरम् में बी० एस० सुदरम् द्वारा रैडनास सोसायटी के सहायतार्थ अभिनीत हुआ।

ब्रह्ममोहन मुमुरा (सन् १५६७ पृ० ५), ले० अनिश्चित किन्तु सम्भवत माधवदेव के किसी शिष्य द्वारा विरचित, प्र० हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, पात्र पु० ५, स्त्री ०, अक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल नन्दगृह, वृन्दावन।

इस अकिया नाट मे भगवान् कृष्ण की महिमा और शौर्य का वर्णन है।

प्रात काल कृष्ण अपने ग्वाल-बालो के साथ वृन्दावन प्रस्थान करते हैं। अचानक

मौका देखकर अघासुर कृष्ण को मारने के लिए प्रकट होता है। अघासुर अपना रूप विशालकाय बनाकर कृष्ण को निगलने के लिए मुँह फैलाता है। कृष्ण उसकी गर्दन को पकड़ते हुए प्रसन्न मुद्रा में दिखाई देते हैं। कृष्ण को प्रसन्न देख सभी ग्वाल-बाल उसके पेट में घुस जाते हैं। अन्त में कृष्ण भी उसके पेट में घुसकर अपनी संजीवनी दृष्टि से सभी मृतक ग्वालों को जीवित कर कर देते है।

ब्रह्मा द्वारा अपहृत गोपगण और गोप-वत्सों को जीवित करने के लिए कृष्ण स्वतः सबका रूप धारण कर लेते हैं जिसे देखकर ब्रह्मा विस्मय-विभोर हो उठते हैं। वे कृष्णकी महिमा से प्रभावित होकर दंडवत् प्रणाम करते हैं। तत्पश्चात् कृष्ण ब्रह्मा को विदा कर सभी ग्वालों को आनन्द से विभोर करते हुए अघासुर के मारने का संदेश सुनाते हैं।

भ

भँवर (सन् १९५३, पृ० ३३) लेo : उपेन्द्रनाथ 'अश्क'; प्र० : नीलाभ प्रकाशन; इलाहाबाद पात्र : पु० ६, स्त्री ६; दृश्य : ३।
घटना-स्थल : ड्राइंग रूम, कमरा।

इस सामाजिक नाटक में एक सम्भ्रान्त परिवार के वैवाहिक जीवन की विडम्बना की झाँकी दिखाई गई है। दिल्ली में नाटककार को सभी अभिजातवर्ग की ऐसी तीन लड़कियों से परिचय हुआ था जो कई बातों में समान थीं। सुशिक्षिता होने के साथ ही वे तीनों अपने को प्रबल बुद्धिवादिनी मानती थीं। तीनों ही यौवनारम्भ के समय किसी न किसी ऐसे व्यक्ति से प्यार करती हैं जिसे वे आगे चलकर अपना जीवन-साथी नहीं बना पाती। तीनों ही स्वेच्छा से विवाह करती है किन्तु वैवाहिक जीवन से असन्तुष्ट होकर सम्बन्ध-विच्छेद कर लेती हैं। नाटक की नायिका प्रतिमा का प्रथम साक्षात्कार प्रोफेसर नीलम से होता है, किन्तु उसकी उदासीनता से वह अपने सहपाठी सुरेश के प्रति आकृष्ट होती है। शीघ्र ही दोनों विवाह-बन्धन में बँध जाते हैं। अपनी अन्य बहिनों की तरह वह भी पति सुरेश से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेती है। प्रोफेसर जान फ्रायड के यौन विचार के प्रतीक के रूप में प्रतिमा से साक्षात्कार कर उससे पुनर्विवाह का प्रस्ताव करते हैं, किन्तु प्रतिमा के मन पर प्रो० नीलम का गहरा असर होता है। अतः वह प्रोफेसर जान को नहीं स्वीकार कर पाती है। यही विडम्बना इस नाटक का अंत है, जो कि एक भँवर के समान सदैव गोल दायरे में चक्कर मारती घूमती रहती है।

भंडाफोड़ (सन् १९००, पृ० ३४), लेo : बाबू आनन्द प्रसाद जी कपूर; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० ४, स्त्री २; अंक : १; दृश्य : ५।

ज्योतिष के नामों के आधार पर प्रहसन लिखने का प्रयास है। तुला सुन्दर स्त्री है किन्तु बृहस्पति उससे इस शर्त पर शादी करता है कि वह रोज अपनी पत्नी तुला से पाँच डण्डे मार खाया करेगा। अंत में जब वह परेशान हो उठता है तो शनिश्चर के ज्योतिष के प्रभाव से तुला को पातिव्रत धर्म समझाया जाता है और वह सुधर जाती है।

इस प्रतीक नाटक में नारी को पातिव्रत धर्म समझाने का प्रयत्न है।

भक्त अंबरीष या ईश्वर भक्ति (सन् १९४१, पृ० ११६), लेo : विश्वम्भर नाथ बर्मा 'बाचाल'; प्र० : नवल किशोर प्रेस, लखनऊ; पात्र : पु० १६, स्त्री ८; अंक : ३, दृश्य : १०, ७, ७।
घटना-स्थल : राजमहल, गंगातट।

इस पौराणिक नाटक में राजा अंबरीष

की विजय दिखाई गई है। प्रारम्भ मे सुदर्शन और गरुड आपस मे तपस्या और भक्ति की प्रधानता पर विचार करते हैं, गरुड तपस्या को श्रेष्ठ बतलाता है, और सुदर्शन भक्ति को। अयोध्या-नरेश नाभाग के दो पुत्रो मे अम्बरीष भक्त और आस्तिक हैं, किन्तु मणिकात नास्तिक। मणिकान्त छोटा होते हुए भी राज्य का अधिकारी बनता है। अम्बरीष राज्य लेने से इन्कार करता है। राज्य मे एक बार घोर अकाल पडता है। मणिकात की अकर्मण्यता देख भक्त अम्बरीष राज्य का सारा धन प्रजा को बाट देता है, इससे मणिकात दुर्वासा से शिकायत करता है। दुर्वासा अम्बरीष को धोखेबाज, पाखडी कहकर अपमानित करता है। पर जब उसे भक्ति का महत्त्व मालूम होता है, तब दोनो मित्र बन जाते है। दुर्वासा शिष्यो-सहित अम्बरीष के यहाँ भोजन करने आते हैं किन्तु अम्बरीष के द्वादशी पारण के समय गगा-स्नान से नही लौटते। अम्बरीष पारण का समय बीतते देख तुलसीदल मुँह मे डाल लेते हैं। इस पर क्रुद्ध दुर्वासा अम्बरीष को नष्ट करने के लिए अपनी जटाओ से कृत्यानल पैदा करते है, किन्तु सुदर्शन उसे नष्ट कर देते है और दुर्वासा को मारने जाते हैं। दुर्वासा यह देखकर भागते हैं। ब्रह्मा-शकर सबके पास जाते है किन्तु कोई रक्षा नही करता। अन्त मे विष्णु के पास जाते है। तब विष्णु कहते हैं कि भक्त अम्बरीष से क्षमा माँगो, तब तुम्हारी रक्षा होगी। अन्तत दुर्वासा ऐसा ही करते हैं। तब सुदर्शन से उनकी जान छूटती है। भक्त अम्बरीष की विजय से सभी प्रसन्न होते हैं।

भक्त चन्द्रहास (सन् १६२१, पृ० ४८), ले० जमुनादास मेहरा, प्र० निहाल चन्द ऐण्ड कम्पनी, नारायण प्रसाद बाबू लेन, कलकत्ता, पात्र पु० १७, स्त्री १०, अक ३, दृश्य ८, ६, ६।
घटना-स्थल मदिर, महल, जगल।

इस धार्मिक नाटक म लक्ष्मी से अधिक महत्त्व धर्म को दिया गया है।

अगद देश के राजा सुधार्मिक के मन्दिर से प्रकट होकर लक्ष्मी अपने भक्तो की श्रेष्ठता और अपनी महत्ता की डीग हाँकती है। धर्म उसका प्रतिवाद करता है और अपने तथा अपने भक्तो की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करता है। इस पर धर्म के चुनौती-स्वरूप लक्ष्मी उसके भावी भक्त चन्द्रहास को धनहीन करने का सकल्प करती है। फलत राजकुमार चन्द्रहास के जन्मोत्सव के समय राक्षसो और राक्षसियो के आक्रमण मे राजा मारे जाते हैं। महल ध्वस्त हो जाता है। रानी मरने के पूर्व सुशीला को गुप्त रास्ते से बन की ओर भगाकर चन्द्रहास की रक्षा करती है। सुशीला राजकुमार को पालपोस कर बडा करती है और सर्प-दश से मरती है। इधर कुतलपुर के प्रधान धृष्टबुद्धि द्वारा यज्ञ मे अपमानित होने से राजगुरु गालव उसकी कन्या विजया का विवाह कगाल बालक चन्द्रहास से होने का शाप देते हैं। धृष्टबुद्धि मुनि के वचन को असत्य करने पर तुल जाता है और हीरजी से परामर्श कर उस बालक की हत्या का षड्यन्त्र रचता है। हीरजी के प्रयत्न से चन्द्रहास प्रधान के घर माली के काम पर नियुक्त होता है। इधर विषया चन्द्रहास पर आसक्त होती है और उसे पिता तथा भाई से छिपाकर भोजनादि से सन्तुष्ट करती है। तीन जल्लाद चन्द्रहास को बाँधकर वन मे ले जाते हैं किन्तु कृष्ण की कृपा से वे उसका वध करने मे असमर्थ रहते हैं। इसी बीच बालक के मामा पुत्रहीन कुलिद सिंह-शिकार करते-करते वहाँ पहुँचते हैं। वे बालक के कारण कृष्ण का दर्शन पाते हैं, और उसे राजकुमार रूप मे स्वीकार कर लेते हैं। इधर विषया चन्द्रहास के प्रेम मे अधीर रहकर उसी को पति रूप मे प्राप्त करना चाहती है। अपने षड्यत्र मे अकृतकार्य होने पर धृष्टबुद्धि हीर जी से मिलकर (राजा वीरसिंह की इच्छानुसार) चन्द्रहास को धृष्टबुद्धि की वाटिका मे ले जाकर वहो विष देने की योजना बनाता है। नीद के कारण चन्द्रहास वही बेंच के सहारे सो जाता है। वाटिका का माली सिपाही द्वारा मदन के पास ले जाने वाला प्रधान का पत्र पाता है लेकिन वह भी उसे लिये-लिये वही जमीन पर सो जाता है। प्रात काल होने पर विषया वाटिका मे कुँवर को देखकर फूली नही समाती और भूल-सुधार की दृष्टि से माली

के पास पड़े पत्र के इस वाक्य को 'राजकुमार को विष दे दो' के 'विष' शब्द को 'विषया' बना देती है। मदन पत्र पाते ही चन्द्रहास से विषया का यथार्थ विवाह कर देता है। धृष्टबुद्धि यह समाचार पाकर बहुत चिढ़ता है और राजकुमार को मारने तथा विषया का दूसरा विवाह करने का बहाना कर उसे अकेले लक्ष्मी मन्दिर में जाकर पूजा करने के लिए तैयार करता है। विषया, सारा भेद चन्द्रहास पर प्रकट कर उसे भगवान् के भरोसे जाने देती है। इस बीच गालव की प्रेरणा से चन्द्रहास राजा के निकट बुला लिया जाता है और पूजन की थाली लिए हुए मन्दिर में जाते समय हत्या के लिए नियोजित व्यक्ति मदन की हत्या कर देते हैं। प्रधान चन्द्रहास की हत्या का अनुमान कर प्रसन्न होता है, परन्तु घटनास्थल पर जाते ही वास्तविकता मालूम हो जाती है। वह दुःख और भय से आत्महत्या कर लेता है। इतने में चन्द्रहास भी पहुँचकर आत्मा-हत्या करना चाहता है, पर कृष्ण भगवान् प्रकट होकर उसे रोक देते हैं। अंत में लक्ष्मी धर्म से हार स्वीकार करती है।

भक्त चन्द्रहास (सन् १९६३, पृ० ८०); ले० : त्रिपाठी वेणीराम श्रीमाली; प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर वाराणसी; *पात्र* : पु० १५, स्त्री ६; *अंक* : ३; *दृश्य* : ६, ५, ५।
घटना-स्थल : जंगल।

भक्त चन्द्रहास अपने गुरु गालव की आज्ञा पालन को सदैव तत्पर रहता है। जब उसे मारने के लिए धृष्टबुद्धि आदि बहकाकर जंगल में ले जाते हैं उस समय वहाँ श्रीकृष्ण की कृपा से उदारता उसकी रक्षा करती है। और इसी प्रकार भक्त चन्द्रहास को सर्वत्र सफलता मिलती है।

भक्त तुलसीदास (सन् १९२२, पृ० ६६), *ले०* : दुर्गाप्रसाद गुप्त; *प्र०* : जगन्नाथ बुक डिपो, राजघाट, काशी; *पात्र* : पु० ८, स्त्री ५; *अंक* : ३; *दृश्य* : ५, ५, ४।
घटना-स्थल : गाँव का मकान, असीघाट, काशी में तुलसी का स्थान।

तुलसीदास के जीवन के आधार पर इस नाटक की रचना हुई है। उनके विवाह और वैराग्य की सुप्रसिद्ध घटना को इसमें स्थान दिया गया है। तुलसीदास के भक्त बनने की मनोहारी कथा नाटकीय ढंग से की गई है। रत्नावली के चरित्र और तुलसी के सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों का जीवन-परिवर्तन दिखाया गया है।

भक्त ध्रुव नाटक (सन् १९१५, पृ० ६०), *ले०* : पं० माधवराम त्रिवेदी; *प्र०* : ठाकुर प्रसाद ऐण्ड संस बुकसेलर वाराणसी; *पात्र* : पु० ६, स्त्री ४; *अंक* : ३; *दृश्य* : ७, ५, ६।
घटना-स्थल : महल, वन।

इस धार्मिक नाटक में ध्रुव की धर्म में अटल निष्ठा दिखाई गई है। ध्रुव अपनी विमाता के कहने पर पाँच वर्ष की अवस्था में अपना घर-बार छोड़कर वन में चले जाते हैं। वहाँ पर नारद जी के बतलाए हुए मार्ग का अनुसरण करके वन में तपस्या करते हैं, जिससे प्रसन्न होकर त्रिलोकपति विष्णु उन्हें दर्शन देते हैं और पुनः उनको राजमहल में भेज देते हैं। ध्रुव अपने माता-पिता को भी साक्षात् परमेश्वर के दर्शन कराते हैं। कुछ समय तक राज्य का कार्यभार सँभाल कर अंत में अपने पुत्रों को राज्य सौंपकर ध्रुव लोक को चले जाते हैं।

भक्त ध्रुव (सन् १९५०, पृ० ६१), ले० : मास्टर न्यादर सिंह 'बेचैन' देहलवी; प्र०: देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार दिल्ली; पात्र : पु० १२, स्त्री ५; *अंक* : ३; दृश्य : ५, ५, ५।
घटना-स्थल : महल, वन।

महाराजा उत्तानपाद की प्रथम रानी सुनीति अपने कुमार ध्रुव के साथ अत्रि के आश्रम में रहती है। ध्रुव एक दिन पिता से मिलने आता है, और विमाता सुरुचि से अपमानित होता है। सुनीति उसे जगत्पिता ब्रह्मा की गोद में बैठने का संकेत करती है अतः अबोध बालक घोर वन में जगत्पिता को प्राप्त करने के लिए कठिन तपस्या करता है। इन्द्र, कुबेर, पवन उसे विचलित करना चाहते हैं, किन्तु, लगन का धनी ध्रुव अचल तपस्या से ब्रह्मा को प्रसन्न कर उनकी गोद में

बैठ ध्रुव पदवी प्राप्त करता है।

भक्त ध्रुव (सन् १९४६, पृ० ६०), ले० श्रीकृष्ण हसरत, प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस, पात्र पु० ५, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ५, ६, ३।
घटना-स्थल महल, वन।

यह धार्मिक नाटक है। इसमें राजा उत्तानपाद सतान के लिए अपनी दूसरी शादी सुरुचि से करते हैं किन्तु संयोगवश कालान्तर में उनकी दोनों रानियों से एक एक लड़का पैदा होता है सुरुचि से उत्तम, सुनीति से ध्रुव। सुरुचि के विवाह के समय सुनीति सुरुचि को आश्वासन दे चुकी है कि मैं बड़ी रानी भले ही हूँ किन्तु युवराज तुम्हारा ही लड़का बनेगा और मैं स्वयं तुम्हारी सेवा करूँगी। एक दिन राजा उत्तानपाद की गोद में उत्तम बैठा है, उसी समय ध्रुव भी वहाँ पहुँचता है। वह भी राजा की गोद में बैठना चाहता है किन्तु पास खड़ी सुरुचि उसे फटकार कर निकाल देती है। ध्रुव घर से निकलकर जंगल में तप करने चला जाता है। उस समय ध्रुव की आयु पाँच वर्ष की है। वह अपने तप में इतना अटल रहता है कि इन्द्र, वरुण आदि भी उसे पथ से हटा नहीं पाते। अत में स्वयं भगवान् विष्णु साक्षात् दर्शन देकर ध्रुव को प्रतिष्ठित करते हैं।

भक्त-परीक्षा अथवा श्रीकृष्ण लीला (सन् १९३६) ले० मास्टर मुन्नीलाल और श्रीनाथ पाण्डे, प्र० दूधनाथ पुस्तकालय ऐण्ड सस, हावड़ा, पात्र पु० ५, स्त्री, अंक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल महल, मैदान।

इस नाटक में महाभारत के आधार पर राजा मोरध्वज की उत्कट भक्ति और त्यागमय जीवन को चित्रित किया गया है। भगवान् कृष्ण अर्जुन के गर्व का निराकरण के लिए भक्त मोरध्वज की परीक्षा लेते हैं। दोनों ही अपना रूप परिवर्तित करके साधु मोरध्वज के अतिथि बनते हैं और सिंह के आहार के लिए मोरध्वज के पुत्र को माँगते हैं। साधु-सेवी मोरध्वज कृष्ण के कथनानुसार अपने पुत्र को आरे से दो टुकड़े करना प्रारम्भ करता ही है कि भगवान् विष्णु के रूप में प्रकट होते हैं। भक्त के आतिथ्य धर्म-पालन से प्रसन्न होकर पुत्र को जीवन दान देते हैं और भक्त मोरध्वज को वरदान में उसकी माँग के अनुसार कलियुग में ऐसी परीक्षा न लेने का वचन देते हैं।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९६०, पृ० ७६), ले० न्यादरसिंह बेचैन, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार दिल्ली, पात्र पु० १५, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ६, ५, ५।
घटना-स्थल महल, पर्वत, स्तम्भ।

इस नाटक में भक्त प्रह्लाद की अनन्य भक्ति से हिरण्यकशिपु के अज्ञान अंधकार का नाश प्रदर्शित किया गया है। हिरण्यकशिपु वरदान पाकर अहंकारी हो जाता है। वह प्रजा पर अत्याचार करता है और स्वयं को भगवान् घोषित कर देता है। उसका पुत्र प्रह्लाद कुम्हार के आवाँ में बिल्ली के बच्चों को जीवित देख ईश्वर की ओर उन्मुख होता है। वह ईश्वर की भक्ति का प्रचारक बन जाता है। हिरण्यकशिपु अहंकार में पुत्र को पर्वत से गिराता है और हाथी से कुचलवाता है। किन्तु ईश्वर-महिमा से उसका बाल भी बाँका नहीं होता है। वह होलिका से प्रह्लाद को जलाने का आदेश देता है। भक्त प्रह्लाद वहाँ भी बच जाता है और होलिका अपने अहं के साथ भस्म हो जाती है। पत्नी, मंत्री, राजपुरोहित द्वारा जगदीश पुकारा जाने वाला हिरण्यकशिपु स्वयं प्रह्लाद के वध को प्रस्तुत होता है। नृसिंह भगवान् पापी, घमण्डी हिरण्यकशिपु का अंत करते हैं।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९४०, पृ० ५७), ले० वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली', प्र० ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सन्स बुकसेलर, वाराणसी, पात्र पु० १६, स्त्री, १०, अंक ३, दृश्य ६, ६, ५।
घटना-स्थल राजप्रासाद, पर्वत, स्तम्भ।

यह एक पौराणिक नाटक है। हिरण्यकशिपु घोर तपस्या करके ब्रह्मा को प्रसन्न करता है तथा अमरत्व और एकछत्र सम्राट् होने का वरदान प्राप्त करता है। वह देवता, नर, किन्नर सभी को बड़ा ही दुःख देता है। ससार में कोई भी भगवान् का नाम नहीं

लेता। उसका पुत्र भगवान् का अनन्य भक्त है। पिता के समझाने पर भी भगवद्-भक्ति नहीं छोड़ता है। हिरण्यकशिपु प्रह्लाद को ढुंढा की गोद में बैठाता है और उसके चारों तरफ आग लगा देता है लेकिन प्रह्लाद सुरक्षित रह जाता है और ढुंढा जल जाती है। वह और भी यातनाएँ देता है। अंत में जब वह भगवद्-भक्ति नहीं छोड़ता तो हिरण्यकशिपु जैसे ही खड्ग उठाकर मारना चाहता है वैसे ही सर्वव्यापी परमेश्वर नृसिंह रूप में प्रकट होकर अपने तेज नाखूनों से हिरण्यकशिपु को मार डालते हैं। ब्रह्मदेव सहित सभी देवता प्रह्लाद के मस्तक पर राजमुकुट रखते हैं।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९६४, पृ० ६४), ले० : बालभट्ट, मेरठ निवासी; प्र० : गिरधारी लाल योक पुस्तकालय देहली; पात्र : पु० ११, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ६, ४, २।

इस धार्मिक नाटक में भगवान् को अपने भक्तों की रक्षा करते दिखाया गया है। भक्त प्रह्लाद की जगत् प्रसिद्ध कथा ही इसका आधार है। अपने पिता हिरण्यकशिपु द्वारा अनेक कष्ट पाने पर भी वह उसकी आज्ञा की अवहेलना करता हुआ भगवद्-भक्ति में लीन रहता है। अन्त में भगवान् को नृसिंह अवतार धारण कर हिरण्यकशिपु का वध करना पड़ा और भक्त प्रह्लाद की रक्षा करनी पड़ी।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९१७, पृ० १२२), ले० : हरिदास माणिक; प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस; पात्र : पु० ७, स्त्री ०; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : राजप्रासाद, तपोवन।

इस पौराणिक नाटक में भक्त प्रह्लाद की शिक्षाप्रद उत्कट भक्ति का वर्णन किया गया है। हिरण्यकशिपु के भाई हिरण्याक्ष को भगवान् विष्णु सूअर का रूप धारण करके मार डालते हैं। भाई का बदला लेने के लिए हिरण्यकशिपु घोर तप करके भगवान् से आशीर्वाद प्राप्त कर लेता है कि उसे कोई न मार सके। इस आशीर्वाद के बाद वह अपने को भगवान् समझने लगता है, किन्तु उसका पुत्र प्रह्लाद इसका विरोध करता है। वह भगवान् का भक्त हो जाता है। हिरण्यकशिपु अपने पुत्र को मारने के लिए अनेक उपाय करता है; जैसे पर्वत पर से गिराना, साँपों के मध्य प्रह्लाद को छोड़ना। पर किसी से भी उसकी मृत्यु नहीं होती। भगवान् उसकी रक्षा करते हैं।

अंत में जब हिरण्यकशिपु का अत्याचार अधिक बढ़ जाता है तब भगवान् विष्णु नृसिंह रूप धारण कर उसकी हत्या कर देते हैं। भक्त प्रह्लाद को सिंहासन दे अन्तर्धान हो जाते हैं।

भक्त प्रह्लाद (सन् १९४७, पृ० ५७), ले० : गोविन्ददास 'विनीत'; प्र० : गुप्ता ऐण्ड को, थोक पुस्तकालय दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ६, ६, ५।
घटना-स्थल : राजमहल।

यह पौराणिक नाटक भक्त प्रह्लाद की कथा पर आधारित है। भगवान् के भक्त प्रह्लाद को उसका पिता हिरण्यकशिपु अनेक कष्ट देता है जैसे आग में जलाना, पर्वत से गिराना, होलिका के साथ आग में जलाना आदि। किन्तु भगवान् की कृपा से भक्त प्रह्लाद का बाल भी बाँका नहीं होता और अन्त में स्वयं हिरण्यकशिपु को नृसिंह भगवान् के हाथों मरना पड़ता है।

भक्त मीरा (सन् १९४६,), ले० : गौरीशंकर मिश्र; प्र० : इंडियन प्रेस लिमिटेड इलाहाबाद; पात्र : पु० १२, स्त्री ७; अंक : ३; दृश्य : ३, ४, ३।
घटना-स्थल : मारवाड़ का गाँव, साँगा का महल, वृन्दावन।

मीरा का विवाह धूमधाम से राजा भोजराज के साथ होता है किन्तु उसे प्रसन्नता नहीं होती। वह बाल्यकाल से राधा-कृष्ण का खेल खेलती रही है। वह श्वसुर-गृह में भी साधु-संतों के साथ कीर्तन करती है। इधर भोजराज मीरा की स्वतंत्रता के कारण रुष्ट होकर उसके प्राण लेना चाहता है। ऐसी धारणा बनती जा रही है कि राजा ने उसे नदी में डुबाना चाहा तो नदी सूख गई

और भगवान् कृष्ण ने दर्शन दिये। मीरा का चमत्कार देखकर अन्त में सभी बैरी क्षमा याचना करते हैं। मीरा द्वारका जाती है तो ठगों से मुठभेड़ हो जाती है। पर भगवान् की कृपा से उसकी रक्षा हो जाती है। मीरा द्वारका के मन्दिर में पहुँचती है तो एकाएक बिजली तड़पती है उस समय मीरा में कृष्ण, कृष्ण में मीरा दिखाई देते हैं।

भक्त मोरध्वज (सन् १९६६, पृ० ६६), ले० प्रेम ब्रजवासी, प्र० राधावल्लभ शर्मा गौड़, गौड़ बुक डिपो, श्याम प्रेस, हाथरस, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल राजप्रासाद, वनभूमि।

राजा मोरध्वज की भक्ति-भावना और साधु-संतजनों की सेवा के प्रताप से डाकू अक्षमान का हृदय-परिवर्तन हो जाता है। धर्मराज की परीक्षा में राजा-रानी सफल होते हैं। वे पुत्र को स्वयं आरे से चीरकर अहिंसक सिंह को खिलाते हैं।

भक्त मोरध्वज (सन् १९६८, पृ० ८४), ले० वेणीराम त्रिपाठी, श्रीमाली, प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर बनारस, पात्र पु० १५, स्त्री ७, अंक ३, दृश्य ८, ६, ३।
घटना-स्थल राजप्रासाद, तपोभूमि।

भगवान् कृष्ण अपने अनन्य शिष्य एवं मित्र अर्जुन के साथ रूप परिवर्तन के द्वारा भक्त मोरध्वज की परीक्षा लेते हैं। भक्त परीक्षा में सफल होता है और भगवान् मोरध्वज की भक्ति की प्रशंसा करते हैं। कृष्ण मोरध्वज के पुत्र को जीवित कर देते हैं। अर्जुन का अज्ञान दूर होता है।

भक्त मोरध्वज (सन् १९६०, पृ० ६४), ले० मास्टर न्यादरसिंह 'बेचैन' देहलवी, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० १४, स्त्री ७, अंक ३, दृश्य ७, ५, ४।
घटना-स्थल राजमहल, तपोवन।

कृष्ण जी अर्जुन के अज्ञान और अहं को दूर करने के लिए भक्त मोरध्वज की कठिन परीक्षा लेते हैं। भक्त-शिरोमणि राजा अतिथि-सत्कार में अतिथियों की अभिलाषा-पूर्ति के लिए पुत्र का बलिदान करता है। अर्जुन पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ता है। भगवान् राजा को दर्शन देते हैं और उसको वरदान तथा पुत्र को जीवनदान देकर पुरस्कृत करते हैं।

भक्त सुधन्वा (सन् १९३०, पृ० ८६), ले० उमाशंकर चतुर्वेदी 'उमेश', प्र० सकीर्तन कार्यालय मेरठ, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ६, ४, ३।

भक्त सुधन्वा एक पौराणिक शिक्षाप्रद नाटक है। भक्त सुधन्वा कृष्ण के दर्शनों के प्यासे हैं। युधिष्ठिर के अश्वमेध के घोड़े की रक्षा करते हुए अर्जुन सुधन्वा के पिता हंसध्वज की राजधानी चाणक्यपुरी पहुँचते हैं। हंसध्वज के पुरोहित शंख और लिखित ने घोषणा की कि अमुक समय जो सभा में उपस्थित नहीं होगा उसे खौलते तेल के कड़ाहे में डाल दिया जायेगा। धर्मसंकट के कारण सुधन्वा उस समय सभा में उपस्थित नहीं हो सका। उसे खौलते तेल में छोड़ दिया गया पर उसका बाल भी बाँका नहीं होता। परीक्षा के लिए कड़ाह में एक नारियल डाला जाता जो फटकर दोनों पुरोहितों को लगता और वे मारे जाते हैं। सुधन्वा और अर्जुन में युद्ध होता है। कृष्ण अर्जुन के सारथी बनते हैं। सुधन्वा की लालसा पूर्ण होती है। कृष्ण के हाथों सुधन्वा मारा जाता है एवं उसका तेज कृष्ण में मिल जाता है।

भक्त सूरदास (सन् १९२३, पृ० १०६), ले० व प्र० जैरामदास, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ६, ७, ८।
घटना-स्थल महल, चिंतामणि वेश्या का मकान, नदीतट, मार्ग, घर का द्वार, वृन्दावन।

रम्भा का विवाह धनी व्यक्ति रामदास के पुत्र बिल्वमंगल से होता है, किन्तु थोड़े ही दिनों में बिल्वमंगल अपनी रम्भा को त्यागकर चिंतामणि नामक वेश्या के जाल में

फँस जाता है। रम्भा का श्वसुर यह दुखद समाचार सुनकर शोक से प्राण त्याग देता है। रम्भा भगवान् की उपासिका बन जाती है। बिल्वमंगल एक रात चिंतामणि के घर में द्वार बन्द होने से साँप को रस्सी समझकर उसके सहारे प्रवेश करता है। चिंतामणि इसे भगवान् की चेतावनी समझकर उसे सचेत करती है। वह आँखें फोड़कर अंधा हो जाता है। बिल्वमंगल को वैराग्य हो जाता है, और व्रज की यात्रा करता है। कृष्ण का साथ उसे मार्ग में मिलता है वह कृष्ण का हाथ पकड लेता है। भगवान् हाथ छुड़ाकर जाते हैं तो वह कहता है :—

हाथ छुड़ाके जात हो, निर्बल जान के मोहि
हृदय में से जाइयो, तो मैं कहूँगा तोहि।

इसी प्रकार चिन्तामणि भगवान् शंकर को अपना कलेजा प्रदान करती है। उसी समय बिल्व, जिनको पुनः आँखें मिल गई थी, चिंतामणि को माता कहकर सम्बोधन करते हैं। नाटक के अंत में शंकर, कृष्ण, राधिका विराजमान हैं, और चिंतामणि व बिल्वमंगल स्तुति करते हैं।

भक्त सूरदास अर्थात् बिल्वमंगल (वि० १९८०, पृ० १२५), ले० : पं० तुलसीदास शैदा; प्र० : रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर वर्मन प्रेस, आर० आर० वर्मन ऐण्ड कं०, अमर चितपुर रोड, कलकत्ता; *पात्र :* पु० ६, स्त्री ५; *अंक :* ३; *दृश्य :* ६, ६, ४।
घटना-स्थल : वेश्यागृह, तपोवन।

यह एक लोककथा परक नाटक है। इसमें यह दिखाया गया है कि किस प्रकार चिन्तामणि वेश्या संसारी मोहमाया को छोड़कर कृष्ण की अनुरागिनी बन जाती है। और उसका प्रेमी बिल्वमंगल अर्थात् सूरदास जीवन्मुक्ति के सर्वोच्च सिंहासन पर बैठ जाता है।

भक्त सूरदास बिल्वमंगल (सन् १९२०, पृ० १०६), ले० : मुहम्मदशाह आगा हश्र कश्मीरी; प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, थोक पुस्तकालय, खारी बावली, दिल्ली; *पात्र :* पु० ७, स्त्री ४; *अंक :* ३; *दृश्य :* ६, ६, ६।
घटना-स्थल : रामदास का महल, वेश्या की रंग स्थली तथा यमुना का तट।

बिल्वमंगल नगर-रईस ब्राह्मण रामदास का एकमात्र पुत्र है। वैभव-विलासी बिल्व नगर की प्रसिद्ध वारवनिता चिन्तामणि के अप्रतिम सौन्दर्य पर मुग्ध होकर धन, कुल-मर्यादा तथा यौवन न्यौछावर कर देता है। पिता पुत्र के कलंकित जीवन से दुखी होता है। वह पुत्र को सुमार्ग पर लाने के लिए परम सुन्दरी कुलीन नारीरत्न रम्भा से उसका विवाह कर देता है, किन्तु मद्य तथा वेश्यागमन के पंक में सना बिल्व रम्भा से दूर अपने पापमय जीवन में जीना ही श्रेयस्कर समझता है। दुखी रम्भा अस्वस्थ वृद्ध श्वसुर की सेवा करती हुई परित्यक्ता की स्थिति में जीवन बिताती है।

बिल्व पतन की पराकाष्ठा पर है। कामान्ध वासना का कीट बिल्व घोर वर्षा, भयानक तूफान अंधकारपूर्ण अर्ध रजनी में शव की लकड़ी का तख्ता समझ उफनती यमुना पार करता है। वह चिंतामणि के बन्द घर में सर्प को रस्सी समझ उसके सहारे ऊपर जाता है। चिन्तामणि उसके मोह का नग्न रूप दिखा उसे ज्ञान देती है और वे दोनों वैरागी हो जाते हैं। बिल्व सुई से नेत्र फोड़कर सूरदास हो जाता है। सूरदास कृष्ण-भक्ति में ख्याति-प्राप्त संत होता है और सूरसागर की रचना करता है।

अभिनय-पारसी थियेट्रिकल कंपनियों द्वारा अभिनीत है।

भगत पूरनमल (सन् १९५२, पृ० ६४), ले० : न्यादरसिंह 'बेचैन'; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; *पात्र :* पु० ६, स्त्री ६; *अंक :* ३; *दृश्य :* ८, ६, ३।
घटना-स्थल : स्यालकोट का राजमहल तथा पंजाब के गाँव।

यह धार्मिक नाटक है। स्यालकोट-नरेश सलेवान के अंतिम समय में उनकी बड़ी रानी इच्छरादे ने पूरन को जन्म दिया। ज्योतिषी पूरन को यशस्वी, विशिष्ट गुण-युक्त बालक

बताता है। वह राजा को उस बालक से १२ वर्ष अलग रहने का परामर्श देता है। पुत्र-स्नेह-विह्वल राजा पूरन को अवधि से पूर्व ही बुला लेता है। पूरन के दिव्य गुणों एवं यौवन-सुलभ आकर्षक व्यक्तित्व के सम्मुख राजा की छोटी रानी नूनादे आत्मसमर्पण कर देती है। पूरन माँ के अवांछित व्यवहार में सम्मिलित नहीं होता। अतः काम-पीड़िता नूनादे प्रतिशोध की अग्नि में उसे प्रज्ज्वलित करने का संकल्प करती है। वह त्रिया-चरित्र से राजा के सम्मुख पूरन पर बलात्कार का दोष मँढती है। राजा पुत्र का वध करके गाँव के एक कुएँ में डलवा देता है।

भ्रमणशील गुरु गोरखनाथ गाँव के उस कुएँ में से पूरन को निकाल जीवित कर देते हैं। वह उनका शिष्य बन जाता है। उसकी उत्कट भक्ति, योग में सिद्धि देख शिष्य-वर्ग ईर्ष्यालु हो जाता है और पूरन को सुन्दरी से भिक्षा लाने भेजता है। सुन्दरी गुरु गोरखनाथ से पूरन को वर रूप में माँगती है किन्तु पूरन की भक्ति से प्रभावित स्वयं ही गुरु-मंत्र लेने के लिए प्रस्तुत हो जाती है।

पूरन अपनी माता से भिक्षा माँगने जाता है। पुत्र-शोक विह्वला माता अन्धी हो जाती है। वह माता के नेत्रों में रोशनी देता है। नूनादे अपना अपराध स्वीकार करती है। पूरन क्षमा प्रदान करता है। माता नूनादे, मंत्री, भाई-बन्धु, प्रजा की इच्छा और गुरु की आज्ञा से वह रिक्त सिंहासन स्वीकार करता है।

भगतसिंह (सन् १९५२, पृ० ९९), ले० प्यादरसिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० ९, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ७, ८, ४।
घटना-स्थल जलियावाला बाग असेंबली भवन।

यह नाटक भारत-स्वतंत्रता-आंदोलन के आतंकवादी नेता भगतसिंह के बलिदान की गौरवगाथा का उज्ज्वल पक्ष प्रस्तुत करता है। देशभक्त पिता का पुत्र सशस्त्र क्रांति से भारतमाता का उद्धार देखता है और युवा पीढ़ी की तड़पन को देश-भर में अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध बिगुल बजाकर व्यक्त करता है।

वीर भगतसिंह जलियावाला बाग की ब्रिटिश नृशंसता का प्रतिशोध साण्डर्स की हत्या से लेता है और साम्राज्य के गुप्तचरों की आँखों में धूल झोंक कर उत्तर प्रदेश तथा बंगाल के क्रांतिकारियों से सम्पर्क स्थापित करता है। देश के समस्त भागों के युवक भगतसिंह के नेतृत्व में संगठित होते हैं। क्रांतिकारी अंग्रेजों के प्रत्येक शोषण और अन्याय प्रक्रिया का विरोध करते हैं। अंग्रेजों द्वारा प्रस्तुत पब्लिक सेफ्टी बिल के विरुद्ध जनमत जागृत करने के उद्देश्य से भगतसिंह असेम्बली भवन में बम फेंकता है और अपने आपको अंग्रेजों के हवाले करके उनकी न्यायपटुता के दम्भ का पर्दाफाश करता है। अंग्रेजी सरकार बर्बरतापूर्वक भारतमाता के इस पुजारी को लूट और कत्ल के झूठे अपराध में २३ मार्च १९३१ ई० को फाँसी पर चढ़ा देती है।

भगवती के भक्त (सन् १९६४, पृ० ११४), ले० डॉ० धनानाथ झा, प्र० विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, पात्र पु० १५, स्त्री ७, अंक ३, दृश्य ७।
घटना-स्थल पूजा स्थल, चौपटानन्द का आश्रम, कामाख्या का सिद्धपीठ, कालीमन्दिर, तांत्रिक का आश्रम, शिलाखण्ड, जलाशय, गोविन्ददास झा का घर।

प्रस्तुत नाटक में महाकवि गोविन्ददास के जीवन की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख है। जिस प्रकार महाकवि गोविन्ददास अपनी भक्ति के लिए प्रसिद्ध थे उसी तरह उनकी अपूर्व कवित्व शक्ति भी थी। नाटक में गोविन्ददास की भक्ति भावना पर प्रकाश पड़ता है। इसमें नाट्यकार धर्मद्रोही, वैष्णव नामधारी तथाकथित महन्तों की निन्दा करता है, जो सतत समाज की आँख में धूल झोंककर ऐश-आराम का जीवन व्यतीत करते हैं। ये मनुष्यों की हत्या निर्ममता-पूर्वक करते हैं। वस्तुतः ये लोग सामाजिक मर्यादा की हत्या करने में तनिक भी नहीं चूकते। यही कारण है कि धर्म के नाम पर ये लोग लाखों महिलाओं के सतीत्व को नष्ट

कर देते हैं।

अभिनय—घना साहित्य-सदन द्वारा अभिनीत।

भगवान् बुद्ध (सन् १९४७, पृ० ६४), ले० : सीताराम चतुर्वेदी; प्र० : अखिल भारतीय विक्रम परिषद् काशी; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ३, ४, ३।
घटना-स्थल : तपोवन, लुम्बिनीवन-संन्यासी-शिविर, एकान्तवन।

भगवान् बुद्ध के जीवन पर आधारित पद्यात्मक संगीत नाटक है। कथा का आरम्भ मायादेवी के स्वप्न से होता है। लुम्बिनीवन में गौतम के जन्म की सूचना मिलती है। बड़े होकर गौतम यशोधरा को वरण करते हैं। उद्यान में भ्रमण करते समय उन्हें देवदत्त के बाण से आहत पक्षी पर दया आ जाती है। वे उसे करुणा का दान देते हैं। छन्दक के साथ रथ में बैठकर नगर-यात्रा करते हैं। वृद्ध, रोगी तथा मृतक को देखकर विराग जगता है। मुण्डित सिर संन्यासी को मार्ग में देखकर उन्हें भी संन्यास धारण करने की लगन लग जाती है। सोती हुई यशोधरा और पुत्र को छोड़कर चले जाते हैं। तपस्या करते हैं। मार, रति, अरति पर विजय प्राप्त करते हैं। सुजाता की खीर खाते हैं, तथा ज्ञान प्राप्त कर राज्य को लौट आते हैं। सभी को जीवन के सत्य ज्ञान का बोध कराते हुए यशोधरा तथा राहुल को भी अपने संघ में ले लेते हैं।

भगवान् बुद्ध (सन् १९५४, पृ० १३६), ले० : ओंकारनाथ दिनकर; प्र० : पायोनियर पब्लिशर्ज, दिल्ली; पात्र : पु० १६, स्त्री ७; अंक : ३; दृश्य : १८, ६, ७।
घटना-स्थल : कपिल वस्तु राजप्रासाद, उद्यान, तपभूमि।

इस ऐतिहासिक नाटक में सिद्धार्थ के जन्म से महाराजा की पुत्र-अभिलाषा की पूर्ति तो होती है किन्तु उनके चक्रवर्ती सम्राट् और महान् धर्मोपदेशक बनने की भविष्यवाणी राजा के लिए दुश्चिन्ता का विषय सिद्ध होती है। राजा राजकुमार के लिए सांसारिक सुख-सुविधा की सारी व्यवस्था बना देता है। वह परम सौन्दर्यमयी भगवती यशोधरा को उसकी सहधर्मिणी चुनता है तो भी राजकुमार वैराग्य-भाव से इस क्षणिक सुख को त्याग देता है। सिद्धार्थ भ्रमण के समय वृद्ध मृतक, रोगी और संन्यासी को देखकर संसार में दुःख का कारण खोजने के लिए अपने आपको समर्पित कर देते हैं। वह गृह-त्याग करके समाधि लगाते हैं। एक दिन बोध-वृक्ष की छाया में बुद्धत्व को प्राप्त करते हैं। नर-नारी उनके दर्शनार्थ उमड़ पड़ते हैं।

बुद्ध की अलौकिक प्रतिभा से संसार प्रभावित होता है। महाराज बिम्बसार बौद्ध-धर्म की दीक्षा लेते हैं। देवदत्त, रम्भा आदि अपने कुटिल व्यवहार पर लज्जा अनुभव कर पाप-प्रक्षालन करते हैं। वृद्ध कपिल-वस्तु भी पहुँचते हैं। सम्राट् परिवार-सहित उनका स्वागत करते हैं। राहुल भी धर्म की दीक्षा लेता है। अंत में बुद्ध यशोधरा के पास पहुँचकर भिक्षा-पात्र सामने कर देते हैं। यशोधरा और शुद्धोधन भी बौद्ध-धर्म स्वीकार कर लेते हैं।

भगवान् शंकराचार्य (सन् १९३४, पृ० १९६), ले० : मेलाराम त्रिपाठी; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० २०; स्त्री १२; अंक : ३; दृश्य : ११, ८, ५।

यह एक दार्शनिक नाटक है। शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद सिद्धांत की स्थापना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। आत्मा-परमात्मा, माया-ब्रह्म आदि की ऐसी व्याख्या शंकराचार्य करते हैं जिसे बौद्ध मतावलम्बी नहीं मानते। इसलिए वे शंकराचार्य की परीक्षा उन्हें विष पिलाकर, सर्प पकड़वाकर करते हैं, जिसमें शंकराचार्य सफल होते हैं। इस अलौकिक प्रभाव को देखकर बौद्ध-मतावलम्बी अपनी हार स्वीकार करते हैं तथा शंकराचार्य की ब्रह्म-व्याख्या को ही सर्वोपरि मान उन्हें प्रतिष्ठा देते हैं।

भग्न प्राचीर (सन् १९७२, पृ० ११२) ले० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : मानकचन्द, बुक डिपो,

उज्जैन, पात्र पु० १०, स्त्री २, अंक ३, दृश्य १४।
घटना-स्थल मेवाड, राजस्थान प्रदेश।

इस ऐतिहासिक नाटक में मेवाड केसरी महाराणा संग्रामसिंह के जीवन-वृत्त द्वारा राजपूती गौरव का सुन्दर चित्रण किया गया है। संग्रामसिंह अपने प्रबल पराक्रमी व्यक्तित्व से राजपूत सामन्तों का सुदृढ संगठन करता है। वह एक पराक्रमी राजपूत राज्य की स्थापना के लिए प्रयत्नशील है। उसकी महत्त्वाकाक्षा दिल्ली को अपने कब्जे मे लाने की है। वह मुगल-विजेता बाबर का बडी वीरता से सामना करता है। राणा संग्रामसिंह की मृत्यु सामन्तो द्वारा विषपान कराने से होती है।

भद्रायुरभ्युदयमु (सन् १८८५, पृ० ४४), ले० नादल्ले पुरुषोत्तम कवि, प्र० श्री नादल्ले मेधा दक्षिणमूर्ति शास्त्री मछली पट्टणम्, पात्र पु० ७, स्त्री ५, अंक-रहित, दृश्य २३।
घटना स्थल मछली पट्टणम् और आन्ध्र के अन्य नगर।

दशार्ण देश का राजा वज्रबाहु अपनी राजमहिषी सुमति से अधिक प्रेम करता है। इससे सुमति की सपत्नियाँ उससे जलती रहती हैं। सुमति के गर्भवती हो जाने से वे और ईर्ष्यालु हो जाती हैं, और उसको विष खिला देती हैं। उस विष प्रयोग से सुमति मरती तो नही पर उसका सारा शरीर व्रणभूयिष्ठ हो जाता है। उसके गर्भ से उत्पन्न शिशु की भी यही दशा हो जाती है। रोगग्रस्त और व्रणभूयिष्ठ माता और पुत्र को वन में छोड आने का राजा आदेश देते हैं। वहाँ वे दोनो अनेक कष्ट भोगते हैं। अत मे पद्माकर नामक वैश्य उनकी दुर्दशा पर तरस खाकर उन्हे अपने यहाँ ले जाता है और उनकी सेवा-शुश्रूषा का प्रबन्ध करता है। पर वह बालक बचता नही। उसी समय ऋषभ योगी वहाँ पधारते हैं और उस बालक को जीवित कर उसका भद्रायु नाम रखते हैं।

भद्रायु क्रमश बलशाली युवक बनता है और ऋषभ योगी की कृपा से सभी शास्त्रों मे पारगत हो जाता है। मगध-राजा के हाथों अपने पिता की पराजय की बात सुनकर युद्ध में भाग लेता हुआ शत्रुओं का नाश कर देता है। किन्तु, अपने पिता को अपना परिचय दिए बिना अपनी माता के पास लौट जाता है। माता को आश्वासन देता है कि अब आगे पिता को शत्रुओं के हाथों अपदस्थ नहीं होने दूँगा।

भयकर भूत (सन् १९२२, पृ० १३६), ले० आचार्य गोस्वामी 'बिन्दु जी' महाराज, प्र० ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सस वाराणसी, पात्र पु० २०, स्त्री ६, अंक ३; दृश्य ७, १०।
घटना-स्थल भारत भूमि।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमे प्यारा देश भारतवर्ष है जिसमे सत्ता, धर्म तथा प्रेम विदोष देवता हैं और अभिमान एक भयकर भूत है। अभिमान अपनी शक्ति से देश को नष्ट करना चाहता है। देश भी अपनी शक्ति दिखाने के लिए राजा उग्रसेन के पुत्र रूपसेन मे प्रेम का, शातिसेन की पुत्री रीता मे सत्य का और शातिसेन मे धर्म का प्रवेश करने को भेजता है। उधर अभिमान भी अपना प्रभाव उग्रसेन पर दिखाता है, पर शाति से अपनी पुत्री रीता की शादी रूपसेन के साथ करने को उग्रसेन के पास पत्र भेजता है तो उग्रसेन अभिमान मे आकर शातिसेन से लडाई करता है। शातिसेन की मदद एक इस्लामी देश का राजा आलम करता है फिर भी शातिसेन और आलम बन्दी बना लिये जाते हैं। अन्त मे उग्रसेन का मंत्री बुद्धिसेन इस अत्याचार को देखकर बडी फौज के साथ लडाई करके उग्रसेन को बन्दी बना लेता है। देश तथा उसके तीनो देवता उग्रसेन को इसका कारण बताते हैं, जिससे उग्रसेन प्रायश्चित करता है और अत मे रूपसेन की शादी रीता से हो जाती है और अभिमान भी देश की स्वतन्त्रता के सामने अपना सिर झुकाता है।

भयकर भूल अर्थात् कृष्ण अर्जुन युद्ध (सन् १९३४, पृ० ९६), ले० शाति प्रसाद

'घाल भट्ट'; प्र० : गिरधारी लाल थोक पुस्तकालय, देहली; पात्र : पु० २१, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य ७, ८, ४।
घटना-स्थल : गंगातट, युद्धभूमि, आश्रम।

यह एक पौराणिक नाटक है। ऋषि गालव गंगा में खड़े तप करते हुए सूर्य को अंजलि से अर्घ्य दे रहे थे। उसी समय इनका सेवक चित्रसेन गन्धर्व अपनी पत्नी त्रिमाली के साथ विमान के द्वारा गंगा-स्नान को आता है। स्नान के बाद वह विमान से उड़ जाता है। आकाश में त्रिमाली अपने पति को पान देती है। चित्रसेन मुंह का पान थूकता है। ऊपर से थूका हुआ पान नीचे गंगा में अर्घ्य देते हुए गालव ऋषि की अंजलि में आकर पड़ जाता है। तपस्या भंग होती है। ऋषि नाराज होता है। वह न्याय मांगने के लिए कृष्ण के पास जाता है। कृष्ण, ऋषि के क्रोध से डरकर गन्धर्व को दूसरे दिन संध्या से पहले ही मार डालने की प्रतिज्ञा करते हैं। यह सुन चित्रसेन गन्धर्व इन्द्र से रक्षा करने को कहता है पर वह भी उसकी रक्षा करने में असमर्थ हो जाते हैं। रास्ते में नारद मिलते हैं। वे उसकी रक्षा का भार लेते हैं। तथा अर्जुन को कृष्ण से लड़ने के लिये तैयार करते हैं। पहले तो अर्जुन चित्रसेन की रक्षा नहीं करता किन्तु, जब सुभद्रा रक्षा की प्रतिज्ञा करती है तब उसके कहने से वे कृष्ण से लड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। और शरणागत की रक्षा करना अपना धर्म समझते हैं।

जब रणक्षेत्र में कृष्ण और अर्जुन का युद्ध होने लगता है तब शंकर अर्जुन की मदद करते हैं, किन्तु, नारद ब्रह्मा के पास जाकर इस घोर संहार को समाप्त करने के लिए आग्रह करते हैं। ब्रह्मा गालव ऋषि को समझाते हैं कि आपके द्वारा ही पृथ्वी को इस महा संहार से रक्षा हो सकती है। गालव ऋषि पृथ्वी के कल्याण की बात सोच चित्रसेन गन्धर्व को क्षमा कर देते हैं और युद्ध समाप्त हो जाता है।

भयानक भूत (सन् १६२४, पृ० ८७), ले० : रामशरण आत्मानन्द प्रभाकर अमरोही; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी-बनारस; पात्र : पु० १७, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ७, ६, ३७।
घटना-स्थल : कश्मीर राजप्रासाद, जंगल।

कश्मीर-नरेश उग्रसेन बड़ा ही धन-लोलुप एवं अहंकारी राजा है। उसका पुत्र रूपसेन मृगया से परिश्रान्त विश्राम के लिए अपने मित्र कविराज के साथ राजा शांतिदेव के बगीचे में जाता है। बगीचे में विचरण करती राजकुमारी रूपमती और उसकी सखियों पर दस्युदल आक्रमण कर देता है। रूपसेन राजकुमारी की रक्षा करता है। राजा शान्तिदेव राजकुमारी की इच्छा से उग्रसेन के पास राजकुमार और रूपमती के विवाह का सन्देश भेजता है जिसे उग्रसेन अस्वीकार कर देता है। दम्भी उग्रसेन शान्तिदेव पर आक्रमण की घोषणा करता है और डाकुओं के सरदार सत्तार को भी प्रलोभन देकर मिला लेता है। न्याय-प्रिय मंत्री राजा को बहुत समझाता है पर वह नहीं मानता है। अन्त में मंत्री सत्य और धर्म के रक्षार्थ शान्तिदेव की सहायता का निर्णय लेता है और रूपसेन को भी उसकी सहायता के लिए प्रेरित करता है।

उग्रसेन सत्तार की सहायता से शांतिदेव और उसकी रानी को बन्दी बनाता है। मृगया के लिए आये शाह आलम-शांतिदेव और उसकी रानी की रक्षा करना चाहते है किन्तु सत्तार की कूटनीति से हार जाते हैं। युद्धसेन मन्त्री उनकी रक्षा करता है। वह अर्थ-लोलुप, अहंकारी और अत्याचारी उग्रसेन को पदच्युत कर रूपसेन को राजा बनाता है। शांतिदेव को भी मुक्त कर उसका राज्य वापस करता है। रूपसेन और रूपमती का विवाह हो जाता है।

भरत मिलाप (सन् १६५०, पृ० ६७), ले० : न्यादरसिंह 'बेचैन'; प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, थोक पुस्तकालय, देहली, ६; पात्र : पु० १०, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ७, ५, ६।
घटना-स्थल : चित्रकूट।

यह धार्मिक नाटक है। रामायण के चिर-परिचित कथानक के आधार पर लिखा गया है। राम वनवास के समय भरत चित्रकूट में उनसे मिलते हैं तथा अयोध्या लौटने का

आग्रह करते हैं पर राम ऐसा नहीं करते। राम और भरत के प्रेम-मिलन को इसमें उसी सहृदयता से दिखाया गया है जैसे मानस में मिलता है।

भरथरी चरित्र (सन् १९३९, पृ० ४५), ले० सूर्यबली प्रसाद 'शाह', प्र० दूधनाथ पुस्तकालय प्रेस, ६३, जमुना लाल बजाज स्ट्रीट, कलकत्ता, पात्र पु० ७, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल राजमहल, जंगल, आश्रम।

राजा भरथरी प्रजावत्सल, प्रेमी, दयालु और भोगी राजा अपनी पत्नी को बहुत प्यार करते हैं। एक दिन शिकार में उन्होंने एक हिरन को मारा। हिरनी राजा को शाप देती है जैसे मैं अपने हिरन के वियोग में तड़प रही हूँ वैसे ही तुम्हारे योगी बन जाने पर तुम्हारी रानी वियुक्त हो तड़पेगी। राजा पर प्रसन्न हो एक शिव-भक्त ब्राह्मण उन्हें अमृत फल खाने को देता है। राजा उस फल को स्वयं न खाकर अपनी प्रियतमा रानी को देता है। रानी उसे रख देती है। गोरखनाथ भरथरी के यहाँ आते हैं और राजा को योगी बनने की शिक्षा देते हैं। राजा योग से भोग को श्रेष्ठ मान उनकी माँग अस्वीकार कर देता है। गोरखनाथ रानी से अमृत फल लेकर अपने प्रेमपाश में बाँध उसकी पीठ पर कोड़े की मार का निशान कर देते हैं। वह राजा के दरबार में उपस्थित हो राजा को योग स्वीकार करने को कहते हैं। राजा के मना करने पर गोरखनाथ मिथ्या स्त्री-प्रेम तथा भोग की निस्सारता का प्रमाण अमृतफल और रानी की पीठ पर चाबुक का चिन्ह दिखाते हैं। राजा राज्य त्याग कर योगी बन जाते हैं। वह सर्वप्रथम रानी से भिक्षा *माँगकर उसे माँ सम्बोधित करते हैं* और योग तथा ज्ञान के प्रचारक बन जाते हैं।

भविष्यवाणी (सन् १९५७), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० भारती साहित्य मंदिर दिल्ली, पात्र पु० १०, स्त्री २, अंक ३, दृश्य १, ५, १।
घटना-स्थल चाँदनी चौक में तिमंजला मकान, कमरे आँगन, कर्जन रोड पर भव्य भवन।

हास्य-रस प्रधान इस नाटक में उन पुराने रूढ़िवादी मूर्खों का मजाक उड़ाया गया है जो ज्योतिष की भविष्यवाणियों, हस्त-रेखा-विज्ञान, सामुद्रिक, रमल या जन्मपत्रियों में विश्वास करते हैं। ज्योतिषी सच्ची-झूठी बात कह देते हैं, विवेकहीन उन्हीं पर विश्वास कर लेते हैं। दुःख तो यह है कि अनेक समझदार और पढ़े-लिखे व्यक्ति अपना भविष्य जानने के लिए रुपया व्यय नष्ट करते हैं और बुरी तरह ठगे जाते हैं।

इस नाटक का प्रमुख पात्र एक ज्योतिषी है जिसका नाम है, महर्षि भृगुकुलावतन्स, ज्योतिष-ज्योति, सामुद्रिकाचार्य, रमल-मार्त्तण्ड महापंडित श्री १००८ भविष्यानंद जी महाराज। पण्डित शालिग्राम भविष्यानन्द के गिरोह में है, जो भविष्य पूछने वालों के हाल का पता लाते हैं और आगे की बात झूठ-झूठ बताकर लोगों को मूर्ख बनाते हैं। नाटक में पाँच वर्गों के प्रतिनिधियों की मुखताएँ चित्रित की गयी हैं। ठाकुर उमरावसिंह एक जमींदार है, रायसाहब सेठ लक्ष्मीचन्द एक मारवाड़ी व्यापारी है, सरस्वतीचन्द्र एक गुजराती साहित्यिक हैं, आर० एन० मजूमदार एक विज्ञान का विद्यार्थी और सिख सरदार तिलोकसिंह है, जो एक ठेकेदार और राज्य सभा का सदस्य है।

ज्योतिषी जी सभी प्रश्नकर्त्ताओं को भिन्न-भिन्न बातें बतलाते हैं। सरस्वतीचन्द्र को उसकी भविष्यवाणी के अनुसार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से पुरस्कार अवश्य मिलता है, पर शेष सबको बताई हुई बातें झूठ साबित होती हैं। ठाकुर उमरावसिंह अपने पुत्र की कुण्डली मिलवाने आये हैं। तीन जन्मपत्रियों *में से जिस कन्या से कुण्डली मिलती है,* वह काली-कलूटी बदशक्ल निकलती है और विवाह होते-होते गड़बड़ी हो जाती है। सेठ लक्ष्मीचन्द को रूई और चाँदी खरीदने की सलाह दी जाती है पर इस व्यापार में सेठ को बहुत बड़ा घाटा पड़ता है। मजूमदार को बताया जाता है कि वह बी० एस-सी० में तमाम युनिवर्सिटी में प्रथम आयेगा, पर वह

फेल होता है। सरदार बहादुर तिरलोकसिंह अपने मरने की आयु पूछता है, पर वह भी झूठ-मूठ बता दी जाती है। तीसरे अंक में ये सब असंतुष्ट व्यक्ति भविष्यानन्द से बदला लेने मार-पीट करने को दलबल सहित आते हैं, पर तब तक ज्योतिषी भी रफूचक्कर हो जाते है। इन सबको खूब धोखा लगता है। लक्ष्मीचन्द व्यापार में बिगड़ जाते है और सरदार तिरलोकसिंह अपनी सारी जायदाद बाँट देते है और भिखारी-से बन जाते है। किराये के उस मकान में, जहाँ ज्योतिषी जी रहते थे, खूब हल्ला होता है। एक बम फट जाता है और किवाड़ों को आग भी लगाई जाती है। बम की आवाज के कारण एक सब-इन्स्पेक्टर पुलिस कई जवानों सहित घटनास्थल पर पहुँच जाता है और उन्हें देखते ही भीड़ तितर-बितर हो जाती है।

इस प्रहसन में अन्धविश्वास के कारण धोखा खाने वाले उन व्यक्तियों का खाका खींचा गया है, जो ज्योतिष, सामुद्रिक या रमल इत्यादि में विश्वास करते हैं। अनपढ़ स्त्रियाँ तो इन भविष्यवक्ताओं का शिकार बनती ही है, पढ़े-लिखे सभ्य व्यक्ति, व्यापारी, ठेकेदार, विद्यार्थी और नेता इत्यादि भी इनके चंगुल में फँस जाते हैं।

भर्तृहरि निर्वेद (वि० १९९९, पृ० ४१), लेo : धनेश मिश्र; प्र० : कुमार छत्रपति सिंह, कालाकांकर; पात्र : पु० ४, स्त्री २; अंक : ५; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : राजप्रासाद, वन।

इस नाटक में राजा भर्तृहरि की कथा है। राजा रानी में बहुत प्रेम है। राजा शिकार खेलने जाते हैं, और रानी के पास झूठी खबर भिजवा देते हैं कि उन्हें बाघ खा गया। यह धक्का असह्य होने से रानी मर जाती है। राजा वियोग में पागल हो उठते हैं। बाबा गोरखनाथ उन्हें दार्शनिक ढंग से वियोग से मुक्ति दिलाते हैं और राजा योगी होकर राजपाट त्याग देते है।

भर्तृहरि राजत्याग नाटक (सन् १८९८, पृ० २८), लेo : कृष्णचन्द्रदेव वर्मा; प्र० : भारतजीवन प्रेस, बनारस पात्र : पु० ३, स्त्री २; अंक: ३; दृश्य : ८, ६, ६।
घटना-स्थल : राजमहल, जंगल, आमथ।

यह पौराणिक नाटक है इसमें राजा भर्तृहरि के राज्य त्याग की कथा नाटकीय ढंग से बहुत विस्तार के साथ कही गई है।

भाई-भाई (सन् १९१७, पृ० ७९), लेo : चन्द्रकिशोर जैन; प्र० : ठाकुर प्रसाद ऐण्ड संस, बुकसेलर, वाराणसी; पात्र : पु० ११, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ८, ८, ३।
घटना-स्थल : युद्धक्षेत्र, मराठा, दरबार, अंग्रेज शिविर।

यह एक शिक्षाप्रद ऐतिहासिक नाटक है। हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई है यही इस से शिक्षा मिलती है। इसमें अलीवर्दी अफगान मुस्तफा खाँ मरहठों पर आक्रमण करके उनकी धज्जियाँ उड़ाता है। शाहजादे सिराज मरहठों की रक्षा और अफगानियों को बर्बाद करता है। पेशवा के प्रतिनिधि भास्कर राव बंगाली मुसलमानों का सफाया करना चाहते हैं लेकिन एक हिन्दू-कन्या माधुरी अपनी तीव्र बुद्धि से भास्कर राव से मुसलमानों को बचा लेती है। अन्त में सिराज शाहजादा हिन्दू-मुस्लिम को गले मिलाता है और भास्कर राव, तानाजी तथा मुस्तफा खाँ के अन्दर भ्रातृत्व भाव पैदा करता है। सभी विद्रोही अपनी भूल के लिए पश्चात्ताप करते है। अन्त में सभी एक होकर अंग्रेजों के ऊपर हमला करते हैं। इस प्रकार अंग्रेजों के शिकंजे से अपने प्यारे देश भारत को स्वतंत्र करते हैं।

भाई-भाई (सन् १९६६, पृ० ९३), लेo : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : मानसानन्द बुक डिपो, राती दरवाजा, उज्जैन; पात्र : पु० ४, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : राजप्रासाद, युद्धक्षेत्र।

मेवाड़ की कनिष्ठ राजमाता सूर्यकुमारी का पुत्र मोकल मेवाड़ का मनोनीत महाराणा है। सूर्यकुमारी का पिता रणमल अपने कुचक्रों से राजमहिषि के बड़े पुत्र चूड़ाजी को महल से निकाल देता है और छोटे पुत्र रघुजी की हत्या करवा देता है। मोकल की धाय माँ पन्नी अपनी चतुरता से मोकल की रक्षा

करती है। दूसरी ओर चूडाजी मालव के सुलतान और मेवाड के भील सरदार की सहायता से रणमल के षड्यन्त्रों को विफल बनाकर मुकुल की रक्षा करते हैं। रणमल मरते समय अपने पापों को स्वीकार कर लेता है। अत मे सरदार ऊजला जी मोकल के मस्तक पर राजमुकुट रखते हैं और अपने अंगूठे के रक्त से उसका तिलक करते हैं।

भाई-विरोध या भाभी विलाप (सन् १६३७, पृ० २२), ले० भिखारी ठाकुर प्र० दूधनाथ पुस्तकालय ऐण्ड सस, कलकत्ता, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अक-दृश्य-रहित। घटना-स्थल गाँव की झोपडी।

इस सामाजिक नाटक मे पारिवारिक प्रेम और विरोध का मिश्रण है।

इसमे उपकारी, उपदर और उजागर तीन भाई हैं। विवाह से पूर्व तीनो भाई बडे प्रेम से एक घर म रहते है किन्तु उपदर का विवाह हो जाने पर उसकी पत्नी सबसे अलग होने का आग्रह करती है। उसके कथन का प्रभाव पति पर इतना पडता है कि वह अपने बडे भाई उपकारी से अलग हो जाता है। उपदर की पत्नी अपने पति को उजागर की हत्या करने की प्रेरणा देती है और वह पत्नी की बात मानकर भाई की हत्या कर देता है।

उपदर की पत्नी सुन्दर वस्त्र और बहुमूल्य आभूषण के लिए पति को चोरी के लिए प्रेरित करती है। चोरी करने पर उपदर पकडा जाता है। उपदर की भाभी उपकारी की पत्नी अपने देवर के बन्दी होने पर बहुत दुखी होती है और पति को देवर के मुक्त कराने की प्रेरणा देती है। भाभी का विलाप इस नाटक का सबसे आकर्षक प्रसग है। जिस भाभी के साथ देवर ने दुर्व्यवहार किया था वही अन्त मे रक्षक सिद्ध होती है।

अभिनय-विदेसिया शैली मे शताधिक गाँवो मे अभिनीत।

भाग्य चक्र (सन् १६४०, पृ० १२७), ले० सुदर्शन, प्र० मोतीलाल बनारसीदास, सैदद मिट्ठा बाजार, लाहौर, पात्र पु० १०, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ६, ११, ८।
घटना स्थल सडक, गगा का किनारा, नाटक कम्पनी।

यह एक सामाजिक नाटक है। पजाब के प्रसिद्ध लखपति हीरालाल अब एक गरीब किरायेदार हैं जिनके ऊपर नालिश करके मकान मालिक मकान खाली करा लेता है। हीरालाल का भाई शामलाल इस कारण रुष्ट है कि वसीयतनामे मे उन्होने सारी सम्पत्ति अपने बेटे के नाम कर ली और भाई को कुछ नही दिया। नगर का बदमाश शकर उसे समझाता है कि आजकल धर्मात्माओ को पूछता ही कौन है। अत तुम भाई से बदला निकालो। शामलाल की पत्नी अपने पति का शकर दास नामक बदमाश से दूर रहने की प्रार्थना करती है, किन्तु वह उसी गुडे से मिलकर अपने भतीजे दलीप का अपहरण करवा देता है। उसकी पत्नी उसे बहुत कोसती है। बीस साल के बाद काशी से ५-६ मील की दूरी पर दलीप घायल पडा मिलता है। उसकी स्मरण शक्ति समाप्तप्राय हो जाती है। बीस साल तक वह एक भिखारी सूरदास के यहाँ पलता रहता है। उसका प्रेम इस अवधि मे रूपकुमारी नामक शिक्षिता युवती स हो जाता है। जब दलीप लाहौर लौटता है तो उसकी स्मृति और भी बिगड जाती है। सूरदास सपना देखता है कि उसका दलीप लौटकर आ गया है। इधर शामलाल-हीरालाल, दलीप, डाक्टर आदि काशी मे सूरदास के घर जाने वाले हैं। पुराना किरायेदार दुर्गादास साधु-वेश म आशीर्वाद देता है। शामलाल उसे धन देना चाहता है पर वह स्वीकार नही करता। उसके आशीर्वाद से दलीप का मस्तिष्क ठीक होने लगता है। कालीदास नाटक कम्पनी का विज्ञापन बँटता है कि काशी का सूरदास लाहौर आ रहा है। अत काशी बिना गए ही कार्य-सिद्धि हो जाती है।

भादो की एक रात (सन् १६६३, पृ० ३२), ले० मनोहर प्रभाकर, प्र० कल्याणमल ऐण्ड सस, जयपुर, पात्र पु० ८, स्त्री ३, अक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल कस का बदीगृह।

'भादो की एक रात' एक लघु सगीत-रूपक है, जिसमे कृष्ण जन्म की चिर-प्रचलित पौराणिक कथा वर्णित है।

भायप (वि० २०१५, पृ० ११६), ले० : गुप्तवन्धु; प्र० : सर्वसुलभ साहित्य सदन, अश्वत्थामापुर, फतेहपुर; *पात्र* : पु० १२, स्त्री ६; *अंक* : ३; *दृश्य* : ५, ४, २।
घटना-स्थल : मार्ग, कोपभवन, सौधद्वार, कौशल्या भवन, गंगातट, पर्ण कुटी।

भ्रातृ-प्रेम की महिमा के लिए राम के जीवन की कथा ग्रहण की गई है। राम के राज्याभिषेक में कैकयी के द्वारा विघ्न उपस्थित होता है। राम-लक्ष्मण और सीता वन को प्रस्थान करते हैं।

द्वितीय अंक में भरत-शत्रुघ्न ननिहाल से लौटते हैं। राजतिलक के लिए आग्रह करने पर भरत राम के पास चित्रकूट पहुँचते हैं। तृतीयांक में लक्ष्मण भरत पर रोष प्रकट करते हैं। पर राम उनको समझाते हैं। राम भरत का मिलन होता है। चित्रकूट में अयोध्यावासी और भरत राम से लौटने का अनुरोध करते हैं। पर राम सबको भली प्रकार समझा देते हैं। राम की अनुपस्थिति में राजकाज चलाने को भरत सहमत हो जाते हैं। राम के वन में रहने पर वनवासी उल्लास का प्रदर्शन करते हैं।

भारत-आरत (सन् १८८२, पृ० २४), ले० : खड्ग बहादुरमल्ल; प्र० : खड्ग विलास, प्रेस, पटना *पात्र* : पु० ५, स्त्री; *अंक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : विद्यालय, कोतवाली।

इसके प्रमुख पात्र विद्यार्थी हैं जो तत्कालीन अँग्रेजी राज्य की तीव्र आलोचना करते हैं। एक छात्र जब अँग्रेजी राज्य के कर्मचारियों की आलोचना करता है और अपने देश की दुर्दशा का कारण अँग्रेजी राज्य को घोषित करता है तो उसे राज-विद्रोह के अपराध में कोतवाल बंदी बना लेता है। विद्यार्थी अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिए अँग्रेज अफसर से कहता है कि राजा का धर्म है कि वह प्रजा की कष्ट-कहानी को सुनकर उसका निवारण करे। हम विद्रोही नहीं राजभक्त हैं। हमारे दुःख निवारण करने के स्थान पर आप हमें बन्दी बना रहे हैं। क्या यही राजधर्म है?

भारत का आधुनिक समाज (वि० १९८३, पृ० ७२), ले० , तैजनाथ चावल वाला; प्र० : कुंजीलाल गुप्त, नयागंज, कानपुर; *पात्र* : पु० १८, स्त्री४; *अंक* : ३; *दृश्य* : ८, ८, ८।
घटना-स्थल : गाँव, नगर।

प्रस्तुत नाटक में दिखाया गया है कि तत्कालीन भारत के सभी समाज किस प्रकार विशृंखल हो रहे हैं तथा वे अपने किये कुकर्मों को किस प्रकार छिपाकर निर्दोष बनना चाहते हैं। नाटक का मुख्य नायक आदर्श पात्र है। इसके द्वारा समाज के पुरुषों और कुमार्गियों को सदाचार का मार्ग दिखाया गया है।

भारत-उद्धार अर्थात् धर्म-विजय (सन् १९२२, पृ० १२७), ले० : लाला किशनचन्द 'जेबा', प्र० : ज्योति प्रसाद गुप्त, नई सड़क, दिल्ली; *पात्र* : पु० १६, स्त्री ७; *अंक* : ३; *दृश्य* : १८।
घटना-स्थल : दरबार, आश्रम।

इस नाटक में भक्त प्रह्लाद तथा हिरण्यकशिपु की पौराणिक कथा है। पाप का परिणाम नैराश्य और सत्यानाश है। लोहे के गर्म दहकते हुए स्तम्भ को पकड़ने के लिए प्रह्लाद को हुक्म दिया जाता है। वह सत्य मार्ग में एक ही पग उठाता है कि स्तम्भ फट जाता है और परमात्मा नृसिंह रूप में हिरण्यकशिपु का अन्त कर देते हैं। इस प्रकार पाप का नाश और धर्म की जय होती है।

भारत-गौरव (सन् १९२२, पृ० २०२), ले० : जिनेश्वर प्रसाद, 'मायल'; प्र० : भारतीय पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता; *पात्र* : पु० १६, स्त्री ७; *अंक* : ३; *दृश्य* : ७, ४, ८।
घटना-स्थल : झेलम नदी का किनारा।

यह ऐतिहासिक नाटक है। इसमें विश्व-प्रसिद्ध सिकन्दर और भारत के सम्राट् चन्द्रगुप्त की कथा है। सिकन्दर अपनी सेना के साथ अपने देश वापस लौटना चाहता है, उसी समय उसकी सेना में सैन्य-यात्रा सीख रहा एक भारतीय सिपाही चन्द्रगुप्त सिकन्दर के समक्ष जासूसी के आरोप में उपस्थित किया जाता है। कारण पूछने पर वह प्रकट करता

है कि वह जासूसी न कर यूनानी सैन्य विधियाँ ताडपत्र पर अंकित कर रहा था ताकि वह अपने पिता पर अत्याचार करने वाले राजा धननन्द से बदला ले सके। आगे चलकर धननन्द के भोज में अपमानित होकर चाणक्य उसके विनाश की शपथ लेता है और चन्द्रगुप्त की सहायता से धननन्द पर विजय प्राप्त कर उसे बन्दी बना लेता है। इस प्रकार चन्द्रगुप्त और चाणक्य दोनों की प्रतिज्ञा पूरी होती है। इसके बाद सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त सैल्यूकस भारत पर हमला करता है परन्तु उसकी हार होती है। सैल्यूकस बन्दी बनाया जाता है। चन्द्रगुप्त उसे बिना किसी दण्ड के स्वतन्त्र कर देता है और सैल्यूकस की बेटी हेलेन से विवाह कर लेता है।

भारत छोडो (सन् १९४७, पृ० ६५), ले० राधाकृष्ण, प्र० भोलानाथ 'विमल', पुस्तक जगत, पटना, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल सडक, वन, सभा।

यह एक राजनीतिक नाटक है। जैसा कि नाम से ज्ञात है, ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध देशवासियों के 'भारत छोडो' आन्दोलन का नाटकीय रूप है।

भारत जननी (सन् १८८७, पृ० १२), ले० भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्र० खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर, पात्र पु० ४, स्त्री १, अंक-दृश्य रहित।
घटना-स्थल बडा भारी खडहर।

बंग भाषा की 'भारत माता' नाटिका के अनुसार भारतेन्दु बाबू ने इस लघु नाटक में तत्कालीन भारत की दुर्दशा का चित्रण किया है। टूटे देवालय में मलिन वसना भारत जननी निद्रित दशा में बैठी है एवं पास ही भारत सपूत सो रहे हैं। सवप्रथम भारत-सरस्वती भारत-जननी को सम्बोधित करती हुई गाती है जिसमें वह प्राचीन भारतीयों के ज्ञान एवं विद्या की सर्वोच्च स्थिति का बखान करते हुए पूछती है "कहो क्यों बुद्धि गुन ज्ञान नसाई" एवं यह भी बता देती है कि यवन मुझे ले जा रहे हैं—पुनर्मिलन असंभव है। तत्पश्चात् भारत-दुर्गा का प्रवेश होता है जो प्राचीन शौर्य का स्मरण कराती है एवं पूछती है कि इस प्राचीन वीर भूमि की वीरता कहाँ चली गयी। प्रस्थान करते हुए वह कहती है कि अब मैं परदेश गमन कर रही हूँ, अब मिलन असंभव है। इसके बाद भारत-लक्ष्मी का प्रवेश होता है—वह कहती है कि अब चूंकि भारत संतान उद्यम नहीं करती अतः मैं जलधि के पार जा रही हूँ। यह सुनकर भारत जननी की आँखें खुलती हैं। पश्चात्ताप करते हुए वह अपनी संतानों को जगाती है। सभी पुत्र जो अकमण्य एवं आलसी हो चुके हैं, उद्यम करने में असमर्थता दिखाते हैं। तभी धैर्य का प्रवेश होता है जो भारत जननी को धैर्य धारण करने की प्रार्थना करता है। भारत-जननी परम-पिता से अपनी संतान के लिए वैभव एवं कला-कौशल के वर प्रदान की प्रार्थना करती है।

भारत डिम डिम (सन् १९११, पृ० ८०), ले० जगत नारायण, प्र० गोरक्षा पुस्तकालय, दशाश्वमेध, बनारस, पात्र पु० २५, स्त्री ३; अंक ४, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल ग्राम।

नाटक में गौ की सेवा ही प्रधान विषय है। गौ का स्थान सर्वश्रेष्ठ है, यह बताया गया है। कलियुग में गौ की हत्या के विरुद्ध कदम उठाने और गौ-रक्षा धर्म पालन का उपदेश दिया गया है।

भारत-दर्पण या कौमी तलवार (सन् १९२२, पृ० १५८), ले० लाला कृष्ण चन्द्र, 'जेबा', प्र० लाजपतराय पृथ्वीराज साहनी, पुस्तक विक्रेता, लोहारी दरवाजा, लाहौर, पात्र पु० १४, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ६, ७, ४।
घटना-स्थल भारत।

नाटक का उद्देश्य सोये हुए भारतीयों में पुनर्जीवन का संदेश देना है, जिसमें ये भारतीय परतंत्रता की बेडियों को काट स्वतंत्रता की ओर अग्रसर हो सकें। नाटक के पात्रों में

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय और महात्मा गांधी का नाम प्रमुख है। महात्मा गांधी भारतीयों को विदेशी सरकार से असहयोग व सत्याग्रह जैसे आत्मिक शस्त्र देते हैं। उन्हीं का महत्व नाटक में दर्शाया गया है।

भारत दशा (सन् १९१९, पृ० ८०), ले० : 'दास'; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ७, ७, ५।
घटना-स्थल : गांव, विवाह, मंडप।

इस सामाजिक नाटक में आज के समाज का चित्र देखने को मिलता है। उसमें विश्वनाथ दहेज-प्रथा तथा अपने भाई रघुनाथ सिंह के जुल्मों से दब जाता है। रघुनाथ सिंह सेठ-गंगा प्रसाद की सहायता से विश्वनाथ का हक छीन लेता है तथा रूपवती का विवाह गंगा प्रसाद के साथ कराना चाहता है। रूपवती एक सुदृढ़, गुणवती युवती है जो प्रेमदास की मदद से गंगा प्रसाद को अच्छे रास्ते का ज्ञान कराती है। दयानन्द एक दयावान् व्यक्ति है जो विश्वनाथ की हर दुःख-सुख में सहायता करता है। रहीम खां जाति का मुसलमान होते हुए भी अपने मालिक विश्वनाथ के प्रति अपने प्राणों की बाजी लगाकर हिन्दू-मुस्लिम की एकता का अच्छा परिचय देता है। अन्त में रघुनाथ सिंह अपने किए हुए पापों का प्रायश्चित्त करता है। युवती कन्या की दयानन्द के पुत्र प्रेमनाथ के साथ शादी हो जाती है।

भारत दुर्दशा (सन् १९२१, पृ० ४२), ले० : प्रताप नारायण मिश्र; पात्र : पु० ३, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ४।
घटना-स्थल : शयनकक्ष, युद्धक्षेत्र।

इस नाटक में प्रतीक शैली द्वारा परतंत्र भारत की समस्याओं का चित्रण किया गया है। नाटक का नायक भारत स्वप्न में देश पर कलियुग का आतंक देखता है। पत्नी विद्या उसे जगाती है। भारत कलियुग के भयानक आक्रमण का प्रतिरोध करता है। राष्ट्रीय युवा वर्ग विद्या का तिरस्कार करता है और आलस्य की विशेषता सुन उसके प्रति आकर्षित होता है। भारत युद्ध में प्रबल आघात पाकर मूर्छितावस्था में निश्चेष्ट पड़ जाता है। प्रजा के समस्त वर्गों के प्रतिनिधि उसे चैतन्य करने का उपाय करते हैं। वहां भी वर्गीय मत-विरोध तीव्रता से प्रकट होता है। आर्थिक कठिनाई के कारण भिन्न-भिन्न समुदाय भिन्न-भिन्न उपाय सुझाते हैं। किन्तु संकीर्ण प्रवृत्ति, पारस्परिक कलह और विरोध का रूप धारण कर लेती है। कलियुग उसी समय आक्रमण कर ईसाई, मुसलमान और बंगाली को बन्दी बनाता है। शेष बच निकलते हैं। पारस्परिक फूट का ताण्डव दुर्दशा में परिणत हो जाता है।

भारत दुर्दशा (सन् १८८१, पृ० ४८), ले० : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; प्र० : पुरुषोत्तमदास मोदी एम० ए०, मोतीलाल मोदी एण्ड संस गोरखपुर; पात्र : पु० ७, स्त्री ३; अंक : ६; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : भग्न मन्दिर, सुसज्जित कक्ष, तपोवन का प्रान्त।

इस नाटक में प्राचीन भारतीय गौरव एवं पराधीन भारत की दुर्दशा का प्रतीक शैली में चित्रण किया गया है। एक योगी भारत की प्राचीन महती परम्परा का स्मरण कर वर्तमान दुर्दशा के प्रति क्षोभ प्रकट करता है। सुनसान भग्न मन्दिर में कुत्ते, कौवे, और स्यारों के साम्राज्य में भारत प्रवेश करके डूबती नाव की रक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हुआ मूर्छित हो जाता है। उसे आशा उठाकर ले जाती है।

भारत दुर्दैव अपना राक्षसी गीत गाते हुए सत्यानाशी फौजदार को भारत राष्ट्र पर आक्रमण का आदेश देता है। फौजदार भारतीय समाज में कुरीतियों का कुचक्र पहले ही फैला देता है। संतोष, अपव्यय, कचहरी, फैशन और सिफारिश की सेना से भारत पर विजय-पताका फहरा कर आनन्द का अनुभव करता है। आधुनिक सज्जा से सुसज्जित कक्ष में विराजमान विजयी भारत-दुर्दैव, रोग, आलस्य, मदिरा तथा अन्धकार का देश में

प्रसार करने की आज्ञा देता है। भारत इन आपदाओं में निमज्जित हो जाता है। किताब-खाने के भारतीय अध्यक्ष की अध्यक्षता में बंगाली, महाराष्ट्री, एडीटर, कवि आदि भारत की रक्षा के लिए अपने-अपने विचार प्रकट करते हैं। इसी समय देशद्रोह पुलिस वर्दी में प्रकट होकर इन्हें बन्दी बना लेता है।

गम्भीर वन के प्रांगण में एक वृक्ष के नीचे भारत निस्पन्द पड़ा है। भारत-भाग्य प्राचीन योद्धाओं, महात्माओं की गाथा सुना-कर भारत को जगाने का प्रयत्न करता है। वह भारत की तत्कालीन दुर्दशा का चित्रण भी करता है।

भारत पराजय (सन् १९०८, पृ० ७६), ले० हरिहर प्रसाद, प्र० अग्रवाल प्रेस, गया, पात्र पु० १४, स्त्री ७, अंक ५, दृश्य ४, ६, ४, ८, ४।
घटना स्थल बागीचा, महल, दरबार, नदी का किनारा, कारागार।

यह ऐतिहासिक नाटक है। इसमें पृथ्वी-राज और मुहम्मद गोरी की कथा है। पृथ्वी-राज के मंत्री का पुत्र विजयसिंह छल करता है। युद्ध में पृथ्वीराज हारते हैं और हीरे की अपनी अँगूठी चाट कर मर जाते हैं। विजय-सिंह शर्त के अनुसार मुहम्मद गोरी से अपने लिए राज्य मांगने जाता है और गोरी उसके कुकृत्यों पर फटकार कर उसे मृत्यु दण्ड देता है।

भारत माता (सन् १९८४, पृ० ३६), ले० राधेश्याम कथावाचक, प्र० श्री राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, पात्र पु० ५, स्त्री १, अस्‍-रहित, दृश्य ३।
घटना-स्थल सभागृह, शयनकक्ष।

प्रस्तुत नाटक 'भारत माता' में भारत का उस समय का चित्र खींचा गया है जब कि देश ब्रिटिश शासनाधीन था। नाटक में भारत माता एक पात्र है जिसे जगाने का अर्थात् उन्नति की ओर अग्रसर करने का प्रयत्न किया गया है। इसके अतिरिक्त नाटक में राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्या-सागर, दादा भाई नौरोजी, स्वामी दयानन्द आदि भी पात्र रूप में हैं। धर्म को भी पात्र का रूप दिया गया है।

भारत माता (सन् १९५७, पृ० ११६), ले० रघुवीर शरण मित्र, प्र० भारतीय साहित्य प्रकाशन, स्वराज्य पथ, सदर मेरठ, अंक ३, दृश्य ८, ७, ७।
घटना-स्थल मैदान, बगाल, बाग, पहाड़ी और जलाशय।

प्रस्तुत नाटक अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिंह, यतीन्द्रनाथ दास, राजगुरु, सुखदेव आदि वीर दिवंगत आत्माओं के जीवन-चरित्र को लेकर लिखा गया है।

विदेशी सरकार के बर्बर अत्याचार, शोषण एवं हिंसक दमन नीति, 'भारत माँ' के लाल चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राज-गुरु आदि की गुप्त बैठक, जालिम साडर्स की हत्या, असेम्बली भवन में बम-विस्फोट तथा भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु की गिरफ्तारी तथा फाँसी का नाटकीय ढंग से दिखाया गया है।

चन्द्रशेखर आजाद की चिता पर माता, पिता, बहन एवं भावी पत्नी का करुण क्रन्दन सुनाई पड़ता है। स्वतन्त्रता संग्राम में पूर्णाहुति देने के लिए कटिबद्ध होना, आजाद हिन्द के जनरल हिम्मत सिंह, अकबर खाँ आदि वीरों का त्याग, अंग्रेजों का विवश होकर भारत को स्वतन्त्र करना, राजनैतिक बंदियों की मुक्ति, स्वतन्त्र भारत में उल्लास और उत्सव किन्तु बलिदान होने वाले देश-भक्तों की विधवाओं के रुदन का चित्रण हुआ है।

भारत रमणी (सन् १९२६, पृ० ११८), ले० हिंदी के दो प्रसिद्ध नाटककार, प्र० उपन्यास बहार आफिस काशी, बनारस, पात्र पु० १४, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ८, ६, ५।
घटना स्थल रंगमंच, जंगल, नदी, रास्ता, बैठक, महल, बारहदरी, एकान्त महल, लग्न मंडप, झोंपड़ी, दरबार।

भारत रमणी नाटक भारतीय नारी के

आदर्श पर प्रकाश डालता है। प्रधान की कन्या रोहिणी का सम्बन्ध राजकुमार चन्द्रकान्त से होना स्थिर होता है, परन्तु आखेट में निकले चन्द्रकान्त की नजर अचानक ऋषि-कन्या शान्ता पर पड़ जाती है। शान्ता को देखते ही वह अपना हृदय हार बैठता है और उसके पिता ऋषि राज का आशीर्वाद लेकर उसे अपनी परिणीता बना लेता है। रोहिणी इस समाचार से अत्यन्त क्षुब्ध होती है; उसका हृदय प्रतिहिंसा की आग से धधक उठता है। चन्द्रकान्त और शान्ता में विद्रोह उत्पन्न करने के लिए वह तांत्रिक को सहारा लेती है। तांत्रिक अपने तंत्र-बल से शान्ता को शिशु-घातिनी सिद्ध कर देता है। चन्द्रकांत अपने लाख प्रयत्नों के बावजूद भी उसे निर्दोष साबित नहीं कर पाता और राजा तंत्र के भ्रम में निरपराध शान्ता को मौत की सजा दे देते हैं। शान्ता को हत्या के लिए जंगल ले जाया जाता है परन्तु जल्लाद को दया आ जाती है। और वह उसे जीवित ही छोड़ देता है। रोहिणी एवं चन्द्रकांत के विवाह की चर्चा पुन: प्रारम्भ होती है परन्तु चन्द्रकांत शान्ता को अपने हृदय से नहीं निकाल पाता। शान्ता पुरुष का रूप धारण कर चन्द्रकांत से मित्र-संबंध स्थापित करती है तथा स्वयं को शान्ता का भाई बताकर उसे समझाती रहती है एवं रोहिणी से शादी के लिए राजी कर लेती है, रोहिणी से विवाह हो जाने के उपरान्त भी चन्द्रकांत उसे पूरी तरह अपना नहीं पाता। रोहिणी पति की उदासीनता का कारण समझते हुए अपने कर्म पर पश्चात्ताप करती है। पश्चात्ताप की अग्नि जब असह्य हो उठती है तब रोहिणी राजा के सामने अपराध स्वीकार कर शान्ता को निर्दोष सिद्ध कर देती है। तभी तांत्रिक और शान्ता भी प्रकट होते हैं। तांत्रिक अपने कुकर्म के फलस्वरूप कोढ़ी हो जाता है। तांत्रिक के स्पष्टीकरण से रोहिणी भी बच जाती है। अन्त में शान्ता और चन्द्रकान्त का मिलन हो जाता है।

भारत रमणी (सन् १९०८, पृ० १०८), ले० : आगा मुहम्मदशाह काश्मीरी; प्र० : ठाकुर प्रसाद ऐण्ड संस, बुकसेलर, वाराणसी; पात्र : पु० ८, स्त्री ४; *अंक* : ३; *दृश्य* : ८, ६, ५।

घटना-स्थल : जंगल, नदी, वनमार्ग, मंदिर।

यह एक शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक है। इसमें भारतीय रमणी ऋषि-पुत्री शान्ता की सुशीलता, बुद्धिमत्ता तथा कार्य-कुशलता की झाँकियाँ देखने को मिलती हैं। शान्ता के ऊपर बाल-वध का झूठा आरोप तांत्रिक द्वारा लगाया जाता है। अत: राजा उसे मृत्यु दंड देता है। जंगल में शान्ता जल्लादों द्वारा जीवित छोड़ दी जाती है। रोहिणी चन्द्रकांत से शादी करना चाहती है। शान्ता के निकाल दिये जाने पर रोहिणी की चन्द्रकांत के साथ शादी हो जाती है। अन्त में रोहिणी शान्ता के ऊपर लगाये गये आरोप का रहस्य खोलकर अपने को अपराधी मान लेती है। जब राजा द्वारा रोहिणी और तांत्रिक को मृत्यु दंड दिया जाता है तो शान्ता अपने वास्तविक रूप में प्रकट होकर रोहिणी और तांत्रिक के प्राणों की रक्षा करती है। अन्त में रोहिणी और शान्ता दोनों साथ-साथ चन्द्रकांत के साथ अपना सुखमय जीवन व्यतीत करती हैं।

भारत रहस्य (वि० १९७१, पृ० ८२), ले० : राधामोहन गोस्वामी; प्र० : गोस्वामी राधामोहन शर्मा, चित्तीखाना, आगरा; पात्र : पु० ५, स्त्री ७; परिच्छेद : ७।

घटना-स्थल : राज सभा, कलियुग का सिंहासन, रमरगिया उद्यान।

नाटक के प्रारम्भ में सरस्वती और भारत-माता का वार्तालाप होता है। भारत माता ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र नामक अपने चारों बेटों के दुर्गुणों का वर्णन करके दुःखी होती है। सरस्वती समझाती है कि चारों वेद आप की रक्षा करेंगे। कलियुग की अर्द्धांगिनी मदिरा-देवी लाल रंग की साड़ी पहने बैठी है और कुल-पुरोहित दुर्व्यसन देव कुमति भार्या के साथ विराजमान हैं। अधर्म नामक मंत्री विद्यमान है। सब मिलकर भारत को कलुषित करने की योजना बनाते हैं। अलखनंदा के तट पर धर्म-कर्म ऋषियों के वेष में आते हैं, और लक्ष्मी से सबका वार्त्तालाप होता है। अय्याश खाँ, शैतान खाँ, बदगुमान खाँ भारत को नष्ट करने की योजना बनाते हैं। अन्त में सरस्वती, भक्ति,

लक्ष्मी, वेद-पुराण, धर्म-कर्म, धृति-स्मृति करुणा, नव ऋद्धि, अष्टसिद्धि, महात्मा आदि दुखी भारत माता को अपने साथ लिए भारतो द्धार की चेष्टा से श्री बैंकुठलोक की ओर चले जाते हैं। विष्णु भगवान् प्रसन्न होकर भारतो-द्धार की आज्ञा देकर अन्तर्धान हो जाते हैं। देवसमाज जय जयकार करता है।

भारतवर्ष (सन् १६०६, पृ० १११), ले० दुर्गा प्रसाद गुप्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ११, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ५, ५, ३।
घटना-स्थल मकान, आनन्द भवन, गौशाला।

यह एक राष्ट्रीय नाटक है जिसमें भारत-माता देश का कल्याण-मार्ग बताती हुई कहती है कि जब तक भारत में विश्व प्रेम का भाव न फैलेगा और ऊँच-नीच के अभिमान का भाव न जायगा, तब तक ईर्ष्या-द्वेष का नाश नहीं हो सकता। इस नाटक में धर्मदत्त नामक व्यक्ति एक मुसलमान लड़के अहमद को पालता है। धर्मदत्त का अपना लड़का गणेशदत्त अपना चरित्र गिराता जाता है। अहमद उसके उत्थान पर तुला है।

भारतवर्ष, (सन् १६२७, पृ० १२६) ले० हरिहरशरण मिश्र, प्र० सूयक्रमल ग्रथमाला कार्यालय, लखनऊ, पात्र पु०, स्त्री, अंक ३, दृश्य ७, ६, ६।
घटना-स्थल काशी गंगातट।

नाटक का प्रारम्भ कारणिक द्वारा भारत के अतीत के स्मरण से होता है। कारणिक देश की वर्तमान दशा की तुलना अतीत से करते हुए सोच रहे हैं कि अतीत अपने गौरव-मय प्रकाश से आलोकित था किन्तु आज न तो पंडितों में पांडित्य रहा और न सूर-वीरों की तलवार में तेज। व्यापारी वर्ग भी अपनी हीनता और गरीबी को कोस रहे हैं।

कारणिक के चरित्र से प्रभावित होकर कादिर हिन्दू बन जाते हैं। कादिर कारणिक की हत्या का षड्यन्त्र रचने वाले अब्दुल और अफजल को समझाते हैं। अब्दुल धन का लोभ देकर पूर्णानन्द को मुसलमान बनाता है। ये तीनों दुष्ट कारणिक और कादिर की हत्या करना चाहते हैं लेकिन पकड़े जाते हैं। कार-णिक दया करके इन्हें छुड़वा देता है। इधर करोड़ीमल भी विदेशी फैशन-परस्ती का राग अलापते अलापते कौंसिल का सदस्य बनने के लिए कर्ज लेने पर भगवान् सेठ के चंगुल में फँस जाते हैं। अन्त में उनके हृदय में भार-तीयता की आग जलती है। कारणिक के चरित्र से प्रभावित करोड़ीमल की पत्नी धनी-मानी सेठ भगवान् की पुत्री से अपने पुत्र की शादी का प्रस्ताव ठुकरा कर सच्चरित्रा बाल-विधवा मालती के साथ विवाह निश्चित करती है। प्रारम्भ में इस विवाह का विरोध करने वाले करोड़ीमल भी कारणिक की शरण में आ जाते हैं। पूरन खां, अब्दुल और अफजल भी अपने कुकृत्यों, हिंसक तथा नीच कर्मों को त्यागकर कारणिक की शरण में आते हैं।

भारतवर्ष और कलि (सन् १८७६, पृ०८०), ले० धनंजय भट्ट, प्र० भारतेन्दु चन्द्रिका पत्रिका, पात्र पु० ४, स्त्री २, अंक-दृश्य-रहित।

यह एक प्रतीक नाटक है। इसमें अंग्रेजी शासन के समय में होने वाली दुर्दशा का चित्रण किया गया है। कलि अंग्रेजी शासन का प्रतीक है। कलि, अपनी स्थिति में सम्पूर्ण भारत में अपने दमन तथा अत्याचार-पूर्ण आधिपत्य से उत्पन्न अव्यवस्था और भारतीयों की तत्कालीन दीनता पर आत्म-गौरव अनुभव करता हुआ एक लम्बा वक्तव्य देता है इसी अवसर पर पीड़ित बूढ़े भारत का रुदन सुनाई पड़ता है, कलि उसके निकट जाकर उसे और भी पीड़ित करने की चेष्टा करता है। भारत अपनी तत्कालीन स्थिति पर विलाप करता है। इसी समय उसकी दोनों स्त्रियाँ सरस्वती और लक्ष्मी रंगमंच पर प्रवेश करती हैं। सरस्वती और लक्ष्मी आलस्य, उद्यमहीनता, अनुत्साह, संकीर्णता, दुर्व्यसन, अशिक्षा, मूर्खता, कुचाल आदि के कारण उप-स्थित दुर्दशा का उल्लेख करती हैं जिसे कलि अपना गौरव मानता हुआ अट्टहास करता है और इसी क्रम में वह रंगमंच से विदा हो जाता है।

वसुबन्धु और शिवोपासक शिवानन्द का सराहनीय योग रहता है।

भारत सौभाग्य (सन् १८८३, पृ० ४७), ले० अम्बिकादत्त व्यास, प्र० खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर पटना, पात्र पु० ७, स्त्री १०, अक रहित, दृश्य ४।
घटना-स्थल खुला मैदान।

महारानी विक्टोरिया के पचास वर्ष अखण्ड राज्य करने के महोत्सव पर लिखा गया नाटक है। यह प्रतीकात्मक नाटक है। भाग्य दुर्भाग्य, विषय-भोग, प्रताप उत्साह शिल्प, मूर्खता, फूट, शिक्षा, एकता आदि को पात्र बनाकर इनके माध्यम से तत्कालीन परिस्थिति का विवेचन है। ब्रिटिश साम्राज्य की नींव इन्हीं कारणों से भारत में टिकी रही है। भारतीय शक्तियाँ आपस में टकराकर शक्तिहीन हो जाती है, जिनका भरपूर लाभ ब्रिटिश उठाया करते है।

भारत सौभाग्य रूपक (सन् १८८९, पृ० १२८), ले० बदरीनारायण चौधरी, प्रेमघन, प्र० आनदकादम्बिनी प्रेस, मिर्जापुर, पात्र पु० ५३, स्त्री ४२, अक ६, दृश्य ४, ४, ४, ५, ३, ४।
घटना-स्थल हिमालय का उच्चशिखर, गढ का फाटक, राजप्रासाद, लन्दन पार्लियामेंट, पाटाल इडियन नेशनल कांग्रेस।

इस राष्ट्रीय नाटक के प्रथम अक के द्वितीय गर्भांक में हंसारूढ सरस्वती का आकाश मार्ग में गान होता है। सरस्वती भारत वासियो को सावधान करती हुई जैमिनि-गौतम-कणाद, व्यास, पाणिनि, धन्वन्तरि आदि का स्मरण कराती है और इसे छोडकर जाते हुए वह दुखी होती है। भूमि फोडकर फूट और बैर का प्रवेश होता है और वे कलह मचाते है। आगे चलकर सुकुन देवी अशोक वृक्ष की छाया मे विश्राम करती है कि इसकी विद्या नष्ट हो गई। इसके वीर मिट गए। भारत अचेत पडा है और पिशाचियो का ताण्डव होता है। मेरठ की छावनी मे हिन्दू-मुसलमान सम्मिलित रूप से विद्रोह करते हैं। किन्तु कतिपय गद्दार अग्रेजो की मदद करते हैं।

कलकत्ता मे इडियन नेशनल कांग्रेस का अधिवेशन होता है। देश भर के प्रतिनिधि-गण उपस्थित होते हैं। वे राजसुधार के प्रस्ताव पास करते है और महारानी के चिरजीवन की कामना करते है। अंग्रेजी राज मे भारत के हित का ध्यान नहीं रखा जाता। टैक्स लगाया जाता है। अंग्रेज अपनी भलाई के लिए लडाइयाँ लडते हैं। विलायती कपडे का प्रचार किया जाता है।

नाटक के अन्त मे हिन्दू, क्रिस्तान, जैन मुसलमानो का एक साथ देशोद्धार मे लग जाने का आह्वान है।

अभिनय यह नाटक इडियन नेशनल कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन पर खेलने के लिए लिखा गया था। म्योर सेंट्रल कॉलेज इलाहाबाद के छात्रों ने डेलिगेटों के सत्कार में इसे खेलने की योजना बनाई थी।

भारती हरण (सन् १८६८), ले० देवकीनन्दन, प्र० विद्यावर्द्धन यत्रालय, इलाहाबाद पात्र पु० ५, स्त्री ३, अक-दृश्य रहित।

यह नायिका प्रधान सामाजिक नाटक है। इसमे भारतीय नारी की दुर्दशा प्रदर्शित की गई है। ब्रह्मा की पुत्री सरस्वती का एक श्वेताग अपहरण करता है। सरस्वती विलाप करती है। वह अपहृत नारी के करुण-क्रन्दन मे भारतीय नारी के पतन को मुखरित करती है। वह निज के प्रयासों द्वारा विदेशी बन्धन से मुक्त होती है और पुन अपनी मातृभूमि म पहुँचती है।

भारतीय छात्र (सन् १९००, पृ० ६६), ले० दास, प्र० नव साहित्य कार्यालय काशी, पात्र पु० ८, स्त्री २, अक ३, दृश्य ८, ७, ३।

यह सामाजिक नाटक है। इसमे परतन्त्र भारत मे शिक्षा की दुर्दशा तथा छात्रो का स्वतन्त्रता आन्दोलन मे महत्व बडी सावधानी से प्रस्तुत किया गया है। अंग्रेजो के दासत्व मे शिक्षालयो की दशा शोचनीय है।

शिक्षा का प्रबन्ध विदेशियों अथवा निहित स्वार्थियों के हाथ में है। प्रबन्धकों का उद्देश्य छात्रों से अधिकाधिक फीस वसूल करना है। निर्धन कृषक अपनी सन्तान को घर का थाली-लोटा बेचकर भी शिक्षित करना चाहता है, परन्तु शिक्षालय उन्हें कुप्रबन्ध के कारण मझधार में ही शिक्षा से विरत कर पंगु रखने में तल्लीन हैं। भारतीय छात्रवर्ग स्वतन्त्रता की लहर में कूद पड़ता है। प्रत्येक अन्याय तथा अत्याचार के विरुद्ध छात्र राज्य की जेल भर देते हैं। अध्यापक वर्ग उनको उचित सहयोग एवं दिशा-निर्देश देता है। भारतीय जनता के प्रतिनिधि कृषक तथा श्रमिक छात्र नेताओं का शानदार स्वागत करते हैं। राज्य कर्मचारी भी छात्रों से प्रभावित होते हैं।

भारतेन्दु (नाट्यरूपक) (सन् १९५०, पृ० १०४), ले० : भानुशंकर मेहता; प्र० : नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; *पात्र :* पु० ३०, स्त्री ८; *अंक :* २, *दृश्य :* १६। *घटना-स्थल :* कमरा, बाजार, हाल,

प्रस्तुत नाटक में भारतेन्दु के जीवन सम्बन्धी सभी घटनाओं का समावेश किया है। कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों का ही प्रदर्शन है। लेखक का उद्देश्य केवल भारतेन्दु का गुणगान करना है।

अभिनय : इसे काशी में १८ सितम्बर १९५० के दिन भारतेन्दु जन्म दिन पर भारतेन्दु नाट्य मंडली द्वारा खेला गया है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (सन् १९५५, पृ० १२०), ले० : सेठ गोविन्ददास; प्र० : ओरियंटल बुक डिपो, दिल्ली *पात्र :* पु० १६, स्त्री ३; *अंक :* ५; *दृश्य :* ३, ३, ३, ३, ३। *घटना-स्थल :* भारतेन्दु का घर, कोठा।

नाटक में हरिश्चन्द्र जी के जीवन की प्रमुख घटनायें क्रमबद्ध हैं। कविवर के पिता गोपाल चन्द्र जी ने उनके प्रथम दोहे पर महाकवि होने का आशीर्वाद दिया था। भारतेंदु जी की प्रेमिकाओं के दृश्य भी इस में चित्रित हैं। सेठ जी ने बाबू जी के कुछ दोहों का भी उल्लेख किया है।

नाटक में हरिश्चन्द्र जी पर एकमात्र पत्नी मन्नो देवी से प्रेम न करने का भी आरोप है।

भारतोद्धारक नाटक (सन् १८८८, पृ०७०), ले : शरत कुमार मुखोपाध्याय; प्र० : भारत माता प्रेस, रीवा; *पात्र :* पु० ७, स्त्री २; *अंक :* ४; *दृश्य :* ४, ४, ३, १।

प्रस्तुत नाटक तत्कालीन भारत में हिन्दी की दुर्दशा का वर्णन करता है तथा भारतवासियों को हिन्दी को उच्चपद पर प्रतिष्ठित करने का आह्वान करता है। नाटक में हिन्दी को कन्या का रूप दिया गया है फारसी को स्त्री रूप दिया गया है। फारसी हिन्दी को कैद कर लेती है जिसे बाद में भारत माता का पुत्र आर्य अपने सेनापति मधुसूदन सहित मुक्त करता है। फारसी को पकड़ कर उसका वह वध करना चाहता है परन्तु हिन्दी अपनी उदारता से उसे छुड़वा देती है। अन्त में हिन्दी-फारसी तथा उनके साथ हिन्दू-मुसलमान वैरभाव त्याग कर एकता की शपथ लेते हैं।

भारतोदय (सन्० १८८७, पृ० १५८), ले० : रामगोपाल मिश्र; प्र० : गोपालराम गहमर; *पात्र :* पु० ३०, स्त्री ७; *अंक :* ३; *दृश्य :* ७, ८, ७। *घटना-स्थल :* स्वर्ग, गली, घनाजंगल, राजसभा, जंगली रास्ता, राजमहल।

प्रस्तावना में भगवान् बुद्ध सत्य स्वर्ग में ध्यान लगाये बैठे हैं। धर्म, शान्ति, प्रेम ऐक्य हाथ जोड़कर खड़े होते हैं। भगवान् उन्हें पृथ्वी का उद्धार करने के लिए भेज देते हैं। पृथ्वी पर भारतवर्ष को फूट, दुर्दैव, मदिरा, आलस्य, दुश्चरित्र अपने दुष्प्रभाव से जर्जर बना रहे हैं। ये पात्र सत्य, एकता आदि का परिहास करते हैं।

नाटक का आरम्भ कागर (भावलपुर) के शासक शाह अब्बास के राज्य में हिन्दू-मुस्लिम कलह से होता है। कलन्दर खाँ तथा अन्य कट्टर मुसलमान शाह अब्बास को हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काते हैं। शाह अब्बास का भाई फैज आलम बादशाह को बहुत समझाता है पर उसे हिन्दुओं का पक्षपाती

कहकर राज्य से निकाल दिया जाता है। फैज आलम यशवन्त पुर के महाराज के यहाँ शरण लेता है। भावलपुर की सेना यशवत पुर पर चढाई करती है।

इधर एक भारतीय राजा हरभक्तसिंह देशोद्वार के लिए राजत्याग फकीरी ग्रहण करता है। भावलपुर का राजा दाऊद खाँ भी फकीरी ग्रहण कर जगल मे जाता है, और फकीरी द्वारा देश-उद्धार के लिए जनता को जागृत करता है। यशवत सिंह के बडे कुँवर विलास प्रिय कृष्ण सिंह का अपनी पुत्री हुस्ने आरा के प्रति दुर्व्यवहार देखकर फैज आलम, कुँवर का वध करता है। पर महाराज योधसिंह फैज आलम पर प्रसन्न होकर उन्हें एक जागीर प्रदान करते है। यशवन्तपुर के सेनापति समरसिंह की पुत्री कमलेश्वरी दाऊदखाँ को मुसलमान होने से पहले ब्याही गई थी। बाद मे उसका नाम गुलनार पडा था। समरसिंह के पुत्र चद्रसिंह का ब्याह महाराज योधसिंह की कन्या कुमारी रजनी से तय होता है। रजनी के आग्रह से चन्द्रसिंह भावलपुर की सेना से युद्ध करने जाता है। युद्ध म यशवत सिंह की विजय होती है, पर चद्रसिंह वीरगति को प्राप्त होता है। महाराज योधसिंह अपनी सेना को भावलपुर पर चढाई करने से रोक देते हैं, और सदेश भेजते हैं कि होली के अवसर पर भावलपुर फाग खेलने आऊँगा।

रजनी चन्द्रसिंह के वियोग मे आत्म-हत्या कर लेती है। फैज आलम जीवन से ग्लानि के कारण दुखी होता है और शाह अब्बास को आत्म-समर्पण करने के इरादे मे छिपकर चल देता है। पराजय से दुखी शाह अब्बास फैज आलम के उपदेश से अपनी भूल स्वीकार करता है। सारे अनर्थो की जड कलन्दर खाँ को मरवा डालता है। देश मे हिन्दू-मुसलिम एक्य स्थापित होता है।

भिक्षु से गृहस्थ और गृहस्थ से भिक्षु (सन् १९५७ पृ० ९८), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० भारती साहित्य सदन, फव्वारा, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ३, अक ५।
घटना-स्थल कक्ष, राजप्रासाद, कुटी।

यह ऐतिहासिक नाटक है। नायक कुमारायन भारत के राजमन्त्री का पुत्र है जो युवावस्था मे ही सब कुछ त्याग कर भिक्षु हो जाता है। कुमारायन कूची के राज्य का राजगुरु बन जाता है। कूची के राजा की कन्या जीवा को कुमारायन से प्रेम हो जाता है। अत कुमारायन और जीवा का विवाह हो जाता है। कुमारायन भिक्षु से गृहस्थी बन जाता है। पुत्र-प्राप्ति के पश्चात् कुमारायन और जीवा भिक्षु-भिक्षुणी बन जाते हैं। कुमारायन अब गृहस्थ स भिक्षु बन जाता है। इनका पुत्र कुमारजीव बौद्धधर्म के प्रचार के लिए चीन जाता है। वृद्धावस्था म कुमारायन और जीवा भी चीन पहुँच जाते हैं।

भिक्षुक महाकाल (सन् १९६६, पृ० १८), ले० चन्द्रमौलि उपाध्याय, प्र० आवेग पत्रिका मध्य प्रदेश, पात्र पु० १७, स्त्री २। अक १, दृश्य ५।
घटना स्थल कक्ष, खुला मैदान।

प्रस्तुत नाटक 'एब्सर्ड' नाटकों की कोटि मे आता है। इसमें परम्परागत मूल्यों के प्रति अनास्था प्रकट की गई है। नाटककार ने मानव को उसी के प्रारंभिक रूप मे अर्थात् आदिम रूप मे प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। लेखक ने इसमें घटनाक्रम का बिल्कुल ध्यान नहीं रखा जिससे सारा नाटक स्फुट वार्तालाप मात्र लगता है।

भीम प्रतिज्ञा (सन् १९३३, पृ० १००), ले० कैलाशनाथ भटनागर, प्र० हिन्दी भवन लाहौर, पात्र पु० १९ स्त्री ६, अक ३, दृश्य ७, ५, ५।
घटना स्थल राजमहल, वन, भवन, अन्त पुर, युद्धभूमि, सरोवर का किनारा, युधिष्ठिर का शिविर।

नाटक का कथानक महाभारत से लिया गया है। नारी-अपमान के परिणाम से कौरवकुल का सत्यानाश किस प्रकार हो जाता है, यही इस नाटक मे दिखाया गया है। जुवे मे हारे हुए पाण्डवों के सामने भरी कौरव सभा मे दु शासन द्वारा कृष्णा का

केश खींचा किया जाता है, तथा उस देवी को नग्न करने का प्रयत्न किया जाता है। जब कुरुराज दुर्योधन उस सती साध्वी को देख अपनी बायीं जाँघ पर हाथ रखकर अपमान-सूचक इशारा करता है, तब क्रुद्ध भीम प्रतिज्ञा करते हैं कि मैं युद्ध में दुःशासन की छाती फाड़कर उसका गर्म लहू पिऊंगा और मदमर्दनकारी अपनी गदा से दुर्योधन की जाँघ को तोड़कर उसके रक्त से रंजित लाल हाथों से कृष्णा के केश बाधूंगा। भीम अपनी यह सारी प्रतिज्ञा वीरता से तथा कुशलता से पूरी करते हैं तथा नारी-अपमान का बदला लेते हैं।

भीम-प्रतिज्ञा (सन् १९१६, पृ० १२४), ले० : जीवानन्द शर्मा, काव्य तीर्थ; प्र० : बिहार एंजल प्रेस गिण्ड स्टोर्स, भागलपुर; पात्र : पृ० १३, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ७, १५,८। *घटना-स्थल* : सभा भवन, युद्धभूमि।

यह पौराणिक नाटक महाभारत पर आधारित है। दुर्योधन के कहने पर युधिष्ठिर जुआ खेलते हैं और सब कुछ हार जाते हैं। दुर्योधन भरी सभा में द्रौपदी का अपमान करता है जिससे क्रोधित होकर भीम दुर्योधन की जंघा को गदा-प्रहार से तोड़ने की प्रतिज्ञा करता है। अन्त में जब युद्ध होता है तो भीम, दुर्योधन और दुश्शासन को गदा-प्रहार से मार कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता है।

भीम प्रतिज्ञा (सन् १९६२, पृ० ८८), ले० : अनिरुद्ध यदुनन्दन मिश्र 'स्नेह-सलिल'; प्र० : श्री गंगा पुस्तक मन्दिर पटना ४; *पात्र* : पु० ६, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ४, ४, ४। *घटना-स्थल* : विराट् नगर, दरबार।

यह नाटक महाभारत के कथानक के आधार पर लिखा गया है। जब पाण्डवों को कौरवों ने एक साल के लिए अज्ञातवास के लिए कहा, तब पाण्डव छद्मवेश में मत्स्य देश के विराट् नगर में अपना नाम बदलकर रहने लगते हैं। युधिष्ठिर जुआरी कंक, भीम रूपकार अर्जुन बृहन्नला, नकुल अरिष्टनेमि, सहदेव ग्रंथिक, द्रौपदी सौरन्ध्री के नाम से राजा विराट् के दरबार में काम करने लगते हैं। वहां पर राजा विराट् की पत्नी सुदेष्णा का भाई कीचक सौरन्ध्री (द्रौपदी) पर आसक्त होकर भरे दरबार में उसका अपमान करता है। सौरन्ध्री भीम से उसका बदला लेने को आधी रात के समय चुपके से कहती है। तब भीम कीचक के मारने की प्रतिज्ञा करता है और अन्त में कीचक को मारकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता है।

भीष्म-प्रतिज्ञा (सन् १९०४, पृ० ११२), ले० : आगा हश्र कश्मीरी; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; *पात्र* : पु० १८, स्त्री ७; अंक : ३, दृश्य : ७, ६, ५। *घटना-स्थल* : आश्रम, युद्ध-क्षेत्र।

नाटक में भीष्म पितामह के उज्ज्वल-चरित्र का सुन्दर चित्रण किया गया है। इस नाटक में आठ वसु अपनी पत्नियों की प्रेरणा से महर्षि वसिष्ठ की नन्दिनी गाय को चुराते हैं। महर्षि उन्हें मर्त्य-लोक के दुःख झेलने का शाप दे देते हैं। वसुओं की प्रार्थना पर गंगा जी रूपवती कन्या बनती है और शान्तनु से अपनी शर्त पर विवाह करती है। वह सात वसुओं को जन्मते ही गंगा में प्रवाहित कर देती है। आठवें वसु देवव्रत को शान्तनु के विरोध पर छोड़कर चली जाती है।

देवव्रत माँ गंगा के आशीर्वाद से बड़े पराक्रमी राजकुमार होते हैं। वह अपने पिता शान्तनु की धीवर-राज की कन्या सत्यवती से शादी करने के लिए आजीवन कौमार्य व्रत ले लेते हैं। वह विचित्रवीर्य की शादी के लिए काशिराज की तीनों कन्याओं का अपहरण करते हैं। अम्बा भीष्म के सम्मुख अपना प्रणय निवेदन करती है और भीष्म अपने कौमार्यव्रत के कारण उसका निषेध करते हैं। अम्बा प्रतिशोध हेतु परशुराम की शरण लेती है। गुरु-आज्ञा और कौमार्यव्रत में द्वन्द्व उत्पन्न होता है। गुरु-शिष्य में भयानक युद्ध होता है। भीष्म विजयी होते हैं। महाभारत के युद्ध में भीष्म का पराक्रम दिखाई देता है और उनकी वीरगति होती है।

भीम-विक्रम (सन् १९२०, पृ० ९९), ले० : रामेश्वर शर्मा चौमुवल; प्र० : हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, २०३, श्रीराम रोड, कलकत्ता;

पात्र । पु० १४, स्त्री ७, अक ३, दृश्य । ५, ७, ६ ।
घटना-स्थल । विराट नगरी, युद्धक्षेत्र ।

इस नाटक का कथानक श्रीमदभागवत-पुराण से लिया गया है। इसमे कुन्ती कुमार भीम अनेक योद्धाओ, दानवो और राक्षसो को मार कर भीम-विक्रमी का पद प्राप्त करता है। इसमे उस समय की घटना का वर्णन है जब उन्होने अज्ञातवास की वेला मे अत्याचारी कीचक के वध करने मे पराक्रम दिखाया था और सती साध्वी द्रौपदी को अपमान आदि कलक से बचाया था।

भीम-शक्ति (सन् १९१०, पृ० ६८), ले० शिवदत्त मिश्र, प्र० ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सन्स बुकसेलर, वाराणसी, पात्र पु० १८, स्त्री ७, अक-रहित, दृश्य १४।
घटना स्थल युद्धभूमि।

इस नाटक मे महाभारतकालीन समाज को दिखाने का प्रयास किया गया है। मुख्य रूप से भीम की शक्ति का ही प्रदर्शन है। भीम द्रौपदी के अपमान करने वाले दुश्शासन, कीचक आदि को अकेले ही मार डालते हैं। साथ ही महाभारत के कौरव और पाण्डवो की अन्य लडाइयो का भी सकेत मिलता रहता है।

भीष्म (सन् १९१८, पृ० १०३), ले० विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक, प्र० रविनारायण मिश्र, प्रताप कार्यालय, कानपुर, पात्र पु० २१, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ११, ८, ६।
घटना-स्थल धीवर के भवन का भाग, युद्ध क्षेत्र।

इस नाटक के नायक भीष्म महाराज शातनु के पुत्र हैं। इनकी कथा बहुत प्रख्यात है। नाटक के अनुसार भीष्म गगा नामक दासी के गर्भ से जन्म लेते हैं। वृद्धावस्था मे राजा शान्तनु एक धीवर कन्या पर मुग्ध होते हैं। परन्तु धीवर राजा से वचन माँगता है कि उसकी पुत्री मे उत्पन्न पुत्र ही राज्याधिकारी होगा। यह बात राजा को सोच मे डाल देती है एव वे चिन्तित हो जाते हैं। पिता की चिन्ता दूर करने के लिए भीष्म प्रतीज्ञा करते हैं कि वे राज्य के अधिकारी नही होगे। वे आजीवन अविवाहित रहेंगे।

भीष्म स्वयवर से काशीराज की पुत्री अम्बा का हरण विचित्रवीय से विवाह करने को कर लेते है किन्तु उसके इस अनुनय पर कि उसने शाल्व राज से प्रेम किया है, छोड़ देते है, परन्तु शाल्वराज उसे स्वीकार नही करता। अम्बा तपस्या कर शिव से भीष्म-वध का वरदान प्राप्त करती है। दूसरे जन्म मे शिखण्डी का रूप धारण कर महाभारत के युद्ध मे भाग लेती है। अर्जुन शिखण्डी को आगे कर भीष्म पर तीर चलाते है क्योकि भीष्म जैसे अद्वितीय वीर से पार पाना कठिन था। भीष्म यह जान कर कि शिखडी पूव जन्म की स्त्री है युद्ध मे वाण न चला कर स्वय अर्जुन के वाणो से विद्ध बन शर-शैय्या पर लेट जाते हैं।

भीष्म-प्रतिज्ञा (सन् १९७०, पृ० ८६), ले० चतुर्भुज, प्र० मगध कलाकार प्रकाशन, १०६, श्री कृष्ण नगर, पटना १।
घटना-स्थल महल, उद्यान, आश्रम, रगभूमि, शिविर।

नाटककार के मतानुसार भीष्म का चरित्र कई अशो मे राम से भी महान् था। पिता के सुख के लिए वे आजन्म अविवाहित रहते हैं, वचन निभाने के लिए गुरु परशुराम से युद्ध करते हैं। अन्त मे महाभारत के युद्ध मे इन की मृत्यु होती है।

भीष्म-व्रत (सन् १९५६, पृ० ६७), ले० मूल जी मनुज, प्र० शारदा मन्दिर, नई सडक, दिल्ली, पात्र पु० १७ स्त्री ५, अक ३, दृश्य ६, ६ ६।
घटना-स्थल गुरुकुल।

नाटक का उद्देश्य महाभारत के उज्ज्वल रत्न भीष्म पितामह के निर्मल चरित्र पर प्रकाश डालना है। गगापुत्र आठवें वसु, देवव्रत गुरुकुल मे महर्षि व्यास से निष्काम सेवा और स्वार्थत्याग की शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस व्रत का वह सत्यवती की शान्तनु मे

विवाह कराकर स्वयं कौमार्यव्रत द्वारा आजीवन उसका निर्वाह करते हैं। देवव्रत अम्बा का प्रणय ठुकराते हैं। वह प्रतिशोध में परशुराम की शरण लेती है। गुरु-आज्ञा और भीष्मव्रत में विरोध के फलस्वरूप गुरु-शिष्य संग्राम होता है। परशुराम अपनी पराजय के साथ शिष्य को व्रत में सफलता का आशीर्वाद देते हैं।

चित्रांगद की मृत्यु पर सत्यवती की वंशवृद्धि की प्रार्थना को अस्वीकार करके काशिराज की कन्याओं का अपहरण तथा विचित्रवीर्य का पाणिग्रहण कराते हैं। वह उसका राजतिलक भी करते हैं। उसमें अम्बा की शिवोपासना तथा शिव से उसकी द्रुपद-कन्या होने का आशीर्वाद भी चित्रित है। भीष्म दुर्योधन को युधिष्ठिर के साथ शान्ति से रहने का उपाय भी बताते हैं। वह कृष्ण के शान्ति-सन्देश पर पाण्डवों की रक्षा के लिए प्रयत्न करते हैं। दुर्योधन के हठ पर वह महाभारत के युद्ध का नेतृत्व ग्रहण करके इच्छा-मृत्यु वरण करते हैं।

भूख (सन् १६४३, पृ० ८६), ले० : वीरदेव 'वीर'; प्र० : इंडियन प्रेस लिमिटेड, अम्बाला कैंट; पात्र : पु० १३, स्त्री ६; अंक : ३; दृश्य : ६, ६, ६।
घटना-स्थल : प्रार्थना भवन, बंगले का कमरा, कलकत्ते का बाजार, दफ्तर, बस्ती, बागीचा।

यह एक हृदयविदारक सामाजिक नाटक है। इसमें दो भाव विशेष रूप से अंकित हैं। एक मनुष्य का मनुष्यत्व की ओर उद्गार और दूसरा हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का संपादन। राधा अपने पति डाक्टर कौल से भावी जीवन के लिए धन एकत्र करने को कहती है लेकिन वह मनुष्यता के नाते गरीबों से खून चूसकर धन एकत्र नहीं करता। उसकी पत्नी सभी पुरुषों से घृणा करती है। जब कि डॉ० कौल सभी मनुष्यों के साथ प्रेम से मिलते हैं और अच्छा व्यवहार करते हैं। अचानक कोई हत्यारा फिरोज के परिवार के सभी लोगों की हत्या कर देता है जिसके अपराध में शंकावश फिरोज को लम्बी कैद की सजा हो जाती है। जब उसे कैद से छुटकारा मिलता है तो वह डॉ० कौल के पास जाता है क्योंकि उसके सिवा और कोई परिवार में नहीं है। कौल उसका आदर करते हैं तथा खाने-पीने और सोने का प्रबन्ध करते हैं। फिरोज उसी सोने वाले कमरे में रखी सोने की शमादान देखता है, जिसे वह चुराकर भाग जाता है। बेचते समय वह पुनः पकड़ा जाता है और पुलिस द्वारा कौल के पास लाया जाता है। कौल की उदारता उसे मुक्त करा देती है। फिरोज अपनी चोरी का कारण देश की गरीबी, नादानी और भूख बताता है। वह उस सोने के शमादान को बेचकर ५० हजार रुपये प्राप्त करता है, जिसकी पूँजी पर एक मिल-मालिक तथा लखपति बन जाता है। वह मिल की मिल्कियत कौल को देना चाहता है। हिन्दू-मुस्लिम इत्तिहाद से भुखमरी को दूर करना चाहता है। कौल की उदारता पत्नी राधा की उलझनों को हल कर देती है तथा बिगड़े हुए मनुष्य फिरोज को अच्छे मार्ग प्रदर्शित कर उसे उच्च बनाती है।

भूखा (सन् १६४१, पृ० ११२), ले० : कविचन्द्र कालीचरण पट्टनायक; प्र० : राष्ट्रभाषा पुस्तक भण्डार, बाका बाजार, कटक; अंक : ५; दृश्य : ६, ७, ५, २, ।
घटना-स्थल : गाँव खेत।

हरिपुर गाँव का एक गरीब किसान रघु भादों के महीने में अपने खेतों में काम कर रहा है और उसकी बेटी मीरा उधार आटे की रोटी लेकर अपने पिता के पास जा रही है। रास्ते में उसे जमींदार का पुत्र कुमार देख लेता है। मीरा अपने पिता को रोटी खिलाना चाहती है कि लगान लेने के लिए गुमाश्ता आ जाता है। रघु के लगान न दे सकने से उसे नत्थू कचहरी में कैद करा देता है। एक रोज नत्थू मीरा से कुछ बातें कर रहा है कि कुमार आ जाते हैं। नत्थू खिसक जाता है। कुमार रघु को छुड़ाने के लिए मीरा को बीस रुपया दे देते हैं। जिससे रघु छूट कर घर आ जाता है। मीरा अपने घर में धान साफ करते हुए गाना गा रही है कि कुमार छिपकर गाना सुनते हुए 'मिरों

'मीरा' पुकार कर फिर छिप जाते हैं। मीरा उसे नत्थू समझ कूँचे से मार देती है जिससे कुमार के माथे से खून निकल आता है। मीरा कुमार को देखकर भौचक्का हो खून को अपने आँचल से पोंछना चाहती है किन्तु आँचल गन्दा होने से रुक जाती है। कुमार उसे सान्त्वना दे खुद उसके आँचल को उसके हाथों को पकड़े हुए खून पोंछकर अपनी अँगूठी उसकी अँगुली में पहना कर चले जाते हैं। कालान्तर में रघु अपने घर में हैजा से बीमार पड़ता है। कुमार और मीरा के समक्ष डाक्टर नाडी देख रहा है। थोड़े ही समय में रघुकुमार और मीरा का हाथ मिलाकर चल बसता है। कुछ दिनों के बाद कुमार का विवाह एक जमींदार की लड़की से तय हो जाता है लेकिन कुमार उसे अस्वीकार कर देता है। जमींदार मीरा को छल से ताले में बन्द करवा देता है लेकिन वह रेनु के माध्यम से बाहर निकल जाती है, और दूर भाग कर सेवा सदन में रहती है। सेवा सदन में जमींदार जाता है। तहसीलदार के सेवा सदन फुकवाना अस्वीकार करने पर पिस्तौल चलाता है। कुमार के हाथ में गोली लगी देख पिस्तौल उसके हाथों से गिर जाती है। फिर मीरा और कुमार दोनों छुपे रहते हैं। जमींदार दोनों को जब पा जाता है तो दण्ड देना चाहता है। दण्ड के रूप में मीरा और कुमार का हाथ मिला देता है।

मूखा-मसखरा (सन् १९५८, पृ० ७१), ले० रघुनाथ राम शर्मा, प्र० सकरकन्द केशव यन्त्रालय, बनारस, पात्र पु० ४, स्त्री ६, अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल सेठ जी का मकान।

यह एक हास्य प्रधान नाटक है। एक सेठ और सेठानी को नौकर की आवश्यकता है। बगल के बाबू साहब से सेठानी के कुछ प्रणय-सम्बन्ध के आभास मिलते है। सेठ और सेठानी में आपस में बनती नहीं। बहुत प्रयत्न के बाद बाबू साहब नौकर खोज लाते हैं। नौकर की विशेषता यह है कि उसे दिन-भर में कम से कम दस बार भोजन चाहिए। किसी प्रकार नौकर रख लिया जाता है और सेठ जी का आदेश है कि सेठानी जो कुछ कहे उसे धीरे से कान में आकर कह दे। हास्य का चरमोत्कर्ष यहीं होता है जब नौकर धीरे से कहने वाली बात को जोर से कहता है और ऊंचे स्वर में कहने वाली बात को धीमे स्वर में कहता है। सेठानी जब कहती हैं—कि सेठ से जाकर कह दो घर में चावल नहीं है, तो इसे वह दुकान में जाकर पूरी आवाज के साथ कहता है। और जब कहती है जाकर कह दो कि सेठ की माँ मर गयी है तो इसे वह सेठ के कान में कहता है। इसी प्रकार आग लगने की घटना को निम्न स्वर में और लड़के होने की घटना को उच्चस्वर में कहता है। नौकर का 'फजीहत' नाम यहीं चरितार्थ होता है। बाबू साहब के २५०) को सेठ जी ब्याज के सहित जोड़कर ५००) बना देते हैं। घर में आग लगने की घटना सुनकर बाबू साहब मौका पाते हैं और दुकान से सेठ की बही को ले जाकर आग में डाल देते है।

भूदान (सन १९६०, पृ० ६४), ले० सेठ गोविन्द दास, *पात्र* पु० १२, स्त्री ३, *अंक* ३, *दृश्य* ४, ६, ४।
घटना-स्थल ग्राम तिलगाना, आश्रम, गृह।

तिलगाना और नालगुंडा के कुछ व्यक्ति विनोबा से प्रार्थना करते हैं कि साम्यवादियों की हिंसात्मक प्रवृत्तियों से वे तंग आ गये हैं। साम्यवादी क्रूर तरीकों से भूमिपतियों की जमीनें छीनकर उन्हें भूमि दे रहे हैं, जिनके पास भूमि नहीं है। वे विनोबा से प्रार्थना करते हैं कि उस स्थान पर जाकर महात्मा गांधी के महान मंत्र हृदय-परिवर्तन का प्रयोग करें। विनोबा तिलगाना जाने का वचन देते हैं। विनोबा को सफलता मिलती है और लोग भूमिदान देते हैं। एक साम्यवादी बैठक में किसी सदस्य को भीषण रक्तपात में ग्लानि होती है। उसे भूदान यज्ञ में कुछ सफलता जान पड़ती है। साम्यवादी उसे कायर जानकर गोली से उड़ा देते हैं।

विनोबा जी साम्यवाद के विरोध में

बोलते हुए कहते हैं । "मार-काट से इस देश की कोई भी समस्या हल नहीं हो सकती। सबसे अच्छा उपाय हृदय-परिवर्तन ही है। हिन्दुस्तान में सद्भावना काफी है इसको जगाना चाहिए। प्रेम विचार की तुलना में कोई शक्ति टिक नहीं सकती। जनता की सद्भावनायें जगाने में ही मनुष्य का पुरुषार्थ है। क्रान्ति परिवर्तन लाती है। वे परिवर्तन चाहते हैं। भूमिदान ही एकमात्र उसका साधन है, हृदय परिवर्तन साध्य है।" जो लोग भूदान यज्ञ में विश्वास नहीं करते थे, व भी विनोबा जी के यहाँ आने पर धीरे-धीरे इसकी उपयोगिता मानने लगते हैं। साम्यवादी भी अपनी गलती मान लेते हैं। उनको भी यह विश्वास हो जाता है कि इतना खून बहाना व्यर्थ है। एक साम्यवादी नेता रुद्रदत्त अपनी सारी भूमि एवं धन देकर भूदान यज्ञ में मिल जाता है।

भूमि लुटिया मुमुरा (सन् १५७५, के आसपास पृ० ६), ले० : माधव देव; प्र० : हिन्दी, विद्यापीठ, आगरा; पात्र . पु० २, स्त्री १; *अंक-दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल : घर, कमरा।

इसमें कृष्ण अपनी माता यशोदा से अपने नवनीत, दूध तथा मुरली के विषय में पूछते हैं, तथा नवनीत लेने के लिए रोते हैं। माता यशोदा उनको मनाती हैं लेकिन वे नवनीत के लिए हठ करते हैं। अन्त में यशोदा उनको हरिपूजा के लिए रखे गए नवनीत देती हैं, जिसे पाकर कृष्ण प्रसन्न होते हैं।

भूल-चूक (सन् १९२८, पृ० १५०), ले० : जी० पी० श्रीवास्तव; प्र० : बी० पी० सिन्हा, गोंडा; *पात्र* : पु० ५, स्त्री ४; *अंक* : ३; *दृश्य* : २, २, ३ ।
घटना-स्थल : शाकीमल के मकान के सामने, डाक्टर साहब का मकान, सड़कें।

भूल-चूक एक प्रहसन है। सुशीला डाक्टर राघव की लड़की है। वह बाल विधवा है। डाक्टर विधवा-विवाह का घोर विरोध करते हैं, लेकिन सुशीला जब युवती हो जाती है तो रामदास से प्रेम करने लगती है। उसकी याद में दिन-रात तड़पने लगती है। डाक्टर के बहुत कड़ी निगाह रखने पर वह जहर खा लेती है, लेकिन कम्पाउंडर की भूल से बदहजमी की शीशी पर जहर का लेबिल लगा होता है। अतः कै और मूर्छा भी आती है। वह बच जाती है। डाक्टर अपनी गलती महसूस करके उसकी शादी रामदास से करने को तैयार हो जाता है।

नाटक का एक अन्य मुख्य पात्र शाकीमल है जो अपनी पत्नी पार्वती पर शक करता है क्योंकि रामदास की सिली भोंदूराम की टोपी उसकी औरत की चारपाई पर पड़ी मिलती है। लेकिन जब पता चलता है कि पार्वती की महरिन के कूड़ा फेंकने पर वह कूड़ा भोंदूराम पर पड़ता है और वह महरिन को टोपी से मारता है इसलिए टोपी उसकी औरत के पास मिलती है तो शाकीमल को उसकी भूल पर पश्चात्ताप होता है क्योंकि वह अपनी औरत को जूतों से पीटता है।

भूल नाटक (सन् १९६२, पृ० ९५), ले० : गुलाब खण्डेलवाल; प्र० : पारिजात प्रकाशन, डाक बंगला रोड, पटना; *पात्र* : पु० ८, स्त्री २; *अंक* : ३;
घटना-स्थल : सुरेन्द्र सिंह का मकान।

यह एक सामाजिक नाटक है। दो युवक सुरेश एवं ऋषि स्टेशन पर मिलते हैं। एक अपना गवना कराने जहाँ जा रहा है दूसरा वहीं जीवन बीमा करने के लिए। दोनों की ससुराल वहीं है। दोनों की पत्नियाँ एक-दूसरे से बदल जाती हैं। बाद में बिना किसी दुर्घटना के ही भूल-सुधार हो जाती है।

भूल-भुलैयाँ (सन् १९३६, पृ० ८०), ले० : आगाहश्र; प्र० : उपन्यास बहार, आफिस, काशी; *पात्र* : १० पु०, स्त्री २; *अंक* : ४; *दृश्य* : ८, ७, १२, ३ ।

दुष्ट बादशाह द्वारा भेजे गए विवाह-प्रस्ताव को अस्वीकार करने के कारण जाफर

और दिलआरा को अपना देश त्यागना पड़ता है। मार्ग में तूफान आने से वे दोनों भाई-बहिन बिछुट जाते हैं परन्तु अन्त में दोनों तातार देश में पहुँच जाते हैं। दिलआरा वहाँ के नवाब जमील पर मुग्ध हो जाती है जो पहले से ही शकीला नाम की युवती को दिल दे बैठा है। दिलआरा पुरुष वेष में जमील के यहाँ नौकरी करती है और नवाब का सन्देश लेकर शकीला के पास जाती है, जो उसे देखते ही उससे प्रेम करने लगती है। इस प्रकार यह प्रेम का त्रिकोण और भाई-बहिन का रूप-सादृश्य कुछ समय तक सबको परेशान करता है परन्तु अन्त में शकीला और दिलआरा के भाई जाफर का जो उसी की शक्ल का है तथा दिलआरा और नवाब का प्रणय बन्धन हो जाता है। इस मूल कथानक के साथ नवाब के सेवक अब्दुल करीम और शकीला की सेविका ऐयारा के प्रणय की भी कहानी जोड़ दी गई है जिसमें रोमांस और साहसिकता का पुट है।

भूषण-दूषण (सन् १९०६, पृ० ६), ले० गौचरण गोस्वामी, प्र० श्रीकृष्ण चैतन्य पुस्तकालय, वृन्दावन, पात्र : पु० ४, स्त्री ३, अंक ५, दृश्य ५।
घटना-स्थल : लाला रामरतन का घर।

लाला रामरतन अपनी स्त्री से अपने बच्चों को आभूषण न पहनाने को कहते हैं परन्तु उनकी स्त्री मर्यादा का ख्याल कर ऐसा करने से इन्कार करती है। और वही दुर्घटना होती है जिसका लाला को भय था। गाँव के दो उचक्के दोनों बच्चों का आभूषण छीनकर बच्चों की हत्या कर कुएँ में फेंक देते हैं। लाला पश्चात्ताप कर रह जाते हैं और बच्चों को आभूषण न पहनने की सलाह देते हुए रूपक समाप्त होता है।

भूषण हरण मथुरा (सन् १९६७, पृ० ६), ले० अज्ञात 'माधव देव' के नाम से भ्रमवश प्रचारित, प्र० हिंदी विद्यापीठ, आगरा, पात्र पु० २, स्त्री ३, अंक-दृश्य-रहित।
घटना स्थल यमुनातट, यशोदा का घर, कदम्ब-वृक्ष।

सूत्रधार श्रीकृष्ण के पाद-पद्म में ब्रह्मेन्द्रादि का ध्यान करता है। उसके बाद श्री कृष्ण की चंचलता और बचपन का वर्णन करता है। एक बार भूषणों से अलंकृत हो माता के मारने के भय से कदम्ब वृक्ष के नीचे जाकर सो जाते हैं। राधा पानी भरने के लिए जाती है और वह कृष्ण के सारे आभूषण चोरी से उठा लाती है और लाकर यशोदा को देती है। कृष्ण को यह सब पता चल जाता है। घर आकर वह माता यशोदा से राधा की चोरी का सारा हाल कह सुनाते हैं। कृष्ण यशोदा से राधा द्वारा इससे पहले चुराई गई गेंद का भी हाल बताते हैं और राधा को प्रसिद्ध चोर कहते हैं। कृष्ण की विनयावली सुनकर यशोदा पुत्र-स्नेह से खिन्न होकर राधा को फटकार कर भगा देती है। और कृष्ण को गोद में लेकर आश्वस्त करती है।

भोज नन्दन कंस (वि० २०१६, पृ० ११०), ले० : अम्बिका प्रसाद 'दिव्य', प्र० साहित्य सदन, आजमगढ़, पन्ना (म० प्र०), पात्र : पु० २०, स्त्री ११, अंक ५, दृश्य ५, ५, ५, ५, ७।

यह नाटक एक पौराणिक कथा को लेकर लिखा गया है। वसुदेव और देवकी का वैवाहिक सम्बन्ध हो जाने पर कंस उन दोनों को विदा करने जाता है परन्तु उसी समय आकाशवाणी होती है कि जिन्हें तू बड़े प्रेम से विदा कर रहा है उन्हीं का आठवाँ बच्चा तेरा काल होगा। कंस उन्हें कारागृह में डाल देता है। कंस उनके पुत्रों को उत्पन्न होने के साथ ही समाप्त कर देता है परन्तु आठवाँ बच्चा, जो कि श्रीकृष्ण थे, बच जाता है और अन्त में कृष्ण द्वारा ही कंस की ऐहिक लीला समाप्त होती है।

भोजन बिहार मथुरा (सन् १९६४, पृ० ८), ले० : मानवदेव, प्र० : हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, पात्र पु० ५, स्त्री ०, अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल वृन्दावन, यमुनातट।

सर्वप्रथम अनन्त शक्ति-सम्पन्न ब्रह्म-

मूर्ति अखिल जगत्-गुरु विश्वेश्वर श्रीकृष्ण को नमस्कार किया गया है। सुबह होते ही सारे ग्वाल कृष्ण के पास आकर यमुना तट पर गाय चराने के लिए कहते हैं। कृष्ण ग्वाल वालों के साथ यमुना तट पर गायें चराने जाते हैं। वहाँ दोपहर के समय ग्वाल-बालों के बीच बैठकर भोजन करते हैं तथा भोजन करते समय हास-परिहास करते हैं। श्रीकृष्ण अपने सखागणों के बीच इस प्रकार अच्छे लगते हैं जिस प्रकार कमल-पुष्प के मध्य पंकज-केशर।

भोजन-विहार में विलम्ब हो जाने से गोवत्स तृणलोभ में काफी दूर तक चले जाते हैं। कृष्ण उन्हें खोजने के लिए वृन्दावन तक चले जाते हैं लेकिन गोवत्सों का पता नहीं चलता है। वहाँ से कृष्ण-यमुना तट पर पुनः वापस आते हैं तो अपने सखा तथा भाई बलराम को न पाकर बड़े दुखी होते हैं। अन्त में कृष्ण ध्यान करके देखते हैं तो उन्हें पता चल जाता है कि गोपालकों और गोवत्सों की चोरी ब्रह्मा ने की है। यहीं पर नाटक समाप्त होता है। नाटककार ने नाटक को अधूरा छोड़ दिया है।

भोली बी (सन् १९१७, पृ० १८), *ले० :* हरिहर प्रसाद जिज्ञल; *प्र० :* अग्रवाल प्रेस, गया (बिहार); *पात्र :* पु० ६, स्त्री ३; *अंक :* २; *दृश्य :* ३, ४।
घटना-स्थल : मकान, छत्तर का चिड़ियाँ बाजार, गंगा का किनारा।

यह एक हास्य-व्यंग्य-प्रधान लघु प्रहसन है जिसमें मध्यमवर्गीय भोग-विलासप्रिय पुरुषों को बाजारू औरतों (नाचने वाली रण्डियों) के चक्कर में पड़कर सर्वस्व खो देते हुए दिखाया गया है। प्रारम्भ में एक कोठे पर अख्तर जान एवं उसकी बहन मोमन जान में वार्तालाप करती है। उसी समय अख्तर का नौकर बुधुआ किसी लाला के नौकर के आगमन की सूचना देता है। नौकर अपने स्वामी तारेश्वरप्रसाद (जमींदार युवक) के मुग्ध हो जाने एवं विरह में पीड़ित होने की सूचना देकर अख्तर को साथ लेकर चलता है। उधर घर में तारेश्वर विलाप करते हैं। वह बार-बार दोहराते हैं "नौकर भी हाय न अब तक फिर कर आया"। उनकी इस दशा पर तारेश्वर का मित्र सुखदेव लाल कहता है कि इसका परिणाम बुरा होगा। अख्तर जान आ जाती है और अपने जिस्म के बदले तारेश्वर से उनकी सम्पत्ति अपने नाम लिखवा लेती है। एक बार छत्तर के मेले में वही अख्तर अहमद नामक एक अन्य युवक के साथ भाग जाती है एवं तारेश्वर रोता बिलखता रह जाता है।

म

मंगल नाटक (सन् १८८७, पृ० १३७), *ले० :* जीवानन्द ज्योतिर्विद; *प्र० :* भारत प्रेस, काशी; *पात्र :* पु० २८, स्त्री ३; *अंक :* ८; *दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल : मंदिर

यह नाटक पौराणिक है। श्री मार्कण्डेय पुराण तथा श्री काली पुराणों का आशय लेकर सृष्टि स्थितिलयात्मिका श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती रूपा भगवती का दिखाना आरम्भ होता है उसी का मंगल-प्रभाव कीर्तन समग्र पुरुषार्थ का साधक है जैसे एक ही कुंजी ताले को मुद्रित करने तथा खोलने में भी उपयोगी है वैसे ही एक ही माया सेवक के इच्छानुरूप भोग और मोक्ष को भी देने में समर्थ है। उससे यह चरित्र अवश्य मंगलदायक जानकर इसका नाम मंगल नाटक प्रसिद्ध किया गया। देवी की कृपा का सविस्तार वर्णन है। महिषासुर के प्रसंग को लेकर देवदानव युद्ध का वर्णन है।

नाटक में संस्कृत भाषा का प्रयोग है।

जो पात्र जिस भाषा के उपयुक्त है उससे उसी भाषा का प्रयोग कराया गया है।

मगल सूत्र (सन् १९५३, पृ० ८५), ले० वृन्दावन लाल वर्मा, प्र० मयूर प्रकाशन, झाँसी, पात्र पु० ८, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ७, ५, ७।

इस नाटक मे नारी-उद्धार की अभिव्यक्ति है। धनलोलुप पीताम्बर अपने पुत्र कुन्दनलाल का विवाह धनाढ्य व्यवसायी रोहन की पुत्री अलका से कर देता है। इस विवाह मे उसे पाँच हजार रुपए दहेज स्वरूप प्राप्त होते हैं। कुन्दनलाल का अपनी पत्नी के प्रति व्यवहार अत्यन्त अमानवीय है। अपनी शकालु प्रकृति के कारण ही वह उसे शारीरिक एव मानसिक प्रतारणा देता है। अपने पति के अमानवीय व्यवहार से त्रस्त होकर वह पिता की सहमति से एक हितैषी बुद्धमल के घर आश्रय लेती हैं। पीताम्बर अपने पुत्र कुन्दनलाल के सहयोग से बुद्धमल का घर जलाने का असफल प्रयास करता है। अलका अपने पिता के परामर्श से ही कुन्दनलाल से सम्बन्धविच्छेद करके गोपीनाथ के साथ पुनर्विवाह कर लेती है। इस पुनर्विवाह के अवसर पर अलका के पिता उसे मगल-सूत्र भेंट करते हैं।

मगल हो तुम्हारा (सन् १९४५, पृ० ४७), ले० वि० द० घोटणे, पात्र पु० ४, स्त्री २, अक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल बम्बई शहर का एक छोटा कमरा।

इस नाटक मे आधुनिक प्रेम का स्वरूप प्रस्तुत किया गया है।

केदार और कावा प्रात काल शोभा के द्वार पर पहुँचते हैं। शोभा अपने श्वशुर कावा का अपमान करती है। शोभा नई रोशनी की स्त्री है। मजू उसकी पडोसिन है। वह मजु और विलास को चाय पिलाने अपने घर ले जाती है। शोभा विलास का पूरा स्वागत करती है। शोभा के पति केदार एक प्रसिद्ध डाक्टर और समाजसेवी हैं। उनको घर बैठने का अवकाश कहाँ। मजु विलास के पास बैठ जाती है। सब मे परिहास चलता है। स्त्री की महती शक्ति पर चर्चा होती है। विलास उन्मुक्त प्रेम का पुजारी है। वह कहता है—*"ब्याह करके भी कोई कभी सुखी* हुआ है। पैसे कमाकर पत्नी के लिए एक घोसला बनाना। इतना करने पर भी पत्नी का जी ऊब न जाय इसलिए उसको खेलने के लिए बच्चे पैदा करना-बस"—

पर विलास अत मे विवाह के लिए तैयार हो जाता है। मजु और विलास का विवाह आर्य-समाज-मन्दिर मे होता है। मजु शोभा से पूछती है—बहिन तुम खुश हो ना।

इस प्रकार आधुनिक प्रेम के स्वरूप का इसमे चित्र खींचा गया है।

मगू (सन् १९६०, पृ० ७२), ले० बाग डिके, प्र० बलवन्तराय ऐण्ड कम्पनी, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री २, अक ३, *दृश्य-रहित*।

इस नाटक मे डाकू समस्या पर प्रकाश डाला गया है। नाटक मे महाजन गोकुलदास डाकुओं को धन दे करके अपने जान-माल की रक्षा का उपाय करता है। चाची और गिरधारी इस समझौतावादी रीति का विरोध करते है। वे डाकुओं का प्रतिरोध करना कर्तव्य समझते है। गिरधारी गाव को आत्म-रक्षा के लिए स्वावलम्बी बनाना चाहता है। गाँव मे आग लग जाती है। पारस्परिक सहयोग से ग्रामवासी आग बुझाते गिरधारी दैन्य और अथ-सचयी प्रवृत्ति मे डाकू उत्पन्न होने का कारण देखता है। वह सहयोग, सहानुभूति और प्रेम को महत्त्व देता है। गाँव के लोग डाकुओं के आतक से गाँव छोड जाते हैं। गिरधारी और चाची डाकुओं का मुकाबला करने के निमित्त गाँव मे रह जाते हैं।

डाकू मगू गाव लूटने आता है। चाची उसके साथ पुत्रवत् स्नेह का व्यवहार करती है। वह उसका दूध से सत्कार करती है। वह कहती है—अरे तू बडा हो गया है, किन्तु मेरे लिए तो मगू ही रहेगा। प्यार-भरा

व्यवहार मंगू का हृदय पिघला देता है। वह स्वीकार करता है कि समाज के निहित स्वार्थी तथाकथित महाजन और राजा जैसे लोगों ने उसको बहकाया और कुकृत्य के लिए प्रोत्साहन दिया। गिरधारी मंगू को धन-लोलुप समाज-द्रोहियों से सावधान करता है। वह मंगू को पीडितों के हित में शक्ति लगाने की प्रेरणा देता है।

गोकुलदास जोरा और माल्या से मिलकर समाज-सुधारकों के विरुद्ध, षड्यंत्र करता है। ठाकुर स्वराज्य और परिवर्तन की बात को ढकोसला समझता है। वह प्राचीन रूढ़िवादी नीति के अनुसार यथास्थिति कायम रखने के लिए दुरभिसंधियों का सहारा लेता है। गिरधारी उसकी डकैती, राहजनी, लूट और शोषण की नीति से देश के बर्बाद होने की चेतावनी देता है। वह मंगू को भी डकैती जैसे बीभत्स कुत्सित कृत्य को त्याग सामाजिक जीवन बिताने की प्रेरणा देता है। मंगू आत्मसमर्पण करता है। ठाकुर गिरधारी को गोली मारना ही चाहता है कि मंगू उसका हाथ पकड़ लेता है। मंगू उसको क्षमा कर जेल ले जाता है। नाटक में गांधी जी के ट्रस्टीशिप और हृदय परिवर्तन का सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है।

मंजरी (पापाणी में संगृहीत रेडियो गीत-नाट्य) (सन् १९५८, पृ० ८०), ले० : जानकी वल्लभ शास्त्री; प्र० : लोक भारती, इलाहाबाद; *पात्र :* पु० ३; स्त्री २; *अंक-रहित, दृश्य* ५। *घटना-स्थल :* राजप्रासाद।

प्रारम्भ में राजा, रानी तथा विदूषक के हल्के परिहासात्मक स्थल हैं। दूसरी दृश्य में रानी के गुरु अपने योग-चमत्कार से विश्व-मोहिनी राजकुमारी मंजरी को प्रकट करते हैं। रानी मंजरी को बन्दी बना देती है। उधर राजा उसके वियोग में एक दिवस छिपकर उससे प्रणय-निवेदन करता हैं, जिसके अस्वीकृत हो जाने पर राजा मूर्छित हो जाता है। योगी योग-बल से मंजरी द्वारा राजा के प्रणय-प्रस्ताव को स्वीकार करा देता है किन्तु शीघ्र ही मंजरी उससे रूठ जाती है। मंजरी विवाहित राजा से विवाह करने का विचार त्याग देती है। उस समय मंजरी को ज्ञात होता है कि राजा उसके लिए युद्ध की तैयारी कर रहा है। युद्ध-आशंका से वह यह सम्बन्ध स्वीकार कर लेती है। अन्तर्द्वन्द्व में ग्रस्त मंजरी कटार द्वारा आत्मघात कर लेती है। प्रेमोन्मत्त राजा के प्रलाप के साथ गीतिनाट्य समाप्त होता है।

मन्दिर की दीवारें (सन् १९०५, पृ० ४८), ले० : शरदेन्दु रामचन्द्र गुप्त; प्र० : ठाकुर प्रसाद एंड संस बुकसेलर, वाराणसी; *पात्र :* पु० ६, स्त्री ५; *अंक :* ४; *दृश्य :* २, ५, ५, ६।

इसमें मन्दिर की उन दीवारों की गाथा है, जिनके नीचे ईश्वरभक्त मीरा गीत में सुख-चैन की बांसुरी बजाती रहती है। वह गीतों में ही अपने अरमानों के दीप जलाती है। अचानक एक दिन ये ही दीवारें उस बेगुनाह लड़की के लिए कब्र बन गईं, जिसके नीचे मीरा को छिपना पड़ा। वह न केवल अपने प्रियतम मोहन की निगाहों से बल्कि दुनिया-भर के निगाहों से सर्वदा के लिए ओझल हो जाती है।

अनाथ लड़की कल्याणी मीरा की सखी है। वह भी मन्दिर की दीवारों की तरफ पहला ही कदम उठाती है कि उसे किसी के रिवाल्वर का शिकार बनना पड़ता है। मोहन तथा गणेश दो बिछुड़े हुए भाई भी एक साथ मिल जाते हैं तथा मीरा और कल्याणी को रिवाल्वर का शिकार बना देते हैं। इस सामाजिक नाटक में प्रेम की विषमता दिखाना नाटककार का उद्देश्य प्रतीत होता है।

मगध-महिमा (इतिहास के आँसू में संकलित) (सन् १९५१, पृ० ८०), ले० : रामधारी-सिंह दिनकर; प्र० : अजन्ता प्रेस लि०, पटना; *पात्र :* २ अमूर्त पात्र; *अंक-रहित; दृश्य :* ८।

'मगध-महिमा' गीति-नाट्य मगध के गौरवशाली अतीत का भव्य चित्र प्रस्तुत करता है। इतिहास और कल्पना दो पात्रों

के माध्यम से दिनकर ने सैल्यूकस की पराजय तथा कलिंग-विजय की दृश्य-कल्पना की है। भारत का गौरवशाली विश्व-वन्दनीय अतीत दया, धर्म, करुणा से ही अनुप्राणित रहा है, दिनकर मगध-महिमा में यह मूलभावा लेकर चले हैं। यह लघु कथ्य वैचारिक स्तर पर विकसित हुआ है। कार्य-व्यापार अधिकांशतः सूच्य है।

मगध सुन्दरी (सन् १८७१, पृ० ५६), ले० रामेश्वर सिंह नटेश्वर, प्र० साहित्य संगम, गया, पात्र पु० ५, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ३, ३ २।
घटना-स्थल शाही महल तथा वन प्रान्त।

यह ऐतिहासिक नाटक गुप्तकाल की अपूर्व सुन्दरी चित्रलेखा के प्रेम के आधार पर लिखा गया है। सामन्त बीजगुप्त मगध की राजनटी को प्यार करता है किन्तु उसके हृदय में योगी कुमार गिरि की छाया भी अंकित है जिसे वह निकाल नहीं पाती है। चित्रलेखा अपने प्रणय पर अडिग कुमार गिरी के आश्रम में रहने लगती है। वह तपस्विनी भेष में योगिनी बनी रहती है। बीजगुप्त उसके प्यार में व्याकुल रहता है किन्तु शुद्ध प्रेम के समक्ष उसकी असफलता ही दृष्टिगोचर होती है। अन्त में चित्रलेखा अपनी कला पर पुनः उतर आती है और बीजगुप्त उसे प्राप्त करता है।

मजदूर की दुनिया (सन् १९५६, पृ० ५६), ले० रेवती कान्त सिंह, प्र० राष्ट्रभाषा पुस्तकालय, पटना ४, पात्र पु० १६, स्त्री १, अंक ३, दृश्य ५, ५, ४।
घटना-स्थल : गाँव एवं कारखाना।

इस सामाजिक नाटक में लेखक ने मजदूरों की दुर्दशा का स्पष्ट चित्र खींचने की चेष्टा की है। इसमें मंगल, वृन्दावन तथा सहतू गाँव के किसान है जो बाद में मजदूर हो जाते है। इन किसानों को जमींदार तथा मिल मालिक शमशेर सिंह अपने मिल मैनेजर, पाण्डेय जी तथा पुलिस अफसरों की मदद से जबरदस्ती जमीन से बेदखल कर देते हैं। किसान मिलकर इसका विरोध करते हैं तथा न्यायालय में मुकदमा पेश करते हैं लेकिन इस स्वार्थी तथा मुनाफाखोरी दुनिया में पैसे के बल पर ही न्यायालय में न्याय होता है जिससे वहाँ पर उनको निराशा ही हाथ आती है। मंगरू आदि किसानों को छः छः मास की सजा हो जाती है। अन्त में सभी किसान शमशेर सिंह की मिल में कार्य करने लग जाते हैं। वहाँ भी मजदूरों को बहुत दबाया जाता है। उनको तीन-तीन माह का वेतन तथा बोनस नहीं दिया जाता है तथा वेतन बढ़ाने के बजाय और घटा दिया जाता है। मजदूर नेता प्रकाश भी पैसे के लालच में आकर मजदूरों के खिलाफ हो जाता है। लेकिन मजदूर राजेश तथा मिल मालिक के लड़के मनोहर तथा पत्नी सुधा सभी मिलकर मिल में हड़ताल करा देते हैं। मिल मालिक का लड़का मनोहर तथा सुधा मजदूरों का बड़ी हिम्मत से साथ देते हैं। वह अपने पिता की परवाह नहीं करते। मनोहर हड़ताल को पूर्ण सफल बनाये रखने की कोशिश करता है। उसे पुलिस की लाठियाँ खानी पड़ती हैं जिससे वह घायल हो जाता है। अन्त में मिल मालिक शमशेर सिंह तथा मैनेजर को मजदूरों की एकता के सामने झुकना पड़ता है। शमशेर सिंह अपने पुत्र मनोहर तथा मजदूरों के सामने अपने किये हुए कर्मों लिए बड़ा क्षोभ प्रकट करता है। वह मिल का सारा कार्यभार मनोहर को सौंप देता है। मनोहर मिल के सभी मजदूरों का मजदूर न समझकर मिल का समान अधिकारी मानता है। सभी मजदूर मनोहर को एकता कायम रखने के लिए धन्यवाद देते हैं।

मझली महारानी (सन् १९५३, पृ० १३८), ले० सद्गुरु शरण अवस्थी, प्र० इंडियन प्रेस, प्रयाग, पात्र पु० २२, स्त्री ११, अंक ३, दृश्य ८, ६, ६।
घटना-स्थल राजप्रासाद, जंगल, एकान्त की रंगस्थली।

यह नाटक प० माखनलाल चतुर्वेदी की प्रेरणा से लिखा गया। इसमें राम वनवास के

पूर्व अभिषेक की प्रारम्भिक चर्चा से लेकर कैकेयी द्वारा वनवास तथा अन्त में राज्याभिषेक की कथा नाटक के रूप में वर्णित है। इसमें मझली रानी कैकेयी के चरित्र में अभूतपूर्व परिवर्त्तन दिखाया गया है। कैकेयी वशिष्ठ मुनि से प्रार्थना करती है कि मुझ पति-घातिनी का उद्धार कैसे होगा। वशिष्ठ जी समझाते हैं—"समय मृत्यु से उनकी असमय मृत्यु कहीं अच्छी है।" आगे चलकर वशिष्ठ जी कैकेयी को समझाते हुए कहते हैं—"वे (राजा दशरथ) स्वर्ग में अपनी प्रिय पतिव्रता पत्नी की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"—नाटक के अन्त में कैकेयी अपने हाथ से राम का राज्याभिषेक करते हुए मूर्च्छित हो जाती है।

मझोला के वागड़ (वि० २००८, पृ० ६५), ले० : डॉ० सत्यनारायण; प्र० : जनवाणी प्रकाशन, हरिसन रोड, कलकत्ता; पात्र : पु० १२, स्त्री १; अंक : ३, दृश्य : ४, ५, ५।

यह हास्य रस प्रधान नाटक है। इस नाटक में वागड़ सिंह सिपाही थाने के दारोगा गिरगिट चौबे के साथ गाँव में तहकीकात करने जाता है। वागड़ सिंह दारोगा की हर बात को काटता जाता है। इन दोनों का वार्तालाप हास्य रस पूर्ण है। दारोगा गाँव के जमींदार राजा अक्लमर्दन पाण्डेय के यहाँ रुकता है। राजा अक्लमर्दन पाण्डेय और गिरगिट चौबे में वार्तालाप होता है। पाण्डे की लड़की ने मैट्रिक की परीक्षा दी है, वह उसके विवाह के लिये चिन्तित है। गिरगिट चौबे उसके विवाह के लिये अपने लड़के भपोल का प्रस्ताव करता है। दरोगा का लड़का बड़ा मूर्ख है। जब वह विवाह करने जाता है तो गाँव वाले उसकी मूर्खता का मजाक उड़ाते हैं और कहते हैं कि वह तो अज्ञात का लड़का है। दारोगा समझता है कि पाण्डे भी मजाक करने वालों में सम्मिलित है। वह अक्लमर्दन पाण्डे के पास सन्देश भेजता है कि वह क्षमा माँगे। उसी रात अक्लमर्दन अपनी लड़की की शादी एक गरीब ब्राह्मण के साथ कर देता है और अपनी जायदाद भी उसी को देना चाहता है।

दारोगा महाजन को २०,०००) रु० का ठेका दिलाता है। वह बदले में एक टीन तेल, घी तथा नयनसुख कपड़ा चाहता है। महाजन घटिया सामान देकर दारोगा को धोखा देता है। दारोगा उस पर गुस्सा होता है।

मणि गोस्वामी (वि० १९८८, पृ० ७४), ले० : कृपानाथ मिश्र; प्र० : पुस्तक भंडार, लहेरिया सराय, पटना; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक-रहित; दृश्य : ६।
घटना-स्थल : बंगाली जमींदार का घर, बरामदा और आँगन।

नाटक की नायिका शामा अपने भाई का विवाह समाज के विरोध करने पर भी एक शूद्र के साथ करने को तैयार हो जाती है। किन्तु शामा का पिता इस विवाह का विरोध करता है। वह एक ब्राह्मण कुल का है जिसमें जाति-पाँति का बंधन विवाह के लिए आवश्यक माना जाता है। नाटककार अन्त में शामा की विजय ही दिखलाते हैं क्योंकि पिता अंत में बाध्य होकर अपने पुत्र का विवाह शूद्रा के साथ करने की सहमति दे देता है।

इस नाटक की भूमिका में नाटककार 'सत्यमेव जयते नानृतम्' का विरोध करता है। उसका कथन है कि इस युग में सत्य की पराजय और असत्य की विजय देखी जाती है।

मतवाली मीरा (सन् १९३७, पृ० १२६), ले : तुलसीराम शर्मा; प्र : मीरा मन्दिर, बम्बई; पात्र : पु० ३, स्त्री २; अंक : २; दृश्य-रहित।

इस ऐतिहासिक नाटक में मीराबाई के जीवन से सम्बन्धित क्रमबद्ध घटनाओं का वर्णन है। मीरा के जीवन-दृश्य के साथ उनके पदों का भी खूब प्रयोग किया गया है। इसकी विशेषता मीरा के जीवन को नाटकीय रूप में ढालने के साथ उपयुक्त स्थान पर उनके पदों का समावेश है।

मत्स्यगंधा (सन् १९३७, पृ० ६४), ले० उदयशंकर भट्ट, प्र० आत्मा राम ऐण्ड सन्स, दिल्ली, पात्र पु० २, स्त्री २, अंक-रहित, दृश्य ६।
घटना-स्थल गंगा तट, क्रीड़ा उद्यान।

'मत्स्यगंधा' पौराणिक वृत्तान्त पर आधारित एक मनोवैज्ञानिक गीतिनाट्य है। सम्पूर्ण गीतिनाट्य का केन्द्र बिन्दु मत्स्यगंधा है, जो इतिहास में सत्यवती के नाम से प्रसिद्ध है।

मत्स्यगंधा अपनी अंतरंग सखी के साथ पुष्प-चयन करती है। इसी समय छायामय अनंग का प्रवेश होता है। वह यौवन के प्रति मत्स्यगंधा को सचेष्ट करता है, उसका रहस्य समझाता है तथा उसे कामदान दे अदृश्य हो जाता है।

सूने तट पर एकाकी मत्स्यगंधा विचार-मग्न बैठी है। तभी पराशर ऋषि नदी पार कराने का अनुरोध करते हैं। पराशर को देखकर मत्स्यगंधा को यौवनाकांक्षा का आधार मिल जाता है।

मत्स्यगंधा और पराशर नौका में बैठे हैं। वासनाभिभूत पराशर मत्स्यगंधा से रतिदान मांगते हैं। मत्स्यगंधा स्वयं काम-विह्वला है। परिणामस्वरूप पार उतरने से पूर्व ही अपनी वासना की तृप्ति करके उसे चिर-यौवन का वरदान दे जाते हैं।

मत्स्यगंधा शान्तनु की पत्नी के रूप में प्रस्तुत होती है। शीघ्र ही मत्स्यगंधा वैधव्य को प्राप्त होती है।

उसका चिरकाम्य यौवन वैधव्य में अभिशाप बन जाता है, जिसके परिणाम-स्वरूप कामाग्नि में झुलसती मत्स्यगंधा कराह उठती है। इतने में ही अनंग आता है। मत्स्यगंधा उसे यौवन के उपभोग-निमित्त आमंत्रित करती है। पर अनंग उसे प्रताड़ित करता है, जिससे कामविह्वला मत्स्यगंधा चीत्कार कर उठती है।

मदन दर्शन (सन् १९५६, पृ० ६७), ले० अनिल कुमार, प्र० अज्ञात सम्भवत स्वयं-लेखक, पात्र पु० ३ स्त्री० १, अंक दृश्य-रहित।
घटना स्थल पर्वत।

इस गीतिनाट्य की कथा का आधार रामायण है। इसमें शिव के द्वारा कामदेव को भस्म कर देने की पौराणिक गाथा को कवि ने नए अर्थों और प्रतीकों के साथ प्रस्तुत किया है। इस नाटक के अनुसार शृंगार और संहार विश्व की दो शक्तियाँ हैं। प्रथम निर्माण का प्रतीक है तथा दूसरा विनाश का द्योतक न होकर वास्तव में कवि के अर्थों में नव निर्माण का प्रतीक है। मदन के रूप में विश्व की विलासिता अपराजेय विरक्त पौरुष से टकराती है जिसमें वह जल कर क्षार हो जाती है। ऐसा होने के उपरान्त एक नए निर्माण को स्थान मिलता है, क्योंकि जिस स्थान की रिक्तता मदन के क्षार होने से होती है, उसकी पूर्ति के लिए एक नवीन संस्कार का उदय होता है।

मदन-दहन 'तमसा' में संकलित रेडियो गीति नाट्य(सन् १९६८, पृ० ७०), ले० जानकी वल्लभ शास्त्री, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ५, अंक-रहित; दृश्य ३।
घटना-स्थल कैलास पर्वत।

यह 'मदन-दहन' काम दहन के पौराणिक प्रसंग पर आधारित गीतिनाट्य है। असुरों से पराजित देवगण शिव को प्रसन्न करने के लिए स्तुति करते हैं क्योंकि शिव-पुत्र द्वारा ही राक्षसों का वध होगा। ब्रह्मा तथा इन्द्र को अनायास ही कामदेव का विचार आता है और उसे अपनी रक्षा-पूर्ति का साधन बनाने का निश्चय करते हैं। वासन्तिक वातावरण में वसन्त तथा मदन दोनों से उमा की सखियाँ ऐसी युक्ति पूछती हैं, जिससे उमा शंकर की कृपा प्राप्त कर सकें, किन्तु शिव की योग साधना से भयभीत कामदेव अपनी असमर्थता व्यक्त करता है। इस पर रति नारी हृदय का पक्ष लेती हुई उस पर व्यंग्य करती है। कामदेव इस चुनौती को स्वीकारते हुए उमा को आश्वासन देता है। उधर प्रकृति के मादक वातावरण से प्रभावित शिव की समाधि भंग होती है। उमा को

सम्मुख रखकर काम को शर-सन्धानते हुए देखकर शिव कुपित हो जाते हैं और आग्नेय नेत्रों से काम को भस्म कर देते हैं। रति के विलाप पर आकाशवाणी द्वारा काम की अशरीरी सत्ता की उद्घोषणा के साथ ही गीतिनाट्य समाप्त हो जाता है।

मदन-मंजरी (सन् १८८४, पृ० ६३), ले० : अमरसिंह गोटिया और जगेश्वर दयाल; प्र०: भारत जीवन प्रेस, वाराणसी; *पात्र :* पु० ५, स्त्री ५; *अंक :* ८; इस नाटक में दृश्य की जगह अंकों के साथ-साथ जीव का पतन एवं उत्थान दिखाया गया है।
घटना-स्थल : पुष्प वाटिका, राजा मदन मोहन की सभा, मंजरी का मंदिर।

इस नाटक में नाटककार ने नर-नारी का प्रेम दर्शाया है। मंजरी राजा को देख कर उन पर मंत्र मुग्ध हो जाती है और उनका प्रणय पाने के लिए व्याकुल हो जाती है। अन्त में दोनों का मिलन होता है परन्तु मंजरी अपने पति की परीक्षा लेती है कि वह परायी स्त्री पर कहीं अपना दिल तो नहीं दे बैठे हैं परन्तु राजा उस परीक्षा में सफल हो जाता है।

मदनिका 'आरसी' *ग्रन्थावली* में संकलित संगीत रूपक (सन् १९४१, पृ ७०), ले० : आरसीप्रसादसिंह; प्र०: तारामंडल मुजफ्फरपुर; *पात्र:* स्त्री ३; *अंक-दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल : नदी।

'मदनिका' वसन्त ऋतु की मादकता से परिपूरित एक लघु संगीत-रूपक है। माधविका मंजुलिका तथा मदनिका आदि स्वर्ग अप्सराएँ पृथ्वी पर मदनोत्सव मनाती हैं। वसन्तागमन पर जहाँ प्रकृति तक अद्भुत मादकता से आप्लावित रहती है। वहाँ मानव की इस वातावरण के प्रति निःस्पृह देखकर लेखक को क्षोभ होता है। वह देखता है कि आज इन सांस्कृतिक पर्वों के प्रति मानव का रागात्मक स्रोत लुप्त हो रहा है। कदाचित् इसीलिए मानव युद्धोन्मुख हो रहा है।

मदिरा देवी (सन् १९२५, पृ० ६८), ले० : आरजू साहब; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस; *पात्र :* पु० १०; स्त्री ५; *अंक :* ३; *दृश्य:* ६, ४, ५।
घटना-स्थल : मदिरालय, बैंक, मकान।

यह एक शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक है। इस में दिखाया गया कि किस प्रकार रामचन्द्र (नाटक का नायक) बैंक फेल होने पर निर्धन हो जाता है और व्यथा भुलाने को मदिरा पीना शुरू कर देता है परन्तु मदिरा उसे और भी पतन के गर्त में ढकेलती है। नाटक उद्देश्यपूर्ण है। पारसी थियेट्रिकल कम्पनी में खेलने की दृष्टि से लिखा गया है।

मधु ऋतु मुस्काई (सन् १९६३, पृ० ४०), ले० : मनोहर प्रभाकर; प्र० कल्याणमल एंड संस, जयपुर।

जसका तथा अन्य संगीत-रूपक में संकलित।

'मधु ऋतु मुस्काई' ऋतु सम्बन्धी एक लघु संगीत-रूपक है, जिसमें वसन्त के मादक रूप का वर्णन किया गया है।

मधुर मिलन (वि० १९८०, पृ० ६८), ले०: जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी; प्र० : हिन्दी पुस्तक भवन, १८१, हरिसन रोड, कलकत्ता; *पात्र :* पु० १६, स्त्री ८; *अंक* ३; *दृश्य:* ७, ६, ६।
घटना-स्थल : बाग का कमरा, विवाह मंडप देवी दयाल का कमरा।

यह एक सामाजिक नाटक है, जिसमें हिन्दू समाज विशेषकर मारवाड़ी समाज और देश की विभिन्न परिस्थितियों को दर्शाया गया है।

मध्यान्तर (वि० २०१८, पृ० ६४), ले० : अनिरुद्ध यदुनन्दन मिश्र, ; प्र०: श्री गंगा पुस्तक मंदिर, पटना-४; *पात्र:* पु० ७, स्त्री २; *अंक-रहित; दृश्य:* १०।

यह एक पारिवारिक जीवन पर लिखा गया नाटक है बीमारी से सभी चिन्तित हैं। बहुत प्रयास करने पर भी पिता का जीवित

रहना कठिन है। मृत्यु से कोई नहीं लड सकता, किन्तु राजू कहता है कि नहीं, नहीं बाबूजी, यह कभी नहीं हो सकता। मैं आपको कभी न मरने दूंगा। इस प्रकार परिवार की अन्य स्नेहयुक्त बातों, और समस्याओं से पूर्ण यह नाटक आज की स्थिति प्रगट करता है।

मन की उमग (वि० १९४३, पृ० ३२), ले० अम्बिका दत्त व्यास, प्र० देवी प्रसाद नारायण यन्त्रालय, मुजफ्फरपुर, पात्र पु० ६, स्त्री १, *अक दृश्यरहित।*
घटना-स्थल कोई उल्लेख नहीं। केवल वार्तालाप है।

व्यास जी ने धर्म सभाओ के उत्सवों मे अभिनय के लिए वार्तालाप के आधार पर कई लघु रूपक लिखे थे। उनको इसमे इस रूप में सकलित कर दिया गया है कि एक रूपक बन जाए। इस लघु रूपकों का अभिनय धर्म-सरक्षिणी सभा मुजफ्फरपुर में हुआ। देवी प्रसाद जी लिखते हैं—"इनके अभिनय को देखते न जाने कहा से भक्ति बरस पडी कि सबके कठ भर गये, आँख भीग गई और रोंए खडे हो गये।"

नाटक के प्रारम्भ मे भारत दुखी होकर धर्म से कहता है कि आप हमें छोडकर कहा जा रहे हैं? धर्म कहता है कि भारतवासी धर्म-कर्म भूलते जा रहे हैं। पर तुम धीरज धरो, अभी इस देश मे धर्मात्मा हैं। तदुपरान्त धर्म और अधर्म मे सस्कृत मे विवाद होता है। अधर्म कृपाण निकालकर धर्म की हत्या करना चाहता है किन्तु धर्म के सहायको को देख कर अधर्म भाग जाता है। तदुपरान्त सस्कृत भाषा विलाप करती है। इन्द्रलोक से गन्धर्व आता है। वह भारत मे जन्म लेने की इच्छा प्रकट करता है।

मनोरजनी नाटक (सन् १८६०, पृ० १२४), ले० रघुवीर सिंह वर्मा प्र० बाबू महावीर प्रसाद, मत्री आर्य समाज, कलकत्ता, पात्र पु० ११, स्त्री १, अक ६, दृश्य १, १, २, २, २, ११।

प्रस्तुत नाटक मे सतीत्व के गौरव पर बल दिया गया है। इसकी नायिका मनोरजनी अनेक विघ्न-बाधाओ के होते हुए भी अपने सतीत्व पर दृढ रहती है।

मनोरथ (सन् १९६६, पृ० ८०), ले० श्री भाग्यनारायण झा, प्र० योगी प्रकाशन, कारज, दरभगा, पात्र पु० १३, स्त्री २, अक ३, दृश्य १५।
घटना-स्थल पूजागृह, गाव की पाठशाला, कालेज-छात्रावास।

'मनोरथ' की कथावस्तु मिथिला के लोक-जीवन पर आधारित है। इसमे मानव-हृदय की भावनाओ को सुन्दर ढग से व्यक्त किया है। नाटक एक दरिद्र परिवार की कथावस्तु को लेकर चलता है। राजे-झा के पास पैसे का अभाव है, फिर भी वह अपने बेटे लक्ष्मीनाथ की शिक्षा की उचित व्यवस्था करता है। गाँव के कुछ ऐसे लोग हैं जो आधुनिक शिक्षा के साथ ही साथ राजे-झा की कटु आलोचना करते हैं। ऐसी स्थिति मे गगानाथ झा इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उसने ठीक ही किया कि अपने बेटे को आधुनिक शिक्षा की गन्ध तक नही लगने दी। इधर कालेज छात्रावास म द्रव्याभाव के कारण लक्ष्मीनाथ और उसके मित्र उदयकान्त और भोगेन्द्र अत्यधिक चिन्तित हैं। अन्तत वे लोग घर के लिए प्रस्थान करने का निर्णय कर लेते हैं। भोगेन्द्र के कहने से वे लोग उस दिन रुक जाते हैं। राजे झा और उनकी पुत्री शीला अपनी आर्थिक स्थिति पर अत्यधिक चिन्तित हो जाते हैं कि लक्ष्मीनाथ को समय पर पैसा नहीं मिलेगा तो वह क्या पढेगा? जमीन बेचने के कारण गगा नाथ राजे झा की अत्यधिक आलोचना करते हैं, किन्तु राजे झा का यह विश्वास है कि वे जमीन बेचकर हीरा उपार्जित कर रहे है। इसी समय उनका कनिष्ठ पुत्र आकर यह सूचित करता है कि लक्ष्मीनाथ सैकेण्ड डिविजन से पास कर गये हैं। प्रसन्नता की सीमा नही रहती है। अब नसीब झा की पत्नी साधना अपने बेटे को पढाने के लिए तत्पर हो जाती है। अन्तत लक्ष्मीनाथ की

जादी अच्छी जगह नवयुवती के माध्यम हो जाती है और अच्छी नौकरी भी मिल जाती है। शनैः शनैः राजेश की दरिद्रता समाप्त हो जाती है और उनका मनोरथ पूर्ण हो जाता है।

ममता (सन् १९६७, पृ० ११६), ले०: हरिकृष्ण 'प्रेमी'; प्र०: राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; पात्र: पु० ६, स्त्री २; अंक: ३; दृश्य: ५, ५।
घटना-स्थल : मकान की बैठक, रजनीकान्त का मकान।

रजनीकान्त एक वकील है जो कला नामक नवयुवती से प्रेम करता है। एक दिन रजनीकान्त के पिता के मित्र रमाकांत अपनी पुत्री लता के साथ उसके घर आते हैं। रमाकांत रजनीकांत से कहते हैं कि तुम्हारे पिता ने मेरी बेटी को अपनी बहू बनाना स्वीकार किया है। रजनीकांत लता से विवाह के लिए इन्कार कर देता है। इस घटना से पूर्व ही लता के भाई यशपाल पर खून करने का अपराध लग जाता है। रजनीकान्त उसके लिए उसकी सहायता का वचन देता है। यशपाल असली खूनी को पकड़ने के लिए चला जाता है। एक दिन अचानक दुलहिन के वेश में लता रजनीकान्त के पास आती है और कहती है कि हमारा मैनेजर विनोद मुझसे बलपूर्वक विवाह करके सारी सम्पत्ति हड़पना चाहता है, अतः तुम मेरी रक्षा करो। रजनीकान्त कला के कहने पर लता से विवाह कर लेता है।

कुछ समय पश्चात् एक दिन विनोद लता के पास आता है और उसे अपने जाल में फँसाकर कैदी बना लेता है, जिससे वह लता की सारी सम्पत्ति प्राप्त कर सके। रजनीकान्त लता के वियोग में शराबी बन जाता है। इसी बीच रजनी कला से विवाह करता है, परन्तु लता घर वापिस आ जाती है। विनोद पकड़ा जाता है। कला के भाई यशपाल पर खून करने का अपराध झूठा सिद्ध होता है। क्योंकि वास्तविक खूनी और ही होता है। अन्त में लता और कला एक साथ रहने की प्रतिज्ञा करती हैं।

मयंकमंजरी (सन् १८९१, पृ० १५६), ले० : किशोरीलाल गोस्वामी; प्र० : नवल किशोर प्रेस, लखनऊ; पात्र : पु० १०, स्त्री ६; अंक : ५; दृश्य रहित।
घटना-स्थल : मनोरमा का भवन, सुमन्तदेव पुष्पोद्यान की बारहदरी।

सुमन्तदेव की कन्या मयंकमंजरी का वीरेन्द्रदेव से स्वाभाविक प्रेम हो गया है। और वह पतिरूप में वरण करना चाहती है किन्तु उसके पिता बेटी का ब्याह बसन्तदेव के साथ करना चाहते हैं। बसन्तदेव मयंकमंजरी से कहता है 'तुम राजा की रानी बनोगी और मैं सदा के लिए गुलाम बना ही हूँ।' किन्तु मयंकमंजरी का मन वीरेन्द्रदेव में लगा है।

दूसरी कथा मंत्री अनन्तदेव के पुत्र बसन्तदेव की है जिसने अवन्तीपति के मंत्री की ब्याही बालिका को पुनर्विवाह के लिए बन्दी बनाकर रखा है। वीरेन्द्रदेव बसन्तदेव को धमकाता है कि यदि तू अभी कन्या को नहीं प्रगट करेगा तो तुझे प्राणदण्ड की आज्ञा दी जायेगी। बसन्तदेव के दुश्चरित्र सिद्ध होने पर सुमंतदेव अपनी कन्या मयंकमंजरी का विवाह नरेन्द्रसिंह के साथ कर देता है और पुत्री के साथ अन्याय करने की क्षमा-याचना करता है। जाबालि ऋषि नवदम्पति को आशीर्वाद देते हैं। इस भरत वाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है—

सब मेटि अन्ध परम्परा आनन्द मही मंगल भरै॥

मर्दानी औरत (सन् १९४७, पृ० १८०), ले० : जी० पी० श्रीवास्तव; प्र० : हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता; पात्र : पु० २६, स्त्री ६; अंक : ३; दृश्य : ८, ६, ६।
घटना-स्थल : मदन का मकान।

यह एक सामाजिक हास्यपूर्ण शिक्षाप्रद नाटक है। इसमें नाटककार सम्पादक बन्टाधार की कटु आलोचना करता है। मोहन एक प्रसिद्ध लेखक है जिसे साहित्य को सुधारने के लिए अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है लेकिन

फिर भी वह अपने पथ पर अडिग रहता है। सत्यानाशी एक मर्दानी औरत है, जो अपने को जीवन के सभी पहलुओं पर मर्दों के समान समझती है। वह भी एक प्रसिद्ध लेखिका है। वह अपने पति द्वारा बार-बार ठुकराये जाने पर भी लेखन-कार्य को नहीं छोड़ती। वह अनेक कठिनाइयों को झेलते हुए साहित्य को अच्छा रूप प्रदान करने में लगी रहती है। अन्त में सत्यानाशी की कार्य-कुशलता तथा मर्दानगी से उसे शोभारानी नाम द्वारा सुशोभित किया जाता है। सच्चे साहित्यकारों की दुर्दशा तथा नाटक-मंडलियों के संचालक, सेठ एवं मूर्ख सम्पादकों की धन बटोरने की आदतों का भी संकेत किया गया है।

मर्यादा (सन् १९५०, पृ० ६६), ले० तुलसी भाटिया 'सरल', प्र० भावना क्षितिज, राम नगर, आलम बाग, लखनऊ, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ६, ६, ५।
घटना-स्थल बैठक, डिग्री कॉलिज, कमरा, प्रतियोगिता भवन।

इस सामाजिक नाटक में सहपाठी छात्र छात्रा की प्रणय कथा है।

मनोज एक शरणार्थी युवक है। वह पाकिस्तान से विस्थापित होकर भारत आया है। शरणार्थी जीवन की कटुता में वह विक्षिप्त सा रहता है, परन्तु उसकी बहन मंजु उसे निरन्तर धैर्य तथा साहस देती रहती है। वह रवीन्द्र कॉलेज के आचार्य की अनुकम्पा से वहाँ का छात्र बन जाता है तथा एक वाद विवाद प्रतियोगिता में उक्त कालेज की प्रतिभाशालिनी छात्रा अर्चना से अधिक अंक प्राप्त करता है। अर्चना 'इस पराजय में विजय का यह मधुर अभिमान कैसा' बोध करती हुई मनोज की तरफ आकर्षित होती जाती है और क्रमश वे प्रणय-सूत्र में बँध जाते हैं। मधुरिका इस प्रणय-प्रसंग में व्यवधान उपस्थित कर मनोज को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करती है। आर्थिक कठिनाइयों के कारण मनोज अपना अध्ययन स्थगित कर मधुरिका को पढ़ाना स्वीकार कर लेता है। उधर मधुरिका अर्चना पर नैतिक एवं सामाजिक दबावों का भय दिखाकर उससे स्वीकार करवा लेती है कि वह मनोज को राखी बाँध दे। राखी बाँधने के अनन्तर भी वे एक-दूसरे को भुला नहीं पाते और उनका अन्तर्द्वन्द्व अत्यन्त प्रबल हो उठता है। अन्तत वे अपनी मूल भावनाओं को बदलने में असमर्थ रहते हैं तथा भाई बहन के ढोंग को त्याग कर पति-पत्नी का सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। मधुरिका अपने सभी प्रयत्नों में विफल रहती है तथा अर्चना की बड़ी बहन मृणालिनी उन्हें अभयदान दे देती है।

महात्मा ईसा (वि० १९७६, पृ० १४७), ले० बेचैन शर्मा 'पाण्डेय उग्र', प्र० मनमोहन पुस्तकालय, काशी, पात्र पु० १६, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य १२, १२, १२।
घटना-स्थल काशी की सड़क, हरोद का महल।

इस नाटक में ईसा मसीह को काशी के विद्वान् संन्यासी विवेकाचार्य का शिष्य माना गया है। ईसा मसीह की अवस्था बीस वर्ष की है। विवेकाचार्य उन्हें भगवद्गीता, बुद्ध-चरित्र के द्वारा कर्मयोग का पाठ पढ़ाते हैं। विवेकाचार्य की शिष्या एक अनाथ बालिका शान्ति यूरोशलीम में कोढ़ियों की सेवा के लिए जा रही है। उसी समय हेरोद का सेनापति शावेल उसका हाथ पकड़कर कहता है "प्रिय, तिरस्कार न करो। प्यारी! आओ हृदय में छिपा लूँ।" शान्ति कटार निकाल कर उसे मारने चलती है तो ईसा उसे क्षमा कर देने का आग्रह करते हैं। इसी प्रकार शावेल की क्रूरता से ईसा को सूली दी जाती है। मरियम रोदन करती है। ईसा के कपड़े उतार लिये जाते हैं और उसके हाथ-पैर में कीलें ठोंक दी जाती हैं। शान्ति भी चिता पर जल जाती है। ईसा की मृत्यु के उपरान्त उनके अनेक शिष्य बन जाते हैं और महात्मा ईसा की जय जयकार के साथ नाटक समाप्त होता है।

महात्मा कबीर (सन् १९२२, पृ० १३६), ले० : श्रीकृष्ण हसरत; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० २२, स्त्री ६; अंक : ३; दृश्य : ८, ७, ५।

इस नाटक में हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक सौहार्द्र उत्पन्न करने का सुन्दर प्रयास किया गया है।

इसमें महात्मा कबीर के जीवन सम्बन्धी कार्यों का उल्लेख है। कबीर जीवन के प्रारंभ में जुलाहा है। कपड़े बुनकर अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं। उन्हें हिन्दू-मुसलमान दोनों प्रिय हैं। गुरु रामानन्द से शिक्षा लेकर समाज-सुधार में लग जाते हैं जनता को अध्यात्म-चिंतन एवं एकता से रहने का उपदेश देते हैं। इसलिए कबीर के मरने के बाद हिन्दू-मुसलमान दोनों में उनकी लाश के लिए झगड़ा होता है। पर अन्ततः लाश के स्थान पर दोनों को पुष्प ही प्राप्त होते हैं।

मशरिकी हूर (सन् १९२७, पृ० १७८), ले० : राधेश्याम कथा वाचक; प्र० : श्री राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली; पात्र : पु० ८, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ७, ६, ४।
घटना-स्थल : घर, राजमहल।

नाटक की नायिका हमीदा नाटक में प्राण-प्रतिष्ठा करने वाली प्रमुख पात्रा है। हमीदा एक वीर पिता की बेटी है। उसके हृदय में दया और उदारता की स्रोतस्विनी बह रही है। वह एक बहादुर लड़की है जो छोटे-छोटे परिन्दों पर तीर चलाना पसन्द नहीं करती। वह कहती है 'मुझे तो शेर के शिकार का शौक है।' वह परोपकार में अपने प्रेमी दिलेर जंग को शाहजादी रोशन-आरा के हाथों में उसके सौभाग्य साधन के लिए सानन्द समर्पण कर देती है। हमीदा नाटक में अंत तक लड़के के रूप में काम करती है। जब रोशन आरा से प्रेम बढ़ जाता है तो वह हमीद से (हमीदा) शादी के लिए कहती है पर जब उसे रहस्य मालूम होता है तो व्याकुल हो जाती है। लेकिन हमीदा तभी अपने प्रेमी को उसे समर्पण करती है।

न्यू अल्फ्रेड नाटक कम्पनी ऑफ बम्बई द्वारा अभिनीत।

महत्त्व किसे ? (सन् १९४७, पृ० ७५), ले० : सेठ गोविन्ददास; प्र० साहित्य भवन लिमिटेड प्रयाग; पात्र : पु० ६ स्त्री १। घटना-स्थल : सेठ की कोठी।

कर्मचन्द असहयोग-आन्दोलन के आवेश में आकर प्रचार कार्यों, दीन जनों और सार्वजनिक संस्थाओं को दान देता है; भावुकता-वश कृषकों तक से रुपया वसूल नहीं करता। रुपया डूबने के स्थान पर कर्ज वसूली के लिए वह सरकारी अदालतों में नालिश नहीं करना चाहता। परिणाम यह निकलता है कि कर्मचन्द निर्धन हो जाता है। जो पुरुष उसकी पहले प्रशंसा किया करते थे अब कर्मचन्द को मिथ्या आरोपों से दूषित करने लगते हैं। उसमें हर तरह की चारित्रिक दुर्बलताएं आ जाती हैं। एक पूँजीपति तो अधिक से अधिक व्याज वसूल करते रहने पर भी उसकी गिरफ्तारी का वारण्ट निकलवा देता है और जेल भेजने में कोई कसर नहीं रखता। इस आपत्ति के समय में चतुर सत्यभामा अपना खोया हुआ कारोबार फिर से प्राप्त करने में लगी रहती है। जब कारोबार पहले की तरह हो जाता है तो कर्मचन्द को समाज आदर की दृष्टि से देखने लगता है।

कर्मचन्द के क्षेत्र के लोग उसको सार्वजनिक क्षेत्रों में बढ़ावा देते हैं। अब कर्मचन्द चुनाव के बाद मंत्री बनने की सोचता है। प्रश्न यह उठता है कि महत्त्व किसे ? त्याग को या धन को ? उत्तर है कि हमेशा त्याग से काम नहीं चलेगा, सम्पन्नता का भी निजी महत्त्व है।

महर्षि वाल्मीकि (सन् १९५२, पृ० १८८), ले० : पं० राधेश्याम कथावाचक; प्र० : श्री राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली; पात्र :

पु० १४, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ६, १०, ४।
घटना-स्थल जगल।

यह एक पौराणिक नाटक है। सम्पूर्ण नाटक मे एक ही चरित्र की प्रधानता है।

ससार मे सीता-चरित्र की विमलता को सिद्ध करने के लिए वाल्मीकि ने रामायण की रचना की। सीता से स्नेह रखने हुए भी भगवान् राम अपनी गद्दी को कलक से बचाने के लिए सीता को त्याग देते है। अन्त तक राम और सीता दोनों ही अपने-अपने धर्मो को निभाते हैं। वाल्मीकि सीता के सतीत्व को सिद्ध करके उनको राम की सहधर्मिणी स्वीकार करवाते हैं। अन्त मे वाल्मीकि की विजय होती है।

महल और झोंपडी (सन् १९६८, पृ० ११३), ले० दशरथ ओझा, प्र० फैन ब्रादस, चाँदनी चौक, दिल्ली, पात्र पु० ११, स्त्री ४, अक ४, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल कुम्भलगढ का पर्वतीय प्रदेश, उदयसागर का तट, हल्दीघाटी का पर्वतीय, युद्धशिविर (कुम्भलगढ)।

चित्तौड का त्याग करने के आठ वर्ष उपरान्त सन् १५७६ से १५८० ई० तक की, अकबर और महाराणा प्रताप के सघर्ष की घटनाओं के आधार पर यह नाटक लिखा गया है। कुम्भलगढ मे महाराणा प्रताप सरदारो से वार्तालाप कर रहे हैं। उनके भाई जगमल की अध्यक्षता मे मुगल-सेना कुम्भलगढ पर आक्रमण करती है। जगमल के हृदय मे कुम्भलगढ को देखकर परिवार के प्रति प्रेम उमडता है। वह प्रताप को बन्दी बनाने का सकल्प छोडकर भाई के प्राणो की रक्षा करता है। जगमल को पाकर महाराणा का परिवार प्रसन्न हो उठता है। भील-कन्या राजमती जगमल से प्रेम करती है। वह उसे मुगल सैनिको से बचाती है, दूसरे अक मे राजा मानसिह सन्धि का प्रस्ताव लेकर महाराणा प्रताप से मिलने आते हैं। पर महाराणा प्रताप मानसिह के साथ भोजन नही करते अत मानसिह अपने को अपमानित समझकर क्रुद्ध हो यह कहकर चले जाते हैं कि तुम लोग इस झोंपडी मे भी न रहने पाओगे।

तृतीय अक मे हल्दीघाटी की लडाई होती है। मानसिह के रुष्ट होने से अकबर महाराणा प्रताप को कुचलने के लिए आसफ खाँ, गाजी खाँ, जगन्नाथ कछवाहा, करना, माधोसिह आदि हल्दीघाटी की लडाई करते हैं। बदायूँनी युद्ध का इतिहास युद्ध-क्षेत्र के एक कोने मे बैठकर लिखता है। शक्तिसिह अपने भाई प्रताप के प्राणो की रक्षा सकट के समय उनका राजछत्र अपने सिर पर धारण करके करते है। युद्ध-क्षेत्र मे शक्तिसिह और जयमल मारे जाते हैं। राणा प्रताप चेतक के प्रयास से प्राण बचाने मे समर्थ होते हैं। चतुर्थ अक मे मानसिह के प्रयत्न से पुन मुगलो का आक्रमण होता है। महाराणा के सैनिक छापा मार कर मुगलो पर धावा बोलते हैं। एक दिन खानखाना और मानसिह का परिवार छापामारों के हाथ आ जाता है। मुगल सन्धि को विवश हो जाते है। महेशानन्द के आश्रम मे दोनो पक्षो मे सन्धि होती है। खानखाना के प्रयास से मुगल-सेना कुम्भलगढ से हटा ली जाती है।

महाकवि कालिदास नाटक (वि० २००६, पृ० १७०), ले० 'हृदय' और 'रुद्र', प्र० अमर भारती, काशी, पात्र पु० १७, स्त्री ६, अक ६, दृश्य ५, ५, ४, ३, ८, ५।
घटना-स्थल महाकालेश्वर मन्दिर का मडप।

यह नाटक महाकवि कालिदास के जीवन पर आधारित है। यह नाटक दो भागो मे विभाजित है—

(१) पूर्व कालिदास (२) उत्तर कालिदास। पूर्व कालिदास की कथा मे कालिदास की मूर्खतावश विद्योत्तमा से विवाह, विद्योत्तमा द्वारा उनका गृह निष्कासन काली के प्रसाद से उनका विद्वान् बनना तथा विक्रमादित्य के रत्नो मे प्रवेश होने की कथा है। उत्तर कालिदास मे कालिदास के मित्र देवह की कन्या जया को शकराज हरण कर ले जाता है। विक्रमादित्य तथा शको म युद्ध

होता है। एक बार विक्रमादित्य लहूलुहान कालिदास के पास आते हैं और कालिदास से उत्साहित होकर पुनः युद्ध करते हैं और उनकी विजय होती है। उधर शकराज की पुत्री डोला कालिदास से प्रभावित होकर जया के साथ आकर उनसे मिलती है। एक राजद्रोही विचित्र शक्ति जो शकों से मिला था कालिदास को बाण से घायल कर देता है परन्तु बन्दी बना लिया जाता है। उधर डोला घायल कालिदास का उपचार कर उन्हें शकों के बाणों से मुक्ति दिलाती है और इस उपलक्ष्य में अपने पिता शकराज को मुक्त करा लेती है। विचित्रशक्ति पागल हो जाता है। उसी विजय के उपलक्ष्य में विक्रम-संवत् नाम से नया संवत् प्रचलित किया जाता है।

महाकवि कालिदास (वि०२००१, पृ०९४), लें० : सीताराम चतुर्वेदी; प्र० : अमर भारतीय प्रकाशन, काशी; पात्र : पु० १३, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : ५, ५, ४। घटना-स्थल : महाकालेश्वर का मन्दिर, राजपथ, अन्तःपुर, घर, उपवन, राजसभा, राजभवन, शयन कक्ष, मार्ग, गृह।

उज्जैन के अधिपति विक्रमादित्य के नवरत्नों में महाकवि कालिदास को विश्व-ख्याति प्राप्त होती है। प्रारम्भ में वे एक मूर्ख एवं गाय के चरवाहे होते हैं। विद्योत्तमा नाम की तत्कालीन विदुषी के पांडित्य से पराजित होकर पंडित लोग षड्यंत्र रचते हैं और कालिदास के साथ विद्योत्तमा का विवाह करा देते हैं परन्तु पहले ही दिन मूर्खता प्रकट हो जाने पर विद्योत्तमा कालिदास को गृह से निष्कासित कर देती है। काली के मंदिर में जाकर कालिदास मंत्र जप करके वाक्-सिद्धि प्राप्त करते हैं और जब वे वाक्सिद्धि प्राप्त करके लौटते हैं तो विद्योत्तमा उन्हें स्वीकार कर लेती है। इसके बाद वे विक्रमादित्य की सभा के राजपंडित नियुक्त हो जाते हैं।

महाकवि विद्यापति (सन् १९६५, पृ० ६६), लें० : राजेश्वर झा; प्र० : अमरनाथ प्रकाशन, रनुआर सहरसा; पात्र : पु० ८, स्त्री ५; अंक : ५; दृश्य : २०। घटना-स्थल : विद्यापति का संगीतालय, हरिमिश्र की पाठशाला, शिवसिंह का राज-महल, देवसिंह की राजसभा, दिल्ली सुल्तान महमूदशाह का दरबार, कैलाश नगर एवं विद्यापति-गृह।

इस ऐतिहासिक नाटक में विद्यापति और उनके आश्रयदाता महाराजा देवसिंह का चित्रण है। विद्यापति अपनी प्रतिभा से अपने आश्रयदाताओं को अत्यधिक प्रसन्न रखते हैं। महारानी लखिमा विद्यापति के संगीत से अत्यधिक प्रभावित हैं और वे उनकी प्रशंसा सर्वदा करती हैं। इसी समय दिल्ली का सुल्तान महमूदशाह मिथिला पर आक्रमण करता है और युद्ध-स्थल से शिवसिंह बंदी होकर दिल्ली चले जाते हैं। सम्पूर्ण मिथिला में शोक का वातावरण परिव्याप्त हो जाता है। विरहानुभूति में लखिमा धीरे-धीरे क्षीण होने लगती है जिससे विद्यापति अधिक चिन्तित हो जाते हैं। वे महमूदशाह के साथ युद्ध करने के लिए भी तत्पर हो जाते हैं, किन्तु लखिमा उन्हें अस्त्र-प्रयोग करने का आदेश नहीं देती है। कारण वह जानती है कि किसी भी तरह युद्ध में हम उनसे विजयी नहीं हो सकेंगे। अतएव लखिमा विद्यापति से शास्त्र-विषयक ज्ञान का प्रयोग करने का आग्रह करती है। विद्यापति अपने संगीत-रूपी तीर से यवनपति की छाती को बेध देते हैं और वह प्रसन्न होकर शिवसिंह को बन्धन-विमुक्त कर देता है। पुनः सम्पूर्ण मिथिला में प्रसन्नता का वातावरण परिव्याप्त हो जाता है। लखिमा शिवसिंह को देखकर आनन्द-विह्वल हो जाती है और विद्यापति का समुचित सम्मान करती है।

महाकाल (रेडियो गीत-नाट्य), (सन् १९५३ पृ० ६४), लें० : भगवती चरण वर्मा; प्र० : भारतीय भण्डार, प्रयाग; पात्र : पु० ५, स्त्री ५; अंक : १; दृश्य : ३।

तीन लघु दृश्यों में संयोजित 'महाकाल' सृष्टि एवं प्रलय के दार्शनिक तथा वैज्ञानिक

तथ्यों पर आधारित एक प्रतीकात्मक गीति-नाट्य है। महाकाल असीम का प्रतीक है, जिसे वेदान्त ब्रह्म तथा भौतिक विज्ञान शक्ति-पुन्ज कहता है। कवि ने महाकाल के इस शक्ति-पुन्ज में चेतना की कल्पना की है। महाकाल में शक्ति तत्त्व के साथ चेतना तत्त्व की जाग्रति, सृष्टि, सुषुप्ति तथा प्रलय है। मानव इस सृष्टि का अतिविकसित रूप है। इसीलिए इसे प्राण का प्रतीक माना गया है। चेतना ने मानव को प्रेम, दया, त्याग, करुणा सत्य, ज्ञान आदि गुण प्रदान किए हैं, जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप लोभ, मोह, काम, क्रोध तथा मत्सर नामक विकार उत्पन्न होते हैं। मानव की इस क्रिया प्रतिक्रिया का निरन्तर संघर्ष चलता रहता है। प्रत्येक भौतिक उपलब्धि के साथ वह अधिक अहंवादी होता जाता है। यही अहं उसके विनाश का कारण है। लेखक यहाँ संदेश देता है कि यदि मानव अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहता है तो उसे अहम् पर विजय प्राप्त करनी होगी।

महात्मा (सन् १६३०, पृ० ६८), ले० सत्यनारायण सत्य, प्र० श्रीकृष्ण पुस्तकालय, कानपुर, पात्र पु० १२, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ७, ८, ४।
घटना स्थल हरिजन बस्ती।

यह नाटक हरिजनोद्धार के लिए लिखा गया है। महात्मा एकनाथ का पुत्र हरीनाथ अछूतों का विरोध करता है। जब चम्पा, अछूत राजू की पुत्री, अपने यहाँ महात्मा को भोजन खिलाने का निमन्त्रण देने आती है तब हरीनाथ उसे पीटता है तथा अपने गवाँरपन स्वभाव का परिचय देता है। ब्राह्मण होकर वह अछूतों से मिलना नहीं चाहता। पर स्वामी एकनाथ की स्वीकृति से उसे विस्मय होता है। महात्मा एकनाथ चम्पा के यहाँ भोजन कर सभी मनुष्यों को बराबरी का दर्जा देते हैं। अन्त में स्वयं हरीनाथ भी अपनी भूलों को मानकर सबको बराबर समझता है।

महानाश की ओर (सन् १६६०, पृ० ८६), ले० चावलि सूर्यनारायण मूर्ति, प्र० भारतीय साहित्य मंदिर, पात्र पु० २२, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ७, ३, ३।
घटना-स्थल राजसभा।

इस नाटक में महाभारत के कथानक के आधार पर युद्ध और शान्ति की समस्या पर प्रकाश डाला गया है। पाण्डव बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञात वास पूरा करनेवाले हैं। दुर्योधन चिन्तित है। वह पाण्डवों को अधिकार-वंचित करना चाहता है। वह शकुनि से परामर्श करता है। उसे कर्ण जैसे योद्धाओं का समर्थन प्राप्त है। समस्त गुरुजनों की राज्य वापस करने की शिक्षा की वह अवहेलना करता है। बलराम और महाराज विराट सात्य कि द्वारा दुर्योधन को समझाने का प्रयत्न करते हैं पर वह युद्ध के लिए तत्पर है। कृष्ण इस पारिवारिक कलह की शान्ति के लिए शान्ति-दूत-कर्म स्वीकार करते हैं। दोनों पक्षों के हितैषियों द्वारा संजय को कौरवों का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए दूत बनाया जाता है। संजय पाण्डवों को युद्ध-विरत करने का प्रयास करते हैं। पाण्डव अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए दृढ़ हैं। दूसरी ओर कृष्ण कौरवों के राजसी सम्मान के बावजूद विदुर का आतिथ्य ग्रहण करते हैं। विदुर के समस्त उपदेश धृतराष्ट्र के पुत्र-मोह के कारण प्रभावहीन सिद्ध होते हैं। कृष्ण अपने मिशन में असफल होते हैं और युद्धभूमि में मिलने का वचन देकर पाण्डवों के पास पहुँचते हैं। धर्मराज अति खिन्न हैं। अर्जुन, भीम और द्रौपदी अधिकारों के लिए युद्ध को तत्पर हैं। कुन्ती कृष्ण के परामर्श पर कर्ण से पाण्डव का पक्ष लेने का अनुरोध करती है। कर्तव्य और भ्रातृ-स्नेह के कारण कर्ण अर्जुन के अतिरिक्त अन्य किसी पाण्डव को न मारने की प्रतिज्ञा कर लेता है।

महाप्रभु बल्लभाचार्य (वि० २०१४, पृ० १०५), ले० गोविन्ददास, गीताप्रेस, गोरखपुर, पात्र पु० २६ स्त्री ३, अंक ५, दृश्य ३, ३, ३, ३, ३।
घटना-स्थल मैदान, गोकुल में ठकुरानीघाट, शयनागार।

शुद्धाद्वैत सिद्धान्त के प्रवर्तक महाप्रभु वल्लभ के दार्शनिक सिद्धांतों का प्रतिपादक यह जीवनी परक नाटक है। नाटकारम्भ में इल्लमागारू (वल्लभ की माता श्री) ने अठमासे पुत्र का परित्याग कर दिया है, परन्तु गुरुकुल के प्रांगण में अग्निदेव द्वारा उस बालक की रक्षा हो जाती है। ग्यारह वर्ष की अवस्था में वल्लभ गुरु नारायण भट्ट के सान्निध्य में समस्त विद्याओं में पारंगत होते हैं और वह शुद्धाद्वैत सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं। काशी के वेदज्ञ ब्राह्मणों द्वारा कठोर प्रतिवाद के उपरान्त भी वल्लभ अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते हैं। विजय नगर के महाराजा कृष्णदेव राय की सभा में अपने सिद्धांतों की सतर्क पुष्टि कर बिल्वमंगल के अनुरोध पर विष्णुस्वामी सम्प्रदाय का आचार्य पद ग्रहण करते हैं। वह कृष्णदेवराय को अपने सम्प्रदाय में दीक्षित कर भक्ति-मार्ग का प्रवर्तन करते हैं। अपने सिद्धांतों के प्रति किए गए प्रश्नों का समाधान करते हुए अपनी पत्नी से संन्यास की आज्ञा चाहते हैं, परन्तु अक्का जी उन्हें संन्यास की अनुमति नहीं देती हैं। दैव योग से वल्लभाचार्य की बैठक में आग लग जाती है और अक्का जी उनसे निवेदन करती है कि आप घर से बाहर जाएँ और अन्त में वे गंगा-लहरियों पर चलते दिखाई पड़ते हैं।

महाभारत (सन् १९१३, पृ० १२७), ले० : नारायण प्रसाद बेताब; प्र० : बेताब पुस्तकालय, धर्मपुरा, दिल्ली; *पात्र :* पु० १८, स्त्री ५; *अंक :* ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, कुरुक्षेत्र।

यह एक पौराणिक शिक्षाप्रद नाटक है। नाटक का प्रारम्भ युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ से होता है। कौरव-राज दुर्योधन यज्ञ में आमंत्रित है। वह पाण्डवों के ऐश्वर्य, धन, महल आदि को देख ईर्ष्या-अग्नि में प्रज्ज्वलित हो उठता है। महल की चमत्कारिक रचना में उसे द्रौपदी तथा पाण्डवों के परिहास का पात्र बनना पड़ता है जिसका प्रतिशोध वह द्यूत-क्रीड़ा में विजय तथा द्रौपदी के चीरहरण से लेता है। पाण्डव १३ वर्ष का बनवास कष्ट उठाकर व्यतीत करते हैं। वे एक वर्ष का अज्ञातवास विराट् के यहाँ छिपकर गुजारते हैं। समय व्यतीत होने के साथ विराट् पर हुए कौरवों के आक्रमण को पाण्डव विफल करते हैं।

कुरुराज दुर्योधन सुई की नोक बराबर भूमि भी पाण्डवों को नहीं देना चाहते। कुलश्रेष्ठों, शुभचिन्तकों और कृष्ण का समझाना-बुझाना व्यर्थ जाता है। महाभारत-युद्ध में कौरवों की पराजय होती है और उनकी अहम्मन्यता तथा अज्ञतापूर्ण शासन पर पाण्डवों का सुशासन स्थान प्राप्त कर लेता है। महाभारत के समस्त घटना-चक्र में युद्ध और प्रेम में संघर्ष रहता है।

महाभारत नाटक (पूर्वार्द्ध), (सन् १९१९, पृ० १०६), ले० : माधव शुक्ल, रामचन्द्र शुक्ल वैद्य; प्र० : कृष्णा श्यामदास, प्रयाग; *पात्र :* पु० २३; स्त्री ७; *अंक :* २; *दृश्य :* ८, ५, ३, ।
घटना-स्थल : जंगल, लाक्षागृह, युधिष्ठिर की सभा, द्यूतभवन।

इस पौराणिक नाटक में दुर्योधन और शकुनि राज में भयन कूट मंत्रणा करते हैं। कौरव पाण्डवों को लाक्षागृह में जीवित जलाने की योजना बनाते हैं। पांडव अपना वैभव बढ़ाने में समर्थ होते हैं। दुर्योधन युधिष्ठिर के राजवैभव को देखकर चकित रहता है। वह जल को स्थल और स्थल को जल समझ कर चोट खाता है। भीमादि उसकी हँसी उड़ाते हैं। तीसरे अंक में शकुनि की मंत्रणा से द्यूत-क्रीड़ा में युधिष्ठिर हार जाते हैं। अर्जुन-भीम के मना करने पर भी युधिष्ठिर नहीं मानते। द्रौपदी को भी दाव पर लगा देते हैं। हार जाने पर दुःशासन द्रौपदी की साड़ी खींचता है। द्रौपदी आंचल बचाकर जंघा से बैठकर दबा लेती है। ईश्वर से हाथ उठाकर प्रार्थना करती है। कृष्ण प्रकट होते हैं। द्रौपदी में अग्नि के समान तेज आ जाता है। दुःशासन भयभीत होकर दूर खड़ा हो जाता है। पांडव हाथ जोड़े कृष्ण के चरणों की ओर सिर नीचा कर बैठ जाते हैं।

महाभारत नाटक (सन् १६२०, पृ० १२८), ले० बेणी राम त्रिपाठी, प्र० ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सस बुकसेलर, वाराणसी, पात्र पु० ४० स्त्री १२, अक ३, दृश्य ८, ८, ६। घटना-स्थल पाण्डवों का राजमहल, कुरुक्षेत्र।

यह एक पौराणिक शिक्षाप्रद नाटक है। इसमें महाराजा पाडु के पांच पुत्र युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल तथा सहदेव हैं तथा धृतराष्ट्र के १००पुत्रों का युद्ध वर्णित है। इनके गुरु द्रोणाचार्य हैं। अर्जुन वीर धनुर्धारी है जो द्रुपद की कन्या द्रौपदी को ब्याह कर लाते है। द्रौपदी पर कुन्ती माता के आदेश से पाँचों भाइयों का अधिकार होता है। एक बार दुर्योधन पाण्डवों के महल को देखकर धोखा खा जाता है जिससे द्रौपदी उसका परिहास करती है। दुर्योधन को यह बडा ही बुरा लगता है और शकुनी की सहायता से युधिष्ठिर का सारा राजपाट जुए में जीत लेता है। सभी पाण्डव विराट के यहाँ छिपकर रहते हैं तथा कौरवों द्वारा विराट पर जब आक्रमण होता है तब विराट की सहायता करते हैं। जयद्रथ तथा द्रोणाचार्य की पाण्डवों की अनुपस्थिति मे व्यूह-रचना करके अभिमन्यु की हत्या कर डालते है। पाण्डवों के लौटने पर अर्जुन जयद्रथ को मारकर पुत्र का बदला लेते हैं। श्रीकृष्ण के कहने पर कौरवों और पाण्डवों मे घमासान युद्ध होता है। अन्त में कौरवों के महावर द्रोण, कर्ण का अन्त हो जाता है, जिससे कौरवों की माँ गान्धारी दुखी होती है। तब श्रीकृष्ण प्रकट होकर उसका दुख निवारण करते हैं और अन्त मे सभी पाण्डव स्वर्ग से आये पुष्पक विमान द्वारा स्वर्ग को चले जाते हैं।

महाभारत (सन् १६४०, पृ० ८०), ले० प्यारे सिंह 'बेचैन' देहलवी, प्र० अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली, पात्र पु० २३, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ५, ५, ५।

यह एक पौराणिक नाटक है। इसमे कौरवों और पाण्डवों का युद्ध दिखाकर सम्पूर्ण महाभारत को प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है। द्रौपदी-चीरहरण, पाण्डवों का अज्ञातवास, कीचक-वध, शिशुपाल वध, जयद्रथ-वध, अभिमन्यु-वध आदि कथाओं को सक्षेप में बडी द्रुत गति से आगे को बढा दिया गया है। अन्त में युधिष्ठिर स्वर्ग के अधिकारी बनते हैं।

महाभारत नाटक (सन् १६५२, पृ० ६१), ले० मास्टर चन्द्रभान 'चन्द्र', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० २३, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ५, ७, ५।
घटना-स्थल हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, विराट नगर, वनप्रान्त और युद्धभूमि।

यह एक पौराणिक नाटक है। नाटक का प्रारम्भ पाण्डवों के राजसूय यज्ञ से होता है। यहीं पर महाभारत की नीव पडती है। मुख्य घटनाओं और युद्धों के साथ कौरवों का पतन, कृष्ण की कूटनीतिक विजय, युधिष्ठिर का स्वर्गारोहण भी वृत्त के साथ प्रस्तुत है। नाटक में गीता-प्रवचन को भी महत्त्व दिया गया है।

महामना (वि० २०१२, पृ० ६८), ले० राम बालक शास्त्री, प्र० नन्दकिशोर ऐण्ड ब्रादर्स, चौक वाराणसी, पात्र पु० ३०, स्त्री० अक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल प्रयाग स्टेशन का दृश्य, शिमला वाइसराय का मिलन-कक्ष एव मालवीय कुटीर।

प्रस्तुत नाटक की रचना धार्मिकता की पृष्ठभूमि म हुई है। इसमे मालवीय जी की गम्भीरता, सतर्कता और निर्भीकता को लक्ष्य बनाकर नाट्यकार ने प्रकाश डाला है। उनके हृदय की असीम देश भक्ति, अलौकिक धर्मानुराग एव विलक्षण सदाचार महान् से महान् पुरुष को भी प्रभावित एव विस्मित कर सकता है। मेकाले की विषाक्त शिक्षा के प्रयोग ने वस्तुत हिन्दुत्व का विकृत बना दिया है। ऐसी भावना से प्रभावित होकर मालवीय जी हिन्दुत्व की रक्षा भारतीय परम्परा से करना चाहते हैं। अतएव भारतीय स्वतन्त्रता-सग्राम के कर्मठ सेनानी महामना

मालवीय काशी विश्वविद्यालय की स्थापना करते हैं। देश के विभिन्न कोनों से सहायतार्थ अनेक रकमें आती हैं और महामना मालवीय का स्वप्न साकार होता है।

महामाया (सन् १९२९, पृ० १०१), ले०: दुर्गाप्रसाद गुप्त; प्र०: एस० आर० बेरी एण्ड कम्पनी, २०१, हरिसन रोड, कलकत्ता; *पात्र :* पु० १०, स्त्री ५; *अंक :* ३; *दृश्य:* ७, ६, ४।
घटना-स्थल : मेवाड़, औरंगजेब का महल, नदी-तट।

प्रस्तुत नाटक में मेवाड़ की 'महामाया' की कथा है। नाटक की नायिका महामाया है जो कि मेवाड़ के राणा जसवन्तसिंह की पत्नी है। जसवन्त सिंह को औरंगजेब की बीबी गुलनार कत्ल करवा देती है। उसी का बदला लेने के लिए महामाया औरंगजेब की सेना से युद्ध करती है और मेवाड़ को स्वतन्त्र करवा लेती है। तत्पश्चात् वह अग्नि में कूदकर सती हो जाती है।

महामोह विद्रावण (सन् १८८७, पृ० ५८), ले० : विजयानन्द; प्र० : पं० रामनाथ जी काशिका, काशिक यंत्रालय, काशी; *पात्र :* पु० ५, स्त्री २; *अंक-दृश्य-रहित*।

"ब्राह्मण भाग भी मंत्र संहिता के सदृश वेद ही है"—इस विषय का यह प्रमाण निरूपक नाटक है। संवादों के द्वारा इसे सिद्ध किया गया है।

महाराजा भरथरी (सन् १९८०, पृ० ६५), ले०: मास्टर ब्हादर सिंह बेचैन; प्र०: देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; *पात्र :* पु० १६ स्त्री ६; *अंक:* ३; *दृश्य :* ११, ७, ६।
घटना-स्थल : राजप्रासाद, वेश्यागृह, आश्रम।

यह एक धार्मिक नाटक है। इसमें उज्जयिनी का राजा भर्तृहरि वासना और मद्य में लिप्त होने के कारण अपने कर्त्तव्य तथा न्याय से विमुख रहता है। वह अपनी कनिष्ठा रानी पिंगला की प्रेरणा से अपने भाई विक्रम को निर्वासित करता है। एक दिन आत्मानन्द द्वारा प्राप्त अमर फल उसके अज्ञानान्धकार को दूर करता है क्योंकि राजा परम प्रिया पिंगला को महात्मा द्वारा प्राप्त अमर फल देता है। रानी उसे अपने व्यभिचारी सहचर अश्वपाल को दे देती है। अश्वपाल राजनर्तकी कलावती को प्रसन्न करने के लिए वह अमर फल प्रदान करता है। किन्तु राजा के प्रति सत्य अनुरागवाली कलावती पुनः वही अमर फल ले जाकर राजा को दे देती है और छल-छद्म को त्याग वह संन्यास ले लेती है। राजा का मोह भी हटता है। वह गुरु मछन्दर नाथ की शरण लेता है और तप द्वारा शिव के चरणों में स्थान पाता है।

महाराजा भर्तृहरि (सन् १९३५, पृ० १०४), ले० : श्याम सुन्दर लाल दीक्षित 'श्याम'; प्र०: बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, राजा दरवाजा, बनारस सिटी; *पात्र :* पु० ११, स्त्री ४; *अंक :* ३; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : राजा भर्तृहरि का राजमहल।

महाराजा भर्तृहरि के चरित्र पर आधारित यह एक लोक नाटक है। इसमें भर्तृहरि और पिंगला के प्रेम का वर्णन है। भर्तृहरि कहते हैं कि 'योगी का कर्त्तव्य ईश्वर पूजा है और राजा का कर्त्तव्य प्रजा-पालन है।' माया चक्र से बचने के लिए एक स्थल पर वह भगवान् से अपनी रक्षा की प्रार्थना करते हैं।

महाराणा प्रताप नाटक (सन् १९१५, पृ० १०८), ले०. नरोत्तम व्यास तथा गुप्त बन्धु; प्र० : हरिदास वैद्य, हैरिसन रोड, कलकत्ता; *पात्र :* पु० १३, स्त्री ७; *अंक :* ५; *दृश्य :* ४, ४, ४, ६, ४।
घटना-स्थल : जंगल, युद्धक्षेत्र, उदयपुर का राजमहल।

यह ऐतिहासिक नाटक है। इसमें मेवाड़ के प्रसिद्ध राजा महाराणा प्रताप की कथा है। महाराणा चिंतित होते हैं कि जिस मेवाड़ को

देवता तक आदर की दृष्टि से देखते हैं उसकी कितनी दुर्दशा हो रही है। वह मुक्ति का उपाय सोचते हैं। इसी बीच अकबर की ओर से समझौता लेकर मानसिंह आते हैं जिसका प्रताप तिरस्कार कर देते हैं। युद्ध होना है, परन्तु महाराणा पराजय नही मानते। जगलो मे भटकते हैं, नाना प्रकार का कष्ट सहते हैं। परन्तु मेवाड की शान के लिए अन्त तक लोहा लेते हैं। जगल मे भामाशाह प्रताप को बहुत सी आर्थिक मदद देते है जिसकी सहायता से महाराणा सेना इकट्ठी करके पुन लोहा लेते है और मुगलो से मेवाड छीन लेते है। राणा की जय जयकार से नाटक समाप्त होता है।

महाराणा प्रताप नाटक (सन् १९५०, पृ० ७९), ले० न्यादरसिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ७, ६, ४।

यह एक चरित्र प्रधान ऐतिहासिक नाटक है। इसमे अकबर के दरबारी मानसिंह के साथ भोजन न करने के कारण प्रतिशोध के लिए अकबर सलीम के नेतृत्व मे सेना भेजकर चित्तौड पर आक्रमण करता है।

प्रताप जीवन-पर्यन्त जगलो मे नाना विपत्तियाँ उठाकर भी स्वतन्त्रता से अपना मस्तक ऊँचा रखता है और अन्त मे विजयी होता है।

महाराणा प्रताप (सन् १९५७, पृ० ८०), ले० लक्ष्मणसिंह माण्डोठिया, अग्रवाल बुक डिपो, थोक पुस्तकालय, खारी बावली दिल्ली, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अक ३, दृश्य-रहित।
घटना स्थल चित्तौड, रण भूमि तथा वन प्रान्त।

अकबर के सेनानी महाराजा मानसिंह महाराणा प्रताप सिंह से मिलने जाते हैं। महाराणा उनका सम्मान करते, किन्तु उनके साथ भोजन नही करते। मुगल बादशाह अकबर पहले से ही इस दुर्दमनीय राष्ट्राभिमानी के गर्वान्वित मस्तक पर क्षुब्ध है। वह मानसिंह के अपमान के प्रतिशोध मे शाहजादा सलीम को भारी सेना देकर युद्ध के लिए भेजते हैं। राणा का भाई शक्तिसिंह भी शत्रु-पक्ष मे मिल जाता है। राणा वीरतापूर्वक लडकर भी पराजित होते हैं और सपरिवार स्वराष्ट्राभिमानी राजपूतो के साथ जगल की शरण लेते हैं। घास की रोटियो को सन्तान से छिनती देख राणा अकबर को सन्धि सन्देश भेजते हैं। अकबर के दरबारी राजपूती गौरव के अभिमानी पृथ्वीराज ने सन्धि-पत्र को जाली कहकर राणा को समझाया। राणा भामाशाह की सहायता से पुन राज्य वापस लेते हैं। रहीम की न्यायप्रियता तथा राजपूती दबाव के कारण अकबर अपना युद्ध अभियान बन्द करता है।

महाराणा प्रताप सिंह (वि० १९५४, पृ० ८०), ले० राधाकृष्णदास, प्र० नागरी प्रचारणी सभा, काशी, पात्र पु० ७, स्त्री २, अक ७, दृश्य ३, ४, ४, ५, ६, ६, ८।
घटना-स्थल दरबार, कुटीर, युद्ध क्षेत्र।

इस नाटक मे दो कथानक साथ-साथ चलते दिखाई पडते हैं। यह सहवर्तिनी काल्पनिक घटना ऐतिहासिक वृत्त को अधिक आकर्षक, रोचक और चरित्र-विधायक बनाती चलती है। एक ओर तो महाराणा प्रताप और अकबर की दृढता, मानसिंह, सलीम और मुहब्बत खाँ के आक्रमण की विभीषिका और युद्ध का कोलाहल सुनाई पडता है, तो दूसरी ओर गुलाब और मालती का मधुर प्रेमालाप, व्रजवासियो के गीत चित्त को आकर्षित करते हैं। राजनीतिक चालो मे अकबर की कूटनीति, मानसिंह का महाराणा के प्रति द्वेष, खानखाना द्वारा महाराणा की प्रशसा और पृथ्वीराज का महाराणा को स्वातन्त्र्य-रक्षा के लिए प्रोत्साहन ऐसे प्रसग हैं, जो दर्शको के हृदय-पटल पर नाना भावो को सजीव खडा कर देते हैं।

प्रेमालाप करनेवाले गुलाब और मालती को भी नाटयकार ने अन्त मे वीर नर-नारी

के रूप में दिखाया है। युद्ध में आहत गुलाबसिंह का शव ढूँढनेवाली मालती को संन्यासिनी के वेश में देखते ही शृंगाररस करुण-सागर में विलीन हो जाता है। यह वीररस-प्रधान नाटक शृंगार और करुण के सम्मिलन से मनोरम बन जाता है।

स्वतन्त्रता की वेदी पर परिवार सहित हँसते-हँसते बलि होनेवाला प्रताप, धीरता, वीरता, क्षमाशीलता और दृढ़ता का मानो आदर्श देता है। मंत्री भामाशाह का संचित धन द्वारा राष्ट्रहित में योग देनेवाला जीवन, धनी-मानी अधिकारियों को त्याग की प्रेरणा देता हुआ आदर्श मंत्रित्व का रूप खड़ा कर देता है। इन साहित्यिक सद्गुणों के अतिरिक्त इसकी अभिनेयता का यह प्रमाण है कि न जाने कितने रंगमंचों से इसका अभिनय दिखाया जा चुका है और आज भी इस नाटक की उपयोगिता कम नहीं हुई है।

नाटक की भाषा में नाट्यकार ने आद्योपान्त इस बात का ध्यान रखा है कि मुसलमान पात्र उर्दू का प्रयोग करें। 'दरहदात', 'वाद गुस्तरी' आदि शब्द इसके प्रमाण हैं। जो पात्र मुसलमान नहीं हैं, उनकी भाषा कहीं साहित्यिक है और कहीं बोलचाल की। पात्रों का ध्यान रखकर भाषा का प्रयोग किया गया है।

अभिनय : काशी में अनेक बार अभिनीत। प्राचीनकाल के नाटकों में सबसे अधिक अभिनीत।

महाराणा प्रतापसिंह (सन् १९३४, पृ० ८८), ले० : बेणीराम त्रिपाठी; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड संस बुकसेलर, वाराणसी; *पात्र* : पु० २०, स्त्री ४; *अंक* : ३; *दृश्य* : ७, ६, ५।

घटना-स्थल : उदयपुर का राजदरबार, उदयसागर का किनारा, बीकानेर राज का उद्यान, अकबर का दरबार, जनपथ, हल्दीघाटी, जंगल, सलीम का खेमा, दुर्ग छावनी, उदयपुर का राजप्रसाद।

नाटक की कथा मानसिंह के अपमान, शक्तिसिंह-विद्रोह, हल्दीघाटी-युद्ध, प्रताप के परिवार का कष्टमय जीवन, क्षणिक दौर्बल्य, शक्तिसिंह-मिलन आदि इतिहास-प्रसिद्ध घटना-प्रसंगों पर आधारित है। इतिहास-प्रसिद्ध इन घटना-प्रसंगों को नाटककार ने अपनी इच्छानुकूल तोड़ा-मरोड़ा है। पारसी नाट्य-शैली पर लिखे इस नाटक की भाषा पर उर्दू का प्रभाव अधिक है।

महाराणाप्रताप सिंह या देशोद्धार नाटक (सन् १९५०, पृ० ६४), ले० : लक्ष्मी नारायण 'सरोज'; प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, वाराणसी; *पात्र* : पु० १३, स्त्री ४; *अंक* : ३; *दृश्य* : ६, ५, ४।

घटना-स्थल : उदयपुर का राजदरबार, अकबर की राज सभा।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमें महाराणा प्रताप और अकबर की लड़ाई का वर्णन है। महाराणा प्रताप चित्तौड़गढ़ की आजादी के लिए सदैव लड़ते रहते हैं। उनके इस कार्य में भामाशाह और भील आदि भी मदद करते हैं। मानसिंह की गद्दारी भी उन्हें पथ से विचलित नहीं करती। अन्त में महाराणा की छोटी-सी सेना चित्तौड़गढ़ को अपने अधिकार में बनाए रखने में समर्थ होती। वीर क्षत्राणियाँ भी युद्ध के लिए सदैव तैयार रहती हैं। भामाशाह की पुत्री मालती की अनोखी वीरता का प्रभाव भी दिखाया गया है।

महाराणा राजसिंह (वि० १९७४, पृ० १०१), ले० : रामप्रसाद मिश्र; प्र० : नाट्य ग्रन्थ प्रसारक मंडल, ए० बी० रोड, कानपुर; *पात्र* : पु० १०, स्त्री ५; *अंक-रहित*; *दृश्य* : ७, ७, ७।

घटना-स्थल : राजमार्ग, उपवन, जंगल, रूपनगर का बाहरी भाग।

प्रस्तुत ऐतिहासिक नाटक में महाराणा राजसिंह की वीरता दिखायी गयी है। मुगल अत्याचार उनके लिए बहुत असह्य हो गया है। पाप का भण्डा एक दिन फूट जाता है। औरंगजेब राजपूतों की कुल-कामिनियों के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर जाल बिछा देता

है। एक दिन एक वृद्धा रूपनगर में जाकर चित्र बेचने के बहाने से राज-कन्या चचल-कुमारी को यौवन वैभव में फँसाना चाहती है परन्तु उससे पहले ही महाराणा राजसिंह को अपना वर चुन लिया है। तथा वृद्धा द्वारा औरंगजेब की प्रशसा करने पर उसका चित्र पदाघात से चूर कर डालती है। यह बात औरंगजेब तक पहुँचती है तो वह बडा क्रोधित होता है। इधर राज-कन्या चचला कुमारी की शादी राणा से हो जाती है। औरंगजेब अपने दाव खाली देख आपे से बाहर हो जाता है, तुरन्त चित्तौड पर चढाई की आज्ञा दे देता है। राजसिंह इसका प्रतिरोध करता है फल वही हुआ जो होना चाहिए था—धर्म की जय और पाप का क्षय।

महाराणा संग्रामसिंह (सन् १६४०, पृ० १०६), ले० : शिवप्रसाद 'चारण', प्र० महर्षि मालवीय इतिहास परिषद, उपासना मंदिर, दुगड्डा, *पात्र* पु० १७, स्त्री ६, *अक* ३, *दृश्य* ३, ४, ५। घटना स्थल मालवा का ग्राम, बाटोरी, मथुरा, राजमार्ग।

यह राजस्थानी वीरों का एक ऐतिहासिक नाटक है। पृथ्वीराज के भय से वन-वन भटकने वाला गडरियों और डाकुओं के सग रहकर पेट पालने वाला संग्रामसिंह मेवाड के सिंहासन पर बैठते ही, किस प्रकार साहसी महान् प्रतापी और हिन्दुस्तान की दासता को मिटाने के लिए आजीवन संघर्ष करने वाला बन जाता है। हिन्दू जाति और भारत-व्यापी दुर्दशा को देखकर संग्रामसिंह के मन में जो तीव्र लगन उत्पन्न होती है। उसका वर्णन इस नाटक में किया गया है।

महारानी किरण प्रभा (सन १६४०, पृ० ३४), ले० देवीप्रसाद 'प्रीतम', प्र० श्रीराम श्रीकृष्ण, ३८१४, मुहल्ला न्यारियाँ, जी० बी० रोड, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ७, *अक* ३, *दृश्य* ६, ६, ४। *घटना स्थल* शाही दरबार देहली।

इस ऐतिहासिक नाटक में राजस्थान के प्रसिद्ध राज्य बूँदी के महाराजा जसवन्त सिंह की महारानी किरण प्रभा वश और कुल की लज्जा तथा सतीत्व की पवित्रता को, एक दुष्ट चापलूस और प्रपची दरबारी शेरखाँ का दर्प दलन करके बचाती है अपने और पतिदेव महाराजा जसवन्त सिंह के मान और प्राण की रक्षा करती है। शहशाह दरबार में है और किरण प्रभा को दोषी बताने पर जसवन्त सिंह निर्दोषी कहता है। शेरखाँ किरणप्रभा को प्रेयसी बताता है। शहशाह शेरखाँ से एक महीने के अन्दर सबूत माँगता है। सही सबूत पर जसवन्त सिंह को फाँसी अन्यथा शेरखाँ को कत्ल का फैसला होता है। जसवन्त सिंह वहीं दरबार में रोक दिये जाते हैं। शेरखाँ के द्वारा भेजे जाने पर तमीजन जसवन्त सिंह के घर उसकी बुआ बनकर जाती है और रानी के बायें घुटने के पास लसमन देख लेती है और जसवन्त के द्वारा दी हुई कटारी जिस पर दोनों के नाम लिखे थे प्राप्त कर शेरखाँ के पास आ जाती है। शेरखाँ शहशाह के दरबार में सही सबूत दिखाता है लेकिन जसवन्त सिंह घर के लिए आज्ञा लेकर जाते है। रास्ते में उनकी एक महात्मा से भेंट हो जाती है और महात्मा धैर्य धारण रखने के लिये कहता है। जसवन्त सिंह भगवान् की प्रार्थना करते हुए कटारी वाली खूँटी को देखने जाते है। कटारी न मिलने पर दिल्ली को वापस लौट जाते है। महारानी किरण प्रभा सब अनुमान लगाकर अपनी पाँच सखियों के साथ युद्ध के सारे अस्त्र-शस्त्र पहन और घोडा तैयार कराके योद्धाओं के वेश में दिल्ली के लिए चल देती है और थोडे ही समय में पहुँच जाती है। दिल्ली से दूर ही ढोल पीटने वाले के द्वारा पता लग जाता है कि शाम ६ बजे राजा फाँसी पर चढेंगे। महारानी अच्छे-अच्छे वस्त्र धारण कर शाही दरबार में नाचने के लिए सखियों के साथ चल देती हैं। और दरबार में ऐसा नाचती हैं कि शहशाह मुग्ध होकर वरदान देने के लिए तैयार हो जाता है। रानी एक न्याय कराना चाहती है। वह कहती है कि शेरखाँ ने

मुझसे पाँच रुपये लेकर वापस नहीं किये। शेरखाँ इसका प्रतिवाद करता है। तुरन्त रानी अपने रानी के पोशाक में होकर कहती है कि जब इन्होंने मेरी शक्ल नहीं देखी तो कटारी और लहसन कैसे प्राप्त किये। इसके बाद शेरखाँ सब सत्य बात बता देता है और उस दूती को कुत्तों से कटवा दिया जाता है। शेरखाँ को फाँसी हो जाती है; राजा निर्दोष छोड़ दिये जाते हैं।

महारानी कौशल्या (सन् १९५५, पृ० ८०), *ले० :* उमरावसिंह 'रावत'; *प्र० :* उमराव सिंह 'रावत', प्रिंसिपल डी० ए० वी० इण्टर कॉलेज, दुगड्डा (गढ़वाल); *पात्र :* पु० ६, स्त्री ७; प्रथम भाग *अंक :* ३; *दृश्य :* १५; द्वितीय भाग *अंक :* ५; *दृश्य :* २८। *घटना-स्थल :* अयोध्या का राजप्रसाद।

प्रस्तुत नाटक रामकथा पर आधारित है। कौशल्या की इस महानता पर बार-बार संकेत किया गया है कि वे वैधव्य का दुःख भोगती हैं, फिर भी कैकेयी को दोष नहीं देतीं और उसे क्षमा कर देती हैं। राम को सदैव उचित राह पर चलने की सलाह देती हैं तथा किसी का भी दिल दुखाना नहीं चाहतीं। नाटक के अंत में राम के अयोध्या लौट आने पर कौशल्या का यह कथनविशेष महत्त्वपूर्ण हो गया है कि आज दशरथ यह शुभ दिन देखने के लिए नहीं हैं। वे होते तो आज गद्‌गद् हो जाते।

महारानी दुर्गावती अथवा रक्तवन्या (सन् १९२९, पृ० ७६), *ले० :* कृष्णकुमार मुखोपाध्याय; *प्र० :* बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, राजा दरवाजा, बनारस सिटी; *पात्र :* पु० ९, स्त्री २; *अंक :* ३; *दृश्य :* ८, ६, ७।
घटना-स्थल : गोंडवाना का राजभवन तथा मुगल बादशाह का भवन और युद्धस्थल।

यह ऐतिहासिक नाटक है। इसमें महारानी दुर्गावती की स्वतंत्रता तथा राजपूती गौरव पर प्रकाश डाला गया है। भारत-सम्राट् अकबर गोंडवाने की स्वतंत्रता का अपहरण करना चाहता है। वह आसफखाँ को गोंडवाना पर सैन्य-अभियान का आदेश देता है। अप्रतिहत आसफखाँ राजपूती वीरता का लोहा मानता है, इसलिए प्रलोभन देकर एक सरदार गिरधरसिंह को द्रोह का हथियार बनाता है। गिरधरसिंह मुगल बादशाह के जाली पत्र को प्रस्तुत कर गोंडवाने के सेनापति बदनसिंह और मंत्री आधारसिंह में विरोध उत्पन्न कर देता है। रानी भी बदनसिंह को देशद्रोही कहकर निर्वासित कर देती है। प्रतिशोध की अग्नि में प्रज्ज्वलित बदनसिंह मुगलवाहिनी का साथ देता है। बदनसिंह की राजपूत पत्नी सुमति अपने पुत्र जयसिंह को लेकर राष्ट्र-रक्षा में कूद पड़ती है। दोनों माँ-बेटे पागल और भैरवी के नाम से गोंडवाने की रानी का साथ देते हैं।

युद्ध के मध्य मंत्री आधारसिंह का देशद्रोह तथा षड्यंत्र खुल जाता है। बदनसिंह प्रतिशोध की प्रतिक्रिया में मुगलों का साथ देने पर पश्चात्ताप करता है। मुगल दरबारी पृथ्वीराज भी राजपूती गौरव की याद दिलाकर सेनापति को गोंडवाने की रक्षा के लिए प्रेरित करता है। सुमति बिखरी शक्ति को संगठित कर मुगल-सेना का प्रतिरोध करती है। वीरांगना रानी युद्ध का नेतृत्व करती है और सभी राजपूत वीरगति प्राप्त करते हैं। अकबर अपनी राज्यलिप्सा पर दुःखी होता है।

महारानी दुर्गावती (सन् १९४७, पृ० ८०), *ले० :* बाबू चौकसे वकील; *प्र० :* आदर्श पुस्तक माला, गढ़ा फाटक, जबलपुर; *पात्र :* पु० ४, स्त्री २; *अंक :* ३; *दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल : पर्वत मालाएँ, पिसनहारी के मंदिर, मदन महल।

नाटक में अकबर अपने पक्के शत्रुओं पर पहले विजय पाने के लिए सोच रहा है। दीवान खास में बादशाह अकबर और नवाब बहलोल एक ताम्रपत्र लिये बैठे हैं। शाही फौज गोंडवाने से तैलंगाना और गोल-कुण्डा पर एकदम चढ़ाई करने के लिए तैयार है, परन्तु यह तभी संभव है जब दुर्गावती अपने राज्य से शाही सेना को

गुजरते दे। बादशाह सन्धि करना चाहता है परन्तु महारानी अस्वीकार कर देती है।

रानी का सेनापति सम्पत सिंह है। उसकी लड़की शैलजा बहादुर राजपूतनी है। महारानी का पुत्र वीरनारायण शैलजा से विवाह करना चाहता है परन्तु शैलजा इसको अस्वीकार कर देती है। रानी भी इस पर अप्रसन्न हो जाती है और शैलजा को अपने पास नहीं रखती।

मुगल सेना गोंडवाना पर चढ़ाई करती है। रानी परिवार-सहित युद्ध-अग्नि में स्वाहा हो जाती है। शैलजा भी यह खबर पाते ही अन्तिम साँस लेती है।

महारानी पद्मावती (सन् १९६३, पृ० ५४), ले० राधाकृष्णदास, प्र० साहित्य निधि प्रेस, मुजफ्फरपुर, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ६, दृश्य ३, ३, ३, ३, ३, ३।
घटना-स्थल चित्तौड़ का राज दरबार, अलाउद्दीन का शयनागार, अलाउद्दीन का उपवेश मण्डप।

इस ऐतिहासिक नाटक में महारानी पद्मावती के वीर चरित्र पर प्रकाश डाला गया है।

महारानी पद्मावती चौहान के हमीरवंश की बेटी है। महाराणा रत्नसेन सिंहलद्वीप (लंका) से विवाह करके लाते हैं। अलाउद्दीन पद्मावती को पाने का अथक प्रयत्न करता है। पद्मावती ७०० डोलों के साथ दिल्ली जाती है। अपने पति को वहाँ से भगा देती है। घनघोर युद्ध होता है। चित्तौड़ के सब वीरों के मरने के बाद पद्मावती जौहर व्रत करती है और सभी वीर *नारियों के साथ जल कर भस्म हो* जाती है। नाटक में गोरा और बादल की वीरता का भी वर्णन है।

महारानी पद्मिनी अथवा चित्तौड़ का फूल (सन् १९४०, पृ० ६६), ले० देव शर्मा अमित, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अंक-दृश्य-रहित।

घटना-स्थल चित्तौड़ का राज महल।

इस नाटक में पद्मिनी के जौहर तथा सतीत्व रक्षा का चित्रण है।

चित्तौड़ का राजा रत्नसेन हीरामन से पद्मिनी की सुन्दरता सुन उसे सिंहल द्वीप में प्राप्त करता है। चित्तौड़ आने पर राघव-चेतन राजा से नाराज हो पद्मिनी की सुन्दरता का वर्णन अलाउद्दीन से करता है। *वह पद्मिनी को प्राप्त करने के लिए चित्तौड़* पर आक्रमण करता है और रत्नसेन को गिरफ्तार कर दिल्ली लाता है। गोरा बादल रत्नसेन को छुड़ाने के लिए अलाउद्दीन से लड़ते हैं पर मारे जाते हैं। अलाउद्दीन अन्त में पद्मिनी को प्राप्त करने के लिए चित्तौड़ आता है जहाँ पद्मिनी पहले ही चिता में जलकर अपने सतीत्व की रक्षा करती है और अलाउद्दीन निराश हो लौट आता है।

महारास नाटक (सन् १८८५, पृ० ६८), ले० लाल खड्ग ब (खड्ग) बहादुरमल्ल, प्र० साहिब प्रसाद सिन्हा, खड्ग विलास प्रेस, बांकीपुर, पात्र पु० १, स्त्री २, अंक ४, दृश्य ३, ४, २, २।
घटना-स्थल वृन्दावन का यमुना तट, कुंज, यमुना की रेत, राम चबूरा।

नाटक का प्रारम्भ सूत्रधार-नटी के संवाद से होता है। शरद पूर्णिमा के रमणीय अवसर के उपयुक्त कृष्ण के महारास नाटक खेलने की योजना बनती है। गोपियाँ, रात्रिबेला में कृष्ण की मुरली-ध्वनि पर रीझ कर प्राण-प्यारे के पास यमुना तट पर स्थित वृन्दावन कुंज में दौड़ती हुई पहुँचती हैं। कृष्ण *गोपियों की भर्त्सना करते हैं किन्तु उनका सत्य प्रेम देखकर कृष्ण योग माया को* वस्त्राभूषण लाने का आदेश देते हैं और गोपियों के संग रास रचाने जाते हैं। तीसरी झाँकी में राधा-कृष्ण की मनोहर झाँकी देखकर गोपियाँ मुग्ध हो जाती हैं। इस सौंदर्य को देखकर मृगादि पशु-पक्षी भी चलना-फिरना, उड़ना और घास चरना भूल जाते हैं। रास लीला प्रारम्भ होती है। कृष्ण मुरली बजाते और गाना गाते हैं। प्राचीन कवियों के रास

सम्बन्धी पदों का गान होता है। गोपियों को गर्व हो जाता है कि कृष्ण हमारे अनुगत हैं। हम जैसा चाहेंगी उससे नाच नचायेंगी। कृष्ण राधा को लेकर लुप्त हो जाते हैं और गोपियां व्याकुल होकर उन्हें ढूंढ़ती हैं। इधर राधा को भी गर्व होता है और वह कृष्ण के कन्धे पर चढ़ने का आग्रह करती हैं। कृष्ण पुनः अन्तर्धान हो जाते हैं और राधिका विलाप करने लगती है। ललिता वहां पहुँच जाती है और सब गोपियाँ राधिका के साथ कृष्ण को ढूंढ़ती हैं। गोपियों को व्याकुल देख कृष्ण प्रगट होते हैं। वह गोपियों को समझाते हैं कि मैं न किसी से प्रीति रखता हूँ न द्वेष; केवल प्रेम का भूखा हूँ। मुझे तुम्हारी प्रीति की परीक्षा करनी थी। गोपियाँ क्षमा-याचना करती हैं। चौथे अंक में राधा कृष्ण का परिणय होता है। वृषभानु अपनी कन्या को प्रदान करते हुए नन्द के चरणों पर गिरते हैं। हर्षित होकर यशोदा जी गारी गाती हैं। अन्तिम दृश्य में कृष्ण गोपियों को रासविलास की चर्चा किसी से करने को वर्जित करते हैं। राधा कृष्ण से अपराधों की क्षमा याचना करती हैं। गोपियां कृष्ण से मिलकर अपने-अपने घर जाती हैं।

महावीर चरित (सन् १६०० के आसपास), *ले० : अज्ञात; अंक-रहित।*
घटना-स्थल : अयोध्या, जनकपुरी, लंकागढ़।

प्रस्तुत नाटक में लगभग सम्पूर्ण रामायण चित्रित है। आरम्भ में भगवान् राम और लक्ष्मण-सीता एवं उर्मिला को बाग में देखते हैं। ऋषि विश्वामित्र को जनक के स्वयंवर का पता लगता है, और वे राम लक्ष्मण सहित सभा में जाते हैं। सभा में बड़े-बड़े ऋषि, राजा-महाराजा उपस्थित हैं। ऋषि विश्वामित्र भी आदर सहित आसन पर विराजमान हो जाते हैं। सामने शिव का धनुष उपस्थित है जो महारथी उसको तोड़ देगा वही सीता का अधिकारी होगा। रावण जैसे बड़े-बड़े योद्धा धनुष को हिलाने में असमर्थ हैं। अंत में गुरु जी की आज्ञा लेकर राम धनुष-भंजन करते हैं। उसी समय शिवभक्त परशुराम आते हैं और राम के साथ वाद-विवाद होता है।

तत्पश्चात् राम के राज्याभिषेक की तैयारी होती है, परन्तु उसे कैकेयी नहीं होने देती और राजा को अपने दो वरों की स्मृति करा कर राम को १४ वर्ष का वनवास और भरत के लिए राज्य मांगती है। राम वन में जाते हैं। वहां शूर्पणखा की नाक लक्ष्मण द्वारा काटी जाती है। इससे क्रुद्ध होकर रावण सीता हरण करता है। रामचन्द्र जी वानरी सेना की सहायता से रावण को मारते हैं और अन्त में सीता जी की अग्निपरीक्षा होती है। टिप्पणी : नागरी प्रचारिणी सभा में एक प्रति है जिसका ऊपर का पृष्ठ न होने से आवश्यक सूचनायें नहीं मिल पाईं।

महासती सुकन्या (सन् १६५२, पृ० ६०), *ले० : शिवदत्त मिश्र; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड संस, बुकसेलर, वाराणसी; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक-रहित; दृश्य : ११।*
घटना-स्थल : च्यवन का आश्रम, इन्द्रपुरी।

यह एक धार्मिक नाटक है। राजकुमारी सुकन्या एक बार च्यवन महर्षि की आंख में सींक डाल देती है जिससे च्यवन अन्धे ऋषि सुकन्या को अपनी पत्नी बना लेते हैं। विवश हो यद्यपि सुकन्या और उसकी माता गौरी नहीं चाहतीं हैं, लेकिन पिता शर्याति की आज्ञा से सुकन्या च्यवन ऋषि की पत्नी बनकर उनकी सेवा करती है। स्वर्ग के राजा देवराज सुकन्या की सुन्दरता पर मोहित होते हैं। वे अश्वनी कुमार की सहायता से सुकन्या को स्वर्ग में बुलाकर अपनी पत्नी बनाना चाहते हैं लेकिन सुकन्या उन्हें अपने सतीत्व का प्रभाव दिखाती है जिससे देवराज उससे क्षमा चाहते हैं। महासती सुकन्या अपने सतीत्व के प्रभाव से महर्षि च्यवन और देवराज में चल रहे आपसी छोटे-बड़े के भेद को दूर कर देती है जिससे देवराज च्यवन को दिये हुए शाप को वापस लेते हैं ऋषि च्यवन पुनः जवान हो जाते हैं।

महेन्द्र कुमार (सन् १६३६, पृ० ७२), *ले० : अर्जुनलाल सेठी; प्र० : अमीचन्द जैन*

रईस, मालिक प्रेममाला, कार्यालय, गोहाना (रोहतक), पात्र पु० ११, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ८, ४, ६।
घटना-स्थल बाजार, स्वयम्बर, कन्याश्रम, बाग।

इस नाटक में नाटककार ने मनुष्यों की कमजोरियाँ और उनकी स्त्री की गुलामी को दर्शाया है। प्रस्तुत नाटक स्त्री की गुलामी पर अधिक जोर देकर लिखा गया है। महेन्द्रकुमार अपनी स्त्री का दास बनने से जीवन में कोई प्रगति नहीं कर पाता।

माँ (सन् १९६१, पृ० ७५), ले० सूयनारायण अग्रवाल, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २३, दरियागंज, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ४, अंक-रहित, दृश्य ३।
घटना-स्थल ब्याह की वेदी और भोज-स्थल।

यह एक सामाजिक नाटक है। विवाह समस्या, बहू का कर्तव्य, सास और बहू का प्रेम, सास और माँ के दायित्व आदि का चित्रण ही इस नाटक का उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त समाज में ब्याह के समय जो भोज और दहेज की प्रथा है, उसका भी माँ द्वारा विरोध किया गया है और अन्त में विवाह निर्भोज एवं बिना दहेज के सीधा-सादा सम्पन्न होता है। समाज की इस नयी प्रथा से कितने गरीबों का भला होता है।

माँ का कलेजा (सन् १९२२, पृ० ६८), ले० मा० श्रीराम, छेदीराम, प्र० ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सन्स, बुकसेलर, वाराणसी, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अंक-रहित, दृश्य १३।
घटना-स्थल विजय नगर का राजमहल।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। राजा भानु उदयसिंह चन्दा के सुन्दर रूप को देख कर उस पर मोहित हो जाते हैं। चन्दा उसे अपनी माँ का कलेजा लाने को कहती है। राजा माँ का कलेजा लेने को जाते हैं। रास्ते में एक हत्या का भयानक परिणाम देखकर डर जाते हैं और नकली कलेजा लाकर चन्दा को देते हैं। चन्दा फटकारती है, जिससे राजा सारा भेद बता देते हैं। अन्त में राजा युद्ध द्वारा चन्दा को प्राप्त करते हैं। राजा भानुउदय के पिता राजा रामचन्द्रभानु सिंह अपनी पत्नी रूपमती को छोड़कर एक वेश्या विजया से प्रेम करने लग जाते हैं। जब भानु-उदय को माँ का सारा दुःख मालूम होता है तो वे विजया को मारने की प्रतिज्ञा करते हैं लेकिन माँ द्वारा सौगंध दिलाने पर वे विजया की हत्या नहीं करना चाहते। माँ के सौगन्ध से राजा भानुउदय सिंह अनेक प्रकार की यातनाएँ सहते हैं लेकिन विजया वेश्या की हत्या नहीं करते हैं। अन्त में जब विजया के अत्याचार की सीमा का हद हो जाता है तब भानुउदय की सती पतिव्रता माँ रूपमती अपनी सौगन्ध वापस लेती है तब भानुउदय अपनी तलवार से विजया वेश्या का बध करते हैं और पिता-माता और पत्नी चन्दा के सहित विजय नगर का राज्य करते हैं।

माँस का विरोध (सन् १९६६, पृ० ७०), ले० रामसिंहासन राम 'उन्मुक्त,' प्र० पुस्तक मंदिर, बक्सर, पात्र पु० ३, स्त्री २, *अंक-रहित*, दृश्य ६।

इस गीति नाट्य में गांधीजी के संघर्षशील पचास वर्षों के जीवन-चित्रण द्वारा लेखक मानव संस्कृति का नवीन अध्याय दिखाना चाहता है।

गांधीजी ने मानव की पाशविक वृत्तियों को सदैव आत्मबल से विजित करने का प्रयास किया है। सत्य, प्रेम, अहिंसा के प्रति उनकी दृढ़ आस्था इसी ओर संकेत करती है। आत्मा और माँस के संघर्ष में कभी-कभी माँस भयंकर रूप धारण कर लेता है। अहिंसा के पुजारी गांधीजी का हिंसात्मक अन्त माँस के इस भयंकर विद्रोह का द्योतक है। किन्तु माँस के इस विद्रोह से आत्मा को और भी बल मिलता है। परिणामस्वरूप गांधीजी का मानवतावादी स्वर समस्त विश्व में व्याप्त हो जाता है।

माखन चोर (सन् १९३०, पृ० ६३), ले० : गुरदित्ता राम वैष्णव 'गुर'; प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली; पात्र : पु० १, स्त्री २; अंक-रहित; दृश्य १०।
घटना-स्थल : गोकुल की ब्रजभूमि।

यह पौराणिक नाटक है। भगवान् कृष्ण की बाल-लीलाओं का ही इसमें सर्वत्र चित्रण है। माखन-चोरी, ऊखल में बंधना, रास स्थान, गोपियों को छेड़ना आदि का दृश्य अधिकांशतः गाने के माध्यम से दिखाया गया है।

माटी जागी रे (सन् १९६४, पृ० ९२), ले० : ज्ञानदेव अग्निहोत्री; प्र० : आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : भोला का घर, गांव का चबूतरा।

गांव का साहूकार दीनदयाल गांव में फूट डालने वाले तथा शोषक वर्ग का प्रतीक है। खंडहर गाव के विघटन का प्रतीक है। खंडहर में सांप का बार-बार प्रकट होना—गांव में उपस्थित बुराई का प्रतीक है। भोला आदर्श भारतीय किसान है—वसंत नव जागरण का संदेश देने वाला और प्रकाश सबको जागृति की ओर ले जाने वाले व्यक्ति के प्रतिनिधि हैं एकता के अभाव में बिखरा हुआ भोला किसान का गांव अंत में एकता के कारण ही विकसित हो जाता है।

माता का प्रसाद (सन् १९५५, पृ० ८०), ले० : श्री सुरेश्वर पाठक विद्यालंकार; प्र० : ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना; पात्र : पु० १२, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ६,६,५।
घटना-स्थल : निर्जन जंगल में ठाकुर वाड़ी।

इसमें सन् १९४२ के आन्दोलन की एक झलक दिखाई गई है।

अंग्रेजों का उत्पात बढ़ रहा है। भारतीय घबड़ा रहे हैं और जल्द ही आन्दोलन होने वाला है। लाइन, तारें काटी जा रही हैं और एक क्रान्तिकारी युवक शैलेन्द्र और उसके मित्र दिनेश, रमेश एक पुराने खण्डहर में विद्रोह के विषय में बातें कर रहे हैं। एक बाजार के धनीमहल में डकैती होती है अंधेरी रात में शैलेन्द्र डकैत वेश में अपने साथियों के साथ आजादी के लिये एक सेठ के घर से छह हजार रुपये लेकर चला आता है। शैलेन्द्र रुपये और पिस्तौल को रागिनी के यहां रख देता है। रागिनी के यहां शैलेन्द्र और किशोर के बीच वार्तालाप होता है। किशोर टाका न डालने के लिए कहता है और रागिनी आजादी के लिये पचास हजार रुपया देने को तैयार हो जाती है। शैलेन्द्र स्वीकार कर लेता है। कालान्तर में इंस्पेक्टर साहब ठाकुर वाड़ी में मीना की उपस्थिति में किशोर का पता लगाने आते हैं और मीना के कठोर वचनों से बहुत शर्मिन्दा होते हैं। इधर किशोर, शैलेन्द्र इत्यादि साथी आजादी की लड़ाई में लगे हुए हैं। और बराबर रुपये का इन्तजाम कर रहे हैं। किशोर शैलेन्द्र प्रत्येक समय रागिनी से राय लेकर काम करते हैं।

इधर रागिनी के सामने हिंदू वीर जलूस निकाल रहे हैं। इन्सपेक्टर के मना करने पर सब नारा लगा रहे हैं—"इन्कलाब जिंदाबाद"। उस जलूस में रागिनी, मीना और सुशीला भी हैं। रागिनी के ऊपर लाठी पड़ने पर वह बेहोश गिर जाती है। अस्पताल में जाकर कुछ होश में आने पर मदन से मुलाकात करना चाहती है। सहसा वही मदन, जो इंस्पेक्टर था, आ जाता है। परिचय होने पर अपनी माता के पैरों पर गिर जाता है। रागिनी बेटे को प्रायश्चित्त करने के लिए कहती है और मीना का हाथ मदन के हाथ में दे देती है।

मातृ-भक्ति नाटक (सन् १९५०, पृ० ७६), ले० पं० तुलसीदत्त 'शैदा' स्नेही; प्र० : मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दिल्ली; पात्र: पु० ४, स्त्री ३; अंक: ३; दृश्य: ८, ८, ५।
घटना-स्थल : अश्वमेध यज्ञ, युद्ध-क्षेत्र, कैलास।

प्रवीर अपनी बहनोई स्वाहा के पति अग्निदेव से यह वरदान प्राप्त कर लेता है

कि वह सर्वाधिक यशस्वी वीर से युद्ध में विजय प्राप्त करेगा।

कौरवों से राज्य प्राप्त कर पाण्डव अश्वमेध-यज्ञ करते हैं और यज्ञ के घोड़े के साथ यह घोषणा करवाते हैं कि जो इस घोड़े को पकड़ेगा उसे विश्व-विजयी से युद्ध करना पड़ेगा। प्रवीर पत्नी के आग्रह पर वह घोड़ा पकड़ लेता है। यद्यपि महाराज नीलध्वज उसे छोड़ने का आदेश देते हैं, परन्तु उसकी माँ उसे युद्ध की प्रेरणा देती है।

प्रवीर पहले दिन युद्ध में अपनी माँ की चरण-धूलि लेकर अर्जुन और भीम को हराने में सफल होता है। अर्जुन और भीम कृष्ण की शरण ग्रहण करते हैं। कृष्ण प्रवीर से अत्यधिक प्रभावित होते हुए भी मित्र की मर्यादा की रक्षा के लिए माया का विस्तार करते हैं और अन्ततोगत्वा प्रवीर युद्ध में मारा जाता है। उसकी पत्नी मदनमंजरी भी सती हो जाती है।

अपने भक्त नीलध्वज को कृष्ण दर्शन देकर कृतार्थ करते हैं। महारानी जना पुत्र-वियोग में पागल हो गंगा में डूब जाती हैं। कैलाश पर्वत पर प्रवीर और मदनमंजरी महादेव के निकट दृष्टिगत होते हैं। कृष्ण वहाँ पहुँच मदनमंजरी का ऋण उतारने के लिए रास-लीला दिखाते हैं।

मादा कैक्टस (सन् १९५९, पृ० ८३), ले० डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २३, दरियागंज, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री २, अंक। ३, दृश्य रहित।
घटना-स्थल अरविन्द का बंगला और आर्ट गैलरी।

फाइन आर्ट कॉलेज का प्रिंसिपल अरविंद आधुनिक कला का कुशल चित्रकार है। वह अपनी पुरातन परम्परा की अनुयायिनी विवाहिता पत्नी सुजाता को इसलिए छोड़ देता है कि वह आधुनिका फैशन परस्त तितली नहीं बन पाती है। वह सुन्दरी तथा आधुनिका प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण विश्वविद्यालय की चित्रकार प्राध्यापिका आनन्दा की ओर आकर्षित है। सुधीर आनन्दा का अनुज है। वह जिद्दी, आवारा तथा मुँहफट स्वभाव का है। वह मिस खान के प्रति आसक्त है। आनन्दा माता पिता के विरोध पर भी भाई का विवाह मिस खान से करवा देती है।

आनन्दा उन्मुक्त स्वच्छन्द प्रणय का आनन्द लेती है। वह अरविन्द के साथ अपने सौन्दर्य और स्वास्थ्य को नष्ट होता देखती है। उसका पिता आनन्दा की शादी अरविंद से करना चाहता है, किन्तु अरविन्द शादी नहीं करता है।

कॉलेज की कला-प्रदर्शनी में अरविन्द आनन्दा के चित्र को गैलरी के मध्य में सजाता है। आनन्दा बीमार पड़ जाती है। कला प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर वह खाट पर ही पड़ जाती है। अरविन्द की कला पर सुजाता का एक समीक्षात्मक लेख उसी दिन प्रकाशित होता है। सुजाता अरविन्द से आनन्दा के स्वास्थ्य पर बात करने आती है और प्रसिद्ध उपन्यासकार दिवाकर के साथ अपनी शादी की सूचना भी देती है। वह अब कानपुर के गर्ल्स कॉलेज की प्राध्यापिका है। अरविन्द सुजाता के नवीन सम्बन्ध पर आवेश में आ जाता है तभी वह देखता है कि उसका मादा कैक्टस का पौधा सूखा हुआ पड़ा है। मादा कैक्टस आनन्दा का प्रतीक है। उसी समय सुधीर आनन्दा के फेफड़ों का एक्सरे लाकर अरविन्द को देता है, जिसे देखकर वह विक्षिप्त हो जाता है। सुधीर कहता है यह चित्र आर्ट गैलरी में लगाया जायेगा।

माधव विनोद (वि० १८०६, पृ० १६३), ले० सोमनाथ चतुर्वेदी कवि, प्र० सोमनाथ गुप्त, बापू नगर, जयपुर, अंक १०, दृश्य-रहित।

नाटक की कथा का आधार भवभूति कृत मालती माधव नाटक है। यह नाटक स्वांग की शैली पर आद्योपान्त छन्दोबद्ध है। प्रारम्भ में सूत्रधार और नटी के वार्तालाप से कामन्दकी जोगिन के अभिनय की समस्या सामने आती है। उसकी शिष्या अवलोकिता का पाठ करना भी कठिन माना गया। अब

प्रत्येक पात्र की वेशभूषा का वर्णन मिलता है। स्वांग की शैली पर कामंदकी और अवलोकिता अपना नृत्य दिखाकर सभा को रिझाती हैं। इसी प्रकार नृत्य और संगीत के द्वारा लवंगिका, सौदामिनि, देवरात, भूरिवित्त का क्रिया-कलाप और वार्तालाप दिखाया गया है। मालती और माधव के प्रथम दर्शन और उनके मिलन-विरह और पुनः मिलन का मनोहारी वर्णन मिलता है। अन्त में मालती के मन की शंका का निवारण होता है।

माधव सुलोचना (सन् १८९८), ले० : हरसहाय लाल; प्र० : स्वतः लेखक; पात्र : पु० ४, स्त्री ४; अंक-रहित।
घटना-स्थल : पुष्पवाटिका, विवाह मंडप।

भारतेन्दु युग में विद्या सुन्दर नाटक की शैली पर स्वच्छन्द प्रेम के विषय को लेकर अनेक नाटक लिखे गये। माधव सुलोचना उसी शैली का नाटक है। इस में नायक माधव तथा नायिका सुलोचना के हृदयों में प्रेम-सूत्र जोड़ने वाली मालिन है। उसी के प्रयत्न और दूरदर्शिता से इस नाटक में कई युवा-युवतियों का प्रेम सम्बन्ध स्थापित होता है। माधव और सुलोचना के अतिरिक्त मदन और रति में, अधीर और चन्द्रकला में, अपचेष्टा और चतुरिका में पारस्परिक प्रेम के द्वारा पाणिग्रहण की स्थिति आती है।

माधवानल कामकन्दला (सन् १८८६, पृ० २२४); ले० : लाला शालिग्राम वैश्य; प्र० : खेमराज श्रीकृष्णदास, मुंबई; पात्र : पु० ३१, स्त्री ११; अंक : १०; दृश्य : ३४ गर्भांक।
घटना-स्थल : पुष्पारण्य।

नाटक की नायिका कामकन्दला कामकौमुदी नामक वेश्या की पुत्री है। वह नर्तकी का कार्य करती है। राजदरबार में कामकन्दला का रमणीय नृत्य देखकर राजकुमार माधवानन्द उसकी ओर आकृष्ट होता है और राजभवन से विविध आभूषण उस नर्तकी को प्रदान करता है। राजा दोनों पर अत्यन्त क्रुद्ध होता है और प्राणदण्ड देने की धमकी देता है। माधवानन्द और कामकन्दला एक-दूसरे की मृत्यु होने की आशंका से अपना प्राण बलिदान करते हैं। किन्तु अन्त में अमृत के द्वारा दोनों को जीवित कर लिया जाता है। कामकन्दला वेश्या-पुत्री होने पर भी एक पुरुष के साथ विवाह करके आजीवन पातिव्रत-धर्म का पालन करना ही श्रेयस्कर समझती है।

माधवानन्द नाटक (सन् १९६२, पृ० ३८), ले० : हर्षनाथ; प्र० : दरभंगा प्रेस कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, दरभंगा; पात्र : पु० २, स्त्री ३; अंक : ५; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : यमुना-तट, वन-प्रांत।

प्रस्तावना के पश्चात् कृष्ण रंगमंच पर उपस्थित होते हैं। उनके हृदय में राधा के रूप-सौन्दर्य को देखकर पूर्वराग का प्रादुर्भाव होता है। राधा और कृष्ण एक ही क्षण में प्रेमपाश में आबद्ध हो जाते हैं किन्तु इस प्रकार की प्रेम-लीला स्थायी नहीं होती है। राधा कृष्ण के व्यवहार और वचन-चातुरी पर शीघ्र ही क्रोधित होकर मान कर लेती है। कृष्ण द्वन्द्व में पड़कर राधा का मान भंग करने के लिए बहुत प्रयत्नशील होते हैं। अन्ततः राधा प्रसन्न हो जाती है, और नाटक समाप्त हो जाता है।

माधवानल (वि० १७७०), ले० : राजकवि केश; प्र० : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग; पात्र : पु० ४, स्त्री २; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : पुष्पावती, कामावती नगरी, शिव-मन्दिर।

पुष्पावती के राजा गोविन्दचन्द के राज्य में माधवानल नामक ब्राह्मण सौन्दर्य और गुणगरिमा से पूर्ण राजा का पुरोहित है। वह शास्त्र ज्ञान-पारंगत और ललित कलाओं का ज्ञाता है। उस पर नगर की कितनी ही

स्त्रियाँ आकर्षित हैं। नगर पुरुषों के प्रतिनिधि-मण्डल की शिकायत पर राजा उसे निर्वासित कर देते हैं। कामावती के राजा कामसेन उसकी कला ममज्ञता के कारण उसको शरण देते हैं। राजनर्तकी कामकन्दला भी माधवानल से प्रभावित है। नृत्य के एक प्रदर्शन में कामकन्दला भ्रमर को अपने उच्छ्वासों तथा निश्वासों से उड़ाती है जिससे माधवानल ही समझ पाता है। वह राजा को भी अज्ञानी कहने पर वहाँ से भी निर्वासित होता है। दो दिन कामकन्दला के साथ सहवास सुख ले वहाँ से चला जाता है। वह अपने विरह का वर्णन शिव-मन्दिर की दीवारों पर लिख देता है, जिसे देख कर विक्रमादित्य उसकी सहायता करते हैं। किन्तु विरहताप से कामकन्दला आत्महत्या कर लेती है। राजा शिव की प्रार्थना से कामकन्दला को जीवित करता है और प्रेमी युगल उसके राज्य में सुखपूर्वक रहने लगते हैं।

माधुरी (सन् १८८५ के आसपास), ले० भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्र० खग विलास प्रेस, बाकीपुर, पात्र पु० १, स्त्री ७, अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल एक वृक्ष के नीचे।

माधुरी कृष्ण के प्रति गुप्त प्रेम करती है। वह वियोगिनी उनके प्रेम की निराशा में दुखी होकर एक वृक्ष के नीचे बैठी है। चपकलता उसकी दशा देखकर यह बात भाँप लेती है। इस निमित्त वह कई प्रश्न करती है। माधुरी मन के असली भाव को छिपाती है। अन्त में उस पर मन का भेद खोल देती है। दोनों के वार्तालाप से प्रकट होता है कि प्रेम की यह बात ठकुरानी जी तक भी पहुँच चुकी है जिससे माधुरी और कृष्ण के मिलन में भय और बाधा उत्पन्न हो गई है। माधुरी को अनेक ढंग से समझाती और सान्त्वना देती हुई चपकलता उसके वियोग जनित प्रेम की आकुलता और तीव्रता का अनुभव करती है। अब दोनों एक दूसरे से कृष्ण के प्रति प्रेमसबंध की अपनी-अपनी कथा-व्यथा कहती हैं। मालती लता-ओट से माधुरी की बातें सुनती है जिसका अनुमान लगने और बात फूट जाने के डर से माधुरी व्याकुल हो जाती है। अब मालती अपनी चार सखियों—सारंग, सुजान, गुनवती, श्यामा के साथ उन दोनों को घेर लेती है। सभी बारी-बारी से डाह भरे व्यंग्य वचन बोलती ताना मारती और परिहास करती हैं। तदनन्तर सभी कृष्ण से माधुरी के मिलन का उपक्रम करती हैं और उसे ले जाती हैं। माधुरी कृष्ण के विरह में अनेक प्रकार के विलापात्मक वचन कहती हुई मूर्छित होती है।

अंक-दृश्य-रहित होने के कारण गणना नहीं है तथापि नाटकीय तत्व के कारण यह काव्य अभिनेय बन सकता है। इसे काव्य नाटक कह सकते हैं।

मानव निश्चय ही लौटेगा—स्वर्णोदय' में संगृहीत गीति-नाट्य(सन् १९५१, पृ० ४०), ले० केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', प्र० ज्ञानपीठ प्रकाशन, प्रा० लि०, पटना, पात्र पु० ४, स्त्री ३, अंक-रहित, दृश्य १।

मानव आज आत्मप्रेरणाओं को त्याग कर वर्तमान की भौतिक उपलब्धियों की ओर अग्रसर हो रहा है, किन्तु वर्तमान की सीमाएँ शीघ्र ही जब अतीत में विलीन हो जाएँगी तब मानव पुन वापस लौटेगा। एक दृश्य में समाप्त प्रस्तुत कथा में आत्मा तथा मानव छाया आत्मप्रेरणा के रूप में चित्रित हुई है, जिन्हें मानव त्याग चुका है। आत्मा का यह विश्वास कि मानव एक न एक दिन निश्चय ही लौटेगा शीघ्र ही प्रतिफलित होता है। मानव को अपनी त्रुटियों का आभास होता है और वह पश्चात्ताप की ज्वाला में जलने लगता है। आत्मा उसका मार्ग प्रदर्शन करती हैं।

मानव प्रताप (सन् १९५२, पृ० १२३), ले० देवराज 'दिनेश', प्र० आत्मा राम ऐण्ड सस, दिल्ली, पात्र पु० १५, स्त्री ५, अंक-३, दृश्य ७, ३, ५।
घटना स्थल चित्तौड, हल्दीघाटी तथा वन प्रान्त।

राणाप्रताप अरावली पर्वतमाला से कुछ दूर मेघा जी से युद्ध के सम्बन्ध में बातें कर रहे हैं। इस युद्ध में हाकिम खाँ पठान प्रताप की हरावल का सेनापति है। रसद का भार अमर सिंह के ऊपर है। राणा को समाचार मिलता है कि राजा मानसिंह की सेना शिकार में व्यस्त है, और उस पर छिपकर आक्रमण बड़ी आसानी से किया जा सकता है, परन्तु प्रताप अपने पूर्वजों की आन का ध्यान करके इस योजना को सर्वथा ठुकरा देते हैं। हल्दीघाटी के मैदान में रात को युद्ध समाप्त होता है और राणाप्रताप बच निकलते है। शक्तिसिंह राणा को पहचान कर उनके पीछे दौड़ने वाले दो सैनिकों को मारता है और फिर भाई के प्रति प्रेम उमड़ने से राणा के पैरों में गिर पड़ता है। दोनों भाई फूट-फूटकर रोते हैं। शक्तिसिंह को अपनी भूल का पश्चात्ताप होता है। राणा युद्ध में चेतक को खो बैठते हैं।

राणा परिवार का कष्ट देखकर अकबर से सन्धि के लिए तैयार हो जाते हैं। परन्तु भामाशाह के साहस दिलाने पर वह अपने प्रण पर अटल रहते हैं।

अभिनय : विद्यालयों में अभिनीत।

मानव-विजय (वि० १९८३, पृ० ३०), ले०: हनुमान शर्मा; प्र० : श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई; पात्र: पु० १२, स्त्री-रहित; अंक-रहित; दृश्य : ९।
घटना-स्थल : युद्ध-भूमि।

प्रस्तुत नाटक आमेर-नरेश महाराज मानसिंह की विजय का वर्णन करता है। महाराणा मानसिंह ने ६५ लड़ाइयाँ जीती थीं। परन्तु उन सब लड़ाइयों में काबुल की लड़ाई सबसे कठिन है परन्तु मानसिंह उसमें भी विजयी होते हैं और साढ़े तीन वर्ष वहाँ स्वच्छन्द शासन करते है। इस नाटक में उसी लड़ाई का संक्षेप में दिग्दर्शन कराया गया है।

मानी वसन्त (सन् १९६५, पृ० १७५), ले०: गोपाल शर्मा; प्र० : लक्ष्मीधर वाजपेयी, आगरा; पात्र : पु०२, स्त्री १; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : घर का एक कक्ष, मैदान।

इस नाटक में आधुनिक विवाह-समस्या पर प्रकाश डाला गया है। नाटक का नायक रघुनाथ राव इस दुविधा में पड़ा है कि विवाह करना उचित है या नहीं। अन्त में वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि पुराने जमाने में शादी नहीं करेंगे ऐसा विचार भी लड़के के सिर में नहीं आता था। जब माँ बाप की इच्छा हुई कि शादी होनी चाहिए, शादी हो गई किन्तु आज-कल के लड़के अपने आप शादी करेंगे। अपनी पत्नी आप ही देखेंगे।

मालती वसन्त नाटक (सन् १९२६, पृ० ३५), ले० : प० वज्जर प्रसाद; प्र० . हितचिन्तक प्रेस, बनारस; पात्र : पु० २, स्त्री ६; अंक : ३; दृश्य : ३, १, १।
घटना-स्थल : नन्दन वन।

यह नाटक सामाजिक नाटक है जिसमें दो पात्रों (बसन्त और मालती) का प्रेम दिखाया गया है। मालती बसन्त से प्रेम करती है और विरोध के होते हुए दोनों का विवाह हो जाता है।

मालन तारा (सन् १९५८, पृ० ५१), ले०: मूलचन्द 'बेताब'; प्र० : जवाहर बुक डिपो, मेरठ; पात्र : पु० ७, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : २०।
घटना-स्थल : नेपाल का राजभवन और बीहड़ जंगल।

यह देहाती नेपाल का नाटक है। नेपाल देश में एक राजा नारायणसिंह है। जयपाल सिंह डाकू राजा को गद्दी से उतार कर स्वयं राजा बन जाता है। नारायणसिंह अपनी रानी तारा को लेकर जंगल में भाग जाते है, जहाँ से तारा मालन बनकर राजमहल में आया करती है। जयपालसिंह ने अपने रनिवास में कह रखा है कि यदि रानी के लड़की होती

है तो उसका सिर काट लिया जाएगा। रानी के लडकी हुई जिसे तारा मालन चुपके से अपने लडके से बदल देती है। यही लड़का बड़ा होकर राजा बनता और अपनी मालन माँ को पुन राजमाता का पद देता है।

मास्टर जी (सन् १९६०, पृ० ६२), ले० आनन्द प्रकाश जैन, प्र० आत्माराम ऐण्ड सस, दिल्ली, पात्र पु० २, स्त्री २, अक ३, दृश्य रहित।
घटना-स्थल गाँव एव पाठशाला।

प्रस्तुत नाटक मे अछूतोद्धार की समस्या को उठाया गया है। गाँव के स्कूल-मास्टर दीनानाथ गाँव के हरिजन लोगों का पक्ष लेते हैं, जिसके कारण गाँव के धनी व्यक्ति जीवनराम चौधरी उनके दुश्मन बन जाते हैं परन्तु दीनानाथ की विनम्रता के कारण उन्हें झुकना पडता है और अन्त मे कहते हैं—"गाँव मे पक्का स्कूल बनाऊँगा, और उसमे हरिजनो और ब्राह्मणो के बच्चे-बूढे साथ-साथ पढेंगे।"

मिट्टी का शेर (प्रहसन) (सन् १९३४, पृ० ४८), ले० जी० पी० श्रीवास्तव, प्र० साहित्य मडल, दिल्ली, पात्र पु० ४, स्त्री ३, अक-रहित, दृश्य ८।
घटना स्थल कमरा, बाहरी हाता, रास्ता, सडक।

इस प्रहसन मे एक अधेड डरपोक और मूर्ख व्यक्ति शेर बहादुर की कायरता को हास्य रूप मे दिखाया गया है। स्वार्थी नाथ एक बुढा और स्वार्थी व्यक्ति अपनी भतीजी विलासिनी का विवाह अधेड एव मूर्ख शेर बहादुर के साथ केवल इसलिए करना चाहता है क्योंकि वह विवाह मे उसका कोई खर्चा नहीं कराना चाहते। विलासिनी का प्रेम वसन्त के साथ है। वह अपने चाचा को पत्र लिख देती है कि वह अभी पढना चाहती है और विवाह के पक्ष मे नही है। स्वार्थी नाथ उससे बहुत ही रुष्ट होता है। वसन्त को जब विलासिनी के विवाह की सूचना मिलती है तो वह हडबडी मे भागा शेरबहादुर के घर जाता है। हडबडी मे विलासिनी का चित्र उसके हाथ से छूट जाता है। उस चित्र को पाकर शेर बहादुर के मन मे विलासिनी के विवाह के प्रति सन्देह होता है। वह अपनी स्त्री को वसन्त से बातें करते देखकर बहुत ही क्रुद्ध होता है। वसन्त विलासिनी के पास पहुँचता है और उसे बहुत फटकारता है। विलासिनी उसकी कायरता पर उसकी भर्त्सना करती है वसन्त और स्वार्थी नाथ का सवाद यह प्रमाणित करता है कि पहले स्वार्थी नाथ वसन्त को विवाह का आश्वासन दे चुके थे। स्वार्थी नाथ वसन्त के साथ विलासिनी का विवाह कर देते हैं।

मिट्टी की बेटी (सन् १९५८, पृ० १२०), ले० सागर बालपुरी, प्र० मजुल प्रकाशन राम निवास बिल्डिंग, रामनगर, नई दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ५, अक-रहित, दृश्य १०।
घटना-स्थल कुम्हार का घर।

यह नाटक गाँव के कुम्हार की बेटी की कहानी है। कुम्हार शनम की बेटी घर मे बरतन बनाती हुई शेखर से बातें कर रही है कि शनम आ जाता है। दरवाजा खुलते पर शनम शेखर को देखकर क्रुद्ध हो जाता है। शेखर चला जाता है। शनम बेटी निनिया को भी डाँटता है। इतने में शनम का दोस्त चमन आ जाता और निनिया की शादी के लिए वचन देता है। गाँव मे मुखिया-पटवारी यह रिश्ता कराना नही चाहते हैं। इधर अफसर शेखर को शनम के घर देख कर विरुद्ध रिपोर्ट सैक्रेटी के यहाँ भिजवा रहा है। शनम अपनी बेटी का रिश्ता करने जाता है तब तक निनिया किसी के साथ घर चली जाती है। इधर शनम को चोरी का केस लगा कर पुलिस थाने मे ले जाती है। निनिया सरपच के घर लाई जाती है और सरपच उससे शादी करना चाहता है। कालान्तर मे गाँव मे डाकू आ जाते है और सरपच की बेटी को गोली मारते हैं। पचायत मे उपसरपच और उसके साथी मेम्बर

हैं। एक ओर निनिया, मीना बेटी, इत्यादि को पट्टी बँधी है। उस समय निनिया अपनी शादी अस्वीकार कर लड़कियों को पढ़ाने के लिए कहती है। फिर सभा में जज फैसला करता है। सरपंच अपनी गल्तियाँ स्वीकार कर लेता है। निनिया और शनम के अलावा सबको सजा होती है। फिर निनिया जज से अर्ज करके सबको जीवन दान देती है। शनम निनिया का हाथ शेखर के हाथ में दे देता है।

मिथिला नाटक (वि० १६८०, पृ० ५२), ले० : रघुनन्दन दास; प्र० : कविवर मुंशी रघुनन्दन दास, बनारस सिटी; पात्र : पु० २६, स्त्री ४; *अंक* : ६; *दृश्य*-रहित।
घटना-स्थल : क्रोध का भवन, एक पथ, धर्म का निवास, भवन कलि का निवास भवन एवं नेपथ्य में गान।

प्रस्तावना के पश्चात् क्रोधान्ध कलियुग अपने सैन्य-समूह—क्रोध, लोभ, पिशुन, ईर्ष्या आलस्य आदि वृत्तियों को मिथिला के अतीत गौरव और समृद्धि को नष्ट करने के लिए भेजता है। मिथिला का मुख मलिन है, वेश जीर्ण-शीर्ण तथा वाणी में मार्मिक पश्चात्ताप की भावना स्पष्ट हो रही है उसे अपने विगत दिनों की याद आती है। यहाँ के वासियों को कलि के प्रभाव से बचाने की चेतावनी दे देती है। एक बंगाली भी मिथिला की गौरव-गरिमा का गुणगान करता है कि कलियुग का सैनिक धूर्त उसे पीटकर परेशान कर देता है। संतोष एवं धर्म इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अब हम लोगों का यहाँ निर्वाह संभव नहीं है क्योंकि कलियुग का प्रभाव सर्वत्र व्याप्त है। मिथिला का सर्वत्र अनादर होता है। दुर्मुख और दुस्साहस गुप्त रीति से संगी काम सम्पन्न करना चाहते हैं, मिथिला के प्रभाव से वे लोग भी डरते हैं। अतएव प्रत्यक्ष रूप से कुछ भी काम होना असंभव जान पड़ता है। यहाँ सबसे अधिक प्रभाव क्रोध का पड़ता है। कलियुग के प्रभाव के फलस्वरूप लोगों में पारस्परिक वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष, इत्यादि दुष्प्रवृत्तियों का अत्यधिक विकास होता है। अन्ततः मिथिला पर कलि का आधिपत्य हो जाता है। अपनी परिस्थिति को देखकर कलि के प्रभाव से मिथिला में निर्लज्जता, निर्दयता, निरुत्साह लोलुपता कपट एवं वंचकता इत्यादि का प्रचार-प्रसार होता है। मिथिला अपने अच्छे दिनों को याद कर आँसू बहाती है।

मिथिलेश कुमारी नाटक (सन् १८८८, पृ० ६६), ले० : विन्ध्येश्वरी प्रसाद त्रिपाठी; प्र० : खग विलास प्रेस, बांकीपुर, पटना; पात्र : पु० ५, स्त्री २; *अंक* : ६; *दृश्य*-रहित।
घटना-स्थल : घर, जंगल, विवाह-मंडप।

प्रस्तुत नाटक में मिथिलेश कुमारी केतकी की प्रणय कथा है। उसका प्रेमी माधव है। प्रेम मार्ग में अनेकों बाधायें आती हैं। अन्त में वे सफल होते हैं और विवाह सूत्र में बँध जाते हैं।

मिरजा जंगी (सन् १६४५, पृ० ६१), ले० : अजीम बेग चगताई; प्र० : छात्र हितकारी पुस्तक माला, दारागंज, प्रयाग; पात्र : पु० ११, स्त्री-रहित, *अंक* : ३ *दृश्य* : ३, २, ३।
घटना-स्थल : दीवान खाना, वृक्ष की छाया, बादशाह का दरबार।

इस प्रहसन में वाजिदअलीशाह के कर्मचारी मिरजा जंगी बटेर की टाँगें मुँह में लिये बैठे हैं। गोलन्दाज बब्बन खाँ को कानपुर से आने वाली आक्रमणकारी अँग्रेज पलटन पर गोलाबारी की आज्ञा मिलती है। बब्बन खाँ तोपों का दृश्य बताते हैं कि एक तोप में बिल्ली ने बच्चे दिए हैं, दूसरी बटेरों का दाना रखा है; तीसरी में रहते हैं चौथी में घरवाली कोयले बुझा कर रखती है। छत से एक बिल्ली कूदती है तो सब लोग डर कर भागने लगते हैं। मिरजा जंगी एक तलवार लेकर बिल्ली को मारने चलते हैं तो वह फाश करके भीत पर उछलकर चढ़ जाती है। मिरजा जंगी अवाक् रह जाते हैं और बिल्ली भाग जाती है। बादशाह के दरबार

में तीन भिखारी पकड़े जाते हैं और उन्हें जीवित दीवाल में चुनवा देने की आज्ञा दी जाती है।

अँग्रेज-फौज जब लखनऊ में आती है तो मिरजा जगी बख्त खाँ हुक्का पी रहे हैं। कुछ लोग अफीम घोल रहे हैं, कुछ बटेर लड़ा रहे हैं। लड़ने के लिए न तो किसी के पास हथियार हैं और न गोलाबारी की व्यवस्था। वाजिदअली शाह को अंग्रेज पकड़ ले जाते हैं।

मिर्जा साहिब 'पजाब की प्रीत कहानियों में' सकलित सगीत रूपक (सन् १९६०), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० आत्माराम ऐण्ड सस, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ३, अक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल नदी तट, जगल।

इस सगीत रूपक में पजाब की आंचलिक पृष्ठभूमि पर मिर्जा एवं साहिबा के उस परिपक्व प्रेम का प्रतिपादन किया गया है जो बाल्यकाल की देहरी पार करके यौवन में गुजायमान होने लगा है। उस प्रेम-मिलन में अवरोध बनती है—साहिबा की माँ। इस स्थिति को देखते हुए मिर्जा की मौसी मिर्जा को दानाबाद भेज देती है। कुछ समय पश्चात् साहिबा के विवाह की सूचना पाकर मिर्जा उससे मिलने आता है तथा अपनी मौसी की सहायता से साहिबा को भगाकर दानाबाद ले जाता है। मार्ग में एक स्थान पर वे विश्रामार्थ रुकते हैं। यहाँ साहिबा में अन्तर्द्वन्द्व होता है कि अब अगर उसके भाई आ गए तो निश्चय ही झगड़ा होगा। अनिष्ट आशंका उसे विकल करती है। तभी उसे एक उपाय सूझता है और वह मिर्जा के समस्त तीर तोड़ देती है, जिससे न होगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। इसी क्षण उसके भाई पीछा करते हुए आ जाते हैं और मिर्जा को ललकारते हैं। सघर्ष में तीरों के अभाव में मिर्जा की मृत्यु हो जाती है। उधर साहिबा भी मृत्यु की गोद में अनन्त काल के लिए सो जाती है। प्रेम के इस दुखद अन्त के साथ ही रूपक समाप्त होता है।

मिलन-यामिनी ('पुनरावृत्ति' में सकलित) (सन् १९५१, पृ० ४०), ले० हसकुमार तिवारी, प्र० ज्ञानपीठ लि०, पटना, पात्र पु० ४, स्त्री १, अक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल वेश्यागृह, मार्ग, कुटिया।

रूप और कला की अधिष्ठात्री वासवदत्ता तथा बौद्ध भिक्षु उपगुप्त के उदात्त-प्रेम पर आधारित एक रगीन रूपक है। कथा के रूप में सकेत-मात्र दिये हैं। अमावस की एक रात को वासवदत्ता अभिसार-हेतु निकलती है तथा रात्रि के सघन अधकार में परम सौम्य सन्यासी उपगुप्त से टकरा जाती है। इस पर रूपगर्विता वासवदत्ता उपगुप्त के काचन रूप पर मुग्ध होकर उसे आमत्रित करती है किन्तु वैराग्य-वैभव का स्वामी उपगुप्त फिर आने को कहकर चला जाता है। समय बदलता है। कभी प्रेमी-भ्रमरों से घिरी वासवदत्ता अब गलित काया लेकर नगर के बाहर रूप-यौवन का अभिशाप भोग रही है। पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार उसी रात उपगुप्त आता है और वासवदत्ता के उपेक्षित अस्तित्व को मिलन-यामिनी से अभिसिंचित करता है।

मिस अमेरिकन (सन् १९२९, पृ० १५८), ले० बदरीनाथ भट्ट, प्र० इडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, पात्र पु० ९, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ६, ६, २।

इस प्रहसन में पाश्चात्य सभ्यता एवं आचरण का उपहास उड़ाया है। इसमें वहाँ की सभ्यता तथा नैतिकता को व्यग्यात्मक ढग से प्रस्तुत किया है। जहाँ कि सदाचार के लिए कोई स्थान नहीं है तथा जिनके जीवन का एकमात्र केवल यही लक्ष्य रहता है कि जैसे भी हो अधिक से अधिक धन की प्राप्ति करना। इसमें श्रीमती अमेरिकन अपनी पुत्रियों को समझाती है—"मेरी प्यारी दुलारी, न सही गोरा, कोई हिन्दुस्तानी ही सही। अपने यहाँ तो यदि रुपया मिले तो सूअर से भी विवाह या मित्रता करने में सकोच नहीं किया जाता है।" यथार्थ रूप में नाटककार का लक्ष्य इसमें उस पाश्चात्य

भोगवाद को भी अनावृत करना रहा है, जिसमें कि जीवन की नैतिकता का मूल्य धन के सम्मुख तुच्छ है। इस प्रहसन में चुभते हुए व्यंग्यों के माध्यम से तत्कालीन परिवेश को स्पष्ट किया गया है। यह विशेषकर उन व्यक्तियों के लिए लिखा गया है जो भारतीय संस्कृति को पाश्चात्य संस्कृति से हेय समझते हैं और अपने जीवन को उसी सांचे में ढालते हैं।

मिस ३५ का पति निर्वाचन (सन् १९३५, पृ० ३९), ले० : सत्य जीवन वर्मा 'श्री भारतीय'; प्र० : सरस साहित्य सदन, प्रयाग ; पात्र : पु० ११, स्त्री १ ; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : सिविल लाइन्स का सुन्दर बंगला।

यह एक हास्य-प्रधान नाटक है जिसमें एक मिस आधुनिक सभ्यता से प्रभावित होकर अपने पति की खोज के लिए कवि, साहित्यकार, प्रोफेसर, आर्टिस्ट, कुंवर से साक्षात्कार करके वार्तालाप करती है। सभी लोग अपने-अपने पेशे को सर्वोत्तम बता कर अपने को योग्य प्रमाणित करते हैं किन्तु मिस इसी ऊहापोह में जीवन-भर अविवाहित रहकर योग्य वर की प्रतीक्षा ही करती रहती है। वह जीवन साथी को चुनाव के माध्यम से अपनाना चाहती है। इसी लिए उसकी मानसिक उलझनें सभी के पेशे की विशेषताओं को देखकर सुलझती नहीं। अन्ततः मिस एक आफिस में काम करने वाले मिस्टर क्लर्क को अपना प्रेम दिखाकर उससे विवाह का प्रस्ताव करती है किन्तु वह भी अपने मामा की स्वीकृति लेने के बहाने धोखा देकर चला जाता है और मिस प्रतीक्षा ही करती रह जाती है।

मिस्टर डब्ल्यू टी (सन् १९७०, पृ० ६८), ले० : रामनिरंजन शर्मा 'अलख'; प्र० : साधना मंदिर, पटना ; पात्र : पु० १०, स्त्री १; अंक : २; दृश्य : ७, ७।
घटना-स्थल : स्टेशन, रेल का डब्बा।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमें मि० डब्ल्यू टी, कुमार, किशोर तथा कंचन बिना टिकट यात्रा करने वाले शैतान व्यक्ति हैं जो गाड़ी में सफर करने वाले भले मनुष्यों का नाजायज गला घोंटते हैं। उनकी जेबें काटते हैं तथा गाड़ी में रखे हुए सामान को चोरी से लेकर उतर जाते हैं। जगह-जगह पर जंजीर खींचकर गाड़ी को रोक देते हैं जिससे गाड़ी के ठीक समय से न पहुँचने पर लोगों को बहुत बड़े-बड़े कष्ट उठाने पड़ते हैं। रमेश एक अच्छे बाप का लड़का है जो कई विद्यार्थियों के साथ इनका विरोध करता है लेकिन फिर भी ये नहीं मानते। अन्त में एक बार मिस्टर डब्ल्यू टी मजिस्ट्रेट-चैकिंग से डरकर चलती गाड़ी से कूद जाता है जिससे उसके दोनों पैर कट जाते हैं और बाद में अपने को पक्का शैतान बताता हुआ छुरा मारकर मर जाता है और उसके अन्य साथी गिरफ्तार कर लिए जाते हैं।

मिहिरकुल (सन् १९५५, पृ १०४), ले० : कैलाशनाथ भटनागर ; प्र० : भारतीय गौरव ग्रन्थमाला, नई दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : १४, ११, ६।
घटना-स्थल : कश्मीर की राजसभा, बौद्ध-विहार, शाकल की राजसभा, मन्दिर।

बौद्ध-धर्म के अहिंसा, भूतदया आदि सिद्धान्तों से प्रभावित हूण शासक मिहिरकुल शाकल के संघ-स्थविर से एक धर्म-मर्मज्ञ उपदेशक भेजने की प्रार्थना करता है जो उसे धर्म में दीक्षित कर उसका मर्म समझा सके। परन्तु संघ-स्थविर कुछ तो घृणा-भाव से और कुछ समता का दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए अच्छा उपदेशक न भेजकर मिहिरकुल को अपने सेवक से ही यह कार्य लेने का सुझाव देता है जिससे स्वभावतः क्रोधी मिहिरकुल रुष्ट ही नहीं होता अपितु बौद्धधर्म का शत्रु भी बन जाता है। जब उसने प्रतिशोध की भावना से बौद्ध-विहार नष्ट-भ्रष्ट करने प्रारंभ किए, तो बौद्ध धर्मावलंबी मगधराज बालादित्य दे उसे कर देना बन्द कर देता है। यह सूचना पाते ही मिहिरकुल मगध पर

आक्रमण करता पर बालादित्य की युद्ध-नीति के कारण वह परास्त होकर, बन्दी बनाया जाता और उसे प्राण-दड की आज्ञा दी जाती। परन्तु राजमाता के हस्तक्षेप और राजकुमारी के प्रणय-भाव के परिणामस्वरूप मृत्यु-दड प्रेम-दड मे बदल जाता है। राजकुमारी और मिहिरकुल प्रणय-बधन मे बध जाते हैं। विवाहोपरान्त मिहिरकुल अपने राज्य शाकल जाता है पर उसे ज्ञात होता है कि वहाँ तो उसके भाई खिखिल ने आधिपत्य जमा रखा है। अत परम निराशा की स्थिति मे वह काश्मीर जाता है। वहाँ का राजा न केवल उसे आश्रय देता है अपितु कुछ शासनाधिकार सौंपकर उसे भट्टारक का पद भी प्रदान करता है। कुछ समय बाद रहस्यमय स्थिति मे काश्मीर नरेश की मदिरा पान करते-करते मृत्यु हो जाती है। काश्मीर के वे व्यक्ति जो मिहिरकुल से द्वेष करते थे उसी पर राजा की हत्या का आरोप लगाते हैं, उसे अपदस्थ करने का यत्न करते हैं पर वह दृढता से स्थिति का सामना करता है। वहाँ के निवासियों पर नृशसता से शासन करता है तथा शैव-धर्म का प्रचार करता है। गाधार विजय के बाद मिहिरेश्वर मन्दिर की स्थापना के समय उसका भाई खिखिल भी यहाँ आकर अपने विगत कुकृत्य के लिए क्षमा मागता है। दोनो के मेल से हूणो की शक्ति बढ जाती है।

मीर कासिम (सन् १९६२, पृ० ७२), ले० चतुर्भुज शर्मा, प्र० साधना मन्दिर, पटना, पात्र० पु० १३, स्त्री २, अक ३, दृश्य ६, ६, ४।
घटना-स्थल बगाल के नवाब का महल तथा बक्सर का युद्ध-क्षेत्र।

सेनापति मीर कासिम अँग्रेजो की दुरभिसन्धि का शिकार होकर मीरजाफर के विरुद्ध विद्रोह करता है और बगाल, विहार तथा उडीसा का नवाब बनता है। अग्रेज उसे कठपुतली की तरह नचाना चाहते हैं। वह उनसे निकलने के लिए कटिबद्ध होकर फ्रासीसी सम्बर, अवध के नवाब सुजाउद्दौला तथा मुगल-सम्राट से सहायता लेकर अँग्रेजो के विरुद्ध सघर्ष करता है। छल, कूटनीति, षड्यत्र, घूस और पतन के गर्त मे भारत का यह नवाब युद्ध मे बलि चढ जाता है और अँग्रेजो का प्रभुत्व दिल्ली तक स्थापित हो जाता है।

मीर साहब (प्रहसन) (सन् १९५४, पृ० ७६) ले० सीताराम गुप्त, प्र० किताब महल, इलाहाबाद, पात्र पु० ११, स्त्री १, अक-रहित प्रत्येक प्रहसन मे तीन दृश्य।
घटना-स्थल वेश्या भवन, मार्ग, मकान, बाग, रास्ता।

इसमे ६ प्रहसन हैं—(१) गडबड शर्मा (२) रगेसियार, (३) मीरसाहब (४) बुद्ध (५) चौपटानद (६) स्वर्ग के दूत। प्रत्येक नाटक मे तीन दृश्य और तीन या चार पात्र हैं। स्वर्ग के दूत मे पुरुषपात्र ११ स्त्री-पात्र कोई नही है। प्रथम प्रहसन मे गडबड शर्मा समाज का नेता है जिसे सादा जोड घटाना नही आता। चिथरू कौंसिल का मेम्बर है जो मूर्ख सदस्यो की एक पार्टी बनाता है, मुस्लिम नेता मौलवी लालटेन उल्ला साहब हैं। ये सब नेता फजीता बेगम नामक नर्तकी का गाना सुनने उसके कोठे पर जाते हैं। वहाँ शराब पीते हैं। चिरू फजीता को लेकर भाग जाता है। शेष एक-दूसरे के गले मिलकर रोते हैं।

मीरा के स्वर (सगीत रूपक) (सन् १९६३ पृ० ३२), ले० मनोहर प्रभाकर, प्र० कल्याणमल एण्ड सस, जयपुर, पात्र पु० रहित, स्त्री १।
घटना-स्थल कृष्ण मदिर।

'मीरा के स्वर' सगीत रूपक के अतर्गत मीरा के कृष्ण प्रेम की एकाग्रता, उत्कृष्टता तथा मार्मिकता को अभिव्यजित करते हुए बीच-बीच मे मीरा के पदो का सयोजन किया गया है। जसपा तथा अन्य सगीत रूपक मे सग्रहीत।

मीरा नाटक (सन् १९३६, पृ०१३४), ले० : प्र० : सन्त गोकुल चन्द्र शास्त्री, लाहौर; पात्र : पु० १६, स्त्री १०; अंक ३; दृश्य : ८, ७, १०।
घटना-स्थल : राजभवन, उद्यान, गोपाल-मंदिर।

इस नाटक के अनुसार मीरा का विवाह भोजदेव के साथ हुआ है। इसी घटना क्रम को लेकर यह नाटक रचा गया है। विक्रम के कट्टर विरोधी मीरा का मुकाबला करते हैं। उसके मार्ग में बाधाएँ उपस्थित की जाती है उसे विष आदि देकर मार डालने के षड्यंत्र रचे जाते हैं पर सत्याग्रह के दृढ़ चट्टान पर खड़ी मीरा उन सबका सफलता से सामना करती है।

मीराबाई (सन् १९२०, पृ० ११०), ले० : दुर्गाप्रसाद गुप्त ; प्र० . उपन्यास बाहर आफिस, वाराणसी ; पात्र : पु० ३, स्त्री २ ; अंक : ३ ; दृश्य : ८, ६, ३।
घटना-स्थल : बाग, रास्ता, मकान, देवमंदिर, कोहबर, भूतमहल, मीरा की धर्मशाला, राणा का दीवानखाना।

नाटक का प्रारम्भ सखियों सहित मीरा के रास से होता है। मीरा के पिता जैमल साधु-महात्माओं को अपने घर बुलाकर सम्मान करते हैं। मीरा उनका पूजन करती है। मीरा को एक दिन एक साधु गिरिधर लाल की मूर्ति देता है। इस नाटक के प्रथम अंक के पाँचवें दृश्य में एक ढोंगी साधु रामदास की चरित्रगत बुराइयों का भी आभास मिलता है।

रामदास को सुशीला दक्षिणा रूप में रुपया देती है पर रामदास उसके धन अलंकार से ही प्रसन्न नहीं होता उसके शरीर पर भी अधिकार जमाना चाहता है। जब उसके सतीत्व को नष्ट करने के लिए आगे बढ़ता है तो सुशीला अपने कमंडल से जल गिराती है जिससे अग्नि उत्पन्न हो जाती है। दल्लू नामक ग्रामीण भक्त यह चमत्कार देखकर चकित रह जाता है और चना-गुड़ का नैवेद्य लगाता है। भगवान् प्रकट होकर उसे दर्शन देते हैं। इस प्रकार भक्ति उपासना के दोनों रूपों का दर्शन कराया गया है।

मीरा गिरिधर की मूर्ति लेकर ससुराल जाती है। उसकी सास और ननद उसकी उपासना-पद्धति को स्वीकार नहीं करती। मीरा न घूँघट काढ़ती है और न शर्माती है। मीरा के पति कुम्भ उसे भक्ति-उपासना से विरत करना चाहते हैं पर मीरा के अस्वीकार करने पर उसके कंठ पर तलवार चलाते हैं किन्तु राणाजी तलवार रोक लेते हैं। पर कुम्भ मीरा को भूत भवन में बन्द कर देते हैं। एक दिन भूतभवन में उसका वध करने कुम्भ पहुँचते हैं पर अपनी बहन के समझाने पर वह मीरा की मृत्यु विषपान द्वारा कराने को उद्यत हो जाते हैं। सौत मीरा को वृन्दावन के चरणामृत के बहाने विष देती है, किन्तु मीरा पर विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अकबर बीरबल और तानसेन मीरा की भक्ति-भावना से प्रभावित होकर उनके दर्शनार्थ मीरा की धर्मशाला में पहुँचते हैं। अकबर मीरा की परीक्षा के लिए छुप जाते हैं। बीरबल मीरा की परीक्षा लेते हैं। अकबर प्रसन्न होकर मोतियों का हार देना चाहते हैं पर मीरा उसे दीन-दुखियों को बाँटने के लिए निवेदन करती है। इतने पर भी कुम्भ साँप का पिटारा भेजते हैं, जिसमें कृष्ण भगवान् की मूर्ति निकलती है। मीरा भगवान् की स्तुति करती है।

मीराबाई (सन् १९३६), ले० : मोहम्मद इब्राहीम 'मणहर' अंबालवी, प्र० : जे० एस० सन्तसिंह ऐण्ड संस, लाहौर ; पात्र : पु० ३, स्त्री ४ ; अंक ३।
घटना-स्थल : राजस्थान, ब्रजभूमि तथा कृष्ण मन्दिर।

यह नाटक मध्यकालीन प्रसिद्ध कवयित्री मीरा के जीवन पर आधारित धार्मिक नाटक है। नाटककार ने मीरा पर गुजरी अतिवादी घटनाओं के द्वारा उसके संकटग्रस्त जीवन पर प्रकाश डाला है।

मीराबाई (सन् १९२५, पृ० ८२), ले० रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल, प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस सिटी, पात्र पु० १०, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ६, ६, ३।
घटना-स्थल मेवाड का राजमहल, वृन्दावन।

यह एक भक्तिरस पूर्ण धार्मिक नाटक है। मीराबाई अपने प्रभु गिरिधर गोपाल की भक्ति मे लीन हो जाती है। उसके अन्दर सासारिक वासनाओ से अनुपम विराग, लौकिक सुखो का अलौकिक त्याग तथा भगवान् के चरणो मे अनूठा अनुराग देखने को मिलता है। वह बचपन से ही भगवान् की अनन्य भक्त है। मीरा का विवाह उसके माता-पिता राणा सागा के पुत्र कुम्भाजी के साथ कर देते हैं। दहेज मे मीरा के माता-पिता उसे बहुत सारी चीजें देते हैं लेकिन मीरा उन सभी उपहारो को न ग्रहण करके अपने साथ मे गिरधरगोपाल जी की मूर्ति ही ले जाती है। ससुराल जाने पर मीरा को उसकी सास द्वारा तथा कुल ननद-देवता की पूजा के लिए दबाव डाला जाता है लेकिन मीरा उनके कुल देवता की पूजा नही करती। वह तो केवल गिरधरगोपाल की पूजा मे ही लवलीन रहती है, जिससे उसके पति कुम्भाजी मीरा पर बहुत क्रोधित होते हैं और मार डालने के लिए उसे भूत महल मे डलवा देते हैं। लेकिन वहाँ से मीरा सुरक्षित निकल आती है, जिससे कुम्भा जी बडे आश्चर्यचकित होते हैं। वे मीरा को विष का प्याला भेज देते है। मीरा राणा द्वारा भेजे गये जहर के प्याले को हँसती हुई पी जाती है। विष दिये जाने पर भी जब मीरा नही मरती तो उसे कुम्भा जी स्वय मारने के लिए तलवार उठाते हैं लेकिन कृष्ण-प्रताप से उनकी तलवार टूट जाती है।

अनेक यातनाओ के सहने के बाद भी मीरा कृष्ण-भक्ति को नही छोडती। अन्त म वह दुखी होकर तुलसीदास जी को पत्र लिखती है जिसके जवाब मे तुलसीदास जी मीरा को घर छोडकर 'वृन्दावन' कृष्ण के पास जाने के लिए लिखते हैं। पत्र पाते ही मीरा वृन्दावन चली जाती है। इधर शची भी राणा के ऊपर से अपनी माया का प्रभाव हटा लेती है जिससे राणा भी मीरा के बिना पागल हो जाते हैं और वे मीरा को ढूँढने के लिए वृन्दावन की ओर चले जाते हैं। राणा के चले जाने पर प्रजा के सभी लोग बडे दुखी होते हैं और वृन्दावन जाकर मीरा से घर वापस लौटने के लिए प्रार्थना करते हैं। वहाँ पर शची (इन्द्राणी) भी प्रकट होकर मीराबाई से क्षमा याचना करती है। अन्त मे मीरा सभी लोगो को भगवद्-भक्ति का उपदेश देकर स्वर्ग-लोक चली जाती है।

मीराबाई नाटक (सन् १९३६, पृ० १२५), ले० मुकुन्दलाल वर्मा, प्र० भार्गव पुस्तकालय, बनारस, पात्र पु० ७, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ८, ७, ७।
घटना-स्थल मेवाड का राजमहल, वृन्दावन का मन्दिर।

यह भक्ति-रस-पूर्ण ऐतिहासिक नाटक है। इसमे सुप्रसिद्ध कृष्ण-भक्त और कवयित्री मीरा के सम्पूर्ण जीवन को चित्रित किया गया है। मीरा का विवाह मेवाड के प्रसिद्ध राणा वश के भोजराज के साथ होता है। मीरा अपने पतिगृह मे कुल देवता के पूजन को मना करने पर सास-ननद तथा परिवार की कोप-भाजन बनती है। मीरा के दस वर्ष के अल्प दाम्पत्य जीवन का पति की मृत्यु के साथ अन्त हो जाता है। वह कुल परम्परा के अनुसार पति के साथ सती नही होती है। वह रणछोड के मन्दिर मे कृष्ण-भक्ति मे लीन हो जाती है। राणा-परिवार मीरा के इस कृत्य को परिवार के लिए कलक मानता है और परिवार का मुखिया विक्रमादित्य मन्त्री जुझारसिंह की राय से विषपान तथा शालिग्राम की पेटारी मे नाग भेजकर मीरा की इहलीला समाप्त करना चाहता है। मीराबाई राणा का महल छोड वृन्दावन आती है और कृष्णभक्ति मे लीन हो जाती है। मन्त्री जुझारसिंह राणा विक्रम को पदच्युत कर राज्य हस्तगत करने का

प्रयत्न करता है। राणा भी अब कुल-मर्यादा समझ मीरा को वापस लाने का संकल्प करते हैं। मीरा को कृष्ण का वियोग सहन नहीं होता है। राणा के सम्मुख ही उसका जीवन समाप्त हो जाता है और मीरा कृष्ण-चरणों में सर्वदा के लिए स्थान बना लेती है।

मीराबाई नाटक (सन् १६५०, पृ० ८८), ले० : न्यादरसिंह 'बेचैन' 'देहलवी'; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० १५, स्त्री १२; अंक : ३; दृश्य : ७, ५, ३।
घटना-स्थल : मेवाड़ का राजमहल, वृन्दावन, मन्दिर।

यह एक धार्मिक नाटक है। महाराज जयमल अपनी कन्या मीरा का विवाह चित्तौड़ के राणा भोजराज के साथ कर देते हैं। मीरा विवाह से पूर्व ही कृष्ण की अलौकिक शक्ति के सम्मुख अपने आप को समर्पित कर देती है। पतिगृह उनके लिए पीड़ा, यातना, कलंक का बन्दीगृह बन जाता है। वह साधु-संत-सत्संग के कारण काल कोठरी, विष-पान और नाग-दंशन का दण्ड पाती है। भगवान् अपने भक्त की सब प्रकार से रक्षा करते हैं। मीरा की ख्याति दूर-दूर तक फैल जाती है। सम्राट् अकबर, बीरबल और तानसेन भी मीरा की भक्ति की परीक्षा करते हैं। अपने जीवन से पीड़ित मीरा भक्त तुलसीदास से परामर्श करती है और "छांड़ि मन हरि विमुखन को संग।" के मंत्र पर गृहत्याग देती हैं। राणा भी अपनी भूल पर पश्चात्ताप करते हैं। मीरा पूर्ण सम्मान के साथ परिवार में गृहीत होती हैं।

मुञ्जदेव (सन् १६५८, पृ० १२६), ले० : ओंकार नाथ दिनकर; प्र० : गुरदास कपूर एण्ड संस, एज्यूकेशनल पब्लिशर्ज, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० १०, स्त्री ७; अंक : ३; दृश्य : ८, ६, ६।
घटना-स्थल : अवन्तिका।

इस ऐतिहासिक नाटक में विक्रम की ग्यारहवीं शती के मध्यकालीन राजा मुञ्ज के चरित्र का चित्रण किया गया है। नि.सन्तान अवन्तिका-नरेश सिंहदत्त द्वितीय को देशाटन के मध्य मुञ्जायन प्रदेश में एक पुत्र मिल जाता है। कुछ काल पश्चात् महारानी को भी पुत्र सिंधुल उत्पन्न होता है। राजा मुञ्जदेव को ही उत्तराधिकारी नियुक्त करता है। मुञ्जदेव भी नि.सन्तान होने पर दुखी रहता है। जबकि सिंधुल को भोज नामक पुत्र उत्पन्न हो जाता है। महारानी चित्रांगदा तो भोज को पुत्रवत् मानकर सन्तुष्ट हो जाती है, किन्तु मुञ्जदेव की खिन्नता बनी रहती है। मंत्री रुद्रादित्य भोज को समाप्त करने की दुरभिसन्धि में मुञ्जदेव से आदेश लिखवा लेता है और वंग-नरेश वत्सराज को उसे समाप्त करने का भार सौंपता है। वत्सराज भोज को मारता नहीं, वह उसे छिपा देता है। मुञ्जदेव इस जघन्य कृत्य पर पश्चात्ताप करता है, तब वत्सराज भोज को वापस कर देता है। इसी मध्य तैलंगाधीश तैलपराज द्वितीय अवन्तिका पर आक्रमण कर देता है। अपनी बाल विधवा भगिनी मृणालवती के परामर्श से तैलपराज स्थूनराज भिल्लमराज को पराजित कर अपना सामन्त बना लेता है। यही भिल्लमराज मुञ्जदेव को मल्लयुद्ध में परास्त कर उसे बन्दी बना लेता है। राजा उसे मृत्यु-दण्ड देना चाहता है। मृणालवती उसे एक कारावास से बदलकर दूसरे बन्दीगृह में डाल देती है। मुञ्जदेव को वह अपना गुरु बनाती है और कुछ काल पश्चात् प्रेमपाश में बँधकर तैलपराज को मारने के षड्यन्त्र में भाग लेती है। मुञ्जदेव असफल होता है और उसे प्राणदण्ड मिलता है।

तैलपराज का सन्धि-विग्राहक कवि पद्मगुप्त ही उक्त षड्यंत्र का सूत्रधार होता है। कवि की प्रेरणा से भिल्लमराज की पुत्री कंचनमाला भोज की ओर आकर्षित होती है और अवन्तिका में पहुँच उससे परिणय करती है। भिल्लमराज भोज को सामन्त बना देता है। वह मुञ्ज को छुड़ाने तैलंग जाते हैं किन्तु वहाँ पहुँच कर—"गतः मुञ्जे यशः पुंजे निरवलम्बा सरस्वती" की घोषणा सुनते हैं।

मुशी प्रेमचन्द (सन् १९६८, पृ० ९९), ले० देवीप्रसाद 'धवन', प्र० चैतन्य प्रकाशन मदिर, कानपुर, पात्र पु० ६, स्त्री १, अक ३, दृश्य ८, १०, ६।
घटना-स्थल घर, दफ्तर, गोष्ठी।

उपन्यास सम्राट् प्रेमचन्द जी के जीवन के बारे मे विशेषत उनके आर्थिक सकट, हिन्दी प्रवेश, साहित्यिक गोष्ठी एव सगठन को लेकर इस नाटक की रचना हुई है। प्रेमचन्द का प्रारम्भिक जीवन बडा कष्टमय है। उनकी पहली पत्नी आर्थिक सकट के कारण ही उनका घर छोड देती है। फिर प्रेमचन्द शिवरानी देवी से विवाह करते हैं जिससे उन्हें बडा सुख और सन्तोष मिलता है। सरकारी नौकरी के समय प्रेमचन्द जी किसी से रिश्वत नहीं लेते हैं और अपना काम स्वय करते हैं। कानपुर के साहित्यकार इससे उनकी प्रशसा करते हैं। 'नमक का दरोगा' कहानी की प्रशसा इसी बहाने करते हैं। फिर प्रेमचन्द अपनी साहित्यिक सेवाओं के बारे म साहित्य-कारो मे बात करते हुए बताते हैं कि मैं मजदूर, गरीब, अमीर सबको समान देखना चाहता हूँ। नाटक के अन्त मे नवीन, कौशिक, सनेही, अवस्थी आदि साहित्यकार उनके साहित्यिक कार्यों का विवेचन करते है। नाटक मे मुशी प्रेमचन्द की यथा-रूप प्रस्तुत करने का प्रयास है।

मुकद्दर की चोट कृष्ण की ओट उर्फ लुहार बाढी (सन् १९५८, पृ० ४९), ले० मूलचन्द 'बेताब', प्र० जवाहर बुक डिपो, मेरठ, पात्र पु० ७, स्त्री ३, अक-रहित, दृश्य ९।
घटना-स्थल गाँव।

यह देहाती लेखक की रचना है। विन्ध्य-देश के कणपुर गाव मे घनश्याम दास लुहार और शोभाराम वढई रहते हैं। इनमे से लुहार के लडके की शादी नही होती और बढई क लडके की शादी हो जाती है। शोभाराम अपनी मित्रता द्वारा स्त्री की बुद्धि पर पर्दा डालता है और खुद होनहार नारी से हार मानता है और कृष्ण की ओट मे शिकार खेलता है तब उसे अपने आप का ज्ञान होता है।

मुकुन्द इदिरा (वि० २०१५, पृ० १४७), ले० बालकृष्ण सम, प्र० रत्न पुस्तक भडार नेपाल, पात्र पु० ११, स्त्री ४, अक ५, दृश्य ३, ३, ५, ४, ३।
घटना-स्थल गाव, जगल, खेत, मडप।

इस सामाजिक नाटक मे दो ग्रामीण प्रेमियो की कहानी है। दोनो एक दूसरे से प्रेम करते हैं और अनेक कठिनाइयो के बाद विवाह कर पाते हैं।

मुकुट (सन् १९५०, पृ० १०२), ले० नित्यानन्द हीराचन्द वात्स्यायन, प्र० हिन्दी भवन, जालन्धर, पात्र पु० ८, स्त्री २, अक २, दृश्य ७, १३।

नाटक का नायक है मध्यवर्ग का डॉ० मोहन, जो दीन-दरिद्र मजदूरो के कष्ट से द्रवित हो न धन की, न मान की और न विलासमय जीवन की ही चिन्ता करता है। वह अपना जीवन गरीब मजदूरो की सेवा म अर्पित कर देता है। इसके लिए उसे न केवल अपनी बाल-सहचरी का ही परित्याग करना पडता है, अपितु अपने पिता के मित्र मिल-मालिक सेठ जगदीशचन्द्र और उनके पुत्र कैलाश चन्द्र से भी सघर्ष करना पडता है। नौकरी से हटना पडता है, जेल जाना पडता है और सच्ची सहानुभूति से मजदूर परिवार की सेवा करने पर भी विधवा युवती स प्रेम करने का लाछन सहना पडता है। उसका विरोधी है कैलाशचन्द्र जो मजदूरो का शत्रु है, मजदूरो की युवा स्त्रियो को खिलौना समझकर उनसे खेलना चाहता है। अपनी इन्द्रिय-तृप्ति के लिए दमन का आश्रय लेता है। उद्देश्यपूर्ति के लिए छल-कपट और कूट-नीति का प्रयोग करता है परन्तु भण्डाफोड हो जाने पर स्वय उसका पिता वस्तुस्थिति को पहचान एक ओर मजदूरो की सब माँगें स्वीकार कर हडताल समाप्त करा देता है और दूसरी ओर डा० मोहन को अपना जामाता स्वीकार कर लेता है।

मुक्त पुरुष—'पतमसा' में संग्रहीत रेडियो गीति-नाट्य (सन् १९६८), ले० : जानकी वल्लभ शास्त्री; प्र० : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; *पात्र:* पु० ६, स्त्री ३; *अंक-रहित; दृश्य:* ६ ।
घटना-स्थल : कंस का कारागार, नन्द भवन, गोवर्धन पर्वत, शयनागार ।

'मुक्त पुरुष' कृष्ण के लोक-कल्याणकारी रूप पर आधारित गीति-नाट्य है । मन तथा वाणी से विभक्त मानव सामाजिक विषमता का शिकार हो रहा है । विषमता की इन गाँठों को केवल मुक्त पुरुष ही खोलेगा क्योंकि वह पूर्ण पुरुष सर्वसमर्थ होगा । इसके पश्चात् मुक्त पुरुष कृष्ण का अवतार होता है और वह कालीयदह में नाग-नाथना, गोवर्धन-धारण, वृन्दावन-निवास, राक्षसों का वध आदि घटनाओं द्वारा लोकरक्षण करता है । इन विविध-घटनाओं के अनन्तर कृष्ण के मथुरा-गमन के साथ ही गीति-नाट्य समाप्त हो जाता है ।

मुक्ति का रहस्य (वि० १९८९, पृ० ११३), ले० : लक्ष्मीनारायण मिश्र; प्र० : साहित्य भवन, इलाहाबाद; *पात्र :* पु० ७, स्त्री १; *अंक :* ३; *दृश्य-रहित* ।
घटना-स्थल : सड़क किनारे दुमंजिला मकान ।

इस समस्या नाटक में प्रेम का आधुनिक रूप दिखाया गया है ।

इस नाटक में डिप्टी-कलक्टर उमाशंकर असहयोग आन्दोलन के दिनों में देश भक्ति से प्रेरित होकर सरकारी पद से त्याग-पत्र दे देता है । फलस्वरूप वह राजद्रोही घोषित होता है और दो वर्ष के लिए कारावास का दण्ड पाता है । बन्दीगृह से मुक्त होने पर आशादेवी नामक एक युवती से उस का सहवास हो जाता है । आशादेवी उमाशंकर पर अनुरक्त होती है । यह लीला देखकर और उमाशंकर को पारिवारिक उत्तरदायित्व के निर्वाह के लिए धन-अर्जन से सर्वथा पराङ्‌मुख पा, उमाशंकर के चाचा काशीनाथ विक्षुब्ध हो उठते हैं । आशादेवी के साथ उसका (उमाशंकर) सहवास पारिवारिक मर्यादा के विरुद्ध होने के कारण उन्हें खटकता रहता है । तन-मन-धन से देश-सेवा की ओर प्रवृत्त होने के कारण उमाशंकर धन-अर्जन करने में असमर्थ होता है और चाचा के ऋण से उऋण होने के लिए अपनी पैतृक संपत्ति उन्हें प्रदान कर देता है ।

इधर आशादेवी उमाशंकर को पति बनाने के स्वप्न में, उसी के एक मित्र, डाक्टर त्रिभुवननाथ से विष लेकर उसकी पत्नी को दे देती है । आशादेवी की इस दुर्बलता से अनुचित लाभ उठाकर डाक्टर उसका कौमार्य भंग करता है । इससे क्षुब्ध होकर आशादेवी अपना प्राणांत करने के लिए विष खा लेती है पर डाक्टर के उद्योग से बच जाती है । डाक्टर को अपनी दुर्बलता का बोध होने पर पश्चात्ताप होता है और वह अपने कुकृत्यों के लिए आशादेवी से क्षमा-याचना करता है । आशादेवी का हृदय उसकी ओर आकर्षित होता है । वह उसके साथ विवाह कर दोनों को भावी पतन से बचा लेना चाहती है । इसके लिए वह शर्माजी की अनुमति चाहती है । शर्माजी अपनी स्त्री की मृत्यु और डाक्टर के साथ आशादेवी के अवैध सम्बन्ध का रहस्योद्‌घाटन होने पर खिन्न होते हैं और उन्हें सांसारिक प्रपंचों से इतनी वितृष्णा होती है कि ऐसे जीवन से मृत्यु को अधिक कल्याणकर समझ पिस्तौल से आत्महत्या करना चाहते हैं । परन्तु आशादेवी के आग्रह और मनोहर के प्रेम के कारण आत्महत्या करने से विरत हो जाते हैं ।

मुक्तिदूत (सन् १९६०, पृ० ८२), ले० : उदयशंकर भट्ट; प्र० : आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; *पात्र* पु० १५, स्त्री ६; *अंक :* ३; *दृश्य :* ५, ६, ४ ।
घटना-स्थल : राजमहल, मार्ग, जंगल ।

यह नाटक राजकुमार सिद्धार्थ के जीवन पर आधारित है । इसके प्रथम अंक से ही उन्हें उदासीन और विरक्त दिखाया जाता है । उन्हें भौतिक सुखों में ले आने के लिए महाराज शुद्धोदन द्वारा किये गये सारे प्रयास उलटा प्रभाव डालते हैं । इसी बीच वे मानव मात्र के दुःख-निवारण-हेतु रात

म पत्नी-पुत्र को सोता छोड जगल की राह लेते हैं। ज्ञान की खोज मे भटकते-भटकते उन्हे एक दिन बुद्धत्व की सिद्धि हो जाती है। बुद्ध होने पर वे लौटकर आते हैं और पत्नी को वत्से और माँ शब्दो से सबोधित कर आशीर्वाद देते हैं।

मुक्ति देवता ! प्रणाम—'अनुक्षण' मे सकलित सगीत रूपक (सन् १९५८, पृ० ६६), ले० डॉ० प्रभाकर माचवे, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ काशी, पात्र पु० ३, स्त्री ३, अक-दृश्य रहित।
घटना-स्थल खुला मैदान।

यह नाटक भारत की उन महान् विभूतियो के प्रति गीतात्मक श्रद्धाजलि है, जिन्होने जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे मुक्ति मत्र फूका है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल के गाधी जी तक होने वाले मुक्ति-प्रयासो का वर्णन वाचक-वाचिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

वैदिक काल मे मानव मुक्ति का आकाक्षी था किन्तु शीघ्र ही जन-मानव रूढिग्रस्त होता गया। ऐसे समय मे गौतम, कबीर आदि महात्माओ ने जन-मन को रूढिमुक्त करके सत्य-अहिंसा, दया, सेवा आदि मानवीय गुणो के रूप मे जीवन का स्वस्थ दर्शन प्रदान किया। *अत मे स्वतन्त्र भारत मे समत्व* विधान की कामना के साथ यह सगीतरूपक समाप्त होता है।

मुक्ति यज्ञ (सन् १९६७, पृ० १२०), ले० ओकारनाथ दिनकर, प्र० प्रगतिशील समाचार समिति, भीलवाडा, राजस्थान, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ५, ४, ४।
घटना-स्थल चित्तौड का राजप्रासाद और शयन-कक्ष।

उस ऐतिहासिक नाटक मे राजपूती पतन एव सिंहासन-लिप्सा *का सुन्दर प्रतिपादन* हुआ है। चित्तौड के महाराणा लाखा (लक्षसिंह) राणा वश के गौरव के उन्नायक हैं। वह मडोवर के राव के निर्वासित राजकुमार रणमल को शरण देते हैं। कालान्तर मे राव मडोवर राजकुमार चण्ड से कुमारी हसा का सम्बन्ध निश्चित करने के लिए राणा लाखा के पास नारियल भेजता है। राणा ने परिहास मे—"इस श्वेत दाढी वाले के लिए आप नारियल लेकर खेल करने न आए होंगे।" कह दिया। परिणामत चण्ड उस नारियल को लाखा को अपने लिए स्वीकार करने का आग्रह कर स्वय आजीवन कौमार्य व्रत का सकल्प कर लेता है। हसा चित्तौड-महारानी होती है। उसमे मुकुल नामक पुत्र भी उत्पन्न होता है।

राणा लाखा गया मे म्लेच्छो का दमन करने जाते हैं। चण्ड अल्पवयस्क मुकुल को उत्तराधिकार समर्पित कर स्वय उसका सरक्षक होता है और शासन-सूत्र का सचालन करता है। राणा लाखा की मृत्यु के बाद रणमल अपनी बहन हसा को अपने प्रभाव मे कर लेता है। षड्यत्र द्वारा वह चण्ड को निर्वासित करके चित्तौड हस्तगत करना चाहता है। दासी-पुत्र वीर मेनानी औलेर सी सीसोदिया लोगो की घृणा का प्रतिशोध लेने के लिए अपना अलग कुचक्र चलाता है। वह राजकुमार मुकुल का वध कर स्वय शासक बनता है। रणमल और चण्ड के भाई राघव देव मे विरोध हो जाता है। रणमल साजिश करके राघव देव का वध करा देता है। चित्तौड षड्यत्र, कुचक्र और अराजकता, हिंसा तथा द्रोह का घर बन गया।

महारानी हसा चण्ड को, जिसने माँडू मे शरण ली थी, राज्य सभालने का निमत्रण देती है। चण्ड अपने त्याग, न्याय, राष्ट्रीयता और स्वामिभक्ति से राष्ट्र की रक्षा का भार उठा लेता है। विलासी रणमल एक रमणी के शील-भग के प्रतिशोध-स्वरूप मारा जाता है।

मुक्ति-यज्ञ (सन् १९३७, पृ० १३७), ले० सत्येन्द्र, प्र० साहित्य रत्न भडार, आगरा, पात्र पु० ८, स्त्री १५, अक-दृश्य-रहित।
घटना स्थल सभा, आश्रम।

इस नाटक का नायक स्वामी प्राणनाथ

है जो भारत में ऐसे समाज की कल्पना कर रहा है जो जाति और वर्ण में विभाजित न होगा। वह देश की मुक्ति मानवतावाद में मानता है। उसका मत है कि संसार में केवल एक जाति है, वह है मनुष्य जाति, और किसी जाति का बन्धन स्वीकार करके इस संसार के झंझटों को बढ़ाना है। स्वामी प्राणनाथ का मत है कि केवल जातीय विश्वास से उस देश की मुक्ति नहीं हो सकती। वह मानवतावाद का संदेश सब को सुनाता है और इसी को युग का आदर्श मानता है।

मुद्रा राक्षस (सन् १६५०, पृ० १२२), *ले०:* बल्देव शास्त्री, न्यायतीर्थ; *प्र०:* एस० चांद एण्ड कम्पनी, दिल्ली; *पात्र:* पु० २०, स्त्री ३; *अंक* ७; *दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल: राजसभा, जंगल, घर, फांसी घर।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। चन्द्रगुप्त नाटक का नायक है। चन्द्रगुप्त पाटलीपुत्र का राजा है। चाणक्य राजनीति का प्रसिद्ध प्रकांड पंडित है जो विष्णुगुप्त और कौटिल्य नाम से जाना जाता है। राक्षस एक राजनीतिज्ञ तथा नंद वंश का प्रिय भक्त प्रधान मंत्री है। उसको चाणक्य अपनी राजनीति से चन्द्रगुप्त का मंत्री बनाना चाहते हैं। चाणक्य स्वार्थसिद्ध को मार डालता है। फिर भी राक्षस मलयकेतु को अपने साथ मिलाकर चन्द्रगुप्त के विनाश का प्रयत्न करता है। चाणक्य अपनी नीति से राक्षस के विरुद्ध विष-कन्या के द्वारा अपने मित्र पर्वतेश्वर को मरवा डालने का झूठा प्रचार करता है। वह साथ ही साथ स्वपक्ष और पर-पक्ष दोनों के हितैषियों और द्वेषी जनों को जानने की इच्छा से सिद्धार्थक तथा जीवसिद्ध आदि गुप्तचरों को नियुक्त कर देता है। अंत में चाणक्य अपनी चतुरता से नंद वंश के विनाश की खबर राक्षस के पास पहुँचाता है। चाणक्य, चन्दन दास को बहुत बार समझाता है लेकिन वह अपने मित्र राक्षस के परिवार का पता चाणक्य को न बताकर स्वयं मरने को तैयार हो जाता है। जब चन्दनदास को फांसी के तख्ते पर ले जाया जाता है तब राक्षस स्वयं प्रकट होकर चन्दनदास को मुक्त करा देता है और अपने साथ में अस्त्र धारण करता है। अंत में चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त भी आकर सारी गुप्त गतिविधियों का ज्ञान राक्षस को कराते हैं, जिससे चाणक्य, चन्द्रगुप्त और राक्षस की आपस में मैत्री हो जाती है।

यह नाटक मुद्राराक्षस का अनुवाद नहीं है। किन्तु उसी की कथावस्तु का अनुसरण कर स्वतन्त्र रूप से लिखा गया है।

मुनिक मतिभ्रम (सन् १६५६, पृ० ४०) *ले०:* योगानन्द झा; *प्र०:* विद्यापति प्रकाशन; *पात्र:* पु० ६, स्त्री ४; *अंक* १; *दृश्य:* ३।
घटना-स्थल: राजमहल की कोठरी, तपोवन, च्यवन का आश्रम, लतामंडप एवं राजा शर्याति का विश्राम कुटीर।

राजा शर्याति की कन्या सुकन्या तपोवन की रमणीयता के दर्शनार्थ जाती है। वस्तुतः सुकन्या तपोवन की सौन्दर्य-सुषमा से प्रभावित हो जाती है। इस पर उसकी अन्तरंगिणी सखी लतिका व्यंग्य करती है कि जंगल से वापस होने पर कहीं आप राज कुमारी रहें। एक टीले में रोशनी आते देखकर सुकन्या उत्सुकतावश उसमें एक साही के कांटे को भोंकती है। वस्तुतः वह टीला नहीं है। च्यवन ऋषि तपस्या में तल्लीन हैं। उनका शरीर मिट्टी से आवृत है। उस कांटे के चुभने से उनकी आंख फूट जाती है। इसका प्रभाव महाराज शर्याति और उनकी प्रजा पर अत्यधिक पड़ता है। शर्याति च्यवन की सेवा में जंगल में उपस्थित होते हैं, किन्तु वे उनकी एक बात भी नहीं सुनते हैं। च्यवन के हृदय में उनकी कोमल षोडशी कन्या सुकन्या के प्रति वासनात्मक भाव का उदय हो जाता है, अतएव वे शादी का प्रस्ताव रखते हैं। सुकन्या के हृदय में त्याग की भावना अति प्रबल है। वह माता-पिता एवं बन्धु-सखा आदि की इच्छा के विरुद्ध अपने आपको मुनि की सेवा में समर्पित कर विश्व के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करती है।

मुन्नी, धूप और हवा (सन् १९५९, पृ० ४९), ले० श्री नरेश, प्र० जन-सम्पर्क विभाग, बिहार (पटना), पात्र पु० ८, स्त्री २, अक-रहित, दृश्य ४।
घटना-स्थल साधारण मध्यवित्त परिवार का एक कमरा, सुनील के मकान का बाहरी भाग, लम्बा बरामदा, खपरैल के घर का दृश्य, हरीश का कमरा।

भारत की स्वतत्रता के बाद उत्पन्न कुठा, बेकारी और तनावपूर्ण जीवन के बीच सरला और हरीश की टूटती हुई आस्था से नाटक का आरम्भ होता है। जीवन जीने की खोज मे हरीश बार-बार फिसल जाता है, फलस्वरूप उसके भीतर क्रान्ति की कुठा उत्पन्न हो जाती है। हरीश के क्रान्तिमूलक विचारो का आधार ही है विपन्नता। इसलिए अपनी विपन्न स्थिति से ऊबकर हरीश कहता है कि "बेहतर होता कि मैं, तुम, मुन्नी कोई पैदा ही न होता।" हरीश का मित्र सुनील गाधीजी की शान्तिमूलक-क्रान्ति का समर्थक है और प्रत्येक समस्या का निदान सरकार पर न छोडकर अपने पौरुष के बल पर अपने समाज का नवनिर्माण करना चाहता है, वह हरीश को अपने कुटीर-उद्योग मे काम करने का अवसर देकर उसकी रचनात्मक मेधा को समाजोनुकूल बनाने का प्रयास करता है। इस नई जिन्दगी को पाकर सरला सन्तुष्ट है लेकिन कुठा से पीडित हरीश सुनील के कुटीर-उद्योग मे हडताल करवाने का प्रयत्न करता है। वह अपने प्रयत्न म असफल होकर शहर लौट जाता है। वहाँ उसे एक फर्म मे अच्छी नौकरी मिल जाती है और उसकी क्रान्तिकारी चेतना मे परिवर्तन आता है।

मूर्ख-मडली (सन् १९१८, पृ० ११०), ले० रूपनारायण पाडेय, प्र० दुलारे लाल अध्यक्ष, गगा-पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, पात्र पु० १२, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ५, ५, ४।
घटना-स्थल भगवती प्रसाद का बैठक खाना, राजमहल का बाग, राज-सभा, अत -पुर, चमेली के सोने का कमरा, राजा की बैठक, रास्ता, रानी के सोने का कमरा, विवाह-मडप।

यद्यपि इसका आधार द्विजेन्द्रलाल राय कृत एक नाटक है किन्तु नाटककार की अपनी प्रतिभा इसे मौलिक नाटक के आस पास खडा कर देती है।

राजा विक्रमसिह की रानी चपा पति से कई कारणो से रुष्ट रहती है। राजा चाहता है कि रानी चम्पा का निधन हो जाये तो वह अपनी पाँचवी शादी कर सके। वह रानी के दूर के नाते की बहन चमेली पर मुग्ध है, पर चमेली उसके पौत्र किशोरसिंह से प्रेम करती है। इधर राजा के मुसाहिब कुजबिहारी, बनवारी, मथुरा इत्यादि मूर्खता की बातें करते हैं। राजा गप्पों से मनोविनोद करता है। एक दिन जैसे ही वह चमेली को अक मे लिपटा कर चुम्बन करने जा रहा था त्योही चमेली की चिल्लाहट सुनकर रानी चम्पा आ जाती है। राजा उसे छोडकर भागता है। राजा चमेली से व्याह करने पर तुला है पर उसका लडका गोपाल रुष्ट होकर कहता है—मैं यह ब्याह कभी न करने दूगा। रानी मरने का बहाना बनाती है। नौकर सूचना देता है कि "रानी मर कर भी सौत का नाम सुनते ही जी उठीं। हम लोगो ने बहुत मना किया पर उन्होंने सुना नहीं। तड स जीकर उठ बैठी और चूडियाँ उडाने लगी।"

तीसरे अक मे राजा विवाह-मडप मे बैठता है। उसका लडका गोपाल बलात उसे उठाकर कहता है—'इस लडकी से मेरा ब्याह होगा।' राजा कहता है कि तेरे लिए कल लडकी ढूढ दूँगा। आज मेरा ब्याह होने दे।

नाटक के अन्त मे डाक्टर भगवती कहता है—'प्रेम एक विचित्र बीमारी है। ब्याह होने के दो-तीन साल बाद ही अच्छी हो जाती है।

मूर्खानन्द (सन् १९०५, पृ० ८०), ले० आनन्द प्रसाद ठाकुर, प्र० ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सस, वाराणसी, पात्र पु० ४, स्त्री २, अक १, दृश्य ५।
घटना-स्थल घर, औषधालय।

मूर्खानन्द नाटक हास्यप्रद नाटक है। इसमें पति-पत्नी के गहरे प्रेम को दर्शाया गया है। पति-पत्नी दोनों प्रेम में इतना विलीन हो जाते हैं कि उन्हें अपने जीने-मरने का भी होश नहीं रहता। मूर्खानन्द वहम से अपनी पत्नी द्वारा बनाये गये भोजन को नहीं खाते हैं क्योंकि उनको उसमें विष मिला होने का भय हो जाता है। उस भोजन को गणेश खाता है। वह बिल्कुल चैतन्य रहता है और अपनी पत्नी चमेली से खूब प्यार करता है। जब उसे भोजन में विष होने का पता चल जाता है तो वह शंका भूल जाता है और मरने लग जाता है। जब उसकी शंका धन्वन्तरि द्वारा दूर कर दी जाती है तो पुनः मूर्खानन्द और गणेश दोनों ठीक हो जाते हैं।

मूर्तिकार (सन् १९४९, पृ० ७५), ले० बलवन्त शर्मा; प्र० : अतरचन्द कपूर ऐण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : १, २, २।
घटना-स्थल : मिस्टर मेहता का बंगला और जयदेव मूर्तिकार का स्टूडियो।

नाटक में पदमुक्त प्रोफेसर की एकमात्र कन्या शान्ति के उन्नीसवें जन्म-महोत्सव पर वैचारिक संघर्ष प्रकट होता है। सुधीरा माता-पिता-विहीन शरणार्थी युवती है। उसके एकमात्र भाई सुन्दर को श्रमिक आन्दोलन में भाग लेने से अफीम के अवैध व्यापार के दोषारोपण में बन्दी बना दिया जाता है। उसकी अनुपस्थिति में सुधीरा प्रोफेसर की कृपा पर उसके साथ रहती है। वह सुन्दरता से शान्ति के जन्मोत्सव पर १९ मोमबत्तियों को सजाती है और शान्ति से प्रशंसा प्राप्त करती है। जयदेव वहाँ पर अपनी बुर्जुआ रोमांटिक रंगीनी कला की कुरूपता में सौन्दर्य की व्याख्या करता है। शान्ता का मामा मिल में मजदूरों की हड़ताल के कारण पार्टी में सम्मिलित नहीं होता है। मिसेज मेहता श्रमिकों की निन्दा करती है। सुधीरा जयदेव की कला को सामन्ती-साम्राज्यवादी चिन्तन का प्रतीक समझती है। वह जयदेव द्वारा निर्मित मूर्तियों से प्रमाण भी प्रस्तुत करती है।

जयदेव अपने स्टूडियो में भूखी-नंगी तड़पती लड़की की छवि अंकित करने के लिए रूपा को मॉडल में उतारने में व्यस्त है। वह उसे भूखी रख कर सामने एक ही मुद्रा में बिठाये रखता है। मूर्ति पर उसे पुरस्कार मिलता है किन्तु रूपा भूख की तड़पन से मर जाती है।

पुरस्कृत मूर्ति 'भूखी लड़की' पर जयदेव का स्वागत समारोह मि० बत्रा के घर होता है। मध्यवर्गीय मेहता आदि प्रशंसा करते हैं। सुधीरा मूर्ति के माध्यम से मध्यवर्गीय पूँजीपति विचारधारा पर प्रहार करती है और अँग्रेजी राज्य के प्रभावों की भी बखिया उधेड़ती है। वह कला को अर्थ-लोलुपता की साधना कहकर पार्टी से चली जाती है। उसी समय मृत रूपा की माँ रूपा के लिए दिए गए रुपये का जयदेव को वापस करती हुई कहती है कि 'इस रुपये में रूपा का रक्त है।' कलाकार मर्माहत होकर पश्चात्ताप करता है और अपनी त्रुटि को स्वीकारता है।

मृत्युञ्जय (सन् १९६६, पृ० ११८), ले० : ओंकार नाथ दिनकर; प्र० : साहित्य निकेतन, हाथीभाल, अजमेर ; पात्र: पु० १४, स्त्री २ ; अंक : ३ ; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : मेवाड़।

यह ऐतिहासिक नाटक राष्ट्रीयता के उद्देश्य से लिखा गया है। मुगल सम्राट् जहाँगीर महाराणा अमर सिंह का अपमान करने के उद्देश्य से सगरसिंह को मेवाड़ का सिंहासन सौंप देता है। सगरसिंह को मेवाड़ की प्रजा अपना महाराणा नहीं स्वीकार करती है। सगरसिंह आत्मग्लानि की अनुभूति के साथ सिंहासन अमरसिंह को सौंप देता है। जहाँगीर क्रुद्ध होकर सगरसिंह को बन्दी बनाकर दरबार में बुलाता है। इस पर दुर्व्यवहार-त्रसित सगर आत्मघात करके इह लीला समाप्त कर लेता है। जहाँगीर मेवाड़ को पददलित करने का संकल्प करता है।

आनन्दभोगी ऐश्वर्योन्मत्त अमर को राज्य के वीर राजपूत योद्धा आक्रमण का प्रतिरोध करने की प्रेरणा देते हैं। सेना के

हिरावल पद के लिए चूडावतो और शक्तावत सरदारो मे द्वन्द्व होता है। निर्णय किया जाता है कि जो दल ऊंटला दुर्ग को शक्ति द्वारा अधिकृत करेगा वही हिरावल का अधिकारी माना जाएगा। दोनो पक्ष ऊंटला-विजय को तत्पर होते हैं। भयकर प्रतिरोध मे शक्तावत बल्लजी फाटक पर अपना शरीर लगा देते हैं, जिससे हाथी चोट न खायें और फाटक तोड-काटकर चूडावत सरदार जैतसिंह अपना सिर दें। और दुर्ग प्रागण मे फिकवा देता है ताकि हिरावल चूडावतो को ही प्राप्त हो। हिरावल प्राप्त करने के लिए दोनो महान् विभूतियाँ अपना बलिदान कर देती हैं।

मृत्यु की ओर (सन् १६५०, पृ० १०६), ले० सन्तोष कुमार, प्र० सज्जो प्रकाशन, पो० ब० न० २४६२, देहली, पात्र पु० ८, स्त्री ७, अक ३, दृश्य ३, ३, ५। घटना स्थल कँवल का घर, अस्पताल।

कँवल और नीला सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं परन्तु क्रोध, दुर्भाग्य, शका, अविश्वास आदि कँवल के इस सुखी जीवन मे काँटे बिछाने की कोशिश करते है। दुर्भाग्य के इस आचरण को देखकर बुद्धि और कर्म कँवल की रक्षा करना चाहते हैं लेकिन दोनो कुछ कर सकने मे सफल नही होते हैं। क्रोध, दुर्भाग्य, शका आदि दुष्टात्माओ की चाल चल जाती है और वे कँवल के सुखमय जीवन में विष बोने मे सफल हो जाते हैं। एक तरफ बुद्धि और कर्म अपनी असफलता पर आँसू बहाते हैं तो दूसरी तरफ, दुर्भाग्य, क्रोध, शका, अविश्वासादि अपनी सफलता पर अट्टहास करते हैं।

मृत्यु-सभा (सन् १८६५), ले० दरियाव सिंह, प्र० कल्याण लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, पात्र पु० ५, स्त्री० १, अक ४, दृश्य-रहित। घटना-स्थल यमपुरी, सभा।

इस नाटक मे शराबियो की सभा होती है और वे बडी रुचि से मद्यपान करते हैं। इस सभा मे मद्यपान के पक्ष मे नाना प्रकार के तर्क-वितर्क होते हैं। सासारिक दुखो से मुक्ति पाने का यह सबसे सुन्दर साधन माना जाता है। मद्यपान के पक्ष मे दूसरा तर्क यह है कि ससार मे जीवन सुख से व्यतीत करने के लिए शरीर का नीरोग होना अत्यावश्यक है और सुरापान शरीर को नीरोग रखने मे बडी सहायता करता है। अत मद्यपान का निषेध करने वाले मूर्ख है और प्रत्येक व्यक्ति को मद्यपान से लाभान्वित होना चाहिए।

मेघदूत ('कालिदास' मे सग्रहीत, सन् १६५० पृ० ८१), ले० उदयशकर भट्ट, प्र० आत्माराम ऐण्ड सस, दिल्ली, पात्र पु० २ स्त्री १, अक-दृश्य-रहित।

'मेघदूत' सगीतरूपक कालिदास के मेघदूत मे वर्णित कुवेर-शापित यक्ष के विरह तथा मेघ को दूत बनाकर प्रिया के पास भेजने की प्रख्यात कथा पर आधारित है। उसके अन्तर्गत मूल कथा के विभिन्न मार्मिक स्थलों का कलात्मक चित्रण किया गया है।

मेघदूत ('पुनरावृति' मे सकलित), (सन् १६५१, पृ० ८०), ले० हसकुमार तिवारी, प्र० ज्ञानपीठ प्रा० लि०, पटना, पात्र पु० २, स्त्री १।

'मेघदूत' एक सगीत-रूपक है, जिसमे कालिदास के 'मेघदूत' मे वर्णित कथा को ही सक्षिप्त रूप मे प्रस्तुत किया गया है।

मेघदूत (वि० २०२५, पृ० १११), ले० कमला कान्त वर्मा, प्र० शिक्षा सर्वाधिनी सभा, ग्राम भरौली, वलिया, पात्र पु० ७, स्त्री ६, अक २, दृश्य २, २। घटना-स्थल रामगिरि आश्रम, उज्जयिनी का राजभवन।

राजकुमारी विद्या पाती हैं कि इस काव्य की नायिका यक्षिणी का चित्रण कवि की प्रेयसी राज नर्तकी विद्युत् के ही व्यक्तित्व और मन स्थिति का अधिक वर्णन

करता है। इससे इन्हें थोड़ा स्त्रियोचित कष्ट अवश्य होता है, किन्तु वे विद्युत् द्वारा ही मेघदूत का प्रस्तुतीकरण कराने की व्यवस्था करती हैं जिससे स्वयं विद्युत् भी संकुचित होती है। सम्राट् कवि की इस काव्य-कृति से क्षुब्ध हो विद्युत् को उज्जयिनी से निष्कासित करने की व्यवस्था करते हैं, किन्तु राजकुमारी विद्या ऐसी किसी भी व्यवस्था को अस्वीकार करती है।

वर्षा मंगलोत्सव के अवसर पर कालिदास को सूचना मिलती है कि राजकुमारी ज्वर-ग्रस्त है और सम्राट् ने उन्हें तुरन्त उज्जयिनी लौटने का आदेश दिया है। वे इस सूचना से चिन्तित भी होते हैं और कुछ लज्जित भी। उनकी इस मन:स्थिति में उनके अपने ही नाटकों की पात्राएँ—मालविका उर्वशी, और शकुन्तला नारी के परकीया रूप के प्रति उनके आकर्षण की भर्त्सना करती हैं।

उज्जयिनी में राजकुमारी ज्वर-ग्रस्त है। कवि को राजनर्तकी से प्रेम है अत: राजकुमारी का आग्रह है कि उन दोनों का विवाह हो जाना चाहिए। सम्राट् भी इसके लिए तैयार हो गये किन्तु राजनर्तकी स्वयं इसके लिए तैयार नहीं। वह इसे राजकुमारी के प्रति अन्याय समझती है, और उज्जयिनी से गुप्त रूप से भाग निकलना चाहती है। इसी समय कालिदास उससे मिलते हैं, और उसे भागने से रोककर बताते हैं कि वे एक नई काव्य-साधना के लिए स्वयं कहीं बहुत दूर चले जाना चाहते हैं।

कालिदास चले जाते हैं। राजनर्तकी-विकल हो उठती है, किन्तु राजकुमारी अचल है।

मेघनाद (सन् १९३९, पृष्ठ ९२), *ले०* : आचार्य चतुरसेन शास्त्री; *प्र०* : गौतम साहित्य निकेतन, नई सड़क, दिल्ली; *पात्र:* पु० १६, स्त्री ६; *अंक* : ५; *दृश्य* : ४, ६, ६, ६, ६।

घटना-स्थल : लंका का राजमहल, गिरिप्रान्त, युद्धभूमि।

इसमें राम-रावण युद्ध में चित्रांगदा अपने पुत्र वीरबाहु की मृत्यु पर शोकाकुल हो रावण के दरबार में जाती है। रावण उसे समझा कर स्वयं युद्ध में प्रस्थान को प्रस्तुत है। मेघनाद उस समय प्रमोद वन में सुरा और सुन्दरियों के मध्य समाचार पाता है। वह युद्ध के लिए तत्पर होता है। किन्तु रावण उसे निकुम्भला यज्ञ-संपादन के बाद युद्ध में जाने तथा नेतृत्व करने का आदेश देता है।

दैवशक्ति-युक्त राम दुर्बलता के शिकार चित्रित होते हैं। लक्ष्मी उनकी रक्षा के लिए इन्द्र से अनुरोध करती है और उन्हें शक्ति की उपासना द्वारा रावण-विजय का सुझाव दिया जाता है। राम शक्ति-उपासना करते हैं। भाई लक्ष्मण के शक्तिबाण से आहत होने पर सीता के उद्धार को कठिन समझते हैं और दुर्बल हो विलाप करते हैं। इन्द्र पार्वती के कहने पर दुर्गम हिमकूट पर तपस्यारत शिव की शरण लेते हैं। शिव महामाया के पास दिव्यास्त्र के लिए भेजते हैं और लक्ष्मण को स्वप्न में मेघनाद वध का उपाय दिखाई देता है।

वन्दिनी सीता भी मलीना, कान्तिहीना एवं अत्यन्त अधीरा दिखाई देती है। लक्ष्मण पूर्व-निर्देश एवं विभीषण की सहायता से यज्ञरत मेघनाद का वध करते हैं। वीरांगना सुलोचना दैत्य-बालाओं की सेना के साथ राम की सेना के पास पति के शव के साथ सती होती है।

सती सीता स्वयं को राम-लक्ष्मण और सभी आपत्तियों का कारण समझती है। रावण विद्वान्, वीर, विवेकी-न्यायी तथा राम दुर्बल, दैवीशक्ति हीन चित्रित किए गए हैं।

मेघनाद (सन् १९६०, पृ० ८६), *ले०* : चतुर्भुज एम० ए०; *प्र०* : साधना मन्दिर, पटना; *पात्र* : पु० १३, स्त्री ५; *अंक* : ३; *दृश्य* : ७, ६ ४।

घटना-स्थल : पर्वत, जंगल, राम-सभा, रण-भूमि।

यह एक धार्मिक नाटक है। मेघनाद भगवती की पूजा करके अमर होने का वरदान मांगता है। भगवती प्रसन्न होकर उसे अमर होने का आशीर्वाद तो देती हैं किन्तु कहती हैं

कि तुम किसी ऐसे पुरुष से युद्ध मत करना जो बारह वर्षों तक स्त्री का सहवास न किये हो अन्यथा तुम्हारी मृत्यु हो जाएगी। मेघनाद अपने अपूर्व बल से इन्द्रजित कहलाने लगता है। रावण जब सीता का हरण कर लेता है तब उसमे और राम में लड़ाई छिड़ती है। अपने पिता की ओर से मेघनाद राम से युद्ध करता है और लक्ष्मण को मूर्छित कर देता है। तब सुषेण वैद्य सजीवनी बूटी से लक्ष्मण की चेतना वापस लाते हैं। चेतना होने पर लक्ष्मण मेघनाद के वध की प्रतिज्ञा करते हैं और युद्ध म उसे मार गिराते हैं। मेघनाद के मरने के बाद उसकी पत्नी सुलोचना विलाप करती है तथा छिपकर अपने पति के हत्या करनेवाले लक्ष्मण को कोधाग्नि मे भूनना चाहती है। पर राम के कहने से लक्ष्मण उस सती स अपने अपराध की क्षमा-याचना करते हैं। साध्वी सुलोचना लक्ष्मण को क्षमा कर अपने पति मेघनाद के शव के साथ सती हो जाती है।

मेघनाद वध (सन् १८९४, पृ० ४०), ले० बालकृष्ण भट्ट, प्र० हिंदी प्रदीप, नवम्बर-दिसम्बर १८९४ के अक मे प्रकाशित, पात्र पु० ४, स्त्री २, अक ३, दृश्य ९।

मेघनाद के लिए चिंतित सुलोचना उसके सम्बन्ध मे विचक्षण से बातें करती है। इसी समय आकस्मिक रूप से उपस्थित होकर मेघनाद सुलोचना के आगे अपनी वीरता का बखान करता है। इधर, अपहृत सीता के लिए राम वानरों और रीछ की सेना के साथ समुद्र पार कर राक्षसो से कठिन युद्ध ठान देते हैं। मेघनाद के रणकौशल तथा असाधारण वीरता से राम के वीर सेनानी निराश हो जाते हैं। अन्त मे लक्ष्मण द्वारा उसका वध होता है।

मेरी आशा (सन् १९५०, पृ० ११२), ले० शिवरामदास गुप्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस, पात्र पु० ८, स्त्री ५, अक ३, दृश्य ६, १०, ३। घटना-स्थल घर, वेश्यागृह।

यह एक शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक है। इसमे भोलानाथ अमीर पिता की सम्पत्ति पा जाने पर स्त्री-प्रेम म लीन हो जाता है। वह माँ बाप को दर-दर की ठोकरें खिलाता है। अन्त मे माँ पुत्र विरह मे मर जाती है। उसकी सारी सम्पत्ति नष्ट कर देता है जिससे भोला को माँ-बाप के विरह का एहसास हो जाता है और उसकी आँखें खुल जाती हैं। गौरीनाथ अपनी वासना-तृप्ति के लिए एक सती नारी गौरी को प्रलोभन देकर उठा लाता है। वह उसका सर्वस्व हरण कर उसे घर से निकाल देता है। वह गौरी को मार डालता है जिसके अपराध मे उसे काला पानी की सजा दी जाती है।

इसमे भोलानाथ की पुत्री सरस्वती तथा मुन्नी वेश्या का चरित्र बड़ा ही उत्तम है। मुन्नी वेश्या के रूप मे साक्षात् देवी है जो सरस्वती के पति भगवान् को उसकी पत्नी का वास्तविक ज्ञान कराती है तथा अपने सुखो की परवाह न करके सरस्वती के लिए आत्म-समर्पण कर देती है। सरस्वती भी दुख के समय अपने पति की सहायता करती है जिसमे मदान्ध भगवान् को फाँसी की सजा से मुक्ति मिल जाती है।

मेरी पसन्द (सन् १९५८ पृ० ११३), ले० गुरुदत्त, प्र० भारतीय साहित्य सदन, नई दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री ७, अक ३, दृश्य ८, ६, ६। घटना-स्थल गाँव, नगर का घर।

यह एक सामाजिक नाटक है। प्रभाकर मिश्र एक कवि है। वह आधुनिक समाज की लडकी को पसन्द करता है, किन्तु उसकी माँ अपनी पसन्द की बहू घर मे लाना चाहती है। प्रभाकर गाव की लडकी सुग्गी मे बचपन से प्रेम करता है। किन्तु शहर के वातावरण मे आने से उसका विचार आधुनिक तड़क-भड़क मे अटक जाता है और सुग्गी को उपेक्षित मानता है किन्तु उधर उसकी माँ तथा सखियाँ सुग्गी को आधुनिक बनाने का प्रयास करती है। अन्त मे उसी मे प्रभाकर की

शादी होती है किन्तु जब उसे मालूम होता है कि यह वही गाँव की सुग्गी है तो उसे उसके परिवर्तन से आश्चर्य होता है।

मेरे देश की धरती (सन् १९६८, पृ० ७८), लें० : विजय कुमार गुप्त ; प्र० : भाग्योदय प्रकाशन, मथुरा ; पात्र : पु० १३, स्त्री ४ ; अंक : ३ , दृश्य : ४, ३, ३ ।
घटना-स्थल : सीमा प्रांत का गाँव ।

यह नाटक देश के अन्दर होने वाले षड्-यन्त्रों को स्पष्ट दिखाने का प्रयास करता है। देश का सीमा प्रान्त दुश्मनों से घिरा है किन्तु कुछ पूँजीपति, मुनाफाखोर, जखीरेबाज, गद्दार देश को बेचने में तनिक भी नहीं हिचकिचाते। देश में भारी अन्न-संकट है। अपने देश की धरती यदि ठीक तरह से जोती-बोई जाए तो अन्न-संकट न रहे। इसी प्रकार देश की सुरक्षा आन्तरिक दुश्मनों से संभव नहीं इन्हें भी दूर करके देश को बलवान बनाना होगा। राष्ट्रीय चेतना और कर्त्तव्य को जगाने वाला यह नाटक वर्तमान परिस्थितियों का सही चित्रण करता है।

मेवाड़ का सूर्य महाराणा प्रताप (सन् १९५१, पृ० ७२), लें० : प्रेम ब्रजवासी; प्र० : गौड़ बुक डिपो हाथरस । पात्र : पु० ८, स्त्री २; अंक-दृश्य-रहित ।
घटना-स्थल : जंगल, युद्ध क्षेत्र ।

इस ऐतिहासिक नाटक में महाराणा प्रताप के शौर्य और मेवाड़ की देश-भक्ति का चित्र खींचा गया है। अकबर से सतत युद्ध करते हुए महाराणा प्रताप किसी प्रकार मेवाड़ के गौरव की रक्षा करते हैं।

मेहरारुन के दुरदसा (सन् १९४८, पृ० ४८), लें० : राहुल सांकृत्यायन; प्र० : किताब महल, इलाहाबाद; पात्र: पु० २, स्त्री ५; अंक : ४; दृश्य-रहित ।

भोजपुरी के इस चार अंक के नाटक में स्त्रियों की दुर्दशा का चित्रण है। जसोदरा के भतीजा होने की खुशी में सोहर, गीत और नाचना-बजाना हो रहा है। लेकिन इससे पहले उसकी तीन भतीजियाँ हुई तो घर में शोक, उदासी छा गई थी। लछिमी कहती है कि बेटा-बेटी, आदमी-औरत में दो आँख से देखा जाता है। पहले लाखों स्त्रियाँ आदमी के मर जाने पर उसके साथ ही चिता में जला दी जाती थी और पुरुषों ने दुनिया को धोखा देने के लिए उसे 'सती-प्रथा' का सुन्दर और आकर्षक नाम दे रखा था। स्त्रियों को शिक्षा-प्राप्ति का भी अधिकार नहीं दिया गया। यह सब इसीलिए किया गया कि औरतें आदमियों के गुलाम और उनकी वासनाओं के खिलौने बनकर रहें। यदि लड़कियों को पढ़ाया भी जाता है तो केवल इसलिए कि पढ़े-लिखे लड़कों से शादी हो जाये और दहेज कम देना पड़े। जब तक स्त्रियाँ आर्थिक रूप में स्वावलम्बी नहीं होंगी तब तक वे पुरुषों की चेरी बनी रहेंगी।

रामखेलावन आठ आने में शादी करके औरत ले आता है। रामखेलावन अपनी औरत को गाड़ी से उतार कर घूँघट से ढँककर एक तरफ खड़ा करता है और सामान उतारने लगता है कि उसकी औरत को फरगुद्दी उपधिया अपनी औरत समझकर ले जाता है। रामखेलावन रोने-पीटने लगा तो सीता और लछिमी उसकी स्त्री को खोज देती है। फरगुद्दी की औरत धोखे में किसी और के साथ चली जाती है। फरगुद्दी रोते-पीटते अपनी स्त्री को खोजने चल पड़ता है। रामकली सालिगराम की पूजा करती है। इस सालिगराम को गुरुजी ने काशीजी से लाकर दिया है। एक दिन लछिमी ने पोथी में पढ़कर अपनी माँ को बताया कि औरत को सालिगराम की पूजा करने पर छप्पन कल्प कुम्भीपाक नरक में रहना पड़ता है। ऊधो ने भी पोथी बाँचकर इस बात की पुष्टि की। बच्चे प्रायश्चित्त कराने के लिए अपनी माँ से ठाकुरजी के भोग के लिए १५ रुपया महीना ऐंठ लेते हैं। ठाकुरजी को सिगरेट की डब्बी में बन्द कर दिया जाता है और रुपयों की मिठाई खा ली जाती है। संकरपुर का बहुरिया धनराजी कुँअरि को जायदाद में हक दिलवाने के लिए स्त्रियाँ टाउनहाल में एक सभा करती हैं

और एक प्रस्ताव पास करके सरकार से माग करती हैं कि ईसाइयों तथा मुसलमानों की तरह हिन्दू स्त्रियों को भी पति और बाप की जायदाद में से हक मिलना चाहिए। राजकाज चलाने में जो हक पुरुषों को मिला हुआ है वही हक औरतों को भी मिलना चाहिए।

मैना सुन्दरी नाटक (सन् १६२४, पृ० ५०), ले० कान्ति प्रसाद बाबूलाल, प्र० जैन नाटक कमेटी, रेवाड़ी, पात्र पु० १०, स्त्री ६, अंक-रहित, दृश्य ३६।
घटना-स्थल राजमहल, उज्जैन नगर, जगल, दरबार, रणभूमि।

उज्जैन के राजा पुहुपाल की रानी निपुणसुन्दरी और पुत्रियाँ सुरसुन्दरी और मायना सुन्दरी हैं। दोनों कन्यायें पंडितों, मुनियों और श्रीमती अरजिका से विद्याध्ययन करके घर लौटती हैं।

चम्पापुर देश का राजा श्रीपाल जब गद्दी पर बैठता है, तो उसके राज्य में कुष्ठ का रोग फैलता है। उसका चाचा श्रीपाल को राज्य से निकाल देता है। मैना सुन्दरी तप के प्रभाव से गंधोदक छिडक कर राज्य से कुष्ठ रोग को दूर कर देती है। मैना सुन्दरी का विवाह अग्दिमन के पुत्र से होता है।

कालान्तर में श्रीपाल समुद्र में तैरता है। उसकी पत्नी रैन मंजूषा भगवान् से प्रार्थना करती है और श्रीपाल मंत्र का जाप करके जल से बाहर आ जाते हैं। एक बार दुष्ट धोखा देकर श्रीपाल को सूली की सजा राजा से दिला देते हैं किन्तु रैन मंजूषा के प्रयास से वास्तविक घटना का पता लगाने से श्रीपाल के प्राण बच जाते हैं। यह सब चमत्कार मैना सुन्दरी के तप के प्रभाव से होता है। नाटक के अन्त में मैना सुन्दरी का पिता अपनी भूल स्वीकार करता है। श्रीपाल का चाचा भी क्षमा माँगता है और जैन धर्म का सर्वत्र गुणगान होता है।

नाटक अभिनय रास शैली में अनेक बार अभिनीत-प्रचार की दृष्टि से लिखा गया है।

मोरध्वज (पौराणिक नाटक) (सन् १६१६, पृ० १०६), ले० जमुनादास मेहरा, प्र० रिखबदास वाहिनी, नं० ७४, बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्ता, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ६, ८, ३।

मोरध्वज का जन्म गो-ब्राह्मणों की रक्षा के लिए होता है जिसमें उन दैत्यों व दानवों का नाश हो जो तत्कालीन समाज को प्रताड़ित कर रहे थे। मोरध्वज ईश्वर से परम बलशाली होने का वर प्राप्त करते हैं और धर्म की स्थापना करते हैं। वे सबको ईश्वर-भक्ति की प्रेरणा देते हैं।

मोर्चे पर (सन् १९६३, पृ० ४१), ले० चतुर्भुज, प्र० साधना मन्दिर, पटना, पात्र पु० ६, स्त्री १, अंक-रहित, दृश्य १
घटना-स्थल पहाड़ी इलाका।

सन् १९६२ ई० के चीनी आक्रमण पर आधारित ऐतिहासिक तथ्यों को उद्घाटित करने वाला देशभक्तिपूर्ण नाटक।

मोहन मोहिनी (सन् १६२६, पृ० ६२), ले० लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी, प्र० वही, पात्र पु० १०, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ३, ३, ४।
घटना-स्थल माधव चन्द्र का बैठकखाना, जयपुर में नारायण चन्द्र का बैठकखाना।

मालती अपने पति माधव से ७ वर्षीय पुत्र का शीघ्र विवाह करने की चर्चा करती है। माधवचन्द्र कहता है कि बाल-विवाह करने से समाज में नाना प्रकार की बुराइयाँ फैलती हैं। किन्तु पत्नी के दबाव डालने पर पुत्र का रिश्ता ठीक करने के लिए वह जयपुर के नारायण चन्द्र के पास पत्र लिखते हैं। उनकी पत्नी अपने पति के यह समझाने पर कि अशक्त मूर्ख सन्तान तो पृथ्वी पर भार होती है, अंधविश्वासों में लिपटे रहने से देश का अहित होता है, वह पति के विचारों से सहमत हो जाती है। किन्तु माधव को नारायण पत्रोत्तर द्वारा विवाह की स्वीकृति भेज देते हैं। पंडित सुरेन्द्रचन्द्र

उस बालक के विवाह का मुहूर्त बसन्त पंचमी के दिन रख देते हैं। सगुन-असगुन के बीच विवाह सम्पन्न हो जाता है।

एक दिन नारायण चन्द्र का कोचवान करीम उनकी पुत्री मोहिनी को बाहर घुमाने ले जाता है। उसके हठात् बदले तेवर एवं दुर्व्यवहार से आतंकित मोहिनी उसे जोर से थप्पड़ लगा देती है। इसी बीच नारायण चन्द्र के मुनीम का लड़का हीरालाल भी वहीं आ जाता है और प्रेम निवेदन करने लगता है। अपने सतीत्व की रक्षा के लिए मोहिनी उससे मीठी-मीठी बातें करती है और फिर मिलने का वचन देकर अंगूठी का आदान-प्रदान करके घर लौट पड़ती है।

अल्प अवस्था में विवाह होने के कारण पति मोहन क्षय रोग से ग्रसित हो जाता है। बाध्य होकर मोहिनी को अपने पिता के घर लौटना पड़ता है। अपनी बदनामी और लोकलज्जा से बचने के लिए अपनी सखियों के सामने मोहिनी विषपान करके चिर निद्रा में सो जाती है। इधर मोहन भी यातना की पराकाष्ठा पर पहुँच इस संसार से चल बसता है।

मोहिनी (सन् १९६४, पृ० ७१), ले० : परितोष गार्गी; प्र० : आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; पात्र : पु० ४, स्त्री २; अंक : ४; दृश्य-रहित।

घटना-स्थल : बैठक।

मोहिनी ऐसी आधुनिक नारी है जो अपने पति सुरेश और घर के परिवेश में संतुष्ट नहीं है। सुरेश का मित्र प्रेम प्रायः उसके घर आता है। मोहिनी उसकी तरफ आकर्षित है। सुरेश उस युवक का प्रतीक है जिसका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं और जो प्रत्येक की बात मान लेता है। सुरेश अपने इसी स्वभाव के कारण प्रेम को अपने घर आने से मना कर देता है, क्योंकि उसका एक अन्य मित्र त्रिलोक प्रेम के विरुद्ध कुछ बातें कहता है। त्रिलोक व्यावहारिक और चाल-बाज व्यक्ति है। वह सुरेश के घर आकर रहने लगता है और मोहिनी को अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है। वह उसे प्रत्येक बात पर सुझाव देता है। मोहिनी उसकी कोई बात पसन्द नहीं करती परन्तु सुरेश उसकी प्रत्येक बात का समर्थन करता है। धीरे-धीरे मोहिनी त्रिलोक के साथ आत्मीयता बढ़ा लेती है, जिसे अब सुरेश सहन नहीं कर पाता। वह प्रेम के कहने पर त्रिलोक का अपमान कर उसे घर से निकाल देती है। वह मोहिनी पर भी आरोप लगाता है कि तुम त्रिलोक से प्रेम करती हो। अंत में मोहिनी सुरेश को छोड़कर चली जाती है और सुरेश की पागल बहन, भाई पर व्यंग्य करती है।

य

यक्ष की नगरी-प्रत्यक्ष की नगरी (सन् १९५२, पृ० ८४), ले० : भागवत प्रसाद; प्र० : संस्कार संस्थान, राउरकेला ३; पात्र : पु० ५, स्त्री २; अंक : ४।
घटना-स्थल : झोंपड़ी, कब्रिस्तान, खुला आकाश।

इस नाटक में मानव की सात्त्विकी प्रवृत्तियों तथा संस्कारों का संघर्ष दिखाया गया है।

आदिवासी किसान बच्चा फाल्गुन पूर्णिमा की आधी रात में किसी प्रेतात्मा के अवतरण की विचित्र-सी ध्वनि सुनकर चकित हो जाता है। और वह प्रेतात्मा पास की कब्र पर अवतरित होता है। दोनों में वार्तालाप होता है। प्रेतात्मा अपने बच्चा की दुहाई देकर रो जाता है। बच्चा कुछ बीमारस्त हो जाता है। महुआ वाहिनी

ओर की कब्रगाह से एक छाया आकृति उभर कर परवा के पास आती है। परवा आकृति को पहचान कर कहता है "चाचा डेविड नमस्ते।"

ययाति (सन् १९५१, पृ० १२८), ले० गोविन्द वल्लभ पंत, प्र० साहित्य सदन, देहरादून, पात्र पु० ७, स्त्री ४, अंक ४, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल राजभवन, तपोभूमि, पहाड़ी मैदान, वनस्थल।

इस पौराणिक नाटक में राजा ययाति की काम-लोलुपता और कुरु का सच्चा त्याग दिखाया गया है।

ययाति राजा के देवयानी और शर्मिष्ठा नामक दो रानियां हैं। शर्मिष्ठा दासी-कर्म करती है। उसके दोनों पुत्र उससे अपने पिता का नाम पूछते हैं। शर्मिष्ठा इसे सुन कर बेहोश हो जाती है। तभी ययाति आकर सारी घटना बता देते हैं। इधर देवयानी भी राजा पर व्यंग्य कसती है। राजा अपने पुत्रों से एक वर्ष के लिए उनका यौवन दान-स्वरूप मांगता है। सभी पुत्रों में केवल पुरु ही पिता को यौवन-दान करने को सहर्ष तैयार हो जाता है। ययाति यौवन-लीला के लिए एक रम्य वन में जाकर कामदेव की मूर्ति के समक्ष तपस्या करते हैं। एक किसान-कन्या मालती राजा को पुरु समझ कर उस पर आसक्त होती है। वहीं अनेक अप्सराएं भी आती हैं। राजा उस अप्सरा से विवाह का प्रस्ताव करते हैं। तब तक एक वर्ष पूरा हो जाता है। राजा के पुत्र आकर उससे राज्य मांगते हैं। अप्सरा स्वर्ग चली जाती है। राजा पुरु को राज्य देते हैं लेकिन त्यागी पुरु अपने बड़े भाई को राज्य देकर किसान का जीवन व्यतीत करता है।

यशस्वी भोज (सन् १९५५, पृ० ११२), ले० देवराज दिनेश, पात्र पु० १७, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ५, ३, ४।
घटना-स्थल हरिहर दास का गांव, विंध्य का पहाड़ी प्रदेश, धारानगरी, अन्तःपुर का एक कक्ष।

इस नाटक में राजा भोज की न्याय-प्रियता, प्रजावत्सलता तथा उनकी क्रिया-शीलता चित्रित की गई है। महाराज भोज पं० हरिहर दास के गांव में जाकर श्रेष्ठि-पुत्र के वेश में उनका आतिथ्य स्वीकार करते हैं। वे गुप्त रूप से वहां के निवासियों के दुख-सुख का निरीक्षण करते हैं। डाकुओं से जनता की रक्षा कर उन्हें हर तरह की सहायता दिलाने का आश्वासन देते हैं। पं० हरिहर दास की निःस्वार्थ सेवा पर प्रसन्न होकर उनके द्वारा खोली गई पाठशाला की उन्नति के लिए आर्थिक सहायता करते हैं। धारानगरी आकर सर्वप्रथम पं० हरिहर दास की गुणवती कन्या ज्योत्स्ना से शादी करते हैं। इसके बाद प्रजा की सेवा करते हुए सुखमय जीवन बिताते हैं। राजा भोज अपने जीवन-काल में कवियों और विद्वानों को भी बहुत आदर देते हैं।

यहूदी की लड़की (सन् १९१३, पृ० १०२), ले० मुहम्मद हश्र कश्मीरी, प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, पात्र पु० ६, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ८, ७, ४।
घटना-स्थल अग्नि प्रज्वलितघर, मीजर का महल, कचहरी।

नाटक का मुख्य उद्देश्य साम्प्रदायिक वैमनस्य एवं भेदभाव को दूर करना है। रोमन बादशाह यहूदी जाति के साथ अत्याचार-पूर्ण व्यवहार करता है। इजरा नामक यहूदी रोमन पादरी ब्रूटस की लड़की एक्टेविया को अग्नि में रक्षा करता है। वह उसका पालन-पोषण करता है। बड़ी होने पर उसका प्रेम मीजर से हो जाता है। इजरा मीजर को यहूदी धर्म ग्रहण करने को बाध्य करता है, पर वह अस्वीकार करता है। एक्टेविया यहूदी धर्म अस्वीकार कर मीजर से अपना विवाह तय कर लेती है। इजरा बादशाह से न्याय की मांग करता है। परन्तु एक्टेविया की भावना पर मीजर के विरुद्ध लगाये गए आरोप वापस ले लिये जाते हैं, तथा इजरा को फांसी की सजा मिलती है। अन्त में रहस्योद्-घाटन होने पर ब्रूटस को अपनी पुत्री मिलती है। तथा हर्ना मीजर से एक्टेविया का विवाह

करा देती है।

अभिनय सन् १९१३ में लाहौर में शेक्सपियर थियेट्रिकल कम्पनी द्वारा।

यहूदी की लड़की (सन् १९५६, पृ० ९६), ले० : टीकमसिंह शर्मा; प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, शोक पुस्तकालय, खारी बावली, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री ६; अंक : ३।
घटना-स्थल : आग में जलता घर, सीजर का महल, कचहरी।

इस नाटक में रोमन और यहूदियों की पारस्परिक घृणा और साम्प्रदायिक कटुता का वर्णन है। इसका विषय आगा हश्र कश्मीरी के अनुसार ही है। केवल पात्रों में इजरा को अजरा और शाहजादा सीजर को मारकिस कर दिया है। एक्टेविया को डासिया और हन्ना को राहिल नाम दे दिया गया है। कांग्रेस, घसीटा, मसीटा आदि कुछ पात्र बढ़ा दिये गये हैं।

इसका आरम्भ यहूदियों पर रोमन के अत्याचारों से होता है। रोमन बादशाह आदेश करता है कि "नौरोज का दिन है ऐश मुसर्रत का हुक्म है और गम व फिक्र की कदगन है।" इसका यहूदी विरोध करते हैं और उनके कारण ही वे धार्मिक असहिष्णुता का शिकार होते हैं।

युग बदल रहा है (सन् १९९२, पृ० ४४), ले० : सीताराम चतुर्वेदी ; प्र० : टाउन डिग्री कॉलिज, बलिया; पात्र : पु० ६, स्त्री १ ; अंक : ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : भवन का बाहरी प्रकोष्ठ, शतरंज का खेल।

इस सामाजिक नाटक में आधुनिक युवकों के पतन का कारण दिखाया गया है। आजकल के युवक बड़ों का अपमान करते हैं और उनकी उपेक्षा करके अनेक कष्टों का सामना करते हैं। अन्त में बड़ों के आदेश और सहयोग से ही उनका उद्धार होता है। इसका अभिनय सन् १९६९ में टाउन डिग्री कालिज, बलिया द्वारा हो चुका है। यह एक पर्दे पर में ही पूरा खेला जाता है।

युगल विहार नाटक (सन् १८९६, पृ० २३९), ले० : कृष्णदत्त द्विज; प्र० : हिन्दी प्रभा प्रेस, लखीमपुर (अवध); पात्र : पु० १, स्त्री ६; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : वृन्दावन, कुंज, यमुना तट।

यह राधा-कृष्ण की प्रेम कथा पर आधारित पद्यात्मक नाटक है। इसके प्रत्येक संवाद विभिन्न पदों में है। छप्पय, दोहा, चौपाई, सोरठा, पद्य, शेर, श्लोक, गजल आदि छन्दों का इसमें प्रयोग किया गया है।

युग सन्धि : रंगमहल में संग्रहीत (सन् १९६६,), ले० : विनय; प्र० : संजीव प्रकाशन, मेरठ; पात्र : पु० ७, स्त्री १; अंक : रहित; दृश्य: ४।
घटना-स्थल : पर्वत प्रदेश।

युग परिवर्तन की सन्धि वेला में प्राचीन तथा आधुनिक आदर्शों के संघर्ष को स्वर प्रदान किया गया है। युग परिवर्तन के साथ-साथ युग की मान्यताएँ, मूल्य तथा आदर्श भी परिवर्तित होते रहते हैं। अतः प्राचीन रूढ़ियों का पूर्णतः त्याग तथा नवीन आदर्शों का पूर्णरूपेण ग्रहण असम्भव है। यही संघर्ष युग की आत्मा को विक्षुब्ध कर रहा है। लेखक ने इस संघर्ष का परिहार प्राचीन आदर्श तथा सामाजिक यथार्थ के समन्वित मार्ग द्वारा किया है।

युगे-युगे क्रान्ति (सन् १९६६, पृ० ८८), ले० : विष्णु प्रभाकर; प्र० : राजपाल ऐण्ड सन्स, दिल्ली; पात्र : पु० ८, स्त्री ६ ; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : प्रतीकात्मक मंच पर एक घर।

यह सामाजिक नाटक विवाह के क्षेत्र में हुए परिवर्तित मूल्यों और वैवाहिक सम्बन्धों को प्रदर्शित करता है। इसमें क्रान्ति का संकेत विविध वैवाहिक सम्बन्धों के द्वारा वर्णन किया गया है। एक पुरुष अपनी पत्नी के मुख पर से परदा उठा कर देख लेता है, जिसके कारण उसे अपने पिता से पिटना पड़ता है। कल्याणसिंह का पुत्र प्यारेलाल विधवा से विवाह करके

इस क्रान्ति की गति को आगे बढाता है। परन्तु उसे भी घर की छत्रछाया से हाथ धोना पडता है। कथा में प्यारेलाल की पुत्री शारदा राष्ट्रीय आन्दोलन मे भाग लेकर स्वय अपनी इच्छा से विवाह कर लेती है। यह भी उस युग की क्रान्ति है। शारदा का पुत्र प्रदीप एक ईसाई युवती से विवाह कर लेता है। प्रदीप के पुत्र और पुत्री विवाह मे विश्वास नही करते। वे मुक्त सम्बन्धो को ही अच्छा मानते हैं।

अभिनय रेडियो से अनेक बार प्रसारित।

युद्धकाण्ड (सन् १८८७, पृ० १५२), ले० दामोदर शास्त्री, प्र० बाबू साहिब प्रसाद सिंह, खगविलास प्रेस, बाकीपुर मे मुद्रित, पात्र पु० १५, स्त्री ६, इसमे अक की जगह स्थान सूचक सकेत है।
घटना-स्थल सेतु, लका मे युद्धक्षेत्र।

इस पौराणिक नाटक की कथा रामचरितमानस पर आधारित है। इसका दूसरा नाम लकाकाण्ड भी है। राम की वानरी सेना समुद्र पर सेतु बाँधकर लका पहुँचती है। सीता का दुष्ट रावण से मुक्त कराने के लिए राम और रावण मे भयकर युद्ध होता है। इन्ही सब प्रसगो का इसमे वर्णन है।

यौवन योगिनी (सन् १८९० के आस-पास) ले० गोपाल राम 'गहमरी', प्र० स्वय लेखक, पात्र पु० ४, स्त्री १, अक-दृश्य-रहित।

इस ऐतिहासिक नाटक मे प्रेमिका का सच्चा प्रेम प्रणय चित्रित किया गया है।

इस नाटक की नायिका पृथ्वीराज की प्रेमिका माया है। एक बौद्ध भिक्षु माया को धोखा देकर मोहम्मद गोरी के शिविर मे पहुँचा देता है। गोरी उस बौद्ध भिक्षु का वध करता है और माया भी आत्म-हत्या के द्वारा प्राण विसर्जन कर देती है। इस तरह से नाटक दुखान्त होता है।

र

रगीलो दुनिया (वि० १९८१, पृ० ९८), ले० ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्र० राम लाल वर्मा, बर्म्मन प्रेस कलकत्ता, पात्र पु० १४, स्त्री ७, अक ३, दृश्य १०, ६, ६।
घटना-स्थल छबील का कमरा, दीवान जगजीवन का मकान, भुवन चौधरी का कमरा, राजमार्ग।

इस नाटक मे राज्य के उच्चाधिकारियो द्वारा जनता पर किया गया अत्याचार चित्रित है। नाटककार शासन-व्यवस्था पर एक तीखा व्यग्य करता है तथा रगीले शासको द्वारा जनता पर हुए अत्याचारो का प्रदर्शन कर सामाजिक की जनता के प्रति सहानुभूति को उभारता है।

रक्तदान (सन् १९६२, पृ० २०७), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० राजपाल ऐण्ड सस-दिल्ली, पात्र पु० १०, स्त्री १, अक ३, दृश्य ३, ३, ५।
घटना-स्थल अग्रेजो का महल, मुगलो का राजदरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक मे नारी की खोयी हुई दुर्बलताओ और भीरुता का रूप चित्रित है। नाटक की नायिका जीतमहल अपने षड्यन्त्र से बहादुरशाह जफर को शराब पिलाकर सुध-बुध-रहित रखती है। वह अग्रेजो के पक्ष मे मिल जाती है जिसके विरोध मे उसका पुत्र जवाबख्त कहता है—"वे भी माताएँ होती हैं, जो अपने पुत्रो को शस्त्रो से सजाकर देश और धर्म पर प्राण देने के लिए

भेज देती है। माँ तुम वही भारतीय नारी क्यों नहीं बनी ? तुमने हमारे हृदय में अंग्रेजों के प्रति घृणा और क्रोध के भाव भरे थे। और आश्चर्य है कि तुम्हीं ने उनके षड्यन्त्र में फँस कर अपने देश के साथ विश्वासघात किया।"

जीत महल को अंग्रेजों की दया का विश्वास रहता है, इसी कारण उसके पुत्रों के सिर कटते हैं। यह रक्तदान था मुगलवंश का।

रक्षा-बन्धन (सन् १९६१, पृ० ८६), ले० : देवीचरण ; प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली; पात्र : पु० १२, स्त्री २ ; अंक : ३ ; दृश्य : ५, ५, ५।
घटना-स्थल : राजमहल, मार्ग।

यह ऐतिहासिक नाटक है जिसमें मानसिंह की कन्या पन्ना कुमारी रक्षाबन्धन का पवित्र बन्धन बाँध कर अपनी रक्षा का आश्वासन प्राप्त करती है। राखी की लज्जा ही उसका मुख्य उद्देश्य है। इस नाटक में भाई-बहन के पवित्र सम्बन्ध को राखी बन्धन के द्वारा स्पष्ट किया गया है।

रक्षा-बन्धन (सन् १९३४, पृ० ११२), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी ; प्र० : हिन्दी भवन, ३१२, रानी मण्डी, इलाहाबाद ; पात्र : पु० ६, स्त्री ३ ; अंक : ३ ; दृश्य : ७, ६, ८।
घटना-स्थल : राज-भवन।

कर्मवती बहादुरशाह जफर द्वारा उदयपुर पर किये गये आक्रमण के समय बादशाह हुमायूँ को राखी भेजकर उसे अपना भाई-बना लेती है। वह हुमायूँ से इस आपत्ति काल में सहायता की आशा करती है। हुमायूँ अपने मंत्रियों का विरोध कर भाई-बहिन के पवित्र सम्बन्ध को निभाने के लिए उदयपुर पहुँचता है। किन्तु हुमायूँ के देर से पहुँचने के कारण कर्मवती सहायता की आशा छोड़कर जौहर कर लेती है। उदयपुर पहुँचने पर हुमायूँ को दुख होता है और वह राखी के धागों से बँधे हुए भाई-बहन के अटूट प्रेम की रक्षा न कर सकने के कारण पश्चात्ताप करता है।

रघुनाथ राव (वि० १९७९, पृ० १११), ले० : शाह मदनमोहन ; प्र० : शाह मदनमोहन, मैनेजर लक्ष्मण साहित्य भंडार, चौक, लखनऊ ; पात्र : पु० २०, स्त्री ४ ; अंक : ३ ; दृश्य : ९, ११, ११।
घटना-स्थल : राज-दरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक में छत्रपति शिवाजी के हवलदार की जीवन-घटनाओं का वर्णन है। नायक रघुनाथ राव के पवित्र प्रेम, विलक्षण वीरता, सराहनीय शील, स्वामिभक्ति, कर्तव्य-परायणता को दिखाया गया है। महोदरा के सती होने, शोकातुर नायिका सरयूबाला का अपने मनमा-गृहीत पति के लिए गृहत्याग, तथा नारी के पातिव्रत भाव आदि का चित्र खींचने की चेष्टा की गई है। विघ्नों के दूर हो जाने पर सरयूबाला का विवाह रघुनाथ राव से कराया जाता है। प्रासंगिक कथा के रूप में महाराज शिवाजी के शौर्य का वर्णन है। इसमें सम्राट् औरंगजेब के सेनापति महाराज जयसिंह के उपदेशमय अगाध अनुभव का परिचय भी मिलता है।

नाटक के अन्त में छत्रपति शिवाजी रघुनाथ राव और सरयू बाला को बुलाकर यह आदेश देते हैं "स्त्री के लिए पति ही सर्वस्व है। पति को कष्ट देने से दोनों लोक बिगड़ जाते हैं। ईश्वर तुम दोनों को चिरायु करें।"

रजतशिखर (सन् १९५१), ले० : सुमित्रानन्दन पंत; प्र० : भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद; पात्र : पु० ३, स्त्री २; *अंक-दृश्य-रहित।*
घटना-स्थल : नदीतट।

इस रेडियो गीति नाटक में आध्यात्मिक तथा भौतिक जीवन के संघर्ष को प्रतीकात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है। इस काव्य-रूपक में जीवन के ऊर्ध्व तथा समतल संचरणों का द्वन्द्व प्रदर्शित किया गया है। मानव मन के विकास की वर्तमान स्थिति में ऊर्ध्व के

अवरोहण तथा भूतल के आरोहण पर बल देकर दोनों में समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है। अरविन्द दर्शन के परिप्रेक्ष्य में पाश्चात्य फ्रायडवादी विचार-धारा का उन्नयन कर विश्व-कल्याण की कामना की गई है।

गीति नाट्य के प्रारम्भ में स्त्री स्वर तथा पुरुष स्वर अन्तश्चेतना के प्रति सचेष्ट मानव में हृदय तथा बुद्धि का प्रति-निधित्व करते हैं। स्त्री स्वर एक महत्त्वा-कांक्षी का परिचय कराता है, जो अपने अधिमानस में आत्मस्थ स्वरों का अनन्त प्रवाह अनुभव करता है, किन्तु जीवन की आकांक्षाएँ उसे पुनः कठोर धरातल पर ला पटकती हैं। हृदयस्थ ऊर्ध्व चेतना बाह्य संघर्षों के कारण स्थिर नहीं रह पाती। उस की स्थिति उस मृग के समान हो जाती है जो अपनी ही गंध के वशीभूत भटकता है। इसी समय युवक की बालसखी आती है। युवक के हृदय में प्रेम-जन्य अनेक स्मृतियां जागृत होती हैं। किन्तु युवती इन सबको किशोर प्रेम की संज्ञा देकर युवक को जीवन की वास्तविकता से परिचित कराती है। उधर युवक प्रेम के शाश्वत रूप को स्वीकार करता है। प्रेम के प्रति युवती की अति-यथार्थ मनोवृत्ति से विक्षुब्ध युवक काम-वासना को आत्म-प्रकाश से आलोकित करके प्रेम को नवीन आधार प्रदान करने की कल्पना करता है। तभी एक पुरुष सुखव्रत का आगमन होता है। वह प्रेमादि समस्त रागात्मक भावों को दमित कुंठाओं का ही परिणाम मानता है। इसीलिए जजर रूढ़ि-ग्रस्त नैतिक मूल्यों में परिवर्तन आवश्यक है किन्तु युवक स्वस्थ जीवन के लिए नैतिकता की आवश्यकता पर बल देता हुआ उनके अवमूल्यन के लिए मनोविज्ञान को दोषी ठहराता है। उसके अनुसार जीवन में खोये मूल्यों के स्थापनार्थ मानव को ऊर्ध्वगमन करना होगा। यह ऊर्ध्वगमन एकांगी न होकर समन्वयात्मक होगा, जिसके अंतर्गत भौतिक जीवन तथा आध्यामिक जीवन का अपेक्षित होगा।

रजनी (सन् १९३६, पृ० ६६), ले० चतुर्वेदी अज्ञात, प्र० रामचन्द्र भारती, सरस्वती पुस्तक मन्दिर, नई सड़क, दिल्ली, पात्र पु० ७, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ५, ३, ४।
घटना-स्थल कोठी, मंदिर, शयनकक्ष।

इस सामाजिक नाटक में निर्दोष रजनी का प्रेम दिखाया गया है। एक बड़ी कोठी में श्रीपति बैठा हुआ सोच रहा है कि जगदीश मेरा विवाह रजनी के साथ कराने के लिए कितने रुपये और जेवर ले गया लेकिन अभी तक कुछ पता नहीं लगा। इतने में जगदीश आकर कहता है कि रजनी सेठ के नौकर सुधीर के साथ भाग गई लेकिन आपके ही पास वापस लौटेगी। जगदीश अपने मैनेजर से पूछकर रजनी को खोजने चल देता है और पीछे से मैनेजर श्रीपति और छह आदमी चलते हैं। सुधीर से एक मंदिर में जगदीश मिल जाता है। वहाँ मैनेजर के भी पहुँच जाने से बात बढ़ते हुए देख सुधीर को उसके स्वामी सेठ के पास लेकर आता है। रजनी भी आकर बयान देती है कि मैंने स्वेच्छा से शादी की है। रजनी और सुधीर साथ-साथ चल देते हैं। मैनेजर बहुत दुखी होता है। सुधीर के द्वारा रजनी को दिया गया सामान किसी तरह उमाकान्त को मिल जाता है। एक रुमाल सुधीर को प्राण से भी ज्यादा प्यारा है। सुधीर रजनी से रुमाल माँगता है, लेकिन वह दे नहीं पाती। वह रात्रि में रजनी को सोई हुई जानकर उसका गला दबाता है। सहसा बाहर से आवाज आती है। दरवाजा खुलने पर उमाकान्त के साथ प्रमिला वहाँ आती है और उमाकान्त के द्वारा श्रीपति के कत्ल का संदेश सुनाती है फिर रजनी प्रमिला से कहती है कि अब मैं मरने जा रही हूँ। सुधीर को यह स्पष्ट कर देता है कि मैं सर्वथा निर्दोष थी।

रणधीर प्रेममोहिनी (वि० १९३४, पृ० १४८), ले० श्रीनिवास दास, पात्र पु० ९, स्त्री ४, अंक ५; दृश्य ५, ४, ५, ४, ६।
घटना-स्थल राजमहल, स्वयंवर सभा।

इस ऐतिहासिक नाटक में मित्र का सच्चा त्याग तथा प्रेमी-प्रेमिका का अटूट प्रेम चित्रित किया गया है।

पाटन का निर्वासित राजकुमार रणधीर अपने मुसाहबों के साथ सूरत आकर राज महल के निकट ठहरता है जहाँ सूरत के राजकुमार रिपुदमन की प्राण-रक्षा करने से उससे उसकी मित्रता हो जाती है। इसी बीच सूरत की राजकुमारी प्रेम मोहिनी रणधीर की प्रशंसा सुनकर उसकी ओर आकृष्ट होती है। सूरत-नरेश उसे साधारण परदेशी समझकर उसकी उपेक्षा करता है। वह प्रेममोहिनी के स्वयंवर में रणधीर को नहीं बुलाता, फिर भी, रणधीर वहाँ बिना बुलाये ही पहुँचकर अपने व्यवहार से राजा को रुष्टकर देता है। लेकिन उसके शौर्य को देख प्रेम-मोहिनी का प्रेम उसके प्रति द्विगुणित हो जाता है। उसी समय वह प्रेममोहिनी की अँगूठी भी प्राप्त करता है। दूसरे दिन पुनः स्वयंवर आयोजित होता है। रणधीर पुनः पहुँचता है और सरोजिनी वेश्या को मोतियों का हार पुरस्कार स्वरूप देकर सूरतपति के मन में अपने चरित्र के प्रति सन्देह उत्पन्न कर देता है। रणधीर के चले जाने के बाद सूरतपति के भड़काने से स्वयंवर में आये राजकुमार जाकर उसे घेर लेते हैं। घनघोर लड़ाई में अनेक लोग मारे जाते हैं और रणधीर घायल होकर राजमहल के निकट प्रेममोहिनी की उपस्थिति में प्राण त्याग देता है। मित्र की सहायता के लिए लड़ाई में कूदने से रिपुदमन भी गम्भीर रूप से घायल होकर मरता है। प्रेममोहिनी रणधीर के शव पर विलाप करती हुई प्राणान्त करती है। दुखी रिपुदमन भी रणधीर की मृत्यु का समाचार पाकर विचलित होता है। उधर पत्र भेजकर पाटनपति बुलाये जाते हैं। रणधीर को राजकुमार जानकर सूरतपति भी विलाप करता है।

रणवांकुरा चौहान (सन् १९२५, पृ० १८६), ले० : मनसुखलाल सोजतिया ; प्र० : एम० एम०सोजातिय एण्ड कम्पनी, बड़ा सराफा, इन्दौर ; *पात्र :* पु० १७, स्त्री २ ; *अंक :* ३ ; दृश्य : ६, ८, ६।

घटना-स्थल : महाराज पृथ्वीराज का महल, दिल्ली नगर का राजमंडप, कन्नौज शहर में गंगा के किनारे वाटिका।

यह ऐतिहासिक नाटक पृथ्वीराज के वीरतापूर्ण कार्यों पर आधारित है। इसमें वीररस, प्रेमरस, हास्यरस व करुणारस का सफल समन्वय है। इसके छठवें दृश्य में पृथ्वीराज, मीरसाहब और उज्जनराय को मारकर मीरसाहब के मामा ख्वाजा साहब की राय से अजमेर का राज्य छोड़ देते हैं। साथ ही देहली में अपने नाना अनंगपाल का राज्य प्राप्त करते हैं। वीर चामुण्डा राय और कैमास की अपूर्व स्वामिभक्ति भी दिखलाई गई है।

पृथ्वीराज संयोगिता का हरण करते हैं। वीर केसरी सेनापति महाराज जयचन्द के आक्रमण से पृथ्वीराज को बचाता है। मुहम्मद गोरी पृथ्वीराज को बंदी बनाता है। उनकी आँखें निकाल ली जाती हैं। अन्त में पृथ्वीराज अपने कृपालु कवि चन्द की सहायता से गोरी को शब्दवेधी बाण मारते हैं। रणवांकुरा चौहान के वीररस पूर्ण कृत्यों और शौर्य का वर्णन करते हुए मद्यपों की दुर्दशा पर प्रकाश डाला गया है।

रत्नावली (सन् १९६६, पृ० ६६), ले० : विश्वनाथ शुक्ल ; प्र० : सरस्वती निकेतन, छत्री चौक, उज्जैन ; *पात्र :* पु० ८, स्त्री ४ ; *अंक :* ३ ; दृश्य ५, ४, ४।

इस नाटक में संत तुलसीदास की कथा नाट्य रूप में प्रस्तुत की गई है।

राजापुर निवासी आत्माराम दूबे, अभुक्त मूल में जन्मे बेटे को त्याग देते हैं। उनकी पत्नी हुलसी पुत्र-शोक में स्वर्गवासी हो जाती हैं। दुर्भाग्य से दाई भी मर जाती है और बालक रामबोला भिखारी का जीवन व्यतीत करने लगता है। बाबा नरहरिदास रामबोला को सम्पूर्ण शिक्षा-दीक्षा देते हैं। शिक्षा समाप्ति पर रामबोला गुरु की आज्ञा से भ्रमण करने निकल जाता है। मार्ग में उसका परिचय रहीम से होता है और वे

दोनों घनिष्ठ मित्र बन जाते हैं।

रामबोला सुदर्शन के साथ उसके ससुराल महोबा जाते हैं वहाँ सीता जी के मन्दिर में श्रीधर पाठक की पुत्री रत्नावली से उनका प्रेम हो जाता है। रामबोला रत्नावली का ब्याह कर गाँव लौटते हैं। वे हमेशा रत्नावली के प्रेम सौंदय में ही डूबे रहते है। एक दिन रत्नावली उनको बिना बताये ही पीहर चली जाती है। राम बोला यह वियोग सहन न कर सकने के कारण चोरी से रत्नावली के कमरे में पहुँच जाते हैं। इस अवसर पर रत्नावली उन्हें अस्थिचर्ममय देह से प्रीति हटाकर मात्र राम में प्रीति करने की सलाह देती है। रामबोला की दार्शनिक कवि आत्मा यह प्रेरणा पाकर पूर्णरूप से जाग उठती है। वह उसी समय घनघोर रात्रि में पत्नी, गृहादि का मोह त्यागकर राम की खोज में निकल पड़ते हैं।

रामबोला अब काशी पहुँचकर संत तुलसीदास बन जाते हैं। वे वहाँ पर जनभाषा में महान् ग्रंथ रामचरितमानस की रचना करते हैं। रत्नावली वियोगिनी की तरह जीवन व्यतीत करती है। एक दिन सुदर्शन मानस की एक हस्तलिखित प्रति लाकर रत्नावली को देते हैं। वह उस पुस्तक को छाती से चिपकाकर निहाल होकर गिर पड़ती है।

रसीला जोगी उर्फ जोग शक्ति (सन् १९२४, पृ० ५०), ले० मुहम्मद इब्राहीम 'महशर', प्र० जे० एस० सन्तसिंह ऐण्ड सस, लाहौर, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अक के स्थान पर बाब और सीन।
घटना स्थल महल, जगल, मार्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक में दैवी शक्तियों का प्रभाव दिखाया गया है।

राजा सलामत सिंह की रुग्णावस्था देखकर लालसिंह राजा की पुत्री महलावती और राज्य दोनों पर अधिकार करना चाहता है। वह अपनी अभिलाषा-पूर्ति के लिए राजवैद्य की मदद से राजा को विष देने का निश्चय करता है। सयोग से राजा अपनी स्वाभाविक मृत्यु को प्राप्त होता है। राजकुमारी पिता के मरते ही लालसिंह को अपने भवन में बुलाकर उसे शादी का वचन दे देती है। राज्य के स्वामिभक्त प्रधान बिसल देव और सेनापति करतारसिंह को यह सम्बन्ध अच्छा नहीं लगता और वे दोनों लालसिंह का वध कर देते हैं। महलावती को लालसिंह का वध असह्य हो जाता है। वह अत्यन्त क्रुद्ध हो अपने राज्य के समस्त पुरुष कर्मचारियों को निर्वासित कर उनके स्थान पर स्त्रियों की नियुक्ति करती है।

केसरीसिंह भी महलावती की ओर आकृष्ट हो उसके पास अपने दूत द्वारा विवाह का संदेश भेजता है सब प्रभुत्व सम्पन्न राजकुमारी उसका संदेश ठुकरा देती है। केशरी सिंह आक्रमण कर जबरदस्ती उसे अर्धांगिनी बनाने का अभियान चलाता है। महलावती मच्छन्दर नाथ से विवाह कर उसकी योगशक्ति द्वारा केसरीसिंह को पराजित करती है। वह बारह वर्ष तक मच्छन्दर नाथ के साथ अद्भुत चमत्कारों की दुनिया में आनन्द उठाती है। गोरखनाथ अपने गुरु मच्छन्दर नाथ को उस नारी से मुक्त करके गुरु को अपने साथ ले जाते हैं। केसरी पुन शुभ अवसर देखकर आक्रमण कर महलावती को जीतना चाहता है। किन्तु मच्छन्दर नाथ के पुत्र मनु गोरख की दैवी शक्ति का सहारा लेता है। अन्त में गुरु गोरखनाथ मनु के सिर पर 'राजमुकुट' पहनाकर उसे चक्रवर्ती होने का आशीष देते हैं।

रहस्य प्रकाश (सन् १९०४, पृ० ८६), ले० बद्रीदास, प्र० इण्डियन प्रेस, इलाहबाद, पात्र पु०१०, स्त्री १, अंक ५, दृश्य ८, ३, ३, ५।
घटना-स्थल न्यायालय।

यह एक सामाजिक दुखान्त नाटक है। न्यायाधीश द्वारा बसंत और उसके शत्रु के बीच मुकदमों में न्याय दिखाया गया है। न्यायाधीश बसंत के विरुद्ध लगाये गये आरोप को झूठा साबित कर मुकदमे का उचित निर्णय देता है।

रहीम (सन् १९५५, पृ० १६८), ले० -

गोविन्ददास ; प्र० : ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ; पात्र : पु० ६, स्त्री ३ ; अंक : ५; दृश्य : ३,३,३,३,३ ।

घटना-स्थल : युद्ध क्षेत्र, अहमदाबाद, फतेहपुर सीकरी, आगरा, सोंरो, चित्रकूट, बुरहानपुर, लाहौर और दिल्ली ।

रहीम के दोहों के आधार पर उनके जीवन का उत्थान और राजनैतिक पतन दिखाया गया है। उन्नीस वर्ष का नवयुवक रहीम अकबर के राज्य में अहमदाबाद का सूबेदार बनता है। वह याचकों को अपना रत्नजटित कलमदान भी प्रदान कर देता है। दूसरे अंक में रहीम आगरे की हवेली में दिखाई पड़ते हैं जहाँ अकबर आकर देखते हैं कि सिंहासन के पीछे एक ऊँची चौकी पर सुरागाय की पूँछ के चवर रखे हैं। दूसरी छोटी चौकी पर राधाकृष्ण की मूर्तियाँ हैं। अकबर के पास रहीम कवि आते हैं। राजा को एक लाख रुपया प्रदान करते हैं। अन्य कवियों और शायरों को पुरस्कार देते हैं। अकबर रहीम पर प्रसन्न होता है और मंत्री बना लेता है। रहीम तुलसीदास के दर्शनार्थ जाते हैं और उनके मुख से राम-चरितमानस का एक अंश सुनकर मुग्ध हो जाते हैं। कट्टर पंथियों के कान भरने से रहीम पदच्युत किये जाते हैं और चित्रकूट में निवास करते हैं। किन्तु सत्यज्ञान होने पर उन्हें पुनः दक्षिण भारत में युद्ध के लिए भेजा जाता है। इधर अकबर की मृत्यु पर जहाँगीर का शाहजादा खुर्रम पिता से विद्रोह करके दक्षिण में रहीम के पास सहायता के लिये पहुँच जाता है पर रहीम के अस्वीकार करने पर उनको सपरिवार बन्दी बनाता है। जहाँगीर रहीम को बंधन मुक्त करके लाहौर बुलाता है, और उनकी खिताब व जागीर लौटा देता है। पर रहीम का मन स्थित प्रज्ञ की स्थिति के लिए तड़पता है और वह पत्नी माहेबानू और पुत्री जानाबेगम के साथ व्रज-मंडल में बस जाता है।

राक्षस का मन्दिर (वि० १९८८, पृ० १४९), ले० : लक्ष्मीनारायण मिश्र ; प्र० : हिन्दी प्रचारक, वाराणसी ; पात्र : पु० ६, स्त्री ५ ; अंक : ३ ; दृश्य-रहित ।

घटना-स्थल : रघुनाथ का कमरा, विधवा आश्रम ।

इस नाटक में समसामयिक जीवन का यथार्थ रूप प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। आधी रात के समय रामलाल नामक वकील का लड़का रघुनाथ अपने कमरे में गीत लिखने में व्यस्त होता है। रामलाल की रखैल अश्करी रघुनाथ के कमरे में आकर उससे प्रेम निवेदन करती है। रघुनाथ उसकी उपेक्षा करता है। इसी छीना-झपटी के समय रामलाल दोनों को आकर देखता है। अश्करी रामलाल के सामने रघुनाथ पर दोष लगाती है। रामलाल इससे क्रोधित होकर उसे घर से निकाल देता है उसी समय रामलाल का पूर्व परिचित मुनीश्वर, मनोहर के वेश में उसके यहाँ आता है। उसने भी अश्करी के प्रेम में अपनी पत्नी और पुत्र को छोड़ दिया है। रामलाल यहाँ अश्करी को मुनीश्वर के साथ आलिंगनबद्ध देखकर विरक्त हो जाता है। वह शराब आदि का त्याग कर देता है। अश्करी घर को छोड़कर निकल जाती है।

दूसरे अंक में अश्करी को ललिता नामक युवती के साथ दिखाया जाता है। इस स्थान पर रघुनाथ का प्रवेश होता है। ललिता उसकी भव्य रचना से प्रभावित होकर उससे प्रेम करने लगती है। अश्करी दोनों के प्रेम-भाव को समझ कर अपने प्रेम को दबा लेती है। परन्तु जब ललिता को अश्करी के मुसल-मान होने का पता चलता है तो वह उसे घर से निकाल देती है। इस ख्याल से दुखी होकर रघुनाथ ललिता को ठुकराकर चला जाता है।

तीसरे अंक में मुनीश्वर रघुनाथ के पिता का सारा धन मातृमन्दिर (विधवा आश्रम) के लिए धोखे से ले लेता है। रघुनाथ मुनीश्वर से बदला लेने का अवसर खोजता है। मातृ-मन्दिर के उद्घाटन-अवसर पर ललिता, मुनीश्वर, अश्करी और रघुनाथ सभी एकत्रित होते हैं रघुनाथ ललिता की उपेक्षा करता है। ललिता प्रेम में असफल होकर समाज सेवा का व्रत लेती है। रघुनाथ

भी मातृमन्दिर को छोड़कर चला जाता है अश्फ़री की बातो से मुनीश्वर का हृदय परिवर्तित हो जाता है। दोनो मातृमन्दिर के द्वारा समाज सेवा का सकल्प करते हैं।

राखी उर्फ रक्षाबधन (सन् १६५८, पृ० ६१), ले० मूलचन्द बेताब, प्र० जवाहर बुक डिपो, मेरठ, पात्र पु० ६, स्त्री ६, अक २, दृश्य ३, ८।
घटना-स्थल घर, मन्दिर।

यह एक सामाजिक नाटक है। बहन अपने भाई को राखी बांधती है। जमुना गगू को राखी बांध अपनी रक्षा का आश्वासन लेती है। सम्पूर्ण नाटक में बहन भाई का प्रेम ही प्रदर्शित किया गया है।

राखी की लाज (सन् १६४६, पृ० ६४), ले० वृन्दावन लाल वर्मा, प्र० मयूर प्रकाशन, झांसी, पात्र पु० ५, स्त्री २, अक ३, दृश्य ८, ७, ७।
घटना स्थल बालाराम का मकान, ललितपुर गाँव।

यह एक सामाजिक नाटक है। बहन भाई को राखी बांधती है और भाई उसको कुछ भेंट देता है। बहन द्वारा भाई के हाथ मे राखी बांधने पर उन दोनो के बीच प्रेम का अटूट सम्बन्ध स्थापित हो जाता है और भाई पर बहन की रक्षा का भार आ जाता है। एक धनाढय व्यक्ति की बालाराम एक सच्चरित्र लड़की चम्पा एक आवारा सपेरे के हाथ मे राखी बांधती है और सपेरा मेघराज राखी बांधने वाली बहन को उपहार स्वरूप कोई दिव्यवस्तु देना चाहता है। करिमुन्निसा चम्पा की पड़ोसिन लड़की है जो गाँवके नवयुवक सोमेश्वर तथा अपने भाई चाँद खाँ को राखी बांधती है। करीमन चम्पा से सोमेश्वर का राखी बांधने के लिए कहती है लेकिन वह उसको राखी नही बांधती, क्योंकि चम्पा और सोमेश्वर एक-दूसरे को पति-पत्नी बनाना चाहते हैं। एक बार राखी वाले दिन ही रात को मेघराज सहित डाकुओ का एक दल बालाराम के मकान पर डाका डालने के लिए जाता है। जब डाकुओं का सरदार बालाराम को मारना चाहता है तो उसी समय बालाराम अपनी पुत्री चम्पा को बुलाते हैं। चम्पा उठती है और अपने सामने डाकू वेश मे खड़े मेघराज के हाथ मे बधी हुई राखी की लज्जा रखने के लिए चिल्ला उठती है। मेघराज को राखी की याद आती है। वह सभी डाकुओ को भाग जाने के लिए शोर मचाता है। इतने मे गाँव के नवयुवक सोमेश्वर और वली खाँ वगैरह आकर मेघराज की खूब पिटाई करते हैं। सोमेश्वर आदि मेघराज को चम्पा के घर पहुँचा देते हैं। चम्पा मेघराज की सेवा करके उसे ठीक कर देती है। मेघराज चम्पा तथा बालाराम से क्षमा प्रार्थना करता है। बालाराम चम्पा की शादी ललितपुर गाँव मे एक लड़के के साथ तय करते है इससे चम्पा तथा सोमेश्वर बड़े दुःखी हो जाते हैं। चम्पा आत्महत्या करना चाहती है किन्तु करीमन तथा मेघराज की मदद से बालाराम दोनो की शादी करने को तैयार हो जाता है। मेघराज चम्पा तथा सोमेश्वर की शादी के अवसर पर आता है और अपनी कमाई के ग्यारह रुपये थाल मे रखकर अपनी बहन चम्पा के पति सोमेश्वर को टीका करता है।

राजकुमार भोज (सन् १६३३, पृ० १३०), ले० विश्वम्भर सहाय प्रेमी, प्र० हरनाम दास गुप्ता, भारत प्रिंटिंग वर्क्स, दिल्ली, पात्र पु० ११, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ६, ७, ४।
घटना स्थल जगल की झोपड़ी, राजमहल, उज्जैन का राजदरबार, भोज का विद्यालय, मुन्ज का मत्रणागृह, जगल का मार्ग, राजमहल का मार्ग।

आचार्य धमव्रत के गुरुकुल मे उज्जैनराज सिन्धुतल के पुत्र भोज शिक्षा प्राप्त कर रहे है। पाठ पढ़ाते हुए गुरु शिष्य मे धन के महत्त्व और धन के अर्जन पर विचार-विमर्श होता है। उसी समय महाराजाधिराज आश्रम मे पधारते हैं और गुरुमुख से पुत्र की मेधा, प्रतिभा की प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होते हैं। दूसरे सीन मे विपक्ष का परिचय है।

भोज का चाचा मुंज अपने स्वार्थी मंत्री देवरत्न की सहायता से भोज को राज्याधिकार से वंचित कर स्वतः राजा बनने का स्वप्न देखता है। कारण यह है कि उज्जैन नरेश सिन्धुल अत्यंत रुग्णावस्था में पड़े हैं और जीवन की आशा छोड़ चुके हैं। रानी वीरमती राजकुमार भोज के राजतिलक का प्रश्न उठाती है किन्तु सिन्धुल महामंत्री को यह आज्ञा पत्र लिखकर देते हैं। "मेरी मृत्यु के पश्चात् मेरा भाई मुंज राज्य का अधिकारी हो।" परन्तु भोज के पूर्ण युवा हो जाने पर राज्य भोज को ही सौंपा जाता है।

इधर सिन्धुल की मृत्यु के उपरांत मुंज राजगद्दी पर बैठता है और महामंत्री बुद्धिसागर को हटाकर देवरत्न को मंत्री बनाता है। मुंज निष्कंटक राज्य के लिए भोज के वधकार्य में वधिक वत्सराज को नियुक्त करता है। वत्सराज गुरुकुल में भोज को विद्याध्ययन में निमग्न देख संशय में पड़ जाता है। और उससे प्रभावित होकर वत्सराज कहता है : "राजकुमार ! तुम्हारे आत्मिक बल की ज्योति ने मेरा अन्धकार मिटा दिया है।" वत्सराज तलवार रख देता है। अब वह अपने प्राणों की चिन्ता में पड़ता है। पर उसकी समझदार पत्नी मुक्ता किसी युक्ति से भोज का कृत्रिम सिर थाल में रखकर मुंज के सामने उपस्थित करती है। मुंज भोज का पत्र पढ़कर दुखी होता है और पश्चात्ताप रूप में अपने प्राणोत्सर्ग हेतु प्रस्तुत होता है। ज्योंही वह चिता में बैठने जाता है भोज प्रकट होकर कहता है—"इस खूनी मुकुट को ग्रहण करने में मैं सर्वथा असमर्थ हूँ। उसका उपयोग चाचा जी ही करें।"

राजतिलक अर्थात् किरातार्जुन युद्ध नाटक (वि०१९८८, पृ० १३१), ले० : जगन्नारायण देवशर्मा ; प्र० : अध्यक्ष ज्योति भवन रामनगर, काशी ; *पात्र* : पु० १४, स्त्री १२ ; *अंक* : ३ ; *दृश्य* : ११, ६, ७।
घटना-स्थल : राजदरबार, जंगल।

इस पौराणिक नाटक में किरात और अर्जुन का युद्ध-वर्णन है।

महाराज धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन अत्यंत लालची है। वह छल से पाण्डवों का राज्य हड़प कर लेता है। पांडव जंगल में जा बसते हैं। बाद में द्रौपदी को गुप्तचर द्वारा कौरवों के वैभव का पता चलता है। वह युधिष्ठिर को युद्ध के लिए प्रेरित करती है। महर्षि व्यास दुर्योधन के अन्याय को देखकर अर्जुन को मंत्र-विद्या देते हैं। अर्जुन की तपस्या से घबराकर इन्द्र अप्सराओं का आश्रय लेता है। पर वह अपने प्रयत्न में विफल रहता है। शिव प्रसन्न होकर अर्जुन को वरदान देते हैं। तत्पश्चात् व्यास जी अर्जुन का राजतिलक कर देते हैं।

राजनैतिक कृष्ण (सन् १९५२, पृ० ८४), ले० : विश्वम्भर दयाल वैद्यराज ; प्र० : अनुभूत योगमाल वमलोकपुर इटावा ; *पात्र* : पु० ११, स्त्री ७, *अंक* : ३ ; *दृश्य* : ८, ६, ६।
घटना-स्थल : राजभवन, युद्ध-क्षेत्र।

इस नाटक में कृष्ण को आधुनिक राजनीतिक परिवेश में दिखाया गया है। पाण्डव व कौरव के मध्य कृष्ण की भूमिका को नाटकीय रूप में प्रदर्शित किया गया है।

राजपूत रमणी (सन् १९३७, पृ० १०८), ले० : चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि'; प्र० : राजपूत पब्लिशिंग हाउस, बनारस ; *पात्र* : पु० १२, स्त्री ६ ; *अंक* : ३ ; *दृश्य* : ७, ६, ६।
घटना-स्थल : मन्दिर, दरबार, पहाड़ी, जंगल, युद्धभूमि।

इस वीररस प्रधान ऐतिहासिक नाटक की कथावस्तु सुप्रसिद्ध राजपूत रमणी हाड़ी रानी से सम्बन्धित है। रूपनगर की राजकुमारी सखियों सहित परिहास-रत है। तभी एक चित्र बेचनेवाली आकर उसे चित्र दिखाती है। रूपमती औरंगजेब के चित्र को भूमि पर पटककर उसे पैरों से कुचल देती है और उदयपुराधीश

राजसिंह के चित्र पर मुग्ध हो जाती है। अपने अपमान की सूचना पाकर औरंगजेब रूपनगर के जमींदार शिवरत्नसिंह को पत्र द्वारा यह संदेश भिजवाता है कि इसी चैत्र मास की अंतिम तिथि को रूपमती से विवाह करने के लिए मैं रूपनगर आ रहा हूं। इस पर राजसिंह की पूर्वानुरागिनी रूपमती उन्हें पत्र लिखकर विवाह करने और मुगल-सम्राट के दुस्साहस को विफल करने का निमंत्रण भेजती है। राजसिंह इस आमंत्रण को स्वीकार करता है। इस कार्य के लिए यह निश्चित होता है कि राजसिंह डेढ़ हजार घुड़सवार सैनिकों को साथ लेकर सीधे रूपमती से विवाह करने जायेंगे और चन्द्रावत सेना के साथ तब तक मुगलों को रोके रहें जब तक राजसिंह ससुराल उदयपुर न पहुँच जाये। रण-प्रयाण के अवसर पर सेनापति चन्द्रावत नवविवाहिता पत्नी लीलावती के भविष्य के प्रति चिंतित दिखाई देते हैं। पति को कर्तव्यच्युत होते देख हाड़ी रानी अपना सिर काटकर उसके पास भिजवाती है। हाड़ी रानी के अपूर्व त्याग से प्रेरित होकर चन्द्रावत रौद्र रूप धारण कर रण-प्रयाण करता है। युद्ध-भूमि में वह औरंगजेब पर घायल सिंह की भाँति टूट पड़ता है।

सम्राट् प्राण-भिक्षा की मिन्नत करता है, और कुरान की शपथ लेकर मेवाड़ पर आक्रमण न करने का वचन देता है। इस पर युद्ध बंद हो जाता है। किन्तु अत्यधिक घायल होने से चन्द्रावत की मृत्यु हो जाती है। उदयपुर पहुँचने पर महाराज को हाड़ी रानी और चन्द्रावत के अद्भुत साहस और त्याग की सूचना मिलती है। राजपूती आन को आदर्श मान पति-पत्नी की पुण्य स्मृति में समाधि बनवाकर राजसिंह रूपमती के साथ इन अमर शहीदों की समाधि पर माल्यार्पण करते हैं।

राजपूतों का जौहर (सन् १९३८, पृ० ६४), ले० तारा नाथ रावल, प्र० नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर, पात्र पु० ३, स्त्री २, अंक ६, दृश्य १६, ४, १७, २।
घटना-स्थल राजप्रासाद, जौहर, चित्तौड़, युद्धक्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक में राजपूतों का अद्भुत जौहर प्रदर्शित किया गया है। प्रथम ज्वाला अंक में सिंधु पर मुसलमानों के आक्रमण, हिन्दुओं के अहंकारी महाराज दाहिर की पराजय, देवल पर कासिम की विजय, राजप्रासाद के सामने चिता पर राजपूतनियों के जौहर का वर्णन किया गया है। दूसरी ज्वाला में अलाउद्दीन की विजय के उपरान्त जैसलमेर के महारावल जयतसी और रतनसी की स्त्रियों का जौहर दिखाया गया है। तीसरी-चौथी ज्वाला में चित्तौड़ की जौहर-ज्वाला का वर्णन है। पाँचवीं ज्वाला में चित्तौड़ पर अकबर का आक्रमण चित्रित है। जयमल और फत्ता की मृत्यु के उपरान्त राजपूतनियों का जौहर नाटकीय ढंग से दिखाया गया है। छठी ज्वाला में दुर्गादास का बलिदान, औरंगजेब की क्रूरता, राजपूतों का शौर्य और राजपूतनियों का जौहर प्रदर्शित है।

राजमुकुट (सन् १९३५, पृ० १२६), ले० पं० गोविन्दवल्लभ पन्त, प्र० गंगा ग्रन्थागार, पात्र पु० ९, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ६, ५, ५।
घटना-स्थल चित्तौड़ के महाराना विक्रम का निवास-कक्ष।

इस ऐतिहासिक नाटक में राजपूतों के राजमुकुट का महत्त्व चित्रित किया गया है।

राजमुकुट राजपूताने की एक प्राचीन गौरव गाथा है। नाटक का आधार पन्ना नामक स्त्री है। विरोधी पात्रों में शीतल देवी भी एक स्त्री है। इसमें स्त्रियों की प्रबल शक्ति और उनकी असीम सत्ता का वर्णन है। पन्ना देश-रक्षा के लिए अपने प्राणों से भी प्यारे पुत्र का बलिदान कर देती है। यह पन्ना के कठोर बलिदान का परिचायक है। वह राजकुमार उदय को लेकर विभिन्न स्थानों पर शरण के लिए भटकती फिरती है। अंत में आशाशाह के यहाँ शरण लेती है। दनवीर के राज्य में उसके अभद्र व्यवहार के कारण विद्रोह होता है तथा अवसर पाकर

सभी विद्रोही सरदार बनवीर पर आक्रमण करते हैं। पन्ना के कहने पर बनवीर को क्षमा-दान दिया जाता है। नृत्य और संगीत के साथ उदयसिंह का राज्याभिषेक होता है।

राजयोग (वि० १९९१, पृ० १७८), ले० : लक्ष्मीनारायण मिश्र; प्र० : भारती भण्डार, वाराणसी; पात्र : पु० ४, स्त्री १; अंक : ३ ; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : बिहारी का मकान, विद्यालय।

राजयोग में बिहारी की स्त्री अपने नौकर गजराज से गुप्तप्रेम करती है और उससे चम्पा नामक एक पुत्री उत्पन्न होती है। चम्पा विद्यालय में पढ़ती है, जहाँ रतनपुर के राजकुमार शत्रुसूदन और सखी-कुमार नरेन्द्र भी पढ़ते हैं। नरेन्द्र से चम्पा का प्रेम है। दोनों का विवाह निश्चित हो जाता है, किन्तु शत्रुसूदन अपने राजप्रभाव से चम्पा से विवाह कर लेता है और नरेन्द्र गृहत्यागी हो जाता है। चम्पा को बार-बार शत्रुसूदन से तिरस्कृत होना पड़ता है। पांच वर्ष बाद नरेन्द्र राजयोग का आडम्बर करता है किन्तु कोई उसे पहचान नहीं पाता। कालांतर में वह राजयोगी से कर्मयोगी बन जाता है।

राजर्षि परीक्षित (सन् १९६८, पृ० १२८), ले० : चन्द्रशेखर पाण्डे चन्द्रमणि ; प्र० : राय बरेली, भारती भवन, बन्नावां; पात्र : पु० १६, स्त्री १; अंक : ३; दृश्य : १०, ८, ५।
घटना-स्थल : राजभवन, उपवन, मार्ग, घर गंगातट।

यह पारसी शैली का पौराणिक नाटक है। कलि के बढ़ते हुए प्रभाव को निर्मूल करने के लिए परीक्षित दिग्विजय हेतु प्रयाण करते हैं। गो रूपिणी पृथ्वी तथा वृषभ रूपी धर्म को मारते हुए कलि को देख वे उसे अपने बाण का लक्ष्य बनाना चाहते हैं, किन्तु कलि की प्रार्थना पर स्वर्ण सहित पांच स्थान देकर उसे मुक्त कर देते हैं। कालान्तर में कलि-कुचाल के प्रभाव से परीक्षित समाधिस्थ शमीक ऋषि के गले में मृतक सर्प की माला पहना देते हैं। इस पर शमीक पुत्र शृंगी उन्हें सातवें दिन तक्षक सर्प के द्वारा डसे जाने का शाप देता है। यह समाचार पाकर गुरु वैशम्पायन सभी का मोह-भंग करते हैं। उनकी आज्ञा से परीक्षित जनमेजय का राज्याभिषेक करके गंगातट पर पहुँचते हैं जहाँ शुकदेवजी सात दिनों तक श्रीमद्भागवत की कथा सुनाते हैं। अंत में तक्षक के डसने पर परीक्षित जीवन मुक्त होते हैं। प्रतिशोधवश राजकुमार जनमेजय नागयज्ञ करते हैं, किन्तु गुरु वैशम्पायन एवं ब्रह्मा के समझाने पर वे उसे स्थगित कर देते हैं।

राजसिंह (सन् १९५१, पृ० ११६), ले० : विश्वम्भर नाथ 'चाचा', प्र० : श्रीकृष्ण पुस्तकालय, कानपुर ; पात्र : पु० १६, स्त्री १३ ; अंक : ३ ; दृश्य : १२, ११, ६।
घटना-स्थल : राजमहल, युद्धक्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक में सतीत्व-रक्षा को महानता दी गई है। औरंगजेब रूपनगर के राजा विक्रमसिंह की पुत्री चंचलकुमारी का सतीत्व नष्ट करने का प्रयास करता है। किन्तु राणाप्रताप के पौत्र राजसिंह की अपूर्व वीरता और साहस से उसका सतीत्व बच जाता है, और औरंगजेब हार जाता है।

राजसिंह (सन् १९३३, पृ० २३२), ले० : चतुरसेन शास्त्री; प्र० : मोतीलाल बनारसीदास, बनारस; पात्र : पु० ३७, स्त्री ७ ; अंक : ५ ; दृश्य : ८, ६, ११, १०, १२।
घटना-स्थल : बाजार, रूपनगर का किला, दिल्ली, मेवाड़, उदयपुर।

इस ऐतिहासिक नाटक में उदयपुर के महाराणा राजसिंह की आत्मशक्ति, दानवीरता, शरणागतवत्सलता, विलक्षण सेना नायकत्व, रणपाण्डित्य, साहस और दूरदर्शिता का वर्णन है। राजसिंह सिंहासन पर बैठते ही अपने पुराने परगने को वापस लेकर राज्य को सुदृढ़ बनाता है और शत्रुओं को दण्ड देता है। औरंगजेब के कठमुल्लापन और पक्षपातपूर्ण शासन के कारण राजसिंह को

युद्ध कार्य करने पड़ते हैं, जिनके परिणाम-स्वरूप वह बादशाह का कोपभाजन बन जाता है। वह रूपनगर की राजकन्या को, जिसे औरंगजेब बलपूर्वक अपनी बेगम बनाना चाहता था, तथा जिसने राजसिंह की शरण ली थी—समय पर पहुँचकर बचाता है और उसे अपने यहाँ शरण देता है। गोवर्धन के गुसाइयों तथा उनकी देवमूर्तियों को आश्रय देता है। वह जसवन्तसिंह के पुत्र को अपने यहाँ शरण देता है। इन सब कारणों से रुष्ट हो बादशाह मेवाड़ पर चढ़ाई कर देता है, परन्तु राणा की रणनीति और नायकत्व के कारण बादशाह सफल नहीं हो पाता। राणा की वीरता के अतिरिक्त इस नाटक में उनके अल्पवयस्क सरदार रतनसिंह और हाड़ी रानी सुहागसुन्दरी के पवित्र प्रेम और महान उत्सर्ग का भी उल्लेख है। पति के हृदय में आत्मविश्वास उत्पन्न करने के लिए उन्हें युद्ध में जाने से पूर्व अपना सिर काटकर दे देती है और रतनसिंह अपने स्वामी के लिए युद्ध-क्षेत्र में वीरगति प्राप्त करता है।

राजसिंह (सन् १९३४, पृ० ६६), ले० 'चन्द्र' शर्मा, प्र० इण्टरनेशनल पब्लिशिंग ऐण्ड स्टेशरी कम्पनी, मोहनलाल रोड, लाहौर, पात्र पु० १३, स्त्री ८, अंक ३, दृश्य १४, ७, ४।
घटना स्थल महाराणा प्रताप का दरबार, रूपनगर, मीपणवन, औरंगजेब का दरबार, पार्वती का मंदिर, उदयपुर।

इस ऐतिहासिक नाटक में राजसिंह की मानवता और वीरता का वर्णन है। राजसिंह राजगद्दी पर बैठते ही मालवा को लूटता है। शाहजहाँ राजसिंह को अपना भतीजा मानकर औरंगजेब के कहने पर उससे बदला नहीं लेता है। औरंगजेब के हृदय में राणा की बात खटकने लगती है। उसके हृदय का वैमनस्य बढ़ता ही जाता है। वह राणा पर ही नहीं बल्कि समस्त हिन्दू जाति पर अत्याचार करना शुरू कर देता है। औरंगजेब रूपनगर की राजकन्या को बलात् ले आने के लिए सैन्य दल भेजता है। यह बात राज कन्या के लिए असह्य हो जाती है। वह राजा को अपने उद्धार के लिए एक पत्र भेजती है। राजा उसकी रक्षा करता है। पापी के पाप का घट जब भर जाता है तब वह स्वयं एक दम फूट पड़ता है। जिस समय औरंगजेब अरावली घाटी में ससैन्य नजरबन्द हो जाता है उस समय राणा से सन्धि कर अपनी विवशता का परिचय देता है।

राजसिंह नाटक (सन् १९०६, पृ० ३०), ले० हरिहर प्रसाद, प्र० अग्रवाल प्रेस साहब गंज, गया, पात्र पु० ६, स्त्री ६, अंक ५, दृश्य ३, २, २, २, ८।
घटना-स्थल राजमहल, राणा विक्रम की सभा, पहाड़ी भाग, अंतःपुर, राजमार्ग।

रूपनगर के राजा विक्रम की कन्या विद्युत्प्रभा अपने महल में सहेलियों के साथ दिखाई देती है।

एक चित्र बेचने वाली बुढ़िया उदयपुर में आलमगीर का चित्र पिटारी से निकाल कर दिखाती है, विद्युत्प्रभा आलमगीर का चित्र पैरों तले कुचलकर कहती है कि उस हिन्दू मात्र के द्रोही का क्षत्रिय कन्याएँ कैसा आदर करती हैं। उसकी सहेली निर्मला बुढ़िया से प्रार्थना करती है कि नानी इस बात को किसी से न कहना।

रूपनगर के राजा विक्रमसिंह पहले गाना गाते हैं फिर मन्त्री को आज्ञा देते है—"बादशाह पत्र में लिखते हैं कि रविवार को विद्युत्प्रभा के ले जाने को सेना दिल्ली से प्रस्थान करेगी। अतः मुगल सेना का आदर-भाव अच्छी तरह से होना चाहिए।"

उधर विद्युत्प्रभा अपनी सखी निर्मला से कहती है कि मैं दिल्ली जाने से पहले आत्म-घात कर लूँगी। निर्मला के समझाने पर विद्युत्प्रभा राजसिंह के पास दूत भेजने को प्रस्तुत होती है।

विद्युत्प्रभा अपने कुल-गुरु के द्वारा राजसिंह के पास सन्देश भेजती है। वह एक पत्र लिखकर देती है और कहती है, "महाराज जब पत्र पढ़ चुके तो यह अँगूठी (हाथ से उतार कर देती है) उनके हाथ में पहना दीजिएगा।"

पुरोहित अनन्त मिश्र बगल में झोली लटकाए शिव-शिव जपते हुए उदयपुर को प्रस्थान करते हैं। मार्ग में चोर उन्हें पकड़-कर उनसे पत्र और अँगूठी छीन लेते हैं। पत्र पढ़कर धन के लोभ से उसे औरंगजेब के पास पहुँचाना चाहते हैं। उसी समय उदयपुर के राजा मानसिंह वहाँ पहुँच जाते हैं। चोर उन्हें पहचान कर क्षमा माँगते हैं। राजसिंह के आज्ञानुसार चोर मानिक-सिंह ब्राह्मण को साथ लेकर राज-दरबार में पहुँचता है।

इधर मुगल सेना रूपनगर पहुँचती है। महाराजा विक्रम विद्युतप्रभा के विवाह की तैयारी करते हैं।

राजसिंह सेना सहित पहाड़ी मार्ग में विद्यमान हैं। वह मानिकसिंह को मुगल सेनापति की वर्दी में देखकर प्रसन्न होते हैं। उसे रूपनगर भेजते हैं और किसी बहाने से पालकी के साथ-साथ रहने का आदेश देते हैं। माणिकसिंह प्रणाम करके प्रस्थान करता है। इधर रूपनगर कुमारी विलाप करती है और उसकी सखी निर्मला उसे समझाती है। उसी समय अनन्त मिश्र वहाँ पहुँच जाते हैं। विद्युतप्रभा को आश्वासन देते हैं कि महाराज तुम्हारी रक्षा करेंगे, मुगल सेना से युद्ध करने की सौगन्ध खाई है।

मुगल सेना के संरक्षण में विद्युत प्रभा का डोला एक पहाड़ी पर पहुँचता है। मुगलों पर पत्थरों की वर्षा होने लगती है। मुगल सेना तोप दागती है। विद्युतप्रभा निर्भीक होकर मुगल सेनापति से कहती है कि "मैं हिन्दू कुल की कन्या हूँ। यवन के पास जाने से मेरा धर्म नष्ट होता है, इसलिए मैंने रक्षा के लिए राणा जी को स्मरण किया है।"

राजसिंह प्रकट होते हैं और मुगल सेना-पति से युद्ध का आह्वान करते हैं। माणिक-सिंह रूपनगर के राजा विक्रमसिंह से २००० सैनिक राजकुमारी की चारों ओर से रक्षा करने के लिए माँग लाता है। मुगल सेना चारों ओर से घिर जाती है। मुगल सैनिक भाग जाते हैं। राजसिंह और विद्युत प्रभा का मिलन हो जाता है।

राजा गोपीचन्द गीति नाट्य (सन् १८८५, पृ० ६४), ले०: विष्णुदास भावे ; प्र०: श्री शिवाजी छापाखाना, पूना ; पात्र : पु० ४, स्त्री २ ; अंक : ३ ।

यह एक शिक्षाप्रद गीतिनाट्य है। इस में गोपीचन्द का मनोभाव चित्रित है। राजा गोपीचन्द की माता अपने पति की मृत्यु के बाद योगी जालन्धर की शिष्या बन जाती है और अपने विलासी पुत्र को ब्रह्म-ज्ञान का उपदेश देती है। परन्तु उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह अपनी माता का जालन्धर आदि जोगियों से सम्पर्क की बात सुनकर जालन्धर को महल की खाई में डलवा देता है। जालंधर का उद्धार मच्छन्दर नाथ द्वारा होता है। अन्त में राजा भी योगी मच्छन्दर नाथ की चमत्कारिक क्रियाओं से प्रभावित होकर वैराग्य धारण कर लेता है।

राजा गोपीचन्द नाटक (वि० १९३४, पृ० ११२), ले० : मण्णा जी ईनामदार ; प्र० : भाऊ गोविन्द, बम्बई, पात्र : पु० ८, स्त्री ४ ; अंक : ३ ; दृश्य : १३ ।
घटना-स्थल : महल, दरबार, खाई, वन ।

इस पौराणिक नाटक में योग की महत्ता अभिव्यक्त की गई है। बंगाल के राजा त्रिलोकचन्द के राज्य में प्रजा सुखी तथा सम्पन्न है। उसकी रानी मैनावती है। राजा की मृत्यु के बाद उसका पुत्र गोपीचन्द राज-सिंहासन पर बैठता है। राजा जगत् के भोग-विलास में समय व्यतीत करता है। पति-वियुक्ता रानी अपने महल में एकान्तवास करती है। रानी अपने पुत्र की भोग-लिप्सा देख अत्यन्त दुखी होती है। एक दिन स्नान करते समय राजा अपनी माँ की पीड़ा का कारण पूछता है। रानी अपने पुत्र को ब्रह्मज्ञान का उपदेश देती है, किन्तु राजा पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता और वह अपने भोग-विलास में लिप्त रहता है। किसी रानी द्वारा राजा गोपीचन्द अपनी माता का जलंधर से घनिष्ठ सम्पर्क सुनकर बड़ा क्रुद्ध होता है। वह योगी जलंधर को बुलाकर उसे खाई में डाल देता है और ऊपर नौ लाख घोड़ों

की लीद डलवाकर ढँक देना है। रानी भी पुत्र के जीवन पर शाप की मँडराती अँधेरी से भयभीत होकर कानिफा से निस्तार का उपाय पूछती है। कानिफा रानी की वेदना और माधुता से प्रभावित होकर मच्छन्दर नाथ द्वारा उसका उद्धार कराती है।

राजा दिलीप (सन १६२७, पृ० १५१), ले० गोपाल दामोदर, तामस्कर, प्र० इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग, पात्र पु० १२, स्त्री ५, अंक ५, दृश्य ६, ६, ६, ७, २।
घटना-स्थल राजमहल, आश्रम, वन, गोशाला।

इस पौराणिक नाटक में रघुवंश के नायक राजा दिलीप की कथा वर्णित है। इसमें हिन्दुओं की गोमाता के प्रति सच्ची प्रेम-भावना का वर्णन रघुवंश के आधार पर है।

राजा परीक्षित (सन् १६५१, पृ० ५३), ले० गौरीशंकर मिश्र 'द्विजेन्द्र', पात्र पु० ६, स्त्री ७, अंक ३।
घटना-स्थल जंगल, महल।

इस *पौराणिक नाटक में राजा परीक्षित* की आकस्मिक मृत्यु का वर्णन है। इसमें *नाट्यकार न सत्यं शिवं सुन्दरम्* का सुन्दर रूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस गीतिनाट्य का उद्देश्य ही है भावों की मार्मिक व्यञ्जना, कथोपकथनमय के द्वारा राजा परीक्षित की मृत्यु दिखाना।

राजा शिवि (सन् १६२३, पृ० ११६), ले० बलदेव प्रसाद खरे, प्र० दुर्गा प्रेस और आर० डी० बाहिती ऐण्ड क० नं० ४, चोर बगान, कलकत्ता, पात्र पु० २१, स्त्री ७, अंक ३, दृश्य ७, ६, ४।
घटना-स्थल राजप्रासाद।

इस पौराणिक नाटक में राजा शिवि की आदर्श कथा का वर्णन किया गया है। इन्द्र और अग्नि द्वारा राजा शिवि की परीक्षा होने पर वह धैर्य का उदाहरण प्रस्तुत करते है।

राज्यश्री (वि० १६७०, पृ० ६०), ले० जयशंकर प्रसाद, प्र० काशी 'इन्दुकला' ६, भारतीय भण्डार, काशी, खंड १, पात्र पु० २२, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ७, ७, ४।
घटना-स्थल नदी-तट, उपवन, वनपथ, बन्दीगृह, युद्ध-भूमि, तपोवन, जगत।

मौखरि वंशीय कन्नौजराज ग्रहवर्मा का मालवनरेश देवगुप्त से द्वेष है। राज्यश्री की सुन्दरता पर मुग्ध मालवेश उसे प्राप्त करने के लिए नाना प्रकार के उपाय एवं षड्यन्त्र करता है। वह ग्रहवर्मा को छलपूर्वक मारकर कन्नौज हस्तगत कर लेता है और राज्यश्री को भी बन्दिनी बना लेता है।

देवगुप्त की बन्दी बनाया जाता है। उसके उपद्रवपूर्ण कार्यों से रुष्ट होकर राज्यवर्धन उसका प्रतिकार करता है। राज्यवर्धन और देवगुप्त परस्पर आमने-सामने आते हैं और दोनों में समर अवश्यम्भावी हो जाता है। मालवेश देवगुप्त युद्ध में मारा जाता है। उसके दुष्कृत्यों का पूर्ण परिष्कार होता है। भिक्षु विकटघोष भी राज्यश्री की रूपमाधुरी पर मुग्ध हो जाता है। वह इसी से राज्यवर्धन *की सेना में आता है। और बन्दिनी राज्यश्री* को मुक्त करता है। षड्यन्त्रों द्वारा उसे साथ *ले अपनी उद्दाम वासना की तृप्ति के उद्देश्य* से जंगल के एकांत प्रदेश में पहुँच कर अपनी कुभावनाओं को व्यक्त करता है। दिवाकर मित्र की सहायता से राज्यश्री की रक्षा होती है। इधर गौड़-नरेश छल से राज्यवर्धन की हत्या करता है। हर्ष पुलकेशिन को जीतकर लौटता है हर्ष और राज्यश्री सब अपराधियों को क्षमादान देते हैं। सुएनचांग लुटेरे भी मुक्त कर दिए जाते हैं। माद्रिन सुरमा और विकटघोष भी सुएनचांग के पैर पर गिरते हैं। हर्ष और राज्यश्री लोक सेवा में जीवन बिताते हैं।

राज्यश्री (सन् १६४३, पृ० ११२), ले० भानुप्रताप सिंह, प्र० प्रकाश गृह, इलाहाबाद, पात्र पु० २२, स्त्री ५, अंक ५, दृश्य ३, ४, ६, ६, ४।
घटना स्थल कान्यकुब्ज, जंगल, पथ, नदीतट,

बन्दीगृह।

प्रभाकर वर्द्धन थानेश्वर का राजा है। राज्यवर्द्धन और हर्षवर्द्धन उसके दो पुत्र हैं और राज्यश्री उसकी पुत्री है जो उस नाटक की नायिका है। मालवा में गुप्त राजाओं की शक्ति प्रायः नष्ट हो जाती है। इस समय बंगाल में एक नवीन शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। शशांक नाम का व्यक्ति गौड़-राज्य की स्थापना करके कर्णसुवर्ण को अपनी राजधानी बनाता है। प्रभाकर वर्द्धन की मृत्यु के पश्चात् भारतवर्ष की राजनैतिक स्थिति डांवाडोल हो जाती है। उत्तर-पश्चिम की ओर शक्तिशाली हूणों का आक्रमण हो जाता है। राज्यश्री युवावस्था को प्राप्त हो जाती है। उसका सौन्दर्ययश सारे भारतवर्ष में व्याप्त हो जाता है। राज्यश्री का अपूर्व सौन्दर्य वर्णन सुनकर भारत के अनेक राजा उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो जाते हैं। राज्यश्री का विवाह कान्यकुब्ज के राजकुमार ग्रहवर्मा से हो जाता है। कामरूप का राजा आकर हर्ष से मैत्री कर लेता है। मालवेश देवगुप्त भी मैत्री स्थापित कर कान्यकुब्ज पर आक्रमण कर देता है। राज्यश्री का पति युद्ध में मारा जाता है और राज्यश्री बन्दी बना ली जाती है। समाचार पाने पर राज्यवर्द्धन युद्ध के लिए तैयार होता है। शशांक का साहस युद्ध के लिए नहीं होता। शशांक राज्यवर्द्धन को विवाह में अपनी बहन देने के प्रलोभन से छल से बल अपने शिविर में ही उसका वध कर देता है।

हर्ष राज्यवर्द्धन की मृत्यु का समाचार सुनकर विशाल वाहिनी के साथ शशांक के विरुद्ध प्रस्थान करता है। राज्यश्री कारागृह से निकल जंगल में चली आती है। राज्यश्री का यह समाचार पाकर शशांक के विरुद्ध युद्ध करने के लिए भाण्डे को भेजकर हर्ष अपनी भगिनी राज्यश्री को ढूंढने में प्रवृत्त हो जाता है। हर्ष अपार कष्ट सहकर वन में अपनी बहन को ढूंढता है। अन्त में दिवाकर मित्र मुनि की सहायता से राज्यश्री को उस समय बचाता है जब वह चिता में जलकर भस्म होना चाहती है।

रात के राही (सन् १९५७, पृ० ४८), ले० : शारदेन्दु रामचन्द्र गुप्ता; प्र० : ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सन्स, बुकसेलर, बनारस; पात्र : पु० ४, स्त्री ३ ; अंक : ६।

इस सामाजिक नाटक में समाज-सुधार की भावना चित्रित की गई है। धरती का पति डॉ० सेठ चन्दन के जन्म के समय किसी कारण से पत्नी को निकाल देता है। धरती भिक्षाटन से पुत्र का पालन करती हुई मर जाती है।

एक उदार व्यक्ति अशोक शिशु चन्दन को लेकर उसके पिता डॉ० सेठ के पास जाता है। डॉ० सेठ उसे पहचानकर भी नहीं बोलते और उसे अस्पताल जाने को कहते हैं। वे उसकी आंख का परीक्षण कर उपचार के लिए डॉ० अल्फ्रेड के पास जाने को बाध्य करते हैं। उनकी पुत्री मीना पिता की वार्ता सुनकर अंधे भाई चन्दन के प्रति सहानुभूतिपूर्वक रुपया, आभूषण आदि लेकर चन्दन और अशोक के साथ घर छोड़कर चली जाती है। वह न्यूयार्क पहुंचकर डॉ० अल्फ्रेड को चन्दन की आंख दिखाती है, किन्तु वह भी चन्दन की आंख की रोशनी न लौटने का निर्णय देता है। मीना वहां से लौटकर भारत के एक गांव में अशोक की सहायता से अस्पताल चलाती है। दोनों जनता-जनार्दन की सेवा में ख्याति प्राप्त करते हैं और अंधा चन्दन भी दोनों के साथ आनन्दपूर्वक समय बिताता है।

गांव में एक दिन मुठभेड़ में प्रकाश की अशोक बुरी गत बनाता है। किन्तु प्रकाश का मीना पर प्रेम देख वह मीना को वहीं छोड़ गांव चला जाता है। वह गम भुलाने के लिए शराबी हो जाता है। इधर चन्दन घर में जलकर मर जाता है। चोरों की रोकथाम में प्रकाश भी चल बसता है। अशोक शराब से जर्जरित हो पुनः प्रकाश की मृत्यु के बाद मीना के पास पहुँचता है, किन्तु वह उस शराबी को निकाल देती है। वह वहीं शराब के अति सेवन से मर जाता है। निराश मीना भी नदी में कूदकर मर जाती है।

राधा (सन् १९४१, पृ० ५५), ले० उदयशंकर भट्ट, प्र० आतमाराम एण्ड सन्स, दिल्ली, पात्र पु० २, स्त्री ३, अंक-रहित, दृश्य ४।
घटना-स्थल यमुना का किनारा, निर्जन निकुंज, चौबुरजा।

आध्यात्मिक प्रेम पर आधारित इस भाव-नाट्य में प्रतीकात्मक पद्धति का आश्रय लिया गया है। प्रथम दृश्य में प्रेम-सौन्दर्य के अवतार कृष्ण के प्रति राधा आसक्त है। वह एक दिन व्यथित होकर अपनी अन्तरंग सखी विशाखा से यह भेद प्रकट कर देती है। विशाखा राधा को आगामी अवरोधों से अवगत कराती है। फिर भी राधा नहीं मानती। राधा की इस अवस्था को देखते हुए विशाखा भी कृष्ण के प्रति अपना प्रेम प्रकट करती है जिससे राधा को संतोष होता है कि एक वही विरह में नहीं जल रही है, अन्य भी उसके पथ-साथी हैं।

द्वितीय दृश्य में यमुना-तट पर कृष्ण मुरली वादन में लीन हैं। राधा किसी आकर्षण में खिंची अस्तव्यस्त चली जाती है और प्रेम विभोर हो कृष्ण से उनका रहस्य पूछती है। उत्तर में कृष्ण वंशी की तान को विषय-कालिमा से आच्छादित प्रेम पीयूष-सरिता की जागृति का कारण बताते हैं। इस पर राधा कृष्ण पर दोषारोपण करती है कि उनका रूप और मुरली की तान ही समस्त ब्रज-वासियों की विकलता का कारण है। इस आरोप का खंडन करते हुए कृष्ण उदात्त प्रेम का संदेश देते हैं जिसके लिए राधा स्वयं को असमर्थ पाती है। वह प्रेम में समर्पण के साथ एकलय हो जाना चाहती है।

तृतीय दृश्य के अन्तर्गत राधा एवं विशाखा अपने-अपने प्रेमोदगार व्यक्त करती हैं। उसी के अनन्तर कृष्ण आकर अपने मथुरागमन का समाचार सुनाते हुए राधा को समाज, कुल मर्यादा तथा प्रेम-रक्षा का संदेश देते हैं।

चतुर्थ दृश्य में विरह-विदग्धा राधा का चित्रण है। इसी समय भक्ति-अहंकार से आप्लावित नारद का प्रवेश होता है जो राधा के मान को उद्बुद्ध करके कृष्ण को विस्मृत करने का सुझाव देते हैं। किन्तु राधा के एकनिष्ठ प्रेम के समक्ष नारद का अहम् पराजित हो जाता है। इधर राधा भी प्रतिदान-रहित प्रेम के औचित्य को प्राप्त करती है।

राधा कन्हैया का किस्सा (रचनाकाल लगभग सन् १८४६), ले० वाजिदअली शाह 'अख्तर', प्र० अज्ञात, पात्र पु० ५, स्त्री ८, अंक ३, दृश्य ८।

इस नाटक में कृष्ण लीला चित्रित की गई है। एक दुखिनी स्त्री साहरा, जोगिन बन जाती है। अपने नौकर गुरबत से कहती है "चौबीस बरस हुए एक रंज है और वह रंज है—राधा कन्हैया का नाच नहीं देखा।" गुरबत उसकी इस अभिलाषा की पूर्ति के लिए इफरीयत देव के पास जाकर उसके गम का निवेदन करता है। देव, परी जोगन को बुला कर राधा कन्हैया नाच का आह्वान करता है।

गीत आरम्भ हो जाता है। कृष्ण राधा को मनाते हैं, सखियाँ भी मनाती हैं। कृष्ण मुसाफिर से पूछते हैं और कहते हैं कि "हम मुरली ढूढत हैं, कि मुरली?" मुसाफिर उन्हें पनिहारिनों के पास भेजता है और पनिहारिन मक्खन मांगती हैं। तब कृष्ण मक्खन वालियों के पास जाते हैं। इस प्रकार मक्खन लीला आदि के माध्यम से कृष्ण लीला दिखाई गई है।

राधा नन्द कुमार (सन् १९६०, पृ० ३५), ले० रामसरन दास, प्र० माधोगोविन्द दास जैन, प्रभाकर प्रेस, बनारस, पात्र पु० ८, स्त्री ४, अंक ४, दृश्य रहित।
घटना-स्थल रंगशाला।

यह शृंगारिक नाटक है। इसमें राधा तथा कृष्ण का परस्पर प्रेम-वर्णन है।

राधामाधव नाटक (सन् १९२० के आसपास, पृ० १०४), ले० एक नाटक प्रेमी, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस, पात्र पु० ६, स्त्री ८, अंक ३, दृश्य।

५, ५, २ ।
घटना-स्थल : सड़क, मकान, यमुनातट ।

इस धार्मिक नाटक में राधामाधव की मधुर प्रणय-लीला का सरस चित्रण मिलता है। राधामाधव के प्रेम में डूबकर अपने घर और पति को भी छोड़ देती है। उसके हृदय में केवल एक ही भाव है और वह है माधव का नाम। वह माधव से पवित्र प्रेम करती है। सब लोग राधा की पवित्रता पर संदेह करते हैं किन्तु वह इस कसौटी पर खरी उतरती है।

राधा वंशीधर विलास (सन् १६८४ से १७११ के मध्य, पृ० ६४), ले० : शहाजी (शाहजी); प्र० : तंजाउर, महाराजा सरफोजी सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजौर, (मद्रास); पात्र : पु० ४, स्त्री २ ; अंक : ३ ; दृश्य : ४ ।
घटना-स्थल : यमुनातट, शीतल निकुंज, वन, भवन ।

एक बार यमुनातट पर विहार करते समय कृष्ण से रूठकर राधा अपनी सहेली के साथ एक कुंज में चली जाती है। कृष्ण राधा के वियोग को देर तक सह नहीं सकते हैं और उनको ढूंढने के लिए उद्धव को भेजते हैं। उद्धव राधा को शीतल निकुञ्जभवन के बीच बैठे पाते हैं पर राधा को लौटा लाने में वे असफल हो जाते हैं। वे खाली हाथ कृष्ण के पास लौट आते हैं। तब उनसे कृष्ण अपने विरह को व्यक्त करते हैं।

वेदना से व्याकुल देखकर एक सिद्ध योगी उन्हें बाँसुरी की तान छेड़ने को कहता है। कृष्ण अपनी बाँसुरी की मूर्छनाओं से वातावरण को संगीत से प्लावित कर देते हैं। बाँसुरी-नाद की प्रतिध्वनि के रूप में राधा की धमनियाँ बज उठती हैं और वह स्वयं खिंचकर कृष्ण के पास आ जाती है। कृष्ण से क्षमा-याचना करती है। कृष्ण उसे क्षमा कर आनन्दमग्न कर देते हैं। प्रणयकलह के मिट जाने पर दोनों प्रसन्न हो जाते हैं।

राधामाधव अर्थात् कर्मयोग (सन् १९२२, पृ० १०४), ले० : तामसकर गोपाल दामोदर; प्र० : जबलपुर, कृष्णराव भावे ; पात्र : पु० ३, स्त्री ४; अंक : ५ ; दृश्य : ६, ७, ८, ६, ३ ।
घटना-स्थल : प्रयाग, सड़क, बाग, गंगा-किनारा, मकान, दूकान, हवालात ।

इस सामाजिक नाटक में राधा-माधव का प्रेम दिखाया गया है। माधव, एक पाखण्डी एवं लोभी साधु चिदानन्द के चक्कर में पड़कर वैराग्य धारण करना चाहता है। केशव के समझाने पर भी नहीं मानता। ढोंगी साधु चिदानन्द के कहने पर माधव अपनी सारी सम्पत्ति बेच डालता है। अन्त में चिदानन्द की वास्तविकता का पता लगने पर माधव उससे सम्बन्ध-विच्छेद करके सच्चे साधु की तलाश में बनारस पं० अनुभवानन्द के यहाँ जाता है। माधव की प्रेयसी राधा श्यामलाल से शादी के प्रस्ताव को अस्वीकार कर माधव के ही पीछे बनारस चली जाती है।

श्यामलाल केशव को अपने मार्ग का कंटक समझकर उसकी हत्या करना चाहता है। उसका साथी मनमोहन राधा के पिता को झूठी सूचना देता है कि उसकी बेटी किसी अपरिचित युवक के साथ बनारस भाग गई। सेठ लक्ष्मणदास इस घटना से दुखी होकर आत्महत्या के लिए यमुना में कूदते हैं किन्तु मौके पर श्यामलाल पहुँचकर उनकी प्राण-रक्षा करते हैं। वे बेहोश लक्ष्मणदास के पास राधा, माधव आदि के विरुद्ध एक पत्र छोड़ जाते हैं।

पुलिस माधव, राधा, केशव और रमा को इसी पत्र के आधार पर कैद कर लेती है। श्यामलाल, चिदानन्द और उनके साथी भी कैद कर लिये जाते हैं। माधव और केशव कुछ दिनों के बाद जेल से मुक्त हो जाते हैं, किन्तु चिदानन्द और उसके साथियों को कुकृत्यों का दुष्परिणाम मिलता है।

अन्त में राधा-माधव, और केशव-रमा की शादी हो जाती है। चारों देश-सेवा की शपथ लेते हैं।

रानी भवानी (वि० १९९५, पृ० ८५), ले० : परिपूर्णानन्द; प्र० : पटना पब्लिशर्स, पटना ; पात्र : पु० ५, स्त्री ४ ; अंक : ३ ; दृश्य :

८, ७, ५।
घटना स्थल रनिवास, राजपथ, घना जंगल, कचहरी, राजदरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक की नायिका नाठोर के राजा रमाकांत की स्त्री रानी भवानी है। मुगल साम्राज्य के पतन पर मुर्शिदाबाद का निवासी अलीवर्दी खाँ नवाब बनता है उसके अधीन नाठोर रियासत थी। राजा रमाकांत नवाब की भाँति अय्याश हो जाता है। रमाकान्त के अपव्यय और छोटे भाई देवीदास के प्रति उसकी क्रूरता के कारण राज्य की स्थिति बिगड़ जाती है। रमाकांत के चचा दयाराम नवाब के सम्मानित दरबारी हैं। नवाब रमाकांत को दंडित करना चाहता है। नवाब की लगान भी नहीं पहुँचती। रमाकान्त गद्दी से हटाये जाते हैं और देवीदास राज्याधिकारी बनते हैं। रमाकांत के साथ उनकी स्त्री द्वार द्वार मारी मारी फिरती है इधर देवीदास को राजमद हो जाता है और नीचता पर उतर आता है। रानी भवानी की दुर्दशा, रमाकान्त का प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप देखकर दयाराम को क्षोभ होता है। अन्त देवीदास के स्थान पर रमाकांत पुन राज्य प्राप्त करते हैं। रानी भवानी की तपस्या, सत्यनिष्ठा में रमाकान्त का कल्याण हो जाता है।

रानी सुन्दरी (वि० १९८७, पृ० १२३), ले० ईश्वरप्रसाद शर्मा, प्र० अनन्तकुमार जैन, वीर मन्दिर, आरा, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ८, १०, ५।
घटना-स्थल पुरन्दरपुर, भगतराम का मकान, भयानक जंगल, राजदरबार, रानी सुन्दरी का कमरा।

इस ऐतिहासिक नाटक में नारी-धर्म की रक्षा दिखायी गयी है। राजा वीरसिंह का भाई धीरसिंह किसी की विधवा बहन के साथ कुछ छेड़छाड़ करने के पश्चात् उसके घर एक पत्र लिखता है कि वह अपनी बहन को एक रात के लिए उसके पास भेज दे। राजा वीरसिंह को यह बात मालूम हो जाती है तो वह संशय में पड़ जाते हैं। जब संयोगवश उनकी महारानी अपने देवर धीरसिंह से वास्तविकता का पता लगा लेती है तो वीरसिंह उन्हें सबक सिखाने के लिए कैद कर देता है और कहता है कि क्या हिंदू नारियाँ भी नीच कुलच्छनी होती हैं?

राम अवतार (सन् १९१५, पृ० ६०), ले० त्रिलोकी नाथ खन्ना, प्र० गिरधारी लाल, थोक पुस्तकालय, दिल्ली, पात्र पु० १८, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ८, ४, २।

इस धार्मिक नाटक में भगवान् राम के गुणों का हृदयग्राही चित्रण है। राम दशरथ के घर अवतार लेकर देवताओं के कष्ट को दूर करते हैं। राजा दशरथ शिकार के समय भूल से श्रवणकुमार को जानवर समझ बाण मार देते हैं, जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। ऋषि शान्तनु (श्रवणकुमार के पिता) दशरथ को शाप देते हैं कि जैसे मैं अपनी अन्तिम अवस्था में पुत्र-वियोग के कारण प्राण त्याग रहा हूँ वैसे तुम भी मरोगे। दशरथ के लिए वह शाप वरदान बन जाता है क्योंकि तब तक उनके कोई सन्तान न थी। कालान्तर में राजा दशरथ के चार पुत्र पैदा होते हैं और शापानुसार पुत्र वियोग में राम वनवास के समय उनकी मृत्यु होती है।

राम की अग्नि परीक्षा (सन् १९४६, पृ० ६०), ले० गिरिजाकुमार माथुर, नवलेखन में प्रकाशित, पात्र पु० ७, स्त्री १, अंक-रहित, दृश्य ३।

इस पद्य नाटक में रामकथा वर्णित है। उदार राजा राम एक मृतक ब्राह्मण-पुत्र को जिलाने का प्रयास करते हैं। उसकी अकाल मृत्यु से चिंतित हैं। वे ब्राह्मण पुत्र के लिए स्वयं अपना जीवन देने को तैयार हो जाते हैं। इसके माध्यम से जनरंजक राम के चरित्र की गरिमा को व्यक्त किया गया है। लखनऊ रेडियो से प्रसारित

रामचरित नाटक (सन् १९४१, पृ० १३८), ले०: श्याम बिहारी मिश्र; प्र०: अवध प्रिंटिंग वर्क्स, लखनऊ पात्र : पु० ४; अंक: ३; दृश्य : ८, ६, ६।
घटना-स्थल : महल, वन, आश्रम।

इस धार्मिक नाटक का आधार रामायण है। इसमें राम को नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस नाटक में युग-परिवर्तन के साथ सीता के चरित्र-चित्रण में पर्याप्त स्वतन्त्रता से काम लिया गया है। सीता को वन भेजने में नारी के सर्वोपरि धर्म-पालन का ही ध्यान रखा गया है।

सीता रावण की राज्य-व्यवस्था का गुरु वसिष्ठ के सम्मुख गुणगान करती है।

"गुरुवर! आर्य पुत्र के लिए यह योग्य ही था कि परीक्षा के पीछे मुझे अंगीकार करते। जैसी प्रचण्ड मूर्खता करके मैंने देवर लक्ष्मण की अनुचित भर्त्सना की थी वैसा ही फल पाकर प्रायः दस मास लंका में कारागार-सा भोगा। इतना मैं फिर भी कहूँगी कि रावण के साम्राज्य में सभ्यता उच्चकोटि की थी।" इस तरह राम और सीता के गुणों का वर्णन इसमें मिलता है।

राम चरित्रोद्दीपन (सन् १९३६, पृ. ८०), ले०: रघुवर दयाल पाण्डे; प्र०: हिन्दी नाट्य पुस्तकालय, रंजीत पुरवा, कानपुर; पात्र: पु० २५, स्त्री ५, अंक: १०; दृश्य: १०, २, १, ११, १, १, २, १, १, ८।
घटना-स्थल : जनकपुरी, धनुषयज्ञ।

इस धार्मिक नाटक का आधार रामचन्द्र द्वारा धनुषयज्ञ में धनुष तोड़ने की कथा है। नाटक गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में एक साथ रचा गया है।

रामदास चरित्रम् (सन् १९८६, पृ० ७४), ले०: नादेल पुरुषोत्तम कवि; प्र०: हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ; पात्र: पु० १५, स्त्री ४; अंक-रहित; दृश्य : ४८।
घटना-स्थल : मछली पट्टणम् और आन्ध्र के अन्य नगर।

इस धार्मिक नाटक में प्रेममय आदर्श चरित्रों का वर्णन है।

गोपन्न जो रामदास के नाम से प्रख्यात हुए, रामभक्त कंचन लिंगन्न तथा कामांबा के पुत्र हैं। उन पर बचपन से ही रामभक्ति का प्रभाव पड़ता है। माता-पिता की मृत्यु के बाद गोपन्न कबीर दास से रामनाम की दीक्षा ग्रहण करते हैं। उनका विवाह कमला से होता है। वे अपने मामा अक्कन और मादन्न की सहायता से भद्राचलम् के तहसीलदार नियुक्त होते हैं। गोपन्न अपने साधु-स्वभाव के कारण राज्यकर पूरा-पूरा वसूल कर बादशाह की प्रशंसा प्राप्त करते हैं।

भद्राचलम पर स्थित राममन्दिर जीर्णावस्था में था। उस वर्ष प्राप्त राज्यकर के छह लाख रुपये से गोपन्न उस मन्दिर का पुनर्निमाण करवाते हैं। बड़े ठाठ-बाट से श्री रामचन्द्र जी का कल्याणोत्सव मनाकर अपने जीवन को सार्थक मानते हैं।

बादशाह उन्हें बंदी बनाकर और रकम वसूल होने तक तरह-तरह की यातनाएं देने का आदेश देते हैं। यातनाएं सहने में असमर्थ गोपन्न भगवान् से विनय करते, डाँट सुनाते, उपालम्भ देते हुए १४ वर्ष व्यतीत करते हैं। सब तरह से हारकर वह सीता मैया से निवेदन करते हैं।

माता सीता के स्मरण दिलाने पर राम और लक्ष्मण रातोंरात तानाशाह के पास पहुँच छह लाख मुद्राएँ देकर रसीद प्राप्त करते हैं और उस रसीद को रामदास को देकर चले जाते हैं। इस कृत्य को देखकर बादशाह की आँखें खुल जाती हैं और वह गोपन्न को मुक्त कर छह लाख मुद्राएं भी वापस दे देते हैं। गोपन्न रामदास बनकर भद्राचलम पहुँच शेष जीवन रामचन्द्र जी की सेवा में व्यतीत करते हैं।

राम-भारद्वाज मिलन अभिनय (सन् १९१०, पृ० ८०), ले० : सुधाकर द्विवेदी; प्र० : अज्ञात, पात्र : पु० ४, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : २।
घटना-स्थल : जंगल, भारद्वाज-आश्रम।

इस नाटक में राम वनवास की प्रमुख

घटना राम-भारद्वाज ऋषि के मिलन के रूप मे प्रदर्शित की गई है। राम के साथ सीता भी वन मे नाना प्रकार के कष्ट सह रही है। कुश, डाभ और नाना प्रकार के कटको से पैर विध जाते है किन्तु पति के साथ सीता को तनिक भी कष्ट की अनुभूति नही होती।

राम भारद्वाज ऋषि से मिलकर बहुत प्रसन्न होते हैं और दोनो मे अध्यात्म विषयक चर्चा होती है। तुलसीकृत रामायण के आधार पर इस नाटक की रचना हुई है।

राम-राज्य (सन् १९४०, पृ० ६६), ले० श्रीमृत, प्र० नरबदा बुक डिपो, जबलपुर, पात्र पु० १५, स्त्री २, अक ४, दृश्य ४, ५, ८, ३।
घटना-स्थल राजमहल, गगातट, आश्रम, वन, यज्ञ-शाला।

इस धार्मिक नाटक मे भगवान् रामचन्द्र के उत्तरचरित का वर्णन है। एक धोबी के लाछन लगाने पर राम बडी कठोरता एव निर्ममता से सीता का निर्वासित कर देते हैं। शोक विह्वल लक्ष्मण परित्यक्ता सीता को वन म छोड आते है। दुख-कातर सीता अपमान से व्यथित होकर गगा म कूदना चाहती है किन्तु ऋषि वाल्मीकि उनकी रक्षा कर अपने आश्रम मे लाते हैं। आश्रम मे ही सीता जी के लव-कुश नामक दो तेजस्वी पुत्र उत्पन्न होते हैं। निर-पराधिनी सीता को दण्ड देने के कारण अयोध्या मे अकाल पड जाता है। राम प्रजा के दुख को दूर करने के लिए अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय करते हैं। सीता जी की स्वर्णमयी प्रतिमा का निर्माण कर यज्ञ आरम्भ होता है। लव-कुश नगरवासियो तथा रामचन्द्र जी के सम्मुख वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण का गान करते हैं। सारी प्रजा उनके कठ पर मन्त्र मुग्ध हो जाती है।

दुर्मुख के सेनापतित्व मे यज्ञ का घोडा विश्व-विजय के लिए छोडा जाता है। वन-प्रान्त मे लव-कुश राम का अन्याय मिटाने के लिए घोडे को पकडते है। लक्ष्मण दो छोटे-छोटे ऋषि कुमारो की धृष्टता का दण्ड देने के लिए विभीषण, अगद और हनुमान तथा भारी सेना के साथ जाकर लव-कुश से युद्ध करते हैं लेकिन युद्ध मे लक्ष्मण आदि को पराजय का मुख देखना पडता है। अन्त मे राम स्वय प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए बालको से लडने चल पडते हैं। लव-कुश भी राम से जा भिडते हैं। सीता पिता पुत्र के मध्य युद्ध को न देख सकी तो दौडकर अपने बेटो को युद्ध करने से रोकती है और उन्ह बताती है कि भगवान् राम ही तुम्हारे पिता है। भगवान् राम के दर्शन करके सीता जी धरती मे समा जाती हैं। लव कुश को लेकर भगवान् राम अयोध्या लौट आते हैं।

राम-राज्य (सन् १९३६, पृ० ७५), ले० ए० एल० कपूर, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० १८, स्त्री ४, अक ३, दृश्य १२, १२, १३।
घटना-स्थल राजदरबार, गगातट, आश्रम, वन।

इस धार्मिक नाटक म राम द्वारा सीता-त्याग की कथा चित्रित है। एक ब्राह्मण राम के दरबार म आकर अपने बच्चे की अकाल मृत्यु का दोष उन पर लगाता है। मृत्यु-कारण का पता लगने पर ज्ञात होता है कि एक शूद्र तपस्या कर रहा है जिससे ब्राह्मण-पुत्र की मृत्यु हुई। राम उस शूद्र का वध करते हैं। बिना आज्ञा लिये मैके चले जाने के कारण धोबिन को धोबी मारता है और उसे घर से निकालते हुए कहता है कि 'तूने मुझे राम समझ लिया है जो सीता को रावण के यहा रहने पर भी अपने घर पर रखे हुए हैं।' कर्त्तव्य-परायण गुप्तचर दुख-भरे हृदय से यह समाचार राम को सुनाता है।

भगवान् राम की आज्ञा से लक्ष्मण सीता को वन मे छोड आते हैं। असहाय सीता दुख-शोक से व्याकुल होकर गगा मे डूबना चाहती है किन्तु वाल्मीकि उनकी रक्षा कर अपने आश्रम मे ले आते है। वही पर सीता के लव कुश नामक दो पुत्र पैदा होते हैं। राम प्रजा का दुख दूर करने के लिए अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करते हैं। यज्ञ किया घोडा शत्रुघ्न के सेना

पवित्र से छोड़ा जाता है। लव-कुश घोड़े को पकड़ कर युद्ध में शत्रुघ्न को मूच्छित करते हैं। युद्ध में लक्ष्मण, जामवन्त आदि योद्धा भी मूर्छित हो जाते हैं। हनुमान को पकड़ कर कुश आश्रम में ले जाते हैं। सीता माता को देखते ही हनुमान उनके चरण स्पर्श करते हैं। अन्त में स्वयं राम मुनि बालकों से युद्ध करने जाते हैं। सीता और वाल्मीकि जब लव-कुश को बताते हैं कि भगवान् राम ही तुम्हारे पिता हैं तो दोनों बालक राम को प्रणाम करते हैं। वाल्मीकि गंगाजल छिड़क कर लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न तथा सेना को जीवित कर देते हैं। लक्ष्मण, सीता जी को लेकर यज्ञमण्डप में पहुँचते हैं। धोबी अपने पाप के लिए सीता जी से क्षमा मांगता है। प्रजा की अनुमति से राम सीता को पुनः स्वीकार करते हैं।

राम-राज्य (वि० २०२४, पृ० ८६), ले० : सिद्धनाथ सिंह; प्र० : भारती ग्रंथागार, वाराणसी; पात्र : पु० १६, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ५, ४, ४।
घटना-स्थल : अवध का राजदरबार।

इस धार्मिक नाटक में तत्कालीन समाज की अच्छाइयों का दिग्दर्शन कराया गया है। इसमें राम-राज्य का वर्णन किया गया है। नाटक का उद्देश्य वर्तमान समय की बुराइयों से सबको सावधान करना है।

रामलीला नाटक (सन् १९३१, पृ० ११२), ले० : शिवराम दास गुप्ता; प्र० : ठाकुर प्रसाद ऐण्ड संस, बुकसेलर, वाराणसी; पात्र : पु० ३२, स्त्री १३ ; अंक : ४; दृश्य : ३, ६, २, ७।
घटना-स्थल : अयोध्या, जंगल, लंका।

यह एक धार्मिक नाटक है। इसमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम की महिमा का वर्णन है। भगवान् राम सीता-स्वयंवर में शिव-धनुष तोड़कर सीता को ब्याह लाते हैं। राजा दशरथ राम को राजा बनाना चाहते हैं किन्तु कैकेयी के कहने पर भगवान् राम अपने भाई लक्ष्मण तथा सीताजी के साथ चौदह वर्ष के लिए वन में चले जाते हैं। पुत्र-शोक में राजा दशरथ अपना प्राण त्याग देते हैं। उधर रावण की बहन शूर्पणखा सुन्दरी का रूप बनाकर रामचन्द्र से शादी करना चाहती है। लक्ष्मण क्रोध में आकर शूर्पणखा का नाक-कान काट लेते हैं। अपनी बहन को कुरूप देखकर व्यभिचारी रावण सीता को हरकर ले जाता है। उधर राम-लक्ष्मण-सीता को खोजते-खोजते किष्किन्धा पर्वत पर जाते हैं जहाँ उनकी मित्रता सुग्रीव से होती है। सुग्रीव अनेक बंदरों और विशेषकर हनुमान जी को सीता का पता लगाने के लिए भेजता है। हनुमान लंका में जाकर सीता का पता लगाते हैं तथा विवश हो लंका जला देते हैं और पुनः रामदल में आकर सीता का पता बताते हैं। इधर से राम भालू और बन्दरों के साथ लंका पर चढ़ाई कर देते हैं। राम-रावण में घमासान युद्ध होता है। रावण के बड़े-बड़े योद्धा कुम्भकरण, खरदूषण, मेघनाद आदि रण में मारे जाते हैं। अन्त में भगवान् राम रावण को भी मारकर लंका का राज्य विभीषण को दे देते हैं और सीता को अपने साथ ले जाकर उनकी अग्नि-परीक्षा करते हैं। सीता अग्नि-परीक्षा में खरी उतरती हैं। अन्त में राम-लक्ष्मण और सीता अयोध्या वापस आ जाते हैं।

रामलीला अयोध्याकाण्ड (सन् १८८३, पृ० २००), ले० : दामोदर शास्त्री सप्रे; प्र० : खड्गविलास प्रेस, पटना; पात्र : पु० १०, स्त्री ७; अंक : ५।
घटना-स्थल : अयोध्या का राजमहल, कोप-भवन, वन मार्ग।

रामचरितमानस पर आधारित अयोध्या-कांड से इसका कथानक लिया गया है। इसमें रामवनवास से चरण-पादुका-पूजन तक का प्रसंग है।

रामलीला बालकाण्ड नाटक (सन् १८८२, पृ० ५१), ले० : दामोदर शास्त्री सप्रे ; प्र० : खड्गविलास प्रेस, बांकीपुर, पटना ; पात्र : पु० १०, स्त्री ७; ८ गर्भांकों में विभाजित है।

घटना-स्थल अयोध्या, जंगल, धनुष-यज्ञ, दरबार।

इस धार्मिक नाटक की कथा रामायण पर आधारित है। इसमें बालकाण्ड का वर्णन है। राजा दशरथ के यहाँ चारों पुत्र, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जन्म लेते हैं। बाल-क्रीडा, राक्षसों से यज्ञों की रक्षा हेतु विश्वामित्र का राम लक्ष्मण को मांगना, धनुष यज्ञ, राम सहित चारों भाइयों के विवाह आदि की कथा वर्णित है।

रामलीला सुन्दरकाण्ड (सन् १८८६, पृ० ८८), ले० दामोदर शास्त्री सप्रे, प्र० खड्गविलास प्रेस, बांकीपुर, पटना, पात्र पु० ५, स्त्री १, अंक दृश्य-रहित।
घटना-स्थल स्थानों के अनुसार विभाजन है। जगल, समुद्र, लंका, अशोक वाटिका।

इस धार्मिक नाटक में सुन्दरकांड की कथा निहित है। रावण सीता का हरण कर उन्हें लंका में ले जाता है। भगवान् राम सीता का पता लगाने के लिए पहले हनुमान को भेजते हैं फिर अंगद भी लंका जाते हैं। वहाँ निशाचरों से युद्ध करते हैं और हनुमान लंका को जला देते हैं। फिर लौटकर रामचन्द्र से सारा हाल वह सुनाते हैं।

रामलीला (सन् १९५४, पृ० १२१), ले० मा० मी० एल० राणा, प्र० अग्रवाल बुक डिपो, श्रीकृष्ण पुस्तकालय, खारी बावली, दिल्ली, पात्र पु० १७, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ७, ६, ६।
घटना-स्थल स्वयंवर, जंगल, धनुष यज्ञ, वन-मार्ग, लंका।

यह धार्मिक नाटक रामलीला के लिए बनाया गया है। इसकी कथावस्तु तुलसी के रामचरितमानस पर आधारित है। इसमें नारद मोह, ताड़का वध, धनुष यज्ञ, राम बनवास, सीता-हरण, राम-सुग्रीव मैत्री, लंका-दहन और राम विजय की घटनाओं को प्रमुखता मिली है। राम वापस आते हैं और कैकेयी उन्हें सिंहासन सम्हालने का आदेश देती है।

यह नाट्य-मंडलियों द्वारा खेला जा चुका है।

रामलीला नाटक (वि० १९७१, पृ० ८८), ले० मुंशी तोलाराम प्रेमी, प्र० सनातन धर्म मन्त्रालय, मुरादाबाद, पात्र पु० ७, स्त्री ३, अंक ४, दृश्य ५, ८, ८, १२।
घटना-स्थल जंगल का रास्ता, देवी-मंदिर फुलवारी, धनुषयज्ञ, दरबार, राजा दशरथ का राजमहल, ऋष्यमूक पर्वत, पंपापुर ग्राम।

इस धार्मिक नाटक में रामायण के सातों काण्ड की कथा को नाटकीय शैली में राग-रागिनियों में मंडित किया गया है। मंगला-चरण के उपरान्त राजदरबार में राजा दशरथ का आगमन होता है। अप्सराओं का नृत्य होता है और द्वारपाल से विश्वामित्र के आगमन की सूचना पाकर राजा दशरथ उनका अभिनंदन करते हैं। इसके उपरान्त रामकथा संवादों तथा वार्तालापों के माध्यम से प्रदर्शित की जाती है।

राम-विवाह से राम के लंका प्रत्यावर्तन और सिंहासनारोहण तक की कथा का इसमें वर्णन है। रामलीला-मंडलियों को दृष्टि में रखकर आधुनिक शैली में यह नाटक लिखा गया है। नाटक के अन्त में हनुमान जी को मोतियों की एक माला सीता जी देती हैं। हनुमान जी उसके मोतियों को तोड़कर चबाते हैं और फिर निकालकर बाहर देखते हैं। जब लोग हनुमान जी पर हँसते हैं तब हनुमान जी कहते हैं —
"रामनाम ही सार है, मिथ्या है सब बात,
जिस वस्तु में यह नहीं, वह वस्तु नहीं है तात।"

तदुपरान्त हनुमान जी अपनी छाती फाड़कर लोगों को रामनाम का दर्शन कराते हैं। वहाँ रामनाम देखकर सब लोग आश्चर्य-चकित हो जाते हैं और रामचंद्र जी उन्हें गले लगा लेते हैं।

रामलीला नाटक (वि० १९६६, पृ० ५७) ले० भाई दयालु शर्मा, प्र० लक्ष्मी

नारायण प्रेस; पात्र : पु० २६, स्त्री १६; अंक-दृश्य के स्थान पर ६२ गीतों में विभाजित ।
घटना-स्थल : राजमहल, जंगल, गंगातट, फुलवारी, धनुषयज्ञ, दरबार ।

राम की सम्पूर्ण कथा को प्रसंगों में विभाजित किया गया है। रामजन्म, धनुष-यज्ञ, रामवनवास, केवट प्रसंग, भरत-मिलाप, शूर्पणखा-प्रसंग, शबरी प्रसंग, सीताहरण, अशोक वाटिका में हनुमान, लक्ष्मणशक्ति, राम-विलाप, रावण-अहिरावण वध, राम का अयोध्या प्रत्यागमन प्रसंग विभिन्न राग-रागिनियों में पारसी थियेटर की दृष्टि से रख-कर लिखे गये हैं। लावनी, ठुमरी, पंजाबी ठेका, सोहनी, कव्वाली, मल्हार आदि तर्जों पर सीधी-सादी भाषा में गीतों का सर्जन किया गया है। इसे गीति-नाट्य भी कहते हैं।

रामलीला नाटक (सन् १६१६ के आसपास)
ले० : विनायक प्रसाद 'तालिब'; प्र०: खुरशेद जी, मेहरवान जी मंडली द्वारा दी. ज. न. पेटिट पारसी आरफनेज कप्टन प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई; पात्र : पु० ८, स्त्री ६; अंक : ४।
घटना-स्थल : जनकपुर, अयोध्या, चित्रकूट, पंचवटी, लंका।

यह धार्मिक नाटक तुलसीकृत 'रामायण' के आधार पर किया गया है। नाटक में सीता-स्वयंवर से रावण-वध तक की समस्त घटनाओं को समेटने का प्रयास किया गया है। रावण-वध के बाद राम-सीता का मिलन दिखाया गया है। १४ वर्ष की अवधि पूरी होने के कारण राम अयोध्या लौटने की तैयारी करते हैं।

अभिनय खुरशेद जी मेहरवान मंडली द्वारा अभिनीत।

रामलीला नाटक (सन् १६४६, पृ० ४७६),
ले० : विश्वेश्वर दयाल गुप्त 'कुशल'; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : १२, दृश्य : १०, ८, १३, ६, ५, १४, १३, १६, १८, १३, १८, १८।
घटना-स्थल : अयोध्या, कैलाश पर्वत, पंचवटी तथा लंका।

यह नाटक रामलीला शैली में रामचरितमानस के आधार पर सम्पूर्ण रामचरित को १२ अंकों में प्रस्तुत करता है। नाटक का उद्देश्य धार्मिक प्रचार है। नाटक में राम-जन्म की पृष्ठभूमि मनु-शतरूपा की तपस्या से प्रारम्भ होती है। इसमें रामजन्म, नारदमोह, ताड़का-वध, अहिल्या उद्धार, सीता-स्वयंवर, रामविवाह तथा वनगमन, राम का राक्षसों से जनता की रक्षा की प्रतिज्ञा, सीता-हरण, राम-सुग्रीव मैत्री, हनुमान का लंका दहन, रावण-वध तथा विभीषण को लंका सौंपने तक की घटनाओं का समावेश है।

रामलीला नाटक (सन् १६६३, पृ० ७२),
ले० : जी० एस० मथुर; प्र० : गिरधारी लाल धोरा पुस्तकालय, ४५६ खारी बावली, देहली; पात्र : पु० १४, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : १२, ८, ६।
घटना-स्थल : अयोध्या, कैलाश पर्वत, जंगलमार्ग, गंगातट।

इस धार्मिक नाटक का आधार तुलसी का रामचरितमानस है। प्रारम्भ में शिव-पार्वती संवाद है तथा त्रिलोक में अत्याचार के कारण त्राहि-त्राहि मची है। इसी हेतु रामावतार होता है। रामकथा को नाटकीय रूप में वर्णित किया गया है।

नाटक को पूर्णतया अभिनेय बनाया गया है। रामकथा के साथ ही अहिल्याआदि की प्रासंगिक कथाएँ वर्णित हैं।

रामलीला प्रभाकार नाटक (बालकाण्ड) (सन् १६१६, पृ० १०४) ले० : रूपनारायण सिंह शर्मा; प्र० : खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई-१; पात्र : पु० ७, स्त्री ६; अंक के स्थान पर प्रभा ५४।
घटना-स्थल : मायापुर, अयोध्या, सरजूतट।

इस धार्मिक नाटक में नारद मोह से लेकर राम विवाह तक की कथा रामलीला की दृष्टि से लिखी गई है। प्रथम सभा में नारद मायापुर के भूप शिवविरंचि की कन्या पर आसक्त है। विष्णु से विवाह के लिए सहायता मांगते हैं। द्वितीय प्रभा में कालकेतु और भानुप्रताप की कथा है।

इसी प्रकार बालकाण्ड की कथा को विभिन्न छन्दों में आबद्ध किया गया है। यहाँ तक कि गजल, चैता आदि छन्दों का भी प्रयोग मिलता है।

रामलीला विजय नाटक (वि० १९५४)
ले० बलदेव जी अग्रहार, प्र० विचार सभा, इटावा, पात्र पु० ८, स्त्री नहीं, अंक ७।
घटना-स्थल रामलीला क्षेत्र।

इस धार्मिक नाटक में हिन्दू-मुस्लिम झगड़े तथा उनके साम्प्रदायिक दंगों का वर्णन है।

सुपरिटेंडेंट बुकर साहब विचार-सभा के मंत्री पर दबाव डालकर रामलीला का विमान उठाने की आज्ञा देते हैं। उधर मौलवी, अधिकारियों से बात कर हाई स्कूल के उत्तर मैदान पर दखल जमाने के लिए मुसलमानों को इकट्ठा करता है। हिन्दुओं की गिरफ्तारी होती है। रामलीला-सम्बन्धी इस झगड़े का मुकदमा कमिश्नर के न्यायालय में विचारार्थ पेश होता है। इसी बीच होड़े साहब हिन्दू मुसलमान को एक दूसरे के धार्मिक कार्यों में बाधा न डालने तथा रामलीला और मुहर्रम का जुलूस भिन्न-भिन्न निर्धारित समय पर निकालने की आज्ञा देते हैं। परन्तु इसके बावजूद मुसलमान जमा होकर गदर की स्थिति पैदा करते हैं। होड़े की आज्ञा से सुपरिटेंडेंट पुलिस उनकी घेरेबन्दी आरम्भ करते हैं। इधर रामलीला के बालकों की रक्षा हेतु हिन्दू भी तैयार होते हैं। होड़े साहब गोरों की फौज बुलाते हैं। वे मुसलमानों को हटाकर रामलीला-रथ ले जाने के लिए फौज को रास्ता साफ करने का आदेश देते हैं। हठ करने पर लोग मारे-पीटे जाते हैं, कुछ पकड़े जाते हैं और शेष भाग खड़े होते हैं। इधर रामलीला की समाप्ति पर हिन्दू, वकील रामचन्द्र की आरती उतारता है। इस घटना से हिन्दू प्रसन्न होते हैं। अब प्रत्येक दिन पुलिस के संरक्षण में रथ उठता है, परन्तु अंतिम दिन से पूर्व शहर में बलवा हो जाता है, जो वीर पुलिस की तत्परता से दबा दिया जाता है। साहबों की देखरेख में भरत मिलाप के रथ उठते हैं और लीला सफलतापूर्वक समाप्त होती है। राजगद्दी के दिन आरती के पश्चात् विचार-सभा के कार्यकर्त्ता बलदेव प्रसाद-वैद्य का व्याख्यान होता है, जिसमें वे साहबों के इन्साफ की प्रशंसा और मुसलमानों की हठधर्मिता की निंदा करते हैं।

राम वन यात्रा नाटक (सन १९१०, पृ०९९)
ले० गिरिवर धर वकील, प्र० राजनीति प्रेस, पटना, पात्र पु० १० स्त्री ४, अंक ७, दृश्य ३, ३, ५, ३, ३, ८, २।
घटना-स्थल राजमहल, रानी कैकेयी का कोपभवन, जंगल मार्ग, तमसा नदी का तट।

इस पद्यबद्ध नाटक में देवताओं की दुर्दशा तथा रावण के अत्याचार से चिंतित इन्द्र राम को वन भेजने का उपाय निकालते हैं। वह सरस्वती को बुलाकर अपना उद्देश्य बताते हैं। पहले तो वह आपत्ति प्रकट करती है फिर जग के दुख को दूर करने और देवमार्ग को नष्ट होने से बचाने के लिए मन्थरा की जिह्वा पर जा विराजती है।

इधर राम के राजतिलकोत्सव की तैयारी में व्यस्त पुरवासी मंथरा के पूछने पर उसे वस्तुस्थिति से अवगत कराते हैं। वह राजनीति से अनभिज्ञ होने के कारण राम को इसके अयोग्य बताती है। वह राम के राज्याभिषेक की सूचना से उत्पन्न अपना दुख कैकेयी से प्रकट करती है। मंथरा के समझाने से उसकी भी मति फिर जाती है और कुवेश बनाकर कोपभवन में जाती है। सूचना पाकर राजा दशरथ घबड़ाये हुए वहाँ आते हैं और आश्वासन देकर उसे मनाते हैं। अनेक व्यंग्य-बाणों के पश्चात् वह सुर-असुर संग्राम में राजा द्वारा दिये वचनों के अनुसार दो वर का प्रस्ताव करती है। वे

राम की शपथ खाकर प्रतिज्ञा पूर्ण करने को तैयार हो जाते हैं। वह मांगती है—"शिर बाँधि जटा कटि छाल मृगा तनछार लगा करि तापस साजू। बन रामहिं चौदह वर्ष रखो मम पूत बुलाई करौ युवराजू॥" राजा शोकग्रस्त हो विलाप करते हैं।

प्रातःकाल बंदीजनों के गान पर भी सोकर न उठने के कारण सुमंत वहाँ जाकर भूमि पर पड़े राजा की दुर्दशा देखते हैं और क्षमा मांगते हुए कैकेयी से इसका कारण पूछते हैं। कैकेयी राम को बुला लाने का आदेश देती है। राम प्रणामपूर्वक कैकेयी से दुर्दशा का कारण पूछते हैं और प्रतिज्ञा आदि का विवरण जानने पर भाई को राज्य देकर सहर्ष बन जाने को तैयार हो जाते हैं। यह घटना नगर में चारों ओर फैल जाती है। दशरथ सुमंत को यह आदेश देकर उनके साथ बन भेजते हैं कि उन्हें चार दिन बन दिखाकर हठपूर्वक लौटा लाना। राम, सीता-लक्ष्मण के साथ बन की ओर प्रस्थान करते हैं।

अयोध्या से चलकर और सुमंत से अनेक विषयों की चर्चा करते हुए चारों व्यक्ति तमसा के तट पर पहली रात व्यतीत करते हैं और राम, सीता-लक्ष्मण को जगाकर चुपके से रात में ही घोर बन की ओर चल देते हैं।

प्रातःकाल सुमन्त रोते हुए शोकातुर अवध की ओर लौटते हैं।

इधर दशरथ कौशल्या-भवन में पुत्र-शोक में व्याकुल पूर्व शाप का स्मरण करते हैं। इसी बीच सुमन्त पहुंचकर राम के वनगमन की सूचना देते हैं, जिससे राम-राम कहते दशरथ शरीर त्याग देते हैं। कौशल्या विलाप करती है।

राम विजय नाटक (सन् १९६७, पृ० १२८), ले०: शंकर देव; प्र० : हिन्दी विद्यापीठ, आगरा; पात्र: पु० १२, स्त्री ४; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : अयोध्या, बन, मिथिलापुर।

प्रारम्भ में नाट्यकार राम और सीता के सौन्दर्य का विस्तार के साथ वर्णन करता है। राम के सौन्दर्य को सुनकर सीता मोहित होती है और सखियों से अपने पूर्व जन्म की तपस्या तथा नारायण को अपने स्वामी के रूप में प्राप्त करने की इच्छा प्रकट करती है। भगवान् की प्राप्ति न होने से वह बहुत दुखी होती है। राक्षसों से परेशान होकर एक दिन विश्वामित्र अपने यज्ञ की रक्षा-हेतु राम-लक्ष्मण को माँगने के लिए राजा दशरथ के पास जाते हैं। राजा दशरथ राम-लक्ष्मण को अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देना चाहते। जब विश्वामित्र उनसे राम की ईश्वरीय शक्ति का वर्णन करते हैं तथा उन्हें हरि का अंश अवतार बताते हैं तब दशरथ आश्वस्त होकर राम-लक्ष्मण को जाने की अनुमति देते हैं। मार्ग में राम अपने बाण-संधान से ताड़का राक्षसी का वध करते हैं। एक दिन विश्वामित्र दोनों भाइयों को सीता स्वयंवर दिखाने ले जाते हैं। मार्ग में विश्वामित्र सीता के सौन्दर्य तथा जनक की प्रतिज्ञा का समाचार सुनाते हैं। सीता के सौन्दर्य को सुनकर राम के मन में विवाह की इच्छा उत्पन्न होती है। विश्वामित्र दोनों भाइयों को लेकर मिथिलापुर पहुंचते हैं। वहां राम के रूप को देखकर जनक मोहित हो जाते हैं। विश्वामित्र जनक से दोनों भाइयों का परिचय कराते हैं। जनक जी उनका आलिंगन करते हैं। जनक की आज्ञा से सेविकाएँ राजसमाज एकत्रित करते हैं और जनक शंकर का धनुष अपने कन्धे पर रखकर सीता को वस्त्र-अलंकार से सुसज्जित कर सभा में आते हैं और सभी राजाओं से शिव-धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने पर सीता का विवाह होने का आदेश सुनाते हैं। सीता की सुन्दरता को देखकर सभी राजा काम-पीड़ित होते हैं। शतधनु, चन्द्रकेतु आदि सभी राजा बारी-बारी से प्रत्यंचा चढ़ाने की कोशिश करते हैं, लेकिन नहीं चढ़ा पाते। अन्त में मुनि विश्वामित्र की आज्ञा से राम धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर उसे भंग करते हैं। सभी राजा क्रोधित होकर राम से युद्ध करते हैं। राम की विजय होती है। दशरथ के आने पर राम-सीता का विवाह होता है।

अब राजा दशरथ राम, सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या वापस आते हैं। रास्ते में अपने गुरु के धनुष के टूटने की

आवाज सुनकर परशुराम क्रोधित होकर दशरथ तथा विश्वामित्र सहित राम-लक्ष्मण को कटु वचन कहते हैं, जिससे राजा दशरथ, विश्वामित्र बहुत डर जाते हैं। लक्ष्मण जी भी बहुत क्रुद्ध होते हैं। लक्ष्मण को शान्त करके रामचन्द्र जी स्वयं अपने धनुष की प्रत्यंचा चढाते हैं। श्री राम के धनुष की टकार सुनकर परशुराम विस्मित हो आगे झुककर प्रार्थना करते हैं तथा अपने अपराध के लिए क्षमा और प्राणदान मागते हैं।

अभिनय-कुचबिहार के राजा और दीवा के आग्रह पर अभिनय के लिए लिखा गया और अनेक बार अभिनीत।

रामविनोद नाटक (वि० १९७१, पृ० १६८), ले० जयगोविन्द शर्मा, प्र० खेमराज श्री कृष्णदास, बम्बई, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अक १०, दृश्य कुल ३०।
घटना स्थल तपोवन।

इस पौराणिक नाटक मे, दोहा, चौपाई, सोरठा, सवैया, घनाक्षरी, भुजगप्रयात आदि अनेक छन्दो, पदो व सस्कृत श्लोको द्वारा भगवान् श्रीरामचन्द्र के जन्म से लेकर विवाह पर्यन्त तक की कथा का चित्रण किया गया है।

राम-हनुमान युद्ध 'नाटक' (सन् १९०६, पृ० ८६) ले० दन्नोली, प्र० देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली, पात्र पु० ७, स्त्री ३, अक-रहित, दृश्य १३।
घटना स्थल राजमहल, जगल, तपोवन।

इस धार्मिक नाटक में भक्ति की विजय दिखाई गई है।

राम के भाई लक्ष्मण, भरत, और शत्रुघ्न हनुमान की असीम प्रभु भक्ति से असतुष्ट होकर निश्चय करते हैं कि वे सीता की आराधना मे सभी अपनी सेवा का भाग राम से मागे। उन्हें हनुमान द्वारा राम की समस्त सेवा अच्छी नही लगती है।

उधर हनुमान जी सीता माँ से मिले हुए अमरता के वरदान से इसलिए सतुष्ट नही हैं कि जब राम त्रेता के अन्त पर द्वापर मे चले जायेंगे तो हनुमान को वियोग का दुख सहना पडेगा। उसी समय वह सीता को सिन्दूर लगाते देख उसका लाभ पूछते हैं। सीताजी उन्हे बताती है कि इससे प्रभु राम बडे प्रसन्न होते हैं तो वह सिन्दूर अपने समस्त शरीर मे लपेट कर राम के पास जाते हैं। राम प्रजा-हित के लिए सभा करते हैं। यहा नारद एक क्षत्रिय राजा को विश्वामित्र से प्रणाम न करने की सलाह देते है। राजा के प्रणाम न करने पर विश्वामित्र अपना अपमान समझ उसे मृत्यु दण्ड देते हैं।

राजा नारद से प्राण बचाने की प्रार्थना करता है। वह उसे हनुमान की मा अजनी के पास भेज देते हैं और अजनी हनुमान की शक्ति से राजा की रक्षा का वचन दे देती है। अजनी हनुमान से भी उसकी रक्षा का वचन ले लेती है। हनुमान को जब पता चलता है कि वह राजा अन्य कोई नही उसके पूज्य राम है तब वह बहुत घबराता है और नारद से मिलकर उपाय करता है। हनुमान जी राजा को भक्ति की शिक्षा दे राम-राम, सियाराम के हनुमान के जाप से उसे बचा लेते हैं। वसिष्ठ के आग्रह पर विश्वामित्र ससार की रक्षा तथा राम की मर्यादा की रक्षा के लिए अपनी आज्ञा वापस ले लेते हैं।

रामानन्द नाटक (वि० १९९२, पृ० ६४), ले० अवध किशोर दास 'श्री वैष्णव', प्र० श्री रामानन्द ग्रन्थमाला कार्यालय, अयोध्या, पात्र पु० ७, स्त्री ३, अक ३, दृश्य २०।
घटना-स्थल काशी मे रामानन्द का आश्रम।

इस जीवनीपरक नाटक मे स्वामी रामानन्द के गुणो का चित्रित किया गया है। समाज मे बढते हुए अन्याय और अत्याचार को देखकर भगवान् स्वामी रामानन्द के रूप मे अवतार ग्रहण करते है। वे बडे होने पर अपने अनेक सखाओ के साथ समाज-सुधार के लिए निकल पडते है और काशी मे आसन

जमाते हैं। उनके चमत्कारी रूप से प्रभावित होकर सभी उनकी ओर आकृष्ट होते हैं। उनका प्रभाव देखकर मुस्लिम प्रचारक तथा जैन एवं तांत्रिक साधना के मतावलम्बी उन से जलने लगते हैं और उन्हें हानि पहुँचाने के लिए उनके आश्रम में आते हैं। यहाँ रामानन्द के चमत्कारी कार्यों से वे न केवल प्रभावित होते हैं अपितु पराजय स्वीकार कर उनके समक्ष आत्मसमर्पण कर देते हैं। अंत में स्वामी रामानन्द अपने संप्रदाय का प्रचार करते हुए समाधिस्थ हो जाते हैं।

रामानुज (सन् १९५२, पृ० १५६), ले० : राघेय राघव; प्र० : किताब महल, इलाहाबाद; पात्र : पु० १६, स्त्री ५; अंक : ६; दृश्य : ६, ३, ४, ७, २, ६.।
घटना-स्थल : रामानुज का आश्रम।

यह नाटक स्वामी रामानुजाचार्य के जीवन-चरित्र को चित्रित करता है। रामानुज चमारों की समाज में पूर्ण अधिकार देते हैं। नाटक के प्रारम्भ में ही अपने गुरु की पक्षपातपूर्ण नीति के विरुद्ध दिखाई पड़ते हैं। गुरु यादवप्रकाश उनके यश की ध्वजा को लहलहाते नहीं देखना चाहते। दक्षिण में मुसलमानों एवं ईसाइयों का प्रबल आतंक छाया है। मुसलमान लूट-पाट में लगे हैं और ईसाई धर्म-परिवर्तन कराने में। रामानुज इन दोनों का विरोध कर सबको समान देखने का अवसर देते हैं। ब्राह्मणवाद की कट्टरता से उन्हें चिढ़ होती है। वे बौद्धों के दुःखवाद के स्थान पर आनन्दवाद की स्थापना करते हैं। राजलक्ष्मी इसी प्रकार के विचारों से प्रभावित है। पहले वह प्रेम करती है, जब उसे प्रेम में निराशा होती है तब वह दुखी होती है किन्तु रामानुज के प्रभाव से उसे यथार्थ का ज्ञान होता है और वह उनकी अनुगामिनी बनकर जय-जयकार करने लगती है।

रामाभिषेक नाटक (सन् १९१०, पृ० ११८), ले० : गंगा प्रसाद गुप्त; प्र० : हिन्दी साहित्य प्रकाशक, बनारस सिटी; पात्र : पु० ५, स्त्री ८; अंक : ५; दृश्य : ६, ३, २, २, ६।
घटना-स्थल : अयोध्या का राजपथ।

गद्य-पद्यात्मक इस धार्मिक नाटक में राम के राज्याभिषेक की तैयारी से लेकर राम-वनवास तक की कथा का वर्णन है। राजा दशरथ से कैकेयी वर प्राप्त करती है, और षड्यंत्र रचकर राम को वनवास दिलाती है।

दशरथ की मृत्यु और राम वन-गमन का प्रसंग बड़ा ही रोचक बन पड़ा है। दुःख के साम्राज्य में भी शांति का पूर्ण प्रभाव है। नाटक में राम के राजा रूप का प्रभाव दिखाया गया है।

रामायण (सन् १९१५, पृ० २३६), ले० : प० नारायण प्रसाद 'बेताब'; प्र० : बेताब पुस्तकालय, दिल्ली; पात्र : पु० ११, स्त्री ४; अंक ३; दृश्य के स्थान पर प्रवेश ६, १२, ७।
घटना-स्थल : अयोध्या का राजमहल, जनकपुरी, वनमार्ग, लंका।

यह धार्मिक नाटक है। इस की कथा वाल्मीकि रामायण और तुलसीदास के मानस से ली गई है। प्रारंभ में रावण को शंकर से चन्द्रहास तलवार मिलती है। रावण के वध का कारण ऋषि-कन्या वेदवती बताई गई है इसमें राम-जन्म से लेकर सीता स्वयंवर, राम वनवास, सीता हरण, रावण मरण, अयोध्या आगमन और राम राज्याभिषेक आदि का वर्णन है रावण का अत्याचार विशेष रूप से दिखाया गया है। रामायण की अनेक छोटी घटनाएं संक्षेप रूप में सूक्ष्म बनाकर ही दिखा दी गई हैं।

अभिनय-बंबई में सन् १९१८ में। नाटक में कुल २८ गाने हैं। कावसजी खटाऊ ने स्वयं दशरथ का पार्ट किया।

रामायण नाटक (सन् १९२८, पृ० ११०), ले० : श्रीकृष्ण हसरत; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, बनारस; पात्र : पु० २५, स्त्री ६; अंक : ३; दृश्य : ७, ५, ६।
घटना-स्थल : अयोध्या तथा वन।

यह धार्मिक नाटक तुलसीकृत रामायण का नाटकीय रूप है। इसमें राम-जन्म से लेकर वन-गमन, सीताहरण, रावण-वध, विभीषण-राज्याभिषेक तथा राम की अयोध्या वापसी तक की सभी कथाएँ हैं।

रामायण नाटक (सन् १९३५, पृ० १२०), ले० न्यादरसिंह बेचैन, प्र० देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली, पात्र पु० २५, स्त्री ८, अंक ३, दृश्य ११, ७, ९।
घटना स्थल पृथ्वी, अयोध्या, स्वयंवर सभा, वन।

नाटक का आधार रामचरित मानस है। प्रारम्भ में गऊ, पृथ्वी तथा ऋषिगण समाज में व्याप्त अत्याचार से रक्षा हेतु विष्णु से प्रार्थना करते हैं और विष्णु दशरथ के घर में जन्म लेने और पृथ्वी का भार उतारने की घोषणा करते हैं।

तदनन्तर राम-जन्म, सीता-स्वयंवर तथा वनवास की घटनायें हैं। द्वितीय अंक में वन-गमन और सीता-हरण तक की घटनायें तथा तृतीय अंक में सीता की खोज, हनुमान मिलन, सुग्रीव मैत्री, लंका दहन तथा रावण का पराभव प्रदर्शित है। अन्त में राम के अयोध्या आने पर उनका राज्याभिषेक होता है और रामराज्य की स्थापना होती है। भगवान् रामचन्द्रजी राक्षसों का वध कर पृथ्वी को अत्याचार से उबारने की प्रतिज्ञा पूर्ण करते हैं।

रामायण भूषण अर्थात् रामलीला नाटक (सन् १९०६), ले० मार्ट दयालु शर्मा, प्र० पारीख व्यास, लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, पात्र पु० ३२, स्त्री ११, अंक-दृश्य-रहित।
घटना स्थल अयोध्या का राजमहल, वन-मार्ग, पंचवटी, लंका।

इस धार्मिक नाटक में सम्पूर्ण रामायण की कथा निहित है। वसिष्ठ मुनि राजा दशरथ को पुत्रेष्टियज्ञ के लिए परामर्श देते हैं चारों लड़कों का जन्म होता है। पुरवासियों के समारोह में मंगल गान होता है। बड़े होने पर विश्वामित्र राजा दशरथ से राम-लक्ष्मण को मांगते हैं, राजा तथा मुनि का कथोपकथन होता है। तदुपरान्त मुनि का हठ करना और राम लक्ष्मण को मांग ले जाना, मार्ग में अहल्या को तारना, उनका मुनि के साथ जनकपुर जाना, बाग में राम और सीता का मिलन, धनुषयज्ञ का आयोजन धनुषयज्ञ में लक्ष्मण का क्रोध, धनुष का टूटना और परशुराम का आना, राम सीता का विवाह अयोध्या आगमन, मथरा दासी और कैकेयी का वार्तालाप, कैकेयी द्वारा राम को वनवास और भरत के लिए राज्य का वरदान मांगना माता से विदा लेकर राम का लक्ष्मण और सीता के साथ वनगमन, कौशल्या का विलाप, भरत का राम के वनगमन का समाचार पाकर विलाप करना, भरत की वन-यात्रा, भरत निषाद वार्तालाप, सीता को अनसूया का समझाना, शूपणखा के कारण खरदूषण का राम पर आक्रमण, मृग मारने के लिए राम का लक्ष्मण को समझाकर जाना, लक्ष्मण का राम के पास पहुँचना, राम का घबड़ाना, राम का विलाप, मुनीश्वर मुनि और शबरी की स्तुतियां, सुग्रीव राम मिलन और मित्रता सीता की खोज में वानरों को भेजना, बालिवध पर तारा का विलाप, अशोक वाटिका में रावण सीता सवाद, त्रिजटा का स्वप्न, लंका में हनुमान का आगमन और मुद्रिका गिराना, हनुमान का लंका जलाना, राम का समुद्र के किनारे शिवजी की स्तुति करना, अंगद का रावण की सभा में जाना, मदोदरी रावण सवाद। युद्ध की तैयारी, लक्ष्मण को शक्ति-बाण लगना, हनुमान राम वार्तालाप, राम का विलाप, हनुमान का सजीवनी के लिए जाना और लौटने में हनुमान का विलम्ब, राम का घबड़ाना और विलाप करना, हनुमान का आगमन और लक्ष्मण का सजीवनी से जीवित होना, लक्ष्मण का मेघनाद को मारना, सुलोचना-विलाप अहिरावण का राम लक्ष्मण को देवी की बलि के लिए ले जाना और हनुमान द्वारा उनका उद्धार, रावण को मारकर राम जी का अयोध्या को प्रस्थान, पुरवासी तथा भरत का उनके स्वागत के

लिए आना, रामजी का स्वागत और अभिनन्दन, राम-प्रशंसा के गीत गान, और शिव की स्तुति के साथ नाटक समाप्त होता है। सम्पूर्ण नाटक गीतबद्ध है।

राय पिथौरा (सन् १६५८, पृ० १७६), ले० : भगवती प्रसाद बाजपेयी; प्र० : श्री भारत भारती प्राइवेट लिमिटेड, दरियागज दिल्ली; पात्र : पु० २०, स्त्री १०; अंक : ३; दृश्य : ८, १०, ११।
घटना-स्थल : अजमेर, कन्नौज, चित्तौड़।

इस ऐतिहासिक नाटक में महाराज पृथ्वीराज के जीवन का सर्वांगीण स्वरूप चित्रित किया गया है। महान् पराक्रमी क्षमाशील राजा पृथ्वीराज अनेक बार मुहम्मद गोरी को पराजित कर हर बार उसे क्षमा कर देते हैं, किन्तु एक बार पृथ्वीराज भी मुहम्मद गोरी से पराजित हो जाते हैं। परिणामस्वरूप मुहम्मद गोरी उन्हें कैदी बनाकर बड़ी निर्दयता के साथ उनकी आँखें निकलवा लेता है किन्तु राजकवि चन्द वरदाई बड़ी चतुरता से पृथ्वीराज के पास पहुँच कर उन्हें शब्द बेधी बाण चलाने का संकेत देता है। उसके संकेत पर पृथ्वीराज शब्द भेदी बाण चलाते हैं जिससे मुहम्मद गोरी की तत्काल ही समाप्ति हो जाती है।

रावण (सन् १६४८, पृ० ११२), ले० : देवराज दिनेश; प्र० : प्रेम साहित्य निकेतन, दिल्ली; पात्र : पु०११, स्त्री ८; अंक : ३; दृश्य : ७, ८, ८।
घटना-स्थल : वन भूमि, पंचवटी, लंका, समुद्र, मैदान, वाटिका, युद्ध-भूमि।

इस पौराणिक नाटक में महाबली रावण के छल, दम्भ और कुकृत्यों का दुष्परिणाम दिखाया गया है।

शूर्पणखा के अपमान का बदला लेने के लिए रावण मारीच के पास जाकर सीता-हरण की योजना बनाता है। रावण से प्रथम तो मारीच सहमत नहीं होता है, लेकिन धमकाने पर मान जाता है। सीता-हरण होता है और पत्नी को खोजते हुए राम जटायु से मिलते हैं। वे तपस्वी वेश में अनेक मुनियों के पास जाते हैं, शबरी का आतिथ्य-ग्रहण करते हैं। हनुमान सुग्रीव से मिलता एवं बालि का वध करते हैं। इधर मन्दोदरी रावण के कृत्यों पर दुखी होती है। हनुमान सीता का पता पाकर अशोक वाटिका उजाड़ते तथा लंका दहन करते हैं। राम रावण पर चढ़ाई करते हैं। खरदूषण मारे जाते हैं। मेघनाद द्वारा लक्ष्मण को शक्ति लग जाती है। भेदी विभीषण के कारण रावण अपनी योजनाओं में असफल रहता है। क्रुद्ध राम लंका के सभी योद्धाओं के वध के साथ महाबली शिव-भक्त रावण का वध करते हैं। मरते समय रावण बुद्धिमानी के साथ विभीषण राम-मैत्री के स्थायित्व की कामना करता है। वह शूर्पणखा से कहता है "तू मुझ से रूठ कर कहाँ चली गई थी। तेरे कारण ही मेरा नाम भी दुनिया वाले किसी न किसी रूप में लेते ही रहेंगे। तू ही मेरे उत्थान का कारण हुई।" तभी शिवजी के मुख से निकल पड़ता है कि 'हमने अपने युग का श्रेष्ठ मानव खो दिया।'

राष्ट्र का प्रहरी (सन् १६६५, पृ० ७२), ले० : निरंजन नाथ आचार्य; प्र० : दि स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी, जयपुर, जोधपुर; पात्र : पु० ४, स्त्री नहीं; अंक-रहित; दृश्य : १०।
घटना-स्थल : हिमालय, भारत-भूमि, पर्वत, मैदान।

इस ऐतिहासिक नाटक में भारत की पवित्र भूमि पर चीन के क्रूर आक्रमणों का वर्णन है।

हिमालय भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं सभ्यता का उद्गम स्थल ही नहीं अपितु भारत के सिर का मुकुट तथा प्राण भी है। जब बंधु का छद्मवेश धारण कर दुष्ट चीनी हिमालय को रक्त से लाल कर देते हैं तब सुप्त भारतीय-आत्मा राष्ट्रीय-सम्मान की रक्षा के लिए तड़प कर जाग उठती है। हिमालय चिर समाधि से जागकर आँखें खोलता है। उसकी पुकार पर सैनिक, किसान,

कलाकार, युवक-युवतियाँ आदि सम्पूर्ण भारतीय अपना सर्वस्व बलिदान कर अपनी मातृ-भूमि की रक्षा करते हैं। भारतीयों की एकता, साहस और बलिदान की उग्र भावना को देखकर चीनी समझकर पीछे हट जाते हैं। चीन दुस्साहस से हिमालय की अर्चना करता है लेकिन नगराज उसकी इस छलना से सावधान होकर उससे मित्रता न कर रोषपूर्ण शब्दों में दुत्कार देते हैं।

राष्ट्र धर्म (सन् १९६७, *'रणब्रह्म'* में संग्रहीत), ले० विनय, प्र० सजीव प्रकाशन, मेरठ, पात्र, पु० २, स्त्री १, *अंक रहित, दृश्य* २।
घटना-स्थल कक्ष।

इस गीति नाट्य के अन्तर्गत आपत्कालीन राष्ट्र धर्म का प्रतिपादन किया गया है।

इसमें नाट्यकार ने यद्यपि गांधी के अहिंसा सिद्धान्त प्रेम और विश्वास पर अपनी आस्था व्यक्त की है तथापि मानव के आदर्शों की रक्षा के लिए युद्ध का भी समर्थन किया है। अतः शान्ति के लिए मानव को आन्तरिक एवं बाह्य दो स्तरों पर युद्ध करना होगा। तभी मानव एवं राष्ट्र का पूर्ण विकास हो सकता है।

राष्ट्र ध्वज (सन् १९३९, पृ० १०१), ले० रघुवीरशरण 'मित्र', प्र० भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ, पात्र पु० १६, स्त्री ५, *अंक* ३, *दृश्य* ५, ३, ३।
घटना-स्थल विजय चौक, सूनी सड़क, बैकुण्ठ, हिमालय, शयनागार, शीशमहल।

इस ऐतिहासिक नाटक में देश के आपसी मतभेद को ही भारत की पराधीनता का मुख्य कारण बताया गया है। फिर राष्ट्र-प्रेमी सत्य और अहिंसा के द्वारा देश को विदेशी दासता से मुक्त कराने के लिए अपने जी-जान की बाजी लगाकर आपसी फूट को दूर करते हैं। सच्चे भारतीय सपूत स्वर्ग में भी अपने देश की दुर्दशा को नहीं सहन कर पाते। वे इसे दूर करने के लिए पुनः भारत में ही अवतरित होते हैं। उनके त्याग और बलिदान से प्रसन्न होकर भगवान् लक्ष्मी और पार्वती को भी यहीं भेज देते हैं। अन्त में सच्चे देश प्रेमी अपने अथक प्रयास से राष्ट्र को एक ध्वज के नीचे संगठित कर लेते हैं।

राष्ट्रपिता बापू (सन् १९६२, पृ० ६७), ले० न्यादर सिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली, *पात्र* पु० १२, स्त्री ३, *अंक* ३, *दृश्य* ७, ५, ४।
घटना-स्थल दक्षिणी अफ्रीका, रेलगाड़ी का डिब्बा, कारागार, भारत के नगर।

इस ऐतिहासिक नाटक में गांधीजी के दक्षिणी अफ्रीका में किये गये सत्याग्रह आन्दोलन को चित्रित किया गया है। गांधीजी वकालत करने के लिए अफ्रीका जाना चाहते हैं पर उनके माता-पिता अंग्रेजों से डरकर उन्हें जाने से रोकते हैं। गांधीजी अंग्रेजों के शिकंजे से देश को मुक्त कराने का निश्चय करते हैं। वे कस्तूरबा के साथ अफ्रीका जाते हैं। रास्ते में अंग्रेज गांधी और कस्तूरबा को रेल से उतार देते हैं और उनका सामान फेंक देते हैं। कतिपय अंग्रेज गांधीजी को मारने का षड्यन्त्र रचते हैं किन्तु सभ्य अंग्रेज गांधीजी की मदद करते हैं। गोरे अंग्रेज काले भारतीयों, किसानों और कुलियों पर भीषण अत्याचार करते हैं। गांधीजी किसानों एवं कुलियों को संगठित कर अहिंसात्मक सत्याग्रह द्वारा अंग्रेजों के जुल्मों का विरोध करते हैं। अंग्रेज सैनिक भारतीय मजदूरों और किसानों को मार-मारकर काम करने के लिए विवश करते हैं। गांधीजी बड़ी दृढ़ता से अंग्रेजों का मुकाबला करते हैं। सैंदिक की पुत्री मिस सैलीन गांधी के विचारों से प्रभावित होती है और वह अंग्रेजों के खिलाफ गांधीजी की मदद करती है। वह अनेक भारतीयों को जेल से रिहा करवाती है। और गांधीजी की सहायता के लिए अपने पिता का भी कत्ल करने को तैयार हो जाती है, किन्तु गांधीजी उसे अहिंसा का उपदेश देते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका में अहिंसात्मक सत्याग्रह का सफल संचालन करने के बाद गाधी जी पुन: भारत लौट आते हैं। उनके माता-पिता उन्हें भारत को आजाद करने का आशीर्वाद देते हैं।

राम झुमुरा (सन् १५६६ के आसपास, पृ०४), ले० : अज्ञात, माधवदेव के नाम से भ्रमवश प्रचलित; प्र० : हिन्दी विद्यापीठ, आगरा; द्वि सं० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, देहली; पात्र : पु० २, स्त्री २; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : वृन्दावन।

इस अंकिया नाटक में कृष्ण के राम झुमुरा नृत्य का वर्णन है।

मंगल-चरण के समाप्त होने के बाद रत्न-भूषणों से सुसज्जित कृष्ण के साथ राधा आकर श्रीकृष्ण से अधर पान का दान माँगती है। कृष्ण राधा की वचन-चातुरी समझ कर उन्हें सबसे अधिक सौभागिनी मानते हैं। राधा भी कृष्ण की महिमा का वर्णन करते हुए कहती है कि जिसका पार वेद नहीं पाते हैं उसकी महिमा को मैं एक पामर गोपनारी क्या जान सकती हूँ। वह पुन: कृष्ण से हाथ जोड़कर अधर-पान की भिक्षा माँगती है। राधा के वचन को सुनकर श्रीकृष्ण को परम सन्तोष होता है और वे राधा की मनो-भिलाषा पूर्ण करने के लिए नृत्य करते हुए परम आनन्द प्राप्त करते हैं।

रास्ते, मोड़ पगडंडी (सन् १६५६, पृ०७४), ले० : कृष्ण किशोर श्रीवास्तव; प्र० : राम प्रकाश एण्ड संस आगरा; पात्र : पु० ४, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : घर का कमरा।

इस समस्यामूलक नाटक में एक कर्त्तव्य-परायण पुत्र अमर और उसकी आधुनिका पत्नी सरिता के संघर्षमय जीवन की कथा चित्रित है। प्रेम-विवाह होने पर भी अमर के पितृ-प्रेम और सरिता की हृदयहीनतामय स्वार्थ-प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप दोनों का दाम्पत्य जीवन दुखमय रहता है। अमर के पिता मुरारीलाल से अकारण उनकी पुत्रवधू सरिता घृणा करती है जिससे मुरारीलाल को गृह-त्याग करना पड़ता है। परन्तु पुत्र के विवाह की पहली वर्षगांठ पर उसका पितृ-हृदय पुत्र और पुत्र-वधू को आशीर्वाद देने के लिए व्याकुल हो उठता है। और वे वर्षगांठ से एक दिन पूर्व उनके पास पहुँच जाते हैं। सरिता उत्सव से पूर्व ही उन्हें घर से निकाल देना चाहती है परन्तु पितृ-निष्ठ अमर उसका विरोध करता है। अन्त में पितृ-प्रेम के सम्मुख पत्नी की स्वार्थपरता पराजित होती है और सरिता मुरारीलाल को रोक लेती है। इसमें हृदय-परिवर्तन का माध्यम बहन अचला है जो सरिता के प्रति अमर के हृदय में उत्पन्न सन्देह को दूर करने और परिस्थिति को सम्भालने में सहायक होती है।

रुक्मिणी परिणय नाटक (सन् १८९४, पृ० १०५), ले० : अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'; प्र० : भारत जीवन यंत्रालय, काशी; पात्र : पु० १६, स्त्री ५; अंक : ६; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : कुंडलपुर का राजद्वार, द्वारिका पुरी का राजद्वार।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण-रुक्मिणी-परिणय की कथा वर्णित है।

भीष्मक अपने पुत्र रुक्म और रुक्मेश तथा मंत्री और सभासदों के साथ सभा में बैठकर रुक्मिणी के योग्य वर के निश्चय के लिए परामर्श करते हैं। पुष्पोद्यान में कृष्ण के प्रेम से वशीभूत रुक्मिणी विरह की तीव्रता से दुखी हो प्रलाप करती है। अनामा और अनाभिधाना नामक सखियाँ उसे धैर्य देती हैं। रुक्मिणी को अपने भाई के हठपूर्वक शिशुपाल के यहाँ टीका भेजने से बड़ी निराशा है। वह कृष्ण को पति-रूप में पाना चाहती है और शिशुपाल को देखना भी नहीं चाहती। कृष्ण के ध्यान में डूबी रुक्मिणी ब्राह्मण के हाथों गुप्त रूप से कृष्ण के नाम अपना प्रेम संदेश भेजती है।

पाँचवें अंक में विवाह का दिन आने पर रुक्मिणी चिंतित एवं दुखी होती है। वह

शिशुपाल से विवाहित होने की अपेक्षा प्राण-त्याग देना श्रेयस्कर समझती है। इसी बीच द्वारिका से एक ब्राह्मण उसके पास पहुँचकर यह संदेश देता है कि कृष्ण बलराम के साथ एक बड़ी सेना लिये उद्धारार्थ आ रहे हैं। यह सुनकर रुक्मिणी प्रसन्न होती है। कृष्ण को ससैन्य आया हुआ जानकर जनवासे में शिशुपाल के साथ बैठे जरासंध, शाल्व, विदूरथ, रुक्म, दंतवक्र आदि अनिष्ट की आशंका से परामर्श करते हैं। जरासंध कृष्ण को परमवीर मानता है पर अन्य उसका विरोध करते हैं। तदनन्तर द्वारपाल देवी पूजन के निमित्त रुक्मिणी को नगर के बाहर जाने की सूचना देता है। शिशुपाल की आज्ञा से उसके योद्धा राजनंदिनी की रक्षा के लिए जाते हैं।

देवी पूजन को जाती हुई और सखियों के साथ कृष्ण ध्यान में डूबी रुक्मिणी के पीछे-पीछे योद्धागण जाते हैं। वहाँ अकस्मात् कृष्ण एक रथ में पहुँचकर रुक्मिणी की चिंता दूर करते हैं और उसे रथ पर बिठाकर भाग निकलते हैं। रुक्मिणी-हरण की सूचना पाकर शिशुपाल अपनी वीरता का बखान करता हुआ कृष्ण के वध के लिए वीरों को प्रोत्साहित करता है। यादवसेना को शत्रु सेना के प्रतिरोध का आदेश दे कृष्ण रुक्मिणी-सहित रथ में द्वारका की ओर बढ़ते हैं। दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध मचता है और बलराम के मूसलाघात से शिशुपाल, सात्यिकी के खड्ग-प्रहार से शाल्व, और कृतवर्मा की मार से दंतवक्र पराजित होते हैं। शिशुपाल की सेना भाग चलती है। फिर जरासंध-बलराम युद्ध में जरासंध मारा जाता है। यह स्थिति देख रुक्म अपनी सेना के साथ धावा करता है। कृष्ण-रुक्म युद्ध में कृष्ण उसे शस्त्ररहित कर ज्यों ही तलवार से मारने को उद्यत होते हैं, रुक्मिणी उन्हें रोक देती है और दंड-स्वरूप रुक्म के सिर और दाढ़ी-मूछ के बाल मुँडवा कर कृष्ण उसे रथ से बाँध देते हैं। तत्पश्चात् बलराम के अनुरोध से उसे मुक्त कर कृष्ण द्वारका आते हैं और रुक्मिणी के साथ विधि-वत् विवाह करते हैं।

रुक्मिणी-मंगल (सन् १९२८, पृ० १४८), ले० पं० राधेश्याम कथावाचक, प्र० श्री राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, पात्र पु० १२, स्त्री ८, अंक ३, दृश्य ८, ७, ३। घटना स्थल द्वारिका, मथुरा।

यह पौराणिक नाटक कृष्णावतार नाटक का दूसरा भाग है। इसमें भगवान् श्रीकृष्ण का कंसवध के बाद का चरित्र चित्रित किया गया है। नाटक में श्रीकृष्ण के चरित्र की उपयोगिता के भिन्न भिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

रुक्मिणी हरण (सन् १५४१ के आसपास पृ० ४१), ले० शंकरदेव, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पात्र पु० १६, स्त्री ५, अंक दृश्य-रहित।
घटना स्थल द्वारिका, कुण्डन नगर, विदर्भ।

नाटक का प्रारम्भ नान्दी से होता है। एक श्लोक में शिशुपाल के विजेता तथा रुक्मिणी के साथ पाणिग्रहण करने वाले कृष्ण को नमस्कार किया गया है। कृष्ण अपने सखा उद्धव के साथ रंगशाला में प्रवेश करते हैं। तदुपरान्त सखियों-सहित रुक्मिणी का आगमन होता है। रुक्मिणी नृत्य करके एक पार्श्व में खड़ी हो जाती है। उसी समय कुण्डनपुर से सुरभि नाम का भिक्षु आता है। रुक्मिणी की सौन्दर्य सुषमा का वर्णन सुन कर कृष्ण के हृदय में रुक्मिणी के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है। हरीदास नामक एक भाट द्वारिका से कुण्डनपुर आता है और राजनंदिनी रुक्मिणी से श्रीकृष्ण के रूप-गुण की महिमा का वर्णन करता है। रुक्मिणी भाट को पुरस्कार देकर विदा करती है। इसी समय रुक्मिणी के पिता भीष्मक मन्त्रिमंडल के सहित रंगमंच पर आते हैं और अपने मंत्रियों से सौभाग्यकांक्षिणी रुक्मिणी के योग्य वर कृष्ण की चर्चा करते हैं। राजमहिषी शशिप्रभा राजा का समर्थन करती है और कृष्ण को बुलाकर कन्यादान करना चाहती है।

रुक्मिणी का सहोदर भाई रुक्मी कृष्ण को

अत्याचारी, पापी घोषित करते हुए अपनी भगिनी का विवाह चेदिराज शिशुपाल से करने को उद्यत होता है। शिशुपाल सुसज्जित होकर कुण्डनपुर आ धमकता है। रुक्मिणी यह सुनकर चिन्तातुर होती है और भगवान् कृष्ण को स्मरण करती है। वह अपने हितैषी वेदनिधि ब्राह्मण को कृष्ण के पास भेजती है। कृष्ण द्वारिकापुरी में वेदनिधि का आगमन सुनकर उसका पद-प्रक्षालन करते हैं और रुक्मिणी का पत्र पढ़ते हैं। रुक्मिणी के करुणापूर्ण पत्र से कृष्ण के हृदय में आतरिक व्यथा होती है और वह रथ सजा कर कुण्डनपुर पहुँचते हैं। रासमंडली में कृष्ण की निराली छटा देखकर अन्य राजा हतप्रभ हो जाते हैं, किन्तु जरासंध अपने अभिमान में चूर रहता है। युद्ध निश्चित हो जाता है और बलदेव सेना लेकर द्वारिका से चल पड़ते हैं। बलभद्र और जरासंध का युद्ध होता है। कृष्ण शिशुपाल का किरीट काटकर समस्त शत्रु-सेनाओं को दूर भगा देते हैं और रुक्मिणी को लेकर द्वारिका प्रस्थान करते हैं। रुक्मी कृष्ण को युद्ध के लिए ललकारता है। दोनों का युद्ध होता है। जब कृष्ण रुक्मी का शीश काटते हैं तो रुक्मिणी भाई की रक्षा के लिए हाहाकार मचाती है। कृष्ण रुक्मी के प्राणों की तो रक्षा करते हैं लेकिन उसका केशमुण्डन करके द्वारिका लौट आते हैं। द्वारिका में भीष्म अपने हाथों रुक्मिणी का कन्यादान करते हैं। ब्रह्मा, नारद आदि विवाह में सम्मिलित होते हैं। शंकर नृत्य करते हैं।

अभिनय-आसाम के गुलबरणिया सत्र में अनेक बार अभिनीत। सर्वप्रथम जगतानन्द के द्वारा दरंग्टा (आसाम) के समीप आयोजित सन् १५४१ के रासपारा।

रुपया तुम्हें खा गया (सन् १९५५, पृ० ८३), ले० : भगवतीचरण वर्मा; प्र० : मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ३, २, २। घटना-स्थल : शयनागार, लान, दफ्तर।

नाटक का नायक मानिकचन्द उस मानव का प्रतीक है जो रुपये को देवता मान कर रात-दिन उसकी पूजा करता रहता है। मानिकचन्द दस हजार रुपये की चोरी करता है और समझता है कि वह दस हजार रुपये खा गया। वह इसी रुपये से व्यापार करता है। ब्लैक के धन से वह करोड़पति बन जाता है। मानिकचन्द अपने पैसे की धुन में सबको भुला देता है। वह अपनी पत्नी, पुत्र और पुत्री सभी की इच्छाओं का दमन करता है। एक दिन मानिकचन्द को किशोरीलाल आकर बताता है कि "मानिकचन्द, उस दिन जब तुम दस हजार रुपया चुराकर लाये थे तब तुमने समझा था कि तुम रुपया खा गये लेकिन तुमने गलत समझा था। मैं कहता हूँ कि तुमने रुपया नहीं खाया था रुपया तुम्हें खा गया। तुम अपने जीवन को देखो, तुममें ममता नहीं, दया नहीं, प्रेम नहीं, भाव नहीं। तुम्हारे अन्दर वाला मानव मर चुका है। आज तुम्हारे अन्दर अर्थ का पिशाच घुस गया है।"

मानिकचन्द का पुत्र, उसकी पत्नी, उसकी लड़की, उसके नौकर-चाकर कोई भी तो उसके नहीं हैं। हरएक व्यक्ति की नजर उसके रुपयों पर है। अन्त में मानिकचन्द भी अनुभव करता है कि वह व्यक्ति की हैसियत से मर गया है। दस हजार रुपया चुराने से पहले मानिकचन्द गरीब भले ही रहा हो, पर भावना का प्राणी था। दूसरे उसके थे, वह दूसरों का था। बीमारी में पड़ा हुआ बीस वर्ष बाद वाला मानिकचन्द एक नितान्त अकेला और दयनीय प्राणी है। इसे वह स्वयं अनुभव करता है।

रूपलक्ष्मी अंबपाली (सन् १९५८, पृ० ६१), ले० : कृष्णचन्द शर्मा 'भिक्खु'; प्र० : साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद; *पात्र :* पु० १२, स्त्री ३; *अंक-रहित; दृश्य* ११। घटना स्थल : वैशाली का राजउद्यान।

इस ऐतिहासिक नाटक में युवती अंबपाली की सुन्दरता का परिचय मिलता है।

वैशाली के राजउद्यान में अंबपाली एक सुन्दरी एवं रूपवती युवती है। उदासी तथा कालगिन अंबपाली की सुन्दरता पर मुग्ध होकर उसको अपनी पत्नी बनाना चाहते हैं। दोनों युवकों में आपसी मतभेद के कारण

लड़ाई होती है जिसमें अम्बपाली के वृद्ध पिता की मृत्यु हो जाती है। अम्बपाली को राज-दरबार में ले जाया जाता है। राजाज्ञा से अम्बपाली को लिच्छवियों की सामान्य पत्नी घोषित किया जाता है। मगध सम्राट बिंबसार भी अम्बपाली की सुन्दरता पर मुग्ध हो जाता है। वह गुप्त रूप में अम्बपाली से मिलने लगता है। कुछ दिन बाद अम्बपाली के गर्भ से विमलकाण्डव नामक एक पुत्र पैदा होता है। विमल गौतम बुद्ध के धर्म तथा उपदेशों का अनुयायी हो जाता है। इधर अम्बपाली की सुन्दरता का यश सुनकर बिंबसार का पुत्र अजातशत्रु अपने मुख्य राजनीतिक पंडित वस्सकार की सहायता से उसका राज्य की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी बनने का विरोध करता है। वस्सकार उसकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर अम्बपाली से अपनी हार मान लेता है। मगध-सम्राट् तथा लिच्छविगण की लगातार लड़ाई चलती रहने से अम्बपाली बड़ी दुखी होती है और वह अपनी सारी सम्पत्ति आहत हुए लिच्छवियों के लिए समर्पण कर देती है। अन्त में आहतों की दशा देखकर वह रथ पर सवार होकर बड़ी तेजी से भागती है। रास्ते में उसके पुत्र विमल के आवाज लगाने पर वह रथ रोक देती है और अपने पुत्र के कहने पर गौतम बुद्ध की शरण में जाती है जहाँ उसे 'मज्झिमा पटिपदा' का मार्ग बताया जाता है।

रूपवती नाटक (सन् १९०६, पृ० ३१), ले० परमेश्वर मिश्र, प्र० सिद्धेश्वर प्रेस बनारस, पात्र पु० ११, स्त्री ४, अंक ६, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल मेवाड़।

इस ऐतिहासिक नाटक में मेवाड़ के राजपूतों की वीरता, साहस और उदारता प्रदर्शित है। कुटिल औरंगजेब बलात् रूपनगर की राजकन्या को वरने जाता है। राजकुमारी इस दुर्घटना से व्याकुल हो, उदयपुर के राणा की शरणागत होती है। राणा अपने पराक्रम से राजकुमारी की रक्षा करते हैं और चूड़ावत सरदार अपने पराक्रम से औरंगजेब का रंग फीका कर देते हैं।

रेणुका (वि० १९८७, पृ० ३४), ले० भगवत प्रसाद 'विश्वकर्मा', प्र० साहित्य सदन चिरगाँव झाँसी, इस संग्रह में पद्य रूपक संवादों के माध्यम से विरचित हैं। प्रत्येक पद्य रूपक में २ या ३ पात्र हैं।
घटना-स्थल राजमहल का एक कमरा।

इस पौराणिक नाटक में उत्तरा और अभिमन्यु का पुराण प्रसिद्ध पति-पत्नी का वह सम्भाषण प्रस्तुत किया गया है जो अभिमन्यु के रण-प्रयाण से पूर्व उनके मध्य होता है। अभिमन्यु उत्तरा से विदा माँगता है परन्तु भावी दुःशंका से आक्रान्त उत्तरा उसे विदा नहीं देना चाहती। वीर अभिमन्यु उसे विजय का विश्वास दिलाकर रणभेद में चला ही जाता है। 'श्रीकृष्ण और सुदामा' में कृष्ण सुदामा को विस्मरण करने के अपराध के लिए क्षमा माँगते हैं। अतीत की उन मधुर स्मृतियों में आह्लाद पाते हैं जो गुरुआश्रम के जीवन को पुनर्जीवित कर देती हैं तथा उस वेणुवादन का स्मरण करते हैं जिसे सुन सकल जड़ चेतन-प्रकृति मुग्ध हो जाया करती थी। 'राधा' में राधा और कृष्ण के पारस्परिक प्रेम की अनन्यता का काव्यमय चित्रण है तो 'लोनी' में एक राजकुमार और भील-कन्या के प्रणय का वर्णन है जिससे मृगया में भटके हुए राजकुमार की भेंट होती है पर जिसे वह राजा के आदेश से फिर आने का वचन देकर छोड़ जाता है। 'शाह-जहाँ' में मुमताज की मृत्यु पर शाहजहाँ के शोक, औरंगजेब द्वारा बन्दी बनाए जाने और जहाँआरा द्वारा बूढ़े बन्दी पिता की सेवा की कथा पद्यबद्ध है। इसमें सम्भाषण द्वारा शाहजहाँ अपनी पुत्री से औरंगजेब की निठुरता, अपने पुत्रों की मृत्यु और मुमताज महल के प्रेम का वर्णन करता हुआ ताजमहल की ओर मुँह कर मर जाता है। 'देवदासी' की कथा एक ऐसी निरीह कन्या की कहानी है जो बाल्यावस्था में श्रीकान्त नामक राजकुमार के प्रति आकृष्ट होती है जो मन्दिर में अपनी विमाता द्वारा उत्पीड़ित होकर रहने लगा था। वह बार-बार समर्पण के लिए तत्पर होती है पर ठीक मौके पर उसकी अन्तरात्मा उसे रोक

नाटक है। इसमें नर्मदा, चौरागढ़, रामगिरि, पवनार, असीरगढ़, रतनपुर तथा त्रिपुरी का सांस्कृतिक वर्णन है। नर्मदा का प्रसिद्ध तट अनेक मुनियों, तपस्वियों, बौद्धों तथा महन्तों की कहानी छिपाये पड़ा है। अनेक मन्दिरों से अलंकृत यह तटवर्ती प्रदेश तीर्थस्थान रहा है। चौरागढ़ तथा नर्मदा के पास अनेक बार राजाओं ने आक्रमण किए हैं। अकबर तथा रानी दुर्गावती का कलह-केन्द्र भी यही रहा। रामगिरि, कालिदास के अनेक दृश्यों का केन्द्र रहा है।

इसमें अनेक घटनाओं का जमघट है। रेडियो-नाटक में एक दृश्य दूसरे दृश्य से पर्दे द्वारा पृथक् नहीं किया जा सकता अतः अन्तराल संगीत द्वारा दृश्य विभाजन पूरा किया गया है।

रेशमी रूमाल(वि० १६८०,प० ६४), ले० रामसिंहवर्मा, प्र० एम० आर० बेरी ऐण्ड कम्पनी, कलकत्ता, पात्र पु० ५, स्त्री ५, अंक-रहित, दृश्य ९।
घटना-स्थल मकान, महल का बाहरी भाग, मार्ग, बगीचा।

इस सामाजिक नाटक में यह दिखाया गया है कि प्रेमपथ में एक क्षुद्र बात भी भयंकर रूप धारण कर लेती है।

रुपये पैसे के लोभी वकील शैंटो अपनी पुत्री शान्ति का विवाह वकीलों के धनाढ्य दलाल निताई कुण्डू से करने के लिए वचन-बद्ध होते हैं किंतु उनकी पत्नी राजलक्ष्मी और पुत्री शान्ति कुण्डू से विवाह करने के पक्ष में नहीं है। शान्ति जामिनीकान्त से विवाह करना चाहती है। अपने पिता के हठ धर्म से दुखी शान्ति जामिनी का दिया हुआ रेशमी रूमाल जिस पर "जीवनपर्यन्त मैं तुमसे प्रेम करूँ—" जामिनी लिखा था, क्षुब्ध होकर फेंक देती है। वह रूमाल पास के एक गृहस्थ रामलोचन की पत्नी अन्ना को मिल जाता है। अन्ना जामिनी शब्द के आधार पर यह समझती है कि उसका पति जामिनी से प्रेम करता है, उधर उसका पति भी अपनी पत्नी पर सन्देह करता है। संयोग से प्यार का मारा जामिनी उसके घर आता है और भ्रम में यह जानकर कि उसकी प्रेयसी शान्ति राम से शादी कर चुकी है, माथा पीट कर बेहोश हो जाता है। राम की पत्नी उसे जल पिलाकर होश में लाती है किन्तु राम के मन में सन्देह रह ही जाता है।

एक दिन शैंटो कुण्डू को शराबियों एवं नर्तकियों की सभा में आनन्द लेते देखकर प्रतिज्ञा करते हैं कि वह अपनी पुत्री का विवाह ऐसे दुश्चरित्र से नहीं करेंगे। अब वे जामिनी के साथ ही अपनी पुत्री का हाथ पीला करना चाहते है। उधर राम जामिनी के रेशमी रूमाल को लेकर शैंटो के पास आता है और कहता है कि जामिनी छिपकर मेरी पत्नी से मिलता है, उस पर अदालती कार्यवाही की जाय। वह अपने उस्ताद से मिलकर जामिनी को मार देना चाहता है किन्तु उस्ताद ऐसा नहीं करता। सामने बात करने पर जामिनी राम से कहता है कि अन्ना तो मेरी माँ के समान है। उन्होंने मूर्छितावस्था में मेरे प्राण बचाये है। राम को दुःख होता है कि व्यर्थ ही वह जामिनी के पीछे पड़ा था। वह शैंटो के घर की ओर चल पड़ता है। इधर शैंटो अपनी पुत्री का विवाह दूसरे किसी लड़के से करना चाहते हैं, किन्तु उनका मित्र राम बताता है कि जल्दबाजी में कुछ भी करना ठीक नहीं क्योंकि शान्ति जामिनी को छोड़कर किसी को नहीं चाहती। शान्ति की प्यारी सखी के इस रहस्योद्‌घाटन से कि "ओ हो ! रूमाल तो शान्ति ने ही पास के मकान में एक दिन दुखी होकर फेंका था," सब कुछ साफ हो जाता है। दोनों के बीच रेशमी रूमाल रखकर विवाह करा दिया जाता है।

रोटी और बेटी (सन् १६६०, पृ० ८२), ले० रमेश मेहता, प्र० चौ० बलवन्तराय ऐण्ड क० दिल्ली, पात्र पु० ७, स्त्री २, अंक ३।
घटना-स्थल गाँव, मकान, स्कूल, न्यायालय।

रविदास चमार का पुत्र राजू घोर परिश्रम के फलस्वरूप प्रतियोगिता में प्रथम

आता है और न्यायाधीश नियुक्त हो जाता है। पुत्र की इस प्रगति की सूचना प्राप्त कर रविदास अपनी पत्नी गंगो के साथ प्रसन्नता से फूले नहीं समाते। रविदास की दत्तक पुत्री सोनिया राजू से प्रेम करती है और गंगो भी दोनों के विवाह का निश्चय किए हुए है। प्रेमस्वरूप जज का त्यक्त पुत्र मस्तराम सोनिया का प्रेमी है। सोनिया उसके स्वप्नों की देवी है। सोनिया उसके प्रेम का उत्तर घृणा एवं फटकार द्वारा देती है। राजू मस्तराम का बचपन का साथी है। राजू नलिनी से प्रेम करता है। वह इस रहस्य को मस्तराम पर प्रकट करता है और यह बताता है कि वह उनसे विवाह करने की प्रतिज्ञा कर चुका है।

सूदखोर मोची सुखलाल अपनी बेटी मुलिया की सगाई राजू से करने के लिए रविदास से प्रार्थना करता है किन्तु रविदास उसके समस्त प्रलोभनों तथा प्रार्थना को ठुकरा देता है। इस अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए सुखलाल नलिनी को रविदास के घर ले आता है और यह प्रत्यक्ष दिखाता है कि उसका भावी पति राजू चमार का बेटा है और चमार रविदास का मकान सुखलाल का धरोहर है। कुलीन नलिनी वस्तु-स्थिति का बोध होने पर राजू का अपमान करती है। इसी बीच मस्तराम इस रहस्य का उद्‌घाटन करता है कि वह नलिनी के चाचा प्रेमस्वरूप का त्यक्त पुत्र है। नलिनी यह सुनकर लज्जित हो जाती है और अपने चाचा से इस कथन की पुष्टि करती है। प्रेमस्वरूप ५०० रुपये मस्तराम को इसलिए भेंट करते हैं कि वह यह कहे कि उसने नलिनी से जो कुछ कहा था वह मदिरा के नशे में कहा था और वह सब मिथ्या है। परन्तु मस्तराम इस भेंट को ठुकरा देता है और उसका स्वाभिमान जागृत हो उठता है।

नलिनी अपनी माँ से मस्तराम के कथन की पुष्टि करती है तदुपरान्त राजू से क्षमा प्रार्थना करने जाती है। राजू के कहने पर प्रेमस्वरूप का मस्तराम को प्रेषित पत्र लेकर नलिनी लौट जाती है और राजू से विवाह का निश्चय करती है। जब यह समाचार हिन्दू समाज के ठेकेदारों को ज्ञात होता है तो सनातनी नेता पंडित हीरानन्द जी अनेक अनुयायियों को साथ लेकर इस विवाह के विरोध में रविदास के मकान के सामने प्रदर्शन करता है।

प्रदर्शनकारी रविदास के घर को जला-कर राख कर देने की धमकी देते हैं। पुलिस इंस्पेक्टर इस बलवे को दबाने का प्रयत्न करता है। इसी समय प्रेमस्वरूप स्वयं वहाँ उपस्थित होते हैं और उन्हें देखकर सब प्रदर्शनकारी खिसक जाते हैं।

प्रेमस्वरूप रविदास से नलिनी तथा राजू की सगाई का निवेदन करता है। दोनों प्रसन्नतापूर्वक वर्ण-भेदभाव को मिटाकर दो कुलों का रोटी और बेटी का सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

ल

लंका दहन (सन् १९४०, पृ० ६४), ले० : पं० शिवदत्त मिश्र; प्र० : ठाकुर प्रसाद ऐण्ड संस, बुकसेलर, वाराणसी; पात्र : पु० ८, स्त्री ४; अंक-रहित; दृश्य : १७।
घटना-स्थल : जंगल, आश्रम, किष्किंधा पर्वत, अशोक वाटिका।

इस धार्मिक नाटक में सीताहरण से लेकर लंका दहन तक की कथा वर्णित है। भगवान् राम, लक्ष्मण और सीता अपने आश्रम में बैठे हैं। दुष्ट मारीचि मृग का भेष धारणकर वहाँ आता है। सीता के अनु-रोध पर राम उसी सुनहरे मृग की खाल लेने

जाते हैं। राम के बाण-सधान करने पर मृग सहसा लक्ष्मण-सीता की आवाज लगाता है। सीताजी लक्ष्मण को भाई की मदद के लिए भेजती हैं। लक्ष्मण के चले जाने पर दुष्ट रावण विप्र-भेष में सीता का हरण कर लेता है। राम-लक्ष्मण आश्रम में सीता को न पाकर व्याकुल होते हैं। दोनो भाई सीता को खोजते खोजते किष्किन्धा राज्य में पहुँच जाते हैं। वहाँ पर हनुमान की मदद से वानर-राज सुग्रीव से राम की मित्रता होती है। राम की गाथा सुनकर हनुमान-सहित सभी बन्दर सीता की खोज में निकल पड़ते हैं। हनुमान विभीषण की मदद से अशोक वाटिका में सीता के पास जाकर राम का संदेश सुनाते हैं और अक्षयकुमार सहित बहुत सारे राक्षसों का वध करते हैं। मेघनाद हनुमान को ब्रह्म-फाँस में बाँधकर रावण के पास ले जाता है। दुष्ट रावण राक्षसों द्वारा हनुमान की पूँछ में आग लगवा देता है जिसके फलस्वरूप हनुमानजी सारी लंका को जलाकर विध्वंस कर देते हैं।

लंकेश्वर (वि० २०१२, पृ० १०६), ले० अम्बिका प्रसाद दिव्य, प्र० साहित्य सदन, अजयगढ़, पात्र पु० १०, स्त्री ८, अंक ७, दृश्य ५, १, ४, ५, ५ ६, १।
घटना-स्थल लंका नगरी।

यह धार्मिक नाटक रामायण की कहानी के आधार पर लिखा गया है। इसमें रावण के चरित्र को प्रधानता दी गई है, परन्तु राम के चरित्र को और भी उज्ज्वल बनाने की चेष्टा की गई है। युद्ध में रावण की पराजय होती है। वह अपनी हार का एकमात्र कारण अपने भाई विभीषण को मानता है। यथार्थ रूप में राम विभीषण के ही षड्यंत्र से रावण पर विजय प्राप्त करते हैं। इस दशा में विभीषण का चरित्र बहुत ही गिर जाता है। किन्तु विभीषण भी समाज के हित के लिए ही ऐसा करने को तत्पर होता है जिससे उसका सारा दोष छिप जाता है।

लक्ष्मीबाई (सन् १९६१, पृ० ११२), ले० कंचनलता सब्बरवाल, प्र० कौशाम्बी प्रकाशन दारागंज, प्रयाग, पात्र पु० २६, स्त्री ३, अंक ४, दृश्य ७, ७, ८, ३।
घटनास्थल झाँसी, वन, झोंपड़ी।

इस ऐतिहासिक नाटक में सन् ५७ के प्रथम स्वाधीनता-संग्राम की गाथा का नाटकीय चित्रण किया गया है। लक्ष्मीबाई (मनु) बचपन से ही शक्ति, शील की शिक्षा प्राप्त करती है। ग्वालियर-नरेश गंगाधरराव से विवाह होने के बाद तो वह और भी अधिक तेजस्विनी एवं शक्तिशालिनी हो जाती है। पति के देहान्त के बाद लक्ष्मीबाई अंग्रेजों के झाँसी राज्य हड़पने के षड्यन्त्र को विफल कर देने के लिए जी-जान से लड़ती है। देश एवं धर्म की रक्षा के लिए यह वीरांगना अंग्रेजों की सेना से लड़ती हुई वीरगति प्राप्त करती है। विश्वासपात्र रामचन्द्र देशमुख के द्वारा वन में बनी झोंपड़ी में लक्ष्मीबाई का दाह-संस्कार होता है।

लक्ष्मी सेवा सदन (सन १९३९, पृ० ९६), ले० अनुसूया प्रसाद पाठक, प्र० राष्ट्र-भाषा पुस्तक भंडार, कटक, पात्र पु० ६, स्त्री ५, अंक ४, दृश्य २७।
घटना स्थल भजनी का घर, सभा मण्डप, हनुमानजी का मन्दिर, रणवीर का घर।

इस सामाजिक नाटक में ग्राम संगठन तथा मानव शिक्षा पर बल दिया गया है। लेखक ने गाँवों में फैले छुआछूत, भ्रष्टाचार, ऊँच-नीच के भेदभाव तथा विधवाओं की दुर्दशा आदि का चित्रण किया है। भजन की पत्नी लक्ष्मी को गाँव वालों के षड्यन्त्र से आघात लगता है जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। परिणाम-स्वरूप प० नरहरि लक्ष्मी की याद में 'लक्ष्मी सेवा सदन' तथा 'विद्या मन्दिर' की स्थापना करते हैं। जमींदार रणवीर भी दिल खोलकर दान देता है और विधवा विवाह कर एक आदर्श स्थापित करता है। 'लक्ष्मी सेवा सदन' में गाँव की स्त्रियाँ काम करके स्वावलम्बी बनना सीखती हैं। विद्या-मन्दिर में गाँव के बालकों को शिक्षित करने के अतिरिक्त प्रौढ़ों को भी

संघर्ष और कथा का विकास प्रदर्शित किया गया है। नाटक में जहाँगीर के बेटे फिरोज और अजगर के साथ उनके चाचा फकलसीर के कुकृत्यों का दुष्परिणाम दिखाया गया है। अन्त में दोनों भाई विपदाओं को पार कर दाम्पत्य जीवन के सुख और शान्ति का लाभ उठाते हैं।

ललित विक्रम (सन् १९५३, पृ० १२८), ले० वृन्दावनलाल वर्मा, प्र० मयूर प्रकाशन, झाँसी, पात्र पु० १२, स्त्री २, अंक ४, दृश्य ६, ७, ८, ६।
घटना-स्थल अयोध्या का राजभवन, धौम्य ऋषि का आश्रम।

इस ऐतिहासिक नाटक में वैदिककाल की एक झाँकी चित्रित की गई है। अयोध्या-नरेश रोमक के शासन-काल में अकाल पड़ता है। दुर्भिक्ष से अन्न की उपज कम होने लगती है। राजा रोमक राज्य की ओर से अन्न वितरण कराने का प्रबन्ध करता है। इधर आचार्य मेघ राजकुमार ललित की उद्दण्डता तथा दुश्शीलता की शिकायत करने के लिए रोमक के पास आते हैं। आचार्य मेघ ललित के नीलमणि के साथ किए अभद्र व्यवहार तथा भरे दरबार में अपने अपमान से क्रोधित होकर राजा रोमक को शाप देकर चले जाते हैं। मेघ के जाने के उपरान्त नीलमणि उपस्थित होकर रोमक से कपिंजल शूद्र के अनुसन्धान के लिए सहायता माँगता है। राजा उसकी रक्षा का वचन देता है। कपिंजल नीलमणि के बन्धन से अपने को मुक्त करके धौम्य ऋषि के आश्रम में पहुँचता है। धौम्य ऋषि उसे शूद्र जानकर भी आश्रय देते हैं तथा नीलमणि और राजा के अनुचरों को भगा देते हैं। धौम्य ऋषि कपिंजल को, उसकी योग्यता का निरीक्षण करके शिष्य बनाने का वचन देते हैं। इधर आचार्य मेघ चुप नहीं बैठते और अयोध्या के सभा-भवन में राजा पर अनेक दोषारोपण करते हुए, परम्परा-विरोधी पापी राजा रोमक को पद-च्युत करने के लिए जनता में जागृति उत्पन्न करने की स्पष्ट चेतावनी देते हैं।

धौम्य ऋषि कपिंजल को शिष्य बनाकर गोमती के निकट समाधि लगाने की आज्ञा देते हैं। मेघ राजा के पापों का चिट्ठा खोलकर सुबाहु आदि व्यक्तियों को अपने पक्ष में कर लेता है। राजा रोमक अकाल को रोकने के लिए अपने व्यक्तिगत स्वर्ण-रजत आदि से कुएँ और सरोवर खुदवाने का आदेश देता है। राजकुमार ललित साथियों-सहित आखेट को जाता है। शूकर से घायल होने पर कपिंजल उसकी रक्षा करता है और उसे उसके साथियों को सौंप देता है। राजा रोमक ललित की शिक्षा-दीक्षा के प्रति चिंतित रहते हैं। एक दिन वह अपनी पत्नी ममता के परामर्श से उसे धौम्य ऋषि के आश्रम में छोड़ आते हैं। मेघ रोमक के राज्य में होने वाली शूद्रों की तपस्या, ब्राह्मणों के अपमान तथा निरन्तर अकाल आदि की आड़ से जनता को अपने बहुमत में लाने में सफल होता है और अयोध्या की समिति राजा रोमक को उस समय तक अपदस्थ करती है जितने समय तक वे अपने पाप का अनुसन्धान करके परिमार्जन न कर लें।

राजा रोमक जनता के दुःख और दुर्भिक्ष के कारण स्वयं पापों को जानने के लिए निकलता है। जनता राजा को पापी समझकर उसका मुँह देखना भी पाप समझती है। अत में रोमक ममता के कहने से धौम्य ऋषि के पास जाकर अपने पापों के मार्जन की प्रार्थना करता है। धौम्य ऋषि राजा की परीक्षा के लिए कपिंजल के वध की बात कहते हैं किन्तु साथ ही कपिंजल की रक्षा की व्यवस्था भी कर देते हैं। मार्ग में ललित पिता के विवेक को जाग्रत करता है और रोमक-वध का विचार त्याग, प्रायश्चित्तस्वरूप कपिंजल के सम्मुख जाकर उसे प्रणाम करता है। इधर राज्य में वर्षा हो जाती है और ईशान, सोम, ममता आदि धौम्य ऋषि के आश्रम में दर्शनार्थ उपस्थित होते हैं। धौम्य ऋषि अपने दीक्षान्त भाषण में राजा के पापों का उल्लेख करके रोमक को जनपद कल्याण में लगने की सलाह देते हैं और अन्त में ग्रामीणों के 'हम विविध सत्कर्म करते सौ बरस जीते रहें' गीत से नाटक समाप्त होता है।

ललिता नाटिका (सन् १८८३, पृ० ३८), ले० : अम्बिकादत्त व्यास; प्र० : हरिप्रकाश यंत्रालय, काशी; पात्र : पु० ४, स्त्री ४; अंक : ४; दृश्य-रहित ।
घटना-स्थल : गोप कंस की सभा, गोप-आँगन ।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण-गोपी तथा भक्ति का परिपाक चित्रित है ।

विशाखा एक लावनी द्वारा ललिता की विरहदशा का वर्णन करती हुई कृष्ण का पता लगाने के लिए मनसुखा से मिलती है । संदेश पाकर कृष्ण उसी रात विशाखा को ललिता से मिलने का वचन देते हैं । उधर ललिता गीत गाकर विरह का बोझ हलका करती है । उसी समय विशाखा से कृष्ण-मिलन का संदेश पाकर वह प्रसन्न होती है । उधर मनसुखा जाकर विशाखा को बताता है कि ललिता का पति गोवर्द्धनगोप कंस की सभा में जाने की तैयारी कर रहा है अतः कृष्ण-ललिता मिलन का यही उपयुक्त अवसर है । लेकिन गोवर्द्धन जाते समय माँ को कृष्ण से सावधान कर जाता है । अवसर पाकर कृष्ण गोवर्द्धन के भेष में ललिता के पास पहुँचने में सफल हो जाते हैं । कंस की सभा में अधिक न ठहरकर आशंकित गोप अविलंब आ पहुँचता है । उसकी माता भ्रमवश गोवर्द्धन को पत्थर से मारती है और वस्तु-स्थिति का ज्ञान होने पर दोनों पछताते हैं । वह कृष्ण की खोज में शीघ्रता से घर के अन्दर जाता है । किन्तु उसके आगमन की सूचना पाते ही कृष्ण खिड़की से कूदकर बाहर निकल जाते हैं । फलतः गोप ललिता को डाँटता-फटकारता है । फिर विशाखा वहाँ पहुँचकर ललिता से प्रातःकाल का वर्णन करती हुई उसे स्नान आदि करने को कहती है । कृष्ण-ललिता मिलन से चिंतित गोवर्द्धन गोप आँगन में बैठकर अपने कुल पर लगे कलंक पर विचार करता है । परन्तु माँ समझाती है कि जिसके घर कृष्ण का आगमन हो जाता है उसका जन्म सफल है । माँ के इस कथन पर वह उससे रुष्ट हो जाता है । इसी समय कृष्ण की महिमा का गान करते हुए नारद पहुँचते हैं और गोवर्द्धन की शंका का निवारण कर समझाते हैं कि कृष्ण परमेश्वर के अवतार हैं । गोवर्द्धन अपने कृत्य पर पश्चात्ताप कर माँ के साथ कृष्ण का दर्शन करने जाता है ।

लव जी का स्वप्न (सन् १८८५, पृ० ४), ले० : काशी नाथ खत्री; प्र० : प्रयाग धार्मिक यंत्रालय; अंक-दृश्य रहित ।
घटना-स्थल : राजमहल, युद्धक्षेत्र ।

यह एक ऐतिहासिक रूपक है जो मध्यकाल कि एक कथा से लिया गया है । इसमें मुसलमान सरदार व बादशाह की विषयासक्त प्रवृत्ति और दुराचरणों का दुष्परिणाम दिखाया गया है । मुसलमानों के घोर अत्याचार के विरुद्ध हमारे प्राचीन राजा धर्म, श्रद्धा तथा पवित्रता से अपनी प्रजा का पालन करते हैं, क्योंकि महान् पुरुष स्वप्न में भी पर-स्त्री सम्बन्ध नहीं रखते हैं । राजा लव की वीरता दिखाई गई है ।

लहरों के राजहंस (सन् १९६३, पृ० १८०), ले० : मोहन राकेश; प्र० : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य-रहित ।
घटना-स्थल : राजकुमार नन्द के भवन में सुन्दरी का कक्ष ।

यह ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नाटक है । इस नाटक में नन्द के अन्तर्द्वन्द्व का वर्णन है । महात्मा बुद्ध के सौतेले भाई 'नन्द' की पत्नी 'सुन्दरी' कामोत्सव का आयोजन करने जा रही है । उसी दिन महात्मा बुद्ध की पत्नी यशोधरा भिक्षुणी बनने जा रही है अतः उत्सव में कोई सम्मिलित नहीं होता । नन्द के यहाँ महात्मा बुद्ध भिक्षा लेने आते हैं लेकिन कोई उत्तर न पाकर लौट जाते हैं । जब नन्द को पता चलता है कि महात्मा बुद्ध आये थे तो वह अवचेतन प्रेरणा से बुद्ध के पास खिंचे चले जाते हैं । नन्द का गौतम बुद्ध बनकर लौटना सुन्दरी के अहम् व आत्मविश्वास पर आघात पहुँचाता है । नन्द और सुन्दरी में तर्क-वितर्क होता है और अन्त में नन्द घर त्याग कर चले जाते हैं ।

अभिनय-सन् १९६३ में इलाहाबाद में तदुपरांत अनेक संस्थाओं द्वारा अनेक बार अभिनीत।

लाल किले की ओर (सन् १९३५, पृ० २५६), ले० वृन्दावनलाल, प्र० जयन्त वृन्दावन, चिनगारी प्रकाशन, वाराणसी, पात्र पु० १०, स्त्री ८, अंक-दृश्य-रहित। घटना-स्थल मार्ग, सभाभवन।

यह वृन्दावन लाल के उपन्यास 'लाल-रेखा' का नाटकीय रूपान्तर है। इसमें हास्य-रस का भी समावेश कर दिया गया है।

स्वतन्त्रता के भीषण रण में,
जन्मभूमि के विमल गगन में,
जीर्ण शीर्ण युवकों के तन में,
आत्म त्याग की आग फूंक कर
धवल ध्वजा फहरा दें।

इसमें संवादों का बाहुल्य यत्र-तत्र रंग निर्देश होते हुए भी उपन्यास की ही शैली प्रमुख है। अभिनय के लिए लिखना रूपान्तर-कार का उद्देश्य है। इसे संवादप्रधान उपन्यास ही कहा जा सकता है।

लावण्यवती सुदर्शन नाटक (सन् १८९२, पृ० ६८), ले० शालिग्राम वैश्य, प्र० हरिप्रसाद भगीरथ, बम्बई, अंक ७, दृश्य २, ४, १, ४, १, ३, २। घटना-स्थल लावण्यवती का शयनागार, सुदर्शन का भवन, हेमकूट पर्वत, श्मशान।

इस नाटक में नायक-नायिका का प्रेम चित्र-रचना के द्वारा पल्लवित किया गया है। लावण्यवती स्वप्न में सुदर्शन नामक अति सुन्दर पुरुष का दर्शन करके उसके विरह में व्याकुल हो जाती है। सखियाँ विविध राजकुमारों का चित्र बनाती हैं किन्तु केवल सुदर्शन के चित्र में ही लावण्यवती आकृष्ट होती है। सुदर्शन भी लावण्यवती के प्रेम में विकल होकर दिन-रात उसी का चिंतन करता है। लावण्यवती की सखी प्रेमलता योगिनी बनकर देश विदेश में राजकुमार सुदर्शन को खोजती है। विरह-विह्वला लावण्यवती केवल अस्थिमय शेष रह जाती है। वह ज्योंही आत्महत्या का उपक्रम करती है उसी समय उसकी सखी सुदर्शन के आगमन का शुभ सन्देश लाती है। अंत में दोनों का मिलन होता है। लावण्यवती का पिता सुदर्शन को बन्दी बनाकर प्राणदण्ड देना चाहता है किन्तु लावण्यवती अपने प्रियतम की प्राणरक्षा के लिए प्रस्थान करती है। किन्तु उसके पूर्व ही सुदर्शन को प्राणदण्ड दे दिया जाता है। प्रियतम की मृत्यु से दुखी होकर लावण्यवती भी आत्महत्या कर लेती है, जिसके परिणामस्वरूप लावण्यवती की माता और सखी प्रेमलता भी चिता में कूदकर जीवन-लीला समाप्त कर लेती हैं।

लीला—(सन् १९६१, पृ० ८०), ले० मैथिलीशरण गुप्त, प्र० साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी, अंक-रहित, दृश्य ६। घटना-स्थल अयोध्या का राजभवन, आश्रम, जनकपुरी की स्वयंवर सभा, जंगल।

यह गीति-नाट्य है। यद्यपि प्रकाशन से चालीस वर्ष पूर्व लिखा गया था, परन्तु तब भी उसे तदनु प्रकाशित करना ही गुप्त जी ने उचित समझा। वे स्वयं लिखते हैं "मनुष्यत्व के प्रति मेरी तब जो आस्था थी, वह अब भी है।" इसके प्रथम दृश्य में सोलह पदों की वस्तु निर्देशात्मक षोडशपदा नान्दी है, जिसमें पृथ्वीदेवी रत्न-सिंहासन पर बैठकर रामावतार की आशा से प्रसन्न हो रही हैं। वे भारत भाग्य के परिवर्तन की आशा प्रकट करती हैं तथा संसार को भारत के माध्यम से पूर्ण आदर्श चरित्र की शिक्षा देने का मन्तव्य करती हैं।

'लीला' के द्वितीय दृश्य में वन भाग में राजा दशरथ के राजकुमार राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न अपने बालसखा धीर और गम्भीर के साथ मृगया की योजना बनाते हैं। इतने में 'वीर' नामक पात्र प्रस्तुत होकर विश्वामित्र मुनि के आगमन की सूचना देता है। वे सब प्रस्थान करते हैं। तृतीय दृश्य में कुशल-प्रश्नों के पश्चात् अयोध्या के राजभवन में विश्वामित्र जी राजा दशरथ

म विभाजित।
घटना-स्थल घर, मदान, वेश्यागृह।

लैला मजनू की प्रसिद्ध प्रेम-कहानी को भारतीय जामा देकर प्रदर्शित किया गया है। वास्तव में यह कथानक इस्लाम से पूर्व चिरविश्रुत बन चुका था। इस नाटक में बल देकर लैला और मजनू को भारतीय मुसलमान सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है। इसमें नसीर, जुहरा, खैरा आदि वेश्याओं का वर्णन भी मिलता है। यद्यपि इस पारसी थियेटर के उद्देश्य से लिखा गया था किन्तु कम्पनी ने इसमें काव्य गुण की ही प्रधानता देकर इसे पसन्द नहीं किया। सम्पूर्ण नाटक मसनवी-आबद्ध है। नाटककार लम्बी भूमिका में इस नाटक की विशेषता और आवश्यकता पर बल देता है।

अभिनय-१८७६ में पूर्व पारसी थियेट्रिकल कम्पनी द्वारा अभिनीत नश-रखनवी ने १६३१ में स्टेज के लिए लिखा।

लैला मजनू की प्रेम कहानी का जो रूप प्रसिद्ध है उसका इसमें निर्वाह नहीं पाया जाता।

लैला-मजनू (सन् १६१६, पृ० १२२), लें० जनावमु० दिल साहब, प्र० ला० शकर दास सांवल दास, बुकसेलर, दरीबा कला, दिल्ली, पात्र पु० १८, स्त्री ५, अक ३, दृश्य १०, ७, ५।

इस नाटक में नाटककार ने लैला और मजनू की प्रेम गाथाएँ और उनका वार्तालाप दिखाया है।

अभिनय-प्रकाशित होते ही धूमधाम से अभिनीत।

लैला मजनू (सन् १६३० के आसपास, पृ० ६१), ले० रामशरण आनन्द, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ६, स्त्री १०, अक ३, सीन, ७, ५ [कामिक (हास्य) के तीन प्रत्येक अक में अलग हैं।] घटना-स्थल महल, जगल।

यह नाटक ईराक की प्रसिद्ध प्रेमी प्रेमिका लैला मजनू की प्रेम-कथा पर आधारित है। इसमें लैला मजनू के आपसी पवित्र मुहब्बत का ही वर्णन है। मजनू लैला के लिए पागल हो जाता है और लैला मजनू के लिए सदैव बेकरार रहती है। ईराक का शाहजादा बख्त भी लैला से अपना प्रेम दिखाते हुए कहता है—पवित्र प्रेम की कथा दिखाना ही नाटक का उद्देश्य है।

"शमा है हुस्न की रोशन,
बना है दिल यह दीवाना"

लैला उत्तर देती है—बड़ी मुश्किल में है लैला खुदा। तेरी दुहाई है।

लैला मजनू नाटक उर्फ पाक मुहब्बत (सन् १६४० के आसपास, पृ० ६४), ले० वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली', प्र० ठाकुर प्रसाद ऐण्ड सस, वाराणसी, पात्र पु० ८, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ७, ६, ६। घटना-स्थल महल, नगर।

इस नाटक में लैला मजनू का प्रसिद्ध प्रेम चित्रित है। लैला के लिए मजनू अनेक कष्ट और यातनाएँ सहकर भी अपनी मुहब्बत को पाक बनाए रखता है। साथ ही लैला भी मजनू के इश्क में अपने सारे जीवन को लगा देती है।

लोक देवता जागा (सन् १६६४, पृ० ८७), ले० रामगोपाल शर्मा, प्र० बालभारती इलाहाबाद, पात्र पु० ११, स्त्री २, अक ३, दृश्य ५, ५, ४। घटना-स्थल ग्रामीण मकान, गाँव का स्कूल।

इस सामाजिक नाटक में ग्रामीण समस्याओं को उसी वातावरण में नाटकीय रूप से चित्रित किया गया है। ग्राम्य जीवन की मूल समस्या निर्धनता और अशिक्षा को नाटककार ने सहकारिता के द्वारा दूर करने का प्रयास किया है। मठ लोग मुकदमेबाजी छोड़कर समाज के साथ हिल-मिलकर सभी के सुख-दुख में साझीदार बन सेवा कार्य करने के लिए तैयार हो जाते हैं। गाव का जीवन सामूहिक परिवार का एक अग बन जाता है।

लोकमान्य (वि० २०१४, पृ० ८४), ले० : रामबालक शास्त्री ; प्र० : साहित्य मंदिर, वाराणसी ; पात्र : पु० २१, स्त्री नहीं ; अंक : ३ ; दृश्य-रहित ।
घटना-स्थल पूना का पोस्ट ऑफिस, व्यायामशाला, पूना केसरी कार्यालय ।

इस जीवनीपरक नाटक में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का अगाध देश-प्रेम चित्रित किया गया है। विदेशी शासन में सार्जेंटों द्वारा नागरिकों पर किये अत्याचार को सहन न करके बाल-गंगाधर सार्जेंटों से लड़ाई कर लेते हैं। इस कारण सिटी कॉलेज से बालगंगाधर को निकाल दिया जाता है। सप्रे, परांजपे तथा आगारकर बाल के कर्मठ साथी हैं, जो बाल की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। सिटी कॉलेज से निकलने के बाद कॉलेज के प्रो० चर्बे द्वारा बाल के पिता महीधर को पुत्र के निष्कासन का पता चल जाता है। फिर भी बाल के कर्मठ पिता उससे दुखी नहीं होते बल्कि वे पुत्र के किये गये कामों से बड़े प्रसन्न होते हैं। आगारकर की मदद से बाल गंगाधर का दाखिला फर्ग्यूसन कॉलेज में हो जाता है। वे बड़ी ही तीव्र बुद्धि के तेजस्वी युवक हैं। वे अपनी परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद अपने कर्मठ साथियों के साथ पूना में एक विद्यालय की स्थापना करते हैं जिसका नाम महाराष्ट्र विद्यालय रखा गया। इसमें स्वदेशी शिक्षा के साथ अंग्रेजों के हाथ से भारत को मुक्त कराने की शिक्षा दी जाती है। धीरे-धीरे बालगंगाधर अपने कर्मठ साथी सप्रे, आगारकर, खापर्डे, डावरे तथा रानाडे के साथ स्वतन्त्रता की लड़ाई शुरू कर देते हैं। पूना के महाराष्ट्र विद्यालय में बाल गंगाधर तिलक के भाषण से जनता मंत्र-मुग्ध होकर उन्हें लोकमान्य की पदवी देती है। इस स्वतंत्रता की लड़ाई में उन्हें एक बार ६ वर्ष की सजा हो जाती है लेकिन उनकी अनुपस्थिति में उनके अनुगामी देश के काम को सुचारु रूप से चलाते हैं। जेल से लौटने के बाद लोकमान्य तिलक अपने साथियों के साथ इस स्वतंत्रता की लड़ाई को और भी आगे बढ़ाते हैं तथा भारतीय नागरिकों में स्वातंत्र्यभाव उत्पन्न करते हैं। समस्त भारतीय नागरिक लोकमान्य तिलक के विचारों का श्रद्धा से स्वागत करते हैं।

लौट के बुद्धू घर को आये (सन् १९६२, पृ० ६४), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : २; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : फिल्म-स्टूडियो।

यह एक हास्यप्रद नाटक है। स्टूडियो में फिल्म के माध्यम से हास्य का चित्रण किया गया है। छबीला अपने स्टूडियो में तरह-तरह की फिल्में रखता है और उनका रेट बहुत बढ़ाता जाता है। सी. आई. डी. मि० चोपड़ा एक केस के सिलसिले में स्टूडियो आते हैं जहाँ उन्हें सभी मामले का पता तो चल जाता है किन्तु घसीटा के वाक्-चातुर्य से वे स्वयं बुद्धू बन जाते हैं और उनके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता।

लौह देवता 'सृष्टि की साँझ और अन्य काव्य रूपक, में संकलित रेडियो गीति-नाट्य, (सन् १९५४, पृ० ६४), ले० : सिद्धनाथ कुमार; प्र० : पुस्तक मन्दिर, बक्सर; पात्र : पु० ३, स्त्री १; अंक-दृश्य-रहित।

'लौह देवता' (यंत्रयुग तथा तज्जन्य सामाजिक विषमता की ओर संकेत करता है। प्रायः कहा जाता है कि यंत्र सभ्यता के विकास ने मानवीय श्रम को बचाया है। मशीनों के द्वारा अल्प समय में अधिक और परिष्कृत उत्पादन संभव हो गया है किन्तु फिर भी जन-सामान्य इन उपलब्धियों एवं सुविधाओं से वंचित हैं। वह आज भी बेकारी, भूख और मानसिक संत्रास से ग्रस्त है। यांत्रिक विकास के मूल में मुट्ठीभर पूंजीवादी हैं, जिन्होंने अर्थबल के आधार पर श्रमिकों का श्रम क्रय करके उत्पादन पर अपना एकाधिपत्य जमा लिया है। उत्पादन का असमान वितरण ही सामाजिक विषमता तथा तनाव का मूल कारण है।

गीति-नाट्य के आरम्भ मे समवेत स्वर मे जन-समुदाय पृथ्वी पर व्याप्त विपन्नता के परिहार हेतु लौह-देवता की प्रार्थना करता है। लौह-देवता प्रसन्न होकर उन्हे नवीन शक्ति प्रदान करता है। यह शक्ति स्वर्ण-मुद्राओं के द्वारा पुजारी खरीद लेता है और यन्त्रो पर सर्वाधिकार प्राप्त करता है। यन्त्र-विकास के साथ साथ श्रमिक भूखो मरने लगते है, जिसके परिणामस्वरूप जनता विद्रोह कर बैठती है। यान्त्रिक सभ्यता का विध्वस करने को उद्यत जनता को लौह-देवता समझाता है कि इस सामाजिक विषमता का मूल यन्त्रो मे न होकर समाज मे ही है। इस प्रकार अर्थ-वैषम्य के मूल की खोज मे प्रस्तुत गीति नाट्य समाप्त होता है।

व

वकील साहब (सन् १९३५, पृ० १०९), ले० नारायण विष्णु जोशी, प्र० हिंदी ज्ञान मन्दिर, बम्बई, पात्र पु० ८, स्त्री २, अक ३, दृश्य-रहित।
घटना स्थल बैठक का कमरा।

इस सामाजिक नाटक मे मजदूर वर्ग की जागृति और आन्दोलन की जीती-जागती तस्वीर चित्रित है। बैरिस्टर मधुसूदन काग्रेस पक्षी वकील हैं किन्तु व्यवसाय के कारण उन्हें मिल-मालिको के भी मामलो की पैरवी करनी पडती है। शर्माजी एव रघुनाथ वाम-पक्षी मजदूर नेता हैं। वकील साहब मजदूरो के खिलाफ मिल मालिको की पैरवी करते हैं किन्तु उनकी पत्नी शारदा वकील साहब के इस आचरण से दुखी रहती है। मजदूर और मालिक के बीच होनेवाले सघर्ष से साम्प्रदायिक नाजायज फायदा उठाने है। व इस घटना को हिंदू-मुसलमान दगे का रूप देना चाहते हैं और भण्डारी की सहायता मे वकील को प्रलोभन देकर पैरवी के लिए तैयार कर लेते है। शारदा पति द्वारा स्वीकार किये हुए पाँच हजार रुपये के चैक को टुकडे-टुकडे कर देती है। अपने पति के विचारो से दुखी शारदा सात दिन उपवास भी करती है।

इधर मिल-मालिक मजदूर नेता रघुनाथ को मिलाने के लिए खान के हाथ लिफाफे मे रुपया भरकर उसकी पत्नी चन्द्रकान्ता के पास भेजता है। किन्तु चन्द्रकान्ता रुपये लेने से इन्कार कर देती है। वह कहती है कि "खान साहब, हिन्दू-मुसलमान एक हैं, उनमे धर्म का अन्तर हो सकता है किन्तु मानवता का तो पालन करना ही होता है।" खान भी उसकी बातो से प्रभावित होता है और भविष्य मे ऐसा काम न करने की शपथ खाता है। शर्माजी, शारदा तथा रमजान आदि मजदूर नेता रघुनाथ की मदद से मिल मे हडताल करने की बात सोचते हैं। भण्डारी इसकी सूचना पुलिस को देता है, जिससे उन्हें गिरफ्तार किया जाता है। पुलिस सुपरिण्टेडेण्ट मिल मालिक और भण्डारी के कामो का पता लगाते हैं जिससे उन्हे भी पता चल जाता है कि भण्डारी मिल-मालिको से मिलकर मजदूरो को परेशान करता है। वे उसको गिरफ्तार करके मजदूरो के सामने ले जाते हैं। मजदूर इन्कलाब जिन्दाबाद और शारदा जिन्दाबाद का नारा लगाते है। इसी के साथ नाटक समाप्त होता है।

वचन का मोल (सन् १९५१, पृ० ७८), ले० उमाशकर बहादुर, प्र० बेटर बुक्स कम्पनी, पटना, पात्र पु० १४, स्त्री ४, अक ३ दृश्य ३ ५, ४।
घटना-स्थल उद्यान।

द्रौपदी के चीर-हरण की कथा को आधुनिक आलोक मे देखने का प्रयास किया गया

है। पद्मा और प्रमिला नामक आधुनिक नारियों को इसमें स्थान दिया गया है। इन्हीं दोनों के वार्तालाप से प्रस्तावना के रूप में युधिष्ठिर की राजगद्दी का प्रसंग आता है। इसमें शकुनी और दुर्योधन की कूटनीति द्वारा पांडवों के वनवास की कथा वर्णित है। धर्मराज युधिष्ठिर का जूआ में हारना दुःख का कारण बनता है। वनवास के समय कुन्ती अपने बेटों से लिपटकर रोती है। और अन्त में अपने सभी पुत्रों को युधिष्ठिर के साथ वन जाने की आज्ञा देती है। अर्जुन को आशीर्वाद देते हुए कहती है—"मेरे वीर बेटे ! तुम्हारी वीरता के लिए वन नहीं, नगर ही उपयुक्त स्थान है। बेटा ! किन्तु जाओ, अपने भाई धर्मराज के साथ जाओ। उन्हीं के धर्म से तुम्हारा कल्याण होगा।"

वचन वैष्णव (सन् १९६५, पृ० ७२), ले० : रूपकान्त ठाकुर ; प्र० : पूनम प्रकाशन हरिहर पुर, दरभंगा; पात्र : पु० ७, स्त्री १; अंक : १; दृश्य : १०।
घटना-स्थल : रास्ता, स्कूल, दिनेश का घर, प्रार्थना, सिमरिया घाट, पटना जंक्शन एवं महेश का घर इत्यादि।

इस प्रहसन के माध्यम से समाज के विभिन्न पक्षों पर व्यंग्य करने का प्रयास किया गया है। आज के युग में मुफ्त में काम करवाना तो आवश्यक-सा हो गया है। विद्यार्थी बिना दक्षिणा दिये हुए विद्या अध्ययन का आकांक्षी है तो रोगी बिना खर्च किये रोग का निदान चाहता है। ऐसी स्थिति में कैसे समाज का कल्याण हो सकता है ? परम्परा के प्रति आस्तिकता की भावना इतनी जकड़ी हुई है कि लोग उसके बंधन से विमुक्त भी नहीं होना चाहते हैं। इसी के फलस्वरूप युवती खाने के पश्चात् प्रायश्चित्त के लिए गंगा-किनारे जाते हैं। इसकी पृष्ठभूमि में नायक चीनी जासूसों के उस जत्थे को पकड़ने में समर्थ हो सका है जिसके लिए वह वर्षों से हैरान था।

वतन की आवरू (सन् १९६९, पृ० ६४), ले० : ज्ञानदेव अग्निहोत्री; प्र० : उमेश प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली; पात्र : पु० ९, स्त्री ३; अंक : २; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : मस्जिद के पीछे चहार दीवारी और पहाड़ियाँ।

पाकिस्तानी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर आधारित इस नाटक में जासूसों की कार्य-कुशलता और आत्म-बलिदान चित्रित किया गया है। महबूब नामक जासूस युद्ध के समय सीमाप्रान्त के पास आकर देश-भक्त इलाही बख्श और परवीना जैसी निडर युवतियों को फुसलाता है। रहस्योद्घाटन हो जाने पर वह अपनी जान दे देता है किन्तु मेजर जावेद जैसे कमीने शत्रुओं को अपना रहस्य नहीं बताता। नाटक राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है।

वत्सराज (सन् १९५०, पृ० १४२), ले० : लक्ष्मीनारायण मिश्र; प्र० : हिन्दी भवन जालन्धर और इलाहाबाद; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : राजमहल, वन, वाटिका, आश्रम।

वासवदत्ता का पुत्र कुमार तथागत के उस श्रमण-धर्म में दीक्षित हो जाता है, जिसे महाराज उदयन देश के पौरुष और कर्म को हानि पहुँचाने वाला समझते हैं। उदयन युद्ध में वीर धर्म और गीता-उपनिषद् के कर्मयोग का मानने वाला है। उनकी अनुमति बिना उनके पुत्र को श्रमण-धर्म की शिक्षा देने वाले गौतम कौशाम्बी आ रहे हैं और प्रजा उनके स्वागत का आयोजन कर रही है। इस प्रकार राजा और प्रजा के धार्मिक विचारों में असामंजस्य होने के कारण एक जटिल समस्या खड़ी होने की सम्भावना है, किन्तु दूरदर्शी उदयन उसे सुलझाने के लिए आदेश देता है—"मेरे सैनिक कोई ऐसा कार्य न करें जिससे तथागत तथा श्रमणों का अपकार हो।" किंतु रानी वासवदत्ता को संघाराम का भविष्य अन्धकारमय लगता है तब वह स्पष्ट कहती है—"संघारामों में कुमार-कुमारी छिपकर प्रेम करेंगे। वहाँ भी शिशु...के हाँ...के हाँ करेंगे, उनका पिता कौन है, यहाँ कोई नहीं

जाएगा। ऐसी दशा मे इस देश की नाव डूब जाएगी।" उदयन गौतम के प्रति श्रद्धा रखते हैं किन्तु उनके धर्म को कायरो का धर्म कहते हैं। यौगन्धरायण भी तथागत के धर्म को नष्ट करना चाहता है। उसका मत है कि जो मृत्यु से डरकर भागा वह मृत्युञ्जयी कैसे हो सकता है? इस नाटक मे उदयन तेजस्वी, प्रजापालक, कर्मयोगी वीर दिखाया गया है। उनके सम्बन्ध की घटनाओं का मनोवैज्ञानिक मानवीय और बौद्धिक रूप उपस्थित करते हुए नाटककार ने तप और योग का समन्वय दिखाया है जो भारतीय संस्कृति का मेरुदण्ड है।

वफाती चाचा (सन् १९३९, पृ० १०८), ले० रामनरेश त्रिपाठी, प्र० हिन्दी मन्दिर, प्रयाग, पात्र पु० १७, स्त्री० ६, अक ३, दृश्य ४।
घटना स्थल गाव।

इस सामाजिक नाटक का मूल स्वर तो हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य ही है पर लेखक ने तत्कालीन गाधीवाद का पोषण भी सकेता द्वारा कर दिया है। रतन पाण्डे गाँव के जमीदार और वफाती मिया उनके एक गरीब पड़ोसी हैं। रतन पाण्डे अपने पुत्र-जन्म के उपलक्ष्य मे आयोजन करते हैं। वे हिन्दू मुसलमान दोनो को आमन्त्रित करते हैं और एक साथ बैठाकर उन्हे भोजन कराते हैं। वफाती उनके घर के सदस्य की तरह रहने लगता है। पाडे जी की स्त्री वफाती की स्त्री को कुछ न कुछ दे दिया करती हैं जिससे उनका काम चलता रहता है। पाडे जी कुछ खेत भी जोतने को उसे दे देते है जिससे वफाती अपनी रोटी-रोजी चलाता है। अन्त मे कुछ कारणो से कतिपय मुसलमान युवक रतनपाडे का विरोध करने लगते हैं और यह विरोध बड़ा उग्र हो जाता है। वफाती अपनी जान की बाजी लगाकर रतन पाडे के पक्ष मे मुसलमानो से सघर्ष करता है और यह दिखा देता है कि हिन्दू मुस्लिम एक है। उनमे वैमनस्य नही होना चाहिए। बीच-बीच मे स्वस्थ सामाजिक परम्पराओ की स्थापना के लिए गाधीवाद का आधार लिया गया है।

वरदान (सन् १९६७, पृ० १०६), ले० ललित सहगल, प्र० समकाल प्रकाशन, दीवान हाल, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अक २, दृश्य ३, ३।
घटना स्थल गाव, शहर, मतदान केन्द्र।

इस सामाजिक नाटक मे मताधिकार जैसे ज्वलत विषय का यथार्थ चित्रण है। मगल चौधरी का अपने गाँव मे पूरा आतक है और वह हर साल अपनी इच्छा से उस उम्मीदवार को विजयी बनाने का प्रयत्न करता है जो उसे दस-पन्द्रह हजार रुपये दे देता है। एक बार बलदेवराज और रासबिहारी नामक दो उम्मीदवार चुनाव के लिए खडे होते हैं। मगल चौधरी बलदेवराज के पक्ष मे चुनाव प्रचार करता है तथा साथ ही साथ वह पूरन की लडकी रुक्मिनी को बदनाम करने का प्रयास करता है और इसका झूठा आरोप रासबिहारी पर लगा देता है। रुक्मिनी का मगतर बिरजू उसकी इस चालाकी को समझ जाता है। वह गाव वालो से अपना वोट योग्य तथा ईमानदार उम्मीदवार को देने के लिए कहता है। बिरजू गाँव वालो को मगल के छिपे कारनामो तथा कुकृत्यो से अवगत कराता है। वह सभी ग्रामीणो को वोट का उद्देश्य तथा वोट देने का ढग बताता है। उसके अथक प्रयास से मगल का प्रत्याशी बलदेवराज हार जाता है और सच्चे उम्मीदवार रासबिहारी की जीत होती है।

वरमाला (वि० १९८२, पृ० १०४), ले० गोविन्द वल्लभ पन्त, प्र० गगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ, पात्र पु० ३, स्त्री २, अक ३, दृश्य ४, २, ३।
घटना-स्थल स्वयवर सभा, जगल।

इस नाटक की नायिका वैशालिनी नायक अवीक्षित को न चाहते हुए भी उसी के गले मे वरमाला डालती है—ऐश्वर्य के लिए नही, राज्य वैभव के लोभ से नही, गुरुजन की मान-रक्षा के लिए नही बिना किसी के दबाव के अपनी इच्छा से वह 'घृणा' को प्यार करती है। लेखक ने बुद्धि-चातुर्य से प्रेम

को घृणा में और घृणा को प्रेम में परिवर्तित किया है। नायक अर्वाचिन के प्रेम निवेदन पर वैतालिनी उसे ठुकरा देती है। नायक स्वयंवर-सभा से उसका हरण करता है और जब वह उससे प्रेम करने लगती है तो नायक नायिका को ठुकरा देता है। नायिका जंगल में भटकती है। कामुक राक्षस उसका पीछा करता है। शिकार करता हुआ जंगल में नायक, नायिका की रक्षा करता है और दोनों एक-दूसरे से मिल जाते हैं।

वर्धमान महावीर (सन् १९५०, पृ० ७९), ले० : ब्रजकिशोर 'नारायण'; प्र० : श्री अजन्ता प्रेस, लिमिटेड, नया टोला, पटना; पात्र : पु० १२, स्त्री २; अंक-दृश्य-रहित। घटना-स्थल : क्षत्रिय सिद्धार्थ का राज प्रासाद, पहाड़ी प्रांत, गाँव।

यह सांस्कृतिक नाटक भगवान् महावीर के चरित्र पर आधारित है। उनके जीवन-चरित्र के बारे में नाटककार का कथन "भगवान् महावीर का जीवन शुरु से आखीर तक ऐसा रहा है जैसे एक सेनापति ऊँचे मंच पर खड़ा होकर घटनाओं, दृश्यों और पात्रों रूपी सैनिकों द्वारा सलामी ले रहा है। सभी घटनाएँ, पात्र, पात्रियाँ, दृश्य आदि व्यक्ति का अभिरूप लेकर आते हैं और भगवान् महावीर के चरित्रोत्कर्ष में चार चांद लगाकर चले जाते हैं।"

वैशाली के भगवान् महावीर श्रमण-जीवन धारण कर विरक्त हो जाते हैं। संन्यासी के उदात्त जीवन को लोक-रंजित करके प्रभावित करना ही इस नाटक का मूल उद्देश्य है।

अभिनय—इसका प्रदर्शन कई बार हो चुका है।

वर्षकार (वि० २००७, पृ० ४९), ले० : उमाशंकर बहादुर; प्र० : सेंटर बुक्स कम्पनी, पटना; पात्र : पु० ५, स्त्री १; अंक : ३; दृश्य : ३, ४, ५। घटना-स्थल : मगध राज्य, वैशाली राज्य।

इस ऐतिहासिक नाटक में वर्षकार की कूटनीति दिखाई गई है।

मगध-अधिपति अजातशत्रु वैशाली-गणतन्त्र पर आधिपत्य जमाने के लिए सतत प्रयत्नशील है। वैशाली-आक्रमण के लिए अजातशत्रु प्रत्यक्षतः गंगा के निकटवर्ती प्रदेशों—जहाँ दोनों राज्यों का सम्मिलित अधिकार है—की समस्त खनिज-सम्पत्ति पर वज्जियों (वैशाली वासियों) द्वारा बलात् अधिकार करने का प्रबल विरोध करता है, परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से वह वैशाली की अनिंद्य सुन्दरी राज्य-नर्तकी अम्बपाली का अपहरण करना चाहता है। युद्ध में वज्जियों को परास्त करने के लिए अजातशत्रु के कई प्रयास असफल हो जाते हैं। वैशाली का महामंत्री वर्षकार अजातशत्रु की तीव्र उत्कट इच्छा को जानकर कपट नीति से कार्य करता है। अजातशत्रु वर्षकार को अपमानित कर देश-निष्कासित करा देता है। दण्डित वर्षकार वैशाली में आश्रय लेता है। वैशाली नगरवासी वर्षकार को सम्मानजनक पद, 'विनिश्चय महामात्य', पर अधिष्ठित करते हैं। वहाँ रह कर वर्षकार शनैः-शनैः वज्जियों के सहज संगठन में फूट डाल देते हैं जिससे उचित समय पर अजातशत्रु वैशाली पर आक्रमण कर उसे जीत लेता है, परन्तु आम्रपाली के अभाव में वह जीत कर भी हारे सदृश हो जाता है। वैशाली में राजपाल नियुक्त कर वह हारे हुए से विक्षुब्ध लौट जाता है।

वर्षा मंगल (सन् १९५२, पृ० ३९), ले० : ब्योहार राजेन्द्र सिंह; प्र० : मानस मंदिर, जबलपुर; पात्र : पु० ८, स्त्री ३; अंक-रहित; दृश्य : ४। घटना-स्थल : व्रज, इन्द्रपुरी।

इस रूपक में ग्रीष्म, वर्षा, पृथ्वी आदि को पात्र रूप में चित्रित किया गया है। वर्षा-ऋतु आनन्ददायिनी ऋतु बताई गई है। ग्रीष्म-ऋतु के बाद शीतलता का संवाद लेकर आने वाली वर्षा प्राणि-मात्र में शान्ति और आनन्द का संचार करती है। पंचतत्व जड़ होते हुए भी इस आनन्ददायक काल में चेतन और सरस हो उठते हैं। वर्षा-जलदेव

इन्द्र के गजल दूत आपस मे विवाद करते हैं। इसी समय व्रज मे श्रीकृष्ण इन्द्र की पूजा भी बन्द करते है। इससे इन्द्र को क्षोभ उत्पन्न होता है। पृथ्वी जिस प्रकार क्षमा और सहनशीलता का प्रतीक है उसी प्रकार विद्युत प्रकृति के रोष की। सजल सरस बादल वर्षाकाल के सौन्दर्य और आनन्द को व्यक्त करते हैं मानव हृदय मे जो अनुराग उत्पन्न होता है। राधामाधव की प्रेम लीला उसी को प्रदर्शित करती है।

बलिदान (सन् १६४०, पृ० २६), ले० सत्य प्रकाश पाटनी, प्र० मिलन प्रेस, इलाहाबाद, पात्र पु० ६, स्त्री नही, अक ५, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल गाँव, मन्दिर।

इस नाटक मे ईश्वरभक्ति को महत्त्व दिया गया है। इस मे सुरेन्द्र और क्रिस्टोफर को लेकर लेखक ने ससार की पाप-वासना स दूर रहते तथा मरने से पूर्व हृदय को ईश्वर का पवित्र मन्दिर बनाने का मार्ग दर्शाया है।

वसन्त तिलका (सन १६६५, पृ० १८६), ले० रूपवती किरण, प्र० सन्मति प्रकाशन, जबलपुर, पात्र पु० ५, स्त्री ६।
घटना स्थल अगदेश, कुभकटक द्वीप।

इस पौराणिक नाटक का आधार प्राकृत वसुदेव हिण्डी और जिनसेन कृत सस्कृत हरिवश पुराण है।

अगदेश मे भानुदत्त नामक एक सेठ के घर उसकी पत्नी सुभद्रा से एक पुत्र पैदा होता है जिसका नाम चारुदत्त रखा जाता है। बड़े होने पर चारुदत्त का विवाह मित्रवती से होता है किन्तु वह विद्या व्यसनी होने के कारण पत्नी के प्रति उदासीन रहता है। अतएव उसकी मा पत्नी के प्रति उसे आकृष्ट कराने का कार्य रुद्रदत्त को सौंपती है। वह चारुदत्त का परिचय नगर की प्रसिद्ध वेश्या वसन्त तिलका से कराता है। धीरे धीरे दोनो मे प्रेम हो जाता है। चारुदत्त वसत तिलका के लिए अपना धन पानी की तरह बहाने लगता है। एक दिन वसत तिलका की माँ वसत माला उस अचेतावस्था मे घर से निकाल देती है। वह अपने घर पहुँचता है, जहाँ पिता भानुदत्त अपने पुत्र के कुसगति मे पड़ने के कारण विरक्त हो जाते है। माता और पत्नी दीन-हीन अवस्था म दुख भोग रही होती हैं। अत चारुदत्त अपनी स्त्री के बचे हुए गहने लेकर व्यापार के लिए वहाँ से निकल पड़ता है। अनेक देशो की यात्रा करने के बाद कुभकटक नामक द्वीप मे कर्कोटप पर्वत पर उसकी मुलाकात एक मुनि से होती है जिसका मुनि होने स पूर्व चारुदत्त ने बड़ा उपकार किया था। मुनि चारुदत्त को पहचान कर अपने विद्याधर पुत्रो से उसका परिचय कराता है। फिर वे लोग चारुदत्त को विपुल धन देकर घर को विदा करते हैं। यात्रा से लौटने के बाद चारुदत्त अपनी वियोगिनी पत्नी मित्रवती से भेंट करता है, जहाँ वसन्त तिलका भी उनके वियोग मे पीडित है। दानो के प्रेम को देखकर चारुदत्त पुन उनसे प्रेम करने लगता है तथा वसत तिलका मित्रवती और चारुदत्त की सेवा मे रहकर अपना जीवन निर्वाह करती है। इसने वेश्या-जीवन मे भी दाम्पत्य प्रेम को ही सर्वाधिक महत्त्व दकर अपने पवित्र प्रेम का परिचय दिया है।

वसन्त तिलका कुल मर्यादा की रक्षा के लिए वेश्या जीवन से विरक्ति लेकर चारुदत्त के साथ एक साध्वी नारी का जीवन व्यतीत करती है और दिखा देती है कि वेश्या को भी पति प्रेम मिले तो वह भी शुद्ध नारी बन सकती है। मित्रवती से वह तनिक भी घृणा नही करती वरन् उसमे प्रेम तथा सहयोग की आकाक्षा करती हुई चारुदत्त के कल्याण की चिन्ता मे रहती है।

वागीश्वर (सन् १६७०, पृ० १६२), ले० ओकारनाथ दिनकर, प्र० कृष्ण ब्रदर्स, कचहरी रोड, अजमेर, पात्र पु० ६, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ७, ६, ७।
घटना स्थल अवती का राजमहल, मुन्जवन, तैलगण।

अभीष्ट है।

वासवदत्ता का चित्रलेख (सन् १९५०, पृ० २१४), ले० भगवतीचरण वर्मा, प्र० भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, पात्र पु० १०, स्त्री ४, अंक-रहित, दृश्य ६१ ऐतिहासिक सिनारियो। घटना-स्थल मथुरा, काशी आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक में वासवदत्ता की जीवन-झाँकी चित्रित है। वासवदत्ता एक प्रभावशाली नर्तकी तथा मथुरा के राजा क्षेमेन्द्र की प्रेयसी है। उपगुप्त नामक एक बौद्ध भिक्षु पर वासवदत्ता मोहित हो जाती है, किन्तु उपगुप्त उसकी उपेक्षा करता है। इस पर वासवदत्ता एक सेठ धनराज से प्रणय करती है। सेठ की पत्नी उपगुप्त से अपने पति को वासवदत्ता से छुड़ाने के लिए कहती है। उपगुप्त उसकी मदद करता है। रुष्ट वासवदत्ता क्षेमेन्द्र के पास जाकर नगर के सभी बौद्ध भिक्षुओं को बाहर करती है और साथ ही कुछ बौद्ध भिक्षुओं की नरबलि भी करवाना चाहती है। किन्तु क्रुद्ध जनता उसे घायल कर नगर के बाहर फेंक देती है। उपगुप्त आकर उसका उपचार करता है।

विकलांगों का देश (सन् १९६४, पृ० ८०), ले० सिद्धनाथ कुमार, प्र० पुस्तक मन्दिर, बक्सर, पात्र पु० ११, स्त्री १, अंक-दृश्य रहित।

इस रेडियो गीति-नाट्य में आज की अव्यवस्थित सामाजिक स्थिति के प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त किया गया है। बीसवीं शताब्दी का मानव अपनी क्षुद्र सीमाओं में व्यक्तित्व हीन एक आकार-मात्र रह गया है। फलतः पूर्णता की खोज में प्रत्येक व्यक्ति अपने में अपूर्ण दृष्टिगोचर होता है। कदाचित् इसीलिए वह सामाजिक अव्यवस्था तथा असंगतियों से टकराकर परिस्थितियों से समझौता करने को विवश हो गया है। यही कारण है कि वैज्ञानिक बनने का आकांक्षी व्यक्ति पुलिस अधिकारी बनता है और कवि कलाकार एक मजदूर। ये सभी-समस्याएँ मध्यम वर्ग की हैं, जिनके लिए वर्तमान मानसिक सन्त्रास तथा भविष्य गहन अंधकार मात्र रह गया है। इस कुंठा, बेकारी घुटन और शून्य से विक्षुब्ध मानव जहाँ रहते हैं—वह विकलांगों का देश है। लेखक के अनुसार सम्पूर्ण पृथ्वी ही विकलांगों का देश है।

विकास (सन् १९४१, पृ० १००), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० हिन्दी साहित्य सदन, इलाहाबाद, पात्र पु० १, स्त्री २, अंक-दृश्य रहित। (एक नाटकीय संवाद है) घटना-स्थल शयनागार।

एक आधुनिक शयनागार में दो पलंग बिछे हैं और एक सुन्दर युवक तथा एक सुन्दरी युवती निद्रा निमग्न हैं। कमरे में बिजली की नीली बत्ती का प्रकाश है। एकाएक अँधेरा हो जाता है। थोड़ी देर पश्चात् पुनः प्रकाश फैलता है और शयनागार के स्थान पर क्षितिज दिखाई देता है। क्षितिज पर चन्द्रमा का प्रकाश फैला हुआ है। दूर पर धुँधली पर्वत-श्रेणी झलकती है। जिस पर वृक्ष, पुष्प-गुच्छ और फल-समूह दिखाई देते हैं। इसी समय गान होता है।

गायन के अन्तिम चरण में क्षितिज पर उठता हुआ एक श्वेत शरीर दृष्टिगोचर होता है। इसी समय एक नील वर्ण शरीर उतरता है। दोनों आपस में आलिंगन करते हैं। पहला शरीर एक गौर वर्ण की सुन्दर स्त्री का है। इस प्रकार नाटक का कथानक आगे चलता है।

नाटक में एक पुरुष, उपर्युक्त देखा हुआ सम्पूर्ण नाटक सुनाता है। इस काल्पनिक नाटक में स्वप्न सदृश दीखे हुए अनेक मार्मिक दृश्यों को एक सूत्र में पिरोकर नवीन ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

विक्रम विलास (सन् १९११, पृ० ८०), ले० विनायक प्रसाद तालिब, प्र० बालीवाला, खरशेद जी मेहरवान जी पारसी आरमनेज, वर्धमान प्रिन्टिंग वर्क्स, बम्बई, पात्र पु० ७, स्त्री ४, अंक के स्थान पर

बाब ३।
घटना-स्थल : उज्जैन नगर।

इस ऐतिहासिक नाटक में राजा विक्रम की उदासीनता दिखाई गई है। उज्जैन नगर के राजा विक्रम करनाटकी कन्या मदन मंजरी से गन्धर्व विवाह कर, उसके पिता द्वारा दिए गए शाप के कारण भूल जाता है लेकिन अपने पुत्र एवं मदनमंजरी को सामने देख पुनः स्मृति लौट आती है, और उसे अपना लेता है। नाटक की दूसरी कथा में राजा विक्रम के मित्र ठाकुर लेखराज की कन्या मनोरमा त्रियाचरित्र को सब चरित्रों से बड़ा प्रमाणित करती है। वह अपने कथन की पुष्टि राजासहित सातों दरबारियों को अधा सिद्ध करके करती है। नाटक में पुनलियों की भर्त्सना, प्रश्न तथा राजा के उत्तर चमत्कारिक है। प्रश्नोत्तरों के माध्यम से प्रजा तथा राजा के लिए न्याय, दया, क्षमा आदि गुणों की अनिवार्यता प्रतिपादित की गई है।

विक्रमादित्य (सन् १९६३, पृ० ८९), ले० : उदयशंकर भट्ट; प्र० : हिन्दी भवन, जालंधर, इलाहाबाद; पात्र : पु० १०, स्त्री २; अंक : ५; दृश्य : ३, ३, ५, ३, ६।
घटना-स्थल : रामेश्वरम, चोल, कांची, गौड़, सिंहल।

इस ऐतिहासिक नाटक में राजा विक्रमादित्य की जीवन-झाँकी चित्रित है।

सोमेश्वर, विक्रमादित्य और जयसिंह नामक तीन राजकुमार हैं। विक्रमादित्य इन सब में चतुर एवं बलशाली कहा जाता है। विक्रमादित्य पिता का राज्य बढ़ाने की लालसा में चोल, पांड्य, कांची, गौड़, कामरूप, सिंहल आदि प्रदेशों को जीतकर लौटते समय अपने पिता की मृत्यु का समाचार पाता है जिससे वह मूर्छित हो गिर पड़ता है। सोमेश्वर बड़ा होने के नाते राज्याधिकारी बनता है, परन्तु उसके मन में विक्रमादित्य का भय खटकता रहता है। इसी बीच में चोल-नरेश अपनी सुन्दरी लड़की चन्द्रलेखा का विवाह विक्रमादित्य से कर देता है। यह विवाह सोमेश्वर की ईर्ष्या रूपी अग्नि में घृत का कार्य करता है। भयवश लोग विक्रमादित्य के नाम से दूर रहने लगते हैं। विक्रमादित्य के पास भी सेना है। चोल राज्य पर आक्रमण हो जाने से विक्रमादित्य उसकी सहायता के लिए अपनी सेना लेकर चल देता है। इधर सोमेश्वर भी विक्रमादित्य को नष्ट करने की धुन में है। सोमेश्वर द्वारा किए गए कुचक्रों में विक्रमादित्य संकट में पड़ जाता है। अवसर पाते ही एक सैनिक के रूप में चन्द्रलेखा सोमेश्वर का वध कर देती है। भाई की घातक चन्द्रलेखा को विक्रमादित्य अज्ञान में मार देता है। अन्त में विक्रमादित्य ही राज्य का उत्तराधिकारी बन जाता है।

विक्रमोर्वशीय (सन् १९५०, 'कालिदास' में संगृहीत रूपक), ले० : उदय शंकर भट्ट; प्र० : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली; पात्र : पु० ८, स्त्री० ७; अंक-दृश्य-रहित।

महाकवि कालिदास के 'विक्रमोर्वशीय' नाटक में वर्णित उर्वशी पुरुरवा की कथा पर आधारित यह एक संगीत-रूपक है। इसमें पुरुरवा और उर्वशी की प्रणय कथा वर्णित है।

विग्रहराज विशालदेव (सन् १९५७, पृ० १४५), ले० : ओंकारनाथ 'दिनकर'; प्र० : दत्त ब्रदर्स, अजमेर; पात्र : पु० १७, स्त्री ८; अंक : ३; दृश्य : ५, ७, ७।
घटना-स्थल : इन्द्रपुरी।

इस ऐतिहासिक नाटक में विग्रहराज विशालदेव की दिग्विजय एवं म्लेच्छ राज को परास्त करने की गौरव-गाथा वर्णित है। सपादलक्ष परमभट्टारक आल्हादेव की तृतीय पत्नी इनाविश अपने पति की हत्या कर देती है, ताकि उसके सौतेले पुत्रों का राज्य-सिंहासन पर अधिकार न हो सके किन्तु विग्रहराज षड्यन्त्रकारियों को पकड़ कर उचित दण्ड देते हैं। वह देश में म्लेच्छों का हमला होने पर उसका प्रतिकार करते हैं और पुनः दिग्विजय के उद्देश्य से चल पड़ते हैं। अन्त में सम्राट् इन्द्रपुर की कन्या देसलदेवी से

उनका विवाह हो जाता है।

विचित्र नाटक (सन् १७०० के आसपास, पृ० ७६), ले० गुरु गोविन्द सिंह, प्र० गुरुद्वारा शिरोमणि प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर, पात्र पु० ५, स्त्री नहीं, अंक के स्थान पर १४ अध्याय हैं।
घटना-स्थल युद्धक्षेत्र।

अवतारवाद के सिद्धान्त को स्पष्ट करने के लिए यह ग्रंथ लिखा गया। इसमें दैवी और आसुरी शक्तियों का युद्ध दिखाकर अवतारवाद का सामाजिक महत्व सिद्ध किया गया है।

इस जीवनीपरक नाटक में नाटककार ने स्वयं अपनी आत्मकथा का वर्णन किया है। अकाल पुरुष गुरु गोविन्द सिंह परोक्ष अध्यात्म सत्ता को चेतना मानकर उससे वार्तालाप करते हैं। उन्होंने अपनी जीवन-कथा में जुझारसिंह युद्ध तथा फतहशाह युद्ध का वर्णन किया है। गुरुजी अपने जीवन में हरि-नाम का उद्देश्य मानकर सच्चे धर्म का प्रचार करते हैं। मुसलमानों के कोप का वर्णन तथा भगवान् की कृपा से सन्तों की रक्षा के साथ नाटक की समाप्ति होती है।

विचित्र विवाह या मृणालिनी परिणय (सन् १९३२, पृ० १४४), ले० पं० बलदेव प्रसाद मिश्र, प्र० लक्ष्मण प्रसाद मिश्र, साहित्य समिति, रायगढ़, पात्र पु० ११, स्त्री ६ अंक ३, दृश्य ६, ७, ६।
घटना स्थल वैरागढ़।

इस ऐतिहासिक नाटक में इतिहास और किंवदंती दोनों का समन्वय है। चांदा जिले के अन्तर्गत वैरागढ़ नामक स्थान के नरेश वैरागढ़िया राजकुमार के नाम से प्रख्यात है। वे बड़े ही पराक्रमी राजा हैं। उनका विवाह चांदा की राजकुमारी मृणालिका के साथ होता है। उन दिनों की पुरानी प्रथा के अनुसार विवाह के लिए राजकुमार को अश्व-पराक्रम दिखाना पड़ता है और इसके लिए उनको भीमकाय लोहे की साग की चोटें खानी पड़ती हैं।

विजय-पर्व (सन् १९६३, पृ० ११०), ले० डॉ० रामगोपाल शर्मा, प्र० स्टूडेण्ट ब्रदर्स ऐण्ड कम्पनी, भरतपुर, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ५, ७, ५।
घटना-स्थल चित्तौड़ का राजमहल।

चित्तौड़ के राजा रायमल के तीनों पुत्रों-संग्रामसिंह, पृथ्वीराज और जयमल में उत्तराधिकारी बनने के लिए कलह होता है। पृथ्वीराज और जयमल संग्रामसिंह को युवराज बनाने के विरुद्ध हैं। इनका संग्रामसिंह से युद्ध होता है। संग्रामसिंह युद्ध में घायल होकर भाग जाता है। जयमल ताराबाई के प्रेम में मारा जाता है। रायमल अपने पुत्रों के कलह से दुखी होकर पृथ्वीराज को निर्वासित कर देता है।

सूरजमल चित्तौड़ को हथियाने के लिए रायमल के खिलाफ षड्यन्त्र रचता है किन्तु निर्वासित पृथ्वीराज द्वारा पकड़ा जाता है। संग्रामसिंह जो युद्ध से भागकर दस्यु बन गया था, पृथ्वीराज की शरण में आ जाता है। पृथ्वीराज चालुक्य राज्य की मुक्ति के लिए म्लेच्छराज पर हमला करता है। इधर सूरजमल सारंगदेव और मुजफ्फरशाह चित्तौड़ पर सेना लेकर धावा बोल देते हैं। पृथ्वीराज चालुक्य राज्य का उद्धार करके अपने पिता रायमल की सहायता से दुश्मनों को बुरी तरह हरा देता है। सभी विजयी सैनिक शिविर में विजयोल्लास मनाते हैं और म्लेच्छ राज अपनी कन्या पृथ्वीराज को सौंप देता है।

विजय बेलि अथवा कुरुप (सन् १९५०, पृ० १३२), ले० गोविन्ददास, प्र० भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० १४, स्त्री ३, अंक ५, दृश्य-रहित।
घटना स्थल राजमहल, आश्रम, युद्धक्षेत्र।

कुरुप अतिथिग्व का दौहित्र है। अतिथिग्व अपने सेनापति हरयाणस को आदेश देता है कि वह उसके दौहित्र को जन्म होते

ही मार दे क्योंकि सम्राट् ने स्वप्न में पुत्री के गर्भ से एक बेलि उपजी देखी, जो सारे संसार पर छा गई है। उसे यह भय है कि कहीं यह बच्चा संसार पर न छा जाए। सेनापति उस बालक के प्राण न लेकर उसे एक ऋषि के संरक्षण में रख देता है। बड़ा होने पर विवाह के पश्चात् कुरुप अपने माता-पिता के पास जाता है, जहाँ उसका नाना अतिविग्व भी रहता है। भेद खुलने पर अतिविग्व हरयागम को दण्डित करता है और कुरुप से युद्ध की घोषणा भी, परन्तु कुरुप हतोत्साह नहीं होता। पश्चिम के राज्यों को जीतता हुआ तथा उनसे सांस्कृतिक संबंध जोड़ता हुआ भारत की ओर बढ़ता है। किंतु आदिम जातियों के साथ युद्ध में घायल हो भारतीय सीमा पर स्थित ऋषि जरतुस्त के आश्रम में पत्नी द्वारा लाया जाता है, जहाँ उसका देहान्त हो जाता है। नाटक का उद्देश्य कुरुप की दिग्विजय की कथा को नाटकीय रूप देना मात्र है।

विजय-पर्व (सन् १९६३, पृ० ११०), ले० : रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'; प्र० : स्टूडेण्ट ब्रदर्स ऐण्ड कम्पनी, भरतपुर (राजस्थान); *पात्र* : पु० १७, स्त्री ३; *अंक* : ३; *दृश्य* : ५, ७, ५।
घटना-स्थल : उदयपुर का राजमहल, जंगल।

इस ऐतिहासिक नाटक में सूरजमल की कूटनीति और पृथ्वीराज की बुद्धिमत्ता दिखाई गई है।

उदयसिंह का पुत्र सूरजमल अपनी कूट-नीति से रायमल के तीनों पुत्रों—संग्राम सिंह, पृथ्वीराज और जयमल में विद्रोह पैदा कर स्वयं मेवाड़ का महाराणा बनना चाहता है। तीनों योद्धा राज्य से निकल जाते हैं। सूरजमल डाकू बनकर जनता को लूटता है। जयमल सुरताण की शूरवीर कन्या तारा का अपमान करने के कारण मारा जाता है। संग्रामसिंह जंगलों में भटकता है। अन्त में पृथ्वीराज सुरताण और उसकी कन्या तारा के सहयोग से सूरजमल के षड्यन्त्र को असफल कर देता है। पृथ्वीराज और तारा का विवाह हो जाता है।

विजयिनी (सन् १९६६, पृ० ८०), ले० : सुरेन्द्र मोहन; प्र० : कुन्तला प्रकाशन, मुजफ्फर-पुर; *अंक-रहित*; *दृश्य* : ३।
घटना-स्थल : वैशाली का राजउद्यान।

इस ऐतिहासिक गीति-नाट्य में वैशाली गणतन्त्र की राजनर्तकी आम्रपाली की मनः-स्थितियों द्वारा कतिपय आधुनिक प्रश्नों पर विचार किया गया है।

वैशाली की राजनर्तकी आम्रपाली कला के आवरण में रूप-यौवन की अनन्त विभूति सँजोये हुए है। इसलिए वह रूप-यौवन की विक्रेता मात्र नहीं, वरन् सृष्टि में सामंजस्य स्थापित करने वाली सांस्कृतिक चेतना है। महाराज बिम्बसार उसके रूप पर मोहित होकर उसे अपनी पटरानी बनाना चाहते हैं किन्तु आम्रपाली इसे नारी का अपमान सम-झती है क्योंकि वह कला साधिका है, शासन की पुतली नहीं बन सकती है। यहाँ बिम्बसार और आम्रपाली में नारी के परम्परागत भोग्य रूप तथा उसके आधुनिक सांस्कृतिक रूप पर विवाद होता है। वह तथागत बुद्ध के समक्ष मोक्ष पर वाद-विवाद करती है। उसके अनुसार त्याग जीवन में निषेधात्मक दृष्टि विकसित करता है जो कुण्ठाओं को जन्म देती है। इसीलिए वह आगत-विगत की आकांक्षाओं से मुक्त कर्मठ वर्तमान को ही मुक्त जीवन का प्रतीक मानती है।

विजयी कुँवर सिंह (सन् १९५९, पृ० ८८), ले० : प्रताप नारायण सिंह; प्र० : लेखक स्वयं, सिन्दी, धनबाद; *पात्र* : पु० ११, स्त्री ४; *अंक* : ३; *दृश्य* : ५, ५, ५।
घटना-स्थल : जगदीशपुर की राजधानी का देवस्थान, कानपुर में नानासाहब का राज-प्रासाद, झाँसी का राजमहल, गंगातट पर सैनिकों का मार्च।

यह ऐतिहासिक नाटक स्वतन्त्रता-संग्राम की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इसमें स्वतन्त्रता प्राप्ति के लगभग सौ साल पहले

भारतीयों द्वारा अंग्रेजों के पैर उखाड़ने के सफल प्रयासों का चित्रण किया गया है। प्रारम्भ में कुँवर, अमर तथा अन्य बालकों द्वारा मंगलाचरण होता है। जगदीशपुर के जमींदार महाराज कुँवरसिंह तथा उनके भाई अमरसिंह की कीर्ति चारों तरफ फैली हुई है। एक दिन गंगातट पर कुंवरसिंह को एक सन्यासी मिलता है। वह उन्हें नानासाहब का संदेश बताते हुए क्रान्ति में कूदने की प्रेरणा देता है। उधर रानी लक्ष्मीबाई भी क्रांति की पूरी तैयारी कर लेती है। अचानक ही पूरे देश में क्रान्ति की लहर फैल जाती है। वृद्ध कुँवरसिंह क्रांति का संचालन करते हैं। शत्रुओं को मुँह की खानी पड़ती है। कुंवरसिंह की प्रेरणा से अमरसिंह भी स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़ते हैं परन्तु एक-एक कर स्वतन्त्रता सेनानियों का पतन उन्हें क्षुब्ध कर देता है। सन्यासी के रूप में प्रेरणा देने वाले और कोई नहीं वह तो अमर सेनानी तात्या टोपे होते हैं। घोर संग्राम के बीच गंगा पार करते समय अंग्रेजों की गोली उनके हाथ में लगती है। वे अपना हाथ काट कर गंगाजी में डाल देते हैं। अपनी सारी सेना के क्षत-विक्षत होने पर अन्त तक शत्रुओं से लड़ते हुए मृत्यु वरण करते हैं।

विजयी धर्म (वि० १९८३, पृ० ३३) ले० गोविंद, प्र० गोविन्द पुस्तकालय, सिरोंज, *पात्र* पु० ६, स्त्री ३, *अंक-रहित*, *दृश्य* ८।
घटना स्थल जंगल, पुष्पवाटिका।

यह प्रतीक नाटक है जिसमें धर्म, अधर्म, क्रोध, नीति, भक्ति, सुगति, ज्ञान, प्रेम, सत्य को पात्र बनाया गया है। भक्ति का प्राधान्य दिखाया गया है। वह ज्ञान को अज्ञान के नाश का, वैराग्य को मोह-विनाश का, बोध को क्रोध निवारण का, सत्य को झूठ विनाश का आदेश देती है। अधर्म के सिंहासनासीन होने से मिथ्या, क्रोध अपनी शक्ति दिखाना चाहते हैं। पर भक्ति के अनुयायियों की विजय होती है। भक्ति का एक हाथ धर्म के ऊपर, दूसरा सुगति के ऊपर, एक चरण अधर्म की छाती पर होता है। क्रोधादि जजीरों में जकड़े पृथ्वी पर छटपटाते हैं। सत्य के हाथ में मिथ्या की चोटी है। भक्ति धर्म से कह रही है—"धर्म तुम विजयी हुए।"

विजेता (सन् १९५१, पृ० ५१), ले० रामवृक्ष बेनीपुरी, प्र० बेनीपुरी प्रकाशन, पटना, *पात्र* पु० ३, स्त्री २, *अंक* ४, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल चाणक्य का राजदरबार, राजभवन, जंगल, झोंपड़ी।

इस ऐतिहासिक नाटक में चाणक्य की नीति दिखाई गई है। चाणक्य सिकन्दर से अपने अपमान का बदला लेने के लिए वीर चन्द्रगुप्त को अपनी ओर मिला लेता है। वह चन्द्रगुप्त को सिकन्दर के रणकौशल की शिक्षा देता है। चन्द्रगुप्त की माँ द्वारा लाई गई चन्द्रा अथवा धूल का फूल चाणक्य को जादूगर बताती है। किन्तु चन्द्रगुप्त अपने गुरु पर पूर्ण विश्वास रखता है। वह गुरु की आज्ञानुसार ही महानन्द को हराकर गद्दी पर बैठता है। चाणक्य चन्द्रगुप्त को विश्व-विजयी बनाना चाहता है। गुरु-आज्ञा से चन्द्रगुप्त सेल्यूकस को हराता है। सेल्यूकस अपनी लड़की को भेंट स्वरूप चन्द्रगुप्त को दे देता है। अब चन्द्रगुप्त और उसकी माता दोनों चन्द्रा के लिए दुखी होते हैं। दुख में सदा साथ देनेवाली चन्द्रा को अब सुख के समय पुनः उस फूल को धूल पर ही छोड़ दिया जाता है। चन्द्रा कहती है "सम्राट् मैं सेवा करने के लिए हूँ, मुझे आपकी सेवा करने में ही प्रसन्नता है।" माँ के आग्रह से चन्द्रा का पाणिग्रहण चन्द्रगुप्त से हो जाता है। कुछ समय पश्चात् चन्द्रगुप्त अपना जीवन एक छोटी झोंपड़ी में तपस्यापूर्वक बिताकर भारत-माता के लिए स्वाहा कर देते हैं।

वितस्ता की लहरें (सन् १९५३, पृ० १२३), ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र, प्र० आत्माराम ऐण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; *पात्र* पु० १२, स्त्री ५, *अंक* ३, *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल पुरु केकय का राजभवन, केकय-नरेश पुरु का राजभवन, युद्धक्षेत्र।

यह संस्कृति-प्रधान ऐतिहासिक नाटक है। अलिकसुन्दर गान्धार और पारसपुर को जीतकर केकय पर आक्रमण करने को उद्यत होता है। केकय-नरेश पुरु द्वन्द्व-युद्ध के लिए कहते हैं जिसे अलिक सुन्दर स्वीकार कर लेता है। अलिक सुन्दर की सेना नोरी में वितस्ता को पार करना चाहती है किन्तु पुरु की सेना के आगे उनको मुँह की खानी पड़ती है। तक्षशिला के स्नातक अलिक सुन्दर की प्रेयसी ताया का अपहरण कर लेते हैं। ताया के वियोग में अलिक सुन्दर सन्धि करने को उद्यत हो जाता है। अलिक सुन्दर का सेनापति सेल्यूकस पुरु की सेना का लोहा मान लेता है। पुरु का हाथी अलिक सुन्दर को सूँड में लपेटकर धरती पर पटकने वाला होता है कि वह पुरु की आज्ञा से अलिक सुन्दर को पीठ पर बैठा लेता है। अलिक सुन्दर शत्रु की दया से आत्म-विभोर हो जाता है। तक्षशिला के आचार्य विष्णुगुप्त ताया को अलिक सुन्दर के हाथ सौंप देते हैं। ताया भारतीय संस्कृति की महानता को स्वीकार करते हुए कहती है कि भारतीय संस्कृति में नारी को आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

विदा (सन् १९५८, पृ० ८०), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : हिन्दी भवन, इलाहाबाद; पात्र : पु० ५, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ६, ५, ६।
घटना-स्थल : औरंगजेब का राजदरबार, उदयपुर।

इस ऐतिहासिक नाटक में औरंगजेब की कुटिल-नीति तथा अकबर का देश-प्रेम और स्वाभिमान चित्रित है। मुगल सम्राट् औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा को पिता की मूर्ति-कला-विरोधी भावना से घृणा है। औरंगजेब की जसवन्त सिंह के पुत्र को मुसलमान बनाने की नीति का दुर्गादास विरोध करता है। दुर्गादास के नेतृत्व में भीमसिंह और समरसिंह की सेना का संगठन होता है। इस युद्ध में औरंगजेब की हार होती है। उसका पुत्र अकबर सेनानायक नियुक्त होता है परन्तु वह विद्रोही बन जाता है। राजपूत सरदार अकबर का विरोध करते हैं। किन्तु दुर्गादास अकबर का साथ देते हैं। वे राजपूतों को छोड़कर चले जाते हैं। औरंगजेब अपने पुत्र अकबर की हत्या कराना चाहता है किन्तु बेगम उदयपुरी रोक लेती है। शाहजादा अकबर अपने बच्चों को दुर्गादास को सौंपकर स्वयं ईरान प्रस्थान करता है। यह नाटक देश की आन्तरिक दुर्बलताओं पर प्रकाश डालता है।

विदाई (सन् १९५६, पृ० ८०), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार दिल्ली; पात्र : पु० ४, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : मकान, विवाह-मंडप।

इस सामाजिक नाटक में आदर्श प्रेम चित्रित किया गया है। शकुन्तला जय से प्रेम करती है किन्तु सामाजिक बन्धनों के कारण उसका विवाह जय से नहीं हो पाता। दीनदयाल शकुन्तला को इसके लिए बहुत डाँटता है और उसकी शादी दूसरे से कर देता है किन्तु जब शकुन्तला भाँवर डालकर मंडप में बैठती है तो वह देवी अपने प्रेमी जय में लीन होकर कहती है—"आदर्श नारी अपने हृदय में केवल एक ही पुरुष को स्थान देती है : मेरे हृदय ने जय को पति मान लिया है यदि मैं हृदय की पवित्रता को भंग कर दूसरे को स्थान दूँ तो मुझमें और एक वेश्या में क्या अन्तर रह जाएगा?" शकुन्तला का यह कथन वास्तव में प्रेम की उच्चता को प्रदर्शित करता है।

प्रस्तुत नाटक कश्मीर न्यू थियेटर द्वारा अभिनीत भी किया जा चुका है।

विद्यापति (सन् १९६४, पृ० ८८), ले० : विद्यानाथ राय बी० ए०; प्र० : श्री विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा; पात्र : पु० १६, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : १४।
घटना-स्थल : गणेश्वर सिंह का दरबार, शिव मंदिर, देवसिंह का दरबार, महादेव का मंदिर, लोदी का दरबार, फुलवाड़ी, निर्जन स्थान, बहलोल लोदी का बाग, शिवसिंह का दरबार, जंगल, नेपाल तराई, विद्यापति का निवास-स्थान।

इस ऐतिहासिक नाटक में परम्परा के अनुसार महाकवि विद्यापति के सम्पूर्ण जीवन की प्रत्येक उल्लेखनीय घटना का विवरण मिलता है। इसके अन्तर्गत विद्यापति के प्रमुख आश्रयदाताओं और उनकी रचनाओं की भी चर्चा प्रसंगानुकूल की गई है। इतिहास के अतिरिक्त विद्यापति के संबंध में प्रचलित जनश्रुतियों का भी उल्लेख स्थान स्थान पर मिलता है। कहीं-कहीं पर राधा-कृष्ण विषयक प्रेम-संबंधी गीतों का, शिव संबंधी नचारियों और कूट गीतों का प्रयोग भी नाट्यकार ने नाटक को रोचक बनाने की दृष्टि से किया है।

विद्यापति नाटक (सन् १९३६, पृ० ७५), ले० रामशरण 'आत्मानन्द', प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, पात्र पु० ७, स्त्री ३, *अंक* ३, *दृश्य* ८, ७, ३।
घटना स्थल बाग, मार्ग, मन्दिर, महल, ठाकुरद्वारा।

इस ऐतिहासिक नाटक में कवि विद्यापति की जीवनपरक घटनाओं का समावेश है।

इसमें विद्यापति एक प्रसिद्ध विद्वान् गायक हैं। राजा शिवसिंह की पत्नी लक्ष्मी विद्यापति के गाने पर मुग्ध होकर उनके प्रेम-बन्धन में बेसुध हो जाती है। यह बात विद्यापति को मालूम होने पर वह मंदिर में मुरारीजी की मूर्ति के आगे कहता है कि "हे करुणेश महारानी को सुबुद्धि प्रदान करो कि वह अन्धकार की गहन-गुफा से निकलकर प्रकाश में आ जाये। प्रभो नारी का सब-कुछ पति के लिए होता है। भगवन्, राज दम्पति को दाम्पत्य प्रेम का अमर वरदान दो।" शिवसिंह यह सब सुनता है तो प्रसन्न होकर निर्दोषी विद्यापति को गले से लगाता है। इधर लक्ष्मी विद्यापति के प्रेम में ऐसी पागल हो जाती है कि सहसा उसकी मृत्यु हो जाती है।

विद्यापीठ (सन् १९४४, पृ० ६८), ले० शम्भू दयाल सक्सेना, प्र० नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर, पात्र पु० ५, स्त्री ३, *अंक-रहित*, *दृश्य* ११।
घटना स्थल महर्षि शुक्राचार्य का आश्रम।

इस पौराणिक नाटक में कच देवयानी की प्रचलित कथा का चित्रण किया गया है।

असुर अपने आचार्य शुक्राचार्य की संजीवनी विद्या के प्रयोग से देवताओं को मस्त करते हैं। इससे मुक्ति पाने के लिए देव-गुरु बृहस्पति का पुत्र 'कच' संजीवनी विद्या सीखने शुक्राचार्य के पास आता है। वहां पर शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी के प्रयास से उसे विद्या सीखने के लिए आश्रम में स्थान मिल जाता है। कालान्तर में मन-ही-मन देवयानी कच से प्रेम करने लगती है परन्तु कच देवयानी को गुरु-पुत्री समझकर बहन की तरह मानता है। विद्या सीख कर लौटते समय कच से देवयानी अपनी मनस्थिति बताकर प्रणय निवेदन करती है परन्तु कच उसे परम्परा-अनुसार बहन स्वीकार कर उसके अनुरोध को अस्वीकार कर देता है। देवयानी क्रोध और उत्तेजना के वशीभूत हो कच की सीखी हुई विद्या को निष्फल हो जाने का शाप देती है और कच देवयानी के कामान्धपूर्ण इस अनुचित कार्य पर उसे किसी ऋषिकुमार के न वरण करने का शाप देकर देवलोक चला जाता है।

विद्या विनोद नाटक (सन् १८९२, पृ० ५६), ले० गोपालराम गहमरी, प्र० हनुमान प्रेस, कालाकांकर, पात्र पु० १२, स्त्री २, *अंक* ७, *दृश्य* १, २, २, २, २, १, १।
घटना स्थल राजा ढोंगासेन का दरबार, देवी का मंदिर, विद्या का शयनागार, महल, कचहरी, जंगल।

इस सामाजिक नाटक में अनमेल विवाह का दुष्परिणाम दिखाया गया है। इसमें एक ऐसे राजा की कहानी है जो पुत्रोत्पत्ति की आशा में चार-पाँच शादियां करता है, किन्तु अनमेल विवाह करने के कारण युवतियां उसे पसंद नहीं करती।

राजा ढोंगासेन एक ऐसे ही राजा है। वह अपने मन्त्रियों से पुत्र की अभिलाषा व्यक्त

करते हुए तीसरी शादी की बात भी करते हैं। यद्यपि उनकी आयु बहुत अधिक है, फिर भी पुत्र की कामना से शादी के लिए बातें करने के लिए वे अपने भाट एवं पुरोहित को दूसरे देश में भेजते हैं। राजा भोंदूसेन की अतीव सुन्दरी पुत्री विद्या विनोद नामक एक राजकुमार से प्रेम करती है। वह विनोद से ही शादी करना चाहती है।

दुर्भाग्यवश विद्या की शादी राजा ढोंगल-सेन से हो जाती है। विद्या ढोंगलसेन से नफरत करती है इसलिए पति कहने के बजाय वह उसे पिता कहना ज्यादा अच्छा समझती है। फलस्वरूप राजा क्रुद्ध होकर विद्या को देश-निकाले की सजा दे देता है। वह जंगलों में साधु-वेष में घूमती एक ऐसे स्थान पर पहुँचती है जहाँ प्रेमी विनोद से उसकी भेंट होती है। दोनों आनंद में विह्वल होकर आपस में एक-दूसरे से लिपट जाते हैं।

विद्या विलाप (सन् १७०० के आस-पास, पृ० ३२), ले० : महाराज भूपतीन्द्र मल्ल; प्र० : अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, बैंकरोड, प्रयाग; पात्र : पु० ८, स्त्री ५; अंक के स्थान पर दिवस का उल्लेख मिलता है। दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : कहीं भी आभास नहीं मिलता।

नेपाली परम्परा पर आधारित इस नेपाल-विरचित नाटक में प्रेमी-प्रेमिका का गहन प्रेम प्रदर्शित किया गया है। उज्जैन के राजा वीरसिंह की विद्यावती नाम की एक प्रतिभाशाली कन्या है। वह प्रतिज्ञा करती है कि वह शादी उसी के साथ करेगी जो उसे तर्क-वितर्क में पराजित कर देगा। अनेक राजकुमार राजकुमारी के समक्ष प्रस्तुत होते हैं किन्तु किसी को सफलता नहीं मिलती। इससे वीरसिंह अत्यधिक चिन्तित हो जाते हैं। वे उद्भट विद्वान् राजकुमार सुन्दर से इस प्रसंग में बातचीत करने का निश्चय करते हैं। वे अपने दरबारी कवि को गुणसिन्धु के पास भेजते हैं। दूसरी ओर सुन्दर भी विद्यावती के अपूर्व सौन्दर्य को सुनकर मन-ही-मन उसके साथ शादी की कल्पना करता है। वह उज्जैन में राजमहल के समीप अपना निवास-स्थान ठीक कर लेता है। राजकुमार राजकुमारी के समीप पहुँचकर उससे अपनी इच्छा प्रकट करता है। इधर राजकुमारी के हृदय में भी राजकुमार के प्रति ममत्व की भावना जागृत हो जाती है, किन्तु कोई सुगम मार्ग नहीं दिखाई पड़ता। इसी बीच उज्जैन के राजा-रानी राजकुमार और राजकुमारी के प्रेम-सम्बन्ध से अवगत होते हैं। सुन्दर को राजा के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। राजा उसे चोरी के आरोप में सजा देना चाहता है किन्तु दरबारी कवि के वापस आने पर सारा भेद खुल जाता है। दरबारी कवि बताता है कि महाराज गुणसिन्धु का लड़का सुन्दर ही चोर है। यह सुनकर राजा तुरन्त उसे बन्धन-मुक्त कर देते हैं और विद्यावती के साथ उसका विवाह करते हैं।

विद्या विलासी व सुरबन्धनी नाटक (सन् १८८४, पृ० १००), ले० : श्रीकृष्ण उर्फ तकर; प्र० : नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ; पात्र : पु० २६, स्त्री ७; अंक के स्थान पर तमाशा, दृश्य के स्थान पर झाँकी। तमाशा : ६, झाँकी : ७, ६, १, ४, ३।
घटना-स्थल : गाँव, बारात।

यह एक सामाजिक नाटक है जिसमें बाल विवाह, विवाह-बारात में सामर्थ्य से अधिक व्यय, स्त्री-शिक्षा के अभाव के कारण होने वाली सामाजिक दुर्दशा का चित्र खींचा गया है। जगदानन्द और नन्द-कुमार रईस व्यक्ति हैं। विद्या विलासी जगदानन्द की लड़की है और सुरबंधनी नन्द कुमार की। दोनों परिवारों में लड़के लड़कियों का विवाह बाल्यावस्था में होना है। बारात में बड़ी परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं।

दूसरी कथा स्वामी विद्यानन्द की है। चंद्रिका और रघुनाथ १२ वर्ष के छात्र हैं पर उनका विवाह हो जाता है। वे पहली क्लास से अंग्रेजी पढ़ते हैं। स्वामी विद्यानंद उन्हें

अपने साथ आश्रम मे ले जाते है और भारतीय शास्त्र की पूरी शिक्षा देते हैं। दोनो छात्र अपने गुरु के परम ऋणी बन रहते हैं।

विद्या सुन्दर नाटक (सन् १८८६, पृ० ६२), ले० । हरिश्चन्द्र, प्र० भारत जीवन प्रेस, काशी, पात्र पु० ६, स्त्री ५, अक ३, दृश्य ४, ३, ३।
घटना-स्थल उज्जैन नगर, राज दरबार, कारागार।

इस ऐतिहासिक नाटक मे प्रेमी प्रेयसी का प्रेम चित्रित है तथा विद्या के अद्भुत गुणो का वर्णन किया गया है।

राजकुमारी विद्या यह निश्चय करती है कि जो भी उसे शास्त्रार्थ मे पराजित कर देगा, उसी के साथ वह विवाह करेगी। अनेक राजकुमार अपने प्रयत्नो मे असफल हो जाते हैं। इससे राजा अत्यन्त चिंतित होते हैं। एक मत्री काचीपुर के युवराज सुदर के गुणा की प्रशसा करता है तथा उसे राजकुमारी के योग्य वर बताता है। इधर सुदर भी विद्या के गुणो की चर्चा सुन कर चुपचाप उससे मिलने के लिए चल देता है। वहा राजकुमारी से उसका प्रेम हो जाता है और दोनो गाधर्व विवाह कर लेते हैं। एक दिन वह राज-सैनिको द्वारा पकड लिया जाता है। राजा उसको कारावास का दड देते हैं। किंतु बाद मे यह ज्ञात हो जाने पर कि वह अपराधी नही वरन् राजकुमार सुदर है, राजा अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ सम्पन्न कर देते हैं।

विद्रोहिणी अम्बा (सन् १९३५, पृ० १०२), ले० उदयशकर भट्ट, प्र० बनारसीदास, मोतीलाल, लाहौर, पात्र पु० १३, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ६, ५, ७।
घटना-स्थल काशीराज का महल, गगातट।

श्रीमद्भागवत की एक कथा के आधार पर लिखा गया यह दुखान्त पौराणिक नाटक है। काशीराम अपनी तीनो पुत्रियों-अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका के स्वयवर मे हस्तिनापुर के राजा शातनु के पुत्र को आमंत्रित नही करते क्योकि उसकी माता धीवर-कन्या है। इस अपमान का बदला लेने के लिए भीष्म तीनो कन्याओ का अपहरण करते है। अम्बिका और अम्बालिका तो विचित्रवीर्य के साथ विवाह करने को तैयार हो जाती हैं लेकिन अम्बा को, जिसने एक-दूसरे राजा को पहले ही पति रूप मे स्वीकार कर लिया है, राजा शाल्व के यहाँ भेज दिया जाता है जो उसे अस्वीकार कर देता है। वहाँ से अपमानित अम्बा क्रुद्ध होकर भीष्म से अपने अपमान का बदला लेने के लिए चल पडती है। चारो ओर से अपने को असमर्थ पाकर वह शिव की उपासना करके भीष्म के नाश का वरदान मागती है। वरदान *प्राप्ति के उपरात वह गगा मे कूदकर आत्म-*हत्या कर लेती है। नाटक के अत मे शिखडी के रूप मे अवतरित होकर भीष्म की मृत्यु का कारण बनती है।

विधवा (सन् १९४०, पृ० ५५), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली, पात्र पु० ४, स्त्री २, अक ३, *दृश्य-रहित।*
घटना स्थल विवाह मडप।

इस सामाजिक नाटक द्वारा समाज में प्रचलित ईर्ष्या-द्वेषमयी भावनाओ की कटु *निंदा की गई है।*

प्रकाश और सध्या मे प्रेम हो जाता है। दोनो अपने प्रेम की रक्षा के लिए सदैव धर्म पर चलना चाहते हैं पर समाज उन्हें ऐसा नही करने देता। सध्या का फलदान कर दिया जाता है और प्रकाश का भी ब्याह रचा दिया जाता है। लेकिन प्रकाश अपनी सध्या की याद मे ब्याह की वेदी पर ही अपनी साँसें तोड देता है जिसे देख सध्या भी आजीवन उसी के लिए तडपती रहकर अपना जीवन-निर्वाह करना चाहती है पर समाज की कटूक्तियाँ उसे आत्महत्या के लिए विवश कर देती हैं। अत मे वह भी आत्महत्या कर लेती है और समाज के ठेकेदार अपनी विजय पर हँसते हैं।

विधवा विलाप (सन् १६२८, पृ० २४), ले० : भिखारी ठाकुर; प्र० : दूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस, सलकिया, हावड़ा; पात्र : पु० ४, स्त्री ३; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : ग्रामीण घर, जंगल, वनमार्ग।

इस सामाजिक नाटक में व्यभिचारी व्यक्ति की मनोदशा और उसकी कृतियों का चित्रण है।

एक युवती का बूढ़े के साथ विवाह हो जाता है जो थोड़े ही दिनों में विधवा हो जाती है। वह निःसहाय विधवा अपने भतीजे उदवास को घर का स्वामी बना देती है। उदवास की पत्नी उस विधवा से छुटकारा पाने के लिए अपने पति को बाध्य करती है कि वह (विधवा काकी) को किसी निर्जन स्थान में ले जाकर हत्या कर दे। उदवास अपनी पत्नी की बात मानकर विधवा काकी को तीर्थ-यात्रा के बहाने निर्जन स्थान पर ले जाकर हत्या करना चाहता है। अचानक एक साधु के आ जाने से वृद्धा की रक्षा हो जाती है। साधु के उपदेश से वह वृद्धा उस अरण्य प्रदेश में भगवान् की उपासना करती है, जिससे प्रसन्न होकर भगवान् उसे दर्शन देते हैं और अंत में वह विश्व की मंगल-कामना करती हुई स्वर्ग चली जाती है।

विधवा विवाह संताप नाटक (सन् १८८१, पृ० २५), ले० : काशीनाथ; प्र० : खड्ग विलास प्रेस, बांकीपुर; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : लीक पीटन दास के घर की बैठक।

यह नाटक राधाकृष्णदास विरचित 'दुखिनी बाला' के प्रभाव से लिखा गया। नाट्यकार प्रस्तावना में लिखते हैं, "दुखिनी बाला नाटक पढ़कर मेरे चित्त में आया कि मैं भी इस विषय में अपनी लेखनी की परीक्षा करूँ।" लीक पीटन दास की कन्या अबला देवी नौ वर्ष की आयु में विधवा हो जाती है। ब्याह के ६ महीने बीतने पर उसका ११ वर्ष आयु वाला पति स्वर्गवासी हो जाता है। पुरोहित और मित्र लड़की पर भाग्य को कोसते हैं किंतु संस्कृत, अंग्रेजी के विद्वान् बाबू कुलप्रकाश चन्द हिंदुओं की निंदनीय रीति का विरोध करते हैं। पंडित ज्ञानोदय शास्त्री विधवा-विवाह की व्यवस्था देते हुए कहते हैं कि "पराशर संहिता में स्पष्ट आज्ञा है कि विधवा पुनर्विवाह होना योग्य है।" वह पराशर संहिता का श्लोक उद्धृत करते हैं—"नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ। पञ्चस्वापत्सु नारीणा पतिरन्यो विधीयते।"

पंडित ज्ञानोदय ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की सम्मति भी उद्धृत करते हैं। कुपंथी नाम पुरोहित शास्त्री जी का विरोध करते हैं।

६ वर्ष के उपरांत अबला देवी ताऊ की लड़की के विवाह में सम्मिलित होने जाती है तो उसे विधवा समझकर मंगल कार्य में सम्मिलित नहीं किया जाता। इस अपमान से दुखी होकर वह फूट-फूटकर रोने लगती है। माता उसके दुःख को बहलाने के लिए उससे रामायण का पाठ सुनती है।

नाटक के अंत में विधवा-विवाह-निषेध का उत्तर दिया गया है।

विपद कसौटी नाटक (सन् १६२३, पृ० १३६), ले० : जमुनादास मेहरा; प्र० : रिखबदास वाहिती, कलकत्ता; पात्र : पु० १३, स्त्री ७; अंक : ३; दृश्य : ७, ७, ३।
घटना-स्थल : विष्णुलोक, अयोध्या।

इस पौराणिक नाटक में धर्मात्मा राजा मांधाता की धर्म-कथा चित्रित है। पहला अंक विष्णुलोक में विष्णु एवं लक्ष्मी के संवाद से प्रारम्भ होता है। विष्णु कहते हैं, "भक्त के कार्य को पूर्ण करने के लिए मुझे भी मृत्युलोक में जाना पड़ेगा।" राहु, केतु, धर्म और प्रेम आदि को भी नाटक का पात्र बनाया गया है। भगवान् विष्णु राजा मांधाता के धर्म की परीक्षा लेते हैं। भगवान् के परीक्षा लेने पर धर्मरक्षक राजा मान्धाता अपने पुत्र के सीने का मांस काटकर रीछ को देते हैं। अंत में धर्म की विजय होती है।

वियोगिनी शकुन्तला नाटक (सन् १९४८, पृ० १४४), ले० शम्भूदत्त शर्मा, प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस सिटी, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ७, ८, ३।
घटना-स्थल दुष्यन्त का राजप्रासाद, जगल, आश्रम।

यह नाटक सस्कृत के 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' पर आधारित है। लेखक पर पारसी थियेट्रिकल व्यावसायिक कम्पनियों का प्रभाव है। भाषा मे तुकबदी और मनोरजन के लिए हास्य-दृश्यों की योजना है। नाटक मे गीत, छद तथा सवादों मे गद्य का भी प्रयोग है।

विरुढक (सन् १९५५, पृ० १५५), ले० रागेय राघव, प्र० साहित्य कार्यालय, आगरा, पात्र पु० ७, स्त्री ७, अक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल कोसल की राजधानी सैनिक शिविर।

इस ऐतिहासिक नाटक मे बुद्ध की प्रमुख घटनाओ के साथ मौर्य-साम्राज्य पर प्रकाश डाला गया है।

प्रसेनजित का पुत्र विरुढक एक महत्त्वाकाक्षी व्यक्ति है। इसकी मृत्यु के बाद कोसल राज्य निर्बल हो जाता है। इसके वश का एक व्यक्ति छत्ता, पडोसियो द्वारा कोसल के हडप लिए जाने पर तक्षशिला भाग जाता है। कालातर में वही व्यक्ति पुन कोसल को जीतकर अपने वश में कर लेता है।

अततोगत्वा कोसल का राज्य मगध सहित प्राय समस्त भारत पर शासन करता है।

विल्वमगल नाटक (सन् १९२८, पृ० १६५), ले० आनन्द प्रसाद कपूर, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० १४, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ६, ६, ४।
घटना-स्थल गोकुल, परलोक।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण-कथा नाटक रूप मे चित्रित की गई है। कृष्ण की विविध कथाओ—बाललीला, रासलीला, कस की क्रूरता, देवकी वासुदेव की कातरता, देवताओ की पृथ्वी पर कातर पुकार, भगवान् का अभयदान आदि अनेकानेक लीलाओं का वर्णन है। इसमे भक्ति, माया आदि को भी पात्र-रूप मे उपस्थित किया गया है। अत मे एक शूद्र डाकू ईश्वर भजन करता है। मगल नामक एक सवर्णपात्र इसका विरोध करता है परन्तु कृष्ण उपस्थित होकर समस्या का समाधान करते हैं कि—"भक्ति किसी की पैतृक सम्पत्ति नही, इस पर सब का समान अधिकार है, इससे सब का मगल होना है।"

विवाह विज्ञापन (सन् १९२६, पृ० १३०), ले० बद्रीनाथ भट्ट, प्र० गगा पुस्तकालय कार्यालय, लखनऊ, पात्र, पु० ६, स्त्री २। अक १, दृश्य ५।
घटना-स्थल सुहागरात का कमरा।

इस प्रहसन मे समसामयिक विधुर जीवन के प्रति वस्तु-स्थिति को हास्यास्पद बनाया गया है। वस्तुत विधुर ऊपरी मन से विवाह के लिए उत्सुकता जाहिर नही करता किन्तु उसकी यह हार्दिक इच्छा और ललक रहती है कि किसी अनुपम सुन्दरी स उसका विवाह सम्पन्न हो जाय। इस कार्य के लिए वह समाचार पत्रो का सहारा लेता है और तदनुसार उसका विवाह हो जाता है। किन्तु जब अधेड उम्र का ढलता हुआ नायक सुहागरात को अपनी नई दुल्हन का मुख देखता है तब उसकी आशाओ पर एटम बम गिर जाता है। उसकी पत्नी उसकी अभिलाषा के विपरीत स्थिति की होती है। उसके दात, बाल और नाक सभी नकली होते हैं। वास्तव मे इस प्रहसन मे परिस्थिति पर कुटिल व्यग्य की सयोजना की गई है जो कि कथावस्तु की उच्चता को प्रकट करती है। इसके मूल मे बनावटी सौन्दर्य और पश्चिमी सभ्यता की छाप दिखाई पडती है।

विवाह विडबन नाटक (सन् १८८४, पृ० १३२), ले० तोताराम वकील, प्र० भारत बधु यत्रालय, अलीगढ, पात्र पु०

१४, स्त्री ६ ; अंक : ४; दृश्य-रहित ।
घटना-स्थल : काशीपुर, रतनलाल का आँगन ।

इस सामाजिक नाटक में हिन्दू-विवाह में प्रचलित कुरीतियों का वर्णन किया गया है। जगबन्नी की पुत्री रेवती जब तीन वर्ष की हो जाती है तो माता को उसके विवाह की चिन्ता सताने लगती है। तीन वर्ष की कन्या का विवाह विवाह की विडम्बना नहीं तो और क्या है।

विवाहिता विलाप नाटक (वि० १६५५, पृ० ५२), ले० : निहालचन्द मिश्र जमींदार ; प्र० : खेमराज श्री कृष्णदास, श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई ; पात्र : पु० १, स्त्री ८, अंक के स्थान पर ५ झाकियाँ हैं। दृश्य-रहित ।
घटना-स्थल : ग्रामीण मकान, शहर ।

इस सामाजिक नाटक में विवाहिता युवतियों के दुखों का मार्मिक चित्रण है। नाटक का नायक मनधीर अपनी पत्नी चम्पा को छोड़कर दूसरी स्त्री ललित मोहिनी से प्रेम करने लग जाता है। चम्पा के अतिशय दुख का वर्णन ही नाटक की कथावस्तु है।

विशाख (सन् १६२६, पृ० ९३), ले० : जयशंकर प्रसाद; प्र० : भारती भंडार, इलाहाबाद ; पात्र : पु० ६, स्त्री ५; अंक : ३ ; दृश्य : १, १, १ ।
घटना-स्थल : नेपथ्य, रास्ता, बौद्धमठ, पहाड़ी झरना ।

इस ऐतिहासिक नाटक में प्रेमानन्द संन्यासी के द्वारा आज से १८०० वर्ष पूर्व घटित होने वाली देश की राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक समस्याओं का समाधान दिखाया गया है। एक क्षत्रिय राजा कश्मीर में स्थित नागों की भू-सम्पत्ति हरण करके बौद्धमठ को दान दे देता है। नागराज सुश्रवा की कन्या चन्द्रलेखा अपनी बहन इरावती के साथ पेट की ज्वाला से संतप्त होकर अपने अपहृत भूभाग में सेम की फलियाँ तोड़ रही है। इसी समय खेतों का स्वामी बौद्ध भिक्षु आता है और चन्द्रलेखा तथा इरावती को बलात् मठ में ले जाना चाहता है। गुरुकुल का एक स्नातक विशाख उनकी रक्षा के लिए भिक्षु से संघर्ष करता है। इतने में ही सुश्रवा भी आ जाता है। नया भिक्षुओं का दल सुश्रवा को पीटने के लिए पकड़ लेता है किन्तु चन्द्रलेखा के आग्रह पर सुश्रवा को मुक्त छोड़कर उसको (चन्द्रलेखा) ही मठ में ले जाते हैं। विकल होकर स्नातक विशाख राजा नरदेव के दरबार में सहायता के लिए पहुँचता है, और सभासद महापिंगल की सहायता से राजा चन्द्रलेखा की मुक्ति का आदेश देते हैं। विशाख और उनके गुरु प्रेमानन्द बौद्ध संघाराम जाते हैं और वहाँ के महंत सत्यशील से चन्द्रलेखा की मुक्ति का आग्रह करते हैं। मठाधीश सत्यशील उनका निरादर करता है किन्तु राजा नरदेव जब उसे बन्दी बनाता है तो चन्द्रलेखा वहाँ से मुक्त होती है जिसे देखकर नरदेव कहता है "आह ! ऐसा स्वरूप तो मेरे रंगमहल में भी नहीं।" नरदेव सत्यशील को बन्दी बनाता है, और बौद्ध-विहार में आग लगाने की आज्ञा देता है। उसी समय प्रेमानन्द पहुँचकर नरदेव को समझाते हैं कि विहार जलाने की आज्ञा बन्द करो। सुन्दर आराधना की, करुणा की भूमि को नृशंसता और बर्बरता का राज्य मत बनाओ। इसी समय एक दीवार जलकर गिर पड़ती है और सब लोग वहाँ से चले जाते हैं।

दूसरे अंक में चन्द्रलेखा और विशाख का प्रेम-सम्बन्ध प्रगाढ़ बनता है। नरदेव के मन में भी चन्द्रलेखा से विवाह की इच्छा उत्पन्न होती है। वह महापिंगल के साथ चन्द्रलेखा की पर्णकुटी पर पहुँचता है और विवाह का प्रस्ताव रखता है किन्तु चन्द्रलेखा कहती है "राजन् मुझसे आदान न कीजिए, बस यहाँ से चले जाइए।" राजा क्रुद्ध होकर चला जाता है। चन्द्रलेखा हाथ में एक दीपक लिए चैत्य के समक्ष नमस्कार करती है और विशाख के साथ विवाह का वरदान माँगती है। चैत्य की आड़ से एक भिक्षु भयानक गर्जन करता है, चन्द्रलेखा घबड़ाकर गिर जाती है। प्रेमानन्द वहाँ पहुँचकर

चन्द्रलेखा को आश्वासन देता है बेटी ! डरो मत, यह पाखडी भिक्षु था, भगवान् किसी को पाखड की आज्ञा नही देता। धैर्य धरो। इसी समय विशाख वहा पहुचता है। वह पाखडी भिक्षु का वध करना चाहता है किन्तु प्रेमानन्द उसे रोक लेता है।

तीसरे अक मे वितस्ता के तट पर राजा नरदेव अपनी महारानी के साथ विराजमान् हैं किन्तु उनके मन मे चन्द्रलेखा का सौन्दर्य समाया हुआ है। महारानी राजा को बहुत समझाती है कि "आपने कुपथ पर पैर रखा है और मैं आपको बचा न सकी परिणाम बडा बुरा होनेवाला है। कहे जाती हू कि अन्याय का राज्य बालू की भीत है। अब मैं रहकर क्या करूगी।" वह नदी मे कूद पडती है। इधर महापिंगल विशाख की समस्या-नुसार चन्द्रलेखा का विवाह राजा से करना चाहता है किन्तु विशाख तलवार खीचकर महापिंगल का प्राण ले लेता है और सैनिक विशाख को घेर लेते हैं। वह चन्द्रलेखा के साथ पकड लिया जाता है। इधर सुश्रवा के सरक्षण मे नाग विद्रोह करते हैं। नरदेव चन्द्रलेखा और विशाख को सूली की आज्ञा देता है। नागजाति राजद्वार पर कोलाहल मचाती है। वे लोग चन्द्रलेखा और विशाख की मुक्ति चाहते हैं। उसी समय प्रेमानन्द पहुँच जाते हैं और नरदेव को स्त्री पर अनाचार न करने का उपदेश देते हैं किन्तु नरदेव सारी जनता को दण्ड देने का आदेश देता है। सैनिक प्रहार करते हैं। महल मे आग लग जाती है। नाग चन्द्रलेखा और विशाख को लेकर भाग जाते हैं। प्रेमानन्द राजा को अग्नि मे घुसकर उठा लाते हैं और पीठपर लादकर उसकी रक्षा करते हैं। एक जडी का रस उसके मुह मे टपकाते हैं। इरावती दूध लाकर राजा को पिलाती है। स्वस्थ होने पर राजा प्रेमानन्द से क्षमा मांगता है। क्षमा मागकर कहता है "गुरुदेव मैं आपकी शरण हू, मुझे फिर से शान्ति दीजिए।" चन्द्रलेखा राजा के बच्चे को प्रचण्ड दावाग्नि से निकालकर प्रस्तुत करती है। नरदेव बच्चे को गोद मे लेकर चन्द्रलेखा से क्षमा माँगता है। विशाख वहाँ पहुचकर नरदेव को धिक्कारता है किन्तु राजा उससे क्षमा-याचना करता है। और प्रेमानन्द के उपदेश पर भगवान् से स्तुति करता है।

विश्व प्रेम (सन् १६१७, पृ० ८०), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० स्वय प्रकाशन, *अक* ५, दृश्य ७, ७, ७, ६, ६।
घटना-स्थल उद्यान, वन का एक भाग, बैठक खाना, दालान, कक्ष।

शूरसेन नेह नामक नगर का जमीदार है और मोहन उसके यहा पला हुआ एक युवक है। मोहन का शूरसेन की पुत्री कालिन्दी से प्रेम हो जाता है। परन्तु अनाथ होने के कारण मोहन का कालिन्दी से विवाह बिल्कुल असम्भव है। वार्ता का पता लगने पर शूरसेन मोहन को घर से निकाल देता है। अयोध्या का मन्त्री रूपसेन मोहन को अपने यहा शरण देता है। मन्त्री उसके भरोसे पर अपना सब कुछ छोड कर यात्रा के लिए चला जाता है। रूपसेन उसको एक पत्र दे जाता है, जिसमे लिखा है कि "मेरी सारी सम्पत्ति और पुत्री मोहन की है।" इधर कालिन्दी मोहन के वियोग मे बीमार हो जाती है। उसका पिता उसकी शादी चन्द्रसेन से करना चाहता है। किन्तु कालिन्दी की हालत अधिक बिगडते देखकर शूरसेन मोहन को बुलवाता है और अपना विचार बदलकर कालिन्दी का विवाह उसके साथ करना चाहता है। इसी समय कालिन्दी के प्राण-पखेरू उड जाते हैं। मोहन शोकातुर होकर लौटता है। अन्ततोगत्वा मोहन और रूपसेन की लडकी रूपवती की शादी हो जाती है। अन्त मे शूरसेन भी अपनी सारी सम्पत्ति मोहन को दे देता है।

विश्व बोध (वि० १६८०, पृ० ३२), ले० मनोहर प्रसाद मिश्र, प्र० हिन्दी ग्रन्थ भण्डार, कार्यालय, बनारस सिटी, पात्र पु० २, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ४, ४, ३।
घटना-स्थल पुष्पोद्यान, निर्जन वन्य पथ, गृह, एक काल कोठरी।

इस सामाजिक नाटक मे मानव हृदय के प्रेममय स्वरूप को चित्रित किया गया है।

नाटक का श्रीगणेश राधा के तितली पकड़ने के आशा-नैराश्य से होता है। उसका माधव से परिचय होता है। तितली पकड़ने में असफल राधा माधव के सहयोग से उसे पकड़ लेती है। फिर राधा माधव के वार्तालाप के क्रम में कैलाश द्वारा उसके (राधा के) पति के मरने का दुःखद संदेश ज्ञात होता है। दार्शनिक माधव राधा से मृत्यु के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसे जीवन का नियामक बताता है।

लोग राधा-माधव के संसर्ग को कुत्सित दृष्टि से देखते हैं। माधव का निर्वासन हो जाता है, जिससे राधा व्यथित होकर विधवा-जीवन के दुःखमय स्वरूप को इंगित करती है। राधा माधव से मिलना चाहती है पर लोकबन्धन के फलस्वरूप मिल नहीं पाती। वह उन्माद-ग्रसित हो जाती है। माधव उसे देखकर स्वयं दास बनकर पुनः प्रकृतस्थ करता है। इसमें नाटककार ने जातीय बंधन पर कटु-व्यंग्य किया है। नाटक के अन्त में राधा प्रकृति प्रेमी बन जाती है।

विश्वातीत विलास नाटकम् (सन् १७०० के आसपास पृ० १६), ले०: शाहजी महाराज; प्र०: तंजौर महाराजा सरफोजी सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजौर, मद्रास; पात्र: पु० ५, स्त्री ३; *अंक-दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : परलोक।

शिव महिमा दिखाने के लिए यह नाटक लिखा गया। एक बार महाविष्णु और ब्रह्माजी के बीच नारदजी झगड़ा पैदा कर देते हैं और इसे पराकाष्ठा तक पहुँचाकर दोनों को जगदम्बा पार्वती के पास ले जाते हैं। जगदंबा से यह निर्णय करने के लिए कहा जाता है कि दोनों में बड़े कौन हैं। वे कहती हैं कि एक परमशिव के चरणों की पूजा करें और दूसरे सिर की पूजा करें। जो अपना काम कर, पहले मेरे पास आवें मैं उन्हें बड़ा मानूँगी। पार्वतीजी के आदेशानुसार शिवजी के चरणों की पूजा करने के लिए विष्णु जी और सिर की पूजा करने के लिए ब्रह्माजी निकल पड़ते हैं। इस बीच लक्ष्मी और सरस्वती दोनों पार्वतीजी के पास आकर अपनी विरह-वेदना को व्यक्त करती हैं।

अपने लक्ष्य में असफल हो ब्रह्मा और विष्णु दोनों लौट आते हैं और शिवजी को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। तब शिवजी दर्शन दे, आध्यात्मिक ज्ञान का उपदेश देते हैं। मंगल-गीत के साथ नाटक समाप्त होता है।

विश्वामित्र (सन् १९५०, पृ० ९०), ले०: दुर्गाप्रसाद गुप्त; प्र०: बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस; पात्र: पु० ४, स्त्री १।
घटना-स्थल . आश्रम, जंगल।

इस पौराणिक नाटक में महामुनि विश्वामित्र का पथ से विचलित होना दिखाया गया है। विश्वामित्र की तपस्या भंग करने के लिए इन्द्र मेनका नामक एक अप्सरा को भेजते हैं। वह अपने रूप एवं सेवा-भाव से ऋषि विश्वामित्र को एक बार कामासक्त कर देती है। फलस्वरूप विश्वामित्र की तपस्या भंग हो जाती है और इन्द्रासन को न प्राप्त कर पुनः तप ही करते रहते हैं।

विश्वामित्र नाटक (सन् १८९७, पृ० ८०), ले०: *कैलाशनाथ वाजपेयी*; प्र०: मैडिकल प्रेस, कानपुर; पात्र: पु० १५, स्त्री ३५; नाटक में ३ भाग हैं। प्रथम भाग—५ अंक, दूसरा भाग-३, अंक तीसरा भाग-४ अंक; दृश्य: सब मिलाकर ४१।
घटना-स्थल : मुनि वसिष्ठ का आश्रम, मिथिला पुरी।

इस पौराणिक नाटक में विश्वामित्र के सम्पूर्ण जीवन चरित्र को समेटने का प्रयास किया गया है। विश्वामित्र मुनि वसिष्ठ से नंदिनी गाय मांगते हैं, परन्तु बलपूर्वक ले जाने की चेष्टा से कुपित होकर वसिष्ठ विश्वामित्र को सम्पूर्ण सेना-सहित नष्ट करते हैं। विश्वामित्र पुत्र को राज्य देकर बहुत तपस्या करके ऋषि-पद प्राप्त करते हैं। वे राजा दशरथ से राम लक्ष्मण को यज्ञ-रक्षा के लिए माँग लेते हैं। विश्वामित्र राम लक्ष्मण को मिथिला ले जाते हैं और वहाँ पर सीता विवाह के साथ नाटक का अन्त होता है। इसी प्रकार द्वितीय तृतीय भाग में विश्वामित्र

की अन्य कथायें हैं।

विश्वामित्र (सन् १९२१, पृ० ९९), ले० जमुनादास मेहरा, प्र० रिखबदास वाहिती कलकत्ता, पात्र पु० १२, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य कुल २२।
घटना-स्थल जंगल, आश्रम, इन्द्रपुरी।

इस पौराणिक नाटक में विश्वामित्र तथा मुनि वसिष्ठ का द्वन्द्व दिखाया गया है। विश्वामित्र कामधेनु को बलपूर्वक वसिष्ठ से छीन लेते हैं। इसी बात पर दोनों में युद्ध होता है। वसिष्ठ के तेज-पराक्रम से विश्वामित्र पराजित होते हैं। गणिका द्वारा विश्वामित्र की तपस्या खंडित कर दी जाती है। त्रिशंकु को लेकर दोनों पक्षों में विवाद होता है। अन्त में पुनः विश्वामित्र और वसिष्ठ में प्रेम हो जाता है।

विश्वामित्र (सन् १९३८, पृ० ६४), ले० उदयशंकर भट्ट, प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पात्र पु० १, स्त्री २, अंक १, दृश्य ७।
घटना-स्थल हिमालय की तलहटी।

इस पौराणिक नाटक में नर-नारी के शाश्वत संघर्ष की एक झाँकी चित्रित है।

प्रारम्भ में विश्वामित्र अपनी तप-साधना के बल पर सृष्टि में स्वयं को अजेय मान बैठते हैं। यहाँ उनके अहंकार और दंभ को नष्ट करने के लिए मेनका तथा उर्वशी नामक दो अप्सराओं का आगमन होता है। विश्वामित्र को देखकर उर्वशी घृणा का प्रदर्शन करती हुई पुरुष के अत्याचार और अधिकार के प्रति आक्रोश व्यक्त करती है। उर्वशी के विपरीत मेनका के हृदय में पुरुष के प्रति ऐसे कोई भाव नहीं है। उसे नारी के प्रेम एवं सौंदर्य के अमोघ अस्त्रों पर पूर्ण विश्वास है और उन्हीं के द्वारा वह विश्वामित्र को पराजित करती है। मेनका के प्रथम दर्शन से ही विश्वामित्र अपने हृदय में परिवर्तन अनुभव करते हैं किन्तु अहंवश वे मेनका की सत्ता को नकारते हैं। उधर ऋषि के अस्तित्व की अवहेलना कर उनके अहं को और उद्बुद्ध करती है तथा उनकी प्रेम-भावना को तीव्र बनाती है। ऋषि अपने को ब्रह्मज्ञानी समझकर समाधिस्थ होना चाहते हैं, किन्तु शृंगार भाव, प्रेम और विलास का अद्भुत जगत् उनके संयम को खण्डित कर डालता है। वे काम-विह्वल हो समस्त सृष्टि को मेनका पर न्यौछावर करने को उद्यत हो जाते हैं। अपनी पराजय पर विष्णु-रमा, शिव-पार्वती आदि सभी के भोग-वैभव के वर्णन द्वारा अपने मन को सान्त्वना देने का उपक्रम करते हैं। तप उन्हें व्यर्थ लगने लगता है। वासना से पराभूत हो मेनका के आलिंगन के लिए विकल हो उठते हैं। विरहाग्नि में दग्ध विश्वामित्र आत्महत्या करने को तत्पर होते हैं। इसी समय मेनका आकर आत्मसमर्पण कर देती है।

१२ वर्ष पश्चात् ऋषि-पुत्री शकुन्तला मेनका की गोद में है। मातृत्व प्राप्त कर मेनका प्रसन्न है किन्तु विश्वामित्र पश्चाताप की अग्नि में जलने लगते हैं। उधर उर्वशी के ध्यानाकर्षण से मेनका में आत्म-चेतना जाग्रत होती है और वह शकुन्तला को ऋषि के हाथों में सौंपकर चली जाती है। विश्वामित्र में पुनः अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न होता है। नर-नारी की स्थिति पर विचार करते हुए बालिका को वहीं छोड़कर विश्वामित्र पुनः ज्ञान साधना हेतु प्रस्थान कर जाते हैं।

विश्वास (वि० २००७, पृ० ४८), ले० ? सीताराम चतुर्वेदी, प्र० अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी, पात्र पु० १३, स्त्री नहीं, अंक ३, दृश्य २, १, १।
घटना-स्थल चन्द्रदेव का मकान।

नाटक का आधार सामाजिक जीवन है जिसमें मनुष्य के आदर्श और नैतिकता को महत्त्व दिया गया है। नाटक की कथा चुनाव-सम्बन्धी घटना की धुरी पर घमती है। बैरिस्टर चन्द्रदेव अपने मित्र गोरखनाथ को चुनाव में खड़े होने का आग्रह करते हैं क्योंकि वह एक सीधा, सच्चा और कर्मनिष्ठ समाज-सेवक है। बैरिस्टर चन्द्रदेव उसको चुनाव में हर प्रकार की सहायता करने का वचन देते हैं। दूसरी ओर एक पूंजीपति सेठ गणेश प्रसाद भी चुनाव में खड़े होते हैं, जिसके सहायक ज्योतिशंकर नामक एक धूर्त वकील

और मुहम्मद अब्बास नामक वाचाल मुख्तार है। ऐसी स्थिति में गोरखनाथ अपना चुनाव लड़ने का विचार छोड़ देता है। परन्तु चन्द्रदेव उसको ऐसा नहीं करने देते। ज्योतिशंकर तथा मुहम्मद अब्बास चन्द्रदेव से सेठ गणेशप्रसाद की सहायता करने का आग्रह करते हैं परन्तु वह स्पष्ट मना कर देते हैं क्योंकि गोरखनाथ को वह अपना वचन दे चुके हैं। ये दोनों इस बात पर रुष्ट होकर चले जाते हैं। चन्द्रदेव के पिता ने इनको विदेश भेजने के समय गणेश प्रसाद से सात हजार रुपया ऋण लिया था, जिसका भुगतान अभी तक नहीं हुआ था। ज्योतिशंकर गणेश प्रसाद पर रुपए का दबाव डाल कर सात दिन में ऋण चुकाने के लिए कहते हैं। चन्द्रदेव इसके लिए कुछ अधिक समय मांगते हैं परन्तु ज्योतिशंकर मना कर देता है। चन्द्रदेव का सहपाठी रघुनायक जो ठेकेदारी का काम करता है उसके यहाँ आकर उसे दस हजार रुपये दे जाता है। दूसरी ओर गोरखनाथ चन्द्रदेव को सचेत करता है कि सम्भव है इस चुनाव से उनकी और गणेश प्रसाद की शत्रुता हो जाए परन्तु चन्द्रदेव अपनी बात पर दृढ़ रहते हैं। मुहम्मद अब्बास के बार-बार समझाने का भी उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। चन्द्रदेव का मित्र कमलाकर जो एक प्रगतिशील समाचार पत्र का सम्पादक है। उनकी सहायता करने का वचन देता है। साथ ही चन्द्रदेव के पड़ोसी अध्यापक अलीहुसैन खाँ भी उनकी आर्थिक सहायता करने का वचन देते हैं। कमलाकर ने चन्द्रदेव से कहा कि यदि रुपये के सम्बन्ध में कोई लिखित पत्र नहीं है तो यह केवल एक सन्देश मात्र है। इसमें भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा जीवन की सच्ची झलक दिखाई पड़ती है। विश्व के लिए एक सन्देश है।

नाटक आदर्श प्रधान है तथा भारतीय संस्कृति का चित्रण है। इसमें भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा जीवन की सच्ची झलक एक बार तो पाठक को उसी युग में खींच ले जाती है।

यह नाटक सं० २००२ को अनन्त चतुर्वेदी की काशी की अभिनव रंगशाला में तथा सं० २००७ एवं सं० २००८ को बम्बई में खेला गया।

विश्वास कहाँ (सन् १९५८, पृ० १०६), ले० : शोभित शा 'आनन्द'; प्र० : साहित्य सदन लहेरिया सराय; पात्र : पु० २०, स्त्री ४; अंक : ४; दृश्य : ७, ८, ४, ४।
घटना-स्थल : घर, वाटिका, दालान, फुलवारी दरवाजा, पुलिस दफ्तर, रास्ता, सड़क, विद्यालय, इजलास।

इस सामाजिक नाटक में वर्ग-संघर्ष की चेतना तथा नवयुवकों की भावुकता दिखाई गई है। गौरव अपनी माँ की बीमारी का समाचार सुनकर बी०ए० का अन्तिम प्रश्नपत्र छोड़कर गाँव चला आया है। परन्तु आने पर माँ की अवस्था उतनी शोचनीय नहीं पाता जितनी उसे बताई गई थी। वह माँ को आघात लगने के भय से अपनी असली स्थिति स्पष्ट नहीं करता। दौलतराम गाँव का रईस है। उसकी पुत्री आशा गौरव का सम्मान करती है। फूटेश्वर नामक एक युवक गौरव के विरुद्ध आगरा प्रचार करता है जिससे वह दौलतराम द्वारा प्रताड़ित होता है तथा स्नेही माता पिता से भी सम्बन्ध खो बैठता है। फूटेश्वर एक तरफ तो दौलतराम को भड़काता है दूसरी तरफ गाँववालों को दौलतराम के विरुद्ध कर गौरव को उनका अगुवा बनवा देता है। फूटेश्वर और दौलतराम की करतूतों से गौरव को जेल की हवा भी खानी पड़ती है। वह हर कदम हर कार्य में गलतफहमियाँ और अपमान का शिकार होता है। अन्त में फूटेश्वर की हर चाल का इजलास में रहस्योद्घाटन हो जाता है। सभी पुनः आपस में मिल जाते हैं। किन्तु फूटेश्वर वहीं मूर्छित होकर गिरता है और मर जाता है। नाटक नायक के अन्तः एवं बाह्य द्वन्द्वों को लेकर आगे बढ़ता है और अन्त में उसे सफल बनाकर सुखान्त रूप में परिवर्तित हो जाता है।

विश्राम (सन् १९४९, पृ० ११२), ले० : मधुसूदन चतुर्वेदी; प्र० : चतुर्वेदी प्रकाशन समिति आगरा; पात्र : पु० ४, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : ७, ८, १०।

घटना-स्थल उजड़ा उद्यान, वनैर घर, आर्य समाज मन्दिर, गाँव की गली, श्मशान।

दार्शनिक पृष्ठभूमि पर लिखे गए इस नाटक का सम्पूर्ण कथानक नायक विश्राम का सच्चा आदर्श प्रेम चित्रित करता है। पहले अंक में रविशंकर और माधव बातें करते दिखाई पड़ते हैं। एक स्वच्छता को फैशन परस्ती समझता है तो दूसरा स्वच्छता, सादगी और शिक्षा को ग्रामीण जीवन का वरदान मानता है। आर्य समाजी गुरु स्वामी के सम्पर्क में शिक्षित विश्राम माधव से दार्शनिक चर्चा के संदर्भ में बताता है कि शरीर और आत्मा दोनों दो चीजें हैं जिससे देह-नाश के बाद भी आत्मा का नाश नहीं होता। पहले तो वह विवाह आदि के विरुद्ध था किन्तु स्वामी जी की बातें मानकर विद्या नाम की लड़की से विवाह करने के लिए तैयार हो जाता है। व रिची विश्राम की वाग्दत्ता विद्या विवाह रूप में बंधने के पहले ही चल बसती है। इस अप्रत्याशित दुर्घटना से विश्राम विचलित हो जाता है। अब उसे कहीं भी शांति नहीं मिलती। उसे किसी से कोई सम्बन्ध नहीं। वह इधर-उधर घूमता फिरता है। धर्मोपदेश और तीर्थाटन उसके जीवन का अंग बन जाता है।

विश्राम माधव के गाँव में अध्यापन करने लगता है। सब लोग उसे दूसरा विवाह करने की सलाह देते हैं किन्तु अपनी धुन का पक्का विश्राम एक नारी के साथ मानसिक सम्बन्ध हो जाने के बाद दूसरी के बारे में सोच भी नहीं सकता। विद्यालय में अध्यापन करते समय भी वह अपने स्वतंत्र विचारों पर आँच नहीं आने देता। विद्यालय के प्रबन्धक द्वारा छुट्टी के सम्बन्ध में दबाव डालने पर वह विद्यालय को हमेशा के लिए छोड़ देता है। उसे कहीं भी शान्ति नहीं मिलती। बसन्त पचमी के दिन वह ईमन नदी के किनारे जाता है। श्मशान में लकड़ी की चिता जलाकर अपनी प्रेयसी विद्या से मिलने के लिए उसमें प्रवेश कर जाता है।

विषपान (सन् १९५८, पृ० १२२), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० आत्माराम एण्ड संस दिल्ली, पात्र पु० ४, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ७, ८, ६।
घटना स्थल मेवाड़।

इस ऐतिहासिक नाटक में राजस्थान की प्रसिद्ध करुण घटना मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णा का विषपान चित्रित है।

मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह घरेलू समस्याओं के कारण अत्यन्त दुःखी होते हैं। उनकी पुत्री कृष्णाकुमारी के विवाह के लिए जोधपुर और जयपुर के नरेशों में विद्रोह उत्पन्न हो जाता है। कृष्णा के विवाह का टीका पहले जोधपुर के महाराज मानसिंह के पास जाता है। उस समय महाराज मानसिंह भीमसिंह से युद्ध करते हैं जिसमें भीमसिंह मारे जाते हैं। इसके पश्चात कृष्णाकुमारी का टीका जयपुर के महाराज जगतसिंह के पास जाता है। मानसिंह इसका भी विरोध करते हैं। इन्हीं झगड़ों के फलस्वरूप कृष्णा विषपान कर अपनी जीवन-लीला समाप्त कर लेती है।

वीर अभिमन्यु (सन् १९६७, पृ० ६४), ले० मुकुन्दलाल जी 'सोभाव', प्र० अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली, पात्र पु० १८, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ६ ६, ४।
घटना-स्थल समर भूमि, पाण्डवों का शिविर।

इस पौराणिक नाटक में अभिमन्यु का रणकौशल, दृढ़ संकल्प और अद्भुत पराक्रम दिखाया गया है। इसकी प्रसिद्ध कथा महाभारत से उद्धृत है। वीर अभिमन्यु कौरवों द्वारा रचित चक्रव्यूह भेदन के लिए रणक्षेत्र में जाता है। वहाँ वह धोखे से कौरवों द्वारा मारा जाता है। किन्तु वह मरते दम तक बड़ी वीरता से लड़ता रहता है।

वीर अभिमन्यु ऐतिहासिक नाटक (सन् १९३२, पृ० १४३), ले० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, राजा दरवाजा, बनारस सिटी, पात्र पु० १५, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ६, ९, ७।
घटना-स्थल रण क्षेत्र।

यह पौराणिक नाटक अभिमन्यु की वीरता

और शौर्य को प्रदर्शित करता है। पुरुषों के चरित्र-चित्रण में अभिमन्यु तथा स्त्रियों में सुभद्रा के चरित्र पर विशेष बल दिया गया है। अभिमन्यु चक्रव्यूह में अपने शौर्य का कुशल प्रदर्शन करता है परन्तु कौरव सेना उसे धोखे से मारने में सफल हो जाती है।

वीर अभिमन्यु (सन् १९५०, पृ० १९२), ले० : पं० राधेश्याम कथावाचक; प्र० : राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली; पात्र : पु० २१, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : ७, ७, ५।
घटना-स्थल : रणक्षेत्र, पाण्डव शिविर।

इस पौराणिक नाटक में अभिमन्यु का चरित्र-चित्रण किया गया है। अभिमन्यु इस नाटक का नायक है। इसकी रग-रग में वीरता समाई हुई है। पाण्डव सभा में चक्रव्यूह तोड़ने की प्रतिज्ञा करने के बाद अभिमन्यु युद्धस्थल में जाने से पहले उत्तरा के पास जाता है। उत्तरा उसे जाने से रोकती है, परन्तु वह नहीं मानता। जब उत्तरा को ज्ञात होता है कि उसके पति प्रतिज्ञा-पालन करने में तत्पर हैं तब वह प्रसन्नतापूर्वक अपने प्राणप्रिय को विदा करती है। सुभद्रा भी अपने इकलौते पुत्र और युवराज बेटे को चक्रव्यूह में जाने के लिए विदा करती है। चक्रव्यूह में पहुँचकर अभिमन्यु जयद्रथ, द्रोणाचार्य तथा दुःशासन जैसे पराक्रमी योद्धाओं को अपनी वीरता तथा रणकौशल से परास्त कर देता है। चक्रव्यूह-भेदन में अनेक योद्धाओं को परास्त करने के बाद १६ वर्षीय अभिमन्यु की विजय होती है। पाण्डव सभा में की हुई प्रतिज्ञा अभिमन्यु पूरी करता है और अन्त में अपनी वीरता दिखाने के पश्चात् वह सदा को समाप्त हो जाता है।

अन्त में अर्जुन द्वारा जयद्रथ का वध होता है तथा केवल सुखान्त के लिए अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित का राज्याभिषेक कर दिया जाता है।

वीर अभिमन्यु (सन् १९५०, पृ० ७२), ले० : प्यारेसिंह 'बेचैन'; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० १६, स्त्री ७; अंक : ३; दृश्य : ८, ७, ५।
घटना-स्थल : रणक्षेत्र, शिविर।

इस पौराणिक नाटक में कीचक-वध से जयद्रथ-वध तक की कथा का सरस चित्रण है। द्रोपदी सहित पाँचों पाण्डव अपना अज्ञात-वास राजा विराट के यहाँ व्यतीत करते हैं। दुष्ट कीचक सैरन्ध्री का सतीत्व नष्ट करना चाहता है। भीम अपनी गदा के प्रहार से कीचक को मार डालते हैं। युधिष्ठिर श्रीकृष्ण को शांति संधि करने के लिए दुर्योधन के पास भेजते हैं किन्तु दुर्योधन पाण्डवों को पांच गाँव भी देने को तैयार नहीं होता। फलतः महाभारत का युद्ध होता है। द्रोणाचार्य अर्जुन की अनुपस्थिति में चक्रव्यूह की रचना करते हैं। ऐसे विषम समय में वीर अभिमन्यु व्यूह-भेदन के लिए तैयार होता है। भीम आदि वीर अभिमन्यु के साथ चक्रव्यूह का भेदन करने के लिए जाते हैं किन्तु प्रथम द्वार-रक्षक जयद्रथ अन्य पाण्डवों को व्यूह में नहीं घुसने देता। अकेला अभिमन्यु ही व्यूह के अन्दर प्रवेश कर वीरता के साथ शत्रुओं का संहार करता है। अपनी पराजय देख दुर्योधन आदि छल से निहत्थे अभिमन्यु को मार डालते हैं। अभिमन्यु की मृत्यु से सभी पांडव शोकातुर हो उठते हैं। उधर शत्रुओं को पराजित कर अर्जुन भी वापस लौटते हैं। वे पुत्र-मरण का दुखद समाचार सुनकर अत्यन्त दुखी होते हैं। शोकातुर अर्जुन दूसरे दिन सूर्यास्त से पहले ही जयद्रथ-वध करने की प्रतिज्ञा करते हैं। दोनों दलों में घमासान युद्ध होता है। कृष्ण की माया से सूर्यास्त के पहले ही बादल घिर आने से सूर्य दिखाई नहीं देता। अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा की असफलता से दुखी एवं निराश होकर चिता में जाने की तैयारी करते हैं। दुर्योधन और जयद्रथ उन्हें चिता में जलते देखने के लिए बाहर निकल आते हैं। इसी बीच कृष्ण मायारूपी बादलों को हटाकर पुनः सूर्य को प्रकाशित कर देते हैं। अब श्रीकृष्ण की आज्ञा से अर्जुन जयद्रथ का सिर काटकर उसके पिता वृद्धक्षेत्र की गोद में डाल देते हैं जिसके परिणामस्वरूप जयद्रथ के पिता भी भस्म हो जाते हैं।

वीर अभिमन्यु वध (सन् १९४६, पृ० ९६), ले० रामलखन पाण्डेय 'विशारद', प्र० भार्गव पुस्तकालय, बनारस, पात्र पु० १७ स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ६, ५, ८।
घटना स्थल पाण्डव शिविर, चक्रव्यूह, रणक्षेत्र।

इस पौराणिक नाटक मे अभिमन्यु की वीरता तथा उसकी दुखद मृत्यु का वर्णन है। महाभारत की लडाई के समय द्रोणाचार्य द्वारा बनाए चक्रव्यूह का भेदन अर्जुन के अतिरिक्त केवल अभिमन्यु ही जानता है किन्तु वह भी छह द्वार तक। सातवें द्वार का उसे ज्ञान भी नही है। कौरव सेना इसी चक्रव्यूह की लडाई मे सातवें द्वार पर अभिमन्यु का छल के साथ वध करती है।

वीर अभिमन्यु नाटक (वि० १९९२, पृ० १२८), ले० बेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली', प्र० बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस, पात्र पु० १७ स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ८, ५, ६।
घटना-स्थल पाण्डव शिविर, चक्रव्यूह।

यह वीररस-पूर्ण एक पौराणिक नाटक है। इसमे 'महाभारत' के अर्जुन-पुत्र वीर अभिमन्यु की कथा वर्णित है। पूरे कौरव एव पाण्डव वीरों मे चक्रव्यूह-भेदन की कला द्रोणाचार्य एव अर्जुन को छोड किसी को ज्ञान नही। अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु यह कला गर्भावस्था म ही पिता द्वारा माता को बताते हुए सीख लेता है किन्तु बीच मे ही माता के सो जाने के कारण वह कथा अधूरी रह जाती है। जिससे वह भी इसका आधा भाग केवल प्रवेश ही जाता है। युद्ध मे अर्जुन के दूर चले जाने के बाद कौरव-पक्ष के गुरु द्रोणाचार्य चक्रव्यूह की रचना करते है। वीर अभिमन्यु व्यूह भेदन की अधूरी कला जानते हुए भी वीरतापूर्वक व्यूह मे प्रवेश करता है और अपने असाधारण पराक्रम से युद्ध करता है। यह रणक्षेत्र मे कौरवो द्वारा धोखे से आक्रमण किए जाने के परिणाम-स्वरूप वीर गति को प्राप्त होता है।

वीरचक्र (सन् १९६४, पृ० ११६), ले० सुरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, प्र० देवेन्द्र प्रकाशन, बहुता, मुजफ्फरपुर, पात्र पु० १६, स्त्री ६, अंक ४, दृश्य १०।
घटना स्थल मंत्री का शयनकक्ष, मनोरमा का घर, सेनाओ का कैम्प, वृद्धा का आगन, पहाडी भाग, अस्पताल एव हिमालय की तराई।

यह क्रांतिकारी नाटक चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इसम देशभक्ति तथा भारतीय नारी के बलिदान का आदर्श उपस्थित किया गया है। कथा का आरम्भ नरेन्द्र द्वारा तरुणोचित भावना से राष्ट्र रक्षा के लिए उत्तेजित होने से होता है। नाट्यकार ने सीमा की सुरक्षा की ओर भी संकेत किया है। नरेन्द्र के जीवन की विषमता-समता, आशा-निराशा, आरोह-अवरोह, उत्थान-पतन तथा धर्म-कर्म इत्यादि मे 'जननीजन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' को ही सार्थक माना गया है। वस्तुत मनोरमा शरीर, मन, प्राण तथा कणकण से पुरुष को पौरुष प्रदान करने मे समर्थ होती है। अकस्मात् उसके सीमन्त का सिन्दूर देश-रक्षा की प्रलयकारी बाढ मे बह जाता है।

वीर चन्द्रशेखर नाटक (सन् १९६७, पृ० ११४), ले० जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द, प्र० रवीन्द्र प्रकाशन, आगरा व ग्वालियर, पात्र पु० १२, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ३, ३, ३।
घटना स्थल काशी, लाहौर, प्रयाग, कानपुर, बम्बई।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसकी कथा भारतीय स्वतन्त्रता-सग्राम के सेनानी, अमर शहीद क्रांतिकारी वीर चन्द्रशेखर आजाद से सम्बन्धित है। भारतीय स्वतन्त्रता के लिए आजाद द्वारा किए गए साहसी प्रयासो का उसमे पूर्णरूपेण समावेश है।

वीर चूडावत सरदार (वि० १९७५, पृ० १०६), ले० परमेष्ठीदास, प्र० भारत गौरव ग्रन्थ माला (पन्नालाल सिदाई),

पात्र : पु० १८, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : ८, ६, १०।
घटना-स्थल : महाराजा राजसिंह का दरबार, रूपनगर का राजमहल, उद्यान।

इस ऐतिहासिक नाटक में कुटिल औरंगजेब द्वारा रूपनगर की राजकन्या प्रभावती पर किये गये अत्याचार का वर्णन है।

औरंगजेब प्रभावती पर बलात्कार करना चाहता है। प्रभावती और रूपनगर का ठाकुर रामसिंह और उसका छोटा भाई रणधीर मेवाड़ के राना के नाम पत्र भेजकर यह सूचना देते हैं—"दिल्ली के बादशाह औरंगजेब ने यहाँ की सुख-शान्ति छिन्न-भिन्न कर दी है। यहाँ की राजपूत वीर बालाएँ आप से रक्षा की भीख माँग रही हैं क्योंकि आज बलात् मुझे व्याहने के लिए अत्याचारी औरंगजेब यहाँ चढ़ा आ रहा है किन्तु यह दासी अपने प्राण जीवित रहते उसको अंग तक स्पर्श न करेगी। आप मेरी रक्षा करें अन्यथा मैं आत्महत्या कर लूँगी।" पत्र में लिखी इस बात को सुनकर मेवाड़ के राना राजसिंह का सेनापति चूड़ावत सरदार रक्षा की शपथ खाता है और औरंगजेब पर १३०० सैनिकों द्वारा चढ़ाई कर उसके २०००० सैनिक मार कर उसे पराजित कर देता है। राजपूत बालाओं और प्रभावती की जान बच जाती है। अंत में प्रभावती की शादी राजसिंह से हो जाती है।

वीर ज्योति(सन् १९२४, पृ० २१४), ले० : लोकनाथ द्विवेदी; प्र० : गंगा ग्रन्थागार, लखनऊ; पात्र : पु० १६, स्त्री ६; अंक : ५; दृश्य : ६, ६, ८, ७, ५।
घटना-स्थल : राज सभा, मैदान में मुगल शिविर, दिल्ली दरबार, पहाड़ की तराई, राज महल, आगरा का मुगल दरबार, महोबे का राज भवन, जंगल।

नाट्यकार भूमिका में प्राचीन मान्यता का विरोध करते हैं। वह धर्म की विजय और अधर्म की पराजय का सिद्धान्त अस्वीकार करते हैं। वह लिखते हैं—"हम प्रतिदिन देखते हैं कि धार्मिक और भले लोगों पर कपटी, कृतघ्न, छली और दुराचारी विजय प्राप्त करते हैं।"

इस नाटक के नायक चंपतराय बुंदेलखण्ड के नाममात्र राजा हैं। मुगल बादशाह बुंदेलखण्ड का नाम इस्लामाबाद रखना चाहते हैं। इससे क्षत्रियों का खून खौल उठता है। वह स्वाधीनता के लिए तड़फड़ा उठते हैं। वे मुगलों से विद्रोह करना चाहते हैं पर मन्त्री उन्हें विपत्ति से सावधान करता है। सम्राट् शाहजहाँ चंपतराय को दबाने के लिए सेना भेजता है पर कई बार हार जाने पर शहबाज खाँ को भेजता है। शहबाज खाँ जब वेश्याओं का मुजरा सुनने में व्यस्त होता है तब चंपतराय उस पर आक्रमण करके विजय प्राप्त करते हैं।

द्वितीय अंक में चम्पतराय विजय से उन्मत्त हो विलासी बन जाते हैं और रानी सारंधा की चेतावनी पर ध्यान नहीं देते। ओरछे का राजपूत पहाड़सिंह ईर्ष्यावश चम्पतराय को विष देकर मार डालना चाहता है। दो शत्रुओं से घिरने पर माता के परामर्श से वह मुगलों से सन्धि कर लेता है। विलासी होने के कारण वह सागर के बुन्देला राजा कुम्भकरण की बाल विधवा बहिन ललिता पर आसक्त हो जाता है। पर उसे विधवा समझकर उससे विवाह नहीं करता। सारंधा की वाणी का चम्पतराय पर प्रभाव पड़ता है और वह महोबा में आकर शांतिपूर्वक राज्य करने लगता है।

शाहजहाँ की मृत्यु के उपरान्त चम्पतराय औरंगजेब की सहायता दारा के विरुद्ध करते हैं और औरंगजेब के बादशाह होने पर बारह हजारी मंसबदार का पद प्राप्त करते हैं। किन्तु कालान्तर में औरंगजेब से खटपट होने के कारण मुगलों से युद्ध करते हैं। अन्त में "उसी स्वाधीनता की उपासना में वह पत्नी-सहित बलिदान हो जाते हैं।"

वीर दुर्गादास (वि० १९८४, पृ० १६६), ले० : लाला छोटे लाल; प्र० : नेशनल बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली; पात्र : पु० २३, स्त्री ८; अंक : ३; दृश्य : १२, १०, ६।
घटना-स्थल : दिल्ली का महल, राजसिंह का

विचार भवन, उद्यान।

इस ऐतिहासिक नाटक की घटनायें टाड राजस्थान के आधार पर निर्मित हैं। उदयपुर के सिंहासन पर राजसिंह विराजमान् है। जोधपुर की रानी महामाया सपरिवार राजसभा में आती है। उनके साथ दुर्गादास, समरदास, कासिम आदि हैं। महामाया अपने पुत्र की रक्षा की याचना करती है। समरदास राजसिंह के पुत्र भीमसिंह के शौर्य का वर्णन करता है और उनकी मृत्यु का वृत्तान्त सुनाता है। राजसिंह को अपनी कायरता पर ग्लानि होती है और वह आत्महत्या करना चाहते हैं। समरदास छुरी छीन लेता है।

औरंगजेब को दूनायन खा सूचना देता है कि "राजपूतों ने शाहजादा अकबर को अपना बादशाह मान लिया है और आप को हटाकर दिल्ली के तख्त पर उसे बिठाने का वायदा किया है।" औरंगजेब दिलेर खा को भेजकर राजपूतों को पराजित करने का आदेश देता है। उसकी कूटनीति से राजपूतों में फूट पड जाती है। अकबर भागकर शम्भा जी के पास जाता है। औरंगजेब शम्भाजी को भी बन्दी बनाता है।

इधर दुर्गादास की वीरता पर गुलेनार मुग्ध हो जाती है। औरंगजेब उसे कोसता है और वह अन्तिम सांस लेती है।

औरंगजेब अपने अंतिम दिनों में दौलताबाद आ जाता है। वह अपने कुकृत्यों को याद करता है। वह कहता है—"यह क्या जसवन्त सिंह और पृथ्वीसिंह हैं जिन्हें मैंने जहर के जरिए अदम पहुँचाया। ओ पाक रूहो! मुआफ करो।"—

इधर दुर्गादास के पास दिलेर खा पहुँचते हैं और उसकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं—"हिन्दुओं मे श्यामसिंह व शम्भा जैसे दगाबाज भी पैदा होते हैं और दुर्गादास जैसे बहादुर भी। दुर्गादास के प्रयास से महामाया के पुत्र अजीतसिंह की रक्षा होती है। जयसिंह के प्रस्ताव पर दुर्गादास अजीतसिंह के सिर पर राजमुकुट रखता है।

वीर दुर्गादास (सन् १९३४, पृ० १३६), ले० सुवर्ण सिंह वर्मा 'आनन्द', प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ११, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य १०, ६, ७। घटना-स्थल दिल्ली स्थित औरंगजेब का महल, उद्यान।

इस ऐतिहासिक नाटक में वीर दुर्गादास की सच्ची देश भक्ति तथा वीरता के साथ-साथ औरंगजेब के क्रूर अत्याचारों की भी अभिव्यक्ति की गई है। वीर दुर्गादास औरंगजेब के अत्याचारों का बडी वीरता से दमन करता हुआ हिन्दुत्व की लाज रखता है। महामाया की प्रेरणा से जयसिंह की वीर पत्नी सरस्वती भी हिन्दू अबलाओं को तथा देश को बडी कुशलता एवं साहस के साथ औरंगजेब के खूनी पंजो से बचाती है।

वीर दुर्गादास राठौर (सन् १९०५, पृ० ८२), ले० चन्द्रभान 'चन्द्र', प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० १७, स्त्री ८, अंक ३, दृश्य ८, ७, ५।
घटना-स्थल दिल्ली, काबुल, कैदखाना।

इस ऐतिहासिक नाटक में वीरवर दुर्गादास की यशोगाथा का वर्णन है। औरंगजेब यशवन्तसिंह को युद्ध के लिए काबुल भेजता है। वहाँ युद्ध में यशवन्तसिंह और उनके पुत्र पृथ्वीसिंह मारे जाते हैं। औरंगजेब महामाया और उनके नवजात पुत्र अजीत को काबुल से दिल्ली लाने के लिए नयनपाल को भेजता है। नयनपाल काबुल पहुँचकर दुर्गादास को महामाया तथा अजीत के साथ दिल्ली चलने की आज्ञा देता है। दुर्गादास औरंगजेब की दुष्टता को भाँपकर बडी चतुराई से महामाया को ग्वालिन के वेश में किले से बाहर निकाल देता है और इन्द्रा का महामाया के वस्त्र पहनाकर दिल्ली की ओर प्रस्थान करा देता है। अजीत को मृत घोषित करने की सारी बातें नयनपाल को मालूम हो जाती हैं। वह माँ-बेटे दोनों को सकुशल उदयपुर पहुँचाने की आज्ञा देता है। वह दुर्गादास को गिरफ्तार कर घने जंगल में छुडवा देता है और इन्द्रा को अपनी प्रेमिका बनाने के लिए उसे दिल्ली लाकर चुपके से

अपने महल में छिपा देता है। औरंगजेब नयनपाल के घर की तलाशी लेकर इन्द्रा को पकड़ लेता है और उसे उदयपुरी के हवाले कर देता है। औरंगजेब नयनपाल को कैदखाने में डाल देता है। नयनपाल अब अपनी गलती स्वीकार कर दुर्गादास का विश्वस्त मित्र बन जाता है। कासिम उदयपुर पहुँचकर योगी के संरक्षण में महामाया और अजीत को छोड़ देता है। दुर्गादास और नयनपाल भी इन्द्रा को छुड़ाकर उदयपुर जा पहुँचते हैं।

महामाया राजसिंह की सहायता से युद्ध में औरंगजेब को पराजित कर उदयपुरी को कैद कर लेती है। औरंगजेब संधि करके दिल्ली लौट जाता है। वह मौका देखकर दिलेर खां और अकबर को पुनः मारवाड़ पर हमला करने के लिए भेजता है। दुर्गादास बड़ी वीरता एवं कुशलता से राजपूतों की सेना तैयार करके औरंगजेब का सामना करता है। अकबर अपने पिता का साथ छोड़कर राजपूतों से जा मिलता है परन्तु औरंगजेब अपनी कूटनीति से अकबर के प्रति राजपूतों में अविश्वास पैदा करा देता है। सभी राजपूत अकबर को अपने पास रखने के लिए तैयार नहीं होते तो दुर्गादास शरणागत की रक्षा के लिए अकबर को लेकर सम्भाजी के पास जाता है। उदयपुरी दुर्गादास को गिरफ्तार कर अपने साथ शादी करने के लिए बाध्य करती है। किन्तु दुर्गादास बड़ी कठोरता से उदयपुरी के प्रेम को ठुकरा देता है। उदयपुरी दुर्गादास को मार देने की आज्ञा देती है लेकिन दिलेर खां दुर्गादास के प्राणों की रक्षा करता है। दुर्गादास अजीतसिंह को जोधपुर का राजा बना कर स्वयं शहर से बाहर एक कुटिया में ईश-आराधना में लीन हो जाता है।

वीरबन्दा वैरागी (सन् १९२९, पृ० १०६), ले० . सुवर्ण सिंह वर्मा ; प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० १०, स्त्री नहीं; अंक : ३; दृश्य : ७, ६, ५।
घटना-स्थल : मकान, बलिवेदी।

इस ऐतिहासिक नाटक में सिक्ख धर्म के प्रेमी वीर बन्दा वैरागी की धर्मनिष्ठा दिखाई गई है। सिक्ख धर्म और जाति की उन्नति एवं प्रतिष्ठा के लिए वीर बन्दा वैरागी अपने सारे परिवार को बलिवेदी पर चढ़ाने में नहीं हिचकिचाता। लक्ष्मणसिंह और कनकसिंह दोनों प्रारम्भ में शिकार खेलने जाते हैं जहां पर सौन घायल हिरन के बच्चों को तड़पते हुए देख लक्ष्मणसिंह के हृदय में दया आ जाती है। वह हिंसा करने से घबड़ाता है और भविष्य में अहिंसा का व्रत धारण करने की प्रतिज्ञा करता है।

वीर बन्दा वैरागी पंजाब में सिक्खों को जबरदस्ती मुसलमान बनाने की नीतियों का विरोध करता है। कनकसिंह की धोखेबाजी से वीर बन्दा वैरागी को अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। यहां तक कि उसके बच्चे गिरफ्तार कर लिये जाते हैं किन्तु बन्दा वैरागी बड़े साहस से काम लेता है और सिक्ख धर्म को अवनत होने से बचा लेता है।

वीर बाला (सन् १९१२, पृ० ६६), ले० : राजेश्वरनाथ जेबा; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० ११, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ७, ६, ४।
घटना-स्थल : महल, मार्ग, मकान, जंगल।

इस अर्द्ध ऐतिहासिक नाटक में राजकुमार सूरसेन का अत्याचारी चाचा उसके पिता वीरबाहु को जंगल में भागने को बाध्य करता है। जंगल में छिपकर जब अत्याचारी चाचा दुर्जनसिंह अपने भाई को मारना ही चाहता है तब तक वीरसिंह उसका वार रोक लेता है। शोर सुनकर सूरसेन चाचा दुर्जनसिंह के पास पहुंच जाता है। दुर्जनसिंह पुनः पिस्तौल निकालता है तो सूरसेन कहता है—"ले ओ मूजी ! तू ही संभाल मेरे बाप की मीरास। मैं इस अधर्मी देश से जाता हूं और इस राजपाट को ठोकर लगाता हूं।" सूरसेन जंगल में भाग जाता है तो दुर्जनसिंह वहां भी उसका पीछा करता हुआ पहुंचता है और उसकी हत्या करना चाहता है। दोनों में लड़ाई होती है। उसी समय उसका गुरु वीरबाहु आकर सुरंग तोड़ने का आदेश देता है। इसी समय मरदाना वेश में सुन्दरमती

सुरग तोडती है और सूरसेन बच जाता है। दुर्जनसिंह को जोरावर की सहायता का भरोसा है। इसी समय वीरबाहु दुर्जनसिंह को सावधान करते हैं—"अब भी अपने कुकर्मों से बाज आ, वरना पछतायेगा।" साथियों के साथ युद्धक्षेत्र में मारा जायेगा। जगल में दुर्जनसिंह और सूरसेन सेनासहित लडते हैं। सुन्दरमती योगिनी के भेष मे दुर्जनसिंह से लडती है। दुर्जनसिंह की मृत्यु होती है, जोरावर पकडा जाता है।

दूसरी कथा प्रभावती की है, जिसका पति विलासराय चम्पा नामक वेश्या के वश मे पडकर घर बार भूल गया है। प्रभावती उस वेश्या के घर मे पहुँचकर अपने पति को मरने से बचाती है। विलासराय क्षमा-याचना करता है। महाराज अपने बेटे सूरसेन का सुन्दरमती से विवाह करके उसे ताज पहनाता है।

वीर भारत नाटक (सन् १९४१, पृ० १३६), ले० भवानीदत्त जोशी, प्र० जोशी भ्रातृ वर्ग, ६०१, कटरा, इलाहाबाद, पात्र पु० १६, स्त्री ३, अक ८, दृश्य-रहित।

इस नीतिपरक नाटक का मूल आधार धर्म तथा अन्याय के युद्ध का वर्णन है। अन्त मे धर्म की विजय दिखलाई गई है। वर्तमान युद्ध-कला तथा नीतियो का भी इसमे दिग्दर्शन होता है।

वीर भारत (सन् १९४६, पृ० ६६), ले० शिवराम दास, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ११, स्त्री ४, अक ३, दृश्य १०, ८, ५।
घटना-स्थल मगध की राजधानी, युद्धक्षेत्र।

यह नाटक ऐतिहासिक है। चाणक्य मगध के राजा नन्द को गद्दी से उतार देता है और चन्द्रगुप्त को वहाँ का राजा बना देता है। फिर सिकन्दर को वापस ग्रीक लौटा कर वह सिल्यूकस को युद्ध मे पराजित करता है। तथा उसकी पुत्री हेलेन का विवाह चन्द्रगुप्त से कराकर भारतीय वीरता का सुयश यूनान तक पहुँचाता है।

वीर राजपूत नाटक (सन् १९१३, पृ० ६५) ले० मणीलाल शर्मा, प्र० के० सी० भल्ला, स्टार प्रेस, प्रयाग, पात्र पु० १२, स्त्री ५, अक ४, दृश्य १६।
घटना स्थल मौरीगढ का उद्यान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे राजपूतो की वीरता दिखाई गई है। वीर राजपूत अवतार सिंह मौरीगढ के राजा नरसिंह की कन्या सुकेशी से प्रेम करता है। किन्तु सुकेशी अपने प्रेमी की वीरोचित परीक्षा लेना चाहती है। इसी बात से आहत होकर अवतार सिंह अहमदाबाद चला जाता है और वहा मुसलमानों के सेनापति तातार इस्माईल बेग के यहा चाकरी करता है। मुसलमान मौरीगढ पर आक्रमण करते है। उस समय अवतार सिंह अपने अद्भुत पराक्रम से मुसलमानो को परास्त कर मौरीगढ को पराजय से बचा लेता है। राजकुमारी सुकेशी अपने वीर प्रेमी का स्वागत करती है और उसके गले म वरमाला पहनाती है।

वीर वामा (सन् १९४०, पृ० ३४), ले० बैजनाथ, प्र० बडा बाजार सूती वही स्ट्रीट, कलकत्ता, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक-रहित, दृश्य ६।
घटना स्थल वीरसिंह का राज दरबार।

यह एक ऐतिहासिक सयोगान्त रूपक है। राजा वीरवर का मत्री हुशमत खाँ है जो वीरवर और उनके जागीरदार वीरसिंह के बीच मनभेद डालने के लिए वीरवर पर राजद्रोह का मिथ्या दोषारोपण करता है। परन्तु वीरवर कहता है कि "जब तक इन नीचो का भारतवर्ष से सर्वनाश न हो जायेगा भारत कदापि सुख की नीद न सायेगा"। वीरसिंह उसे कैद कर लेता है। किन्तु बाद मे वीरवामा से उसका अपराध मिथ्या मालूम होने पर उसे छोड देता है।

वीर विक्रमादित्य (वि० २०१२, पृ० ६२), ले० सत्यनारायण पाडेय, प्र० हिन्दुस्तानी बुक डिपो,लखनऊ, पात्र पु० २६, स्त्री ७; अक ४, दृश्य ८, ६, ५।

शिक्षा ग्रहण कर गौ-ब्राह्मण तथा स्त्रियों की मुसलमानों के अत्याचारों से रक्षा करते हैं। व युद्ध में मुगलों को बुरी तरह पराजित कर अफजल खां को चालाकी से मार भगाते हैं। औरंगजेब अपने भाइयों को मार कर और अपने बाप शाहजहाँ को आगरे के किले में कैद करके खुद बादशाह बन जाता है। शिवाजी की बढ़ती हुई ताकत से डर कर औरंगजेब शिवाजी को अपने दरबार में बुलवाता है। शिवाजी औरंगजेब के दरबार में उपस्थित होते हैं लेकिन उचित सम्मान न मिलने के कारण बहुत क्रुद्ध होते हैं। औरंगजेब उन्हें गिरफ्तार करके नजरबन्द कर देता है। शिवाजी मिठाई के टोकरे में बैठकर औरंगजेब के कैदखाने से भाग निकलते हैं। शिवाजी की वीरता, साहस और धर्मनीति से उनकी विजय होती है तथा उनका राज्याभिषेक हो जाता है।

वीर स्काउट (सन् १९५५, पृ० ९२), ले० प्रेम प्रकाश वर्मा प्र० हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ३, ६, ५।
घटना-स्थल मायादास का मकान स्कूल, स्काउट आश्रम।

इस सामाजिक नाटक में वीर स्काउटों की दर्दनाक तथा वीरतापूर्ण घटनाओं को चित्रित किया गया है। इसमें रमेश, शम्भू, आनन्द तथा गोपाल वीर स्काउट हैं। इन्द्रा एक गरीब लड़की है जिसकी माता के सिवा और कोई नहीं है। वह एक निर्भीक तथा कमठ गर्ल स्काउट है। लक्ष्मीदास का पुत्र मायादास एक शराबी तथा कॉलेज का आवारा विद्यार्थी है। मायादास इन्द्रा के साथ शादी करना चाहता है लेकिन इन्द्रा उससे घृणा करती है। सहसा एक ग्रामीण युवक की मायादास की कार से दुर्घटना हो जाती है। इन्द्रा तथा गोपाल उसे स्काउट आश्रम के अस्पताल में ले जाते हैं। वहाँ पर ग्रामीण युवक का इलाज होता है और वह ठीक हो जाता है। यह युवक वीर स्काउट कृष्ण कुमार है जिसको स्काउटिंग के संस्थापक लार्ड बेडेन पावल एवं श्री वाजपेयी द्वारा स्काउटिंग किंग की उपाधि दी जाती है। स्काउट आश्रम की सुपरिटेंडेंट यशोदा, इन्द्रा और कृष्ण कुमार एक दूसरे को पहचान लेते हैं। जो वास्तविक सगे भाई-बहन तथा माता हैं। मायादास एक अनाथ लड़की आशा को जबरदस्ती पत्नी बनाना चाहता है लेकिन विधवा आशा बड़ी बहादुरी से अपने भाई तथा कृष्ण कुमार की मदद द्वारा उससे छुटकारा पाती है। कृष्ण कुमार उसे स्काउट आश्रम में ले जाता है जहाँ आशा की आंख में हुए मोतिया बिन्द का इलाज होता है। अचानक मायादास के पिता लक्ष्मीदास का दिवाला निकल जाता है जिससे लक्ष्मीदास की मृत्यु हो जाती है और मायादास पागल हो जाता है। पागलपन के कारण मायादास और कृष्ण वीर की लड़ाई होती है, जिसमें दोनों को काफी चोट आती है। दोनों का स्काउट-आश्रम में इलाज होता है। कुछ दिनों के बाद कृष्ण वीर तथा मायादास दोनों ठीक हो जाते हैं। मायादास सभी से अपने किये गये अन्यायों के लिए क्षमा-याचना करता है। इन्द्रा की माता यशोदा अपनी लड़की की शादी मायादास के साथ कर देती है जिससे मायादास तथा इन्द्रा बहुत ही प्रसन्न होते हैं। वीर स्काउट कृष्ण कुमार भी विधवा लड़की आशा के साथ शादी करने के लिए तैयार हो जाता है। दोनों की शादी हो जाती है। अंत में स्कूल के प्रधानाचार्य की मदद से कृष्ण कुमार तथा इन्द्रा अपने खोए हुए पिता को तथा यशोदा अपने पति को पाकर बहुत ही प्रसन्न होते हैं।

वीर हकीकत राय (सन् १९७१, पृ० ६४), ले० घनश्याम प्रसाद शर्मा, प्र० अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली, *पात्र पु० १०, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य १०, ३, ८।*
घटना-स्थल शाहजहाँ का दरबार।

इस ऐतिहासिक नाटक में शाहजहाँ की न्यायप्रियता दिखाई गई है। हकीकतराय मकतब में पढ़ते समय धर्म पर आक्षेप सुनकर वहाँ के कुछ लोगों से झगड़ता है। वह विरोधियों को कुछ भला-बुरा भी कहता है। इस पर लोग क्रुद्ध

होकर काजी की मदद से हकीकत की हत्या कर देते हैं। अन्त में हकीकत राय के पिता भागमल शाहजहाँ के दरबार में न्याय की फरियाद करते हैं। शाहजहाँ अपनी जान देकर खून का न्याय करना चाहता है पर भागमल क्षमा कर देता है और हिन्दू मुसलमान को एक साथ रहने की नेक सलाह देता है।

वीर हम्मीर (सन् १९११, पृ० ६०), ले० : शिवचरण 'चारण'; प्र० : महर्षि मालवीय इतिहास परिषद्, उपासना मन्दिर, दुगड्डा (गढ़वाल); पात्र पु० १७, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : ४, ३, ३।
घटना-स्थल : रणथम्भौर दुर्ग, अलाउद्दीन का शिविर, रणक्षेत्र, बासानदी का तट, खिल्जी शिविर, राजमार्ग।

यह ऐतिहासिक नाटक वीरता, देश-प्रेम और राष्ट्रीयता से परिपूर्ण है। इसमें हम्मीर सिंह की वीरता का वर्णन किया गया है। हम्मीर अपने राज्य को सुखी बनाने के लिए अस्पताल, कुँए, तालाब आदि बनवाता है।

नूरजहाँ और उसका पति मीर मुहम्मद उलगूर खाँ द्वारा किए गए हमले से भागकर हम्मीरसिंह से शरण माँगते हैं। हम्मीरसिंह उन्हें शरण देता है। उलगूर खाँ और भोम पीतम दोनों मिलकर युद्ध की तैयारी करते ही हैं कि हम्मीरसिंह उन पर चढ़ाई करके विजय पाता है। उसके दोनों भाई युद्ध में मारे जाते हैं।

वीर हम्मीर नाटक (सन् १९१२, पृ० ४२), ले० : रुद्रनाथ सिंह; प्र० : जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, काल भैरो, काशी; पात्र : पु० २२, स्त्री ८; अंक : ३; दृश्य : ६, ११, ११।
घटना-स्थल : दिल्ली, रणथम्भौर।

इस ऐतिहासिक नाटक में रणथम्भौर के सम्राट् हम्मीर की वीरता का वर्णन किया गया है। हम्मीर मुग़ल-सम्राट् अलाउद्दीन के एक सैनिक को अपने यहाँ शरण देता है जिसके फलस्वरूप अलाउद्दीन रणथम्भौर पर हमला करता है। परन्तु राजपूतों की वीरता के समक्ष यवनों के पैर उखड़ जाते हैं। युद्ध में हम्मीर की विजय होती है। जब हम्मीर अपने सैनिकों के साथ शत्रुओं की छीनी हुई पताका को लिए हुए किले की ओर लौटता है तो वीर क्षत्राणियाँ समझती हैं कि यवन सैनिक राजपूतों को जीतकर इधर आ रहे हैं जिससे रानी, कुमारी, देवल आदि अपने को अग्नि में आहुति दे देती हैं। इस पर हम्मीर दुःखी होकर आत्मघात करना चाहता है, किन्तु उसके सैनिक उसे रोक लेते हैं।

वीरांगना (सन् १९७०, पृ० ६२), ले० : मालती श्री खड़े; प्र० : नागरी प्रकाशन सागर; पात्र : पु० ७, स्त्री ३; अंक : ४; दृश्य : १, ३, १, १।
घटना-स्थल : राजप्रासाद में सिंहासन, नगर का मार्ग, उपवन, मैदान।

कुंडनपुर के महाराज विक्रमसिंह पर शत्रु आक्रमण करता है। महाराज विक्रमसिंह युद्ध की तैयारी करते हैं। किन्तु मुख्यमंत्री महेन्द्र पाल युद्ध का विरोध करता है। वह एक सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य करना चाहता है। किन्तु इसी समय वाग्दत्ता वधू जयश्री सन्धि का विरोध करती हुई अपनी प्रणय मुद्रिका वापस करना चाहती है। वह विक्रमसिंह से कहती है कि युद्ध में आप को कूदना ही चाहिए। सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर करने के स्थान पर आपको युद्ध करना उचित है। दूसरे अंक में विजयनगर के युवराज चन्द्रधर का ध्वज कुंडनपुर में उड़ाने का उद्योग मंत्री महेन्द्रपाल करता है किन्तु कोतवाल धीरज सिंह इसका विरोध करता है। जयश्री ललकारती है कि "जो कुंडनपुर के झंडे के गौरव को जरा भी धक्का देने का प्रयत्न करेगा वह मौत के घाट उतार दिया जाएगा।" महेन्द्रपाल सिपाहियों की शक्ति से कुंडनपुर के झंडे को उतार कर विजयनगर का झंडा आरोपित करता है। जयश्री बन्दिनी बनाई जाती है और युवराज चन्द्रधर की आज्ञा से उसके सम्मुख उपस्थित की जाती है। उसके देशप्रेम और स्वातंत्र्य प्रेम के कारण युवराज उस पर प्रसन्न हो जाता है और उसे वीरांगना

निर्णय (वि० १६८२, पृ० ४५), ले० चद्र-प्रसाद, प्र० लक्ष्मी प्रेस, सप्त सागर काशी, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अक के स्थान पर तीन अदालतें—मुसिफ, सदर आला, सदर दीवानी।
घटना स्थल सशय नगर, उपासनापुर, आनदाबाद।

वेदान्त का सार, कचहरी मे चलने वाले अभियोगों के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया गया है। सवत् ५२५ के अगहन महीने के दिनाक ३ को विषयपुर परगने के आत्माराम और बोध-प्रकाश दिवानी अदालत मे विद्यमान हैं। कायापुर ग्राम निवासी लोभीदास, कामाचरण, भरम लाल, महारानी अविद्या कुमारी, शक्ति माया कुमारी के ऊपर अभियोग चलाते हैं। आत्माराम मुद्दई न० १ अद्वैतपुर का रहने वाला है। उसका कथन है कि "रानी अविद्या कुमारी वचका ने मुझ मुद्दई को फरेब मे लाकर मेरे इस कायापुर को बसाया और कायापुर मे एराजी (खेत) लाखराज मिनहाई निकाल कायापुर अमली मे अनेकपुर, दुर्मतिपुर श्वेतागज, विषयपुर वगैरह रानी अविद्या कुमारी के बन्दोबस्त किया।" वादी साक्षी के रूप मे सतोषीदास, शीतल चन्द, सनेही लाल, मनसा राम, विद्याधर, शीलचन्द आदि को उपस्थित करता है।

प्रतिवादी साक्षी रूप मे हठीचरण, लबारचन्द, दुष्ट प्रसाद, अधर्मीलाल, क्रोधमल, घमण्डी सिंह आदि को पेश करता है। अदालत अनेक कारणो से वादी का मुकदमा डिसमिस कर देता है। आत्माराम और बोधप्रकाश सदरआला बाबू अनुराग चन्द सेन की उपासनापुर स्थित अदालत मे अपील करते हैं। मुसिफ का फैसला रद्द किया जाता है और अपील कर्त्ता को जायदाद मोकर्री पर दखल दिया जाता है। किन्तु प्रतिवादी पुन आनदाबाद जिला-स्थित सतसग नामक दिवानी म अपील करता है। इस अदालत मे सदरआला साहेब का फैसला बहाल रहता है। फैसले का सारांश है कि 'महारानी भक्ति कुमारी से दस्तावेज मोकर्री एराजी लाखराज सुमिरनपुर वगैरह का लिखवाया वो प्रेमभाव का लगाया और उस पर काबिज वो दखल चला आया है तब अविद्या कुमारी वो यमराजसिंह से इसको सरोकार नहीं है। इसकी मालिक भक्ति कुमारी है।"

वेन चरित्र अथवा राज परिवर्तन नाटक (वि० १६७६, पृ० १७७), ले० बदरीनाथ भट्ट, प्र० रामप्रसाद ऐन्ड ब्रदर्स, आगरा, पात्र पु० २०, स्त्री ५, अक ३, दृश्य ७, ७, ४।
घटना-स्थल नगर के पास का रास्ता, राजमहल का कमरा, बाग, जखीना का मकान।

इस पौराणिक नाटक मे श्रीमदभागवत में उद्धृत वेन नामक राजा की कथा चित्रित है।

अग नामक राजा का पुत्र वेन अपनी अराजकता के लिए प्रजा म कुख्यात है। राजा पुत्र को इस दुराचारी नीति से अलग करना चाहते हैं किन्तु वह जखीना नामक शूद्र की मदद से ब्राह्मणों, अबलाओं तथा गरीबों पर अत्याचार करवाता है। राजा पुत्र की दुश्चरित्रता से दुखी होकर वन मे चले जाते हैं। राज्य मे शूद्रों का बोलबाला हो जाता है। ऋषि एव ब्राह्मण वर्ग समझौते के लिए शूद्रो द्वारा सचालित वेन का राजत्व स्वीकार कर लेते हैं। वेन द्विज-जातियो का पूर्ण तिरस्कार करने के लिए जखीना नामक शूद्र को मत्री बना देता है। सिद्धिनाथ नामक देशभक्त केशी चाडाल का रूप धारण कर जखीना का सेवक बन जाता है। शकर आदि देशभक्त उसके षड्यन्त्र मे सहायता देते हैं। वेन के अत्याचार से द्विज जाति बिल्कुल खोखली हो जाती है और धीरे-धीरे शूद्र जातियो मे भी जखीना के अह से विरोध फैलता है। केशी मौके का फायदा उठाकर शराब मे मदमत्त जखीना से राजा और शूद्रों के नाम दो पत्र लिखवा लेता है। उन पत्रो के प्रचार से शूद्रो मे सनसनी फैल जाती है। फलस्वरूप द्विज और शूद्र एक होकर

"भाई-भाई गले मिलो सब भेद विरोध बिसारो, अपनी प्यारी मातृ-भूमि पर तन-मन-धन सब वारो।" का नारा लगाते हुए क्रांति कर देते हैं। जनता की जीत होती है। हजारों निरीह लोग स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर उत्सर्ग हो जाते हैं। वेन को सूली पर चढ़ा दिया जाता है। नाटक के समस्त संघर्ष का निष्कर्ष सहगान से स्पष्ट होता है—'आजाद हो गया है फिर देश यह हमारा, देखो लिया है हमने कैसा स्वराज प्यारा।'

वेश्या (सन् १९००, पृ० ४०), ले० : कैलाश नाथ गुप्त; प्र० : विन्देश्वरी प्रसाद बुकसेलर, बनारस; पात्र : पु० ४, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ५, ५, ३।
घटना-स्थल : मोहनलाल का घर, वेश्यागृह।

इस सामाजिक नाटक में समाज के कुकृत्यों का पर्दाफाश किया गया है। मोहनलाल एक धनी युवक है। वह अपनी पत्नी को छोड़कर गुन्नीबाई नामक वेश्या के प्रेम में फंस जाता है। वेश्या उसका सभी धन-धान्य अपहरण कर लेती है और उसे मारकर निकाल देती है। उधर मोहनलाल की पत्नी सुशीला भी एक पाखण्डी महात्मा के चक्कर में पड़कर अपना जीवन नष्ट कर देती है। अन्त में सर्वस्व खोने के बाद पुनः सबको ज्ञान होता है और सभी अपने कृत्यों पर पश्चात्ताप करते हैं।

वेश्या नाटक (सन् १९१६, पृ० १२७), ले० : केदारनाथ, रघुनाथ प्रसाद; प्र० : आर्य बुकसेलर, मेरठ; पात्र : पु० ११, स्त्री ३; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : वेश्यालय।

इस सामाजिक नाटक द्वारा वेश्या-प्रसंग से लोगों की रुचि हटाना तथा कुसंग के कुत्सित प्रभाव से विकृत मनोवृत्ति का दिग्दर्शन कराना ही नाटककार को अभीष्ट है। इसमें मानव-समाज में प्रचलित बुराइयों का समावेश करके उसके समाधान का प्रयास किया गया है।

वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (वि० १९३०, पृ० ३६), ले० : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; प्र० : मेडिकल हॉल प्रेस, बनारस; पात्र : पु० १०, स्त्री नहीं; अंक : ४, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : यज्ञशाला, राजसभा, मार्ग।

भारतेन्दुजी ने पाखण्ड-विडम्बन में अवैदिकों का भंडाफोड़ किया था, अतएव यह आवश्यक था कि पाखण्डी वैदिक धर्मानुयायियों की भी खबर ली जाए और जनता को उनसे सावधान किया जाय। इसमें मांसाहारी पुरोहित का उत्साह से यज्ञ करना, एवं शैव-वैष्णवों का मांस खाने को लालायित रहना दिखाकर पाखंडियों की खिल्ली उड़ाई गई है। हिंसामय यज्ञ करने वाला राजा जब यमराज के सम्मुख उपस्थित होता है तो चित्रगुप्त उसका लेखा उपस्थित करता है। यह स्थल अत्यन्त ही आकर्षक है।

इस प्रहसन के द्वारा समाज को दूषित करने वाले पाखण्डियों की खूब खबर ली गई है।

वैश्य नाटक (वि० १९५०, पृ० ६२), ले० : सागर रत्न मोहनलाल; प्र० : ज्ञान सागर प्रेस, मेरठ शहर; पात्र : पु० ८, स्त्री ८; अंक-दृश्य-रहित।

यह नाटक स्वांग की शैली पर लिखा गया है। इसमें सेठ-सेठानी, बहिना, चन्द्रकला, मायानन्द और भक्ति के वार्तालाप के द्वारा ईश्वर-भक्ति में निष्ठा उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है। नाटक के अन्त में उग्रसेन और मायानन्द का वार्तालाप दिखलाया गया है।

वैशाली में वसंत (सन् १९५४, पृ० १८८), ले० : लक्ष्मीनारायण मिश्र; प्र० : रामनारायण लाल, प्रयाग; पात्र : पु० १०, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : वीरभद्र का शयनकक्ष, तक्षशिला।

वीरभद्र वैशाली गणतंत्र का वीर, पराक्रमी और लोकप्रिय सेनापति है। वैशाली

के अष्टकुल उसका सम्मान करते हैं। मगध के सेनापति चण्ड को बन्दी बनाने एवं अपनी उदारता से उसका हृदय जीत लेने के बाद तो उसकी कीर्ति-पताका और भी वेग से फहराने लगती है। दुर्भाग्यवश स्वर्ण विपद्राग से क्रीडा करते हुए उसकी मृत्यु हो जाती है। उनके उदात्त और परिष्कृत चरित्र का अम्बपाली का यौवन और सम्मोहक रूप-लावण्य भी पथभ्रष्ट करने में असफल रहता है। वे शयन कक्ष में अम्बपाली के कोमल शरीर का स्पर्श पाकर ऐसे उठ बैठते हैं जैसे देह से अंगारे छू गए हों और भीष्म के समान प्रतिज्ञा करते हैं कि आजन्म ब्रह्मचारी रहेंगे तथा स्वतः निर्वासित हो जाएँगे। वे दूरदृष्टा भी थे इसीलिए उन्होंने उसमें वैशाली को बचाने का यत्न किया किन्तु असफल रहे। नाटक का नायक रोहित ऐसे पराक्रमी, शूरवीर और विवेकशील पुरुष का पुत्र है। तक्षशिला में विविध ज्ञान के साथ साथ वह गुरुपुत्री रम्भा के साथ विवाह करता है। रम्भा वस्तुतः उसके पिता के अभिन्न मित्र देवदत्त की पुत्री थी पर जिसका लालन पालन तक्षशिला विद्यापीठ के आचार्य पुष्कल ने किया था। विवाह कर वह मातृभूमि वैशाली को लौट आता है। वहाँ आने ही वे दोनों पति-पत्नी जनसमूह के हृदय का हार बन जाते हैं। परन्तु सेनापति भीम कुछ तो स्वार्थवश और कुछ वैशाली के विधि विधान की मर्यादा का उल्लंघन होने के कारण उस विवाह का विरोध करता है। वह रोहित से अपनी पुत्री जयन्ती के साथ विवाह करने का आग्रह करता है।

श

शंकर दिग्विजय (सन् १९२३, पृ० ९२), ले० बलदेव प्रसाद मिश्र, प्र० राष्ट्रीय हिन्दी मन्दिर, जबलपुर, पात्र पु० ८, स्त्री २, अंक ५, दृश्य ७, ८, ८, १०, ६।
घटना स्थल गाँव, नदी, आश्रम, बौद्ध विहार, पथ।

इस जीवनी परक नाटक में शंकराचार्य के सिद्धान्तों की सर्वश्रेष्ठता सिद्ध की गई है।

नाटक के प्रथम अंक में करुणागार सुत के सार शंकर की वन्दना में संसार को दुःखों से मुक्ति दिलाने के लिए प्रार्थना की जाती है। इस नाटक में शंकराचार्य के जीवन की प्रमुख घटनाओं को आधार बनाकर नाटक की रचना की गई है। माता से सन्यास लेने की अनुमति, विविध सम्प्रदायों के विद्वानों से शास्त्रार्थ, मोक्ष के विविध साधनों के अध्ययन आदि के आधार पर कथानक की सृष्टि हुई है। सबसे अधिक मार्मिक स्थल शंकर और उनकी माता के अन्तिम संवाद में समय पाया जाता है। माता मरणासन्न अवस्था में है। वह शंकर से पूछती है "बेटा ऐसा मार्ग बतला जिससे मेरा मोक्ष हो जाए।" शंकराचार्य कहते हैं कि "मोक्ष बाहर की वस्तु नहीं, संसार से आसक्ति छोड़ देना ही सच्चा मोक्ष है।"

कथावस्तु में शंकर सिद्धान्त का विवेचन और उसका युग पर प्रभाव दिखाया गया है। मंडन मिश्र तथा उनकी स्त्री से शास्त्रार्थ, बौद्ध दार्शनिकों से विवाद, वेदान्त-दर्शन का महत्व प्रदर्शित किया गया है।

शंकर विनोद विज्ञान नाटक (सन् १८९७, पृ० २४५), ले० शंकरानन्द स्वामी, प्र० लक्ष्मीनारायण प्रेस, मुरादाबाद, पात्र पु० ८, स्त्री ३, अंक ४, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल आश्रम, पथ।

प्रस्तुत नाटक में अज्ञानी और माया-ग्रसित जीवों के उद्धार के लिए मन रूपी नट, वासना रूपी नदी के सहित जिस विज्ञान

नाटक की रचना करता है, उसको देखने से दु:ख का नाश और शान्ति की प्राप्ति होती है। मन रूपी नट अन्त में संसार को मिथ्या बताकर और सारी क्रियाओं को केवल चित्-विलास कहकर आत्मा के श्रेष्ठत्व का प्रतिपादन करता है।

नाटक के पात्र प्रतीकात्मक एवं अमूर्त हैं।

शंकराचार्य (सन् १९५६, पृ० ६६), ले० : रामबालक शास्त्री; प्र० : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; पात्र : पु० १३, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ३, ४, ४।
घटना-स्थल : केरल, आलवाई नगरी का तट, माता विशिष्टा का विश्राम कुटीर, मार्ग, कोने में एक ब्राह्मण का घर, नर्मदा तट, बौद्ध-विहार, वन-पथ, बदरिकाश्रम, हिमालय में नवनिर्मित यज्ञशाला।

माता विशिष्टा का पुत्र शंकर नदी में ग्राह द्वारा पकड़ लिया जाता है। पुत्र के संन्यास लेने के संकल्प पर वह ग्राह से मुक्त हो जाता है। पुरोहित सन्यास सफल होने का आशीर्वाद देता है, माँ फूट-फूटकर रोती है। शंकर भिक्षा मांगते चलते हैं। गुरुपाद शंकर के गुरु बन जाते हैं। वह इधर-उधर उपदेश दिया करते हैं। एक बार माता के पास आकर भिक्षा मांगते है। माता विशिष्टा उन्हें 'आप' कहकर सम्बोधित करती हैं और वह अपने आचार्यपाद एवं ब्रह्मचारी वर्ग सहित प्रस्थान कर जाते हैं। विशिष्टा आंचल से आँसू पोंछ कर रह जाती है। शंकर अपनी विद्वत्ता और तपस्या से सर्वत्र पूज्य बनते हैं और सम्पूर्ण आर्यावर्त का परिभ्रमण कर वेदान्त-सिद्धान्त का प्रसार और प्रचार करते हुए विपक्षियों को पराजित करते हैं। अतः विद्वन्मंडली उन्हें जगद्गुरु शंकराचार्य की उपाधि प्रदान करती है, और भारतवर्ष की समस्त जनता स्थान-स्थान पर उनके जय जयकार से आकाश-मंडल गुंजित करती है।

शकुन्तला नाटक (सन् १८८६, पृ० ८४), ले० : 'हाफिज' मोहम्मद अब्दुल्ला; प्र० : इण्डियन इम्पीरियल थियेट्रिकल कम्पनी, धौलपुर; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक : (बाब) २; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : आश्रम, मार्ग, राजमहल, इन्द्र लोक।

इस नाटक को प्रसिद्ध शकुन्तलोपाख्यान के आधार पर अनुबन्धित किया गया है। नाटक संगीतमय पद्यबद्ध ओपेरा है। इसमें शकुन्तला, दुष्यन्त, मातलि, कण्व ऋषि, अनुसूया, प्रियंवदा, सारथी, मन्त्री, अप्सरा आदि सभी प्राचीन पात्र अपनाये गये हैं। नाटक अंकों में नहीं दो बाबों में निर्मित है।

नाटक के कथानक में कोई नवीनता नहीं है। स्थान-स्थान पर हिन्दू सभ्यता तथा संस्कृति को मुसलिम मान्यताओं की दृष्टि से देखा गया है। नाटक के मुख्य चरित्र दुष्यन्त और शकुन्तला के चरित्र में सामान्य आशिक और माशूक की भावना आरोपित है। शकुन्तला के गीत और उसके संवाद बाजारू ढंग के हैं। परम्परा से आती हुई इस कथा में शैतान आदि के प्रयोगों से नयापन लाने का प्रयास है। नाटक यहाँ आशिकी से आगे नहीं बढ़ सका है। इसकी भाषा हिन्दी-उर्दू मिश्रित है।

शकुन्तला (सन् १९२३, पृ० ६६), ले० : मोहम्मद इबराहीम, 'महशर'; प्र० : जे० एस० सन्तसिंह एण्ड संस, लाहौर; पात्र : पु० ६, स्त्री ४।
घटना-स्थल : आश्रम, मार्ग, राजभवन, इन्द्रलोक।

इस पौराणिक नाटक में शकुन्तला और दुष्यन्त की प्रसिद्ध कथा को पारसी थियेटर-कम्पनी के अनुकूल ढाला गया है। नाटक का दूसरा नाम गुमशुदह अंगूठी भी है। इस नाटक में खोई हुई अंगूठी को मुख्य घटना केन्द्र मानकर लिखा गया है। घटना-क्रम प्रसिद्ध शकुन्तला नाटक के अनुसार रखा गया है।

शकुन्तला नाटक (सन् १९०८, पृ० ६०), ले० : मुंशी रामगुलाम लाल रसिक बिहारी; प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

वाराणसी, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ६, ४, ४।
घटना स्थल तपोवन, मार्ग, राजभवन।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् की प्रसिद्ध कथा को संक्षिप्त कर तीन अंकों में ही दिखाने का प्रयास किया गया है। नाट्यकार की दृष्टि अर्द्ध-शिक्षित पाठकों की ओर रही है अतः मुख्य कथा का सार सरल भाषा में संवाद के रूप में व्यक्त करने का प्रयास पाया जाता है।

शकुन्तला नाटक नवीन (सन् १८६०, पृ० १००), ले० गणेशप्रसाद, प्र० दिल्कुशा प्रेस, फतेहगढ़, पात्र पु० ६, स्त्री ४।
घटना स्थल आश्रम, मार्ग, जंगल।

कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् की छाया लेकर यह नाटक प्रस्तुत किया गया है। नाट्यकार भूमिका में लिखते हैं—"शकुन्तला नाटक नवीन राग-रागिनी में व शेर में महाभारत व श्रीमद्भागवत व बाल्मीकि रामायण का सार निकालकर तैयार किया।" नाटक में रंगमंच के संकेत गद्य में दिये गये हैं। छन्दों में कवित्त लावनी, दोहा, सोरठा और गजल का प्रयोग है। नाटक का अधिकांश भाग पद्यबद्ध है। शकुन्तला का विरहगान पारसी रंगमंच शैली पर है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् के कथानक को पारसी और लोक नाट्य शैली पर प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया गया है। यह नाटक लीथो में छपा है।

शक-विजय (सन् १९४९, पृ० १४४), ले० उदयशंकर भट्ट, प्र० प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० १३, स्त्री २, अंक ४, दृश्य ५, ४, ७, ५।
घटना स्थल राजमार्ग, राजोद्यान, वृक्ष-च्छाया।

इस ऐतिहासिक नाटक में शकों और भारतीय योद्धाओं का संघर्ष दिखाया गया है।

डॉ० विष्णु अम्बालाल जोशी की लघु-कथा शक-विजय के आधार पर कथावस्तु का निर्माण हुआ है। नाट्यकार लिखते हैं—"मैंने शक विजय की कथा में कालकाचार्य तथा गन्धर्वसेन दोनों को गौरवपूर्ण स्थान देने की चेष्टा की है।" शक विजय का अर्थ है शकों की विजय और शकों पर विजय। इस नाटक में दोनों स्थितियाँ दिखाई गई हैं। नाटक का उद्देश्य है—

"देश की स्वतन्त्रता, उसका सुख सर्वोपरि है"—इसी भावना को लेकर अवन्ती के राजा गंधर्वसेन और शकराज नहपान का संघर्ष दिखाया गया है। इसमें जैन साधु कालकाचार्य—जिन पर देश-द्रोह का लाछन लगता है—और राजा गंधर्वसेन के चरित्र को ऊँचा उठाने का प्रयत्न है।

शक्ति-पूजा नाटक (सन् १९५२, पृ० १०८), ले० बी० मुखर्जी (गुञ्जन), प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ४, अंक ५, दृश्य ३, ६, ३, ५, ७।
घटना स्थल इन्द्रलोक, महिषासुर का महल।

इस पौराणिक नाटक में परम्परागत कथा को आधुनिक संदर्भ में नियोजित करने के लिए महिषासुर की नृशंसता को 'शक्ति पूजा' के नवीन रूप में दिखाया गया है।

महिषासुर रम्भासुर की घोर तपस्या से प्राप्त 'देव-दैत्यजयी' संतान है। वह असुर-संस्कृति और राज्य का नायक है। वह अपनी संस्कृति को देवताओं से किसी भी अंश में हीन नहीं समझता और देवों तथा असुरों की परम्परा पुष्ट-शत्रुता का वीरता-पूर्वक प्रतिरोध करता है। इन्द्र देव-प्रजा की रक्षा के निमित्त तपस्यारत रम्भासुर का वध करता है। महिषी उससे पूर्व गर्भवती रहती है। अतः पुत्र को सुरक्षित रखने तथा इन्द्र से प्रतिशोध लेने के लिये वह पति रम्भ के साथ सती नहीं होती और दानवों तथा चिक्षुर की बात को स्वीकार कर अपने राज-भवन में चली जाती है। पुराणों में इसके

विपरीत रंभ और महिषी की प्रज्ज्वलित अग्नि से महिषासुर के उत्पन्न होने की कथा मिलती है। नाट्यकार उसे 'देवासुर संग्राम' का रूप देता है और इन्द्र तथा देवताओं को हीन, कपटी, विलासप्रिय और दम्भी प्रस्तुत करता है। देवगुरु बृहस्पति इन्द्र को रम्भ की अमानुषिक हत्या का दोषी समझते हैं और इसके कारण भयानक झंझा और विप्लव की आशंका करते हैं। देवगुरु, मुनि कात्यायन से परामर्श करके देव-रक्षा का उपाय सोचते हैं। कात्यायन भी देवताओं की विलास-प्रियता, सोमपान और चरित्र-हीनता को पतन का कारण समझते हैं। दोनों ही देव-रक्षा में तत्पर हैं। उधर इन्द्र और देव-सेनापति कार्तिकेय भी सैन्य संगठन कर के युद्ध की तैयारी करते हैं। महिषासुर भी अपनी माँ द्वारा प्रतिशोध की तैयारी में व्यस्त है। उसे देव-दैत्य-जयी वर तो प्राप्त है ही, वह अमरता और पूजा का अधिकार प्राप्त करने के लिये माता से अनुमति ले ब्रह्मा की तपस्या में लग जाता है। ब्रह्मा उसकी घोर तपस्या से प्रसन्न होकर विश्व-जयी बन एक स्त्री के हाथों मारे जाने का वर देते हैं। वह 'असुरों' के अमरता तथा पूजा सम्बन्धी अधिकार को मानते हैं।

महिषासुर की अनुपस्थिति में इन्द्र और कार्तिकेय दैत्यपुरी पर आक्रमण कर देते हैं किन्तु चिक्षुर और कराल देव-सेना को पराजित कर इन्द्र तथा कार्तिकेय को बन्दी बनाते हैं। महिषासुर ब्रह्मा से वरदान प्राप्त कर लौटता है और चिक्षुर को सेनापति बनाकर कराल को तलवार भेंट करता है। इन्द्र तथा कार्तिकेय को तो मुक्त करता है किन्तु समस्त देव कन्याओं, स्त्रियों और महिलाओं को बन्दी बनाता है। वह अपनी सैन्यशक्ति से त्रैलोक्य का स्वामी बनता है। अन्त में देव-गुरु तथा कात्यायन की प्रार्थना पर 'दुर्गा' समस्त देव-शक्ति का प्रतीक बनकर महिषासुर का दमन करती है। महिषासुर पुत्र को प्राणदण्ड तथा रानी अलकावती को राज्याज्ञा-उल्लंघन पर कठोर कारावास का दण्ड देता है। 'दुर्गा' उसे अमरत्व का वर दे पुत्र तथा पत्नी को क्षमा-दान कराती है और देव-माता अदिति, महिषी और ब्रह्मा की राय से सन्धि होती है।

शतमुख रावण (महाकाली सीता) (सन् १९७०, पृ० १३६), ले० : चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि'; प्र० : रायबरेली भारती-भवन, कन्नावाँ; पात्र : पु० १४, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ६, १०, ४।
घटना-स्थल : लंका, अयोध्या।

रावण-विजय के अनन्तर अहंकार-ग्रस्त राम, सीता से कुछ दुर्वचन कहते हैं, जिस से क्षुब्ध होकर सीता अपनी माया शक्ति का प्रदर्शन करती है। उनकी प्रेरणा से शत-मुख रावण का आविर्भाव होता है जो अपने पराक्रम से सभी को परास्त करता है। वह लंका पर अधिकार कर सिंहासन पर बैठना चाहता है; किन्तु सुदर्शन चक्र उसे ऐसा करने से रोक देता है। सुदर्शन चक्र को प्रभावहीन करने हेतु शतचण्डी नरमेध (यज्ञ) करने का निर्णय लिया जाता है।

पराजित विभीषण अयोध्यापति राम की शरण जाता है। राम ससैन्य शतमुख रावण पर आक्रमण करते हैं, किन्तु परास्त होते हैं। इस पर वह प्रतिज्ञा करते हैं कि कल प्रातःकाल से पूर्व मैं शतमुख रावण का अवश्य संहार करूँगा और यदि ऐसा न कर सका तो आत्मदाह कर लूँगा। प्रतिज्ञाबद्ध राम अपने उद्देश्य में सफल नहीं होते। अंत में नारद के सुझाव पर उसी रात अयोध्या से सीता सुप्तावस्था में हनुमान द्वारा लायी जाती हैं। योगनिन्द्रा-निमग्न कालिका रूपिणी सीता की सभी अभ्यर्थना करते हैं। इस पर सोते ही सोते सीता महाकाली का रूप धारण कर अपनी शक्तियों सहित शतमुख आदि राक्षसों का संहार करती हैं। विभीषण को पुनः राज्य प्राप्त होता है। लंकापति की प्रार्थना पर राम, सीता तथा लक्ष्मण उसका आतिथ्य स्वीकार करते हैं।

शतरंज के खिलाड़ी (सन् १९५५, पृ० ११६); ले० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० :

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ८, अंक ३, दृश्य ६, ७, ६।
घटना-स्थल महबूब की अट्टालिका में उसकी बैठक, रेगिस्तानी, रास्ता, जैसलमेर दुर्ग के बाहर—युद्ध-भूमि।

इस ऐतिहासिक नाटक में महबूब खाँ हिंदू राजकुमार की रक्षा का प्रण निबाहता है। दिल्ली के सेनापति महबूब खाँ और जैसलमेर महारावल के पुत्र रत्नसिंह शतरंज खेलते हुए कहते हैं कि युद्धकाल में भी शतरंज का खेल बन्द नहीं होगा। दिल्ली का बादशाह अलाउद्दीन जैसलमेर पर आक्रमण करता है। महबूब खाँ का भाई रहमान बन्दी बना लिया जाता है। महारावल की बाण से मृत्यु हो जाती है। अलाउद्दीन की सेना को मुँह की खानी पड़ती है लेकिन रहमान किसी प्रकार बंदीगृह से भाग निकलता है। महबूब खाँ अलाउद्दीन से युद्ध बन्द करने के लिए कहता है। रहमान षड्यन्त्र द्वारा खाद्य-पदार्थों और युद्ध-सामग्री में आग लगवा देता है। महारावल जैतसिंह के ज्येष्ठ पुत्र मूलराज और रत्नसिंह से शपथ लेते हैं कि वह प्राणों को न्यौछावर करके जैसलमेर की रक्षा करेंगे। जैसलमेर की नारियाँ जौहर कर लेती हैं। रत्नसिंह अपने पुत्र गिरिसिंह की रक्षा का भार महबूब खाँ को सौंपते हैं। महबूब खाँ शपथ लेता है कि युद्ध के पश्चात् जैसलमेर का सम्राट् गिरिसिंह ही बनेगा। यदि अलाउद्दीन गिरिसिंह को सम्राट् नहीं बनायेगा तो वह सेनापति-पद का त्याग कर देगा।

शपथ (सन् १९५१, पृ० १५२), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पात्र पु० १०, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ८, ६, ५।
घटना-स्थल दशपुर, मिहिरकुल।

इस ऐतिहासिक नाटक में देशाहुति के लिए सर्वस्व बलिदान का आह्वान है। मन्दसौर (प्राचीन दशपुर) में यशोधमन नाम का व्यक्ति हूणों के विरुद्ध जनता में उत्तेजना पैदा कर क्रांति का सफलतापूर्वक संचालन करता है। उसके सहायक घटसभट्ट, धन्य-विष्णु, मदाकिनी, कचनी, हेमचन्द्र आदि हूण मिहिरकुल पर विजय की शपथ लेते हैं। कचनी वेश्या भी देश पर बलिदान होने को आतुर होती है। मदाकिनी यशोधमन से पराजित हूणों के भारतीय बनने की सम्भावना पर वार्तालाप करती है। विष्णु-वर्धन(यशोधमन) कहते हैं—"तब उनके हृदय में भारतीयों पर प्रभुता स्थापित करने की आकांक्षा भी समाप्त हो जायेगी।" इस नाटक में भारतीयों के उन गुणों एवं संस्कारों का उल्लेख है जिनके कारण भारत तेजस्वी, वीर और बलवान् बना और उन निर्बलताओं और त्रुटियों का भी चित्रण है जिनके कारण भारत को अनेक बार विदेशी शक्तियों से पराजित होना पड़ा। कचनी, सुवासिनी आदि नारियाँ देशहित पर मिटती हैं। सुवासिनी देशहित के लिए सर्वस्व बलिदान भी करती है।

शबरी (वि० २००६, पृ० ११६), ले० सीताराम चतुर्वेदी, प्र० अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी, पात्र पु० ११, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ३, ५, ५।
घटना-स्थल दंडकवन, आश्रम, पथ।

इस नाटक की कथावस्तु बाल्मीकि रामायण के चौहत्तरवें सर्ग से ली गई है। इसमें राम, लक्ष्मण, मातंग ऋषि और उनके आश्रम आदि का वर्णन पौराणिक सामग्री के आधार पर ही है। शबर सरदार गोमगो, कोला तथा शबरी की चारित्रिक विशेषताओं के साथ उनकी रामभक्ति को भी चित्रित किया गया है। दक्षिण भारत रावण के आतंक से पीड़ित दिखाया गया है और राम के द्वारा ही आर्य-धर्म की रक्षा तथा राक्षसों के नाश की आशा व्यक्त की गई है। नाटक में राम की भक्ति की महिमा गाई गई है। नाटक की भूमिका में प्रेक्षागृह, नेपथ्य दृश्य का मानचित्र तथा पात्रों की वेषभूषा का वर्णन है।

अभिनय—काशी और बम्बई में नाट्य-कार के निर्देशन में अभिनीत।

शबरी अछूत (सन् १६४५, पृ० ७४), ले० : गौरीशंकर मिश्र; प्र० : इण्डियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; पात्र : पु० १८, स्त्री २; अंक : २; दृश्य : ३, २।
घटना-स्थल : दंडक वन, पथ।

इस पौराणिक नाटक में अछूतोद्धार की महती भावना पर नाटक की कथा विरचित है। त्रेता-युग में जन्मी—पति-पुत्र विहीना भीलनी शबरी की कथा के माध्यम में अछूतोद्धार की समस्या प्रस्तुत की गई है। मोक्षाकांक्षिणी शबरी दण्डक वन में ऋषियों के सन्निकट रह कर कर्मयोग की साधना करती है। अस्पृश्य होने के कारण प्रारम्भ में वह प्रत्येक आश्रम में ईंधन पहुँचाने, कण्टकित मार्गों को बुहार कर स्वच्छ करने का पुण्य कार्य करती है, परन्तु कतिपय ऋषियों के विरोध प्रकट करने पर वह इस पुण्य कार्य का त्याग करने पर विवश होती है। मातंग ऋषि शबरी की मर्म व्यथा समझते हैं और उसके प्रति मानवीय व्यवहार के कारण अपने समाज से बहिष्कृत होते हैं। मातंग ऋषि शबरी को आशीर्वाद देते हैं कि एक दिन स्वयं भगवान् उसकी कुटिया पर चल कर आएँगे। भगवान् राम की प्रतीक्षा में शबरी तन्मय होती है और अन्त में राम स्वयं शबरी की कुटिया में उपस्थित होते हैं। शबरी की चिराकांक्षा पूरी होती है। जब संकीर्ण विचार वाले ऋषियों को वास्तविक ज्ञान होता है, तब वे भी अस्पृश्यता-निवारण को कटिबद्ध हो जाते हैं।

शमशाद सौसन (सन् १८८०, पृ० १२५), ले० : केशवराम भट्ट; प्र० : बिहार बन्धु छापाखाना, बाँकीपुर; पात्र : पु० ५, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य झाँकी : ४, ६, ४।
घटना-स्थल : बाढ़ के रईस, मजिस्ट्रेट की कोठी, टूटा-सा मकान, पटना में एक आलीशान मकान, गंगा का किनारा, जेल खाना।

इस सामाजिक नाटक में प्रेमी-प्रेमिका के सत्य प्रेम की झांकी दिखाई गई है।

बाढ़ के रईस हियातबख्श की पोती सौसन हाली का गीत गाती है—'हम ही शमा इस्लाम रोशन करेंगे? बड़ों का हम ही नाम रोशन करेंगे।"—सौसन चौदह साल की लड़की है। हाजी हियातबख्श से उसकी शादी जल्द करने का आग्रह करता है। बाढ़ के दूसरे रईस शमशाद हुसैन से सौसन का बचपन से मेल-जोल है। हियातबख्श का नाती केसर भी प्रायः सौसन के यहां आता जाता है। वह अपने विषय में स्वयं कहता है 'मुझे इस कदर खुशी किसी बात में नहीं मिलती, जितनी दो आदमियों को लड़ा देने में मिलती है।' उसी के कारण सौसन और शमशाद में मनोमालिन्य हो जाता है। जहां दोनों एक दूसरे के वियोग में तड़पते थे वहीं एक दिन सौसन को शमशाद का गाली भरा पत्र मिलता है, जिसमें वह सौसन को फाहिशा लड़की कहता है। उसने हियातबख्श को भी लिख दिया है—'अपनी पोती की शादी और किसी से कर लीजिये, मैं अब रुखसत होता हूँ।' शमशाद अपनी बहिन हमीदा के साथ पटना जाकर दिल बहलाना चाहता है। पटना जाने से पूर्व वह एक दस्तावेज का रुपया ज्वाइंट मजिस्ट्रेट 'रो' से लेने जाता है। रो उसका दस्तावेज फाड़ डालता है। वह दस्तावेज अंग्रेजों की मदद करने के बदले मिला था। रो को अत्याचारी दिखाने के लिए नाट्यकार एक उपकथा निर्मित करता है। रो शमशाद से कहता है, 'तुमको एक छोटी सी नाजिनी बहन है। उसको एक दिन हमारा बिस्टरा पर भेज दो।" वह विलायत की उस शादी की चर्चा करता है, जो एक या दो या कतिपय रात के लिए होती है। एक दिन रो पुलिस की सहायता से हमीदा को पकड़ मँगाता है और एक कोठरी में बन्द करा देता है किन्तु केसर के प्रयत्न से वह निकल भागती है। जेल में कैदियों को मजिस्ट्रेट के जुल्म का पता चलता है। वे एकत्र होकर प्रतिज्ञा लेते हैं "हिन्दू हों चाहे, मुसलमान हों, मरहठे हों चाहे, राजपूत हों, जब तक सब न मिलेंगे तब तक अंग्रेजों को निकालना नामुमकिन

है।" कैदी रो के हाथ से तलवार छीन लेते हैं और उसकी छाती पर चढ़कर सीने मे तलवार भोककर एक कैदी कहता है—"काहे सागे अब न हमार जोरूआ के नष्ट करब। बोले न सरवा।" रो का काम तमाम कर सब भाग जाते हैं।

इधर शमशाद को सौसन के सच्चे प्रेम का प्रमाण मिल जाता है, और अन्त मे दोनो का विवाह हो जाता है। उसी प्रकार हमीदा और कैसर का विवाह हो जाता है। इसमे शमशाद की निष्ठुरता दिखाई गई है और अन्त मे यह निष्कर्ष निकाला गया है कि कभी किसी लड़की के चरित्र पर सन्देह नही करना चाहिए। सौसन शमशाद से कहती है—"भले आदमी की बहू बेटियो पर वे समझे बूझे फौरन शक कर लेना मुनासिब नही।" नाटक मे हास्य का भी वातावरण उत्पन्न करने के लिए एक पेटू मौलवी को चुना गया है और ग्रामीण भाषा का प्रयोग किया गया है।

हाजी अन्त मे एक आयत कहता है—जिसका अर्थ है—"जिस कुवे मे मिया-बीवी मे मुहब्बत रहती है, वह खाते खुशी है, बल्कि उसे जन्नत-इ-बरीं कह सकते है—और बरखिलाफ इसके वीरान और दोजख।"

शरद चेतना (सन् १९५१, 'रजत शिखर' मे संग्रहीत संगीत रूपक), ले० सुमित्रानन्दन पंत, प्र० भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, पात्र कुछ स्वर, अंक दृश्य-रहित।

'शरद चेतना' एक कल्पना-प्रधान संगीत रूपक है, जिसमे हेमन्त, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म ऋतुओं के सौन्दर्य के परिप्रेक्ष्य मे ऋतु को एक चेतना के रूप म मानवीकृत किया गया है। शरद चेतना शरद-चन्द्र से पृथ्वी पर *अवतरित* चन्द्रिका है। अवतरण प्राय निम्न चेतना का ही माना जाता है किन्तु कवि के अनुसार "मानव के सम्यक् विकास के क्रम मे केवल निम्न चेतना ही नही ऊपर उठती, ऊर्ध्व चेतना भी नीचे उतरती है। उसी को हमारे दार्शनिको ने मर्कट-न्याय और मार्जारन्याय कहा है। बन्दर का बच्चा ऊपर उछलकर माँ के पास पहुँचता है, बिल्ली नीचे झुककर अपने बच्चे को उठा लेती है। इसी को अरविन्द ने double ladder या दुहरी सीढी कहा है। अरविन्द से प्रभावित पंत ऊर्ध्व चेतना का अवतरण तथा निम्न चेतना का आरोहण ही आदर्श स्थिति मानते हैं। शरद चेतना का भी *कदाचित् इसी कारण स्वर्गावतरण कराया* गया है।

प्रस्तुत रूपक का प्रारम्भ शरद के परिचय गीत से होता है। तत्पश्चात् क्रमश छ ऋतुओ का सुनिश्चित क्रम मे संक्षिप्त रूप से वर्णन किया गया है। प्रत्येक ऋतु आकर शरद ऋतु का अभिवादन करती है। अन्त मे शरद वन्दना के साथ रूपक समाप्त होता है।

शर विद्ध स्वप्न (सन् १९७०, पृ० ६४), ले० राजेश्वर गुरु, प्र० लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र पु० १५, स्त्री ५, अंक-रहित, दृश्य ३। घटना-स्थल बिड़ला भवन के अतिथि कक्ष का एक कमरा।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। सन् १९४७ मे जब भारतवर्ष का विभाजन होता है तो हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान दोनो मे साम्प्रदायिकता अपने चरम सीमा पर होती है। महात्मा गाँधी इस साम्प्रदायिकता के विरुद्ध दोनो देशो के लोगो को सजग करते हैं। हिन्दुओ को गाधी जी के शान्ति प्रयत्नो से मुसलमानो के प्रति पक्षपात-पूर्ण उदारता की बू आती है। साम्प्रदायिक स्थिति नियन्त्रण से बाहर हो जाती है, जिसको सामान्य रूप देने के लिए जनवरी मे गाँधी जी आमरण उपवास शुरू करते हैं। इसके फलस्वरूप विभिन्न सम्प्रदाय के लोग उन्हे शान्ति तथा सुरक्षा का आश्वासन देते हैं। फिर भी गाधी जी ने यह अनुभव किया कि उनमे तथा उनके कांग्रेसी सहयोगियो—जवाहरलाल नेहरू तथा वल्लभ भाई पटेल—के मतो से उनका मेल नही खाता

है। अब गांधी जी को यह आशंका पैदा हो जाती है कि उनका सपनों का भारत सत्य नहीं हो सकता है। इसकी उन्हें गहरी वेदना होती है। इस नाटक में गांधी जी की मानसिक स्थिति तथा विविध घटनाओं का स्पष्टीकरण किया गया है।

शराफत (सन् १९६२, पृ० ४८), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० ४, स्त्री १, अंक : २, दृश्य : २, १।
घटना-स्थल : रमेश बाबू के मकान का एक कमरा, उद्यान।

नाटक में शराफत पर व्यंग्य किया गया है। रमेश बाबू किस प्रकार डॉक्टरी से अधिक पत्नी के इच्छुक हैं और आशा भी उन पर मुग्ध है। रमेश बाबू अपने कुकृत्यों से बदनाम हो जाते हैं। उन्हें पुलिस पकड़ती है और अन्त में आशा रानी की सूझ तथा स्वान दुपट्टे के रहस्योद्घाटन से दोनों का मिलन होता है।

नाटक 'विजय कला दीप' द्वारा मंचस्थ किया जा चुका है।

शराब की घूंट या आदर्श नारी (वि० १९९३, पृ० ८५), ले० : शिवराम दास गुप्त; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, काशी; पात्र : पु० ९, स्त्री २ ; अंक : ३, दृश्य : ६, ६, २।
घटना-स्थल : शराब की दुकान, जीवनदास का घर।

यह नाटक मद्य-निषेध का आन्दोलन करने के लिए लिखा गया है। रईस जीवनदास के पुत्र प्रेमनाथ और जीवनदास दोनों शराब के नशे में अपने घर-बार एवं व्यापार की उपेक्षा करते हैं। इस कार्य में पंचाली नामक उनका कपटी मित्र काफी सहायता तथा प्रेरणा देता रहता है किन्तु जीवनदास की सती साध्वी पत्नी आशा के अथक परिश्रम से शराब की लत छूट जाती है और साथ ही उसके प्रचार-प्रसार में भी सहयोग देने की प्रतिज्ञा करते हैं।

शशिगुप्त (सन् १९४२, पृ० १५८), ले० : सेठ गोविन्ददास; प्र० : रामनारायणलाल, इलाहाबाद; पात्र : पु० ११, स्त्री १; अंक : ५ ; दृश्य : ५, ५, ५, ५, ५।
घटना-स्थल : शिविर, युद्धक्षेत्र, मार्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त, चाणक्य और सिकन्दर की घटनाओं को नयी खोजों और नए ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखा गया है। नवीन मान्यताओं के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य नन्दवंशीय नहीं है और न ही मगध में उसका मूल जन्म स्थान है। इस नाटक में इसका जन्म-स्थान सिन्धु और कुमार नदियों के मध्य कोहमोर नामक प्रदेश बताया गया है। इसमें चाणक्य तक्षशिला निवासी है। प्रारम्भ से ही चन्द्रगुप्त और चाणक्य में घनिष्ठता है। चन्द्रगुप्त पहले सिकन्दर से मेल करता है किन्तु समय पाकर उसके विरोध में खड़ा होता है। पर्वतक (पोरस) इसका समर्थक होता है। नाटक में सिकन्दर यहाँ से विजयी होकर नहीं, अपितु हार कर ही लौटता है। नाटक के अनुसार चन्द्रगुप्त मोर नामक पर्वतीय क्षेत्र को अश्वक जाति का प्रतिनिधित्व करता है और चाणक्य के निर्देश पर सिकन्दर का क्षत्रप बनता है और बाद में उसके विरुद्ध विद्रोह भी संगठित करता है। पोरस की हाथियों की सेना भागती नहीं, अपितु यवन सैनिकों का संहार करती है। इसमें पोरस की रण-चातुरी से अभिभूत होकर सिकन्दर उससे मैत्रीपूर्ण संधि करने पर विवश होता है। वापिस लौटते समय सिकन्दर को शशिगुप्त और मालव शक्ति के समक्ष पराजित होना पड़ता है। यहीं एक मालव सैनिक के तीर से सिकन्दर की मृत्यु होती है।

शहीद संन्यासी (सन् १९२७, पृ० ११६), ले० : किशनचन्द जेबा; प्र० : लाजपतराय एण्ड संस पब्लिशर्स, लाहौर; पात्र : पु० १५, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ५, ६, ५।
घटना-स्थल : दिल्ली, स्वामी जी का घर,

सभा।

इस ऐतिहासिक नाटक मे गाँधीयुग के श्रेष्ठ शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिखाया गया है। स्वामीजी घोर कलिकाल मे भी कर्मयोग के सच्चे अर्थों को समझकर अपना जन्म सफल करते हैं। वह कर्मयोगी रूप मे सन्यासी होकर देश के लिए शहीद होते हैं। उन्ही के उद्योग से अछूत भाई सामूहिक रूप से यह शपथ लेते हैं कि आज से हम न मधुपान करेंगे और न मांस का भक्षण करेंगे। दूसरे स्थान पर प्रश्न उठाया गया है कि यदि सवर्ण ऐसा करने पर भी अछूतों को गले नही लगाते हैं तब क्या उपाय ? इस प्रश्न का उत्तर दूसरा अछूत देता है कि हमें मन मे द्वेष भावना नही रखनी चाहिए। हिन्दू जाति हमारा मूल आदि स्रोत है और हम उसे किसी प्रकार विघटित नहीं होने देंगे। इस नाटक मे अछूतों के उद्धार के लिए स्वामी श्रद्धानन्द का शहीद होना दिखाया गया है।

शहीदे आजम सरदार भगत सिंह (सन् १९४०, पृ० ८०), ले० . बिशन गुप्ता शाहपुरी, प्र० आजाद बुक डिपो, अमृतसर, पात्र पु० २०, स्त्री २, अक ६, दृश्य ४, ४, ४, १, ४, ४।

घटना-स्थल लाला लाजपतराय कॉलेज, भगतसिंह का घर, खुफिया मकान, जगल, असेम्बली हाल, जेल, अदालत, कम्पनी बाग इलाहाबाद, फाँसी का तख्ता।

स्वातन्त्र्य-सग्राम के सेनानी सरदार भगत सिंह के द्वारा चलाए गए आजादी के सघर्षों को इस ऐतिहासिक नाटक मे दिखाया गया है। सुखदेव, राजगुरु के साथ भगतसिंह देशव्यापी स्वतन्त्रता-आन्दोलन करते हैं। लाला लाजपतराय पर अमानुषिक प्रहार से ये सब क्षुब्ध हो जाते हैं। स्थान स्थान पर अग्रेजों के खिलाफ बगावत करते हुए विदेशी शासन की योजनाओ को असफल करते हैं। भगतसिंह के द्वारा इलाहाबाद, बनारस, लखनऊ, कलकत्ता, दिल्ली आदि नगरो मे स्वतत्रता के सेनानियो का गठन होता है। चन्द्रशेखर आजाद इनके गिरोह का पक्का प्रतिनिधि बनता है। लेकिन अन्त मे अग्रेजो की विशाल शक्ति के द्वारा सरदार भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव पकड़े जाते हैं और उन्हे फांसी दे दी जाती है। बाहर जनता अपने प्रिय नेताओ की लाशों को पाने के लिए चिल्ला रही है किन्तु अग्रेज अफसर इन तीनो लाशो को भीतर-भीतर पिछले दरवाजे से बाहर कर देते हैं। जनता अपने प्रिय नेताओ की लाश तक नहीं देख पाती।

शहीदे नाज़ (सन् १९०२, पृ० १२०), ले० मुहम्मदशाह आगा हश्र काश्मीरी, प्र० भार्गव पुस्तकालय-गायघाट, काशी, अक ३।

घटना-स्थल महल।

इस सामाजिक नाटक मे इसाफ और रहम मे प्रतिद्वद्विता दिखाई गई है। अदलाबाद का बादशाह जहादरशाह जमील नामी एक दुश्चरित्र व्यक्ति को दण्ड देता है। उसकी बहिन हसीना भाई की रक्षा के लिए नवाब सफदर के पास जाती है जो उस पर आशिक होकर उस इश्क के मूल्य पर जमील को छोड़ने की शर्त रखता है। विवश होकर हसीना तैयार हो जाती है किन्तु उसके शील और सतीत्व की रक्षा जहादरशाह द्वारा होती है। सफदर को भरी सभा मे हसीना द्वारा अपमानित होने का दण्ड मिलता है। परन्तु जहादरशाह के कहने पर रहमकर उसे क्षमा कर देती है। नाटक का अभिनय खटाऊ अल्फ्रेड पारसी कम्पनी द्वारा १९०३ में हुआ किन्तु प्रकाशनकाल १९३२ ई० है।

शहीदों की बस्ती (सन् १९६८, पृ० १४३), ले० प्रेम कश्यप 'सोज', प्र० उमेश प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री ३।

घटना-स्थल कश्मीर की घाटी।

राष्ट्रीय भावना से पूर्ण यह नाटक जम्मू-कश्मीर के सुन्दर अचल की भूमि पर

आधारित है। पाकिस्तानियों के जासूस कश्मीर में घूमते रहते हैं तथा पाकिस्तान कश्मीर को हड़पना चाहता है पर कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग समझकर वहां लोग लड़ते रहते हैं। उन्हीं लड़ने वालों और शहीदों की वीरता और देश प्रेम का इसमें वर्णन है।

अभिनय—दिल्ली तथा अन्य स्थानों पर अभिनीत।

शान्तिदूत (सन् १९५२, पृ० १०३), ले० : देवदत्त अटल; प्र० : आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली; पात्र : पु० २०, स्त्री ७; अंक : ३, दृश्य : ८, ६, ७।
घटना-स्थल : महल, शिविर।

इस पौराणिक नाटक में महाभारत के आधार पर भगवान् कृष्ण की शान्ति-स्थापना के प्रयत्नों पर प्रकाश डाला गया है। कृष्ण पाण्डवों की धार्मिकता, सत्य परायणता से प्रभावित थे और स्वभावतः राज्य पर उनका अधिकार स्वीकार करते थे। यद्यपि कृष्ण को शकुनी और दुर्योधन का द्यूत-क्रीडा में छल, अज्ञात वनवास का कष्ट, द्रौपदी का अपमान भी याद है फिर भी वह युद्ध के लिये तैयार नहीं होते और शान्ति-दूत बन कर कौरवों के पास जाते हैं। कृष्ण जन-जन में शान्ति की आकांक्षा जगाते हैं; कुन्ती, द्रौपदी, गांधारी को समझाते हैं; कर्ण को मनाने और दुर्योधन को भी युद्ध से विरत करने का प्रयत्न करते हैं। धूर्त शकुनी के प्रभाव तथा कर्ण की प्रतिशोध-अग्नि के कारण दुर्योधन कृष्ण को ही बन्दी बनाने का प्रयास करता है, किन्तु शान्तिदूत (कृष्ण) अपनी नीति से बाहर निकल आते हैं।

नाटक में द्रौपदी क्रान्ति की मशाल है तो गांधारी शान्ति की। देश की स्थिति और सामान्य जन की भावना भी युद्ध के विरुद्ध अभिव्यक्ति पा सकी है। किन्तु कृष्ण का शान्ति-मिशन असफल रहता है और युद्ध अनिवार्य हो जाता है। इसमें कृष्ण का रूप ईश्वर का नहीं, नेता का है। वह जन-जन में शान्ति के लिये जागृति उत्पन्न करते हैं और स्त्रियों को भी राजनीति की अधिकारिणी समझते हैं।

शाप या वरदान (सन् १९५४, पृ० १३२), ले० : सूरज प्रसाद श्रीवास्तव; प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली; पात्र : पु० ११, स्त्री ८; अंक : ५, दृश्य : ५, ७, ७, ५, ५।
घटना-स्थल : जंगल, वनमार्ग, सुनैना का मकान।

इस नाटक में सुरेन्द्र शिकार के समय धोखे से चन्द्रायण ऋषि की हत्या कर देता है जिसके कारण ऋषि की पत्नी सुभद्रा उसे दूसरे दिन से ही सांप हो जाने का शाप देती है। सुरेन्द्र दूसरे दिन साँप हो जाता है। उसकी माँ रोहिणी पुत्र के विलाप में घर छोड़ कर चली जाती है। पुरोहित गणेशानन्द विशाल बाहु की पुत्री सुनैना का किसी राजा के साथ लग्न की भविष्यवाणी करता है। फलस्वरूप सुनैना राजकुमार सुरेन्द्र से प्रेम करती है किन्तु उनके नाग-योनि में चले जाने से दुखी है। किन्तु जोगिनी के माध्यम से वह राजकुमारी सुनैना से मिलता है तथा राजा विशालबाहु से भी बातें करता है। साँप को बातें करता देख सभी आश्चर्य में पड़ जाते हैं किन्तु अन्त में सुनैना की तपस्या और पुरोहित के क्रिया-कर्म से सुरेन्द्र सांप-योनि से मुक्त होता है और फिर उसका विवाह राजकुमारी से हो जाता है। अन्त में उसकी माँ रानी रोहिणी भी आकर मिल जाती है।

शारदीया (सन् १९५६, पृ० १२०), ले० : जगदीशचन्द्र माथुर; प्र० : सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; पात्र : पु० १२, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ३, २, २।
घटना-स्थल : एक गाँव।

शरद् पूर्णिमा की ज्योत्स्ना से धवलित महाराष्ट्र के कागल नामक ग्राम में नरसिंह और उसकी प्रेमिका बायजाबाई का दो बार वियोग हुआ, जिसकी स्मृति दोनों को

चिरस्मरणीय बन गई है। बायजाबाई की माता अपनी बेटी का विवाह नरसिंह के साथ एक शर्त पर करने का वचन देती है। किन्तु उसकी मृत्यु के उपरान्त शर्त पूर्ण होने पर भी बायजा के पिता शर्जेराव घाटगे पुत्री का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध दौलतराव सिंधिया के साथ करके अपना भाग्योदय चाहते हैं। बायजाबाई और नरसिंहदेव के हृदय में एक दूसरे के प्रति हार्दिक प्रेम स्थान पा चुका है। निजाम और मराठों के युद्ध में नरसिंहदेव गुप्तचर का काम करता है तथा निजाम और मराठे दोनों में धार्मिक एवं राजनीतिक शान्ति स्थापित करने का पक्षपाती है। वह निजाम की युद्ध योजनाओं को विफल बनाने में सफल होता है, किन्तु शर्जेराव घाटगे दौलतराव सिंधिया को मदादि दुश्मनों में फसाकर नरसिंहराव जैसे योग्य सैनिक को मृत्युदण्ड की आज्ञा दिलाता है। पर जिन्सेवाले के प्रयास से नरसिंहराव ग्वालियर के कारागार में बन्द कर दिया जाता है, जहाँ ज्योत्स्ना-दर्शन के लिए तरसता हुआ, निजामी कारीगरों से सीखी हुई वस्त्र-निर्माण की कला का अभ्यास करता है, और अपनी प्रेयसी की स्मृति के प्रकाश से उस अन्धगुफा में हाथ से पाच गज की ऐसी साड़ी बुनता है जिसका केवल पाच तोले भार होता है।

घाटगे के षड्यन्त्र से बायजाबाई दौलतराव सिंधिया के अन्तःपुर में पहुँच जाती है। घाटगे को भी नरसिंहराव के मृत्युदण्ड में परिवर्तन की घटना अज्ञात है। वह युद्ध में नरसिंहराव की मृत्यु का मिथ्या समाचार देकर बायजाबाई का विवाह दौलतराव सिंधिया के साथ कर देता है। किन्तु जिस दिन बायजाबाई को नरसिंहदेव के कारावास की कहानी ज्ञात होती है वह सिंधिया से उसकी मुक्ति का आदेश प्राप्त करती है। उस आदेश-पत्र को लेकर शारदीया नरसिंहराव से उस अन्धगुफा में मिलती है और उससे कारावास से बाहर निकलने का अनुरोध करती है। किन्तु वह अपने हाथ से बुनी साड़ी बायजाबाई को प्रदान कर वहीं रहने का आग्रह करता है। इसमें राजकर्मचारियों की परस्पर ईर्ष्या-भावना घाटगे की कुटिलता के माध्यम से दिखाई गई है। कथावस्तु में नाटकीय कौतूहल के अनेक स्थल हैं। नरसिंहराव जिस दिन फाँसी पर लटकने के क्षण की प्रतीक्षा करता है उसी दिन उसका मित्र जिन्सेराव उसे आजीवन कारागार की सूचना देता है। उस अप्रत्याशित सन्देश से उसके मन में विलक्षण अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न होता है। वह कहता है 'सरदार, मैं मौत की उम्मीद का सहारा ले रहा था। आपने उसे तोड़ दिया। और अब यह जिन्दगी यह गुफा की घिरी घिरी जिन्दगी, किसके लिए?"

इस नाटक की चरम परिणति (Climax) तृतीय अंक के दूसरे दृश्य में है। जिन्सेवाले से नरसिंह राव की जीविकावस्था का शुभ समाचार पाते ही महारानी बायजाबाई के मन में अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न होता है। वह सिंधिया से नरसिंहराव की मुक्ति की अनुमति प्राप्त करके कारावास में पहुँचती है।

गढ़पति को यह रहस्य अज्ञात है कि महारानी बायजाबाई और नरसिंहराव में परिचय है। वह नरसिंहराव से निवेदन करता है कि अपने हाथ की बनी हुई अद्वितीय साड़ी महारानी को उपहार-स्वरूप देकर उनसे मुक्ति की प्रार्थना करे। नरसिंहराव अपनी प्रेयसी के लिए निर्मित साड़ी देना अस्वीकार कर देता है। उसके मन में द्वन्द्व उठता है।

"यह कपड़ा, यह तुम्हारी स्मृतियों का ताना-बाना। यह महारानी को दूँ? असम्भव! × × चलो, तुम मुझे यहाँ से ले चलो, अपने चादी से जगमगाते अम्बर में। राजाओं और महारानी की चमक-दमक से परे, युद्ध और हलचल से दूर, बहुत दूर, जहाँ तारे गाते हैं। ऐ! तुम कहाँ जा रही शारदीये।" वह कम्पित स्वर में पुकार उठता है।

नरसिंहराव को जिस समय जिन्सेवाले से ज्ञात होता है कि महारानी स्वयं उसकी शारदीया बायजाबाई है तो उसकी मनोदशा में विलक्षण कौतूहल उत्पन्न होता है।

शास्त्रार्थ (सन् १९६७, पृ० ६५), ले० राजेश्वर झा, प्र० अमरनाथ प्रकाशन,

रसुआर, सहरसा; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ४, ४, ४।
घटना-स्थल : कैलाश, कुमारिल भट्ट की पाठशाला, मंडन मिश्र का भवन, महिष्मती नगरी, शास्त्रार्थ—भवन, राजा अमरुक की राजधानी, पहाड़ की गुफा, अमरुक का राजभवन।

इस ऐतिहासिक नाटक में शंकराचार्य, मंडन मिश्र और भारती के शास्त्रार्थ का विवरण है। मीमांसकाचार्य प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति मंडन मिश्र थे। उनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर प्रसिद्ध अद्वैतवादी संन्यासी केरल-किशोर शंकराचार्य उनसे शास्त्रार्थ करने के लिए मिथिला में पदार्पण करते हैं। मंडन मिश्र के गुरु कुमारिल भट्ट भी शंकराचार्य की विद्वत्ता से प्रभावित हैं। कुमारिल के आदेशानुसार ही शंकराचार्य मंडन से मिलने मिथिला आये हैं। मंडन को ढूंढते हुए उन्हें मंडन मिश्र की गृह सेविका मिलती है। उसके मुँह से मीमांसा के तथ्य-पूर्ण उत्तर सुनकर शंकराचार्य विस्मय-विमुग्ध हो जाते हैं। मंडन मिश्र के साक्षात्कार होने पर शास्त्रार्थ की तैयारी होने लगती है। शास्त्रार्थ में निर्णायिका बनती है—वेद-वेदांग, इतिहास, गणित, धर्मशास्त्र आदि में प्रवीण मंडन मिश्र की पत्नी। अनेक दिनों तक शास्त्रार्थ चलता है। इसी क्रम में भारती दोनों प्रतिद्वन्द्वियों के गले में माला डाल देती है और घोषणा करती है कि जिसके गले की माला कुम्हला जाएगी वह पराजित घोषित किया जाएगा। सर्व प्रथम मंडन मिश्र की माला म्लान हो जाती है तब भारती शंकराचार्य के विजय की घोषणा करती है और विजेता के साथ स्वयं शास्त्रार्थ करने के लिए सन्नद्ध हो जाती है। भारती अपने कौशल से शंकराचार्य को मौन कर देती है और शर्त के अनुसार वे काषाय वस्त्र का परित्याग कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते हैं।

शाहजहाँ (सन् १९२५, 'झाँकी' संग्रह में संग्रहीत), ले० : आरसी प्रसाद सिंह; प्र० : गांधी, हिन्दी पुस्तक भंडार, दिल्ली; पात्र : पु० १, स्त्री १, अंक-रहित, दृश्य : १।
घटना-स्थल : कारागार।

प्रस्तुत गीति-नाट्य में शाहजहाँ के अन्तिम दिनों का चित्रण किया गया है। कारावास के दुर्दिनों में सम्राट् के पास केवल दो सम्बल हैं—पुत्री जहाँनारा एवं स्वर्गवासी मुमताज की मधुर स्मृतियाँ। यद्यपि औरंगजेब शाहजहाँ पर अनेक अत्याचार करता है तथापि शाहजहाँ उसके कल्याण की कामना करता है। यहाँ उसमें पितृ-सुलभ-स्नेह के दर्शन होते हैं, जो उसके धीरज को भावात्मक स्पर्श प्रदान करता है। जहाँनारा के हृदय में शाहजहाँ के लिए असीम आदर है, प्रेम है। इसीलिए उसके अन्तिम दिनों तक वह भी उसके साथ कारावास भोगती है। इतना ही नहीं, पिता के लिए वह अपने प्रथम प्रणय का भी बलिदान कर देती है और मृत्युपर्यन्त प्रेमी के दर्शन न करने का संकल्प करती है। यहाँ जहाँनारा का उदात्त प्रेम नारी के त्यागमयी रूप का सहज स्पर्श कर लेता है। एक दृश्य के इस गीतिनाट्य में ऐतिहासिक तथ्यों को आधार बनाया गया है।

शाही लकड़हारा (सन् १९२४, पृ० १४६), ले० : कुलभास्कर जन्नत; प्र० : नेशनल बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली; पात्र : पु० १३, स्त्री ७; अंक : ३; दृश्य : ८, ७, ६।
घटना-स्थल : जंगल, मार्ग, खंडहर।

महाराज जोधपुर एक शर्त हार जाने से अपनी रानी को १० वर्ष का वनवास देते हैं। जंगल में उसे पुत्र उत्पन्न होता है जो कालान्तर में जंगल में ही खो जाता है। अतः लकड़हारे का जीवन बिताता है। राजा के एक प्रधान रामसिंह की बेटी बीना पर जालिम नामक एक दुष्ट आसक्त होता है किन्तु बीना उससे विवाह करना स्वीकार नहीं करती है। जालिम युक्तिपूर्वक एक लकड़हारे को राजकुमार बता कर उससे

वीना का विवाह करा देता है। भेद खुलने पर पता चलता है कि वह लकड़हारा जिस से वीना का विवाह हुआ है—और कोई नहीं महाराजा का खोया हुआ राजकुमार है।

शिक्षादान अर्थात् जैसा काम वैसा परिणाम (वि० १९३४, पृ० ४४), ले० बालकृष्ण भट्ट, प्र० महादेव भट्ट, अहियापुर, प्रयाग, पात्र पु० ३, स्त्री ४, अंक के स्थान पर गर्भांक और पर्दा (चार तो पर्दे हैं पाँचवाँ गर्भांक है)।
घटना-स्थल रसिक लाल का अंग्रेजी ढंग मे सजा हुआ बैठकखाना, जनानखाने मे रसोईघर, शयनगृह, मोहिनी वेश्या का घर, मालती का शयनगृह।

प्रस्तुत प्रहसन मे यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि एक सभ्य लडका कुसगति मे पडकर किस प्रकार अपने चरित्र को दूषित कर देता है तथा एक कुलवन्ती स्त्री किस प्रकार अपने चरित्र-बल से अपने पति को कुमार्ग से बचाने की शिक्षा देती है।

प्रहसन का नायक रसिकलाल मित्रो की कुसगति मे पडकर मोहिनी नामक वेश्या के प्रेम-पाश मे फस जाता है और अपनी विवाहिता पत्नी मालती की उपेक्षा करने लगता है। मालती अपने पति को सुधारने के लिए एक दिन अपने घर परपुरुष को बुलाती है। रसिकलाल उसे देखकर आग-बबूला हो उठता है। वह मालती से कहता है "हम अभी तेरा सिर काट डालेंगे"। तब मालती सारा रहस्य बताती है कि जिस प्रकार आपको परपुरुष मेरे साथ देखकर क्रोध आता है उसी प्रकार आप मुझे छोडकर परस्त्री के साथ घूमते हैं तो मुझे कैसा लगता होगा। और इस युक्ति से रसिकलाल अपने कुकृत्यो पर पश्चात्ताप व्यक्त करता है।

शिल्पी (सन् १९५२, 'शिल्पी' मे सगृहीत), ले० सुमित्रानन्दन पन्त, प्र० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० २, स्त्री १, अंक-रहित, दृश्य ३।
घटना-स्थल कलाकक्ष, देवालय।

आधुनिक युग-चेतना पर आधारित 'शिल्पी' गीतिनाट्य एक कलाकार के अन्त सघर्ष को प्रस्तुत करता है। प्रथम दृश्य मे कलाकार अपनी मूर्ति द्वारा युग को एक शाश्वत-चिरन्तन सत्य देना चाहता है। युग के परिवर्तित मानदण्ड तथा रूढि-ग्रस्त आत्मा के जड सस्कार उसके इस स्वप्न को पूरा करने मे असमर्थ रहते हैं। वह अनेक बार मूर्ति का निर्माण करता है और अनेक बार उसका खडन। यहाँ कलाकार मे अन्त -सघर्ष होता है। भौतिक युग के साथ-साथ अन्त के आदर्श भी परिवर्तित होते रहते हैं। ये परिवर्तित आदर्श शिल्पी के पत्थर तथा छेनी की पकड मे आते-आते रह जाते हैं। इसी समय कुछ व्यक्ति कलाकार का कलाकक्ष देखने आते हैं जहाँ कलाकार गौतम, मसीह, राधाकृष्ण, रवीन्द्रनाथ टैगोर, गाँधी तथा सरदार पटेल की मूर्तियो के माध्यम से आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा साहित्यिक दोषो पर दृष्टिपात करता है। यहाँ उसे ज्ञात होता है कि सभी आदर्श युग सापेक्ष है। अत किसी भी आदर्श को शाश्वत आदर्श के रूप मे प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।

द्वितीय दृश्य मे नगर-श्रेष्ठी द्वारा खरीदी मुरलीधर की मूर्ति की देवालय मे प्रतिष्ठा होती है। इस स्थल पर मूर्ति-पूजा को लेकर सस्कृति तथा कला सम्बन्धी वाद-विवाद छिडता है। युग-युगो से मूर्ति-पूजा, अर्चना के बावजूद भी जन मन मृत आदर्शों से चिपका हुआ है। ऐसे आदर्शों को कलाकार मानवता के लिए अपमान समझता है। चूँकि आत्मा निरन्तर विकसित होती रहती है इसीलिए परिस्थितियों की सगठित चेतना पर ही समस्त जीवन मूल्य अवलम्बित रहते हैं।

तृतीय दृश्य मे शिल्पी की शिष्या उसे उसकी कला-सामर्थ्य के प्रति सचेष्ट करती है। अन्त मे चिन्तन करते-करते कलाकार के समक्ष चिर-प्रतीक्षित स्वप्न-प्रतिमा साकार

हो उठती है। तभी श्रमिकों तथा कृषकों का समूह आता है और कलाकार की एकान्त-साधना पर व्यंग्य करता है। वह कला को अतृप्त वासनाओं की पूर्ति, यश-लिप्सा की अभिव्यक्ति कहते हुए उन कृषक-श्रमिकों को जीवन के सच्चे साधक बताता है, जो मिट्टी के सौन्दर्य को जागृत करते हैं। वास्तव में ये ही प्रकृत शिल्पी हैं। यहाँ कलाकार को युग-सत्य के दर्शन होते हैं और वह जनवादी कला का समर्थन करता है।

शिवपार्वती (सन् १९२७, पृ० १०५), ले० : परिपूर्णानन्द वर्मा; प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, राजा दरवाजा, बनारस सिटी; पात्र : पु० १७, स्त्री ६; अंक : ३; दृश्य : ७, १०, ५।
घटना-स्थल : वन, सड़क, यज्ञशाला, गली, इन्द्रसभा, पर्वत का झरना, गंगा तट, नगर रणक्षेत्र, महल, राजद्वार, कैलाश पर्वत, कन्दरा।

इस पौराणिक नाटक में शिव की भक्ति राम में दिखाई गई है।

राम और लक्ष्मण सीता को वनों में खोजते हुए विलाप करते हैं। एक दिन शिव और पार्वती उधर ही से गुजरते हुए राम से मिलते हैं। दूर ही से शिव राम को प्रणाम करते हैं। पार्वती के यह कहने पर कि आप एक साधारण पुरुष को प्रणाम करते हैं। शिव जी उन्हें बताते हैं कि वे साधारण पुरुष नहीं बल्कि विष्णु के अवतार हैं। पार्वती यह बात भी मानने को तैयार नहीं होती और रामचन्द्र जी की परीक्षा लेने के लिए सीता का रूप बनाकर राम के सामने खड़ी हो जाती है। पार्वती को सीता के रूप में देखकर रामचन्द्रजी कहते हैं कि माता, आप शिव जी को छोड़कर यहाँ कहाँ चली आयी। यह सुनकर पार्वती जी बहुत लज्जित होकर लौट आती हैं। शिव जी को जब यह ज्ञात होता है कि उन्होंने सीता का रूप धारण किया तो पार्वती जी को त्याग देते हैं क्योंकि सीता को शंकर जी माँ मानते थे। शिव जी द्वारा परित्यक्ता पार्वती अपने पिता दक्ष के यज्ञ में अनिमन्त्रित जाती है और दक्ष द्वारा अपमानित होने पर यज्ञकुण्ड में कूदकर जान दे देती है। पार्वती के मरने के बाद शिव के गण उत्पात मचाते हैं और दक्ष का सिर काट लेते हैं। मरने के बाद पार्वती जी हिमाचल के यहाँ उमा के नाम से जन्म लेती है। इधर तारकासुर नाम का एक राक्षस तप करके नारद के सुझाव पर ब्रह्मा को प्रसन्न करके यह वरदान माँगता है कि शिव जी के पुत्र के अतिरिक्त और कोई हमें मार न सके। वर प्राप्त करके वह देवताओं पर चढ़ाई करता है और उनको बड़ा कष्ट देता है। हारकर देवगण शिवजी का विवाह उमा के साथ करने का प्रयत्न करते हैं। उमा भी साढ़े तीन सहस्र वर्ष तपस्या करती है तब शिवजी उसकी परीक्षा लेते हैं और फिर उसके साथ विवाह करते हैं। देवता बहुत प्रसन्न होते हैं।

शिव-विवाह (वि० १९६८, पृ० ६१), ले० : मुंशी राम गुलाम; प्र० : बाबू कन्हैयालाल बुकसेलर, पटना; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : ५, दृश्य : २, ६, ६, ४, ६।
घटना-स्थल : विवाह-मंडप।

इस पौराणिक नाटक में शिव-पार्वती विवाह की सम्पूर्ण घटनाओं का बड़ा ही सरस चित्रण किया गया है। नाटक गद्य तथा पद्यमय है। पद्य में दोहे, दादरा, चौपाई, सोरठा, हरिगीतिका और सवैया आदि का प्रयोग मिलता है।

शिवाजी (वि० १९९४, पृ० २१४), ले० : मिश्र बन्धु; प्र० : गंगा ग्रंथागार, लखनऊ; पात्र : पु० २१, स्त्री २ ; अंक : ५।
घटना-स्थल : दिल्ली।

इस ऐतिहासिक नाटक में शिवाजी का राष्ट्रप्रेम दिखाया गया है।

शिवाजी अपनी माता जीजाबाई से प्रजा-कल्याण के लिए आदिलशाह से युद्ध

करने का आशीर्वाद लेते हैं। हिन्दू अबलाओं के साथ होनेवाले अत्याचारों से उनका रक्त उबल उठता है। इस अत्याचार से सन्तप्त कई मुसलमान भी शिवाजी का साथ देते हैं।

आदिलशाह के ऊपर शिवाजी की विजय का समाचार सुनकर दिल्ली-बादशाह औरंगजेब बड़ा क्रुद्ध होता है और महाराजा यशवन्त सिंह को उन्हें पराजित करने का आदेश देता है। शिवाजी और औरंगजेब का युद्ध इस नाटक में दिखाकर छत्रपति की वीरता, सहिष्णुता, प्रजा-वत्सलता आदि दिखाने का सफल प्रयत्न किया गया है।

कथावस्तु में अल्प परिवर्तनों के साथ यह नाटक सफलतापूर्वक खेला जा सकता है। शिवाजी को नायक बनाकर लिखे गए ऐतिहासिक नाटकों में इसका उच्च स्थान है।

शिवाजी और भारत-राज्य लक्ष्मी (सन् १९२५, 'झाँकी संग्रह में संग्रहीत), ले० आरसी प्रसाद सिंह, प्र० गांधी हिन्दी पुस्तक भंडार, दिल्ली, पात्र पु० १, स्त्री १, अंक-रहित, दृश्य १।
घटना-स्थल नहीं है।

शिवाजी और भारत-राज्य लक्ष्मी एक ऐतिहासिक गीति-नाट्य है, जिसमें दो पात्रों के वार्तालाप द्वारा भारत राज्य-लक्ष्मी के प्रति शिवाजी के भावात्मक उद्गार व्यक्त किए गए हैं। राम, अशोक तथा चन्द्रगुप्त की गौरवशाली परम्परा में पल्लवित हिन्दू-जाति परस्पर ईर्ष्या-द्वेष, अविश्वास के कारण विदेशियों की दासता भोग रही है। राज्य-लक्ष्मी इससे विक्षुब्ध है। भारत का अन्धकारमय भविष्य उसे चिंतित करता है। शिवाजी के पराक्रम, देशभक्ति एवं आत्म-बलिदान की भावना से वह कुछ आश्वस्त होती है और देशोद्धार की आकांक्षा करती है। इस प्रकार एक दृश्य के इस गीतिनाट्य का सामयिक महत्त्व है। भारत के स्वतंत्रता-आन्दोलन के समय विद्यालयों में अभिनीत।

शिवाशिव नाटक (सन् १९०९, पृ० १६५), ले०. विन्ध्येश्वरी दत्त शुक्ल, प्र० खड्ग-विलास प्रेस, बाकीपुर, पात्र पु० १०, स्त्री ६, अंक ६, दृश्य ५, ३, ५, ४, ४, ५, ११, ६, १४।

इसमें नौ दिनों की लीला नौ अंकों में वर्णित है। सती-मोह से कथा प्रारम्भ होकर पार्वती-विवाह और विदाई तक समाप्त होती है। ग्रंथ की रचना बड़वा निवासी प० रामदास तिवारी के प्रस्ताव पर हुई जिन्होंने रामलीला नाटक लिखा था और उसका अभिनय भी अपने ग्राम में कराया था। नाटक में गद्य कम हैं, पद्य अधिक हैं। संवाद खड़ी बोली गद्य में है। पद्य ब्रजभाषा में है जो नाना राग-रागनियों में निबद्ध है। बीच-बीच में खड़ी बोली का पद्य भी उर्दू के ढंग का है। इन्दर-सभा अमानत के ढंग का यह नाटक है।

शिवा-साधना (सन् १९३७, पृ० १८६), ले० हरिकृष्ण 'प्रेमी', प्र० हिन्दी भवन, जालंधर शहर, पात्र पु० ३८, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ८, ७, ६।
घटना स्थल. दिल्ली, बीजापुर, कैदखाना।

इस ऐतिहासिक नाटक में महाराष्ट्र-वीर छत्रपति शिवाजी के आक्रमणों और देश की एकता के लिए किए गए संगठनों का सुन्दर चित्रण है। शिवाजी अपने सामर्थ्य से सारे भारतवर्ष में जनता का राज्य स्थापित करना चाहते हैं। इससे क्रोधित होकर बीजापुर का बादशाह महमूद आदिलशाह शिवाजी के पिता को कैद कर लेता है। दूसरी ओर औरंगजेब बीजापुर को अपने अधिकार में लेकर साथ ही शिवाजी को भी समाप्त करना चाहता है। अपनी इस इच्छा को पूर्ण न होते देखकर वह धोखे से शिवाजी को बन्दी कर लेता है। परन्तु शिवाजी अपनी युक्ति और नीति द्वारा औरंगजेब के कारागार में मिठाई के टोकरों में बैठकर निकल जाते हैं। कुछ समय पश्चात् उनकी माता की मृत्यु हो जाती है। माता की मृत्यु से शिवाजी के मन में वैराग्य की लहर आती

है। किन्तु गुरु रामदास उन्हें प्रोत्साहित करते हैं, जिससे वे पुनः स्वातंत्र्य-युद्ध में संलग्न हो जाते हैं।

शीरी-फरहाद (सन् १९२३, पृ० ११४), ले० : श्याम बिहारी लाल; प्र० : बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस ; पात्र : पु० ८, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : ६, ७, ४।
घटना-स्थल : जंगल, रास्ता आम, बाग-शीरी, सड़क तूरान की, महल मय बाग, दरबार कोहसार।

इस दुखान्त नाटक में शीरी-फरहाद का उन्मुक्त प्रेम दिखाया गया है।

शीरी-फरहाद की प्रसिद्ध कहानी को पारसी रंगमंच की दृष्टि से लिखा गया जिसमें संवादों में भी गाने दिए गए हैं। नाट्यकार भूमिका में लिखते हैं : "न मैं पण्डित हूँ और न शायर। मैं महज नाटक-कला का एक पुजारी हूँ।"

फरहाद एक कोहकन युवक है। वह मिस्र से अनेक प्रकार की कारीगरी सीख-कर ईरान आता है। संयोग से एक दिन ईरान की शाहजादी शीरी की जान बचाता है। शीरी की सुन्दरता पर मुग्ध होकर फरहाद उससे प्यार करने लगता है। गुलनार नाम की दूसरी लड़की फरहाद से प्यार करती है लेकिन फरहाद उसे अपनी बहन मानता है और शीरी के सिवा दूसरे के प्यार को कुछ महत्त्व नहीं देता है। इससे विक्षुब्ध होकर गुलनार शीरी की तस्वीर तूरान के बादशाह के पास इस ख्याल से भेजती है कि जब शीरी की सुन्दरता शाह खुसरो देखेंगे तो शीरी से ब्याह कर लेंगे और फरहाद हमारे कब्जे में आ जाएगा। लेकिन उसका अनुकूल परिणाम नहीं निकलता है। शीरी की याद में फरहाद पागल होकर इधर-उधर भटकता है। शीरी को जब इस हाल का पता चलता है तो वह भी फरहाद से मिलने को बेचैन हो उठती है। गुलनार इससे और विक्षुब्ध हो जाती है और शाह खुसरो से सब हाल बता देती है। शाह यह सुनकर बहुत क्रोधित होते हैं और फरहाद को एक कुटनी द्वारा झूठी खबर सुना कर कि शीरी मर गयी, आत्महत्या करने पर बाध्य कर देते हैं। फरहाद के मरने की खबर सुनकर शीरी उसकी कब्र के पास जाती है। फरहाद की कब्र फट जाती है और शीरी उसी में समा जाती है।

शीरी-फरहाद (सन् १९३६, पृ० ९८), ले० : तुलसी राम 'प्रेमी'; प्र० : एन० एस० शर्मा गौड़ बुक डिपो, श्याम प्रेस, हाथरस; पात्र : पु० ५, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ७, ८, १०।
घटना-स्थल : जंगल, झोंपड़ी, तूरान का महल, बाग शीरी, कोहसार।

यह एक दुखान्त नाटक है। फरहाद एक मूर्तिकार है जो स्वप्न में देखी हुई अपनी प्रेमिका की मूर्ति का निर्माण करता है जिसे देखकर फारस का बादशाह खुसरो उस पर आसक्त हो जाता है। वजीर बादशाह पर यह रहस्योद्घाटन करता है कि यह शीरी शहजादी की मूर्ति है और शीरी और फरहाद एक-दूसरे पर आसक्त हैं। बादशाह ईर्ष्यावश फरहाद की हत्या का आदेश देता है। लेकिन वजीर की चतुराई से फरहाद जीवित बच जाता है। इसका रहस्य तब खुलता है जब शीरी बादशाह को एक ही चट्टान को तराश कर बनाये गये महल में रहने के लिए बाध्य करती है। उस समय फरहाद इस कार्य के लिए नियुक्त किया जाता है। फिर शीरी तथा फरहाद एक दूसरे के प्रेम में विलीन होकर भाग जाते हैं। बादशाह उनको गिरफ्तार कर अनेक यातनाएँ देता है फिर भी उनका प्रेम अचल रहता है। राज्य से निष्कासित फरहाद अपने मित्र शतानन्द की सहायता से पुनः शीरी के पास पहुँच जाता है फिर दोनों भाग जाते हैं। शतानन्द मृत्यु-दण्ड स्वीकार करता है लेकिन अपने मित्र फरहाद का पता नहीं बताता। अन्त में शीरी और फरहाद अचानक जुदा हो जाते हैं और फरहाद शीरी की याद में तड़पता हुआ मर जाता है।

शीरी भी अपने प्यारे फरहाद के विरह में व्याकुल हो छुरा मारकर आत्महत्या करके प्रेमी और प्रेमिका के सच्चे प्रेम की झांकी दुनिया को दिखा देती है।

शीरी-फरहाद (सन् १९२० के आसपास पृ० ८०), ले० कुल भास्कर वर्मा, प्र० सव हितैषी व्यापार मण्डल, दरीबा कला, पात्र देहली, पु० ५, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ११, ६, ७।
घटना-स्थल झोपड़ी, जंगल, मार्ग, शीरी का बाग, कोहमार, कब्र।

यह दुखान्त नाटक शीरी फरहाद की प्रेमगाथा को गद्य पद्य के माध्यम से प्रस्तुत करता है। पद्य नाटक की आधारभूमि चिरपरिचित 'शीरी फरहाद' की अमर प्रणय-गाथा है। नाटक में दिखाया गया है कि किस प्रकार शीरी से प्रेम करनेवाला फरहाद अन्त में मृत्यु को प्राप्त होता है। शीरी भी उसकी कब्र पर जाकर अपनी इहलीला समाप्त कर देती है। इस प्रकार करुणा के वातावरण में नाटक समाप्त होता है।

शील सावित्री नाटक (वि० १९५४, पृ० ९६), ले० कन्हैयालाल भरतपुरी, प्र० खेमराज श्री कृष्णदास, बम्बई, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ४, गर्भांक २, २, २, १, १।
घटना-स्थल राज्य-भवन, वृक्ष-छाया।

इस पौराणिक नाटक में सावित्री के पातिव्रत का प्रभाव दिखाया गया है।

नाटक का प्रारम्भ नांदी और प्रस्तावना से होता है। भद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या सावित्री शाल्व देश के राजकुमार सत्यवान को वर रूप में वरण करती है। नारद राजसभा में उपस्थित होकर कहते हैं 'आज के दिवस से एक सम्वत्सर व्यतीत हुए वह राजकुल-भूषण इस असार संसार को त्याग अपने पदपंकज से स्वर्ग को पवित्र करेगा।' अतः सावित्री के पिता पुत्री से दूसरा वर वरण करने का आग्रह करते हैं पर सावित्री कहती है 'यदि अग्नि में कमल उत्पन्न हो और जल में अग्नि प्रज्वलित हो जाय तो भी सावित्री सत्यवान को छोड़ दूसरा पति अंगीकार न करेगी।' एक वर्ष के उपरान्त यमराज सत्यवान का प्राण ले लेता है किन्तु सावित्री के तप और शील से प्रसन्न होकर वह सत्यवान को प्राणदान देता है। यमराज और सावित्री का वार्तालाप चौथे अंक में बहुत ही हृदयद्रावक है।

शाल्व देश का प्रधान तथा गौतम आदि ऋषि अरण्य प्रदेश से सावित्री-सत्यवान को अपने राज्य में लौटने का आग्रह करते हैं। अन्त में राजा और रानी सुखपूर्वक राज्य करते हैं।

मुक्रिया (सन् १९६२ पृ० ७२), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली, पात्र : पु० ६, स्त्री १, अंक : २, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल एक मकान।

इस सामाजिक नाटक में एक कलाकार भारती के असफल प्रेम का दुखान्त चित्रण किया गया है। भारती अपने मित्र नौकर सौती के साथ शांति नामक एक कुमारी के मकान में रहते हैं। वह भारती को कला से प्रभावित होकर शादी का वचन देती है। भारती निश्चित समय पर परिणय के लिये प्रस्ताव करना चाहते हैं किन्तु उसी समय शान्ति स्वयं आकर मना कर जाती है। शान्ति देवी के प्रति अजय का भी आकर्षण है। किन्तु उसकी बेवफाई के कारण वह उसे फटकारता है। भारती प्रेमोन्माद में पागल, शराबी अंधे तथा लगड़े हो जाते हैं। शान्ति किशोर नामक धनी व्यक्ति से शादी कर लेती है। किशोर भारती को घर ले जाते हैं। किन्तु शान्ति देवी उससे परेशान रहने लगती है और भारती को चाय के साथ विष पिलाना चाहती है। भारती उसी के घर पर प्राण त्याग देता है और शान्ति की मक्कारी का परदा-फाश करता है।

नाटक कला कीर्ति संगम द्वारा १९६३ में अभिनीत हो चुका है।

शुतुरमुर्ग (सन् १९६८, पृ० ७३), ले० : ज्ञानदेव अग्निहोत्री; प्र० : भारतीय ज्ञान-पीठ प्रकाशन, वाराणसी; पात्र : पु० ७, स्त्री ४; अंक : १; दृश्य : १।
घटना-स्थल : महल का कक्ष।

इस प्रतीकात्मक नाटक में "वैयक्तिक स्वतन्त्रता" और "राजा के दायित्व" जैसे ज्वलन्त प्रश्नों को उठाया गया है।

सूत्रधार के द्वारा नाटक का प्रारम्भ होता है। वह कथ्य को व्यंजित करता हुआ नाटक का प्रारम्भ करता है। इसमें ऐसे राजा की कहानी है जो सत्य से आतंकित होकर बाह्य विपत्ति से बचने के लिए 'शुतुरमुर्ग' की तरह मिथ्या आश्रय ग्रहण करता है। वह सत्य की आवाज बन्द करना चाहता है। लेकिन विरोधीलाल जैसे युवक, राजा के मिथ्या बचाव को सहन नहीं कर पाते। राजा नीतिपूर्वक विरोधीलाल जैसों को अपने पक्ष में कर प्रजा को दिशाहीन करना चाहता है। लेकिन प्रजा का विद्रोह भड़क उठता है—मामूलीराम जैसे व्यक्ति सचेत हो उठते हैं। इन विरुद्ध स्थिति में राजा बाह्य युद्ध की घोषणा कर प्रजा से अपेक्षा करता है कि वह युद्ध का मुकाबला करे परन्तु राष्ट्र उन्हें कष्ट, आँसू और पीड़ा के अलावा और कुछ भी देने का वचन नहीं देता। लेकिन यह धोखा अधिक देर तक स्थायी नहीं रह पाता और राजा स्वीकार कर लेता है कि 'शुतुरमुर्ग' का कभी अस्तित्व ही नहीं था।

इसमें शुतुरमुर्ग को अंध आत्मविनाश की वृत्ति का प्रतीक बनाकर समसामयिक राजनीतिक स्थितियों पर कटु व्यंग्य किया गया है। प्रतीकात्मक पात्र, प्रतीकात्मक संवाद और प्रतीकात्मक दृश्य-बन्ध है।

अभिनय : श्यामानन्द जालान ने उसे 'अपनी निजी पद्धति' में सत्यदेव दुबे ने यथार्थवादी शैली' और स्वयं लेखक ने 'फार्स शैली' में रंगमंच पर प्रस्तुत किया है।

शेखर (सन् १९५०, पृ० ९९), ले० : देवदत्त 'अटल'; प्र० : सूरज बलराम साहनी, एक्सप्लेनेड रोड, दिल्ली; पात्र : पु० १६, स्त्री ५; अंक : ५; दृश्य : ३, ४, ४, ४, ४।
घटना-स्थल : कानपुर, कारागार, इलाहाबाद का अल्फ्रेड पार्क।

यह एक राजनीति प्रधान ऐतिहासिक नाटक है जिसमें क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर के बलिदान मय जीवन की झांकी प्रस्तुत की गई है। क्रान्तिकारी विनाश में विकास सोचते हैं, तथा क्रान्ति की ज्वाला में शीतलता का आभास पाते हैं। चन्द्रशेखर अपने क्रान्तिकारी साथी सनेह, सरन, शिवमूर्ति आदि के साथ महलों के सुखों को त्याग कर झोंपड़ियों में रहना पसन्द करते हैं, तथा ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं, जिसमें मानव मानव का शोषण न करे। सबको जीवन-यापन के साधन उपलब्ध हों। पुलिस इनका पीछा करती है। कई बार इनकी कार्यकुशलता से इनको पकड़ने में असफल रहती है। शेखर जगह-जगह पर अंग्रेजों के अत्याचारों के खिलाफ सभाएँ करते तथा जलूस निकालते हैं। अन्त में उनके क्रान्तिकारी साथी शरीफ तथा सरन गिरफ्तार हो जाते हैं। शरीफ को फांसी की सजा दी जाती है तथा इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस पर गोलियां चलाते हुए शेखर भी मातृभूमि की बलिवेदी पर सदा के लिए सो जाते हैं।

शेरशाह (सन् १९५०, पृ० १७८), ले० : गोविन्ददास सेठ, प्र० : प्रगति प्रकाशन, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री २; अंक : ५; दृश्य : ५, ८, ८, ७, ६।
घटना-स्थल : चुनार, युद्धभूमि, सहसराम में शेरशाह का भवन।

इस ऐतिहासिक नाटक में हिन्दू और भारतीय मुस्लिम के सम्मिलित उद्योग द्वारा विदेशी मुगल-आक्रमण से भारत-मुक्ति का प्रयास दिखाया गया है।

नाटक का नायक शेरशाह अपने मित्र ब्रह्मादित्य गौड़ के साथ मिलकर मुगल-

आक्रमण का विरोध करता है। बाबर की मृत्यु के उपरान्त वह हुमायूं को आगरा-दिल्ली का सिंहासन छोड़ने के लिए बाध्य करता है। शेरशाह राजनीतिक सफलता से बादशाह तो बन जाता है पर युद्ध में अत्यन्त व्यस्त रहने के कारण वह पारिवारिक सुख से वंचित रह जाता है। चुनार के सूबेदार ताजखां का विवाह एक परम सुन्दरी महिला लाडबानू के साथ होता है। ताजखां के पास चुनार में अतुल सम्पत्ति है। उस सम्पत्ति का देश-हित में उपयोग करने के लिए शेरशाह ताजखां का वध करवाता है और सम्पत्ति अधिकारिणी लाडबानू से विवाह कर लेता है। राजनीतिक समस्याओं में उलझे शेरशाह से पूर्ण प्रेम न पाने पर लाडबानू अपने देवर निजाम से प्यार करने लगती है। इस नाटक में शेरशाह की युद्ध कथाओं के साथ निजाम और लाडबानू की प्यार-कथा जोड़ दी गई है। तीसरी कथा हुमायूं के पारिवारिक और राजनीतिक जीवन की है। हुमायूं की राजनीतिक भूलों और दुर्बलताओं के सम्मुख शेरशाह की राजनीतिक पटुता और दृढ़ता को स्पष्ट किया गया है।

शेरशाह (सन् १६०० के आसपास, पृ० ७१), ले० रमाकान्त, प्र० श्री गंगा पुस्तक मन्दिर, खजांची रोड, पटना, पात्र पु० ११, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ३, ३, ४।
घटना स्थल सहसराम का दुर्ग, दिल्ली, आगरा दुर्ग, युद्ध भूमि, मार्ग।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। प्रथम अंक में नायक शेरशाह के प्रारम्भिक कष्ट के दिन तथा बिहार में घर से निर्वासित होकर बहार खां के यहाँ नौकरी करते दिखाया गया है। वह बहार खां के साथ शिकार में जाता है। वहाँ वह शेर को मार कर शेर खाँ की पदवी पाता है और बहार खाँ के मरने पर स्वयं बड़ी चालाकी से जागीर हस्तगत कर लेता है।

हुमायूं अपने सिपहसलार बैरम खाँ के साथ शेरशाह की शक्ति को कुचलने की इच्छा से उसके राज्य पर आक्रमण कर देते हैं। चुनार का किला छिनते देख शेरशाह हुमायूं से सन्धि कर अधीनता स्वीकार कर लेता है। हुमायूं गौड़ विजय कर आनन्दोत्सव के समय शराब में मस्त हो जाता है। शेरशाह गौड़ से लौटते समय हुमायूं पर आक्रमण कर उसे भगाता है और दिल्ली पर अधिकार कर लेता है।

वह राज्य विस्तार के लिये सैन्य-संगठन करता है। राज-प्रबन्ध और प्रजा-कल्याण के काम में संलग्न रहता है। एक दिन बारूद-खाने का निरीक्षण करते समय आग लगने से शेरशाह परलोकगामी होता है।

शेरशाह सूरी (सन् १९६२, पृ० ४०), ले० परिपूर्णानन्द वर्मा, पात्र पु० १०, स्त्री २, अंक ३, दृश्य-रहित।
घटना स्थल सहसराम में शेरशाह सूरी का आलीशान महल, लड़ाई का शिविर, शेरशाह का सहसराम वाला तालाब के भीतर बना राजभवन।

इस ऐतिहासिक नाटक में शेरशाह सूरी और उसके पुत्र सलीमशाह सूरी के कार्यों पर प्रकाश डाला गया है और इसमें वीरतापूर्ण कार्यों द्वारा न्याय एवं अन्याय का भी उदाहरण पेश किया गया है। स्वयं सलीम की गलती पर उसे उसका पिता दण्ड देता है। इस प्रकार शेरशाह सूरी को वीर देशभक्त, न्याय प्रिय शासक सिद्ध किया गया है।

शैला (सन् १९५७, पृ० ७६), ले० भैरूलाल व्यास, प्र० हिन्दी साहित्य समिति, बेलगाम पात्र पु० ५, स्त्री ३, अंक २, *दृश्य-रहित।*
घटना स्थल अनुसंधानशाला, औषधि की दुकान।

इस समस्या नाटक में नारी की सामाजिक स्थिति, भारतीय समाज में विदेशीपन के प्रति मोह, अनमेल विवाह आदि समस्याओं को उठाया गया है। विनोद नामक

डॉक्टर अपने अनुसंधान के बल पर क्षयरोग से मुक्ति दिलाने के लिए नवीन औषधि का निर्माण करके ढाई वर्षों के पश्चात् घर लौटता है। घर पर अपनी पत्नी शशि और उसकी सखी शैला से उसकी भेंट होती है। गुलजारी नामक व्यापारी विनोद की पत्नी शशि के माध्यम से नवीन औषधि का व्यापार-अधिकार प्राप्त करता है और अपने काले व्यापार से देश, समाज तथा मानव तीनों के प्रति द्रोह ही करता है। शशि गुलजारी के चंगुल से निकलकर विनोद से क्षमा-याचना करती है "आदमी का क्या बुरा? परिस्थितियाँ उसे बनाती हैं, बिगाड़ती हैं।" विनोद अपनी पत्नी की चिन्ता किए बिना पुलिस को सूचना दे देता है और गुलजारी को पुलिस पकड़ लेती है तथा शशि प्रायश्चित्त करती है कि लोभ में आकर उसने देश, समाज और मानव के धर्म को भुला दिया।

शोला और तूफान (सन् १९६४, पृ० १०२), ले० : सतीश डे; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री ३; दृश्य : ३; अंक-रहित।
घटना-स्थल : बालीगंज कलकत्ता में रवीन्द्रनाथ जी का सजा सजाया ड्राइंगरूम।

मंच पर आकर प्रधान, आचार्य मुकुन्द कान्ति घोष को समाज की उन्नति के लिए कुछ शब्द कहने की प्रार्थना करते हैं। आचार्य घोष समाज की उन्नति के लिए विधवा-विवाह की वकालत करते हुए एक परिवार की कहानी सुनाते हैं कि दुल्हन के हाथों की सुर्ख मेंहदी सूखी भी नहीं थी कि उसका पति हत्या-काण्ड में जेल गया और उसे फांसी हो गई। उस विधवा का विवाह उसके देवर से करा दिया गया लेकिन वह बुजदिल युवक भाग गया। उतना कहना था कि दर्शकों के पीछे कुर्सी पर बैठा एक साधु इसे सरासर झूठ बतलाते हुए मंच पर आ गया और उसने अपना परिचय देते हुए बतलाया कि मैं ही सुशीलकुमार दत्ता हूँ और वह जनता को सच्ची घटना बतलाने लगा।

"बाबू रवीन्द्रनाथ जी का परिवार कलकत्ता में एक ऊँचा घराना था। धन-सम्पत्ति के रहते हुए भी रवीन्द्र तथा उनकी पत्नी मृदुला का स्वभाव मिलता नहीं था। वे दोनों छोटी-छोटी बातों पर लड़ जाते थे। इसमें घर की सुख-शान्ति खत्म हो गई और बच्चे भी बिगड़ गये। रवीन्द्र के पुत्र आशिम की शादी शिवानी से हुई और वे दोनों एक दूसरे को बेहद प्यार करते थे। शिवानी शिक्षित, सुसंस्कृत एवं चरित्रवान स्त्री थी। वह इस बिगड़े परिवार को प्रेम, धैर्य से सुधारने का प्रयत्न करने लगी। विवाहिता सावित्री अपनी मां मृदुला की सह पाकर अपनी ससुराल नहीं जाती। वह सिगरेट पीती और खलनायक सुरेश के साथ अंग्रेजी डांस करती, क्लबों में शराब पीकर मदहोश हो जाती। सत्यवान अपनी शास्त्रानुसार विवाहिता स्त्री को अपने घर ले जाने के लिए आता लेकिन सावित्री उसे बेवकूफ बनाकर लौटा देती। आशिम और शिवानी सावित्री को बहुत समझाते हैं लेकिन वह अपनी बुरी आदतों से बाज नहीं आती। एक युवक सुशील इंग्लैंड में १९ मैच जीतकर घर लौटने वाला है और शिवानी उसके स्वागत की तैयारी करने लगती है। आशिम अपनी पिस्तौल लेकर सुशील का स्वागत करने हवाई अड्डा जाता है। लेकिन सुशील अकेले ही घर आता है और भाभी के मातृतुल्य पवित्र प्रेम से अभिभूत हो उठता है। इसी बीच सावित्री और सुरेश शराब की मदहोशी में घर आते हैं और प्रेमालाप करने लगते हैं। उनके पीछे आशिम पिस्तौल लिये आता है और घर की इज्जत लुटते देख सुरेश को गोली मार देता है और पुलिस को आत्म-समर्पण कर देता है। आशिम को फांसी लग जाती है। सुशील अपनी भाभी को जीवित रखने के लिये उसे अपने साथ घुमाने ले जाता है और हर तरह से उस की देखभाल करने लगता है लेकिन सावित्री अपने मां-बाप के कान भर देती है। सत्यवान चालाकी से सावित्री को घर ले जाता है। इधर रवीन्द्रनाथ और मृदुला परिवार की इज्जत को खतरे में देखकर आचार्य से सलाह

कर चुपके से सुशील और शिवानी का विवाह कर देते है। जब सुशील दूल्हे के वस्त्र पहने कमरे मे घुसता है तो उसे शिवानी को सजी-धजी दुलहन के रूप मे देखकर जबरदस्त धक्का लगता है। शिवानी भी समाज द्वारा किये इस क्रूर व्यग्य से सहम जाती है। सुशील जिस भाभी से माँ का स्नेह पाता है उसे पत्नी रूप म स्वीकार नहीं कर सकता और शिवानी के रोकने पर भी वह उसी समय घर छोडकर भाग जाता है।"

श्रवण कुमार (सन् १९२८, पृ० १०२), ले० हरिशकर प्रसाद उपाध्याय, प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर, राजा दरवाजा, बनारस, पात्र पु० १३, स्त्री ८, अक ३, दृश्य ८, ८, ४।
घटना-स्थल कुटीर, मार्ग, नदीतट।

इस पौराणिक नाटक मे श्रवण कुमार की मातृ-पितृ-भक्ति का विवरण है। श्रवणकुमार अपने माता-पिता के लिए अपना समस्त जीवन न्यौछावर कर देता है। इसके विपरीत दामोदर नामक पात्र अपने पिता के साथ दुर्व्यवहार का दुष्परिणाम भोगता है।

श्रवण कुमार नाटक (सन् १९३१, पृ० ८०) ले० किशन चन्द जेबा, प्र० रतन एण्ड कम्पनी, दरीबाकलाँ, दिल्ली, पात्र पु० १०, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ५, ६, २।
घटना-स्थल श्रवण का गृह, शान्तनु का आश्रम, वन, सरयू नदी। श्रवणकुमार की प्रसिद्ध कथा नाटक केरूप मे।

श्रवण कुमार (सन् १९३२, पृ० १४६), ले० राधेश्याम कथावाचक, प्र० राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, पात्र पु० १६, स्त्री १०, अक ३, दृश्य ७, ८, ४।
घटना स्थल मार्ग, जगल, स्वर्ग।

इस पौराणिक नाटक मे श्रवण कुमार की मात-पितृ-भक्ति दिखाई गई है। नाटक का नायक श्रवण कुमार तथा नायिका उसकी धर्मपत्नी विद्या देवी है। श्रवण कुमार दृढता के साथ कष्ट सहनेवाला, माता-पिता का सच्चा सेवक और उपासक है। अपने वृद्ध और अधे माता-पिता ज्ञानवती और शान्तनु को कावर मे बिठाकर पैदल ही दूर-दूर स्थित तीर्थ स्थानो मे ले जाता है। अन्त मे दशरथ का बाण मारना, श्रवण कुमार का मरना एव सबका स्वर्ग मे मिलन दिखाया गया।

'यू अल्फ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी आफ बम्बई' के स्टेज पर सन् १९३२ मे खेला गया।

श्रवण कुमार नाटक (स० २००५, पृ० ११६), ले० वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली', प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर, बनारस, पात्र पु० १३, स्त्री ७, अक ३, दृश्य ७, ७, ५।
घटना-स्थल : शातनु की कुटीर, नदी तट।

इस पौराणिक नाटक मे मात-पितृ-भक्त बालक श्रवणकुमार की कथा है। उसके माता-पिता अन्धे हैं, जिन्हे बहगी मे बैठा कर श्रवण तीर्थ यात्रा कराता है। माता-पिता के प्यास लगने पर श्रवण नदी से पानी लेने जाता है। जल भरते हुए घडे की आवाज सुनकर जगल मे शिकाररत राजा दशरथ शब्दभेदी बाण चला देते हैं, जो श्रवण के वक्ष को वेध देता है और श्रवण शरीर त्याग देता है। वास्तविकता ज्ञात होने पर राजा दशरथ श्रवण के माता-पिता के पास जाकर अपने किए पर पश्चात्ताप करते हैं पर पुत्र शोक मे व्याकुल उसके माता पिता राजा दशरथ को शाप देकर शरीर त्याग देते हैं।

इस पौराणिक नाटक मे श्रवण कुमार की मातृ पितृ-भक्ति को आदर्श समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया गया है। श्रवणकुमार गुरु वशिष्ठ के आदेशानुसार माता-पिता के अन्धत्व के निवारण के लिए उन्हे ६८ तीर्थ स्थलों के दर्शनार्थ ले जाता है। अडसठ तीर्थों के दर्शनोपरान्त जब अन्तिम तीर्थस्थल सरयू पर पहुँचता है तो वह अपने प्यासे माता-पिता के लिए नदी से जल लाने जाता है। राजा दशरथ उसे पशु समझकर तीर छोडते हैं। बाणविद्ध श्रवणकुमार की मृत्यु हो जाती है। श्रवणकुमार

नष्ट करना चाहता है भकाऊँ, चिथरू, शान्ति देवी को वहाँ पहुँचाने में मदद देने के बदले मौचक से रुपया माँगते हैं। आपस में झगड़ा होता है। थानेदार सिपाहियों के साथ पहुँच जाते हैं। गुंडे सिपाहियों को छुरा भौंक कर मार डालते हैं। थानेदार शान्ति के साथ अत्याचार करना चाहता है। तब तक झाड़ी में से एक साँप निकलकर उसे काट लेता है। शान्ति आत्महत्या को तैयार होती है तब तक देवीदास पहुँच जाता है।

श्री काशी विश्वनाथ (सन् १९०१, पृ० १२०), ले० वासुदेव पाण्डे, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० २७, स्त्री ८, अंक ३, सीन ८, ८, ५।
घटना-स्थल विश्वनाथ मन्दिर, काशी करवट, गंगातट।

इस धार्मिक नाटक में काशी के बाबा विश्वनाथ तथा माँ अन्नपूर्णा के दर्शनार्थ आने वाले यात्रियों की दुर्दशा दिखाई गई है।

ग्रामीण यात्रियों का दल बाबा विश्वनाथ का दर्शन करने आता है। वहाँ नवयुवती स्त्रियों को बहकाकर गुंडे पंडे बेच देते हैं। अशिक्षित एवं भोले-भाले ग्रामीणों का धर्म और दान-पुण्य के नाम पर मनमाना करने वाले पण्डों का वीभत्स दृश्य इसमें दिखाया गया है। झूठ, धोखा, ढोंग, प्रपंच के द्वारा पण्डे यात्रियों को ठगते हैं।

श्री कृष्ण अवतार (श्री कृष्ण चरित्र का पहला भाग) (सन् १९३२, पृ० १६१), ले० राधेश्याम कथावाचक, प्र० राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, पात्र पु० १६, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ८, ७, ७।
घटना-स्थल गोकुल, मथुरा।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण-जन्म से लेकर उनके मथुरा जाने तक की कथा का समावेश है। गोपियों द्वारा प्रेम प्रदर्शन एवं कृष्ण द्वारा रासलीला के अनेक रूपों का वर्णन है।

पारसी थियेट्रिकल कम्पनियों द्वारा अनेक बार प्रदर्शन।

श्री कृष्ण नाटक (सन् १९५१, पृ० ६४), ले० चतुर्भुज एम० ए०, प्र० साधना मन्दिर, पटना, पात्र पु० ६, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ४, ४, ६।
घटना-स्थल महल, युद्धभूमि, मन्दिर।

इस पौराणिक नाटक में जरासन्ध कृष्ण युद्ध, कृष्ण कालयवन युद्ध, रुकमिणि हरण, जरासन्ध वध और शिशुपाल वध आदि प्रमुख घटनायें प्रदर्शित की गई हैं।

कंस की रानी अस्ति कृष्ण से पति का प्रतिशोध लेने के लिये मगध नरेश जरासन्ध से प्रार्थना करती है। मगध नरेश अपने सेनापति चन्देरी शिशुपाल को युद्ध अभियान की आज्ञा देता है। वह कृष्ण से सोलह बार पराजित होता है।

जरासन्ध अपने मित्र कालयवन को कृष्ण के विरुद्ध प्रेरित करता है। कालयवन अस्ति के प्रति आकर्षित होकर युद्ध-भूमि में जाता है। कृष्ण नरसंहार बचाने के लिये द्वारिका चले जाते हैं। कालयवन भीषण बर्बर अत्याचार कर अस्ति के वैधव्य को कलंकित करने जाता है। भारतीय वीरांगना अस्ति तलवार से उसे यमराज के घर पहुँचाकर आत्महत्या कर लेती है। इसी अंक में रुकमिणि हरण होता है।

पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में शिशुपाल कृष्ण के सम्मान का विरोध करता है और अन्त में सुदर्शन चक्र द्वारा उसकी भी इहलीला समाप्त होती है। इसमें कृष्ण की दूरदर्शिता, प्रजारक्षण, कूटनीतिज्ञता, भक्तवत्सलता आदि का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है।

नाटक का अभिनय सर्वप्रथम दिनांक १७-२-५१ को वीणा-पाणि अर्चना के अवसर पर 'मगध कलाकार' द्वारा बख्तियारपुर के रंगमंच पर श्री चतुर्भुज (लेखक) के निर्देशन में हुआ।

श्रीकृष्ण कथा वा कंस विध्वंस नाटक (वि०

१६६६), ले० : वनवारी लाल; प्र० : वनवारीलाल द्वारा प्रकाशित, मुजफ्फरपुर ; पात्र : पु० ११, स्त्री ६; अंक : ५; गर्भांक: १, १, २, ४, १ ।
घटना-स्थल : सभामंडप, कृष्ण की बाल-सभा ।

इस पौराणिक नाटक में कृष्णजन्म से लेकर कंस-विध्वंस तक की कथा श्रीमद्-भागवत के आधार पर प्रदर्शित है। इसमें कृष्ण की बाललीला, गोपियों के साथ रास और मथुरागमन के समय गोपियों का विरह वर्णित है।

श्री कृष्ण केलिमाला (सन् १७८८ के लाग-भग, पृ० ७६), ले० : नंदीपति; प्र० : अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, इलाहा-बाद; पात्र : पु०, ८, स्त्री ८; अंक : ४ ; दृश्य-रहित ।
घटना-स्थल : व्रज, यमुनातट ।

इस पौराणिक नाटक में कृष्ण-जीवन की प्रमुख घटना, राधा-प्रेम और रासलीला का वर्णन है।

देवकी के आठवें गर्भ से उत्पन्न होने वाले, नन्द-यशोदा-परिपालित, कंस केशि-मुष्टिक-चाणूर कुवलयपीड़, रजक, अक्रूर आदि को तारने वाले कृष्ण और सखी सहित राधिका का प्रवेश होता है। गर्भ से उत्पन्न पयपान करने वाले शिशुरूप कृष्ण की जन्म-कथा का परिचय मिलता है। घोर वर्षा के मध्य वसुदेव कृष्ण को यमुना पार उतार कर वल्लवपुर पहुँचाते हैं और यशो-मति-सुता को लेकर पुनः मथुरा के बन्दीगृह में प्रवेश करके देवकी को सान्त्वना देते हैं। असुर कंस देवकीगृह में आकर चारों ओर देखता है। इसी समय नारद का प्रवेश होता है जिन्हें प्रणाम करके कंस बैठने को आसन देता है। कंस कन्या को पाषाणशिला पर पटक कर मारना चाहता है पर वह देवी आकाश में उड़कर कंस को जो सन्देश देती है वह नटी गाकर (भाषागीत में) सुनाती है कि हे कंस यदुनाथ कृष्ण ने अवतार लिया है। वह दानव-वृन्द को जीतेंगे। कंस अपने बल का गर्व करते हुए स्वगृह को प्रस्थान करता है। कभी कृष्ण को टोना लग जाता है, कभी वे सर्प के समान पृथ्वी पर लेटकर चलने लगते हैं तो नन्द और यशोदा के मन में विभिन्न भाव उत्पन्न होते हैं।

कंस के आदेश से पूतना कृष्ण को पयपान के बहाने विषपान कराती है पर कृष्ण दोनों हाथों से पयोधर पकड़कर इतने जोर से पयपान करते हैं कि उसका प्राण धारण करना कठिन हो जाता है। पूतना का विनाश सुनकर नन्द-यशोदा कृष्ण के पास पहुँच जाते हैं और पूतना से कृष्ण की रक्षा का दृश्य देख सहस्र गोदान का संकल्प कर ब्राह्मणों में वितरित करते हैं। तदुपरान्त यमलार्जुन की घटना का नाटकीय दृश्य उपस्थित होता है। इस घटना के उप-रान्त राधिका जी यशोदा के पास आकर निवेदन करती हैं कि तुम्हारा बेटा यमुना पथ पर वन से बाहर होते ही मेरा आंचल पकड़ लेता है। यदि आपको विश्वास न हो तो मेरी सखियों से पूछ लो। राधिका जी पूतना-वध, यमलार्जुन-उद्धार का उल्लेख करती हुई यशोदा को विश्वास दिलाती हैं कि आप का पुत्र असाधारण शक्ति-सम्पन्न है। यह कह कर वह अपने घर चली जाती है।

यशोदा जी एक दिन कृष्ण को मिट्टी खाते देख लेती हैं। माता के आग्रह पर कृष्ण मुख खोलते हैं तो उसमें सूर्य-चन्द्रमा, सात-समुद्र, महादेव, चौदहों भुवन और आकाश दिखाई पड़ते हैं। यह विचित्र दृश्य देखकर माता भयभीत हो जाती है और यहीं प्रथम अंक समाप्त हो जाता है।

राधिका के गीत से प्रसन्न श्रीकृष्ण उन्हें एक हार प्रदान करते हैं जिसे राधिका अपने कंठ में धारण करती है। राधा अपने गृह को हँसती-रोती लौटती हैं। उनके पिता वृषभानु यह देखकर चिन्तित होते हैं और उनकी (राधा) माता कलावती एक गीत के माध्यम से राधा को भूत लगने की आशंका करती हैं। वृषभानु राधिका के समीप जाकर क्रोध भाव से पूछते हैं, 'यह

तेरी क्या दशा है ? तुझे क्या हो गया है ? राधिका आँख खोलकर पिता का मुख निहारती है। राधा की माता कलावती भी दशा देखकर बाहर चली जाती है। इसी समय कृष्ण को राधा की दशा का पता चलता है। जभी कृष्ण राधिका के पास तान्त्रिकवेश में पहुँचते हैं, वह चीत्कार करके मूर्छित हो जाती है। श्री कृष्ण उसे उठाकर कहते हैं 'राधे चेतन हो जाओ।' राधा चैतन्य होकर इस टोने का कारण अपने माँ-बाप को बताती है। कृष्ण की महिमा जानकर कलावती और वृषभानु को शान्ति मिलती है।

इसी समय उसकी सखी विशालाक्षी का पत्र लेकर पत्र-वाहक प्रविष्ट होता है। राधा नारी-जन्म की असारता पर रोदन करते हुए कहती है—"इस युवावस्था में प्रथम चरण में ही विरह दुख और काम का कठिन सन्ताप भोगना पडा। विरह गीत गाते-गाते राधा मूर्छित हो जाती हैं। विशालाक्षी और कामाक्षी वहाँ उपस्थित हो जाती हैं। श्री कृष्ण राधिका को उठाकर अपना अपराध स्वीकार करते हैं। यहाँ राधा, उनकी सखियों और कृष्ण का तर्क पूर्ण वार्तालाप सुनाई पडता है। सखियों के चले जाने पर राधा श्री कृष्ण के पास जाकर निवेदन करती है कि आप निष्ठुर न बनें। मेरे ऊपर करुणा करें। यदि आप मेरी उपेक्षा करेंगे तो मुझे मृतक ही पायेंगे। चतुर्थ अंक में गोपियों के साथ कृष्ण के रास का एक गीत है और कृष्ण राधा से कहते हैं कि सोलह सहस्र गोपियों में एक मात्र तुम्हीं विलासवती हो। अतः लज्जा क्या करती हो। कृष्ण रास-विलास के उपरान्त अपने भवन को प्रस्थान करते हैं।

श्रीकृष्ण चरित्र (तीसरा भाग) अथवा द्रोपदी स्वयंवर (सन् १६३०, पृ० १४२) प्र० राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, पात्र पु० २८, स्त्री ८।
घटना-स्थल स्वयंवर सभा।

इस पौराणिक नाटक में प्रजा का राजा पर अधिकार दिखाने का प्रयत्न है। इस पारसी नाटक में द्रोपदी-स्वयंवर के अवसर पर अनेक राजा उपस्थित हैं। शकुनि राजा के अधिकारों पर बल देता है। तब उसका उत्तर देते हुए विदुर गणतंत्र की विचार-धारा का विश्लेषण करते हैं और उपस्थित राज-मंडली को समझाते हैं कि राजा का प्रजा पर अधिकार तभी सम्भव है जब वह प्रजा के कष्टों का भार अपने ऊपर लेकर उनके निवारण का प्रयत्न करे। विदुर कहते हैं–

"लेकिन प्रजा का भी तो कुछ राजा के ऊपर भार है।
राजा वही बनता प्रजा करती जिसे स्वीकार है।"

गांधीवादी प्रभाव से प्रजा में जागृति लाने के उद्देश्य से यह नाटक लिखा गया।

इसका अभिनय न्यू अल्फ्रेड नाटक मंडली ने सन् १६३० में किया।

श्रीकृष्ण-जन्म नाटक (सन् १६३३, पृ० ६८), ले० भारतसिंह, यादवाचार्य, यादव कार्यालय, बनारस, पात्र पु० ६, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ६, ५, ५।
घटना स्थल कंस का दरबार।

इस पौराणिक नाटक में श्री कृष्ण की जन्म कालीन घटना को नाटक रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें प्राचीनकाल के यादववंश के बल एवं ऐश्वर्य का वर्णन है। कृष्ण युग में भी 'पादरी' एवं मुसलमानों की नाटक तथा अन्य कलाभेदों में रुचि दिखाई गई है। विभिन्न धर्मावलम्बी अपने धर्म का वर्णन अतिशयोक्ति रूप में करते हैं। परन्तु उन सब में हिन्दू धर्म को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

श्रीकृष्ण सुदामा (वि० १६८६, पृ० १०८), ले० हरिनाथ व्यास, प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद, बुकसेलर, राजा दरवाजा, बनारस, पात्र पु० १०, स्त्री ७, अंक ३, दृश्य ८, ८, ४।
घटना-स्थल सुदामा का कुटीर, मार्ग, राजभवन का द्वार।

प्रस्तुत नाटक कृष्ण और सुदामा की अपूर्व मैत्री को वर्णित करता है। नाटक में दिखाया गया है कि किस प्रकार सुदामा सकुचाते हुए कृष्ण के यहाँ जाते हैं। कृष्ण उनका बहुत सत्कार करते हैं। तत्पश्चात् कृष्ण की माया से सुदामा की झोंपड़ी महल में बदल कर धनधान्य से पूर्ण हो जाती है। जब सुदामा घर लौटते है तो आश्चर्यचकित हो जाते हैं। पहले वे अपनी पत्नी के पातिव्रत पर शंका करते है। किन्तु वास्तविक स्थिति से अवगत होने पर परममित्र कृष्ण की लीला जान गद्‌गद हो जाते है।

पारसी कंपनी द्वारा अभिनीत।

श्री कृष्णावतार (सन् १९२६, पृ० १९१), ले० : राधेश्याम कथावाचक; प्र० : श्री राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली; पात्र : पु० १७, स्त्री ६; अंक : ३; दृश्य : ८, ८, ३।
घटना-स्थल : क्षीरसागर।

इस पौराणिक नाटक में कृष्णावतार की कथाएँ वर्णित हैं। घोर अन्यायी कंस के आतंक से पृथ्वी थर्रा उठती है। कंस अपनी बहन और बहनोई को कारागार में डाल देता है। देवकी के आठवें गर्भ से कृष्ण अवतार लेते हैं और प्रसंगानुसार कृष्ण दुष्ट कंस का वध करते हैं।

श्री छत्रपति शिवाजी (सन् १९२६, पृ० १७६), ले० : नवर्णसिंह वर्मा 'आनन्द'; प्र० : शिवरामदास गुप्त, उपन्यास बहार आफिस, बनारस; पात्र : पु० १३, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : १०, ११, १६
घटना-स्थल : जंगल, मार्ग, बीजापुर, रायगढ का पहाड़ी भाग।

यह एक वीररस प्रधान ऐतिहासिक नाटक है। इसमें छत्रपति वीर शिवाजी की वीरता का वर्णन है।

विशेष रूप से यह नाटक हिन्दू और मुसलमानों की एकता को दृढ़ करने के लिए लिखा गया है। बीजापुर के नवाब अली आदिलशाह से तानाजी के पुत्र सूर्याजी का रोषपूर्ण वार्तालाप दिखाया गया है। राष्ट्रीय भावना को जागृत करते हुए सूर्याजी कहते हैं—

> "हर वक्त मुल्क के लिए
> हम नर फरोश हैं।
> इस पर भी अपनी जाँ
> के कभी दाम न लेंगे॥
> हँसते हुए हम मौत के हाथों में जायेंगे।
> लेकिन हम अपने मुल्क को तुमसे छुड़ायेंगे॥

छत्रपति शिवाजी हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य के द्वारा देशोद्धार के लिए आजीवन प्रयत्न करते हैं।

श्री छद्म योगिनी नाटिका (वि० १९७६, पृ० ५८), ले० : वियोगी हरि; प्र० : साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग; पात्र : पु० ४, स्त्री ८, अंक : ३; दृश्य : २, २, २।
घटना-स्थल : बरसाना ग्राम।

ब्रह्मा श्री कृष्ण से जिज्ञासा प्रकट करते हैं कि "गोपियों में कौन सा परमतत्त्व भरा है कि आप उनके पीछे-पीछे दास की नाईं घूमते है।" कृष्ण उत्तर देते हैं कि आज मैं छद्म से अपनी हृदयेश्वरी परम प्यारी राधिका की प्रेम-परीक्षा लेने जा रहा हूँ। छिपकर आप भी आज की लीला देख सकते हैं।"—ब्रह्मा भ्रमर बनकर बरसाने के उपवन में पहुँचते हैं। श्री कृष्ण योगिनी के वेश में एक शिला पर ध्यानावस्थित हो बैठ जाते हैं। ललिता, विशाखा, मंजुभाषिनी आदि इस योगिनी पर मुग्ध होकर चेली बनना चाहती हैं। सखियों की बात सुनकर श्री राधा को योगिनी के पास पहुँचाती हैं। योगिनी ज्ञान, विवेक, योगाभ्यास और मुक्ति की बातें करती हैं तो श्री राधा जी कहती हैं—"क्या योगाभ्यास से प्रेम स्वरूप वृन्दावन-विहारी की प्राप्ति हो सकती है?" योगिनी वीणा बजाती है और राधा की समाधि लग जाती है। समाधि खुलने पर राधा बताती हैं कि उन्हें मोरपंख धारण किये वनमाली का दर्शन हुआ है। ब्रह्मा यह लीला देखकर चकित रह जाते हैं और उनकी जिज्ञासा शान्त हो जाती है।

श्री सुदामा नाटक (वि० १९६१, पृ० ११), ले० राधाचरण गोस्वामी, प्र० खेमराज कृष्णदास, बम्बई, पात्र पु० ५, स्त्री २, दृश्य ५, अंक-रहित।
घटना-स्थल कृष्ण भवन, सुदामा कुटी।

इस पौराणिक नाटक मे कृष्ण-सुदामा की मैत्री दिखाई गई है। गद्य और पद्य दोनो का प्रयोग है। इस प्राचीन नाटक मे सवाद छोटे-छोटे है। सुदामा निर्धनता के कारण पत्नी सहित भूखे रहते हैं। वर्षा तथा आँधी से कुटिया मे दु ख झेलते हुए अपना जीवन व्यतीत करते हैं। सुदामा अपार दुख को सहते हुए भी अपने मित्र श्रीकृष्ण के पास मदद के लिए नही जाना चाहते किन्तु पत्नी के अनुरोध पर वे श्रीकृष्ण से मिलने जाते हैं। कृष्ण सुदामा का सादर आतिथ्य करते हैं तथा सुदामा द्वारा काँख मे दाबी हुई चावल की पोटली से एक मुट्ठी चावल खाते हैं। दूसरी मुट्ठी, पर रुकमणी द्वारा रोक दिये जाते है। सुदामा कृष्ण के यहाँ से खाली हाथ उदास लौटते हैं पर घर आकर कुटिया के स्थान पर महल देख आश्चय चकित रह जाते हैं। कुटिया छिन जाने के विचार से चिन्तित पत्नी के विषय मे सोचते है। पत्नी को महल मे पाकर कृष्ण की माया समझ मे आती है। सुदामा कृष्ण की प्रभुता और महिमा के गीत गाते हैं।

श्री निम्बार्क वितरण नाटक (वि० १९८६, पृ० १६८), *ले० दानबिहारी लाल शर्मा*, प्र० वैष्णव श्री रामचन्द्र दास, वृन्दावन, पात्र पु० १४, स्त्री ५, अक ३, दृश्य ८, ७, ६।
घटना-स्थल वृदावन, कुटीर, आश्रम।

इस धार्मिक नाटक मे आचार्य महाप्रभु निम्बार्क के चमत्कारी चरित्रों को प्रस्फुटित किया गया है। उनका जीवन भी भगवान् की भाँति द्वादश गुणों से ओत-प्रोत है। नाटक मे प्रहसन के रूप मे धर्मानन्द, उलूकानन्द आदि की सृष्टिकर गम्भीर विषय के वातावरण मे हास्य की छटा जोड़ दी गई है। शिकार करने वाले पाखण्डी धर्मात्माओ के श्रद्धालुओ का कुकृत्यो का यथार्थ चित्रण धर्मानन्द की शिष्य-मडली द्वारा हास्य के रूप मे मिलता है।

श्री प्रद्युम्न विजय व्यायोग (सन् १८६३, पृ० ५६), *ले० अयोध्यासिंह उपाध्याय*, प्र० भारत जीवन प्रेस, बनारस, पात्र पु० १२, स्त्री नही, अक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल युद्ध क्षेत्र।

नादी पाठ के उपरात सूत्रधार और पारिपार्श्वक मे वार्तालाप होता है। सूत्रधार नाटककार का परिचय देते हुए उसके पूवजो के नाम और वश का उल्लेख करता है। धुन्नी उपाध्याय के कुल मे हरिऔध का जन्म होता है जिनके कनिष्ठ भ्राता गुरुसेवक सिंह उपाध्याय हैं। हरिऔध विरचित श्री प्रद्युम्न विजय के खेलन की योजना बनती है। निकुभ प्रेरित साठ सहस्र असुर कवच-कृपाण धारण कर, युद्धक्षेत्र मे आते हैं। उनसे युद्ध करने को श्याम शरीर वाले प्रद्युम्न धनुष धारण करते हैं। प्रद्युम्न और सारथी में गद्य पद्यमय भाषा मे वार्तालाप होता है। पात्रो के आगमन और उनकी वेश-भूषा का वणन भी छन्दबद्ध है। कृपाचाय, द्रोणाचाय, अश्वत्थामा की वीरता भरी मुखमुद्रा तथा *उनकी वेशभूषा का सम्पूर्ण वर्णन काव्य निबद्ध* है। प्रद्युम्न सारथी को सूचित करता है कि निकुम्भ ब्रह्मदत्त और पितामह वसुदेव को *यह धमका रहा है कि "यदि यज्ञ मे मुझको* भाग न दोगे तो मैं तुम लोगो को बाँध लूगा और द्विज यज्ञ-कर्ता को तथा ब्रह्मदत्त की *पाँच शत कन्याओं को भी हर लूँगा।"* सारथी प्रद्युम्न को सूचित करता है "महात्मा नारद ने द्वारका जाकर यह सूचना कृष्ण को दे दी है कि निकुभ ने ब्रह्मदत्त और सपत्नीक वसुदेव को बधन मे डालने की योजना बनाई है।" प्रद्युम्न क्रोध मे आकर सारथी को पितामह के सम्मुख ले चलने का आदेश देता है। प्रद्युम्न और भीष्म के युद्ध का वणन इन्द्र और जयत के सवाद मे होता है। युद्ध का ऐसा वर्णन अन्य नाटक मे प्राय नहीं मिलता।

जयंत कहता है—तागिड्दं तीरं छागिड्दं छहे। बागिड्दं बीरं लागिड्दं लुडे।

प्रद्युम्न युद्ध में दुर्योधन, कर्ण आदि सभी वीरों को पराजित करते हैं। सम्बन्धियों की मृत्यु पर जब प्रद्युम्न खेद प्रगट करते हैं तो सारथी कहता है"'पिता पूज्य गुरु भ्रात हूँ घाई सोहरन माहि। जे सकाहि हूँ छत्रिसुत, ते पामर कहलाहि।"

प्रद्युम्न की विजय का समाचार सुन कृष्ण और प्रद्युम्न के पिता मिलने आते हैं। प्रद्युम्न रथ से उतर कर दोनों को प्रणाम करते हैं। दोनों प्रद्युम्न को निकुंभ विजय के लिए आशीर्वाद देते हैं। कृष्ण की इच्छा से प्रद्युम्न बन्दी राजाओं को मुक्त करते हैं। बलरामजी भी इसका अनुमोदन करते हैं। संस्कृत में भरत वाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है।

इस पर भारतेन्दु के धनजय विजय व्यायोग की छाया है।

श्री पाल नाटक (वि० १६७६, पृ० १५२); ले० : दिगम्बर जैन; प्र० : श्री दिगम्बर जैन उपदेशक सोसायटी, सहारनपुर; पात्र : पु० २०, स्त्री ७; अंक : ४, दृश्य : १०, ११, ६, ७।
घटना-स्थल : दरबार, जंगल, जैन मन्दिर, महल, श्री पाल का शयनागार, समुद्र, बाजार, जहाज और बाग।

इस धार्मिक नाटक में श्री पाल का चमत्कारी जीवन दिखाया गया है।

धवल सेठ नामक व्यापारी का जहाज समुद्र में फँस गया है। वह जल-देवता को भेंट के लिए एक व्यक्ति की खोज में महाराज वृषकछपुर पट्टन के पास जाता है। राजा सिपाहियों को बलि देने के लिए एक व्यक्ति को लेने भेजता है। सिपाहियों को मार्ग में श्री पाल मिलते हैं। उन्हें सिपाहियों पर दया आती है। वह सेठ के सामने जाकर समझाता है कि कहीं जीव-हत्या से देवता प्रसन्न हो सकते हैं। पर सेठ नहीं मानता और श्री पाल को बलात् समुद्र में फेंकवा देता है। वह कुमति की बातें मानकर अपनी धर्म-पुत्री रेनमंजूषा के शील पर हाथ डालता है। वह राजा को भी धोखा देता है। अतः राजा रुष्ट होकर उस सेठ को सूली पर लटका देता है। श्री पाल अपने तेज के बल से समुद्र से बच जाते हैं और अन्त में श्री जितेन्द्र देव की कृपा से अपने पिता का राज चम्पापुर में प्राप्त करते हैं।

श्री भक्ति विजय नाटक (वि० १६७७, पृ० १४६), ले० : वल्लभदास वर्मा; प्र० : लाला श्यामलाल जी अग्रवाल, श्याम काशी प्रेस, मथुरा; पात्र : पु० १४, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ७, ६, ४।
घटना-स्थल : आश्रम, भवन, मन्दिर।

इस प्रतीक नाटक में भक्ति की विजय दिखाई गई है तथा विभिन्न दर्शनों में भक्ति-दर्शन को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया गया है।

तन-मन से एकाग्र हो, पढ़िये चित्त लगाय।
सर्व उपाधी छोड़ के भक्तिमय बन जाय॥

नाटक में काम, क्रोध मद, लोभ, मोह आदि को भी पात्र रूप में रखा गया है। भक्ति द्वारा ही षट्विकारों पर विजय दिखाना नाटक का उद्देश्य है।

श्री भारत पराजय नाटक (सन् १६०८, पृ० ७६), ले० : हरिहर प्रसाद; प्र० : अग्रवाल प्रेस, गया (बिहार); पात्र : पु० ८, स्त्री ५; अंक : ५; दृश्य : ५, ६, ४, ४, ४।
घटना-स्थल : बगीचा, महल, दरबार, जंगल, यवन शिविर, जंगल मार्ग, कन्दरा, रणक्षेत्र, रास्ता।

इस ऐतिहासिक नाटक में पृथ्वीराज की पराजय का कारण दिखाया गया है।

यह नाटक बंगला के द्वीप-निर्वाण की कथा पर आधृत है। श्रीमती स्वर्णा देवी के द्वीप-निर्वाण की कथा को आधार बनाया गया है। पृथ्वीराज और गौरी का युद्ध-वर्णन ऐतिहासिक न होकर काल्पनिक कथा पर अवस्थित है। गौरी के आक्रमण की खबर सुनकर पृथ्वीराज आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

यद्यपि उन्हें विश्वास नहीं होता कि जिसे कितनी बार हराया, वह आक्रमण की योजना बनायेगा तथापि वह यथार्थ स्थिति का सामना करते हैं। युद्ध जीत भी लेते हैं। जब उनकी सेना दिल्ली के लिए प्रत्यावर्तन करती है, तभी पृथ्वीराज के मत्री का पुत्र विजयसिंह गोरी से जा मिलता है और घर लौटते हुए खुशी मनाती हुई सेना पर आक्रमण करने का परामर्श देता है। इस युद्ध मे पृथ्वीराज हार जाते हैं और भारत का पतन हो जाता है। पराजित पृथ्वीराज हीरा चाटकर मर जाते हैं।

श्रीमती मजरी (सन् १६२२, पृ० १२४), ल० दुर्गाप्रसाद दास गुप्ता, प्र० उपन्यास बहार आफिस, बनारस, पात्र पु० ५, स्त्री २, अक के स्थान पर ३ फल्क हैं।
घटना-स्थल घर, रायबहादुर की कोठी, मार्ग।

इस सामाजिक नाटक मे हिन्दू मुसलिम एकता और विजातीय विवाह पर विचार किया गया है।

गान्धीवादी प्रभाव से प्रभावित जुगल किशोर नामक ब्राह्मण अनाथ मुसलिम बालक अलाउद्दीन का पालन-पोषण करता है किन्तु जानकी दास दोनो जातियो मे पार्थक्य समझकर उसका विरोध करता है। किन्तु अन्त मे जुगलकिशोर का जानकी दास पर ऐसा प्रभाव पडता है कि वह भी हिन्दू-मुसलिम ऐक्य का समर्थक हो जाता है।

इस नाटक का निम्नलिखित गीत एकता का प्रभाव स्पष्ट करता है—

"हम हिन्द के हैं दोनो हिन्दुस्ता हमारा
यह है जमीन अपनी, यह आसमा हमारा
रामो रहीम अपने, कृष्णो करीम अपने
स्वयभू हो या खुदा हो, वेदो कुरा हमारा।"

सजातीय विवाह को इस काल मे महत्त्व देते हुए श्रीमती मजरी की दासी रायबहादुर जानकीदास के विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहती है कि मैं ब्राह्मण पुत्री हूँ और आप क्षत्रिय कुल के हैं। अत हम दोनों का विवाह किस प्रकार सम्भव है।

श्रीमती मजरी (वि० २०१०, पृ० ११०), ले० वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली', प्र० ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स, बुक्सेलर, बनारस, पात्र पु० १३, स्त्री ४, अक ३, दृश्य, ११, ७, ६।
घटना स्थल राजभवन, युद्धक्षेत्र, जगल, बन्दीगृह।

इस सामाजिक नाटक मे राजा चन्द्रोदय सत्यनिष्ठा के बल पर राज्य कर रहे हैं किन्तु दुर्भाग्यवश युद्ध मे हारने पर उन्हें दर-दर की ठोकरें खानी पडती हैं। उनकी रानी लीलावती और पुत्री मजरी इधर-उधर भटकती फिरती हैं और राजा को एक अप-राध मे दडित होकर जेल जाना पडता है। किन्तु अन्त मे मजरी के प्रयासो से वे सब पुन आपस मे मिलते है और राज्य प्राप्त करते हैं।

श्रीमती मजरी (सन् १६६७, पृ० ७२), ले० दधीच वर्मा, प्र० एन० एस० शर्मा गौड बुक डिपो, हाथरस, पात्र पु० १०, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ४, ३, ४।
घटना-स्थल राजभवन, जगल, युद्धक्षेत्र।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमे जानकीनाथ मजरी को पाने के लिए पहले बनावटी प्रेम दिखाता है पर जब उसमे उसे सफलता नही मिलती तो मजरी को भय से अपने कब्जे मे करना चाहता है। वह मजरी के पिता की हत्या करवा देता है और धोखे मे उसके भाई को जेल भिजवा देता है किन्तु जलालुद्दीन की युक्ति से जानकीनाथ को सफलता नही मिलती। अन्त मे वह मजरी की सहनशक्ति से प्रभावित होकर क्षमा मागता है और नारी की विजय होती है।

श्री रामनन्दन चरित (सन् १६३०, पृ० १७६), ले० । श्री रामनन्दन सहाय 'ब्रह्म-विद्या', प्र० ओरियटल प्रिंटिंग प्रेस, रस्सी टोला, फैजाबाद, पात्र पु० ११, स्त्री नही,

अंक : ७; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : रंगभूमि, श्री रामसभा, वाल्मीकि-आश्रम, तापसमहिलाश्रम, श्री सीता-प्रसव-पर्णशाला, विंध्यगिरि, सेतुबन्ध रामेश्वर, वन, समर-भूमि।

इस पौराणिक नाटक में सीता-परित्याग की कथा उत्तर रामचरित नाटक से साम्य रखती है।

राजसभा में मधुमत्त, कश्यप, मंगल, भद्र, दन्तवक्र आदि के साथ बैठकर प्रजाहित की मंत्रणा करते हुए राजा राम अपने शासन-प्रबन्ध की त्रुटियाँ जानना चाहते हैं। भद्र कहता है कि प्रजा रावणगृह निवासिनी सीता के ग्रहण पर आपत्ति करती है और आप पर दोषारोपण करती हैं। एक रात बाहर रहने वाली अपनी पत्नी को घर से निकालते हुए धोबी कहता है–"मैं राजा रामचन्द्र नहीं हूँ जिन्होंने ऐसा अनर्थ कार्य किया है। उन्होंने रावण के घर रही सीता को मोहवश पुनः ग्रहण किया।" राम अपने भाइयों को बुलाते हैं और निर्दोष जानते हुए भी सीता त्याग निश्चित करते हैं। भाइयों के विरोध करने पर भी वह अपना निर्णय नहीं बदलते। लक्ष्मण सीता को वाल्मीकि आश्रम के पास ले जाकर छोड़ते हुए सीता की प्रदक्षिणा कर रोते हैं और अन्त में प्रणाम कर नौकारूढ़ हो रोते हुए चले जाते हैं। उसी समय मुनि-कुमार सीता विलाप सुनकर वाल्मीकि मुनि को सीता की दशा से परिचित कराते हैं।

कालान्तर में सीता के दो पुत्र होते हैं जिनका नाम वाल्मीकि जी लव-कुश रखते हैं। कुछ समय के उपरान्त नारद और वाल्मीकि में राम के सीता-त्याग-कृत्य पर धर्माधर्म की दृष्टि से विवाद होता है। वाल्मीकि नारद को प्रजातन्त्र का लक्ष्य समझाते हुए कहते हैं 'लौकिक व्यवहार जो शिष्ट पूर्वजों द्वारा व्यवहृत होता आ रहा है उसका खण्डन करना दुष्कर कार्य है।" नारद का कथन है कि यदि यही अग्नि-परीक्षा अवध में हुई होती तो प्रजा कलंक लगाने का साहस न करती। दोनों के विवाद से कोई निष्कर्ष नहीं निकलता। लव-कुश आश्रम में शिक्षा प्राप्त करते हैं और अपनी स्थिति से परिचित हो जाते हैं। राम कालान्तर में नैमिषारण्य में यज्ञ ठानते हैं। गुरु की आज्ञा से मुनि-वेशधारी लव-कुश भी वहीं जाते हैं। वे वाल्मीकि-रामायण का गान करते हैं। उपस्थित जन-मंडली में लव-कुश के रूप का राम से साम्य देखकर उत्सुकता होती है कि कहीं ये दोनों राजकुमार सीता की सन्तान तो नहीं।

राजकुमार अंगद, चित्रकेतु और प्रद्युम्न के चित्त में और भी उत्कण्ठा है। इतने ही में एक मदोन्मत्त हाथी गजशाला से सहसा मुक्त हो निरंकुश ऊपर ही दौड़ा आता है। अन्य लोग भाग जाते हैं पर दोनों कुमार उसके शुण्ड को पकड़ लेते हैं। हाथी शुण्ड से उठाकर दोनों कुमारों को पीठ पर बैठा लेता है। आकाश से पुष्प-वर्षा होती है। समाज एकत्र हो जाता है। रामसभा में श्री महर्षि वाल्मीकि के पीछे-पीछे अधोमुखी कृतांजलि रामध्यानतत्परा जानकी जी प्रवेश करती हैं। वाल्मीकि निर्दोष सीता-परित्याग के कारण राम की भर्त्सना करते हैं। राम अपराध के लिये क्षमा-याचना करते हैं। वाल्मीकि मुनि सीता को प्रत्यय के लिए आदेश देते हैं। सीता पृथ्वी से प्रार्थना करती है कि यदि मन वचन-कर्म से अयोध्यानाथ को समर्पण करती हूँ तो हे जननी धरणी, तू फट जा और मैं समा जाऊँ।" सहसा भूमि फटती है और धरणी देवी बाहुओं से आलिंगन कर मैथिली का अभिनन्दन करती हुई दिव्य आसन पर बिठाती है। लव-कुश को मातृविरह असह्य होता है और लव के बाण चलाते ही नागों से वेष्टित सिंहासन पर आसीना सीता जी को लिये पृथ्वी देवी पुनः प्रादुर्भूत होती हैं। भूमि पुनः पूर्ववत् जुट जाती है। सब लोग सीता राम की आरती करते हैं।

श्री राम नाटक (सन् १९४०, पृ० ११५), ले० : चतुरसेन शास्त्री ; प्र० : महेशचन्द्र लक्ष्मणदास, संस्कृत हिन्दी पुस्तकालय, सैदमिट्ठा बाजार, लाहौर; पात्र : पु० १५, स्त्री १०, अंक : ७, दृश्य : १, १, १, २, १, ३, १।
घटना-स्थल : अरण्य, आश्रम, मार्ग।

इस पौराणिक नाटक की कथावस्तु रामायण के अयोध्याकाड और अरण्यकाण्ड से ग्रहण की गई है। इसकी कथावस्तु मे कुछ घटनाएँ रामायण-सम्मत नही है। जैसे सातवें अक मे भरतादि का आश्रम मे जाकर राम का राजतिलक करना।

इसका अभिनय हो चुका है। यह नाटक आल इण्डिया रेडियो से प्रसारित होने वाले प्रारम्भिक नाटको मे है।

श्री रामलीला (सन् १९३९, पृ० १२६), ले० बाबू दुर्गाप्रसाद जी गुप्त, प्र० वैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ११, ८, ३।
घटना-स्थल अयोध्या, वन, वाटिका, यज्ञ-मडप।

इस पौराणिक नाटक मे राम की आद्योपान्त कथा का अति सक्षिप्त परिचय दिया गया है। यह नाटक ग्रामीण जनता को ध्यान मे रखकर अर्द्ध-शिक्षितो के समझने योग्य भाषा मे लिखा गया है।

श्री रामलीला नाटक (सन् १९६३, पृ० ४२६), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० १५, स्त्री ११, अक, ९, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल स्वयवर सभा, अयोध्या, वन, पर्वत, पचवटी।

इस पौराणिक नाटक को नौ भागो मे रामायण की प्रमुख नौ घटनाओ—नारद मोह, राम जन्म, सीता स्वयवर, राम वनवास, सीता हरण, बालिवध, लक्ष्मणमूर्छा, सीता-वनवास, राम-लवकुश-युद्ध को प्रमुखता दी गई है। प्रत्येक अक के प्रारम्भ मे पात्र सूची पृथक्-पृथक् दी गई है। नाटक का उद्देश्य रामचरित मानस के आधार पर धर्म का प्रचार तथा शिक्षा प्रसार है। नाटक मे गीत एव कविता के अतिरिक्त सवाद भी छन्द-बद्ध हैं। सम्पूर्ण नाटक पर 'रामलीला' शैली का प्रभाव है। प्रासगिक कथाओं मे हास्य व्यग्य तथा मनोरजन की सामग्री भी प्रस्तुत की गई है।

श्री रामलीला रामायण नाटक (सन् १९०० के आसपास, पृ० १२७), ले० द्वारिका प्रसाद भरतिया, प्र० बम्बई भूषण यन्त्रालय, मथुरा, पात्र पु० ३५, स्त्री ११, अक ४, दृश्य ३, ६, २, ७।
घटना-स्थल पुष्पवाटिका, धनुपयज्ञ।

यह पौराणिक नाटक रामायण पर आधारित है। जो कम्पनिया उस समय रामलीला करती थी उनके लिए ही यह विशेष रूप से लिखा गया है। तत्कालीन भाषा का इस नाटक पर विशेष प्रभाव है।

नाटक धनुपयज्ञ से प्रारम्भ होता है। जनक की प्रतिज्ञा, धनुप का टूटना फिर रामवनवास से लेकर विभीषण के राजा होने तक की कथा दी गई है। ग्रामीण दर्शको को ध्यान मे रख कर बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ है।

श्री रामलीला नाटक रामायण (वि० १९६८, पृ० २१८), ले० गोस्वामी नारायण सहाय, प्र० सुन्दर शृगार मशीन प्रेस, मथुरा, पात्र रामायण के सभी पात्र, अक के स्थान पर काडो मे विभक्त।
घटना स्थल रामायण के सभी प्रसिद्ध स्थल।

नाट्यकार लिखते हैं "श्री तुलसीकृत, वाल्मीक, अध्यात्म रामायण, हनुमान नाटक आदि ग्रथो के भाव भक्ति पूर्ण आशयो पर नाटकी धुन पर हर तरह के दिलचस्प गाने सरल बृज भाषा मे पूरित हैं।" नाटक के प्रारम्भ मे नट का रगभूमि मे प्रवेश होता है और वह नटी से वार्तालाप करता है। स्थान-स्थान पर पर्दों के उठने और गिरने का सकेत पाया जाता है। सवादों मे यत्र-तत्र गद्य का प्रयोग है अन्यथा प्राय गीतों की योजना पाई जाती है। रावण-हनुमान के सवाद गद्य-पद्य दोनो मे हैं। कहीं-कहीं स्तुतियाँ

संस्कृत श्लोकों में पाई जाती है। उत्तरकांड में भारद्वाज मुनि गंगा की स्तुति संस्कृत श्लोकों में करते हैं।

यह नाटक रामलीला मंडलियों को दृष्टि में रखकर लिखा गया है और इसके अभिनय की दृष्टि रंगमंच की ओर अधिक रही है।

श्री रामलीला नाटक-बालकाण्ड (सन् १६०८, पृ० १८४), ले० : हीरालाल श्रीवास्तव; प्र० : हीरालाल बद्रीप्रसाद श्रीवास्तव, मुहल्ला पियरीकलाँ, बनारस; पात्र: पु० ६, स्त्री २; अंक व दृश्य के स्थान पर मरीचि है। नाटक में ६ मरीचियाँ हैं।

इस पौराणिक नाटक में राम-विवाह तक की लीला को प्रदर्शित किया गया है।

नाटक की प्रथम मरीची में मनु शतरूप की महाघोर तपस्या, श्री साकेत बिहारी का दर्शन और पुत्र कामना की घटना है। द्वितीय में भानुप्रताप की लीला है। तृतीय में रावण-जन्म तथा चतुर्थ में राम वनगमन की लीला है। पंचम में विश्वामित्र गमन, ताड़का बध, अहिल्या-उद्धार, गंगास्नान, जनकपुर वास का विवरण है। षष्ठम में नगर दर्शन और पुष्पवाटिका की लीला दिखाई गई है। सप्तम में धनुष-यज्ञ व परशुराम-संवाद, अष्टम में अयोध्या से बारात जाना और विवाह होना तथा नवम मरीची में जेवनार, जनकपुर से विदाई, अयोध्या पहुँच-कर विश्वामित्र की विदाई का विवरण है।

श्री रामानन्द नाटक (वि० १६६२, पृ० ६४), ले० : अवध किशोरदास; प्र० : श्री रामानन्द ग्रन्थमाला कार्यालय, अयोध्या; पात्र: पु० १२, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ७, ८, ५।
घटना-स्थल : रामानन्द का आश्रम।

यह नाटक मंगलाचरण से प्रारम्भ होता है। नाटक के प्रधान नायक जगद्गुरु रामानन्द जी हैं। रामानन्द को ईश्वरावतार माना गया है। उनका प्रादुर्भाव लोगों को शान्तिमार्ग पर चलाने के लिए ही होता है। रामानन्द अन्यायी और आततायियों का दमन करके भारतवर्ष में धर्म की ध्वजा फहराते हैं। तत्कालीन समाज अनेक बुराइयों से पीड़ित है। रामानन्द उन बुराइयों के निवारण का मार्ग बताते हैं। वह हिन्दू-मुसलमान को मिला कर देश और समाज का कल्याण करते हैं। भक्ति का आदर्श सभी जातियों और सभी धर्मों के सामने रखते हैं।

श्री रुक्मिणी परिणय नाटक (सन् १८६४, पृ० १०५), ले० : अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'हरिऔध'; प्र० : भारत जीवन प्रेस, काशी; पात्र : पु० ८, स्त्री ५; अंक : १०, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : पुष्पोद्यान, राजसभा, राजभवन, देवी का मन्दिर।

इस पौराणिक नाटक में रुक्मिणी का श्रीकृष्ण के साथ विवाह दिखाया गया है।

इस प्रसिद्ध कथा की सम्पूर्ण प्रमुख घटनाओं का इसमें उल्लेख है। इस नाटक में कविता का बहुल प्रयोग है।

श्रीवत्स (सन् १६४१, पृ० १६८), ले० : कैलाशनाथ भटनागर; प्र० : भारतीय गौरव ग्रन्थमाला, दिल्ली; पात्र : पु० ४, स्त्री ३; अंक : ५, दृश्य : ७, ६, ११, ७, २।
घटना-स्थल : प्राग्ज्योतिपपुर, इन्द्रलोक।

यह एक पौराणिक नाटक है। इस नाटक में लक्ष्मी और शनि में लड़ाई होती है कि दोनों में कौन बड़ा है। शनि लक्ष्मी को माता-पिता विहीन, कुलटा, चंचला कहकर अपमानित करता है तथा लक्ष्मी शनि को काला, टेढ़ा, वक्र कहकर लांछित करती है। दोनों अपने बड़प्पन एवं न्याय के लिए इन्द्र के पास जाते हैं किन्तु इन्द्र इस का न्याय करने में असमर्थ हो जाते हैं तो वे प्राग्ज्योतिषपुर के राजा श्रीवत्स के पास न्याय पाने के लिए उन्हें भेज देते हैं। श्रीवत्स लक्ष्मी को श्रेष्ठ सिद्ध करते हैं। इससे क्रुद्ध होकर शनि श्रीवत्स का राज-पाट चौपट कर उनकी पत्नी चिन्ता को भी अलग कर देता है किन्तु सुरभी कामधेनु के प्रयास तथा

चिन्ता के पातिव्रत धर्म से श्रीवत्स की रक्षा होती है। शनि चिन्ता का अपहरण करवाकर एक सेठ के घर पहुँचता है किन्तु चिन्ता के शाप से वह कोढी हो जाता है। इसी प्रकार श्रीवत्स को चोरी का अपराध लगता है किन्तु लक्ष्मी की कृपा से चिन्ता एव श्री वत्स अपनी सत्यनिष्ठा मे खरे उतरते हैं। शनि अन्त मे अपनी काली करतूतो के लिए पछताता है तथा श्रीवत्स के न्याय को सर्वोपरि कहकर उसकी प्रतिष्ठा करता है।

श्री विश्वामित्र नाटक (सन् १८६७, पृ० ५०), ले० कैलाशनाथ वाजपेयी, प्र० । डा० भैरोप्रसाद पाठक, मेडिकल प्रेस, कानपुर, पात्र। पु० २६, स्त्री ४, अक ३।
घटना स्थल । गगातट, अयोध्या का राजमहल, मार्ग, धनुपयज्ञ।

इस पौराणिक नाटक मे विश्वामित्र के जीवन की प्रमुख घटनाओ का वर्णन है। इसमें जनक के धनुपयज्ञादि का दृश्य तथा भगवान श्री रामचन्द्र जी का विश्वामित्र के साथ धनुपयज्ञ मे जाना दिखाया गया है। सहसा रोहिताश्व को सप काटता है, राजा हरिश्चन्द्र डोम बनकर परिस्थिति वश श्मशान घाट की रखवाली करते है। व अपना कत्तव्य पूरा करने के लिए अपनी पत्नी तारा से कर के रूप मे कफन मागते है। अन्त मे विश्वामित्र प्रकट होकर पुन हरिश्चन्द्र का राजपाट सब उनको वापस द दते है। साथ ही अहिल्या से सम्बन्धित प्रासगिक कथाए हैं।

श्री विष्णु प्रिया नाटक (स० १६७५, पृ० २७१), ले० हरिदास गोस्वामी, प्र० । आर्यावत प्रकाशन गृह, चितरजन एवेन्यू, कलकत्ता, पात्र पु० ७, स्त्री ६, अक ६, गर्भांक ३, ४, ३, ३, ३, २।
घटना-स्थल नवद्वीप मे जगन्नाथ मिश्र का घर।

इस विशाल नाटक में गौराग चैतन्य महाप्रभु की जीवनी को नाटकीय रूप दिया गया है। इसमे शचीमाता और गौराग की धर्मपत्नी विष्णु प्रिया का चरित्र उभर कर आया है। श्री विष्णु प्रिया शचीमाता की सेवा करते-करते कभी-कभी अपनी मनोव्यथा का दिग्दर्शन कराती है। विष्णु प्रिया को त्याग-तपस्या से प्रभावित होकर ईशान, श्री निवास तथा अन्य भक्त उनकी भूरि-भूरि प्रशसा करके उनके जीवन को धन्य मानते हैं। श्री निवास पचम अक मे श्री विष्णु प्रिया की स्तुति करते हुए उनसे आशीर्वाद माँगता है कि गौराग के चरणो मे हमारा अटल प्रेम हो। उनका आशीर्वाद पाकर श्री निवास नर्तन करने लगता है।

श्री शुक (वि० २००२, पृ० ६७), ले० प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, प्र० सकीर्तन भवन, प्रयाग, पात्र पु० २०, स्त्री ४, अक ३, दृश्य १५, ५, ५।
घटना-स्थल व्यास आश्रम, घोर वन, यज्ञमडप, गगातट पर शुकदेव आश्रम।

प्रयाग राज की प्रशसा के रूप मे पीतवसनधारी सूत्रधार मगलाचरण गाता है। नट और नटी मे भी स्त्री शक्ति की चर्चा होती है। अन्त मे शुक का पीछा करते त्रिशूलधारी शिव आ रहे हैं। शुक व्यास के आश्रम मे छिप जाता है और शिव उसे खोजते हुए व्यास के पास पहुँचते ह। शिव कहते हैं कि मैं अमर गुफा मे प्रिया पार्वती को अमर कथा सुना रहा था। सयोग से उसे एक शुक शिशु न सुन लिया। मैं उसे मार डालना चाहता हूँ। व्यास जी उन्हें जब शास्त्र रहस्य समझाते हैं तो शिव प्रेमोन्माद मे नृत्य करने लगते ह। इधर स्वग मे पृथ्वी और धम विचार विमर्श के उपरान्त देवराज इन्द्र के पास पहुँचते हैं। इन्द्रलोक मे पृथ्वी, धर्म, इन्द्र और ब्रह्मा मे पृथ्वी की भावी दुर्गति पर विचार होता है। उसकी रक्षा के लिए सब द्वारिकापुरी मे भगवान कृष्ण के पास आते हैं। भगवान् यादव कुल के विनाश की बात बताते हुए कहते हैं कि मैं अपने धाम जाते समय अपना सम्पूर्ण तेज, समस्त ऐश्वय श्रीमद्भागवत मे स्थापित करके जाऊँगा। उसकी रचना व्यासदेव करेंगे। उसके ग्रहण करने योग्य पात्र के पैदा

होते ही मैं स्वधाम को चला जाऊँगा।

इसके पश्चात् व्यासाश्रम का दृश्य आता है। शुक व्यास पत्नी के पेट में शिव के भय से छिप गया था। १६ वर्ष वहीं छिप कर व्यास जी की कथा सुनता रहा। व्यास पत्नी बाल क्रीड़ा का सुख देखना चाहती है। व्यास जी और गर्भस्थ बालक में वार्तालाप होता है। गर्भस्थ बालक सांसारिक मोह के भय से जगत् में आना नहीं चाहता। नारद जी के समझाने पर भी वह बाहर नहीं निकलता। नारद के आग्रह पर भगवान व्यासाश्रम पधारते हैं। शुक जन्म लेते ही जंगल का रास्ता पकड़ते हैं। व्यास जी सपत्नीक बड़े दुखी होते हैं। व्यास जी को दुखी देख उनके शिष्य वेदशिरा, भृग, यम मित्र आदि दुखी रहते हैं। इधर शुकदेव मुनि गंगातट पर वट वृक्ष के नीचे बैठकर उपस्थित ऋषि मंडली को कथा सुनाते हैं। परीक्षित वशिष्ठ, पाराशर, व्यास, जैमिनी आदि एकत्र हैं। नाम संकीर्तन के साथ गंगा की स्तुति होते ही मकर वाहन दिव्य रूप से गंगा प्रगट होती है। राजा परीक्षित प्रणाम करके उनका गुणगान करते हैं। गंगा प्रसन्न होकर आशीर्वाद देकर जाती है। इधर शुकदेव नंगे शरीर से मस्ती में विश्व में विचरण करते हैं। एक दिन गंगा तट पर पहुँचते हैं जहाँ महाराज परीक्षित भोजन खिलाने का आग्रह करते हैं। तक्षक नागों का प्रतिशोध लेने के लिए परीक्षित को डसने आता है। वह ललकारता है कि काश्यप का प्रयास भी परीक्षित को बचा नहीं सकता। तक्षक काश्यप की शक्ति की परीक्षा लेता है। काश्यप जले हुए वृक्ष की भस्म को अभिमंत्रित जल से जीवित कर देते हैं। तब तक्षक काश्यप को एक करोड़ मुद्रा देकर परीक्षित को जीवित न करने का आग्रह करता है। शाप के सातवें दिन परीक्षित गंगा तट पर शुकदेव मुनि की कथा सुन रहे हैं। कथा सुनने पर कहते हैं—"अब न मुझे मृत्यु का भय है, न तक्षक का डर।" शुकदेव जी की आरती होती है और भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है।

श्री सूरश्याम नाटक (प्रथम भाग) (सन् १९००, पृ० ८४), ले० : बाबू वल्लभदास वर्मा; प्र० : राजपूत ऐंग्लो ओरियन्टल प्रेस, आगरा; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक : २; दृश्य : १०, ८।

प्रस्तुत धार्मिक नाटक में सत्संग की महिमा का वर्णन किया गया है। नाटक में श्याम सुन्दर नारद मुनि से अपने भक्तों का वृत्तान्त पूछते हैं तो नारद मुनि उनसे पूछते हैं "प्रभु क्या कारण है कि आज आप भक्तों की सुधि कर रहे हैं?" इस पर श्याम सुन्दर उत्तर देते हैं, "क्या तुमने नहीं सुना कि मेरा नाम भक्तवत्सल है मुझे अपने भक्तों की याद अहर्निश बनी रहती है। मैं भक्तों के आधीन हूँ। मुझे मेरे भक्त चाहे जहाँ बेच सकते हैं। भक्त मेरे सर्वस्व हैं। भक्त मेरे और मैं भक्तों का हूँ।" इस प्रकार नाटक में भक्ति पर बल दिया गया है।

नाटक में कोई सुव्यवस्थित घटना क्रम नहीं है। भक्ति भाव का उद्रेक कराने के लिए अलग-अलग घटनायें समन्वित कर दी गई हैं।

संगम (सन् १९४७, पृ० ४४), ले० : कमलाकान्त पाठक; प्र० : गर्ग ब्रदर्स, प्रयाग; पात्र : पु० ११, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : २, ३, २।
घटना-स्थल : नोआखाली का गाँव, जमींदार की बैठक, लक्ष्मीपुर।

भारत-पाकिस्तान का स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व प्राप्त करते समय जो साम्प्रदायिक वैमनस्य बढ़ा तथा बंगाल और बिहार में जो साम्प्रदायिक दंगे हुए, वे ही इस नाटक की सामाजिक और राजनीतिक विषय वस्तु बने। उसी आधार पर नोआखाली के लक्ष्मीपुर गाँव में होने वाले हिन्दू-मुस्लिम दंगों का इसमें चित्रण हुआ है। गांधी जी की नोआखाली-यात्रा का इस नाटक में विवरण ग्रहण किया गया है। यह सोद्देश्य रचना है, जिसके अंत में गांधी जी के साम्प्रदायिकता-विरोधी अभियान की सफलता दिखाई गयी है। उसके लिए हृदय-परिवर्तन की गांधीवादी आस्था को कार्य-

व्यापार की परिणति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ साम्प्रदायिक विद्वेष के कारण भय और त्रास की वृद्धि होती है जो क्रोध का अन्धा रूप चित्रित करती है और उसी की मानवीय करुणा के रूप में सुखान्त परिणति प्रत्यक्ष की जाती है।

इसका अभिनय वनस्थली विद्यापीठ और कस्तूरबा शिक्षण शिविर मधुबनी में सन १६४८ में हुआ।

संगम (सन् १६६३, पृ० १०७), ले० कणाद ऋषि भटनागर, प्र० किताब महल, दिल्ली, पात्र पु० ११, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल अदालत, गाँव, मकान।

इस सामाजिक नाटक में जाति-पाति, ऊँच-नीच, स्त्री-स्वातन्त्र्य और राजनीतिक स्वार्थों का यथार्थ चित्र दिखाया गया है।

ठाकुर शमशेर बहादुर सिंह रायजादा बद्रीप्रसाद के पास अपने मुकदमे के लिए आते हैं क्योंकि उनकी दृष्टि में चमारों ने उनकी जमीन पर अवैध कब्जा कर लिया है। ठाकुर साहब की रियासत चली गई है परन्तु अंग्रेजी प्रभाव और बल बाकी है। उन्होंने आजकल बम्बई में एक फिल्म कम्पनी खोल ली है। यहीं पर वह रायजादा के मुँह लगे साले नटवर लाल तथा उनकी पुत्रवधू रेखा के सम्पर्क में आते हैं और लाल को म्यूनिसपैलिटी के चुनाव में खड़ा होने के लिए उकसाते हैं। इसके मूल में अपना स्वार्थ तथा रेखा का सौंदर्य एवं एकाकीपन है क्योंकि उसका पति रणधीर (रायजादा का पुत्र) एक पराक्रमी वीर होते हुए भी चीनी आक्रमण में अपंग हो गया और मैडीकल रिपोर्ट के अनुसार पैर की चोट से कैप्टन रणधीर सदा के लिए नाकारा हो गया। ठाकुर रेखा के पिता डॉ० लाल को उकसाता है तथा चाहता है कि रेखा रणधीर को छोड़ दे। रेखा के व्यवहार में भी परिवर्तन आ गया है भले ही उसने लव मैरेज की थी। ठाकुर की तरह आयंगर मद्रासी होने के कारण अपने पुत्र का विवाह जोरावर सिंह की पुत्री से नहीं करना चाहते क्योंकि वह पंजाबी है। पंडित चरणदास पंजाबी सूबे तथा हिन्दू धर्म के समर्थक होने के नाते जोरावर सिंह को अपने उम्मीदवार के समर्थन के लिए गाँठते हैं तथा एक असहाय मुस्लिम लड़की आयशा का बद्रीप्रसाद के संरक्षण में रहने के कारण विरोध करते हैं। रायजादा की पत्नी दुर्गा प्राचीन विचारों की स्त्री है। वह स्त्री के स्वतंत्र मिलने-जुलने तथा छुआ-छूत की आलोचक है परन्तु अन्त में आयशा द्वारा अपने पुत्र रणधीर की मुसलमान आक्रमणकारी मोहम्मद से रक्षा होने पर मानवता का पाठ ग्रहण कर लेती है। रायजादा के असिस्टेंट चैटर्जी और आयशा के विवाह तथा डॉ० लाल के इस संदेश से कि रणधीर एक और ऑपरेशन से ठीक हो जाएगा, नाटक की समाप्ति हो जाती है।

संग्राम (सन् १६२२, पृ० २६३), ले० प्रेमचन्द, प्र० हिन्दी-पुस्तक-एजेन्सी, कलकत्ता, पात्र पु० ६, स्त्री ५, अंक ५, दृश्य ३६।
घटना-स्थल गाँव।

इस सामाजिक नाटक में किसानों के चरित्र को ऊपर उठाने का प्रयास किया गया है। इसी तरह गाँव के जमींदार वणिक आदि व्यक्तियों पर भी विविध दोष व्यसन, अपराधशील प्रवृत्ति का द्योतन किया गया है। इस नाटक में अपनी समकालीन यथार्थ प्रवृत्तियों का अंशतः चित्रण मिलता है।

संगीत शकुन्तला (सन् १८८६, पृ० १३५), ले० प्रतापनारायण मिश्र, प्र० खड्गविलास प्रेस, पटना, पात्र पु० २१, स्त्री ४, अंक ७, दृश्य २६।
घटना-स्थल दुष्यन्त का राजमहल, वनमार्ग, जंगल, आश्रम।

महाभारत के प्रसिद्ध उपाख्यान के आधार पर मिश्र जी ने इस गीति रूपक की रचना की है। मिश्र जी ने इसके उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिए प्रस्तावना में कहा है—

"यह लोग शकुन्तला नाटक से क्या रीझेंगे उस को इस समय लोगों ने मट्टी कर डाला है। किसी ने कहानी सी लिखकर झूठ-मूठ नाटक का नाम धर दिया है किसी ने अच्छर-अच्छर का उलथा करने की धुन में भाषा को ऐसा बिगाड़ा है कि देखने वाले समझें कि जैसी यह है वैसी ही—संस्कीरत में भी होगी—किसी उर्दू के रसिया ने अमानत की इंदर सभा से भी अधिक चौपट किया है हाय। कालिदास जी की कविता और उन्ही के देस में उसकी यह दुरदसा ?"

संगीत सुन्दर विलास नाटक (सन् १९०६, पृ० ८८), ले० : लछमनदास साल्गराम; प्र० : लेखक ही प्रकाशक; पात्र : पु० १३, स्त्री ५, अंक : ५; प्रवेश : ४, ३, ३, २, ५। घटना-स्थल : रंग संकेत में स्थान के बदले प्रवेश करने वाले पात्रों के नाम दिए गए हैं। "इतना मांहि उदेरामजी आवे छे कस्तूराबाई पिलंग पर सूती छे, ऊपर का चौबारा मांहि सुन्दर बयठी छे, हिलणीं एक कोठड़ी मांहि सुन्दर बयठी छे" (मारवाड़ी बोली की प्रधानता)

इस नाटक में मारवाड़ी समाज में व्याप्त पर्दा, दहेज, असमान विवाह आदि समस्याओं का चित्रण मिलता है।

मंगलाचरण के उपरान्त नट-नटी का वार्तालाप होता है। सूत्रधार नटी को समझाता है कि, "कर मनम विचार सुखी कोई नहिं जग में।" वह इसीलिए नटी को निश्चित रहने को कहता है। मूल घटना से इसका सम्बन्ध दूर का जान पड़ता है। प्रथम प्रवेश में सेठ उदेराम अपनी पत्नी कस्तूरी को समझाता है 'सारा दीन मेंणा करड़ा की वातां ठीक नही।' आगे चलकर मुनीम पन्नालाल और मोतीलाल में पर्दे की प्रथा पर बहस होती है। पन्नालाल कहता है—'लुगाया शरम छोड़ने बकवा लाग जावे, इण मांहि धरम तथा नीति को भंग होवे नहीं कांई ? लुगाई अंगार की जगा छे और मोटयार घी की जगा छे।' धनी परिवार में स्त्री स्वातन्त्र्य के परिणामों पर प्रकाश डाला गया है।

इसमें रामविलास और सुन्दर का परस्पर प्रेम है। पर विवाह में होने वाले बड़े खर्च के कारण समस्या उठ खड़ी होती है।

उधर धनी सेठ उदेराम अपनी स्त्री कस्तूरी के रहते छगनी नामक कन्या से विवाह कर लेता है। छगनी अपने दुर्भाग्य पर रोती है।

संघर्ष (सन् १९५४, सृष्टि की सांझ और अन्य रूपक में संग्रहीत), ले० : सिद्धनाथ कुमार; प्र० : पुस्तक मन्दिर, बक्सर; पात्र : पु० २, स्त्री २; अंक : दृश्य-रहित।

इस रेडियो गीतिनाट्य में कला और कलाकार के परिवेश का संघर्ष दिखाया गया है। सामाजिक स्तर पर दोनों में एक अविच्छिन्न सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता है, जिसके टूटने पर कलाकार की आस्था और उसकी भावना खंडित हो जाती है।

प्रारंभ में पंकज नामक एक मूर्तिकार मूर्ति-निर्माण में संलग्न है। उसका अन्तर्गत उसके जीवन-मार्ग का स्पष्ट अवलोकन कराता है। पंकज को, जो अब तक कला को ही जीवन-सत्य मान बैठा था, मन संबोध करता है। किन्तु पंकज अपने इच्छित आदर्शों की प्राप्ति मूर्ति द्वारा करना चाहता है। उसके अनुसार जीवन नश्वर है, जगत् नश्वर है—शाश्वत है कला जो कलाकार को भी अमर कर देती है। यहां पंकज दिवास्वप्न देखता है, जिसमें उसकी कला युगों की परिवर्तन-देहरी लांघकर अमर हो जाती है। यह स्वप्न शीघ्र ही टूट जाता है और पंकज हथौड़े के तीव्र आघात से मूर्ति नष्ट कर देता है। यद्यपि अन्त में कला की नवीन आशा प्रदर्शित की गई है तथापि मूर्ति का प्रत्यक्ष खंडन लेखक की 'कला जीवन के लिए' मान्यता की पुष्टि करता है।

सन्त तुलसीदास (सन् १९३२, पृ० ९०), ले० : रामशरण 'आत्मानन्द'; प्र० : गोपाल प्रेस, अमरोहा; पात्र : पु० ११, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ६, १०, ३। घटना-स्थल : राम का राज-दरबार, काशी,

अस्सी घाट।

नाटक का आरम्भ राम के राज-दरबार से होता है। वाल्मीकि अपनी रामायण की प्रतिष्ठा के लिए हनुमान द्वारा रचित रामायण को सरयू में प्रवाहित करने के लिए राम से प्रार्थना करते हैं। हनुमान वाल्मीकि से कहते हैं कि जिससे "पुस्तक को सरयू में डलवाते हो उसी हनुमान की सहायता से तुम्हें भगवान् राम का दर्शन हो।" यही वाल्मीकि कलियुग में तुलसीदास के नाम से प्रख्यात होते हैं। "त्रेता में भये वाल्मीकि मुनि ते कलियुग भये तुलसीदास मुनि।" आगे की कथा प्रसिद्ध है कि तुलसीदास अपनी पत्नी रत्नावली पर अधिक अनुरक्त तथा आसक्त हैं। पत्नी के मायके चले जाने पर उसका वियोग उन्हें ससुराल खींच ले जाता है। वहाँ पत्नी की सुरुचिपूर्ण वाणी और मोह माया का व्याख्यान सुनकर वे पत्नी को त्यागकर भगवान् राम के चरणों में लीन हो जाते हैं। काशी में उन्हें गुरु नरहरिदास के दर्शन होते हैं। उन्हीं की सहायता से वह काशी में अस्सी घाट पर कोटी के रूप में हनुमान के दर्शन करते हैं। तत्पश्चात् हनुमान की सहायता से चित्रकूट के घाट पर राम लक्ष्मण के दिव्य स्वरूप की झाँकी के दर्शन करते हैं। राम तथा हनुमान की अनुपम कृपा के कारण ही तुलसीदास का जीवन तथा रामायण ग्रंथ सुरक्षित रह पाता है। गोविन्दस्वामी, कैलाश, सुदर्शन तथा गणेशाचार्य भी अन्त में तुलसीदास से प्रभावित दिखाई पड़ते हैं।

संत तुलसीदास (सन् १९५६, अशोक वन नन्दिनी में संग्रहीत), ले० उदयशंकर भट्ट, प्र० भारती साहित्य मंडल, दिल्ली, पात्र पु० ३, स्त्री ३, अंक और दृश्य-रहित।

इस गीति-नाट्य में तुलसीदास के आत्मज्ञान प्राप्ति की जन-प्रसिद्ध घटना वर्णित है। प्रारम्भ में दो सूत्रधार तुलसीदास के चरित्र का वर्णन करते हुए उनके कामासक्त रूप का उद्घाटन करते हैं। इसी बीच रत्नावली की सखियों द्वारा विगत घटनाओं की सूचना दी गई है। एक दिन रत्नावली तुलसीदास की आज्ञा के बिना अपने पितृगृह चली जाती है। विरह-विदग्ध तुलसीदास भी पीछे पीछे ससुराल पहुँच जाते हैं और उन्मादवश समस्त परिजनों के समक्ष रत्नावली को आलिंगनबद्ध कर लेते हैं। यह स्थिति रत्नावली को सह्य नहीं होती और वह पति के इस कामोद्दीप्त रूप पर तीव्र व्यंग्य प्रहार करती है। इससे तुलसीदास की सुप्त आत्मा जागृत हो उठती है और वे श्रीराम के चरणों में आत्म चिन्तन हेतु प्रस्थान कर जाते हैं।

संत परीक्षा (सन् १९६५, पृ० ७८), ले० ललितेश्वर झा, प्र० रमेश झा, बलभद्रपुर, लेहरिया सराय, दरभंगा, पात्र पु० ११, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य १०। घटना-स्थल राघव सिंह का राजमहल, मंत्रणा शिविर, नवाब अलीवर्दी खाँ का राजमहल, किलाघाट स्थित शमशेर खाँ का महल, मोरंगढ़ एवं अमीनाबाद।

इस नाटक में मैथिली-संत साहित्य के प्रसिद्ध संत साहेबराम की लोकप्रियता का वर्णन है। महाराज राघवसिंह खण्डवला राजकुल के उज्ज्वल मिथिलेश हैं। वे भूत-प्रेतों के अत्यधिक उपद्रव से चिन्तित हो जाते हैं। उनका गुप्तचर एक साधु के तपस्या में अत्यधिक तल्लीन होने की सूचना देता है। दूसरे दिन महाराज राघव सिंह उस संत से मिलने के लिए प्रस्थान करते हैं। अनेक प्रयास के पश्चात् संत साहेबराम उनकी विपदा से अवगत होते हैं। इसी बीच बिहार सूबा के नवाब अलीवर्दी खाँ मिथिला पर आक्रमण करते हैं। युद्ध में साहेबराम बन्दी हो जाते हैं। विपक्षी सैनिकों के द्वारा संत को पीड़ित किया जाता है। संत साहेब अपनी शक्ति से सारे सैनिकों को अस्त-व्यस्त कर देते हैं। विपक्षी सेना संत साहेब को बंद रखना चाहती है, किन्तु भगवान् की कृपा से ताला अपने आप खुल जाया करता है और

वे प्रतिदिन गंगा-स्नान के लिए बाहर जाया करते हैं। फिर सैनिकों की कड़ी निगरानी होने लगती है, किन्तु उसका कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता। अंत में जब राघवसिंह लगान के रूप में एक लाख की राशि देना स्वीकार करते हैं तब उन्हें मुक्ति मिलती है।

संत रविदास नाटक (सन् १९६०, पृ० ३२), ले० : गोपाल जी स्वर्ण किरण; प्र० : मथुनी प्रसाद, सिपाहीलाल, पटना; पात्र : पु० ७, स्त्री २; अंक : ४; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : काशी, अयोध्या, चित्तौड़।

इस जीवनीपरक नाटक में संत रविदास की कथा चित्रित है। नाटक का आरम्भ नेपथ्य में एक गीत होने के बाद रविदास और उनकी पत्नी कुर्मी के संवाद से होता है। रविदास एकान्त, शान्ति और भक्ति योग आदि की दार्शनिक व्याख्या करते हैं। दूसरे अंक में रविदास अयोध्या जाते हैं वहाँ ब्राह्मणों से बातचीत करने के पश्चात् उनसे शास्त्रार्थ होता है। वे पुनः वहाँ से चित्तौड़ जाते हैं। राज्य दरबार में रविदास भक्ति भावना की विशेषता बताते हैं। अन्त में नेपथ्य गीत से नाटक समाप्त होता है।

सन्तान-विक्रय (सन् १९००, पृ० १२४), ले० : लक्ष्य बरेली; प्र० : उपन्यास बहार ऑफिस, काशी; पात्र : पु० ११, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ८, ८, ७।
घटना-स्थल : गाँव, बाजार, विधवा आश्रम।

इस सामाजिक नाटक में समाज-सुधार का मार्ग प्रशस्त किया गया है। घसीटामल पैसे के लोभ में अपने बच्चों को बेच देता है। हरि मोहन इसी चक्कर में अपने जीवन मार्ग से विचलित होकर गलत कार्य करता है और दुष्ट घसीटामल का सहायक बनता है। किन्तु हरिवल्लभ के प्रयासों से सन्तान-विक्रय का कार्य रोक दिया जाता है तथा समाज में जो लोग विधवाओं को निकाल कर अपना-अपना उत्तरदायित्व हल्का कर लेते हैं। ऐसी स्त्रियों के लिए विधवा-आश्रम की स्थापना कर समाज-सुधार दिखाया गया है।

सन्तोष कहाँ (वि० २००२, पृ० ५८), ले० : सेठ गोविन्ददास; प्र० : कल्याण साहित्य मन्दिर, इलाहाबाद; पात्र : पु० ३, स्त्री १; अंक : ५; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : मनसाराम का घर, अध्यापन कार्यालय।

इस सामाजिक नाटक में एक ही व्यक्ति की जिन्दगी के कई पहलुओं को क्रमशः प्रकाश में लाकर इस मनोवैज्ञानिक रहस्य का उद्घाटन किया गया है कि सन्तोष आखिर कहाँ है?

मनसाराम ६०) मासिक वेतन पाने वाला एक गरीब अध्यापक है फिर भी उसकी स्त्री उसको हृदय से प्रेम करती है। किन्तु मनसाराम अपनी स्त्री के लिये वस्त्र एवं बच्चों के लिये दूध तक भी नहीं खरीद सकता। वह हर समय पुस्तकों में लगा रहता है।

इसके अलावा वह अध्यापन कार्य के साथ-साथ छोटे-छोटे उद्योग करने लगता है और कुछ ही दिनों में एक बड़ा व्यापारी बन जाता है। व्यापार की ख्याति चारों ओर फैल जाती है। सरकार ने उसको नाइट हुड भी दे दी है। लोग दान आदि लेने के लिए प्रायः आते हैं। परन्तु उसे अब अपनी अथाह गरीबी की तरह अपार धन से भी संतोष नहीं है। मनसाराम को यह ऐश्वर्यशाली जीवन भार स्वरूप जान पड़ता है। वह अपनी पुस्तकों की तरह धन से भी मुँह मोड़ने लगता है। जीवन का पुराना असन्तोष ऐश्वर्य से दब गया था किन्तु वह धीरे-धीरे फिर उभर आता है।

पत्रों में बड़े-बड़े अक्षरों के अन्दर मनसाराम का त्याग छप कर आता है।

अब मनसाराम गांधी जी की तरह एक आदर्श आश्रम की स्थापना करता है। सब लोग आश्रम में चरखा चलाते हैं। मनसाराम परिवार-सहित खद्दर पहनता है। उस की पत्नी धन के त्याग से दुःखी रहती है।

मनसाराम का नाम अब गरीबदास हो जाता है। कुछ दिनों बाद वह मिनिस्टर हो जाता है। किन्तु राजनीतिक बुराइयो और मिथ्या आरोपों से तग आकर वह कैबिनेट मे त्यागपत्र दे देता है।

अब वह पहला मनसाराम गरीबों की सेवा मे लग जाता है। उसका लडका मनोहर प्रथम श्रेणी से बी० ए० पास करता है फिर भी उसको सतोप नहीं होता।

सथाल बोधोदय नाटक (वि० १९९४, पृ० ९६), ले० स्वामी शिवानन्द तीर्थ परिव्राजक, प्र० बाबू काली प्रसाद जी रईस, बाढ़ो, पटना, पात्र पु० २५, स्त्री १, अक ६, दृश्य ४, २, ३, ४, ३, १।
घटना स्थल नया बाजार, युद्धवीरसिंह की बैठक, युद्धवीरसिंह का ब्याघा मिशन हाउस, कॉलेज बोर्डिंग हाउस, राजा राममोहनराय की बैठक, स्वामी दयानन्द का आश्रम, होटल, सथाली बस्ती, नारायणपुर मे सथालो का बूढा-बूढी स्थान, माझी टाड का बूढा-बूढी स्थान, रेण्टोमस की कोठी, आर्यसमाज मदिर मोनीतरी सथाली ग्राम, मिथ्या की वाटिका, राजगृह की शतपाणि गुफा।

नाट्यकार भूमिका मे लिखते हैं "इस पुस्तक मे काव्य अथवा नाटक का कोई लक्षण नहीं होने पर भी मैंने जन साधारण, विशेपकर अशिक्षित निरक्षर भोले-भाले सथाल आदि भाइयों पर देखने से जल्दी असर डालने और मतवादियो के मायाजाल से बचने तथा उन्हीं को सचेत करने के लिये इस को नाटक का रूप दिया है।" लेखक ने अपने श्रद्धेयगुरु मुनिश्वरानन्द जी की स्मृति मे यह नाटक लिखा है। स्वामीजी सथालो की दयनीय दशा से द्रवित होकर उनके कल्याण का मार्ग निकाला करते थे।

नाटक के प्रारम्भ मे सन्यासी, मौलाना और ईसाई पादरी मे धर्म के प्रचार के विषय मे वार्तालाप होता है। मौलाना पीरो और मुर्शिदों के द्वारा मूले-भटको को मुसलमान बनाते रहते हैं। युद्धवीरसिंह का मित्र कुतुब खा धर्म-प्रचार के लिये अपनी लडकी का ब्याह मित्र के पुत्र से करके सारे परिवार को मुसलमान बनाना चाहता है। युद्धवीरसिंह कुतुबखा की लडकी को आर्य बनाने के पक्ष मे है।

दूसरे अक में रोमन कैथलिक और प्रोटस्टेंट पादरी धर्म-प्रचार का मार्ग सोचते हैं। एक पादरी युक्ति बताता है कि हम लोग ईसाई मेमो को हिन्दू परिवारो मे स्वेटर, दस्ताना, पैतावा बुनना सिखाने के बहाने भेजकर उनकी औरतो और लडकियो मे ईसाई धर्म का प्रचार करें। तीसरे अक मे राजा राममोहनराय के यहा धर्मेन्द्र बाबू, नरेन्द्रबाबू, वीरेन्द्रबाबू गोष्ठी करके ब्रह्मवादी नामक सम्प्रदाय के द्वारा विधर्मियों का प्रचार रोकने को कृत सकल्प होते हैं। दूसरे दृश्य मे स्वामी दयानन्द, प० लेखराम, महात्मा मुन्शीराम गोष्ठी मे इसका बदला लेना निश्चित करते हैं। वे स्वेच्छा से अहिन्दू को आर्य धर्म ग्रहण कराने की योजना बनाते हैं।

मौलाना फैयाज और रेवेरेंड टामस ब्रह्मसमाज और आर्यसमाज से भयभीत होते हैं। मौलाना फैयाज कहते हैं कि "कल्ह हम लोग चौक पर बडा भारी भीड देखा था। मालूम हुआ कि एक मुल्ला और एक कृश्टान अग्रेज को आर्य बनाया जा रहा है। दोनों परामर्श करते हैं कि शिक्षित वर्ग मे प्रचार कार्य कम करके गँवार क्लास मे काम जोर से जारी करना होगा। हिमट हारने की जरूरत नई।"

इस निर्णय के अनुसार सथालियों में ईसाई मिशन का कार्य जोर से चल पडता है। रेवेरेंड टोमस की कोठी पर रनिया, मुनिया, कमला और सुखदा का प्रवेश होता है। पाचवें अक मे, पाल भक्त, रामटहल आदि कई आर्यसमाजी साप्ताहिक सत्सग मे मिशनरियों द्वारा अछूतो पर किए जाने वाले प्रचार को रोकने का विचार करते हैं। वे 'सथाल सेवाश्रम' खोलने का निश्चय करते हैं जहा पाठशाला, औषधालय, पुस्तकालय, शिल्पशाला, व्यायामशाला, यज्ञशाला आदि रहें। नित्यानन्द सथालो मे से ही कुछ शिक्षित व्यक्तियों को प्रचार कार्य मे लगाना चाहते हैं। दूसरे दृश्य मे वैद्यनाथ एव पादरी एलिक के वाद-विवाद मे वैद्यनाथ वैदिक साहित्य एव सस्कृति की महानता बताते हुए ईसाई धर्म की कमजो-

रियाँ बताते हैं।

संन्यासी (वि० १६८८, पृ० १८३), ले० : लक्ष्मीनारायण मिश्र ; प्र० : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; पात्र : पु० ११, स्त्री २, अंक : ४; दृश्य : ६, १, १, १।
घटना-स्थल : कारागार, आश्रम।

इस सामाजिक नाटक में प्रेम मार्ग की कुछ स्थितियों और उसके परिणाम का निरूपण है। देश-प्रेमी मुरलीधर राष्ट्र-सेवा-हित कई बार जेल-यात्रा करते हैं। आजीवन अविवाहित रह कर देश-सेवा का व्रत लेने पर भी किरणमयी का कौमार्य भंग करते हैं। उनकी मृत्यु के उपरान्त किरणमयी कॉलेज के वृद्ध प्रोफेसर दीनानाथ के साथ संसार चलाने के लिए समझौता करती है, किन्तु वहाँ भी असफल रहने के कारण प्राण त्याग देती है। इसी प्रकार मालती के प्रेम में असफल होने के कारण विश्वकान्त संन्यासी हो जाता है।

सहशिक्षा के कारण एक छात्रा का प्रेम एक छात्र से हो जाता है। इस अपराध के लिए एक ऐसे अध्यापक की प्रेरणा से प्रेमी छात्र को विद्यालय से निकाला जाता है, जो स्वयं उस छात्रा के मोह में पड़ गया था। प्रथम महायुद्ध के बाद विदेशी शासकों ने इस देश को जो धोखा दिया था, रोलट-एक्ट, पंजाब हत्याकांड और गांधी जी के असहयोग आन्दोलन ने देश में जो उथल-पुथल पैदा की, देश-सेवक का जीवन जिस संकट में पड़ा, उसके अनेक चित्र इस नाटक में पाये जाते हैं। कॉलेज-निर्वासित विश्वकान्त मालती के अनुराग के पंखों पर चढ़कर एशिया की मुक्ति के लिए एशियाई संघ का संयोजक बनता है।

सम्पादक की दुम (सन् १६३५, पृ० ३१), ले० : डी० आर० सिनहा; प्र० : भारती आश्रम, इलाहाबाद; पात्र : पु० ५, स्त्री २, अंकरहित ; दृश्य ३।
घटना-स्थल : खूसटचन्द का मकान, दफ्तर, कवि सम्मेलन।

यह एक मनोरंजक लोकप्रिय प्रहसन है। मूर्ख खूसटचन्द को मैनेजर बनने की धुन लग जाती है। अन्ततोगत्वा उसका सारा कामकाज ठप्प हो जाता है और वह बिल्कुल गरीब बन जाता है। अब वह अपने को पुस्तक-पुस्तिकाओं, अखबारों का सम्पादक तथा मस्तमौला कवि होने का झूठा प्रचार करता है लेकिन वास्तविकता कुछ भी नहीं होती है। उसके मित्र धोतीमल एम० ए० तथा नटराट आदि उसको मूर्ख बनाकर मनोरंजन का साधन मानते हैं। इस बार कवि सम्मेलन में बहुत सारे कवि एकत्र होते हैं। वहाँ कवि लिस्ट में खूसटचन्द का नाम न होने पर भी वह अपने को कवि साबित करने के लिए अनेकों ऊटपटांग की कविताएँ सुनाता है जिससे कवि सम्मेलन का सारा समय नष्ट हो जाता है अन्त में कवियों द्वारा अपमानित होकर वह भाग जाता है।

संयोग (सन् १६६३, पृ० ७६), ले० : सतीश ठे; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री १, *अंक : ३, दृश्य रहित।*
घटना-स्थल : सेठ का मकान, कुम्भ मेला।

इस हास्य नाटक में भाग्य की प्रधानता दिखाई गई है। सेठ बद्री प्रसाद की कन्या कुम्भ के मेले में खो जाती है। वे अपनी पुत्री को खोजने के लिये प्राय: घर से बाहर रहते हैं। उनकी अनुपस्थिति में उनके नौकर प्रीतमसिंह और बालम एक ही कमरे में दो किरायेदार मंजुबाला और नरेश को ६०) महीने पर रख लेते हैं। मंजु दिन में बाहर सर्विस और रात में घर पर आराम करती है। नरेश रात भर फैक्ट्री में रहता है, दिन में घर पर विश्राम करता है। दोनों नौकर बारी-बारी से उनका सामान हटाते और लगाते रहते हैं। रविवार को दोनों बाहर रहते हैं। परन्तु असावधानी से दोनों को पता चल जाता है कि कोई पुरुष और पुरुष की अनुपस्थिति में कोई स्त्री रहती है। अन्त में सेठ आता है और उसे अपनी लड़की का हार मिल जाता है। नौकर उसे बहकाकर बम्बई भेज देता है। किन्तु नरेश और मंजु एक सप्ताह की छुट्टी लेकर अपने

रूपमेट की तलाश करते हैं। दोनो मिलते हैं उस लडकी का पिता भी वापस आकर लडकी को पहचान लेता है और नौकरो का भेद भी खुल जाता है। सयोग यहाँ तक बनता है कि मजू और नरेश दाम्पत्य सूत्र मे बध जाते हैं।

सयोगिता (सन् १९३६, पृ० ८२), ले० मायादत्त नैथानी, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, पात्र पु० ८, स्त्री ५, अक ३, दृश्य १०, ८, ६।
घटना-स्थल दिल्ली का राजमहल, तरावडी का युद्धक्षेत्र।

इस ऐतिहासिक नाटक मे पृथ्वीराज की वीरता द्वारा सयोगिता-हरण दिखाया गया है। राजकवि चन्दवरदाई महाराज पृथ्वीराज को सयोगिता की प्राप्ति के लिए कन्नौज राज्य पर चढाई करने की राय देता है। योजनानुसार पृथ्वीराज, भीमसिंह और अजयसिंह की सेना के साथ प्रस्थान करते हैं। इधर कन्नौज नरेश अपनी पुत्री सयोगिता से पृथ्वीराज के साथ विवाह न करने का आग्रह करते हैं किन्तु सयोगिता पृथ्वीराज से विवाह के लिए दृढ निश्चय कर लेती है। कन्नौज के राजमहल मे रानी के सामने सुनन्दा कहती है कि "जैसे ही राजकुमारी ने स्वर्णमूर्ति के गले मे माला पहनाई वैसे ही दिल्लीश्वर ने उनको अपनी बलिष्ट भुजाओ से उठाकर घोडे पर विठाकर क्षितिज की छाती को चीरकर विलीन हो गये।" जयचन्द गजनी के बादशाह शाहाबुद्दीन गोरी से पृथ्वीराज पर आक्रमण करने के लिए अनुरोध करता है। गोरी अपने मत्री को युद्ध के लिए आदेश देता है। तरावडी के युद्धक्षेत्र मे घमासान युद्ध होता है। युद्ध मे भीमसिंह आहत होकर गिर जाता है। उसके पास उसकी पत्नी उर्मिला जाती है। वह एक बार पुन अपनी आँखें खोलकर सबसे सप्रेम मिलता है और इधर युद्ध समाप्त हो जाता है।

सयोगिता स्वयवर (सन् १८८५, पृ० ६४), ले० लाला श्रीनिवास दास, प्र० सुधानिधि प्रेस, कलकत्ता, पात्र पु० ११, स्त्री ६, अक ५, गर्भांक ३, २, २, १, २।
घटना स्थल स्वयवर सभा, कन्नौज।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सयोगिता का सच्चा प्रेम दिखाया गया है।

पृथ्वीराज द्वारा नियोजित दूती कर्णाटकी सयोगिता के पास जाती है और उसे पृथ्वीराज की ओर आकृष्ट करने मे सफलता प्राप्त करती है। फलत स्वयवर के समय पृथ्वीराज के स्वर्ण प्रतिमा के गले मे वरमाला डालकर वह अपना प्रेम प्रकट करती है। इसी समय चद्रकवि के साथ वेष बनाकर पृथ्वीराज जयचद की सभा मे आता है। कुछ समय बाद चद उसे पहचान जाता है। जयचद उसे पकडने के लिए सेना भेजता है जिससे लागरीराय युद्ध करते हैं। तदनन्तर पृथ्वीराज और सयोगिता का मिलन होता है। फिर युद्ध कर पृथ्वीराज जयचद को परास्त करता है और सयोगिता को अपने साथ दिल्ली ले जाने की तैयारी करता है। पुत्री के साथ पृथ्वीराज के गान्धर्व विवाह की सूचना पाकर जयचद दान-दहेज देकर उन्हे सम्मान विदा करता है।

सयोगिता हरण अथवा पृथ्वीराज नाटक (सन् १९१५, पृ० ६५), ले० हरिदास मणिक, प्र० मणिक कार्यालय, वाराणसी, पात्र पु० २५, स्त्री १५, अक ३, दृश्य १, ३, ३।
घटना-स्थल मदनिका का कुज, जयचन्द का कक्ष, राजदरबार, पृथ्वीराज का कमरा, मार्ग, सयोगिता की चित्रसारी, पृथ्वीराज का दरबार।

इस नाटक मे सयोगिता हरण की प्रसिद्ध घटना और उसके कारणो पर प्रकाश डाला गया है। सयोगिता और उसकी गुरुवानी मदनिका के पातिव्रत धर्म की चर्चा स नाटक प्रारम्भ होता है। मदनिका स्त्री के गुणो की चर्चा करती है जिनके कारण 'मानी पति मान को त्याग कर स्त्री के हिय का हार बन जाता हैं। मदनिका तोमरवशीय राज्यों का इति-

ह्रास पढ़ाती हुई अनंगपाल के दौहित्र पृथ्वीराज की चर्चा करती है। ब्राह्मण और उसकी पत्नी मदनिका से पृथ्वीराज की विशेषताएं सुनकर संयोगिता के मन में उसके साथ विवाह की जिज्ञासा जगती है। इधर जयचन्द स्वयंवर की तैयारी करता है। साथ ही ईर्ष्यावश पृथ्वीराज और उसके सहायक समरसिंह को बन्दी बनाने का संकल्प करते हैं। जयचन्द की महिषी रानी जुन्हाई संयोगिता का विवाह पृथ्वीराज के साथ कराने का आग्रह पति से करती है पर जयचन्द उसे फटकारते हुए कहता है—"रे कुल कलंकिनी। तू जन्मते ही मर गई होती तो अच्छा होता, प्राण रहते मैं कभी तुझे पृथ्वीराज को न दूंगा।" संयोगिता को एकान्तवास का दंड मिलता है। संयोगिता के यहाँ से गुरुराम नामक जंगम पृथ्वीराज के पास आकर सूचना देता है—"यज्ञ में निमंत्रित हजारों राजा उपस्थित थे। इस अवसर पर जयचंद ने संयोगिता का स्वयंवर भी रच दिया। आपकी स्वर्ण प्रतिमा द्वारपाल के स्थान पर स्थापित तो थी ही बस उसी यज्ञ मण्डप में निमंत्रित राजा आकर बैठने लगे। संयोगिता ने आपकी प्रतिमा के गले में जयमाला डाल दी।" पृथ्वीराज संयोगिता का हरण करके उसे दिल्ली ले आता है। पृथ्वीराज की राज महिषी इच्छिनी कुमारी की सम्मति से पृथ्वीराज और संयोगिता का विवाह होता है।

काशी नागरी नाटक मण्डली द्वारा अभिनीत।

संरक्षक (सन् १९७०, पृ० १६४), ले० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री १; अंक : ३, दृश्य : ६, ५, ५।
घटना-स्थल : कोटा का राजमहल, खेत, जालिमसिंह के डेरे के बाहर का मैदान।

इस ऐतिहासिक नाटक में देश-प्रेम की सच्ची भावना चित्रित की गई है।

भारत में अंग्रेजों का राज्य है। भारत छोटी-छोटी रियासतों में बंटा है। कोटा के राजमहल में महाराज उम्मीदसिंह रुग्णावस्था में है। महाराज उम्मीदसिंह के संरक्षक मामा जालिमसिंह आते हैं। जालिमसिंह एक शर्त पर हस्ताक्षर कराने आता है कि कोटा राज्य में संरक्षक का पद स्थायी और वंशानुगत रहे। उम्मीदसिंह हस्ताक्षर करने से इनकार कर देते हैं। उम्मीदसिंह की मृत्यु के पश्चात् ज्येष्ठ पुत्र किशोरसिंह गद्दी पर बैठते हैं। किशोरसिंह अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करते हैं। जालिमसिंह और उसका पुत्र माधोसिंह अंग्रेजों से मिल जाते हैं। किशोरसिंह का छोटा भाई पृथ्वीसिंह देश-रक्षा के लिए स्वयं को बलिदान कर देता है। अन्त में महाराज किशोरसिंह को विजय प्राप्त होती है। जालिमसिंह और माधोसिंह अपने अपराध के लिए मृत्यु दण्ड मांगते हैं, किन्तु महाराज किशोरसिंह जालिमसिंह को गले लगा लेता है।

संवत् प्रवर्तन (सन् १९५६, पृ० १११), ले० : हरिकृष्ण 'प्रेमी'; प्र० : मानकचन्द बुक डिपो, उज्जैन; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ७, ५, ४, ८।
घटना-स्थल : विक्रमादित्य का राजदरबार, शक शिविर, युद्धभूमि।

इस ऐतिहासिक नाटक में विक्रमादित्य की शक-विजय और उसके उपलक्ष में प्रचलित नवीन संवत् का उल्लेख किया गया है। उज्जयिनी नरेश गर्दभिल्लदर्पण शक्ति और ऐश्वर्य के मद में प्रजा की भावनाओं की उपेक्षा करता हुआ विलास में रत रहता है। वह एक दिन जैन आचार्य कालक की परम लावण्यवती भगिनी सरस्वती का अपने भृत्यों द्वारा अपहरण कराकर उसे अपने अन्तःपुर में डाल लेता है। कालक के विनम्र प्रार्थना करने पर भी जब गर्दभिल्ल सरस्वती को मुक्त नहीं करता तो प्रतिशोध की अग्नि में दग्ध आचार्य शकों से सम्पर्क स्थापित कर उन्हें भारत पर आक्रमण करने और जैन धर्मावलम्बियों की सहायता से उन्हें गर्दभिल्ल पर विजय प्राप्त कराने में सहायक होते हैं। गर्दभिल्ल वीरतापूर्वक रणक्षेत्र में प्राण देता है और मरते समय अपने पुत्र विक्रम को सरस्वती के हाथों सौंप देता है जिसका लालन-पालन वह प्राचीन वैमनस्य को भूलकर

अत्यन्त निष्ठा के साथ करती है। उधर शक विजय गर्व में उन्मत्त हो प्रजा पर अत्याचार करते हैं, श्रेष्ठियों का धन और आर्य ललनाओं का सतीत्व लूटते हैं जिसकी प्रतिक्रिया प्रजा द्वारा विद्रोह में होती है। विक्रमादित्य और गर्दभिल्ल के दासी-पुत्र भर्तृहरि इस विद्रोह का नेतृत्व करते हैं। विद्रोह सफल होता है, शक पूर्णत पराजित होते हैं और उज्जयिनी में गणतन्त्र की स्थापना होती है। यद्यपि प्रजा विक्रमादित्य को ही प्रथम गणपति बनाना चाहती है परन्तु विक्रम भर्तृहरि को उस पद पर प्रतिष्ठित कर स्वय उनके आमात्य बन अपने विशाल हृदय का परिचय देते हैं। शक-विजय के उपलक्ष में नवीन सवत् प्रवर्तित होता है।

सवर्त (वि० २००१, पृ० ७७), ले० केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', प्र० पुस्तक भडार, लहेरिया सराय, पटना, पात्र पु० ३, स्त्री १।

इस प्रतीकात्मक गीतिनाट्य में आध्यात्मिक आदर्शों द्वारा ही कल्याण की उपलब्धि दिखाई गई है तथा अहकार, मानव-महिमा और भौतिक आग्रह को उपद्रवो का कारण बताया गया है।

महासमर के सूत्रधारों की मनोवृत्ति के मूल तत्त्वो से सघटित अह भाव, क्रोध और तृष्णा, अनृत और निकृति, विज्ञान और हिंसा की सहायता से सम्पूर्ण प्रकृति को आन्दोलित कर डालता है। उधर एक ओर धर्म ईश्वर की महत्ता का स्तवन और पार्थिव बुद्धि की असमर्थता का चित्रण करता है, दूसरी ओर ज्ञान मानव जीवन में प्रेम की पूर्णता और विकास की अभिलाषा करता है जिससे मृत्यु तत्त्व समाप्त हो सके। इसके उपरान्त धर्म, ज्ञान और प्रार्थना के अन्तर्हृदय के गीत ध्वनित होते हैं जो न केवल उनके व्यक्तित्व की ज्योति का प्रकाशन करते हैं, अपितु मानव के वर्तमान रूप पर क्षोभ प्रकट करते हैं। दृश्य परिवर्तन पर पृथ्वी अपने स्वरूप और जीवन सस्कार का स्मरण करती है, अह भाव की कदर्थना करती है और प्रार्थना मानव की उन्नति के लिए उद्बोधन गीत गाती है। पुन दृश्य बदलने पर धर्म को, जो भारत की स्वसलोलुप छाया को देखकर खिन्न है, अहकार ललकारता है। धर्म तर्क द्वारा उसे समझाना चाहता है कि भौतिकवाद, द्वेष, घृणा और हिंसा के कारण ही विश्व-श्री नष्ट हो रही है। परन्तु अहकार का मत है कि सघर्ष और द्वन्द्व में ही प्रगति के बीज समाहित हैं। इसके उपरान्त अहकार के सकेत से क्रोध धर्म का सिर काट लेता है। दृश्य बदलता है और अहकार क्रोध के साथ ज्वालामुखी पर्वत पर खडा दिखाई देता है। यह सघर्ष की चरम सीमा का सकेत है। वे मानव महिमा का दुदुभि घोष करते हैं पर ज्ञान ईश्वर को अपरूप, अनश्वर और मानव से अभिन्न तथा अहकार को मानव का घोर शत्रु बताता है। अहकार द्वारा अपने विक्रम की प्रशसा करने पर ज्ञान उसे उसका अतीत, वर्तमान और भविष्य दिखाता है जो रक्तरजित है। धीरे-धीरे क्रोध का तिरोधान होता है, अहकार को अपने अमर चैतन्य की अनुभूति होती है और वह जिस ज्वालामुखी पर खडा था उसी में समा जाता है जो इस तथ्य का सकेत है कि कर्मजन्य अह ज्ञान की सन्निधि में समा जाता है।

सशय की एक रात (सन् १९६०), ले० श्रीनरेश मेहता, प्र० हिन्दी ग्रथ रत्नाकर, बम्बई, पात्र। पु० ३ तथा कतिपय छाया पात्र, सर्ग २।
घटना स्थल वन।

सशय की एक रात राम की एक विशिष्ट मनोदशा पर आधारित पौराणिक गीतिनाट्य है, जिसे नवीन परिवेश में प्रस्तुत किया गया है। राम के समक्ष प्रमुख समस्या है अपहृत सीता की मुक्ति, जो जन-मानव की स्वतन्त्रता की प्रतीक है। सीता का अपहरण मानव की स्वतन्त्रता का अपहरण है। किन्तु राम के सशय का कारण इस समस्या का वैयक्तिक पक्ष है। सीता उनकी पत्नी है। पत्नी के लिए असख्य निरपराध मानवो की बलि क्या उचित है? केवल सीता के लिए वह युद्ध का विरोध करते हैं। इसीलिए मानव के रक्त पर पग धर कर आती हुई सीता उन्हें

स्वीकार्य नहीं। राम सत्य चाहते हैं किन्तु युद्ध द्वारा नहीं। वे 'मानव का मानव से सत्य चाहते हैं।' क्या यह संभव है? नाट्यकार ने जटायु तथा दशरथ के छायारूप द्वारा युद्ध की अनिवार्यता तथा औचित्य पर प्रकाश डाला है। छायामूर्तियाँ राम के संशय का निवारण करती हुई कहती हैं कि युद्ध परिस्थितियों का परिणाम है। अतः युद्ध में संशय व्यर्थ है। प्रधान है केवल कर्म। संशय स्वयं में कोई सत्य नहीं वरन् वह भी कर्म ही है। अन्तर केवल इतना ही है कि संशय का आधार वैयक्तिक होता है और कार्य का सामाजिक। इसीलिए काम सामूहिक अन्धता है और संशय वैयक्तिक अंधता।

संसार (सन् १९६२, पृ० ९९), ले० : उग्रनारायण मिश्र; प्र० : प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-मथुरा; पात्र : पु० ७, स्त्री ५; अंक : ३, दृश्य : ३, ४, ५।
घटना-स्थल : गिरि, कानन, उपवन, कक्ष, पथ।

नाटककार संसार रूपी विशाल वृक्ष की जड़ ममता को मानता है। वह सिद्ध करना चाहता है कि एषणायें भाव वृक्ष की मुख्य शाखायें हैं। "जब एषणाएं निश्चित सीमा का अतिक्रमण करती हैं तो मनुष्य के सर्वनाश का समय उपस्थित हो जाता है।" मनुष्य जब विवेक की अवहेलना कर विद्या को ठुकराता है तो ममता उसके अत्यधिक निकट आ जाती है। यदि विवेक के प्रति किंचित् भी श्रद्धा रही, तो वह पुनः विद्या को प्राप्त कर अपना जीवन आनंदमय बना सकता है।"

नाटक के प्रारम्भ में जीवानन्द, विवेक, मदन, धनेश और नामदेव परस्पर वार्तालाप करते हैं। धनेश धन संग्रह को, नामदेव ख्याति और यश को, मदन कामतृप्ति को जीवन साफल्य का साधन घोषित करते हैं। विवेक इनका विरोध करते हुए मानव जीवन के उद्देश्य पर बल देता है। अपना जीवन दर्शन स्पष्ट करते हुए वह कहता है "विवाह के द्वारा वासना को मर्यादित करो, उतना ही धन कमाने की लालसा रखो, जिससे तुम्हें भोजन, वस्त्र और निवास की सुविधा हो जाय। नाम कमाने के लिए तुम्हें चिन्ता करनी ही नहीं चाहिए।"

द्वितीय दृश्य में विवेक-पत्नी श्रद्धा, उसकी बहिन विद्या, ममता, शान्ति और चिन्ता में वार्तालाप होता है। ममता को पुरुषों पर आक्रोश है कि उन्होंने स्त्रियों को चहारदीवारी में बंद कर नारी-विकास का मार्ग अवरुद्ध कर दिया है। अतः स्त्रियों को शासन, युद्ध, न्याय आदि कार्यों में हाथ बँटाकर पुरुष को दिखा देना चाहिए कि वह उससे किसी भी अंश में कम नहीं है। श्रद्धा स्त्री पुरुष की स्वतंत्रता और समानता के सिद्धान्त को निरर्थक समझती है। वह स्त्री पुरुष की शारीरिक बनावट के अनुसार स्त्रियों को शासन, न्याय और सैनिक कार्यों के अयोग्य समझती है। तदुपरान्त जीवानन्द विवेक, विद्या और श्रद्धा में व्यष्टि धर्म और समष्टि धर्म के विषय में विचार विनिमय होता है। विवेक श्रद्धा के सिद्धान्तों का विरोध करते हुए कहता है कि "व्यक्ति के लिए दया, क्षमा, अहिंसा आदि गुण सदा आवश्यक हैं परन्तु जब कभी समाज या राष्ट्र का प्रश्न सामने आता है तो निर्दयता, क्रूरता और हिंसा उसके लिए उपयुक्त हो जाती है।" विद्या (विवेक की बहन) एक नया सिद्धान्त सामने रखती है कि "जब तक मानव समाज पूर्ण शिक्षित और पूर्ण ज्ञानी नहीं बन जाता, तब तक विश्व में शान्ति स्थापना की बात कोरी कवि कल्पना ही है।"

द्वितीय अंक में जीवानन्द श्रद्धा का विरोध कर ममता के मोह में पड़ जाते हैं। ममता के तीनों सेवक मदन, धनेश और नामदेव हाथ जोड़े उसके सामने खड़े होते हैं। श्रद्धा जीवानन्द को तर्क के द्वारा सत्पथ पर लाना चाहती है पर जीवानन्द तर्क का विरोध करते हुए कहता है—"तर्क कभी किसी विषय के संतोषजनक विचार पर स्थिर नहीं रहने देता।" जीवानन्द अब अपनी विद्या का भी विरोध करता है। ममता के प्रभाव से जीवानन्द विलास और विनोद का

साय करके मदिरा पान करता है। मदन के परामर्श से जीवानन्द अनेक सुन्दरियो के साथ अपनी चिन्ता मिटाने का प्रयत्न करता रहता है पर अत्यधिक विलास के कारण वह भयानक रोग से पीडित हो जाता है। जीवानन्द पुन श्रद्धा की शरण मे जाकर क्षमा याचना करता है। पुन विवेक और विद्या के सम्पर्क मे रहकर शान्ति के समीप पहुँचकर विवाह मडप मे विद्या से विवाह करता है।

ससार चक्र नाटक (सन् १६३२, पृ० ८२), ले० आनन्द स्वरूप साहब, प्र० राधास्वामी सत्सग सभा, दयालबाग, आगरा, पात्र पु० १८, स्त्री ५, अक ४, दृश्य ४, ७, ५, ४।
घटना-स्थल भूमि गाँव के राजा दुलारेलाल की सभा, गोदावरी शहर।

भूमि गाँव के राजा दुलारेलाल राजकुमार की बीमारी की सूचना पाकर सभा मे हो रहे नाच को बद करते हैं। वे प्रात काल राज पडित के साथ रोग शान्त्यर्थ दान-खैरात करने जाते हैं जहा एक बुढिया से उन्हें ससार के मिथ्यात्व की शिक्षा मिलती है। ससार और उसके दुख-सुख की असारता की पुष्टि करते हुए राजपुरोहित भगवान् के नाम को ही केवल सत्य बताते हैं। इधर राजकुमार चल बसता है। इससे राजा और रानी इन्दुमती शोक विह्वल हो बुढिया को बुलवाते हैं। उसके आने पर ससार की असारता पर वार्तालाप होना है। बुढिया उन्हें महात्माओ के वचनो का पाठ तथा तीर्थाटन करने का परामश देती है। राजा तीर्थयात्रा के लिए तैयार हो जाते हैं। वे पहले कुरुक्षेत्र जाते हैं, जहाँ गरुडमुख पडित के दलाल उन्हें दान के लिए प्रेरित करते हैं। गरुडमुख उनसे गोशाला आदि के नाम छ सौ वसूल करता है और रानी को ही दान दे डालने का परामर्श देता है। राजा दुलारेलाल को उस पर सदेह होता है। वे पडित की गोशाला देखकर आशकित एव चिंतित होते हैं क्योकि उसमे सिर्फ तीन गायें और एक बछडा है। जिससे उन्हें यह ज्ञान हो जाता है कि वे ठग के पाले पड गये हैं। फिर पडित के अभिकर्त्ता गोवर्धन से राजा की कहा सुनी हो जाती है। राजा उसे तलवार के घाट उतारने को चलता है कि रानी हाथ थाम लेती है। पर 'सोने की चिडिया' को फाँसने के लिए फलस्वरूप गोवर्धन कुछ लोगो की राय से राजा का काम तमाम करने की युक्ति करता है। किन्तु गरुडमुख की मदद स राजा ठगो के मन्सूबो से बच जाता है और फिर वहाँ से गोदावरी शहर को चला जाता है।

वहाँ तुलसीबाबा की कथा मे उन्हे आत्मा, परमात्मा, जगत् और मन आदि प्रश्नो का उचित उत्तर प्राप्त होता है। तुलसीबाबा भी उनसे प्रभावित होते हैं और दूसरे दिन भेंट करने आते हैं। राजा दुलारेलाल की उसी समय राजा पेद्दापुरम् से भेंट होती है। कथा के तथ्यो से राजा साहब का मन शान्त हो जाता है, हृदय की ग्रन्थिया, उनकी शिक्षाओ से खुल जाती हैं। अत मे राजा तीर्थयात्रा से लौट आते हैं, प्रजा उनका स्वागत करती है। कुछ दिन बाद राजा को कुमार उत्पन्न होता है। दरबार की गणिकाएं विवश औरतो के लिए एक कारखाना खोलने का अनुरोध करती हैं।

ससार चक्र (सन् १६०२, पृ० ६४), ले० आशिक बी० ए०, प्र० उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, पात्र पु० ६, स्त्री २, अक ३, दृश्य ५, ८, ४।
घटना-स्थल मकान, जगल।

इस सामाजिक नाटक मे प्रेम की पराकाष्ठा दिखाई गई है। हीरालाल अपने भाई श्यामलाल के पुत्र दीपक का अपहरण कर लेता है क्योकि वह चन्द्रिका से प्रेम करता है। किन्तु पुजारी सूरदास के सद् प्रयासो से दीपक सुरक्षित रहता है और अन्त मे अपनी प्रेमिका से मिलता है। सच्चा प्रेम देखकर हीरालाल चन्द्रिका और दीपक की शादी करा देता है और अपने कामों पर स्वय पछताता है।

सकुन्तला नाटक (वि० १९३७, पृ० २००), ले० : कवि नेवाज, प्र० : मगल प्रकाशन,

जयपुर; पात्र : पु० १२, स्त्री ४; तरंग : ४; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : कोई उल्लेख नहीं।

इस पौराणिक नाटक में पुराण प्रसिद्ध शकुन्तला की कथा चित्रित है। (ब्रजभाषा पद्य बद्ध नाटक)

प्रथम तरंग में शकुन्तला और दुष्यन्त का साम्मुख्य आश्रम में होता है। कन्या सुलभ क्रीड़ा के कारण शकुन्तला का सौन्दर्य स्पष्ट नहीं हो पाता। शकुन्तला कभी अपने वस्त्रों को वृक्षों की उलझन में सुलझाती है कभी अपने पैरों में काँटा निकालने लगती है। इससे शकुन्तला की रागासक्ति प्रकट होती है।

द्वितीय तरंग में शकुन्तला और दुष्यन्त की मध्याह्न रति का बड़ा ही नग्न वर्णन है।

इसी तरंग में शकुन्तला के आग्रह से दुष्यन्त अपनी मुद्रिका देते हैं। तृतीय तरंग में शकुन्तला की विदाई का दृश्य है। शकुन्तला दुष्यन्त के पास एक मुनि के साथ जाती है। मुनि दुष्यन्त को ऋषि का आदेश सुनाते हैं। राजा कहता है—"सकुन्तला को ब्याही को है। मोहि नहीं यह सुधि तनको है।" शकुन्तला गौतमी और मुनि के प्रयास करने पर भी जब दुष्यन्त ने स्वीकार नहीं किया तो राज-द्वार से आश्रम वासी लौटे और अग्नि ज्वाला शकुन्तला को आकाश में उठा कर ले गई।

चतुर्थ तरंग में दुष्यन्त को शकुन्तला के हाथ से गिरी हुई अंगूठी मिल जाती है। मातलि राजा को इन्द्रलोक में ले जाता है। मार्ग में शकुन्तला से राजा का मिलन होता है।

सगर विजय (सन् १६३२, पृ० १११), *ले० :* उदयशंकर भट्ट; *प्र० :* मसिजीवी प्रकाशन, नई दिल्ली; *पात्र :* पु० ११, स्त्री ३, *अंक :* ५; *दृश्य :* ५, ५, ५, ५, ५।
घटना-स्थल : अयोध्या राज्य, जंगल, आश्रम।

इस पौराणिक नाटक में राजा सगर की वीरता और उनके दान, शील और शौर्यादि गुणों का वर्णन है। अयोध्या के राजा बाहु की विशालाक्षी और बर्हि नाम की दो रानियाँ हैं। दुर्दम नामक राजा बाहु को परास्त करके स्वयं राज्य पर अधिकार कर लेता है। बाहु अपनी गर्भवती पत्नी विशालाक्षी के साथ वन में शरण लेते हैं। इससे बर्हि को ईर्ष्या होती है। वह ईर्ष्यावश दोनों को विष दे देती है। परिणामस्वरूप बाहु की मृत्यु हो जाती है, किन्तु विशालाक्षी जीवित रहती है जिसे बाद में वशिष्ठ ऋषि आश्रय देते हैं। उन्हीं के आश्रम में विशालाक्षी सगर को जन्म देती है। बर्हि एक बार पुनः सगर को समाप्त करने का उपक्रम करती है किन्तु कुन्त और मिदुर द्वारा रक्षा हो जाती है। बड़ा होकर यही सगर अयोध्या का राजा बनता है। बर्हि आत्महत्या कर लेती है। विशालाक्षी की भी मृत्यु हो जाती है और राजा दुर्दम का अन्त बन्दीगृह में होता है। राजा सगर विश्वविजयी एवं चक्रवर्ती होते हैं।

समाई (सन् १६५३, पृ० ६८), *ले० :* शम्भूदयाल सक्सेना; *प्र० :* नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर; *पात्र :* पु० ४, स्त्री ३; *अंक-रहित; दृश्य :* ६।
घटना-स्थल : दीवानखाने का एक छोटा कमरा, कॉलिज होस्टल, गोपाल चन्द की हवेली।

इस सामाजिक नाटक में अर्थाभाव के कारण समाज में प्रचलित अनमेल विवाह का मार्मिक चित्रण किया गया है।

मुरलीधर एक मध्यमवर्गीय गृहस्थ है। परिवार के सभी लोग उसी पर आश्रित हैं। उसकी आय का एक मात्र साधन लेखन है। ग्रन्थों की टीका करने से लेखनी के भरोसे अर्जित धन पर ही इस परिवार का पोषण होता है। जमुना, मुरलीधर की धर्म-पत्नी है। वीणा और नैना दोनों इस दम्पति की कन्यायें हैं। वीणा लगभग १४-१५ वर्षीया विवाहयोग्य युवती है, नैना अभी ८-६ वर्ष की अबोध बालिका है। कन्याओं के विवाह के व्ययशील प्रपञ्च में ही सारी कमाई खर्च हो चुकी है। किसी तरह भोजन वृत्ति चल रही है। वीणा के विवाह के

लिए जगह-जगह अपने हितैषी व्यवहारिकों से मुरलीधर ने बात चला रखी है। परन्तु जहाँ जाते हैं, अनुकूल घर-वर मिलने पर सौदा पटना ही मुश्किल हो जाता है। नकद दहेज और अन्य खर्च इतना अधिक मांगा जाता है कि अल्प आय के व्यक्ति मुरलीधर उसे निभा सकने में असमर्थ होते से, छोड़कर हट जाते हैं।

मुरलीधर को सभी जगह से जवाब मिलते हैं। बहुत कोशिश करने तथा चाहने पर भी उचित एवं योग्य वर नहीं मिलता। एक गँवार लगभग ४०-४५ वर्ष का व्यक्ति गोकुल वीणा से विवाह का इच्छुक है। वह बार-बार मुरलीधर के यहाँ इस संबंध में बातें करने के लिए जाता है, परन्तु यमुना और मौन रूप से वीणा स्वयं इस संबंध को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं। सेठ गोपाल चन्द का भतीजा शेखर है, वीणा के गुणों का प्रशंसक और परिवार का हितैषी है। परन्तु जातीय बन्धन और सामाजिक रिवाज के कारण इस प्रेम सूत्र में बहुत बड़ी उलझनें हैं जिससे दोनों हार्दिक उद्‌गारों को दबाये रह जाते हैं। विवश होकर मुरलीधर सेठ गोपाल चन्द के हाथ ६००) में अपना मकान बेच देता है और शादी भी उस व्यक्ति के साथ नहीं कर पाता जो वीणा के योग्य था। अन्तत: विवश होकर उसी गोकुल से संबंध करना पड़ता है। यह खबर पाकर शेखर यद्यपि घर आकर कुछ दूसरा रूप देने को था पर सफल न हो सका। अन्त में नौ सौ रुपयों की थैली लिए वीणा इलाहाबाद के होस्टल में रहने वाले शेखर के सामने पहुँचती है। रुपए पटक कर अपने भग्न हृदय का सजीव दृश्य उपस्थित करते हुए जमीन पर अचेत गिर पड़ती है। पीछे से गोकुल भी "मेरी स्त्री मेरी स्त्री" कहते हुए आता है। डॉक्टर वीणा के उपचार में लगा है। सब विकल हैं।

सज्जाद सुम्बुल (सन् १९०४, पृ० १२९), ले० प० केशवराम भट्ट, प्र० भारत मित्र प्रेस, कलकत्ता, पात्र पु० ११, स्त्री ६, अंक ६, झांकी ४, ४, ६, ५, ५, ५।
घटना-स्थल सज्जाद का घर।

इस ऐतिहासिक नाटक में जीवन का उतार-चढ़ाव दिखाया गया है।

जमींदार सज्जाद लड़कपन से ही सुम्बुल का पालन-पोषण कर उसे बड़ा करता है और दूसरी ओर अब्बास को शमशेर बहादुर पालता है। अब्बास पर चोरी का इल्जाम लगता है परन्तु वह सज्जाद द्वारा बचा लिया जाता है। सज्जाद का सुम्बुल से प्रेम हो जाता है किसी कारण वश वह घर से भाग जाती है। परन्तु कहीं ठिकाना न मिलने पर खुदकशी करके मर जाती है।

सत हरिश्चन्दर उर्फ तमाशा गर्दिशे तकदीर (सन् १८९१), ले० मिर्जा नजीर बेग 'नजीर', प्र० मनवा इलाही, आगरा, पात्र पु० ८, स्त्री २।
घटना स्थल राजा हरिश्चन्द्र का महल, काशी, ब्राह्मणी का घर, गंगातट।

नाटक की कथावस्तु पुराण प्रसिद्ध हरिश्चन्द्र से सम्बन्धित है। इन्द्र की सभा में विश्वामित्र और वशिष्ठ के विवाद के परिणामस्वरूप हरिश्चन्द्र के सत्य की परीक्षा लेने का निर्णय होता है। विश्वामित्र स्वप्न में हरिश्चन्द्र का राज्य लेते हैं और दक्षिणा चुकाने के लिये राजा को अपनी पत्नी और स्वयं को बेचना पड़ता है। रोहित का सर्प-दंश से मृत होना तथा शैव्या विलाप आदि समस्त घटनाओं का भी नाटक में समावेश है।

सती अनसूया नाटक (सन् १९३६, पृ० ११२), ले० रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल, प्र० बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर एंड संस, वाराणसी, पात्र पु० १७, स्त्री ७, अंक ३, दृश्य ७, ६, ४।
घटना-स्थल साकेत लोक।

इस पौराणिक नाटक में सती अनसूया की कथा चित्रित है। नाटक का प्रारम्भ अत्रि (अनसूया के पति) के आश्रम से होता है। भीषण गर्मी है। गर्मी से सभी संतप्त हैं। मानव तथा वनचर प्यास के मारे व्याकुल मरणासन्न हुए जा रहे हैं। सभी मिलकर अनसूया के पास आते हैं क्योंकि अत्रि ध्यान-

मग्न हैं। अनसूया अपने पातिव्रत धर्म से गंगा को प्रकट करती है अतः सभी जल से तृप्त होते हैं। इसके बाद के प्रसंग में अनसूया नर्मदा को सशरीर स्वर्ग भेज देती है। अनसूया के पातिव्रत धर्म से लक्ष्मी-पार्वती एवं सरस्वती को ईर्ष्या होती है। वे अपने पतियों को भेजकर अनसूया की परीक्षा लेती हैं एवं पराजित होकर लज्जित होती है।

सती चन्दनवाला (सन् १९२७, पृ० २०७), ले० : शेरसिंह जैन; प्र० : प्यारेलाल देवी-सहाय, सदर बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० १३, स्त्री ८; अंक : ३; दृश्य : ६, ६, ६।
घटना-स्थल : जंगल, देवी का मंदिर, दुर्ग, घर, वेश्या बाजार।

इसका कथानक भगवान् महावीर के जीवन काल की मार्मिक घटना के आधार पर निर्मित है। जिन दिनों भगवान् महावीर संन्यास लेकर उपदेश देते फिर रहे थे उन्हीं दिनों कुटिल राजा शतानीक धर्मात्मा राजा दधिवाहन को धोखा देकर मार डालता है। राज्य पर अधिकार कर रानी धारणी पर बलात्कार करना चाहता है। रानी खंजर भोंककर अपना प्राण त्याग करती है। सेनापति राजकुमारी चंदनबाला को अपने घर ले जाता है। और एक वेश्या के हाथ उसे बेच देता है। उस वेश्या को धन देकर सेठ धनवाहा उसे क्रय कर लेता है पर उसकी स्त्री पति पर लांछन लगाकर चन्दनवाला को अँधेरे तहखाने में डाल देती है, जहां वह अन्नजल के बिना पड़ी रहती है। चन्दनवाला के कष्टों को देखकर भगवान् महावीर स्वयं पहुँच जाते हैं। सती की प्रार्थना सुनकर भगवान् लोहे की बेड़ियां खोल देते हैं और देवता उसके प्रांगण में धन की वर्षा करते हैं। इसी समय आकाशवाणी होती है—

"ऐ राजा शतानीक कौशाम्बी नगरी के निवासियों, इस सारी सम्पत्ति की स्वामिनी चंदनवाला है।"

इस प्रकार धर्माचरण में निष्ठा रखने के उद्देश्य से यह नाटक लिखा गया। इसमें एक स्थान पर बलि देने वाले महन्तों का भी दृश्य दिखाया गया है और अहिंसा पर बल दिया गया है।

सती चन्द्रावली (सन् १८९०), ले० : राधाचरण गोस्वामी; प्र० : राजस्थान यंत्रालय, जयपुर; पात्र : पु० ३, स्त्री १; अंक-रहित, दृश्य : ७।
घटना-स्थल : पनघट, अशरफ का घर।

'इस नाटक में चन्द्रावली अपनी सखियों के साथ जल भरने जाती है। शाहजादा अशरफ उसे पकड़ लेता है और उसका पिता औरंगजेब जनता की प्रार्थना को ठुकराकर चन्द्रावली को मुक्त करना अस्वीकार कर देता है। हिन्दुओं के विद्रोह में अशरफ की मृत्यु होती है। औरंगजेब रोषपूर्ण होकर नाना प्रकार के अत्याचार करता है। चन्द्रावली स्वतः अग्नि में भस्म हो जाती है। इस ऐतिहासिक नाटक में एक वीर नारी का चरित्र दिखाया गया है, जो राज-सुख को त्यागकर अपने धर्म पर आरूढ़ रहती है और धर्मरक्षा के लिए युद्ध करते हुए शरीर त्याग देती है। इस प्रकार यह दुःखान्त नाटक समाप्त होता है।

सती चरित नाटक (सन् १८९०, पृ० ६४), ले० : कुँवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी; प्र० : राजपूत ऐंग्लो-ओरिएन्टल प्रेस, आगरा; पात्र : पु० १५, स्त्री ५; अंक : ७; गर्भांक : ३, १, १, १, १, १, १।
घटना-स्थल : चन्द्रोदय सिंह का भवन, शशिकला के गृह का आंगन, चन्द्रोदय सिंह की बारहदरी, हवन मण्डप, नृत्यशाला।

एक कुलीन पतिव्रता के सच्चरित्र पर आधारित इस नाटक में यह दिखाया गया है कि एक स्त्री के सतीत्व की रक्षा केवल उसकी अपनी शक्ति पर ही निर्भर है। इसमें एक क्षत्रिय कुलवती युवती अपने सतीत्व की रक्षा एक दुराचारी पुरुष से स्वयं उसका संहार करके करती है।

सती चिन्ता (सन् १९२०, पृ० १२८), ले० : जमुनादास मेहरा, प्र० : रिखबदास वाहिती, कलकत्ता; पात्र : पु० १०, स्त्री ६; अंक :

३, दृश्य २३।
घटना स्थल महाराजा श्रीवत्स का दरबार।

इस पौराणिक नाटक मे सती का प्रभाव दिखाया गया है।

महाराज श्रीवत्स के दरबार में शनि देव तथा लक्ष्मी का वाद-विवाद हो गया है। प्रत्येक अपने को श्रेष्ठ बताता है। इस विषय की मीमांसा, वे श्रीवत्स से कराना चाहते हैं। श्रीवत्स लक्ष्मी को शनि से श्रेष्ठ घोषित करते हैं। शनिदेव वत्स पर कुपित हो जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप वत्स को अपनी रानी चिन्ता के साथ दर-दर भटकना पड़ता है। अन्त मे सती चिन्ता के प्रताप तथा सत्यवादिता के कारण शनिदेव वत्स पर कृपा करते हैं। लक्ष्मी के वरदान से वत्स अपना राज्य और पूर्व से भी अधिक सुख प्राप्त करते हैं।

सती दहन नाटक (सन् १९१२, पृ० ३०), ले० : रामगुलामलाल, प्र० : प्रह्लाद बुक्सेलर, चौक पटना सिटी, पात्र पु० ५, स्त्री २, अक-रहित दृश्य १२।
घटना-स्थल दण्डक वन, वन-मार्ग, दक्ष-भवन, यज्ञशाला, विष्णुलोक।

इस पौराणिक नाटक मे सतीजी शिवजी का कहना न मानकर रामचन्द्र जी की परीक्षा के लिए जाना, शिवजी का त्यागना, सती जी का बिना बताये अपने पिता दक्ष के घर जाना और यज्ञ में अनादर पाकर शरीर त्यागना दर्शाया गया है।

सती पार्वती (सन् १९३९, पृ० २१६), ले० राधेश्याम कविरत्न, प्र० : राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, पात्र पु० १५, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ९, ६, ६।
घटना स्थल कैलाशपुरी।

इस नाटक के विषय में नाटककार का कथन है कि यह नाटक पौराणिक है। परन्तु पौराणिक होते हुए भी यह आधुनिक समय के लिए उपयुक्त है। सती-पार्वती और भगवान शकर का चरित्र चित्रण निस्सदेह, इस नाटक का मुख्य सौन्दर्य है।

भगवान् शिव के प्रति सती की निष्ठा प्रकट करना ही नाटककार का मुख्य उद्देश्य है।

सती लीला वा शिव पार्वती (सन १९२५, पृ० १४२), ले० रामशरण 'आत्मानन्द', प्र० उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, पात्र पु० १३, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ६, ११, ३।
घटना-स्थल दक्ष की नगरी, यज्ञ मडप, कैलाशपुरी।

इस पौराणिक नाटक मे शिव-सती के माध्यम से आदर्श दाम्पत्य जीवन की स्थापना की गई है।

प्रजापति दक्ष की कुमारी कन्या सती शिव को वर रूप में प्राप्त करने का वरदान शिव से प्राप्त कर लेती हैं। किन्तु दक्ष शिव को कपाल, औघड तथा अपना शत्रु समझ कर उसे अपनी कन्या देना स्वीकार नहीं करता है। दक्ष शिव का अपमान करने के लिये सती स्वयवर का आयोजन करता है और उसमे शिव को निमन्त्रित नहीं करता। अन्य सभी देवताओं तथा राजाओं को निमन्त्रित किया जाता है। स्वयवर में प्रजापति दक्ष स्वय सती द्वारा चुने पुरुष के साथ सती के विवाह की घोषणा करते हैं। समझदार राजा सती को जगदम्बा मान कर केवल दर्शक बनकर स्वयवर मे आते हैं। सती शिव की प्रार्थना करती है। शिव प्रकट होकर सती की जयमाला स्वीकार कर उन्हें अपने साथ ले जाते हैं। दक्ष इस पर बहुत क्रुद्ध होता है। वह शिव-विरोध का निर्णय कर राज्य मे शिव-पूजा वर्जित कर देता है।

दूसरे अक मे कीर्ति को शिव भक्ति के कारण दण्डित किया जाता है। शिव उसकी रक्षा करते हैं। दूसरी ओर दक्ष भृगु के यज्ञ का विरोध करता है और उसकी निन्दा करता है। शिव वहाँ भी शान्त रह कर यज्ञ निर्विघ्न समाप्त होने देते है।

तृतीय अक मे दक्ष शिव के अपमान के

लिये यज्ञ का आयोजन करता है जिसमें शिव को निमंत्रित भी नहीं करता। नारद से समाचार पाकर सती पति की अनिच्छा पर भी पिता के यज्ञ में सम्मिलित होने जाती है। वहाँ सती अपमानित होती है और शिव की निन्दा न सुन सकने के कारण अपना शरीरांत यज्ञ-भूमि में करती है। शिव तथा उनके गण यज्ञ का विध्वंस कर दक्ष को मारते हैं किन्तु पुनः देवताओं की प्रार्थना पर उसके सिर पर बकरे का सिर लगा जीवित करते हैं। इस अंक का अन्तिम भाग शिव की वियोगावस्था प्रस्तुत करता है। विष्णु और ब्रह्मा की सहायता से उसका शमन किया गया है। विष्णु हिमालय-कन्या पार्वती में सती की पुनः प्राप्ति तथा शिव की पत्नी-भक्ति और सती के पातिव्रत धर्म की प्रशंसा करते हैं।

सती वृन्दा नाटक (सन् १६२६, पृ० १८२), ले० : शम्भूराम नागर; प्र० : श्याम काशी प्रेस, मथुरा; पात्र : पु० २४, स्त्री ११; अंक ३, दृश्य : ७, १२, ८।
घटना-स्थल : स्वर्ग, तारकापुर का सिंहासन, तपोवन, बट्वृक्ष, यशोदा का घर, गोवर्धन पर्वत, वृन्दावन वंसीवट।

इस पौराणिक नाटक में वृन्दा का सतीत्व चित्रित किया गया है।

तारकापुर नामक राक्षस ब्रह्मा से विवाद करता है कि वह देवताओं का क्यों पक्ष लेते हैं। देवता विरोध व र बृहस्पति अन्यायी और अधर्मी हैं। ब्रह्मा समझाते हैं कि 'तुम दोनों भाई हो, क्यों आपस में लड़ते हो।' तारकापुर कहता है कि देवताओं की चाल का पता मुझे नारद से लगता रहता है। मेरे हाथ में शमशीर है। मैं बैरियों का कलेजा चीर देवों का काम तमाम करूँगा। इसी प्रकार जालंधर अपने पिता समुद्र पर क्रुद्ध होता है कि वह देवताओं का पक्ष क्यों लेते हैं। जालंधर विष्णु के पास युद्ध करने जाता है। दोनों में युद्ध होता है। इधर जालंधर की पत्नी और कालनेमि की कन्या वृन्दा जंगल में विष्णु भगवान् की उपासना करती है। वह अपने पिता और पति को विष्णु का विरोध करने से रोकती है। वृन्दा की उपासना से रीझकर भगवान् विष्णु कृष्ण का अवतार धारण कर रास रचाते हैं।

शिव भी सती रूप में प्रकट होते हैं। कृष्ण वृन्दा को समझाते हैं कि ये गोपेश्वरी हैं। इन्हीं का तुमने तप किया था; यही तारकापुर, जालंधर के संहारक हैं, इन्होंने तुमको रास्ता बताया है। शिव वृन्दा से कहते हैं कि तुम्हीं तुलसी हो, एक रूप में वृक्ष हो, एक रूप से श्याम के संग तुलसी हो।

कृष्ण वृन्दा को वरदान देते हैं कि जो लोग भक्ति से तेरा प्रेममय पूजन करेंगे उन के घर में भूत-प्रेत, रोग-शोक की बाधा कभी न होगी।

नाटक में सूत्रधार नटी भरतवाक्य आदि का निर्वाह पाया जाता है।

सती वेश्या अथवा समाज की भूल (सन् १६४८, पृ० ११०), ले० : मुंशी दिल लखनवी; प्र० : न्यू स्टैन्डर्ड पब्लिकेशन्स, १८१४ चन्द्रावल रोड, दिल्ली; पात्र : पु० १६, स्त्री ७; अंक : ३, दृश्य : ८, ६, ४।
घटना-स्थल : सेठ लक्ष्मीचन्द का मकान, वेश्यागृह।

इस नाटक में स्त्रियों की वेश्यावृत्ति के लिए समाज को उत्तरदायी बताया गया है। दीवान चन्द अपनी कन्या को रुपये के लोभ में सेठ लक्ष्मीचन्द के हाथ बेच देता है। पत्नी के विरोध करने पर उसे मायके भेज देता है। वह पुत्री के प्रति अन्याय को न सहन कर गाड़ी से आत्महत्या कर लेती है। उसका लड़का पिता को अपनी पत्नी के साथ अनैतिक सम्बन्ध का आरोप लगा कर दीवानचन्द को घर से निकाल देता है और वह भी वेश्यागामी हो जाता है। लक्ष्मीचन्द नन्हीं बालिका निर्मला के साथ पत्नीवत भोग चाहता है। निर्मला अपनी बेबसी से उस पिशाच से पीछा छुड़ाती है। उसका भतीजा मनोहर उसका अन्त कर निर्मला को भी निकाल बाहर करता है। वह आत्महत्या पर उतारू होती है किन्तु कामिनी वेश्या उसे वेश्यावृत्ति की शिक्षा देती है। प्रथम और द्वितीय सेठ के रूप में उसका भाई सुन्दर और भतीजा मनोहर उस

से प्रणय निवेदन करते हैं। सुन्दरदास भेद जानने पर लज्जित होता है और मनोहर की हत्या कर देता है। सुन्दर की पत्नी प्रभावती पति के स्थान पर स्वयं खूनी का दोष अपने ऊपर ले लेती है। निर्मला, दुलारी के नाम से वेश्या बाजार में है। वहाँ उसका बाप कोढी होकर आ जाता है। वह उसे भी अपना कच्चा चिट्ठा सुनाती है। एक निरंजन नाम का साधु डाके आदि डलवाकर गरीब ब्राह्मणों की कन्याओं की शादी में मदद करता है। वही बेचारी निर्मला का भी उद्धार करता है। निर्मला को अपने माता-पिता की इज्जत का ध्यान रहता है। वह नृत्य करके निर्वाह निमित्त नर्तकीवृत्ति अवश्य करती है किन्तु पाप कर्म से रहित है।

सती शिरोमणि (सन् १९७०, पृ० ८४), ले०। चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि', प्र० ब्रह्मलोक कार्यालय, रायबरेली, बछरावाँ, पात्र पु० ६, स्त्री ८, अंक ३, दृश्य ११, ७, ३। घटना स्थल आश्रम, घर, वन मार्ग, गंगा तट।

विश्वद्रोहियों के स्नान से भागीरथी (गंगा) श्यामवर्ण होने पर पवित्र होने हेतु सती की चरण धूलि के लिए सब जगह भटकती है। अन्त में महासती अनसूया उसे स्वेच्छा से चरण-धूलि देकर पवित्र करती हैं। उनके इस कृत्य से सावित्री, लक्ष्मी एवं पार्वती के सतीत्व-अभिमान को ठेस लगती है। अतएव अनसूया के प्रति उनमें प्रतिशोध की भावना जाग्रत होती है। शाण्डिली (शैव्या) नामक कुमारी की जिससे विवाह की चर्चा होती है वह मर जाता है। इस पर अनसूया उसे प्रात काल मंदाकिनी के तट पर मिलने वाले व्यक्ति को पति बना लेने की सम्मति देती है। प्रतिशोधमयी त्रिदेवियाँ (सावित्री, लक्ष्मी और पार्वती) भिक्षुक तथा कोढी पुण्डरीक को उस समय आत्महत्या की प्रेरणा देकर वहाँ भेजती हैं। शाण्डिली उसे अपना लेती है। त्रिदेवियाँ जोगी-ऋषि माण्डव्य को अनसूया के विरुद्ध कर उन्हें शाप देने भेजती हैं, किन्तु वे भी अपनी कृत्याग्नि से त्राण पाने हेतु महासती की शरण ग्रहण करते हैं। अन्त में चोरी के अभियोग में नतुष्पथ पर उन्हें शूली पर चढ़ाया जाता है किन्तु प्राणायाम के बल के कारण शूली उन्हें बेध नहीं पाती। इसी बीच पुण्डरीक का पैर लगने से माण्डव्य का ध्यान भंग होता है। वे पुण्डरीक को सूर्योदय के साथ ही मर जाने का शाप देते हैं। किन्तु शाण्डिली अपने तप से सूर्योदय नहीं होने देती। अन्त में अनसूया के यह आश्वासन देने पर कि तुम्हारे पति का कुछ क्षणों के लिए प्राणांत होगा उसके पश्चात् उसे अमृत द्वारा पूर्ण स्वस्थ रूप में पुन जीवित कर दिया जायगा, शाण्डिली अपने वचन को वापस ले लेती है। सूर्योदय के साथ पुण्डरीक की मृत्यु होती है किन्तु अमृत के प्रभाव से स्वस्थ एवं सुन्दर रूप में वह पुनर्जीवित होता है। त्रिदेवियों की प्रतिशोधाग्नि इस पर भी शांत नहीं होती। इसके लिए वे अपने पतियों को भी माध्यम बनाती हैं। त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) ब्रह्मचारियों के रूप में अनसूया के यहाँ पहुँचते हैं। वह उनका स्वागत करती है। भोजन करने के लिए छद्मवेशी त्रिदेव अनसूया से नग्न होकर परोसने को कहते हैं। इस पर सन्देह होता है। वह अपने पातिव्रत बल से उन्हें छ छ महीने के बालक बना देती है। अन्त में त्रिदेवियाँ अनसूया से अपने पतियों की भिक्षा माँगती हैं। इस प्रकार उनका गर्व-मोचन होता है।

सती सरला (सन् १९००, पृ० ११०), ले० चन्दन लाल अग्रवाल, प्र० श्री कृष्ण पुस्तकालय, चौक, कानपुर, पात्र पु० १२, स्त्री ८, अंक ३, दृश्य २, ६, १८। घटना-स्थल जंगल, वेश्यागृह।

इस सामाजिक नाटक में आदर्श-नारी के सतीत्व की रक्षा दिखाई गई है।

लम्पट बेनी कलावती, सरला आदि लडकियों को गाय चराती हुई अकेली पा उनका अपहरण करना चाहता है। उनके चिल्लाने पर कृष्ण, श्याम आदि आकर लडकियों की रक्षा करते हैं। बेनी अपने कामुक स्वभाव के

कारण समाज की सभी बुराइयों से ओतप्रोत हैं। मदन प्रभा वेश्या के यहाँ जाता है तथा शराब पीकर अपनी कामुक इच्छाओं की पूर्ति करता है। शराब के नशे में एक दिन वह भरे समाज में कलावती का हाथ पकड़ने की कोशिश करता है। कलावती पास पड़े ईंट के टुकड़े से उसे घायल करती है तथा अपनी रक्षा के लिए चिल्लाती है। श्याम और कृष्ण समय पर आकर उसकी रक्षा करते हैं। उनके इसी उपकार के कारण श्याम और कलावती का आपस में विवाह कर दिया जाता है और सरला अपने पति की सेवा से सदैव अपनी प्रतिष्ठा बचाने में सफल रहती है।

सती सुकन्या (सन् १९१२, पृ० १०४), ले० : श्यामचरण जौहरी; प्र० : उपन्यास बहार आफिस काशी, बनारस; पात्र : पु० ६, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ८, ३, ३।
घटना-स्थल : उपवन, च्यवन ऋषि का आश्रम।

यह एक पौराणिक नाटक है। राजा शर्याति की कन्या सुकन्या को एक दिन उपवन में सखियों सहित घूमते समय वल्मीकि में दो चमकते हुए रत्न से दिखाई पड़ते हैं। उन्हें निकालने के लिए कांटों से जब कुरेदती है तो उनमें से रक्त बहने लगता है। वास्तव में वह च्यवन ऋषि की आँखें थी। च्यवन और सुकन्या में बातें होती है। सुकन्या च्यवन की दासी बनना चाहती है पर च्यवन उसे उसके पिता की अनुमति से पत्नी रूप में ग्रहण करना चाहते हैं। सुकन्या के माता-पिता उसका विवाह एक राजकुमार से करना चाहते हैं। पर सुकन्या च्यवन ऋषि को ही पति बनाने पर दृढ़ है। दोनों का विवाह हो जाता है और सुकन्या के पातिव्रत से च्यवन को नेत्रों के साथ युवावस्था प्राप्त हो जाती है। शिव पार्वती तथा अन्य देवता सुकन्या के पातिव्रत धर्म की सराहना करते हैं। महाराज शर्याति सोमयज्ञ करते हैं, जिसमें सम्मिलित होकर इन्द्र, सूर्य, नारद सती सुकन्या का यशोगान करते है। अन्त में नारद कहते हैं "हे सुकन्ये! तुम धन्य हो। तुमने आर्य ललना-समाज का मुख उज्ज्वल किया। तुमने सतीत्व धर्म का अपूर्व प्रताप दिखाया।"

सती सुलोचना (सन् १९६५, पृ० १०४), ले० : चन्द्रशेखर पाण्डेय 'चन्द्रमणि'; प्र० : राय बरेली, भारती भवन, बन्नावाँ, पात्र : पु० २०, स्त्री ३; अंक : ३, दृश्य : ६, १०, ३।
घटना-स्थल : पहाड़ी, राजभवन, मार्ग, दरबार, युद्धभूमि।

यह पारसी शैली का धार्मिक एवं सामाजिक नाटक है। तप द्वारा ब्रह्मा से वरदान पाकर मेघनाद इन्द्रलोक पर आक्रमण करता है। आरम्भ में उसका पिता रावण इन्द्र द्वारा बन्दी बनाया जाता है, किन्तु अन्त में मेघनाद की विजय होती है। पिता के अपमान का बदला लेने के लिए वह इन्द्र का पीछा करता हुआ नागलोक पहुंचता है। नागराज वासुकी की पुत्री सुलोचना मेघनाद के अद्भुत पराक्रम और सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाती है। इन्द्र को शरण देने के कारण नागराज से मेघनाद का युद्ध होता है। विजयी मेघनाद इन्द्र को बंदी बनाने के साथ-साथ क्षति-पूर्ति के रूप में सुलोचना का हरण करता है। ब्रह्मा के सुझाव पर मेघनाद इन्द्र को मुक्त कर देता है।

युद्ध में कुम्भकरण की मृत्यु पर दुखी पिता (रावण) को सान्त्वना देकर मेघनाद विजय की आशा से निकुम्भिला पहाड़ी के अन्तराल में आसुरी यज्ञ करता है। सूचना पाकर वानरी सेना-सहित लक्ष्मण उसका यज्ञ विध्वंस करते हैं और सम्मुख समर में मेघनाद का वध करते हैं। पति-मृत्यु की सूचना पाकर सुलोचना राम के पास आकर उसका शीश माँगती है और उसके साथ सती हो जाती है।

सत्य का स्वप्न (सन् १९५४, पृ० ११४), ले० : रामकुमार वर्मा; प्र० : किताब महल, इलाहाबाद; पात्र : पु० १५, स्त्री ८, अंक : रहित; दृश्य : शताधिक दृश्यांतर हैं।
घटना-स्थल : गोकुल, यमुना तट, पहाड़, राज-

पथ, कामकन्दला का उपवन, उज्जयिनी का राज-उपवन, महाकालेश्वर का मन्दिर।

नाटक में भारतीय कला और संस्कृति का सौन्दर्य प्रस्तुत किया गया है। इसमें श्री-कृष्ण के मथुरा चले जाने पर राधा सहित गोपियाँ बड़ी दुखी होती हैं। राधा को इस दुख में देखकर कामदेव रति-सहित नृत्य करता हुआ आता है और राधा पर पुष्पवाण से प्रहार करता है। राधा उसे प्रिय वियोग का शाप देती है।

यही कामदेव आगे चलकर एक माधव नाम का प्रसिद्ध वीणावादक होता है तथा रति भी कामावती नगरी की प्रसिद्ध कामकन्दला नाम की राजनर्तकी होती है। माधव के वीणावादन पर पुष्पावती नगरी की स्त्रियाँ मोहित हो जाती हैं जिससे राजा उसे राज्य-निर्वासित कर देता है। माधव वहा से कामावती नगरी में पहुचता है। वहा पर राजकक्ष में माधव का वीणा-वादन होता है जिस पर राजनर्तकी कामकन्दला मुग्ध हो जाती है। वह नृत्य करते-करते मूर्छित हो जाती है। वहा से भी माधव को निर्वासित कर दिया जाता है।

माधव विक्रमादित्य के राज्य मे जाता है। अचानक महाकालेश्वर के मन्दिर मे उसका विक्रमादित्य से परिचय हो जाता है। विक्रमादित्य महाराज कामसेन को पत्र भेज-कर कामकन्दला को माँगते हैं। महाराज कामसेन के प्रतिकूल उत्तर से युद्ध की स्थिति बन जाती है। युद्ध काफी दिन तक चलता है। अन्त मे कामसेन की तरफ से मेढामल और विक्रमादित्य की तरफ से माधव द्वन्द्व के लिए प्रस्तुत किये जाते हैं। दोनो में युद्ध होता है जिसमे माधव विजयी होता है।

अन्त में महाराज कामसेन नर्तकी कामकन्दला माधव को भेंट करते हैं। दोनो वीणा और नृत्य की साधना मे चन्द्रकला की भाति बढते हैं और राधा का अभिशाप समाप्त होता है।

सत्यग्रह उर्फ सुकन्या सावित्री (सन् १६२३, पृ० २२४), ले० मुहम्मद इब्राहीम 'महशर' अम्बालवी, प्र० जे० एम० सत सिंह एण्ड सन्स ल्हाौर, पात्र पु० ७, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ३७।
घटना-स्थल राजमहल, जगल, झोपडी।

इस पौराणिक नाटक में सुकन्या अपनी तपस्या के बल से च्यवन मुनि को नेत्रवान् और वृद्धावस्था मे पुन युवा बना देती है। अर्थात् सती नारी के तपोबल का महत्त्व दिखाया गया है।

एक राजा की कन्या सुकन्या अपनी सखी ललिता, रूवती, रमोलिता के साथ जगल मे मनोरजन के लिए जाती है। वहाँ पर्णकुटी में एक ऋषि बैठा तपस्या कर रहा है जिसके नेत्र चमक रहे हैं। सुकन्या कुतूहल बस अनजाने मे उन्हे काँटा चुभो देती है जिससे रक्त की धारा बहने लगती है। राजकुमारी रक्त की धार पर पानी छिडक देती है और ऋषि की आखें नष्ट हो जाती हैं। सुकन्या अन्धे च्यवन ऋषि से क्षमा मागती है किन्तु इतने से ही सुकन्या के मन में शाति नही हो पाती और वह ऋषि की आजीवन सेवा के लिए उनसे विवाह का सकल्प करती है। उसके मा बाप और उसकी सहेलिया बहुत मना करती हैं किन्तु वह सब की उपेक्षा करते हुए ऋषि से विवाह करने का आग्रह करती है। अन्त मे माँ बाप प्रसन्नता मे विवाह की आज्ञा देते हैं और शहर का दृश्य दिखाने ले आते हैं जहा राजकुमार सत्यवान को उसका चचा बन्दी बनाने के लिए सेनापति को आदेश दे रहा है।

दूसरे अक मे राजा अश्वपति अपनी बेटी सावित्री और उसकी सहेलियों को देश-देशान्तर मे भ्रमण कराने ले जाते हैं। वह एक नगर मे पहुँचते हैं जहा राजकुमार सत्य-वान को बन्दी बनाने के लिए उसका चचा सेनापति को आदेश देता है। वह राजा रानी और राजकुमार को बन्दी बनाना चाहता है किन्तु सत्यवान किसी प्रकार उस वन मे पहुँच जाता है जहाँ सावित्री अपने मा-बाप के साथ घूम रही है। सावित्री और सत्यवान एक दूसरे को देख लेते हैं और दोनो एक दूसरे से विवाह करने की प्रतिज्ञा कर

लेते हैं। विवाह के एक वर्ष बाद सत्यवान की मृत्यु होने को है इसे सावित्री जानती है। अन्तिम दिन सत्यवान को साँप काट लेता है और यमराज उसका शव लेने के लिए आते हैं सावित्री उनसे अपने सतीत्व के द्वारा पति का जीवन, सास-ससुर की आँखें और अपना खोया हुआ राज्य मांगती है। सावित्री और सत्यवान सुखपूर्वक अपने राज्य को वापस आते हैं।

इसमें दो नाटकों को एक साथ मिलाया गया है।

सत्यनारायण (वि० १९७६, पृ० ११८), ले० : बलदेव प्रसाद खरे; प्र० : निहालचन्द एण्ड कम्पनी, नारायण प्रसाद बाबूलेन, कलकत्ता; पात्र : पु० २५, स्त्री ६; अंक : ३; दृश्य : ५, ८, ६।
घटना-स्थल : पूजन स्थल।

इस नाटक का आधार हिन्दू जाति में प्रचलित श्री सत्यनारायण की कथा है। घोर कलिकाल में भगवान् सत्यनारायण की कथा श्रद्धा और भक्ति से सुनने से परमाराध्य भगवान् भक्त-वत्सल दीनबन्धु के पाद-पद्मों में स्थान मिलता है, इस बात का इसमें स्पष्टीकरण किया गया है। नाटक में 'कौमिक' प्रहसन दिया गया है, नाटक का कथानक स्कन्दपुराण के विशेष अंश से लिया गया है।

मनुष्य पर विपत्ति का पड़ना और सत्यनारायण भगवान् की कृपा से उसका कष्ट-निवारण यही नाटक का मुख्य विषय है। कलावती की कथा इसीलिए प्रसिद्ध है।

सत्यभक्त रामदास नाटक (सन् १९५४, पृ० १२८); ले० : रामदयाल जड़िया 'सेवक'; प्र० : मोडव्य प्रकाशन मंदिर, नसीराबाद; पात्र : पु० ७, स्त्री ४; अंक : ३, दृश्य : ६, ७, ८।
घटना-स्थल : यज्ञमंडप, स्कूल, पनघट, महल, हरिजन बस्ती, गंगातट, आश्रम।

तत्कालीन विनाशकारी विभीषिका में 'सत्यभक्त रामदास जीवन'—'निर्माणकारी पथ का प्रतीक है। गरीब तथा अछूत, पंडों के अत्याचारों से तंग आकर दूसरे मतों का ग्रहण करते हैं। उनके हृदय में प्रतिशोध की भावना भी रहती है परन्तु विधर्मी होकर भी हिन्दुओं के विरोधी होते हुए वे हिन्दू धर्म के दोषी नहीं। भोली का जीवन इसका प्रमाण है। अछूत होने के कारण भोली और उसके बच्चे को कितने कष्ट उठाने पड़ते हैं। रुग्ण अवस्था में उस अछूत बालक को एक बूंद पानी नहीं मिलता तो एक ईसाई पादरी आकर उसे दवा तथा पानी देता है और अपने तम्बू में ले जाता है। उसका बेटा रामदास वहीं पढ़ लिखकर जज बन जाता है, भोली ईसाई धर्म से प्रभावित होते हुए भी हिन्दू धर्म के आदर्शों को नहीं भूलती और रामदास को भी जो मूर्ति-पूजा नहीं मानता कृष्ण-भक्त बनाती है। हिन्दू धर्म की सच्चाई से अवगत कराती है। इस नाटक में ईसाई धर्म के प्रचारकों के सेवाकार्य की सराहना और उनकी त्रुटियों का दिग्दर्शन कराया गया है। जमींदार ठाकुर गोविन्द सिंह अछूतों पर अत्याचार कराते हैं परन्तु उनका भाई जयदेव जो गरीबों की सेवा करता है उन्हें सीधे रास्ते पर ले आता है। जयदेव अछूत-कन्या शीला को गुरुकुल भिजवा देता है और ठाकुर गुरुकुल को पांच हजार रुपये भेंट में देते हैं। नाटककार का उद्देश्य अछूतोद्धार करना है जो हिन्दू धीरे-धीरे विधर्मी बनते जा रहे हैं उन्हें फिर से अपने धर्म में मिलाना है। और हिन्दू धर्म को शक्तिशाली बनाना है। यह कार्य शीला तथा जयदेव के द्वारा कराया गया है।

सत्यमेव जयते (सन् १९६३, पृ० ९६), ले० : सूर्यनारायण मूर्ति; प्र० : दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास; पात्र : पु० १६, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ५, ६, ७।
घटना-स्थल : इन्द्र की सभा, आश्रम, शयन कक्ष, महल, जंगल, गंगा का किनारा, श्मशान।

प्रस्तुत नाटक में हरिश्चन्द्र की पौराणिक कथा वर्णित है। यह कथा दक्षिण में प्रचलित

हरिश्चन्द्राख्यान पर आधारित है, इसमें कई कल्पित प्रासंगिक कथाओं तथा पात्रों की योजना की गई है।

नाटक के प्रथम अंक का प्रथम दृश्य इन्द्र की सभा का है जिसमें अनेक ऋषियों के मध्य विश्वामित्र वशिष्ठ से यह प्रतिज्ञा करते हैं कि मैं हरिश्चन्द्र को असत्यवादी सिद्ध करूँगा। वह हरिश्चन्द्र के पास जाकर अपने एक अनुष्ठान के लिए एक करोड़ स्वर्ण मुद्राओं की मांग करते हैं। हरिश्चन्द्र के देने पर वह बाद के लिए रख छोड़ते हैं। हरिश्चन्द्र विश्वामित्र के आश्रम में हिंसक जन्तुओं का संहार करने जाते हैं तो विश्वामित्र उन्हें अपनी कल्पित पुत्री से विवाह करने के लिए कहते हैं। उनके न स्वीकार करने पर विश्वामित्र उनका सारा राज्य दान में ले लेने का वचन लेते हैं, सब कुछ लेकर भी वे एक करोड़ स्वर्ण मुद्राओं की मांग करते हैं। हरिश्चन्द्र एक महीने का समय मांगते हैं। निश्चित अवधि में ऋण चुकाने के लिए हरिश्चन्द्र पत्नी तथा पुत्र को काल कौशिक नामक ब्राह्मण के हाथ बेचते हैं तथा स्वयं चाण्डाल के यहाँ बिक जाते हैं। अनेक परितापों एवं कष्टों को सहते हुए भी वे सत्य पर अटल रहते हैं। एक दिन पुत्र रोहित को फूल चुनते समय सांप काट लेता है जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। चन्द्रमती रोहित के शव को लेकर श्मशान जाती है जहां हरिश्चन्द्र पुत्र शोक के अनन्तर भी चन्द्रमती से कफन की मांग करते हैं। चन्द्रमती कफन के प्रबंध में निकलती है किन्तु एक शिशु के शव को देखकर उसे गोद में उठा लेती है। प्रहरी उसे अपराधिनी समझते हैं उसे शिशु की हत्या के अपराध में मृत्यु-दण्ड के लिए श्मशान ले जाया जाता है तथा हरिश्चन्द्र को चाण्डाल का सेवक होने के नाते हत्या की आज्ञा दी जाती है। वे अपने कर्त्तव्य से तब भी विचलित नहीं होते तथा जैसे ही खड्ग उठाते हैं वैसे ही विश्वामित्र प्रगट होकर उनके सत्य एवं निष्ठा की सराहना करते हैं। रोहित भी जीवित हो जाता है। अन्त में विश्वामित्र की हठता की सत्यवादी हरिश्चन्द्र के समक्ष पराजय हो जाती है।

सत्यमेव जयते नानृतम् (वि० २००१, पृ० ६४), ले० पी० शा० नवरंगी साहित्य रत्न, प्र० अभिज्ञान प्रकाशन, रांची, पात्र पु० २२, स्त्री, ७, अंक ५ दृश्य रहित।
घटना स्थल छोटा नागपुर (खुखरा)।

यह नाटक छोटा नागपुर से सम्बन्धित है। रामगढ़ राज्य की स्थापना १८वीं शताब्दी में होती है। उन दिनों छोटा नागपुर खुखरा राज्य कहलाता था। राजधानी खुखरा थी जो आजकल रांची के पश्चिम में एक ग्राम मात्र है। नाटक की समस्त घटनायें वहीं होती हैं।

खुखरा के महाराज को ऐसे ईमानदार और वीर पुरुष की आवश्यकता है जो कि रामगढ़ घाटी की ओर बढ़ते हुए शत्रु से देश की रक्षा कर सके। वे उस पुरुष का विवाह अपनी पुत्री के साथ कर उसे रामगढ़ दहेज में देने का प्रण करते हैं। कई रईस राजा लोग सत्य की परीक्षा में असफल रहते हैं पर चोबदार हरदयाल परीक्षा में खरा उतरता है। चोबदार के साथ राजकुमारी का विवाह होने से महाराज और राजकुमारी की बड़ी बेइज्जती होगी इसलिए महाराज चोबदार को सत्य-भ्रष्ट करने के अनेक प्रयत्न करते हैं और अन्त में उसे मारने का हुक्म भी देते हैं। इतने पर भी चोबदार राजकुमारी से विवाह करने और रामगढ़ का राज्य पाने में सफल हो जाता है।

सत्यवती नाटक (राजनैतिक रूपकालकार), (सन १८९९, पृ० २३७), ले० छगनलाल मुंशी, प्र० वैदिक प्रेस, अजमेर, पात्र पु० ११, स्त्री, ६, अंक ७, दृश्य १३, ६, ६, ५, ४, ६।
घटना-स्थल राजभवन।

हस्तिनापुर में राजा रविसेन अमंगलकारी स्वप्न से भयभीत होते हैं। रानी शशिप्रभा उन्हें सान्त्वना देती है—राजमंत्री बुद्धिसागर, कोतवाल और अपने पुत्रों को बुलाकर स्वप्न का वृत्तान्त सुनाता है। राजा के दरबार में तमस्सुक बेग, अय्याशखा, तकब्बुर-

वेग, फुजूलवश्च गाना गाते और उसका धन ले जाते हैं। यवनों के प्रभाव में आकर राजा उन्हीं से मंत्रणा करता है। अतः राजा के पुत्र उससे रुष्ट रहते हैं। मिथ्यामति की मंत्रणा से राजा पथभ्रष्ट होता है और शशि-प्रभा की भी भर्त्सना करता है। सुयोग्य मंत्री तीर्थयात्रा के बहाने से चले जाते हैं और तमल्लुक वेग और तकब्बुर वेग मंत्री बनते हैं। राजा अपने पुत्र न्यायसिन्धु को राज्य प्रदान करता है। किन्तु यवनों का राज्य में प्रभुत्व जम गया है। राज्य की दशा 'अबूझ नगरी अन्यायी राजा' की है। न्यायसिन्धु की पत्नी सत्यवती उदास बैठी है। राजा सतयुग आता है। सत्यवती अपना परिचय देती है कि मैं धर्मसेन और दयासुन्दरी की पुत्री हूँ। सत्यवती की सखियां विद्यावती, जयमाला ज्ञानलता, सुसंगता आदि सतयुग के दर्शन से बहुत प्रसन्न होती हैं। सतयुग एक दिगम्बर ऋषिराज से सखियों का परिचय कराता है। ऋषिराज वैराग्य पर बल देते हैं किन्तु सत्यवती कर्मयोग को महत्त्व देती है। सत्यवती का जीवन अत्यन्त निर्मल है किन्तु राजा उस पर लांछन लगाकर उसे देश से निकाल देता है। उस महासती को दुःखी देखकर जड़ चेतन सब क्रुद्ध हो उठते हैं। किन्तु ज्ञानलता, सुसंगता एवं विद्या सुन्दरी के प्रभाव से राजा भूल स्वीकार करता है और अन्त में न्याय-सिन्धु और सत्यवती का मिलन हो जाता है।

सत्यवान सावित्री (सन् १९६०, पृ० ७२), ले० : आर० एल० गुप्ता 'घायल'; प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली; पात्र : पु० ८, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : १०, ६, ४। *घटना-स्थल* : महल, जंगल, आश्रम।

इस पौराणिक नाटक में सावित्री-सत्यवान की प्रसिद्ध कथा चित्रित है।

महाराजा अश्वपति सन्तानहीन होने के कारण अत्यन्त दुखित हैं। नारद मुनि के आग्रह पर वे सावित्री देवी का यज्ञ करते हैं और पुत्री रत्न की प्राप्ति पर उसका नाम सावित्री ही रखते हैं। विवाह के लिये कोई वर न मिलने के कारण सावित्री देशाटन के लिए जाती है और सत्यवान को अपना वर चुनती है। सत्यवान की निश्चित आयु समाप्त होने पर अपनी स्वामिभक्ति, दृढ़-निष्ठा, कर्त्तव्य-परायणता और बुद्धिमत्ता आदि अनेक गुणों के कारण धर्मराज से तीन वर 'सास ससुर के नेत्रों की ज्योति तथा उनका राज्य, पिता के लिए सौ पुत्र तथा स्वयं के लिये भी सौ पुत्र' मांगकर अपने पति को पुनः जीवित करवा लेती है।

सत्यवादी हरिश्चन्द्र (सन् १९७०, पृ० ६४), ले० : चन्द्रभान चन्द्र; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र पु० १४, स्त्री ७; अंक : ३; दृश्य : ५, ५, ४। *घटना-स्थल* : राजा हरिश्चन्द्र का महल, काशी, ब्राह्मणी का घर, गंगातट।

नाटक का उद्देश्य चरित्र निर्माण और सत्य की प्रतिष्ठा स्थापित करना है। कथा-वस्तु प्रसिद्ध पौराणिक आधार पर लिखी गई है। विश्वामित्र परीक्षा हेतु स्वप्न में राज्य लेते हैं। राजा हरिश्चन्द्र राज्य विश्वामित्र को सौंप दक्षिणा के लिये स्वयं अपने को और अपनी पत्नी को बेचते हैं।

द्वितीय अंक में राजा और रानी के जीवन का करुण दृश्य चित्रित है। इसमें तक्षक रोहित को डसता है।

तृतीय अंक में राजा हरिश्चन्द्र अपनी आपद्ग्रस्त पत्नी से अपने पुत्र की मृत्यु पर कफन के लिए साड़ी से कर चुकाने की प्रार्थना करते हैं। रानी ऐसा करने को उद्यत होती है। देवता प्रसन्न होते हैं और हरिश्चन्द्र के सत्यव्रत से प्रभावित हो पुत्र तथा राज्य प्रदान करते हैं। यह नाटक दिग्विजय कंपनी आफ पूना द्वारा अनेक बार अभिनीत हो चुका है।

सत्य विजय नाटक (सन् १९३० पृ० ६८), ले० : मास्टर न्यादरसिंह 'बेचैन'; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० १३, स्त्री; ५; अंक : ३; दृश्य : ८, ५, ३। *घटना-स्थल* : शाहजहाँ का दरबार, बूंदी का महल।

इस ऐतिहासिक नाटक में एक पतिव्रता स्त्री की कहानी चित्रित है। एक फकीर शाहजहाँ के दरबार में आकर किसी पतिव्रता स्त्री के हाथ से पानी पीने की इच्छा प्रकट करता है। शाहजहाँ दरबारियों को पानी पिलाने की आज्ञा देता है किन्तु सभी दरबारी सिर झुकाए बैठे रहते हैं। इस पर शाहजहा क्रुद्ध होता है तो दरबारी यशवन्त सिंह अपनी पत्नी को पतिव्रता क्षत्राणी बताता है। शेरखा यशवन्त की बात पर उसकी हँसी उड़ाता है और बादशाह से सच्चाई की जाँच करने के लिए कहता है। बादशाह शेरखा को जाच के लिए हुक्म देता है। शेरखा किरणमई के पतिव्रत धर्म की परीक्षा के लिए जाता है। वह एक कुटनी को हीरों का हार देकर किरणमई के पास भेजता है। किरणमई उस कुटनी की बड़ी आवभगत करती है। एक दिन किरणमई को स्नान करते समय कुटनी उसके जाघ में तिल देखकर बहुत खुश होती है। वह कई दिन तक किरण के पास रहकर चलते समय यशवन्त की दी हुई कटार उससे मागती है। पहले तो किरणमई उसे देने से इन्कार करती है किन्तु कुटनी के हठ पर कटार दे देती है।

शेरखा कटार लेकर दरबार मे हाजिर होता है और कटार बादशाह के हाथ मे देते हुए कहता है कि किरणमई की जाघ म तिल है। यशवन्त सिंह दुख, शोक और अपमान से व्याकुल हो उठता है। बादशाह यशवन्त सिंह को झूठ बोलने के आरोप म फाँसी पर लटकाने का हुक्म देता है, किन्तु यशवन्त सिंह सच्चाई जानने के लिए दो दिन का समय मांगता है। क्रोधित यशवन्त किरण के पास जाता है। किरण पति की आरती उतारती है किन्तु यशवन्त उसे लात मारता है। वह कटार दिखाकर पत्नी से सारी बातें पूछता है। किरण अपने को पूर्ण पतिव्रता बताती है किन्तु उसे विश्वास नहीं होता। अब किरण स्वय सुशीला से मिलकर अपनी सच्चाई प्रकट करने की योजना बनाती है। किरण सुशीला के साथ गायिका का भेष बनाकर बेगम के पास पहुचती है और उसे अपनी दुख भरी कहानी सुनाती है। बेगम बादशाह को सारी बातें बताती है। बादशाह किरण को दरबार मे हाजिर होने का हुक्म देता है। किरण बादशाह के हुक्म पर दरबार मे एक गाना सुनाती है और अपना वेश उतार देती है। यशवन्त सिंह किरण को दरबार मे देखकर क्रोध से तिलमिला उठता है। किन्तु किरण बादशाह के सामने यह फरियाद रखती है कि शेरखा ने मुझसे दस हजार रुपये लिये थे लेकिन अब देता नहीं। इस पर बादशाह शेरखा को डाटता है तो शेरखा कहता है कि "रुपये लेना तो दूर रहा, मैंने इसकी शक्ल तक भी नहीं देखी।" किरण ने कटार दिखाकर कहा कि तो फिर यह कटार तुम्हारे पास कैसे आ गई। बादशाह के धमकाने पर शेरखा सच्ची घटना उद्धृत करता है। तब बादशाह यशवन्त सिंह को मुक्त कर उसके बदले मे शेरखा को फासी का हुक्म देता है। इसी समय फकीर भी दरबार में किरणमई के हाथो जी भरकर जल पीता है। यशवन्त सिंह बादशाह से प्रार्थना करके शेरखा को भी मुक्त करवा देता है। शेरखा सिर झुकाकर अपनी गलतियो के लिए किरणमई से क्षमायाचना करता है।

सत्य विजय नाटक (सन् १९२३ पृ० १२५), ले० गोकुलदास, प्र० उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, बनारस, पात्र पु० १६, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ६, ८, ४। घटना-स्थल सिन्ध देश, जगल, गोपीचन्दन की भूमि।

इस नाटक का चरित्र नायक सिंध देश का राजा है जो अपने राज-मद के नशे मे समस्त राज्य मे धर्म, कर्म, यज्ञ, दान आदि को बन्द करा देता है तथा द्रव्य लोभ के कारण अनेक *ब्राह्मणों का वध करवा देता है।* एक समय शिकार खेलते समय भूख से पीड़ित होकर कपिला गौ का वध करता है और उसी जगह गोपीचन्दन की भूमि पर अपना प्राण त्याग देता है। गोपीचन्दन भूमि के कारण उसका सर्व पाप नाश हो जाता है और विष्णु भगवान् की कृपा से वह स्वर्ग चला जाता है।

सत्य विजय (सन् १९१०, पृ० ९२), लें० : डी० डी० शर्मा; प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर; राजा दरवाजा, वाराणसी; पात्र : पु० १३, स्त्री १०; अंक : ३; दृश्य : १०, ८, ६।
घटना-स्थल : मार्ग, शाहजहां का दरबार, भवन, जंगल, उपवन, पहाड़, नदी, पुल और फांसी घर।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। बादशाह शाहजहां एक दिन अपने दरबारियों से पूछते हैं कि क्या संसार में कोई पतिव्रता स्त्री है? शाहजहां की बात सुनकर बूंदी के महाराज यशवन्त सिंह अपनी स्त्री के पतिव्रता होने का दावा करते हैं। यशवन्त सिंह के कथन को सुनकर शेरखां नामक दरबारी इसका विरोध करता है और सबूत देने के लिए समय मांगता है। शाहजहां उसकी यह शर्त स्वीकार कर लेते हैं कि अगर यशवन्त सिंह की बात झूठी हो तो उन्हें फांसी दी जाय। शेर खां एक कुटनी द्वारा यशवन्त सिंह के यहां से उसकी कटार मंगा लेता है और यह भी मालूम कर लेता है कि किरणमई की एक जांघ पर लहसुन का निशान है। शाहजहां इन सबूतों के आधार पर यशवन्त सिंह को फांसी का आदेश देते हैं। लेकिन किरणमई मौके पर पहुंचकर यशवन्तसिंह की सच्चाई का सही सबूत पेश करती है। सही तथ्यों से अवगत हो शाहजहां यशवन्त सिंह को रिहा कर देते है और शेर खा को फांसी की सजा देते हैं।

सत्य हरिश्चन्द्र (वि० १९३३, पृ० ८८), लें० : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र; प्र० : काशी नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस; पात्र : पु० १२, स्त्री ३। अंक : ४; दृश्य : १,१ १,१।
घटना-स्थल : अयोध्या और काशी का महल, गंगा-तट (मरघट)।

हरिश्चन्द्र की सत्य-निष्ठा की सूचना से आतंकित इन्द्र ईर्ष्या से प्रेरित होकर उनकी परीक्षा करने का संकल्प करता है और कौशलपूर्वक क्रोधी विश्वामित्र को उनके विरुद्ध इस प्रकार भड़काता है कि वे उन्हें तेजोभ्रष्ट करने की प्रतिज्ञा कर लेते हैं। इधर हरिश्चन्द्र की रानी शैव्या दुःस्वप्न के शांत्यर्थ उपाय करती है और हरिश्चन्द्र किसी ब्राह्मण को अपना राज्य दान कर देने का स्वप्न देखने के बाद उसे सच मान लेते हैं तथा उसी ब्राह्मण राजा के मंत्री रूप में राज्य चलाने की घोषणा करते हैं। इसी बीच-विश्वामित्र पहुंचकर राज्य का सम्पूर्ण अधिकार और उसदान के दक्षिणा-स्वरूप सहस्र स्वर्ण मुद्रा मांगते हैं। हरिश्चन्द्र को ब्रह्मदण्ड का भय दिखलाकर एक मास में उसे चुकाने की मुहलत देते हैं। अतः हरिश्चन्द्र स्त्री-पुत्र सहित बिककर दक्षिणा के लिए स्वर्ण मुद्राएं प्राप्त करने काशी जाते हैं। वहां एक उपाध्याय के हाथ रानी को और चांडाल वेषधारी धर्म के हाथों स्वयं को बेचकर हरिश्चन्द्र विश्वामित्र को उक्त स्वर्ण मुद्राएं चुका देते हैं। अब चाडाल के क्रीतदास के रूप में वे श्मशान में शव-कर उगाहने का कार्य करते हैं। इस अवधि में कापालिक वेषधारी धर्म, महाविद्या और ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ उन्हें विविध प्रलोभनों द्वारा धर्मभ्रष्ट करने का प्रयत्न करती हैं। उनके असफल होने पर इन्द्र तक्षक से रोहिताश्व को डंसवाकर अन्तिम प्रयत्न करता है। सर्पदंश से मृत रोहिताश्व को अपनी साड़ी के आधे भाग में लपेटकर शैव्या अन्तिम संस्कार के लिए श्मशान में जाती है जहां डोमराजा के कर्त्तव्यपरायण दास के रूप में राजा सब कुछ जानते हुए भी रानी से कर के स्थान पर कफन का टुकड़ा मांगते हैं। साड़ी को पुनः आधा फाड़कर कर चुकाने के लिए रानी ज्योंही उद्यत होती है, सभी देवगण प्रकट होकर दृढ़ प्रतिज्ञ एवं सत्यनिष्ठ हरिश्चन्द्र की प्रशंसा करते हैं। शिव की कृपा से रोहिताश्व जीवित हो जाता है। विश्वामित्र राजा को राज्य लौटाते हुए उनकी दृढ़ता सराहते है। इन्द्र क्षमाप्रार्थी होते हैं।

सत्य हरिश्चन्द्र नाटक (सन् १९२६, पृ० १०८); लें० : मुंशी विनायक प्रसाद; प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस;

पात्र पु० १३, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ५, ४, ४।
घटना-स्थल इन्द्रपुरी, जगल, गोमती नदी का किनारा।

यह पौराणिक नाटक राजा हरिश्चन्द्र की कथा पर आधारित है। हरिश्चन्द्र सत्य-रक्षा के लिए अपने राज्य का, स्त्री का, पुत्र का मोह त्याग कर एक डोम के हाथ बिकते हैं और स्वय श्मशान की रक्षा करते हैं। कालातीत मे सर्प-दश से उनका पुत्र रोहित मर जाता है, उसकी माता उसे जलाने के लिए उसी श्मशान पर ले आती हैं जहा के रखवाले उसके पिता हरिश्चन्द्र हैं। उनकी स्त्री के पास घाट का कर देने को कुछ भी नहीं है और बिना कर लिए हरिश्चन्द्र शव को जलाने नही देते। अन्त मे उनकी स्त्री कर-स्वरूप अपनी साडी का आंचल फाडकर देती हैं उसी समय स्वय ईश्वर प्रकट हो हरिश्चन्द्र के सत्य पर अडिग रहने की प्रशसा करते हैं एव रोहित को जीवित कर पुन उन्हें उनका राज्य देते हैं।

सत्य हरिश्चन्द्र नाटक (सन् १९०५, पृ० ७२), ले० वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली', प्र० ठाकुर प्रसाद एण्ड सस, वाराणसी, पात्र पु० १०, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य ६, ५, ५।
घटना-स्थल अयोध्या का महल, काशी, श्मशान घाट।

यह एक धार्मिक नाटक है। गुरु वशिष्ठ तथा महर्षि नारद द्वारा दानी हरिश्चन्द्र की प्रशसा सुनकर इन्द्र तथा विश्वामित्र को विश्वास नहीं होता। इन्द्र के कहने पर विश्वामित्र दानी तथा सत्य हरिश्चन्द्र की परीक्षा लेने के लिए अयोध्या मे जाते हैं तथा दान मे हरिश्चन्द्र से उनका सारा राजपाट और साथ-साथ दक्षिणा मे एक सहस्र स्वण मुद्रा मागते हैं। दानी हरिश्चन्द्र दक्षिणा की पूर्ति के लिए अपना राज्य छोड-कर काशी मे अपने पुत्र रोहित तथा पत्नी शैव्या के साथ जाते हैं। वहा पर श्रवणदेव, मरणी के हाथ पत्नी व पुत्र को ५०० मुद्रा मे बेचकर स्वय चाडाल के हाथ ५०० मुद्रा मे बिक जाते हैं। रानी शैव्या को घर की नौकरानी का काम करना पडता है तथा हरिश्चन्द्र श्मशान घाट की रखवाली करते हैं। एक दिन अचानक फूल तोडते समय सर्पदंश से रोहित की मृत्यु हो जाती है। शैव्या मृत पुत्र को लेकर श्मशान घाट पर जाती हैं। वहा हरिश्चन्द्र अपनी रानी शैव्या तथा रोहित को पहचानते हुए भी धर्म तथा सत्य की रक्षा के लिए शैव्या से कर मागते हैं। जब शैव्या अपनी साडी का आधा भाग फाडना चाहती है तभी भगवान विष्णु तथा विश्वामित्र प्रकट हो जाते हैं और हरिश्चन्द्र के सत्य की प्रशसा करते हुए उनके राजपाट तथा पुत्र रोहित को पुन वापस कर देते हैं।

सत्य हरिश्चन्द्र (सन् १९१५, पृ० ८०), ले० इन्द्रदेव, प्र० ठाकुर प्रसाद एण्ड सस, वाराणसी, पात्र पु० १०, स्त्री १, अंक ४, दृश्य २, २, ५, ७।
घटना-स्थल अयोध्या का महल, काशी, श्मशान घाट।

इस पौराणिक नाटक मे सत्यवादी हरिश्चन्द्र की प्रसिद्ध कथा चित्रित है। राजा हरिश्चन्द्र की दानशीलता और सत्यवादिता की प्रशसा सुनकर इन्द्र विश्वामित्र को हरिश्चन्द्र के पास परीक्षा लेने के लिए भेजते हैं। दान मे हरिश्चन्द्र अपना सारा राजपाट विश्वामित्र को दे देते हैं तथा दस सहस्र दक्षिणा देने के लिए अपने को ५ हजार मे चाडाल के हाथ में बेच देते हैं जहा इनको श्मशान घाट की रखवाली करनी है तथा स्त्री शैव्या और पुत्र रोहिताश्व को उपाध्याय के हाथ बेच देते है। शैव्या नौकरानी का काम करती है। एक दिन साप के काटने से अचानक रोहिताश्व की मृत्यु हो जाती है। रानी शैव्या मृत पुत्र को लेकर श्मशान घाट पर जाती है। हरिश्चन्द्र अपनी स्त्री के विलाप को सुनकर पहचान जाते हैं लेकिन फिर भी रानी शैव्या से कफन का आधा भाग कर रूप मे मागते हैं। जैसे ही शैव्या अपनी साडी का आधा भाग फाडती है वैसे ही भगवान् नारायण प्रकट हो जाते हैं। भगवद् कृपा से

रोहिताश्व जीवित हो जाता है तथा सभी देवतागण हरिश्चन्द्र की जय जयकार करते हैं।

सत्यवादी हरिश्चन्द्र (सन् १९७१, पृ० ६४), ले० : न्यादर सिंह 'बेचैन' देहलवी; प्र० : अगवाल बुक डिपो, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री २।
घटना-स्थल : अयोध्या का राजमहल, काशी, श्मशान घाट।

इस पौराणिक नाटक में राजा हरिश्चन्द्र की सत्यवादिता दिखाई गई है। वे अपने सत्य पर डटे रहते हैं जिससे उन्हें डोम के हाथ बिकना पड़ता है। वे श्मशान-घाट पर अपनी पत्नी तारा से मरे हुए पुत्र रोहित के जलाने का कर उसकी फटी साड़ी लेकर पूरा करते हैं। उनकी इस सत्यवादिता से प्रसन्न होकर भगवान् स्वयं उन्हें स्वर्ग भेज देते हैं।

सत्याग्रही नाटक (सन् १९३९, पृ० १२८), ले० : व्रजनन्दन शर्मा; प्र० : दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास; पात्र : पु०, ६, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ५, ५, ४।
घटना-स्थल : अयोध्या का राजमहल, काशी।

इस नाटक की पौराणिक कथा बहुत प्रचलित है। इसमें सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की कथा है, जो सत्य की रक्षा के लिए सम्पूर्ण राज्य दान कर देते हैं साथ ही दक्षिणा चुकाने के लिए स्त्री पुत्र को बेचकर स्वयं चाडाल के हाथों बिक जाते हैं। कथानक पौराणिक होते हुए भी आधुनिक परिवेश में लिखा गया है।

सत्याग्रही प्रह्लाद (वि० १९७९, पृ० १३१), ले० : बलदेव प्रसाद खरे; प्र० : निहालचन्द एण्ड को० नं० १ नारायण प्रसाद बाबूलेन, कलकत्ता; पात्र : पु० २१, स्त्री ८; अंक : ३; दृश्य : ८, ८, ३।
घटना-स्थल : राजमहल, कारागार, पहाड़, अग्निकुण्ड।

इस पौराणिक नाटक में भक्त प्रह्लाद का भगवत्-प्रेम व माता-पिता के विरुद्ध सत्याग्रह दिखाया गया है। प्रह्लाद बचपन से ही ईश्वर के भक्त थे और हर समय ईश्वर का ध्यान करते थे परन्तु हिरण्यकश्यप इसका विरोध करता है। वह प्रह्लाद को फाँसी पर लटकवाता है, पहाड़ से गिरवाता है, हाथी के पैरों तले कुचलवाता है, तथा अग्नि कुण्ड में जलवाता है किन्तु सच्चे सत्याग्रही बालक प्रह्लाद का बाल भी बाँका नहीं होता। अन्त में भगवान् विष्णु के नरसिंह अवतार धारण कर हिरण्यकश्यप का वध करते हैं।

सत्याग्रही हरिश्चन्द्र (सन् १९१९, पृ० ६४), ले० : रामगोपाल पाण्डेय; प्र० : श्री हनुमत प्रेस, अयोध्या; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : अयोध्या का राजमहल, काशी, श्मशान घाट।

इस पौराणिक नाटक की कथा सत्यवादी हरिश्चन्द्र से सम्बन्धित है।

देवर्षि विश्वामित्र को अपनी तपस्या पर पूरा अभिमान है। वे इस तपस्या के बल से वशिष्ठ-शिष्य महाराज हरिश्चन्द्र को सत्य से डिगाना चाहते हैं। विश्वामित्र वशिष्ठ के प्रति बदले की भावना रखते हुए उनके शिष्य से काशी का राज्य दान-स्वरूप ले लेते हैं। ऋषि ६० सहस्र स्वर्ण मुद्रा दक्षिणा में माँगते हैं। इस कर्ज को चुकाने के लिए हरिश्चन्द्र बड़ी-बड़ी यातनाओं को झेलकर अपनी पत्नी और पुत्र को ३५ भार स्वर्ण मुद्रा में एक गंधर्व के हाथ बेच देते हैं। बाद में स्वयं भी २५ भार स्वर्ण मुद्राओं के बदले कालिया भंगी के यहाँ श्मशान पर कर वसूलने चले जाते हैं। विश्वामित्र बार-बार उनको विविध छल द्वारा कष्ट देते हैं। परन्तु हरिश्चन्द्र अपने मार्ग से विचलित नहीं होते। विश्वामित्र रोहित के जीवन का भी ग्राहक बन जाते है। यहीं राजा और रानी के सत्य की अंतिम परीक्षा होती है, परन्तु दोनों अपने सत्य की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

सदानीरा (सन् १९६५, पृ० ६७), ले० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', प्र० पीतम प्रकाशन मन्दिर, आगरा, पात्र पु० ८, स्त्री ४।
घटना-स्थल घर, बाजार, बम्बई।

इस सामाजिक नाटक में वाणिज्य और विज्ञान की निरपेक्ष दृष्टियों से मानव जीवन की नवीन समस्याओं का विवेचन किया गया है। शुभ्रक एक भ्रष्ट व्यापारी है जो एक अन्य दुराचारी भ्रष्ट व्यापारी दमनक के सहयोग से व्यापार में काला धंधा करता है। शुभ्रक का पुत्र कौन्तेय एक वैज्ञानिक है। उसने अग्नि-शलाका का आविष्कार किया है जिसके लिए वह सम्मानित हुआ है तथा अखबारों में उसका चित्र भी छपा है। शुभ्रक का दूसरा पुत्र कांचन भी काले व्यापार में लगा हुआ है जो एम० कॉम होकर भी इसी माध्यम से धन एकत्र करने का प्रयास करता रहता है। शुभ्रक का तृतीय पुत्र कोमल घर से रुपए चुराकर अभिनेता बनने के लिए बम्बई भाग जाता है जहाँ वह हत्या के अभियोग में दंडित होता है। उसकी पुत्री लता आधुनिक शिक्षा तथा एटीकेट्स में विश्वास करती है तथा दमनक के सहयोगी कण्टक के मिथ्या जाल में फँस जाती है। केवल सदानीरा आदर्श पात्र है जो इनका विरोध करती है परन्तु कुछ कर नहीं पाती।

सप्पत (सन् १९६४, पृ० ४८), ले० तृप्तिनारायण लाल, प्र० नवरत्न गोष्ठी मिश्रटोला, दरभंगा, पात्र पु० ७, स्त्री, ३, अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल विजय का कक्ष पार्क, रास्ता, नीलम का शयन कक्ष, कमल बाबू का दरवाजा एवं गायिका गृह।

इसमें नाट्यकार ने समाज के एक ऐसे वर्ग की घटनाओं को स्पर्श किया है जो आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में अनुकूल प्रतीत होती हैं। एक दुश्चरित्र व्यक्ति एक कुमारी के साथ बलात्कार करता है जिसके फलस्वरूप उसका सतीत्व भंग हो जाता है। वह समाज में अपना मुँह दिखाने लायक नहीं रह जाती है। वह एक नवयुवक के समक्ष शादी का प्रस्ताव प्रस्तुत करती है। पहले तो वह आनाकानी करता है, किन्तु परिस्थिति-वश शादी करने के लिए तैयार हो जाता है। विजय के पिता को जब यथार्थ स्थिति की जानकारी होती है तब उन्हें कष्ट होता है। अतएव इन सब से बचने के लिए नायिका गायिका के रूप में परिवर्तित हो जाती है, किन्तु वहाँ भी उसे गुंडों और डकैतों का सामना करना पड़ता है। इसी स्थिति में विजय का पदार्पण होता है जो उसे मुक्त कराता है।

समाचार नाटिका (वि० १९५७, पृ० ५०), ले० रघुराम नागर, प्र० नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र व अंक-दृश्य-रहित।

यह रचना दोहा, सोरठा, कवित्त, छप्पय, चौपाई, सवैया, भुजंगप्रयात, नाटक, अरिल्ल, लघुनाराच, मालिनी, साटिक, बरवै छन्दों में आबद्ध है।

इस रचना में कोई घटना नहीं केवल विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के लक्षण विभिन्न छन्दों में वर्णित हैं। रचयिता अंक दृश्य के स्थान पर विभिन्न व्यक्तियों के 'लछिन' नाम से इसका विभाजन करता है। प्रारम्भ में गणेश और सरस्वती की स्तुति साटिक और मालिनी छंद में की गई है। तदुपरान्त गुरु शिष्य का संवाद है। तदुपरान्त गुरु, राजा, धर्म, शिष्य, गम खाने वाले, कपटी, बेवकूफ बेदियानती, गाफिल, हरामी, फूटे कामदार, कचेरी को स्वान, समाचतुर, सभा बिगारा, वातबिगारा मुनशी, दाता, विवेकी, लबारदातार, सूम, लालची, सूर, वेदान्ती, कोटवाल, चुगुल, चोर, ठग, धर्म ठग, परोपकारी, दुष्ट मंडली, दगाबाज, सत्यवादी, खुशामदी, वे मुरब्बती, लज्जावत, निलज, हिमाइती, आलसी, भ्रमचित, मूरख, बाल मूरख, पोस्ती, मूखे चाकर, विरही वियाजित, गुंडा, छैलचिकनिया, नास्तिक, आस्तिक उदासी, सतसंगति के लक्षण सरस ब्रज भाषा में वर्णित हैं।

नाटक के मध्य में पुनः शिष्य गुरु से प्रश्न करता है। वह पूछता है कि प्रभु-स्मरण कितने प्रकार का होता है। तब गुरु शिष्य

को भक्ति के लक्षण समझाता है। अन्त में आर्त्त, जिज्ञासु, और ज्ञानी के लक्षण शास्त्रीय पद्धति पर समझाए गए हैं।

सभ्य स्वयंवर (सन् १९१२, पृ० ५५), ले० : हरिहर प्रसाद जिज्जल; प्र० : अग्रवाल प्रेस, गया; पात्र : पु० १४, स्त्री ५; अंक : ५; दृश्य : ३, ३, ३, ३, ३।
घटना-स्थल : मकान, दुकान, मग़शाला।

इस नाटक में नाटककार ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि कलिकाल में अवगुण भी गुण हो गया है।

नाटक में प्रथम अंक में लड़के एवं लड़की की शादी हेतु कुण्डली में राशि पंडित जी के द्वारा उत्तम बतायी जाती है। इसके बाद भोंदूचंद्र अपने मित्र ढपोर संख प्रसाद की सहमति इस विवाह के संबंध में लेते हैं। ढपोर संख कहता है कि अक्खड़दास (लड़का का पिता) आपसे बड़ा नहीं है लेकिन भोंदू चन्द्र कवि की उक्ति से उन्हें समझाता है। इसके बाद ढपोर संख कहता है कि 'बाप बड़ो न भैयो सबसे बड़ो रुपैयो'। भोंदूचंद्र अक्खड़दास के पास जाता है और विवाह की बातें करता है। अक्खड़दास इसे बाल-विवाह समझकर इन्कार तो करता है पर अंत में तैयार हो जाता है।

कुछ दिन के बाद छेंका तथा मुँह दिखावा आदि हो जाता है। अब विवाह का दिन निश्चित करना बाकी रह गया है। भोंदूचंद्र अपने मित्रों एवं नौकरों आदि से सलाह लेते हैं लेकिन वे लोग अक्खड़दास के यहाँ शादी करने से मना करते हैं। पुनः भोंदू ढपोरसंख के पास जाता है और विवाह के संबंध में पूछता है। एक दिन की बात है कि ढपोरसंख और अक्खड़दास में पैसे के कारण कुछ झड़प हो जाती है जिससे ढपोर-संख उनसे (अक्खड़) रुष्ट हो जाता है। अतः वे उनके यहाँ शादी करने से मना करते हैं और यह भी कहते हैं कि इसमें चिन्ता की बात ही क्या है—केवल छेंका ही तो हुआ है। उसे छोड़ दिया जाएगा। अंत में भोंदू भी इन्कार कर देता है तथा वह किसी धनी-मानी व्यक्ति के घर अपनी लड़की की शादी करना चाहता है। उसकी पत्नी भी अब यही कहती है कि जब हो तब लखपति के यहाँ ही शादी हो पर लखपति कोई मिलता नहीं है।

अंत में भोंदू अपनी लड़की के लिए एक 'स्वयंवर' का आयोजन करता है और उसमें आये एक जौहरी से उसकी शादी कर देता है।

समय नाटक (वि० १९७४, पृ० ५८), ले० : काशीनाथ वर्मा; प्र० : बाबा भगवानदास मंत्री, सरस्वती कार्यालय जालपादेवी, काशी; पात्र : पु० १६, स्त्री ५; अंक : ४; दृश्य : ६, ६, ४, २।
घटना-स्थल : फुलवारी आश्रम, घर।

यह एक रहस्यमय नाटक है। रामकृष्ण की बेटी स्वर्णा घर से भाग जाती है। किसी नकली स्वर्णा के मरे रूप का दाह संस्कार कर दिया जाता है। स्वर्णा एक योगी के आश्रम में आश्रय लेती है। पुलिस के वहाँ पता लगाकर पहुँचने पर वह वापस नहीं जाना चाहती, वह संसार से अपनी विरक्ति प्रगट करती है। क्योंकि घर से भागने के पहले गोपाल दास की दूसरी युवती पत्नी स्वर्णा के पति को मार डालती है। अंत में पुलिस से सत्य बयान कर स्वर्णा योगी के आश्रम में ही रह जाती है। और वहीं अंत तक जीवन व्यतीत करती है। गोपाल दास की युवा पत्नी को उसके कर्मों का फल मिलता है।

समय का फेर (वि० १९९१, पृ० ६७), ले० : महादेव प्रसाद शर्मा; प्र० : पुस्तक एजेंसी, बम्बई; पात्र : पु० १८, स्त्री १०; अंक : ३; दृश्य : ६, ५, ४।
घटना-स्थल : मानिक किसान का घर, कारागार।

इस सामाजिक नाटक में समय का चक्र दिखा कर बताया गया है कि समय के साथ-साथ चलकर जो महाजन अर्थात् धनी हैं, दुनिया उन पर झुकती है। प्रस्तुत नाटक में एक किसान मानिक और उसके पुत्र मोहन को जिनके घर खाने के लिए कुछ भी

नहीं है लगान न देने पर पटवारी पकड कर जेल भेज देता है। इधर रायबहादुर किशोरीलाल अपने मित्रो के साथ बैठकर मदिरापान करते तथा वेश्या का नाच देखते हैं। उनके पास भी वेश्यागमन के कारण एक भी पैसा नही रहता जिससे उसका कोई साथ भी नहीं देता तो वह बहुत शर्मिन्दा हो जाता है। मानिक अपने देनदार के लगान न देने के कारण दुख से मर जाता है। उसका एक पुत्र मोनीलाल रामलाल के यहाँ रह कर उनके घरवालो की सेवा करता है। उसका प्रेम रामलाल की पुत्री शान्ति से हो जाता है। वह देशाटन के समय कुछ कठिन प्रश्नो का उत्तर देकर राज्य प्राप्त कर लेता है फिर अपने गुरु रामलाल की आज्ञानुसार उसकी पुत्री शांति से विवाह कर लेता है।

समय सार नाटक (टीका सहित) (वि० १६६३ पृ० ६१६), ले० बनारसीदास जैन, टीकाकार रूपचन्द पांडे, प्र० नंदलाल दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला, भिंड, ग्वालियर, पात्र-रहित अंक के स्थान पर द्वार हैं।

इस नाटक की कथा वस्तु १३ अधिकारों में वर्णित है। प्रथम अधिकार 'जीवद्वार' में जीव और आत्मा के स्वरूप का स्पष्टीकरण करते हुए आत्म स्वरूप को चेतन, सिद्ध तथा अमूर्त बताया है। जीव को भी चैतन्य एवं ज्ञानवान् बताते हुए, 'तैसेनव तत्त्व में थयो है वह भेयो जीव' कहकर सांसारिक तत्त्व प्रपचो में पड़ने से कवि उसे 'शुद्ध रूप मिश्रित अशुद्ध रूप' की सज्ञा देता है। परमात्मानुभव से ही भेद बुद्धि का अंत बतलाते हुए कवि ने भव्य जीवनचर्या से मोहपाश का नाश करने की ओर संकेत किया है। रागादिक वृत्तियाँ आत्मानुभव में बाधक हैं। पुनः ज्ञान के प्रकाश से मोहान्धकार का नाश करके पूर्ण आत्मस्वरूप की पहचान सरल बताई गई है। तत्त्व प्रकाश एवं विशद विवेक आदि के द्वारा सहज स्वरूप के परखने की शक्ति विकसित हो चलती है। जीव के स्वरूप का निखार तप एवं ज्ञान की अग्नि में तपाने से होता है।

दूसरे अधिकार 'अजीव द्वार' में प्रथम शुद्ध, प्रकाशमय तथा ज्ञान के विलास रूप परमात्मस्वरूप की वंदना की जाती है। तत्पश्चात् जीवाजीव का विभेद करते हुए उनका अन्तर स्पष्ट किया गया है। जब तक जीव कर्मबन्धनों से जकड़ा है, माया प्रपञ्चों में रत है तब तक वह आत्माराम चेतन, आत्मगुण से सर्वथा भिन्न और बेमेल है लेकिन, जब शुद्ध एवं चैतन्यस्वरूप का अनुभव हो जाता है, आत्मस्वरूप में रमण करने की शक्ति आ जाती है, कर्मों को यथावत् त्याग दिया जाता है, उस स्थिति में 'एक ब्रह्म नहिं दूसरो दीसै अनुभव माहिं' का अनुभव सामने आलोकित होने लगता है, यही जीव की सिद्धावस्था है। आगे चलकर कवि चैतन्यानुभवाराधन में अखण्डरसास्वादन की क्षुधा की पूर्ण तृप्ति बतलाता है। अन्त में "चेतन जीव अजीव अचेतन', तथा 'मोहसौं भिन्न जुदो जड सौं चिनमूरति नाटक देखने हारौ" से जीवाजीव के भेद का स्पष्ट करते हुए द्वितीय अधिकार समाप्त किया जाता है।

तीसरे (कर्त्ता, कर्म क्रिया द्वार के) अधिकार में ज्ञान तथा अज्ञानावस्था का भेद दिखाया गया है। मोहवश जीव आत्मा को ही समस्त कर्मों का कर्त्ता समझता है। परन्तु ज्ञान होने पर उसे स्व-पर का अंतर स्पष्ट होने लगता है तथा यह भी ज्ञान हो जाता है कि आत्मा कर्त्ता नहीं द्रष्टा मात्र है।

चौथे अधिकार में बताया गया है कि पाप-पुण्य दोनों ही मोक्ष प्रतिरोधक हैं। पाप और पुण्य दोनो से जीव को निरूप निर्मुक्त एवं चिद्विभा से विभासित करने के लिए इन दोनों ही को एक-सा समझ कर त्यागना ही अच्छा बताया गया है।

पाँचवाँ अधिकार 'आश्रव अधिकार' नाम से विहित है। आश्रव का अर्थ है, 'मिथ्यात्व'। यह भाव और द्रव्य भेद से दो प्रकार का है। ये दोनों अवस्थायें शुद्ध प्रकाश, चिद्रूप के साक्षात में योग देने में असमर्थ हैं। सम्यग्दर्शन से ही सम्यग् ज्ञान संभव है। अतएव आश्रवत्व को दूर कर ज्ञान वान सम्यग्दर्शन की शक्ति को ही अधिक विभामय बनाने का प्रयत्न करे।

यही इस अधिकार का मूल विषय है।

छठा अधिकार 'संवरद्वार' समता का विवेचन करता है। भेदबुद्धि हेय है। अतः आत्म-साक्षात्कार की वह स्थिति जब उसे स्वभाव-परभावज्ञान की अवस्था में ले जाती है, उस समय सम्यग् ज्ञान-बल से साधक को चाहिए कि वह परभाव से लिप्त होने से अपनी रक्षा करे और समत्वबुद्धि से 'स्व' की परख करे; आत्मज्ञान तभी सुलभ होगा। यही समत्वबुद्धि (संवर) देवत्व की क्रमिक उन्नति के द्वारा मुक्ति प्रदान करती है।

सातवां अधिकार 'निर्जरद्वार' है। संवर द्वार की समत्वबुद्धि की जिसे प्राप्ति हो गई वह 'निर्जरा द्वार' के मार्ग में प्रवेश करता है। इस स्थिति में उसे कर्म-बन्धन बांध नहीं पाते। उसमें संपत्ति-विपत्ति एक सी लगती है क्योंकि दोनों ही कर्म से उद्बुद्ध हैं—कर्मवश हैं। इस दशा में जीव 'कर्मबन्ध प्रहास्थिति' की स्थिति में होता है। उसे निर्मल सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति होती है।

आठवां अधिकार, 'बंधद्वार' है। पूर्वोक्त राग-द्वेष, पुण्य-पाप, शुद्धाशुद्ध आदि के बंध का विनाश करने के लिए विवेक बुद्धि (प्रज्ञा-सम्यग्ज्ञान) आवश्यक है। सम्यक् बुद्धिवाला आत्मस्वरूप का दर्शन करता है, वही परम पद भी प्राप्त करता है। यही इस अधिकार का विवेच्य विषय है।

'मोक्षद्वार' नामक नवें अधिकार में जीव की मुक्तावस्था स्पष्ट की गई है। यह सदा मुक्त है। कर्मबन्ध-त्याग की अवस्था इसे इस सत्य से अवगत करा देती है। आत्मा का पर-द्रव्याहंकार ही आश्रव (मिथ्यात्व) की अवस्था होती है। कर्म-बन्धावच्छिन्न स्वरूप ही सिद्धावस्था है। अतः आत्मस्वरूप पहचानने के लिए आत्म-चिन्तन द्वारा 'स्वभाव ज्ञान' का स्वारस्य आस्वाद्य है। स्वानुभूति, स्वरूप ज्ञान-आत्मसाक्षात्कार की यही दशा मुक्ति या मोक्ष कहलाती है।

दसवें 'सर्व विशुद्धि द्वार' में स्वरूप-ज्ञान में बाधक कर्म-प्रपंच-बुद्धि के नाशार्थ आत्मा के निर्लेप स्वरूप की दृढ़ भावना आवश्यक बताई गई है। ऐसा करने के लिए आत्मानुभव, आत्मस्वरूप ज्ञान का सतत चिंतन अनिवार्य है।

ग्यारहवां 'स्याद्वाद अधिकार' है। इसमें स्वचतुष्टय, पर-चतुष्टय, स्याद्वाद के सप्त-भंग तथा एकान्तवादियों के चतुर्दश-स्वरूपों का विवेचन किया गया है।

बारहवां 'साध्य साधक द्वार' अधिकार है। इसमें साध्य-साधक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि आत्मा ही साधक तथा वही स्वयं साध्य भी है। अवस्था-भेद से उसका यह तारतम्य स्पष्ट हो जाता है। उसकी उच्चावस्था अभीष्ट लक्ष्य (साध्य) है तथा निम्नावस्था लक्ष्यी या साधक है।

तेरहवां अधिकार 'चतुर्दश गुणस्थानाधिकार' है। अनेक गुणस्थानों में १४ गुण-स्थान प्रमुख माने गए हैं। इन गुण स्थानों की द्विविधा से दूर होकर जीव को स्वच्छंद गति से आत्मचिंतन-आत्मानुभव-आत्म-साक्षात् करना चाहिए। मूलतः इस अधि-कार का यही विषय है।

अन्त में ४० छन्दों में अन्तिम प्रशस्ति लिखते हुए नाटक का अन्त किया गया है। यह नाटक कुंदकुंदाचार्य कृत समय पाहुड़ की अमृत चंद मुनि की टीका पर आधृत है। समय का अर्थ है आत्मा और पाहुड़ का अर्थ है सार, अर्थात् शुद्धावस्था।

समर्पण (सन् १९७०, पृ० १३४), लें० : जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द'; प्र० : रवीन्द्र प्रकाशन, ग्वालियर, आगरा; पात्र : पु० १०, स्त्री ८; अंक : ३ दृश्य : ४, ४, ४।
घटना-स्थल : हरिजन बस्ती।

इस नाटक में प्रेम, विवाह आदि की बातों को मूर्खता से पूर्ण और समाज-सेवा के मार्ग में बंधन बताया गया है। इला अपने मां बाप और सखियों के बहुत दबाव डालने पर भी अच्छे-अच्छे युवकों के साथ विवाह-प्रस्ताव ठुकरा देती है। हरिजन बस्ती की एक सभा में इला की भेंट नवीन से होती है। नवीन हरिजन-सेवक है। वह भी प्रेम, विवाह आदि का कट्टर विरोधी है और तपस्वी, दृढ़व्रती युवक-युवतियों का एक दल तैयार करना चाहता है जो निष्काम भाव से हरिजनों, किसानों तथा मजदूरों का उद्धार-कार्य करें। इला नवीन को अपना आदर्श

एव पथ-प्रदर्शक मानकर मानव-समाज सेवा में जुट जाती है। इनके विचारो तथा कार्यों से प्रभावित होकर सुषमा, माधवी, माया, उपेन्द्र और गजेन्द्र सिंह आदि भी नवीन के दल में शामिल हो जाते हैं। नवीन के कार्यों से प्रभावित होकर बिहारी भी प्रेम, विवाह से घृणा करने लगता है।

इला विनोद के साथ विवाह-प्रस्ताव को ठुकरा देती है। विनोद सुषमा के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट करता है लेकिन इला के विचार से प्रभावित होने के कारण सुषमा भी उसका प्रस्ताव ठुकरा देती है। विनोद अपने प्रेम की असफलताओ के कारण बहुत निराश होता है। गजेन्द्र उसे प्रेम मे सफलता पाने का उपाय बताते हुए कहता है कि तुम जिससे प्रेम करते हो उसी के अनुरूप बन जाओ। विनोद निराश एव कुठित माधवी को मीठी बातो मे बहकाकर उससे शादी कर लेता है। अब दोनो हरिजन-बस्ती मे जाकर उनकी सेवा करने लगते हैं। दोनो हरिजनो को भड़काकर इला और नवीन के दल को बस्ती से निकलवा देते हैं। माया और गजेन्द्र सिंह नवीन के आदेश पर किसानो के बीच गाव में रहकर काम करने लगते हैं। किसानो के दबाव पर उन्हें भी शादी करनी पडती है। इला अपने दल के साथियो के इस पतन पर बहुत दुखी होती है। नवीन भी इला के प्रति अपना उत्कट प्रेम प्रकट करता है। इला भी अन्तर्मन में नवीन से प्रेम करती है, किन्तु वह नवीन की बातें सुनकर बहुत दुखी और नाराज होती है। नवीन हमेशा के लिए इला को छोडकर मजदूरों मे काम करने चला जाता है। एक दिन इला सुषमा से बातें कर रही थी कि हाकिया उसे अखबार दे जाता है। अखबार खोलते ही उसकी निगाह 'नवीनचन्द्र मजदूरों का नेतृत्व करते हुए गोली से मारे गये' पर पडती है। बरसों की तपस्या और सयम का बाध एक ही झटके में टूट जाता है और इला बिलख-बिलखकर रोती हुई कहने लगी कि मैंने नवीन से प्रेम-विवाह किया है, मैं नवीन की विधवा हू। इला उसी समय नवीन के अधूरे काम को पूरा करने के लिए मजदूरो के पास चली जाती है।

समाज (वि० १९८३, पृ० १९१), ले० : बहुगुणा, प्र० गगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ, पात्र पु०१२, स्त्री ४, अक : ३, दृश्य : ७, ७, ७।
घटना-स्थल सेवा आश्रम।

इस सामाजिक नाटक में विधवा-विवाह की समस्या दिखाई गई है।

लाडली प्रसाद एक विधवा से विवाह कर लेने के अपराध मे समाज से च्युत कर दिये जाते हैं। पत्नी के देहावसान के उपरान्त लाडली प्रसाद अपनी नन्ही पुत्री शान्ता और अपनी समस्त सम्पत्ति स्वामी विशुद्धानन्द को सौंप कर अज्ञात वास को चले जाते हैं। इसमे स्वामीजी के विचारो से प्रकट होता है कि ऊँच-नीच की भावना को जन्म देने वाले इसी समाज के व्यक्ति हैं न कि ईश्वर। स्वामी की प्रसिद्धि स्थानीय ब्राह्मणों और समाज के अन्य श्रेष्ठ व्यक्तियो को चुभने लगती है। इन श्रेष्ठ सामाजिको में से सेठ हरिदास का पुत्र ज्ञान प्रकाश स्वय स्वामी जी का शिष्य हो जाता है। सेठ जी उसे घर से निकाल देते हैं और अपनी पुत्री सरला का विवाह एक दुराचारी व्यक्ति धनपत से कर देते हैं। सेठ जी अपनी समस्त सपत्ति भी उसी के नाम कर देते हैं। धनपत आम बिगडे शाहजादो की तरह शराब और वेश्याओ पर धन की वर्षा करता है। सेठ जी के विरोध करने पर धनपत उन्हें घर से निकाल देता है। सेठ अपनी बदली हुई परिस्थिति मे कगालो की तरह घूमते हुए काशी के एक आश्रम मे पहुँचते हैं जिसके सयोजक लाडली प्रसाद जी ही होते हैं। शान्ता और ज्ञान प्रकाश का सबध होने से इस आश्रम मे सभी बिछुडे हुए एक-दूसरे से मिलते हैं।

समाज (वि० १९९६, पृ० ११२), ले० : छविनाथ पाडेय, प्र० साहित्य सेवक कार्यालय काशी, पात्र पु० १४ स्त्री नही, अक : ३, दृश्य १०, १०, ६, ४।
घटना स्थल : देहली-शुद्धि-सभा, सडक, चमारो की बस्ती, ग्राम, नगर का एक प्रान्त।

इस सामाजिक नाटक में हिन्दू जाति के अन्तर्गत व्याप्त छुआछूत की समस्या को उठाया गया है। नित्यानंद शास्त्री वेदपाठी और पुजारी हैं पर षोडशवर्षीया एक सुन्दरी को देखकर उसे प्राप्त करने को लालायित हो जाते हैं। ग्राम में चमारों की बस्ती है। गर्मी में नदी और तालाब का जल सूख जाने पर उन्हें मन्दिर के पास स्थित कूप से जल भरने नहीं दिया जाता अतः वे प्यासे तड़पते हैं। गांव के जमींदार ठा० निदानसिंह कहते हैं कि "धर्माचार्य नित्यानंद शास्त्री के रहते इस राज्य में किसी तरह का अधार्मिक आचरण नहीं हो सकता।" ठा० साहब के गांव नसीमपुर में शुद्धि सभा के संचालक नेकीराम शर्मा और भूदेव मिश्र के उद्योग से हिन्दू-सभा का कार्यालय खुलता है। ग्राम के अछूत भाइयों को आश्वासन मिलता है। पं० नेकीराम-शर्मा के सम्पर्क में आने से ठा० निदानसिंह में परिवर्तन होता है और वे अछूतों के लिए उनकी बस्ती के पास एक मन्दिर बनवा देते हैं और कुआं खुदवा देते हैं। मन्दिर की प्रतिष्ठा के समय छूत-अछूत सब एकत्र होते हैं और ठा० निदानसिंह बुद्धू चमार को उठाकर गले से लगा लेते हैं।

ग्रामीण जनता में हिन्दू-धर्म के प्रति जागृति हो जाती है और मौलवी लियाकत हुसैन का अछूतों को मुसलमान बनाने का स्वप्न टूट जाता है।

समाज का शिकार (सन् १९१६, पृ०१३०), ले० : राव रामदास गुप्त; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, बनारस; पात्र : पु० १६, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : १२, ८, ३।
घटना-स्थल : भवन, झोंपड़ी, आर्य-संघ, ग्राम पथ।

इस सामाजिक नाटक में ऐसे वर्गों का वर्णन है जो अकारण ही समाज के शिकार हो रहे हैं। लेखक ने साहित्यकार के विषय में लिखा है कि जिसका नाम चमक गया है उसी को पैसा मिलता है, उसी को ख्याति मिलती है यहीं तो अच्छे-अच्छे साहित्यकार मारे-मारे फिरते हैं। दूसरा प्रसंग गरीबी-अमीरी का है। हरिदास नामक एक पात्र कहता है—"मतिमन्द! गरीबी का रोना, अमीरी की हँसी हिन्दू घरों के बाहरी रूप हैं। जब तक इस धरती पर हिन्दू जाति है जातीयता में समाज का विधान है, विधान में दहेज की प्रथा है तब तक समाज की बाधा भी आवश्यक रहेगी।" इस प्रकार लेखक ने दहेज प्रथा पर भी करारी चोट दी है। जाति-प्रसंग भी इसमें उठाया गया है। दयाराम एक बिरादरी से निकाला हुआ व्यक्ति है तथा समाज उसको नाना प्रकार का कष्ट देता है। उसकी पुत्री को हरिदास सेठ का पुत्र जाल में फँसाकर पुनः छोड़ देता है। इस प्रकार समाज में प्रचलित कुरीतियों का नाटक में अच्छा चित्रण है।

समाज की चिनगारी (सन् १९६१, पृ० ५९), ले० : देवेन्द्र नारायण एवं सत्यनारायण गुप्त; प्र० : श्री गंगा पुस्तक मन्दिर, पटना; पात्र : पु० ७, स्त्री २; अंक : २; दृश्य : ४, ४।
घटना-स्थल : नदी का किनारा, झोंपड़ी, वाटिका, दरोगा का कमरा, सेवा सदन।

इस नाटक की कथा अभिशप्त नारी जीवन की वेश्यावृत्ति से सम्बन्धित है। धनिक-वर्ग गरीबों की विवशता का लाभ उठा उनकी मान-मर्यादा से खुलकर खेलता है। स्वजनों से बिछुड़ी निर्मला को सेठ अपनी काम-वासना का शिकार बनाता है, इसी से वह अपने अवैध नवजात शिशु को गंगा-लहरियों को सौंपने के लिए अपने वृद्ध संरक्षक को दे देती है। उसका बचपन का बिछुड़ा भाई शेखर अपने मित्रों की सहायता से वेश्या-उद्धार आन्दोलन चलाकर इस अभिशाप से नारी-जाति को मुक्त करना चाहता है। अन्त में अपनी बहिन की पहचान कर उसका विवाह करने में सफल हो जाता है।

समाज चित्र (सन् १९१९, पृ० ७०), ले० : कृष्ण कुमार मुखोपाध्याय; प्र० : बेल वेडियर प्रेस, इलाहाबाद; पात्र : पु० ८, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : १, १, ५।

इस नाटक में समाज की वर्ण व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है और देश की दुर्दशा का कारण वर्ण-व्यवस्था को ही माना गया है। नाटक के प्रथम अंक में एक पात्र कहता है "यदि यथार्थ से देखा जाय तो संसार में केवल दो ही जातियाँ हैं एक स्त्री और दूसरी पुरुष जाति।" आगे चलकर एक स्थान पर नायक कहता है कि "ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्णों के नाम जो हैं वे सब गपोड़शंख हैं। वर्ण केवल दो ही हैं गौर और श्याम।" वह सारे समाज को वर्ण व्यवस्था से मुक्त कराना चाहता है। किन्तु एक स्थान पर वह अपने ही विचारों का मानो खंडन करते हुए कहता है कि श्याम और गौर वर्ण में उत्तम है गौर वर्ण। नाटक में वर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध में कोई विचार स्पष्ट नहीं दिखाई पड़ता।

समाज सेवक (सन् १९३३, पृ० १७३), ले०। बलदेव प्रसाद मिश्र, प्र० साहित्य समिति, रायगढ़, पात्र पु० १३, स्त्री २, अंक। ५, दृश्य ८, ६, ७, ६, ५।
घटना-स्थल गाँव।

ग्रामीण जीवन में फैली हुई विषमता की भावना को आधार बना कर नाटक की रचना की गई है। नाटक का नायक मोहन मानव-एकता का प्रचार करना चाहता है। उसी गाँव का एक ब्राह्मण-कुमार मोहन का विरोध करते हुए अपने पिता का मत इस प्रकार प्रगट करता है—'अपने सुख-दुःख और गांव के सुख-दुःख में अन्तर है। यहाँ तो कई चमार भी बसते हैं, जिनको छूने से हमारा धर्म नष्ट हो जावेगा। हम उनके सुख-दुःख में शामिल कैसे हो सकते हैं।'

मोहन इसका उत्तर देते हुए कहता है कि 'जिस ईश्वर ने तुम्हें बनाया है उसी ने उनको भी जन्म दिया है। फिर एक ही पिता की सन्तानों में इस प्रकार का भेद क्यों है।' वह एक बेहोश डोम की सेवा करता है। उसको गोद में लेकर पानी पिलाता है।

मोहन ग्रामोद्धार के लिए सभी जातियों के नवयुवकों का एक दल तैयार करता है और अपने साथियों को मानव-सेवा के लिए तैयार करता है।

इस प्रकार गान्धी जी के प्रभाव में सत्य, अहिंसा, अछूतोद्धार आदि का कार्यक्रम इस नाटक में निर्धारित किया गया है।

समाधान (सन् १९४३, पृ० ११२), ले०। राम सजीवन, प्र० पाटलीपुत्र प्रबोध प्रकाशन, पटना, पात्र पु० ९, स्त्री २, अंक ३, दृश्य-रहित।

प्रस्तुत गीति-नाट्य एक प्रणय-कथा पर आधारित है। प्रेम का त्रिकोण ही उसकी आधार-शिला है। किशोर और मृदुलिनि के प्रेम-मार्ग का कण्टक है किशोर का साथी रणेन्द्र, जो स्वयं मृदुलिनि से प्रेम करता है। मृदुलिनि को पाने के लिए वह भोले किशोर को मृदुलिनि की दृष्टि में वासना का पुतला और पतित सिद्ध करता है। भोला किशोर रणेन्द्र की आशा के अनुकूल मृदुलिनि से प्रतारणा और तिरस्कार पाता है। परन्तु रणेन्द्र की शेष योजना सफल नहीं होती। मृदुलिनि की सखी मलयजा उसे वस्तुस्थिति से परिचित कराकर किशोर के प्रति उसके हृदय में वास्तविक प्रेम को पुनर्जाग्रत कर दोनों का पुनर्मिलन करा देती है। किशोर अपने प्रणय की सात्विकता सिद्ध करने के हेतु मृदुलिनि को बहन के रूप में ग्रहण करता है और रणेन्द्र को भी क्षमा प्रदान कर अपने हृदय की उच्चाशयता का परिचय देता है।

समाधि (सन् १९५२, पृ० २१८), ले०। विष्णु प्रभाकर, प्र० ओरियण्टल बुक डिपो, दिल्ली, पात्र पु० १५, स्त्री ८, अंक। ३, दृश्य ४, ६, ८।
घटना स्थल तक्षशिला, कश्मीर।

भानुगुप्त बालादित्य युद्ध में हार कर एक बार अपना हठ छोड़ बैठते हैं, परन्तु अपने अमात्य, महादेवी, राजमाता, तक्षशिला के महाविहार की वृद्धा और युवती भिक्षुणियों तथा यशोधर्मन आदि के उकसाने पर हूण राजा मिहिरकुल पर आक्रमण करते हैं। उनकी विजय भी होती है, परन्तु मिहिरकुल की पत्नी द्वारा राजमाता से क्षमा-याचना

पर भानुगुप्त उसे मुक्त कर पंचनद प्रदेश का राज्य दे देते हैं।

अपने सहोदर द्वारा प्रचारित निषेधाज्ञा से बाधित होकर मिहिरकुल काश्मीर-नरेश का आश्रय ग्रहण करता है और अवसर पाकर उसे सिंहासन से च्युत कर अधिपति बन बैठता है। हूण सैनिकों के सहयोग से वह प्रजा को नानाविध त्रस्त करता है। त्रस्त प्रजा के उद्धार के लिए यशोधर्मन राष्ट्रीय युवकों के एक दल के साथ हूणों का प्रबल विरोध करता है। हूण सेनापति मालव सेनापति रविवर्मन की भतीजी मालवी से बलात् विवाह करना चाहता है। रविवर्मन द्वारा विरोध प्रकट करने पर उन्हें मृत्यु-दण्ड मिलता है परन्तु यशोधर्मन के सतत प्रयास से उसके जीवन की रक्षा होती है। मालवी छद्म वेश में महलों में रहकर समस्त आवश्यक सूचनाओं से स्वपक्ष को अवगत कराती रहती है और उचित अवसर पर कीर्तिवर्मन की सहायता से मालव नरेश की हत्या कर उसके राज्य पर अधिकार कर लेती है। मिहिरकुल प्रबल आक्रमण करता है किन्तु पराजित हो जाता है। यशोधर्मन की हूणों पर विजय के सुखद समाचार को सुनकर चेदिराजमहिषी आनन्दी आनंदातिरेक से मृत्यु को प्राप्त होती है। यशोधर्मन उसकी स्मृति में समाधि बनवाता है। नाटक में दूसरा नाटक खेला जाता है।

समुद्र गुप्त (सन् १९५७, पृ० ८८), ले० : वैकुंठनाथ दुग्गल ; प्र० : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ; पात्र : पु० ७, स्त्री ६ ; अंक : ३ ; दृश्य : ७, ८, ६।
घटना-स्थल : कृष्णा नदी का तीर, महाबोधि विहार का मन्दिर, पाटलिपुत्र का राजोद्यान, कांची के राजभवन का मन्त्रणागार, पाटलिपुत्र का राजभवन, शिविर, मन्दिर।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। भारत सम्राट् समुद्रगुप्त कृष्णा नदी के किनारे खड़े होकर प्राकृतिक सौन्दर्य का निरीक्षण कर रहे हैं। इसी समय एक पक्षी इनके समीप आकर गिरता है। पक्षी के मुख में स्वर्णमुद्रा गिरती है जिसे देखकर महाराज चिन्तित होते हैं कि सहसा एक सुन्दर युवती इनके पास आकर बातचीत करती है। किन्तु वह महाराज का परिचय पाकर कुछ डरती है। महाराज उसके अपराध को क्षमा कर उसे अपनी मोती की माला देते हैं। सम्राट् समुद्रगुप्त कंचन की निडरता और सुन्दरता से बहुत प्रभावित होते हैं। दक्षिण के देश मिलकर अपनी स्वाधीनता के लिए सम्राट् से युद्ध की घोषणा करते हैं और कांची-नरेश कृष्ण गोप के नेतृत्व में चढ़ाई करते हैं। राजकुमारी कंचन युवराज अखिल के वेष में सम्राट् की सेना को छक्के छुड़ा देती है। कृष्णगोप वीरगति को प्राप्त होते हैं। युवराज अखिल बन्दी बना लिए जाते हैं। महाराज के सामने पहुँचकर युवराज प्रतिशोध की कामना करता है। सम्राट् युवराज को इच्छापूर्ति का आश्वासन देते हैं। वसुबन्धु नाम का बौद्धकवि कंचन से प्यार करता है और उसे प्राप्त करने के लिए विजयोत्सव के समय समुद्रगुप्त पर छुरे से प्रहार करता है। इस प्रहार को अखिल सामने आकर झेल लेता है और सम्राट् की बाहों में लुढ़ककर मरते-मरते अपना वास्तविक परिचय दे जाता है कि 'मैं ही कंचन हूँ।' यह जानकर सम्राट् बहुत दुखी होते हैं।

सम्राट् अशोक (वि० १९९६, पृ० १९४), ले० : रूपनारायण पाण्डेय; प्र० : गंगा ग्रन्थागार, लखनऊ ; पात्र : पु० १२, स्त्री ३; अंक : ५, दृश्य : ५, ३, ५, ५, ५।
घटना-स्थल : वाटिका, राजमहल, नदी-तट का वन, वन मार्ग, पहाड़ी बस्ती, श्मशान।

इस ऐतिहासिक नाटक में सम्राट् अशोक की राष्ट्रप्रियता दिखाई गई है।

मगध-सम्राट् बिन्दुसार की पटरानी धारिणि से अशोक और छोटी रानी चित्रा से वीतशोक का जन्म हुआ। सम्राट् प्रियतमा चित्रा को अधिक सम्मान देने के लिए, वसन्तोत्सव में उसे अपने साथ बिठाना चाहते हैं पर मन्त्री राधागुप्त इसका विरोध करके परम्परानुसार पटरानी धारिणी को साथ बिठाने का आग्रह करते हैं। धारिणी इस गृह-कलह को मिटाने के लिए चित्रा को

महाराज के साथ बैठने का अधिकार स्वेच्छा से देती है। चित्रा के षड्यन्त्र से बिन्दुसार रुग्णावस्था में अशोक को राज्य से निर्वासित कर देते हैं। निर्वासित अशोक पत्नी अनीता के साथ दर-दर घूमते हुए पिता के अत्याचारों को किसी प्रकार सहन करते हैं। पिता महाराज को भड़काती है कि अनीता आपके खिलाफ कुचक्र रचने के लिये अपने पति से जा मिली है। तक्षशिला का राजा कनिष्क अनीता की दीन दशा देखकर उसे अपनी धर्म बेटी बना लेता है। चित्रा के प्रकोप से अशोक के पुत्र महेन्द्र और कुणाल भी मगध त्यागने पर विवश हो जाते हैं।

तक्षशिला में भ्रमते हुए अशोक जीवन से निराश हो विषपान करते हैं पर मृत्यु के स्थान पर वे नीरोग हो जाते हैं और वन में तक्षशिलाधीश कनिष्क से उनकी भेंट हो जाती है। तक्षशिला राज की सहायता से अशोक सैन्य सहित उस समय मगध पहुँचता है जब बिन्दुसार चित्रा के साथ सिंहासन पर बैठने के उपक्रम में मन्त्री राधागुप्त का उपहास करता है। अशोक प्रतिशोध की भावना से उग्र और क्रूर बनकर अनेक व्यक्तियों को मृत्युदण्ड देता है पर बौद्ध भिक्षु कृपानन्द के उपदेश से उसका हृदय-परिवर्तन होता है। कृपानन्द आशीर्वाद देते हैं—"उठो, जागो, तुम्हारा राज्य धर्मराज्य हो। तुम्हारा यश अक्षय हो।"

अंत में भरत वाक्य के साथ नाटक समाप्त हो जाता है।

सम्राट् अशोक (सन् १९२३, पृ० १६८), ले० चन्द्रराज भण्डारी 'विशारद', प्र० गांधी हिन्दी मंदिर, अजमेर, पात्र पु० १०, स्त्री ७, अंक ४, दृश्य १५, ६, ५, ७।
घटना-स्थल भारत, कलिंग देश, मथुरा आदि।

इस ऐतिहासिक नाटक में सम्राट अशोक की वीरता चित्रित है। *कलिंग विजय के बाद* अशोक युद्ध न करने की प्रतिज्ञा करता है। प्रणयिनी को अशोक के सैनिक पकड़ लाते हैं। वह अशोक के शत्रु कलिंग राजा मृगेन्द्र की पुत्री है। पहले वह अशोक से घृणा करती है पश्चात् प्रेम करने लगती है। अनाथ प्रमिला को भी राजा मृगेन्द्र ने अपनी पुत्री प्रणयिनी के साथ ही पाला है। बड़ी होकर प्रमिला कलिंग युवराज जितेन्द्र से विवाह की इच्छा प्रकट करती है इस पर राजा मृगेन्द्र हँसते हैं। प्रमिला इसे अपमान समझ कलिंग के वृद्ध मंत्री विशाखानन्द से विवाह करती है और षड्यन्त्र द्वारा कलिंग देश का विनाश करवाती है।

सम्राट् अशोक (सन् १९७०, पृ० ६४), ले० विश्वम्भरनाथ धावाल, प्र० *भाग्योदय प्रकाशन २०३ मातागली,* मथुरा, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अंक ३, *दृश्य* ५, ३, ३।
घटना स्थल कलिंग देश, मगध का राजदरबार, कारागार।

सम्राट् अशोक अपने दुर्दम साहस से राज्य-विस्तार के लिए अपने मन्त्री विजयकेतु से कलिंग अभियान की चर्चा करते हैं। मन्त्री राजा को ऐसा करने से रोकना चाहता है किन्तु राजा के दृढ़ निश्चय के सामने वह भी कलिंग अभियान का निश्चय करता है। वीताशोक सन्यासी जो सम्राट् का अनुज है, सम्राट् को राज्य-लिप्सा हेतु मानवता का संहार रोकने की प्रार्थना करता है। सम्राट् न मानकर युद्ध प्रारम्भ कर देते हैं। कलिंग सम्राट् और कलिंग निवासी इस जबरदस्ती थोपे युद्ध की चुनौती को स्वीकार कर अपने अल्प साधनों से अपनी स्वातन्त्र्य-भावना के कारण मगध की विशाल वाहिनी को रोकते हैं। कलिंग नरेश युद्धभूमि में मारे जाते हैं। कलिंग के भीषण रक्तपात में वीरांगना रानी दुर्गा पति-विद्रोह को सोच कर जौहर और युद्ध के लिये रमणियों को तैयार करती है।

द्वितीय अंक में अशोक को बन्दिनी द्वारा ज्ञात होता है कि वृद्ध और विधवाओं के अतिरिक्त *कलिंग श्मशान बन गया है।* प्रभा आकर पुरुष वेश में सम्राट् को चुनौती देती है और अपने मन्त्री को छुड़ाकर ले जाती है।

इसका भाई देवेन्द्र भी मगध कारागार में है। रानी तिष्यरक्षिता युवक देवेन्द्र पर मुग्ध हो उसे मुक्त करती है और आप अपनी वासना की शान्ति के लिये सम्राट् का वध कराना चाहती है। देवेन्द्र रानी को नीच कृत्य के लिये धिक्कारता है। विजयकेतु राजा के सम्मुख दण्ड के लिये प्रस्तुत होता है और देवेन्द्र के उज्ज्वल चरित्र तथा तिष्यरक्षिता की पाप कथा प्रकट करता है। इसी अंक में वीत-शोक, प्रभा और कलिंग मन्त्री प्रतिशोध न लेने की प्रार्थना कर नर संहार को और भी बढ़ाने से रोकना चाहते हैं।

तृतीय अंक में प्रभा और देवेन्द्र के उज्ज्वल चरित्र, रानी तिष्यरक्षिता का पाप और युद्ध के भीषण संहार सम्राट् का हृदय बदल देते हैं। वे घोषणा करवाते हैं कि अब से अशोक चण्डाशोक राज्य-विस्तार के लिये युद्ध नहीं करेगा और प्रत्येक क्षण प्रजा की सेवा में लगायेगा। वे प्रभा से दण्ड पाने के लिये अपने को प्रस्तुत करते हैं। प्रभा उनके हृदय-परिवर्तन में प्रतिशोध को पूर्ण समझती है और उपगुप्त सम्राट् को धर्म की दीक्षा देकर बुद्ध धर्म में सम्मिलित करते हैं।

सम्राट् अशोक (सन् १९६२, पृ० ९२), ले० : मास्टर ग्यादर सिंह 'बेचैन'; प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० ९, स्त्री ६; अंक : ३; दृश्य : ८, ५, ३।
घटना-स्थल : मगध राज्य।

यह नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी कल्पना प्रधान है। इसमें इतिहास प्रसिद्ध महाराज बिन्दुसार, अशोक, महेन्द्र, कुणाल आदि के नाम मात्र आये हैं। इतिहास की सम्पूर्ण घटनायें तो अपनायी गई हैं किन्तु उनका स्वरूप नितान्त परिवर्तित है। बिन्दुसार अशोक के स्थान पर शकरानी चित्रा के प्रभाव में वीतशोक को राज्य देना चाहते हैं। चित्रा, अपनी सौत धारणी को पटरानी पद से च्युत तथा अशोक को निर्वासित कर शक सेना की सहायता से महेन्द्र, कुणाल, मंत्री राधा गुप्त, धारणी आदि का वध कर निष्कंटक राज्य करना चाहती है। अशोक तक्षशिला-नरेश कनिष्क की सहायता से कुचक्रों का दमन करता है। चित्रा कुणाल की आँखें निकलवा लेती है। धर्मनाथ बौद्ध भिक्षु, महेन्द्र, अमिता, कुणाल, विनायक तथा लवउद्योगी आदि को शरण देता है और अपनी सिद्धि से राजा अशोक को भी प्रभावित कर बौद्ध धर्मानुयायी बनाता है।

सम्राट् परीक्षित (वि० १९७९, पृ० १२०), ले० : बलदेव प्रसाद खरे; प्र० : निहालचन्द एण्ड कम्पनी, नारायण प्रसाद बाबूलेन, कलकत्ता; पात्र : पु० ३८, स्त्री ११; अंक : ३; दृश्य : ७, ७, ६।
घटना-स्थल : वन-मार्ग, इन्द्रलोक।

इस पौराणिक नाटक में अभिमन्यु पुत्र राजा परीक्षित के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। इसमें परीक्षित को धर्म-परायण, प्रजा-वत्सल, गो-विप्रपालक वीर भारत सम्राट् के रूप में चित्रित किया गया है। कलियुग की प्रचंड महिमा और भगवान श्री कृष्ण का अलौकिक योगबल भी दर्शनीय है। नाटक के प्रथम अंक में परीक्षित के जन्म का कारण, जन्म के समय की घटना और राजतिलक दूसरे अंक में परीक्षित की धर्म-निष्ठा, दयालुता तथा स्वर्गारोहण का दृश्य चित्रित है। तीसरे अंक में इन्द्र का साहस, जनमेजय का नागयज्ञ और संधि-परिणाम दिखाया गया है।

सरजा शिवाजी (सन् १९३६, पृ० ११२), ले० : गोपाल चन्द्रदेव; प्र० : भारतीय साहित्य मन्दिर, दिल्ली; पात्र : पु० १५, स्त्री ३; अंक : ७; दृश्य १०, ११, १०, १५, २, ६, ६।
घटना-स्थल : दिल्ली दुर्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक में ब्राह्मण, गऊ एवं भारतीय संस्कृति के एकमात्र रक्षक शिवाजी की वीरताओं के प्रसंग चित्रित हैं। शिवाजी को अपने बाल्यकाल में अपनी माता जीजाबाई से ही ज्ञान मिलता है। उनको सूई बाई नामक पत्नी भी वरदान स्वरूप

मिलती है।

अब शिवाजी के मन में बार बार मुसलमानो के अत्याचार खटकते हैं। वे हिन्दू जाति को इन म्लेच्छो के नीचे कभी नही देखना चाहते हैं। माधो जी अभयजी आदि मित्र भी शिवाजी के लिये जान पर खेलने को तैयार रहते हैं। शिवाजी के पिता शाह जी आदिल शाह के यहाँ एक बडे पद पर हैं। फिर भी शिवाजी कभी भी अपने पिता के पास बादशाह से मिलने नही जाते हैं।

शिवाजी धीरे से एक दुर्ग पर अधिकार कर बादशाह को उसका सालाना कर देना स्वीकार कर लेते हैं। वे धीरे-धीरे कुछ सेना तैयार कर लेते है। शाहजी उनके इस कार्य से असन्तुष्ट हैं, क्योंकि बादशाह से कभी विरोध ठीक नही। आदिलशाह को दूत के द्वारा खबर मिलती है कि शिवाजी ने बहुत से दुर्गों पर अधिकार कर लिया है। इससे आदिलशाह दुखी होते हैं क्योंकि दूसरी ओर से शाहजहाँ भी आक्रमण कर रहा है। अफजल खा शिवाजी को पकडने जाता है परन्तु नीतिज्ञ सरजा के द्वारा मार दिया जाता है। इधर शिवाजी औरगजेब से भी टक्कर लेते हैं।

अन्त मे शिवाजी एक सुदृढ राज्य की स्थापना करके गद्दी पर बैठते हैं।

सरदार बा (वि० १९९०, पृ० ७६), ले०: कुमार हृदय, प्र० तरुण भारत ग्रन्थावली कार्यालय, प्रयाग, पात्र पु० १३, स्त्री ५, अक ३, दृश्य ५, ५, ५।
घटना स्थल पाटन का न्यायालय, दिल्ली का राज मार्ग, रानीपुर का राज प्रसाद, रानीगढ का उत्तरी भाग।

यह नाटक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है जिसमे वीर कन्या का शौर्य दिखाया गया है।

रानीपुर के वृद्ध जागीरदार खेमराज प्रण करते हैं कि वे उस वीर राजकुमार से अपनी कन्या सरदार बा का विवाह करेंगे जो कि समस्त सौराष्ट्र को स्वतन्त्र कराने की प्रतिज्ञा करेगा। गुजरात का सूबेदार रानीपुर पर अधिकार कर लेता है वह खेमराज सरदार बा तथा उसकी मा को कैद कर लेता है परन्तु सरदार बा कैद मे निकल कर भाग जाती है। उसकी भेंट चन्द्रावती के राजकुमार वैरीसिंह से होती है। इसके पश्चात् वैरीसिंह अपनी वीरता व पराक्रम से गुजरात के सूबेदार रहमतखाँ का पतन कर देता है और खेमराज व उनकी पत्नी को कैद से छुड़वाता है। खेमराज वैरीसिंह से प्रसन्न हो कर अपनी कन्या का हाथ उसके हाथ मे दे देता है।

सरवर नीर (सन् १९५८ पृ० ६२), ले० न्यादरसिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ७, ५, ४।
घटना-स्थल राजा अम्ब की राज-सभा, इन्द्रासन, नदी तट, धारा नगरी।

इस नाटक मे सत्यवादी राजा अम्ब के राजा से रक और रक से फिर राजा बनने की दिलचस्प कहानी है। राजा अम्ब के निन्नानवें यज्ञ करने से इन्द्र का सिंहासन डोल जाता है। नारद मुनि सिंहासन डोलने का कारण बताते हैं और इसकी सुरक्षा के लिए राजा अम्ब से राज दान में माँगने का उपाय बताते हैं। इन्द्र ब्राह्मण-वेश मे अम्ब की राज-सभा मे जाकर राज माँगते हैं। राजा अम्ब ब्राह्मण को राज सौंप कर अम्बली और दोनो पुत्रों—सरवर, नीर को लेकर राज्य से बाहर निकल जाते हैं और सबके सब भटियारी के यहाँ नौकरी करके अपना गुजारा करने लगते हैं। भटियारी इन सबसे बड़ी कठोरता से काम लेती, बच्चो को खूब मारती तथा भरपेट खाना भी नहीं देती। एक सौदागर अम्बली को देख उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो जाता है। वह भटियारी को पाँच अशर्फियाँ देकर कहता है कि अम्बली को खाना लेकर मेरे जहाज पर भेज दे। वह बेचारी खाना लेकर जहाज पर जाती है। सौदागर जबरदस्ती अम्बली को अपनी औरत बनाने लगता है। अम्बली ने

विवशतावश सौदागर के सामने यह शर्त रखी कि छः महीने तक मुझे अपनी बहन बनाकर रखो, बाद में तुम्हारी औरत बन जाऊँगी।

इधर भटियारी अम्ब और उनके दोनों बच्चों को धक्के मारकर सराय से निकाल देती है। एक नदी को पार करते समय अम्ब को मगर निगल जाता है। नीर और सरवर दोनों नदी के किनारों पर खड़े-खड़े अपने दुःख और दैन्य पर रो रहे हैं। संतान-हीन कल्लू धोबी सरवर नीर को अपना बेटा बनाकर रख लेता है। मछुओं ने नदी में जाल डाली तो उसमें मगर फँस गया। मगर का पेट चीरने पर उसमें से अम्ब जीवित निकले। दुर्भाग्य के सताये अम्ब बहुत सबेरे ही धारा नगरी के बन्द दरवाजे पर जा पहुँचते हैं। दरवाजा खुलते ही वहाँ के राजा की अरथी निकलती है। सिपाही अम्ब को पकड़कर धारा नगरी का राजा बना देते हैं क्योंकि मृतक राजा ने यह आज्ञा दी थी कि शहर का दरवाजा खुलते ही जो व्यक्ति सबसे पहले दिखाई दे उसी को मेरी जगह राजा बना देना।

अम्ब अब पुनः राजा तो बन जाते हैं लेकिन पत्नी और बच्चों के वियोग में बहुत दुःखी रहते हैं। एक दिन सौदागर दरबार में उपस्थित होकर अनेक बहुमूल्य हीरे आदि राजा को भेंट करता है। परम्परानुसार अपने जहाज की रक्षा के लिए दो नौजवानों की माँग करता है। इस बार पहरेदार बनने की कल्लू की बारी थी। कल्लू की ओर से सरवर और नीर जहाज की रक्षा के लिए नदी-तट पर जा पहुँचते हैं। रात में दोनों अपनी दुःखभरी कहानी को कविता के रूप में गाते हैं। रानी अम्बली इस दास्तान को सुनकर निश्चय करती है कि ये दोनों ही मेरे बेटे हैं। इसके लिए वह एक युक्ति अपनाती है। सवेरा होते ही सौदागर दरबार में उपस्थित होकर राजा से प्रार्थना करता है कि मेरी बहन का नौलखाहार रात को पहरा देने वाले दोनों लड़कों ने चुरा लिया है। राजा सौदागर की बहन और कल्लू के दोनों बेटों को दरबार में उपस्थित होने की आज्ञा देते हैं। सरवर और नीर दरबार में अपनी बीती सुनाते हैं जिसे सुनकर राजा उन्हें अपने गले से लगा लेते हैं। पर्दे में छिपी बैठी अम्बली भी अपनी राम कहानी सुनाती है और इस तरह राजा अम्ब, रानी अम्बली तथा दोनों राजकुमारों का पुनर्मिलन हो जाता है। राजा अम्ब सौवां यज्ञ करते हैं जिससे प्रसन्न होकर देवता पुष्प वृष्टि करते हैं।

सरस्वती (वि० १९५५, पृ० १८४), ले० : दुर्गाप्रसाद मिश्र; प्र० : बड़ा बाजार, सूतापट्टी नं० ९५, कलकत्ता; पात्र : पु० १५, स्त्री ७; अंक : ५; गर्भांक : ६, ५, ४, ४, ५।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमें भारतवासियों की गृहस्थ-दशा को सुधारने का प्रयास किया गया है। सरस्वती नाम की स्त्री एक गांव में रहती है। उसका एक पुत्र मोहन है। उसकी गरीबी से लोग बहुत फायदा उठाते हैं। एक बार उसका लड़का बांसुरी वाले से एक बांसुरी बिना खरीदे ले लेता है। माँ के पास पैसा न होने से वह अपनी जेठानी से पैसे मांगती है। परन्तु वह देने से इन्कार कर देती है। इसी तरह कुछ दिन बीतते हैं। सरस्वती के सेठ किन्हीं कारणों से नौकरी से निकाल दिये जाते हैं और पांच हजार रुपये जुर्माना भी लगा दिया जाता है परन्तु दोनों माँ-बेटे मिलकर उसे छुड़ा लेते हैं। अन्त में सभी एक-दूसरे से पुनः मिल जाते हैं।

सर्राफी नाटक (सन् १८९०, पृ० २४), ले० : गोपीदत्त; प्र० : गोरखपुर प्रेस; पात्र : पु० ५, स्त्री नहीं; अंक : ३; दृश्य : २, २, २।
घटना-स्थल : नवाब का घर।

यह एक लघु नाटक है। सेठ के यहाँ दो नवाब आते हैं। पहला नवाब सेठ के पास पचास हजार तथा दूसरा दस हजार रुपये जमा करता है। लौटाने के लिए दस हजार वाले नवाब पहले आते हैं। सर्राफी भाषा की गलती के कारण वह उसे दूसरे नवाब की पचास हजार की राशि लौटा देता है। दूसरा नवाब इनके ऊपर दावा करता है और जिसके परिणामस्वरूप सेठ की कुर्की होती है और वह भिखारी हो

जाता है। सेठ अपनी सर्राफ़ी-भाषा को कोसता है।

सलेजा का सौभाग्य (सन् १९४२, पृ० १०४), ले० माधवाचार्य रावत, प्र० माधवाचार्य रावत, एडवोकेट, बांदा, पात्र पु० ११, स्त्री ३, अंक-रहित, दृश्य २८।
घटना स्थल श्रीपुर—एक भारतीय गाँव।

इस सामाजिक नाटक में भारत के सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक जीवन का चित्र खींचा गया है। नाटक का नायक अरविन्द और नायिका सरोज है। सन् १९३७ ई० के आसपास उन्मुक्त प्रेम सम्बन्ध को अवैध माना जाता है। पर अरविन्द और सरोज समाज-सेवी के रूप में कांग्रेस को सहायता करते हैं और अन्त में दोनों का विवाह हो जाता है।

नाटक का पात्र सुरेश भी कांग्रेस की सहायता करता है। वह लोगों से कांग्रेस को वोट देने को कहता है। वह सरोज की सहेली श्यामा का प्रेमी है। इन दोनों के प्रेम से जाति प्रथा को नया रूप मिलता है। श्यामा चमार है, सुरेश ब्राह्मण। दोनों देश के सामने ऊँचा आदर्श स्थापित करते हैं। एक स्थल पर सुरेश कहता है 'यदि श्यामा के सम्बन्ध से मैं चमार हो सकता हूँ तो मेरे सम्बन्ध से श्यामा ब्राह्मणी क्यों नहीं बन सकती ?'

सवेरा (सन् १९६१, पृ० ९६), ले० योगेन्द्र, प्र० आयात प्रकाशन खबड़ा, मुजफ्फरपुर, पात्र पु० ११, स्त्री ३, अंक २, दृश्य १०, ११।
घटना-स्थल एक गाँव।

इस सामाजिक नाटक में ग्रामोत्थान की भावना तथा ग्रामीणों में व्याप्त कुप्रथाओं एवं अंधविश्वासों का परिचय मिलता है। दूसरी ओर एक नवीन चेतना का सचरण भी किया गया है। नाटक के मुख्य पात्र किशोर के पिता की मृत्यु के साथ कथा का प्रारम्भ होता है। ग्रामीण चाहते हैं कि उनका अंतिम संस्कार गंगातट पर हो ताकि बस लारी की यात्रा करने का अवसर मिले तथा खाने के लिए दही-चूड़ा इत्यादि उपलब्ध हो सके। किशोर उन सबकी इच्छा के विरुद्ध अपने पिता का दाह-संस्कार ग्राम में ही करता है। ग्राम-पंचायत की व्यवस्था तथा श्रमदान द्वारा स्कूल निर्माण आदि कार्य नाटक की अन्य घटनाएँ हैं। इन्हीं घटनाओं के साथ पापाचार की वृत्तियों का भी सकेतात्मक निरूपण हुआ है। एक ग्राम के माध्यम से 'सवेरा' अर्थात् विकास की नवीन दिशाओं का सकेत हुआ है।

सस्सी पुन्नु (सन् १९६०, पृ० पंजाब की प्रीत कहानियों में संग्रहीत), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ४, अंक दृश्य-रहित।
घटना स्थल घाट, रेगिस्तान।

इस संगीत रूपक में एक परदेसी शहज़ादे तथा एक धोबिन की प्रणय-गाथा वर्णित है। शहज़ादा पुन्नु सस्सी की रूप-चर्चा सुनकर बनजारे के वेश में उसे चूड़ी पहनाने आता है। सस्सी के अनन्त सौन्दर्य के वशीभूत वह उसे देखता ही रह जाता है। किन्तु एक धोबिन एवं शहज़ादे का प्रणय व्यापार कैसे निभ सकता है ? अतः वह धोबी बनना स्वीकार कर लेता है। कुछ समय पश्चात् दोनों का विवाह हो जाता है। प्रेमियों की अनिश्चित स्थिति यहाँ भी उत्पन्न होती है। पुन्नु का भाई हेतु आकर छल से उसे वापिस महलों में ले जाता है। पीछे-पीछे सस्सी भी उसकी खोज में जाती है और जलते रेगिस्तान में प्रेम की अन्तिम प्राणाहुति देती है। उधर होश आने पर सस्सी को खोजता पुन्नु भी इस अपार्थिव मिलन की राह पर चल देता है।

सहारा (सन् १९६२, पृ० ९२), ले० जगदीश शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री २, अंक २, दृश्य १, १।
घटना स्थल प्रयोगशाला, अस्पताल, घर।

इस सामाजिक नाटक में धनियों की धन-लोलुपता का दुष्परिणाम दिखाया गया है। सेठ गोविन्द सहाय का लड़का किशोर डाक्टरी की शिक्षा के समय ही एक गरीब

बालिका मालती के प्रेम में पड़ जाता है। धनी पिता अपने धन, शान और मर्यादा के कारण मालती को किशोर से अलग करता है। वह एक धनी व्यक्ति कुंदन की पुत्री साधना से किशोर की शादी निश्चित कर लेता है। किन्तु किशोर मालती को नहीं भूला पाता। अस्थिर मस्तिष्क के कारण प्रयोग में वह गलती करता है। त्रुटि के कारण उसके विस्फोट से उसकी स्मरण शक्ति चली जाती है। अब डॉक्टर उसके पिता को पूर्व प्रेयसी से मिलाने पर ही स्मृति के लौटने की आशा व्यक्त करता है। वही सेठ जिसने अपनी शान के लिए मालती को दूर भगाया था, उसी के सामने घुटने टेक देता है।

मालती प्रेम पर न्योछावर होती है। वह उसकी स्मृति जगाने का प्रयास करती है किन्तु वह पुनः सीढ़ियों से गिर जाता है। किशोर की याद तो ताजा हो जाती है पर वह अंधा हो जाता है। धनी-गुनी साधना उसे छोड़ देती है किन्तु मालती अपने प्रियतम का सहारा बनती है और सेठ के धन के घमण्ड को चूर करती है।

सही रास्ता (सन् १९५८, पृ० ८६), ले० : राजकुमार; प्र० : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; पात्र : पु० ४, स्त्री नहीं; अंक : ३; दृश्य : ५, ३, ४।
घटना-स्थल : नरेन्द्र का घर, अस्पताल।

लघु नाटक आधुनिक समाज की दूषित प्रवृत्तियों का केवल दिग्दर्शन ही नहीं कराता अपितु उन पर यथास्थान चुभते व्यंग्यों की बौछार भी करता है। यह बालकों के विकास और उनकी सुरक्षा की व्यवस्था का सन्देश भी देता है क्योंकि ये ही राष्ट्र की सम्पत्ति हैं और इन्हीं के द्वारा भावी भारत का निर्माण होना है। नरेन्द्र उन कतिपय युवकों में से है जो कठिनाइयों का पग-पग पर सामना करते हुए भी निराशावादी नहीं है। सच्चे अर्थों में समाजसेवक है और बच्चों के विकास को ही जिसने जीवन-लक्ष्य बना लिया है। वह मोटर साइकिल से घायल हुए गरीब भिखारी के बच्चे को अस्पताल ले जाकर भी डॉक्टरों की उपेक्षा के कारण नहीं बचा पाता। परन्तु सेठ के मरणासन्न पुत्र को अपना रक्त देकर पुनर्जीवन प्रदान करने में सफल हो जाता है जिससे प्रभावित होकर वह सेठ न केवल बच्चों के लिए अस्पताल ही खुलवा देता है अपितु अपने पुत्र को भी शिशु को सौंप देता है। इस संक्षिप्त कथानक के माध्यम से लेखक ने पुलिस के आतंक, डॉक्टरों की लापरवाही, अस्पतालों की दुर्व्यवस्था, नकली नेताओं का ढोंग और मक्कारी, धर्मान्धता, रिश्वतखोरी, गरीबों की दयनीय स्थिति पर भी कटु व्यंग किया है।

सांगीत राजा सरवण कुमार (सन् १८८३, पृ० ३२), ले०: चुन्नीराम; प्र०: लेखक स्वयं; पात्र : पु० ५, स्त्री ३; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : राजा सरवण कुमार का घर, तीर्थ स्थल।

इस नाटक में पितृ-भक्त श्रवण कुमार की कथा को सरवणनाथ के रूप में चित्रित किया गया है। राजा सरवण नाथ की स्त्री का स्वभाव बड़ा ही कठोर है। उसका व्यवहार परिवार के साथ बड़ा रूखा है। उसके सास और श्वसुर वृद्ध हैं जिनको वह भोजन भी नहीं देना चाहती। इस स्थिति का ज्योंही राजा सरवणकुमार को आभास मिलता है वह घर-बार त्याग देता है और अपनी पत्नी को छोड़कर अन्धे माता-पिता को श्रवण कुमार के समान कांवर में बिठा-कर तीर्थों में भ्रमण के लिए चल पड़ता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि श्रवण कुमार की कथा को ही थोड़े परिवर्तन के साथ संगीत राजा सरवण कुमार में रख दिया गया है।

सांगीत शकुन्तला नाटक (सन् १८८५, पृ० ४०), ले० : टीकाराम एवं घासीराम; प्र० : लेखक स्वयं; पात्र : पु० ८, स्त्री ४; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : महल, जंगल, आश्रम।

सांगीत शकुन्तला नाटक की अभिज्ञान शाकुन्तलम् के आधार पर ही स्वांग रूप की रचना है। इसमें खड़ी बोली और मारवाड़ी

का मिश्रित प्रयोग मिलता है। पूरा स्वाँग छन्दबद्ध है। नाटक मूलत सवादात्मक है। रगमच सकेत वाक्यांशो मे मिलता है।

साग सरवर नीर (वि० १९५५, पृ० ४८), ले० खुद्दू, प्र० लाला बसीधर व कन्हैया लाला महल्ला, बुकसेलर, कसेरट बाजार, आगरा, पात्र पु० ९, स्त्री ५, अक २, दृश्य रहित।
घटना-स्थल उज्जैन और कन्नौज।

इस नाटक मे सत्य की विजय दिखाई गई है।

उज्जैन के राजा अम्बा के यहा एक फकीर आकर दान मे राज्य मागता है। राजा महल मे जाकर रानी से परामर्श करते हैं कि ईमान देना ठीक नही है, राज दे देना चाहिए। रानी अपने दोनो पुत्र सरवर और नीर के विषय मे चिन्ता व्यक्त करते हुए कहती है कि जो भाग्य मे लिखा है वही होगा। अत राजा रानी पुत्रो सहित राज्य छोडकर चल पडते हैं। सब जाकर रात मे एक सराय मे टिके। पहले भटियारी वहा टिकने नही देती किन्तु राजा जब उसकी नौकरी स्वीकार कर लेते है तो टिकने देती है। राजा को सबेरे उठकर पत्ता बटोरने का काम तथा तदूर झोकने का काम उसकी पत्नी को मिलता है। राजा के जाने पर एक मालदार सौदागर रानी के रूप पर मोहित हो जाता है। भटियारी को मालामाल कर देने का लालच देता है और किसी प्रकार उसे जहाज तक पहुँचा देने के लिए कहता है। भटियारी रानी को शहर दिखाने के बहाने गगा-तट पर ले जाती है और जहाज मे खाना पहुँचाने के लिए जबर्दस्ती उसे जहाज पर भेजती है। सौदागर उससे अनुचित प्रस्ताव करता है। रानी उसे शपथ दिलाकर यह वचन लेती है कि सौदागर रानी को धर्म की पुत्री मानेगा। सौदागर बादा मान लेता है और रानी ने यह भी कहा कि बारह वर्ष के भीतर यदि उसके पति और पुत्र न मिलेंगे तो रानी उसकी पत्नी बनकर रहेगी।

इधर भटियारी राजा को भी निकाल देती है। राजा लडको को लेकर नदी किनारे जाते हैं। एक लडके को उस पार पहुँचा देते हैं और दूसरे को ले जाने के लिए आते समय नदी मे डूब जाते हैं। दोनो लडके दोनो किनारे पर रोते रहते हैं।

इन लडको को रोते देख एक धोबी-परिवार दोनो लडको को अपने यहा रख लेता है। लडके माता-पिता के वियोग मे बडे दुखी होते हैं। एक दिन सरवर और नीर ने धोबिन से कहा कि हम रोजगार करने जावेंगे। दोनो घोडे पर सवार हो निकल पडते हैं और धोबिन को पत्र लिखने का आश्वासन दे जाते हैं।

इसी बीच कन्नौज का राजा मर जाता है। रानी मुनादी करवाती है कि जो सवेरे सबसे पहले राजा की अरथी के आगे आ उपस्थित होगा उसे ही राजा बनाया जायगा। सयोग से राजा अबा अरथी के आगे सबसे पहले पहुँच जाते हैं उन्हे कन्नौज का राज मिल जाता है।

सरवर और नीर काम की खोज मे कन्नौज की सराय मे पहुँचते हैं वहा भटियारी राजा को खबर देती है कि दो बहुत तेजस्वी पुरुष सराय मे आए हैं, काम खोज रहे हैं। राजा सिपाही भेज कर उन्हें बुलवाता है और एक रुपए रोज पर नौकर रख लेता है। कुछ दिनो बाद एक सौदागर अपना जहाज लेकर वहा आता है और वह राजा से अनुरोध करता है कि मेरे सामान की सुरक्षा का पूरा प्रबध किया जाय। राजा दोनो भाइयो को भेजते हैं। दोनों रात भर खूब चौकसी करते हुए माता पिता के वियोग का स्मरण करते हैं। जहाज पर बैठी रानी सब सुनती रहती है। सवेरे सौदागर उठकर कहता है कि हमारा सामान चोरी गया है। राजा उन दोनो को कैद करवाते हैं। गवाही के समय जहाज की रानी उपस्थित होकर सारी बात बताती है। अत मे राजा अपनी रानी तथा दोनो बेटो को पहचान लेते हैं।

साँपो की सृष्टि (सन् १९५९, पृ० ११६), ले० हरिकृष्ण 'प्रेमी', प्र० बसल एण्ड कम्पनी, दरियागज, दिल्ली, पात्र, पु० ५, स्त्री ३, अक ३, दृश्य, ४, ३, २।

घटना-स्थल : दिल्ली में अलाउद्दीन खिलजी का राजमहल, अलाउद्दीन खिलजी का विश्राम-कक्ष, ग्वालियर के गढ़ में उद्यान।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। गुजरात पर अलाउद्दीन खिलजी आक्रमण करता है। गुजरात-नरेश कर्णसिंह भाग जाता है लेकिन महारानी कमलावती को अलाउद्दीन खिलजी अपने राजमहल (दिल्ली) में ले आता है। महारानी कमलावती अलाउद्दीन खिलजी के रनिवास में रहते हुए भी अपने सतीत्व की रक्षा करती हैं। कमलावती अपनी पुत्री देवल को भी अपने पास बुलवा लेती है। अलाउद्दीन खिलजी की बड़ी बेगम माहरू का पुत्र खिजरखां देवल से प्रेम करता है। माहरू चाहती है कि खिजरखां राजगद्दी का उत्तराधिकारी हो इसीलिए वह खिजरखां और देवल के बीच में रोड़ा बनती है। खिजरखां संगीत प्रेमी है वह राजगद्दी नहीं चाहता। वह केवल अपनी प्रेमिका देवल ही को चाहता है। अलाउद्दीन खिलजी का सेनापति मालिक काफूर षड्यन्त्र करके देवल और खिजरखां को ग्वालियर भेज देता है और पीछे से खिलजी की हत्या कर देता है। खिलजी के कई पुत्रों को भी मौत के घाट उतार देता है। खिजरखां की आंखें निकलवा लेता है और देवल को मल्लिका बनाने के लिए कहता है। खिजर किसी भी कीमत पर देवल को देने के लिए तैयार नहीं होता। अलाउद्दीन का ही एक सैनिक सेनापति काफूर की हत्या कर देता है। खिजरखां काफूर की हत्या सुनकर बहुत प्रसन्न होता है।

साकार रहस्य (वि० १९७०, पृ० ५८); *ले० : अम्बिकापद मुखोपाध्याय; प्र० :* मनमोहन नाथ कौल, नियाजी मुहल्ला, गाजीपुर; पात्र : पु० ४, स्त्री ३; अंक : ३; *दृश्य : ३,२,२।*

लेखक ने साकार ब्रह्म के विवेचन के लिए इस पुस्तक की रचना की है। नाटक ब्रह्मज्ञान विषयक है और साकार उपासकों के कल्याण हेतु प्रणीत हुआ है। नाटककार ने सनातन और आर्य मतावलम्बी को वादी प्रतिवादी बनाकर विषय का निरूपण किया है जिसमें सगुण उपासकों को सफलता प्राप्त हुई है। नाटक के अंत में साकार ब्रह्म की महिमा से प्रायः सभी पात्र अभिभूत हो जाते हैं और सबके मन में निराकार के प्रति अविश्वास और साकार के प्रति विश्वास जाग्रत हो जाता है।

साध (सन् १९४४, पृ० ६३), *ले० :* पृथ्वीनाथ शर्मा; *प्र० :* हिन्दी भवन, लाहौर; पात्र। पु० ६, स्त्री ७; *अंक : ३; दृश्य : ३, ३, ३;* *घटना-स्थल : कुमुद का घर।*

यह सामाजिक नाटक काम के स्वरों से स्पंदित है। इस नाटक की नायिका पर पश्चिमी रहन-सहन की छाप है। वह स्वच्छन्द जीवन में विश्वास करती है। विवाह के प्रति श्रद्धाहीन है क्योंकि बच्चे पैदा करने की झंझट उसे स्वीकार नहीं है। अपने प्रेमी अजीत के प्रस्ताव को इसलिए ठुकरा देती है कि "उसके बाद तुम्हारे हृदय में अनंत वर्षों से छिपी हुई अपने प्रतिरूप की, अपने उत्तराधिकार की लालसा जागृत होगी। फिर उस लालसा को पूर्ण करने के लिए मुझे धड़ाधड़ बच्चे पैदा करने होंगे।" किन्तु अन्त में अपनी मां के बाध्य करने पर कुमुद से विवाह कर लेती है। विवाह के उपरान्त भी उसके विचारों में किसी तरह का अन्तर नहीं आता। अजीत उसे समझाने का प्रयास करता है किन्तु वह असफल रहता है। अंततः इसका निराकरण एक तृतीय पात्र बालक मोहन के माध्यम से होता है। मोहन के प्रति कुमुद मे एक तरह का मोह उत्पन्न हो जाता है किन्तु जब मोहन नहीं होता है, कुमुद में एक तरह का अपने में अभाव का खटकना प्रारम्भ होता है। इसी अभाव को लेकर उसकी मां उसे समझाती है। यहां वह अपने पुत्र की लालसा में अपने पति के समक्ष आत्म-समर्पण कर देती है।

साधना पथ (सन् १९४०, पृ० १२८), *ले० :* शम्भूदयाल सक्सेना; *प्र० :* अर्चना मन्दिर, बीकानेर; पात्र : पु० ११, स्त्री ८; अंक : ३

दृश्य १२,१०,१०।
घटना-स्थल उपासना गृह, एकान्त स्थान।

इस ऐतिहासिक नाटक मे मीरा के बचपन से लेकर अन्तर्धान होने तक की कथा चित्रित है।

मीरा राव दूदा के पुत्र रत्नसिंह की पुत्री तथा राणा सांगा के पुत्र भोजराज की रानी हैं। भक्तपितामह राव दूदा के कारण ही मीरा मे बचपन मे ही भक्ति भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। यौवनकाल मे ही मीरा विधवा हो जाती हैं, इसके पश्चात् तो मीरा का झुकाव भक्ति-क्षेत्र की ओर अधिक हो जाता है। वह कृष्ण-प्रेम में दीवानी हो जाती है। राणा विक्रमाजित सिसोदिया कुल की वंश मर्यादा के पुजारी हैं। उनको मीरा का सर्व-साधारण के सामने कीर्तन-भजन करना अच्छा नही लगता। उनको मीरा की भक्ति-भावना बुरी नही लगती परन्तु वे चाहते हैं कि मीरा एकान्त मे कृष्ण की उपासना करे। मीरा लोक लाज की तनिक चिन्ता न कर कृष्ण की भक्ति को ही सर्वोपरि मानती हैं। मीरा कृष्ण को ही पति, देवता, पुरुष मानती हैं।

मीरा की भक्ति-भावना इतनी प्रबल है कि वे सांसारिक यातनाओं से भी नही घबराती हैं। उनकी दृष्टि मे मनुष्य जैसे-जैसे साधना पथ की ओर अग्रसर होता जाता है वैसे-वैसे सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो जाता हैं। साधना के अंतिम सोपान पर उसे मोक्ष प्राप्त हो जाता है। कृष्ण की आराधिका मीरा के भक्ति-क्षेत्र मे सांसारिक कठिनाइयां भी रोड़ा नहीं अटका सकी। भक्ति रस मे लीन मीरा अन्त मे कृष्ण मे अन्तर्धान हो जाती है।

साबरमती का सन्त (सन् १९६३, पृ० १४४), ले० देवीप्रसाद धवन 'विकल', प्र० चैतन्य प्रकाशन मन्दिर, कानपुर, पात्र पु० १२, स्त्री २, अंक ३, दृश्य ११, १२ ११।
घटना स्थल दक्षिणी अफ्रीका, नोआखाली।

राष्ट्रपिता बापू के जीवन से सम्बन्धित इस नाटक मे गांधी जी के जीवन का वर्णन है। उनके सहपाठी कान्तिलाल मांसाहार को आवश्यक बताते हैं पर गांधी जी उसे नही मानते। विलायत मे बैरिस्ट्री पास करने के लिए जाते हैं तो वहाँ भोजन की समस्या सामने आती है। लेकिन गांधी जी अपनी माँ से मांस न खाने की प्रतिज्ञा करके गए हुए थे इसलिए वे प्रतिज्ञा को तोड़ने के पक्षपाती नही हैं और वे इसका सदैव पालन भी करते है। दूसरे अंक मे गांधी जी का विलायत से बैरिस्ट्री पास कर भारत लौटने और बैरिस्ट्री करने का वर्णन है। किन्तु बैरिस्ट्री न चलने से देश की सेवा करने का व्रत भी उन्होंने बना लिया है। लोकमान्य तिलक आदि से देश की स्थिति पर विचार विमर्श भी किया है। दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानियो की सेवा का भी लक्ष्य है। इसलिए वे वहाँ की यात्रा और सफल जन-सेवा भी करते हैं।

तीसरे अंक मे असहयोग आंदोलन और भारत की स्वतन्त्रता का वर्णन है। गांधी जी किस प्रकार अहिंसा के द्वारा देश को स्वतन्त्र कराते हैं। साथ ही उस समय के चोटी के नेता प० नेहरू, डा० राजेन्द्रप्रसाद, मुहम्मद अली जिन्ना के साथ देश की राजनीतिक परिस्थितियो पर विचार-विमर्श भी है और अन्त मे देश की स्वतन्त्रता के बाद गांधी जी की जय-जयकार होती है और गांधी जी बंगाल के नोआखाली में गरीबो की सेवा मे लगे रहते हैं। गांधी-हत्या का प्रसंग छोड़ दिया गया है।

सामवती पुनर्जन्म (सन् १९२०, पृ० ६६), ले० जीवन शर्म्मा, प्र०। काशीराज के सभा पंडित द्योपाध्यायी हरिकान्त शर्म्मा, पात्र पु० २०, स्त्री १२, अंक ७, दृश्य-रहित।
घटना स्थल विदर्भ राज की राजसभा, लतावृत्त कुञ्ज वन, मुनियो का उद्यान, वैवाहिक स्थल।

'सामवती पुनर्जन्म' की रचना पौराणिकता की पृष्ठभूमि मे हुई है। सारस्वत और वेद मित्र के पुत्र सुमेधा और सामवान हैं जब वे न्याय, वेदान्त और सांख्य मे पांडित्य प्राप्त

करते हैं तब वे दोनों अनुभव करते हैं कि सुमेधा और सामवान की शादी हो जानी चाहिए। किन्तु द्रव्य के अभाव में शादी नहीं हो सकती। अतएव द्रव्योपार्जन के लिए सुमेधा और सामवान विदर्भराज्य के लिए प्रस्थान करते हैं। मार्ग में वीणा की मधुर झंकार सुनायी पड़ती है। वे लोग कुछ समय के लिए वहाँ रुक जाते हैं तथा सामवान यह सोचते हैं कि जिसके वाद्य-यन्त्र के स्वर इतने मधुर और सुन्दर हैं, वस्तुतः उनकी सुन्दरता कैसी होगी। इसी बीच दुर्वासा ऋषि के शाप-युक्त कर्कश शब्द उन्हें सुनायी पड़ते हैं कि "जो हमें नारी समझता है वह शीघ्र ही नारी रूप में परिवर्तित हो जायगा।" वे लोग विदर्भ पहुँच कर राजा के समक्ष अपने पाण्डित्य की चर्चा करते हैं तथा दो सहस्र रुपये की याचना करते हैं। किन्तु राजा यह कहला भेजते हैं कि इस तरह से दक्षिणा देने की प्रथा हमारे यहाँ नहीं है। वसन्तोत्सव के अवसर पर यदि वे लोग दम्पति रूप में नृत्य करें तो इतनी राशि मिल सकती है। उपर्युक्त प्रस्ताव को सुमेधा और सामवान सहर्ष स्वीकार करते हैं, क्योंकि इसके द्वारा दुर्वासा के शाप से मुक्ति भी मिल जायगी और द्रव्योपार्जन भी हो जायगा। जब वे लोग दम्पति रूप में नृत्य प्रारम्भ करते हैं तब विदूषक उन का अत्यन्त घृणास्पद उपहास करता है, जिससे वे दोनों क्रोधित होकर शाप देकर वहाँ से प्रस्थान करते हैं। इस दुर्घटना से चिन्तित होकर राजा जगदम्बा का अनुष्ठान करता है। सामवान पूर्ण यौवना नायिका के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। सारस्वत मुनि अपने पुत्र को नायिका के रूप में परिवर्तित देखकर अत्यधिक चिन्तित हो जाते हैं, किन्तु जगदम्बा उन्हें रात में स्वप्न दिखाती है कि, "आप इसकी शादी वेद मुनि के पुत्र सुमेधा के साथ कर दें। शादी का सारा व्यय विदर्भ राज्य के द्वारा होगा।" सारस्वत स्वप्नानुकूल अपने मित्र वेद मुनि से बातचीत कर उन दोनों की शादी कर देते हैं।

सावित्री (सन् १९६६, पृ० ६२), ले० : चन्द्रप्रकाश वर्मा; प्र०: यूनिवर्सल बुक डिपो, लश्कर; पात्र : पु० ४, स्त्री २। घटना-स्थल : महल, जंगल, आश्रम।

इस पौराणिक नाटक में लोक-प्रसिद्ध सावित्री की कथा चित्रित है।

अश्वपति मंत्री से अपनी एकमात्र पुत्री के वर के विषय में विचार करते हैं। मंत्री उत्तर देता है कि महाराज इस कार्य में सावित्री स्वयं ही सफल हो सकती है। सावित्री योग्य वर खोजने के लिये प्रस्थान करती है। घूमते-घूमते वन में सत्यवान नामक लकड़हारे पर दृष्टिपात होता है। सत्यवान राजपुत्र है परंतु भाग्य ने अब उसको लकड़हारा बना दिया है। सखी के द्वारा सावित्री और सत्यवान का वार्तालाप होता है। सावित्री सत्यवान के लिये दृढ़ निश्चय कर लेती है।

सावित्री जब अपने पिताजी के समीप लौटती है तो वह नारदजी के सामने अपने वर के विषय में कहती है। नारदजी इस पर चिन्तित होते हैं क्योंकि सत्यवान की आयु तो अब एक वर्ष की ही शेष है। सावित्री इसकी परवाह नहीं करती। सत्यवान-सावित्री प्रेम-पूर्वक रहने लगते हैं। समय समाप्त होने पर यम लकड़ी काटते हुए सत्यवान को ले जाता है तो सावित्री अपनी वाक्-प्रतिभा एवं सतीत्व के द्वारा यम से केवल सत्यवान के प्राण ही नहीं बल्कि और भी शुभकारी वरदान लेती है।

सावित्री नाटक (सन् १९००, पृ० ४६), ले० : लाला देवराज; प्र० : कन्या महाविद्यालय, जालंधर; पात्र : पु० ७, स्त्री ११; अंक : रहित, दृश्य : ६। घटना-स्थल : राज मन्दिर, पर्णशाला, वन।

इस पौराणिक नाटक के लिखने का उद्देश्य नाट्यकार ने भूमिका में स्पष्ट कर दिया है। उनका उद्देश्य यह दिखाना है कि प्राचीनकाल में बाल-विवाह की रीति प्रचलित न थी। स्त्री-शिक्षा का प्रचार था और स्त्रियों को वेदादि शास्त्रों तक पढ़ने का अधिकार था। स्त्रियाँ पति की सेवा करती थीं।

महाराज अश्वपति सन्तानोत्पत्ति के लिए सावित्री (गायत्री) मन्त्रों से यज्ञ करते हैं। यज्ञ-फलस्वरूप सावित्री कन्या उत्पन्न होती है। युवती होने पर पिता उसे वर ढूँढ़ने का आदेश देते हैं। सावित्री स्वयंवर में सत्यवान का वरण करती है। यमराज सत्यवान के पिता को अन्धा बना कर वन में निकाल देता है अतः माता-पिता की सेवा के लिए सावित्री सत्यवान वन में रहते हैं। एक दिन यमराज सत्यवान को पकड़ कर मार देना चाहता है किन्तु सावित्री उसे वार्तालाप में निरुत्तर कर देती है। अतः यमराज को बाध्य होकर छोड़ना पड़ता है।

इस नाटक में भी सूत्रधार और नटी का संवाद प्रारम्भ में दिखाया है।

सावित्री नाटिका (सन् १९०८, पृ ७०), ले० बांके बिहारी लाल, प्र० राजनीति मन्त्रालय, पटना, पात्र पु० २०, स्त्री १०, अंक ५, दृश्य ४, ६, ७, ६, २।
घटना-स्थल महल, जंगल।

नि संतान राजा अश्वपति शंकरस्वामी की सहायता से सावित्री देवी को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ का अनुष्ठान करते हैं। सावित्री देवी यज्ञ-कुंड से प्रकट हो राजा-रानी को तेजस्वी और सुन्दर पुत्री होने का वरदान देती हैं।

सावित्री के प्रसाद से उत्पन्न पुत्री का नामकरण भी सावित्री किया जाता है। जब वह बड़ी होती है और उसके तेज से हतप्रभ होने के कारण कोई राजकुमार उससे विवाह करने की ही हिम्मत नहीं करता तो चिन्तित राजा सभासदों के परामर्श से सावित्री को ही अपना वर आप ढूँढ़ने का काम सौंपते हैं। मुनि के आश्रम में पहुँचकर सावित्री ध्यानावस्थित सत्यवान के रूप तथा आचरण पर रीझ कर उसे ही उपयुक्त वर ठहराती है और ध्यानोपरांत सत्यवान भी उसके सौंदर्य तथा वाणी के माधुर्य से वशीभूत हो जाता है। वहाँ से लौटकर वह सभा में पिता और नारद पर अपना निश्चय प्रकट करती है। नारद वर के गुणों की प्रशंसा कर चुनाव के प्रति अपनी असहमति बताते हैं क्योंकि सत्यवान एक वर्ष पश्चात् जीवित न रहेगा। किन्तु सावित्री अपने निश्चय पर दृढ़ रहती है। फलत नारद राजा को विवाह का आदेश दे देते हैं। सावित्री अपने पिता और रानी शैव्या के साथ राजा द्युमत्सेन के तपोवन में पहुँचती है। सत्यवान भी वन से आ जाता है। अश्वपति के अनुरोध पर सावित्री-सत्यवान का विवाह-कार्य सम्पन्न होता है।

सत्यवान पिता की सेवा में रहकर उन से अनेक आध्यात्मिक समाधान पाता है और भक्ति एवं अहिंसा का उपदेश ग्रहण करता है। सावित्री सत्यवान के कल्याण के निमित्त भगवान् से प्रार्थना करती और महात्माओं का दर्शन कर उनका आशीर्वाद पाती है। वह सम्भावित घटना के दिन वन में लकड़ी काटने के लिए जाते को तैयार सत्यवान के साथ जाने का अनुरोध करती है और सास की आज्ञा से कंदमूल-फल लाने सत्यवान के साथ वन में जाती है।

सत्यवान कुल्हाड़ी और सावित्री फूल की डलिया लिये वन में जाते हैं। लक्ष्य स्थान पर पहुँचकर सत्यवान लकड़ी काटने लगता है। वह एकाएक शिर शूल से मूर्छित हो जाता है। सावित्री उसका सर गोद में लेकर नारद के वचनों का स्मरण करती हुई विलाप करती है। भयंकर मुद्रा में यमराज पुण्यवान् सत्यवान का प्राण हरण करने स्वयं पहुँचते हैं। वे अपना उद्देश्य बताकर उसके प्राण को ले पूर्व दिशा की ओर जाते हैं। सावित्री को पीछे-पीछे आता हुआ देख वे उसे लौट जाने का अनुरोध करते हैं, परन्तु पातिव्रत धर्म के प्रभाव से उसकी गति नहीं रुकती। इसलिए यमराज उससे बार-बार वर से संतुष्ट कर लौट जाने का अनुरोध करते हैं। इस क्रम में वह पिता की आँख पाने, पुत्रवान होने, अपने लिए सौ पुत्रों की मां बनने का वर प्राप्त करती है। अन्त में गन्धर्वलोक तक पीछा करते हुए सावित्री अपनी विनम्रता, वैदुष्य, धैर्य, पातिव्रत, चातुर्य और प्रार्थना से यमराज को प्रसन्न

कर अपने पति के प्राण प्राप्त कर लेती है।

सावित्री सत्यवान (सन् १९५१, पृ० ७२), ले० : न्यादरसिंह 'बेचैन'; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली; पात्र : पु० १०, स्त्री ७; अंक : ३; दृश्य : ६, ७, ३।
घटना-स्थल : राजा अश्वपति का महल, जंगल, वनाश्रम।

इस नाटक में सती सावित्री के जन्म से लेकर यम-विजय तक के जीवन को कथा-वस्तु के रूप में चित्रित किया है गया। कथा का आधार पौराणिक है। देवशक्तियों के द्वारा कथानक में मोड़ और चमत्कार उत्पन्न किया गया है। सावित्री की उज्ज्वल और पवित्र शक्ति के सम्मुख यम की पराजय दिखा कर सती-महिमा का प्रतिपादन किया गया है।

सावित्री सत्यवान (सन् १९५०, पृ० ८०), ले० : दुर्गाप्रसाद गुप्त; प्र० : बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, बनारस; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य ८, ८, ७।
घटना-स्थल : महल, जंगल, वनाश्रम।

यह एक पौराणिक एवं धार्मिक नाटक है। इसमें सावित्री के पातिव्रत को दिखाकर यमराज की हार दिखाई गई है। महाराज अश्वपति की पुत्री सावित्री अपने तपोबल से महाराज द्युमत्सेन के पुत्र और अपने पति सत्यवान को यमराज के पंजे से छुड़ाकर जीवन-दान प्राप्त करती है। [सावित्री की कथा सावित्री नाटिका में विस्तार से दी हुई है।]

सावित्री सत्यवान (सन् १९५०, पृ० ७२), ले० : आर० एल० गुप्ता 'मायल'; प्र० : अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली; पात्र : पु० ५; स्त्री ३; अंक-रहित।

यह पौराणिक एवं धार्मिक नाटक है। महाराज अश्वपति को सावित्री देवी की पूजा करने से अन्तिम समय में एक पुत्री की प्राप्ति होती है किन्तु उसके लिए अभिशाप था कि विवाह के दिन ही उसका पति मर जायगा। इतना होते हुए भी सावित्री अपने पातिव्रत धर्म के बल से यमराज को वश में कर लेती है और अपने मरे हुए पति को पुनः जीवित करा लेती है।

सावित्री सत्यवान (सन् १९३२, पृ० ८०), ले० : वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली'; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स, वाराणसी; पात्र : पु० ६, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : ८, ७, ८।
घटना-स्थल : महल, जंगल, पर्णशाला।

यह एक पौराणिक नाटक है। राजा अश्वपति संतान प्राप्ति के लिए कठिन तपस्या करते हैं और एक शक्ति द्वारा पुत्री प्राप्त करने का वरदान प्राप्त करते हैं। सावित्री अचानक अपनी सखियों के साथ टहलती हुई जंगल में जाती है और रास्ते में उसकी आँखें एक सुन्दर युवक पर पड़ते ही वह उसके लिए अपना प्रेम दे देती है। महर्षि नारद द्वारा उस लड़के के वंश, जाति तथा नाम का पता चलता है। नारद सावित्री को उस लड़के से शादी करने के लिए मना करते हैं क्योंकि सत्यवान शादी के एक वर्ष बाद ही मर जायेगा। लेकिन सावित्री नहीं मानती और अन्त में सावित्री-सत्यवान का विवाह हो जाता है। सावित्री अपने पिता के राज्य को छोड़कर अपने पति तथा सास-ससुर के साथ प्रेम से रहती है। निश्चित समय पर अचानक सत्यवान की मृत्यु हो जाती है। जब यमराज उसको लेने के लिए आते हैं तो सावित्री उनका पीछा कर लेती है। अपनी पति-भक्ति, अनुराग और मीठे शब्दों से वह यमराज को प्रसन्न करती है और अन्त में वरदान से अपने सास-ससुर की आँखें, उनका राज्य, अपने पिता के सौ पुत्र तथा अपने प्रिय पति सत्यवान का जीवन प्राप्त कर लेती है।

सावित्री सत्यवान (सन् १९१४, पृ० ३१), ले० : सोमेश्वरदत्त शुक्ल; प्र० : इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद; पात्र : पु० ७, स्त्री १; अंक-रहित; दृश्य : ७।

घटना स्थल महल, जगल।

मूल कथा महाभारत से ली गई है किन्तु कहीं-कहीं नवीन बातों की कल्पना भी कर ली गई है।

राजा अश्वपति की पुत्री सावित्री शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान को पति के रूप में हृदयगम करती है। नारद के यह बताने पर भी कि वह अल्पायु है, सावित्री अपने निश्चय पर अडिग रहती है। सत्यवान तथा सावित्री का विवाह दोनो पक्षों की सहमति तथा नारद के आशीर्वाद के साथ सम्पन्न होता है। एक दिन सत्यवान तथा सावित्री वन में समिधा लेने जाते है, वहीं सत्यवान निश्चेष्ट होकर गिर पडता है। यमराज उसके पातिव्रत धर्म से प्रभावित होकर उसे अनेक वरदान देते हैं। सावित्री अपनी चतुराई से अपने अंधे श्वसुर को दृष्टि-दान, राज्य, वरदान मे प्राप्त करती है। यम अब उससे पीछा छोडने को कहते हैं किन्तु वह उनसे सौ बलवान पुत्रों का वरदान मांगती है। यम की स्वीकृति पाने पर सावित्री कहती है कि पति के बिना यह कैसे सम्भव है। अपने वचन को पूरा करते हुए मेरे पति का प्राण मुझे लौटाइए। यम अपने सभी वचनों को पूर्ण करता है। सेनापति रणधीर सिंह के द्वारा बैरियो का नाश तथा द्युमत्सेन के राज्य की पुनर्स्थापना होती है।

सावित्री-सत्यवान (सन् १९६१, पृ० ६६), ले० गुप्तबधु, प्र० सवसुलभ-साहित्य सदन, फतेहपुर, पात्र पु० ७, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ४, ४, ४।
घटना स्थल राजमहल, वनप्रदेश, पर्णशाला।

प्रथम अक मे अपने पिता अश्वपति और महामात्य के आदेशानुसार सावित्री वर की खोज मे निकलती है और वन-प्रदेश मे शिविर बनाकर कन्याओं के लिए धन वितरण करती है। एक नारी अपने मृतक पुत्र को गोद मे लिये सावित्री से दुःख निवारण की याचना करती है। सावित्री उसे जगन्माता बनने की सान्त्वना देकर विदा करती है। एक दिन सावित्री वन प्रदेश में लकडी काटने वाले युवक सत्यवान का परिचय प्राप्त करती है और मन मे उसे पति बनाने का सकल्प करती है। नारद सत्यवान की अल्पायु का रहस्योद्घाटन करते हैं पर सावित्री अपने सकल्प पर दृढ रहती है।

दूसरे अक मे शाल्व नरेश द्युमत्सेन और रानी शैब्या को वन-प्रदेश में स्थित आश्रम मे निवास करते हुए दिखाया गया है। सावित्री अपने सास श्वसुर से सत्यवान के साथ वन प्रदेश मे लकडी काटने जाने की अनुमति मांगती है।

इसी अक मे सत्यवान का मृतप्राय होना तथा सावित्री और यम का सवाद दिखाया गया है।

सावित्री यम का अनुसरण करते हुए अन्तरिक्ष मे प्रस्थान करती है। यमराज सावित्री की विजय स्वीकार करता है और सत्यवान को काल-पाश से मुक्त कर देता है। सावित्री-सत्यवान राजा द्युमत्सेन और रानी शैब्या के पास लौट आते हैं और सुखपूर्वक जीवन बिताते हैं।

साहित्य का सपूत (सन् १९३४, पृ० १६७), ले० जी० पी० श्रीवास्तव, प्र० चांद प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद, पात्र पु० ११, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ७, ८ ५।
घटना-स्थल रास्ता, सम्पादक का कमरा।

यह हास्यरस प्रधान नाटक है। इसमें साहित्य सुधार का प्रयास किया गया है। मूर्ख साहित्यानन्द एक पत्र के सम्पादक हैं जिन्हें भाषा शैली, वर्णमाला और व्याकरण तक का शुद्ध ज्ञान नहीं है। अत वे बहुत सी भूलें करते हैं। इसी तरह विदेशी और खद्दर के दोहरे रूप वाले धूर्तों से ढोंगी देशसेवकों की अच्छी खबर ली गई है। दुलहिन द्वारा दूल्हेराम का इम्तहान लिया जाना इस नाटक की दूसरी उपकथा है। चपला कुमारी प्रेम और ससारी नाथ को लेकर समाज पर

व्यंग्य किया गया है, समग्र नाटक सामाजिक सुधार से ओत-प्रोत है, जिसे साहित्यानन्द अपने अखबार के माध्यम से अटपटा छाप करके अपनी अयोग्यता का परिचय देते हैं जोकि नाटक में स्थल-स्थल पर हास्य को जन्म देता रहता है।

सिन्दूर की होली (सन् १९३४, पृ० १७२), ले० : लक्ष्मीनारायण मिश्र; प्र० : भारती भंडार, इलाहाबाद; पा.त्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : १, १, १।

इस नाटक में मुरारीलाल मजिस्ट्रेट आठ सहस्र रुपये के लिए अपने मित्र की हत्या करता है और उसके पुत्र मनोजशंकर के पालन-पोषण में उक्त धन से कहीं अधिक व्यय करता है। वही मजिस्ट्रेट एक ऐसे आदमी से चालीस सहस्र रुपया उत्कोच में लेता है, जो अपने पट्टीदार रजनीकान्त की हत्या करके उसकी सम्पत्ति हड़प जाता है। युवा रजनीकान्त का चित्र देखकर मजिस्ट्रेट की कन्या चन्द्रकला नाना प्रकार के संकल्प-विकल्प करती है और अंत में रजनीकान्त के शव के हाथों से अपनी माँग में सिंदूर भर लेती है। वह सदा अविवाहित रहकर अपने पिता से दूर निवास करती है। मनोजशंकर को भी पिता की हत्या का रहस्य ज्ञात हो जाता है।

सिंध देश की राजकुमारियाँ (सन् १८८५, पृ० १२), ले० : काशीनाथ 'बाबू', प्र० : धार्मिक; यंत्रालय, प्रयाग; पात्र : पु० ४, स्त्री २; अंक : २; गर्भांक : २, १।

प्रस्तुत नाटक सन् ७५२ के इतिहास से सम्बन्ध रखता है। जब सबसे पहले खलीफा उमर ने मुहम्मद बिनकासिम के साथ मुसलमानों की फौज को सिंध देश में भेजा है। वहाँ का राजा रणभूमि में मारा जाता है और उसकी दो कुँवारी लड़कियाँ कैद करके खलीफा के पास भेज दी जाती हैं। नायिका भेद-नीति से खलीफा से कहती है कि आपके सेवक कासिम ने मुझे भोगा है तब आपके पास भेजा है। खलीफा कासिम को प्राणदण्ड देता है। नायिका सारा प्रसंग बाद में बादशाह को सुना कर मृत्यु को वरण करती है। इस प्रकार भारतीय नारी के आदर्श के साथ नाटक समाप्त होता है।

सिंहनाद (सन् १९२५, पृ० १९२), ले० : सरयूप्रसाद 'बिन्दु'; प्र० : बजरंग परिषद्, कलकत्ता; पात्र : पु० ६, स्त्री ५; अंक : ३ दृश्य : ६, ६, ५।
घटना-स्थल : जंगल-पहाड़, राजमार्ग, पुष्प वाटिका, औरंगजेब का दिल्ली दरबार।

यह नाटक बजरंग परिषद् कलकत्ता द्वारा अभिनीत होने के लिए विशेष रूप से लिखवाया गया। नाटककार भूमिका में लिखते हैं—"शिवाजी ने देश की हृदय-विदारक दयनीय दशा को आँख खोलकर देखा।" नाटक के प्रारम्भ में महाराष्ट्र वंश के श्रद्धेय महात्मा आचार्य चन्द्रशेखर देशभक्त हिन्दू-धर्मानुरागी नवयुवक जगदीश कुमार सिंह को हिन्दू जाति के अधःपतन का कारण समझाते हुए औरंगजेब से देश को मुक्त कराने के लिए सेना-संगठन का आदेश देते हैं। और जगदीश कुमार को शिवाजी की सहायता के लिए प्रेरित भी करते हैं। एक अन्य राजा जनकराव की कन्या प्रभातसुन्दरी जगदीश कुमार की अनुरागिणी बनती है। उसकी सखियाँ उसका परणय जगदीश कुमार से कराना चाहती हैं।

इधर शाइस्ताखाँ शिवाजी को धोखे से पकड़ने का षड्यंत्र रचता है। शिवाजी अपने सेनापति प्रतापराव को समझाते हैं—"मैं रात को शाइस्ताखाँ के शयनागार में जाऊँगा और उसका वध करूँगा। उसके मर जाने से शत्रुओं की फौज कमजोर पड़ जायेगी और हमारी सेना विजय पायेगी।" शाइस्ताखाँ सुलह के बहाने शिवाजी को बन्दी बनाना चाहता है। शिवाजी उसे युद्ध में पराजित करते हैं जिससे वह भाग जाता है।

द्वितीय अंक में आचार्य, जगदीश कुमार

को देश संकट और शिवाजी की नीति का परिचय देते हैं। शिवाजी को धोखा देकर मुगलों ने दिल्ली दुर्ग में बन्द कर रखा है। उनकी मुक्ति के लिए आचार्य चन्द्रशेखर, प्रताप और ज्योतिषी गोविन्द राव दिल्ली पहुँचते हैं। दिल्ली दरबार में जगदीश कुमार सिंह और औरंगजेब में वाद-विवाद हो जाता है। औरंगजेब कुमार को मुसलमान होने के लिए बाध्य करता है और अस्वीकार करने पर हथकड़ी में जकड़े कुमार पर औरंगजेब तलवार का वार करता है। कुमार उसे हथकड़ी पर रोक लेते हैं और औरंगजेब की तलवार छीनकर उसे गिरा देते हैं। युक्तिपूर्वक आचार्य, कुमार और गोविन्द शिवाजी को मुक्त कराते हैं। इधर प्रभात की मुख्य सहेली पद्मावती औरंगजेब के दरबार में नृत्य और संगीत कला दिखाकर उसे प्रसन्न करती है। गोविन्द ज्योतिषी पद्मावती के साथ तबला बजाने का काम करता है। वह औरंगजेब से प्रतिज्ञा करती है कि मैं कुमार को मुसलमान बना लूँगी। कुमार भी मुसलमान बनने पर तैयार हो जाता है। पद्मावती कहती है "आप अपने यहाँ की सब बत्तियाँ गुल कर दें, मैं दीपक राग गाऊँगी और सारी बत्तियाँ आपसे आप रोशन हो जाएँगी।" बत्तियों के गुल होते ही पद्मावती (लैला) गोविन्द, आचार्य, कुमार दरबार से निकल भागते हैं। औरंगजेब पछताता हुआ कहता है, "यह कोई हिन्दू औरत थी जो मुझे दगा दे गई, कुमार को मेरे पंजे से छुड़ा ले गई।" महाराष्ट्र में लौटकर जनकराव की कन्या प्रभातसुन्दरी और जगदीश कुमार सिंह का विवाह होता है। विवाह में मुसलमानों से छीने गए रायगढ़ का चौथाई राज्य शिवाजी नव दम्पती को उपहार में प्रदान करते हैं। आचार्य कहते हैं, 'यही वीरों का सिंहनाद है।"

सिंहल द्वीप (सन् १९६६, पृ० ५६), ले० सेठ गोविन्द दास, प्र० भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ६, स्त्री ४, अंक ५, दृश्य-रहित।
घटना-स्थल बंग देश की राजधानी, भारत का दक्षिणी समुद्री तट, ताम्रलुक लंका का उत्तरी बंदरगाह, समन्त कुटम पर्वत।

रावण की लंका कहाँ थी। इस विषय में पुरातत्ववेत्ताओं और इतिहासज्ञों में बड़ा मतभेद है। यही रावण की लंका वर्तमान लंका है। बंगाल के अधिपति सिंहल के पुत्र विजय ने भारतीयों को ले जाकर इस द्वीप को बसाया था। यह विजय ही इस 'सिंहल द्वीप' नाटक का मुख्य पात्र है जिसने नाटककार को नाटक लिखने को प्रेरित किया है।

सेठजी ने नाटक में कथानक को मोड़ कर अपनी बुद्धि एवं कल्पना के सहारे नाटक को एक नये रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने यह माना है कि विजय के सदृश वीर, साहसी और बुद्धिमान् व्यक्ति का देश निष्कासन कुकृत्यों के कारण कदापि न हुआ होगा।

प्राचीन काल से ही भारत की विदेशों से मैत्री है। नाटक के एक सीन में सिंहल द्वीप और भारत की मैत्री का दिव्य संदेश दिया गया है। इस प्रकार यह नाटक अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री के महत्त्व का सूचक हो गया है और विश्व में शान्ति स्थापित करने का एक मार्ग स्पष्ट करता है।

सिकन्दर (सन् १९४७, पृ० १४८), ले० सुदर्शन, प्र० बोरा एण्ड कम्पनी पब्लीशर्स, इलाहाबाद, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अंक ३, दृश्य १०, ८, ६।
घटना-स्थल परसीपोलिस, सिकन्दर का खेमा।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इस पर मिनर्वा मूवीटोन, बम्बई के अध्यक्ष श्री सोहराब मोदी ने फिल्म भी बनाई है। सिकन्दर नाटक के प्रारंभ में एक प्रेमी के रूप में दिखाया गया है। वह ईरान की एक रमणी रुखसाना से प्रेम करता है। उसके ही द्वारा सिकन्दर के जीवन में बड़ा परिवर्तन आता है। रुखसाना की खूबसूरती ने स्वयं अरस्तू तक को मोहित कर लिया था। कुछ

दिन बाद सिकन्दर उससे पीछा छुड़ाना चाहता है पर यदि रुखसाना वीर पुरुराज को अपना भाई बना सिकन्दर की रक्षा नहीं करती तो युद्ध-क्षेत्र में जब सिकन्दर पुरु के भाले के नीचे था, उसकी मृत्यु और हार सुनिश्चित थी। किन्तु पुरुराज ने रुखसाना को पहले ही वचन दे दिया था कि वह सिकन्दर को जीवित छोड़ देगा। इसलिए जीतने पर भी वह हार जाता है और सिकन्दर जेहलम से आगे बढ़ने का प्रयास करता है। तब रुखसाना स्वयं उसकी फौज में बगावत कर देती है जिससे सिकन्दर को विवश होकर यूनान लौटना पड़ता है। वह सिकन्दर को पूरी स्थिति बताकर कहती है "भारत के आगे के राजा पुरु से भी अधिक वीर हैं तथा मेरी ही कुशलता के कारण आपकी यहाँ प्राण-रक्षा हो सकी है जिसे आप अपनी विजय समझते हैं, वस्तुतः यह आपका भ्रम है।" सिकन्दर रुखसाना की इन बातों से बहुत प्रभावित होता है तथा शीघ्र ही रुखसाना एवं सेना के साथ यूनान को लौट पड़ता है किन्तु उनके दिलों में पुरुराज की वीरता की छाप घर किए रहती है।

सिकन्दर पोरस (सन् १६५८, पृ० ६६), ले० : चैनसुख 'वेताब'; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री नहीं; अंक रहित; दृश्य : १०। घटना-स्थल : तक्षशिला, झेलम तट।

इस नाटक में सिकन्दर व पोरस के मध्य युद्ध की ऐतिहासिक घटना का वर्णन किया गया है। सिकन्दर तक्षशिला पर आक्रमण करना चाहता है लेकिन आम्भी उससे मित्रता स्थापित कर अपने शत्रु पोरस पर हमला करने के लिए उत्तेजित करता है। सिकन्दर खून बहाना उचित नहीं समझता; इसलिए वह स्वयं राजदूत का वेश धारण करके पोरस के पास मित्रतापूर्ण संधि करने जाता है। पोरस बिना युद्ध सिकन्दर की मित्रता व अधीनता स्वीकार करने से साफ इंकार कर देता है। फलतः झेलम के तट पर सिकन्दर व पोरस की सेना में भयंकर युद्ध होता है। पोरस का छोटा बेटा सिकन्दर से लड़ते हुए मारा जाता है। पोरस भी वीरता से लड़ता है लेकिन दुर्भाग्य से उसकी हार होती है। पोरस को कैद कर दरबार में सिकन्दर के सामने हाजिर किया जाता है। सिकन्दर जब उससे पूछता है कि तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाय तो वीर पोरस गरज कर कहता है कि जैसे एक राजा दूसरे राजा से व्यवहार करता है। सिकन्दर पोरस की वीरता से खुश हो उसे मुक्त करके उसका राज्य वापस कर देता है। सिकन्दर देशद्रोही आम्भी को मृत्यु-दंड की आज्ञा देता है। लेकिन पोरस अपने राज्याधिकार से आम्भी को मुक्त कर देता है। सिकन्दर की सलाह पर आम्भी अपनी बहन की शादी पोरस के बड़े बेटे से कर देता है।

सिकन्दर पोरस को मित्र बना कर उत्तर भारत को जीतने के लिए आगे बढ़ता है। वह कुछ प्रदेशों पर विजय भी प्राप्त करता है लेकिन सेना में बगावत के डर से तथा विशाल एवं शक्तिशाली मगध साम्राज्य को जीतने में अपने को असमर्थ पा कर वह अपने देश यूनान की ओर लौट पड़ता है। रास्ते में बाबल नामक स्थान पर सिकन्दर ज्वर से पीड़ित होकर भयंकर रूप में बीमार पड़ जाता है। अपना अन्तिम समय देखकर सिकन्दर मंत्री से यह इच्छा प्रकट करता है कि जब मेरी अरथी निकाले तब मेरे दोनों हाथ बाहर निकाल देना जिससे दुनिया यह देख ले कि सिकन्दर खाली हाथ इस दुनिया में आया था और अब खाली हाथ ही जा रहा है। यह कह कर वह सदा के लिए सो जाता है। मंत्री उसकी अन्तिम इच्छा की पूर्ति करता है।

सितम इश्क व उल्फत (सन् १८६८), ले० : मिर्जा नजीर बेग 'नजीर'; प्र० : दी पारसी जुबली थियेट्रिकल कम्पनी ऑफ बम्बई; पात्र : पु० ६, स्त्री ४।

नाटक का उद्देश्य प्रेम-मार्ग की कठिनाइयों पर प्रकाश डालना है। नाटक में हजरत इश्क और दिलहजी के संवादों में

प्रेम के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। नायिका नाजनीन,माँ और सखी गुलवदन के मना करने पर भी दिलरुबा से विवाह करने का आग्रह करती है। माँ इसके चाचा के साथ जब इसे बनारस भेजना चाहती है तब नाजनीन विष खाकर मर जाती है। यह ओपेरा पारसी रंगमंचीय युग की अभिरुचि के अनुकूल रखा गया है। सम्पूर्ण रचना गजल, ठुमरी, गीत, दोहों और शेरो-शायरी में की गई है। काव्यत्व अति सामान्य श्रेणी का है। भाषा हिन्दुस्तानी है।

सितम हामान व फरेबे शैतान (सन् १८८३, पृ० ७०), ले० हाफिज मोहम्मद अब्दुल्ला, प्र० हाजी साहब, इण्डियन इम्पीरियल थियट्रिकल कम्पनी धौलपुर, पात्र पु० ६, स्त्री २, अंक (बॉब) २।
घटना-स्थल यमन देश।

इस नाटक में ईश्वर-भक्ति की विजय तथा शराब की निन्दा की गई है। इसका नायक हामान एक निर्धन, दयालु ईश्वर-भक्त, धर्मपरायण व्यक्ति यमन देश में निवास करता है। उसकी पत्नी नागीना भी सती साध्वी धर्मात्मा है और उसके एक पुत्र मुजफ्फर और पुत्री मेहर निगार है। हामान अपनी निर्धनता से क्षुब्ध होकर जंगल की राह लेता है। उसकी पत्नी भी बच्चों के भरण-पोषण के लिए घर छोड चल देती है, हामान जंगल में पहुँचकर ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उसकी मृत्यु न हो। उसकी प्रार्थना पर फरिश्ता जिबराइल प्रकट होकर उसके मृत्युजयी होने की सूचना देता है, और उसे सर्वदा ईश्वर को याद रखने की शिक्षा देता है। फरिश्ते के अन्तर्धान होते ही भूमि में शैतान प्रकट हो जाता है और ईर्ष्या के कारण हामान को पीडित करने के लिए उस जंगल के समस्त जल को सुखा देता है। हामान प्यास से व्याकुल हो उठता है। शैतान उसकी तृषा शान्ति के लिए शराब प्रस्तुत करता है, परन्तु हामान उसे अस्वीकार कर देता है। शैतान भी उसके पीछे तब तक पडा रहा जब तक कि वह शराब पीकर उसका अनुचर नहीं बन जाता। अब हामान ईश्वर को भी भूल जाता है।

हामान की प्रिया नागीना भी अपने पुत्र और पुत्री के साथ जंगल में पहुँचती है। वह क्षुधा-पीडित अर्ध-विक्षिप्त अपनी संतान के असह्य कष्ट से विचलित हो उठती है और उन्हें वन में ही सोता छोड आगे चल देती है। जगने पर दोनों अपनी माँ को न पाकर रोते पीटते नगर की राह लेते हैं।

यमनराज फर्रुखसियर रोग शय्या पर अपनी सन्तानहीनता के कारण राज्य के उत्तराधिकारी की चिन्ता में सो जाते हैं। शैतान उन्हें स्वप्न में हामान को राज्य सौंपने की सलाह देता है। राजा प्रातः मंत्री को बुला हामान को खोज निकालने का आदेश देते हैं। राजा के मरने पर हामान राजगद्दी पर बैठता है और शैतान की प्रेरणा से शराब तथा उससे उत्पन्न अत्याचार में लिप्त हो जाता है।

हामान के मातृ-पितृ-विहीन दोनों बालक मुजफ्फर और मेहर निगार राज्य दरबार में भिक्षाटन करते पहुँच जाते हैं। हामान उन्हें अपने पास बुलाकर राजसी वस्त्रों से सुसज्जित करता है और उन्हें सुरा-पान के लिए विवश करता है। परन्तु दोनों उसका प्रस्ताव अस्वीकृत कर देते हैं और शैतान की राय से मुजफ्फर कारागार में डाल दिया जाता है। मेहर निगार को हामान जंगल में छोडवा देता है। वहाँ उसे साँप डस लेता है। शैतान उसे दवा के नाम से शराब पिलाना चाहता है, किन्तु वह 'लाहौल' पढकर उसे भगा देती है और स्वयं विष के प्रभाव से मूर्छित हो जाती है। चंगेज नामक सौदागर वहाँ पहुँचकर उसे एक 'जिन' द्वारा प्राप्त बूटी से स्वस्थ कर अपने घर भेजता है। मार्ग में दुष्टमरफीक मेहर के सतीत्व को नष्ट करना ही चाहता है कि चंगेज पहुँचकर उसकी रक्षा करता है। उसी समय शैतान प्रकट होकर रफीक को इतनी शराब पिलाता है कि वह मर जाता है। चंगेज भी घर ले जाकर मेहर निगार से प्रेम की भीख माँगता है किन्तु वहाँ दो हब्शी चंगेज का वध कर मेहर के लिए लडते हुए

(दोनों ही) मर जाते हैं। शैतान उनके मुँह पर थूकता है। इसी समय संतान की खोज में भटकती नगीना और आखेट के लिए गया हामान वहीं पहुँच जाते हैं। परस्पर पहचान होते ही हामान दोनों को घर ले जाता है।

हामान पत्नी और पुत्री को पुनः सुरा प्रस्तुत करता है। वे दोनों अस्वीकार करती हैं। तब को उद्यत हामान शैतान-प्रेरित उन्हें कारागार में भेजता है, जहाँ माँ, बेटा तथा बेटी मिल जाते हैं। शैतान और हामान कैद में भी शराब पीने पर बाध्य करते हैं पर वे तीनों अडिग हैं। हामान ईश्वर की सत्ता भी नकारता है। वह मुजफ्फर के वध के लिए बढ़ता है कि मृत्यु देवता 'मलकुल मौत' के पहुँचने पर वह स्वयं निष्प्राण हो जाता है और मुजफ्फर को ताज देकर राजा बना दिया जाता है।

सिद्धान्त स्वातंत्र्य (नि० १९३९, पृ० ७७); ले० : सेठ गोविन्द दास; प्र० : भारतीय विश्व प्रकाशन, दिल्ली; पात्र : पु० ४, स्त्री १; अंक : ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : लाला चतुर्भुज दास का घर।

इस सामाजिक नाटक में सिद्धान्त-स्वातंत्र्य की प्रमुखता दिखाई गई है। त्रिभुवन दास नाटक का नायक है जो चतुर्भुज दास का पुत्र है। लाला चतुर्भुज दास सेठ और जमींदार होते हुए भी पूरे कंजूस हैं। त्रिभुवन बी०ए० करके घर लौटता है किसी तरह से छिपकर बंग-भंग के बायकाट आंदोलन में भाग लेता है। उनके पिताजी राज-भक्त हैं, वे सरकारी कर्मचारियों को झुककर प्रणाम करते हैं। बाप-बेटों के विप-रीत विचार होने पर दोनों में झगड़ा हो जाता है। त्रिभुवन 'सिद्धान्त-स्वातन्त्र्य' के आधार पर पिता से लड़ता है। चतुर्भुज पुत्र के निन्दा-तो पर अपने सिद्धान्तों को स्वाहा कर देते हैं। अब पच्चीस वर्ष के पश्चात् त्रिभुवन दास प्रान्त का होम मेम्बर हो गया है। चतुर्भुज को राज-पदवी मिली हुई है। त्रिभुवन का पुत्र मनोहर गांधी जी का अनु-यायी हो जाता है। त्रिभुवन पिता की तरह पुत्र से भी लड़कर उसको घर से निकाल देता है। १९३० में मनोहर किसी सत्याग्रह में कार्य करते-करते गोली द्वारा घायल हो जाता है जो होम मेम्बर की आज्ञा से चलाई गई थी। चतुर्भुज ने जिस प्रकार पुत्र के लिए सिद्धान्त का बलिदान किया था उसी प्रकार पौत्र के लिए भी अपने सिद्धान्तों का स्वाहा कर देता है। वह भी महात्मा जी के अनु-यायी हो जाते हैं। परन्तु त्रिभुवन आखिर तक अपने 'सिद्धान्त-स्वातन्त्र्य' को अलापता रहता है।

प्रस्तुत नाटक सेठजी ने अपनी जेल-यात्रा में लिखा था। नाटक का ऐतिहासिक महत्व भी है।

सिद्धार्थ (सन् १९४७, पृ० ८८); ले० : सीता राम चतुर्वेदी; प्र० : अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी; पात्र : पु० ५, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ५, ५।
घटना-स्थल : उद्यान, राजमहल, तपोवन, मैदान, बुद्ध-संघ।

भगवान् सिद्धार्थ की जीवन-गाथा पर आधारित ऐतिहासिक नाटक है। कथारम्भ एक उद्यान से होता है। सुपर्णा, हेमलता तथा मधुकरिका नामक तीनों सखियाँ फूलों को चुनकर सिद्धार्थ को अर्पित कर देती हैं। फूलों की सुकुमारता से प्रभावित सिद्धार्थ मधुर चर्चा करते हैं। तभी सहसा देवदत्त के बाण से आहत खग गौतम के समक्ष आ गिरता है। गौतम करुणार्द्र हो उसे उठा लेते हैं। देवदत्त सिद्धार्थ से कलह करता है लेकिन शुद्धोदन आकर गौतम के न्याय का साथ दे देते हैं। देवदत्त अपने मित्रों के साथ लगातार हिंसा, चोरी तथा अन्याय को बढ़ावा देता रहता है। सिद्धार्थ जीवन के प्रति वैराग्य-भाव रखते हैं, जीव-दया पर जीवित हैं। वे संसार की असारता से दुखी हो गृह त्याग देते हैं। यशोधरा अपना अप-मान समझकर विलाप करती हुई भी धैर्य धारण करती है, पुत्र राहुल का कर्तव्य-भार वहन करती है। गौतम विघ्न-बाधाओं को

झेलते हुए सम्यग्-ज्ञान की उपलब्धि करते है। राज्य मे बुद्ध के पुन आने पर यशोधरा राहुल के साथ आरती गाती हुई बुद्ध सघ मे प्रवेश करती है।

सिद्धार्थ का गृह-त्याग (सन १९६२, पृ० १३५), ले० गणेश प्रसाद श्रीवास्तव, प्र० नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ, पात्र पु० ५, स्त्री २, अक दृश्य-रहित।
घटना स्थल कपिलवस्तु, राजमहल, उपवन।

नाटक के आरभ मे शुद्धोदन, राजगुरु और सारथी आपस मे बातें करत है। सिद्धार्थ द्वारा कामिनी कचन, सुरा सगीत कला का परित्याग करने, एक वृद्ध, रोगी और मृत व्यक्ति को देखकर दुखी होने का समाचार पाकर शुद्धोदन चिंतित हो जाते हैं। यशोधरा सिद्धार्थ को मोहजाल एव सासारिक सुखो मे बाँधने के लिए अपूर्व रूपवती रभा की सहायता लेती है। इसके लिए वह कोई भी त्याग करने को प्रस्तुत है। वह रभा से कहती है, "यदि तुम मेरे देवता को हँसता हुआ रख सको और बदले में केवल सासारिक सुख स सतुष्ट रहो तो तुम्हारा वह सासारिक सुख मेरे लिए स्वर्गीय सुख होगा।" राजा के द्वारा अपने प्रति चरित्रहीन 'स्वतत्र विचरण करने वाली' सम्बोधन सुनकर रभा व्यथित हो उठती है, किन्तु दूसरे ही क्षण मन-ही-मन अपने रूप-यौवन से सिद्धार्थ को पराजित करने के लिए ललकारती है। अपनी सम्पूर्ण मादकता एव मोहिनी शक्ति से रभा सिद्धार्थ को अपने वश मे करना चाहती है। वे तो वासना तक सीमित नारी के सौंदर्य मे कोई आकर्षण नहीं पाते। रभा अपनी जीवनी बताते हुए उस घटना को स्मरण कराती है जब काशिराज की सभा मे स्वयवर-नाच नाचते नाचते उसने पुष्पमाला को उनके चरणो मे रख दिया था। वह कहती है कि आत्मा का मिलन तो हो ही गया है, शरीर से भी वह आनन्द पाना चाहती है किन्तु इस बाधा को दूर करने के लिए उसके लिए आत्महत्या अनिवार्य हो गई है। सिद्धार्थ आत्महत्या से बचने का सरल उपाय बताते हैं कि तुम काशी-नरेश के यहाँ जाकर कहो कि मैंने सिद्धार्थ को वर चुना है और कौमार्य की रक्षा के लिए शरीर से नही आत्मा से विवाह किया है। रभा प्रेम मे शारीरिक सम्बन्ध को ही मुख्य समझने वाली वासना को गदी नाली कहती है। वासना अपनी क्रोधाग्नि से रभा को वश मे करती हुई आज्ञा देती है कि सिद्धार्थ को पथभ्रष्ट कर। रभा के ऐसा न करने पर वासना स्वय रभा के रूप मे आती है और स्वप्न मे पड़े सिद्धार्थ को 'रभा नृत्य' से मोहित करना चाहती है। अत मे वासना को पलायन करना पडता है। सिद्धार्थ की आत्मा उन्हे अपने पथ पर चलने के लिए इगित करती है। वे उत्तेजित होकर कहत हैं, "अब मैं राजभवन के पिजडे मे एक क्षण भी नहीं रुक सकता। अभी इसी घडी इसी समय गृह त्याग करूँगा।" सारथी को बुलाकर मोहमाया दूर करके सकल्प सिद्धि के लिए वे निकल पडत हैं।

सिद्धार्थ कुमार या महात्मा बुद्ध (वि० १९७९, पृ १३४), ले० चन्द्रराज भण्डारी, प्र० गाधी हिन्दी मदिर, अजमेर, पात्र पु० १३, स्त्री ७, अक ५, दृश्य ६, ६, ४, ५, ६। घटना-स्थल वाटिका।

प्रस्तुत नाटक के तीन अको मे सिद्धार्थ के तीन रूप नजर आते हैं।

पहले अक मे बालक सिद्धार्थ वाटिका की सैर कर रहे हैं। सौन्दर्य के निरीक्षण मे मुग्ध हैं, लेकिन उस सौन्दय मे उन्हे विष नजर आ रहा है। जिस समय बगुला मछली को निगल जाता है, देवदत्त के तीर से हस गिर पडता है, उस समय उनका हृदय करुणा से रो पडता है। पर सौन्दर्य करुणा पर आधिपत्य जमा लेता है। जन्म के वैरागी सिद्धार्थ के सम्मुख सौन्दर्य की देवी यशोधरा अपना प्रेम प्रकट करती है।

विधि के विधान को कौन मिटा सकता है? काम के प्रति मानव की सहज दुर्बलता सिद्धार्थ मे जग उठती है। एकाएक सिद्धार्थ का पर

फिसलता है, वैराग्य के स्थान पर प्रेम-अपना कब्जा जमा लेता है। यशोधरा की प्रेम-भिक्षा स्वीकृत होती है और उसे प्रेम का प्रतिदान भी मिल जाता है। परिणय के उपरान्त सिद्धार्थ को यशोधरा के अतिरिक्त कुछ भी दिखलाई नहीं पड़ता। यशोधरा के सौन्दर्य-संगीत में समस्त जगत् का हाहाकार विलीन हो जाता है।

धीरे-धीरे स्वार्थ के क्षुद्र बन्धन ढीले हो जाते हैं, मोह का परदा फट जाता है। प्रेम अपना वास्तविक रूप प्रकट करता है। रमणी-प्रेम विश्व-प्रेम में बदल जाता है। सिद्धार्थ की आँखें खुलती हैं। उनकी आत्मा में एक अलक्षित झंकार गूंज उठती है। प्रमोद-भवन के सुख उन्हें फीके मालूम होते हैं। सिद्धार्थ के मोह का रहा-सहा परदा बिल्कुल फट जाता है।

आधी रात का समय है। एक ओर यशोधरा आनन्द की निद्रा में सोई हुई है लेकिन सिद्धार्थ की आँखों में नींद का लेश भी नहीं है। सिद्धार्थ कुमार सोई हुई पत्नी को छोड़कर द्वार से जाते हैं लेकिन प्रेम के कारण वापस आकर यशोधरा को जगाकर आज्ञा भी लेते हैं। यशोधरा प्रसन्न हृदय से उन्हें विदा करती है। स्वयं सिद्धार्थ इस अलौकिक त्याग को देखकर मंत्र-मुग्ध की तरह स्तब्ध हो जाते हैं। सिद्धार्थ प्रसन्नतापूर्वक देश-उद्धार हेतु प्रस्थान करते हैं। यह समाचार पाकर शुद्धोदन बहुत दुःखी होते हैं।

सिद्धार्थ बुद्ध (सन् १९५५, पृ० १४८); ले० : बनारसीदास 'करुणाकर'; प्र० : भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली; पात्र : पु० १५, स्त्री ५; अंक : ४; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : घर, वाटिका, उपवन।

यह नाटक भारत की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परम्परा पर निर्मित किया गया है। देश के धार्मिक एवं राजनीतिक इतिहास में भगवान बुद्ध को अगाध करुणा के कारण दशावतारों में स्थान दिया गया है। बुद्ध के युवा जीवन से प्रारम्भ करके उनके बोधिसत्व प्राप्त करने के उपरांत पुनर्मिलन तक के जीवन का इसमें विस्तार से वर्णन किया गया है।

सितार का सर्जक (सन् १९६३,), ले० : मनोहर प्रभाकर; नजराना तथा अन्य 'संगीत-रूपक' में संकलित; प्र० : कल्याणमल एंड संस, जयपुर; पात्र : पु० ६, स्त्री-रहित; अंक : दृश्य रहित।
घटना-स्थल : शाही दरबार, राज सभा।

'सितार का सर्जक' अमीर खुसरो के जीवन पर आधारित एक ऐतिहासिक संगीत-रूपक है। इसमें अमीर खुसरो की शायरी एवं उनके संगीत-प्रेम से सम्बन्धित अनेक घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है। एक दिवस बलबन शहंशाह के दरबार में मजलिस होती है, जिसमें अमीर खुसरो के कलाम तथा पहेलियों से प्रसन्न होकर शाह उन्हें दरबारी कवि का सम्मान प्रदान करते हैं। एक अन्य दिन अमीर खुसरो देवगिरि के राजा के यहाँ सम्मानित होते हैं। वहाँ गोपाल नायकम् नामक संगीतज्ञ से वे अत्यन्त प्रभावित होते हैं और उनसे खिलजी दरबार में चलने का अनुरोध करते हैं। गोपाल नायकम् इसके लिए शर्त रखते हैं कि यदि अमीर खुसरो उन्हें गायन में पराजित कर देंगे तो वे उनके साथ चल सकते हैं। संगीत प्रतियोगिता आयोजित की जाती है, जहाँ दोनों का गायन होता है। इस प्रतियोगिता में गोपाल नायकम् पराजित हो जाते हैं और शर्त के अनुसार अमीर खुसरो के साथ चले जाते हैं।

सिपाही (सन् १९६६, पृ० ७२); ले० जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री १; अंक : ३; दृश्य : १, १, १।
घटना-स्थल : हरगोविन्द सहाय का बंगला।

नाटक की कथावस्तु काल्पनिक है। नाटक का विषय स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद खद्दरधारी पूंजीपतियों का आडम्बर, छल और लूट-खसोट है। हरगोविन्द सेठ कांग्रेसी बनकर बड़े-बड़े वायदे करके एसेम्बली के

सदस्य चुने जाते हैं। वह अधिकारियो से मिल-मिलाकर रिश्वत की सहायता से एक फ्लोर मिल खोल लेते हैं जहाँ से काला धन पैदा करते हैं। उनका बड़ा पुत्र सुरेश शराबी है और वह पिता के प्रत्येक कार्य मे मदद करता है। दूसरा पुत्र प्रकाश प्रगतिशील समाजवादी विचारो का है। वह पिता-पुत्र के इस षड्यन्त्र का विरोध करता है और मजदूरो का साथ देता है। मिल मे हड़ताल के समय गेहूँ की बोरियाँ काले बाजार मे पुलिस की सहायता से भेजने पर प्रकाश, पिता और इस्पेक्टर को पकड़वाता है।

सुरेश क्रुद्ध होकर मजदूरो के अधिकारो के समर्थन के कारण प्रथम तो गोरी से प्रकाश को मरवाना चाहता है, किन्तु गोरी मना कर देता है। इस पर वह स्वय शराब पीकर उसे गोली मार देता है। माँ सध्या बिलखती है। देश का सिपाही प्रकाश ससार से कूच कर जाता है। सुरेश पश्चात्ताप करता है।

नाटक कई बार मचस्थ हो चुका है।

सिलवर किंग (नेक प्रवीण) (सन् १९५६, पृ० ९६), ले० आगाहश्र कश्मीरी, प्र० अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ६, २, ४, । घटना-स्थल मुनीर का घर, जुआ खेलने का स्थान।

नाटक मे सामाजिक कुरीतियो, जुआ शराब आदि पर प्रकाश डाला गया है।

प्रथम अक के प्रथम दृश्य मे नायिका, प्रवीन, उसकी पुत्री बानू और नौकर तहसीन भगवान् से प्रार्थना करते हैं। दूसरे दृश्य मे जुआरियो के अड्डे पर सुरा, सुन्दरी और जुए के खेल मे सभी अपने को लुटा रहे हैं। एक खानदानी अमीर नायक अफजल भी यहीं आ फसता है और जुए मे धन नष्ट कर शराब के नशे मे डूबा रहता है। स्वामि भक्त नौकर तहसीन के आग्रह को ठुकरा कर वहीं डटा रहता है। अफजल की पुत्री और पत्नी प्रवीन उससे परेशान रहती हैं। इस दृश्य मे पतिव्रता पत्नी की आकुलता, पीडा और पति के प्रति चिन्ता को प्रस्तुत किया गया है। प्रवीन का भाई मुनीर अपनी पूर्व प्रेमिका और बहिन से अन्तिम बार मिलने आता है। प्रवीन पति अफजल की अनुपस्थिति मे उससे नही मिलना चाहती किन्तु मुनीर अनुमति मिलन से पूर्व ही उपस्थित होता है और अपने मिलने का उद्देश्य भी वह देता है। वह उसे अपने पति की शका का भय दिखा कर विदा करना ही चाहती है कि अफजल आ जाता है और उसकी शका प्रतिशोध के रूप मे उग्र हो जाती है। मुनीर सयम बरतता है और चला जाता है किन्तु अपना कोट लेने पुन आता है। यह देखकर अफजल उसे पिस्तौल से मारना चाहता है। वह भागता है। अफजल उसका पीछा करता है।

मुनीर के घर मे असगर अब्बू, असद और बन्नू निमत्रित हैं। ये तीनो मुनीर की अनुपस्थिति का लाभ उठा उसकी आलमारी का ताला तोड़कर ५० हजार रुपये निकाल लेते हैं। मुनीर के पहुँचने पर वे प्रवीन को अपशब्द निकालते हैं। साथ ही, इस समय मे मुनीर को गोली मार देते हैं और अफजल के आने पर उसे क्लोरोफाम सुधाकर बेहोशी मे उसके हाथ मे पिस्तौल पकड़ा देते हैं। अफजल होश मे आने पर घर आता है और बचने के लिए फरार हो जाता है। यहीं पर वकील साहब की पत्नी की फरमाइश तथा नौकर लल्लू की घडी तोड़ने का हास्य दृश्य आता है।

दूसरे अक मे प्रवीन का आशिक उसकी लाचारी का लाभ उठाकर अपनी पत्नी बनाने का प्रयास करता है और उस सती को अपना सत न छोड़ने के कारण पुलिस की सहायता से प्रताडित करता है। अफजल विदेश से धन कमाकर लौटता है और अपने को छिपाकर नौकर तहसीन के माध्यम से पत्नी और पुत्री को आर्थिक सहायता देता है और प्रवीन की सच्चाई से आश्वस्त होकर असद तथा असगर से प्रतिशोध की घात लगाता है। तहसीन अफजल को प्रकट नही करता। इससे प्रवीन को शका हो जाती है।

इसी मध्य तीसरे अंक में असद अपने षड्यंत्र से प्रवीन को गुप्त स्थान पर ले जाकर अपने अनुकूल करने की योजना बना लेता है और अफजल भी मौके की ताक में उसी गुप्त स्थान के लिए गूंगा बनकर उनकी नौकरी कर लेता है।

असद पहले तहसीन और प्रवीन में भेद पैदा कर तहसीन को घर से निकलवा देता है फिर प्रवीन को उठा ले जाता है। तहसीन बन्नू पुत्री और अफजल की खोज में जाता है। उधर अब्बू असद का विरोध करता है, अफजल अब्बू को मिलता है और अब्बू असद तथा असगर को मारता है। अफजल, प्रवीन, तहसीन, बन्नू वहीं इकट्ठे मिलते है। अफजल अपनी गलती स्वीकार करता है और वकील फ़हिम दोनों अपराधियों को उचित सजा दिला कर अब्बू को क्षमादान देते हैं।

सिराजुद्दौला (वि० २०१५, पृ० ६१); लें० : सर्वदानन्द; प्र० : राष्ट्रीय साहित्य सदन, लखनऊ ; पात्र : पु० १४, स्त्री नहीं; अंक : २ ; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : महल का एक कक्ष, आँगन, बंगाल, बिहार, उड़ीसा आदि।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमें प्लासी का युद्ध सिराजुद्दौला को जिस फूट के वातावरण में फंसना पड़ता है, उस ऐतिहासिक घटना को नाटकीय रूप देकर प्रभावोत्पादक बना दिया गया है। सिराजुद्दौला के बचपन में ही उसके पिता की मृत्यु हो जाती है वह गरीबी-अमीरी, ऊँच-नीच तथा हिन्दू-मुस्लिम के भेदभाव को दूर करके सबको एकता के सूत्र में बांधना चाहता है। मीर मदन सिराजुद्दौला को धोखे में मार डालना चाहता है लेकिन मीर जाफर तथा मदनलाल के विरोध करने से वह उसको मारने में असफल हो जाता है। सिराजुद्दौला यूरोपियनों और फिरंगी शासकों के अत्याचार को नहीं सहन कर पाता। वह फिरंगियों तथा यूरोपियों के साथ युद्ध करता है। लेकिन वह अपनी ही तरफ के आदमियों—मीरन, मीरजाफर, रायदुर्लभ तथा राजवल्लभ और अमीरचंद से धोखा खाता है। मीर जाफर राज्य के लालच में फिरंगियों से मिल जाता है। जिससे फिरंगी मीर जाफर को मुर्शिदाबाद का राजा बना देते हैं। मीरजाफर सिराजुद्दौला को कैदी बनाता है और मीर जाफर का लड़का अमीन पहले से ही मुहम्मद बेग को इस बात के लिए राजी कर लेता है कि वह सिराजुद्दौला को मार देगा। कैदी सिराजुद्दौला को मुहम्मद बेग मार डालता है। वह हंसकर अपनी माँ के चरणों को चूमते हुए सदा के लिए संसार से विदा हो जाता है।

सीता की माँ (सन् १९०७, पृ० ६३), लें० : रामवृक्ष बेनीपुरी; प्र० : जनवाणी प्रेस, कलकत्ता; पात्र : पु० नहीं, स्त्री १; अंक : ५; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : सीतामढ़ी के निकट अटवी, जनकपुर की पुष्प-वाटिका, चित्रकूट का पहाड़ी अंचल, लंका की अशोक वाटिका, अयोध्या का प्रान्तर।

यह स्वोक्ति रूपक है।

सीता की माँ अपनी पुत्री की सम्पूर्ण महत्वमयी जीवन-गाथा छाया-मूर्ति के रूप में हृदयहारी शैली के माध्यम से वर्णन करती है। जनक के राज्य में १२ वर्ष के अवर्षण के कारण अस्थि-कंकाल मात्र शरीर वाली सीता की माँ स्तन में दुग्धमात्र से अपनी बच्ची को पालन करने में असमर्थ होने पर ढोंगी राजा जनक को कोसते हुए कहती है—"बारह बरस तक वह निश्चिन्त राजमहल में रंगरेलियां मनाता रहा और अब जब पृथ्वी सूख कर पत्थर बन गई है, तो सोने के हल से उसे जोतने चला है।" वह बच्ची को एक स्थान पर रखकर बबूल के कांटे के लिए इसलिए दौड़ती है कि वह अपनी नस में सूराख बना सके जिसमें से दूध निकालकर बच्ची को पिलाये। इतनी देर में जनक के हल के बैल बच्ची के पास रुक जाते हैं और राजा उस बच्ची को पुचकारता है। राजा और सीता की मां का वार्तालाप होता है। अन्त में सीता की माँ मूर्च्छित होकर गिर

जाती है। द्वितीय अंक में सीता परिणय के उपरान्त राम के साथ अयोध्या जाती है तो उसकी माँ कहती है, "जा बेटी, मेरे भाग्य में सिर्फ यह सुख बदा है कि छाया सी पीछे-पीछे घूमती रहूँ।"

तीसरे अंक में चित्रकूट के पहाड़ी अंचल में पति का असीम लाड़ प्यार पाकर मंगल मना रही है। सीता की माँ वहाँ छाया रूप में पहुँचकर कहती है, "मेरा दुर्भाग्य मेरी बेटी के सिर पर जा गिरा।' —"मेरी बेटी तू इसी कल्पना में रह कि जनक तेरे पिता हैं, पृथ्वी तेरी माता है। यद्यपि जनक को कभी सीता नाम की कोई सन्तान न हुई और पृथ्वी ने न कभी हाड़-मास का शिशु प्रसव किया।"

चौथे अंक में लंका की अशोक वाटिका में सीता की छाया-मूर्ति दिखाई पड़ती है। सीता की माँ वहाँ पहुँचकर कहती है, "यह मेरा अभिशाप है। रावण, तुम्हारी सोने की लंका को धूल में मिलना है, तू आप जलेगा, सारा परिवार जलेगा, सोने की लंका जलेगी। मेरी बेटी सोने की पुरी में मानवता की प्रतिष्ठा करने के लिए ही पधारी है।

पंचम अंक में सीता की माँ की छाया-मूर्ति अयोध्या की अट्टालिकाओं को घूरती है। सीता के निष्कासन के उपरान्त वह विलाप करती हुई कह रही है—' देवकन्या तू मानव से प्रेम करने चली थी। मानव ने तुझे निगल लिया बेटी ? इनसे दानव भले थे। वाल्मीकि की कृपा से तुम मर्यादा-पुरुषोत्तम भले ही बने रहो राम, लेकिन सीता के साथ ही ओ अयोध्ये ! तुम्हारा गौरव सदा के लिए पाताल-प्रवेश कर गया।"—सीता पाताल में समा जाती है और विलाप करती हुई सीता की माँ आकाश की ओर बढ़ती हुई कहती है— 'आकाश, तू अपनी शरण मुझे दे।'

यह नाटक अनेक बार अभिनीत हुआ।

सीता वनवास (सन १९३२, पृ० ६२), ले० आगाहश्र कश्मीरी, प्र० देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० १२, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ७, ६, ३।

घटना-स्थल : अयोध्या का राजमहल, वाल्मीकि का आश्रम।

नाटक की कथावस्तु वाल्मीकि रामायण के लव कुश काण्ड के आधार पर लिखी गई है।

दुर्मुख, रजक नामक धोबी द्वारा आरोपित, सीता के विषय में जन-प्रचलित अपवाद की सूचना राम को देता है। राम के हृदय में सीता के प्रति अगाध प्रेम है। उनकी निष्ठा और सतीत्व के प्रति पूर्ण विश्वास होते हुए भी वह उन्हें जन-भावना के प्रति आदर प्रदर्शित करने के लिए निर्वासित करते हैं। लक्ष्मण उन्हें ऋषि वाल्मीकि के आश्रम के पास छोड़ कर चले आते हैं।

द्वितीय अंक में सीता के लव-कुश पुत्रों का वाल्मीकि आश्रम में पालन और शिक्षण तथा सीता का राम के प्रति सतत अनुराग वर्णित है। राम का अश्वमेध यज्ञ और लव-कुश द्वारा अभिमंत्रित घोड़ा पकड़ना तथा हनुमान और लक्ष्मण सहित राम-दल को युद्ध में हराने का वर्णन है।

तृतीय अंक में सीता का हनुमान को छुड़ाना और पुत्रों को राम का परिचय देना तथा लक्ष्मण के साथ सीता और वाल्मीकि का अयोध्या जाना वर्णित है। अयोध्या में पुनः सीता की परीक्षा का प्रश्न राम को अधीर बना देता है और सीता पृथ्वी से प्रार्थना करके उसकी गोद में समाविष्ट हो जाती है।

सीता वनवास (सन् १८८२), ले० बालकृष्ण भट्ट, प्र० हिंदी प्रदीप, प्रयाग का अक्टूबर अंक, पात्र पु० ११, स्त्री ५; अंक ३।

घटना-स्थल अयोध्या जंगल, वाल्मीकि-आश्रम, यज्ञ मंडप।

पहला अंक नाटक की पृष्ठभूमि का काम करता है। दूसरे में दो दृश्यों के अन्तर्गत क्रमशः राम को दुर्मुख द्वारा सीता संबंधी लोकापवाद की सूचना तथा निर्णय के अनुसार लक्ष्मण द्वारा सीता को वन ले जाने का

प्रसंग है। तीसरे अंक में सीता के वनजीवन, वाल्मीकि-आश्रम, लव-कुश के जन्म, बड़े होने पर राम के यज्ञ में उनके आगमन और अन्त में सीता के पृथ्वी में समा जाने का वर्णन है।

सीता वनवास नाटक (सन् १९५०, पृ० ९३), ले० : मास्टर न्यादरसिंह 'बेचैन'; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० १७, स्त्री १०; अंक : ३ दृश्य : ४, ७, ४।
घटना-स्थल : राजमहल, जंगल, वाल्मीकि-आश्रम।

इस पौराणिक नाटक में सीता के सतीत्व की परीक्षा दिखाई गई है।

रामराज्य में राम अपने भाइयों के साथ हर प्रकार से प्रजा की रक्षा और सेवा करते हैं। ढिल्लन नामक धोबी अपनी पत्नी को देर से घर आने के अपराध में निर्वासित करता है और देवी सीता को कलंकित बताता है। इस प्रवाद के कारण राम निर्दोष सीता को निर्वासित करते हैं। इधर राम अश्वमेध यज्ञ के लिए स्वर्ण की सीता बनवाते हैं। अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को वाल्मीकि आश्रम में सीता-पुत्र लव-कुश पकड़ते हैं और भरत, शत्रुघ्न तथा लक्ष्मण के साथ हनुमान् और अंगदादि को पराजित करते हैं। सीता पुत्रों को मुकुट के माध्यम से भरत, लक्ष्मण तथा सुग्रीव आदि का परिचय दे घोड़ा लौटा कर क्षमा मांगने का आदेश देती हैं। लव-कुश के साथ सीता यज्ञ-भूमि में भी लाई जाती है। पुनः उन की परीक्षा का प्रश्न उठता है। सीता पृथ्वी से अपनी लज्जा रखने की प्रार्थना करती हैं। पृथ्वी स्वयं प्रकट हो सीता को अपनी गोद में उठा अन्तर्धान हो जाती है। सभी अवाक् और मूक रह जाते हैं। नाटक अभिनीत है।

सीता स्वयंवर (वि० १९६५, पृ० ११२), ले० : आनन्द झा न्यायाचार्य; प्र० : श्री काञ्चीनाथ झा, रानी चन्द्रावती श्यामा दातव्य चिकित्सालय, बनारस; पात्र : पु० १६, स्त्री ८; अंक : ५।
घटना-स्थल : सज्जित राजसभा, सुसज्जित राजभवन, प्रफुल्लित कुसुम-समूह, सुशोभित गिरिजा बाग, रावण का शिविर, स्वयंवर सभा, अयोध्या की राजसभा, गिरजा बाग के सामने का भाग, सुसज्जित कौतुकागार।

इस पौराणिक नाटक में सीता के स्वयंवर की कथा दुहराई गई है। नाटकीय कथा-वस्तु के अन्तर्गत नाट्यकार ने महाराज जनक के राज्य की शासन-व्यवस्था, रहन-सहन, आचार-विचार आदि विषयों का उल्लेख किया है। महाराज जनक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि मैं सीता की शादी उसी व्यक्ति के साथ करूँगा जो शिव के धनुष को तोड़ सकेगा। इसी उद्देश्य से स्वयंवर का आयोजन होता है। विभिन्न देशों के नरेश आमन्त्रित किये जाते हैं। विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण भी इस स्वयंवर में भाग लेने के लिए मिथिला आते हैं। रावण भी इस स्वयंवर में सम्मिलित होता है। स्वयंवर में उपस्थित नरेशों में राम ही ऐसे पराक्रमी निकलते हैं जो आसानी से शिव के धनुष को खंड-खंड कर देते हैं। इससे दशरथ और जनक को अत्यधिक प्रसन्नता होती है। पंजीकारों से अधिकार जानकर शुभ लग्न में दोनों की शादी हो जाती है। जब यह संवाद परशुराम को मिलता है, तब वे अत्यधिक क्रोधित होकर वहां उपस्थित होते हैं। शिव-धनुष को टूटा हुआ देखकर वे युद्ध के लिए सन्नद्ध हो जाते हैं। राम-लक्ष्मण परशुराम को समझाने की कोशिश करते हैं, किन्तु वे उनकी एक बात भी नहीं सुनते। कुल-गुरु वशिष्ठ के कहने पर परशुराम की क्रोधाग्नि शमित हो जाती है। इससे उप-स्थित व्यक्तियों में अत्यधिक प्रसन्नता होती है। अन्ततः जनक सीता को अयोध्या के लिए विदा करते हैं। मिथिला की प्रच-लित परम्परानुसार नाट्यकार ने 'समदाउन' नामक गीत से, नाटक की समाप्ति की है।

सीता स्वयंवर नाटक (सन् १९०३, पृ० ६०), ले० : तोताराम-उपनाम प्रेमी कवि; प्र० : ईश्वरी प्रसाद, स्वामी प्रेस, मेरठ; पात्र : पु० १५, स्त्री ८; अंक (एक्ट) : २; सीन : ४, ५।

घटना-स्थल वन, वाटिका, वाल्मीकि आश्रम, जनकपुर।

विश्वामित्र राजा से यज्ञ की रक्षा के लिए राम-लक्ष्मण की माँग करते हैं। राजा प्रेमवश अधीर हो आनाकानी करते हैं किन्तु शाप के डर से तथा वशिष्ठ के समझाने से पुत्रों को दे देते हैं। उनकी संरक्षणता में मुनि यज्ञ करते हैं। युद्ध में ताडका, सुबाहु और मारीच का वध कर राम स्वयं कहते हैं—'मैं लीन्ह मनुज अवतार भार महि टारो।" पश्चात् राम-लक्ष्मण को साथ ले मुनि वन में आगे जाते हैं जहाँ राम के चरण स्पर्श से पाषाणी अहल्या प्रकट होकर स्तुति करती है। वहाँ से गंगा माहात्म्य बताते हुए विश्वामित्र उन्हें साथ ले जनकपुर जाते हैं। बाग में सीता-राम मिलन होता है। सीता जी दुर्गा की पूजा कर उनसे राम को पति रूप में प्राप्त करने का वरदान माँगती हैं। धनुष-यज्ञ में जब सहस्रबाहु, रावण आदि बड़े-बड़े वीर धनुष तोड़ने में असफल हो जाते हैं और जनक 'कोई क्षत्रिय शूरवीर नहीं रहा' कहकर खेद प्रकट करते हैं, तब राम मुनि की आज्ञा से उसे भंग करते हैं। इसी परशुराम और लक्ष्मण में विवाद चलता है।

अन्त में राम "लखन पर मिहरबानी करने" का अनुरोध कर परशुराम "वास्ते आजमायश ताकत के अपना धनुष वास्ते चढ़ाने के रामचन्द्र जी को" देते हैं। राम उसे चढ़ा देते हैं। राम को परब्रह्म जान परशुराम उनकी स्तुति करते हैं। सीता राम के गले में वरमाला डालती हैं।

सीताहरण (सन् १८९५, पृ० ७०), ले० बदीदीन दीक्षित, प्र० लखनऊ प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ, पात्र पु० ६, स्त्री २।
घटना स्थल चित्रकूट।

इस पौराणिक नाटक में रामायण के आधार पर सीताहरण की कथा का वर्णन है। जब राम-सीता और लक्ष्मण को चित्रकूट में निवास करते समय खरदूषण और सूपणखा उन्हें अनेकों तरह की बाधा पहुँचाते हैं तब क्रुद्ध होकर राम खरदूषण का वध करते ही सूपणखा की नाक-कान भी काट लेते हैं। सूर्पणखा के उकसाने पर रावण यती का वेश बनाकर सीता का हरण कर लेता है। इधर राम और लक्ष्मण सीता को न पाकर विलाप करते हैं। फिर सीता के द्वारा फेंके हुए गहने आदि देखते हैं। और जटायु के द्वारा सारा समाचार प्राप्त करते हैं। जटायु घायल होने के कारण मर जाता है। दोनों भाई उसका दाह संस्कार करते हैं।

सीय स्वयंवर (सन् १९१८, पृ० ३५), ले० अम्बिकादत्त त्रिपाठी, प्र० ग्रन्थ प्रकाशक समिति, बनारस, पात्र पु० १५, स्त्री ४, अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल जनकपुर में स्वयंवर सभा।

इस पौराणिक नाटक में सीता-स्वयंवर की कथा चित्रित है। नाटक मंगलाचरण से प्रारम्भ होता है। सीता-स्वयंवर में देश के अनेक राजा आते हैं जिनमें रावण एवं बाणासुर भी सम्मिलित हैं। धनुष तोड़ने में सभी योद्धा असफल रहते हैं जिससे जनक चिंतित हो जाते हैं। उसके पश्चात् राम धनुष तोड़ते हैं। परशुराम सभा में आकर क्रोध प्रकट करते हैं परन्तु राम के पराक्रम से प्रभावित होकर शान्त हो जाते हैं। अन्त में सीता एवं राम का विवाह हो जाता है।

सीमान्त के बादल (सन् १९६३, पृ० १२६), ले० लक्ष्मीकान्त वर्मा, प्र० भृगुबन्धु कार्यालय, इलाहाबाद, पात्र पु० १४, स्त्री २, अंक ४, दृश्य प्रत्येक अंक में एक-एक।
घटना-स्थल हिमालय की बर्फीली चोटियाँ, भारतीय सैनिकों का पहाड़ पर शिविर, आधे रंगमंच पर धुंधली छाया, पहाड़ी दृश्य।

यह नाटक चीनी आक्रमण की घटनाओं से सम्बद्ध है। प्रथम अंक में श्वेत वस्त्र-धारिणी एक स्त्री केश खोले एक कन्दरा में विलीन हो जाती है। नेपथ्य से गान होता है—"आज हिमालय की चोटी ने मांगा तप्त-

रक्त का दान। सुनो-सुनो ओ भारतवासी कर दो धरती लहूलुहान।" हिमदेवी अपना परिचय देते हुए कहती है—

"भारत की आत्मा, चेतन, मैं प्रेम, आस्था, प्रीत, गीत, मैं पूजा आराधन।" उधर माओ सैनिकों को ललकार कर कहता है—"ओ नंगी भूखी सेनाओ, ओ पशु, ओ जीवित शव, सैन्य घोषणा चलो सुनाओ।" एक चीनी सैनिक से चाऊ अपनी निर्ममता को प्रकट करते हुए कहता है—"पूरे देश के हृदय को कन्दराओं में बन्दी देवताओं को दे दिया है। ताकि हम छीन सकें, निर्दयता से ये संगीनें, ये थैली चावल की।"

भारतीय और चीनी सेना में युद्ध होता है। कैप्टन रवि शत्रुओं को भागते देखकर प्रसन्न होता है। मेजर पुरी लेफ्टिनेंट विजय आदि भारतीय वीर छुपे हुए चीनियों की गोलियों का जवाब देते हैं पर लेफ्टिनेंट विजय गम्भीर रूप से आहत होकर राष्ट्र-ध्वज मेजर पुरी को देकर वीरगति प्राप्त करता है।

द्वितीय अंक में बालांक क्षेत्र में भारत से मिलाने वाली सड़कें शत्रु काट डालते हैं। सैनिकों को खाद्य एवं युद्ध सामग्री नहीं मिलती। केवल वायुयान से सामग्री पहुँचाई जाती है। भूख-प्यास से व्याकुल इर्शा को लेफ्टिनेंट भारती रोटी और पानी देता है। वह चेतना में आने पर एक मानचित्र देती है जिसे उसने एक चीनी जनरल को छिपकर गोली मारकर प्राप्त किया है। उसके दिए हुए यंत्रों और मानचित्रों से चीनियों की युद्ध-योजना का ज्ञान होता है। इसी समय चीन के विगत इतिहास की प्रेतात्मा प्रकट होकर अपना विवरण देती है।

तीसरे अंक में इतने भारतीय बन्दी बनाये जाते हैं कि माओ सबके लिए हथकड़ी-बेड़ी की व्यवस्था नहीं कर पाता। पर कमलसिंह अपने सैनिकों के साथ लड़ रहा है। भारतीय सेना और चीनियों में युद्ध होता है। अंधकार के मध्य चीनी योद्धा आनशान—जिसने गुप्तकाल में भारत पर आक्रमण किया था—की प्रेतात्मा दिखाई पड़ती है।

इस गीति नाट्य में चीनी आक्रमण से भारत-पराजय का दृश्य दिखाकर भारतीय संकल्प शक्ति द्वारा शत्रु से प्रतिशोध और स्वाभिमान की रक्षा का संदेश निहित है।

यह नाटक प्रयाग की विशिष्ट नाट्य संस्था सेतुमंच द्वारा २७-१-६३ को स्थानीय पैलेस थियेटर हाल में प्रातः ६ बजे प्रस्तुत किया गया।

सीमंतिनी चरित्रम् (सन् १८८४, पृ० ३८), ले० : पुरुषोत्तम कवि; प्र० : नादेल्ल मेधा-दक्षिणा मूर्ति शास्त्री, मछलीपट्टणम; पात्र: पु० २३, स्त्री ६; अंक-रहित, दृश्य : २४। घटना-स्थल : घर, राजप्रासाद, नदी, युद्ध-क्षेत्र।

सोमवार-व्रत माहात्म्य को प्रकट करने वाले इस नाटक की कथावस्तु स्कंदपुराण से ली गई है।

महाराज चित्रवर्मा की पुत्री सीमंतिनी यह जानकर कि १४वें वर्ष में वैधव्य प्राप्त होने वाला है, गुरुपत्नी मैत्रेयी के आदेश से नियमपूर्वक सोमवार-व्रत का पालन करती है।

सीमंतिनी का विवाह चंद्रांगद नामक राजकुमार से होता है। एक दिन आखेट के लिए गया हुआ चंद्रांगद नदी में डूब जाता है; खोजने पर भी उसके शव का पता नहीं चलता। कुशध्वंड पर प्रेतत्व का आरोप कर चंद्रांगद की अन्त्यक्रियाएँ की जाती हैं। किन्तु चंद्रांगद मरता नहीं। दो नाग कन्याएँ उसे पाताललोक ले जाती हैं। वहाँ राजा तक्षक उसकी शिवभक्ति से प्रसन्न हो, उसे सादर फिर भूलोक भेज देते हैं।

चंद्रांगद भूलोक लौटकर, शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर राज्य-लाभ करता है। सीमंतिनी और चंद्रांगद का पुनः मिलन सम्पन्न होता है।

सुखानन्द मनोरमा (वि० १९६४, पृ० १५४), ले० : हिन्दी हितैषी विद्यार्थी; प्र० : खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई; पात्र : पु० १३, स्त्री ३; अंक : ५; गर्भांक : ५, ५, ५, ५, २।

घटना-स्थल राजभवन, घर, शयनागार, काशी में सेठ का उद्यान।

सुखानन्द विजन्ती का वणिक-पुत्र इस नाटक का नायक है और उसकी स्त्री मनोरमा नायिका है। विजन्ती नगर का राजपुत्र कामसेन मनोरमा के सौन्दर्य पर आसक्त है और वह दूती भेजकर मनोरमा से अपना प्रेम प्रगट करता है। मनोरमा उसे पत्र देती है कि "राजकुमार! पराई स्त्री की इच्छा करना बड़ा दोष है।"

काम सेन दूती को समझाता है कि तुम उसके सास-ससुर के पास जाकर कहो कि "तुम्हारी बहू तो राजकुमार से सम्बन्ध रखती है, अतएव उसको घर से निकाल दो।" दूती की चाल से सास ससुर को मनोरमा पर सदेह होता है और वे उसे अपने सारथी के द्वारा उसके पितृ-गृह भेजने के बहाने से घोर अरण्य मे भेज देते हैं। सुखानन्द व्यवसायार्थ विदेश गए हैं। उसकी अनुपस्थिति में यह काड होता है।

नाना प्रकार की विपत्ति सहने पर मनोरमा और सुखानन्द का पुन मिलन होता है और सुखानन्द उसके धैर्य और सौन्दर्य की प्रशसा करते हैं। मनोरमा विनय करती है, "जब तक मेरा कलक दूर न हो तब तक आप मुझसे किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखें।"

अन्त मे मनोरमा के सास-ससुर अपनी भूल स्वीकार करते हैं। मनोरमा और सुखानन्द सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं। इस नाटक मे स्त्री के सतीत्व की महिमा दिखाई गई है। नान्दी सूत्रधार के बिना नाटक आधुनिक शैली में प्रारम्भ किया गया है।

सुख किस में (सन् १९४६, पृ० १००), ले० सेठ गोविन्द दास, प्र० प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० ३, स्त्री २, अक ५, दृश्य २, २, २, २, २ तथा एक उपक्रम और दूसरा उपसहार है।
घटना-स्थल सृष्टिनाथ का घर, हरिद्वार।

इस नाटक मे 'सुख किस मे' नामक समस्या उठाई गई है। नाटक मे सृष्टिनाथ इस बात का इच्छुक है कि जो कुछ भी सृष्टि मे प्राप्त है, उस पर उसका अधिकार रहे और वह उसका उपयोग करने के लिए सर्वथा स्वच्छन्द रहे। वह एक पूँजीपति विलासी युवक है। वह अपने वैभव मे इन्द्र की तरह सुखी है। दुर्भाग्य से उसके व्यापार में घाटा होता है। सारे विलास समाप्त हो जाते हैं। दीन-हीन होकर सृष्टिनाथ गगा मे डूबकर आत्महत्या करना चाहता है। वैराग्यवैभव नामक सन्यासी उसे आत्महत्या से विरत कर फिर जीवन की ओर मोड़ता है। सृष्टिनाथ सन्यासी बन जाता है, परन्तु उसको यहाँ भी शांति नही मिलती। सृष्टिनाथ प्रेमपूर्णा से प्रेम करने लगता है परन्तु वह उसके प्रेम को समझ नही पाती, क्योकि वह अज्ञात यौवना है। मरते समय उसकी माँ प्रेमपूर्णा का हाथ सृष्टिनाथ के हाथ मे दे जाती है। दोनों दम्पती बन जाते हैं। कुछ समय पश्चात् इनसे मोहनमाला नाम की लड़की का जन्म होता है। दोनों उसी की ओर केंद्रित हो जाते हैं। सुख से रहते हुए कुछ दिन बाद मोहनमाला की मृत्यु हो जाती है। दोनो विकल हो जाते हैं पर आत्म चिंतन करने के पश्चात दोनों देखते हैं कि मोहनमाला विश्व मे व्याप्त हो गई है। सारा विश्व परमात्मामय है।

सुजाता (सन् १९६१, पृ० ६५), ले० गोविन्द वल्लभ पत, प्र० आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री २, अक ३, दृश्य ३, ३, ३।
घटना स्थल विजय का घर।

यह एक सामाजिक नाटक है। पतिपरायणा स्त्रियां आपत्तियों को कितनी दृढ़ता तथा गम्भीरता से झेलती हुई अपने पातिव्रत धर्म की रक्षा करती हैं तथा किस प्रकार दिल की मार्मिक वेदना के साथ धरती माता की गोद में सिमट जाती है? इसका ज्वलन्त उदाहरण सुजाता है। सुजाता एक पतिपरायणा पत्नी है। उसके पति विजय एक शकित व्यक्ति हैं, जो सुजाता और डॉ० विमल के आपसी मेल तथा बालपन से

शंकित होकर सुजाता को घर के अन्दर बन्द रखते हैं। एक दिन डॉ० विसन धोखे से सुजाता के घर का ताला खोलकर उस के पास जाते हैं और उसे पिता की झूठी बीमारी का बहकावा देकर घर से बाहर ले जाते हैं। रहस्य खुलने पर सुजाता, डॉ० विसन का साथ छोड़ देती है और वह भूलती-भटकती हुई अपने पिता के घर पहुँच जाती है। इधर विजय अपनी पत्नी सुजाता को किसी बाहरी वासना की परछाईं पड़ने मात्र से त्याज्य और कलंकित समझने लगता है। अन्त में उसे मृतक घोषित कर अपनी दूसरी शादी करके नव वधू रेखा को ले आता है।

उधर सुजाता भी अपने पिता द्वारा निष्कासित कर दी जाती है। वह पुनः अपने पति विजय के पास आकर अपनी बीती कहानी उसे सुनाती है लेकिन विजय उसकी बातों पर विश्वास न करके उसे घर से निकाल देता है। इधर रेखा अपनी सौत सुजाता के परित्याग का कारण समझ जाती है। वह सुजाता को घर में रख लेती है तथा कुछ दिन विजय से सारा रहस्य छिपाये रखती है। रेखा सुजाता की मार्मिक वेदना को अच्छी तरह समझती है और उसे अपना अमूल्य प्रेम तथा सहयोग देती है। रेखा भी एक सूझ-बूझ की स्त्री है जो अपनी सौत सुजाता के दुःख को अपना दुःख समझकर उसको उसका वास्तविक अधिकार दिलाने का पूरा प्रयत्न करती है। अन्त में धीरे-धीरे रेखा अपनी बुद्धिमानी से विजय तथा डॉ० विसन को सुजाता का वास्तविक ज्ञान कराती है। इधर सुजाता को भी वह पुनः विजय की पत्नी बनने को तैयार कर लेती है। सुजाता तथा रेखा एक ही वेष में छिपे हुए दो रूप हैं जिसमें जीवन और मृत्यु का एकीकरण निहित है। अचानक सुजाता को एक सांप काट लेता है, उसकी मृत्यु हो जाती है। खुशी की जगह शोक का मातम छा जाता है, जिससे डॉ० विसन बड़े दुःखी होते हैं और अन्त में वे भी सुजाता के प्रेम में विह्वल होकर अपना शरीर त्याग देते हैं तथा विजय अपने किए हुए कर्मों पर पश्चाताप करता है।

सुदामा (वि० १९९५, पृ० ९६), ले० : किशोरीदास वाजपेयी; प्र० : पटना पब्लिशर्स, पटना; पात्र : पु० ११, स्त्री ५; अंक : ५; दृश्य : ४, २, २, ३, २।
घटना-स्थल : सरोवर तट, आश्रम का एक भाग, शिप्रा नदी का तट, चौपाल, सुदामा की झोंपड़ी, श्रीकृष्ण की विनोदशाला, राजमहल।

इस नाटक में कृष्ण-सुदामा की प्रसिद्ध कहानी का वर्णन है।

सुदामा श्रीकृष्ण के परम मित्र कैसे हो गये, जबकि अन्य सैंकड़ों सहपाठियों से कोई मतलब ही नहीं? दूसरे, उनकी गरीबी का कारण क्या था? इन दो प्रश्नों का उत्तर पुराणों में भी नहीं मिलता। वाजपेयी जी ने इनका उत्तर अपनी इस कृति में स्पष्ट कर दिया है। इसमें कहीं कहीं गांधीवाद का भी प्रभाव मिलता है।

सुदामा तत्कालीन राजा के अत्याचारों का विरोध करता है और उसकी दासता को स्वीकार नहीं करता। इसी कारण से निर्धनता उसका साथ नहीं छोड़ती है। सुदामा की स्पष्टवादिता एवं तेजस्विता से प्रसन्न होकर कृष्ण उस पर अपार कृपा रखते हैं और साथ पढ़ने के कारण अपना अभिन्न मित्र भी समझते हैं।

सुदामा-कृष्ण नाटक (वि० १९९६, पृ० ७५), ले० : मातादीन सुकुल व बंदीदीन दीक्षित; प्र० : ए० ओ० प्रेस, लखनऊ; पात्र : पु० १६, स्त्री १३; अंक : ३; दृश्य : ५, ६, ३।
घटना-स्थल : सुदामा की झोंपड़ी, जंगल, गोमती तट, द्वारिका में कृष्ण का राजमहल।

इस पौराणिक नाटक में प्रेम, भक्ति, सौहार्द तथा भक्तवत्सलता का वर्णन है।

प्रथम अंक में दो पुजारियों की प्रार्थना से प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण और सरस्वती उन्हें सुदामा नाटक की रचना और उसके अभिनय का आदेश देते हैं। सुदामा भिक्षाटन करते और यजमानों को आशीर्वाद देते हुए भटकते फिरते हैं, पर इससे प्राप्त अन्न भोजन के लिए पर्याप्त नहीं होता। इसलिए

उनकी पत्नी इस तुच्छ वृत्ति को त्याग कर कुछ दूसरा उपाय करने का आग्रह करती है। पत्नी के बार बार द्वारिका जाकर अपने मित्र कृष्ण से कुछ माँग लाने का अनुरोध करने पर वे अपने मैत्रीव्रत को सफल करने के लिए 'भेंट देने योग्य पदार्थ' की माग करते हैं। पड़ोस से सवाई पर प्राप्त चावल के कणों को फटे दुपट्टे मे बाधकर स्त्री सोत्साह विदा करती है।

इधर रुक्मिणी कृष्ण से भक्ति दर्शन जानने की इच्छा प्रकट करती हैं। उधर वृद्धावस्था और पैदल यात्रा के कारण राह का कष्ट सहते थके-मादे सुदामा एक जगह सो जाते हैं, जिससे कोमल शैया पर सोये कृष्ण दुखी हो रुक्मिणी को जगाकर दीन भक्त ब्राह्मण के पथ-कष्टों का वर्णन करते हैं और उनकी सहायता के लिए गरुड पर बैठकर जाते हैं। वे वहाँ पहुँचकर सोते हुए सुदामा को उठा लाते हैं और द्वारिका के समीप गोमती तट के एक घाट पर सुला कर चले आते हैं। सुदामा कृष्ण से मिलने जाते हैं। कृष्ण उनका स्वागत-सत्कार करते हैं और ब्राह्मण की दीन दशा का समाचार जानकर दुखी होते हैं। कृष्ण सुदामा की काँख से चावल की पोटली छीनकर भाभी की भेंट स्वीकार करते हुए दो मूठी चावल खाते हैं पर तीसरी मूठी उठाते ही रुक्मिणी हाथ थाम लेती है। कुछ दिन वहाँ रहने के बाद कृष्ण की आज्ञा से सुदामा स्त्री और मित्र को कोसते तथा अपनी करनी पर पछताते खाली हाथ घर लौटते हैं। वहाँ पहुँचकर वह सुदामापुरी को देखते हैं। कृष्ण की इस महती कृपा के कारण वह और उनकी पत्नी भगवान् कृष्ण की स्तुति करते है।

सुन्दर रस (सन् १९५६, पृ० ८५), ले० लक्ष्मीनारायण लाल, प्र० भारतीय ज्ञान पीठ, काशी, पात्र पु० ६, स्त्री २, अंक ३, दृश्य १, १, १।
घटना-स्थल: पडितराज का घर, मथुरा, एक कमरा।

इस नाटक मे पडित द्वारा बनाई हुई सुन्दर रस नामक औषधि से अन्य लोगो को सुन्दर बनाने का प्रयास निहित है।

पडितराज की धर्मपत्नी 'देवी माँ' यद्यपि इन्ट्रेंस पास हैं परन्तु उनका मस्तिष्क कुछ विक्षिप्त सा है। बाहर सडक से निकलने वालो, फल-सब्जी आदि बेचने वालो, की आवाज सुनकर पागलो की तरह दौड पडती हैं। उनको सँभालने और घर की देख-रेख के लिए पडितराज ने एक नौकर सुमिरन रखा है। उनके शिष्य संस्कृत के विद्यार्थी हैं तथा व्यवहार ज्ञान से प्राय शून्य हैं। इनके क्रियाकलाप प्रहसन के अच्छे साधन हो जाते हैं। पडितराज ने 'सुन्दर रस' नाम की एक औषधि तैयार कर रखी है जिसका गुण सौन्दर्य वर्द्धन है। निजी उपचार एव अनुसधान की गई स्वानुभूत औषधियों से पडित जी ने अपनी पत्नी की स्थिति मे काफी सुधार किया है। पर अभी भी वह पूर्ण स्वस्थ न हो सकी हैं। भट्टाचार्य नामक पण्डित जी के मित्र बहुत दिनो पर उनसे मिलने आते है। उनकी भाषा और बोलने के ढग से पुन अच्छा विनोद प्रस्तुत होता है।

अब पण्डितजी की पत्नी स्वस्थ हो गई हैं। उनकी देवी माँ की छोटी बहिन 'वीना B A' भी यहीं है। अभी अविवाहिता और व्यवस्था कला का ज्ञान रखने वाली है। इसी दिन १ माह के अवकाश के पश्चात उनके शिष्यों का भी आगमन हुआ है। वे भी कमरे की स्थिति देख-देखकर चकित हैं। परन्तु वीना इन लोगो के व्यवहार से खीझी-सी है। थोडी देर बाद केदार वकील का आगमन होता है। उषा नाम की एक रमणी से उनका प्रेम चल रहा है तथा पण्डित जी के सुन्दर रस सेवन मे अपना चेहरा ठीक करना चाहते हैं। परन्तु दो माह के सेवनोपरान्त भी उन्हें कोई लाभ नहीं है।

पण्डितराज तथा देवी माँ कलक्टर साहब के यहाँ स्पेशल मीटिंग मे आमंत्रित होते हैं। इस मीटिंग मे जाने के लिए देवी माँ पण्डित जी के लिए आग्ल वेश-भूषा का प्रबध करती हैं। सूट-कोट आदि वस्त्रो को साग्रह पहिनाकर पण्डितराज को मीटिंग

में ले जाती हैं। लेकिन आत्मा के न कबूल करने के कारण थोडी दूर जाकर वे पुनः दुःखी मन से झुंझलाये हुए लौट आते हैं। पीछे-पीछे देवी मां भी आती हैं। वे पण्डित जी को वस्त्रों को उतारने के लिए मना करती है तथा उसी वेश मे शीघ्र चलने का आग्रह करती हैं। पण्डित जी तैयार नहीं होते और विक्षुब्ध होकर लेट जाते हैं। भट्टाचार्य का पुनः प्रवेश होता है। वह पण्डित जी के आवास को देखकर पहले तो निहाल हो जाता है पर बाद में उन लोगों की आपसी व्यथा देखकर हैरान होता है।

कुछ ही क्षण बाद वकील केदार भी आते है। वे भी इस रहस्य से अवगत होते हैं। पण्डितराज और देवी मां सुन्दर रस की सभी बोतलें बेच देते हैं और अब वे पूर्ण प्रसन्न होते हैं।

सुन्दर संयोग (वि० १९९५, पृ० ६४), ले० : जीवन शर्मा; प्र० : काशिराज के सभा पंडित श्री लक्ष्मण झा; पात्र : पु० ४, स्त्री ६; अंक : ४; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : पण्डा का मकान, वैद्यनाथ का मंदिर एवं भद्र-पुरुष का मकान।

'सुन्दर संयोग' की कथा-वस्तु सुन्दर और सरला के वैयक्तिक जीवन से संबधित है। विवाहोपरान्त सरला भयानक रूप से अस्वस्थ हो जाती है। परिस्थिति से लाचार होकर सुन्दर विवाह के चौथे दिन ससुराल से प्रस्थान करते हैं। इसी बीच किसी अनुष्ठान के लिए वे वैद्यनाथ धाम चले जाते हैं। समय के अन्तराल में डेढ़ सान की अवधि यों ही वहां समाप्त हो जाती है। अनुष्ठान के अनन्तर जब वे घर वापस ही आने वाले हैं कि उसी समय सरला अपने संबंधियों के साथ वैद्यनाथ धाम आती है। संयोग से सरला वही ठहरती है, जहाँ सुन्दर ठहरे हुए हैं। सुन्दर सरला को पहचान जाते हैं, किन्तु सरला उन्हें नहीं पहचान पाती फिर भी सुन्दर की विरहाग्नि प्रज्वलित हो जाती है, किन्तु शालीनतावश वह उसे अनावृत्त नही करते हैं। वैद्यनाथ धाम की अपार भीड़ में सुन्दर अपनी पत्नी सरला की सुरक्षा करते हैं, जिससे सरला के हृदय में सुन्दर के प्रति स्वाभाविक रूप से प्रेम जाग्रत होता है। सरला की बहन कादम्बरी सुन्दर को पहचान लेती है, किन्तु भ्रम के भय से वह सरला से नही कहती है।

सुदेशिया नाटक (सन् १९३७, पृ० १०४), ले० : चंचरीक; प्र० : सेवा पुस्तकालय, गोरखपुर; पात्र : पु० १०, स्त्री १०; अंक : ३; दृश्य : ४, ४, ५।
घटना-स्थल : रंगभूमि, चम्पा का शयनागार, बम्बई नगर।

इस सामाजिक नाटक में एक देशभक्त, कलाप्रेमी के कार्यों का वर्णन है जो सामाजिक कुरीतियों को भी दूर करने का प्रयास करता है।

देश के पढ़े-लिखे युवकों की बेकारी और गरीबी देखकर शिक्षित देशभक्त मदनमोहन के हृदय में कला-कौशल सीखने के लिए विदेश जाने की भावना उत्पन्न हो जाती है। इस सम्बन्ध में अपने माता-पिता से आज्ञा प्राप्त कर वह अपनी सहधर्मिणी विदुषी चम्पा देवी के पास अनुमति के लिए जाता है। दोनों में वादविवाद, विरह-वियोग-प्रदर्शन और प्रेमालाप-विलाप होता है और मदनमोहन को चम्पा के द्वारा विदेश गमन के लिए प्रसन्नतापूर्वक अनुमति मिलती है। मदनमोहन खुशी के साथ विदेश के लिए विदा हो जाता है।

पति के वियोग में दुःखी चम्पा को सोनवाँ कुटनी पापियों और गुंडों द्वारा भ्रष्ट कराने का आयोजन करती है। चम्पा श्यामा ननद की मदद से कुटनी को कूटनीति एवं षड्यंत्र से गुंडों सहित गिरफ्तार कराकर न्याय के लिए राजा के सामने पेश करती है जिससे राजा की आज्ञा से कुटनी सहित गुंडों को सजा हो जाती है और अबलाओं की रक्षा के लिए राजा स्मृति रूप में 'चम्पा अबलाश्रम' की स्थापना करते हैं।

बम्बई चौपाटी के मैदान में मदनमोहन की विनोद से भेंट होती है और परिचय के साथ ही वे जहाज से लन्दन जाते हैं। विनोद कैम्ब्रिज में बैरिस्टरी पढ़ता है, मदनमोहन कला कारीगरी सीखने के लिए अमेरिका

जाता है और इधर विनोद गोपाल की कुसगति मे पडकर भ्रष्ट हो जाता है। पाँच वर्ष के बाद मदनमोहन लन्दन आकर पतित विनोद और गोपाल को धिक्कारता है। बम्बई मे पहुँचकर चम्पा को तार देना है। स्वदेश मे स्वागत और बधाई के पश्चात् रगमहल मे चम्पा और मदनमोहन का प्रेमालाप होता है। बेकारी दूर करने के लिए विश्व-शिल्प कला महाविद्यालय की स्थापना होती है और दोनो पति-पत्नी स्वदेश सेवा का अखड व्रत धारण करते हैं।

सुनहरी खजर (सन् १९२४, पृ० १२०), ले० गगाप्रसाद अरोडा, प्र० रत्नाकर, पुस्तकालय, बनारस, पात्र। पु० ९, स्त्री ५, अक ३, दृश्य ५, ५, ५।
घटना-स्थल बादलखाँ का मकान, अगला महल, गार तहखाना, जगल, नाज के महल, खान बहादुर का चिडियाखाना, पहाडो मे पानी झरना, खान बहादुर का मकान, मकान शेर अफगान, जश्नगाह, बादल खाँन का मकान।

यह नाटक पारसी नाट्य मडलियो का प्रसिद्ध नाटक है। इसमे मुसलमानी दरबार के राजाओ का चित्र प्रस्तुत किया गया है। अतएव इसमे प्रेम का स्वर अधिक मुखर रहा है। यदि मजिल एक हो और उसके राही दो हो तो आपस मे थोडी सी मुठभेड होगी ही, क्योकि दोनो ही मजिल पर पहुँचना चाहते हैं। इस नाटक मे भी ऐसे अनेक घटना स्थल हैं जहाँ यात्रियो के बीच थोडी-सी झडप होनी है। अन्तिम स्थिति मे एअजाज अपनी किस्मत पर अफसोस करता है। बीच मे नाट्यकार ने डाकुओ का दृश्य भी उपस्थित किया है। डाकुओ द्वारा नाज को भगाने की कोशिश की जाती है किन्तु सफलता नही मिलती है। नाटक की समाप्ति मे एअजाज और नाज की शादी हो जाती है।

नाटक पर पारसी नाट्य शैली का अत्यधिक प्रभाव है, इसमे नाट्यकार ने खुलकर गीतो का प्रयोग किया है। नाटक मे बहुत से ऐसे गीतो का भी प्रयोग हुआ है जो नाटकीयता की दृष्टि से उपादेय नहीं कहे जा सकते। इसमे विदूषक की योजना हास्य उत्पन्न करने के लिए की गई है। मूल कथा से हास्य कथा का कोई सम्ब ध नहीं।

सुनहरे सपने (सन् १९६२ पृ० ८४), ले० सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भडार, दिल्ली, पात्र पु० ७, स्त्री ४, अक ३।
घटना-स्थल घर, शराब की दुकान।

इस सामाजिक नाटक मे पति-पत्नी के प्रेम का सच्चा चित्रण हुआ है। मासूम बच्चो के सुदर सपनो को भी दिखाया गया है किन्तु शराब की लत के कारण सबके सुनहरे सपने भग हो जाते हैं। अन्त मे नाटककार इस लत को सुधार कर समाज को एक नयी दिशा दिखाता है।

सुनहला विष (सन् १९१९, पृ० १०५), ले० आनन्द प्रसाद कपूर, प्र० भारत जीवन प्रेस, काशी, पात्र पु० ८, स्त्री ३, अक ३, दृश्य ५, ८, ४।
घटना स्थल श्याम का घर।

यह एक सामाजिक नाटक है। इसमे उत्तरा द्वारा प्रेम-निर्वाह पर प्रकाश डाला गया है। उत्तरा के पिता श्याम को इसलिए कष्ट दिया जा रहा है कि वह सूर्य विक्रम से शादी करने के लिए 'हाँ' कह दे। पर ऐसा नही होता। उत्तरा अन्त मे अपने प्रेमी इन्द्रदेव की ही पत्नी बनती है।

सुफ़ेद खून (सन् १९१९, पृ० ९८), ले० जलाल अहमद 'शाद', प्र० लक्ष्मीनारायण प्रेस, बनारस, पात्र पु० १४, स्त्री ५, अक ३, दृश्य ६, ६, ५।
घटना-स्थल दरबार, बाजार, मकान, पहाड, जगल, कैप ग्राउड परेट, दीवानखाना, कैदखाना।

इसकी कथावस्तु किंगलियर के प्लाट के आधार पर निर्मित है। प्रकाशन नाटक के प्रारम्भ मे खुलासा-तमाशा इस प्रकार देता है—

बादशाह खाकान अपनी बड़ी लड़की माहपारा और मझली दिलआरा की चाटुकारिता से प्रसन्न होकर अपनी कुल सल्तनत, दौलत और हशमत दोनों लड़कियों को प्रदान करता है। इधर बादशाह का वजीर सादान अपने वेश्यापुत्र बैरम के कहने से औरस पुत्र परवेज से घृणा करने लगता है। तीसरे दृश्य में बादशाह खाकान बेटी माहपारा के दुर्व्यवहार से उसका घर छोड़कर चला आता है। चौथे दृश्य में तुर्रम नामक रईस के मुलाजिम गुलखैरु और उसकी प्रेयसी गुलदम का प्रेमालाप मिलता है। इसी दृश्य में तुर्रम के बेटे जलील और उसकी बीवी लैला की प्रेम-कहानी है। मुख्य कथानक के साथ उपर्युक्त दो और कहानियाँ चलती हैं। इस अंक के अन्त में खाकान का पत्र लेकर उसका सिपहसालार मझली लड़की दिलआरा के पास आता है और उससे माहपारा की बेवफाई की शिकायत करता है। कुछ दिन तक दिलआरा के पास रहकर उससे भी रुष्ट होकर खाकान अन्यत्र चला जाता है।

द्वितीय अंक में वजीर सादान का लड़का परवेज अपनी दशा पर खिन्न होकर जंगल में चला जाता है जहाँ खाकान भी अपने मुसाहिबों के साथ पहुँचता है और अपनी लड़कियों की भर्त्सना करता रहता है। सादान माहपारा को बुलाकर पिता की दुर्दशा दिखाता है पर वह अपने प्रेमी बैरम के प्रेम में पागल रहती है। एक दिन उसका पति यह दुराचार देखकर बैरम से लड़ता है और माहपारा को खंजर से घायल कर देता है। इसी के साथ लैला और गुलखैरु का रोमांस चलता है। भटक और तुर्रम गुलखैरु को थैले में बन्द समझकर पीटते हैं पर वह तो तरकीब से थैले से निकलकर उसमें बगलोल को बन्द कर देता है। माहपारा की आज्ञा से एक सिपाही सादान को बन्दी बनाकर माहपारा और दिलआरा के पास ले जाता है। माहपारा की आज्ञा से सादान को कत्ल करने को तलवार उठाता है। उसी समय दिलआरा का शौहर आकर सिपाही को तमंचे से मारता है। दिलआरा अपने शौहर को स्वयं अपने तमंचे का निशाना बनाती है और माहपारा सादान को मार डालती है।

तीसरे अंक में बैरम विजय की खुशी मनाता है और दिलआरा को बहकाकर माहपारा को बन्दी बनाने के लिए भेजता है। दूसरे दृश्य में खाकान कैदखाने में दिखाई पड़ता है और कई कातिल उसकी हत्या को वहाँ पहुँच जाते हैं। इसी समय माहपारा भूल से दिलआरा को अपनी सबसे छोटी बहिन जारा समझकर कत्ल कर देती है। दिलआरा की चीत्कार सुनकर बैरम आता है और जारा भाग जाती है। खाकान को सिपाही पकड़कर लाते हैं किन्तु जारा का शौहर जल्लादों को पिस्तौल मार कर खाकान को छुड़ा लेता है। खाकान भरे दरबार जारा को अपने हाथ से ताज पहनाता है, सादान वजीर की प्रशंसा करता है और शौहरे जारा से जारा का फिर हाथ मिलवाता है।

सुफेद डाकू (सन् १९२७, पृ० १०१), ले० : मोहम्मद इस्मायल फरोग; प्र० : तात्या नेमिनाथ पांगल सरस्वाङ्मय रत्नमाला, पूना; *पात्र* : पु० ७, स्त्री ४; *अंक* : ३, *दृश्य* : ८, ४, ७।
घटना-स्थल : महल, मिल, बागीचा, बंगला, आफिस, सेसन कोर्ट, रास्ता, वेटिंग रूम, फाँसीखाना, क़ब्र, दरवाजे का महल।

दुर्गादास एक सत्यवादी आदर्श व्यक्ति है। समरदास उसका पुत्र और कोकिला उसकी पुत्री है। उसके साले जमुनादास की एक मिल मालिक कुँवरदास से दुश्मनी है। जमुनादास की पुत्री सुशीला की मंगनी समर से हो गई है। एक दिन कुँवरदास का पुत्र अमरदास आता है और दुर्गादास पर पुश्तैनी कर्ज का दावा करता है। दुर्गादास अगर चाहता तो इन्कार कर सकता था परन्तु अपने आदर्श की रक्षा के लिए वह अपनी अचल सम्पत्ति अमरदास को सौंप देता है और पाँच हजार की कमी ,ो जाने पर अपने पुत्र समर को सेवक के रूप में सौंप देता है। जमुनादास अपने दुश्मन कुँवरदास के पास इतनी सम्पत्ति जाते हुए देखकर चिढ़ जाता है तथा सुशीला के लाख अनुरोध पर भी

सहायता नही करता। उधर कुँवरदास काल-सेन नामक बदमाश को रुपये देकर जमुनादास की मिल मे आग लगवा देता है तथा जमुनादास पर यह लाछन लगाता है कि इसने जीवन बीमे के लालच से खुद आग लगाई है और उसे गिरफ्तार करवा देता है। दुर्गादास और कोकिला के साथ सुशीला भी दर-दर की भिखारिन हो जाती है। अमरदास सुशीला को अपनी बहन बनाकर घर ले जाता है परन्तु कुंवरदास उसकी सम्पत्ति, समर की मुक्ति आदि का लालच दिखाकर उससे विवाह करना चाहता है। समर इसमे बाधा उपस्थित करता है। कुँवरदास समर को रास्ते से हटाने के लिए कालसेन को साथ लेकर साजिश करता है तथा वह खून एव चोरी के अपराध मे फाँसी की सजा पा जाता है। परन्तु जैसे ही उसे फाँसी पर लटकाने के लिए ले जाया जाता है, जेल से भागा हुआ जमुनादास वे प्रमाण उपस्थित कर देता है जिनसे कालसेन और कुँवरदास की कलई खुल जाती है। अन्त मे कुँवरदास आत्महत्या कर लेता है तथा कालसेन गिरफ्तार हो जाता है। समर और सुशीला तथा अमर और कोकिला का विवाह हो जाता है।

सुबह के घटे (सन् १९५६, पृ० १५१), ले० नरेश मेहता, प्र० नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र पु० २५, स्त्री ४, अक ५, दृश्य रहित।
घटना स्थल बन्दीगृह।

इस नाटक मे भारतीय राजनीति को पृष्ठभूमि बनाया गया है। नाटक का नायक एमन एक क्रान्तिकारी है जो राष्ट्रीय आन्दोलन मे बन्दी बनाया गया है और कल प्रात उसे फाँसी लगने वाली है। जीवन की अन्तिम वेला मे जीवन के विस्मृत प्राय सदर्भ पुन सूत्र रूप मे प्रस्तुत हो उस बन्दी के समक्ष मूर्त होते जाते हैं और वह उन्ही के आलोक मे अपने जीवन और कृत्य का मूल्याकन करता है। एमन को लगता है कि मेरे विद्रोह को फाँसी देकर विद्रोह की सज्ञा समाप्त हो जायेगी (क्या)?" इसी प्रकार एमन को लगता है कि गाधीवाद भी सम्पूर्ण सत्य नही है और न अराजकतावाद ही पूरा सत्य है। इन सारे मतवादो को जीवन तथा इतिहास के सामने शिष्य की भाति झुकना पड़ेगा क्योकि गुरु जीवन है और गांधी शिष्य है।" "जब सरकारी गोदामो, सेठो के कोठारो मे अन्न सड रहा हो तब भूखे मरकर जीवन काटना क्या अन्याय नहीं है? अन्याय तो स्थिति है।" अन्तत एमन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि "इडिया—दैट इज भारत! पीपुल—दैट इज कैपीटेलिस्ट "। नाटककार ने देश की राजनीति एव नेताओ को पात्र रूप मे ग्रहण कर नाटक की रचना की है।

सुभद्रा परिणय (सन् १९५२, पृ० ११३), ले० वीरेन्द्र कुमार गुप्त, प्र० आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली, पात्र पु० १३, स्त्री ६, अक ४, दृश्य ६, ६, ६, ७।
घटना-स्थल महल, पाडव शिविर, कुरुक्षेत्र।

इस नाटक की कथावस्तु पौराणिक आधार पर ही है किन्तु लेखक ने कल्पना को भी महत्त्व दिया है। कृष्ण सवदा पाडवों और विशेष रूप से अर्जुन की शक्ति बढाने मे तत्पर रहते हैं। किंतु कृष्ण के भाई बलराम का स्नेह दुर्योधन और कौरवो के प्रति होता है। कृष्ण सुभद्रा को अर्जुन के आतिथ्य का भार प्रथम ही सौंपकर उनके पारस्परिक प्रणय जागरण की पृष्ठभूमि बना देते हैं और फिर तीर्थाटन के रूप मे उसकी शक्ति को बढाते रहते हैं। बलराम सुभद्रा को दुर्योधन को सौंपने का निर्णय करते हैं और उसमे तर्क यह रखते हैं कि कौरव-पाडव एक हो जाए ताकि यादवो की सम्मिलित शक्ति से कौरव पाडव को इकट्ठा करके देश मे उत्पन्न अराजकता तथा अत्याचार का विरोध किया जाये। किंतु कृष्ण इस बात से सहमत नही हैं। वह जानते हैं कि दुर्योधन मे इतनी अधिक बुराइयाँ हैं कि बलराम की मशा पूरी न होगी और सुभद्रा की इच्छा के प्रतिकूल दुर्योधन को सौंपने से उसकी आत्मा मर जायेगी। इसके लिए षड्यन्त्र मे सुभद्रा को अर्जुन के साथ भगाकर बलराम को भी

अपनी राय मानने पर विवश करते हैं और सुभद्रा का परिणय अर्जुन के साथ सम्पन्न होता है। इन सभी बातों का प्रतिशोध ही महाभारत का युद्ध है जिसमें सत्य और न्याय की विजय होती है।

सुभद्राहरण नाटक (सन् १९१०, पृ० ७३), ले० : गोविन्द शास्त्री दुगवेकर; प्र० : हितचिंतक प्रेस, रामघाट, काशी; *पात्र :* पु० ८, स्त्री ५; *अंक :* ४; *दृश्य :* २, ५, ४, ७।
घटना-स्थल : साधारण कमरा, महल।

इस पौराणिक नाटक का प्रारम्भ नांदी-पाठ सूत्रधार और नटी के वार्तालाप से होता है। नटी बसन्त ऋतु का वर्णन गीत के माध्यम से करती है। प्रथम अंक में अर्जुन अपनी तीर्थ-यात्रा का कारण बताते हैं। सात्यकी सूचना देता है कि सुभद्रा देवी का विवाह आज ही निश्चित रहते हुए भी एकाएक वह अन्तःपुर से गुम हो गई है। अर्जुन इस संवाद से प्रगल्भ होकर सुभद्रा को ढूँढ़ने निकलते हैं। सुभद्रा को एक मायावी दैत्य मार डालना चाहता था तब तक अर्जुन वहाँ पहुँचकर सुभद्रा की रक्षा करते हैं। अनेक घटनाएँ घटती हैं और अन्त में सुभद्रा को साथ लेकर आते हैं। अर्जुन को सुभद्रा के साथ देखकर बलराम अर्जुन पर क्रुद्ध होता है कि 'अरे पापी, तू सुभद्रा को हरण करना चाहता है।' प्रहार करता है पर नारद रक्षा कर लेते हैं। अन्त में बलराम भी कृष्ण की अनुमति से अर्जुन-सुभद्रा परिणय का समर्थन करते हैं। भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त होता है।

यह नाटक भारतेन्दु नाटक मंडली काशी द्वारा अभिनीत हुआ। नाट्यकार का कथन है कि "अभी तक रंगमंच तथा खेलने के समय का विचार कर हिन्दी में एक भी नाटक नहीं लिखा गया है। यह त्रुटि दूर करने के लिए यह मेरा प्रथम और अल्प प्रयत्न है।"—लेखक मराठी भाषा-भाषी है पर उसने १४ वर्ष की छोटी अवस्था में यह नाटक लिखा है।

सुरसुन्दरी नाटक (वि० १९८२, पृ० २५६), ले० : फकीरचन्द जैन; प्र० : स्वयं प्रकाशन; *पात्र :* पु० २१, स्त्री १५; *अंक-रहित; दृश्य :* ६२।
घटना-स्थल : चम्पा नगरी, पाठशाला, राजदरबार, कचहरी, नगर का द्वार (प्रत्येक सीन का नया घटना-स्थल)।

यह विशालकाय नाटक शताधिक कविताओं और ९२ गानों से युक्त है। नाटक, चम्पा नगरी के महाराज रिपुमर्दन के दरबार में गायन से प्रारम्भ होता है। इसमें महाराज रिपुमर्दन की पुत्री सुरसुन्दरी की धर्म-निष्ठा दिखाई गई है। इसमें अनेक राजाओं, सेठों, रानियों, वेश्याओं, चोर-डाकुओं की कहानियाँ अव्यवस्थित रूप में जोड़ दी गई हैं। शृंखलाबद्ध घटनाओं के अभाव में कोई क्रमबद्ध कथावस्तु नहीं बन पाती।

नाटक का उद्देश्य पाठकों के हृदय में जैनधर्म के प्रति निष्ठा उत्पन्न करना है। पारसी थियेट्रिकल कम्पनी के नाटकों की शैली पर इसकी रचना की गई है।

सुल्ताना डाकू (सन् १९३२, पृ० ६३), ले० : बेणीराम त्रिपाठी, 'श्रीमाली'; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड संस बुकसेलर, वाराणसी; *पात्र :* पु० १५, स्त्री १०; *अंक :* ३; *दृश्य :* ५, ६, ५।
घटना-स्थल : जंगल, कारागार, न्यायालय।

यह एक शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक है। इसमें आधुनिक सफेदपोशों द्वारा गरीब नागरिकों का शोषण करके उनको किस प्रकार दबाया जाता है, यह दिखाया गया है। सुल्ताना डाकू से एक शिक्षा मिलती है। जब सुल्ताना के दिमाग में, इन्सान के रूप में घूमने वाले हैवानों, किसानों के पसीने और गरीबों के आँसू पर हँसने वाले क्रूर पूँजीपतियों की नाजायज हरकतें, आती है तो वह इन हरकतों का जवाब देने के लिए डाकू-प्रवृत्ति को अपनाता है। सुल्ताना ने लूटा है उन लोगों को जिनके पैसे गरीबों का खून चूसकर तिजोरी में बदबू पैदा कर रहे थे। उसने हमेशा मासूम, अनाथ तथा बेवा औरतों की खुले दिल से

सहायता की है। गरीबो के आंसू पोंछे हैं। अन्त मे स्वय अपने को पुलिस के हाथो आत्म-समर्पण कर और हँसते हुए फाँसी के फदे को चूम लेता है।

सुल्ताना डाकू (सन् १६५० पृ० ५८), ले० रामशरण 'आत्मानन्द', प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ११, स्त्री ४, अक ३, दृश्य १०, ६, ३।
घटना-स्थल : जगल, मकान, कारागार, न्यायालय।

उत्तर भारत के मशहूर डाकू सुल्ताना के कार्यों पर इस नाटक की रचना हुई है। सुल्ताना सेठ श्यामदास के यहा डाका डालता है जहाँ वह पूरे परिवार की हत्या कर चल देता है। अन्त मे फूलकुंवर वेश्या के प्रेम मे फस जाता है। यग साहब को इसका पता चल जाता है। वह फूलकुंवर को अपनी ओर मिला लेते हैं। एक दिन फूलकुंवर सुल्ताना को खूब शराब पिलाकर उसके सभी हथियार छिपा देती है। शराब के नशे मे डूबा ही था उसी समय यग साहब आकर उसे गिरफ्तार करते हैं और अन्त मे उसे फासी की सजा दी जाती है।

सुल्ताना डाकू (सन १६३५, पृ० ६६), ले० : न्यादरसिंह 'बेचैन', प्र० देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० २०, स्त्री २, अक ३ दृश्य : ६, ३, ६।
घटना-स्थल जगल, मकान, वनमार्ग, कारागार, न्यायालय।

सुल्ताना कजूस सेठो के द्वारा ब्याज के नाम पर लूटने वाले पैसे से बेघरबार बनाया जाता है। वह प्रतिशोध-भावना से डाकू बनता है। अपने कुछ स्वामिभक्त साथियों की सहायता से सेठ-महाजनो को लूटता है और पुलिस को मारता है। अन्त में वह साधु के कथनानुसार एक बालक को गोद लेने के परिणामस्वरूप पकडा जाता है और फाँसी चढता है। मिस्टर यग द्वारा उसको बन्दी बनाने की घटना का अच्छा प्रदर्शन है। अन्तिम इच्छा के रूप मे वह अपनी माता को कोसता है और कहता है कि यदि माँ चाहती तो वह डाकू न बनता और वह अपने भतीजे को यग साहब के सुपुर्द कर जाता है। नाटक अभिनीत है।

सुल्ताना डाकू (सन् १६४०, पृ० ८०), ले० बालभट्ट मालवीय, प्र० हिन्दी नाटक विद्यापीठ, आगरा, पात्र पु० १५, स्त्री ५, अक ३, दृश्य ६, ७ १०।
घटना-स्थल घर, जगल, वनमार्ग, कोतवाली, न्यायालय।

सुल्ताना डाकू अपने साथियों के साथ साहसिक अभियानों द्वारा पुलिस और रक्षक दल की आँख मे धूल डालकर दिन दहाडे सेठो को लूटता है और गरीब जनता को दान देकर उन्हे मिलाये रखता है।

सुल्ताना अपने पिता की हत्या होने और कानून की मदद से गाय भी नीलाम हो जाने के कारण प्रतिशोध के लिए डाकू बनने का निर्णय करता है। समाज के पीडित फतेहचद, पीताम्बरसिह और माधोसिंह भी सूदखोरों के शिकार होने पर उसके सहायक बनते हैं।

कुछ डाकू धन वैभव और स्त्रियो के हरण के भी प्यासे होते थे। निर्ममता से साहूकारो का वध और किशोरी जैसी सुन्दरियो पर कुदृष्टि रखते थे। किशोरी अति चालाकी से उस भयानक सुल्ताना से अपना सतीत्व कुएँ मे प्राणान्त करके बचाती है।

पुलिस कर्मचारी सुल्ताना के दान और वीरत्व से अभिभूत होते हैं। सभी को जीवन-रक्षा की पडी रहती है। यग साहब नीति से सुल्ताना को पकडने मे सफल होता है। वह डाकू की प्रेयसी फूलकुंवारी वेश्या को लालच देकर सुल्ताना को पकडता है। उसे फाँसी लगती है।

सुल्ताना अन्यायी सूदखोरों की क्रूरता का परिणाम डकैती बताता है और अपने बाप की हत्या के प्रतिशोध की पूर्ति के बाद सहर्ष फाँसी चढ़ जाता है।

सुलोचना सती (सन् १६४१, पृ० ८४), ले० बलदेवजी अग्रहरी, प्र० : समाचार

प्रेस, हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता; पात्र : पु० ७, स्त्री ४; अंक : ४; दृश्य : ३, २, ५, २।
घटना-स्थल : लंका नगरी।

इस पौराणिक नाटक में सती सुलोचना की कथा चित्रित है। विपत्तियों के बावजूद वह अपना धर्म नहीं छोड़ती। भाषा एवं शैली तुकबंदीपूर्ण है। सुलोचना रावण की वहू मेघनाद की पत्नी है। संवाद पद्य एवं गद्य-युक्त है।

सुशीला विधवा नाटक (सन् १९२२, पृ० ९०), ले० : रामेश्वर शर्मा; प्र० : मोती प्रेस, भागलपुर सिटी; पात्र : पु० ११, स्त्री ७; अंक : ६; दृश्य : ४, ४, १२, १, १७, ६।
घटना-स्थल : पुष्पवाड़ी, विवाह-मंडप, टिकटघर, गाड़ी, कचहरी, श्मशान।

इस नाटक का उद्देश्य स्त्रियों को शिक्षा देना है। सुशीला एक रूप-गुण-सम्पन्न युवती है। उसकी शादी एक पढ़े-लिखे सुयोग्य वर पं० मोहनचन्द्र से हो जाती है। मोहनचन्द्र नौकरी पेशे वाले व्यक्ति हैं। सुशीला के हठ करने पर वे उसे अपने साथ ले चलने के लिए राजी हो जाते हैं। चारों तरफ प्लेग का दौरा है। मोहनचन्द्र रास्ते में (आनन्दपुर स्टेशन पर) प्लेग की पकड़ में आकर देह-त्याग कर देते हैं। सुशीला पति के साथ सती होने के लिए तैयार है, किन्तु पुलिस उसे रोक रही है। कानून की दृष्टि से सती होना अवैध है। सुशीला सती नहीं हो पाती। वह अपने सभी वस्त्राभूषणों को एक-एक कर फेंक देती है। वह कहां जाये? क्या करे? इस उधेड़-बुन में पड़ी हुई है। अन्त में वह अपने बड़े भाई के यहां जाती है। उसकी भाभी एक कर्कशा स्त्री है। सुशीला को विधवा रूप में देखते ही उसे कुलक्षणा, रण्डी इत्यादि कहकर पति की इच्छा रहते हुए भी उसे घर से निकल जाने को बाध्य करती है। हतभाग्या सुशीला रोती-कलपती अपनी ससुराल में पहुंचती है। वहां भी उसे अपमान और निराशा ही मिलती है। वहां से भी उसकी सास और ननद उसे धक्का देकर निकाल देती है। आश्रयहीना सुशीला आत्महत्या करने की सोचती है, किंतु उसकी बुद्धि उसका साथ नहीं छोड़ती। अभी उसकी आशा का एक आधार उसका छोटा भाई शेष है। वह उनके यहां भी जाकर अपना भाग्य आजमा लेना चाहती है। सुशीला को अभी जीना है। यहां उसे शरण मिल जाती है। उसके भाई और भाभी दोनों ही उसे बड़ी श्रद्धा से देखते हैं। सुशीला अपने वैधव्य-व्रत का अनुष्ठान यहां शुरू कर देती है। नित्य गंगा-स्नान और नियमित आहार आदि के द्वारा वह भारतीय विधवाओं की परम्परा में अपना स्थान बना रही है। किन्तु अभी वह है बिलकुल युवती! उसका अभिशप्त यौवन कई मनचलों को बड़ी तेजी से आकर्षित करता है। रसिकबिहारी नामक एक युवक भी ऐसा ही है। बैरिस्टरी पास करने के कारण उसमें शालीनता होनी चाहिए थी, लेकिन वह एक दुराचारी व्यक्ति है। सुशीला को फांसने के लिए वह कई हथकण्डे अपनाता है। बुढ़िया कुटनी को १५० रु० देना स्वीकार करता है। कुटनी की दाल भी नहीं गल पाती। अन्त में रसिकबिहारी विधवा-विवाह का प्रचार कर सुशीला से शादी करने की योजना बनाता है। समाज में उसकी प्रतिष्ठा है ही, सभी लोग उसकी बातों पर राजी हो जाते हैं। यहां तक सुशीला का बड़ा भाई भी सुशीला की शादी रसिकबिहारी से करने के लिए राजी हो जाता है। लेकिन परिस्थितियों की चोट खाकर सुशीला का व्यक्तित्व फौलादी हो गया है। वह अपना विवाह स्पष्टतः अस्वीकृत कर देती है। पति की पादुकाओं की पूजा और अपना संयम-निर्वाह, यही उसके जीवन के लक्ष्य हैं। रसिकबिहारी सुशीला के साथ एकांत में उसका शील भंग करना चाहता है। सुशीला उसे पटककर उसकी छाती पर चढ़ बैठती है। वह नीच अन्त में उसे मां कहकर क्षमा मांगता है। सुशीला पर आकाश से फूलों की वर्षा होती है तथा नभ-वाणी सुनाई देती है—"सुशीला तुम धन्य हो, तुम्हारी परीक्षा हो चुकी।" सुशीला के व्यक्तित्व से सभी

प्रभावित होते हैं। उसकी प्रतिष्ठा बढ़ जाती है। लोगों की नजरों में वह देवी सी हो जाती है। उसकी ससुराल के लोग जो उसके भाग्य के साथ रूठे हुए थे, पुनः सुशीला की ओर मुड़ते हैं। उसके ससुर, उसकी सास, ननद सभी आकर उससे क्षमा माँगते हैं। उसके जेवरात की कीमत लौटा देते हैं। उसकी ननद भी विधवा हो गई है, यह भी सुशीला के ही साथ जीवन व्यतीत करने का फैसला करती है। सुशीला अपनी ननद को विधवा-धर्म का उपदेश देती है। इस तरह पुरातन भारतीय आदर्श की प्रतिष्ठा होती है और सुशीला सती की जय-ध्वनि के साथ नाटक समाप्त हो जाता है।

सुशीला (सन् १९१२, पृ० ३१), ले० *हरिहर प्रसाद जिजल, प्र० अग्रवाल प्रेस, गया (बिहार), अंक २, दृश्य ५, ८।* *घटना स्थल* मकान, चण्डूखाना, रास्ता, जंगल।

नाटक का प्रारम्भ सुशीला की व्यथापूर्ण कहानी से होता है। उसके पति की, जो अपने माता-पिता के साथ तीर्थयात्रा को गया था, किसी दुर्घटना के कारण मृत्यु हो जाती है। पति के निधन के असह्य दुःख के साथ ही उसे बचपन की वे दुःखद घटनाएँ याद आती हैं जब वह अपने माता-पिता से सदा के लिए विलग हो गई थी। पतिशोक की अतिशयता में वह आत्महत्या भी करना चाहती है, परन्तु महापाप के विचार मन में आते ही वह रुक जाती है। अपना घर उसे काट खाये जा रहा है। वह अब कहीं दासी बनकर भी अपनी जिन्दगी बिता लेना चाहती है।

दूसरे दृश्य में लाभचन्द नामक एक ऐसे व्यक्ति हैं जो अपने दुर्भाग्य पर रोते दीख पड़ते हैं। उनका लड़का आवारा है। बहुत चाहने के बाद भी वह सही रास्ते पर नहीं लाया जा रहा है। इसी की चिंता में वे रात-दिन डूबे दीखते हैं।

कहीं धूप है तो कहीं छाया। एक ओर जहाँ सुशीला अपने पतिशोक से पीड़ित है, लाभचन्द पुत्र के आवारापन से दुःखी हैं, वहीं समाज का एक ऐसा वर्ग भी है जो चण्डू, चरस, धूम्रपान और अफीम में मस्त है।

सुशीला 'चार दिना की चाँदनि रतिया फिर अँधियारी छाही' कहती हुई चौथे दृश्य में प्रवेश करती है। उसके इस बेहाल को देख एक देहाती उससे इसका कारण पूछता है। हाल जानकर वह सहानुभूति-पूर्ण होकर उसे अपने साथ चलने को कहता है। उसी समय उसकी भेंट मोहन नामक व्यक्ति से होती है जिसके अपार स्नेह के कारण सुशीला उसके यहाँ चली जाती है। पर मोहन की पत्नी को सुशीला का उसके घर में आना बुरा लगता है। वह उसे कुछ खरी-खोटी भी सुना देती है। सुशीला के हृदय पर सतभामा (मोहन की पत्नी) की बातें जले पर नमक छिड़कने का कार्य करती हैं। वह इस जिंदगी से ऊबती हुई सी जान पड़ती है। चाहती है कि संसार से कहीं किनारा ग्रहण कर ले।

सुशीला का पति बमबहादुर, जिसे समुद्र में डूबा हुआ घोषित किया गया था, जीवित आ जाता है। घर लौटकर अपनी पत्नी की खोज में वह भटकता वहाँ मोहन के घर पहुँचा जहाँ सुशीला थी। परन्तु सुशीला तो वहाँ से कहीं और ही चली गई थी।

बमबहादुर सुशीला की खोज में एक ऐसे जंगल में आता है जहाँ उसे योगिनी के वेश में सुशीला दीख पड़ती है। वह दौड़कर अपनी पत्नी के पास जाता है। सुशीला को प्रेमपाश में आबद्ध कर वह जहाज डूबने की कहानी सुनाता है जिससे वह बच निकला था। फिर दोनों भगवान् की महिमा का गान करते घर चले जाते हैं।

सुहाग बिन्दी (सन् १९४९ पृ० ९८), ले० *गोविन्दवल्लभ पंत, प्र० लखनऊ गंगा ग्रन्थागार, लखनऊ, पात्र पु० २, स्त्री २, अंक ५, दृश्य २, १, ३, ३, ५।* *घटना स्थल* गंगा तट, विजय के पिता का घर, जंगल।

यह एक सामाजिक नाटक है जिसकी नायिका विजया गंगा-स्नान के समय गुंडों

द्वारा अपहृत होती है। संयोग से वह एक दुर्घटना से ग्रस्त हो जाती है। चैतन्य होने पर वह अपनी स्थिति से व्याकुल होकर आत्महत्या करने को उद्यत होती है।

इस अपहृता नारी को समाज की निन्दा के भय से पिता व पति दोनों घर रखने को तैयार नहीं होते हैं। विवश होकर वह पिता के घर ही पहुँचती है जो उसे तिरस्कृत और अपमानित करके अंधेरी रात में जंगल में छोड़ देता है। वह रोती-कलपती पति के पास पहुँचती है जो उसे आश्रय नहीं देता। उसका पति रेवा नामक स्त्री से विवाह कर लेता है। रेवा ऊंचे चरित्र की उदार नारी है। वह विजया को अपनी शरण में रख लेती है। विजया को सर्प डस लेता है। विजया इस जीवन से व्याकुल होकर मरने को तैयार बैठी है, इसलिए सर्प-दंश को एक फांस कहकर टाल देती है। विजया का पति कुमार अन्त में रक्त की बिन्दी उसके मस्तक पर लगाकर उसकी शुद्धता और पवित्रता का स्वीकार करता है।

सुहाग दान (सन् १९६३, पृ० ७२), ले० : अनिरुद्ध यदुनन्दन मिश्र; प्र० : श्रीगंगा पुस्तक मन्दिर, पटना; पात्र : पु० ६, स्त्री १; अंक-रहित; दृश्य : १२।
घटना-स्थल : रामचन्द्रदेव का दरबार, किला।

इस ऐतिहासिक नाटक में वीरांगना स्त्रियों की सच्ची देशभक्ति दिखायी गई है।

देवगिरि के राजा रामचन्द्र देव की पालिता पुत्री का विवाह उसके ही महामंत्री कृष्णराव से हो जाता है क्योंकि वीरमती उससे प्रेम करती है। विवाह के समय ही अलाउद्दीन वहाँ पहुँचता है। पहले तो वह राजा रामचन्द्र देव का आतिथ्य स्वीकार करता है। फिर उसके महामंत्री को प्रलोभन देकर अपनी ओर मिलाता है। कृष्णराव प्रलोभन में आकर राजा रामचन्द्र देव के रहस्यों का पता अलाउद्दीन को देता है। समय आने पर वह अलाउद्दीन को देवगिरि पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित करता है। देश-द्रोह की इस भावना को अन्दर-ही-अन्दर वीरमती देखती रहती है। उसे अपने पति के क्रिया-कलाप अच्छे नहीं लगते क्योंकि उसके ही पिता को समाप्त करने का षड्यंत्र चल रहा है। पति और पिता के मोह में वह किसकी रक्षा करे, यह उसके समक्ष कठिन समस्या है। अन्त में जिस समय किले पर अलाउद्दीन धोखे से आक्रमण करने ही वाला था, उसी समय वीरमती अपने पति कृष्णराव की हत्या कर देती है और कहती है कि "अपने देश के लिए अपने सुहाग का दान करके एक देश-द्रोही को समाप्त करती हूँ, पति को नहीं।"

सुहागिन (सन् १९६७, पृ० ७०), ले० : जगदीश शर्मा; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० ७, स्त्री ३; अंक : ३।
घटना-स्थल : दीनानाथ का घर।

इस सामाजिक नाटक में पारिवारिक वैषम्य, कटुता और विधवा-समस्या को एक त्रासदी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

नाटक के पात्रों में सेठ दीनानाथ, उनके पुत्र रतनलाल, हीरा और पत्नी चंपा तथा पुत्री कृष्णा प्रमुख हैं। जय भतीजा है जिसकी सम्पत्ति पर उसके पिता की मृत्यु के बाद दीनानाथ का अधिकार है। उनके बड़े लड़के रतनलाल की शादी शकुन्तला से होती है। वह पति-परायणा सती नारी है। दुर्घटना में असमय ही रतनलाल मर जाता है और शकुन्तला विधवा हो जाती है।

चम्पा जहाँ अपने पुत्र-पुत्रियों से अतिशय प्रेम के कारण उनके दुर्गुणों को भी गुण समझती है, वहाँ वह शकुन्तला से घृणा करती है और उस कुलवधू को इतना पीड़ित करती है कि वह विष खाकर इस संसार से कूच कर जाती है।

उस घर में, जय ही केवल उसका हमदर्द था, किन्तु झूठा कलंक लगाकर उसे भी अलग कर दिया जाता है। कृष्णा जब किशोर के साथ भागती है तो उसका भाई हीरा ही उसका सामान पहुँचाता है और विमाता

जय उसे पकड़कर वापस लाता है।

सूखा सरोवर (सन् १९५९, पृ० १२४), ले० लक्ष्मीनारायण लाल, प्र० भारतीय ज्ञानपीठ काशी, पात्र पु० १०, स्त्री २, अंक ३, दृश्य रहित।
घटना-स्थल सूखे सरोवर का तट।

किसी नगरी में एक सरोवर है जो सबका आधार है। उस नगर के राजा को उसका छोटा भाई बलपूर्वक हराकर स्वयं राजा बन जाता है। उसकी पुत्री एक युवक को विवाह करने का वचन देती है। उसका प्रेमी उसे बचाने का वचन देता है, परन्तु पिता उसके इन स्वप्नों को तोड़ देता है। फलस्वरूप राजकुमारी उस सरोवर में डूबकर आत्महत्या कर लेती है। सरोवर का जल सूख जाता है। सारी नगरी प्यास के कारण तड़पने लगती है। राजा का बड़ा भाई सन्यासी बनकर उसी तालाब के किनारे सरोवर की आराधना करता है। राजकुमारी की आत्मा भी करुण आवाज सुनाती है। सरोवर पुनः अपने अंदर जल आने के लिए नगर के प्रतिनिधि का बलिदान मांगता है। नगर के लोग राजा की बलि देने के लिए तैयार होते हैं। राजा भाग जाता है। इसी बीच राजकुमारी का उन्मत्त प्रेमी उस सरोवर में अपनी बलि देता है। परन्तु जनता को उसकी बलि पर विश्वास नहीं होता क्योंकि वह नगर का प्रतिनिधि नहीं था। अतः राजा (सन्यासी) बलि देने के लिए तैयार होता है कि सरोवर में जल भर आता है। उस पागल प्रेमी का बलिदान सार्थक होता है। उसकी आत्मा राजकुमारी की आत्मा से मिल जाती है।

इस गीति नाट्य में सरोवर जीवन का प्रतीक है और जल जीवन सौन्दर्य का। सूखा सरोवर सौन्दर्यहीन जीवन की ओर संकेत करता है।

सूरदास 'नाटक' अर्थात् बिल्वमंगल (वि० २०११, पृ० १२६), ले० वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली', प्र० ठाकुर प्रसाद एंड सन्स, वाराणसी, पात्र पु० ८, स्त्री ११, अंक ३, दृश्य ११, ७, ४।
घटना-स्थल आगरा, कुरुक्षेत्र, मथुरा, वृन्दावन।

नाटक की कथा बिल्वमंगल एवं चिन्तामणि वेश्या के प्रणय-प्रसंगों पर आधारित है। बिल्वमंगल चिन्तामणि के रूप सौन्दर्य पर आकृष्ट हो घर-द्वार एवं अपनी विवाहिता की सुध भुला देता है। पिता की मृत्यु का समाचार चिन्तामणि को बिल्वमंगल की पत्नी से प्राप्त होता है। इसीसे वह बिल्वमंगल को बलात् उसके घर भेज देता है। बिल्वमंगल चिन्तामणि के विछोह को न सह सकने के कारण रात के अन्धेरे में शव के सहारे नदी पार कर सांप को रस्सी समझ चिन्तामणि के समीप पहुँचने में सफल होता है। चिन्तामणि की प्रताड़ना से उसका विवेक जागा, परन्तु कुरुक्षेत्र में सेठ चन्दनदास की रूपवती पत्नी पर आसक्त हो पश्चात्तापस्वरूप वह अपने नेत्र फोड़ लेता है। और अपना शेष-जीवन कृष्ण-संकीर्तन में अर्पित करता है।

सूर्यमुख (सन् १९६८, पृ० १२३), ले० लक्ष्मीनारायण लाल, प्र० नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ७।
घटना-स्थल दुर्ग, मैदान।

यह नाटक पौराणिक कथा पर आधारित है। नाटककार ने महाभारत के प्रसंग को कल्पना के द्वारा नवीन रंग देना चाहा है। परन्तु कथा मूल से एकदम भिन्न हो गई है। इसमें धर्म-अधर्म, आस्था-अनास्था, आधुनिकता-प्राचीनता के प्रश्नों को उठाया गया है।

इसमें कृष्ण का पुत्र प्रद्युम्न कृष्ण की अंतिम पत्नी वेनुरती से प्रेम करता है। कृष्ण की मृत्यु के पश्चात् द्वारिका नष्ट होती जाती है। प्रजा इसका कारण प्रद्युम्न और वेनुरती के अनुचित प्रेम को मानती है। द्वारिका में युद्ध होता है। अराजकता फैल जाती है। प्रद्युम्न अपने भय को (मुखौटे को)

त्यागकर द्वारिका की रक्षा करता है। रुक्मिणी अन्त में अपने पुत्र को क्षमा कर देती है। प्रद्युम्न और वेनुरती दोनों एक साथ द्वारिका के लिए लड़ते-लड़ते प्राण त्याग देते हैं।

सूर्योदय (वि० १९८१, पृ० १२७), ले०: ईश्वरी प्रसाद शर्मा; प्र०: रामलाल वर्मा, चीतपुर रोड, कलकत्ता; पात्र: पु० १७, स्त्री ६; अंक: ३; दृश्य: ११, ६, ५। घटना-स्थल: तारानगर, राजमार्ग।

इस सामाजिक नाटक में लोभ का दुष्परिणाम दिखाया गया है। सेठ परमेश्वर दास मरते समय अपनी वसीयतनामा अपने इकलौते पुत्र मदन के नाम करते हैं तथा उसका भार दीवान के ऊपर छोड़ते हैं। परन्तु दीवान जीवनराम दुष्ट और लोभी प्रकृति का होने के कारण सेठ की जायदाद हड़पने के लिए नाना प्रकार का षड्यन्त्र करता है। उसके हाथों से कई हत्याएँ होती हैं। अन्त में उसकी कलई खुलती है। वह भाग जाता है। उसकी स्त्री मनोरमा अपने को विधवा मानकर आत्म-हत्या करना चाहती है परन्तु मदन उसे बचा लेता है। मनोरमा एक अनाथ आश्रम की संचालिका हो जाती है। सबको सूत कातते दिखाया गया है।

सूर्योदय अर्थात् अछूतोद्धार-नाटक (सन् १९३५, पृ० २९), ले०: महमूदअली कमलेश; प्र०: सेठ बाबूलाल माहेश्वरी रईस, झाँसी; पात्र: पु० ८, स्त्री-रहित; अंक: २; दृश्य: ५, ४।

यह सामाजिक नाटक अछूतोद्धार की समस्या पर लिखा गया है। प्रथम अंक में धर्म और न्याय पात्र के रूप में उपस्थित हुए हैं। धर्म कहता है —"एक समय था जब हमारे देश में बड़े-बड़े ऋषि-मुनि हुआ करते थे। यह देश धर्म, ज्ञान और दर्शन के शिखर पर था पर आज मानव अपने को वर्गों में विभाजित कर ऊँच-नीच, छुआछूत का भाव फैलाकर अपने को पतन के मार्ग पर ले जा चुका है।" न्याय कहता है— "जब भगवान् ने सबको समान अधिकार दिए हैं तो ऊँच-नीच का भेदभाव कैसा! और देखने चलते हैं कि समाज कहाँ तक अपना उत्तरदायित्व समझने लगा है।" सेठ करोड़ीमल कट्टर सनातनी है और नन्हकूराम तथा पलटूराम कट्टर ज़मींदार। वे लोग छुआछूत का भेद फैलाकर अछूतों को हेय दृष्टि से देखते हैं। ज्ञानचन्द एक सनातनी पण्डित होते हुए भी उदार प्रकृति का है। अन्त में ये अछूतों के शुभचिन्तक हो उनके अधिकारों की रक्षा करते हैं। बहुत हाथ-पाँव मारने के बाद सेठ तथा ज़मींदार अछूतों की उचित माँगों को स्वीकार कर लेते हैं और ज्ञानचन्द के उदार विचारों की विजय होती है।

सृष्टि का अंत (सन् १९४६, पृ० ३२), ले०: देवेन्द्र बिसनपुरी; प्र०: बिसनपुरी प्रकाशन गृह, खजांची रोड, पटना; पात्र: पु० ४, स्त्री २; अंक-दृश्य-रहित। घटना-स्थल: रंगमंच।

नाटक में मनुष्य मात्र पर व्यंग्य है। उसके बढ़ते हुए वैज्ञानिक अनुसंधानों से प्रकृति और पृथ्वी भी खोखला उठी है। नाटक के आरम्भ में प्रकृति और पृथ्वी का वार्तालाप होता है। पृथ्वी प्रकृति से कहती है—"तुम ···मेरे ही समान···दुर्दिन की मारी···जिसके साथ मनुष्यों ने हैवान बनकर व्यवहार किया, जिसके शरीर को टैंकों, मशीन गनों और एटम बमों के सामने उछाला···।" प्रकृति उत्तर देती है—"हाँ। तुमसे भी अधिक मेरी क्षति हुई है। मेरे हरे-भरे संसार में, जहाँ कोयल की कूक सदा गूँजती थी, वहाँ उन हैवानों ने रोने के लिए मेरे अलावा एक कुत्ते को भी नहीं छोड़ा।"

इस प्रकार से प्रकृति और पृथ्वी दोनों मिलकर मानव-जीवन की भर्त्सना करती हैं। पृथ्वी प्रकृति को सांत्वना देती है और कहती है कि घबराओ नहीं, मेरे पुत्र अभी शांत हो रहे हैं। मुझे उनके प्रति बड़ा दुःख है क्योंकि वे अरबों की संख्या में से तीन या चार ही रह गये हैं।

इसके पश्चात् गोपाल कामरेड, याकी और टोम रगमच पर आते हैं। चारो सद्भाव से रहने का प्रयत्न करते हैं परन्तु एक-दूसरे का स्वार्थ उनको सर्वथा नष्ट कर देता है।

सृष्टि का आखिरी आदमी (सन् १९५४, 'नदी प्यासी थी' मे सगृहीन), ले० धर्मवीर भारती प्र० किताब महल, इलाहाबाद, पात्र पु० ५, स्त्री नहीं, अक-दृश्य-रहित।

प्रस्तुत गीतिनाट्य वतमान सभ्यता एव सस्कृति के सभावित प्रलय तथा नव सृष्टि के सकेत प्रस्तुत करता है। आधुनिक वैज्ञानिक सभ्यता का विकास क्रान्ति की नीव पर हुआ है, उसका अन्त भी क्रान्ति मे ही होगा। विध्वस चित्रण के पश्चात कवि भारत की प्राचीन कृषि सस्कृति को नव सस्कृति के रूप मे प्रस्तुत करता है। मुर्दे द्वारा आग की लपटो मे से गेहूँ की बालो को सुरक्षित बचाना इसी ओर सकेत करता है। गीतिनाट्य के सभी प्रसग प्रतीकात्मक हैं, जो श्रोताओ की सवेदना जाग्रत करके करुण वातावरण का निर्माण करते हैं।

सृष्टि की सांझ (सन् १९५४, 'सृष्टि की सांझ तथा अन्य रूपक' मे सगृहीत), ले० सिद्धनाथ कुमार, प्र० पुस्तक मन्दिर, बक्सर, पात्र पु० ४, स्त्री २, अक-दृश्य-रहित।

इस गीति नाट्य मे युद्ध-सम्बन्धी मूलभूत प्रश्नो का समाधान खोजने का प्रयास किया गया है। सम्पूर्ण गीति-नाट्य तृतीय विश्वयुद्ध की सभावित प्रलयकारी विभीषिका की पृष्ठभूमि पर आधारित है। सेनापति, महामात्य, अजय तथा रेखा आदि पात्र तृतीय महायुद्ध के अवशिष्ट मानव हैं। इनके वार्तालाप से युद्ध के औचित्य तथा अनौचित्य पर प्रकाश पडता है। सेनानायक तथा महामात्य मानवीय आदर्शों की रक्षा हेतु युद्ध को ही एकमात्र साधन मानते हैं। इसी समय एक अन्य पात्र अजय युद्ध के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करता हुआ स्वय को युद्ध के लिए दोषी मानता है क्योंकि उसका अहकार ही युद्ध का मूल कारण बना था। सेनानायक और महामात्य के अनुसार विगत रूढ़िग्रस्त सस्कृति के विध्वस पर ही नवीन सृष्टि का सजन होगा। अजय इस तर्क से विक्षुब्ध हो उठता है और कहता है कि विज्ञान का चरमोत्कर्ष स्वय अपने लिए ही भस्मासुर बन गया है, जिसके परिणामस्वरूप कला का अक्षय कोष सवदा के लिए नष्ट हो गया है। वैज्ञानिक उपलब्धियो को तो पुन प्राप्त किया जा सकता है किन्तु कला की यह क्षति कभी पूरी नहीं की जा सकती। महामात्य अजय को सात्वना देते हैं तथा नवसृष्टि की ओर प्रेरित करते हैं। इसके बाद सब, युद्ध मे एकमात्र बची नारी रेखा की खोज मे चल देते हैं। उधर रेखा भी निर्जन भीषण एकान्त मे विगत-स्मृतियो का अवलोकन करती हुई आत्मघात के लिए तत्पर होती है। तभी अजय आकर उसे रोक लेता है और नवसृष्टि की आशा बनाता है। यहाँ सेनापति और महामात्य का नर-पशुत्व जाग्रत होता है। वे रेखा पर अजय का आधिपत्य सहन नहीं करते। परिणामस्वरूप अजय को घायल कर देते हैं। अब सेनापति एव महामात्य मे रेखा के लिए सघर्ष होता है, जिसमे दोनो की मृत्यु हो जाती है। शेष रह जाते हैं—अजय और रेखा। युद्ध के भग्न-खडहर पर नवीन सृष्टि की आशा के साथ गीति-नाट्य समाप्त होता है।

सेवक (सन १९५४, पृ० ५८) ले० काली बोस, प्र० । अमृत बुक कम्पनी, नई दिल्ली, पात्र। पु० ११, स्त्री ६, अक ३, दृश्य : ३, ३, ३।
घटना-स्थल भारत मिल्स।

इस सामाजिक नाटक मे सेवको की मालिकों के प्रति सच्ची सहानुभूति दिखाई गई है। अपग छोटू बैसाखी के सहारे अपने को धकेलता हुआ 'भारत मिल्स' के मैनेजर के समक्ष नौकरी की आशा से उपस्थित होता है। मैनेजर उसकी दीन दशा से द्रवित होकर उसे इजीनियर रमण के निर्देशन मे मशीनो के निर्माण का प्रशिक्षण ग्रहण करने का

अवसर देते हैं। अपनी कुशाग्र बुद्धि एवं लगन के कारण वह शीघ्र ही अपने कार्य में प्रवीण हो जाता है। उसकी इस कार्य-कुशलता पर स्वयं इंजीनियर रमण को आश्चर्य होता है। अवकाश के क्षणों में छोटू अपनी बाल सहचरी श्यामा के असफल प्रणय-प्रसंगों का स्मरण कर दुःखी होता रहता है। छोटू के सद्व्यवहार के कारण सरोज उसे मन ही मन अपने पति रूप में वरण कर लेती है। परन्तु दैववशात् एक साथ उसे पता चला कि इंजीनियर रमण दुर्घटनावश एक मशीन में गिर गए हैं। बायलर की ओर बढ़ती मशीन के कारण रमण के जीवन की आशा ही समाप्त हो जाती है, परन्तु छोटू अपने प्राणों पर खेल कर उन्हें मशीन से निकालने में सफल हो जाता है। यद्यपि रमण बच जाते हैं परन्तु छोटू को कोई नहीं बचा पाता। कर्तव्य की बलि-वेदी पर छोटू अपने को बलिदान कर देता है। सरोज छोटू की धधकती चिता में कूदकर स्वयं भी उसके साथ ही प्रयाण कर लेती है।

सेनापति पुष्यमित्र (सन् १९५१, पृ० १०६); ले० : सीताराम चतुर्वेदी; प्र० : पुस्तक सदन, बनारस; पात्र : पु० ७, स्त्री ५; अंक : ३; दृश्य : ५, ६, ५।
घटना-स्थल : साकेत (अयोध्या)।

इस ऐतिहासिक नाटक में सेनापति पुष्यमित्र को एक त्यागी, कुशल तथा वीर सेनापति के रूप में चित्रित किया गया है।

मौर्यवंश का अन्तिम सम्राट् बृहद्रथ इतना दुर्बल है कि दक्षिण का शातकर्णि, कलिंग का खारवेल और तक्षशिला का यवन राजा देमेत्रिय तीनों उसके राज्य पर आक्रमण करके उसकी सीमा छीनते चले जा रहे हैं। अब अयोध्या में भी यवनों का राज्य हो गया है। वहां के राजा अन्तपाल की कन्या कल्याणी आकर बृहद्रथ से प्रार्थना करती है कि हमें सेना की आवश्यकता है, सेना से ही हमारी रक्षा हो सकती है परन्तु बृहद्रथ टस से मस नहीं होता। उसे साकेत की रक्षा का कोई ध्यान नहीं है। देवरात बौद्ध उसके राज्य का मंत्री है। बृहद्रथ उसकी सभी सलाहों का अनुसरण करता है। देवरात और सेनापति पुष्यमित्र में अनबन है। पुष्यमित्र कल्याणी की प्रार्थना पर अपने धर्म का निर्वाह करने के लिए साकेत की रक्षा का वचन देता है। इससे क्रुद्ध होकर राजा पुष्यमित्र को सेनापति पद से च्युत कर देता है। कल्याणी के विचार अपने विरुद्ध देखकर देवरात उसे भी दण्ड का भागी बनाना चाहता है, परन्तु पुष्यमित्र उसकी रक्षा कर लेता है।

बृहद्रथ अब पुष्यमित्र से और भी क्रुद्ध हो जाता है। सेनानायक धातुसेन बृहद्रथ को मृत्यु के घाट उतार देता है, परन्तु राजा की मृत्यु का दोष पुष्यमित्र अपने सिर पर ले लेता है। अमात्य देवरात पुष्यमित्र की मृत्यु के लिए अनेक कुचक्र रचता है, किन्तु असफल रहता है। सारा भेद खुलने पर राजमाता पुष्यमित्र के सिर पर राजमुकुट रखती है; परन्तु पुष्यमित्र सेनापति रहना ही स्वीकार करता है।

सेवापथ (सन् १९४०, पृ० १११), ले० : सेठ गोविन्ददास; प्र० : हिन्दी भवन, जालंधर और इलाहाबाद; पात्र : पु० २, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ४, ५, ३।
घटना-स्थल : श्रीनिवास के मकान का एक कमरा, सेवाकुटी का बाहरी मैदान।

भारत की सामयिक समस्याओं पर आधारित इस नाटक में गांधीवादी सिद्धांतों का प्रतिपादन हुआ है। सुशिक्षित दीनानाथ नौकरी आदि के विभिन्न प्रलोभनों को ठुकरा कर गांधीवादी आदर्शों के माध्यम से समाज-सेवा के कष्टप्रद मार्ग का अनुसरण करता है। समाज-सेवा के इस मार्ग का विरोध प्रारम्भ में उसके मित्रों के अतिरिक्त स्वयं उसकी पत्नी करती है। मार्क्सवादी सिद्धांतादर्शों के प्रबल समर्थक अपने मित्र शक्तिपाल के कौंसिल प्रवेशादि विचारों से सहमत न होते हुए भी उसका विरोधी नहीं होता। शक्तिपाल अपने मित्र श्रीनिवास के सहयोग से चुनाव में विजयी होता है परन्तु चुनाव में अपने सहयोगी-मित्रों द्वारा प्रयुक्त ओछे हथकण्डों के कारण उसकी आत्मा को

कष्ट होता है। अपने सिद्धांतादर्शों के कारण कर्त्तव्यपरायण होने हुए भी वह लोकप्रिय नही हो पाता। वह श्रीनिवास के दूसरे अनुरोध पर चुनाव मे ओछे हथकण्डे न अपनाने के कारण पराजित हो जाता है। परिस्थितियो से लाभ उठाकर श्रीनिवास दीनानाथ के प्रति न केवल मिथ्यारोपण ही करता है बल्कि शक्तिपाल के गृहस्थ जीवन को भी नष्ट कर देता है। प्रतिशोध की भावना से शक्तिपाल, श्रीनिवास तथा मागरेट दोनो को गोली मार कर समाप्त करना चाहता है परन्तु उसकी गोली से श्रीनिवास के रक्षार्थ आया दीनानाथ घायल हो जाता है। दीनानाथ के अनुरोध पर शक्तिपाल श्रीनिवास को क्षमा कर देता है।

सोडे की बोतल (*सन १९२१, पृ० ५५*), लेo आनन्द प्रसाद ठाकुर, प्र० ठाकुर प्रसाद एण्ड सस, बुकमेलर, वाराणसी, पात्र पु० ४, स्त्री २, अक १, दृश्य ५।
घटना स्थल बागभट्ट का मकान, उपवन।

यह एक शिक्षाप्रद हास्य नाटक है। स्त्री पुरुष को प्यार से वशीभूत समझकर हर ढग से दबाना चाहती है। बागभट्ट एक गरीब ब्राह्मण है। उसकी पत्नी चचला उसे धन-प्राप्ति के लिए हमेशा तग करती रहती है। कुलवती एक गुणवती कन्या है जो बागभट्ट को विपत्ति के समय धैर्य देती है। जब चचला को सब तरह का सुख मिलने लगता है तो भी बागभट्ट तथा नौकरो पर अधिकार जमाती है। इससे बागभट्ट आधुनिक स्त्रियों की सोडा की बोतल से उपमा देते हैं।

सोना रानी (सन् १९०१, पृ० ७२), लेo भगवानदीन लाला, प्र० दामोदर पुस्तक माला, कार्यालय, बस्ती, पात्र पु० १३, स्त्री ६, अक ६, दृश्य, २, १, ३, ३, ३, २।
घटना-स्थल अकबर की सीमा।

नाटक की मूलकथा का लक्ष्य सोना रानी की पातिव्रत-परीक्षा है। अकबर के समय में चौपराज नाम के गुजरात मे एक राजा हैं, सोना रानी उन्ही की धर्मपत्नी है। अकबर इसकी परीक्षा कराता है जिसमे रानी पूरी खरी उतरती है। नाटक स्त्री प्रधान है। स्त्रियो के ही चातुर्य तथा कौशल का वर्णन इसमें है।

सोहनी महीवाल (सन् १९६०, पजाब की प्रीत कहानियो मे सगृहीत), लेo हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, पात्र पु० ४, स्त्री २, अक २।
घटना-स्थल चनाब नदी।

पजाब की प्रसिद्ध लोककथा पर आधारित 'सोहनी महीवाल' एक सगीत रूपक है। एक राही के पूछने पर माँझी सोहनी महीवाल की करुण प्रेम-कहानी का वर्णन करता है कि किस प्रकार इज्जतबेग नामक शाहजादा एक कुम्हारिन सुन्दरी सोहनी के रूप-लावण्य पर मुग्ध हो जाता है।

परिणाम-स्वरूप वह महलो को छोडकर सोहनी के घर नौकर हो जाता है। यहा उनकी प्रेमवर्चा चारो ओर फैल जाती है जिसके कारण सोहनी का विवाह अन्यत्र कर दिया जाता है। प्रेम पथिक इन बाधाओ से डर कर प्रेम-मार्ग नही छोडते। महीवाल जोगी-वेश मे सोहनी की ससुराल पहुच जाता है। वहाँ प्रतिदिन निस्तब्ध रात्रि मे चनाब नदी के पार दोनो मिलने लगते हैं। एक दिन सोहनी की ननद को जब यह प्रेम-रहस्य ज्ञात होता है तो वह पक्के घडे के स्थान पर मिट्टी का एक कच्चा घडा रख देती है। एक बार पुन प्रेम की परीक्षा होती है और सोहनी तूफानी नदी मे अपने प्राण विसर्जन कर देती है। उधर महीवाल भी नदी मे कूदकर मिलन-पथ पर अग्रसर होता है।

सौभाग्य सुन्दरी (सन् १९२४, पृ० १००), लेo गोकुल प्रसाद कवि, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० ६, स्त्री ३, अक ३, दृश्य - १० ८, ५।
घटना-स्थल नदी का किनारा, मकान, जगल।

इस नाटक का कथानक प्रेमकथा है।

सौभाग्य बचपन में अपनी मां के साथ एक नदी में फेंक दिया जाता है। किसी तरह दोनों किनारे लगते है। मां बच्चे के हाथ में अंगूठी बांध कर स्वयं तपस्विनी बन जाती है। कालान्तर मे सौभाग्य माधो के साथ अपने माता-पिता की खोज मे निकलता है। वह एक मेले मे पागल हाथी से सुन्दरी की रक्षा करता है फिर दोनों का आपस में प्रेम हो जाता है। किन्तु दुर्मत सिंह की चाल से माधो भी सुन्दरी से प्रेम करके सौभाग्य को धोखा दे देता है। और जब सुन्दरी अपने प्रेम की निशानी में सौभाग्य की अंगूठी माधो को दे देती है तब उसे विश्वास होता है कि सुन्दरी माधो से प्रेम करती है। फिर सौभाग्य दुर्मत को पानी में फेंक देता है पर जब क्षमा सिंह के द्वारा वह पकड़ा जाता है तब अपने सभी कुकृत्यों को बताकर यह रहस्य खोलता है कि "वास्तव में सुन्दरी सौभाग्य से प्रेम करती थी। सौभाग्य एवं माधो में वरभाव पैदा करने के लिए मैंने ऐसा किया।" तब पुन: सौभाग्य सुन्दरी को वही स्थान देता है जो कि पहले प्रेम के समय दिया था।

सौवर्ण (सन् १९५४, 'सौवर्ण' में संगृहीत), ले० : सुमित्रानन्दन पन्त; प्र० : भारतीय ज्ञानपीठ, काशी; पात्र : पु० ४, स्त्री २; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : हिमाद्रि श्रेणियां, धरती।

मानवता के व्यापक विश्वधरातल पर आधृत सौवर्ण एक वैचारिक गीति-नाट्य है, जिसके अन्तर्गत स्वप्निल युग को प्रस्तुत किया गया है।

प्रारम्भ में हिमाद्रि श्रेणियों में एकत्रित देवी-देवता सृष्टि का अवलोकन करते है। संक्रान्ति काल में जड़ रूढ़ियुक्त मानव का आन्तरिक स्तर पर विकास हो रहा है। इसके पश्चात् स्वर्गदूत तथा स्वर्गदूती का धरा पर आगमन होता है। इन दोनों के वार्तालाप में भू पर ऊर्ध्व तथा समदिक् विकास के दर्शन होते हैं। स्वर्गदूत, साधना और तप की निष्क्रियता की ओर संकेत करता है। दूसरी ओर भौतिक विकास भी मानव को मृत्यु-भय से मुक्त नहीं कर पाता है। इसका कारण है, मानव का मध्यकालीन जड़-रूढ-संस्कारों से मुक्त न हो पाना। देशकाल में विभक्त मानव-सभ्यता क्रमश: ह्रासोन्मुख होती जा रही है। विश्व का एक बड़ा भाग दैन्य, निराशा, क्षुधा तथा विषमता से त्रस्त है जिसका समाधान बुद्धि-जीवी शब्द कौशल द्वारा खोजते हैं। तत्पश्चात् स्वर्गदूत तथा स्वर्गदूती भारत में पधारते है तथा भारत के सांस्कृतिक विकास के प्रति पूर्ण आश्वस्त होते हैं। भारत-दर्शन के पश्चात् स्वर्गदूत वापिस देवलोक चले जाते हैं। यहाँ हिम अंचल में भ्रमण करते हुए एक तापस को देखकर सोचते है कि क्या यह कोई काल्पनिक दृष्य है, अरविन्द है अथवा स्वयं कवि है? सम्भवत: तीनों ही कवि के मन में रहे हों। एकाकी जीवन की अतिशयता पर विचार करने के पश्चात् इस निर्णय पर पहुँचता है, कि आज मानव को देव, मनुज एवं पशु-गुणों से संयोजित महती समन्विति चाहिए। महत् समन्वय के रूप में सौवर्ण का आगमन होता है जिसमें लोकतत्व, देवत्व, अमरत्व का अद्भुत सामंजस्य दृष्टि-गोचर होता है। आत्मपरिचय में वह आध्यात्मिक व्याख्याएँ प्रस्तुत करता है तथा युग-युग से विच्छिन्न चेतना के प्रकाश को जीवन सूत्रों से गुम्फित करके धरा में समा जाता है।

स्नेह-बन्धन (सन् १९४४, पृ० ८६), ले० : *व्यथित हृदय;* प्र० : ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना; पात्र : पु० १०, स्त्री २; *अंक :* ३; *दृश्य :* ६, ४, ७।
घटना-स्थल : उदयपुर का विलास भवन, वाटिका, वन, दुर्ग द्वार, निर्जन वन, शिविर, अकबर का राजभवन।

उदयपुर की जनता जगमल के अशक्त हाथों से राजमुकुट लेकर प्रतापसिंह को राणा घोषित करती है। स्वाधीनता के रक्षार्थ राणा प्रताप प्रतिश्रुत है, परन्तु अहेरिया उत्सव के समय आखेट के प्रश्न पर शक्ति-सिंह की उद्दण्डता के कारण प्रताप उन्हें राज्य से निर्वासित कर देते है। शक्तिसिंह मुगल बादशाह अकबर से मिलकर मानसिंह के अपमान का प्रतिशोध लेने हल्दीघाटी के

मैदान में राणा प्रताप के विरुद्ध आ डटता है। प्रताप मुगल सेना का डटकर मुकाबला करता है। शत्रु पक्ष से घिरा जानकर चन्द्रावत सरदार राणा का मुकुट अपने सिर पर रख कर उनके प्राणों की रक्षा करता है। राणा युद्ध-क्षेत्र से सकुशल लौट पड़ते हैं परन्तु दो मुगल सैनिकों को राणा का पीछा करते देख शक्तिसिंह में भ्रातृ प्रेम की भावना बलवती हो जाती है। शक्तिसिंह मुगल सैनिकों को हराकर प्रताप से अपने अपराधों की क्षमा माँग लेते हैं।

स्नेह या स्वर्ग (सन् १९४६, पृ० ९६), ले० सेठ गोविन्ददास, प्र० किताब महल, इलाहाबाद, पात्र पु० ५, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ४, ८, ३।
घटना-स्थल स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र तट।

यह गीतिनाट्य प्रसिद्ध यूनानी महाकवि होमर के महाकाव्य 'इलियड' में वर्णित एक कथा को आधार बनाकर भारतीय परिवेश में प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम अंक में स्नेहलता के प्रणय के आकांक्षी देव पुरुष जयन्त तथा मानव अजय दोनों युवक क्रमश शुचिता तथा प्रभाकर को प्रणय-दूत बनाकर स्नेहलता के पास भेजते हैं। स्नेहलता प्रेम में इस प्रकार की मध्यस्थता के विरुद्ध है, जिसके लिए वह अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त करती है। द्वितीय अंक में अजय स्नेह को उसकी बाल स्मृतियों का स्मरण दिलाकर उसे देवताओं की नित नूतन प्रणय वृत्ति के प्रति सावधान करता है और बताता है कि देवताओं के हृदय में प्रेम नहीं बल्कि लालसा विद्यमान रहती है। इसीलिए वह स्नेहलता के पिता अक्षय से उसको अपने घर ले जाने का अनुरोध करता है जिससे वह निष्पक्ष निर्णय ले सके। स्नेहलता अजय के घर चली जाती है। जयन्त को जब यह पता चलता है तो वह अजय को द्वन्द्व के लिए ललकारता है, जिसे अजय स्वीकार कर लेता है। तृतीय अंक के प्रारम्भ में जयन्त तथा अजय के द्वन्द्व की चर्चा सामान्य जन भी करते हैं। शुचिता द्वन्द्व का वर्णन अपनी मां शुचि तथा पिता महेन्द्र से करती हुई उन्हें द्वन्द्व-स्थल पर ले आती है। यहां महेन्द्र आकर द्वन्द्व रुकवाता है तथा स्नेहलता की सम्मति ही सर्वोपरि मान उससे जयन्त एवं अजय में से किसी एक को चुनने का आग्रह करता है। उपसंहार में स्नेह के वशीभूत स्नेहलता अजय को वरमाला पहना देती है।

स्पर्धा (सन् १९५६, पृ० ७१), ले० मस्तराम कपूर, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर हीरा बाग बम्बई, पात्र पु० २, स्त्री नहीं, अंक ३, दृश्य २, ३, ३।
घटना-स्थल पाठशाला।

इस बालकोपयोगी नाटक की घटनाएं बालकों के प्रत्यक्ष जीवन से ली गई हैं। एक पाठशाला में दो लड़के हैं। दोनों में प्रथम आने के लिए स्पर्धा रहती है किंतु उस स्पर्धा में ईर्ष्या या शत्रुता की गंध नहीं है। उसी कक्षा में दो निकम्मे लड़के भी हैं, जो उन दोनों को लड़ाकर वर्ग में अपना रोब जमाना चाहते हैं। वे दोनों को एक दूसरे के खिलाफ झूठी बातें बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। जो स्पर्धा अब तक प्रेम के घोड़े पर सवार थी, अब वह शत्रुता के घोड़े पर दौड़ने लगती है। लेकिन एक दिन अचानक साजिश बाहर आ जाती है। प्रेम फिर लौट आता है और प्रेम की पावन धारा इतने वेग से बहती है कि उसमें स्पर्धा तिनके की तरह बह जाती है।

स्वतन्त्रता-संग्राम (सन १९५८, पृ० २७६), ले० कुंवर वीरेन्द्र सिंह, प्र० साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० १८, स्त्री ६, अंक ८, दृश्य ५, ६, ८, १०।
घटना स्थल धारानगर।

यह ऐतिहासिक नाटक स्वतन्त्रता संग्राम के विषय में लिखा गया है। देश अंग्रेज शासकों की दासता को प्राप्त होता है। देश को इस संकटपूर्ण दशा से मुक्ति प्रदान करने के लिए देश के अनुपम विद्वान् सन्यासी महात्मा जी प्रथम अपने आश्रम में स्वराज्यान्दोलन का बीजारोपण करते

हैं। धारा नगर के नरेश गन्धर्वसेन के पुत्र विक्रमादित्य अपने ज्येष्ठ भ्राता भर्तृहरि, रानी पिंगला के षड्यन्त्र के कारण पृथक् होकर स्वातंत्र्य संग्राम का सफल सेनानी के रूप में संचालन करते हुए देश को स्वराज्य सुख की प्राप्ति कराने में सफल हो जाते हैं। रानी पिंगला के दुराग्रह एवं दुश्चरित्रता-पूर्ण षड्यन्त्र का आचार्य-प्रदत्त अमरफल भण्डाफोड़ करता है, जिसके फलस्वरूप राजा भर्तृहरि धारा का राज्य विक्रमादित्य के लिए छोड़कर संन्यास ग्रहण कर लेते हैं। विक्रमादित्य संगठन द्वारा समस्त भारत को एकता के सूत्र में बाँधकर राष्ट्रपति के रूप में राजसूय तथा अश्वमेध यज्ञ करते हैं। उनकी उन्नति को देखकर ईर्ष्यावश कतिपय विदेशी शक्तियाँ सम्मिलित रूप से उनके विरुद्ध युद्ध घोषित करती हैं। विद्रोही बन्धुओं के देशद्रोह के कारण भारत अपनी जीती बाजी को हार जाता है। उसके उद्धारकर्त्ता एक मात्र देश-प्राण नेता विक्रमादित्य छल-छद्म द्वारा मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

स्वतन्त्र भारत (सन् १९४७, पृ० १६५), ले० : दशरथ ओझा, प्र० : आदर्श साहित्य मंदिर, गाजियाबाद ; पात्र : पु० ११, स्त्री ४; अंक : ५ ; दृश्य : २, ३, ३, ?, २। घटना-स्थल : पाटलिपुत्र का राजप्रासाद, तक्षशिला विश्वविद्यालय, स्यालकोट का दुर्ग, उज्जैन का विस्तृत उद्यान, चांडालिन की झोंपड़ी, मथुरा का यमुना-तट, उज्जैन का राजप्रासाद, काश्मीर की उपत्यका।

इस ऐतिहासिक नाटक में हूणों के आक्रमण काल की घटनाओं का उल्लेख है। जिस समय मगध-सम्राट् बालादित्य बौद्ध धर्म की अहिंसा और ललित कलाओं के विकास और विस्तार में संलग्न है उस समय गांधार और तक्षशिला पर हूणों की वर्बरता का साम्राज्य फैल रहा है। शत्रु के साथ अहिंसा के वर्ताव का विरोध करने वाले सेनापति गोपराज को बालादित्य मगध से निकाल देता है। बालादित्य की भगिनी कमला हूणों की वर्बरता की कहानियाँ सुनकर देश को युद्ध के लिए जागृत करती है। जनता के नेता यशोधर्मन और वैदिक विद्वान् वासुरत जनता में घूम-घूम कर युद्ध के लिए धन एकत्र कर रहे हैं। हूणराज तूरमाण पश्चिमी भारत को रौंदता, अग्नि में भस्मसात् करता मालवा पहुंचता है और उत्तर भारत के खंडराज्य पारस्परिक कलह में तल्लीन हैं। बालादित्य और वैदिक विद्वान् वासुरत में हिंसा-अहिंसा के विषय में विवाद छिड़ता है। अन्त में बालादित्य हूणों से युद्ध के लिए प्रस्तुत हो जाते हैं किन्तु उज्जैन में हूणों की विजय होती है। वहाँ से तूरमाण और मिहिरकुल मथुरा पहुंचते हैं। गोपराज, अवन्तिका, कमला, यशोधर्मन, वासुरत के उद्योग से हूण पराजित किये जाते हैं। मिहिरकुल बन्दी बनता है किन्तु बालादित्य उसे क्षमा कर मुक्त कर देता है। मिहिरकुल पुनः कश्मीर पर आक्रमण कर उसे जीत लेता है। वह पुनः सम्पूर्ण भारत का सम्राट् बनना चाहता है। अब बालादित्य अत्यन्त क्रुद्ध होता है और भिक्षुवर्ग उसके साथ अस्त्र-शस्त्र संभाल कर बर्बर हूणों का सामना करके उन्हें पराजित करता है। बालादित्य मिहिरकुल को पहली बार क्षमा करने की भूल स्वीकार करता है। मिहिरकुल की भगिनी सरला भारतीय संस्कृति में रम जाती है और हूण क्रमशः भारतीय बन जाते हैं। इस नाटक का अभिनय १९४८ में कानपुर में हुआ।

स्वप्न और सत्य (सन् १९५२, 'सौवर्ण' में संगृहीत), ले० : सुमित्रानन्दन पंत; प्र० : भारतीय ज्ञानपीठ काशी; पात्र : स्त्री ५ तथा कतिपय स्वर; अंक-रहित; दृश्य : ३।

अरविन्द के समन्वयवाद पर आधारित इस गीतिनाट्य में जीवन के आदर्श और यथार्थ दोनों पक्षों की संघर्षपूर्ण स्थिति प्रस्तुत की गयी है।

प्रस्तुत गीतिनाट्य का प्रारम्भ प्रकृति-सम्बन्धी एक गीत से होता है। विमुग्ध कलाकार पतझड़ में जीवन की जर्जरता, रूढ़ियों, जीर्ण-शीर्ण मान्यताओं का स्पष्ट दर्शन करता है। इसी समय कलाकार के दो मित्र

आकर कला सम्बन्धी वाद-विवाद छेड़ देते हैं। एक मित्र कलाकार के अतिशय प्रकृति-प्रेम को सामाजिक दृष्टि से अभिशप्त बनाते हुए जीवन के परिप्रेक्ष्य में कला का महत्त्व आंकता है। दूसरा मित्र कला का उपयोग मन के आन्तरिक वैषम्य में साम्य स्थापित करने में मानता है।

दूसरे दृश्य में कलाकार स्वप्नावस्था में अंतर्जगत् के सूक्ष्म प्रसारों में विचरण करता है, जिसे स्वप्न कहते हैं। यहाँ उसे अनुभव होता है कि विश्व का विकास दुहरी गति से हो रहा है।

निम्न धरातल का आरोहण एवं ऊर्ध्व धरातल का अवरोहण दोनों का समन्वय ही मानव के लिए कल्याणकारी है। तभी अर्द्धजागरितावस्था में कलाकार का साक्षात्कार छायारूप में आत्माओं से होता है एवं उनके दर्शनों के अनुरूप वह स्वर्ग के अनेक स्तरों का अवलोकन करता है। जहाँ उपनिषद का त्यागमय भोग, बुद्ध का निर्वाण, इस्लाम ईसाई की जीवन-कामना तथा शंकर का जगन्मिथ्या—सभी मतवाद सम्प्रदायों की सीमित परिधि में त्रिशंकु से लटके हुए हैं। इन सम्प्रदायों ने जीवन के उच्चादर्शों को जड़ नियमों में आबद्ध कर दिया है। कलाकार कहता है,—'स्वर्ग रहता कभी चिरन्तन'—क्योंकि मात्र स्वर्ग वास्तविक जीवन की उद्भूत कल्पना है। इसीलिए कलाकार सभी मतों के समन्वय में परिपूर्ण जीवन के दर्शन करता है।

तृतीय दृश्य में कलाकार का दुःस्वप्न-ग्रस्त अन्तःअवचेतन के अंधकार-पूर्ण लोकों में भटकना है। परस्पर द्वेष, स्वार्थ से ग्रस्त-कलाकार के जीवन में आशा की एक रेखा उत्पन्न होती है, जिसमें उसकी स्वप्न चेतना व्यापक जीवन-प्रसार में विचरण करती है और उसे विश्वास हो जाता है कि सिन्धु क्षितिज पर नवजीवन का अरुणोदय होगा।

स्वप्न पूर्ण (सन् १९६३, पृ० ६३), ले० सुरेन्द्र मोहन घुन्ना, प्र० राज पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पात्र पु० ७, स्त्री २, अंक ५।
घटना-स्थल कार्यालय, सेठ का घर।

यह सामाजिक नाटक बेकारी की समस्या पर आधारित है। रामकरण एक अखबार विक्रेता है। उसका लड़का रमेश नौकरी की तलाश में है। एक कार्यालय में क्लर्क की जगह खाली है। नियुक्ति-कर्त्ता तथा अधिकारी मि० शर्मा हैं जो २०० रु० घूस लेकर नियुक्ति कर रहे हैं। सेठ करोड़पति है। उनका लड़का सुरेश भी नौकरी चाहता है। सेठ मि० शर्मा से अपने लड़के की नियुक्ति के लिए सिफारिश करते हैं। मि० शर्मा आवेदन पत्र की तिथि समाप्त हो जाने पर भी सुरेश को नियुक्ति के लिए आश्वासन देते हैं किन्तु इंटरव्यू के समय उन्हें सुरेश के स्थान पर रमेश की याद आ जाती है और गरीब रमेश की नियुक्ति हो जाती है। तब सेठ का फोन आता है और वस्तुस्थिति का पता चलता है। तब मि० शर्मा कहते हैं कि सुरेश को काम मिल जाएगा। एकाध सप्ताह में किसी को दोषारोपण कर निष्कासित कर दूंगा और उसके स्थान पर सुरेश नियुक्त हो जाएगा। नौकरी की समस्या और उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार का खुला पर्दाफाश प्रस्तुत नाटक में है।

स्वप्न भंग (सन् १९४०, पृ० १२८), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, पात्र पु० ५, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ६, ७, ७।
घटना-स्थल उज्जैन, चम्बल।

'रक्षा-बन्धन' के समान प्रस्तुत नाटक का विषय भी दोनों सम्प्रदायों में मेल कराना है। इसका नायक औरंगजेब का बड़ा भाई, मानवता, सहिष्णुता तथा उदारता की प्रतिमूर्ति दारा है जो हिन्दू-मुस्लिम एकता द्वारा ही मुगल-साम्राज्य को सुदृढ़ बनाए रखने में विश्वास करता है। दारा के जीवन के उत्तरकाल की घटनाओं को आधार बनाकर औरंगजेब के साथ संघर्ष का चित्र प्रस्तुत किया गया है। शाहजहाँ को ज्येष्ठ पुत्र-पुत्री दारा और जहाँनारा से अधिक स्नेह करते देख औरंगजेब तथा रोशनारा ईर्ष्या से दग्ध होकर उन दोनों को अपदस्थ करने का अवसर देखते रहते हैं

और शाहजहां को वृद्ध, रोगी तथा शिथिल पाते ही अपना शक्ति-विस्तार करने लगते हैं। रोशनारा अपने रूप-लावण्य तथा मधु-भीगी बातों से प्रभावित कर, दारा को काफिर तथा इस्लाम का शत्रु कहकर, धर्म तथा कुरान के नाम पर मुसलमान सरदारों तथा सैनिकों को अपने पक्ष में कर लेती है। उधर राजा जसवंतसिंह की असावधानी राजपूतों की प्रतिशोध, की भावना और दारा तथा शाहजहां की स्नेह-भावना के कारण दारा की शक्ति क्षीण होती जाती है और वह उज्जैन तथा चम्बल के युद्ध में पराजित होकर जामनगर के हिन्दू राजा के यहां शरण लेता है। वहां उसे दक्षिण की मुसलमानी रियासतें, शिवाजी और जसवंतसिंह पुनः सेना को सुव्यवस्थित कर औरंगजेब के विरुद्ध युद्ध करने का निमंत्रण देते हैं। दारा जसवंतसिंह पर विश्वास कर दक्षिण न जाकर उन्हीं का निमंत्रण स्वीकार कर लेता है और ऐसी राजनीतिक भूल करता है जिसके कारण वह सदा के लिए दर-दर का भिखारी हो जाता है। औरङ्गजेब तथा रोशनारा की कूटनीति से जसवंतसिंह ठीक मौके पर विश्वासघात करता है और दारा को पत्नी सहित जंगलों में भूखा-प्यासा रहना पड़ता है। अन्त में वे मलिक जीवन नामक जागीरदार के यहां, जिसकी उन्होंने एक बार प्राण-रक्षा की थी, शरण लेते हैं परन्तु वहां भी उन्हें विश्वासघात ही मिलता है। मलिक जीवन उन्हें और उनके पुत्र सिकोह को औरंगजेब को सौंप देता है। दारा को दिल्ली लाकर पहले मैली-कुचैली हथिनी पर खुले हौदे में फटे चीथड़े पहनाकर घुमाया जाता है और अपमानित किया जाता है। तदुपरान्त न्याय का खेल रच कर दारा को धर्म का दुश्मन बताकर मृत्यु-दंड दिया जाता है।

स्वराज्य [सचित्र नाटक] (सन् १६२८, पृ० ११४), ले० : ब्रजवासीलाल; प्र० : दयालबाग, आगरा; पात्र : पु० २८, स्त्री ६; अंक : ४; दृश्य : ३, ५, ३, ३।
घटना-स्थल : बाजार, हरिद्वार, बनारस।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। नगरकोट के प्रान्त को यूनानियों ने आक्रमण करके जीत लिया है। वहां का राजा उग्रसेन राज्य छोड़कर ब्रह्मविद्या सीखने के उद्देश्य से हरिद्वार पहुँचता है। हरिद्वार में साधना करके उग्रसेन ब्रह्मविद्या की प्राप्ति के लिए बनारस पहुँचता है। वरणा और असी के मध्य स्थित वाराणसी का आध्यात्मपरक अर्थ उग्रसेन को समझाया जाता है और उसे आत्महत्या से बचा लिया जाता है। तीसरे अंक में नगरकोट की जनता में जागृति आ जाती है और महिला-समाज बहुत बड़ा जलसा मनाता है जिसमें राजकुमारी का प्रभावशाली भाषण होता है। वह कहती है, "यह असंभव है कि कोई जाति सदा के लिए आत्म-निर्णय के अधिकार से वंचित रहे।" साथ ही फूट-फूटकर रोने लगती है। उसी समय एक संन्यासी चबूतरे की तरफ बढ़ता है और सभासदों को उद्‌बुद्ध करते हुए कहता है—"मेरा संकल्प पूरा हो गया है और मैं आप लोगों की सेवा के लिए हाजिर हूं।" राजकुमारी अपने पिता को पहचान कर उनके गले लिपट जाती है।

चौथे अंक में शाह यूनान के दरबार में उग्रसेन तथा राजकुमारी आमंत्रित हैं। लाहौर के गवर्नर ने शाह यूनान को नगरकोट निवासियों की उत्कृष्ट अभिलाषा से परिचित करा दिया है। राजकुमारी बीस वर्ष तक (पिता के संन्यास की अवधि में) एडाल्फस नामक चित्रकार के घर पली। एडाल्फस के कागजों में एक सन्यासी उग्रसेन की चिट्ठी निकलती है जिसमे राजकुमारी की परवरिश का जिक्र है। अब शाह यूनान को विश्वास हो जाता है कि नगरकोट का राजा यही उग्रसेन है। शाह यूनान लाहौर गवर्नर के द्वारा नगरकोट को स्वतंत्र करने की घोषणा करते हैं।

स्वर्ग-किन्नरी (सन् १६५३, पृ० ६८), ले० : रामेश्वरसिंह 'नटवर'; प्र० : श्रीकालिकिंकर चट्टोपाध्याय, जयश्री प्रेस, गया; पात्र : पु० ८, स्त्री ५; अंक : ४; दृश्य : ७, ६, ५, ४।

घटना-स्थल इन्द्रपुरी, नेपाल, गगातट।

यह एक धार्मिक नाटक है। महर्षि दुर्वासा इन्द्रपुरी की विख्यात नर्तकी उर्वशी पर मोहित होते हैं और फिर किसी कारण से क्रोधित होकर शाप दे देते हैं कि 'तू रात मे किन्नरी तथा दिन मे तुरगिनी बनकर भूतल पर रहना।' उर्वशी भूतल पर दु:खमय जीवन व्यतीत करती है। नेपालनरेश दगीराय उसकी सुन्दरता देखकर मोहित हो जाते हैं। उर्वशी भी दगीराय की वीरता से प्रसन्न होकर अपना भेद बताकर राजा के साथ रहने लगती है। मथुरा के राजा श्रीकृष्ण तुरगिनी की चाल ढाल और सुन्दरता देखकर दगीराय के पास घोड़ी लौटाने को संदेश भेजते हैं। मथुरा का दूत दगीराय को धोखा देकर युद्ध से विमुख करवा लेता है। शोकाकुल दगीराय गगा मे जाकर डूबना चाहते हैं। सुभद्रा कृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी है। उसके द्वारा दगीराय को युद्ध म सहायता करने का वचन मिलता है। अन्त मे दगीराय तथा युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन सभी श्रीकृष्ण के साथ युद्ध करते हैं। जब श्रीकृष्ण की तरफ से हनुमान जी त्रिशूल, चक्र और वज्र लिये हुए भीम के आधे वज्र के समान शरीर से युद्ध करते हैं तो साढे तीन वज्र के इकट्ठा होते ही किन्नरी स्वर्ग को चली जाती है।

स्वर्ग की झलक (सन १९३८, पृ० ९६), ले० उपेन्द्रनाथ अश्क, प्र० मोतीलाल बनारसीदास, लाहौर, पात्र पु० ११, स्त्री ७, अक ४, दृश्य १ १, १, ४।
घटना स्थल अशोक का घर, रघुनन्दन का घर।

इस सामाजिक नाटक मे उच्च शिक्षा-प्राप्त युवतियो के विवाह करने के सिलसिले मे दो तरह की प्रवृत्तियो का उद्घाटन किया गया है। प्रथम तो यह है कि विवाह या तो अर्थ को दृष्टि मे रखकर होता है या फिर रोमाण्टिक स्वरूप ही उसका रहता है। रोमाण्टिक धारा में बाह्य प्रदर्शन और साज-सज्जा ही प्रमुख रहती है जिसके प्रति इस नाटक मे गहरा व्यग्य किया गया है। इस तरह की युवतियाँ न तो अपने को सँवार पाती हैं और न ही अपने भविष्य मे होने वाले साथी का ही सही चयन कर पाती हैं। रघुनन्दन के सभी साथियो की पत्नियाँ या तो बी० ए० पास हैं या एम० ए०, अतएव वह भी एक उच्च शिक्षा-प्राप्त पत्नी की आशा करता है। किन्तु रघुनन्दन जब अशोक के घर पहुँचता है तो उसकी पढी लिखी बीवी से साक्षात्कार होता है। इसके अनतर वह राजेन्द्र के घर पहुँचता है जहाँ उसकी पढी-लिखी शिक्षित लडकियो के प्रति धारणा पर और भी चोट लगती है। रघुनन्दन का अतिम सपर्क पढी-लिखी युवतियो से, 'कन्सर्ट-पार्टी' मे होता है, जहाँ पर उसका मन मे पढी-लिखी युवतियो के प्रति विचारधारा बदल जाती है। अन्त वह कम पढी-लिखी लडकी रक्षा से विवाह करता है। इस नाटक में मध्यम वर्ग मे फँसी हुई शिक्षित युवतियों की माग पर व्यग्य किया गया है तथा साथ ही उनकी आशा करने वाले मध्यम वर्गीय व्यक्ति के दबे व्यक्तित्व का भी पर्दाफाश है। पढी-लिखी बीवी से एक समझदार पति बहस मोल लेने की हिम्मत नही करता है, उससे दूरदर्शिता से काम लेने के लिए चुप ही बना रहता है, जैसा कि राजेन्द्र के चरित्र मे दिखाया गया है। कुल मिलाकर यह नाटक अपने समय के मध्यम वर्ग के परिवारो के जीवन पर आधारित व्यग्य है।

स्वर्गभूमि यात्रा (सन १९५१, पृ० १५०), ले० ' रागेय राघव, प्र० राजेन्द्र प्रकाशन मन्दिर, आगरा, पात्र पु० १६, स्त्री ४, अक ७, दृश्य ६, ८, ८, ७, ५, ४।
घटना-स्थल : विदुर का घर, जगल।

प्रस्तुत पौराणिक नाटक म महाभारत का युद्ध दिखाया गया है।

नाटक मे कृष्ण का अर्जुन को उपदेश देना तथा विदुर के यहा भोजन करना आदि बडे मार्मिक दृश्य दिखलाय गए हैं। अन्त मे पाँचो पाडवो का वनवास दिखाया गया है।

स्वर्ग-सुन्दरी [संगीत-रूपक] (सन् १९६३, 'जसमा तथा अन्य संगीत-रूपक' में संगृहीत), लें० : मनोहर प्रभाकर; प्र० : कल्याणमल एंड संस, जयपुर; पात्र : पु० २, स्त्री १; अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : स्वर्ग, पृथ्वी।

'स्वर्ग-सुन्दरी' उत्कृष्ट प्रेम की कल्पित कथा पर आधारित एक संगीत-रूपक है। अप्सरा स्वर्ग से ऊबकर पृथ्वी पर सुख-दुःखमय प्रेम की खोज में आती है, जहाँ उसकी भेंट एक कलाकार से होती है। यह भेंट शीघ्र ही प्रेम में परिवर्तित हो जाती है। कुछ समय पश्चात् इन्द्र के आमंत्रण पर वह स्वर्गलोक में वापिस चली जाती है। वहाँ इन्द्र से अपने मानसी रूप की याचना करती है। इन्द्र कुपित होकर उसे शाप दे देता है कि वह चक्षुहीन होकर भू-विचरण करे। उधर उसके विरह में संतप्त कलाकार भी उसे खोजने निकलता है। एक दिवस उसे ज्ञात होता है कि अनंत सुन्दरी अप्सरा शापवश कुरूप हो गई है। कलाकार उसे अपनाकर सिद्ध कर देता है कि हृदय का प्यार रूप का निर्माता होता है।

स्वर्ण देश का उद्धार (सन् १९२१, पृ० ७८), लें० : इन्द्र वेदालंकार; प्र० : गुरुकुल यंत्रालय, कांगड़ी; पात्र : पु० १६, स्त्री १; अंक : ३; दृश्य : ८, ८, ८।
घटना-स्थल : स्वर्गलोक, राजदरबार।

नाट्यकार इस नाटक का उद्देश्य 'एक राजनीतिक समस्या का हल' घोषित करता है। असहयोग आन्दोलन में धर्म के प्रतीक, निरस्त्र तपस्वी महात्मा गांधी क्रूर शस्त्र-धारियों से युद्ध कर रहे हैं। धर्मात्मा और क्रूर में विजयलक्ष्मी किसका साथ देती है, यही समस्या उठाई गई है। इसके प्रत्येक गर्भांक में अलग-अलग कथा-सूत्र हैं। एक कथा धर्म-प्राण नामक आन्दोलनकारी की है। वह एक सभा में देश की दुर्दशा का चित्र खींचते हैं और इसका दोष भारतवासियों पर लगाते हैं। इसी समय एक राजपुरुष धर्मप्राण को बन्दी बनाता है। न्यायालय में उनके ऊपर अभियोग चलता है। कर्मदास नामक महात्मा प्रकट होकर धर्मप्राण को समझाते हैं कि "यदि अत्याचारी को हम शुद्ध भाव से समझावें तो वह मान जाएगा।" न्यायाधीश पर राजपुरुष का दबाव पड़ता है कि धर्म-प्राण को अवश्य दंड दिया जाय। इसी अवधि में न्यायाधीश का १० वर्षीय पुत्र राजद्रोह में कारावास में बन्द किया जाता है। न्यायाधीश भी राजक्रान्ति में सम्मिलित होता है। आन्दोलनकारियों को कर्मदास का यह संदेश सुनाया जाता है। पुलिस सबको बन्दी बनाती है। देश-प्रेमी एक-एक करके बन्दी बना लिये जाते हैं।

अनन्त प्रभा नामक एक देवी देश में क्रान्ति का आह्वान करती है। वह राज्य को उलट देना चाहती है। वह हिंसा पर भी उतर आती है किन्तु महात्मा उसे समझाते हैं। धर्मप्राण को बन्दीगृह से मुक्त कराने के लिए अनन्त प्रभा के साथ जनता एकत्र होती है। धर्मप्राण मुक्त होते हैं। राजा अपने दीवान पर रुष्ट होता है। न्यायाधीश राजा को समझाता है कि 'प्रजा जब तक सह सकती है शान्ति से सह लेती है, परन्तु जब कष्ट असह्य हो जाता है तो भूखी बाघिन की तरह उठती है।' ढिंढोरा पीटने वाला घोषणा करता है कि १५ फाल्गुन १९७९ को सारे देश के लोगों ने अपनी राय से राज्य की संस्था बना ली है और पाँच साल के लिए धर्मप्राण को अपना राष्ट्रपति चुना है।

स्वर्ण विहान (सन् १९३०, पृ० १०२), लें० : हरिकृष्ण प्रेमी; प्र० : सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर; अंक-दृश्य-रहित।

इस गीतिनाट्य में भारतीय चेतना, राष्ट्रीय भावना तथा जागृति को युवक समु-दाय के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इस कार्य के लिए हिंसा के स्थान पर अहिंसा का उपदेश दिया गया है। गांधीजी के सत्य, अहिंसा और प्रेम को प्रतिपादित किया गया है। देश-भक्ति के साथ-साथ नाटक में शृंगार का भी वातावरण प्रस्तुत किया गया है। प्रेमी जी ने प्रेम को वैयक्तिक क्षेत्र से ऊपर

उठाकर पीड़ित जन समूह की सेवा के लिए प्रवृत्त करना चाहा है। वास्तव में इस कृति का उद्देश्य प्रेम को व्यक्ति और देश दोनों के मध्य त्रिकोण बनाकर चित्रित करने वाली विधा को अपनाकर गांधीवादी भावना को परिपुष्ट करना है।

स्वाधीनता का संग्राम (सन् १९६६, पृ० १३४), ले० विष्णु प्रभाकर, प्र० सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर, पात्र पु० १६, स्त्री १, अंक ६, दृश्य ६, १०, ५, ९, ७, ८।
घटना-स्थल झाँसी का महल, जलियाँवाला बाग, डांडीयात्रा।

यह राजनैतिक नाटक राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है। प्रथम अंक में सन् १८५७ ई० की क्रान्ति का चित्र है—इसमें मंगल पांडे झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, राजा, तात्या टोपे, बेगम हजरत महल, शाहजादा फिरोज, तथा राव साहब की वीरता का वर्णन है। यही क्रांति राष्ट्रीय एकता और स्वाधीनता का बीज बोती है। इसी नींव पर स्वतंत्रता का महल खड़ा होता है। द्वितीय अंक में सन् १८५७ से १९१८ तक की क्रान्ति का वर्णन है। इस अंक में स्वतंत्रता के पुजारी स्वामी विवेकानन्द, लोकमान्य, विपिनचन्द्र पाल और लाला लाजपतराय का विद्रोही स्वर मुखरित होता है। तृतीय अंक में जलियांवाला बाग से चोरीचौरा तक का वर्णन है। चतुर्थ अंक में स्वाधीनता की घोषणा और गांधी जी की डांडीयात्रा का वर्णन है। पंचम अंक में सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन का दृश्य है तथा छठे अंक में स्वाधीनता संग्राम का वर्णन है। अन्त में १५ अगस्त १९४७ को देश स्वतंत्र होता है तथा इसके साथ ही देश का विभाजन भी हो जाता है। भारत की विधान सभा स्वयं शासन-भार संभाल लेती है।

स्वामिभक्ति (वि० १९८०, पृ० १५४), ले० रामसिंह वर्मा, प्र० आर० एस० बेरी, २०१ हरिसन रोड, कलकत्ता, पात्र पु०१२, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ८, ७, ७।
घटना-स्थल गाँव, वेश्यागृह।

प्रस्तुत सामाजिक नाटक में हीरालाल की पतिव्रता पत्नी सरस्वती की पति-परायणता तथा स्वामिभक्ति, हीरालाल की आदर्श बहन कलावती का धर्मपालन तथा भ्रातृ-स्नेह, हीरालाल के वेश्यागमन का दुष्परिणाम, दुष्ट राजा अभयचन्द और उसके साथियों का अत्याचार, नाटक के नायक रामदास की कर्त्तव्यपरायणता और स्वामिभक्ति को दिखाया गया है।

स्वार्थी संसार (सन् १९३५, पृ० १२७), ले० शिवरामदास गुप्त, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, पात्र पु० १६, स्त्री ३।
घटना-स्थल दयाराम का घर।

इस नाटक में अतिथि सत्कार पर बल दिया गया है। दयाराम एक नवयुवक व्यक्ति है जिसका पिता कृपण है और अतिथि-सत्कार में व्यय के भय से वह कभी किसी अतिथि को अपने यहाँ नहीं ठहरने देता। दयाराम अपने पिता से अनुनय विनय करता है कि अतिथियों का सत्कार करना हमारा धर्म है। वह प्रभातकिरण नामक उदार व्यक्ति का उदाहरण देकर कहता है, "पिताजी प्रभातकिरण की भांति अतिथि का स्वागत कीजिए, आगे बढ़िए।"—किन्तु पिता पुत्र को मूर्ख समझता है और धन संग्रह को ही जीवन का लक्ष्य मानता है। इस प्रकार परिवार में अशांति है। इसमें दो पीढ़ियों के विचार-वैषम्य के कारण परिवार में होने वाले संघर्ष का दृश्य उपस्थित किया गया है।

ह

हंस मयूर (सन् १९४८, पृ० १५३) ले० : वृन्दावनलाल वर्मा; प्र० : मयूर प्रकाशन, झांसी; *पात्र* : पु० १०, स्त्री ४; *अंक* : ४; *दृश्य* : ७, ५, ४, ५।
घटना-स्थल : उज्जयनी, राजभवन, युद्ध-क्षेत्र, मार्ग।

इस ऐतिहासिक नाटक में शकों का भारत पर आक्रमण तथा शक-विजय का दृश्य दिखाया गया है। शकों से पूर्व भारत में राज्य व्यवस्था सुन्दर थी परन्तु शकों ने सामंत प्रथा और दास-प्रथा आरम्भ की। उज्जयनी में १४ वर्ष के शक-शासन से राष्ट्र खंडों में बँट गया। अन्त में इन्द्रसेन की कोशिशों से देश से शक निकल सके।

धारा नगरी का राजकुमार कालक जैनी बनकर अपनी बहन तथा भिक्षु के साथ धर्म-प्रचारार्थ भ्रमण करता है। मालव-राज्य में गर्दभिल्ल नामक राजा है। उज्जयनी में पुरन्दर कापालिक की कालकाचार्य निन्दा करता है अतः उसे बलि करने का आदेश मिलता है परन्तु गर्दभिल्ल द्वारा वह बचा लिया जाता है। गर्दभिल्ल कालकाचार्य की बहन सुनन्दा की सुन्दरता पर आसक्त होता है। राजा, कालकाचार्य और बकुल को बाहर भेज सुनन्दा से विवाह कर लेता है। कालकाचार्य इसे वासना समझ कर प्रतिहिंसा में शकों को आक्रमण के लिए उकसाता है और शकों को गुप्त भेद देता है। भूमक शक-नेता की लड़की तन्वी का शिक्षक बनता है। रक्तपात के पश्चात् शक उज्जैन की सीमा में आते हैं। भूमक वापिस लौट जाता है पर तन्वी यहीं रहती है। जनता के विरोध के कारण गर्दभिल्ल सुनन्दा को लेकर जंगलों में भाग जाता है। शकों की विजय होती है। कालकाचार्य अपनी भूल अनुभव करता है और पुनः संन्यासी बन जाता है। बकुल और तन्वी गुप्तचर रूप में इन्द्रसेन के राज्य में हंस-मयूर नृत्य करते हैं जहाँ शकों को भगाने के लिए मन्त्रणा चल रही है। तन्वी और बकुल इन्द्रसेन को मारने की सोचते हैं पर तन्वी इन्द्रसेन पर आसक्त हो उसे बचा लेती है। युद्ध में शकों की हार होती है। गर्दभिल्ल शेर द्वारा मारा जाता है तथा सुनन्दा वापिस अपने भाई के पास आकर संन्यास ले लेती है। गर्दभिल्ल का अल्पवयस्क पुत्र राज्य करता है पर शक्ति इन्द्रसेन के हाथ में ही आती है। इसी खुशी में विक्रम संवत् की स्थापना होती है।

हंसडिम नाटक (सन् १९४०, पृ० ४४), ले० : विश्वेश्वर दयाल वैद्य; प्र० : हरिहर प्रेस, बारालोकपुर, इटावा; *पात्र* : पु० ६, स्त्री ४; *अंक-रहित* ; *दृश्य* : ११।

हंस शाल्वन देश के राजा ब्रह्मदत्त का पुत्र है। उसे स्वयं शक्तिशाली बनने की बहुत आकांक्षा है। एक बार वह जंगल में शिकार खेलने जाता है। साथ में उसका मंत्री जनार्दन भी है। रास्ते में लोग दुर्वासा ऋषि के आश्रम में जाते हैं जहाँ ऋषि ध्यान-मग्न हैं। दुर्वासा के अभिवादन न करने पर अभिमान में चूर राजा हंस दुर्वासा का आश्रम उजड़वा कर स्वयं उन का कमंडल फोड़ देता है। दुर्वासा उसे कृष्ण के हाथों मारे जाने का शाप भी देते हैं। हंस वापस लौटकर पिता से राजसूय यज्ञ करने का हठ करता है। पिता समझाता है कि महापुरुष कृष्ण ऐसे महाबली राजा के होते हुए दिग्विजय असम्भव है। दिग्विजय के बिना राजसूय यज्ञ असम्भव है। पर हंस अपने हठ पर अडिग रहकर कृष्ण के पास उपस्थित होता है और राजसूय यज्ञ के लिए आवश्यक समस्त कार्य करने का आदेश देता है। इस पर कृष्ण उसे लड़ने के लिए लल-

मारते हैं। पुष्कर युद्ध-क्षेत्र होता है। हंस को शिव से वरदान प्राप्त है कि द्वन्द्वों में शिव उसकी सहायता करेंगे। अतः युद्धक्षेत्र में शिवगण आते हैं। कृष्ण से युद्ध होता है। सभी शिवगण हार जाते हैं। हंस भी मारा जाता है। इस प्रकार दुर्वासा का शाप पूरा होता है।

हकीकतराय (सन् १९३६, पृ० २५६), ले० : न्यादर सिंह 'बेचैन', प्र० : देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली, पात्र पु० ११, स्त्री ४, अंक ६, दृश्य ५, ३, ३, ४, २, ३।
घटना स्थल सेठ का भवन, बन्दीगृह, सूली-स्थल।

इस ऐतिहासिक नाटक में हकीकतराय का धर्म तथा देश के लिए बलिदान दिखाया गया है। स्यालकोट के प्रसिद्ध व्यापारी सेठ भागमल का पुत्र हकीकतराय अपने धर्म और जाति के लिए मुगल शासकों से लड़ता है। वह मानवता का जयघोष करना चाहता है। शाहजहाँ के सिपाही उसे ऐसा नहीं करने देते। इसी संघर्ष में उसकी हत्या कर दी जाती है। हकीकत के बलिदान के उपरान्त शाहजहाँ को अपनी भूल मालूम पड़ती है। तब वह हकीकतराय की मजार बनवा कर उस हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का प्रतीक मानता है और उस पर श्रद्धा के सुमन चढ़ाता है।

हनुमन्नाटक भाषा [रामगीता] (सन १८९२, पृ० ५२५), ले० हृदयराम, प्र० भारत जीवन प्रेस, काशी, पात्र पु० २२, स्त्री ६, अंक १४, दृश्य रहित।
घटना स्थल अयोध्या, विश्वामित्र का आश्रम, जनकपुरी, स्वयंवर सभा।

विश्वामित्र यज्ञानुष्ठान में विघ्नकारी राक्षसों के नाश अथवा निवारण में समर्थ राम को अपने साथ लेने के लिए राजा दशरथ से याचना करते हैं। महाराज दशरथ पुत्र-प्रेम के वश कुछ बहाने बनाते हैं। परन्तु शीघ्र ही विश्वामित्र के दृढ आग्रह पर राजा अपनी बात रखने में असमर्थ हो जाते हैं और राम-लक्ष्मण पिता के चरणों में सिर नवा कर ऋषि के संग चल पड़ते हैं। राम-वियोग से राजा नित्यप्रति कृश होते जाते हैं। रामचन्द्र ताड़का तथा सुबाहु जैसे राक्षसों का वध करते हैं। जनक-दूत आगमन, विश्वामित्र सहित राम लक्ष्मण का जनक पुरी-गमन, धनुयज्ञ में सम्मिलित होकर समस्त राजाओं के बीच विश्वामित्र की आज्ञा से धनुभंग, लग्न पत्रिका-प्रेषण, विवाह, परसुराम आगमन और राम से उनका विवाद तथा अन्त में परशुराम-मद-खण्डन के प्रसंग उपस्थित किए गये हैं। यहीं 'श्री राम गीते सीता वैवाहिको नाम प्रथमो अंक' समाप्त होता है।

राजा दशरथ राम-राज्याभिषेक का प्रस्ताव करते हैं। सब इस वृत्तान्त से अत्यन्त प्रसन्न होते हैं परन्तु कैकेयी राजा के इस प्रस्ताव के विरुद्ध रुष्ट होकर दो वर (राम वनवास, और भरत-राज्याभिषेक) माँग लेती है। यहीं से अशान्ति और करुण कथा का आरम्भ हो जाता है। बहुत समझाने पर भी लक्ष्मण तथा सीता राम के साथ हो लेते हैं। इधर राजा दशरथ स्वर्ग को सिधारते हैं।

तृतीय अंक में राजा की मृत्यु के उपरान्त सीता-हरण के पूर्व की कथा काव्य रूप में वर्णित है। भरत जी ननिहाल से आकर कैकेयी पर क्रुद्ध होते हैं। राम को मनाने चित्रकूट जाते हैं, परन्तु रामाज्ञा मानकर लौटना पड़ता है। उधर राम पंचवटी में रहकर शूर्पणखा को विरूप करते हुए खर-दूषणादि का वध करते हैं।

वध का समाचार पाकर रावण, पत्नी मन्दोदरी के समझाने के बाद भी राम से बदला लेने के लिए पंचवटी आता है। तदुपरान्त मारीच का मायामृग बनना और सीता के आग्रह से राम का मृग पकड़ने जाना दिखाया गया है।

चतुर्थ अंक में 'सीता हरण' का प्रसंग उपस्थित किया गया है। पंचम अंक किष्किंधा काण्ड की मूल कथा को लेकर चलता है। सीता हरण से राम विकल हैं। मार्ग में सीता को लेकर जाते हुए रावण से जटायु-विवाद,

सीतान्वेषण में रत राम की जटायु से भेंट तथा उसका मोक्ष, हनुमान से मिलन, सुग्रीव से मित्रता, बालिवध और अंगद का युवराज पद पर स्थापन आदि का वर्णन इस अंक में किया गया है। 'बालिवध' नाम का यह अंक यहीं समाप्त है।

छठे 'हनुमल्लंकादहन' अंक में हनुमान का रामाज्ञा से मुद्रिका-सहित लंका गमन, लंका में राक्षस-वध, जानकी के दर्शन और संदेश का आदान-प्रदान, वाटिका विनाश, तथा अंत में लंका-दहन के प्रसंग वर्णित हैं।

सातवें अंक में समुद्र के अभिमान को दलित करके ससैन्य राम के पार उतरने की कथा है। अंक का नाम 'सिंधुसेतु बन्धन' रखा गया है।

आठवें अंक में विभीषण के सत्परामर्श की रावण द्वारा उपेक्षा, उसका राम की शरण में जाना, मन्दोदरी का रावण को समझाना, अंगद-रावण संवाद और अंगद परावर्तन का वर्णन है। अंक का नाम है—'रावण-अंगद संवाद'।

नवे अंक में मंत्रियों के सत्परामर्श और मन्दोदरी के अनुनय-विनय का वर्णन है। इनमें से किसी की भी बात रावण नहीं मानता। यह 'मंत्री उपदेश' नामक अंक है।

दशवें अंक (रावण प्रपंच रचना) में कवि ने सीता के सतीत्व को स्पष्ट करने के विचार से रावण को माया रूप में दिखाया है। वह रूप बदल कर राम-लक्ष्मण की मृत्यु का संदेश लेकर सीता के पास जाता है। आकाशवाणी के द्वारा अभिज्ञान से सीता, रावण-स्पर्श से बच जाती है। पुन: विजयी रूप में रावण का, राम का सिर लिये हुए सीता के पास जाना दिखाया गया है। इस बार भी विजयी राम के कपट वेशधारी रावण के स्पर्श से उनकी रक्षा हो जाती है। रावण के पैर ही आगे नहीं बढ़ते। यहाँ त्रिजटा की सहानुभूति से प्रभावित होकर सीता उसे अपनी सखी बना लेती है।

इसी प्रकार कुंभकर्ण-वध; इन्द्रजीतवध, लक्ष्मण के नवजीवन एवं राम राज्याभिषेक के प्रसंग वर्णित हैं। 'लक्ष्मण-जीवन अंक' में पुत्र के मरने पर रावण क्रुद्ध होता है। वह ब्रह्मा पर दबाव डाल कर हनुमान जी को लक्ष्मण-रक्षा से हटाता है और तब रावण स्वयं शक्ति वेध करता है। शेष सभी वृत्तान्त प्रख्यात कथा के अनुसार ही हैं। १४वें अंक में मन्दोदरी पति की मृत्यु से दुखित होकर विलाप करती है। राम समझाकर विभीषण से उसका विवाह कर देते हैं। रावण की अन्त्येष्टि की जाती है। सीता की अग्नि-परीक्षा के बाद से राज्याभिषेक-पर्यन्त का विख्यात कथानक ही अग्रिम वर्ण्य विषय है।

हत्या एक आकार की (सन् १९६८, पृ० ९६), ले० : ललित सहगल; प्र० : समकाल प्रकाशन, दिल्ली; पात्र : पु० ४, स्त्री नहीं; अंक : दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : एक बड़ा भूमिगत कमरा।

'हत्या एक आकार की' एक प्रयोगात्मक नाटक है। इसमें गांधीजी की हत्या को एक नए संदर्भ में बौद्धिक स्तर पर प्रस्तुत किया गया है।

इसमें गांधी जी की हत्या की योजना बनाने वाले चार व्यक्तियों के मन का विश्लेषण किया गया है। इनमें से एक व्यक्ति, शंकित युवक अपने को स्थिर नहीं रख पाता। वह अपने को इस योजना से हटाना चाहता है और वह हत्या के औचित्य के सम्बन्ध में प्रश्न करता है परन्तु अन्य तीनों व्यक्ति (पहला व्यक्ति, दूसरा व्यक्ति और अधेड़ व्यक्ति) उसे योजना से पृथक् नहीं रहने देते और उसे समझाने के लिए अपराधियों के विरुद्ध एक झूठे मुकदमे का नाटक रचते हैं। इस मुकदमे में शंकित युवक ही अभियुक्त बनता है। वह इस झूठे नाटक के अनन्तर गांधी जी से इतना मिल जाता है कि वह तीनों के तर्कों को निराधार सिद्ध कर देता है। लेकिन अभियुक्त को पहले से ही निश्चित किया हुआ मृत्युदण्ड सुनाया जाता है। इस पर वह शंकित युवक कहता है कि तुमने तो एक आकार की हत्या की है अर्थात् उसका केवल शरीर नष्ट किया है उसकी आत्मा और जीवन-दर्शन अब भी जीवित है।

यह नाटक प्रतीकात्मक मंच के लिए प्रस्तुत किया गया है। दिल्ली की अभियान संस्था द्वारा राजेन्द्रनाथ के निर्देशन में सन् १९६७ में सफलतापूर्वक खेला जा चुका है। रामपुर में हस्ताक्षर संस्था द्वारा सन् १९७० में भी खेला गया है।

हनुमान नाटक (सन १९६४, पृ० ११६), ले० ठाकुर प्रसाद शास्त्री, प्र० देश सेवा प्रेस, इलाहाबाद, पात्र पु० २१, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ७, ११, ३।
घटना स्थल सरयू तट, लंका और समुद्र द्वार, किष्किन्धा, सूर्यलोक, सुमेरु पर्वत।

इस पौराणिक नाटक में राम कथा का आधार लेते हुए हनुमान के चरित्र पर बल दिया गया है।

हम एक हैं (सन् १९६३, पृ० ६८), ले० कणाद ऋषि भटनागर, प्र० आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, पात्र पु० ८, स्त्री, ४ अंक ३, दृश्य-रहित।
घटना स्थल घर, पुलिस स्टेशन।

प्रस्तुत राजनीतिक नाटक चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर लिखा हुआ है। राष्ट्रीय सुरक्षा और एकता के उद्देश्य से नाटक की रचना की गई है।

गंगा के चार पुत्रों में से राजेन्द्रनाथ स्थल-सेना मेजर है, शेष व्यापारी, कवि और क्लर्क हैं। इनके घर नीलम नाम की एक जासूस लड़की आती है जो तीनों भाइयों को झूठे प्रेम-प्रदर्शन के बल पर बेवकूफ बनाती है। एक भाई जितेन्द्र डिफेंस में क्लर्क है। उससे नीलम सेना की गुप्त बातों का रहस्य जानना चाहती है। जितेन्द्र उसके बहकावे में आकर सैनिक-रहस्य बता भी देता है। अन्त में नीलम की वास्तविकता ज्ञात हो जाती है। गंगा स्वयं अपने पुत्र और नीलम को पुलिस में दे देती है।

अभिनय—यह नाटक दिल्ली नाट्य संघ के तत्वावधान में १९६४-६५ में नाट्य-समारोह के अवसर पर खेला जा चुका है।

हमारा काश्मीर (सन् १९६६, पृ० ४२), ले० मदन मोहन शर्मा, प्र० देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० १६, स्त्री नहीं, अंक रहित, दृश्य ३।
घटना-स्थल कश्मीर।

इस राजनीतिक नाटक में काश्मीर पर पाकिस्तानियों के १९६५ ई० के हमले और भारतीयों द्वारा उसके करारे जवाब का चित्रण हुआ है। पाक सैनिक घुसपैठियों को लेकर कश्मीर में आता है और एक बूढ़े कश्मीरी मुसलमान को अपनी मदद के लिए फुसलाता है। बूढ़ा, पाक और उसके सिपाहियों को भारत पर हमला न करने के लिए समझाता है। इसी समय फातमा अपने बापू को खोजती हुई वहाँ आ पहुँचती है। फातमा को पाक सैनिक पकड़ कर ले जाना चाहते हैं, लेकिन बूढ़ा विरोध करता है। बूढ़े को घुसपैठिये गोली मार देते हैं और फातमा को पकड़ते हैं किन्तु उसी समय भारतीय सैनिक नेहरू ज्योति लिये वहाँ आ पहुँचते हैं। फातमा की रक्षा होती है और पाक-सैनिक भाग जाते हैं। चाऊ अयूब को भारत पर हमला करने के लिए भड़काता है और उसे सहायता का आश्वासन देता है। अयूब पहले कुछ आनाकानी करता है लेकिन भुट्टो चाऊ का समर्थन करके जनरल मूसा को भारत पर हमला करने का हुक्म दिलाता है। पाकिस्तान का एक वर्ग युद्ध का विरोध करता है पर भुट्टो अड़ जाता है।

शास्त्री जी, नन्दा और चौहान विवश होकर देश-रक्षा हित चौधरी और अर्जुन-सिंह को पाकिस्तान का मुँहतोड़ जवाब देने के लिए आज्ञा देते हैं। भारतीय सैनिक कश्मीर और लाहौर में मोर्चे सँभालते हैं। दीपसिंह के नेतृत्व में भारतीय फौज कश्मीर में दुश्मनों पर हमला करती है। फातमा सैनिकों की सेवा-शुश्रूषा के लिए मोर्चे पर जाती है। दीपसिंह दुश्मनों की गोली से घायल होकर छटपटा रहा है कि फातमा उसके पास जा पहुँचती है और उसे पानी पिलाती है। वहीं पर रफीक प्यास से तड़प रहा है और दीपसिंह फातमा को उसे भी

पानी पिलाने को कहता है। फातमा अपने बाप के हत्यारे पाक-सैनिकों को पानी पिलाने को तैयार नहीं होती। दीपसिंह फातमा को भारतीय संस्कृति का उपदेश देता है कि शरण में आये दुश्मन की भी सहायता करनी चाहिए। फातमा रफीक को पानी पिलाती है लेकिन किदवई फातमा को गोली मारता है। युद्ध-भूमि में दीपसिंह और फातमा मरते-मरते भी एक-दूसरे को भारत भूमि की रक्त-स्नात पवित्र मिट्टी से टीका करते हैं।

हम कभी झुके नहीं (सन् १९६५, पृ० ८०)। ले० : नरेन्द्र कुमार शास्त्री; प्र० : राजेन्द्र कुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया; पात्र : पु० २५, स्त्री ६; अंक : ४; दृश्य : ४, ४, ३, ३।
घटना-स्थल : पंचनद, पाटलिपुत्र, चित्तौड़।

यह नाटक ऐतिहासिक घटनाओं के द्वारा यह सिद्ध करता है कि भारतीय शत्रु के सम्मुख कभी नहीं झुके। इसमें काल की उपेक्षा करके सभी शत्रुओं को एक साथ समेटा गया है। नाटककार इतिहास के कई उदाहरण सामने रखता है किन्तु प्रमुख रूप से राजा पुरु, सम्राट चन्द्रगुप्त, महाराणा प्रताप को आगे लाता है। इस नाटक में ऐतिहासिक पात्र ज्यों के त्यों हैं किन्तु ऐतिहासिक घटनाएं कल्पना से परिवर्तित कर दी गई हैं।

हमारे बाग में कांटे (सन् १९३०, पृ० ४०,) ले० : रामचन्द्र गुप्त; प्र० : ठाकुर प्रसाद एण्ड संस, वाराणसी ; पात्र : पु० ४, स्त्री २; अंक-रहित; दृश्य : १५।
घटना-स्थल : गांव की झोंपड़ी, विवाह-मंडप।

यह सामाजिक भोजपुरी नाटक है। इसमें गरीबी की छाया में खड़े मिट्टी के वे घर मन्दिर बन जाते हैं जिनमें कैलाश और चन्दर पलते हैं तथा उनकी बहनें कमली तथा विमली निवास करती हैं। कैलाश चन्दर की बहन कमली से प्यार करता है तथा चन्दर कैलाश की बहन विमली से प्रेम करता है। लेकिन खलनायक लागू सिंह इनके प्रेम से ईर्ष्या करता है तथा विवाह-मंडप में बजती हुई शहनाई बन्द हो जाती है। चुनरी कफन में बदल जाती है तथा सजी हुई डोली अर्थी में परिवर्तित होती है। विवाह की खुशी मातम में बदल जाती है।

हमारा स्वाधीनता-संग्राम (सन् १९५०, पृ० १३४), ले० : विष्णु प्रभाकर; प्र० : हिन्दी प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद; पात्र : पु० १५, स्त्री नहीं; अंक : ६; दृश्य : ६, ६, ५, ६, ७, ८।
घटना-स्थल : जलियांवाला बाग, डांडी-यात्रा, नोआखाली।

इस रेडियो रूपक में स्वाधीनता-संग्राम का इतिहास चित्रित है। अंग्रेजों के अत्याचार से पीड़ित भारतवासी अंग्रेजों के खिलाफ़ सन् १८५७ में सशस्त्र विद्रोह करते हैं। सेना देशी नरेशों और बादशाहों के नेतृत्व में, भारत से अंग्रेजों के पैर उखाड़ती है लेकिन फूट, *हथियारों की कमी और कमजोर सैनिक-*संगठन के कारण प्रथम स्वाधीनता-संग्राम असफल रहता है। अंग्रेज दमन-चक्र चलाकर बड़ी निर्दयता, क्रूरता से जनता पर अत्याचार करते हैं लेकिन आजादी की आग बुझती नहीं। यह आग जलियांवाला बाग के हत्या-कांड के रूप में फिर भड़कती है। डायर अमृतसर की एक सभा में निर्दोष स्त्री, बच्चों, बूढ़ों को अंधाधुंध गोलियां चलाकर भूनता है। सारे देश में आजादी की नई लहर फैलती है। 'स्वाधीनता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है'—इस के मंत्रदाता तिलक की मृत्यु के बाद गांधी जी स्वाधीनता-संग्राम का नेतृत्व सँभालते हैं। वह असहयोग, सत्याग्रह, स्वदेशी आदि के द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ अहिंसक आन्दोलन छेड़ते हैं। देश में नई जागृति पैदा होती है। २६ जनवरी, १९३० को रावी के तट पर जवाहरलाल नेहरू पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा करते हैं। आजादी की लड़ाई अपने पूरे रूप में शुरू में होती है। भारत के क्रान्तिकारी नवयुवक आजादी पाने के लिए सशस्त्र संघर्ष करते हैं। आजादी के दीवाने हँसते हुए फांसी के फंदों पर झूलते हैं। सन् '४२ में गांधी जी 'भारत

छोड़ो' की घोषणा करते हैं। सारे भारतवर्ष में आग फैलती है। अंग्रेज समझ जाते हैं कि अब हम भारत को गुलाम बनाकर नहीं रख सकते। फलत १५ अगस्त, '४७ को भारत आजाद होता है। भारत माँ के दो टुकड़े होने से देश में भयंकर साम्प्रदायिक दंगे फैलते हैं। जब सारा भारत आजादी की खुशियां मनाता है, गांधी जी नंगे पांव नोआखाली के गांवों में घूम-घूमकर पीड़ित मानवता के आंसू पोंछते हैं।

हमारी बस्ती हमारे लोग (सन् १९६६, पृ० ६४), ले० सतीश डे, प्र० देहाती पुस्तक भंडार दिल्ली, *पात्र* पु० ६, स्त्री २, *अंक* ३, *दृश्य* १, १, १।
घटना-स्थल ग्रामीण मकान, मद्यशाला।

इस सामाजिक नाटक में मद्य-पान के हानिकारक प्रभाव दिखाकर मद्य निषेध को अनिवार्य सिद्ध किया गया है। बदलू धोबी की दो पुत्रियां फुलवा और गोविंदी हैं। फुलवा का पति सरजू घर-जमाई है। बदलू उसे मद्य से दूर रखने में सफल होता है। सरजू के एक पुत्र बसन्ता भी है और तीनों प्राणी परिश्रम से सुखपूर्वक अपना धंधा करते हैं। उसका एक सम्बंधी लालू स्कूटर-चालक शराबी है और वह फुलवा पर बुरी दृष्टि रखता है। किन्तु फुलवा अपने सतीत्व की गरिमा और पटु व्यवहार से लालू को ठीक रखती है। सरजू भी मद्य का विरोधी है। किंतु उसका साढ़ू और गोविन्दी का पति चौरंगीलाल मद्य में चूर रहकर समस्त घर बर्बाद कर देते हैं। वह गोविन्दी के साथ सरजू के घर शरण लेता है। सरजू, चौरंगीलाल की उपस्थिति को घर के लिए हानिकारक समझता है। बदलू अपने मद्यप दामाद को रख लेता है किन्तु उसे मद्य के लिए पैसे नहीं देता है। फुलवा उसे चोरी से पैसे देती है। एक दिन चौरंगी की दशा बिगड़ जाती है। डॉक्टर भी जवाब दे देता है। बदलू गोविन्दी के लिए चिंतित है। इसी समय सरजू और बसन्ता मद्य पीने का नाटक करते हैं।

हम्मीर हठ (सन् १८९०), ले० प्रतापनारायण मिश्र, प्र० खड्ग विलास प्रेस, पटना, *पात्र* पु० २८, स्त्री ३, *अंक* ६, *दृश्य* १, २, १, २, १, १।
घटना-स्थल अलाउद्दीन का दरबार, रणथंभौर।

राधाकृष्ण ग्रंथावली के अनुसार इस नाटक का आधार-स्वरूप प्रथम परिच्छेद भारतेंदु ने उपन्यास के रूप में लिखा था। उनकी मृत्यु के उपरान्त इसे पूरा करने का भार श्रीनिवासदास ने लिया था, किन्तु वे पूरा न कर सके। तब फिर उसे प्रतापनारायण मिश्र ने नाटक के रूप में प्रस्तुत किया। यह नाटक मिश्र जी की मृत्यु के उपरान्त प्रकाश में आया। दोहा, सवैया, लावनी, गजल आदि का प्रयोग किया गया है। नाटक का आरंभ नांदी पाठ से होता है और अन्त भरत वाक्य से। कथा का आरंभ अलाउद्दीन की मरहठी बेगम के प्रति की गई मीर मुहम्मद की गुस्ताखी से होता है। इसका रहस्य खुल जाने से अलाउद्दीन उसे बंदी बनाने का आदेश देता है किन्तु बेगम के सचेत कर देने पर मीर मुहम्मद शरण के लिए अनेक राजाओं के पास जाता है। अलाउद्दीन के भय से कोई भी उसे शरण नहीं देता। अन्त में वह रणथंभौर के राजा हम्मीर के पास पहुंचता है। राजा अपने प्रधानमंत्री की आशंकाओं को दृष्टि में रखता हुआ मीर मुहम्मद को शरण दे देता है। अलाउद्दीन इसका आभास मिलने पर राजा से अपने अपराधी को वापिस माँगता है। राजा ऐसा न कर शरणागत की रक्षा करना अपना धर्म समझता है। फलत दोनों ओर से घोर संघर्ष होता है। इस युद्ध के दौरान मीर मुहम्मद अलाउद्दीन द्वारा लड़ता हुआ पकड़ लिया जाता है और हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया जाता है। भयंकर युद्ध चलता रहता है। अन्तत मुसलमानों के पैर उखड़ जाते हैं। राजपूत सैनिक युद्ध-सामग्री लूटते हैं। इसी बीच वायुवेग के कारण राजा की रणध्वजा गिर जाती है जिसको किले की रानियां देखकर यह समझती हैं कि राजा वीरगति को प्राप्त हो गए हैं। अतएव

रानियां अपने सतीत्व की रक्षा करने के लिए जौहर करती हैं। राजा जब युद्ध जीतकर दुर्ग के महलों को लौटता है तब तक सभी स्त्रियां जल चुकी होती हैं। इस घटना से राजा के मन में वैराग्य उत्पन्न होता है। वे राज्य को कुमार के हाथ सौंपकर तपस्या के हेतु गमन करते हैं। तप में राजा ज्योतिलिंग के दर्शन करते हुए शरीर-त्याग करते हैं। स्वर्ग में देवताओं द्वारा राजा की प्रशंसा भी इस नाटक में प्रस्तुत की गई है। प्रारम्भिक पांच अंकों में ऐतिहासिक घटनाएँ हैं किन्तु छठे अंक में नारद, शिव आदि पौराणिक पात्र आ जाते हैं।

अभिनय—दिसंबर १८८७ के 'ब्राह्मण' पत्र के अनुसार इसका अभिनय इसी वर्ष कई स्थानों पर हुआ।

हम्मीर हठ (सन् १९३१, पृ० १४१), ले० : दुर्गाप्रसाद गुप्त; प्र० : उपन्यास बहार आफिस काशी; पात्र : पु० ४, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ७, ६, ५।
घटना-स्थल : दिल्ली का महल, चित्तौड़, युद्ध-क्षेत्र।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमें चित्तौड़ गढ़ के राजा हम्मीर की बहादुरी का वर्णन है। दिल्ली का सम्राट् अलाउद्दीन अपने हरम में प्रत्येक प्रदेश की रानियां रखता था। उसमें एक मरहठा वंश की मरहठी थी जो अपनी इज्जत बचाकर वहां से भाग निकलती है और चित्तौड़ में हम्मीर के यहां शरण लेती है। इसी स्त्री की रक्षा और हिन्दू जाति को बचाने के लिए हम्मीर अलाउद्दीन को नाकों चने चबवाकर उसे इन्सानियत की सीख देता है और अन्त में अबलाओं की रक्षा कर अपने चरित्र का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है।

हर-गौरी-विवाह नाटक (वि० १६६० के आसपास), ले० : जगज्ज्योतिर्मल; प्र० : मिथिला रिसर्च सोसायटी, लहरिया सराय, दरभंगा; पात्र : पु० ६, स्त्री ३; अंक के स्थान पर ६ सम्बन्ध हैं।
घटना-स्थल : नगर एवं ऋषि आश्रम।

इस पौराणिक नाटक में शिव-पार्वती के वैवाहिक प्रसंग की प्रचलित कथा ग्रहण की गई है। विवाह-पूर्व सती का प्राण त्याग, पार्वती तपस्या, मदन-दहन, ब्रह्मचारी द्वारा पार्वती की परीक्षा आदि विषयों की चर्चा नहीं हुई है। प्रथम सम्बन्ध में नाटक की प्रस्तावना है, जिसमें सूत्रधार और नटी आकर जगज्ज्योतिर्मल्ल का कीर्तिगान, नगर-वर्णन, नाट्याभिनय आदि बातों की चर्चा करते हैं। द्वितीय सम्बन्ध में महादेव सती के शरीर-त्याग और उसके कारण वियोग-व्याकुलता प्रकट कर, हिमालय के घर में गौरी रूप में अवतरित सती को देखने का प्रस्ताव रखते हैं। नन्दी एवं भृंगी इसका अनुमोदन करते हैं। तीसरे सम्बन्ध में तीनों मिलकर हिमालय के समीप जाकर ऋष्याश्रम में विश्राम करते हैं। इसी बीच ऋषीश्वर अपने शिष्य वासु के साथ आश्रम में प्रवेश करते हैं जिससे उनकी दृष्टि महादेव पर पड़ती है। चौथे सम्बन्ध में हिमालय, मैना और गौरी आदि का प्रवेश एवं वार्तालाप हैं। पांचवें सम्बन्ध में ऋषीश्वर महादेव पुनः दर्शन की इच्छा से नन्दी एवं भृंगी से जिज्ञासा प्रकट करते हैं और ऋषीश्वर के द्वारा हिमालय से अपने लिए कन्या की याचना करते हैं। छठे सम्बन्ध में हिमालय मैना और गौरी पर्वत-शिखर पर उपस्थित होते हैं तथा प्राकृतिक सौन्दर्य पर मुग्ध हो जाते हैं। हिमालय ऋषीश्वर की याचना को स्वीकार कर लेते हैं और शादी की तैयारी होने लगती है। सातवें सम्बन्ध में महादेव चिन्तित दृष्टिगोचर होते हैं, किन्तु ऋषि को प्रसन्न देखकर प्रसन्न हो जाते हैं। आठवें सम्बन्ध में विवाह-मंडप में हिमालय सपरिवार दृष्टिगोचर होते हैं। वैदिक रीति के अनुसार महादेव और पार्वती की शादी होती है तथा वे दोनों कौतुकागार में प्रवेश करते हैं। अन्तिम सम्बन्ध में महादेव और गौरी की लीला वर्णित है। सभी वाग्मती के तट पर उपस्थित होते हैं एवं महादेव वाग्मती की उत्पत्ति का माहात्म्य वर्णन करते हैं। नाटक

की समाप्ति शिव-पार्वती के नृत्य से होती है। इसमें ३८ गीत हैं।

राजाज्ञा से अभिनीत।

हरतालिका नाटिका (सन् १८८७, पृ० ४०), ले० ; खग बहादुर मल्ल, प्र० ; खड्ग विलास प्रेस, बाकीपुर, पात्र पु० ६, स्त्री ४।
घटना-स्थल . राजभवन, जगल।

इस पौराणिक नाटक में शिवपुराण-प्रशसित हरतालिका व्रत की कथा कुलवधुओं के उपयुक्त बनाई गई है।

पार्वती के विवाह के लिए चिंतित राजा हिमवान मत्री से अपनी चिन्ता प्रकट करते हुए उन्हें कन्या के कठिन तप की सूचना देते हैं और यह सभावना व्यक्त करते हैं—"कुछ आश्चय नहीं जो योग्य वर मिलने के अर्थ यह किया हो।" वार्तालाप के बीच नारदजी आकर राजा से कृष्ण का सदेश बताते हुए कहते हैं—"अपनी कन्या के लिए एकमात्र वर वही है, यही उनकी इच्छा है।" हिमवान यह स्वीकार कर लेते हैं। पिता के इस निश्चय की सूचना पाकर पार्वती दु खी होती हैं क्योंकि उन्होंने अपने मन मे सकल्प कर लिया है कि 'श्री त्रिशूलधारी को अपना पति मानूगी।' वे अपनी चिन्ता-व्यथा सखी पर प्रकट कर उससे कहीं भाग चलने का प्रस्ताव करती हैं। निश्चय के अनुसार एक अंधेरी रात में सखी के साथ घोर वन मे चल देती हैं। उधर सवेरा होने पर जब मैना को पार्वती की अनुपस्थिति का बोध होता है तो वह व्याकुल होकर राजा से रहस्य कहती है। अत राजा मत्री के साथ पार्वती की खोज में निकलते हैं। इधर बडे ही कष्ट से कँटीली झाडियो और पथरीली राहो पर चलती हुई वे उपवास के कारण शिथिल हो जाती हैं तथा घोर वन मे पहुँचती हैं। पुन दिनात तक भूखी-प्यासी रहने के बाद सखी की सहायता से शिव की पूजा करती हैं। उनकी भक्ति से शिवजी प्रसन्न होकर प्रकट होते हैं और अपने को विष्णु से अभिन्न बताते हुए कहते हैं—"तुम सदा मेरे हृदय मे निवास करोगी। तुमने आज भादों शुक्ला तीज को हस्तनक्षत्र मे व्रत, पूजन और जागरण करके मुझे पाया है। अतएव ससार मे जो स्त्री यह व्रत करेगी जन्मजन्मांतर सौभाग्यवती और पुत्रवती रहेगी।" शिव के अतर्धान होने पर हिमवान मत्री के साथ पार्वती को ढूँढते हुए आते हैं और उसे ध्यानावस्थित देखकर प्रसन्न होते हैं। लज्जित पार्वती को उसके मनोनुकूल वर से विवाहित करने की प्रतिज्ञा कर साथ ले घर लौट आते हैं।

हर हर महादेव (सन् १९२०, पृ० ११०), ले० गोविन्द शास्त्री दुगवेकर, प्र० ; नारायण लक्ष्मण सोला पुरकर, बाल बोध कार्यालय, बनारस, पात्र पु० ११, स्त्री ५, अक ३, दृश्य ६, ७, ६।
घटना-स्थल ; जयपुर, बूंदी।

इस ऐतिहासिक नाटक मे सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दी के स्वातत्र्य आन्दोलन का चित्रण है। उस काल मे किस प्रकार एकता, समता, स्वतन्त्रता आदि के भाव जागृत हुए, उसका परिचय है। नाटक के पात्र राजपूत व मराठा हैं। इन्ही दोनो जातियो के बीच बन्धु-भाव का चित्रण नाटक मे किया गया है। इस नाटक की कथा लेखकानुसार 'टाड' साहब के 'टाड राजस्थान' से ली गई है। इसमे दिखाया गया है कि सत्रहवीं अठारहवीं शताब्दी मे स्वतन्त्रता का नारा 'हरहर-महादेव' माना गया और इसी के द्वारा वीर योद्धा जातियाँ राजपूत और मराठे, देश स्वातन्त्र्य युद्ध मे कूद पडे।

हरिश्चन्द्र (सन १८८०, पृ० १०८), ले० ; विनायक प्रसाद 'तालिब' बनारसी, प्र० ; जामेजमशेद प्रेस, बम्बई, नवीन सस्करण वैजनाथ प्रसाद बुकसेलर, काशी, सन् १९२६, पात्र पु० १०, स्त्री १, अक-रहित।
घटना-स्थल . आश्रम, राजभवन, नगर, श्मशान।

इस पौराणिक नाटक मे महाराज हरिश्चन्द्र की सत्यनिष्ठा दिखाई गई है।

विश्वामित्र और वशिष्ठ में सबसे अधिक सत्यनिष्ठ व्यक्ति के विषय में विवाद उठता है। वशिष्ठ मुनि हरिश्चन्द्र को सबसे बड़ा सत्यवादी मानते हैं पर विश्वामित्र इसका विरोध करते हैं। नारदजी विश्वामित्र को हरिश्चन्द्र की परीक्षा लेने भेजते हैं। विश्वामित्र हरिश्चन्द्र से एक सहस्र मुहरें यज्ञ के लिए मांगते हैं। राजा वचन-बद्ध हो जाते हैं। विश्वामित्र दूसरी बार परीक्षा के लिए राजा के दरबार में एक अप्सरा भेजते हैं जो राजा से विवाह का प्रस्ताव रखती है। अप्सरा विश्वामित्र को बुला लाती है। राजा अपना राजपाट प्रदान करता है। विश्वामित्र अपनी मुहरों का तकाजा करते हैं, और इसके लिए अपने चेले नक्षत्र को राजा के पीछे लगा देते हैं। राजा अपनी स्त्री शैव्या और बच्चे रोहित को ६ सौ मोहरों में उग्रसेन (काल देवता) को बेच देता है और स्वयं चार सौ मुहरों में कालसेन (धर्म-देवता) के यहाँ बिक जाता है। राजकुमार को सर्प डंस लेता है। शैव्या उसका शवदाह करने श्मशान पर जाती है जहाँ चांडाल-सेवक हरिश्चन्द्र उससे कफन मांगता है। विवश होकर रानी अपनी स्वामिनी से कफन लाती है।

नक्षत्र विश्वामित्र को मुहरें लाकर दे देता है और उनसे अपना पुरस्कार मांगता है। राजा इस शर्त पर पुरस्कार देने को तैयार होता है कि वह पुनः हरिश्चन्द्र की परीक्षा लेगा। हरिश्चन्द्र पुनः विश्वामित्र और नक्षत्र की परीक्षा में सफल होते हैं। विश्वामित्र उन्हें राजपाट लौटाकर रोहित को जीवित कर देते हैं।

इस नाटक में हास्य-विनोद के लिए मंगल मित्र और नक्षत्र का समावेश किया गया है।

अभिनय—विक्टोरिया नाटक मंडली द्वारा सारे देश में शताधिक बार अभिनीत।

सर्वप्रथम यह नाटक विक्टोरिया नाटक मंडली के लिए लिखा गया था। यह इतना जनप्रिय हुआ कि सन् १९१० तक इसकी ३२ सहस्र प्रतियाँ बिक चुकीं थीं। सम्भवतः गांधी जी भी यही नाटक बचपन में देखकर सत्य की ओर आकृष्ट हुए थे।

हरिश्चन्द्र नाटक (सन् १९११, पृ०९२), ले०: विश्वम्भर सहाय 'व्याकुल'; प्र० : हिन्दू संगति समाज, प्रह्लाद वाटिका, मेरठ; पात्र : पु० ७, स्त्री ३; अंक : ३; दृश्य : ७।
घटना-स्थल : महल, काशी, श्मशान घाट, ब्राह्मणी का घर।

यह भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक की प्रसिद्ध कथा पर आधारित है जिसमें आवश्यकतानुसार अन्य लेखकों के इसी नाम के नाटकों की सामग्री लेकर परिवर्तन कर लिया गया है तथा अपनी ओर से भी कुछ जोड़ दिया गया है।

संगीत की प्रधानता नाटक की विशेषता है।

हरिओम् तत्सत् (सन् १९३६, पृ० २२), ले० : राइट हैण्ड; प्र० : उपन्यास बहार आफिस, बनारस; पात्र : पु० ४, स्त्री १; अंक-रहित; दृश्य : ३।

यह एक प्रहसन है।

संस्कृत पण्डितों की यह शैली है कि वह किसी कार्य के बिगड़ने पर हरिओम् तत्सत् कहा करते हैं। इस प्रहसन में उसी हरिओम् तत्सत् की बार-बार पुनरावृत्ति कर हास्य उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है।

हर्ष (वि० १९९२, पृ० १८२), ले० : गोविन्ददास; प्र० : महाकोशल साहित्य मन्दिर, जबलपुर; पात्र : पु० १९, स्त्री ४; अंक : ४; दृश्य : ६, ४, ६, ४।
घटना-स्थल : स्थाणीश्वर, कान्यकुब्ज, प्रयाग।

इस ऐतिहासिक नाटक में सम्राट् हर्ष-वर्द्धन कालीन भारत की राजनीति का परिचय मिलता है।

स्थाणीश्वर के सम्राट् राज्यवर्द्धन की हत्या के उपरान्त हर्ष बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण राज्यसत्ता स्वीकार नहीं करता।

हर्ष का मित्र माधवगुप्त राजकुमार को समझाता है कि "षड्यंत्र से महाराजाधिराज का वध करने वाले हत्यारे चक्रवर्ती सम्राट् होने की आकांक्षा कर रहे हैं और राजपुत्री राज्यश्री भी बन्धन में पड़ी है। यदि आततायियों को दंड न मिला तो संसार का कार्य नियमित रूप से किस प्रकार चल सकेगा।" मित्रों और महामंत्रियों के आग्रह पर अधिकार स्वीकार करते हुए शिलादित्य कहते हैं—"मैं अपने को राज्य का संरक्षक मात्र मानना चाहता हूँ और राज्य को अपने पास प्रजा की धरोहर।" इस राजधर्म के अनासक्त भाव से पालन के लिए हर्ष आजीवन अविवाहित रहने का व्रत लेते हैं। उनका कथन है कि विवाह से "पुत्र-पौत्रादि यदि अयोग्य हों तो भी राज्यसत्ता उन्हीं के अधिकार में रहे, इस लोभ की उत्पत्ति होती है।"

हर्ष प्रजातन्त्र-प्रणाली के समर्थक हैं किन्तु देश की परिस्थितियों से बाध्य होकर जनकल्याण के लिए महाराज-पद स्वीकार करते हैं। वह विधवा बहिन राज्यश्री को साम्राज्ञी बनाकर स्थाणीश्वर को कान्यकुब्ज का माडलीक राज्य बनाते हैं। वह सम्पूर्ण भारत को एक साम्राज्य के अन्तर्गत लाने को प्रयत्नशील हैं। वह कहते हैं—"यदि मैं सारे देश में एक साम्राज्य की स्थापना के उद्देश्य को स्पष्ट कर स्वेच्छापूर्वक तुम्हारा मांडलीक हो गया तो अन्य राज्यों के लिए एक उदाहरण हो जायगा। और मैं अन्य राज्यों को समझा-बुझाकर बिना रक्तपात के ही साम्राज्य के अन्तर्गत लाने का प्रयत्न करूँगा।"

हर्ष, चीनी यात्री ह्वानचांग से चीन और भारत मैत्री का आग्रह करता है। वह जम्बूद्वीप में शान्ति के लिए प्रयत्न करते हुए कहता है—"चीन, पारस और भारत में यदि परस्पर मैत्री हो गई, तो जम्बूद्वीप के अन्यान्य छोटे-छोटे देशों में तो यह कार्य बहुत शीघ्र हो जाएगा—इस जीवन में मैं अब युद्ध नहीं करूँगा।" चौथे अंक के अन्त में हर्ष प्रयाग में यज्ञशाला स्थापित करके समस्त कोष और अपने कुंडल, हार, केयूर, वलय और मुद्रिकाएँ दान कर देता है। साथ ही अपने बहुमूल्य वस्त्रों का दान करके राज्यश्री से एक वस्त्र की भिक्षा मांगता है। उसी समय माधवगुप्त का विद्रोही पुत्र आदित्यसेन बन्दी रूप में उपस्थित होता है। माधवगुप्त वर्द्धना के विरुद्ध षड्यंत्र के अपराध में अपने पुत्र आदित्यसेन को मृत्युदंड दिलाना चाहता है पर माता शैलबाला पुत्र को क्षमा कराना चाहती है। हर्ष आदित्यसेन को मुक्त करते हुए कहता है—"तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि तुम इस आर्यावर्त्त के परम प्रतापी, सच्चे लोकसेवी सम्राट् होगे।"

जन समुदाय एक स्वर से राजर्षि हर्षवर्द्धन की जय-जयकार करता है।

हर्षवर्द्धन (सन् १९४६, पृ० ११६), ले० वैकुण्ठनाथ दुग्गल; प्र० यगमैन एण्ड कम्पनी पुस्तक प्रकाशन, दिल्ली, पात्र पु० १७, स्त्री ६, अंक ३, दृश्य ६, ७, ८।
घटना स्थल थानेश्वर का राजोद्यान, वंदीगृह, बौद्ध विहार का आंगन, शशांक का विलास भवन, मन्त्रणागार, कानन पथ, आश्रम का बाहरी भाग, शिविर, शिवमंदिर के बगल वट वृक्ष, राज्य-मंत्रणालय, रंगशाला।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। महाराज राज्यवर्द्धन की अकाल मृत्यु के कारण उनके अनुज हर्षवर्द्धन को अल्पायु में ही राज्य-भार सँभालना पड़ता है। हर्ष अपने भाई की मृत्यु का बदला लेने की प्रतिज्ञा करते हैं। मालवेन्द्र देवगुप्त, कन्नौजपति ग्रहवर्मा पर चढ़ाई कर देता है। ग्रहवर्मा वीरगति को प्राप्त होते हैं और राज्यश्री बन्दिनी हो जाती है। यह दुःखद समाचार सुनकर हर्षवर्द्धन बहुत दुःखी होते हैं और अपनी बहिन की मुक्ति की युक्ति सोचते हैं। राज्यश्री किसी तरह बन्दी-गृह से भाग जाती है और विन्ध्याटवी के बीहड़ जंगलों की खाक छानती है। भटकते-भटकते एक भील के यहाँ उसे शरण मिलती है। हर्ष मंत्री द्वारा राज्यश्री का समाचार पाकर

ठीक उस समय उसके पास पहुँचते हैं जिस समय वह चिता पर चढ़ना चाहती है। महाराज हर्ष उसे भाई की मृत्यु की खबर सुनाते हैं। यह दुःखद समाचार सुनकर राज्यश्री राज्यवर्धन के दुश्मनों से बदला लेने का दृढ़ संकल्प करती है और सती होने का विचार छोड़ देती है। कन्नौज आकर राज्यश्री एवं मंत्रीगण हर्षवर्धन के राज्याभिषेक का प्रबंध करते हैं। राज्याभिषेक के दिन शशांक का गुप्तचर शीलभद्र हर्ष की हत्या में सफल नहीं होता। हर्षवर्धन उसके इस दुष्कृत्य को क्षमा कर देते हैं और प्रजा की सेवा करते हुए जीवनयापन करते हैं।

हल्दीघाटी का शेर (सन् १९३१, पृ० ५२), ले० : विपिन बिहारी नन्दन; प्र० : गंगा पुस्तक मंदिर, पटना; पात्र : पु० १३, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ४, ४, ३।
घटना-स्थल : चित्तौड़, हल्दीघाटी, जंगल।

यह एक ऐतिहासिक नाटक है। इतिहास-प्रसिद्ध महाराणा प्रताप की राजनीतिक घटनाओं पर इसका कथानक आधारित है। महाराणा प्रताप किस प्रकार चित्तौड़ की रक्षा के लिए कठिन परिस्थितियों का सामना करते हैं और अकबर की महती शक्ति से लोहा लेते हैं उसका विवरण है। देश-भक्ति से परिपूर्ण महाराणा प्रताप की वीरता अनुकरणीय बन पड़ी है। महाराणा के जीते-जी अकबर चित्तौड़ की भूमि पर अधिकार न कर सका। इस नाटक में प्रताप की कन्या इरावती की राष्ट्रीयता और भामाशाह की उदारता का परिचय मिलता है।

हश्र महशर (सन् १९२४), ले० : मुहम्मद इब्राहीम 'महशर' अंबालवी; प्र० : जे० एस० संत सिंह एण्ड संस, लाहौर; पात्र : पु० ७, स्त्री ४; अंक-रहित।
घटना-स्थल : जमील का घर।

जमील का पिता मृत्यु-काल निकट देख अपने भाई महशर को बेटे का संरक्षक और अपनी जायदाद का निगराँ (देखभाल करने वाला) नियत करता है। महशर के मन में भाई की बड़ी सम्पत्ति देखकर लालच आता है और वह जमील की हत्या करके उसकी सम्पत्ति हड़पना चाहता है। महशर की पत्नी सुल्ताना और उसका सेवक गरगट महशर को इस जघन्य कार्य से रोकते हैं किन्तु वह अपने निश्चय पर दृढ़ रहता है। फलतः सुल्ताना और गरगट घर छोड़कर भाग जाते हैं और महशर जमील की हत्या कर देता है। सुल्ताना का प्रेमी खादर अपनी स्त्री हमीदा को विषाक्त अंगूठी पहना देता है और उसे जीवित ही मृतक समझकर दफना देता है। वह सुल्ताना को अपनी गृहस्वामिनी बनाता है। इधर हमीदा चैतन्य होने पर मजीदा के नाम से सुल्ताना के यहाँ नौकरी करती है।

जमील की हत्या करने पर महशर विक्षिप्त हो जाता है और उसे फाँसी का दंड भी मिलता है। खादर इस घटना से स्वयं विकल होकर हमीदा को स्मरण करता है किन्तु नौकरानी मजीदा उसे आश्वस्त करती है। सुल्ताना को मजीदा की वास्तविक स्थिति ज्ञात हो जाती है कि यह मजीदा ही हमीदा है। खादर अपनी पत्नी से क्षमा-याचना करता है और अपने पुत्र अरसलान को बुलाकर शिक्षित करता है।

हाजीपीर का दर्रा (सन् १९६७, पृ० ६६), ले० : राजकुमार; प्र० : हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी; *पात्र* : पु० १४, स्त्री नहीं; *अंक* : ३; *दृश्य-रहित*।
घटना-स्थल : कश्मीर, हाजीपीर का दर्रा।

पाकिस्तानी युद्ध की एक झाँकी दिखाने वाला यह राजनीतिक नाटक है। हाजीपीर दर्रे को अपना समझकर पाकिस्तानी सैनिक कश्मीर पर कब्जा करने की साजिश करते हैं। अकबर इस दर्रे को हाजीपीर की मजार बताता है जिसके सामने वह इंसान की भलाई के लिए दुआ माँगता है। अब यही दर्रा बेनकाब शैतान के जुल्मोसितम का गवाह है जिस पर पाकिस्तानी ठोकर मारते हैं, थूकते हैं तथा इसकी दीवारों को गिराने की कोशिश करते हैं।

वे कश्मीरियों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। इस हाजीपीर दर्रे पर पाकिस्तानी झंडे को लहराता देख दुखी अकबर, बहादुर सैनिक जोधासिंह, रामसिंह तथा मुजाहिद जालिम नूरखा आदि की मदद से उसके स्थान पर भारत का राष्ट्रीय झंडा फहराता है। भारतीय सैनिकों की वीरता से पाकिस्तानी जासूसों एवं मौलवी वगैरह देश-द्रोहियों को तौबा करना पड़ता है।

हातिम त्रिनताई उर्फ अफसरे सखावत (सन् १८८८ के आसपास,), ले० मुहम्मद महमूद मियाँ 'रौनक', प्र० • विक्टोरिया कम्पनी, बम्बई, पात्र पु० ५, स्त्री २, अंक दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : हुस्नबानो का घर, मार्ग।

इस नाटक में 'हातिम बिनताई' के उदार और परोपकारी जीवन की कुछ घटनाओं का संकलन किया गया है। इसमें मुनीरशाह का सौन्दर्य की देवी हुस्नबानो से विवाह करवाया गया है। हुस्नबानो शादी के अभ्यर्थियों के सामने सात प्रश्न रखती है जिनका समुचित उत्तर देने वाला ही उसका पति हो सकता है। अनेक प्रेमी परीक्षा में असफल रहते हैं। मुनीरशाह भी उसके सौन्दर्य पर मुग्ध होकर भाग्य आजमाने हुस्नबानो के यहाँ पहुँचता है। वह चार प्रश्नों का उत्तर देकर तीन प्रश्न साथ लेकर वापस आता है। हुस्नबानो भी मुनीरशाह के प्रति कुछ आकृष्ट होती है, किन्तु प्रतिज्ञानुसार शादी तो वह तभी कर सकती थी, जब उसके सभी प्रश्नों के ठीक उत्तर मिलें। दायी मुनीर के प्रति उसकी आसक्ति देख प्रश्नोत्तर का हठ त्यागने की सलाह देती है किन्तु हुस्नबानो अटल रहती है। अन्त में मुनीर हातिम की शरण लेता है। हातिम उसे साथ ले शेष उत्तर प्राप्त करने के लिए निकल पड़ता है।

संयोग से मार्ग में एक फकीर से हातिम को सभी प्रश्नों का समाधान मिल जाता है। हातिम की सहायता से मुनीरशाह प्रश्नों का उत्तर देकर हुस्नबानो के साथ शादी करता है। नाटककार सहायक पात्रों के माध्यम से हुस्नबानो और मुनीरशाह के प्रणय को खूब उभारता है। कथा में इन प्रसंगों के कारण हास्य-व्यंग्य-विनोद भी उभरकर आता है। नाटक के अन्त में हातिम और जरीनपोश विवाह की बधाई देते हैं।

अनेक बार अभिनीत।

हादुली राव (सन् १९५२, पृ० ५०), ले० सत्यव्रत अवस्थी, प्र० शिक्षा सदन, प्रयाग, पात्र। पु० ११, स्त्री २०, अंक ४, दृश्य। ३, ३, ३, ३।
घटना-स्थल पृथ्वीराज का दरबार, जयचन्द का दरबार, मुहम्मद गौरी का दरबार।

यह ऐतिहासिक नाटक पृथ्वीराज, जयचन्द और संयुक्ता के आधार पर देशद्रोह का परिणाम दिखाता है।

हादुली राव पृथ्वीराज का बड़ा सरदार है। किसी कारण से वह अप्रसन्न होकर कन्नौज चला जाता है। वहाँ से परामर्श करके मुहम्मद गौरी के पास जाता है। पृथ्वीराज को मुहम्मद गौरी पराजित करता है और हादुली राव के अनुरोध से दिल्ली लूटी जाती है। हादुली राव के देशद्रोह से दुखी होकर उसकी पत्नी सविता पति की हत्या करती है। जब हादुली राव की चिता जलने लगती है तो वह भी उसमें कूदकर प्राण दे देती है।

हिन्दी नाटिका (वि० १९७३, पृ० ३८), ले० चन्द्रकुमार मिश्र, प्र० लेखक द्वारा महर्षि प्रेस, भागलपुर, पात्र पु० ११, स्त्री ७, अंक २, दृश्य (पट) १, ५।
घटना-स्थल जंगल, नगर, ग्राम, गंगा-तट।

इस नाटिका में हिन्दी की दुर्दशा तथा उसका सुधार-मार्ग दर्शाया गया है।

प्रथम अंक में हिन्दी माता बिखरे केश, धूलि धूसरित हो जंगल में रोदन करती है। उसको इस बात का क्लेश है कि मेरे ही लड़के मेरा निरादर कर दूसरी स्त्री—मेरी सौत का आदर कर रहे हैं। हिन्दी माता का

रोदन सुनकर दो संन्यासी, गुणानन्द और महानन्द, उसके उद्धार के लिए प्रतिज्ञा करते हैं और अपने शिष्यों को इस कार्य के लिए कटिबद्ध होने की प्रेरणा देते हैं। द्वितीय अंक में बैरिस्टर चतुरानन्द अपनी पत्नी करुणा से अंग्रेजी में बोलते हैं। करुणा हिन्दी की पुस्तक पढ़ रही है। चतुरानन्द हिन्दी का पुस्तक देखकर क्रुद्ध होते हैं और उसके हाथ से पुस्तक छीनकर फेंक देते हैं। वह आज्ञा देते हैं—"Don't read such गंदा book, English book पढो।" पर करुणा के अनुरोध से वह मान जाते हैं कि अंग्रेजी के द्वारा पति-पत्नी में प्रेम स्थापित नहीं हो सकता। स्त्रियों के अतिरिक्त संन्यासियों की प्रेरणा से जनता को हिन्दी भाषा के पठन-पाठन की आवश्यकता का अनुभव होने लगता है। संन्यासीगण स्थान-स्थान पर बालिका-विद्यालय की स्थापना करते हैं, और हिन्दी का प्रचार होने लगता है। पत्नी करुणा और भगिनी दया के प्रयास से चतुरानन्द हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करके उसके प्रचार में लग जाते हैं। वह गुणानन्द, महानन्द आदि संन्यासियों के साथ प्रचार कार्य में जुट जाते हैं। संन्यासाश्रम में बंगाली, मौलवी, महाराष्ट्री, मद्रासी, पंजाबी आदि एकत्र होकर एक बंगाली के प्रस्ताव से यह निर्णय करते हैं कि "एक सर्व साधारण की सभा की जावे और सभी के जुटने पर स्वामीजी का एक राष्ट्रलिपि तथा एक भाषा की उपयोगिता पर व्याख्यान कराया जावे जिसके लिए एक विज्ञापन छपाकर अनेक भाषाओं में बाँट दिया जावे।" एक पंजाबी सज्जन रोमन लिपि के पक्ष में हैं किन्तु चतुरानन्द इसका विरोध करके नागरी लिपि में विज्ञापन छपवाते हैं। एक विशाल सभा में स्वामी गुणानन्द का भाषण होता है। वह देशवासियों को समझाते हैं कि "देश के नाते और जातीयता के नाते अपने प्रांतीय पक्षपात का स्वार्थ त्याग दें तो सारी बाधाएँ मिट जावेंगी।" महाराष्ट्री, मद्रासी, बंगाली, पंजाबी सभी हिन्दी माता की स्तुति करते हैं और राजा जी स्वामी जी को धन्यवाद देते हैं।

हिन्दी माता स्वामी जी को आशीर्वाद देते हुए कहती हैं—"जो चाहो कल्याण को, मंत्र ये जपो महान। सब मिलि बोलो साथ हों, हिन्दू-हिन्दी-हिन्दुस्तान"।

हिन्द (वि० १६७६, पृ० ११२), ले० ; जमनादास मेहरा; प्र० ; एस० आर० बेरी एण्ड कम्पनी, कलकत्ता; पात्र : पु० २६, स्त्री ४; अंक : ३; दृश्य : ७, ६, ६।
घटना-स्थल : हिमालय, जंगल का मार्ग।

यह नाटक हिन्द की परतन्त्रता और स्वाधीनता की तुलना पर आधारित है। हिन्द सदियों से परतन्त्रता के जाल में जकड़ा हुआ है। दूसरी ओर स्वतन्त्रता देश को सुखी और सम्पन्न बनाये हुए है। इसके साथ देश की धर्म-प्रथा तथा नवीनता को भी दर्शाया गया है।

हिंसा या अहिंसा (सन् १६७०, पृ० १२६), ले० : सेठ गोविन्ददास ; प्र० : चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी; पात्र : पु० ४, स्त्री २; अंक : ४; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : मकान के बाहर बगीचा, कम्पाउंड, कमरा।

इस सामाजिक समस्याप्रधान नाटक में मिल-मालिकों और मजदूरों का संघर्ष दिखाया गया है। इसमें नाटककार ने यह चित्रित किया है कि वर्गयुद्ध से पूँजीवाद और श्रमवाद दोनों का नाश हो जाएगा। उत्तेजना-रहित हो सहयोगपूर्ण सद्भाव से पूँजीपतियों और श्रमिकों की समस्या सुलझ सकती है।

इसमें छः पात्र हैं, और उनमें सभी का महत्त्व है। वे अपने वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वयोवृद्ध माधवदास पुराने ढंग का मिल-मालिक है। मजदूरों के प्रति बड़ा दयालु है और पारस्परिक सद्भाव से शान्तिपूर्वक अपना काम चला रहा है। उसका उत्तराधिकारी दुर्गादास नयी शिक्षा प्राप्त आधुनिक पूँजीपति व्यापारी है। मजदूरों को वह नगण्य समझता है और उन्हें

कुचल देने मे ही अपनी शान मानता है। उसके दुर्व्यवहार से मिल मे हड़ताल हो जाती है। मजदूर दल का वृद्ध सेनापति हेमराज तथा मजदूर दल का तरुण मन्त्री त्रिलोचन पाल मजदूरो के नेता हैं। हेमराज पुराने ढग का मजदूर है और पूजीपतियो को मालिक समझता है। त्रिलोचन नये विचारो का मजदूर-नेता है, पूजीपतियो से घोर विरोध रखने तथा उन्हें शोषक समझने वाला है। सौदामिनी माधवदास की पत्नी और दुर्गादास की सौतेली माँ है। अलकनन्दा सौदामिनी की छोटी बहिन है जिसका विवाह सौदामिनी दुर्गादास से करना चाहती है। सौदामिनी को कोई पुत्र नहीं हुआ था और वह चाहती है कि उत्तराधिकार उसकी बहिन के पुत्र को जाये। अलकनन्दा नितान्त विश्व-प्रेमी है। सौदामिनी ने सौतेली माँ होते हुए भी दुर्गादास का लालन-पालन किया है।

हिन्दू कन्या (वि० १९८६, पृ० १२३), ले० जमुनादास मेहरा, प्र० हिन्दी पुस्तक एजेंसी हरिसन, रोड, कलकत्ता, पात्र पु० १४, स्त्री ६, अक ३, दृश्य ६, ७, ३। घटना-स्थल एक सुदर बाग, रगमहल, दरिया का किनारा, भूतनाथ का घर।

प्रस्तुत नाटक एक क्रांतिकारी सामाजिक नाटक है जिसमे प्रभा और राधा दो प्रमुख स्त्रियाँ हैं। प्रभा राधा की माँ है राधा की शादी हो चुकी है परन्तु टोडरमल उसे चाहता है। रेवा टोडरमल की दासी है जो राधा को उसके पास लाने का वादा करती है। राधा का परिवार बहुत गरीब है अत रेवा कहती है कि "विपत्ति मे मनुष्य को पैसे की तरफ झुकना पड़ता है और तुम धनवान् हो।" परन्तु वह विपत्ति के समय भी नही झुकती जब कि उसके पास खाने का भी साधन नही है और कहती है—"समाज कहाँ है किस कुएँ मे है कौन से पाताल मे है यदि समाज है तो मैं कहूँगी

जिसका बना समाज है उसको है ना लाज।
आखो से हुआ अन्धा जो अपना समाज।।"

हिन्दू कोड बिल (सन् १९५२, पृ० ६०), ले०। न्यादरसिंह बेचैन, प्र० देहाती पुस्तक भडार, चावडी बाजार, दिल्ली, पात्र पु० ७, स्त्री ४, अक ३, दृश्य ६, ५, ५। घटना-स्थल उमाशकर का घर, क्लब, कोर्ट।

इस नाटक मे हिन्दू कोडबिल के दुष्परिणामो का चित्रण किया गया है। भारतीय सभ्यता-सस्कृति का विरोधी डॉ० उमाशकर हिन्दू कोडबिल का फायदा उठाकर तीन औरतो को तलाक दे देता है। लक्ष्मी उसकी चौथी स्त्री है। वह भारतीय नारी, लज्जा, सेवा, धर्मपरायणता आदि गुणों से सम्पन्न, साक्षात् देवी की मूर्ति है। वह पति को परमेश्वर मानकर उमाशकर की सेवा में तत्पर रहती है और उसे हर तरह से प्रसन्न रखना चाहती है। उमाशकर लक्ष्मी के धर्म व्रत, कथा पूजा आदि से घृणा करता है और उससे भी पिंड छुडाना चाहता है। लक्ष्मी जन्माष्टमी के दिन उपवास रखकर कथा-पूजा कर रही थी तभी उमाशकर आकर उससे जबरदस्ती चाबी छीन लेता है और अलमारी से रुपये निकालकर दयाशकर के साथ क्लब मे खूब गुलछर्रे उडाता है। फैशनपरस्त औरत चादनी भी घर से गायब रहती है और विलासियो के साथ ऐश-आराम करती है। वह बुखार-पीडित बेटे की भी परवाह नही करती है, किन्तु माँ की ममता का भूखा बच्चा तेज बुखार मे ही खाट से उठकर चादनी को पकड लेता है। वह बच्चे को धक्का दे देती है। वह रोते-तडपते बच्चे को छोडकर महिला-सभा मे जाती है और वहा स्त्रियों को पतियो के खिलाफ तलाक देने के लिए भड़काती है। सुशीला चादनी को मुँहतोड जवाब देती हुई भारतीय नारी के त्याग, तपस्या एव उदात्त चरित्र की प्रशसा करती है।

वकील जयनारायण हिन्दू कोडबिल का

फायदा उठाकर पति-पत्नियों को एक-दूसरे के खिलाफ खूब भड़काते हैं और तलाक दिलवाने के बहाने खूब रकम ऐंठते हैं। चांदनी अपने पति को और उमाशंकर अपनी स्त्री को तलाक देकर कोर्ट में ही दोनों शादी कर लेते हैं। श्याम पश्चिमी सभ्यता का समर्थक है और वह डॉक्टर की पहली स्त्री का भाई है। श्याम क्लब में चांदनी को खूब शराब पिलाकर उसके साथ डांस करता है। इसी समय उमाशंकर क्लब में आता है और चांदनी को परपुरुष के साथ नाचने के लिए मना करता है, किन्तु चांदनी उसे दुत्कार कर भगा देती है। चांदनी अब होटल में रहकर नई शादी के लिए अखबार में विज्ञापन प्रकाशित करती है। अन्त में वह एक पंजाबी से शादी कर लेती है। डॉ० उमाशंकर को लोग व्यभिचारी समझकर दुत्कारते हैं। जन्माष्टमी के दिन लक्ष्मी अपनी लड़की के साथ और ताराचन्द अपने बेटे के साथ मन्दिर में भजन-कीर्तन कर रहे हैं। इसी समय चार दिन का भूखा डॉक्टर मन्दिर में आकर भगवान् से अपने पापों के लिए क्षमा मांगता है। लेकिन पुजारी इस पापात्मा को धक्के देकर मंदिर से बाहर निकालने लगता है तो उसी समय लक्ष्मी का ध्यान टूट जाता है और वह दौड़कर डॉक्टर को उठाने लगती है। उमाशंकर लक्ष्मी से क्षमा मांगता है लेकिन लक्ष्मी के हृदय में तो पति के लिए पहले जैसा ही सम्मान और प्रेम है। इसी समय वृद्धा चांदनी भी भूखी, ठोकरें खाती मंदिर में आती है और ताराचन्द से क्षमा मांगती है। पुजारी भगवान् से जीवों पर दया करने की प्रार्थना करता है। भगवान् कृष्ण प्रकट होकर सबको हिन्दू कोडबिल की सच्ची भावना को अपनाने का उपदेश देते हैं।

हिन्दू ललना (सन् १९२६, पृ० ९९), ले० : दास और आरज़ू; प्र० : शिवरामदास गुप्त, उपन्यास बहार आफिस, काशी बनारस; पात्र : पु० १०, स्त्री १०; अंक : ३; दृश्य : ७, ७, ७।

इस शिक्षाप्रद पौराणिक नाटक में हिन्दू-ललना के कर्त्तव्यों पर प्रकाश डाला गया है। पार्वती जी एक स्थल पर सखियों को उपदेश देते हुए कहती हैं —"सखी! काम क्रोध को जीतने वाला तीनों लोक को जीत सकता है। अपने स्वामी, अपने प्रभु के मन पर अधिकार रखने वाली स्त्री, समस्त संसार की रानी होती है; पर स्वामी से बिछुड़ी हुई रमणी, अथाह धन की मालिक होने पर भी एक निर्धन और मार्ग की भिखारिन से भी बदतर है।···सती को अपने स्वामी के ध्यान में मग्न रहना चाहिए। उसको प्रसन्न करने के लिए यदि देह का भी त्याग करना पड़े तो भी मन-वचन-कर्म से न हटना चाहिए।"

नागलोक की रानी पद्मा पर चन्द्रधर आसक्त है। अन्त में उसकी प्रेमिका अलका ही रह गयी है। विपुला के चले जाने पर अलका चन्द्रधर से कहती है, "आज विपुला को गये पूरे ६ मास हो गये···।" अपने पुत्र को जीवित लेकर आने की आशा अलका विपुला से करती है।

हिन्दू विधवा (सन् १९५३, पृ० १२८), ले० : विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक; प्र० : राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली; पात्र : पु० ८, स्त्री १०; अंक : ३; दृश्य : ८, ६, ४।

घटना-स्थल : मकान, बोर्डिंग हाउस का कमरा, दीवानखाना, धर्मशाला, जंगल।

इस सामाजिक नाटक में विधवा की दुर्दशा तथा उसका समाधान दिखाया गया है। प्रथम अंक में विधवा कमला कृष्ण की आरती करते हुए भगवान् से निर्मल जीवन की भीख मांगती है। उसी स्थान पर उसकी पुत्री सरस्वती और भावी दामाद मणिधर आ जाते हैं। सरस्वती और मणिधर में प्रेमालाप होता है और दोनों एक-दूसरे के सदा साथ रहने का संकल्प लेते हैं। दूसरे सीन में एक धनाढ्य व्यक्ति व्रजनाथ की बाल विधवा पुत्री ब्रह्मावती अपने दुर्भाग्य पर आंसू बहा रही है उसी समय उसकी विमाता दुर्गावती उसे आकर कोसती है कि

"आज मेरे बच्चे की सालगिरह का दिन है और तुझे रोने की पड़ी है।" दुर्गावती ब्रह्मावती की घोर भर्त्सना करके चली जाती है। उसी समय गिरीश नामक एक व्यभिचारी व्यक्ति वहां आ जाता है और ब्रह्मावती को आश्वासन देते हुए प्रेम प्रदर्शन करता है। तीसरे दृश्य मे दौलतराम की स्त्री कोकिला के घर पर उसकी सखियां मालती, मैना राममोली, भीमा, आशा आदि सभा करके भारतीय नारी की दुर्दशा पर दुख प्रकट करती हैं। कोकिला पुरुषो से स्त्रियों को स्वतन्त्रता दिलाने के पक्ष मे है पर मालती उसका विरोध करती है। स्त्री-स्वातंत्र्य का आन्दोलन चलता है। विधवा कमला अब निर्मलाबाई नामक वेश्या बन जाती है। उसके घर पर कुछ बाबू लोग बैठे हैं। इसी समय उसकी पुत्री सरस्वती आ जाती है। इस समय कमला अपने जीवन का रहस्य खोलते हुए कहती है—"मैं एक दरिद्र हिन्दू की लड़की हूँ। पाँच वर्ष की उम्र मे मेरा विवाह हुआ। ६ मास के उपरान्त पति स्वर्गलोक सिधार गये। समाज ने मुझे पुनर्विवाह की आज्ञा नहीं दी। मैं दरबदर ठोकरें खाती फिरी। मेरे गाँव के जमीदार के लड़के ने मुझे कलकत्ते मे रखा। गाना-बजाना, पढ़ना-लिखना सिखाया। जब यह लड़की सरस्वती पैदा हुई तो निराधार छोड़ कर चला गया। मैं इसका विवाह मणिधर गार्ड से करके जीवन समाप्त करना चाहती थी। मैंने इससे सब कुछ छिपाने के लिए ही इसे बोर्डिंग हाउस मे रखा था। अब आप लोगों से प्रार्थना है कि मेरी इस जीवन-कहानी को समाचार-पत्रों मे प्रकाशित कराइएगा और समाज के नेत्र खोलिएगा।"

तीसरी विधवा डॉ० विश्वनाथ की विधवा पुत्री कल्याणी है। जब उसकी सखियां पतियों का उपहास करती हैं तो वह पति-महिमा का बखान करती है और किसी तरह से व्यभिचारियों से अपने सतीत्व की रक्षा करती है।

ब्रह्मावती भी धर्मशाला में व्यभिचारियों का अत्याचार सहती है पर किसी प्रकार अपना सतीत्व बचा लेती है।

हिन्दू विवाह आदर्श या शिवकुमार विवाह नाटक (सन् १९२२, पृ० ७८), ले० : लक्ष्मीनारायण वाजपेयी, प्र० : सत्यसुधाकर, छापाखाना, पटना, पात्र। पु० ११, स्त्री ३, अंक ४, दृश्य १, ३, ७, ७। घटना स्थल-रहित।

इस सामाजिक नाटक में लेखक ने अनमेल विवाह की कुरीतियों का खण्डन, योग्य विवाह का निर्णय, ब्रह्मचर्यादिक आश्रम की महिमा आदि अनेक उत्तम एवं शिक्षाप्रद विषयों का चित्र खींचा है।

हिन्दू स्त्री नाटक (सन् १९२४, पृ० ९०), ले० . अनवर हुसैन 'आरजू', प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी बनारस, पात्र पु० ५, स्त्री ११, अंक ३, दृश्य ६, ५, ४। घटना-स्थल अफ्रीका का रेगिस्तान।

इस सामाजिक नाटक मे हिन्दू स्त्रियों की सच्ची पति-भक्ति दिखाई गई है। एक हिन्दू स्त्री के लिए उसका पति ही सब कुछ है। पति उसे त्याग देता है तो भी हिन्दू स्त्री उसी की आस मे जीवन बिता देती है। मनोरमा नामक एक हिन्दू स्त्री का पति जसवन्त यमुना नामक वेश्या के वशीभूत होकर अपनी पत्नी को त्याग देता है परन्तु उसकी पत्नी मनोरमा अपने पातिव्रत-धर्म पर अविचल रहकर तमाम कष्टों को सहती है और अन्त मे उसका पति वेश्या द्वारा सारा धन ऐंठ लिये जाने पर ठुकरा दिया जाता है। वह मारा मारा फिरता है। मनोरमा अपने पति को उसके सारे अपराधों को क्षमा कर अपना लेती है। धनहीन होकर भी वह अपने पति के साथ संतोषपूर्वक जीवन व्यतीत करती है।

हिमालय का संदेश (सन् १९५४, 'नील कुसुम' मे संगृहीत पृ० १५), ले० : रामधारी सिंह दिनकर, प्र० उदयाचल, पटना, पात्र कुछ स्वर, अंक : दृश्य रहित।

'हिमालय का संदेश' एक लघु संगीत

रूपक है, जिसमें कवि ने युद्ध से संत्रस्त विश्व को धर्म और श्रद्धा का संदेश दिया है। वैज्ञानिक उपलब्धियां मानव को मानवता से दूर ले जा रही हैं। वह स्वयं को ईश्वर मान बैठा है। विश्व की इस विषम स्थिति में कवि भारत के प्रति आशान्वित है। इसीलिए तप, त्याग तथा समरसता के प्रतीक भारत को विश्व-शान्ति का दूत बतलाया गया है।

इसका मूल संदेश है—

"शान्ति चाहते हो तो पहले सुमति शून्य से माँगो। नवयुग के प्राणियो! ऊर्ध्वमुख जागो, जागो, जागो।"

हिमालय ने पुकारा (सन् १९६७, पृ० ८८), ले० : सतीश दे; प्र० : देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली; पात्र : पु० ६, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : हिमालय, भारतभूमि।

इस नाटक में भारत पर चीनी आक्रमण के समय एक देशद्रोही पिता और एक देशभक्त पुत्र की वार्ता प्रस्तुत है। सेठ कालीचरण गोहाटी का एक बड़ा व्यापारी है। वह अपने नौकरों को हुक्म देकर पैट्रोल, चीनी, रुई आदि आवश्यक चीजों को तहखाने में छुपा देता है। देशवासी चीनियों को करारा जवाब देने की तैयारी करते हैं लेकिन कालीचरण चीनी आक्रमण को वरदान समझ नाजायज तरीके से धन बटोरने में लग जाता है। भारती अपने मित्रों को पार्टी देने के लिए अपने पिता से सौ रुपये लेकर लाचा को देता है। लेकिन अशोक देश पर आई विपत्ति को देखकर भारती का पार्टी देना उचित नहीं समझता और वह लाचा से सौ रुपए छीन लेता है। भारती अपने ऐश-आराम में रुकावट डालने की शिकायत पिता से करता है। कालीचरण अशोक को फटकारता है। अशोक घर के देशद्रोहपूर्ण वातावरण से दुःखी होकर जाने लगता है, लेकिन मनोरमा उसे रोक लेती है। दौलतराम कालीचरण को विपुल धन का लोभ देकर उसके गुप्त ट्रांसमीटर में एक यंत्र लगा देता है, जिससे उसका सम्बन्ध चीनी गुप्तचर शन-चौ, सी-फो से हो जाता है। दौलत उसी समय चीनी गुप्तचर से बात करता है। चीनी उन्हें भारतीय सेना के गुप्त रहस्यों की खबर देने का हुक्म देता है। दौलत उसी रात को एक बड़े चीनी सेना अधिकारी से मिलने के लिए स्थान व समय निश्चित करता है। कालीचरण देशद्रोह का यह काम करने से डर जाता है और वह दौलतराम से इस काम को छोड़ देने के लिए कहता है। दौलत उसकी कमजोरी, डर-भय दूर कराने को लालपरी के पायलों की झंकार में खो जाने के लिए ले जाता है। दौलत और कालीचरण के जाने के बाद रात में ट्रांसमीटर पर चीनी गुप्तचर का संदेश आता है जिसे सुनकर लाचा बड़बड़ाने लगता है। लाचा का शोर सुन अशोक वहां आकर मूर्ति के नीचे से गुप्त ट्रांसमीटर निकालकर संदेश सुनता है। चीनी खतरे के कारण भेंट की योजना रद्द कर देता है लेकिन अशोक उसे रात के एक बजे अपने घर पर भेंट के लिए बुलाता है। उसी रात को भारती अपने साथी जिमिका को भेंट के लिए बुलाता है। दोनों चीनी जासूस वहां जाते हैं। वे दौलत तथा कालीचरण को वहां न पाकर हैरान होते हैं। वे भारती को बहकाकर ले जाने लगते हैं। इसी समय अशोक वहां बन्दूक लेकर आ जाता है। वह चीनियों को मारने ही वाला था कि भारती पीछे से बन्दूक हिला देता है जिससे गोली ऊपर को चली जाती है। चीनी भाग जाते हैं। भारती अशोक से लिपटकर रोने लगता है। अशोक भारती से पिता की सारी काली करतूतें कहता है। भारती गुस्से में ट्रांसमीटर तोड़ देता है।

अशोक देश-रक्षा के लिए सेना में भर्ती हो जाता है और अफसर बनकर दुश्मनों को मौत के घाट उतारने लगता है। कालीचरण अपने देशद्रोह के कामों पर बहुत पश्चात्ताप करता है।

हिरोल (सन् १९४७, पृ० ४७), ले० : शिवप्रसाद; प्र० : दीपक प्रेस, बिजनौर; पात्र : पु० २६, स्त्री २; अंक : ३; दृश्य : ४, ५, २।

घटना-स्थल। उटला, दुर्ग-प्रकोष्ठ, आगरा, मुगल दरबार, देवा क्षेत्र, रण-प्रांगण।

यह ऐतिहासिक नाटक है। महाराणा अमरसिंह, महाराणा प्रताप के पुत्र, बडे विलासी और भीरु प्रकृति के व्यक्ति हैं। जहांगीर के सैनिकों के चढ़ाई करने पर वह सन्धि का प्रस्ताव रखते हैं, परन्तु सामन्तों को यह स्वीकार नही होता। वे जीते-जी चित्तौड मुगलो को नही देना चाहते। युद्ध से अनिच्छा प्रकट करने पर अमरसिंह को चन्द्रावन सरदार बलपूर्वक युद्ध-क्षेत्र मे ले जाता है और युद्ध मे विजयी होता है। अमरसिंह का चाचा, सागरसिंह, मुगलो से मिलकर चित्तौड का शासक बन बैठा था। अमरसिंह इस युद्ध को जीत जाने के बाद पुन सघर्ष के लिए जहांगीर को उकसाता है। जहांगीर आबुल्लाखा के नेतृत्व मे भारी सेना भेजता है, परन्तु पुन विजय अमरसिंह की ही होती है। इस आत्मग्लानि से दुखी सागरसिंह चित्तौड का गढ अमरसिंह को सौंप जगल मे चला जाता है और जहांगीर के यहाँ बदी होकर उपस्थित होना है। वह अपनी तलवार से आत्महत्या कर लेता है। शक्तावत सरदार तथा चन्द्रावत सरदार मे इस बात के लिए कहा सुनी होती है कि हिरौल पर किसका अधिकार है। अन्त मे निर्णायक दुर्ग ऊंटल पर अधिकार कर चन्द्रावत सरदार हिरौल पद प्राप्त करते हैं।

हिरौल अर्थात राजपूती शान की एक झलक (सन् १६५०, पृ० ११६), ले० गोकुल चन्द्र शास्त्री, प्र० ओरिएण्टल बुक डिपो, नई सडक, दिल्ली, पात्र: पु० १४, स्त्री २, अक ३, दृश्य ८, ६, ११
घटना स्थल उदयपुर मे राजदरबार का कमरा, मैदान।

'हिरौल' नाटक मे दो वीर राजपूतो का वर्णन है जिन्होने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए स्वय को बलिदान कर दिया। इसमे उनकी वीरता का ज्वलन्त उदाहरण है। जिस समय बादशाह जहांगीर राणा अमरसिंह के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करते हैं उस समय अमरसिंह के सामने यह समस्या उत्पन्न होती है कि राजपूत सेना का 'हिरौल'(प्रमुख पद) किसको दिया जाये। शक्तावत चाहते हैं कि 'हिरौल' उन्हें ही मिले क्योंकि चूडावतो ने सदा से ही इसका उपभोग किया है। लेकिन चूडावत 'हिरौल' को अपने अधिकार मे ही रखना चाहते हैं। अन्त मे सर्वसम्मति से निश्चित होता है कि जो पक्ष अन्तला दुर्ग को विजित कर प्रथम प्रवेश करेगा उसी को हिरौल मिलेगा। दोनो दलों के वीर प्राणो की बाजी लगाकर उस पर विजय प्राप्त करने के लिए उद्यत हो जाते हैं। दुर्ग के चारो ओर ऊँची-ऊँची दीवारें तथा मुख्य द्वार पर नुकीली कीलें लगी होती हैं। दोनो दलो के सामने विकट परिस्थिति होती है कि वे किस प्रकार दुर्ग के अन्दर जायें। चूडावत-दल के नेता सालुम्बा सरदार दुर्ग की दीवार पर चढ़ आक्रमण करते हैं लेकिन एक बाण उनके हृदय को बेध देता है और उनकी मृत्यु हो जाती है। चूडावत दल का सरदार वन्दा ठाकुर सालुम्बा सरदार का शव गठरी में बांधकर तथा पीठ पर लादकर युद्ध करता है।

दूसरी ओर शक्तावत दल के नेता वल्लजी हाथी को दुर्गद्वार की ओर धकेलते हैं लेकिन नुकीली कीलें हाथी के मस्तक मे लग जाती हैं। वह वापिस मुड जाता है अत द्वार नहीं खुलता। अन्त मे वल्लजी दुर्गद्वार पर स्वय खडे हो जाते हैं। पीछे से हाथी टक्कर मारता है। दुर्ग का द्वार खुल जाता है लेकिन नुकीली कीलें उनके शरीर में धस जाती हैं। रोम-रोम से रक्त बहने लगता है। वल्लजी को वीरगति प्राप्त होती है। शक्तावत दल के राजपूत जय घोषणा करते हुए दुर्ग मे प्रवेश करते हैं लेकिन इससे पहले चूडावत दुर्ग की दीवार पर चढ़कर उस पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। अत दोनों वीर प्राणो की बाजी लगाकर अपने प्रण की रक्षा करते हैं।

हीर-रांझा (सन् १६६०, पजाब की प्रीत कहानियों मे सगृहीत), ले० हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० : आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ;

पात्र : पु० ८, स्त्री ३, अंक-दृश्य-रहित।
घटना-स्थल : चनाब नदी।

इस दुखांत नाटक में पंजाब की पृष्ठभूमि पर हीर और रांझा की प्रसिद्ध प्रेमकथा वर्णित है। एक दिन रांझा अनजाने में हीर के घर सो जाता है। इस पर हीर की सखियां उसे बुरी तरह पीटती हैं। सखियों की मार से पीड़ित रांझे की दयनीय अवस्था हीर के हृदय में सहज आकर्षण उत्पन्न करती है और वह द्रवित होकर रांझे को अपने घर में नौकरी दिला देती है। दोनों की सच्ची प्रीति दिनोंदिन बढ़ती है किन्तु भाग्य की विडम्बना यहां भी रंग लाती है। हीर का चाचा कैदों एक दिवस हीर को रांझे से मिलते हुए देख लेता है। जैसा प्रायः होता है हीर का विवाह अन्यत्र कर दिया जाता है। इस पर भी उनकी प्रीति-रीति पराजित नहीं होती। स्वयं भी इस प्रेम-रोग से ग्रस्त हीर की ननद कष्ट सहती है, किन्तु उनकी सहायता करती है। हीर सांप काटने का बहाना करती है। रांझा जोगी के वेश में उसे घर ले आता है। घर पर हीर की मां कैदों के कहने पर उसे विष पिला देती है। उधर रांझा भी नदी में डूबकर प्रेम की अनन्त राह पर हीर से जा मिलता है।

हीरे की अंगूठी (वि० १९८१, पृ० १३२), ले० : गणेश ; प्र० : मिश्र बन्धु कार्यालय, जबलपुर; पात्र : पु० ६, स्त्री ८; अंक : ४, दृश्य : (प्रवेश) : ६, ५, ४, ४।
घटना-स्थल : घर, विवाह-मंडप।

यह एक सामाजिक नाटक है। इस नाटक का मुख्य विषय विवाह समस्या है। इसमें विवाह प्रथा के दोषों पर प्रकाश डाला गया है। विधवा विवाह नाटक की मुख्य समस्या है। साथ ही जितेन्द्र और इन्द्र की समस्या पत्नी के गहनों के प्रेम के सन्दर्भ में दिखाई गई है।

हैदर अली या मैसूर पतन (सन् १९३४, पृ० १९४), ले० : द्वारकाप्रसाद मौर्य; प्र० : चौधरी एण्ड सन्स, पुस्तक विक्रेता, बनारस सिटी; पात्र : पु० ११, स्त्री ४; अंक : ५, दृश्य : ६, ६, ६, ८, १०।
घटना-स्थल : रंगपत्तन का किला, नंदराज का घर, राजमहल, महाराज कृष्णराज का कमरा, लड़ाई का मैदान, हैदरअली का दरबार।

मैसूर-राज चिक् कृष्णराज का सरदार हैदरअली एक बहादुर सिपाही है। सभामंडप में उसकी वीरता की प्रशंसा होती है। महाराज उस पर प्रसन्न होकर उसे दिल्ली गढ़ का दुर्ग प्रदान करते हैं। इसी समय गुप्तचर से सूचना मिलती है कि मरहठों ने मैसूर पर आक्रमण कर दिया है। पेशवा कोली राव उनके सेनाध्यक्ष हैं। राज्य के सेनापति देवराज उत्कोच देकर मराठों से राज्य की रक्षा करना चाहते हैं। कुछ लोग हैदरअली को युद्ध के लिए भेजना चाहते हैं। हैदरअली का सेनापति लुत्फअली हैदर की पुत्री रजिया पर आसक्त है पर रजिया लुत्फअली को अन्दर से बदसूरत और घृणित समझती है। वह कहती है, "तुम्हारे लिए रजिया के दिल में जगह नहीं है।" लुत्फअली पुनः आने की इच्छा प्रकट करता हुआ विदा लेता है। विधवा महारानी भी मराठों से सन्धि करना चाहती है और हैदरअली पर उनको पूरा विश्वास नहीं है। हैदरअली मराठों से युद्ध करता है किन्तु उसी का एक मराठा नायक धोखा देकर मराठों से मिलकर मैसूर की ही सेना पर आक्रमण करता है। अतः हैदरअली की हार होती है। मराठे रजिया को बलात् पकड़ना चाहते हैं किन्तु नंदराज की कन्या शक्ति के प्रयास से रजिया बच जाती है। हैदरअली उजाड़ प्रदेश में सैनिकों और लुत्फअली वेग से परामर्श करता है। वह पांच हजार सैनिकों के साथ पुनः मराठों से युद्ध करता है और साथ ही सोचता है कि किसी तरकीब से नाराज देवराज की तरफ से खांडेराव के दिल में संदेह पैदा कर दिया जाता और वह उनका साथ छोड़ देता तो विजय की आशापूर्ण होती। हैदरअली की नीति सफल होती है। युद्ध में मैसूर के सेना-

पति और उपसेनापति बन्दी और आहत होते हैं। हैदरअली की विजय होती है। हैदरअली सिंहासन पर बैठकर घोषणा करता है—

"हर हिन्दू अपने धर्म पर चलने के लिए आजाद है। गाय की कुर्बानी बन्द की जाती हैं।" हैदरअली खाडेराव को लोहे के पिंजडे में बन्द करके ले जाता है। कृष्णराज का सेनापति देवराज हैदर द्वारा बन्दी बनाया गया था। उसका वध कर दिया जाता है। मंत्री-कन्या शान्ति उससे प्रेम करती थी। वह अपने प्रेमी का सिर को गोद में उठा लेती है और अपनी कटार से आत्महत्या कर लेती है। लुत्फअली मंत्री नंदराज का हैदरअली की आज्ञा से वध करना चाहता है। रजिया उसका हाथ पकड़कर नन्दराज की रक्षा के लिए प्रार्थना करती है। लुत्फअली बदले में उसकी मुहब्बत माँगता है। रजिया विवश होकर लुत्फअली का प्रस्ताव स्वीकार करती है, किन्तु थोडे ही समय उपरान्त पागल हो जाती है। हैदरअली और लुत्फअली सिर पीट कर रह जाते हैं।

हैदराबाद (सन् १९५०, पृ० ६१), ले० बालभट्ट मालवीय, प्र० गिरधारीलाल थोक पुस्तकालय, दिल्ली, पात्र पु० २०, स्त्री ४, अंक ३, दृश्य ७, ६, ४। घटना-स्थल हैदराबाद।

यह एक राजनैतिक नाटक है। निजाम-हैदराबाद को भारतीय गणतन्त्र में जिस तरह शामिल किया गया उसका पूरा ब्योरा अपनी पात्रों के माध्यम से इसमें चित्रित किया गया है। नवाब साहब का सुलहनामा, कासिम रिज्वी की गिरफ्तारी, रजाकारों की मक्कारी और उनकी गिरफ्तारी तथा सरदार पटेल की अनुपम सूझ-बूझ का परिचय इस नाटक की कथावस्तु है।

होरी (सन् १९६१, पृ० १०८), ले० विष्णु प्रभाकर, प्र० हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पात्र पु० १०, स्त्री ५, अंक ३, दृश्य ४, ५, ५।

इस सामाजिक नाटक में भारत के दीन-दुखी और जर्जर किसान का यथार्थ जीवन चित्रित किया गया है। इसमें तत्कालीन जमींदारी व्यवस्था के उस किसान का चित्र प्रस्तुत है जो वर्षों आंधी-तूफान में सर्दी-गर्मी सहता हुआ जमीन से अनाज पैदा करता है और जब वही अनाज खलियानों में आता है तब जमींदार, सूदखोर और पटवारी आदि जनता के शोषक बन उस अनाज को ले जाते हैं। होरी अपने खलियान में खाली का खाली रह जाता है। होरी को एक वह स्थिति आती है जब उसे अपनी लडकी नाराज रूपा का विवाह एक वयस्क व्यक्ति से, परिस्थितियों के वशीभूत होकर कर देना पडता है। होरी का बेटा अपने पिता की परिस्थिति विवशता पर कटाक्ष करता है—"जिसे पेट की रोटी मयस्सर नहीं, उसके लिए मरजाद और इज्जत सब ढोंग है। औरों की तरह तुमने भी दूसरों का गला दबाया होता, जमा मारी होती, तो तुम भी भले आदमी होते। तुमने कभी नीति को नहीं छोडा, यह उसी का दण्ड है।" गाँव के प्रमुख व्यक्ति मुखिया, पटवारी आदि को पुलिस का साथ मिलता है जिसके सहारे वे दीनों के ऊपर अत्याचार करते हैं। होरी का बेटा गोबर सब देखता है और उसके मन में समाज से घृणा होती है।

अनेक बार अभिनीत।

होली नाटक (सन् १९५१ पृ० ८४) ले० गिरधारीलाल प्रीतम, प्र० अग्रवाल बुक डिपो दिल्ली, पात्र पु० १०, स्त्री १, अंक-रहित, दृश्य ८। घटना-स्थल होलिका, हिरण्यकश्यप का मकान।

यह पौराणिक नाटक है। इसकी कथा चिर परिचित हिरण्यकश्यप और उसके पुत्र प्रह्लाद से सम्बन्धित है। होलिका का आग में जल जाना तथा प्रह्लाद का बच जाना, फिर नृसिंह भगवान के हाथों हिरण्यकश्यप की हत्या इस नाटक की मुख्य कथा है।

होली दर्पण (सन् १८८५, पृ० २६), ले० : शिवराम पाण्डेय; प्र० : स्वयं प्रकाशन; पात्र : पु० १०, स्त्री ०; अंक : १; दृश्य : ३।
घटना-स्थल : घर, मैदान।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह नाटक मृत्यु सभा का उत्तर देने के लिए लिखा गया। मृत्यु सभा में सुरापान करने वाले व्यक्तियों ने शारीरिक दृष्टि से मद्यपान को लाभप्रद घोषित किया है किन्तु इस नाटक में आयुर्वेद की दृष्टि से मद्यपान को निषिद्ध सिद्ध किया गया है। मद्यपान के विरुद्ध तर्क दिया है कि २० प्रतिशत से अधिक मद्यपान[illegible] की मृत्यु सुरापान से होती है। मद्य[illegible] शारीरिक शक्ति का विकास नहीं, होता है। पाचन-शक्ति क्रमशः विघटित [illegible] जाती है। हृदय-रोग आरम्भ हो जा[illegible] क्षुधा क्षीण एवं अग्नि मन्द हो जाती है। शराबी की आयु कम हो जाती है। प्रतीत होता है कि नाटककार प्र[illegible] नाटक में आयुर्वेद के आधार पर मद्यपा[illegible] कुप्रभावों का विश्लेषण करता है।